वीरविनोद

वीरविनोद
मेवाड़ का इतिहास

महाराणाओं का आदि से लेकर सन् १८८४ तक का विस्तृत वृत्तान्त
आनुषंगिक सामग्री सहित

द्वितीय भाग

[खण्ड ३]

(प्रकरण १३-२०)

लेखक

महामहोपाध्याय कविराज

श्यामलदास

[महाराणा सज्जनसिंह के आश्रित राजकवि]

प्राक्कथन

प्रो० थियोडोर रिकार्डी (जूनियर)

कोलम्बिया विश्वविद्यालय (न्यूयार्क)

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

अनुक्रमणिका.

द्वितीय भाग.

(महाराणा दूसरे प्रतापसिंहसे महाराणा सज्जनसिंह साहिबके अख़ीर तक मए अह्दनामों मेवाड़के).

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.

महाराणा दूसरे हमीरसिंह,

चौदहवां प्रकरण – १६९१ – १७०२.

महाराणा दूसरे भीमसिंह,

पन्द्रहवां प्रकरण – १७०३ – १७८४.

महाराणा जवानसिंह,

सोलहवां प्रकरण – १७८५ – १८८८.

महाराणा सर्दारसिंह,

सत्रहवां प्रकरण – १८८९ – १९०८.

विषय.	पृष्ठांक.

महाराणा सज्जनसिंह,

बीसवां प्रकरण – २१३९ – २२५९.

तेरहवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे प्रतापसिंह, दूसरे राजसिंह, और तीसरे अरिसिंह.

हमने अबतक इस किताब वीरविनोदके दूसरे भागमें हरएक महाराणाका एक एक प्रकरण अलहदह रक्खा है, परन्तु महाराणा दूसरे प्रतापसिंह और दूसरे राजसिंहका इतिहास बहुत थोड़ा है, और इनके साथ किसी दूसरे इतिहासका सम्बन्ध भी नहीं है, इसलिये इस जगह महाराणा तीसरे अरिसिंहका हाल उसके शामिल किया जाकर तीनोंके इतिहासका एक प्रकरण बनाया गया.

महाराणा दूसरे प्रतापसिंह.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १८०८ आषाढ़ कृष्ण ७ [हि० ११६४ ता० २१ रजब = ई० १७५१ ता० १६ जून] को हुआ. यह लूनावाड़ाके रईस वीरपुरा

सोलंखी नाहरसिंहके दोहित्र थे. इनका हाल बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने इस तरहपर लिखा है, कि विक्रमी १७९९ माघ शुक्ल ३ [हि० ११५५ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १७४३ ता० २९ जैन्युअरी] को जिन चार सर्दारोंने कुंवर प्रतापसिंहको क़ैद किया था, उन्होंने याने बागोर महाराज नाथसिंह, देवगढ़ रावत् जशवन्तसिंह, देलवाड़ा राज राघवदेव, और सनवाड़के बाबा भारथसिंहने, जिनकी औलादमें खैराबादके जागीरदार हैं, पांचवें शाहपुरावाले राजा उम्मेदसिंहको अपना शरीक बनाकर सोचा, कि महाराणा जगत्सिंह तो ज़ियादह बीमार हैं, और हम लोगों (१) ने कुंवर प्रतापसिंहको क़ैद किया था, सो महाराणाके बाद वह गद्दी नशीन होकर हमको बर्बाद करेंगे, इसलिये मुनासिब है, कि कुंवर प्रतापसिंहको ज़हर देकर मारडाला जावे, और नाथसिंहको गद्दीपर बिठादेवें, जो महाराणाके छोटे भाई हैं; लेकिन् यह सलाह ज़ाहिर होकर महाराणाके कानतक पहुंची, जिसपर महाराणाने इन पांचोंको कहलाया, कि अगर हमारा हुक्म मानते हो, तो इसी वक्त अपने अपने ठिकानोंको चलेजाओ. तब लाचार होकर हुक्मके मुआफ़िक़ वे अपने अपने घरको रवानह होगये.

महाराणा जगत्सिंहका देहान्त होने बाद प्रतापसिंहने गद्दी बैठकर अव्वल इन पांचों सर्दारोंको तसल्लीके साथ अपने पास बुलालिया. फिर अपने खैरख्वाह सर्दार शक्तावत उम्मेदसिंहके बेटे अखेसिंह (अक्षयसिंह) को रावत्का ख़िताब, ताज़ीम और "दारू" का पर्गनह जागीरमें देकर दूसरे दरजेका उमराव बनाया; क्योंकि अखेसिंहका बाप उम्मेदसिंह इनकी गिरिफ्तारीके वक्त इनकी तरफ़से अपने बाप सूरतसिंहसे लड़कर मारागया था.

अमरचन्द सनाढ्य ब्राह्मणको ठाकुरका ख़िताब और ताज़ीम देकर अपना मुसाहिब बनाया, कि इनकी क़ैदके समय उसने बड़ी खैरख्वाहीके साथ नौकरी की थी.

एक दिन महाराणा दर्बार किये हुए बैठे थे, कि उन्होंने अपनी पीठपर हाथ लगा कर नाक सिकोड़ी, जिससे सब लोगोंकी उस वक्त उधर तवज्जुह हुई. तब महाराणाने हंसीके तौर कहा, कि काकाजीने गिरिफ्तार करनेके वक्त मेरी पीठपर गोड़ेकी जो चोट दी थी, वह अब बादल होनेके समय कसकती है. उस वक्त तो सब लोग

---

(१) उदयपुरकी ख्यातमें महाराज नाथसिंहका ही कुंवर प्रतापसिंहको गिरिफ्तार करना लिखा है, दूसरे तीन सर्दारोंका ज़िक्र नहीं, जैसा कि महाराणा जगत्सिंहके हालमें लिखागया.

खामोश रहे, लेकिन् दर्बारसे रुख़्सत होकर डेरोंपर आने बाद ऊपर बयान किये हुए पांचों सर्दार रातके वक़् अपने अपने ठिकानोंको चलेगये. महाराणाने अगर्चि वह बात गुस्सेसे नहीं कही थी, मगर इन लोगोंने उन शब्दोंसे अपनी जानका खतरा समझ लिया. फिर महाराज नाथसिंह अपने ठिकाने बागोरसे रवानह होकर सादड़ी होता हुआ देवलिया पहुंचा. वहां कुछ दिनों रहकर ऊमटवाड़े (मालवा देशकी पूर्वी हद्द खीचीवाड़ाके पास ऊमट राजपूतोंका मुल्क) में गया, और वहांपर अपना व अपने बेटे भीमसिंहका विवाह करके विक्रमी १८०९ श्रावण [हि० ११६५ शव्वाल = .ई० १७५२ ऑगस्ट] में वहांसे बूंदी गया; रावराजा उम्मेद-सिंहने देवपुरा गांवतक पेश्वाई की, और अपने यहां बारह दिनतक रखकर चार सौ रुपया रोज़ानह मिह्मानीका पहुंचाते रहे. फिर वहांसे अपने पुत्र भीम-सिंह सहित जयपुरके महाराजा माधवसिंहके पास पहुंचा. उस समय महाराजा माधवसिंह और जोधपुरके महाराजा बख़्तसिंह, दोनों मालपुरासे एक मन्ज़िल भूपोलाव तालाबपर मुक़ीम थे. दोनों महाराजा, नाथसिंहसे पेश्वाई करके मिले. इसी सफ़रमें जोधपुरके महाराजा बख़्तसिंहका इन्तिक़ाल होगया. महाराजा माधवसिंहने नाथसिंहको तसल्ली देकर कहा, कि हम प्रतापसिंहको ख़ारिज करके आपको मेवाड़का महाराणा बनावेंगे. इस बातपर झलायके ठाकुर कुशलसिंहने माधवसिंहको मना किया, लेकिन् उसकी नसीहत कारगर न हुई. वंशभास्करके कर्ताने इस बातपर महाराजा माधवसिंहकी बड़ी हिक़ारत की है, कि जिन महाराणा जगत्सिंहने माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेके लिये एक करोड़ रुपया ख़र्च करके बहुत कुछ ताक़त दिखलाई, उस उपकारको भूलकर महाराणाके पुत्रसे विमुख हुआ.

देवगढ़का रावत् जशवन्तसिंह, शाहपुरेका राजा उम्मेदसिंह, देलवाड़ेका राज राघवदेव और सनवाड़का बाबा भारथसिंह, महाराज नाथसिंहसे मिलकर मेवाड़के गांव लूटनेलगे. उदयपुरके महाराणा प्रतापसिंह बड़े बहादुर व बुद्धिमान थे, जिनकी कर्त-व्यताका नमूना बतलानेको मेवाड़में एक क़िस्सह मश्हूर है- लोग कहते हैं, कि महाराणाके गद्दी बैठने बाद रावलोंकी रामत (१) करवाई गई, जिसमें एक सिपाही और

---

(१) रावल एक क़ौम चारणोंकी याचक है; इन लोगोंका यह काम है, कि दस बीस आदमी मिलकर जाड़ेके मौसममें हमेशह देशमें फिरते हैं, और अक्सर चारण व राजपूतोंके साम्हने नाटकके तौर तमाशा करते हैं, यह क़ौम राजपूतानह व गुजरातके सिवा दूसरी जगह कहीं नहीं है. इस नाटकको रामत बोलते हैं.

दूसरा किसानका स्वांग लाया गया. उस बनावटी सिपाहीने अपनी गठड़ी उठाने के लिये किसानको बेगारमें पकड़ा; बेगारीने कहा, कि मैं चूंडावतोंकी रअ़य्यत हूं, सिपाहीने डरकर उसे छोड़दिया; दूसरी दफ़ा ललकारा, तब उसने शक्तावतोंकी प्रजा होना बयान किया, उसी तरह उसने फिर छुट्टी पाई. ग़रज़ हर एक बार जुदा जुदा चहुवान, झाला, राठौड़ वग़ैरह राजपूतोंकी हिमायत बतलाकर चलागया; अख़ीरमें कहा कि मैं ख़ालिसेकी रअ़य्यत हूं. यह सुनते ही सिपाहीको बड़ा जोश आया, और जूतियोंसे मारकर किसानके सिरपर बोझा रखदिया.

यह नाटक देखकर महाराणाको बड़ा अफ़्सोस हुआ, और कहा, कि हिमायती लोगोंकी प्रजा निर्भय रहे; और ख़ास हमारे ख़ालिसेकी रिआ़यापर इस क़द्र ज़ुल्म हो! यह बड़े अनर्थकी बात है. उसी दिनसे यह इरादह करलिया, कि जबतक मैं अपनी ग़रीब रिआ़याको ताक़तवर नहीं करूं, तबतक मेरा राज्य करना भी बे फ़ाइदह है. कहते हैं, कि इस बातका महाराणाके दिलपर इतना असर हुआ, कि इनके राज्यके थोड़े अ़रसेमें ही ख़ालिसेकी प्रजा बहुत आसूदह होगई थी; परन्तु ईश्वरकी इच्छा और ही थी, याने विक्रमी १८१० माघ कृष्ण [हि० ११६७ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १७५४ जैन्युअरी] में उनका देहान्त होगया.

ऐसे नौ जवान महाराणाके दुन्यासे उठजानेपर मेवाड़में एक तहलका मचगया, और ख़ालिसहकी रिआ़या अपने बापके मरजानेसे भी ज़ियादह रंजीदह होकर रोती थी. इनके एक ही बेटे राजसिंह थे. महाराणा प्रतापसिंहका जन्म विक्रमी १७८१ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ११३६ ता० १७ ज़िल्क़ाद = ई० १७२४ ता० ८ ऑगस्ट] को हुआ था. वह उन्तीस वर्ष और पांच महीनेकी उ़म्रमें इन्तिक़ाल करगये. इनका क़द किसी क़द्र लम्बा, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, तमाम बदन पहलवानके मुवाफ़िक़ और महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके मानिन्द रोबदार था. एक पत्थरका मुद्‌गर, जिसको वह आसानीके साथ घुमाया करते थे, अब तक खीच मन्दिरके पास पड़ा है, इस वक़्त किसी पहलवानकी ताक़त नहीं, कि उसको उठाकर एक चक्कर भी घुमावे. अगर कोई अच्छा ताक़तवर आदमी हो, और उसे दोनों हाथोंसे उठावे, तो बड़ी मिहनतके साथ सिर्फ़ सिरके बराबर लासक्ता है; हर एक आदमीकी मजाल नहीं, कि इतना भी करसके. इन महाराणाकी तस्वीर देखनेसे मालूम होता है, कि वह बड़े रोबदार और ताक़तवर थे. इन महाराणाके चार राणियां थीं- अव्वल महाराणी राठौड़, जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहकी बेटी, जिनका इन्तिक़ाल पहिले ही होगया था. दूसरी कछवाहा जशवन्तसिंहकी बेटी बनेकुंवर, जो सती हुई. तीसरी भाटी सर्दारसिंहकी

बेटी मयाकुंवर, यह भी महाराणाके साथही सती हुई. और चौथी झाला कर्णसिंहकी बेटी बख़्तावर कुंवर, जिसके गर्भसे महाराणा राजसिंह पैदा हुए.
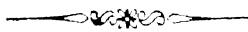
इनका राज्याभिषेक विक्रमी १८१० माघ कृष्ण २ [हि० ११६७ ता० १५ रबीउल्-अव्वल = ई० १७५४ ता० १० जैन्युअरी] को हुआ था. गादी बैठनेके वक्त इनकी उम्र केवल दस वर्षकी थी, मुल्कमें उस समय मरहटोंका पूरा ज़ोर शोर था, मेवाड़के सर्दारों व अह्लकारोंमें आपसकी फूट और मालिकके कम उम्र होनेसे अब्तरी फैलती जाती थी; मरहटोंने यह हालत देखकर इस राज्यको अपना जैबख़र्च समझ लिया. अगर्चि इन लोगोंने राजपूतानहमें क़दम, तो अपना महाराणा संग्रामसिंहके ही समयमें रख दिया था, लेकिन् उस वक्त महाराणाको अपना मालिक जानते रहे, बाद इसके जब कि महाराणा जगत्सिंहके ज़मानेमें महाराजा माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेके लिये इनकी मदद लेनी पड़ी, तबसे दिन ब दिन मरहटोंका दबाव बढ़ता गया और महाराणा प्रतापसिंहके वक्तमें भी उसी तरह उनका ज़ोर तरक़्क़ीपर रहा; क्योंकि इस समय, तो उनकी मुट्ठियां गर्म करनेसे ही रियासतका बचाव था. ऐसी छीना झपटीके वक्त रियासतको क़ाइम रखना मुश्किल था, परन्तु महाराणा संग्रामसिंहके समयके बहुतसे आक़िल आदमी मौजूद होनेसे रियासतपर कोई बड़ा ज़वाल न आने पाया.

महाराणा प्रतापसिंहका देहान्त होनेके बाद महाराज नाथसिंह भी उदयपुर चला आया; और जो सर्दार ख़ौफ़ खाकर चले गये थे, वे भी अपने अपने ठिकानोंमें आ बैठे. सलूंबरका रावत् जैतसिंह सबमें अव्वल मुसाहिब था, क्योंकि और सर्दारोंका एतिबार महाराणा और बाईजीराजको न था. चन्द अह्ल-कार दाना और आक़िल जैतसिंहके शरीक थे. इन्हीं दिनोंमें जया आपा सेंधिया महाराजा रामसिंह अभयसिंहोतकी मददको मारवाड़पर चढ़ा, और नागौरके क़िलेमें महाराजा विजयसिंहको जाघेरा. महाराजा विजयसिंहकी सफ़ाई करानेके लिये रावत् जैतसिंह उदयपुरसे सेंधियाकी फ़ौजमें भेजागया, उस वक्त क़िलेके राजपूतोंमेंसे एक खोखर राजपूतने सेंधियाको दग़ासे मारडाला; इससे मरहटी फ़ौजमें यह शोर मचगया, कि मेवाड़ वालोंने दग़ा की. कुल मरहटी फ़ौजका हमलह जैतसिंहपर हुआ, उस वक्त कोई किसीकी नहीं सुनता था, फ़ौजी ग़द्रको देखकर रावत् जैतसिंह अपने साथियों सहित तलवार हातमें लेकर बड़ी बहादुरीके साथ काम आया, और चारण आढ़ा पन्ना व आढ़ा पहाड़ख़ान दोनों ज़ख़्मी होकर बाक़ी रहे. यह ख़बर सुनकर उदयपुरके लोगोंको बहुत रंज हुआ.

हक़ीक़तमें इस ख़ैरस्वाह बड़े मुसाहिबके मारेजानेसे रियासतको बड़ा नुक़्सान पहुंचा. इस इत्तिफ़ाक़ तफ़ीतको देखकर शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने राजा सर्दारसिंहसे बनेड़ेका क़िला छीन लिया. सर्दारसिंह उदयपुर आया, क्योंकि महाराणा संग्रामसिंहके समयसे बनेड़ेका ठिकाना फिर उदयपुरके मातहत होगया था, जो आलमगीरने मेवाड़से जुदा किया था; लेकिन् बादशाहतके बिगड़नेपर भी अजमेरके सूबहदार कभी कभी इसको अपनी मातह्तीमें लानेकी कोशिश करते रहे, मगर उनको कामयाबी नहीं हुई. जब शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने विक्रमी १८१३ [हि० ११६९ = .ई० १७५६] में यह ठिकाना छीन लिया, तो राजा सर्दारसिंह भागकर उदयपुर आया, और कुछ अ़रसे बाद गुज़र गया. सर्दारसिंहके मरने बाद महाराणा और उनके मुसाहिबोंने फ़ौज भेजकर सर्दारसिंहके बेटे रायसिंहको बनेड़ा दिला दिया, और उम्मेदसिंह लाचार होकर शाहपुरे चला गया.

महाराणाने सर्कारी तोपख़ानह और कुछ फ़ौज राजा रायसिंहकी मददके लिये बनेड़ेके क़िलेमें रक्खी, लेकिन् कुछ अ़रसहके बाद फ़ौजी लोग बुला लियेगये, और तोपख़ानह सर्कारी वहीं रखकर राजा रायसिंहसे मुचल्के लिखवाये, जिनकी नक़्लें नीचे लिखी जाती हैं:-

मुचल्केकी नक्ल जो राजा रायसिंहके
फ़ौज्दारने लिखा था.

श्री

लीषतं राठोड़ सीवसीघजी साहिबसीघोत अप्रंच श्री दरबाररा तोपषानारा नग ७ बणेड़ा रा गढ़ मांहे अरज करि बलाणां रषाया, सो श्री दरबार सुं मंगावसी, जदी हाजर करावणा. संवत् १८१५ व्रषे वैसाष सुदी १ सुक्रे.

राजा रायसिंहके ख़ास दस्तख़ती
दूसरे मुचल्केकी, नक्ल.

लिषतु राजाजी रायसीघजी, अप्रंच बणेड़ा रा गढ़में श्री दरबार रा तोपषाना

रा नग सात बलेणा रषाया, सो बषेड़ो मटे ने श्री दरबारमहे पुगावे देणा. मीती बेसाष सुद १ सुक्रे संवत् १८१५ व्रषे.

———

संवत् १८१७ चैत्र कृष्ण १३ [हि० ११७४ ता० २६ शअ्बान = .ई० १७६१ ता० ३ एप्रिल] को महाराणाका इन्तिकाल होगया. इनका जन्म विक्रमी १८०० वैशाख शुक्ल १३ [हि० ११५६ ता० ११ रबीउ़ल अव्वल = ई० १७४३ ता० ७ मई] को हुआ था. इनकी चार शादियां हुई थीं; पहिली विक्रमी १८११ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० ११६७ ता० ६ रमज़ान = .ई० १७५४ ता० २७ जून] को बेदलाके राव रामचन्द्रकी बेटी गुलाबकुंवरके साथ, और उसके दूसरे ही रोज़ गोगूंदाके झाला राज कान्हसिंहकी पोती व यशवन्तसिंहकी बेटी सरसकुंवरके साथ हुई थी, और इसी लग्नपर एक ही साथ महाराणाके काका अरिसिंहकी शादी राज कान्हसिंहकी छोटी पोती सर्दारकुंवरके साथ हुई. और तीसरी शादी ईडरके राजा अनोपसिंहकी बेटी भवानीसिंहकी पोती सर्दारकुं-वरके साथ और चौथी शादी रतलामके राजा पृथ्वीसिंहकी बेटी व मानसिंहकी पोती सर्दारकुंवरके साथ हुई थी. महाराणा राजसिंहका देहान्त होनेपर महाराणी चहुवान और राठौड़ दोनों, जिस वक़ सती होनेको निकलीं, उस वक़ राणी चहुवानने यह बद दुआ दी, कि "कोई बेदलाका राव आइन्दह अपनी बेटीकी शादी उदयपुरके महाराणाके साथ न करे." क्योंकि उक्त महाराणीको उनकी सासने बहुत तक्लीफ़ दी थी. इन महाराणाको लोग ज़ालिम और निर्दई बतलाते हैं.

———

जब महाराणा राजसिंहका देहान्त हुआ, तो एक दम कुल रियासतमें सन्नाटा होगया, और अत्यन्त शोक पैदा हुआ; क्योंकि इनकी उम्र बहुत कम याने सत्तरह वर्षकी थी; और उस ज़मानहमें राजपूतानहपर मरहटोंका ज़ोर शोर बढ़ रहा था, ऐसी हालतमें अचानक मुल्की सहारा नष्ट होगया, सब सर्दार, उमराव, अह्लकार एकट्ठे होकर महाराणाकी उत्तर क्रियाके बाद ज़नानी ड्योढ़ीपर गये, और महाराणा राजसिंहकी माता (बाईजीराज) को कहलाया, कि आपके पुत्रकी बहू झालीजीको गर्भ हो, तो हम सब आपके हुक्ममें रहकर प्रागट्य तक रियासतका काम चलावें. अगर कुंवर हुआ, तो हमारा मालिक है, मेवाड़का राज्य करेगा; और बेटी हुई, तो अच्छे खानदानमें विवाह दी जावेगी. यह निवेदन सुनकर बाईजीराजने कहलाया, कि बहूके गर्भ नहीं है; तुम राजका हक्दार हो, उसे गद्दीपर बिठा (१) दो. उसवक्त महाराणा जगत्सिंह दूसरेके छोटे पुत्र अरिसिंह (२) मौजूद थे, इनको सब लोगोंने मिलकर गद्दीपर बिठादिया, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़ निछावर वगैरह रस्में अदा कीं.

हरी (३) पूजनेके बाद महाराणा अरिसिंह एकलिंगेश्वरके दर्शनको गये. लौटते वक्त उक्त महाराणा जवानीके नशेमें चूर घोड़ा दौड़ाते हुए उदयपुरकी तरफ़ आरहे थे, चीरवाके घाटेमें सवार और सर्दारोंका बड़ा हुजूम जा रहा था, रास्तह तंग होनेके सबब इधर उधर हटने और बचनेकी जगह नहीं थी. महाराणाने कुछ खयाल न किया, बल्कि छड़ीदार व जलेबदारोंको हुक्म दिया, कि एक दम सबको हटाकर रास्तह साफ़ करो. मालिककी तेज़ मिज़ाजीके खौफ़से उन लोगोंने उमराव व सर्दारोंको ललकारकर कहा, कि रास्तह छोड़ो ! परन्तु पहाड़ी रास्तेकी तंगीसे सब लाचार थे. उन छोटे लोगोंने उमरावोंके घोड़ोंके पुट्ठोंपर दो चार छड़ियां भी मार दीं. इसवक्त तो सब

(१) सुनागया है, कि राणी झालीको गर्भ था, मगर खौफ़से बाईजीराजने इनकार करदिया.

(२) गद्दी तज्वीज़ होनेके वक्त महाराज अरिसिंहने ज़नानेमें जाकर अर्ज़ किया, कि मुझको राज्यका लोभ नहीं है, अगर झालीजीके गर्भ हो, तो कहना चाहिये, पुत्र हुआ, तो मेरा मालिक होगा और कन्या हुई, तो विवाह करा दियाजायेगा. इसपर भी बाईजीराजने वही जवाब दिया, जो कि सर्दारोंसे कहा था.

(३) महाराणा गद्दी नशीनीके बाद शोक निवृत्त्यर्थ बड़ी धूम धामसे शहरके बाहर सब्ज़ी (हरियाली) पूजने को किसी जगहपर जाते हैं, जो हरीकी सवारी मश्हूर है.

लोगोंने खामोश होकर उस घाटेको तै किया, लेकिन् पहाड़से निकलकर आमेरीकी बावड़ीपर उतर पड़े, और महाराणा उदयपुर चलेआये. पीछेसे कुल सर्दारोंने मिलकर सलाह की, कि जब शुरूसे ही महाराणामें ऐसी बे मुरव्वती है, तो आगे क्या होगा? अगर ग़म खाकर बे .इज़्ज़तीके साथ भी कोई अपना ठिकाना बचावेगा, तो भी यह उसे आरामसे दम न लेने देंगे. इसपर बेदलाके राव रामचन्द्रने गोगूंदाके राज जशवन्तसिंहसे कहा, कि मेरी बेटी, तो महाराणा राजसिंहके साथ ही सती होगई, वर्नह मैं सब कुछ कर दिखाता. अब तुम्हारी बहिन ज़िन्दह है, अगर हिम्मत हो, तो सब कुछ हो सकेगा. इस तरहपर सलाह करनेके बाद सब सर्दार उदयपुर अपनी अपनी हवेलियोंमें आये, और इसी दिनसे मेवाड़में फ़सादका बीज बोया गया.

महाराणाने अपने ख़ैरख़्वाह अमरचन्दसे मुसाहिबीका काम तब्दील करके जशवन्तराय पंचोलीको दिया, और महता अगरचन्द बछावतको अपना सलाहकार मुक़र्रर किया. अगर्चि ये लोग भी बड़े ख़ैरख़्वाह थे, लेकिन् अगले ख़ैरख़्वाहोंकी तब्दीलातसे लोगोंके दिल बिगड़ गये थे. कुछ अ़र्सह बाद एक लड़का पैदा हुआ, जो ज़नानख़ानहसे ख़ुफ़ियह तौरपर गोगूंदाके राज जशवन्तसिंहके सुपुर्द किया गया; और महाराणा प्रतापसिंह व महाराणा राजसिंहकी राणियोंने कहलाया, कि यह लड़का तुम्हारा मालिक और रियासत मेवाड़का हक़्दार है; मर्ज़ी हो, इसकी पर्वरिश करो, चाहे मरवाडालो. जशवन्तसिंह उस लड़केको लेकर गोगूंदेकी तरफ़ रवानह हुआ, और तलावलीके क़िलेमें उसकी पर्वरिश की. यह बात कुछ कुछ मश्हूर होने लगी.

बाज़का यह भी बयान है, कि यह लड़का सलूंबर रावत् जोधसिंहके पास भेजा गया था, जिसको उसने गोगूंदे होकर कुम्भलमेर भेज दिया. ग़रज़ इस तरहकी बातें सुनकर महाराणाने तसल्ली, तो नहीं दी; और सब लोगोंपर अपना रोब जमानेके लिये दबाव डाला, जिससे दिन दिन अब्तरी फैलती गई. महाराणाके दिलसे राजपूतोंका और राजपूतोंके दिलसे महाराणाका एतिबार जाता रहा. इसपर महाराणाने सिन्धी मुसल्मान वग़ैरह सर्बन्दी नौकर बढ़ाये. पहिले देलवाड़ाके राज राघवदेवके मिलानेकी तद्बीर की, फिर शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहको बुलवाया, लेकिन् महाराणाको सर्दारोंका एतिबार न था, और महाराणाकी तरफ़से सर्दारोंकी भी तसल्ली नहीं हुई. अगर्चि जशवन्तराय पंचोली और महता अगरचन्द वग़ैरह ख़ैरख़्वाह लोग महाराणाको समझाते थे, लेकिन् वे अपनी जवानी और बहादुरीके नशेमें इनको डरपोक बतलाकर न मानते. सच है, ज़िदकी आदतपर नसीहतका असर, नहीं होता. भैंसरोड़के रावत् लालसिंहको महाराणाने अपनी तरफ़ मिलाकर कहा,

कि काका नाथसिंहको मार डालना चाहिये, क्योंकि महाराणाको उसका बहुत ख़ौफ़ था. इस सबबसे कि अव्वल, तो जयपुरके महाराजा माधवसिंह उसके हिमायती थे, जिन्होंने महाराणा प्रतापसिंह दूसरेके ज़मानहमें भी उसे मदद देना चाहा था; दूसरे मरहटी फ़ौजमें भी नाथसिंहका नाम मश्हूर होगया था; तीसरे नाथसिंह महाराणाकी ज़िद्दी और ज़ालिमानह आदतोंसे नफ़्रत करके अपनी जागीर बागोरको चला गया था; इससे महाराणाको और भी ज़ियादह अन्देशह होगया, कि यह कोई नया फ़साद ज़रूर उठावेगा. इन बातोंसे रावत् लालसिंहको उसके मारनेपर तय्यार किया, और उसे अव्वल दरजेके उमरावोंकी बराबर इज़्ज़त मिलनेका उम्मेदवार किया.

लालसिंह उदयपुरसे रुख़्सत होकर अपनी जागीर भैंसरोड़को गया. महाराणाने कई खास रुक्क़े लिख भेजे, कि जल्दी नाथसिंहका काम तमाम करो. सवा वर्ष तक लालसिंह टालता रहा, लेकिन् जब महाराणाकी ताकीद लगातार पहुंचने लगीं, तो आख़िरकार हुक्मकी तामील करनेपर मुस्तइद हुआ. पाठकोंके अवलोकनार्थ आख़िरी खास रुक्क़े की नक़्ल नीचे दर्जकरते हैं, जो महाराणाने लालसिंहको लिखा था :-

खास रुक्केकी नक़्ल.

सवसती श्री रावतजी राज हजुर म्हारो जुहार मालुम हुवे, अप्रंच॥ अरज आप की आई, जीरो लीपबो तो हुवो न्ही, अ बात जो आपी तीनही ज्णा जाणा हा, दुजो अठ हाजर न्ही हे, सो वाचता रुको डेरा बार करसी ने ओ काम बेगो करसी आप लकी, जो अब बक आओ हे, सो श्री अेकलीगजी हरामषोराने सजा देवे हीगा, ने म्हारे माथे आपरो आक हे, आपसु म्हारा बंसको दुजी करेगा, जीने हीदुने सोगन हे, जो सोगन हे. समत १८२० बरके पोस सु० १५ गुरे.

लालसिंह भैंसरोड़ से रवानह होकर बागोर पहुंचा, उस वक़्त नाथसिंह नर्मदेश्वरका पूजन कर रहा था, ख़बर पहुंचनेपर यह कहा, कि भाई लालसिंहसे कुछ पर्हेज़ नहीं है; भीतर चला आवे. लालसिंहने भीतर जाकर दस क़दमसे सलाम किया; नाथसिंहने हंसकर सलामका जवाब दिया, पूजनके वक़्त उठकर ताज़ीम देनेका क़ाइदह नहीं है, इसलिये उसने मुआफ़ी मांगी. लालसिंहने जवाबके एवज़ कमरसे कटार निकालकर नाथसिंहकी छातीमें ज़ोरसे मारा, कि कलेजा फोड़कर पीठकी तरफ़ निकल गया; लालसिंह उसी दम पीछा लौटा और अपने घोड़ेपर सवार होकर भागा. यह वाक़िआ विक्रमी १८२० माघ शुक्ल २ [हि० ११७७ ता० १ शअ्बान

= ई० १७६४ ता० ४ फेब्रुअरी] के फ़जको हुआ. लालसिंहने भैंसरोड़ जाकर महाराणाको नाथसिंहके मारेजानेकी खुश ख़बरी लिख भेजी, जिसके एवज़ महाराणाने एक ख़ास रुक्क़ा लिखा, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

खास रुक्केकी नक्ल.

सवसती श्री रावत लालसीघजी हजुर म्हारो जुहार मालुम हुवे, अप्रच॥ आपने म्हारा हुकम माफीक बागोर तावारी चाकरी करी ने मन राजी होर आपने सोलाम्हे बानसीरी बेठक दीदी, जीमे दुजी होगा न्ही, म्हारो बचन हे. समत १८२० का बरके फा० सु० ३.

इस वारिदातके चन्द महीनों बाद रावत् लालसिंह भी अपनी मौतसे मरगया. महाराज नाथसिंहके क्रमानुयायी बयान करते हैं, कि उक्त महाराजका इरादह महाराणाके बर्ख़िलाफ़ नहीं था, बल्कि उन्होंने मरते वक्त नर्मदेश्वर पर खून बहाकर यह कहा, कि हमारा इरादह अपने मालिकके बर्ख़िलाफ़ न था; अगर बद इरादह हो, तो हमने उसका एवज़ पा लिया, और नहीं है, तो इस कामके करने वालोंको बाणनाथ (नर्मदेश्वर) सज़ा देंगे. उनका बयान है, कि इसी अपराधके कारण लालसिंह थोड़े ही दिनों बाद मरगया, और महाराणाने भी उसी तरह इस दुन्याको छोड़ा.

इन्हीं दिनोंमें मलहार राव हुल्करने मेवाड़पर चढ़ाई करनेकी धमकियां लिख भेजीं, और लिखा, कि पर्गनह रामपुरा, बूढ़ा, जारड़ा व कणजेड़ा (१) वग़ैरहका बक़ाया हासिल और पेश्वाका ख़िराज वग़ैरह जल्दी भेजदो. महाराणाने ख़ानगी बखेड़े और ख़र्चकी तंगीसे इन रुपयोंके देनेमें देर की, लेकिन् उस लुटेरे बहादुरको कब सब्र होसक्ता था, मेवाड़को लूटता हुआ ऊंटालेतक आपहुंचा; तब कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह और महाराणाका धायभाई रूपा उदयपुरसे भेजे गये. इन लोगोंने मलहार रावको बहुत समझाया, लेकिन् दामोंका लोभी बातोंसे कब राज़ी हो सक्ता है ? उसने साठ लाख रुपया तलब किया. लाचार मुसाहिबोंने इक्यावन लाखपर फ़ैसलह किया, और एक इक़ारनामह लिखा गया, जिसकी नक्ल नीचे दर्ज की जाती है:-

(१) इसी समयसे हुल्करने उक्त पर्गनोंपर क़ब्ज़ह करलिया, जो अबतक मेवाड़के शामिल नहीं हुए हैं

इक़ारनामहकी नक्ल.

॥ श्री मोरच्या ॥

श्री
महालसाकान्त
चरणी तत्पर खंडो
जी सुत मल्हार-
जी होलकर.

करारनामा राज श्री मलारराव होलकर अपरंच श्री राणाजीसुं म्हारो हेत बेहार थेठसुं चाल्या आया है, जणीमे कीणी बातको तफावत न पडसी. श्रीमंतपंत प्रधानजीरा पटा बाबत तथा सींधारा तथा घरु परगणा बुढारा मुकाता वा जोरडा, कणजेरा, जामुन्या, रामपुराके टपे बाबत लेपो समत् १८२० बीस रे साल तांइ सुध करे लीधा. बाकीका रुपया तीनो मामलतका निकल्या, जींका लीपतं कराय लीया. अब कोइ अठां पहलीरो लीप्यो पढ्यो नीसरे सो रद, सारो सुलभाडो अठां पहलीरो साफ कीधो, जो कोइ भलो बुरो झुटी सांची मालुम करे सो मंजुर नंही; इणी बातरो करारनामा बेल भंडार करे दीधा. मीती वैशाप वद ५ समत् १८२० (१).

मोर्तब
शुद.

अब महाराणाको यह फ़िक्र हुई, कि जिस तरह होसके उस तरह, सलूंबरके रावत् जोधसिंहको मारडालना चाहिये, क्योंकि वह मुख़ालिफ़ सर्दारोंको खुफ़ियह तौरपर मदद देता है. और इसी मन्शासे महाराणाने उक्त रावत्के नाम इस मज्मूनका एक ख़ास रुक़ा लिखा, कि आप यहां बहुत जल्दी चले आवें. लेकिन् उसे पहिले ही मालूम होगया था, कि मैं उदयपुर जानेमें मारा जाऊंगा, इसलिये टाला टूली करता रहा. आख़िरकार जब महाराणाको यह ख़बर मिली, कि जोधसिंह किसी त्योहारपर अपनी ससुराल मोही (२) जाता है, तो उदयपुरसे नाहर मगरेको चले गये, जहांसे कि मोहीकी तरफ़ जानेका रास्तह था. जोधसिंहने सोचा, कि महाराणाके लश्करमें होकर बग़ैर सलाम किये चला जाना बेअदबीकी बात है. लाचार वह दर्बारके रूबरू हाज़िर हुआ; महाराणा सलाहके बहानेसे रावत्को एकान्तमें लेगये, और एक पानकी बीड़ी जेबसे निकालकर जोधसिंहसे कहा, कि यह बीड़ी या तो मुझको खिलाइये, अथवा आप खाजाइये. इस इशारेसे रावत्को साफ़ मालूम होगया, कि इसमें ज़हर है; अफ्सोसके साथ उसको महाराणाके हाथसे लेकर खागया, और कहा, कि "आप बहुत वर्षतक ज़िन्दह रहें, नौकरोंकी जान मालिककी ख़ैरख़्वाहीपर कुर्बान है." थोड़ी देरके बाद महाराणाने अपनी तसल्लीके लाइक़ ज़हरका असर देखकर रावत्को उसके हमराहियोंमें भेजदिया, कि जहां जाकर वह मरगया, जिसकी छत्री नाहर-मगरेकी नदीपर अबतक मौजूद है.

(१) इस काग़ज़में श्रावणी संवत् है, और चैत्रादि हिसाबसे संवत् १८२१ लग गया.

(२) यहांके भाटी जागीरदारकी बेटीके साथ जोधसिंहकी शादी हुई थी.

जोधसिंहके मारनेमें महाराणाकी बड़ी बदनामी हुई, क्योंकि यह सर्दार इनका दिली ख़ैरख़्वाह था; सिर्फ़ मालिकसे डरकर सलूंबरमें बैठ रहा था. इस वारिदातसे महाराणा का बिल्कुल एतिबार उठगया, लेकिन् उसके बेटे पहाड़सिंहके दिलमें कोई फ़र्क़ नहीं आया, और वह तन मनसे महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर रहा.

इन्हीं दिनोंमें भैंसरोड़का रावत् लालसिंह गुज़रगया. महाराणाने उसके बेटे मानसिंहको उसके पिताकी इज़्ज़त देकर तसल्लीका पर्वानह लिख भेजा, जिसके जवाबमें मानसिंहने नीचे लिखी अ़र्ज़ी रवानह कीः-

भैंसरोड़के रावत् मानसिंहकी अ़र्ज़ीकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी १

सध श्री श्री श्री श्री श्री जी हजुर, रावत मांनसीघरी अरज मालम हुवे राज, अपरच घणी मोथी नवाजस मेरवनी करे अमराव पदवी बगसी, ने मोटो कीदो सो मु मारी तरफथी आंतेकरनसु धण्यांरी बदगी मंहे जीव जंमा घर बचे तथा धन माया बचे धणीरो हुकम माथा उपरे राषवा बचे ने धनी जणी बदारि बंदगी भुलावे जणीमाहे मारी आडी थी कदीही कसर पाडु तो मुने श्रीअेकलंगजी पोचे; तथा मु भाई सगा सनमंदी थी श्री हजुर हुकम करे जणी भेलो वु ने दुजु धण्यांरी मरजी सवाअ मु कणी भेलो हवु, तो मने श्री जीरा पतावा अरुठ होवे ने जो धणी परमेसुर से, सो धणी हुकम करे सो मारा माथा उपरे. असल बाप थी उपनो सु, तो धण्यांरा पैतावा मारा माथा उपर रापसु दुजी कई वात जंणे नही राज समत १८२१ रा फागुण सद ४.

महाराणाने यह सोचा, कि देलवाड़ेके राज राघवदेवको तसल्ली देकर बुलाया जावे. क्योंकि वह पेश्तरसे नाराज़ था, और इन महाराणाने गद्दी बैठने बाद उसको और भी ज़ियादह भड़का दिया. उसने काशी व गया जानेकी इजाज़त चाही, तब महाराणाने तेवर बदलकर कहा, कि "भलेही द्वारिका जाओ". इस बारेमें कर्नेल टॉडने राघवदेवके काग़ज़ (१) का तर्जमह लिखा है, जो उसने प्रधान जशवन्तरायको लिखा था (२).

---

(१) कर्नेल टॉडने उक्त काग़ज़पर नोट देकर राघवदेवको ग़लतीसे अपनी किताबमें देलवाड़ेके एवज़ सादड़ीका जागीरदार लिखा है.

(२) राज राघवदेवने जशवन्तराय पंचोलीके नाम काग़ज़ लिखा उसका तर्जमह कर्नेल टॉडकी किताब टॉडराजस्थान (कलकत्तेकी छपीहुई) के पृष्ठ ४५३ जिल्द १ के १६ वें प्रकरणसे यहांपर दर्ज किया जाता हैः- राज राणा राघवदेवकी तरफ़से जशवन्तराय पंचोलीके नाम अल्क़ाब आदाब (उपमा) के बाद -

उसमें इसी ऊपर लिखे हुए रंजकी बाबत् शिकायत दर्ज है. उसी अ़रसहमें महाराणाने एक ख़ास रुक़ा उसकी तसल्लीके लाइक़ लिख भेजा, जिसपर राज राघवदेवने एक अ़र्ज़ी महाराणाको लिखी, उसकी नक़्ल नीचे दर्ज की जाती है :-

अ़र्ज़ीकी नक़्ल.

सिद्ध श्री श्री श्री श्री श्री जी हुजूर अरज सेवग राघोदेवरी अरज मालम व्हे राज अप्रचः श्री जी परमेसुर से, अनदाता से राज श्री हजुरसुं षास दसकतां रुको मया हुवो, सेवग माथे चेडे लीदो, राज मेरबानी करे अत्रो बोले यर लषवारो हुकम हुवो, जो मारा मनरो भांत भांत संदेह दुर हुवो. मारे पण श्री जीरा हुकमरी बात से. मुने श्री जी जणी रीतरी बंदगी भलावे, सो हुं मारा जीव बचे धन बचे गर वचे अंतेकरण बचे श्री जी हुकम करे जणी में कुछ रापुं तो श्री जीरा पेतावारी आण. कही भाइी सगा सुमंदी थी श्री जीरा सुदरवामें तो हुकम थी भेलपण रापुं, ने श्री पावंदारा बगाडमें कणी भेलो नहीं. श्री जीरे भलेमें मारे भलां आछा बुरां धण्या सामल छुं. अणी लष्यामें कठे ही तफावत रापुं तो श्री एकलींगजी मुने पोचेसी. श्री जीरे ने मारे बचे श्री परमेसुरजी से असल रजपूत वेसी, सो तो वचनमें तफावत नुं पाडसी राज. चेत सुद ५ भोमे संवत् १८२१ (१) वरपे.

अब हम उस संवत्का बयान करते हैं, जिसमें कि मेवाड़की बर्बादीका प्रागट्य हुआ. महाराणाकी तेज़ मिज़ाजी और गद्दी नशीनीसे पहिलेकी ओछी और ख़फ़ीफ़ बातोंकी अ़दावतोंपर हरएकके साथ टेढ़ी निगाह, ख़ैरख़्वाहोंकी सलाहपर बे एतिबारी,

---

आपकी चिट्ठी पहुंची क़दीम ज़मानेसे आप हमारे दोस्त चले आये हो, और हमेशहसे वफ़ादार रहे हो, इसलिये कि मैं हमेशहसे महाराणाके ख़ानदानका नमक हलाल हूं. मैं कोई चीज़ आपसे छिपी नहीं रक्खा चाहता, इसलिये मैं लिखता हूं, कि अब मेरा दिल ख़िद्मत गुज़ारी और नौकरीको नहीं चाहता है; मेरा इरादह गया जानेका है. जब मैंने यह ज़िक्र महाराणासे किया, उन्होंने ताना देकर मुझसे कहा कि, तुम्हें द्वारिका जाना चाहिये. अगर मैं ठहरूं, तो महाराणा मेरे जागीरके ग्राम बहाल करेंगे, जैसे कि जैतजीके वक़्में थे. मेरे बुज़ुर्गोंने बड़ी बड़ी नौकरी की हैं, और चौदह वर्षकी उम्रसे मैं भी ख़िद्मत करता आता हूं; अगर दर्बार मुझपर मिहर्बानी किया चाहते हैं, तो यह ऐन वक़्त है.

(१) इस काग़ज़का संवत श्रावणादि है, और चैत्रादि हिसाबसे संवत १८२२ शुरू होगया.

और बदख्वाहोंकी चिकनी चुपड़ी बातोंपर अमल होनेके बाइस रियासती लोगोंका नाकमें दम होगया. कुल सर्दारोंने एक मत होकर रियासतका एक दूसरा दावेदार मश्हूर किया. विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = ई० १७६५] के शुरू होते ही गोगूंदाके झाला जशवन्तसिंहने रत्नसिंह नामी लड़केको कुम्भलमेर पहुंचाया, और प्रसिद्ध किया, कि "यह महाराणा राजसिंहका फ़र्जन्द मेवाड़की गद्दीका वारिस है". मैं (कविराजा श्यामलदास) ने उन लोगोंकी ज़बानी सुना है, कि जिनने उस ज़मानेके आदमियोंसे यह ज़िक्र सुना था. मेरे पिता भी अक्सर कहा करते थे, कि अस्लमें वह लड़का महाराणा राजसिंहका ही फ़र्जन्द था, जो महाराणा अरिसिंहके डरसे पोशीदह रक्खा गया; लेकिन् वह सात वर्षकी उम्र पाकर शीतला निकलनेसे कुम्भलमेरमें ही मरगया, और मुख़ालिफ़ सर्दारोंने किसी राजपूतके लड़केको उसके एवज़ खड़ा करदिया. बाज़ोंका यह भी क़ौल है, कि वह अस्लमें ही बनावटी था; जैसा कि शुरूमें आंमेरीकी बावड़ीपर सलाह होनेका ज़िक्र लिखा है. चाहे यह ग़लत हो या सहीह, लेकिन् हम यह लिख सक्ते हैं, कि महाराणा अरिसिंह और बनावटी रत्नसिंहके मददगार सर्दार मेवाड़ देशको बर्बाद करने वाले थे. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि कुल मेवाड़के सर्दार रत्नसिंहकी तरफ़ होगये, ख़ाली पांच अरिसिंहके ख़ैरख्वाह रहे, याने सलूंबर, बीझोलियां, बदनौर, आमेट और घाणेराव. इनमेंसे सलूंबर भी पहिले रत्नसिंहके शरीक था, परन्तु फिर आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे अरिसिंहका मददगार होगया. यह कहावत हमने भी सुनी है, कि रावत् पहाड़सिंहको महाराणाने हिकमत अमलीसे अपनेमें मिलालिया, लेकिन् मेरे (कविराजा श्यामलदासके) पिता हमेशह मुझसे कहा करते थे, कि यह बात ग़लत है. रावत् पहाड़सिंह और उसका चचा भीमसिंह महाराणाके हाथसे जोधसिंहके मरनेको ग़नीमत जानकर यह कहते थे, कि आदमी दुन्यामें हमेशह ज़िन्दह नहीं रह सक्ता. जोधसिंहका अपने मालिकके हाथसे मरना पहाड़सिंहकी ख़ैरख्वाहीका उम्दह सुबूत होगया, और रावत् पहाड़सिंहके उज्जैनमें मारे जानेसे यह बात बिल्कुल पुख़्तह मालूम होती है; कि पहाड़सिंह महाराणाका ख़ैरख्वाह था, जिसका बयान आगे लिखा जायेगा.

वसन्तपाल देपुरा रत्नसिंहका प्रधान बनाया गया, जिसने महाराणा रत्नसिंहके नामसे मेवाड़में हुक्म अह्काम जारी किये. वसन्तपाल भी उसी चालपर चला, जिसपर कि उसका बुज़ुर्ग साह आसा देपुरा चला था- (देखो पृष्ठ ६२).

इसी अरसहमें एक शख़्स बड़ा आक़िल और होश्यार महाराणाके हाथ लगा, वह ज़ालिमसिंह झाला था, जिसे कोटाके महारावने निकाल दिया था. यह कोटा और जयपुरकी लड़ाईमें नामवर होगया, इसका ज़िक्र कोटेकी तवारीख़में लिखा

गया है. महाराणाने उसे चीताखेड़ाकी जागीर और राजराणाका ख़िताब दिया. अगर महाराणा इसकी सलाहपर भी चलते, तो ज़रूर कुछ फ़ायदह होता, परन्तु वह अपनी बहादुरीके घमंडमें ज़बर्दस्तीकी कार्रवाईको पसन्द करते थे. इस वक्त ऊपर लिखे हुए सर्दारोंके सिवा कुल मेवाड़के सर्दार रत्नसिंहके तरफ़दार होगये थे. कर्नेल टॉड लिखता है, कि रत्नसिंहके सर्दारोंमें यह आठ सरगिरोह थे :- भींडर, देवगढ़, सादड़ी, गोगूंदा, देलवाड़ा, बेदला, कोठारिया और कान्होड़.

हमने कई बुज़ुर्गोंकी ज़बानी सुना है, कि देलवाड़ेका राज राघवदेव महाराणाका दिली खैरख्वाह था, जिसका सुबूत उसकी अर्ज़ीसे भी साफ़ ज़ाहिर है; लेकिन् महाराणा को उसका एतिबार न था. महाराणाने शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहको मिलालेनेकी फ़िक्र की, क्योंकि उम्मेदसिंह व उसके पोते रणसिंहमें ना इत्तिफ़ाक़ी होरही थी, और वह अपने छोटे बेटे ज़ालिमसिंहसे खुश था, इस मौकेको ग़नीमत जानकर उसके नाम पूरी तसल्लीका एक रुक़ा लिख भेजा; लेकिन् उसने उदयपुर आनेमें उज़्र किया, और कहा, कि मुझे महाराणा जगत्सिंहने, जो जागीर दी थी, वह भी आजतक नहीं मिली. तब महाराणाने काछोलाके पर्गनहकी उठंतरी देकर मन्ना धायभाईको उसके पास भेजा. यह पर्गनह महाराणा जगत्सिंहने राजा उम्मेदसिंहको जागीरमें लिख दिया था, लेकिन् उक्त महाराणाका देहान्त होगया, और उनके पुत्र प्रतापसिंहकी नाराज़गीसे क़ब्ज़ह मुल्तवी रहा; अब मन्ना धायभाईको भेजकर उम्मेदसिंहको दिया गया. उस ज़मानहका एक अस्ली कागृज़ हमारे पास है, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :-

कागृज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी

मनजीने साहेपुरे रावतजीरी तरफसुं राजाजी तीरे उठंतरी ले मोकल्यो, सो रावत उरजनसिंहजी इतरा समाचार कह्या, सो मनजी पकी करे उठंतरी देसी, जिणीरो आछा बुरारो जमो रावतजी पहाड़सिंहजी उरजणसिंहजीरो है- विगत-

हुकम परमाणे श्री जीरी बंदगी करे, जणी में तफावत न पड़े.

मेवाड़रा पांच सरदारां प्रमाणे देसरे चोथ तियाई दसोद बिराड़ भला भुंडामें हुकम प्रमाणे पंचां स्यामल श्री जीरा सुधारामें हजुररा हुकम प्रमाणे बंदगी करे, जतरे तो म्हारो वचन हे; अर श्री जीरा विगाड़ामें धण्यारा हुकम सिवाय राजाजीरी नीतमें कसर पड़े, जठे रावतजीरो वचन न हे, षोलेर कहेदेणी. धण्यारा सुधरवामें तो रावतजी राजाजी भेला श्री जीरो सुधारवारी नीत जाणी बी नहीं स्याम धरमी व्हे सो धण्यां

भेलो होय, धण्यांरा बिगाड़ा भेलो नहीं. श्री जीका सुधरवामें भेलप छे, हुकम प्रमाणे बंदगी करे जितरे जायगां कोय हुकम लोपे जठे रावतजी अरज करे, पटो पालसे करावे तथा दरबार थी पालसे करे, बदनीत, तकसीर पडे, तो ओलंभो देवाय.

पटारा गामांमे गडी न बंधे.

श्री जीरा हुकम सिवाय कहीं ठकाणे कागद पतर सुरका दुरकी हेत बेवहार नही करे.

श्री जीरा परवाना रुका दास हजुर आय अंतकरण चित्त लगाय हुकम प्रमाणे बंदगी करे, बंदगीमें कसर न रापे. भाई सगा भेलपण का फरक देपणो नहीं; लुणकी नीत रापणी और पी मनजीने उपजे सो श्री म्हादेवजीरा देवरामें सोगन सपत्त पकी पवावेगा, सेहर में म्हेलामें चाकरां रो फितुर न वे; रावतजीरा चाकरां प्रमाणे रहे.

राजा उम्मेदसिंहकी अर्ज़ीकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी

स्वस्ती श्री माहाराजा धीराज महाराणा श्री ५ श्री अरसीहजी हजुरी छोरु राजा ऊमेदसीगको पावा मुजरो मालम होवे– अप्रंच॥ श्री जी मुने महरबान होअे पटो मया कीधो, सो पगे लागी माथे चढाआ लीधो, माहारे तो श्री जी परमेसुर छे; श्री जीरा हुकम परमाणे अतेहेकरणमु श्री दरबारकी बदगीमें धण्यांरो सुधरे जी बातमें कधेही वोछ रापु, तो मने श्री एकलीगजी पोछे धणी हुकम करे ज्या करां; मुरजी हो जणाथी हेत रापा, पातसाहीरो तथा दुजाहीरो तणारो सादन रापु नी और कणीरो सादन करु, तो दरबाररो पटो पाछो श्री हजूर नजर करु. रावत पाड़सीगजी दुजी याददास्ती नीचे माहारा अपर कराया छे, जतरी बातमें तफावत पड़े, तो मने श्री लछमीनाराणजी पोचे. आगली तगसीर धणी मने माफ करी, सो मामे परमेसुर है, तो हु पण मुजरा सरीकी बंदगी करी बताऊ, तो असली रजपुर अर माहारी तो साहारी ही सरम धण्याने हे, सो धणी चंताई करसी राज; मती पोस वीद २ संवत १८२२ बरपे.

बनेड़ेका राजा रायसिंह, तो पेश्तरसे ही महाराणाका फ़र्मांबर्दार था. अब पर्गनह काछोला मिलनेपर राजा उम्मेद्सिंह भी महाराणासे आमिला. इन सर्दारोंके एकट्ठा होनेसे महाराणाको बड़ी ताक़त होगई, और मेवाड़से रत्नसिंहका क़ब्ज़ह उठा दिया, जो उदयपुरके गिर्दो नवाह तक आ पहुंचा था. रत्नसिंहकी तरफ़ रावत् जशवन्तसिंह और उसका बेटा राघवदेव दोनों बड़े ताक़तवर व अक़्मन्द सर्दार थे; उन्होंने सोचा, कि अब बिदून किसी ज़बर्दस्त शख़्सकी मददके कामयाब होना मुश्किल है. इसलिये वे मरहटोंकी तरफ़ कोशिश करने लगे, अरिसिंह

भी अपनी ताक़त बढ़ा रहे थे. यशवन्तराय कायस्थसे प्रधाना उतारकर महता अगरचन्दको दियागया, और ज़ालिमसिंह झालाकी सलाहपर बन्दोबस्त होने लगा. विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = ई० १७६७] में यह तमाम बद इन्तिज़ामी दूर हुई. इन्हीं दिनोंमें देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहका बेटा राघवदेव माधवराव सेंधियाके पास पहुंचा, और उसको अपना मददगार बनानेके लिये लिखदिया, कि महाराणा अरिसिंहको गद्दीसे उतार देनेके बाद हम तुमको सवा करोड़ रुपया देंगे. सेंधियाने भी लालचमें आकर इक़ार कर लिया. लेकिन् ज़ालिमसिंह झाला और अगरचन्द महताने पेश्वाके फ़ौजी अफ़्सर दौला मियां और रघूजी पायग्याकी मारिफ़त पहिले बात चीत कर रक्खी थी. इसलिये उक्त अफ़्सरोंने सेंधियाको लालचकी तरफ़ झुकाहुआ देखकर मना किया, परन्तु उसने नहीं माना. इसपर ये दोनों अफ़्सर नाराज़ होकर महाराणा अरिसिंहके पास उदयपुर चले आये. रघूजी पायग्याके पास पांच हज़ार और दौला मियांके पास तीन हज़ार सवारोंकी जमइयत थी. इनके आनेसे महाराणा की हिम्मत बढ़गई. और इन लोगोंने कहा, कि माधवराव सेंधियाकी हमारे साम्हने कुछ हक़ीक़त नहीं है; अगर उसने फ़ौजी कार्रवाई की, तो उसे पकड़कर आपके पास ले आवेंगे. महाराणा तो पहिलेसे ही बहादुरीके घमंडमें चूर थे, इन लोगोंकी बातोंसे और भी ज़ियादह जोशमें आये, लेकिन् इनके आक़िल मुसाहिबोंने पेश्वाके सर्दारोंमेंसे बहेरजी ताकपीर व पंडित राघवरामसे मिलावट करके बीस लाख रुपया देनेपर रत्नसिंहको कुम्भलमेरसे निकालदेनेका इक़ार करालिया. उस इक़ारनामहकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

इक़ार नामहकी नक्ल.

श्रीरामजी.

(मुहर.)

सीध श्री लीपाईतं राज श्री बहेरजी ताकपीर वा पंडत श्री राघोरामजी अपरंच श्री जीरे देसमें ही हरामषोरां राणा राजसींघजीरा बेटारो फतुर झुठो उठाया, जीण बाबत श्री दीवाणजी हजुरमें अतरो करार ठहरायो, सो यो काम कर देणो. वहर रुपीया २०००००० बीस लाप लेणा ठहराया, सो श्री जीरा जतरा मतलब हे, जतरा करदेना. श्री जीरा कामदारारा हाथरा लीप्या प्रमाण ए रुपीया

लेणा, काम करदेणा; तीनही सरकाररो नजराणो चुकाईलीया, सो फतुर बावत तीन ही सरकाररा बोलवा पावे न्ही मीती भादवा सुध १४ समत्त १८२५.

मोरंब
सुर.

इस इक़ार नामहका हाल सुनकर माधवराव सेंधिया ज़ियादह भड़का, जिससे उसकी तामीलमें देर हुई. यह ख़बर सुनकर शाहपुरेका राजा उम्मेदसिंह, देलवाड़े राज राघवदेव और सलूंबर रावत् पहाड़सिंह तीनों, मरहटे सर्दारोंके पास भेजे गये. इन लोगोंने उनसे बात चीत की. बहेरजी वगैरह सर्दारोंने उनको तसल्ली दी, तो भी वे माधवराव सेंधियाको मिलानेकी कोशिशमें लगे, और जो लोग उदयपुरमें रत्नसिंहके तरफ़दार थे, उनपर सख्तियां होने लगीं. इस बारेमें एक अर्ज़ी मरहटी लश्करसे उक्त सर्दारोंने महाराणा अरिसिंहके नाम लिखभेजी, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है :-

अर्ज़ीकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी

मुजरो, मालुम
लेवे, राज,
मुजरो, मालुम
लेवे, जी,
मुजरो, मालुम
लेवे.

सिध श्री श्री श्री श्री श्री जी हजूर, अरज रावत पहाड़सिंह, राणा राघवदेव, राजा ओमेदसिंहरी मालुम होवे राज, अप्रंचः श्री हजूर थी रुको आयो, समाचार वांच्या राज, प्रोहितजीरी हवेली एकलिंगदासजीरा घरांरा समाचार लिष्या, सो जाएया राज, सो दोही जायगारो घणो जावतो राषेगा राज, साज बाज आगो पाछो जाय नही, ज्युं करेगा राज, ने बाबा बषतसिंहजीरी हवेलीरो जाबतो कीदो होवे, तो पको करावेगा राज, ने नही कीदो होवे, तो अब करावेगा राज; नही जा बात पण जाहर नही करेगा. जीन कुंवर जालमसिंहजीरे नाम पंचारा नामरो कागद लषाय मेल्यो, सो वो मान ही लेसी; नही माने तो श्री हजुर सुं पण मुलायजो नहीं करेगा. जिनने राणा राजसिंहजीरी झालीरो घर संबंद मेलगा ने उणीने दुजा चौपाड़ माहे मेले देगा जी, अस्या समाचार पुगा है, सो पोंच रुपियांरो माल पुरकस लाग्या, आण

मेल्यो सो निकल्या नही निकल्यारो अटकाव रापेगा नही, नोरा सुदी समाले लीज्यो जी, ने उणांरी छोरवां वासते हुकम कीदो थो, सो जब्त करावोगा जी. संवत १८२५ रा आसोज वीद १४.

महाराणा राजसिंहकी राणी झाली और उनके तरफ़दारोंपर उदयपुरमें सख़्तियां होनेकी ख़बर रावत् जशवन्तसिंहके बेटे राघवदेवकी मारिफ़त सुनकर माधवराव सेंधिया ज़ियादह भड़का, और उसने कहा, कि हमारी हिमायत जानकर उनपर सख़्तियां होती हैं, तो मैं मेवाड़को ज़रूर देखूंगा. इन बातोंसे ना उम्मेद होकर पहाड़सिंह, राघवदेव और उम्मेदसिंह, तीनों उदयपुरको लौट आये. यहां भी कई क़िस्मके आदमी मौजूद थे, और महाराणा दूसरे प्रतापसिंहके समयसे आपसमें अदावत बढ़ती रहनेसे देलवाड़ाके राज राघवदेवका शक तो पहिले ही से था, इस वक्त लोगोंने महाराणाके दिलपर बख़ूबी नक़्श कर दिया, कि "यह इक़ार नामह देलवाड़े राजने ही पक्का न होने दिया, क्योंकि यह ख़ानगीमें फ़ितूर (रत्नसिंह) की तरफ़ मिला हुआ है."

इस वक्त राजा उम्मेदसिंह पहाड़सिंहसे मिलगया, परन्तु राज राघवदेव, जो बड़ा जुर्अतदार और आक़िल सर्दार था, कृष्णावतोंसे नहीं मिला, बल्कि महाराणा अरिसिंहके भरोसेपर मग़रूर रहा. आख़िरकार इस अदावतका नतीजह यह हुआ, कि इन्हीं महाराणाने राघवदेवको मरवाडाला. जिसका हाल इस तरहपर है, कि सिन्धियोंकी बहुतसी तन्ख़्वाह चढ़ी हुई थी, और वे लोग तन्ख़्वाह न मिलनेके सबब ज़ियादह बे क़रारी ज़ाहिर करते थे; यह मौक़ा पाकर महाराणाके इशारेके मुवाफ़िक़ रावत् पहाड़सिंह वग़ैरहने उनसे कहा, कि अगर तुम राज राघवदेवको मार डालो, तो तुम्हारी चढ़ी हुई तन्ख़्वाह हम चुका देंगे; और महाराणाने राज राघवदेवसे कहा, कि तुम जाकर सिपाहियोंको समझा दो. यह इस दग़ाबाज़ीसे वाक़िफ़ न होनेके सबब सिन्धी सिपाहियोंके बीचमें चला गया, कि पीछेसे एक हथमारेने आकर तलवारका वार किया, जिससे राघवदेवके दो टुकड़े होगये.

इस सर्दारके बेगुनाह मारेजानेसे महाराणाकी बहुत शिकायत हुई. इसके बाद फ़ौजकी तय्यारी होने लगी, पांच हज़ार सवार रघूजी पायग्याके साथ, तीन हज़ार दौला मियांके, पांच हज़ारसे कुछ कमो बेश राजा उम्मेदसिंहके, और कुछ रावत् पहाड़सिंहके साथ थे; इसके सिवा चार हज़ार सर्कारी फ़ौज थी. बाज़का क़ौल तो यह है, कि कुल सत्तरह हज़ार फ़ौज थी, और चारण कृष्णा आढ़ाने भीमविलास ग्रन्थमें महाराणाकी फ़ौज पैंतीस हज़ार लिखी है, मगर न मालूम किसका बयान सहीह है; और किसका ग़लत, क्योंकि उक्त शाइरने भी इस मुआमलेके शरीक रहनेवाले लोगोंकीही ज़बानी सुनकर लिखा होगा; इसलिये हम फ़ौजकी ठीक तादाद नहीं बता सके. अलबत्तह यह कह सक्ते हैं, कि

वह फ़ौज निस्सन्देह मरहटोंसे मुक़ाबलह करनेको काफ़ी थी, परन्तु ग़लती इतनी हुई, कि महाराणाने उसे उज्जैन भेजकर अपनी ताक़त घटादी. अगर इस फ़ौजके साथ रहकर अपने मुल्कमें ही दुश्मनसे लड़ते, तो फ़ायदेकी सूरत थी, क्योंकि इसी फ़ौजके चार पांच टुकड़े बनाकर उदयपुरके क़रीब ही चारों तरफ़से छापा मारते, तो ज़रूर काम्याब होते, परन्तु ईश्वरको जो करना मंज़ूर होता है, वैसी ही मनुष्यकी बुद्धि होजाती है.

रावत् पहाड़सिंह, राजा उम्मेदसिंह, प्रधान महता अगरचन्द, राज ज़ालिमसिंह, बनेड़के राजा रायसिंह, बीजोलियाके राव शुभकरण, भैंसरोड़के रावत् मानसिंह, बंभोराके रावत् कल्याणसिंह और मंगरोपका बाबा विशनसिंह बालक होनेके सबब उसके एवज़ पांच सौ आदमियोंकी जम्इयत और मरहटा रघूजी पायग्या व दौला मियां वग़ैरह सर्दारोंको महाराणाने हुक्म दिया, कि तुम उज्जैन जाकर माधवराव सेंधियासे मिलो; और उनसे कहो, कि अगर पेशकश लेना हो, तो हम यहां ही चुका देंगे, और लड़ाई करना हो, तो भी हम तय्यार हैं. इस तरह इन लोगोंको उदयपुरसे रवानह किया. शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने महाराणासे यह दर्ख्वास्त की, कि अगर मैं लड़ाईमें मारा जाऊं, तो मेरे छोटे बेटे ज़ालिमसिंहको शाहपुरेका मालिक बनावें. इसपर महाराणाने कहा, कि अगर हम मेवाड़के मालिक रहे, तो ऐसा ही होगा. अन्तमें सब लोग महाराणासे विदा होकर उज्जैन पहुंचे. वहां क्षिप्रा नदीके किनारे क़ियाम करके माधवराव सेंधियासे बात चीत करने लगे. माधवरावने कहा, कि महाराणा राजसिंहके फ़र्ज़न्द रत्नसिंहकी मौजूदगीमें अरिसिंह राज्यका मालिक नहीं होसक्ता. जिसपर इन सर्दारोंने जवाब दिया, कि यदि वह राजसिंहका अस्ली फ़र्ज़न्द होता, तो बेशक आपका कहना वाजिब था, लेकिन् चन्द बदख्वाह सर्दारोंने यह फ़ुतूर खड़ा किया है. अगर महाराणा राजसिंहकी महाराणीको हमल होता, तो गद्दीनशीनीके समय, जब महाराणा अरिसिंह और कुल रियासती लोगोंने दर्याफ़्त किया, उस वक़ इन्कार न होता; लेकिन् सेंधिया सवा करोड़ रुपयेके लोभसे बिल्कुल काठकी पुतली बनरहा था, और उसकी डोरी देवगढ़वाले राघवदेवके हाथमें थी; जिस तरह वह चाहता, नचाता था; उसने इन लोगोंकी बातोंपर कुछ भी ध्यान न दिया.

सेंधियाने कहा, कि मैं एक बार मेवाड़को देखूंगा, तब सर्दारोंको भी लाचार होकर लड़ाईकी तय्यारी करनी पड़ी. विक्रमी १८२५ पौष शुक्ल ६ [हि० ११८२ ता० ५ रमज़ान = ई० १७६९ ता० १३ जैन्युअरी] को दोनों तरफ़से तोप व बन्दूकें चलने लगीं. सेंधियाके पास इस वक़ पैंतीस हज़ार फ़ौज थी, तीन दिनतक बराबर लड़ाई होती रही; आख़िरकार विक्रमी पौष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = ई० ता० १६ जैन्युअरी] की

फ़ज्रको मेवाड़की फ़ौजमें सलाह हुई, कि अब हमलह करना चाहिये. सलूंबरके रावत् पहाड़सिंहको राजा उम्मेदसिंहने कहा, कि आप अभी अठारह वर्षके हैं, और शादी किये थोड़े ही दिन हुए हैं, इसलिये मुनासिब है, कि आप महाराणाके पास चले जाइये; फिर कई लड़ाइयोंमें आप को यह मौक़ा हासिल होगा. तब रावत्‌ने जवाब दिया, कि मेरी कम उम्री को न देखिये, सलूंबरके ठिकानेकी तरफ़ ख़याल करना चाहिये, कि वह कितना पुराना है, जिसकी इज़्ज़त मेरे हाथमें है. अगर एक क़दम भी पीछा हटूं, तो मेरे इज़्ज़तदार ठिकानेकी तमाम लोग हिक़ारत करेंगे; दूसरे लड़ाईका काम जवान आदमियोंके ही हाथमें होना चाहिये; आप दाना और तजिबहकार हैं, उदयपुर चले जाएं; क्योंकि महाराणाको आपकी सलाहसे बहुत फ़ायदह होगा. राजा उम्मेदसिंहने हंसकर जवाब दिया, कि बेशक आपका जवाब माकूल है, लेकिन् मुझको और आपको जुदी जुदी हालतमें मरनेके लिये ऐसा मौक़ा फिर न मिलेगा. उज्जैनका क्षेत्र, क्षिप्राका किनारा और अपने स्वामीके लिये मुल्की लड़ाईमें माराजाना ग़नीमत है. सब सर्दार केसरिया लिबास करने बाद तुलसीकी मंजरी और रुद्राक्ष पगड़ियोंमें रखकर घोड़ोंपर सवार हुए और सेंधियाकी फ़ौजपर हमलह करदिया. कहते हैं, कि यह मेवाड़ी राजपूतोंकी आख़िरी लड़ाई थी, जिसमें इन सर्दारोंने अपनेको भी बहादुरी और इज़्ज़तमें अपने बुज़ुर्गोंके बराबर कर दिखाया. बयान है, कि तोप और बन्दूक़ की लड़ाई बन्द होकर बर्छी, तलवार और कटार चलानेकी नौबत पहुंची, और एक ही हमलहमें मरहटी फ़ौजको तित्तर बित्तर करदिया; लेकिन् फ़त्हका झन्डा मेवाड़की फ़ौजके हाथमें ईश्वरको रखना मंज़ूर न था, मरहटोंके भागनेसे राजपूत मग़रूर होकर शहरको लूटने लगे.

इसी अरसेमें जयपुरसे देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहके भेजे हुए पन्द्रह हज़ार नागा अतीथ (लड़ाई करने वाले जमाअती फ़क़ीर) जिनको उसने नौकर रखकर अपने बेटे राघवदेवके पास भेजे थे, आपहुंचे; इस आसूदह फ़ौजके मिलनेसे माधवराव सेंधिया व मेवाड़के बाग़ी सर्दारोंकी हिम्मत होगई, और उन्होंने अपनी भागी हुई फ़ौजको एकट्ठा करके, उन जमाअतियों समेत दोबारह हमलह किया. मेवाड़के लोग उज्जैनकी गलियों में लूट खसोट कर रहे थे, मरहटोंका हमलह रोकनेकी ताब न लासके; लेकिन् सब मुखिया सर्दार मिलकर हमलह करने लगे; और दोनों तरफ़के हज़ारों आदमी मारे गये. राजा उम्मेदसिंह व रावत् पहाड़सिंह बहादुरीके साथ काम आये; जिस वक्त राजा उम्मेदसिंह जांकन्दनीकी हालतमें अपने ख़ून और मृत्तिकासे पिंड बना रहे थे, उस वक्त एक मरहटे सवारने राजाकी छातीमें बांस मारकर कहा, कि इसने बहुत सिपाहियोंकी जान ली है. उसी वक्त मरहटी फ़ौजके एक बड़े अफ़्सरने उस सवारको डांटकर

कहा, कि तेरा बाबा खड़ा था, उस वक़ बांस मारता, तो बहादुरी थी; फिर उस अफ़्सरने राजासे कहा, कि तुम चित्तौड़ गढ़को अपने सिरसे बंधा बतलाते थे; अब वह कहां है ? राजाने जवाब दिया, कि सिरके नीचे देकर सोता हूं; इतना कहनेके बाद उसका दम निकल गया. रावत् मानसिंह, राजा रायसिंह और राव शुभकरण ज़रूमी होकर ज़मीनपर गिरे; रघूजी पायग्या व दौला मियां भी लड़कर मरमिटे; बाक़ी फ़ौज भागकर अलग होगई. फ़त्ह माधवराव सेंधियाको हासिल हुई. देवगढ़ रावत्के पुत्र राघवदेवने राजा उम्मेदसिंह व २. त् पहाड़सिंह वग़ैरहको दाग़ दिया, और रावत् मानसिंह, राव शुभकरण व राजा रायसिंह व र.वत् कल्याणसिंहको, जो ज़रूमोंसे बेहोश पड़े थे, उनकी तरफ़वाले उठाकर मरहटी फ़ौजमें लेगये, और उनका इलाज करवाया. महता अगरचन्द व झाला ज़ालिमसिंहको मरहटोंने क़ैद करलिया. महाराणाके हुक्मसे रूपाहेलीके ठाकुर शिवसिंहने बावरी भेजे, वे महता अगरचन्द और रावत् मानसिंह इन दोनोंको हिकमत अमलीके साथ निकाल लाये. बाक़ी रहे उनको भी कुछ अ़रसे बाद माधवरावने छोड़ दिया.

इस फ़ौजकी शिकस्तका हाल सुनकर महाराणाको बड़ी फ़िक्र हुई. अगर्चि महाराणा मज़्बूत व बहादुर थे, लेकिन् फ़ौजी ताक़त घटजानेसे, उनके दिलमें घबराहट पैदा होगई. उमराव सर्दारोंमेंसे सिर्फ़ सलूंबरके रावत् भीमसिंह (जिसे महाराणाने पहाड़सिंहकी जगह सलूंबरका रावत् बनाया था) और बदनोरके ठाकुर अक्षयसिंहके सिवा कोई भी महाराणाकी तरफ़ नहीं रहा. महाराणाने मांडलगढ़ जाना चाहा, तब राव भीमसिंह, अर्जुनसिंह, ठाकुर अक्षयसिंह, और महाराणाके चचा बाघसिंहने कहा, कि जबतक हम लोग ज़िन्दह हैं, आप किसी तरहकी फ़िक्र न करें. आपको क़िलेका बन्दोबस्त व सामान और सिपाहकी फ़िक्र करना चाहिये. तब महाराणाने अपने चन्द आदमी भेजकर सिंधसे मुसल्मान सिंधी और गुजरातसे अ़रब लोगोंको बुलवाया, और शहर पनाहके गिर्द मह्ले (छोटे क़िले) तय्यार कराकर शहरकोट व खाईको दुरुस्त किया. दुश्मन भंजन तोपको एकलिंगगढ़पर चढ़ानेमें बड़ी दिक़त हुई, बड़वा अमरचन्दकी सलाहसे यह तोप क़िलेपर चढ़ाई गई, लेकिन् सिंधी और अ़रबोंकी तन्ख़्वाह चढ़जानेसे उन सिपाहियोंने महाराणाको दबाया; इस अन्दरूनी फ़सादसे इनको बहुत फ़िक्र हुई. एक दिन सिपाहियोंने महाराणाका दामन इस ज़ोरसे जा पकड़ा, कि वह फटगया. इस गुस्ताख़ीसे वे बहुत जोशमें आये, लेकिन् क्या करसक्ते थे; हज़ारों सिपाह घेरे हुए थी. रावत् भीमसिंहने कहा, कि अब बड़वा अमरचन्दको बुलाकर काम सुपुर्द करो. महाराणा उसके मकानपर गये, और कुल हक़ीक़त कहकर उसे अपना प्रधान बनाना चाहा. अमरचन्दने जवाब दिया, कि अव्वल तो मेरा मिज़ाज सख़्त, सीधा

और तेज़ है, दूसरे मैंने महाराणा प्रतापसिंह और राजसिंहके ज़मानेमें अपने इख़्तियारसे काम किया है, और सिवाय मालिकके दूसरोंकी पर्वा न रक्खी; और आप किसीकी सलाह मानते नहीं, सिपाह मुख़ालिफ़, ख़ज़ानह ख़ाली और रअय्यत मुफ़्लिस, ऐसे नाज़ुक वक़्में किसतरह काम किया जावे. अगर मुझको पूरा इख़्तियार दो और भरोसा रक्खो, तो कुछ तद्बीर हो सक्ती है. महाराणाने एकलिंगजीकी क़सम खाकर कहा, कि यदि तुम हमारी महाराणियोंका भी ज़ेवर मांगोगे, तो उसी वक़् भिजवा दिया जायेगा.

यह बातें होही रही थीं, कि महाराणाके धायभाई कीकाने कहा, कि आप ज़नानह समेत भागकर पहाड़ोंमें चलिये, वहांसे मांडलगढ़में जा छिपेंगे. इसपर अमरचन्दने गुस्से होकर कहा, कि तुम तो मवेशी चराने और दूध बेचनेसे अपना पेट भर लोगे, परन्तु महाराणाके लिये मांडलगढ़में ख़ज़ानह नहीं गड़ा है, कि जिससे वह अपनी इज़्ज़तको बचावेंगे. रावत् भीमसिंह, अर्जुनसिंह व ठाकुर अक्षयसिंहने कहा, कि जबतक हमारे धड़पर सिर है, आप कुछ फ़िक्र न करें. महाराणाने कहा, कि तुम्हारे बुज़ुर्गों (रावत् चूंडा व जयमल्ल मेड़तिया) ने जैसी इस रियासतकी ख़ैरख़्वाही की थी, वैसाही मुझको तुम्हारा भी भरोसा है. महाराणाके चचा बाघसिंह व अर्जुनसिंहने कहा, कि जिस तरह लक्ष्मणने अपने भाई रामचन्द्रकी ख़िद्मत की थी, उसी तरह हम भी आपकी सेवामें मौजूद हैं. इसपर महाराणाने जवाब दिया, कि यह सब रियासत आपकी है, आप मेरे बुज़ुर्ग और मैं आपका फ़र्मांबर्दार हूं. इस तरहकी बातोंसे महाराणाकी हिम्मत बढ़गई; और उसी वक़् अमरचन्दने सिंधी सिपाहियोंसे जाकर कहा, कि ऐसे वक़्में अपने मालिकसे इस तरह गुस्ताख़ी करना ख़ैरख़्वाह और अश्राफ़ आदमियोंका काम नहीं है, मेरे साथ चलो, कल तुम्हारी चढ़ी हुई तन्ख़्वाह दिला दूंगा. चूं कि अमरचन्दके क़ौलका उन लोगोंको एतिबार था, सब उसके साथ होलिये. उस नेक मिज़ाज प्रधानने सब कारख़ानोंके ताले तुड़वाकर सोने चांदीके बर्तन व कुल जवाहिरात अपने पास मंगवा लिये, और रातभरमें सोने चांदीके सिक्के बनवा कर और जवाहिरातको गिर्वी रखकर दूसरे ही दिन तमाम फ़ौजकी तन्ख़्वाह चुका दी.

माधवराव सेंधियाने जर्रार फ़ौजसे उदयपुरको आघेरा. उस समय किसी चारणने मारवाड़ी भाषामें एक गीत कहा, जिसका महाराणाके तरफ़दार सर्दारोंके दिलपर बहुत असर हुआ; उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती हैः–

गीत.

जिण बेलां जनम जिको कुण जाणै दाई कशी जणाय दियो ॥
शतबादी शापुरशां शूरां कठेफतूरां राज कियो ॥ १ ॥
कूड़ो तोत थयो गढ़ कोटां भाजगया खल सकल भणै ॥

माठी बात पंथ मत लागो ताय छल जागो निमख तणै ॥ २ ॥
जिम कृत घणी थयो जैतावत उरजणिये दलथंभ उपाय ॥
जिण अग जीत लिया जोधाणै नारायण रीझे हक न्याय ॥ ३ ॥
हसन हराम हुवो हत हेवे श्रीबर सैदां कंध सँघार ॥
रजवट लूण धरम आराधो सत संधां साधो सदार ॥ ४ ॥
क्रामत तखत मले तप कीधां अवतारी उपजे शिव अंश ॥
हिन्दवा भांण राण कहवाड़े वड़ो विरद सीसोदां वंश ॥ ५ ॥
खाधो निमख उजेलो खत्रियां बाधो जनम मखोवो बाद ॥
शाम धरम राखो सिरदारां ए वातां रहसी जुग याद ॥ ६ ॥
लाखां तणां पटा मल लीधा तसलीमां कर जदी तदी ॥
हो जो निमख हरांम न हो जो बदन तजो सो करे बदी ॥ ७ ॥
जग पतजाम शाम सांचो जुग काचो भड़ां न कीजे कांम ॥
नाम फितूर कहैं जिणनैं नर राणां पणो न देशी रांम ॥ ८ ॥
अड पायतां अचल ऊबरसी सरसी बुध राखो सरदार ॥
अवचल राज भुगतसी अरसी करसी असल न्याव करतार ॥ ९ ॥

प्रधान अमरचन्दने गोला, बारूद, व नाज वगैरह सब सामान एकट्ठा करके, नीचे लिखे मोर्चोंपर सर्दारों व सिपाहियोंको तईनात किया :-

शहर पनाहके दक्षिणी दर्वाजे रमणापोलपर महाराज गुमानसिंह व नींबाहेड़ाका ठाकुर मेड़तिया राठौड़ हमीरसिंह और पांच सौ सिंधी सिपाही. एकलिंगगढ़से दक्षिण ताराबुर्जपर खैराबादका बाबा शक्तिसिंह भारतसिंहोत. एकलिंगगढ़पर महाराज बाघसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, धायभाई कीका, सात सौ अरब मुसलमान सिपाही व दुश्मन भंजन तोप. कृष्णपोल दर्वाजेके मोर्चेपर महाराजा अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, और उनके मातहत जमादार उमर मण तीन हज़ार सिपाहियोंके. इन्द्रगढ़के महलेमें ५०० अरब सिपाही. शहर पनाहके अग्निकोण वाले बुर्जपर दो सौ सिंधी सिपाही महाराजा अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत. कमल्यापोल (१) पर सनाढ्य ब्राह्मण बड़वा अमरचन्द प्रधान

(१) इस दर्वाज़ेका नाम महाराणा सज्जनसिंहने उदयपोल रक्खा है.

मए पांच सौ अरब सिपाहियोंके. कृष्णगढ़के मह्लेमें गाडरमालाका बाबा मुहब्बतसिंह और जमादार सिंधी कोली एक हज़ार राजपूत व सिपाहियों समेत. कमल्यापोलसे उत्तरी कोणके बुर्जपर दुश्मनभंजन तोपका मुहाफ़िज़ महुवाका बाबा सूरतसिंह रक्खा गया. सूरजपोल दर्वाज़ेपर कुराबड़का रावत् चूंडावत कृष्णावत अर्जुनसिंह केसरीसिंहोत, हमीरगढ़ वाला राणावत धीरतसिंह उम्मेदसिंहोत और कायस्थ सुन्दरनाथ जमइयत समेत तईनात किया गया. सूरजपोलके साम्हने सूरजगढ़के मह्लेमें रूदका ठाकुर शक्तावत जवानसिंह गोकुलदासोत पांच सौ सिंधी सिपाहियों समेत. सूरजपोलके उत्तर घणबुर्जपर भूणावासका राणावत बाबा शिवसिंह. ईशान कोणके ज्वालामुखी बुर्जपर कायस्थ शम्भुनाथ शम्भुबाण तोप सहित (यह तोप इसी अह्लकारकी निगरानीमें तय्यार हुई थी). दिल्ली- दर्वाज़ेके मोर्चेपर सलूंबरका रावत् भीमसिंह चूंडावत कृष्णावत, कायस्थ नाथ, नठाराका रावत् विजयसिंह चूंडावत कृष्णावत, सोलंखी पेमा, साह मौजीराम बोल्या महाजन और सिंधी जमादार लड़ाऊ मए तीन हज़ार सिंधी सिपाहियोंके. मह्लह दिल्लीगढ़ अथवा सार्णेश्वरगढ़में सियाड़का ठाकुर शक्तावत सूरजमल्ल अपनी जमइयत व आठ सौ सिंधी सिपाहियों सहित. डंडपोलके मोर्चेपर बदनोरका ठाकुर मेड़तिया राठौड़ अक्षयसिंह मए अपने पुत्र ज्ञानसिंह व दो सौ राजपूतोंके. हाथीपोल दर्वाज़े पर रूपाहेलीका ठाकुर शिवसिंह अपने बेटे व पोते सहित, और छोटी रूपाहेलीका ठाकुर ज्ञानसिंह; और दोनों तरफ़की दीवारोंपर पांच सौ सिंधी सिपाही व मूंगाणाके ठाकुर का भाई, मेड़तिया वैरीशाल, जिसके साथ १४० सवार व चार सौ पैदल राजपूत थे, और ईंटालीका मेड़तिया रामसिंह राठौड़, ये कुल तीन हज़ारके क़रीब थे. हाथीपोलके साम्हने शम्शेरगढ़के मह्लेमें लसाणीका ठाकुर चूंडावत जगावत गजसिंह अपनी जमइयत व दो सौ सिंधियों समेत. हाथीपोल व चांदपोलके बीचकी दीवारपर दो सौ सिंधी सिपाही. अंबावगढ़के मह्लेमें पासबान गुहिलोत ज़ोरा मए पांच सौ सिंधी सिपाहियोंके. ब्रह्मपोल दर्वाज़ेपर पासबान सोलंखी गजसिंह, पांचसौ सिंधी सिपाहियों सहित. चांदपोल दर्वाज़ेपर सनवाड़का राणावत बाबा शम्भुसिंह मए दो सौ सिंधी सिपाहियोंके. शिताबपोल दर्वाज़ेकी हिफ़ाज़तपर कारोई महाराज दौलतसिंह, और बावल्यासका महाराज अनोपसिंह. नावके कारखानहके मोर्चेपर चारण पन्ना आढ़ा मए पैंतीस बन्दूक़चियोंके. और महलोंसे दक्षिण जलबुर्जके मोर्चेपर दौलतगढ़ ठाकुर चूंडावत सांगावत ईशरदास तईनात कियागया था. इस तरहपर मोर्चे बन्दी कीजाने बाद महाराणाने नीचे लिखे हुए सर्दार अपने पास रक्खे:-

दरसोड़ाका चावड़ा नाथसिंह, थांवलाका चहुवान नाथसिंह, बनेड्याका चहुवान चत्रसिंह, कांसेड़ीका पुंवार सर्दारसिंह, महाराणाका मामा ध्रांगधराका झाला साहिबसिंह व उनका पुत्र सामन्तसिंह, पुरोहित नन्दराम, महता अगरचन्द, ज़नानी ड्योढ़ीका दारोगह महता लक्ष्मीचन्द, साह मोतीराम बोल्या अपने पुत्र एकलिंगदास समेत, भट्ट देवेश्वर, धवा दूसरा नगराज, धायभाई रूपा, धायभाई कीका, धायभाई हट्टू, धायभाई उदयराम, धायभाई रत्ना, धवा चतुर्भुज, धवा कुशला (ये दोनों शख़्स कुंवर हमीरसिंह और भीमसिंहके धवा थे.) और कायस्थ प्रताप. इनके सिवा सिंधी और अरब सिपाहियोंके, जो अफ़्सर जमादार महाराणाके पास रहे उनके नाम नीचे दर्ज कियेजाते हैं:-

जमादार फ़ीरोज़, जमादार लड़ाऊ, जमादार खगोट, जमादार मलंग, जमादार गुल हाला, जमादार चन्दर, जमादार जादू, जमादार बदयो, जमादार शेरबेग, जमादार खगोट दूसरा, जमादार अहमद, जमादार मुराद वगैरह.

अगर्चि अमरचन्द प्रधानने बहुतसा गल्ला एकट्ठा किया था, लेकिन् हज़ारहा आदमी लड़नेवाले राजपूत सिपाहियों, व शहरकी रिआया वगैरहके लिये वह काफ़ी न होसका. रसदकी यहांतक कमी हुई, कि कभी कभी फ़ाक़ह कशीकी नौबत पहुंचती थी, परन्तु बाघसिंहसे इस मौक़ेपर लोगोंको बड़ी मदद मिली. वह दिनमें एक ही वक़ खाना खाते थे, और उस वक़ नक़ारह बजाया जाता था, जिसकी आवाज़ सुनकर जो लोग आते, उन्हें खाना खिला देते. इस बातसे बाघसिंहकी बड़ी नामवरी हुई; और दुश्मन भंजन तोप, जो उसके क़ब्ज़हमें थी, उसके सबब शहर पनाहके दक्षिण तरफ़ ग़नीम लोग क़रीब नहीं आसक्ते थे. मरहटोंने पचास ५०००० हज़ार रुपया भेजकर बाघसिंहको कहलाया, कि आप अपनी तोपको बन्द करें, हमारी फ़ौज कृष्णपोलसे हमलह करेगी. बाघसिंहने धोखा देकर रुपया ले लिया, और पश्चिमी पहाड़ोंकी तरफ़से गल्ला मंगाकर अपना काम चलाया. मगर जब शर्तके मुवाफ़िक़ माधवरावकी फ़ौज कृष्णपोलकी तरफ़ बढ़ी, तो पहाड़के निकट आनेपर उसने उनपर अपनी तोपका ऐसा वार किया; कि जिससे ग़नीमको बहुतसा नुक्सान उठानेके बाद महाराज बाघसिंहकी दग़ाबाज़ी समझकर पीछा हटना पड़ा.

छः महीने तक आपसमें लड़ाई होतीरही; आख़िरकार रावत् भीमसिंह व अर्जुनसिंहने माधवरावको कहलाया, कि आप बे फ़ायदह लड़ते हैं, अगर रत्नसिंहको राणा बनाकर मत्लब निकालना हो, तो उनसे रुपया तलब कीजिये, वर्नह हम देनेको तय्यार हैं. माधवरावने देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहके पुत्र राघवदेवसे रुपया तलब किया, तो उसने कहा, कि अभी तो हमारे पास नहीं है, उदयपुरमें क़ब्ज़ह होने बाद बन्दोबस्त करेंगे.

इसपर सेंधियाने गुस्से होकर कहा, कि हमारी फ़ौजको तन्स्वाह कहांसे दीजाये? यह सुनकर राघवदेव डरा, कि कहीं यह मुझे गिरिफ़्तार करके महाराणा अरिसिंहके सुपुर्द न करदे, और भागकर देवगढ़ चलागया. उस वक़ महाराणाकी तरफ़से रावत् अर्जुनसिंह सुलहका पैग़ाम लेकर माधवरावके पास भेजा गया, और सत्तर ७०००००० लाख रुपया देनेपर उसे राज़ी किया. लेकिन् माधवरावने शहरमें गल्लेकी कमी होनेके सबब भीतरकी फ़ौजको घबराई हुई सुनकर सोचा, कि अगर इस हालतमें शहरकी लूट कीजायेगी, तो ज़ियादह फ़ायदह होगा. उसने अमरचन्द प्रधानको कहलाया, कि बीस लाख रुपया ज़ियादह देनेपर सुलह क़ाइम रह सक्ती है. अमरचन्दने गुस्सेमें आकर अह्दनामह फ़ाड़ डाला, और सर्कारी कोठार व अह्लकारोंके घरोंमेंसे, जो नाज था, निकलवाकर बाज़ारमें और सिपाहियोंके पास भिजवा दिया; और कुल राजपूत व सिपाहियोंको बुलाकर उनकी तसल्ली की. मिर्ज़ा आदिलबेग वगै़रह सिंधी सिपाहियोंने महाराणाके पास जाकर क़सम खाई, और अर्ज़ की, कि अब हम लोग आपसे तन्स्वाह न लेंगे; उदयपुर हमारा वतन है, जब तक गल्ला मिलेगा, उसे खाकर लड़ेंगे, बाद उसके चौपायोंपर गुज़र करके दुश्मनको अपने हाथ दिखलावेंगे, और अख़ीरमें दुश्मनकी फ़ौजपर बहादुरीसे हमलह करके मरेंगे. इसी तरह राजपूत भी जवांमर्दी दिखलाकर महाराणाको तसल्ली देते थे. उन लोगोंके मुहब्बत आमेज़ कलाम सुनकर महाराणाकी आंखोंसे आंसू टपकने लगे; और राजपूत व सिपाहियोंने एक मत होकर मरहटी फ़ौजपर फिर गोलन्दाज़ी शुरू की.

इन बातोंकी ख़बर माधवरावको मिली, उसने कुछ अर्से बाद अपनी तरफ़से सुलहका पैग़ाम भेजा. जिसपर अमरचन्दने कहलाया, कि हमको गल्ला व मेगज़िन (गोला बारूद) में, जो ज़ियादह ख़र्च हुआ, वह कम करनेपर सुलह होसक्ती है. लाचार सेंधियाको साठ लाख रुपया लेकर सुलह करनी पड़ी. और साढ़े तीन लाख रुपया दफ़्तर ख़र्च यानी अह्लकारोंकी रिश्वतके ठहरे, तब रुपया देनेकी शर्तें पूरी करनेका विचार हुआ. पच्चीस लाख रुपयेमें सोना, चांदी, जवाहिरात व नक्द, और आठ लाख जागीरदारोंसे वुसूल करके दिया गया. बाक़ी रुपयोंके एवज़में जावद, नीमच, जीरण और मोरवण वगैरह पर्गने गिर्वी रक्खे गये, और यह शर्त की गई, कि महाराणाके अह्लकारोंकी शामिलातसे उक्त पर्गनोंकी आमदनी साल दर साल जमा होती रहेगी; और रुपया अदा होजानेके बाद उनकी आमदनी राज्य मेवाड़के शामिल कीजावेगी. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "इस तरह विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = ई० १७६९] में उदयपुरका मुहासरह ख़त्म हुआ, और ये उम्दह ज़िले मेवाड़की रियासतसे निकल गये; लेकिन् तुमको यह याद होगा, कि ये ज़िले सिर्फ़ गिर्वी

रक्खे गये थे. अगर्चि मुल्ककी तबाही और सल्तनतकी तनज़ुलीके सबब गिर्वीसे छूटना मुम्किन न हुआ, लेकिन् ताहम दावा उनपर बना रहा. अह्दनामह ईसवी १८१७ [हि० १२३२ = वि० १८७४] में राणाके एल्चियोंने उन ज़िलोंकी बहाली भी शर्तोंमें दाखिल करानी चाही, क्योंकि सर्कार इंग्लिशियह उसवक्त उस मुल्कके गुज़श्तह हालातसे बिल्कुल वाकिफ़ न थी, और सेंधियासे अंग्रेज़ी सर्कारको मुहब्बत थी; इसलिये सर्कार इंग्लिशियहने उस शर्तको मंजूर न किया, लेकिन् जबकि सर्कार इंग्लिशियह व सेंधियामें दुश्मनी होगई, और उन ज़िलोंके बचानेका मौका हासिल हुआ, उस वक्त ब सबब मस्लिहत, जिसका समझना मुश्किल है, वह हाथसे जाता रहा. उस मस्लिहतके बाबमें, जो उन ज़िलोंके लिये नुक्सानका बाइस हुई, तवारीख़ हिन्दके मुवर्रिख़ोंने नुक्तह चीनी की है. सर्कार इंग्लिशियह खुद इस बातको सोचे, कि उनको पचास साल तक रिहनसे न छुड़ाना, व शम्शेरके ज़ोरसे हासिल न करना, क्या उनके दावेको झूठा करता है ! ग़रज़ कि इस बातके सुबूतमें बहुतसी सनदें मौजूद हैं, और कोटा वाले ज़ालिमसिंह व लालाजी बलाल (पंडित) जो अब मरे हैं, दोनोंकी ज़बानी यह तस्दीक़के दरजेको पहुंची है. किसी न किसी दिन जब सर्कार इंग्लिशियह उन ज़िलोंको मेवाड़में दोबारह शामिल करना मुनासिब समझेगी, वह शहादतें काम आवेंगी."

इन पर्गनोंके गिर्वी रखनेके बाद एक अह्दनामह माधवराव सेंधिया और महाराणाके दर्मियान हुआ, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है :-

अह्दनामहकी नक्ल.

सिंधि श्री महाराणां श्री अरिसिघजी सूभ्वस्थांन उदैपुकी मामलत ठाहरी, सरकार सुबेदार श्री माघजी सीधें तीनु सरदाराकी मांमलतको करार तीकी कलम.

१- रतनसिंघजी मंदसौर रहे, त्यांने जागीर रु ७५००० पीचत्र हजारकी देणी, राज पाछे राजको वारस कदाच मंदसो न रहे नीकलजाय, तो उणीको पष्य न होसी पटो न पावसी. राजको वारस नही, मंदसौर रहे, तो रावत भीमसीघजीको भाई बेटो उणां तीरे रेहे, और सरदार न रहे.

१- मेवाड मांहे ज़वतीका थांणां होय. जांकी उठत्री सरकार सूं देणी

१- वावल्या तथा वावल्याकी फोज मेवाड्मै रहसी नही.

१- पटायत सलूक सु रहेसी, ज्यांकी मेर मरजाद आगां सु चाली आई ती

माफक राषणी पटो बहाल राषणो दगो फटको न करणो, कदाच परा जाय तो पटो षालसै करनो; स्रकार सु उणां को पष्य न होसी, अर सरदार सलुक सु रहैसी. पंचां प्रमांणे बीराड देसी.

१- वेगुकी मामलतका रोक रुप्या आवसी सो हाल पचीस लाषका करामै मुजरा पड्सी.

१- दोय हजार फोज राज नषै रहसी, ज्यानै षरची मास ३ री संनद माफक दे अर कबज ल्यागा ती प्रमांणै मांमलतमै मुजरा पडसी. मास ३ उपरात राज फौज राषोगा, ज्याकी षरची राज दोगा, मांमलतमे मुजरा नही

१- मामलतको करार ठाहर्‍यो, ती परमांणो रुपेयांको फडछो कियां हजुरकी कुमक कीइ जासी

१- हजुरको वकील सरकारमे रहसी, तीकीमैर मरजाद सदामद प्रमांणे चलावणी.

१- रतनस्यंघजीकी त्रफ सरदार है ज्यांनै पटा सीवाय गाम तथा नवेसीर भोम कीवी होसी, सो छूडाय देणी.

१- मैवाडका देसमै जवती सरकारकी तथा वाबल्यांरी तथा सदासिव गंगांधर तथा बैहरजी ताकपीररी हुइी, तीको वसुल सांवंण बदि ३ मोरचा उठ्या पाछे आयो होय सौ रजु मुकाबलासु ठाहरै, सो मांमलतमे भरे लेणी. राघोरामनै कुमक वास्ते ल्याया जानै रुप्या जवाहर तथा सोनो रुपो गेहणो वगेरेह दीयो, सौ हाल मांमलत ठाहरी, तीमे तथा बाकीमे तथा पटामै मुजरा न पडसी

१- कुमलमेरका कीलासु रुपौ सौनो जवाहर जीनस गेहणो रुप्या सरकारमै तथा वाबल्याकै वा सदासिव गंगाधर वा बैहरजी ताकपीर ईनकी त्रफ मारफत साह वसंतपाल तथा मेघराज तथा श्रीपतीके आयौ होय, सो हाल मांमलत ठाहरी तीमै तथा बाकीमै तथा पटामै मुजरा नही.

१- जौ रुप्या सरकारमे आया, तीकी पोहच श्री मंतकी मौहर सू तीनु सरदाराकी हिसा रसीद होसी.

१- जोगी वगेरहे मेवाडरा देसमै रहे, फीतूर करै ज्यानै सरकाररी ताकीद करै काढै देणां.

जुमले कलम तेरह करार परमांणै ऐवजको ठेराव मांमलतको हुवौ सो करारको लिखतं जुदो छै ती परमांणै रुप्याको फडछो करांगा, हाल देवाको हापतो वा कीसत बंदी परमांणै रुप्याको फडछो हजुर सु हुवां सरकार सु करार माफक निभावणौ

विक्रमी १८२६ श्रावण कृष्ण ३ [हि० ११८३ ता० १७ रबीउ़लअव्वल = ई० १७६९ ता० २१ जुलाई] को माधवराव सेंधियाने अपनी फ़ौजके मोर्चे उठालिये, और मालवेकी तरफ़ रवानह हुआ. महाराणा प्रधान अमरचन्द और रावत् भीमसिंह व अर्जुनसिंहसे बहुत खुश हुए. और इन्आम इक्राम जागीर वगै़रह देकर सबकी इ़ज़्ज़त बढ़ाई. सिन्धी सिपाहियोंके अफ्सर मिर्ज़ा आदिल-बेगको जागीर वगै़रह इ़ज़्ज़त देकर बढ़ाया. इनके एक पर्वानेकी नक़्ल जो कर्नेल टॉडने अपनी किताबमें लिखी है, उसको हम भी यहां दर्ज करते हैं:-

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ स्वस्ति श्री उदेपुर सुथांने मेहाराजा धिराज महारांणा श्री अरसिहजी आदेशातु मीरजा अबदुल रहीमबेग आदलबेगोत कस्य

१ अप्र मेवाड़रा दोय सीरदारा रतनसीघ नाम देने फीतुर करे बपेडो कीदो, दीषण्यांरी फोज आणे ऊदेपुर मोरछा लगाया, जणीमहे थे आछी रीतसु चाकरी पुगा, ने राज राष्यो, जणीं बाबत मेहरवान व्हेने ईत्रो करे दीधो, सो थाहरा बेटा पोतां सुदी पाया जावोगा, ने दरबाररी बदगी करोगा, नें म्हांरा पगरो व्हेने कसर पाडेगा, जणीं हे श्री एकलिंगजीरी आण हे. चीतोड मास्यारो पाप हे

वीगत

। पटो रुपया २००००० दोय लाषरो, ने रुपया २५००० पचीस हजार रोक साल दरसाल, पटा महे रुपया १०००० दस हजाररी जायगा देवारी बारे बाकी कांठे.

। हवेली बाबा भारतसीघरी रेवाहे.

। बाडी वीगा १० दस

। गाम १ गीरवारो गाम मटुण.

। अजमेरीवेग राड महे काम आयो, जणीरी कबर नषे धरती बीगा १०० सराय वाडी सारु.

। बेठक मेर मरजाद सादडी प्रमांणे करे दीधी, ने नगरारो दुवो वडी पोल तांई एक डंको

विगत

। अमर बलेणो.	। दसरावारो सीरपाव
पान दूजी मोताद सारी.	सुतरी गाम आहेड सुदी.

। दुजी मेर मरजाद सलुबर प्रमांणे करे दीधी, ने पीड्या दरपीड्या सलुबररा घर ज्यु करे राष्या, सो पटा प्रमांणे जमीतथी बंदगी करोगा.

। भांजगड मेवाडरी तथा दीषण्यारी सारी रावत भीमसीघने थे भेला व्हे करोगा.

। थांहरो भाई तथा चाकर कोई छांडेने दरबार आवे, तो चाकर राषणो नही, तथा सीरदार भाई बेटा राषे नही.

। चमरी, करण्यो, हजुर री असवारी वीगर एकला व्हेगा, जठे राषवारो हुकम सो राषेगा.

। मनवरवेग, अनवरवेग, चमनवेगरे सामी बेठकरो हुकम, वलेणा घोडा

। सीरपाव, दसरावारो दुवो, ओर भाई बेटा दोय च्याररी बेठकरो हुकम, सो बेठवा सरीषो व्हेगो, सो बेठेगो.

(खास दस्तखत) प्रवाना में लिषी सु सरब बातें सावत, मारा पगरो वगा तो प्रवानाने ओपेगो नीं; पं साव घरमासु चाकरी करोगा हीज.

। ऊकील सदामद रहे, जणीरी मेर मरजाद राषणी.

प्रवानगी साह मोतीराम बोल्या - संवत १८२६ वर्षे भादवा सुदी ११ सोमे - (मीरजा अबदुलरहीमबेग आदलबेगोत कस्य) (१).

ये सिंधी जमादार बड़े बहादुर सिपाही थे, अगर ये लोग महाराणाके फ़र्मांबर्दार रहकर तन्ख़्वाह देरसे मिलनेकी तक्लीफ़को गवारा करते, तो ज़रूर इन लोगोंका बड़ा गिरोह मेवाड़के सर्दारोंके मुवाफ़िक़ बड़ी बड़ी जागीरोंपर क़ाबिज़ होजाता, लेकिन् इन्होंने कम अक़्लीसे चन्द रोज़के बादही तन्ख़्वाहके लिये महाराणाको उस हालतमें तंग किया, जिसवक़ कि रियासती ख़ज़ानह ख़ाली था. जब विक्रमी १८२६ आश्विन कृष्ण ९ [हि० ११८३ ता० २३ जमादियुल्अव्वल = ई० १७६९ ता० २४ सेप्टेम्बर] को उक्त महाराणाकी शादी कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंहकी बेटीसे हुई, तो उन्होंने कृष्णगढ़से वापस आते वक़ बहादुरसिंहसे कुछ रुपया बतौर मदद लिया, और उदयपुरमें आकर इन लोगोंकी चढ़ी हुई तन्ख़्वाह चुका दी. इसी अ़रसहमें देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहका बेटा राघवदेव और भींडर महाराज मुहकमसिंह वग़ैरह मुख़ालिफ़ सर्दार महापुरुष याने लड़ाई करने वाले गुसाईं फ़क़ीरोंको एकट्ठा करके मेवाड़को लूटनेके लिये रवानह हुए; और महाराणा अरिसिंहके तरफ़दार सर्दारोंको धमकियां देना व ख़ालिसहके गांवोंको लूटना शुरू किया. विक्रमी १८२६ माघ [हि० ११८३ शव्वाल = ई० १७७० जैन्युअरी] में महाराणा यह ख़बर मिलते ही सलूंबरके रावत् भीमसिंह, और कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह वग़ैरहको उदयपुरकी हिफ़ाज़तके लिये छोड़कर ख़ुद मए फ़ौज दुश्मनके मुक़ाबलेको रवानह हुए, और देलवाड़े होकर जीलोला गांवमें पहुंचे. मोकरूंदाके पास मुख़ालिफ़ फ़ौज भी लड़ाई को तय्यार थी, टोपलां गांवमें टोपल मगरीके पास मुक़ाबलह हुआ.

"भीमविलास" में महाराणा भीमसिंहके बयानके मुताबिक़ चारण कृष्णा आढ़ा लिखता है, कि मुख़ालिफ़ फ़ौजमें पन्द्रह हज़ार जोगियोंके सिवा राजपूतोंकी फ़ौजके तीन गिरोह बनाये गये, एकमें साह मेघराज देपुरा, दूसरेमें देवगढ़ रावत्का बेटा राघवदेव और तीसरेमें महाराज मुहकमसिंह थे. महाराणाने भी अपनी फ़ौज नीचे लिखे मुवाफ़िक़ तय्यार की :-

हरावलमें महता अगरचन्दके साथ मांडलगढ़ और जहाज़पुर ज़िलेके जागीरदार भोमिया मीणा वग़ैरह सोलह सौ आदमियोंमेंसे पांच सौ सवार और ग्यारह सौ पैदल थे. बीचमें ख़ुद महाराणा घोड़ेपर सवार, जिनके पास नीचे लिखे हुए सर्दार व अह्लकार, पासबान वग़ैरह मए अपनी अपनी जमइय्यतोंके मौजूद थे :-

(१) इस ब्रेकेटके अन्दरकी पंक्ति अस्ल पर्वानेमें सरनामहपर है.

बीजोलियाका राव पुंवार शुभकरण, आमेटका रावत् चूंडावत जगावत प्रतापसिंह, कोठारियाका रावत् चहुवान फ़त्हसिंह, घाणेरावका ठाकुर राठौड़ मेड़तिया वीरमदेव, चाणोदका राठौड़ मेड़तिया विशनसिंह, नाडोलाईका राठौड़ मेड़तिया सूरजमल्ल, खोड़का राठौड़ मेड़तिया शेरसिंह, बसीका राठौड़ कूंपावत चतरसिंह, रूपाहेलीका राठौड़ मेड़तिया शिवसिंह, बदनौरके ठाकुर अक्षयसिंहका छोटा बेटा ज्ञानसिंह, महाराणाके काका अर्जुनसिंह, और काका गुमानसिंह, सनवाड़का बाबा राणावत शंभुसिंह, खैराबादका बाबा शक्तिसिंह भारत-सिंहोत, महुवाका बाबा सूरतसिंह, हमीरगढ़का राणावत रावत् धीरतसिंह, बनेड़ियाका चहुवान चत्रसिंह, थांवलाका चहुवान नाथसिंह, गाडरमालाका बाबा पूरावत मुहकमसिंह, दौलतगढ़का चूंडावत सांगावत ईशरदास, लसाणीका चूंडावत जगावत गजसिंह, जीलोलाका चूंडावत जगावत नाथसिंह, कोशीथल का चूंडावत जगावत उम्मेदसिंह, पीथावासका चूंडावत जगावत तख़्तसिंह, रूदका शक्तावत जवानसिंह गोकुलदासोत, सियाड़का शक्तावत सूरजमल्ल, चारण पन्ना आढ़ा, धवा नगराज, धायभाई कीका, प्रधान बड़वा अमरचन्द सनाढ्य और प्रधान कायस्थ जशवन्तराय वग़ैरह. महाराणाके दाहिनी तरफ़के गिरोहमें जमादार क़ासिमखां अरब, व जमादार आरब अमर मए पांच हज़ार अरब सिपाहियोंके था. महाराणाके बाईं तरफ़ उनके काका बाघसिंह, जमादार मलंग, जमादार लड़ाऊ, जमादार अब्दुर्रज़ाक़, जमादार गुलहाला, और जमादार कोली वग़ैरह अफ़्सर ८००० सवारों समेत थे.

पेश्तर तरफ़ैनसे तोप, बन्दूक़ जुज़रबा (शुतरनाल) बाण वग़ैरहकी लड़ाई शुरू हुई; थोड़ी देरके बाद महाराणाने बर्छा हाथमें लिया और "जय एकलिङ्ग" कहकर अपने चेटक नामी घोड़ेको आगे बढ़ाया. यह देखकर महाराज बाघसिंह और उनके हमराही सिंधी जमादारोंने अपने अपने घोड़ोंको एक दम मुख़ालिफ़ की फ़ौजपर जाडाला, और इसी तरह हरावलके बाईं तरफ़ वाले गिरोहने भी एक दम हमलह करदिया. ग़रज़ कि चार घड़ी तक बर्छा, तलवार और कटारियोंसे लड़ाई होती रही, आख़िरकार दुश्मन भाग निकले, और उनमेंसे बहुतसे लोग, जो वारमें आये मारे गये. बाक़ी सर्दारोंने भागकर अपने अपने ठिकानोंमें पनाह ली. महाराणा फ़त्हयाबीके साथ उदयपुर आये. इस लड़ाईसे रत्नसिंहकी बिल्कुल ताक़त कम होगई, और एक सालतक कुछ जुर्अत न हुई, लेकिन् महता सूरतसिंह, साह कुबेरचन्द अमरदार, और खुशहाल देपुरा वग़ैरहने बेदलाके राव रामचन्दकी मिलावटसे दस हज़ार

जोगियोंको फिर एकट्ठा करके गंगार गांवमें जमाव किया, और चारों तरफ़ मुल्क लूटने लगे.

इस फ़ौजमें देवगढ़का राघवदेव व महाराज मुह्कमसिंह दोनों शरीक नहीं थे. यह ख़बर सुनकर महाराणा अरिसिंहने विक्रमी १८२८ (१) वैशाख [हि० ११८५ मुहर्रम = ई० १७७१ एप्रिल] में रावत् भीमसिंहको उदयपुरकी हिफ़ाज़त पर रखकर काका बाघसिंहको गोड़वाड़के सर्दारोंकी जमइयत समेत गोड़वाड़की तरफ़ भेजा, क्योंकि कुम्भलमेरसे रत्नसिंह उस ज़िलेपर क़ब्ज़ह करना चाहता था, और आप अपनी फ़ौज सहित रवानह होकर गंगारसे डेढ़ कोसपर जा जमे. मुख़ालिफ़ महापुरुषोंने लड़ाईकी तय्यारी की. उनकी फ़ौजमें जो बारह अफ्सर याने महन्त थे, सब बाण, बन्दूक़, जुज़रवा, व चक्र वग़ैरह हथियारोंसे दुरुस्त होगये. महाराणाने भी अपनी फ़ौजको आरास्तह करके नीचे लिखी तर्तीबके मुवाफ़िक़ जमाया :- दाहिनी तरफ़ जमादार अरब, जमादार सिंधी कोली, और जमादार क़ासिमख़ां, मए चार हज़ार सिपाहियोंके. बाईं तरफ़ जमादार फ़ीरोज़, जमादार मलंग, अब्दुर्रज़ाक़, जमादार लड़ाऊ, और जमादार गुलहाला, सात हज़ार सवारों समेत. और बीचमें खुद महाराणा और उनके साथ कुराबड़का रावत् चूंडावत कृष्णावत अर्जुनसिंह, कोठारियाका रावत् चहुवान फ़तहसिंह, बीजोलियाका पुंवार राव शुभकरण, बदनौरके ठाकुर अखेसिंहका बेटा गजसिंह, काका महाराज अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, रूपाहेलीका मेड़तिया राठौड़ शिवसिंह, नींबाहेड़ाका मेड़तिया राठौड़ हरिसिंह, दिवालाका मेड़तिया राठौड़ ईसरोद ज़ालिमसिंह, ईटालीका मेड़तिया राठौड़ रामदास, बराणीका मेड़तिया राठौड़ वैरीशाल, बाजोली ज़िले मारवाड़का मेड़तिया राठौड़ अखेसिंह, खैराबादका राणावत बाबा शक्तिसिंह, हमीरगढ़का राणावत रावत् धीरतसिंह, महुवाका राणावत बाबा सूरतसिंह, सनवाड़का राणावत बाबा शंभुसिंह, लसाणीका चूंडावत जगावत गजसिंह, दौलतगढ़का चूंडावत सांगावत ईशरदास, बनेड़ियाका चहुवान चत्रसाल, थांवलाका चहुवान नाथसिंह, रूद का शक्तावत जवानसिंह गोकुलदासोत, धधा नगराज, धायभाई कीका, धायभाई जोधा, मह्ता अगरचन्द मए पांच सौ सवार व खैराड़के एक हज़ार पैदलोंके, चारण पन्ना आढ़ा, और जमादार क़ासिमख़ां वग़ैरह थे.

सूरज निकलनेसे पहिले काका महाराज अर्जुनसिंहने कहा, कि हम लोग मुख़ालिफ़ों को साम्हने खड़ा देख रहे हैं, लड़ाईका हुक्म देना चाहिये. महाराणाने रावत्

(१) भीमविलासमें श्रावणादि संवत् १८२७ लिखा है, जो चैत्रादि हिसाबसे १८२८ हुआ.

अर्जुनसिंहको कहलाया, कि घोड़ा उठावे, क्योंकि हरावलमें लड़ना उसका दस्तूर था. चोबदारने जाकर उससे कहा. उसने जवाब दिया, कि थोड़ेसे सर्दारोंको अफ़ीम देनी बाक़ी है, सो देकर चढ़ते हैं; लेकिन् उसके राजपूतोंमेंसे एकने यह ताना मारा, कि हमारे मालिकोंसे महाराणा जल्दी करते हैं, आप घोड़ा क्यों नहीं उठाते; मेवाड़का राज्य उनको करना है. चोबदारने ज्योंका त्यों जा कहा, तब महाराणाने बर्छा हाथमें लेकर घोड़ा बढ़ाया. रावत् अर्जुनसिंहने अफ़ीम हाथमेंसे डालकर ऐसी फुर्ती की, कि अपने दस्तूरके मुवाफ़िक़ सबसे आगे पहुंचकर मुख़ालिफ़ोंपर एकदम जा गिरा. कुछ देरतक मुक़ाबलह होता रहा, जोगियोंके भी खूब हथियार चले; लेकिन् राजपूतोंने उनको ग़ारत करदिया; बहुतसे मारेगये, और जो बाक़ी रहे, भाग निकले. उस वक़्का मारवाड़ी ज़बानमें यह दोहा मश्हूर है:–

दोहा.

अड़सी सूं अड़िया जिके पड़िया करें पुकार ॥
महापुरुषांकी मूंडकी गलगी गांव गंगार ॥ १ ॥

बहुतसे जोगियोंने गंगारके क़िलेमें पनाह ली, तब महाराणाकी फ़ौजने क़िलेपर गोलन्दाज़ी शुरू की. भीमविलासमें लिखा है, कि राव रामचन्दका बेटा देवीसिंह एक जतीसे विजय होम करा रहा था, तोपके गोलेसे उस जतीका सर उड़गया, तब घबराकर देवीसिंह महाराणाके पैरोंपर आ गिरा, और साह कुबेरचन्द देपुरा क़िलेमें पेशक़ब्ज़ खाकर मरा. अमरचन्द देपुरा वग़ैरह दूसरे लोग गिरिफ़्तार होकर आये, उनमेंसे अमरचन्दको महता अगरचन्दके सुपुर्द करके मांडलगढ़के क़िलेमें भेज दिया, जो वहीं क़ैदमें मरगया; और बाक़ी जोगियोंके सरगिरोह महन्तोंको छोड़दिया. उन लोगोंने क़सम खाई, कि हम आइन्दह कभी हुज़ूरके बख़िलाफ़ कोई कार्रवाई न करेंगे. इस लड़ाईमें महाराणाके काका महाराज अर्जुनसिंहके बदनमें तलवारके पन्द्रह ज़स्म लगे थे. फ़त्हके बाद महाराणा उदयपुर आये.

महाराणाने महता सूरतसिंहपर, जो रत्नसिंहकी तरफ़से चित्तौड़का क़िलेदार मुक़र्रर किया गया था, रावत् भीमसिंहको फ़ौज देकर भेजा. यह ख़बर सुनकर सूरतसिंह निकल भागा, और उक्त रावत्ने क़िलेपर क़ब्ज़ह कर लिया. इसी अ़रसहमें काका बाघसिंह भी गोड़वाड़में महाराणाका क़ब्ज़ह जमाकर वापस आया, और महाराणासे अ़र्ज़ की, कि वहां हमेशह फ़ौज रखनेसे क़ब्ज़ह क़ाइम रह सक्ता है, अगर फ़ौजी इन्तिज़ाम न किया जावेगा, तो रत्नसिंहकी तरफ़से हमेशह लूटमार होती रहेगी; और वह पर्गनह उसके क़ब्ज़हमें जानेसे

उसको किसी क़द्र ताक़त हो जायेगी. इसपर महाराणाने जोधपुरके राजा विजयसिंहको लिख भेजा, कि तुम अपनी तीन हज़ार फ़ौज नाथद्वारेमें रक्खो, और उसकी तन्ख्वाहके लिये गोड़वाड़का पर्गनह अपने क़ब्ज़हमें करलो; इस बारेके चन्द कागज़ात, जो हमको मिले हैं, उनमेंसे एककी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती हैः-

कागज़की नक़्ल.

॥ सीधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा लायक ठाकुरा श्री जसोतराजजी जोग, जोधपुरथी मुथा सरीच्दं ली० जुहार वाचसी; अठारा स्माचार भला हे, आपरा सदा भला चाहीजे, मा ऊपर परम सुल करावे अप्रच ॥ अठे गोडवाड ताबे रावत उरजणसीगनु कागद आव्यो जणम्हे इसो जुबाब लीष्या आयो, गोडवाडरा सरदार तो श्री दीवाणजीम्हे रेहेसी, न षालसो व्हेसी सो महाराजनु दीवीजेगो, अे जुबाब लीष्यो आओ, जद ऊ कागद म्हाराजनुं मालुम कीनो, तीण ऊपरे म्हाराज ओ हुकम कीनो, ठीक हे, सीरदार श्री दीवाणजी राषे, तो भलाइ राषो; अर षालसो आपां नु देवे तो ठीक; पिण ऊतरी जमीअत तो न्ही रे, अर असवार २०० दोअेसे अर पालो ५०० पाचसे श्री दीवाणजी बंदगीम्हे हाजर रैसी, ऊपर फोजबदी होसी जण दीन असवार जमीअत हजार ३००० तीन आण सामल होसी. इण मुजब जमीअेत रेसी, ओ हुकम कीनो छे. (१) जिके नीसर जासी, अर उदेपुरका भाजगड वारे तरे तरेका वेम ऊठे, सो अठे तो वेम सरीको कीई हे न्ही; उठाका कामवाला वेम राषे सो थु साब (साफ़) लीषदीजे, सो कण वातनु वेम राषे नही, जेते श्री दीवाणजी आपरी जमीअत राषसी जेते तो गोडवाडरा पर (ग) णा म्हे अमल आपणो रेसी; जण दीन श्री दीवाणजी आपरी जमीअतनु सीष देवे, नराषे, जण दीण गोडवाडरा प (र) गणामे पाछो अमल श्री दीवाणजीनु करावे, सो जाणसी. वेम तो घडी घडीनु ऊठावणो नही, ने जुबाब ठेरावे पाछो लीषसी, सो अठाथी बगसी रामकरणनु मेला. बगसी रामकरणनु तो महाराज कदेकाइ मेलीओ वे तो, पीण फेर रावतजीरा कागद इण मुजब लीषो आओ

(१) इस जगहसे कागज़ फटजानेके सबब कुछ हुरूफ़ जाते रहे हैं.

जीणसु जेज हुई हे, सो पाछो जाब बेगो ल(ष)सी, जेज नही करसी. सं। १८२७ पोस सुद १३.

जबतक कि रत्नसिंह कुम्भलमेरके क़िलेसे न निकला, महाराजाने इस बातको ग़नीमत जानकर नाथद्वारे (१) फ़ौज भेजदी, और गोड़वाड़ अपने क़ब्ज़हमें कर-लिया; लेकिन् रत्नसिंह को कुम्भलमेरसे निकालनेमें हीला हवाला होता रहा. इसपर महाराणाने पर्गनह गोड़वाड़ छोड़ देनेके लिये महाराजाको लिखा, परन्तु इसकी बाबत भी वहांसे टाला टूलीका जवाब आया. विक्रमी १८२८ माघ [हि० ११८५ ज़िल्क़ाद = ई० १७७२ फ़ेब्रुअरी] में जोधपुरके महाराजा विजयसिंह, बीकानेरके महाराजा गजसिंह और कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंह, तीनों नाथद्वारे आये; और विक्रमी चैत्र कृष्ण १३ [हि० ता० २७ ज़िल्हिज = ई० ता० १ एप्रिल] को महाराणा भी वहां पहुंचे. पेश्वाई वग़ैरह रस्में दस्तूरके मुवाफ़िक़ अदा हुई, और आपसमें दोस्तानह बर्ताव रहा. महाराजा गजसिंहने गोड़वाड़ वग़ैरह पर्गनह छोड़ देनेके बारेमें महाराजा विजयसिंहको बहुत कुछ समझाया, मगर उनके दिलपर गजसिंहके समझानेका कुछ भी असर न हुआ, सिर्फ़ ऊपरी दिलसे इक़ार करते रहे. तब गजसिंहने विजयसिंहको उनके गुरुके हुक्मका पाबन्द होनेके सबब सबको मन्दिरमें एकडा करके गुसाईंकी ज़बानी कहलाया. चूंकि वह गुसांईका कहा मानता था, लाचारीसे उसके कहनेपर अमल करनेका इक़ार किया; और अपने साथी सर्दारोंसे कहा, कि गुरुकी आज्ञासे अब गोड़वाड़ छोड़नी पड़ी. मगर आउवा और खींवसरके ठाकुरोंने बीकानेरके महाराजासे कहा, कि विजयसिंह हमारे सिरोंका मालिक है, मुल्कका मुरूतार नहीं है; यह पर्गनह हम हर्गिज़ न छोड़ेंगे. इसपर महाराणा अरिसिंहने गुस्से होकर कहा, कि कुछ मुज़ायक़ह नहीं; यह पर्गनह तुम्हारे पास किसी तरह नहीं रह सक्ता; बल्कि पाली और सोजत दोनों ब्याजमें लिये जायेंगे. महाराजा गजसिंहने तक़ार बढ़ती देखकर दोनों सर्दारोंको धमकाया, और मीठी बातोंसे महाराणाका गुस्सह दूर किया; लेकिन् इस मुलाक़ातका कुछ नेक नतीजह न निकला. महाराणा वहांसे रवानह होकर उदयपुरमें आये, और दूसरे राजा अपनी अपनी रियासतोंको सिधारे. इस

---

(१) नाथद्वारेमें लालबाग़के क़रीब, जहां मारवाड़की फ़ौज रहती थी, वह जगह अबतक फ़ौजके नामसे मश्हूर है, और उस फ़ौजका मुसाहिब, जो एक सिंघी महाजन था, उसकी औलाद अबतक नाथद्वारेमें मौजूद है.

बारेमें महाराणा भीमसिंह व जवानसिंहके नाम भी कई तह्रीरें हुईं, जिनकी नक्लें इसी जगह दर्ज कीजाती हैं:-

॥ श्रीरामजी १

॥ स्वस्ति श्री म्हाराजा धीराज माहाराणाजी श्री भीवसीघजी जोग, राज राजेसुवर माहाराजा धीराज माहाराज श्री मानसीघजी लीषावता मुजरो वांचजो; अठारा समाचार भला हे, आपरा सदा भला चाहीजे; सदा हेत इकलास रषावे हे, तीसु वसेक रषावसी, अप्रंच ॥ अठे पाच सीरदार घोडा हे, सु आपराहीज जाणसी. हमार अठे काम पड़ीओ हे, सु ईण बातने बीचारणरी सला हे, सु हमे आपने आबाजीरी फोजरो कुच कराअे सताब गाटे ऊत्रसी; ने अठीसु म्हे आपसु आअे सामल हुसा, ने गोरवाड़ आपनु ले देस्या; अे माहारा वचन हे. आप मासु ओर त्रे न जाणो, तो मेंही ओर त्रे जाणा, तो आपने मा वीचे ईस्टदेव हे. ईणमे दुत्रफो फाअेदो हे, ने जेज करण जु न हे, सु गणी वेगी सला वीचारसी. स्वत १८५४ रा वेसाष बीद १ वार रवी मुकाम गढ जालोर.

॥ श्री परमेस्वरजी सायछे.

॥ स्वसती श्री ऊदेपुर सुथाने स्रब ओपमा वीराजमान म्हाराज धीराज म्हाराणा श्री भीमसीघजी जोग्य, जोधपुरथी म्हाराजा धीराज म्हाराज श्री धोकलसीघजी लीषावत जुहार बाचसी; अठारा स्माचार श्री जीरा तेज प्रतावसु भला छे, राजरा सदा भला चाहीजे, राज बडा छो, ठाकुर छो; सदा हेत ईकलास राषो छो, तीणसु वीसेस रषावसो, दुजायगी कणी बातरी न जाणसो, अप्रच ॥ गोढवाडमे आगे म्हाराजाजी श्री वीजेसीघजी अमल कीओ थो, सु म्हे पाछी मामाजी श्री जगतसीघजी आगे राजरी नीजर कीवी हे, सु हमे गोढवाडमे राजरो अमल करावसो, अठारो दुसमण सु राजरो दुसमण, ने ऊठारो दुसमण सु म्हारो दुसमण, ने राजरो सेण सु म्हारो सेण; अठा ऊठारो ऐक राह जाणसो; ईणमे कदेई तफावत नपडसी, श्री हीगलाजजी बीचे छे. संवत् १८६३ रा मीती बेसाष बीद ९ सुकरवार, मुकाम जोधपुर बारला डेरा.

इस बारेमें और भी बहुतसे अस्ल काग़ज़ मौजूद हैं, परन्तु विस्तारके ख़यालसे उनकी नक़्लें नहीं लिखीं; और इस मुआमलेकी बाबत कर्नेल टॉडने अपनी किताबमें जो हाल लिखा है, उसका तर्जमह टॉड राजस्थानकी जिल्द १ प्रकरण १६ के एष्ठ ४६ से यहांपर दर्ज कियाजाता है:-

" गोड़वाड़का पर्गनह बहुत अच्छा ज़रखेज़ है, जिसमें राठौड़, सोलंखी और राणावतोंकी जागीरें हैं, जो महाराणा साहिबको पैदलोंके सिवा ३००० सवार नौकरीमें देते थे; वह तमाम चूंडावतोंसे ज़ियादह हैं. जोधपुरके आबाद होनेसे पहिले मंडोवरके परिहार राजपूतोंसे राणाईके ख़िताब सहित यह ज़िला हासिल किया गया, जिसकी उत्तरी हद चूंडावतोंके ख़ूनसे क़ाइम की थी. वह पर्गनह राणाने राजा विजयसिंहको इस मत्लबसे दिया, कि कुम्भलगढ़में रहनेवाले झूठे दावेदारके क़ब्जेमें न आवे. अस्ली अह्दनामह अबतक मौजूद है, जिसमें मारवाड़का राजा इक़ार करता है, कि इस जागीरके एवज़ ३००० आदमी राणाकी नौकरीमें दिये जाएंगे. यह पर्गनह पीछा आजाता, लेकिन् राणा अरसीकी कम अक़्ली उसको अहेड़ाके शिकारके लिये हाड़ाके साथ बूंदीकी तरफ़ लेगई."

महाराणाने सोचा, कि अभी जोधपुरसे लड़ाई करना ठीक नहीं, क्योंकि रत्नसिंह उनसे दबा हुआ है; मुनासिब है, कि अव्वल मेवाड़के मुख़ालिफ़ सर्दारोंको सीधा करलें, बाद उसके गोड़वाड़पर क़ब्ज़ह किया जावे. इसलिये उन्होंने पहिले भींडरके ठिकानेको ख़ालिसहमें दाख़िल किया, लेकिन् कुछ अरसह बाद महाराज मुह्कमसिंहको देदिया. इसके बाद बहुत कुछ फ़ौज साथ लेकर महाराणा उदयपुरसे रवानह हुए; और चूंकि आठूंणके जागीरदार बाबा गुमानसिंह पूरावतसे महाराणाकी गद्दीनशीनीसे पहिलेकी अदावत थी, इस वास्ते आठूंणके क़िलेको जा घेरा. बाबा गुमानसिंहने भी मरनेका इरादह करलिया, और थोड़ेसे आदमियों समेत क़िलेसे बाहर निकल आया. महाराणाने अपनी फ़ौजको हुक्म दिया, कि उसे ज़िन्दह गिरिफ्तार करले, लेकिन् उसने क़िलेसे बाहर आनेके वक़्त रूईदार अंगरखे व पाजामेको तेलसे तर करके पहिन लिया; और आग लगाकर नंगी तलवारसे फ़ौजके आदमियोंपर वार करने लगा. यह हाल सुनकर महाराणाने भी उसपर वार करनेका हुक्म दिया, और फ़र्माया, कि अगर वह ज़िन्दह हाथ आता, तो मैं उसकी ज़ुरूर बे इज़्ज़ती करता, लेकिन् उसकी बहादुरीके सबब मैंने उसके बेटे दौलतसिंहको आठूंणका ठिकाना वापस दिया; और उपरेड़ाके क़िलेको बर्बाद करके जागीरदारको निकाल दिया.

इसके बाद जब कि बरसलियावासमें महाराणा मुक़ीम थे, ख़बर मिली, कि देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहने, जो जयपुरमें था, शिमरू फ्रेंचमैनको रुपया देना

ठहराकर अपने छोटे बेटे स्वरूपसिंहके साथ मेवाड़की बर्बादीके लिये भेजा है; और वह पांच हज़ार जर्रार फ़ौज व तोपखानह समेत अजमेर ज़िलेके देवलिया गांवमें आ पहुंचा है. महाराणाने उसी वक्त नक़ारेका हुक्म दिया, इसपर रावत् अर्जुनसिंहने कहा, कि अभी आधी रात है, हम सबको इस वक्त रवानह करदेवें, और आप फ़ज्रको सवार होकर तशरीफ़ लावें. महाराणाने उक्त रावतके साथ जमादार मलंग, जमादार फ़ीरोज़, जमादार अब्दुर्रज़ाक़, जमादार लड़ाऊ, जमादार गुलहाला, जमादार कोली, जमादार जुम्मा, और कोशीथलके चूंडावत जगावत उम्मेदसिंहको अपनी अपनी जमइयतों सहित रवानह किया; और आप भी कुछ रात बाक़ी रहे सवार होगये.

जब खारी नदीके इस किनारेपर रावत् अर्जुनसिंह पहुंचा, तो शिमरूने भी दूसरे किनारे पर अपना तोपखानह जमाया; और दोनों तरफ़से गोलन्दाज़ी शुरू होगई. महाराणा भी थोड़ी देर बाद अपनी फ़ौजके शामिल होगये. इस वक्त कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंह, जो शिमरूके दोस्त और महाराणाके ससुर थे, आपहुंचे. इन्होंने शिमरूसे कहा, कि तुम किसके कहनेसे यहां चले आये? यदि महाराणासे वाक़िई मुक़ाबलह हुआ, तो फ़ौज सहित मारे जाओगे; और महाराणासे कहा, कि शिमरूके पास बहुत बड़ा तोपखानह है, अगर आपकी फ़त्ह हुई, तो भी अच्छे अच्छे हज़ारों राजपूत मारे जावेंगे. ग़रज़ महाराजाने दोनोंको समझा बुझाकर आपसमें सुलह करवादी, और शिमरूने महाराणाके पास अकेले हाज़िर होकर एक जोड़ी पिस्तौल, एक तलवार और एक घोड़ा उनके नज़ किया; महाराणाने भी उसे ख़िल्अ़त व घोड़ा देकर विदा किया. उस फ़्रान्सीस बहादुरने जशवन्तसिंहके बेटे स्वरूपसिंहसे कहा, कि तुमने मुझे धोखा दिया, कि महाराणा उदयपुरसे बाहर नहीं निकलते, और मेवाड़के कुल सर्दार हमारे मददगार हैं. हमारे दो क़दम भी मेवाड़में न पड़े, कि महाराणा बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ ख़ुद मुक़ाबलहको आगये; ऐसे बहादुर राजाका मुल्क कौन लेसक्ता है ?

महाराणाने वहांसे रवानह होकर अमरगढ़के क़िलेको जा घेरा. बूंदीके रावराजा उम्मेदसिंहने राज तर्क करके अपने बेटे अजीतसिंहको रावराजा बना दिया था. वह नौ जवान जवानीके नशेमें चूर था, मेवाड़के बदख्वाह सर्दारोंके बहकानेमें आगया. लोग कहते हैं, कि उसको ऐसी शर्मिन्दगीकी बात कहलाई, जिससे उसने अपनी जानका भी ख़ौफ़ छोड़ दिया, और दिलमें दग़ाबाज़ी ठानकर महाराणाकी मुलाक़ातको आया. बूंदीकी तवारीख़ वंशप्रकाशमें इस दग़ाबाज़ीका हाल इस तरहपर लिखा है:- सकरगढ़ .इलाक़ह मेवाड़के फ़सादी लोग इलाक़ह बूंदीको बर्बाद करते थे, इस वास्ते अजीतसिंहने सकरगढ़पर क़ब्ज़ह कर लिया,

और महाराणासे मिलकर कुछ एवज़में देने बाद वह गांव अपने क़ब्ज़हमें रखना चाहा; लेकिन् महाराणाने न माना, तो गुस्सेकी हालतमें उसने उनको मारा. कर्नेल टॉडने उस ज़मानहमें मौजूद होने वाले तरफ़ैनके आदमियोंकी ज़बानी सुनकर यह लिखा है :-

"कि सर्दार बूंदीको सरहद्दके झगड़ेमें एक टुकड़े ज़मीनकी बाबत, जिसमें चन्द आमके दरख़्त थे, कुछ बहाना हाथ लग गया; लेकिन् यह बहाना भी उस कामकी बे इन्साफ़ीको, जिसके पूरा करनेमें उससे बुज़ दिलापन अ़लावह उसकी वह्शतके ज़ुहूरमें आया, कम नहीं करता है. उसके बुज़ दिलेपन और उसकी वह्शतको देखो, कि जब वह राणाके साथ सूअरका शिकार कर रहा था, उसने राणाकी छातीमें बर्छी मारी, और इस तरह उसका काम तमाम किया. यह हर-कत करके क़ातिल बड़ा शर्मिन्दह हुआ. इस नालाइक़ कामके होनेसे लोग उससे नफ़रत करने लगे, उसके बाप और तमाम हाड़ा क़ौमने उसको बड़ी लानत मलामत की."

मेवाड़में बाज़ बाज़ लोग, जिन्होंने इस मुआमलेको देखने वालोंकी ज़बानी सुना है, अबतक मौजूद हैं; वे इस तरह बयान करते हैं- कि अजीतसिंह महाराणाकी मुलाक़ातको आये, महाराणाने मुहब्बतके साथ उनकी ख़ातिर की. और यह भी सुना गया है, कि अजीतसिंहके पिता उम्मेदसिंहने, जो बूंदीसे कुछ फ़ासिलेपर फ़क़ीरी हालतमें रहता था, महाराणाको एक काग़ज़ इस मत्लबसे लिख भेजा, कि आप मेरे लड़केका हर्गिज़ एतिबार न करें; लेकिन् वह काग़ज़ महाराणाकी फ़ौजमें मुख़ालिफ़ोंने दबालिया. अमरगढ़के रावत् जवानसिंहकी ज़बानी, जो अस्सी वर्षसे ज़ियादह उ़म्रमें अभी तक ज़िन्दह हैं, इस ग्रन्थकर्ता (कविराजा श्यामलदास) ने सुना है, कि मेरे दादाको इस दग़ाबाज़ीका हाल मालूम होगया, तब उन्होंने एक अ़र्ज़ी महाराणाके नाम लिख भेजी, कि हमको तो आप बेशक क़त्ल कीजिये, परन्तु आप अपनी हिफ़ाज़त अच्छी तरह करलें, अजीतसिंह आपको मारनेके लिये आया है; मगर महाराणाने कुछ ख़याल न किया; और उस अ़र्ज़ीको फाड़कर कहा, कि अब मरनेके ख़ौफ़से ख़ैरख़्वाह बनना चाहता है. लोगोंका बयान है, कि बक़रईदके मौक़ेपर शुक्रवारके दिन तमाम सिंधी जमादार अपनी दावतमें चले गये, विक्रमी १८२९ चैत्र कृष्ण १ [हि० ११८७ ता० १४ ज़िल्हिज = ई० १७७३ ता० ९ मार्च] को यह मौक़ा ग़नीमत जानकर अजीतसिंह महाराणाके डेरेमें आया, और कहने लगा, कि मैं जंगलमें एक ख़र्गोश (१) देख आया हूं; आप चलें, तो घोड़े

---

(१) कर्नेल टॉडने सूअर लिखा है.

पर सवार होकर बर्छेसे उसका शिकार करें. महाराणा बे सोचे बिचारे एक छोटे घोड़ेपर सवार होकर उनके साथ होलिये. महाराणाके हम्राही लोग, जो क़रीब दो सौ के वहां मौजूद थे, साथ चलनेको तय्यार हुए; मगर अजीतसिंहने उनको यह कहकर रोक दिया, कि ज़ियादह हुजूमसे ख़र्गोश भाग जावेगा; इसलिये सिर्फ़ तीन सर्दार और चौथा चारण पन्ना साथ आये. सनवाड़का बाबा शंभुसिंह, बावलासका बाबा दौलतसिंह, उसका छोटा भाई अनूपसिंह और चारण आढ़ा पन्ना, मना करनेपर भी साथ गये, और इनके अलावह दस बीस आदमी छड़ीबर्दार, हरकारे, जलेबदार वगैरह हम्राह थे.

फ़ौजसे बहुत दूर निकल जाने बाद राव राजाने चारण आढ़ा पन्नासे कहा, कि मैं तुम्हारे घोड़ेकी खुरी (दौड़) देखना चाहता हूं. इसके जवाबमें उसने कहा, कि यहां दोनों बाजू और साम्हनेको पत्थर बहुत हैं. तब महाराणाने तेज़ होकर कहा, कि फ़ौजकी तरफ़ साफ़ रास्तह है, राव राजाको क्यों नहीं खुरी दिखलाता. उसने अपने घोड़ेको ललकारकर चाबुक मारा, और तुन्द किया; अब महाराणाके पास तीन ही सर्दार रहगये. इस समय मौक़ा पाकर अजीतसिंहने महाराणाकी छातीमें वर्छा मारा, और उनके साथ, जो चार पांच सर्दार थे, उन्होंने भी उसी दम महाराणाके तीनों सर्दारोंपर वार किया. रूपा नामी एक छड़ीदारने राव राजाके सिरमें ऐसे ज़ोरसे छड़ी मारी, कि वह मूर्छित होकर ज़ीनपर झुक गया, और उसके साथके सर्दार भाग निकले. राव राजाका घोड़ा भी अपने बेहोश सवारको लिये हुए भागा. बूंदी वाले अपनी तवारीख़में राव-राजाके हाथपर छड़ी लगना क़बूल करते हैं; लेकिन् हमने रूपा छड़ीदारके बेटे दलसिंह से जैसा सुना, लिखा है. वृद्ध जन यह भी कहते हैं, कि उसी छड़ीके सदमेसे छः महीने बाद राव राजा मरगये, और बूंदी वाले शीतलाकी बीमारीसे उनका मरना बयान करते हैं. ग़रज़ कि ऊपर लिखी मितीको तीसरे पहर यह मारिका हुआ. महाराणा मए बाबा दौलतसिंह व शंभुसिंहके मारे गये, और बाबा अनूपसिंह सख़्त ज़ख़्मी होकर ज़िन्दह रहा, जो बावलासका मालिक हुआ.

दूसरे दिन महाराणाका दाह कर्म किया गया, उनके साथ मनभावन पासबान सती हुई. यह दग्ध स्थान अमरगढ़के नज़्दीक अबतक मौजूद है. बाबा दौलत-सिंह व शंभुसिंह भी महाराणाकी चिताके क़रीब ही जलाये गये. अजीतसिंह तो जान लेकर भागा, और मेवाड़की फ़ौजने उसी वक़्त उनका अस्बाब व तोप-ख़ानह लूट लिया (१). उदयपुर ख़बर आनेपर महाराणी राठौड़ व पासबान

(१) ऐसा भी सुना है, कि चन्द तोपें बूंदीकी अमरगढ़ वालोंके हाथ लगीं, जो वहांके क़िलेमें मौजूद हैं.

सज्जनराय, कमलराय और व्रजकुंवरराय सती हुई, और एक महाराणी भटियाणी, जो अपने पीहर मोहीमें थी, वहीं सती हुई. फ़ौजके मुसाहिबोंमें सलाह हुई, कि बूंदीपर घेरा डालकर बदला लिया जावे, लेकिन् कई मुसाहिबोंने, जो महाराणाकी क्रूरतासे नाराज़ थे, कहा, कि कुम्भलमेरमें रत्नसिंह मौजूद है, वह महाराणाके कुंवर हमीरसिंह व भीमसिंहको बालक जानकर उदयपुरमें क़ब्ज़ह करलेगा. इस नाक़िस सलाहसे कुल फ़ौज उदयपुर चली आई. इन महाराणाके दो कुंवर बड़े हमीरसिंह व छोटे भीमसिंहके सिवा दो राजकुमारी थीं, बड़ी चन्द्रकुंवर, जिसका जन्म विक्रमी १८२० श्रावण शुक्ल १३ रविवार [हि० ११७७ ता० १२ सफ़र = .ई० १७६३ ता० २२ ऑगस्ट] को हुआ, और दूसरी अनूपकुंवर, जो विक्रमी १८२१ फाल्गुन् शुक्ल २ गुरुवार [हिं० ११७८ ता० १ रमज़ान = .ई० १७६५ ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को पैदा हुई. ख़वासके पुत्र १ गोपालदास, २ देवीदास, ३ भगवानदास, ४ मनोहरदास, ५ चैनदास, ६ मोहनदास और ७ जवानदास थे; पासबानोंकी कन्या १ पेमवतां, २ फूलवतां, ३ चद्रमतां, ४ इन्द्रमतां और ५ सूरजमतां हुईं.

इन महाराणाकी महाराणियों व ख़वासोंके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

१- महाराणी झाली सर्दारकुंवर, गोगूंदाके राज कान्हसिंहकी बेटी (१); २- महाराणी देवड़ी अमृतकुंवर, नाथसिंहकी बेटी; ३- महाराणी राठौड़ सर्दारकुंवर, रतलामके राजा पृथ्वीसिंहकी बेटी; ४- महाराणी राठौड़ ईडरेची गेंदकुंवर, भोपतसिंहकी बेटी; ५- महाराणी राठौड़ छप्पनी सरसकुंवर, चन्द्रसेनकी बेटी; ६- महाराणी सोलंखणी कुंवरांबाई, बीरपुरा अभयसिंहकी बेटी; ७- महाराणी भटियाणी गुमानकुंवर, मोहीके जागीरदार पृथ्वीसिंहकी बेटी; और ८- महाराणी चहुवान राधाकुंवर, उदयभानकी बेटी.

१- ख़वास गुलाबराय, २- ख़वास रूपराय, ३- ख़वास कुशालराय, ४- ख़वास देवड़ी, ५- ख़वास मनभावन, ६- ख़वास गणेशराय, ७- ख़वास सज्जनराय, ८- ख़वास सुखवालेसी, ९- ख़वास कमलराय, १०- ख़वास चैनकुंवरराय, ११- ख़वास व्रजकुंवरराय, और १२- ख़वास पेमराय थी.

---

(१) बड़वा भाटोंने महाराणा राजसिंहकी महाराणी झालीको राज जशवन्तसिंहकी बेटी और कान्हसिंहकी पोती गुलाबकुंवर लिखा है, और गोगूंदासे हमारे पास जो ख्यात आई, उसमें महाराणा अरिसिंहकी जिसके साथ शादी हुई, उसको राज कान्हसिंहकी बेटी, सर्दारकुंवर, और जिसके साथ महाराणा राजसिंहकी शादी हुई, उसको भी राज कान्हसिंहकी बेटी सरसकुंवर लिखी है; मश्हूर भी यही है; लेकिन् हमको इस इख़्तिलाफ़के मिटानेके लिये तीसरा कोई मज़बूत सुबूत नहीं मिला.

इन महाराणाका मझोला क़द, गेहुवां रंग, पतला और भरा हुआ बदन था. यह ईर्षा, गुस्सह, ज़िद व खुद पसन्दी रखनेके सिवा कानके कच्चे, लेकिन् अव्वल दरजेके बहादुर, मिह्नती, घोड़ेकी सवारी और शस्त्र विद्यामें प्रवीण और फ़य्याज़ थे. इनके पास खैर-ख्वाह आदमी भी मौजूद थे, लेकिन् वे क़द्री व शक्किया मिज़ाजीसे वे लोग दिलशिकस्तह होकर अपने अपने घरोंमें बैठ रहे, जिससे रियासतको नुक्सानके साथ बहुत बड़ा सद्मह उठाना पड़ा.
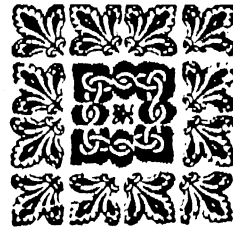
मरहटोंकी तवारीख़.

इस क़ौमका बयान बहुतसे फ़ार्सी तवारीख़ वालों और ग्रैंटडफ़ वग़ैरह अंग्रेज़ी मुवर्रिख़ोंने किया है, लेकिन् हम यहांपर बहुतसी ग़ैर ज़ुरूरी तवालतको छोड़कर उनका मुख़्तसर अह्वाल पाठकोंकी वाक़िफ़ियतके लिये लिखते हैं; जो कि महाराणा अरिसिंह ३ के समय इन लोगोंसे बड़े बड़े मारिके पेश आये थे, इसलिये उक्त महाराणाके हालमें ही इनका भी ज़िक्र करना मुनासिब समझा.

शुरूमें यह लोग दक्षिणी हिन्दुस्तानमें क़ियाम रखते थे, लेकिन् कुछ अ़र्सह बाद बढ़ते बढ़ते बंगाला, पंजाब और हिन्दुस्तानके उत्तरी भागमें हिमालय तक फैल गये, और ऐसा रोब जमाया, कि अगर इन्होंने मुल्कपर बादशाहत करनेका ढंग डाला होता, तो इनको कुल हिन्दुस्तानका बादशाह बननेमें कोई रोक टोक न थी; परन्तु उनमें अक्सर लुटेरापनकी आदतें थीं, इस कारण बर्साती पानीके तौर, जिस तरह एक दम फैले, उसी तरह उतर गये; अब उनके नौकरोंमेंसे बड़ौदा, ग्वालियर, इन्दौर, धार और देवास वग़ैरह रियासतोंपर इस वक़्त क़ाबिज़ रहे हैं. इस गिरोहके अस्ली मालिक सितारा व नागपुर वालोंमेंसे ग़ारत होकर कोल्हापुर, सावन्तवाड़ी व तंजावर वग़ैरह अभी नाम व निशानके लिये मौजूद हैं. अस्लमें मरहटोंके सरगिरोह सीसोदिया राजपूत गिनेजाते हैं, जिनके मेवाड़से जुदा होनेकी तवारीख़ सहीह सहीह लिखना मुश्किल है. ख़फ़ीख़ां अपनी तवारीख़ मुन्तख़बुल्लुबाबमें इनको चित्तौड़के राजाओंकी शाख़ बयान करके पैवन्दी ख़ानदान लिखता है; और मुहम्मद गुलाम हुसैनने भी अपनी बनाई हुई किताब सैरुल्मुतअख़्ख़िरीन में ख़फ़ीख़ांके मुवाफ़िक़ बयान किया है; ग्रैंटडफ़ साहिब अपनी किताबमें पुराना हाल छोड़कर मालूजी, शाहजी घोंसलासे उनका तारीख़ी हाल लिखना शुरू करते हैं; मगर पुराने नसबनामहका किसीसे पूरा पूरा ठीक पता न मिलनेके सबब हम एक कुर्सी नामह सिताराके मोतबर पंडित शिवानन्द शास्त्रीका लिखाया हुआ, जो वहांके आख़िरी राजा प्रतापसिंह छत्रपतिका भेजा हुआ उदयपुर आया था, और जो हमको पुरोहित पद्मनाथने दिया, उसकी नक़ल नीचे दर्ज करते हैं:-

१ महाराणा अजयसिंह, २ सज्जनसिंह, ३ दूलीसिंह, ४ सिंह, ५ घोंसला, ६ देवराज, ७ इन्द्रसेन, ८ शुभकृष्ण, ९ रूपसिंह, १० भूमीन्द्र, ११ रापा, १२ बरहट, १३ खेलो, १४ कर्णसिंह, १५ शंभा, १६ बाबा, १७ मालू, १८ शाहजी, १९ शिवा, २० शंभा दूसरा, २१ साहू, २२ रामराज दत्तक, २३ साहू दूसरा दत्तक, और २४ प्रतापसिंह.

इसी नसबनामहके मुताबिक़ राजपूतानहमें भी मश्हूर है, कि महाराणा अजयसिंहसे घोंसला (१) ख़ानदानकी शाख़ पैदा हुई.

मार्शमेन् साहिबका बयान है, कि मालू घोंसला, जो सवारोंका एक बहुत अच्छा अफ्सर था, विक्रमी १६५७ [हि० १००९ = ई० १६००] में अह्मद-नगरके बादशाहका नौकर हुआ. चूं कि उसके कोई औलाद नहीं थी, इस सबबसे उसकी स्त्रीने शाह सेफ़र नामी एक मुसल्मान पीरकी मन्नत मानी. जब पीरकी बरकतसे उसके एक लड़का पैदा हुआ, तो उसका नाम उक्त पीरके नामपर शाहजी रक्खा. उसका जन्म विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में हुआ. मालू ने इस लड़के (शाहजी) का सम्बन्ध जादूरावके घरानेमें (जो शायद उस ज़मानहमें एक ख़ानदानी सर्दार होगा) करना चाहा; परन्तु उस वक्त जादूरावने इसको रुत्बेमें अपनेसे छोटा जानकर सम्बन्ध करनेसे इन्कार किया. मालूने थोड़े ही दिनोंमें लूट मार करके बहुतसा धन एकट्ठा करलिया, और अह्मदनगरके बादशाहने पूना और सोपा वगैरह पर्गने उसे जागीरमें दिये; तब जादूरावने भी रज़ामन्द होकर अपनी बेटीका विवाह शाहजीके साथ करदिया.

विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] में मालूका इन्तिक़ाल होगया, और शाहजी अपने पिताकी जगहपर क़ाइम होकर फ़ौजको बढ़ाने लगा. अव्वल उसने ख़ानिजहां लोदीसे मिलावट करके दिल्लीके बादशाह शाहजहां से बर्ख़िलाफ़ी इख्तियार की, लेकिन् कुछ अरसे बाद उसी बादशाह (शाहजहां) का नौकर बनगया. मार्शमेन् साहिबने उसको बादशाहकी तरफ़से पंज हज़ारी मन्सब मिलना लिखा है, लेकिन् थोड़े ही दिनोंके बाद वह दिल्ली वालोंसे बर्ख़िलाफ़ होकर दौलताबादकी तरफ़ चलागया. विक्रमी १६९० प्रथम वैशाख शुक्ल १३ [हि० १०४२ ता० १२ शव्वाल = ई० १६३३ ता० २२ एप्रिल] को जब कि शाहजहां बादशाहकी फ़ौज बीजापुरके मुहासरेको गई, आधी रातके वक्त साहू घोंसला और रन्दौलहने ख़ानिजहांके डेरोंपर हमलह किया; ख़ानिजहां उस समय वहां मौजूद न था, लेकिन् बूंदी वाले शत्रुशाल हाड़ाने उनका ख़ूब मुक़ाबलह किया. शाहजीने

(१) बाज़ बाज़ तवारीख़ोंमें भोंसला लिखा है.

९००० सवार लेकर खिड़की मक़ामपर दूसरा हमलह किया. इस वक़ रामपुरेका राव दूदा चन्द्रावत बादशाही फ़ौजका सर्दार बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. इन दिनों अहमदनगरकी सल्तनतमें खलल आजानेके सबब शाहजी बीजापुरका नौकर होगया था. जब पहिला निज़ामुलमुल्क बादशाह अक्बरकी क़ैदमें आगया, तो शाहजीने एक दूसरा निज़ाम उसकी जगह क़ाइम किया, उसको भी खानिजहांने गिरिफ्तार करके दिल्ली भेजदिया; तब शाहजीने फिर तीसरा निज़ाम खड़ा करके अहमदनगरमें लड़ाईकी तय्यारीके साथ बीजापुर वालोंसे मिलकर शाहजहांकी फ़ौजपर कई हमले किये, जिससे बादशाही नौकर भागकर बुर्हानपुरमें चलेआये, और शाहजीने निज़ामके मुल्कपर क़बज़ह बढ़ाया. यह बखेड़ा सुनकर विक्रमी १६९२ आश्विन कृष्ण ४ [हि० १०४५ ता० १८ रबीउस्सानी = ई० १६३५ ता० १ ऑक्टोबर] को बादशाह खुद आगरेसे दक्षिणकी तरफ़ रवानह हुआ. बुर्हानपुरसे आगे बढ़कर बीजापुर व गोलकुंडाके बादशाहोंको उसने अपने एल्ची भेजकर धमकी व नसीहतोंसे रोका, और आप दौलताबाद पहुंच गया. इसके बाद अहमद-नगरके इलाक़ेपर क़बज़ह करनेके लिये फ़ौजें भेजीं; तब शाहजीने कई मक़ामोंपर लड़ाइयां कीं; आख़िरकार शाहजहांने अहमदनगरके मुल्कको फ़त्ह करके बीजापुर पर दबाव डाला, क्योंकि वहांका बादशाह खानगी तौरपर शाहजीका मददगार हो रहा था. जब बीजापुरके बादशाह मुहम्मद आदिलखांने फ़ौजोंका ज़ियादह दबाव देखा, तो २०००००० बीस लाख रुपया शाहजहांके पास भेजकर सुलह चाही, और यह भी कहलाया, कि अगर शाहजी घोंसला अहमदनगरके इलाक़ोंसे कुछ भी छेड़ छाड़ करे, तो हम उसको नौकर न रक्खेंगे.

विक्रमी १६९३ श्रावण कृष्ण ३ [हि० १०४६ ता० १७ सफ़र = ई० १६३६ ता० २१ जुलाई] को शाहजहां दौलताबादसे आगरेकी तरफ़ रवानह होगया, और दक्षिणकी सूबेदारी शाहज़ादह औरंगज़ेबके सुपुर्द की; शाहजी घोंसला लाचार होकर बीजापुर चलागया. मुरारि पंडितने पूना और सोपाके पर्गने शाहजीको जागीरमें पक्के लिखवादिये, जो उसके बाप मालूजीके वक़्से क़ब्ज़ेमें थे, और बीचमें. बीजापुरके बादशाहने छीन लिये थे. जब नीरा और भीमा नदीके दर्मियान मुरारि पंडितने बन्दोबस्त किया, उस मौक़ेपर शाहजीने अच्छी मदद दी, इससे बीजापुरके शाहने कर्नाटककी चढ़ाईके वक़ रन्दौलह और शाहजीको फ़ौजका अफ़्सर बनाया; और उस मुल्कके फ़त्ह होने बाद शाहजीको कर्नाटकमें कोल्हार, बंगलोर, उसकट, बालापुर और सेरा वग़ैरहकी जागीर दी; इसके सिवा सितारेसे दक्षिण ज़िले कराड़में इन्होंने २२ गांवोंकी "देशमुखी" पाई. शाहजीके चार लड़के थे, जिनमेंसे बड़ा

शंभा और छोटा शिवा एक स्त्रीसे पैदा हुए थे, तीसरा व्यंका दूसरी स्त्री से और चौथा सन्ता एक पासवानसे पैदा हुआ था. शिवाका जन्म विक्रमी १६८४ ज्येष्ठ [हि० १०३६ रमज़ान = ई० १६२७ मई] में शिवानेरके क़िलेमें हुआ. जब शिवा बच्चा था, उसकी माता शाहजहांकी फ़ौजमें पकड़ी आई, और उसके पीहर वालोंने छुड़ाया, जो उस समय बादशाही नौकर थे. विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] से विक्रमी १६९३ [हि० १०४५ = ई० १६३६] तक शिवा और उसकी माता जीजाबाई दोनों, शाहजीसे जुदा रहे, लेकिन् छः सालके बाद् वे उसके पास बीजापुरमें चले गये. शिवाकी शादी निवालकरकी बेटीके साथ हुई. शाहजी तो कर्नाटककी तरफ़ गया, और शिवा व उसकी माको पूना भेजदिया; और दादा कोणदेव पंडितको शिवाका शिक्षक और पूनाकी जागीरका मुहाफ़िज़ बनाया. नरू पंडित हनमतेको कर्नाटक की जागीरका मुख़्तार किया. दादा कोणदेवने पूनाके ज़िलोंमें बहुत उम्दह बन्दोबस्त किया; और मावली क़ौमको, जो पहिले बहुत मुफ़्लिस और जंगली थी, आराम देकर दुरुस्त किया.

शिवा कुछ लिखने पढ़नेमें होश्यार न था, लेकिन् सिपाहगरीके फ़नमें चालाक होनेके सबब वह १६ वर्षकी उम्रसे लुटेरे लोगोंकी सुहबतमें रहने लगा, और उसकी यह ख़्वाहिश हुई, कि आज़ाद् राजा बनजावे. दादा कोणदेवने उसको इन आदतोंसे बहुत कुछ रोका, लेकिन् वह नहीं मानता था; विक्रमी १७०३ [हि० १०५६ = ई० १६४६] में उसने मावली लोगोंकी मददसे क़िले तोरणाको अपने क़बज़हमें किया, और बीजापुर वाले बादशाहके नाम इस मज़्मूनकी एक अर्ज़ी लिख भेजी, कि इस क़िलेमें मेरा क़बज़ह रखनेसे बादशाही तह्सीलमें बहुत फ़ायदह होगा; और बड़ा ख़िराज देनेके मत्लबसे कई अर्ज़ियां लिख भेजीं; लेकिन् उनका जवाब जल्दी नहीं मिला. इसमें देरी होना शिवाके हक़्में ज़ियादह मुफ़ीद था, उसने मौक़ा पाकर बीजापुरके अह्लकारोंको भी मिला लिया, कि जल्दी जवाब न देवें. शिवाके वकील तो बीजापुरमें यह कार्रवाई कर रहे थे, और शिवा क़िले तोरणामें मावली लोगोंको एकट्ठा करनेमें मश्गूल था. वहां पर उसको पुरानी इमारतें तोड़नेसे बहुतसी दौलत हाथ लगगई; इस क़ुद्रती मददके मिलनेपर उसने मेगज़िन वग़ैरह ख़रीदकर विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] में क़िले तोरणासे डेढ़ कोस अग्नि कोणकी तरफ़ मोर्बद पहाड़पर एक नया क़िला बनवाया, और उसका नाम राजगढ़ रक्खा. जब ये ख़बरें बीजापुरमें पहुंचीं,

तो उन लोगोंने शाहजीको दबाया, और उसने शिवाको नसीहतके तौरपर लिखा; मगर शिवाके दिलपर अपने पिताकी तह्रीरका कुछ असर न हुआ, क्योंकि वह मुसल्मानोंकी ताबेदारीसे नफ़रत करता था. इसी अ़र्सेमें दादा कोणदेव भी मरगया. अब शिवा अपने बाप शाहजीसे भी आज़ाद होकर इन ज़िलों और क़िलोंका खुद मुख़्तार हाकिम बना. एक मोहिता रूपाका क़िलेदार उसका फ़र्मांबर्दार न बना, जिसको उसने गिरिफ़्तार करके अपने बाप शाहजीके पास कर्नाटक भेजदिया. इसके बाद उसने पुरन्दरके क़िलेपर क़बज़ह किया, और इसी तरह चाकना तथा नीराके दर्मियानका इ़लाक़ह भी दबालिया.

विक्रमी १७०५ [हि० १०५८ = ई० १६४८] में उसने बीजापुरको जातेहुए आ़दिलशाहका ख़ज़ानह लूट लिया; और इन्हीं दिनोंमें कांगूरी, तुंग, तिकोना, भूरप, कुआरी, लोगर, और राज मांची वग़ैरह आ़दिलशाही क़िलोंपर अधिकार जमाया. इसी तरह कोकण देशके कई ज़िलोंमें लूट मार मचादी; कल्याण वग़ैरहके क़िले अपने क़बज़हमें लेकर आभा कोणदेवको वहांका हाकिम क़रार दिया.

यह ख़बरें सुनकर आ़दिलशाहने शाहजीको क़ैद करलिया, और विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में शाहजी उसी क़ैदकी हालतमें बीजापुर लाया गया. जब वह बादशाहके पास आया, तो उसने बहुतेरी मिन्नत की, और कहा, कि मेरा लड़का मेरे कहनेमें नहीं है; लेकिन् बादशाहको उसके कहनेपर यक़ीन न हुआ, और उसे एक तंग मकानमें क़ैद करके दर्वाज़ा बन्द करादिया, सिर्फ़ खिड़की खुली रक्खी, कि जिसकी राहसे उसको खाना पीना दियाजाता था. इसपर शिवाने दिल्लीके बादशाह शाहजहांसे दर्ख्वास्त की, और शाहनशाही ज़ोर डालकर अपने बापको क़ैदसे छुड़ाया; लेकिन् ताहम शाहजी बीजापुरमें नज़र क़ैदके तौरपर रक्खागया. जो कि आ़दिलशाहको शाहजहांकी नाराज़गीका बड़ा ख़ौफ़ था, इसलिये उसने शिवाको भी क़ैद करना चाहा, लेकिन् वह उसके फ़ेरेबमें न आया. विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में शाहजी बीजापुरसे रिहा होकर अपनी जागीर कर्नाटकमें पहुंचा, जहां कनकगिरीकी लड़ाईमें उसका बड़ा बेटा शंभा मारा गया. विक्रमी १७१४ कार्तिक कृष्ण १४ [हि० १०६७ ता० २७ मुहर्रम = ई० १६५७ ता० ४ नोवेम्बर] को आ़दिलशाह बीजापुरी मरगया, और उसका बेटा अ़ली आ़दिलशाह बीजापुरका बादशाह बना, जिसपर शाहजहांके हुक्मसे शाहज़ादह औरंगज़ेब और मीर जुम्लहने चढ़ाई की, लेकिन् कुछ दिनों तक ईश्वरको बीजापुरकी सल्तनत क़ाइम रखना मन्ज़ूर था, शाहजहांकी बीमारीकी ख़बर मिलनेसे

औरंगज़ेब फ़ौज ख़र्च लेकर पीछा औरंगाबादको चलागया. इन दिनोंमें शिवाने औरंगज़ेबसे मिलावट करली, और उसकी इजाज़त लेकर कोकणकी तरफ़ क़बज़ह बढ़ाया.

बीजापुरमें अली आदिलशाहकी नातजिबहकारीसे बद इन्तिज़ामी फैलती जाती थी, कई पठान नौकरियें छोड़कर शिवाके पास आगये, जिससे उसकी बग़ावत और भी ज़ियादह बढ़ी. यह हालत देखकर अली आदिलशाहने अपने मातह्त ज़बर्दस्त सर्दार अफ़्ज़लख़ांको एक बड़ी फ़ौज समेत शिवापर भेजा. शिवाने दग़ाबाज़ीसे सुलहका पैग़ाम भेजकर अपने कुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, जिसपर अफ़्ज़लख़ांने उसके पास तसल्ली देनेके लिये पण्डित पंथो गोपीनाथको भेजदिया. शिवाने उस ब्राह्मणको मिलालिया, उसने भी वापस आकर अफ़्ज़लख़ांसे कहदिया, कि शिवा बहुत डरा हुआ है, आप अकेले चलकर प्रतापगढ़में उसकी तसल्ली करदीजिये. अफ़्ज़लख़ांने इस बातको कुबूल करके प्रतापगढ़के क़िलेसे नीचे मिलनेको कहा. शिवाने धोखादिही करके अपने लोगोंको चारों तरफ़के पहाड़ोंमें छिपादिया, और आप अफ़्ज़लख़ांसे मुलाक़ात करनेके लिये क़िलेसे नीचे उतरा; मिलनेके वक़ शिवाने उस साफ़ दिल मुसलमान सर्दारको मारडाला, और उसका तमाम ख़ज़ानह व लड़ाईका सामान वगैरह लूट लिया. ग्रेएट डफ़ साहिब लिखते हैं, कि अफ़्ज़लख़ांकी तलवार अबतक सिताराके तोशहख़ानहमें मौजूद है. इसके बाद परनाला, पवनगढ़ व बसन्तगढ़ वगैरह क़िलोंपर क़बज़ह करलिया, और यहांतक बढ़ा, कि बीजापुरके गिर्दोनवाहमें भी लूट मार मचादी. तब अली आदिलशाहने सीदी जौहर और अफ़्ज़लख़ांके बेटे फ़ज़्ल मुहम्मदको बड़ी भारी फ़ौज देकर शिवाके मुक़ाबलेपर भेजा. परनाला मक़ामपर चार महीनेतक शिवा लड़ता रहा, इसके बाद दबकर क़िले रीगणेमें जाघुसा. अली आदिलशाह, सीदी जौहरपर शिवासे रिश्वत लेनेका इल्ज़ाम लगाकर बीजापुरसे चढ़ दौड़ा, और परनाला व पवनगढ़ वगैरह कई क़िलोंपर उसने अपना क़बज़ह करलिया. आपसमें कई लड़ाइयां होने बाद शिवाने कुल कोकण देशको अपने अधिकारमें ले लिया. ग्रेएट डफ़ साहिब लिखते हैं, कि उस वक़ उसके पास ७००० सवार और ५०००० पैदल थे.

जब बीजापुर वालोंमें शिवाके रोकनेकी ताक़त न रही, तब उसने अहमदनगरके इलाके याने आलमगीरके मुल्कमें पैर बढ़ाया. यह ख़बर पहुंचनेपर आलमगीरने शायस्तहख़ांको एक बड़ी फ़ौजके साथ शिवाकी तरफ़ रवानह किया; कई जगह मुक़ाबलह करके उसने मरहटोंको हटादिया, और पूनामें पहुंचकर तलकोकणपर क़बज़ह करलियां. इसके बाद पूना छोड़कर क़िले चाकनाका मुहासरह किया. चन्द

रोज़ बाद उसमें अपना अमल दख़्ल जमा लिया. शायस्तहख़ां अपनी फ़ौज आरास्तह करके विक्रमी १७१९ [हि० १०७२ = .ई० १६६२] में पूनाको आया. आलमगीरने जोधपुरके राजा जशवन्तसिंहको गुजरातकी सूबेदारीसे शायस्तहख़ांकी मददके लिये दक्षिणकी तरफ़ भेजदिया. विक्रमी १७२० चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० १०७३ रमज़ान = .ई० १६६३ एप्रिल] में शिवाने एक मरहटेको दुलहा बनाकर रातके वक्त पूनामें छापा मारा, और शायस्तहख़ांके कई आदमियोंको मकानके अन्दर मारडाला. इसी हमलेमें मुख़ालिफ़ोंकी तलवारसे शायस्तहख़ांके हाथकी एक अंगुली कट गई. शिवा सहीह व सलामत निकल गया. शायस्तहख़ांका बेटा अबुल्फ़तहख़ां जानसे मारा गया. आलमगीरने इस गफ़लतसे नाराज़ होकर शायस्तहख़ांको बंगालेकी सूबेदारीपर भेजदिया, और अपने शाहज़ादे मुहम्मद मुअज़्ज़मको दक्षिणकी सूबेदारीपर रवानह किया.

विक्रमी १७२१ [हि० १०७४ = .ई० १६६४] में शिवाने सूरत वगैरह बन्दरको लूटा, और इन्हीं दिनोंमें उसका पिता शाहजी तुंगभद्रा नदीके किनारे शिकार खेलते वक्त घोड़ेसे गिरकर मरगया; तब शिवाने राजाका ख़िताब इख़्तियार करके अपने नामका सिक्कह जारी किया. आलमगीरने महाराजा जशवन्तसिंहको दक्षिणसे तलब करके उसके एवज़ आंबेरके महाराजा जयसिंह अव्वलको भेजा, और महाराजाने मरहटोंके अक्सर क़िले फ़त्ह किये. जब शिवाने मुल्ककी बर्बादी और अपनी ना ताक़ती देखली, तो लाचार होकर महाराजाके पास अपने एक पंडित रघुनाथ पन्थ न्याय शास्त्रीको सुल्हका पैग़ाम देकर भेजा, महाराजाने उसकी तसल्ली की, जिसपर विक्रमी १७२२ आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १०७५ ता० ८ ज़िल्हिज = ई० १६६५ ता० २२ जून] (१) को शिवा मए थोड़ेसे आदमियोंके शाही लश्करमें चला आया. महाराजाने ताज़ीम वगैरह इज़्ज़तसे उसे अपनी गद्दीपर बराबर बिठाया. तरफ़ैनमें तसल्लीके लाइक़ इक़्रार होनेपर शिवाने कई क़िलोंसे अपना दख़्ल उठा लिया; और महाराजाकी अर्ज़ी पहुंचनेपर आलमगीरने शिवाके नाम तसल्लीका एक फ़र्मान और उसके ८ वर्षकी उम्र वाले बेटे शंभाको पांच हज़ारी ज़ातका मन्सब लिख भेजा.

विक्रमी १७२२ चैत्र कृष्ण ८ [हि० १०७६ ता० २१ रमज़ान = .ई० १६६६ ता० २८ मार्च] को बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ महाराजा जयसिंहने शिवा व उसके बेटे शंभाको तसल्ली देकर आगरेकी तरफ़ आलमगीरकी ख़िद्मतमें रवानह किया, जो विक्रमी १७२३ ज्येष्ठ कृष्ण १ [हि० १०७६ ता० १५ ज़िल्क़ाद =

(१) ग्रैंटडफ़ साहिबने जुलाई महीनेमें शिवाका शाही लश्करमें आना लिखा है, लेकिन मूलमें ख़फ़ीख़ांके लिखनेको मोतबर समझकर ८ ज़िल्हिज लिखा गया.

.ई० १६६६ ता० २० मई] को आगरे पहुंचा. बादशाहने जयसिंहके कुंवर रामसिंह व मुख़्लिसख़ांको शह्रके बाहरतक पेश्वाईको भेजा, और विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ४ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २३ मई] को अपने दर्बारमें बुलाया. बख़्शीने शिवाको पांच हज़ारी मन्सबदारोंकी सफ़में खड़ा किया, जिसपर वह बहुत नाराज़ हुआ, और बड़बड़ाया, क्योंकि यह .इज़्ज़त याने पांच हज़ारी मन्सब उसके बेटे व दामादको मिलचुकनेके सबब वह अपने वास्ते ज़ियादहका उम्मेदवार था. बादशाहने इस गुस्ताख़ीसे ख़फ़ा होकर उसे अपने डेरे चले जानेका हुक्म दिया, और वहां उसे नज़र क़ैद करदिया. वह डेरेमें बीमारीके बहानेसे एक अ़रसे तक पलंगपर पड़ा रहा, और हिन्दू वैद्योंसे .इलाज कराता रहा; कुछ दिनों बाद वह अपना सिहत पाना ज़ाहिर करके मुह्ताजों और फ़क़ीरोंके लिये बड़े बड़े टोकरे मिठाईके भेजने लगा. यहां तक, कि विक्रमी १७२३ भाद्रपद कृष्ण १३ [हि० १०७७ ता० २७सफ़र = .ई० १६६६ ता० २८ ऑगस्ट] को दोनों बाप बेटे उन्हीं मिठाईके टोकरोंमें बैठकर वहांसे निकल गये, आगे उनके भेजे हुए घोड़े तय्यार थे, जिनपर सवार होकर मथुरा पहुंचे. वहां उसका दोस्त तन्नाजी मालूसरा मिला. ग्रैंटडफ़ साहिब लिखते हैं, कि वहां उसने अपने बेटे शंभाको एक पंडितके सुपुर्द करके कहा, कि अगर मैं ज़िन्दह पहुंचूं, तो इस लड़केको मेरे पास ले आना, वर्नह इसको दक्षिण में पहुंचा देना. ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि शंभाको कवि कलश ब्राह्मणके पास इलाहाबादमें रक्खा. यहांसे शिवाने बदनपर ख़ाक मलकर फ़क़ीरी लिबास बनाया. ग्रैंटडफ़ साहिबका बयान है, कि वह विक्रमी मार्गशीर्ष [हि० जमादियुस्सानी = ई० डिसेम्बर] में मथुरासे रायगढ़ पहुंचा; और ख़फ़ीख़ां कई मोतबर दक्षिणी ब्राह्मणोंके ज़बानी हवालेसे लिखता है, कि शिवा अपने बहुतसे सर्दारों समेत फ़क़ीर बनकर बनारसकी तरफ़ निकला, रास्तेमें यह गिरोह अ़ली कुली नामी एक शाही मुलाज़िमके हाथ पड़गया, उसने इन्हें क़ैद किया. तब शिवाने उसे एक बेश क़ीमती लाल और एक हीरा देकर पीछा छुड़ाया; और वहांसे इलाहाबाद, बनारस, पटना, बिहार, चंदा वग़ैरहमें जंगल और पहाड़ोंके रास्ते होता हुआ गोलकुंडेमें कुतुबुल्मुल्कके पास विक्रमी १७२५ [हि० १०७९ = ई० १६६८] में पहुंचा.

इस वक्त गोलकुंडा और बीजापुरके बादशाहोंमें भी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई थी, क्योंकि कुतुबुल्मुल्कके कई क़िले बीजापुरवालोंने लेलिये थे. शिवाने गोलकुंडेकी फ़ौजके साथ लड़कर वे क़िले कुतुबुल्मुल्कको दिलाने बाद उनपर अपना क़बज़ह रक्खा, और एक दो क़िले उनको आंसू पोछनेके लिये दिये; बाद इसके उसने थोड़े दिन राजमहलमें ठहरकर महाराजा जसवन्तसिंहको अपना दोस्त बनाया, और उसकी

मारिफ़त शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मकी सिफ़ारिशसे आ़लमगीरके पास अ़र्ज़ी भेजकर राजाका ख़िताब और बरारके इलाक़ेमें कुछ जागीर हासिल की. आ़लमगीर और शिवा दोनों अपने अपने मल्लबके लिये फ़िरेबी शतरंजकी चाल चलरहे थे. इस मिला-वटके सबब तीन लाख रुपये बीजापुरकी तरफ़से और पांच लाख गोलकुंडेसे सालियानह चौथके शिवाको मिलने लगे. इसी अ़र्सेमें बीजापुरका इन्दाराजपुर नामी क़िला लेकर जज़ीरामें सीदी फ़तहख़ांको जाघेरा, परन्तु शिवाको वहांसे शिकस्त खाकर लौटना पड़ा. सीदियोंकी इस मर्दानह कार्रवाईपर खुश होकर आ़लमगीरने ख़ानिजहांकी मारिफ़त उनके लिये मन्सब और ख़िल्अ़त भेजा. इन सीदी हबशियोंने शिवासे कई लड़ाइयां लड़ने बाद उससे क़िला इन्दाराजपुर भी छीन लिया. विक्रमी १७२७ [हि० १०८१ = ई० १६७०] में शिवाने शहर सूरतको लूट लिया, और एक बड़ी विकट जगहमें राहेड़ी पहाड़पर एक क़िला तामीर कराकर उसीमें रहने लगा.

आख़िर शिवाका बेटा शंभा मए कवि कलश ब्राह्मणके अपने बापसे आमिला. शिवाकी फ़ौजका इन्तिज़ाम नीचे लिखे मुवाफ़िक़ थाः-

शिवाकी फ़ौजमें ख़ासकर मावली और हेटकरी क़ौमोंके लोग थे, जो जंगली और शिवाके फ़र्मांबर्दार होनेके सिवा क़िलोंको फ़त्ह करलेनेमें बहुत मश्हूर और होशियार थे. दस आदमियोंके अफ़्सरको नायक, पचासके मुख़्तारको हवाल्दार, १०० के मालिकको जुम्लहदार, हज़ार सिपाहियोंके अधिकारीको हज़ारी कहते थे; और सबसे बड़े अफ़्सरको "सर नौबत" का ख़िताब था. सवारोंकी फ़ौज दो क़िस्मकी थी, अव्वल बारगीर, जिनके पास सर्कारी घोड़े होते थे, दूसरे सिलह्दार, जो घरू घोड़ोंसे नौकरी देते थे. सवारोंकी वर्दी याने लिबास घुटने तक तंग मुहरीका पाय-जामा, रूईदार अंगरखा और बल्दार पगड़ी तथा कमरबन्द था; और हथियारोंमेंसे ढाल, तलवार व भाला रखते थे. पच्चीस सवारोंपर एक हवाल्दार, १२५ पर जुम्लहदार और पांच जुम्लेदारोंका अफ़्सर सूबेदार कहलाता था, जिसके पास एक अह्लकार हिसाब रखने वाला रहता था. दस सूबेदारोंका अफ़्सर पंज हज़ारी कहलाता था, जिसके तह्तमें एक मजिमदार (मज्मूअ़हदार) ब्राह्मण अह्लकार, एक रोज़नामचह-नवीस, और एक हिसाब रखनेवाला अमीन रहता था. यह सबसे ऊपरका उह्दह होता था. इनमें एक ख़बर नवीस भी रक्खा गया था. पैदल सिपाहियोंकी तन्ख़्वाह १ से लेकर ३ पैगोडा (१) तक, बारगीरोंकी तन्ख़्वाह २ से ५ पैगोडा तक और सिलह्दारोंकी ६ से १२ पैगोडा तक माहवार मुक़र्रर थी.

---

(१) यह सिक्कह ३ से ४ रुपये तकका होता था.

शिवाकी यह आदत थी, कि वह गाय, ब्राह्मण वगैरह मज़्हबी लोगों और किसानों तथा औरतोंको तक्लीफ़ नहीं पहुंचाता था, और सिवा मुसल्मान व मालदार हिन्दुओंके किसीको कैदकी सज़ा नहीं देता था. ज़मीनकी पैदावारके पांच हिस्सोंमेंसे दो हिस्से राज्यमें हासिलके लियेजाते थे. शिवाने अपने राज्य प्रबन्धके लिये आठ प्रधान मुक़र्रर किये थे- पहिला प्रधान पेश्वा, जो कुल कामोंका अफ्सर आला और रियासतके हरएक कारख़ाने तथा अफ्सरोंकी निगरानी रखने वाला था; इस उह्देपर अव्वल पिंगले नियत किया गया; दूसरा प्रधान मजीमदार याने जमा ख़र्चकी निगरानी रखनेवाला, आबाजी सोनदेव था; तीसरा मूरनीस दफ्तरकी निगरानी रखनेवाला आनाजी दत्तो; चौथा दत्ताजी पन्थ वाक़ानवीस, याने ख़ास दफ्तर व ख़ास फ़ौजकी संभाल रखने वाला; पांचवां सरनौबत, जो कुल फ़ौजका अफ्सर व निगहबान था; मगर इस नामके उह्देपर दो शख़्स मुक़र्रर थे, जिनमेंसे सवारोंका प्रतापराव गूजर, और पैदलोंका एशजी कंक; छठा दबीर, जो अज़्लाए गैरके मुआमलात व मस्लिहत में मश्गूल रहता, याने दूसरी रियासतोंके वकीलोंसे बात चीत तथा मुलाक़ात करानेका इख़्तियार रखता था; यह काम सोमनाथ पन्थके सुपुर्द था; सातवां न्यायाधीश, इस उह्देपर भी दो शख़्स थे, एक नीराजी राव और दूसरा गोमाजी नायक; और आठवां न्याय शास्त्री शंभुपाध्ये था.

आलमगीरके सेनापति ख़ानिजहांसे शिवाकी कई लड़ाइयां हुईं, मगर फ़साद रफ़ा न हुआ, तब आलमगीरने शिवाके बेटे शंभाको छः हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब भेजकर इस झगड़ेको ठंडा किया; लेकिन् कुछ अरसे बाद शिवाने बादशाही ख़ालिसहके शहर मूंगापट्टनको लूटकर फिर फ़सादकी बुनयाद उठाई, और आपस में लड़ाइयां होने लगीं. आख़िर कार विक्रमी १७३७ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १०९१ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १६८० ता० २३ मई](१) को शिवा फ़ौत होगया. उसके चार औरतें थीं- अव्वल निबालकरकी बेटी सई बाई, दूसरी सिरकेकी बेटी सोयराबाई, तीसरी मोहित्यांकी बेटी पूतलांबाई, और चौथीका नाम मालूम नहीं. सई बाईके गर्भसे शंभा और सोयराबाईके गर्भसे राजा राम पैदा हुआ था. शंभा बड़ा याने पाटवी होनेके सबब गद्दीका हक़दार था; लेकिन् जनार्दन पन्थ वगैरह सर्दारोंने उसे बद चलन जानकर बजाय उसके राजा रामको मक़ाम रायगढ़में गद्दीपर बिठादिया. यह ख़बर पाकर शंभाने क़िले परनालापर अपना क़बज़ह करलिया, और उसके बाद कोल्हापुर लेकर जनार्दन पन्थको क़ैद किया. फिर

(१) ग्रैंटडफ़ साहिब ५ एप्रिलको शिवाका मरना लिखते हैं, और मूलमें मआसिरेआलमगीरीके मुवाफ़िक़ २४ रबीउस्सानी लिखा गया, जिसके मुताबिक़ २३ मई होती है.

हमीरराव सेनापति और मोरो पन्थ पिंगलेको मिलाकर रायगढ़को भी अपने क़बज़हमें लिया, और आना दत्तो तथा अपने भाई राजा रामको क़ैद करने बाद अपनी सौतेली माता सोयराबाईको यह इल्ज़ाम लगाकर मरवाडाला, कि इसने मेरे पिता (शिवाजी) को ज़हर देकर मरवाडाला है. इसके सिवा दूसरे भी कई मरहटे सर्दारोंको क़त्ल करवाया; और राजा बनकर पंडित कवि कलशको अपना प्रधान नियत किया, जिसने उसको आलमगीरके भयसे बचाया था. ग्रैंटडफ़ साहिब कवि कलशकी निस्बत लिखते हैं, कि यह शख़्स एक अच्छा शाइर था, और शंभा इसके क़बज़हमें था, लेकिन् मुल्की इन्तिज़ाम करनेमें कच्चा होनेके सबब रियासती कार बार न संभाल सका, और मुल्की बन्दोबस्त व ख़ज़ानहमें ख़लल आगया.

शंभाकी शुरू हुकूमतमें आलमगीरका चौथा शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर अपने बापसे बाग़ी होकर चला आया, जिसको शंभाने क़िले राहेड़ीमें पनाह दी. यह सुनकर आलमगीर, जो उस वक्त मेवाड़ वालोंसे लड़ रहा था, घबराया; और महाराणा जयसिंहसे सुलह करके फ़ौरन् दक्षिणको रवानह हुआ. विक्रमी १७३८ चैत्र कृष्ण ९ [हि० १०९३ ता० २३ रबीउल् अव्वल = ई० १६८२ ता० ३ मार्च] को वह औरंगाबादमें पहुंचा, मगर शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर उसके पहुंचनेसे पहिले ही कुछ दिन क़िले राहेड़ीमें रहकर ईरानको चलागया, और आलमगीरने ग़ाज़ियुद्दीनख़ांको एक बड़ी फ़ौज देकर शंभासे क़िला राहेड़ी छीन लेनेको विदा किया, जिसने बड़ी कोशिशके साथ उक्त क़िलेको फ़त्ह करके फ़ीरोज़जंगका ख़िताब हासिल किया. इसके बाद शंभा तो दब-गया, सिर्फ़ नामके वास्ते कभी कभी बादशाही फ़ौजोंसे मुक़ाबलह करता रहा; लेकिन् अब बादशाहको बीजापुर व गोलकुंडा लेनेकी फ़िक्र हुई, और बड़ी बड़ी लड़ाइयोंके बाद दोनों सल्तनतें फ़त्ह करली गईं. इसके बाद उसने शंभाको बर्बाद करनेपर कमर बांधी; विक्रमी १७४४ माघ शुक्ल पक्ष [हि० १०९९ शुरू रबीउस्सानी = ई० १६८८ फ़ेब्रुअरी] में शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको ४०००० सवार देकर शंभाके मुक़ाबलेके लिये भेजा. शाहज़ादह क़िले बेलगांवको फ़त्ह करके बादशाहके पास चला आया.

विक्रमी १७४५ फाल्गुन शुक्ल पक्ष [हि० ११०० शुरू जमादियुल् अव्वल = ई० १६८९ फ़ेब्रुअरी] में शैख़ निज़ाम हैदराबादी, जिसका ख़िताब मुक़र्रबख़ां था, बादशाहके हुक्मसे परनालेको रवानह हुआ; वहां पहुंचनेपर उसको ख़बर मिली, कि शंभा क़िले परनालासे खेलनाकी तरफ़ वैरागियोंका फ़साद मिटानेको गया,

और वहांसे संगमेश्वर, जहां बाणगंगाका तीर्थ है पहुंचा; यहां उसके प्रधान कवि कलशके बनाये हुए बाग़ व मकानात वगैरह भी थे. वहां पहुंचकर वह तीर्थ स्नान, दान पुण्य व पूजन वगैरह करने बाद ऐश व इश्रतमें मश्गूल था. यह ख़बर सुनकर मुक़र्रबख़ांने फ़ौजी क़ाफ़िलेको शोलापुरके पास छोड़ा, और चुनेहुए सिपाहियोंके साथ ४५ कोसकी सख़्त पहाड़ी घाटियोंको ते करता हुआ बड़ी मुश्किलसे उस मकानके क़रीब पहुंचा, जहां शंभा क़ियाम रखता था. उस वक़ उसके साथ २००० सवार और १००० पैदल थे. यह हालत देखकर शंभाको उसके नौकरोंने गफ़लत की नींदसे होशयार होनेकी ख़बर दी. वह शराबके नशेमें चूर था; कहा, कि यहां बादशाही फ़ौज नहीं आसक्ती; और ख़बर लानेवालोंको धमकाया. इसी अरसेमें मुक़र्रबख़ां भी आ पहुंचा; शंभाने तीन चार हज़ार सवारोंसे मुक़ाबलह किया, परन्तु अक्सर लोगोंके भागजानेके सबब वह मए कवि कलश ब्राह्मणके मुक़र्रबख़ांकी गिरिफ़्तारीमें आया; और शंभाकी एक स्त्री भी अपने बेटे साहू व २५ रिश्तहदारों सहित गिरिफ़्तार हुई. इन लोगोंको गिरिफ़्तार करके मुक़र्रबख़ांने उसी वक़ वापस कूच किया. शंभाकी सख़्त मिज़ाजीसे कुल मरहटे नाराज़ थे, इसलिये किसीने उसके छुड़ानेमें कोशिश न की; और विक्रमी १७४५ फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० ११०० ता० ५ जमादियुल्अव्वल = ई० १६८९ ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को वह बहादुरगढ़में बादशाहके साम्हने लाया गया.

जब शंभाको बादशाहके साम्हने लाये, उस वक़ आलमगीर तख़्तसे उतरकर ख़ुदाका शुक्रियह अदा करनेलगा. उस समय कवि कलशने शाइरीमें कहा, कि ऐ शंभा राजा! तेरा रोब ऐसा तेज़ है, कि बादशाह भी तुझको देखकर तख़्तसे उतरगया. बाद इसके वे दोनों मुसल्मानोंके पैग़म्बरों व बादशाहको गालियां देने लगे. बादशाहने दोनोंकी ज़बानें कटवाकर गर्म लोहेकी सलाखें आंखोंमें फिरवादीं; और बड़ी ज़िल्लतके साथ इनके सिर कटवाने बाद शंभाके बेटे साहू (१) व मदनसिंह तथा अधोसिंहको असदख़ां वज़ीरके पास डेरोंमें रहनेकी इजाज़त दी. सात वर्षकी उम्र वाले साहूको बादशाहने सात हज़ारीका मन्सब इनायत किया था.

---

(१) कप्तान डब्ल्यू० लॉकने बम्बई गज़ेटिअरके लिये पूना, सितारा, और शोलापुरकी, जो तवारीख़ लिखी है, उसमें शंभाके गिरिफ़्तार होने बाद रायगढ़में शाहजीका विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में गिरिफ़्तार होना लिखा है.

अब शिवाके दूसरे बेटे राजाराम ने मरहटी राज्यका प्रबन्ध अपने हाथमें लिया, और बादशाही मुलाज़िमोंसे ख़ूब लड़ाइयां करने लगा, जिसके शरीक नीचे लिखे हुए आदमी थेः-

प्रल्हाद नीरा, जनार्दन पन्थ हनमन्त, रामचन्द्र पन्थ बोरीकर, महादा नायक पानसंबल, सन्ता घोरपड़ा, धन्ना जादव, और खन्डेराव दाभड़.

राम राजा पहिले क़िले गंजीमें रहा, और कई लड़ाइयां होने बाद आलमगीरके सेनापति ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने उसे वहांसे निकाला. वह निकलकर विशालगढ़में आया, वहांसे विक्रमी १७५४ [हि० ११०८ = ई० १६९७] में सितारे पहुंचकर उसको अपनी राजधानी बनाया, और रामचन्द्र पन्थको मन्त्री किया. शंकरा नारायणको सचिव बनाया. आख़िरकार सन्ता घोरपड़ा आपसकी लड़ाइयों में मारा गया, और उसकी जगह धन्ना जादव सेनापति मुक़र्रर किया गया, जो सन्ताका दुश्मन था.

विक्रमी १७५६ [हि० ११११ = ई० १६९९] में रामराजा ने एक बड़ी चढ़ाई करके बरार, ख़ान देश, और बगलाना वग़ैरहपर हुकूमत जमाई, जिससे आलमगीरने नाराज़ होकर पहाड़ी क़िले छीन लेनेका हुक्म दिया. पहिले उसने बसन्तगढ़ लेकर सितारेका मुहासरह किया; और उस क़िलेको कई महीनों बाद फ़त्ह करलिया. इन्हीं दिनोंमें राम राजाका इन्तिक़ाल होगया. इसके दो बेटे थे, जिनमेंसे बड़ा शिवा गद्दीपर बिठाया गया, और औरंगज़ेबने पुरन्दरसे परनाले तक क़िले लेलिये; लेकिन् मरहटे लोग लूट खसोट करके उनको दिक़ करते रहे.

विक्रमी १७६२ [हि० १११७ = ई० १७०५] में रायगढ़ और तोरणाका क़िला लेकर आलमगीर कुछ दिनों जिनारके नज़्दीक रहा, फिर बीजापुरको गया. इस अ़र्सेमें मरहटोंने परनाला और पवनगढ़के क़िलोंपर फिर अपना क़बज़ह जा जमाया. इस कामका करने वाला रामचन्द्र पन्थ था. इधर परसराम त्रिंबकने बसन्तगढ़ और सितारा छीन लिया, और शंकरा नारायणने सिंहगढ़, रायगढ़ वग़ैरह क़िलोंपर क़बज़ह करलिया. आलमगीर मुल्क दबाता हुआ अह्मदनगरमें पहुंचा, और वहीं मरगया; तब उसके शाहज़ादे मुहम्मद आज़मने आगरेकी तरफ़ कूच करते वक़ शंभाके बेटे साहूको छोड़दिया. उसने परसो घोंसला, चीमा दामोदर, हैबतराव नीवालकर, नीमा सेंधिया वग़ैरहको मिलाकर बड़ी फ़ौजके साथ दक्षिणकी तरफ़ कूच किया; लेकिन् धन्ना जादव इसका मुख़ालिफ़ बनकर रोकनेको आया,

जिसके साथ परसराम त्रिंबक भी था; भीमा नदीके किनारे खेड़के पास मुक़ाबलह हुआ. लड़ाई होने बाद जब परसरामको मालूम हुआ, कि धन्ना पोशीदह तौरपर साहू राजासे मिलगया है, वह सितारेको भाग गया; पीछेसे साहू राजा भी फ़ौज लेकर चला, और सितारेपर क़बज़ह करके विक्रमी १७६५ चैत्र [हि० ११२० मुहर्रम = ई० १७०८ मार्च] में शंभाकी जगह गद्दीपर बिठाया गया. उसने धन्नाको सेनापति, बाला विश्वनाथ भट्टको कारकुन, जो पेश्वा ख़ानदानकी बुन्याद डालने वाला था, गदाधर प्रल्हादको प्रतिनिधि, और भैरव पन्थ पिंगलेको पेश्वा मुक़र्रर किया. शिवाके ख़ानदानमें आपसकी बहुतेरी लड़ाइयां होती रहीं, लेकिन् राजा साहू हर एकमें फ़त्हयाब होता गया; परनाला और विशाल गढ़ भी राम राजाके कुटुम्बसे छीन लियेगये. इन्हीं दिनोंमें धन्ना मरगया, और उसकी जगह उसका बेटा चन्द्रसेन सेनापति बनाया गया. विक्रमी १७६७ [हि० ११२२ = ई० १७१०] में राम राजाकी स्त्री ताराबाईने परनाला छीन लिया, और कोल्हापुर वगैरह ज़िलोंपर भी क़बज़ह करलिया, साहू राजाके मुलाज़िमोंमें ना इत्तिफ़ाक़ी होने लगी, जो शुरूमें तो पोशीदह तौरपर ही होती रही, परन्तु विक्रमी १७७० [हि० ११२५ = ई० १७१३] में चन्द्रसेन जादव व बाला विश्वनाथमें ज़ाहिरा लड़ाई हुई, जिसपर बाला भागकर पुरन्दर होता हुआ पांडूगढ़ पहुंचा, मगर चन्द्रसेनने उसको वहां भी जाघेरा. तब साहू राजाने बालाका मददगार बनकर हैबतराव नीबालकरको उसकी मददके लिये भेजा. चन्द्रसेन उससे शिकस्त खाकर पहिले कोल्हापुर और पीछे निज़ामके पास पहुंचा, जिसने उसको एक जागीर भी दी. साहू राजाने सेनापतिका काम मन्ना मोरे को दिया, और बाला विश्वनाथका बहुत कुछ इख़्तियार बढ़ाया. कुछ अ़रसह बाद निज़ामसे साहू राजाके प्रधान बाला विश्वनाथकी लड़ाई हुई; और इसके ख़त्म होने पीछे और भी कई लड़ाइयां होती रहीं. आख़िरकार विक्रमी १७७१ [हि० ११२६ = ई० १७१४] में बालाने साहू राजाका पेश्वा नियत होकर अपना बहुतसा इख़्तियार बढ़ालिया. विक्रमी १७७५ [हि० ११३० = ई० १७१८] में वह दिल्ली गया, और वहांसे कई जागीरोंकी सनद हासिल करके विक्रमी १७७७ [हि० ११३२ = ई० १७२०] में वापस आने बाद मरगया.

विक्रमी १७७८ [हि० ११३३ = ई० १७२१] में बाला विश्वनाथका बेटा बाजीराव पेश्वा बना. विक्रमी १७८४ [हि० ११३९ = ई० १७२७] में निज़ामुल्मुल्कने कोल्हापुर व सितारामें फ़साद उठाया; निज़ामुल्मुल्क और साहूके आपसमें लड़ाई हुई, जिसमें निज़ामने शिकस्त खाई. विक्रमी १७८६ [हि० ११४१

= ई० १७२९] में कोल्हापुरके राजा शंभासे साहूकी लड़ाई हुई, और उसमें राम राजाकी विधवा ताराबाई गिरिफ़्तार होकर सितारामें आई. तब शंभाने साहूसे सुलह करली. विक्रमी १७८७ [हि० ११४२ = ई० १७३०] में एक अह्दनामह आपसमें क़रार पाया, कि जिसके मुताबिक़ दो नदियां याने वारना और कृष्णा दोनों रियासतोंकी सर्हद क़ाइम हुई; तास गांव व मीरज वगैरह दूसरे ज़िले राजा साहूको मिले. फिर त्रिंबकराव दाभाड़े और बाजीराव पेश्वासे लड़ाई हुई, जिसमें त्रिंबकराव मारा गया. तब उसका बेटा जश्वन्तराव सेनापति बनायागया, जिसके बालक होनेके सबब पेला गायकवाड़ उसके तअल्लुक़के कार बारकी निगरानीपर मुक़र्रर हुआ. विक्रमी १७९२ [हि० ११४८ = ई० १७३५] में जंजीरेके सीधियोंसे रायगढ़ छीन लिया.

विक्रमी १७९७ वैशाख शुक्ल १ [हि० ११५३ ता० २९ मुहर्रम = ई० १७४० ता० २८ एप्रिल] को बाजीराव मरगया, और उसका बेटा बाला बाजीराव पेश्वा हुआ. इस वक़ हिन्दुस्तानमें अक्सर जगह मरहटे फैलगये. विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई० १७४९] में साहू राजा लावलद मरगया. साहूने पेश्तर उदयपुरके महाराणा दूसरे जगत्सिंहसे दर्ख्वास्त की थी, कि अपने छोटे भाई नाथसिंह को, जो बागौरके महाराज हैं, मुझे दत्तक दीजिये; लेकिन् कई कारणोंसे महाराणाने इस बातको मंज़ूर नहीं किया.

साहू राजाके मरने बाद सीसोदिया मरहटोंकी रियासत बिल्कुल ब्राह्मणों याने पेश्वाओंके हाथमें चली गई; उनकी विधवा सकवारबाईने कोल्हापुरसे शंभा राजाको गोद लेना चाहा, लेकिन् ताराबाईने राम राजाको शिवाका बेटा और अपना पोता बतलाकर गोद रखा दिया. वह साहूका दत्तक होकर सितारेका मालिक बना. साहूके मरने बाद बाला बाजीराव पेश्वा सितारेमें आया, और प्रतिनिधिको क़ैद करके सकवारबाईको सती करवा दिया; उसने रियासतका इन्तिज़ाम करके राघव घोंसलाको अपनी तरफ़ करलिया, (जो पीछे नागपुरके राजाओंकी बुन्याद डालने वाला हुआ). मालवाके ज़िले, जो बाजीराव पेश्वाने हासिल किये थे, हुल्कर, सेंधिया व पंवारने तक्सीम करलिये. पेश्वाने साहू राजाके प्रतिनिधि जगजीवनको क़ैदसे रिहा किया, मगर बहुतसी जागीर उसकी लेली. फिर यमा शिवदेवने बग़ा-वत उठाई, लेकिन् उसको पेश्वाके रिश्तेदार सदाशिव भाऊने रोका. पेश्वाने पन्थ सचिवसे सिंहगढ़का क़िला लेलिया, और सितारेका क़िला ताराबाईके सुपुर्द किया; वह वहांपर मए राम राजाके रही. इसने फ़साद उठाना चाहा, परन्तु काम्याब न हुई, तब दामा गायकवाड़को बुलवाया. कृष्णा नदीके किनारे आरला और नीमके क़रीब पेश्वाके अफ़्सरोंसे लड़ाई हुई; दामाने फ़त्हयाब होकर कई

क़िले ताराबाईको दिला दिये. नाना पुरन्दरीने हमला करके दामाको भगा दिया. वह वाईके क़रीब जौरखोरा ग्राममें जा ठहरा, जहां पहुंचकर पेशवाने उसे गिरिफ्तार किया, और क़ैद करके पूनामें भेजदिया; सितारा ताराबाई व राम राजाके क़बज़हमें रहने दिया. पेशवाके चले जाने बाद ताराबाईने रामोसियोंकी एक बड़ी फ़ौज एकट्ठी की, और वाई तथा सिताराके ज़िलोंपर क़बज़ह करलिया. विक्रमी १८११ [हि० ११६७ = ई० १७५४] में दामा गायकवाड़ पेशवाका दोस्त बनकर रिहा हुआ, और उसने पेशवाके भाई रघुनाथरावके साथ गुजरातमें जाकर अह्मदाबादपर क़बज़ह करलिया. विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में पेशवाकी फ़ौजमेंसे सदाशिव भाऊ व पेशवाके बेटे विश्वासराव वगैरह पानीपतकी लड़ाईमें अह्मदशाह अब्दालीसे लड़कर मारेगये. इस ख़बरके सुननेसे थोड़े दिनों बाद बाला बाजीराव पेशवा भी मरगया, और उसका बेटा माधवराव पेशवा हुआ. इसी विक्रमीके मार्गशीर्ष [हि० ११७५ जमादियुल अव्वल = ई० डिसेम्बर] में ताराबाई भी इन्तिक़ाल करगई; फिर माधवराव और उसके काका रघुनाथरावमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई, लेकिन् रघुनाथरावने औरंगाबादके मुसल्मान हाकिमसे मदद लेकर अपने भतीजेको शिकस्त देने बाद कुल कारोबार अपने हाथमें लेलिया; मगर उसने अपनी मददके लिये मुसल्मानोंको जो ज़िला देनेका इक़ार किया था, वह पूरा नहीं किया. इस पर निज़ाम व पेशवासे लड़ाइयां हुईं; निज़ामने पूना और दूसरे मुल्कको भी बर्बाद किया, लेकिन् गोदावरीके किनारे राकसवन (राक्षसवन) के पास शिकस्त खाई. विक्रमी १८२५ [हि० ११८१ = ई० १७६८] तक माधवरावने अपने चचाके साथ मेल रक्खा, उसके बाद रघुनाथराव बाग़ी हुआ, जिसको माधवरावने क़ैद करलिया.

विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में माधवराव मरगया. इसके मरनेसे बड़े बड़े सर्दार खुद मुरूतार होगये, और गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीको भी दख़्ल देनेका मौक़ा मिला. माधवरावका छोटा भाई नारायण राव पेशवा बना, जो थोड़े दिनों बाद मारडाला गया. फिर उसका चचा रघुनाथराव पेशवा बना, लेकिन् उससे सब सर्दार नाराज़ थे; उनको मालूम होगया, कि नारायणरावकी विधवा स्त्रीको गर्भ है, इसलिये उसे क़िले पुरन्दरमें लेगये, और विक्रमी १८३१ अधिक वैशाख [हि० ११८८ सफ़र = ई० १७७४ एप्रिल] में लड़का पैदा होनेपर उसका नाम दूसरा माधव राव रक्खा. इस बातसे रघुनाथराव दबकर गुजरातमें चलागया, क्योंकि उसको गवर्मेन्ट अंग्रेज़ीसे मददकी उम्मेद थी, परन्तु गवर्मेन्ट बंगालके हुक्मसे कर्नेल

अफ़्सरने ब मक़ाम पुरन्दर विक्रमी १८३३ चैत्र शुक्र पक्ष [हि० ११९० मुहर्रम = .ई० १७७६ मार्च] में पेश्वाके अह्दनामहपर दस्तख़त करदिये, इससे रघुनाथराव ना उम्मेद होगया. विक्रमी १८३४ [हि० ११९१ = .ई० १७७७] में राम राजा दत्तक, जो नामके लिये सितारेका राजा कहलाता था, मरगया; और उसकी जगह दत्तक राजा साहू दूसरा गद्दीपर बिठाया गया.

इसके बाद गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ हुल्कर व सेंधिया वगैरह मरहटोंकी कई लड़ाइयां हुईं, और अक्सर मरहटे ग़ालिब रहे. विक्रमी १८३९ [हि० ११९६ = .ई० १७८२] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ दूसरा अह्दनामह हुआ, जिससे सालसेटीके सिवा कोकणका .इलाक़ह मरहटोंको देकर रघुनाथरावको पेन्शन देनेका इक़ार करना पड़ा; इसके बाद कई सालतक अम्न रहा.

माधवराव पेश्वा, जो नाना फड़नविसके दबावमें था, विक्रमी १८५२ आश्विन शुक्र १० [हि० १२१० ता० ९ रबीउस्सानी = .ई० १७९५ ता० २३ ऑक्टोबर] को खुद कुशीके इरादेसे महलसे गिरकर मरगया. विक्रमी १८५३ मार्गशीर्ष [हि० १२११ जमादियुस्सानी = .ई० १७९६ डिसेम्बर] में रघुनाथरावका बेटा बाजीराव, जो नाना फड़नविसकी क़ैदमें था, शिवनेरसे लायाजाकर माधवरावकी जगह पेश्वा बनाया गया. इन्हीं दिनोंमें सितारेका राजा साहू, जो एक क़ैदीके मुवाफ़िक़ था, क़िले सितारापर क़ाबिज़ होगया; और कुछ लड़ाई होने बाद क़ैदी बनाया गया. राजाका भाई चतरसिंह कोल्हापुरको भाग गया, तब पेश्वाकी फ़ौज परशराम भाऊकी मातह्तीमें कोल्हापुरसे लड़ती रही. आख़िरकार परशराम कोल्हापुर वालोंके हाथसे मारागया, और उसकी फ़ौज भाग गई. दोबारह फ़ौज भेजी गई, लेकिन् नाना फड़नविसके मरनेसे पेश्वाको कोल्हापुरसे सुल्ह करनी पड़ी.

विक्रमी १८५९ पौष [हि० १२१७ शश्र्बान = ई० १८०२ डिसेम्बर] में पेश्वा बाजीराव दूसरेने अंग्रेज़ोंके साथ अह्द करलिया, जिस वक़ कि वह जशवन्तराव हुल्करसे शिकस्त खाकर पूनाको छोड़ भागा था. अंग्रेज़ी फ़ौजने बाजीरावको मदद देकर पूनामें बिठाया, लेकिन् उसने अपने सर्दारोंपर बहुतसी सख्तियां कीं, और मुल्कमें बद इन्तिज़ामी फैलती रही. तब दूसरी दफ़ा विक्रमी १८७४ ज्येष्ठ [हि० १२३२ रजब = .ई० १८१७ मई] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे अह्दनामह हुआ, जिसमें यह मत्लब था, कि अह्मदनगरका क़िला और कंटिन्जेण्ट फ़ौज ख़र्चके एवज़ सिंहगढ़, पुरन्दर व रायगढ़ वगैरह क़िले देकर सर्दारों व जागीरदारोंके साथ उस अह्दनामहके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे, जो विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में हुआ था. विक्रमी १८७४

कार्तिक कृष्ण ११ [हि० १२३२ ता० २४ ज़िल्हिज = ई० १८१७ ता० ५ नोवेम्बर] को पेश्वाने दग़ाबाज़ीसे पहिले गवर्मेण्टकी मदद करनेका वादा किया, लेकिन् उसके बर्ख़िलाफ़ अंग्रेज़ी फ़ौजपर हमलह करदिया. लड़ाईमें बाजीराव पेश्वा भागगया, और अंग्रेज़ोंने पूनापर दख़्ल करके उसका पीछा किया. विक्रमी १८७४ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३३ ता० २३ सफ़र = ई० १८१८ ता० १ जैन्युअरी] को भीमा नदीके किनारे कोड़ गांवके क़रीब २५००० मरहटी फ़ौजका मुक़ाबलह जेनरल स्मिथने अंग्रेज़ी लश्करके ८०० आदमियोंसे किया, और फ़त्ह पाकर सितारा भी लेलिया, क्योंकि सिताराके राजाको भी पेश्वाने अपना शरीक बनाया था. इसी विक्रमीकी माघ शुक्ल १४ [हि० ता० १४ रबीउस्सानी = ई० ता० २० फ़ेब्रुअरी] को जेनरल स्मिथने पेश्वाको जालिया, मुक़ाबलह होने बाद सितारेका राजा गिरिफ्तार हुआ, और पेश्वा भाग गया, लेकिन् वह भी विक्रमी १८७६ ज्येष्ठ [हि० १२३४ रजब = ई० १८१९ मई] में धूलकोटके पास सर जॉन माल्कमके ताबे होगया. सिताराके राजा साहू दूसरेकी जगह विक्रमी १८७५ चैत्र शुक्ल ८ [हि० १२३३ ता० ७ जमादियुस्सानी = ई० १८१८ ता० १४ एप्रिल] को उसका बेटा प्रतापसिंह गद्दीपर बिठायागया. पेश्वाके बाक़ी क़िलोंपर भी गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने क़ब्ज़ह करलिया, और सिताराके शामिल नीरा नदीसे वारना तक और घाट (सह्याद्रि) से भीमा तक इलाक़ह रहने दिया, लेकिन् राजाके होश्यार होने तक कप्तान ग्रैंटडफ़ रियासती इन्तिज़ामके वास्ते मुक़र्रर हुआ, और बाक़ी ज़िले दूसरे अफ्सरोंके सुपुर्द किये गये. सबका अफ्सर मिस्टर एल्फ़िन्स्टन था. विक्रमी १८७९ वैशाख [हि० १२३७ रजब = ई० १८२२ एप्रिल] में राजा प्रतापसिंहको पूरा इख़्तियार दियागया, लेकिन् थोड़े दिनोंके बाद वह अंग्रेज़ोंके दबावसे नफ़रत और अह्दनामहकी शर्तोंके ख़िलाफ़ दूसरे रईसोंसे ख़त किताबत करने लगा; तब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने उसे विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] में गद्दीसे ख़ारिज करके नज़र क़ैदीके तौर इज़्ज़तके साथ बनारस भेजदिया; और उसके छोटे भाई शाहजीको गद्दीपर बिठाया. उसने राज्यका प्रबन्ध बहुत उम्दह किया, विक्रमी १९०५ [हि० १२६४ = ई० १८४८] में शाहजी मरगया. उसके कोई औलाद न होनेके सबब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने राज्यको अपने मुल्क में शामिल किया, और उसकी तीन विधवा राणियोंके लिये पेन्शन मुक़र्रर करदी, जो विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] तक सब इस दुन्यासे कूच करगई, और सिताराके राज्यका ख़ातिमह हुआ. सिर्फ़ एक शाख़ इस ख़ानदानकी कोल्हापुरमें बाक़ी रही, जो शिवाके दूसरे बेटे राम राजाकी औलादमें है.

कोल्हापुर.

इस देशपर पहिले सिल्हारा व यादव राजपूतोंका अधिकार था. विक्रमी १००६ [हि० ३३७ = ई० ९४९] से विक्रमी १२६३ [हि० ६०१ = ई० १२०५] के क़रीब तक सिल्हारा वंशके राजा १ जतिग, २ नाइम्म, (नाइ वर्म्मा), ३ चन्द्रराज, ४ जतिग दूसरा, ५ गोङ्क, ६ मारसिंह, ७ गूवल, ८ भोज, ९ बल्लाल, १० गंडरादित्य, ११ विजयार्क, और १२ भोज दूसरा, क्रमसे राज्य करते रहे. फिर दूसरे भोजसे देवगिरिके यादव राजा जैत्रपालके पुत्र सिंघनने कोल्हापुरको छीनकर देवगिरिमें मिला लिया. सिंघनके बाद कृष्ण, महादेव, रामदेव और शंकर देवगिरिके राजा हुए. रामदेवके वक़्में अलाउद्दीन खिल्जीने देवगिरिपर हमलह किया, तबसे यादव कमज़ोर हुए. विक्रमी १३७५ [हि० ७१८ = ई० १३१८] में अलाउद्दीनके तीसरे बेटे मुबारकने यादवोंका ख़ातिमह किया, और देवगिरिपर अपना क़बज़ह जमालिया; उस वक़्से कोल्हापुर भी मुसल्मानोंके क़बज़हमें आया. इसके बाद विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] में शिवा घोंसलाने वहांपर अपना दख़्ल किया.

शिवाके दूसरे बेटे राम राजा (१) के दो बेटे, शिवा और शंभा थे. जब राम राजाका इन्तिक़ाल विक्रमी १७५७ [हि० ११११ = ई० १७००] के क़रीब होगया, तब उसका बेटा शिवा गद्दी नशीन हुआ; और बारह वर्ष तक रियासतपर हुक्मरानी करने बाद विक्रमी १७६९ [हि० ११२४ = ई० १७१२] में फ़ौत होगया. इसके बाद उसका छोटा भाई शंभा गद्दीपर बैठा, जिसके वक़्में कई बार अंग्रेज़ी फ़ौजकी चढ़ाइयां हुईं. वह विक्रमी १८१७ [हि० ११७३ = ई० १७६०] में लावलद इन्तिक़ाल करगया. इसलिये घोंसला ख़ानदानसे एक लड़का लाया गया, जिसको दूसरा शिवा नाम रक्खा जाकर रियासतका वारिस क़ाइम किया; और राज्यका प्रबन्ध शंभाकी विधवा स्त्री करती रही; लेकिन् बहुतसे फ़सादोंकी तरक़्क़ी होनेके सिवा अम्नकी सूरत न देखकर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = ई० १७६५] में वहां फ़ौज भेजी, और एक अह्दनामह आपसमें क़रार पाया, जिसका नतीजह कुछ न निकला. तब सर्कार इंग्लिशियहने विक्रमी १८४९ [हि० १२०६ = ई० १७९२] में फिर फ़ौज

(१) राम राजाकी विधवा स्त्री तारा बाई और उसके बेटोंने सितारासे जुदा होकर कोल्हापुरकी राजधानी क़ाइम की.

भेजी, और दोबारह अ़हदनामह हुआ. विक्रमी १८६८ [हि० १२२६ = ई० १८११] में राजाकी कई लड़ाइयां दक्षिणकी दूसरी रियासतोंके साथ हुईं, और गवर्मेंण्ट अंग्रेज़ीने बीचमें पड़कर फ़साद मिटाया. इस मौक़ेपर तीसरी दफ़ा और अ़हदनामह होने बाद विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में दूसरा शिवा मरगया. इसके दो बेटे १ शंभू या आबा साहिब, और २ शाह या बाबा साहिब थे. इनमेंसे बड़ा आबा साहिब गद्दीपर बैठा. विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = .ई० १८१७] में इसने पेश्वाके मुक़ाबलहपर अंग्रेज़ोंको मदद दी, जिसके एवज़ सर्कारसे कुछ ज़िले भी हासिल किये; लेकिन् विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = .ई० १८२१] में वह मारागया, और उसका एक बच्चा, जो बाक़ी रहा था, वह भी मरगया; तब उसका छोटा भाई शाह बाबा साहिब विक्रमी १८७९ [हि० १२३७ = ई० १८२२] में गद्दीपर बैठा.

विक्रमी १८७९ से १८८६ [हि० १२३७ से १२४४ = .ई० १८२२ से १८२९] के दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ीको उसपर तीन बार फ़ौज भेजनी पड़ी; और इन लड़ाइयोंमें तीन ही दफ़ा अ़हदनामह बदलागया. विक्रमी १८९५ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० १२५४ ता० ११ रमज़ान = .ई० १८३८ ता० २९ नोवेम्बर] को बाबा साहिबका देहान्त हुआ, और उसका कम उम्र बच्चा तीसरा शिवा गद्दीपर बिठाया गया. इस अ़र्सेमें रियासतका इन्तिज़ाम शिवाकी माता और एक कॉन्सिलने किया, मगर फिर गवर्मेंण्ट अंग्रेज़ीको निगरानी रखनी पड़ी. विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = .ई० १८६२] में राजाको इख़्तियार देकर सर्कारने एक अ़हदनामह क़ाइम किया. यह राजा विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] के ग़द्रमें सर्कारका खैरख़्वाह रहा था. विक्रमी १९२३ [हि० १२८२ = .ई० १८६६] में इसके लावलद मरजानेपर इसकी बहिनका बेटा राजा राम गोद लिया जाकर राजका मालिक बनाया गया, जो विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = .ई० १८७०] में यूरोपकी सैर को गया, और उसी तरफ़ इटलीकी राजधानी फ़्लॉरेन्समें मरगया. इसके बाद नारायणराव घोंसलेको दत्तक लिया, जिसका नाम गद्दीपर बैठने बाद चौथा शिवा रक्खा गया. वह विक्रमी १९४० पौष कृष्ण ११ [हि० १३०१ ता० २४ सफ़र = ई० १८८३ ता० २५ डिसेम्बर] को लावलद मरगया, उसकी जगह कागल वालोंके बेटे जशवन्तरावको गोद रक्खा जाकर गद्दीपर बिठाया गया, और उसका नाम शाह रक्खा गया. इस रियासतकी सलामी १९ तोप, क्षेत्रफल (१) २८१६ मील मुरब्बा,

(१) डॉक्टर हंटरके गज़ेटिअरसे लिखा गया है.

आबादी ८००१८९ आदमी और आमदनी २२१९७६०) रुपये सालानह है.

तंजावर.

तंजावरकी रियासत भी सिताराके राजाओंकी एक छोटी शाख़ है. एचिसन् साहिबकी ट्रीटीकी पांचवीं जिल्दमें लिखा है, कि शिवाका चचा व्यंका (१) इस रियासतकी बुन्याद डालने वाला हुआ, और उसीके वंशमें साहू था, जिससे प्रतापसिंहने, जो कम अस्ल था, यह रियासत ज़बर्दस्ती छीन ली. यह औरंगज़ेब और फ़रांसीसियोंके दर्मियान पहिले लड़ाइयां होनेके वक्त तंजावरपर क़ाबिज़ था.

विक्रमी १८१९ [हि० ११७५ = ई० १७६२] में कर्नाटकके नव्वाबने इस राजापर चढ़ाई करनेमें अंग्रेज़ोंसे मदद चाही, मगर मद्रास गवर्मेंएटने बजाय फ़ौजी मदद देनेके मध्यस्त होकर पिछले चढ़े हुए बाईस लाख रुपये ख़िराजके दिलाकर आइन्दहके लिये चार लाख रुपया सालानह देनेका इक़ार राजासे करादिया.

इसके बाद प्रतापसिंह मरगया, और उसके बेटे तुलजाने विक्रमी १८२८ [हि० ११८५ = ई० १७७१] में रमनाड़पर चढ़ाई की, जो कर्नाटकके मातहत था. तब नव्वाब कर्नाटककी दर्ख्वास्तके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ोंने राजापर फ़ौज भेजी; लेकिन् नव्वाबके बेटेने राजासे बाला बाला एक अह्दनामह करलिया, जिसमें यह दर्ज था, कि आठ लाख रुपये चढ़े हुए ख़िराजके और साढ़े बत्तीस लाख फ़ौज ख़र्चके देकर सुलह करलेवें. गवर्मेंएट अंग्रेज़ी इस अह्दसे नाखुश हुई. राजा इस अह्दनामहकी शर्तोंको पूरा न करसका, तब वेल्लमका क़िला और कोइलाड़ी व यलागरके ज़िले नव्वाबको देदिये.

विक्रमी १८३० [हि० ११८७ = ई० १७७३] में जब इस राजाका मैसोरवाले नव्वाब हैदरअलीसे मिलावट रखना पाया गया, तो अंग्रेज़ोंने नव्वाबके ज़रीएसे फ़ौज भेजकर विक्रमी आश्विन कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० ता० १६ सेप्टेम्बर] को उससे तंजावर छीन लिया, और उसको क़िलेमें क़ैद करलिया; लेकिन् ईस्ट इण्डिया कम्पनीने मद्रास गवर्मेंएटको राजाका मुल्क उसे वापस देदेनेके लिये कहा, जिसपर विक्रमी १८३३ वैशाख कृष्ण ८ [हि० ११९० ता० २१ सफ़र = ई० १७७६ ता० ११ एप्रिल] को राजाको पीछा इस्तियार दिया गया; और एक अह्दनामह

(१) डॉक्टर हंटर इसको शिवाका भाई लिखते हैं.

इस मल्लबसे क़रार पाया, कि राजा कम्पनीके बर्ख़िलाफ़ न हो, और चार लाख पैगोड़ा फ़ौज ख़र्च तथा २७७ गांव देवे.

विक्रमी १८४४ [हि० १२०१ = ई० १७८७] में तुलजाका देहान्त होगया, और उसका सौतेला भाई अमीरसिंह गद्दीपर बैठा. उसके साथ एक अ़हदनामह किया गया, जिसमें दर्ज था, कि राजा पांच हिस्सोंमेंसे दो हिस्से ख़िराज दिया करे, और जब वह लड़ाईमें मदद चाहे, तो उस वक्त दूना ख़िराज लियाजावे; हर साल तीन लाख पैगोड़ा क़र्ज़ अदा करनेके लिये देता रहे; और कर्नाटक के नव्वाबने, जो ख़िराज अंग्रेज़ोंको देना कुबूल किया, वह भी अदा किया करे.

मैसोरके टीपू सुल्तानकी लड़ाई ख़त्म होनेपर विक्रमी १८४९ श्रावण कृष्ण ९ [हि० १२०६ ता० २२ ज़िल्क़ाद = ई० १७९२ ता० १२ जुलाई] को अमीरसिंहके साथ दूसरा अ़हदनामह हुआ, लेकिन् अगले महाराजा तुलजाने शरफ़ू नामी एक लड़का गोद लिया था, जिसके बर्ख़िलाफ़ अमीरसिंह बैठ गया, और उसको अंग्रेज़ी अफ्सरोंने भी मंजूर करलिया. मगर अपील होनेपर वह गद्दीसे उतारा गया, और शरफ़ू बिठाया गया, जिसके साथ विक्रमी १८५६ कार्तिक कृष्ण १२ [हि० १२१४ ता० २५ जमादि युलअव्वल = ई० १७९९ ता० २५ ऑक्टोबर] को फिर अ़हदनामह हुआ. इसके वक्तसे रियासतका बिल्कुल इस्तियार सर्कार अंग्रेज़ीके हाथमें चला गया; राजाको आमदनीका सिर्फ़ पांचवां हिस्सह और एक लाख पैगोड़ा सालानह मिलने लगा. अमीरसिंहकी पच्चीस हज़ार पैगोड़ा सालानह पेन्शन मुक़र्रर हुई, जो अ़हदनामह क़रार पानेके तीन वर्ष बाद विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में मरगया. शरफ़ूके वक्तमें इस राज्यका कुल इस्तियार जाता रहा, केवल नामके लिये तंजावर का क़िल्अ़ व उसके गिर्दोनवाहका ज़िला उसके इस्तियारमें बाक़ी रहा. विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में शरफ़ूका इन्तिक़ाल हुआ, और उसका बेटा शिवा गद्दीपर बैठा, लेकिन् वह भी विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई० १८५५] में बे औलाद मरगया, और इस ख़ानदानका ख़ातिमह हुआ. शिवाकी एक बेटी बाक़ी रही, जिसको सर्कारसे किसी क़द्र पेन्शन मिलती थी; वह विक्रमी १९४२ [हि० १३०२ = ई० १८८५] में मरगई.

सावन्तवाड़ी.

यह छोटी रियासत घोंसला ख़ानदानकी एक जुदा शाख़के अधिकारमें है.

इस रियासतपर छटी सदी .ईसवीसे आठवीं सदी तक चालुक्य वंशके राजा राज्य करते थे, बाद उनके विक्रमी ९९० [हि० ३२१ = .ई० ९३३] में यादवोंका क़बज़ह हुआ. और विक्रमी १३१८ [हि० ६५९ = .ई० १२६१] में फिर चालुक्योंका दख़ल होगया. विक्रमी १४४८ [हि० ७९३ = .ई० १३९१] में विजयनगरके राजाओंने इस राज्यको लेलिया, जिनको बे दख़ल करके विक्रमी १४९३ [हि० ८३९ = .ई० १४३६] में बीजापुरके बह्मनी ख़ानदान वाले बादशाहोंने उसपर अपना अधिकार जा जमाया. इसके पीछे घोंसला ख़ानदानका मंगसामन्त नामी एक शख़्स विक्रमी १६११ [हि० ९६१ = .ई० १५५४] में बीजापुरसे बाग़ी होकर वाड़ी (सावन्त वाड़ी) से ६ मीलके फ़ासिलेपर होड़वड़ा गांवमें रहने लगा, और बीजापुरके मुसल्मानोंसे अक्सर लड़ता रहा. परन्तु उसके मरने बाद मुसल्मानोंने मुल्कको अपने क़बज़हमें करलिया. कुछ अरसह पीछे इसी ख़ानदानमेंसे फोंडसामन्तका बेटा खेमसामन्त नामी राजा स्वाधीनता हासिल करके विक्रमी १६९७ [हि० १०५० = .ई० १६४०] में मरगया, और उसका बेटा सोमसामन्त गद्दीपर बैठा, जो १८ महीना राज्य करके मरगया, तब उसके भाई लक्ष्मणसामन्तने उसकी जगह हासिल की. विक्रमी १७२२ [हि० १०७५ = .ई० १६६५] में इसका मृत्यु हुआ. फिर इसका भाई फोंडसामन्त दूसरा गद्दी नशीन हुआ, उसने १० वर्ष राज्य किया. इसके पीछे इसका बेटा खेमसामन्त दूसरा गद्दीपर बैठा. इसने विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = .ई० १६७५] से विक्रमी १७६६ [हि० ११२१ = .ई० १७०९] तक राज्य किया; और उसके बाद उसका भतीजा फोंडसामन्त तीसरा गद्दीपर बैठा. इसके अह्दमें सर्कार अंग्रेज़ीके साथ विक्रमी १७८७ [हि० ११४२ = .ई० १७३०] में एक अह्दनामह क़रार पाया. वह अह्दनामह क़ाइम होनेके बाद सात वर्ष तक राज्य करके विक्रमी १७९४ [हि० ११४९ = .ई० १७३७] में मरगया.

फोंडसामन्तके पीछे उसका पोता रामचन्द्रसामन्त गद्दीपर बैठा. उसके पीछे विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = .ई० १७५५] में उसका बेटा तीसरा खेमसामन्त राज्यका मालिक बना. इसके ज़मानहमें बहुतसी लड़ाइयां हुईं, और विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = .ई० १७६५] में सर्कार अंग्रेज़ीने फ़ौज भेजकर जशवन्तगढ़ या रेड़ीका क़िला लेलिया, जो अह्दनामह होनेपर वापस देदिया गया; परन्तु उसकी शर्तोंपर पूरा पूरा अमल दरामद न हुआ, इस सबबसे दूसरे वर्ष फिर एक अह्दनामह तज्वीज़ किया गया, जिसके मुताबिक़ उसने विंगूरलाका क़िला १३ वर्षके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको सौंप दिया. विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में वह बेऔलाद मरगया, और कुछ अरसे तक झगड़ा बखेड़ा चलता रहा; लेकिन् विक्रमी १८६२

[हि० १२२० = ई० १८०५] में खेमसामन्तकी विधवा राणीने रामचन्द्रसामन्त को, जिसका दूसरा नाम भाऊ साहिब था, गोद लेकर रियासतका मालिक बनाया. यह विक्रमी १८६४ [हि० १२२२ = ई० १८०७] में क़त्ल हुआ, और इसकी जगह फोंडसामन्त चौथा गद्दीपर बैठा. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में इसका भी देहान्त होगया, तब इसका बेटा चौथा खेमसामन्त गद्दीपर बैठा. इसके वक़्में विक्रमी १८७५ फाल्गुन कृष्ण ७ [हि० १२३४ ता० २१ रबीउस्सानी = ई० १८१९ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे एक अहदनामह क़रार पाया, जिसके अनुसार यह रियासत ब्रिटिश गवर्मेण्टकी हिफ़ाज़तमें आई. सर्कार अंग्रेज़ीने तीस हज़ार रुपया सालानह आमदनीका एक पर्गनह, जो पहिले सावन्तवाड़ीसे लेलिया था, वापस राजाको देदिया. फिर कोल्हापुर और इस रियासतके दर्मियान ख़िराजकी बाबत विक्रमी १८७७-७९ [हि० १२३५-३७ = ई० १८२०-२२] में फ़साद उठा, लेकिन् विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = ई० १८२६] में सर्कार अंग्रेज़ीने सावन्तवाड़ीका एक इलाक़ह कोल्हापुर वालोंको दिलाकर उसका फ़ैसला करादिया.

विक्रमी १८८७-८९ [हि० १२४५-४७ = ई० १८३०-३२] में ख़ानगी बग़ावतके सबब राजाको एक अहदनामह करना पड़ा, जिसमें रियासती इन्तिज़ामकी बाबत कई शर्तें हुईं. फिर विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में एक दूसरा अहदनामह हुआ, जिसके मुताबिक़ समुद्र और इलाक़हकी राहदारीका महसूल गवर्मेण्टने अपने इख़्तियारमें लिया, और उसके एवज़ कुछ रुपया नक़द रियासतको मुक़र्रर करदिया. इसी सालमें दूसरे अहदनामहके मुवाफ़िक़ राजाकी रज़ामन्दीसे रियासतका इन्तिज़ाम भी सर्कार अंग्रेज़ीने अपने हाथमें लेलिया. विक्रमी १९२४ आश्विन [हि० १२८४ जमादियुस्सानी = ई० १८६७ ऑक्टोबर] में राजाका देहान्त हुआ, और उसका बेटा फोंडसामन्त पांचवां गद्दीपर बैठा, जिसका दूसरा नाम आना साहिब प्रसिद्ध है. यह शख़्स विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] की एक बग़ावतमें शामिल होगया था, परन्तु सर्कार अंग्रेज़ीसे उसका क़ुसूर मुआफ़ किया जाकर गद्दीपर बैठनेके वक़्त बग़ावत दबानेका फ़ौज ख़र्च और एक सालकी आमदनीका नज़ानह लिया गया. विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में वह मरगया, और उसका बेटा रघुनाथसामन्त रियासतका वारिस बना, जो अब मौजूद है.

इस रियासतकी सलामी ९ तोप, रक़्बह ९०० मील मुरब्बा, आबादी १७४४३३ आदमी, और आमदनी ३२५०००) रुपये सालानह हैं.

रियासत नागपुर.

यह भी घोंसला ख़ानदानमेंकी एक रियासत गिनी गई है, क्योंकि इस ख़ानदानके राजा यहां भी राज्य करते थे. यहांपर पहिले गोंड वग़ैरह जातिके राजा राज्य करते रहे, जब राजा चांद सुल्तान अपने पीछे १ बुर्हानशाह और २ अक्बरशाह (१) नामके दो बेटे छोड़कर विक्रमी १७९६ [हि० ११५२ = ई० १७३९] में मरगया, और वलीशाह नामी एक दूसरे शरूसने राज्य छीन लिया, तब चांद सुल्तानकी विधवा राणीने बरारसे राघव घोंसलाको बुलाया, जिसने वलीशाहको क़त्ल करके उस विधवाके दोनों बेटोंको गद्दीपर बिठा दिया. कुछ दिन बाद इन दोनोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई, तो बुर्हानशाहने विक्रमी १८०० [हि० ११५६ = ई० १७४३] में राघवको फिर बुलाया, उसने नागपुरमें आकर अक्बरशाहको निकाल दिया, और आप राज्यका रक्षक बनकर वहीं रहने लगा. इसने बुर्हानशाह को नामके लिये राजा रखकर पेन्शन करदी थी, जो अब तक उसके ख़ानदानको मिलती है. थोड़े दिनोंके बाद राघव ख़ुद मुरूतार बनगया, और विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] में पेशवासे एक नई सनद हासिल करली, जिसके ज़रीएसे बरार, और गोंडवाना वग़ैरह भी अपने क़बज़ह में करलिया. यह बहुत लम्बा चौड़ा मुल्क हासिल करके विक्रमी १८१२ चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० ११६८ जमादियुस्सानी = ई० १७५५ मार्च] में मरगया. इसके चार बेटे १ जानो, २ साबा, ३ माधव और ४ बिम्बा थे. जानो अपने बापकी गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में मरगया. उसने अपने भाई माधवके बेटे राघवको दत्तक लेलिया था, लेकिन् जानोके मरने पर साबाने दख़्ल करलिया. विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में माधवने साबाको मारडाला, तब राघव गद्दीका मुरूतार हुआ. राज्यका प्रबन्ध उसका बाप माधव करता रहा, और इसने अपना तअ़ल्लुक़ गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ रक्खा.

विक्रमी १८४५ [हि० १२०२ = ई० १७८८] में माधव मरगया, तब राघव ख़ुद मुरूतार बना, और हुल्कर व सेंधियासे मिलकर अंग्रेज़ोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करने लगा, जो कि अ़हदनामहकी शर्तोंसे बिल्कुल बर्ख़िलाफ़ थी. असाई और आरगांव की लड़ाइयोंमें सेंधिया और राघवकी ताक़त तोड़दी गई, तब विक्रमी १८६० पौष शुक्ल ३ [हि० १२१८ ता० २ रमज़ान = ई० १८०३ ता० १७ डिसेम्बर] को देव-

(१) इन नामोंसे ये राजा मुसल्मान मालूम होते हैं.

गांवमें एक अ़हदनामह किया गया, जिसके अनुसार कटक और वर्दा नदीके पश्चिम और नर्नलाके दक्षिणका देश तथा गाविलगढ़के पहाड़ राजासे छीन लिये गये. विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = ई० १८०६] में संभलपुर और पटनाका .इलाक़ह राजाको वापस मिला.

विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = ई० १८१६] में राघव मरगया, और उसका बेटा परसू गद्दीपर बैठा; लेकिन् यह इन्तिज़ाम करनेके लाइक़ न था, इसलिये उसके रिश्तह्-दार माधव (आपा साहिब) के मातह्त एक कौन्सिल मुक़र्रर कीगई, परन्तु परसूको इस कौन्सिलका एतिबार न था. विक्रमी १८७३ ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि० १२३१ ता० २८ जमादियुस्सानी = .ई० १८१६ ता० २७ मई] को गवर्मेंएट अंग्रेज़ीसे एक अ़हदनामह हुआ, जिसके मुताबिक़ साढ़े सात लाख रुपया सालानह देना क़रार पाकर एक कन्टिन्जेएट फ़ौज उसने अपनी हिफ़ाज़तके लिये रक्खी. विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = .ई० १८१७] में यकायक परसू मरगया, पीछेसे मालूम हुआ, कि आपा साहिबने उसे मरवा डाला, और आप गद्दीपर बैठ गया है. जिस वक्त पेश्वाने अंग्रेज़ोंसे बर्ख़िलाफ़ होकर रेज़िडेन्सीपर ह्मलह किया, आपा साहिब भी उसके शरीक होगया था, लेकिन् पेश्वाके शिकस्त खानेपर विक्रमी १८७४ पौष कृष्ण ३० [हि० १२३३ ता० २८ सफ़र = .ई० १८१८ ता० ६ जैन्यु-अरी] को आपा साहिबकी तरफ़से एक अ़हदनामह करना पड़ा, जिसके अनुसार बहुतसा .इलाक़ह छोड़ देनेके बाद रेज़िडेएटकी सलाहसे इन्तिज़ाम करनेका इक़ार हुआ; परन्तु उसने उस अ़हदके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाइयां कीं, इससे गिरिफ्तार किया गया, लेकिन् किसी मौक़ेसे निकल भागा, और गोंड देशमें पहुंचा, वहांसे नागपुरपर क़ब्ज़ह करनेकी कोशिशें कीं, जो सब बेफ़ाइदह हुईं. लाचार वह राजपूतानह की तरफ़ जोधपुर आया, और वहींपर विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = .ई० १८४०] में मरगया.

नागपुरमें राघवका दोहिता विक्रमी १८७५ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० १२३३ ता० २१ शअ़्बान = ई० १८१८ ता० २६ जून] को राघव नामसे गद्दीपर बिठाया गया. इसकी कम उ़म्रीके सबब रेज़िडेएटीका अधिकार रहा. विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = .ई० १८२६] में उसको इख़्तियार दिया गया, तब एक अ़हदनामह हुआ, जिसके मुवाफ़िक़ कन्टिन्जेएट फ़ौज ख़र्चके लिये एक मुल्की हिस्सह लिया गया, लेकिन् इस अ़हदनामहको बेजा समझकर गवर्मेंएटने यह ज़िले वापस देदिये, और आठ लाख रुपये सालानह लेना क़बूल किया. विक्रमी १९१० मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि० १२७० ता० ९ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८५३ ता० ११ डिसेम्बर] को राघवका देहान्त होगया. इसके कोई वारिस न था, इसलिये गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने तमाम .इलाक़ह ज़ब्त

करलिया. विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई० १८५५] में राघवकी विधवा स्त्रीने जानो घोंसलाको दत्तक लिया. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के बल्वेमें इस ख़ानदानने सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही की, इसलिये सिताराके ज़िलेमें देवरका इलाक़ह और राजा बहादुरका ख़िताब हमेशहके लिये मिला, और दो लाख तीन हज़ार रुपया सालियानह पेन्शन मुक़र्रर करदी गई.

हमने घोंसला ख़ानदानका मुख़्तसर हाल इसवास्ते लिखा है, कि ये लोग सीसोदिया वंशकी शाख़ कहलाते थे. अब उन लोगोंके नौकर सेंधिया हुल्कर पंवार और गायकवाड़, जो बाक़ी रहकर ख़ुद मुख़्तार राजा कहलाते हैं, उनकी तारीख़ ग्रैन्ट डफ़ व माल्कम साहिब वग़ैरहने लिखी हैं, जिनके हिन्दी व उर्दू तर्जमे भी होचुके हैं, तथापि हम यहां उन रियासतोंकी वंशावली और मुख़्तसर हाल पाठकोंके अवलोकनार्थ दर्ज करते हैं.

ग्वालियर.

ग्वालियरका राज्य पहिले कछवाहोंके तहतमें था और उनके बाद तंवरोंके हाथ आया. परन्तु कछवाहोंका हाल हमको कुछ नहीं मिला, अल्बत्तह जयपुरकी ख्यातसे सिर्फ़ इतना मालूम हुआ है, कि दसवीं सदी विक्रमीके बाद तक कछवाहे ग्वालियरमें राज्य करते रहे; जिनमेंसे आख़री राजा ईषासिंहने यह राज्य अपने भानजेको देदिया था. इसकी बाबत किसी क़द्र हाल जयपुरकी तवारीख़में लिखा जा-चुका है - (देखो पृष्ठ १२६८).

कछवाहोंके बाद जो तंवर राजा हुए उनका हाल क़लमी पुस्तकों वग़ैरहसे जेनरल कनिंघमने लिखा है, परन्तु ग्वालियरमें जो पाषाण लेख मिले हैं उनसे यह हाल पूरा पूरा नहीं मिलता; इसलिये हम इस हालको छोड़कर पाषाण लेखके अनुसार जिन राजाओंका हाल मिला है, दर्ज करते हैं.

चौथी सदी ईसवीमें तोरमण और पशुपति राज्य करते थे, जिनके बाद नवीं और दसवीं सदीमें भोजदेव, रामदेव वग़ैरह राजा हुए; और उनके पीछे कच्छप घात (१) वंशके राजा लक्ष्मण, वज्रदामा, मंगलराज, कीर्तिराज, भुवनपाल, देवपाल, पद्मपाल, और महीपाल क्रमसे राज्याधिकारी बने. पीछे भुवनपाल, मधुसूदन, शक्रेंद, नागसिंह, विलंगदेव, वीरसिंह, उद्धरणदेव, गणपतिदेव, डुंगरेंद्रदेव, कीर्तिसिंह, कल्याण-

---

(१) कच्छप घात वंश अर्थात् कछवाहोंको मारने वाला वंश, जो लिखा है उससे मालूम होता है, कि यह तंवर ख़ानदानका नाम है.

मल्ल (कल्याणशाही), मानसिंह (मानशाही), विक्रमादित्य (विक्रमशाही), रामसिंह (रामशाही) (१), शालिवाहन, श्यामशाह, और मित्रसेन (वीर मित्रसेन) वगैरह राजा हुए. लेकिन् मुसल्मानी तवारीखोंसे मालूम होता है, कि विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] में इब्राहीम बादशाहने ग्वालियरपर (रामशाहके वक्तमें) अपना दख़्ल जमाया; और मुसल्मानी सल्तनतमें अदला बदली होने बाद उसपर मरहटोंका क़बज़ह हुआ.

माल्कम साहिब अपनी किताबकी पहिली जिल्दके ९५ पृष्ठ में लिखते हैं, कि "राणू सेंधिया छोटे दरजहकी कुलबी ज़ातका आदमी बाईके ज़िलेमें कुमारखेड़ेका पुश्तैनी पटैल था; वह पहिले बाला विश्वनाथ पेश्वाका नौकर हुआ, और बालाके मरने बाद उसके बेटे बाजीराव बल्लालकी नौकरीमें रहा. इससे पहिले वह राणू पेश्वाकी जूतियां उठानेकी नौकरीपर था. एक दिन बाजीराव साहू राजासे सलाह करके बाहर आया, और वह अपनी जूतियां राणूको छातीपर रक्खे हुए सोया देखकर बहुत खुश हुआ, और कहा, कि इसे अपनी नौकरीका बहुत ही ख़याल है; उसने राणूको अपनी पायगाहमें छोटी अफ्सरीपर मुक़र्रर किया, लेकिन् बहुत जल्द तरक़ी होगई. यहां तक, कि जब बाजीराव मालवेका सूबहदार बना, तो राणू बादशाहके पास दिल्ली भेजा गया, और उसने बाजीरावकी तरफ़से इक़ारनामहपर दस्तख़त किये. वह बहुत अच्छा सिपाही था, विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] के लगभग शुजाअ़लपुर ज़िले मालवामें मरगया, और उसके मरनेसे उस गांवका नाम राणूगंज होगया. जब यह मरा, तो इसके अधिकारमें पैंसठ लाख रुपया सालियानहकी आमदनीका मुल्क था. राणूके एक हम क़ौम स्त्रीसे तीन बेटे, १ जया आपा, २ दत्ता, और ३ जट्टोवा, और राजपूत क़ौमकी दूसरी स्त्रीसे दो बेटे, १ तुका, व २ माधवराव थे."

जया आपा राणूके मरनेसे थोड़े ही दिनों बाद मारवाड़के राजा विजयसिंहके कहनेसे एक खोखर राजपूतके हाथ दग़ासे मारा गया. दत्ता दिल्लीके पास रड़बेड़की लड़ाईमें मारा गया; और जट्टोवा डीगके पास कुम्हेरकी लड़ाईमें क़त्ल हुआ, इसलिये जया आपाके बाद उसका बेटा जनकू मालिक हुआ; लेकिन् यह भी पानीपतकी लड़ाईमें मारा गया, और तुका भी उसी लड़ाईमें काम आया; तब माधव मुस्तार बना. यह भी पानीपतकी लड़ाईमें एक अफ़ग़ानके हाथसे ज़ख़्मी हुआ था. यह बाजीरावके बेटे बाला-

(१) यह राजा विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में अकबरसे महाराणा प्रतापसिंह की लड़ाई हुई, तब अपने दोनों बेटों सहित मारा गया- (देखो पृष्ठ १५७).

रावके बड़े सर्दारोंमें गिना गया, और उसके ताबे बहुतसी फ़ौज थी. पानीपत की लड़ाईके तीन वर्ष बाद मलहारराव हुल्कर भी मरगया, जिससे माधवकी ताक़त बहुत बढ़ी. उसने सेन्ट्रल इन्डियामें सब राजाओंपर ख़िराज लगाकर अपना इख़्तियार खूब बढ़ाया, सिर्फ़ नामके लिये पेश्वाका ताबेदार कहलाता था, और उसीके नामसे कार्रवाई करता था. बालाराव पेश्वाके मरने बाद इसने नर्मदाके उत्तरी तरफ़ हिन्दुस्तानपर अपना इख़्तियार रखना चाहा, और वह दिल्लीके बादशाह शाह आलम सानीका नामके लिये ताबेदार हुआ; गोया उसको बादशाहका नाइब (सूबेदार) कहना चाहिये. सालबाईके अह्दनामहके मुताबिक़ वह खुद-मुरूतार राजा होगया, लेकिन् उसने पेश्वाका तअल्लुक़ नहीं छोड़ा. जब पेश्वाको दिल्लीके बादशाहने "वकील मुतलक़" (नाइब) का ख़िताब दिया, और माधव उसका नाइब बना, तो माधवका क़बज़ह सतलजसे आगरे तक और अक्सर राजपूतानहमें भी था. उसके पास सोलह पैदल पल्टनें क़वाइद दां और पांच सौ तोपें व एक लाख सवार थे. मालवेका दो तिहाई हिस्सह और दक्षिणके कई अच्छे सूबे उसके इख़्तियारमें थे. एक बहुत उम्दह फ़्रान्सीसी अफ़्सर उसे मिलगया, जिसका नाम डीबाइन था. माधवने राजपूतानहकी ताक़तको भी सदमह पहुंचाया, और मेवाड़, मारवाड़ व जयपुरसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां कीं, जिनका हाल उक्त रियासतोंकी तवारीख़ोंमें लिखा गया है.

वह दक्षिणमें जाकर विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में पूना मक़ामपर मरगया. माल्कम साहिब लिखते हैं, कि "यह अंग्रेज़ोंका पूरा दुश्मन था". माधवके कोई बेटा न था, इसलिये उसके भाई तुकाके तीन बेटों १- केवन २- जोटीबा, और ३- आनन्दरावमेंसे तीसरेका बेटा दौलतराव तेरह वर्षकी उम्रमें माधवकी गद्दीपर बिठाया गया. माधवकी विधवा स्त्रियोंने दौलतरावके बर्ख़िलाफ़ बग़ावत की, लेकिन् कामयाबी नहीं हुई. दौलतराव अपनी ताक़तका बहुत भरोसा रखता था, लेकिन् उसने लॉर्ड वेलेज़्ली और लेकसे अलीगढ़, दिल्ली, असाई, आगरा, लसवाड़ी और अरगांवकी लड़ाइयोंमें विक्रमी १८६० [हि० १२२८ = ई० १८०३] में शिकस्तें खाईं, जिससे उसका घमंड जाता रहा; और उक्त वर्षके अन्तमें एक अह्दनामह किया, जिसके मुताबिक़ गंगा व जमुनाके बीचका इलाक़ह और जयपुर, जोधपुर, व गोहदके उत्तर तथा अह्मद-नगर भड़ोचके ज़िले और अजन्ता घाट व गोदावरीके बीचका मुल्क छोड़दिया. उसने दिल्लीके बादशाह, पेश्वा, निज़ाम, महाराजा गायकवाड़ और दूसरे राजाओंसे,

जिन्होंने सर्कार अंग्रेज़ीको मदद दी थी, अपना तअल्लुक़ छोड़दिया; लेकिन् यह शर्त पिछले अह्दनामहसे कुछ बदल दीगई.

विक्रमी १८८४ चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० १२४२ शअ्बान = ई० १८२७ मार्च] में दौलतराव ग्वालियरमें मरगया. उसके कोई लड़का न था, इसलिये सेंधियाके खानदानसे एक लड़का मुगटराव चुना गया, जिसको गद्दीपर बिठाकर जनकूराव सेंधिया मश्हूर किया, परन्तु उसका चाल चलन ठीक न था. वह भी विक्रमी १८९९ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५९ ता० ६ मुहर्रम = ई० १८४३ ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को मरगया. तब सेंधिया खानदानसे एक आठ वर्षका लड़का लेकर गद्दीपर बिठाया गया, जिस का नाम जियाजीराव सेंधिया रक्खा; और बन्दोबस्तके वास्ते मामा साहिब सितोले मुक़र्रर हुआ, परन्तु इससे काम न चला, तब दादा साहिब खासगी वाला कामका मुख्तार बना, मगर इसकी कार्रवाई गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके विरुद्ध मालूम हुई, विक्रमी १९०० पौष शुक्ल ८ [हि० १२५९ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १८४३ ता० २९ डिसेम्बर] को महाराजपुर और पनिआलमें अंग्रेज़ोंसे लड़ाइयां हुईं, जिनमें सेंधियाकी फ़ौजने शिकस्त पाई, और एक अह्दनामह हुआ, उसके मुताबिक़ १८०००००) लाख रुपये सालानह कन्टिन्जेएट फ़ौज खर्चके लिये और कुछ मुल्क क़र्ज़ और लड़ाईके खर्चके वास्ते भी सर्कारको दिया गया. फ़ौजका खर्च घटाकर छः हज़ार सवार, तीन हज़ार पैदल, बत्तीस तोपें और दो सौ गोलन्दाज़ रक्खे गये, और यह भी इक़ार हुआ, कि राजाकी नाबालिग़ीमें रेज़िडेएटकी सलाहसे काम हो.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] तक गवर्मेंएटके साथ इक़ारके मुताबिक़ बर्ताव रहा, उक्त सन्के ग़द्रमें कन्टिन्जेएट फ़ौजने बग़ावत की, जिससे पोलिटिकल अफ्सरको भागजाना पड़ा.

विक्रमी १९१५ आषाढ़ [हि० १२७४ ज़िल्क़ाद = ई० १८५८ जून] में तांतिया टोपी बाग़ी फ़ौज लेकर ग्वालियरमें पहुंचा, और महाराजाकी फ़ौज भी उससे मिलगई, तो लाचार महाराजा भागकर आगरे गये. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १९ जून] को सर ह्यूजरोज़की फ़ौजने बाग़ियोंसे ग्वालियर छीनकर महाराजाको फिर क़ाइम किया. उसी दिनसे महाराजाको अपने दीवान दिनकर रावसे नफ़्रत हुई. उन्होंने विक्रमी १९१६ पौष [हि० १२७६ जमादियुल अव्वल = ई० १८५९ डिसेम्बर] में उसको अपनी रियासतसे निकाल दिया, और बाला चिमनाको दीवान बनाया. नव वर्ष बाद इसके ज़ियादह ज़ईफ़ होजानेके सबब यह काम गणपतिराव खटकेको मिला, जो अगले दीवानका

नाइब था. गद्रकी ख़ैरख़्वाहीके बाइस महाराजाको ३००००० तीन लाखकी जागीर मिली, और पैदल पल्टनमें दो हज़ार आदमी तथा चार तोप अधिक रखनेका अधिकार मिला. सर्कारका जो ख़िराज बाक़ी था, छोड़ दिया गया; इसके सिवा दस हज़ार रुपये सालानहकी आमदनीवाला बड़वासागरका हिस्सह भी मिलनेकी इजाज़त हुई. अगले अहदनामहसे कई बातें तब्दील हुईं, इसलिये विक्रमी १९१७ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० [हि० १२७७ ता० २८ जमादियुलअव्वल = ई० १८६० ता० १२ डिसेम्बर] को दूसरा इक़ारनामह लिखा गया, जिसके मुवाफ़िक़ बर्ताव रहा. बहुतसे पर्गने व गांव गवर्मेंट अंग्रेज़ी व सेंधियाने रज़ामन्दीसे बदल लिये. इस राजाने बड़ा नाम पाया; आगरा और ग्वालियरके बीच वाली रेल तय्यार होनेके वक़्त उसने विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में ७५०००००० रुपया और विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में इन्दौरसे नीमच तक रेल बनाई जानेके समय ७५०००००० रुपया ४ रु० सालियानह सैकड़ाके सूदपर दिया. उनको सर्कार अंग्रेज़ीसे के० जी० सी० एस० आइ० (K. G. C. S. I.) का ख़िताब और दो तोपकी ज़ियादह सलामी हीन हयात मिली.

इस रियासतकी सलामी १९ तोप (१), क्षेत्रफल २९०४६ मील मुरब्बा, आबादी ३११५८५७ बाशिन्दे और १०३४६ गांव हैं. आमदनी १२०००००० रुपया सालानह है. जियाजीराव सेंधिया विक्रमी १९४३ आषाढ़ कृष्ण ३ [हि० १३०३ ता० १७ रमज़ान = ई० १८८६ ता० २० जून] को इस दुन्यासे कूच करगया. यह नामवर, आक़िल व ख़ुशअख़्लाक़ राजा था, उसको सिपाहियानह ढंग ज़ियादह पसन्द था. फ़ौजकी क़वाइद हमेशह आप लेता था. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपनी आंखसे देखा है, जब कि महाराजा मालवेका दौरा करनेको नीमचकी छावनी तक आये थे. वापसीके वक़्त रामपुरासे भानपुराकी तरफ़ कूच हुआ, तो एक पल्टनका सिपाही पेटमें दर्द होनेसे सड़कके किनारेपर तड़प रहा था, महाराजा घोड़ा दौड़ाते हुए उस जगह आ निकले; सिपाहीको देखकर घोड़ेसे कूदे, और उसका पेट हाथसे मलने लगे; तब बाबा आप्ट्या, दादा खटक्या, बापू सेंधिया वग़ैरह सर्दार भी घोड़ोंसे उतरे, और इन सर्दारोंने सिपाहीको हाथों हाथ उठाकर सर्कारी सामानकी गाड़ीमें डाला, दो चार आदमी उसकी संभालके लिये तईनात करदिये. मैं उस वक़्त उस दर्दमन्द सिपाहीसे पचास क़दमके फ़ासिलेपर

(१) लेकिन् इनके इलाक़हमें हमेशह २१ तोपकी सलामी होती है.

अठाणाके रावत् दूलहसिंहके साथ उनके हाथीपर चढ़ा हुआ यह माजरा देख रहा था. हम लोग महाराजाकी रह्मदिलीको देखकर तारीफ़ कर रहे थे. हक़ीक़तमें यह महाराजा नेक दिल व क़द्रदान थे. जियाजीरावके अन्त समय सर्कार अंग्रेज़ीने मुरारका क़िला ग्वालियरकी रियासतको सौंप दिया, और महाराजाके बेटे माधवरावको आठ वर्षकी उ़म्रमें गद्दी मिली. रईसकी कम .उ़म्रीके सबब उनकी माको रियासतका रिजेंट (मुख़्तार) समझा गया, और दीवान राव राजा सर गणपतिराव, के० सी० एस० आइ० को कौन्सिलका प्रेसिडेंट किया गया. विक्रमी १९४६ [हि० १३०६ = ई० १८८९] में सर गणपतिरावके गुज़र जानेसे रईसके नानाको, जो फ़ौजका सिपहसालार था, कौन्सिलकी प्रेसिडेन्सी मिली.

इन्दौर.

इस रियासतके राजाओंका मूल पुरुष मलहारराव हुल्करका बाप कंधा हुल गांवका रहने वाला गाडरी क़ौम और धनगर गोत्रका अदना आदमी था, जिसकी शादी ख़ानदेशके तालंदा गांवमें नारायणरावकी बहिनके साथ हुई थी. उसी ग़रीबीकी हालतमें उसके गर्भसे विक्रमी १७५० [हि० ११०४ = .ई० १६९३] के क़रीब मलहाररावका जन्म हुआ था.

विक्रमी १७५४ [हि० ११०८ = .ई० १६९७] के क़रीब कंधा मरगया, तो उसकी विधवा स्त्री अपने पुत्र मलहाररावको लेकर ख़ानदेशमें अपने भाई नारायणरावके पास चली आई; उसने अपने भान्जेको भेड़ बकरियां चरानेके लिये दीं. जब मलहारराव होशियार हुआ, तो नारायणरावने उसे पच्चीस सवारोंका अफ़्सर बनाया, जो क़दमबन्दी नाम मरहटा सर्दारके मातहत थे. मलहाररावने इस थोड़ेसे गिरोह से अच्छा काम देकर नाम पाया, तब पेश्वाने उसे अपना नौकर बनाया, और एक बड़ी फ़ौजकी अफ़्सरी दी. निज़ाम और कोकणकी लड़ाइयोंमें उसने अच्छे अच्छे काम दिये, जिससे वह पेश्वाके बड़े सर्दारोंमें माना गया.

विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = .ई० १७२८] में मलहाररावको नर्मदाके उत्तर बारह पर्गने मिले, और उसके बाद विक्रमी १७८८ [हि० ११४३ = .ई० १७३१] में सत्तर पर्गने फिर मिले. पेश्वाने उसे इख्तियार देदिया. विक्रमी १७९२ [हि० ११४८ = .ई० १७३५] में नर्मदाके उत्तर पेश्वाकी जितनी फ़ौज थी, उस सबका वह सेनापति (कमान्डर) होगया. इस फ़ौज खर्चके लिये इन्दौरका बड़ा हिस्सह मुक़र्रर हुआ, जो अब तक कई तब्दीलातके साथ हुल्करके ख़ानदानमें चला आता है.

एक बार मलहाररावने दिल्लीके क़रीब पहुंचकर कालिका देवीका मेला लूट लिया, दूसरी दफ़ा आगरेके क़रीब अवधके बुर्हानुल्मुल्कसे शिकस्त खाई; एक बार उसने दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहकी बेगम मलिकए ज़मानीका सामान रास्तेमें लूट लिया, जो दिल्लीको जाता था. विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] में वह मुग़ल लोगोंसे मिलकर रुहेलोंसे बड़ी बहादुरीके साथ लड़ा, फिर उसको ख़ानदेशमें चान्दौरकी देशमुखी बादशाहसे मिली, जिसकी सनद उसके ख़ानदानमें अबतक मौजूद है. इसके बाद उसने सिकन्दराके आस पास लूट मार मचाई, परन्तु अहमदशाह अब्दालीकी फ़ौज आ पहुंची, जिससे शिकस्त खाकर हुल्करको भागना पड़ा. इसके पीछे यह फ़ौज एकट्ठी करके मरहटोंकी बड़ी जमइयतके साथ पानीपतके मक़ामपर पठानोंसे लड़नेको पहुंचा, लेकिन् यह लड़ाई मलहाररावकी सलाहके बर्ख़िलाफ़ हुई थी, जिसमें बहुतसा नुक्सान उठाकर मईटोंको बर्बादीकी हालतमें भागना पड़ा. इसके बाद मलहारराव मालवेके इन्तिज़ाममें मश्गूल रहा, और छहत्तर वर्षकी अवस्था पाकर विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = .ई० १७६८] (१) में इस दुन्याको छोड़ गया.

मलहाररावका पुत्र खंडेराव था, जो विक्रमी १८११ [हि० ११६७ = .ई० १७५४] में क़िले कुंभेरके मुहासरेमें मारागया और उसके बाद उसकी विधवा अहल्याबाई और एक बेटा मालीराव व एक लड़की बाक़ी रही. पेश्वाकी तरफ़से मालीराव मलहाररावका क्रमानुयायी बना, परन्तु गद्दीपर बैठनेके बाद पागल होगया, और नौ महीना राज्य करके विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = .ई० १७६९] में मरगया, तब तमाम रियासती बन्दोबस्त अहल्याबाईने अपने हाथमें लिया. इसने तीस वर्ष तक बहुत उत्तमता से राज्यका काम चलाया. यह चाल चलनकी बहुत नेक, ईमान्दार, बुद्धिमान, दयावान, लाइक़ और फ़य्याज़ थी. माल्कम साहिब लिखते हैं, कि जैसे जैसे दर्याफ़्त होता है, इसकी नेकियां ज़ियादह मिलती जाती हैं. इसने मैसोरमें व नर्मदाके किनारेपर घाट तथा मन्दिर

(१) डंटर साहिब विक्रमी १८२२ [हि० ११७८ = .ई० १७६५] में मरना लिखते हैं.

बहुत उत्तम बनवाये; और और भी कई तीर्थोंमें उसके बनवाये हुए धर्म स्थान हैं, जिनमें अबतक सदावर्त जारी हैं. इसने तीस वर्षकी उम्रमें राज्य प्रबन्ध अपने हाथमें लिया, और साठ वर्षकी उम्रमें इस दुन्याको छोड़ा (१). उसके कोई लड़का न रहा, केवल एक लड़की थी, जो भी उसके सामने ही अपने पतिके साथ सती होगई; तब उसका कमान्डर इन्चीफ़ (सैनापति) तुकाजी राव गद्दीपर बैठा, जो कुछ दूरका रिश्तहदार हुल्कर क़ौमका था; लेकिन् वह भी गद्दी बैठनेके बाद दो ही वर्ष तक ज़िन्दह रहा. उसके चार लड़के थे, जिनमेंसे बड़ा काशिराव और दूसरा मलहार राव तो विवाहिता स्त्रीसे और तीसरा बिठो व चौथा जशवन्तराव, ये दोनों पासबानके पेटसे थे. पेश्वाने काशीरावको मुरूतार बनाया, और मलहार राव क़त्ल किया गया.

मलहाररावके एक लड़का खंडेराव था, जिसे क़ैद किया, लेकिन् जशवन्तरावने काशीरावको ख़ारिज करके खंडेरावको मुरूतार बनाया; कुछ अ़र्सेसे बाद खंडेरावको ज़हर देकर जशवन्तराव मुरूतार बनगया. इसनें फ़त्तहगढ़, डीग और भरतपुरमें अंग्रेज़ोंसे लड़ाइयां कीं. आख़िरकार लॉर्ड लेकसे दबकर सुलह करली, और वह अपने इलाक़े पाकर खुश हुआ; फिर इन्दौर जाकर राज्य प्रबन्धपर झुका, परन्तु कुछ दिनों बाद पागल होगया; और विक्रमी १८६८ कार्तिक [हि० १२२६ रमज़ान = .ई० १८११ ऑक्टोबर] को ज़िले इन्दौरके क़स्बे भानपुरमें मरगया, जहां उसके समाधि स्थानपर मन्दिरके ढंगकी छतरी बनी हुई है. जशवन्तरावके पागल होनेके समयसे उसकी स्त्री तुलसीबाई राज्य प्रबन्ध चलाती थी, परन्तु उसकी बद चलनीसे बहुतसे बखेड़े उठे. फ़ौजकी बग़ावतसे विक्रमी १८७४ मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० १२३३ ता० ११ सफ़र = .ई० १८१७ ता० २० डिसेम्बर] को सिपाहियोंने तीस वर्षकी उम्रमें उसे मारडाला, और जशवन्तरावके एक पुत्र मलहाररावको, जो छोटी क़ौमकी औरत केसराबाईके पेटसे पैदा हुआ था, गद्दीपर बिठाकर भानपुरमें विक्रमी १८७४ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० १२३३ ता० १२ सफ़र = .ई० १८१७ ता० २१ डिसेम्बर] को अंग्रेज़ोंसे मुक़ाबलह किया, जिसमें शिकस्त खाने बाद भागना पड़ा.

---

(१) हमने इसका तीस वर्ष हुकूमत करना माल्कम साहिबकी तवारीख़से लिखा है, लेकिन् सय्यद करीमअ़लीकी तारीख़ मालवामें इसकी हुकूमत सत्ताईस वर्ष और विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] में इन्तिक़ाल होना लिखा है. उक्त मुन्शीने माल्कम साहिबके क़ौलका रद्दिया भी किया है, लेकिन् वह यह भी लिखता है, कि माल्कम साहिबने अहल्याबाईकी हुकूमतके चालीस वर्ष लिखे हैं, परन्तु हमारे पास माल्कम साहिबकी किताब मौजूद है, उसमें तीस लिखे हैं.

विक्रमी १८७४ पौष कृष्ण ३० [हि० १२३३ ता० २८ सफ़र = .ई० १८१८ ता० ६ जैन्युअरी] को मन्दसौरमें एक अ़हदनामह हुआ, जिसके मुवाफ़िक़ मलहारराव हुल्कर अंग्रेज़ी रक्षामें आया. फिर वह इन्दौरमें राज्य करने लगा, लेकिन् उसका चाल चलन बहुत ख़राब था. आख़िरमें सत्ताईस वर्षकी उम्र पाकर विक्रमी १८९० आश्विन शुक्ल १४ [हि० १२४९ ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० १८३३ ता० २७ ऑक्टोबर] को उसने इस संसारको छोड़ा.

विक्रमी १८९० पौष शुक्ल ७ [हि० १२४९ ता० ५ रमज़ान = .ई० १८३४ ता० १७ जैन्युअरी] को मार्तण्डराव गद्दीपर बिठाया गया, परन्तु दो महीने बाद उसको गद्दीसे उतारकर हरीराव हुल्कर मालिक बन बैठा. यह भी पूरा बद चलन था; विक्रमी १९०० कार्तिक शुक्ल १ [हि० १२५९ ता० १ शव्वाल = .ई० १८४३ ता० २४ ऑक्टोबर] को गुज़र गया. इसने अपनी ज़िन्दगीमें बापूराव हुल्करके लड़के खण्डेरावको गोद लेलिया था, जो विक्रमी १९०० मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [हि० १२५९ ता० २० शव्वाल = .ई० १८४३ ता० १३ नोवेम्बर] को गद्दी नशीन हुआ; और केवल तीन ही महीने राज्य करने बाद विक्रमी १९०० फाल्गुन कृष्ण १३ [हि० १२६० ता० २७ मुहर्रम = .ई० १८४४ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को मरगया.

गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने हरीरावकी माता कृष्णाबाईको हुक्म दिया, कि हुल्करके ख़ानदानमेंसे कोई लड़का मुक़र्रर किया जावे. इसपर पहिले उसने मार्तण्डरावको ही लेना चाहा, जिसको हरीरावने ख़ारिज करदिया था, लेकिन् इस बातको सर्कार अंग्रेज़ीने ना मन्ज़ूर किया; तब कृष्णाबाईने भाऊ हुल्करके बेटेको तज्वीज़ करके विक्रमी १९०१ आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० १२६० ता० १० जमादियुस्सानी = .ई० १८४४ ता० २७ जून] को गद्दीपर बिठाया, और उसका नाम जशवन्तराव सुत तुकाजीराव हुल्कर रक्खा गया. इसकी कम उम्रीके ज़मानहमें रियासतका काम रेज़िडेण्ट साहिब और कृष्णाबाईकी सलाहसे होता रहा. विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में इसको रियासती इख़्तियार मिला. विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में हुल्करने चान्दोरके ठिकानेके एवज़ जो अह्मदनगरके ज़िलेमें था, मध्य प्रदेशमेंसे सतवास व नीमाड़के पर्गने लेने चाहे. जिसपर विक्रमी वैशाख [हि० ज़िल्क़ाद = .ई० मई] में उसकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ ऊपर लिखे दोनों पर्गनोंके २३१ गांव, जिनकी आमदनी २८८७२ रुपया सालानह थी, गवर्मेण्टकी तरफ़से उसको दियेगये. चान्दोरके नौ गांव जो हुल्करके क़ब्ज़हमें बाक़ी रहे थे, वे भी विक्रमी १९२२ आषाढ़ [हि० १२८२ मुहर्रम = .ई० १८६५ जून] में अंग्रेज़ी सर्कारको दे दिये गये. इन गांवोंकी या दूसरी जागीर वग़ैरहकी कुल आमदनी २९६१९ रुपया सालानह थी.

विक्रमी १९२४ आश्विन [हि० १२८४ जमादियुस्सानी = ई० १८६७ ऑक्टोबर] में हुल्करके दक्षिणी .इलाक़े व बलन्दशहरके ज़िलेकी जागीर वग़ैरहके एवज़ सर्कार अंग्रेज़ीसे नीमाड़, बड़वाय, धरगांव, खसरौद और मंडलेसरके पर्गने महाराजाको दिये गये, जिनमें १७६ गांव थे. बड़वायमें लोहेकी खान और बहुत बड़ा जंगल था, उसके एवज़ इन्दौर और नीमाड़के बीचकी किसीक़द्र राहदारी महाराजाने छोड़ दी; और बड़वायमें, जो लोहेका कारख़ानह था, वह ५०००० रुपया देकर ख़रीद लिया. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में जब छोटा खसरौदका जागीरदार बे औलाद मरगया, तो वह जागीर महाराजाको मिलगई.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रसे पहिले हुल्करको मालवा कंटिन्जेन्ट फ़ौज ख़र्चके लिये १११२१४ रुपया, और मालवा भील कोरके लिये ७८६२ रुपया सालियानह देना पड़ता था, लेकिन् कंटिन्जेन्ट फ़ौजने इसी वर्षमें बग़ावत की, जिससे वह मौकूफ़ करदी गई, और भील कोर बहाल रही, जिसके ख़र्चमें सर्कार अंग्रेज़ीको ९८२८ रुपया सालियानह देना पड़ता है. पाटन पर्गनेके .एवज़, जो सर्कारने हुल्करसे लेकर बूंदीको दिया, ३०००० रुपया सालियानह और प्रतापगढ़के ख़िराजकी बाबत ७२७०० रुपया सालिमशाही सालियानह सर्कार अंग्रेज़ी हुल्करको देती है. विक्रमी १९२२ [हि० १२८२ = ई० १८६५] में हुल्करने सर्कार अंग्रेज़ीको रेलवेके लिये बिदून एवज़ ज़मीन मए इख़्तियारात व राहदारी महसूलके देनेका इक़ार किया; और विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] में खंडवा व इन्दौरके बीचवाली रेल तय्यार होनेके वक्त एक करोड़ रुपया क़र्ज़के तौरपर दिया. विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में हुल्करने एक कारख़ानह तोप व बन्दूक़ वग़ैरह हथियार बनानेके लिये जारी किया. यह बात मालूम होनेपर सर्कार अंग्रेज़ीने उसे बिल्कुल मौकूफ़ करा दिया.

इन महाराजाको सर्कार अंग्रेज़ीने दत्तक लेनेकी सनद और जी० सी० एस० आइ० (G. C. S. I.) का ख़िताब दिया था, और रियासतकी १९ तोप सलामीके सिवा दो तोप इन महाराजाके लिये हीन हयात ज़ियादह कीगई थीं. यह कौंसिलके सलाहकार भी मुक़र्रर किये गये थे. विक्रमी १९४३ आषाढ़ कृष्ण १ [हि० १३०३ ता० १४ रमज़ान = ई० १८८६ ता० १७ जून] को प्रातःकालमें इन महाराजाका देहान्त होगया. इनके दो बेटे बड़े शिवाजीराव और छोटे जशवन्तराव हैं.

महाराजा तुकाजीराव हुल्कर बड़े होश्यार, चालाक और आमदनी बढ़ानेमें बहुत आक़िल और घमंडी भी थे; परन्तु अपना मत्लब निकालनेके लिये जैसा

मौक़ा देखते, बर्ताव करते थे. मैं (कविराजा श्यामलदास) भी इनसे तीन बार मिला, अव्वल दिल्लीके कैसरी दर्बारमें कैलास वासी महाराणा सज्जनसिंहके साथ; दूसरी बार चित्तौड़के स्टेशनपर तथा डेरोंमें, जब कि महाराजा शिमलेको जाते थे, और मैंने उक्त महाराणाकी तरफ़से उनकी मिह्मानीका बन्दोबस्त किया था. तीसरी दफ़ा जब मैं अपनी आंखका .इलाज करानेके लिये इन्दौर रेज़िडेन्सीके डॉक्टर कीगन साहिबके पास गया, तब महाराजाने मेरी बहुत ख़ातिर की थी, और मैं डेढ़ महीने तक इन्दौरकी छावनीमें रहा. वापस आते वक़ उनसे मिला था. इन तीनों मुलाक़ातोंमें कई घंटों तक मेरी उनकी बातें हुईं, जिसमें मेरे एक सवालके जवाबमें वे चार कलाम करते थे, और हर कलाम उनका मत्लबसे ख़ाली न था.

तुकाजीके बाद शिवाजीराव गद्दीपर बिठाये गये; यह पहिले इन्दौरके राजकुमार कॉलिजमें पढ़े थे, और इन्होंने अपने बापकी मौजूदगीमें राजपूतानह, उत्तरी हिन्दुस्तान, बंगाला और दक्षिणी हिन्दुस्तानकी सैर की थी. यह महाराजा विक्रमी १९४४ वैशाख [हि० १३०४ रजब = .ई० १८८७ एप्रिल] में ज्युबिलीके जल्सेपर इंग्लिस्तानको गये थे, और विक्रमी आशाढ़ कृष्ण १४ [हि० ता० २७ रमज़ान = .ई० ता० २० जून] को लण्डनके जल्सेमें शरीक हुए.

इस रियासतका क्षेत्रफल ८४०० मील मुरब्बा, और आबादी १०५४२३७ आदमियों की है. आमदनीके लिये डॉक्टर हण्टर अपने गज़ेटिअरकी सातवीं जिल्दके पहिले व सातवें एष्ठमें लिखते हैं, कि "विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = .ई० १८७५] में ४५९८०००) और विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = .ई० १८७८] में ५१२३०००) रुपया थी, लेकिन् विक्रमी १९३८- ३९ [हि० १२९८- ९९ = .ई० १८८१- ८२] में ७०७४४०० रुपया होगई." इस रियासतमें कुल फ़ौज ८८९० है, जिसमें ३१०० क़वाइद जाननेवाले पैदल, २१५० बे क़वाइदी, २१०० क़वाइद दां सवार और १२०० बग़ैर क़वाइद दां, और ३४० गोलन्दाज़ व चौबीस तोपें हैं. यहांकी फ़ौजमें अवध और पश्चिमोत्तर देशके आदमी ज़ियादह भरती होते हैं, और दो कम्पनी सिक्खोंकी हैं.

रियासत धार.

यहां वाले राजा पंवार ख़ानदानके हैं, जो क़दीम ज़मानहमें भी मालवेके नामवर राजा रहे थे. इस ख़ानदानका पुराना हाल प्रशस्ति, ताम्रपत्र वगैरह लेखोंसे इस तरह मालूम हुआ है, कि परमार वंशका राजा कृष्णराजदेव उज्जैनमें राज करता था, उस के बाद वैरिसिंह, सीयकदेव और वाक्पतिराज (१) हुए, और इनके बाद सिंधुराज, भोजराज, उदयादित्य, नर वर्मा, यशो वर्मा, अजय वर्मा, विन्द वर्मा, सुभट वर्मा और अर्जुन वर्मा उज्जैन तथा धारमें विक्रमी १२७२ के क़रीब तक राज्य करते रहे.

तारीख़ मालवामें मुन्शी करमअली लिखता है, कि जगदेव पंवारकी औलाद मालवा छोड़कर गुजरातमें पहुंची, लेकिन् दुश्मनोंने वहां भी उनको न रहने दिया, तब वे दक्षिणको चले गये, और ज़मींदारी वगैरहसे अपना गुज़ारा करने लगे. आख़िरकार

---

(१) "भोज प्रबन्ध" में लिखा है, कि राजा सिंधुल (सिंधुराज) ने मरते वक़ अपने पुत्र भोजके कम .उम्र होनेके कारण अपने भाई मुंजको राज्यका मालिक बनाकर भोजको उसे सौंपा; परन्तु यह मुंज उसका भाई न था, किन्तु उसके पिता वाक्पतिराजका ही दूसरा नाम होना संभव है. क्योंकि राजा भोजने विक्रमी १०७८ चैत्र शुक्ल १४ [हि० ४११ ता० १३ ज़िल्हिज = .ई० १०२१ ता० ३० मार्च] के एक ताम्रपत्रमें सीयकदेवके बाद वाक्पतिराज और उसके बाद सिंधुराज लिखकर फिर अपना नाम लिखा है, इससे सिन्धुलके बाद मुंज नामका कोई राजा होना नहीं पाया जाता.

"दशरूपावलोक" ग्रन्थमें मुंजका बनाया हुआ एक श्लोक लिखा है, और उसी श्लोकको दूसरी जगह वाक्पतिराजका बनाया हुआ लिखा है. इससे पाया जाता है, कि ये दोनों नाम एक ही राजाके हैं.

"पिंगल सूत्रवृत्ति" में हलायुधने मुंजकी तारीफ़में तीन श्लोक बनाये, जिनमेंसे पहिले दो श्लोकोंमें मुंज और एक श्लोकमें वाक्पति नाम लिखा है, इससे भी साबित होता है, कि वाक्पतिराज और मुंज नामका एक ही राजा था.

"सुभाषित रत्न सन्दोह" नामक ग्रन्थ जो एक जैनी यतिने विक्रमी १०५० पौष शुक्ल ५ [हि० ३८३ ता० ४ ज़िल्क़ाद = .ई० ९९३ ता० २१ डिसेम्बर] को बनाया, उसमें उसने लिखा है, कि इस ग्रन्थकी समाप्ति राजा मुंजके समयमें हुई. यदि यह राजा वाक्पतिराजसे अलग होता, तो भोज अपने ताम्रपत्रमें इसका नाम ज़ुरूर दर्ज करता. इस वास्ते भोज प्रबन्धका लेख सुबूतके क़ाबिल नहीं समझा जासक्ता.

एक ताम्रपत्रमें वाक्पतिराजका तीसरा नाम अमोघवर्ष भी होना लिखा है, जो विक्रमी १०३६ चैत्र कृष्ण ९ [हि० ३७९ ता० २३ शअ्बान .ई० ९८० ता० १२ मार्च] की मितीका इसी राजाके समयका है.

राजा शिवा घोंसलाके ज़मानहमें बया पंवारने उक्त राजासे सर्दारी हासिल की, और शिवाके मरने बाद शंभासे बहुतसी जागीरें व राजा रामसे विश्वासरावका ख़िताब पाया.

बयाके मरजाने बाद उसके दो बेटे १ कालू व २ शंभा बाक़ी रहे, जिनमेंसे कालूकी औलाद दक्षिणमें रही, और शंभा पंवारके तीन बेटे ऊदा, आनन्दराव और जगदेव हुए. इन तीनोंको शंभाके मरने बाद साहू राजाने बड़े बड़े उहदे देकर ऊदाको उसके बापके मुवाफ़िक़ विश्वासरावका ख़िताब दिया. आख़िरकार ऊदासे पेश्वाकी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई, इस सबबसे पेश्वाने आनन्दरावको अपनी तरफ़ मिलाकर धारका मुल्क उसको जागीरमें देदिया. मरहटे सर्दारोंमें आनन्दराव बड़ा मश्हूर बहादुर था. जब वह विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई० १७४९] में मरगया, तो उसका बेटा जश्वन्तराव गद्दीपर बैठा, और वह भी विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में पानीपतकी लड़ाईमें मारा गया. इसके बाद उसका कम उम्र लड़का खण्डेराव धारकी गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १८३६ [हि० ११९३ = ई० १७७९] में उसका इन्तिक़ाल होनेपर उसका बेटा आनन्दराव, जो खण्डेरावकी मृत्युके छः महीने बाद पैदा हुआ था, अपने ननिहालमें पर्वरिश पाकर सत्तरह वर्षकी उम्रमें धारकी गद्दीका मालिक बना, और विक्रमी १८६४ [हि० १२२२ = ई० १८०७] में मरगया. इसका देहान्त होने बाद रामचन्द्र-राव नामका एक लड़का पैदा हुआ, जिसकी कम उम्रीके सबब राज्यका इन्तिज़ाम आनन्दरावकी विधवा मीनाबाई करती रही. परन्तु जब यह लड़का (रामचन्द्रराव) भी मरगया, तो मीनाबाईने अपनी बहिनके बेटेको गोद लेकर उसका नाम रामचन्द्र रक्खा.

अंग्रेज़ोंका मालवेपर क़बज़ह होनेसे पहिले इस रियासतको सेंधिया व हुल्करने लूट मार करके बहुत कुछ बर्बाद किया. लेकिन् विक्रमी १८७५ पौष शुक्ल १४ [हि० १२३४ ता० १२ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १८१९ ता० १० जैन्युअरी] को महाराजा और सर्कार अंग्रेज़ी के दर्मियान एक अ़हदनामह क़रार पाया, जिसके अनुसार यह रियासत अंग्रेज़ी हिफ़ाज़त में आई; और बहुतसे ज़िले जो इस रियासतसे निकल गये थे, महाराजाको वापस दिलाये गये. रियासत धारने बांसवाड़ा और डूंगरपुरमें जो अपना हक़ था वह और दो लाख पचास हज़ार रुपया क़र्ज़ अदा करनेको पांच वर्षके वास्ते पर्गनह बेरस्या सर्कार अंग्रेज़ीको सौंप दिया; लेकिन् विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में एक दूसरा अ़हदनामह हुआ, जिसके मुताबिक़ रियासत धारने बेरस्याके पर्गने व आलिमोहनका ख़िराज सर्कार अंग्रेज़ीको देदिया. विक्रमी १८८८ [हि० १२४६ = ई० १८३१] में यह पर्गनह सर्कार अंग्रेज़ीने धारको वापस दिया.

विक्रमी १८८९ [हि० १२४७ = ई० १८३२] में रामचन्द्रराव मरगया, तब जशवन्तराव गोद लिया जाकर विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में गद्दीपर बिठाया गया. इससे बेरस्याके पर्गनेका कुछ बन्दोबस्त न हुआ, तब सर्कार अंग्रेज़ीने विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में उसे फिर अपने क़बज़हमें लेलिया. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] में जशवन्तरावका देहान्त हुआ, और उसका छोटा भाई आनन्दराव जो विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] में पैदा हुआ था, गद्दीपर बैठा. इसी वर्ष राजाकी कम उम्रीके सबब रियासतमें बल्वा हुआ, जिसका नतीजह यह निकला, कि गवर्मेएट अंग्रेज़ीने राज्य ज़ब्त करलिया; लेकिन् कुछ अरसे बाद बेरस्याके पर्गनेके सिवा, जो भोपालको दिया गया, बाक़ी राज्य आनन्दराव पंवारको वापस देदिया, और इन्तिज़ाम अपनी निगरानीमें रक्खा.

विक्रमी १९२१ [हि० १२८० = ई० १८६४] में राजाको मुल्की इख्तियारात मिले. गोद लेनेकी सनद इनको पहिले ही मिल चुकी थी. इस राजाने रेलवे लाइनके लिये सर्कारको ज़मीन दी, और के० सी० एस० आइ० (K. C. S. I.) का ख़िताब पाया.

इस रियासतका क्षेत्रफल १७४० मील मुरब्बा, आबादी १४९२४४ आदमी, और आमदनी (१) ७४३१२० रुपया है, जिसमेंसे १९६५० रुपया सालानह मालवा भील कोरके लिये दियाजाता है. फ़ौजमें २७६ सवार, ८०० पैदल, २ तोप और २१ गोलन्दाज़ हैं. रियासतकी सलामी १५ तोप सर्कार अंग्रेज़ीसे मुक़र्रर है.

रियासत देवास,

इस रियासतके रईस पंवार ख़ानदानमेंसे हैं. बया पंवारके दो बेटे १- कालू, और २- शंभा थे, जैसा कि धारकी तवारीख़में बयान होचुका है; उनमेंसे शंभाकी औलादमें धारके राजा और कालूकी नस्लमें देवासवाले हैं. कालूके चार बेटे १- कृष्णाराव, २- तुकाराव, ३- जीवाराव, और ४- मानाराव थे. कालूके मरनेपर

(१) एचिसन साहिबकी ट्रीटीकी तीसरी जिल्दमें ४३७०००) रुपया सालानह आमदनी लिखी है, और जो ऊपर दर्ज हुई, वह डॉक्टर हण्टरके गज़ेटिअरकी चौथी जिल्दसे लीगई है.

कृष्णाराव, अपने बापकी जगह सोपाका मालिक हुआ, तुकारावने कनी गांव पाया, जीवाराव मेगनीका मालिक बना और मानारावको पाथरी मिली. इनमेंसे तुका व जीवा दोनों पेश्वाके मातहत सर्दारों में रहे. जब बाजीराव पेश्वा मालवाके मुल्कका मुरूतार बना, तो ख़र्चके लिये देवास, सारंगपुर, आलोट, कर्कछ, रंगनोद, वग़ैरह चौदह पर्गने दोनों भाइयोंको जागीरमें मिले. ये दोनों ख़ास देवासमें रहते थे, और आमदनीको, जो इन पर्गनोंसे मिलती, आधी आधी बांट लेते थे. इन दोनों भाइयोंकी औलादसे एक शहर देवासमें दो रियासतें क़ाइम होगई.

तुकारावका बेटा कृष्णाराव और उसके दूसरा तुकाराव, और उधर जीवारावके सदाशिवराव, और उसके आनन्दराव हुआ. इस रियासतको भी हुल्कर और सेंधियाने धारकी तरह तबाह किया, और बढ़ने न दिया. जब तुकाराव दूसरे और आनन्दरावका विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = .ई० १८१८] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ अह्दनामह हुआ, तो माल्कम साहिबने दोनों रईसोंके लिये एक ही दीवान मुक़र्रर किया.

दूसरे तुकारावके बाद रुक्मांगद उर्फ़ ख़ासह बाबा, और उनके पीछे कृष्णाराव बाबा साहिब मालिक हुए, जो अब मौजूद हैं. दूसरे आनन्दरावके हैबतराव और उनके वारिस नारायणराव दादा साहिब हैं. अब्री मेके साहिबके बयान व तारीख़ मालवासे एक शाख़्के कुर्सी नामहमें फ़र्क़ मालूम होता है. अब्री मेके की किताबमें लिखा है, कि तुकारावका भाई जीवाराव, उसका बेटा आनन्दराव, जिसका पुत्र हैबतराव, उसका दूसरा आनन्दराव फिर दूसरा हैबतराव और उसका नारायणराव हुआ. जो एचिसन्की किताबसे भी मिलता है.

कृष्णारावके गद्दीपर बैठने बाद राज्यका काम इनकी माताने चलाया, लेकिन् क़र्ज़ और बद इन्तिज़ामी बढ़ती गई. विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में रईसका ख़र्च मुक़र्रर करके इन्तिज़ामके लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तरफ़से एक देशी सुपरिन्टेन्डेन्ट मुक़र्रर किया गया. विक्रमी १९२१ [हि० १२८० = .ई० १८६४] में दूसरे हिस्सहदार हैबतरावका इन्तिक़ाल हुआ, और उसका छोटा बच्चा नारायणराव गद्दीपर बैठा, जो विक्रमी १९१७ [हि० १२७६ = .ई० १८६०] में पैदा हुआ था. इसके बचपनमें राज्यका प्रबन्ध गोविन्दराव रामचन्द्र कामदारके हाथमें रहा और निगरानी एजेण्ट गवर्नर जेनरल सेन्ट्रल इन्डिया की थी.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] के ग़द्रमें ये दोनों हिस्सह-

दार गवर्मेएटके ख़ैरख़्वाह रहे, इसलिये अंग्रेज़ी सर्कारने इनको कन्टिन्जेएट फ़ौज ख़र्चमेंसे २७३६० रुपया छोड़ दिया और दत्तक लेनेकी सनद दी. इन दोनों रईसोंमेंसे हर एककी सलामी पन्द्रह तोप मुक़र्रर है. देवासका क्षेत्रफल २८९ मील मुरब्बा, आबादी १४२१६२ आदमी, और ४५५ गांव हैं. एचिसन् साहिबने दोनों रईसोंकी आमदनी ४२५००० रुपया सालियानह लिखी है.

——×——

रियासत बड़ौदा.

——×——

इस रियासतका इतिहास बम्बई गज़ेटिअरकी सातवीं जिल्दमें बहुत तूल तवील लिखा है, और एचिसन् साहिब व डॉक्टर हन्टर, तथा अग्री मेकेने अपनी किताबोंमें मुख़्तसर तौरपर बयान किया है, इसलिये हम भी उक्त तीनों मुवर्रिख़ोंकी किताबोंसे ज़ुरूरी हालात चुनकर यहांपर दर्ज करते हैं:-

इस मरहटी रियासतका मूल पुरुष कैरोराव था, जिसके तीन बेटे १- जींगो, २-दामा, और ३- हरजी थे. इनमेंसे दामाराव गायकवाड़ सितारके महाराजा साहू छत्रपतिके बड़े सर्दारोंमें था.

विक्रमी १७७७-७८ [हि० ११३२-३३ = ई० १७२०- २१]में दामाकी मातहत फ़ौजने गुजरातको लूटा, तो उसे दूसरे दरजेका सेनापति बनाकर शम्शेर बहादुरका ख़िताब दिया गया. दामाके बाद जींगोका बेटा पीला गायकवाड़ मुख़्तार बना. इसको "सेना ख़ास ख़ैल" का ख़िताब मिला. इस वक़ पश्चिमी हिन्दुस्तानमें बड़ी अब्तरी फैल रही थी, सितारके अस्ली राजाके नौकर ख़ुद मुख़्तारीकी कोशिश करते थे. पीला गायकवाड़को विक्रमी १७८८ [हि० ११४३ = ई० १७३१] में जोधपुरके महाराजा अभयसिंह, गुजरातके बादशाही सूबहदारने मरवाडाला. यह काम पेशवाकी मिलावटसे हुआ. इसकी जगह इसका बेटा दूसरा दामा गायकवाड़ मुक़र्रर हुआ, जिसको विक्रमी १७८९ [हि० ११४४ = ई० १७३२] में साहू राजाने अव्वल दरजहका सेनापति बनाया. जब अहमदाबादकी हुकूमत दिल्लीकी मातहतीसे निकल गई, तब विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = ई० १७५५] में

दामा गायकवाड़ और पेश्वाने इस मुल्कको तक्सीम करलिया. दामा पेश्वा को ख़िराज देता रहा.

विक्रमी १८२५ [हि० ११८१ = ई० १७६८] में (१) दामा मरगया. इसके चार बेटे, १- सीया, २- गोविन्दराव ३- फ़त्हसिंह, और ४- माना थे. पेश्वाने गायकवाड़की ताक़त तोड़नेके लिये सीयाको, जो पागल था, मुख़्तार बनाया, और उसके भाई फ़त्हसिंहको प्रबन्ध कर्त्ता नियत किया, लेकिन् वह महलके झरोखेसे गिरकर विक्रमी १८४६ पौष शुक्ल ५ [हि० १२०४ ता० ३ रबीउ़स्सानी = ई० १७८९ ता० २१ डिसेम्बर] को मरगया, और मानाराव मुख़्तार हुआ. विक्रमी १८५० श्रावण कृष्ण १० [हि० १२०७ ता० २३ ज़िल्हिज = ई० १७९३ ता० १ ऑगस्ट] को मानाका इन्तिक़ाल हुआ. इससे थोड़े दिन पेश्तर सीया भी मरगया था, इसलिये गोविन्दराव मालिक बना, जिसके विक्रमी १८५७ आश्विन [हि० १२१५ रबीउ़स्सानी = ई० १८०० सेप्टेम्बर] में मरने बाद उसका बेटा आनन्दराव गद्दीपर बैठा. परन्तु वह कम अ़क्ल था, इसलिये उसके भाई कान्हाने, जो गोविन्दरावकी पासबानसे था, गोविन्दरावके रिश्तहदार मल्हारराव गायकवाड़की मददसे राज्य छीन लिया. इसपर गवर्मेंट अंग्रेज़ीने मल्हाररावको बम्बई व कान्हाको मदरास भेजदिया, और आनन्दरावके साथ विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में पहिला व विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = ई० १८०५] में दूसरा अ़ह्दनामह किया, जिसके मुताबिक़ एक कन्टिन्जेण्ट फ़ौज मुक़र्रर कीजाकर उसमें तीन हज़ार सिपाही और एक तोपख़ानह रक्खा गया.

विक्रमी १८७६ आश्विन शुक्ल १४ [हि० १२३४ ता० १२ ज़िल्हिज = ई० १८१९ ता० २ ऑक्टोबर] को आनन्दराव मरगया, और उसका भाई सीयाराव दूसरा गद्दीपर बैठा. इसकी बद चलनी व बेवक़ूफ़ीके सबब सर्कार अंग्रेज़ीने धमकी दिखलाने को पेटलादका इ़लाक़ह लेलिया. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में सीयाराव मरगया; जिसके बाद इसका बेटा गणपतराव राज्यका मालिक बना, जो विक्रमी १९१३ मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० १२७३ ता० २० रबीउ़ल्अव्वल = ई० १८५६ ता० १९ नोवेम्बर] को मरगया. इसके कोई लड़का न था, इसलिये इसका छोटा भाई खण्डेराव विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि० ता० १३ रबीउ़स्सानी = ई० ता० १२ डिसेम्बर] को गद्दीपर बैठा. इसने ग़द्रके वक़्त सर्कार अंग्रेज़ीके साथ ख़ैरख़्वाही ज़ाहिर की, इस वास्ते सर्कारसे तीन लाख रुपया सालानह उसको छोड़ दिया गया, जो कन्टिन्जेण्ट फ़ौज ख़र्चके लिये उससे लियाजाता था. विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२]

(१) गुजरात राजस्थानमें दामाका मरना ईसवी १७७२ [वि० १८२९ = हि० ११८६] में लिखा है.

में उसे दत्तक लेनेकी सनद मिली, और जी० सी० एस० आइ० का ख़िताब भी हासिल हुआ.

वह विक्रमी १९२७ मार्गशीर्ष शुक्ल ६ [हि० १२८७ ता० ४ रमज़ान = .ई० १८७० ता० २८ नोवेम्बर] को लावलद मरगया, और उसका छोटा भाई मलहारराव गायकवाड़ गद्दीपर बैठा. इसका इन्तिज़ाम बहुत ख़राब था, इस सबबसे गवर्मेंट अंग्रेज़ीने उसको अठारह महीनेके अन्दर इन्तिज़ाम करनेका हुक्म दिया. परन्तु उसने इन्तिज़ामकी दुरुस्तीके एवज़ इसी मीआदके अन्दर विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] में रेज़िडेएटको ज़हर देनेकी कोशिश की, जिसकी तह्क़ीक़ातके लिये कमिशन मुक़र्रर हुई. इस कमिशनमें जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंह, ग्वालियरके महाराजा जियाराव सेंधिया, राजा सर दिनकरराव (जो पहिले ग्वालियरका दीवान था), सर रिचर्ड मीड तथा मिस्टर पी० एस० मेल्विल मेम्बर और बंगालके चीफ़ जस्टिस सर रिचर्ड काउच प्रेसिडेएट नियत हुए; लेकिन् कमिशनकी रायमें इख़्तिलाफ़ रहा, याने हिन्दुस्तानियोंने उसको बेक़ुसूर और यूरोपिअन अफ़्सरोंने क़ुसूरवार ठहराया, तब गवर्मेंटने कमिशनकी रायको छोड़कर ख़ुद यह फ़ैसलह किया, कि इसके इन्तिज़ाममें कई तरह ख़लल है, इसवास्ते गद्दीसे ख़ारिज करदिया जावे. विक्रमी १९३२ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १२९२ ता० १२ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८७५ ता० १९ एप्रिल] को मलहारराव गद्दीसे ख़ारिज किया गया, और तीन दिन बाद याने २२ एप्रिल को राज क़ैदी बनाया जाकर मदरास भेजा गया.

इसके बाद सर्कार अंग्रेज़ीसे खण्डेरावकी विधवा जमुनाबाईको दत्तक लेनेका अधिकार मिला. जिसपर उसने पीला गायकवाड़के ख़ानदानमेंसे गोपालराव नामका एक लड़का चुना, और उसको विक्रमी १९३२ ज्येष्ठ कृष्ण ७ [हि० १२९२ ता० २१ रबीउ़स्सानी = ई० १८७५ ता० २७ मई] को गद्दीपर बिठाकर सीयाराव गायकवाड़के नामसे प्रसिद्ध किया. इसकी कम उ़म्रीके समय सर टी० माधवराव दीवान बनाया गया, जो एजेएट गवर्नर जेनरलकी रायसे काम करता रहा. विक्रमी १९३४ माघ कृष्ण २ [हि० १२९३ ता० १५ ज़िल्हिज = ई० १८७७ ता० १ जैन्युअरी] को यह महाराजा दिल्लीके क़ैसरी दर्बारमें गये, जहांपर उनको होश्यारी, इ़ल्मी लियाक़त, और बुद्धिमानीके सबब "फ़र्ज़न्द ख़ास दौलत इंग्लिश्यह" का ख़िताब मिला, और तीन वर्ष पीछे तन्जावरके ख़ानदानमें विक्रमी १९३७ [हि० १२९७ = .ई० १८८०] में इनकी शादी हुई. इनको विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = .ई० १८८७] में ज्युबिलीके

जल्सेपर जी० सी० एस० आइ० (G. C. S. I.)का ख़िताब मिला. इसी वर्षमें वह अपनी महाराणी सहित विलायतकी सैरको गये थे.

बड़ौदेका क्षेत्रफल ८५७० मील मुरब्बा, बाशिन्दे २१८५००५, और आमदनी की तादाद एचिसन्ज़ ट्रीटीके मुवाफ़िक़ ११५००००० रुपया सालियानह है, और डॉक्टर हएटरने अपने गजेटिअरकी दूसरी जिल्द में १११८२३२० रुपया लिखा है. बम्बई गजेटिअरकी सातवीं जिल्द में एफ़० ए० एच० इलियटने १३९९१४४५ रुपया दर्ज किया है. इस रियासतकी सलामी गवर्मेएट अंग्रेज़ीसे २१ तोप मुक़र्रर है. फ़ौजमें २ बाटरी तोपख़ानह, १५४ गोलन्दाज़, ४२ तोप, जिनमें दो सोनेकी और दो चांदी की हैं; रिसालेमें सवारोंके अलावह २४७ अफ़्सर, छः रेजिमेन्ट पैदलोंकी, कुल तीन हज़ार सोलह क़वाइद जाननेवाले, और ४४१० सवार और १८२७ पैदल बेक़वाइदी हैं; क़वाइद जाननेवाली फ़ौजका ख़र्च साढ़े सात लाख और बेक़वाइदका अट्ठाईस लाख रुपया सालियानह है.

टोंककी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह.

रियासत टोंक मुल्क राजपूतानहमें एक दर्मियानी दरजेकी मुसल्मानी रियासत है. उसके छः पर्गनों टोंक, रामपुरा, नीबाहेड़ा, सरोंज, छपरा और पड़ावामेंसे पहिले तीन पर्गने ख़ास राजपूतानहके अन्दर वाक़े हैं; और बाक़ी मुल्क मालवाकी सर्हदपर उसकी रियासतोंसे घिरे हुए अलहदह अलहदह हैं, इसलिये इस रियासत की हद्दें एक जगह बयान नहीं हो सक्तीं. टोंक और रामपुरा शहर जयपुरसे दक्षिणी तरफ़ राज्य जयपुरसे घिरे हुए हैं; नीबाहेड़ा राज्य मेवाड़ और .इलाक़ह सेंधियासे घिरा हुआ है; सरोंज मालवाके अन्दर .इलाक़ह सेंधिया, भोपाल और ज़िले सागरसे

घिरा हुआ है; छपरा मुल्क मालवाकी सर्हदपर कोटा, झालरापाटन और सेंधियाके .इलाक़हसे घिरा हुआ है; और पड़ावाके गिर्द झालरापाटन, सेंधिया तथा हुल्करका .इलाक़ह फैला हुआ है.

टौंकके मातहत हर पर्गनहकी ज़मीन उम्दह और ज़रखेज़ है; और बनास नदी ख़ास टौंकके पास गुज़रकर बड़ी सर्सब्ज़ीका ज़रीअह हुई है. इस रियासतमें कुल गांव एक हज़ार एक सौ तेंतालीस हैं. कुल रक़बह २५०९ मील मुरब्बा, आबादी ३३८०२९ आदमी, आमदनी १२८५२६० रुपया सालानह और फ़ौज सवार व पैदल चार हज़ारके क़रीब है. इस रियासतकी सलामी सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से सत्तरह तोपकी मुक़र्रर है.

ख़ास शहर टौंक एक नीची पहाड़ीके पास आबाद है, जिसकी निस्बत रिवायत है, कि विक्रमी १००३ माघ कृष्ण १३ [हि० ३३५ ता० २७ जमादियुल्अव्वल = .ई० ९४६ ता० २४ डिसेम्बर] को दिल्लीके राजा खनवादके एक मातहत हाकिम रामसिंहने एक गांव बसाकर उसका नाम टौंक रक्खा था, और उस आबादीको अबतक कोट कहते हैं. विक्रमी १३३७ माघ शुक्ल ५ [हि० ६७९ ता० ४ शव्वाल = .ई० १२८१ ता० २७ जैन्युअरी] को अलाउद्दीन खिल्जीने इस गांवको दोबारह रौनक़ दी. विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = .ई० १८०६] में टौंकपर नव्वाब अमीरख़ांका क़बज़ह हुआ, उन्होंने आबादीसे एक माइल दक्षिणी तरफ़ अपने रहनेके मकान, कारख़ाने और दफ़्तर क़ाइम किये, और उनके बाद बराबर आबादीने तरक़्क़ी पाई, जिससे वह एक छोटेसे शहरका नमूनह बनगई. टौंकमें विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = .ई० १८७१] से मद्रसेकी और विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = .ई० १८७२] से शिफ़ाख़ानहकी बुन्याद क़ाइम हुई. मौजूद नव्वाबके वक़्तमें छापाख़ानह भी जारी हुआ है, जिससे एक उर्दू अख़्बार "सफ़ीरि टौंक" नाम हफ़्तहवार छपकर निकलता है.

क़स्बह रामपुरा एक मज़्बूत पक्की शहरपनाहके अन्दर आबाद है; इस पर्गनहकी ज़मीन अक्सर बराबर है, और कहीं कहीं छोटी पहाड़ियां पाई जाती हैं. क़स्बह नीवाहेड़ाके गिर्द भी पुख़्तह हल्की शहरपनाह मौजूद है. विक्रमी १८७७ [हि० १२३५ = .ई० १८२०] में टॉड साहिबने उक्त क़स्बेको देखकर उसकी बहुत तारीफ़ लिखी है, और वह अबतक बाहरसे बहुत ख़ूबसूरत मालूम होता है, इस पर्गनहकी ज़मीन अक्सर जगह काली और चिकनी है, जिसमें अफ़्यून ख़ूब पैदा होती है, अक्सर मक़ामातपर नीची पहाड़ियां भी मौजूद हैं, और घास पैदा होती

है. पर्गनह पड़ावाकी ज़मीन और हालत नीबाहेड़ाके पर्गनहसे बिल्कुल मिलती हुई पाई जाती है.

पर्गनह सरोंज मालवाके अन्दर सबसे बिह्तर मक़ाम है. यहांपर छोटी नदियां अक्सर जारी रहती हैं. आंब, महुवा, इमली, बड़ और पीपल वगैरहके बड़े दरख़्तोंसे इलाक़हमें रौनक़ नज़र आती है, और आम खेतीकी पैदावार भी अच्छी होती है. सरोंजकी आबादी पुराने ज़मानहमें बहुत ज़ियादह थी, मगर अब हाकिमोंकी बे पर्वाईसे बहुत कम होगई है. शहर सरोंजके पश्चिममें एक क़िला, और दक्षिणमें उम्दह पानीका एक तालाब है. यह पर्गनह महाराजा जशवन्तराव हुल्करने नव्वाब अमीरख़ांको फ़ौज ख़र्चके लिये दिया था. पर्गनह छपराकी ज़मीन बराबर, काली और चिकनी है; उसकी पैदावार दर्मियानी क़िस्मकी है, और उसमें दरख़्त चीड़की लकड़ी कस्रतसे पैदा होती है.

राज्य प्रबन्धके लिये रियासत टौंकमें नव्वाबके मातहत एक कौन्सिल क़ाइम है, उसके बाद दीवानी और फ़ौज्दारीकी अ़दालतें हैं; और हर पर्गनहपर एक हाकिम रहता है, जिसको यहां आमिल कहा जाता है. हर आमिलके पास एक पेश्कार याने नाइब हाकिम और कई थानहदार मुक़र्रर रहते हैं. इस अ़मलेके सिवा इस रियासतको एजेंसियोंमें देवली, जयपुर, उदयपुर, आबू, इन्दौर, आगर और सीहोर वगैरह मक़ामातपर अपने वकील बाहिरी मुआ़मलातकी जवाबदिहीके लिये हाज़िर रखने पड़ते हैं. हर एक आमिलकी तन्ख़्वाह सौ रुपयेसे दो सौ रुपये तक और वकीलकी तन्ख़्वाह पचाससे सौ रुपये माहवारी तक अ़लावह सवारी ख़र्च वगैरहके होती है.
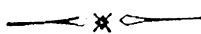
तवारीख़ टौंक.
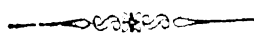
तवारीख़ी हाल इस रियासतका इस तरहपर है, कि अफ़्ग़ानिस्तानके ज़िले बुनेर मौज़े चूहड़से सालारज़ई क़ौमके एक पठान कालेख़ांका बेटा तालेख़ां, दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहके ज़मानहमें यहां (हिन्दुस्तानमें) आया, और शहर संभल ज़िले कठेहर मुहल्ला तरीना सरायमें रहने लगा, और चन्द लुटेरोंसे मिलकर लूट खसोटमें मश्गूल हुआ. कठेहर ज़िलेके एक सर्दार अ़ली मुहम्मदख़ांका, जिसकी औलादमें रामपुरके नव्वाब हैं, साथी हुआ; उसपर मुहम्मदशाह बादशाहने फ़ौज भेजी. लड़ाईमें यह शख़्स

बादशाही फ़ौजसे बनेगढ़ (विनयगढ़) में एक मकानके अन्दर घिर गया, लेकिन् कुछ अरसह बाद जान सलामत लेकर निकल गया.

जब तालेखां मरगया, तो उसका बेटा मुहम्मद हयातखां, बच्चा रहगया था; उसकी पर्वरिश अली मुहम्मदखांके बेटे दूंदेखांने अच्छी तरह की. दूंदेखांके मरने बाद मुहम्मद हयातखां अपने बापकी जगह तरीना सरायमें बे वसीले रहकर खेतीसे अपना गुज़ारह करने लगा. विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में उसके बेटे अमीरखांका जन्म हुआ. इससे पहिला हाल किताब अमीरनामहके मुसन्निफ़ सय्यद सईद अहमदने बहुत बढ़ावे, और तवालतसे लिखा है. अब बाक़ी हाल वक़ाये राजपूतानहसे लिखते हैं.

जब अमीरखां बीस वर्षकी उम्रका हुआ, तो अपने छोटे भाई करीमुद्दीन और दस दूसरे आदमियोंको लेकर मालवे गया, और मरहटी फ़ौजमें नौकर होगया. विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में अमीरखां छः सवार व साठ पियादोंका अफ्सर बनकर नव्वाब हयात मुहम्मदका नौकर हुआ; लेकिन् एक सालके बाद राघवगढ़के खीची राजा जयसिंह व दुर्जनशाल के पास नौकर हुआ, जिनको सेंधियाने राज्य छीनकर निकाल दिया था. इन राजपूतों के साथ अमीरखांने लूट मार करनेमें खूब नामवरी हासिल की. खीची सर्दारोंसे नाइत्तिफ़ाक़ी होनेके सबब उनकी नौकरी छोड़ दी, और बालाराम एंगलियाके पास नौकर होगया. इस मरहटे सर्दारने अमीरखांको फ़त्हगढ़का क़िला और नव्वाब ग़ौस मुहम्मदखांकी हिफ़ाज़त सुपुर्द की. मरहटोंके लौट जाने और मुराद मुहम्मद के मरजानेसे फ़त्हगढ़का क़िला छूट गया.

विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] में अमीरखां जशवन्तराव हुल्करका नौकर हुआ. इसके सर्दारोंमें अमीरखां अव्वल दरजेका अफ्सर समझा गया. अमीरखांको हुल्करकी तरफ़से बहुत बड़ा इख्तियार था, और बढ़ते बढ़ते इसकी फ़ौज भी बहुत बढ़गई थी. वक़ाये राजपूतानहका मुसन्निफ़ ज्वालासहाय लिखता है, कि विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = ई० १८०६] में उसके मातहत ३५००० आदमी और ११५ तोपें थीं. इस फ़ौजकी तन्ख्वाह वह लूट खसोटसे पूरी करता था. हुल्करने उसे इस फ़ौज खर्चके लिये ऊपर लिखे हुए छः पर्गने दिये, लेकिन् इस जागीरसे फ़ौज की तन्ख्वाहका पूरा नहीं पड़ता था, अमीरखांको सिपाही लोग बहुत तंग करते, यहां तक कि उसको कभी कभी तोपके मुंहपर बांध देते थे, तब वह राजाओं और रियासतोंपर सख्तियां करता. उसकी मातहत फ़ौजको सिपाहियोंकी सेना नहीं बल्कि लुटेरोंका दल कहना

चाहिये. जशवन्तराव हुल्करने अमीरख़ांको नव्वाबका ख़िताब देकर उसको बड़गूंदाकी छावनीसे पूर्वकी तरफ़ रवानह किया, तब उसने एक लाख रुपया देवासके राजासे और कुछ ख़र्च आगरको लूटकर वुसूल किया; फिर वह बेरस्या, सागर और सरोंजकी तरफ़ गया. जिधर निकला, उधर बर्साती नालेकी तरह मुल्कको बर्बाद करता चला. उस वक़्त सागरमें पेश्वाकी अमलदारी थी; विनायकरावने उस शहरको कुछ दिनोंतक तो बचाया, लेकिन् अख़ीरमें अमीरख़ांने छापा मारकर लेलिया, और एक महीनेतक उसको ख़ूब लूटा; इसने शहरको लूटनेपर ही सब्र न किया, बल्कि जबतक लूट रही हमेशह उसको जलाता रहा. इस वक़्त विनायकरावकी फ़ौजके सिपाही तथा शहरके बाशिन्दे मिलाकर चार सौ या पांच सौ आदमी मारे गये, और शहर बिल्कुल बर्बाद होगया. जब विनायक-राव नागपुरके राजासे फ़ौजी मदद लेकर आ पहुंचा, तो अमीरख़ां भी थोड़ेसे सिपाहियोंसे मुक़ाबलेको तय्यार हुआ, लेकिन् इसी मौक़ेपर घोड़ेसे गिरजानेके सबब उसके सख़्त चोट लगी; और उसकी फ़ौजने भी उसका साथ छोड़ दिया. तब वह राठगढ़ (१) की तरफ़ चला गया, जहांके हाकिम मुहम्मदख़ां और कोठीवाल मोहनलालको लूटकर आसूदह बना.

उसने अपने भाई करीमुद्दीनके कहनेपर अफ़्ग़ान अफ़्सरोंसे रुपया वुसूल करना चाहा, लेकिन् पठानोंने इन्कार करके रास्तह लिया, इसपर करीमुद्दीनने उनको कड़वाई मकामपर सज़ा दी. थोड़े ही दिनोंके बाद करीमुद्दीन शुजाअलपुरमें मारा गया. इस वक़्त जशवन्तराव हुल्कर अमीरख़ांसे नाराज़ होगया था, लेकिन् उसने उसे बहुत जल्द ख़ुश कर लिया. जब दौलतराव सेंधियाकी फ़ौजसे उज्जैनके पास जशवन्तराव हुल्करकी लड़ाई हुई, तो अमीरख़ांने पीछेसे हमलह करके सेंधियाकी फ़ौजको बर्बाद किया; परन्तु इसका बदला सेंधियाने इन्दौरको लूटकर बहुत जल्द ही लेलिया. अमीरख़ां हुल्करके साथ दक्षिणमें भी रहा, और वहांसे लौटने बाद उससे जुदा होकर राजपूतानहमें जयपुरके राजाका मददगार बना, और उक्त राजाके साथ जोधपुरपर घेरा डाला, फिर जगत्सिंहका दुश्मन व जोधपुरका दोस्त होकर जयपुरको लूटने लगा, और उदयपुरमें कृष्णकुंवर बाईको ज़हर दिलवाया; लेकिन् जोधपुरके राजाका भी इससे नाकमें दम आगया था, जो उसका दोस्त बना था. इस मुआमलेका किसी क़द्र हाल जयपुर व जोधपुरकी तवारीख़में लिखा गया है, और बाक़ी आगे लिखा जावेगा.

जब जशवन्तराव हुल्कर पागल होगया, और उसके गुलाम धर्माकुंवरने मुख़्तार बनकर हुल्करको मारना चाहा, तो उस समय अमीरख़ां आ पहुंचा; उसने धर्माको मारकर हुल्करको हिफ़ाज़तके साथ भानपुरमें भेजदिया. अगर्चि

(१) तारीख़ मालवामें राहतगढ़ लिखा है.

अमीरख़ांने अपने दोस्त व दुश्मनोंको तक्लीफ़ देनेके सिवा किसीको दोस्तीके लिहाज़से फ़ायदह नहीं पहुंचाया था, परन्तु जशवन्तराव हुल्करके साथ अल्बत्तह उसने अपनी दोस्तीका हक़ निभाया.

जब अंग्रेज़ लोगोंका अफ़्सर राजपूतानहमें आया, तो उस वक़ अमीरख़ांको कहा गया, कि लुटेरे लोगोंका गिरोह बर्ख़ास्त करदेवे, और सिवा ४० तोपोंके बाक़ी तोपख़ानह भी सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करे; हुल्करकी दी हुई जागीर उसके क़बज़हमें बहाल रहेगी. इसपर उसने इन शर्तोंको मान लिया. जब हुल्करकी दी हुई जागीर सर्कारसे बहाल रहनेका हुक्म होगया, तो इसने दूसरे राजपूत राजाओंसे जो ज़मीन मिली थी, उसका भी दावा किया, लेकिन् वह ना मन्जूर हुआ. विक्रमी १८७४ कार्तिक शुक्ल १ [हि० १२३२ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १८१७ ता० ९ नोवेम्बर] को सर्कार अंग्रेज़ीने नव्वाबके साथ एक अह्दनामह किया, और ३००००० रुपया, जो उसको क़र्ज़ दिया गया था, मुआफ़ करदिया. सर्कार अंग्रेज़ीने उसके बेटे वज़ीरुद्दौलहको पलवलका इलाक़ह जागीरमें हीन हयात दिया था, जिसके एवज़ १२५०० रुपया उसकी ज़िन्दगी तक मिलता रहा.

विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में (१) अमीरख़ांका इन्तिक़ाल हुआ; और उसका बेटा वज़ीर मुहम्मद, जिसको वज़ीरुद्दौलह भी कहते हैं, गद्दीपर बैठा. यह विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्र में सर्कार अंग्रेज़ीका ख़ैरख़्वाह रहा, इसलिये उसको गोद लेनेकी सनद मिली.

---

(१) अमीरख़ांकी औलाद नीचे लिखे मुवाफ़िक़ थीः- १ नव्वाब मुहम्मद वज़ीरख़ां (वज़ीरुद्दौलह), जो गद्दी नशीन हुआ; २ हाफ़िज़ मुहम्मद इबादुल्लाहख़ां, जिसके एक लड़का हुआ; ३ हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल्करीमख़ां, जिसके दो बेटे और छः बेटियां पैदा हुईं; ४ हाफ़िज़ मुहम्मद जमालख़ां, इसके ३ बेटे और तीन बेटियां हुईं; ५ मुहम्मद जलालख़ां, जिसके २ बेटे व ३ बेटियां हुईं; ६ अह्मद अलीख़ां, जिसके ३ बेटे और ३ बेटियां हुईं; ७ अह्मद यारख़ां, जिसके एक लड़का, और दो लड़कियां हुईं; ८ मुहम्मद बख़्त बलन्दख़ां, जिसके ५ बेटे और ४ बेटियां हुईं; ९ मुहम्मद मुनीरख़ां, जिसके दो बेटे और १ बेटी थी; १० अक्रमख़ां, जिसके १ बेटा व ५ बेटियां थीं; ११ मुहम्मद कमालख़ां; और १२ मुहम्मद हिदायतुल्लाहख़ां. बेटियोंमें १ हुक्म बीबी, जो करीमुल्लाहख़ांको ब्याही गई, जिसके १ बेटा और १ बेटी हुई; २ गुलथूना बेगम, गुलाम क़ादिरख़ांकी स्त्री, जिसके ३ बेटे और ४ बेटियां थीं; ३ गुल्शन बेगम, नादिरशाहकी स्त्री, जिसके १ बेटा और १ बेटी थी; ४ फ़ातिमह बेगम, इस्फ़न्दयारख़ांकी स्त्री, जिसके ५ बेटे और २ बेटियां थीं; ५ फ़ैज़ बेगम, अह्मद यारख़ांकी स्त्री, जिसके २ लड़के और १ लड़की थी; ६ उम्दह बेगम, अली मुहम्मदख़ांकी स्त्री; ७ अशरफ़ बेगम, अमीर शेरख़ांकी स्त्री, जिसके ३ लड़के और २ लड़कियां थीं; ८ रहमत बेगम, क़ासिम अलीख़ांकी स्त्री, जिसके ३ लड़के और १ लड़की थी; और ९ बशारत बेगम, इब्राहीम अलीख़ांकी स्त्री, जिसके २ बेटे और तीन बेटियां हुईं.

यह विक्रमी १९२१ ज्येष्ठ शुक्ल १४ [हि० १२८१ ता० १३ मुहर्रम = ई० १८६४ ता० १८ जून] को मरगया.

वज़ीरुद्दौलह मज़्हब मुहम्मदीके बड़े पाबन्द और बड़े फ़य्याज़ थे; उनके बाद उनके बेटे नव्वाब मुहम्मद अलीख़ां गद्दीपर बैठे. इन्होंने विक्रमी १९२२ [हि० १२८२ = ई० १८६५] में लावहपर फ़ौज भेजी, जो नरूका राजपूतोंकी जागीरमें है; नव्वाबकी फ़ौजसे यह क़िला ख़ाली न हुआ, कुछ दिनोंतक लड़ाई रही; आख़िर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने फ़ैसलह करके फ़ौजको लावहसे हटा दिया. इस बातपर नव्वाबने ज़ियादह गुस्सेमें आकर लावहके जागीरदार धीरतसिंहको मए उसके चचा रेवतसिंहके तसल्ली देकर टौंकमें बुलाया, और विक्रमी १९२४ श्रावण शुक्ल १ [हि० १२८४ ता० २९ रबीउ़ल्‌अव्वल = ई० १८६७ ता० १ ऑगस्ट] की रातके ९ बजे जागीरदारके चचा रेवतसिंहको वज़ीरने तलब किया. वह मए अपने बेटे, दो काम्दार और १४ दूसरे साथवालोंके वहां गया. नव्वाबने इन सबको दग़ासे क़त्ल करवा दिया, सिर्फ़ १ आदमी हम्राहियोंमेंसे जान बचाकर भागा. और इसी वक़ उस मकान को भी, जिसमें ठाकुर धीरतसिंह उतरा था, फ़ौजने घेर लिया. विक्रमी श्रावण शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रबीउ़स्सानी = ई० ता० ८ ऑगस्ट] को एक अंग्रेज़ी अफ़्सरने आकर ठाकुर लावहको वतन जानेकी रुख़्सत दिलाई. इस क़ुसूरमें नव्वाब मुहम्मद अलीख़ां गद्दीसे ख़ारिज और उसके वज़ीर हकीम सर्वरशाहको क़ैद किया गया; और रियासतकी सलामी १७तोपसे ११ की जाकर गद्दीसे ख़ारिज किया हुआ रईस मुहम्मद-अलीख़ां बनारस भेजदिया गया. इसकी बाबत एक इश्तिहार भी विक्रमी १९२४ मार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि० १२८४ ता० १६ रजब = ई० १८६७ ता० १४ नोवेम्बर] को गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे जारी हुआ, और नव्वाब मुहम्मद अलीख़ांके गुज़ारेके वास्ते रियासतसे ६००००) रुपया सालानह पेन्शन मुक़र्रर हुई. लावहका जागीरदार रियासत टौंकसे जुदा किया जाकर एजेण्टी देवलीका मातहत बनाया गया.

विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में मुहम्मद अलीख़ांका बेटा मुहम्मद इब्राहीम अलीख़ां गद्दीपर बिठाया गया, और रियासतका प्रबन्ध साहिबज़ादह इबादुल्लाहख़ांके सुपुर्द हुआ. इन्तिज़ामके लिये एक कौन्सिल मुक़र्रर की गई, जिसमें एक अंग्रेज़ी अफ़्सर भी शरीक रहा. विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में नव्वाब इब्राहीम अलीख़ांको पूरा इख़्तियार मिला, जो अब रियासतकी हुकूमत करते हैं. विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७७] के क़ैसरी दर्बारमें नव्वाबकी सलामी १७ तोप बहाल होगई; और विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = ई० १८८७]

में रईसके मातहत एक कौन्सिल काइम की गई, जिसका वाइस प्रेसिडेण्ट साहिब-ज़ादह उबैदुल्लाहखां सी० एस० आइ० है.

टौंकका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब, जिल्द ३, हिस्सह पहिला.

अह्दनामह नम्बर ६२.

अह्दनामह, जो ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी और नव्वाब अमीरुद्दौलह मुहम्मद अमीरखांके दर्मियान, ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल मार्क्विस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़ के० जी०, गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारातके मुवाफ़िक़ मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेट्कॉफ़, और नव्वाबके दिये हुए इख्तियारातके अनुसार लाला निरंजनलालकी मारिफ़त क़रार पाया.

शर्त पहिली- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी वादह करती है, कि नव्वाब अमीरखां और उसके वारिसोंको हमेशहके लिये वे मक़ामात दिये जायेंगे, जो उसको महाराजा हुल्करने अपने इलाक़हमें दिये हैं, और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी उन मक़ामातको अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी.

शर्त दूसरी- नव्वाब अपनी फ़ौजको सिवा उतनी फ़ौजके, जो इलाक़हके प्रबन्धके वास्ते ज़रूरी समझी जावेगी, मौकूफ़ करदेंगे.

शर्त तीसरी- नव्वाब अमीरखां किसी मुल्कपर धावा या लूट मार नहीं करेंगे, और वह पिंडारों व दूसरे डाकुओंकी दोस्ती और इत्तिफ़ाक़को छोड़ देंगे; और सिवा इसके वह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके इत्तिफ़ाक़से ऐसे लोगोंके सज़ा देने तथा दबानेमें कोशिश करेंगे, और किसी शरूससे गवर्मेण्टकी इजाज़त व रज़ामन्दीके बिना मिलावट न करेंगे.

शर्त चौथी- नव्वाब अमीरखां अपना कुल लड़ाईका सामान, सिवा उस क़द्र सामानके, जो उनके इलाक़ह और क़िलोंके इन्तिज़ामके वास्ते ज़रूरी समझा जायेगा, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको देदेंगे, और उसके एवज़ उनको सर्कारसे रुपया दिया जायेगा.

शर्त पांचवीं- जो फ़ौज नव्वाब अमीरखां अपने पास रक्खेंगे, वह ज़रूरतके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी गवर्मेण्टके साथ रहेगी.

शर्त छठी - यह अ़हदनामह छः शर्तोंका दिल्ली मक़ामपर तै पाकर, उसपर मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेट्कॉफ़ और लाला निरंजनलालके मुहर व दस्तख़त हुए. नक़्ल इसकी हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरल और नव्वाब अमीरख़ांकी तस्दीक़ की हुई मक़ाम दिल्लीमें तारीख़ ९ नोवेम्बर सन् १८१७ .ई० से एक महीनेके अन्दर एक दूसरेको दी जावेगी.

(दस्तख़त)- सी० टी० मेट्कॉफ़. (दस्तख़त)- हेस्टिंग्ज़. | मुहर. |

नव्वाबकी मुहर.		मुहर लाला निरंजनलाल.

मुहर कम्पनी.

इस अ़हदनामहको हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने मक़ाम कैम्प सलियापर ता० १५ नोवेम्बर सन् १८१७ .ई० को तस्दीक़ किया.

(दस्तख़त)- जे० ऐडम्,
सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

ऊपर लिखे हुए अ़हदनामहके अ़लावह विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = .ई० १८६२] में एक सनद अस्ली औलाद न होनेकी हालतमें गोद लेनेकी निस्बत नव्वाबको मिली; और विक्रमी १९२५ फाल्गुन कृष्ण १ [हि० १२८५ ता० १४ शव्वाल = .ई० १८६९ ता० २८ जैन्युअरी] को एक अ़हदनामह मुज्रिमोंके लेन देन वग़ैरहकी बाबत, जैसा कि राजपूतानहकी कुल दूसरी रियासतोंसे हुआ, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने इस रियासतके साथ भी किया.

जावराकी तवारीख़.

यह इलाक़ह पहिले अमीरख़ांके क़बज़हमें था, लेकिन् उसने अपने साले अ़ब्दुल् ग़फ़ूरख़ांको देदिया था, जब कि वह मालवेसे चला गया. जब मन्दसौर मक़ामपर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और हुल्करके दर्मियान अ़हदनामह क़रार पाया, तो उसकी बारहवीं

शर्तके मुवाफ़िक़ जावरेका इलाक़ह ग़फ़ूरख़ांकी जागीरमें रहा; अमीरख़ांने इसपर दावा किया था, लेकिन् वह सर्कारसे नामन्जूर हुआ.

विक्रमी १८८२ [हि० १२४० = .ई० १८२५] में ग़फ़ूरख़ां मरगया, तब उसका बेटा ग़ौस मुहम्मदख़ां दो वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बिठाया गया. अगर्चि इस को गद्दी नशीन करनेकी तज्वीज़ गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने की, परन्तु हुकूक़ क़ाइम रखनेके लिये २०००००) रुपया नज़ानहका हुल्करको दिलाया. ग़फ़ूरख़ांकी विधवा स्त्री और उसका दामाद जहांगीरख़ां रियासती इन्तिज़ामके लिये मुक़र्रर किये गये; लेकिन् उनसे पूरा पूरा प्रबन्ध न हो सका, बल्कि बद इन्तिज़ामीमें तरक़्क़ीकी सूरत नज़र आई, तब सर्कारने उनका इख़्तियार छीन लिया. विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = .ई० १८४२] में रियासतसे १८५८१०) रुपया कन्टिन्जेएट फ़ौज ख़र्चके लिये लिया जाना क़रार पाया. लेकिन् विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] के ग़द्रकी ख़ैरख़्वाहीके एवज़ विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = .ई० १८५९] से २४०००) रुपया मुआफ़ किया जाकर आइन्दहके लिये १६१८१०) रुपया सालानह बाक़ी रक्खा गया. विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = .ई० १८६२] में नव्वाबको गोद लेनेकी सनद मिली, और विक्रमी १९२२ [हि० १२८१ = .ई० १८६५] में नव्वाब ग़ौस मुहम्मद हैज़ेकी बीमारीसे मरगये. यह नव्वाब अक़्लमन्द, होश्यार, नेक आदत, फ़य्याज़ और ख़ूबसूरत थे. मैं (ग्रन्थ कर्ता) ने भी जावरा मक़ामपर इनके मरनेसे कुछ अरसह पहिले इनसे मुलाक़ात की थी; हक़ीक़तमें यह रईस तारीफ़के क़ाबिल था, परन्तु मौत किसीको नहीं छोड़ती. इनके सिर्फ़ एक लड़का मुहम्मद इस्माईलख़ां था, जो अपने पिताकी जगह गद्दीपर बैठा.

इसकी गद्दी नशीनीपर भी २०००००) रुपया अगले क़ाइदेके मुवाफ़िक़ तुकाराव हुल्करको नज़ानहका दिया गया. हुल्करने रईसकी कम उम्रीके समय रियासती प्रबन्धमें दख़्ल देना चाहा, लेकिन् मन्दसौरके अह्दनामहकी शर्तके बर्ख़िलाफ़ जानकर गवर्मेंएटने मन्जूर न किया; और अपनी तरफ़से एक अंग्रेज़ी अफ़्सर नव्वाबकी शिक्षाके वास्ते भेजदिया. विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = .ई० १८७४] में नव्वाबको मुल्की इख़्तियार मिला. इन दिनोंमें यार-मुहम्मदख़ां, इस रियासतका कामदार मुक़र्रर हुआ है.

इस रियासतका रक़बह ८७२ मील मुरब्बा, आबादी १०८४३४ आदमी, इंदरके

गज़ेटिअरके मुवाफ़िक़ आमदनी ७९१३००) रुपया, और एचिसन्ज़ ट्रीटीके अनुसार ६५५२४०) रुपये सालानह हैं. फ़ौजमें १५ तोप, ६९ गोलन्दाज़, १२१ सवार, २०० पैदल क़वाइद जानने वाले और २०० ग़ैर क़वाइद दां तथा ४९७ सिपाही पुलिसके हैं. पहिले इस रियासतकी सलामी सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से ११ तोप थी, लेकिन् ग़द्रकी ख़ैरख़्वाहीके सबब २ तोप बढ़ाकर १३ करदी गई हैं.

भरतपुरकी तवारीख़.

जुग़्राफ़ियह.

भरतपुर पूर्वी राजपूतानहमें दर्मियानी दरजेकी एक रियासत है, जो एजेन्सी पूर्वी राजपूतानहसे तत्र्अल्लुक़ रखती है. इस रियासतके उत्तरमें ज़िला गुड़गांवह, .इलाक़ह पंजाब; उत्तर पूर्वमें ज़िला मथुरा; पूर्वमें ज़िला आगरा; दक्षिणमें धौलपुर व क़रौली; दक्षिण पश्चिममें रियासत जयपुर, और पश्चिममें अलवरका .इलाक़ह वाक़े है. यह राज्य २६°, ४२' व २७°, ४९' उत्तर अक्षांश और ७६°, ५४' व ७७°, ४८' पूर्व देशान्तरके दर्मियान फैला हुआ है, जिसकी ज़ियादहसे ज़ियादह लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तरफ़ क़रीबन् ७७ मील, और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको ६३ मील है. कुल रक़बह १९७४ मील मुरब्बा, आबादी ६४५५४० आदमी, रियासतकी सालानह आमदनी हण्टरके गज़ेटिअरके मुवाफ़िक़ २८०००००) अट्ठाईस लाख रुपया, और फ़ौज सवार व पैदल पांच हज़ार है. यहांके राजा सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज नहीं देते.

ज़मीनकी हालत- राज्य भरतपुरकी क़रीब क़रीब कुल ज़मीन बराबर और सेराब याने तर है. उत्तरी पर्गनों और ख़ास भरतपुरके आस पासकी धरती बहुत नीची है. जब किसी साल बारिश ज़ियादह होती है, तो बहुतसे खेत पानीमें डूब जानेके सबब वहां दूसरी फ़स्लमें खेती बोई जाती है.

पहाड़- इस रियासतके दक्षिणी हिस्सेमें पहाड़ बहुत हैं. बयानाके पास वाला पहाड़ी हिस्सह, जिसमें अक्सर जगह नाले बहते हैं, डांगके नामसे प्रसिद्ध है.

इसमें जंगली दरख़्त बहुत हैं, और आबादी कम है; यहांके बाशिन्दे अक्सर गूजर हैं, जो खेती बाड़ी बहुत ही कम करते हैं, बाज़ अपना गुज़ारा मवेशियोंके ज़रीएसे करते हैं, और बाज़े चोरी वगैरह करके पेट भरते हैं. जिस पहाड़पर बयाने का क़िला वाके है, वह बहुत ऊंचा, चौड़ा और पर्गनह रूपबासके अन्ततक फैला हुआ है. सिवा इसके उत्तरी पर्गनोंमें भी कई जगह पहाड़ हैं, परन्तु सारे राज्यमें सबसे ऊंचा पहाड़ अलीपुर, पर्गनह अखेगढ़का है, जो "काला पहाड़" के नामसे राज्य भरतपुर, जयपुर व अलवरके तरपटेपर वाके है; इसकी ऊंचाई समुद्रके सतहसे १३५७ फ़ीट है. छपरा, पर्गनह पहाड़ीका पहाड़ १२२२ फ़ीट, दमदमा, पर्गनह बयानावाला १२२२, पर्गनह नगरका रसिया पहाड़ १०६५ फ़ीट, पर्गनह रूपबासका उसीरा पहाड़ ८१७ फ़ीट, और ख़ास पर्गनह भरतपुरका माढोनी पहाड़ ७२५ फ़ीट समुद्रके सतहसे ऊंचा है.

पत्थर व धातु- बयानाके पहाड़में मकानातकी छत्तें पाटनेकी पट्टियां निकलती हैं. रूपबास पर्गनहके खान और पहाड़पुर, तथा पर्गनह बयानाके बारेटा नामी मकामोंमें बहुत अच्छा सिफ़ेद व लाल पत्थर निकलता है. ये खानें पुराने ज़मानहसे जारी हैं; फ़त्हपुर सीकरीके प्रसिद्ध मकानात, भरतपुर, दीग और वैरके महल, तथा दिल्लीके रेलवे पुलकी तामीरमें यही मश्हूर पत्थर लगाया गया है, और रेलवे लाइनपर तारके लट्ठे भी इसी पत्थरके हैं; परन्तु इन पहाड़ोंमें धातुकी कोई खान नहीं है. बहुत अरसह पहिले भुसावर तथा वैरके बीच और बयानाके पहाड़ोंमें तांबेकी चन्द खानें जारी हुई थीं, परन्तु कुछ फ़ायदह न पाया जानेसे बन्द करदी गईं.

नदियां- इस राज्यमें साल भरतक बराबर बहने वाली कोई नदी नहीं है; केवल चार नदियां, याने पहिली उटंगन या बाण गंगा, दूसरी गम्भीर, तीसरी काकुन्द और चौथी रूपारेल बर्सातके दिनोंमें बहती हैं.

बाणगंगा- रियासत जयपुरसे निकलकर इस राज्यमें भुसावर पर्गनहके गांव कमालपुराके पास दाख़िल होकर पूर्व तरफ़ बहती हुई, भुसावर, वैर, बयाना, उचैन व रूपबास पर्गनहमें होकर पर्गनह फ़त्हपुर सीकरी और खेड़ागढ़में जा निकली है. इसके पानीसे खेतीको बहुत कुछ फ़ायदह पहुंचता है. इसकी एक धारा शहर भरतपुरके आस पास वाले बन्दों और नहरमें पहुंचकर वहांके बाशिन्दोंके वास्ते मीठा पानी मौजूद करती है; क्योंकि वहांके कुओंमें ज़ियादह तर खारा पानी होता है.

गम्भीर- यह नदी भी जयपुरके राज्यमेंसे आती है, और पर्गनह बयानाके

करसाड़ा गांवमें दाखिल होकर पहिले पूर्व रुख़ और उसके बाद उत्तरमें बयानाके पहाड़के गिर्द घूमती हुई कुरका गांवके पास बाण गंगामें गिरती है.

काकुन्द- क़रौलीके पहाड़ोंसे निकलकर इस .इलाक़हकी सईदपर बयानाके पर्गनह में आती है, जहांपर यह ऊंची पहाड़ी ज़मीनसे गोरधा नामी गांवकी ज़मीनपर गिरती है; वहां हमेशह पानी भरा रहता है. छः मीलतक यह पहाड़ोंके बीच होकर गुज़री है, जिनका तमाम पानी नालोंके ज़रीएसे इस नदीमें आता है. इस पहाड़ी इहातेमेंसे बारेटा गांवके पास निकलने बाद यह उत्तर तरफ़ चलकर सालाबाद गांवके नज़्दीक गम्भीर नदीमें शामिल हुई है.

रूपारेल- क़स्बह सीकरीके पास इलाक़ह अलवरसे इस राज्यमें दाखिल हुई है. इस नदीके पानीपर एक अरसेतक अलवर व भरतपुरकी रियासतोंमें बाहमी तनाज़ा रहा, जिसको विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = .ई १८५५] में सर हेनूरी लॉरेन्स, एजेण्ट गवर्नरजेनरल राजपूतानहने दूर किया. सीकरीके बन्दसे, जहां यह नदी रियासत भरतपुरमें दाखिल हुई है, दो हिस्सोंमें तक्सीम होती है; अव्वल वह, जो उत्तर पूर्वमें गोपालगढ़ व पहाड़ीकी तरफ़ और दूसरा दक्षिण पूर्वमें दीग, कुम्हेर व भरतपुरको जाता है. उत्तरमें कामासे बढ़कर पानीको रास्तह न मिलनेसे, ज़ियादह बर्सात होनेपर पहाड़ी और कामाके बीच ग्यारह मीलतक पानी जमा होजाता है, परन्तु जब यह झील पूरी भरजाती है, तो ज़ायद पानी मथुराके ज़िलेमें जाकर वहांकी ज़िराअतको नुक्सान पहुंचाता है. दक्षिणी धाराका पानी दीगके पास खोहकी झील तथा दूसरी कई झीलोंमें होता हुआ भरतपुरके पास मोती झीलमें जा गिरता है, और वहांसे ओरीन नदीमें, जो खारी नदीकी एक शाखा है, शामिल होकर फ़त्हपुर सीकरीकी तरफ़ बहजाता है. खारी नदी ज़िले आगरामें बाण गंगाके शामिल हुई है.

झील व बन्द- जो कि इस रियासतमें साल भरतक बराबर बहती रहने वाली कोई नदी न होनेके सबब ज़िराअतको पानी पहुंचानेके लिये नहरें नहीं हैं, इसलिये बर्सातका पानी बन्दोंके ज़रीएसे रोका जाकर फ़स्ल बोनेके वक़ छोड़ा जाता है. इन बन्दोंमें हर साल दूर दूरतक पानी भरजाता है, और ख़ाली होनेपर उनके अन्दरकी ज़मीनमें बहुत उम्दह ज़िराअत होती है. इस ग़रज़से पानीके बड़े बड़े रास्तोंपर बन्द तय्यार किये गये हैं, जो गर्मीमें सूखजाते और बर्सातमें पूरे भरजाते हैं. राज्यमें कुल बन्दोंकी तादाद ११६ से कुछ ज़ियादह है, जिनमेंसे कई तो ८ तथा ९ माइलतक की लम्बाईमें फैले हुए हैं. बाज़ोंके

पक्के पुश्ते बने हुए हैं, और सबमें पक्की मोरियां हैं. ज़ियादह तर बन्दोंमें पानी बर्साती नदियोंका एकट्ठा कियाजाता है. सबसे बड़ा बन्द अजान ९ मील लम्बा है.

आब हवा व बारिश - आब हवा यहांकी ठीक ठीक है, बारिश अच्छी होती है; मगर ख़ास भरतपुरमें पीनेका पानी बहुत ख़राब है, सिर्फ़ चन्द कुओंमें, जो तालाब व नहरके किनारेपर हैं, मीठा पानी पाया जाता है.

जंगल - शहर भरतपुरके आस पास और उसके दक्षिणमें जंगल है; दक्षिणी जंगल सात मील लम्बा और सवा मीलके क़रीब चौड़ा है. पर्गनह रूपबासमें भी एक जंगल है, जहां बादशाह अक्बर जब फ़त्हपुर सीकरीमें रहता था, शिकार खेलनेके लिये आता था.

पैदावार - इस रियासतकी ख़ास पैदावार गेहूं, जव, चना, ज्वार, बाजरा, मूंग, मौठ, और उड़द वगैरह हैं.

राज्य प्रबन्ध - अदालती इन्तिज़ामके लिहाज़से राज्य भरतपुर दो हिस्सोंमें बटा हुआ है - अव्वल ख़ास भरतपुर, जिसमें आठ पर्गने, १ शहर भरतपुर, २ रूपबास, ३ बयाना, ४ उचैन व रुदावल, ५ वैर, ६ भुसावर, ७ अखेगढ़ और ८ कुम्हेर, १३०० मील मुरब्बाके रक़बहमें फैले हुए हैं. इस हिस्सहमें कुल ६४२ गांव दाख़िल हैं. और दूसरी अदालत दीग व ज़िले मेवातमें पांच पर्गने, १ दीग, २ गोपालगढ़, ३ कामा, ४ पहाड़ी और ५ नगर हैं. इस हिस्सहके गांवोंकी तादाद ५१८ और रक़बह ६५३ मील मुरब्बा है. हर एक हिस्सहमें एक अदालती मुक़र्रर है, जिसको मुक़द्दमात फ़ौज्दारीमें तीन सालतक क़ैद व पचास रुपयेतक जुर्मानह और दीवानीमें बिला हद दावेकी समाअतका इख़्तियार है. इन अदालतोंका अपील महकमह पंचायत और पंचायतका अपील रईसके इज्लास ख़ासमें होता है. अदालतोंके मातहत हर पर्गनहमें तह्सीलदार और शहर भरतपुरमें मुन्तज़िम फ़ौज्दारी शहर, और अदालती दीवानी शहर, रहते हैं. फ़ौज्दारी मुआमलातमें कुल तह्सीलदारों व मुन्तज़िम शहर फ़ौज्दारीको तीन महीनेतक क़ैद व दस रुपयेतक जुर्मानहका इख़्तियार है; और दीवानी मुक़द्दमोंमें तह्सीलदारों व अदालती दीवानी शहरको ५००) रुपयेतक के दावेकी समाअतका इख़्तियार है. इन सबका अपील अदालतोंमें होता है. हर तह्सीलमें एक थानहदार मए जमइयतके मुक़र्रर है; और शहरके अन्दर कोतवालके तह्तमें चौकीदार व पोलिस वगैरह है. सिवा इनके महकमह माल, साइर, फ़ौज, तामीरात, और सरिश्तह तालीम व

हिफ़ाज़ानि सिहत वगैरह कुल बड़े छोटे महकमों व कारखानोंकी संभालपर जुदे जुदे प्रबन्ध कर्ता नियत हैं. फ़ौजकी क़वाइद वगैरहका काम खुद रईस देखता है, और हर एक छोटेसे छोटे नौकरकी मौकूफ़ी बहाली भी बिना मन्ज़ूरी रईसके नहीं होती.

डाकखानह - इस राज्यमें चार जगह अंग्रेज़ी डाकखाने हैं - १ भरतपुरमें, २ कुम्हेरमें, ३ दीगमें और ४ कामामें; बाक़ी इलाक़ह भरमें राज्यकी डाक है.

सरिश्तह तालीम - इस सरिश्तहपर एक सुपरिन्टेन्डेण्ट नियत है, जो कुल मद्रसोंकी निगरानी रखता है. भरतपुरमें एक मद्रसह है, जिसमें अंग्रेज़ी, संस्कृत, फ़ार्सी व हिन्दी और हिसाब वगैरहकी शिक्षा दीजाती है. इस मद्रसेके मुतअल्लिक़ एक छापाखानह भी है, जिसमें स्कूलकी पढ़ाईकी किताबें और राज्यका स्टाम्पी कागज़ छपता है. तहसीली मद्रसोंमें, जो राज्यके गांवोंमें क़ाइम किये गये, फ़ार्सी, हिन्दी और हिसाबी काम सिखाया जाता है. तहसीली मद्रसोंके खर्चका ज़ियादह हिस्सह ज़मींदारोंसे वुसूल होता है.

ज़ात, फ़िर्क़ह व क़ौम - इस राज्यके बाशिन्दे खासकर जाट, गूजर, मुसल्मान, मेव, मीणा, ब्राह्मण, कायस्थ, बनिया, अहीर, माली और धांकड़ हैं; और इनके अलावह कई दूसरी क़ौमें शागिर्द पेशहमेंसे भी आबाद हैं. कुल आबादीमें फ़ी सैकड़ा १८ मुसल्मान और बाक़ी हिन्दुओंमें फ़ी सैकड़ा उन्नीस जाट हैं; मुसल्मानोंमें ज़ियादह तादाद मेवोंकी है.

ज़मीनका क़ब्ज़ह व महसूल - इस राज्यमें दो तरहकी ज़मीन है, अव्वल खालिसह और दूसरी मुआफ़ी. खालिसहके गांवोंकी तादाद ११७४ और मुआफ़ीके गांवोंकी तादाद १९५ है. ज़मींदारोंकी तरफ़से किसान लोग खेती करते हैं, और उनको लगान देते हैं; वह लगान ज़मीनकी हैसियत और पैदावारकी मिक्दार तथा क़िस्मके मुवाफ़िक़ लीजाती है, जिसमेंसे ज़मींदार अपना मालिकानह नफ़ा रखकर सर्कारी जमा गांवके पटवारीकी मारिफ़त नक्द रुपया ऑक्टोबर व एप्रिलकी दो क़िस्तोंमें हर फ़स्लपर राज्यके खज़ानहमें जमा कराता है. मुआफ़ीकी तीन क़िस्में हैं - १ इनआम, २ जागीर, और ३ पुण्यार्थ. इनआमके गांव, जो तादादमें ५० हैं, सिपाहियानह नौकरीके एवज़ औसत दरजह तीस बीघा ज़मीन फ़ी बन्दूक़के हिसाबसे बटे हुए हैं. जागीरी गांवोंकी तादाद १०० के लगभग है. ये जागीरें मौरूसी हैं, जिनमें ज़ियादह तर महाराजा सूरजमल्लकी औलाद वाले कोटड़ी बन्द ठाकुर हैं. इन जागीरदारोंकी नौकरी व खिराज दोनों मुआफ़ हैं; लेकिन ज़मींदारों

को बेदख़्ल करने और मुक़र्ररह जमासे ज़ियादह वुसूल करनेका अपनी जागीरोंमें इख़्तियार नहीं रखते. पुण्यार्थ गांव ४५ हैं, जो मन्दिरों, ब्राह्मणों, तथा वैरागियों को ख़ैरातमें मिले हैं.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

ख़ास शहर भरतपुर नीची ज़मीनपर बसा है, जिसकी लम्बाई ३ मीलके क़रीब और चौड़ाई एक मीलसे कुछ ज़ियादह है. लड़ाईके वक्त बाहरकी झीलोंसे इतना पानी छोड़ दिया जा सक्ता है, कि दुश्मनकी ताक़त नहीं, कि शहरमें घुस सके. शहर-पनाह कच्ची, लेकिन् बहुत चौड़ी बनाई गई है, जिसमें १० दर्वाज़े शहरके भीतर आने जानेको हैं. शहरपनाहके गिर्दवाली खाई बर्सातके दिनोंमें सब जगह और दूसरे मौसममें जहां जहां गहराई है, पानीसे भरी रहती है; शहरपनाहके चारों तरफ़ पक्की सड़क सैर करनेके लिये बनी हुई है. इस शहरका नाम राजा रामचन्द्रके भाई भरतके नामपर भरतपुर रक्खा गया है. अगर्चि यह आबादी पुरानी है, लेकिन् क़िला और बहुतसे मकानात महाराजा सूरजमल्लके समयसे नये तय्यार होकर यह शहर राजधानी बनाया गया. शहरके भीतर एक मज़्बूत और ऊंचा क़िला है, जिसके गिर्द बहुत चौड़ी और गहरी खाई बनी हुई है; उसमें हमेशह पानी भरा रहनेसे शहरवालोंको बहुत कुछ आराम मिलता है. क़िलेके दो दर्वाज़े और आठ बुर्ज हैं, और तीन महल, याने एक मर्दानह, दूसरा ज़नानह और तीसरा कचहरीका, उम्दह गिने जाते हैं. महाराजा क़िलेमें नहीं रहते; उन्होंने शहरसे पश्चिम तरफ़ तीन मील दूरीपर सेवर गांवके पास एक छावनी बसाकर रहना इख़्तियार किया है, जहां कई बंगले और फ़ौजकी बारकें वग़ैरह दूरतक फैली हुई हैं.

बयानाका क़िला एक प्रसिद्ध मक़ाम है, जो शुरू ज़मानहमें चन्द्रवंशी यादव राजपूतों और बाद उसके अक्सर दिल्ली वग़ैरहके ज़बर्दस्त बादशाहोंके क़बज़हमें रहा; मुग़लों की सल्तनत बिगड़नेपर, जिसतरह जयपुरवालोंके क़िला रणथम्भोर हाथ लगा, बयानाको भरतपुरवालोंने दबा लिया.

दीग- यह भी इस राज्यमें एक मश्हूर जगह है, जो मकानोंकी मज़्बूती, बाग़की रौनक़ और फ़व्वारोंकी कस्रतसे तारीफ़के लाइक़ गिनी जाती है, बल्कि मुन्शी ज्वाला-सहायने कारीगरी व उम्दगीमें आगराके रौज़ए मुम्ताज़ महलसे दूसरे दरजेपर यहांके महलातको ही रक्खा है. शहरमें एक मज़्बूत क़िला और उसके गिर्द चन्द झील हैं.

कामा – इसकी बाबत बयान है, कि यह क़स्बह पुराने ज़मानहकी आबादी है, जो ब्रजमें हिन्दुओंके मज़्हबी तीर्थ स्थानोंमेंसे श्री कृष्णचन्द्रकी ननिहाल समझा जाता है.

वैर– एक बड़ा क़स्बह, राजाके महल, बाग़, और मज़्बूत क़िलेके सबब मश्हूर मक़ामोंमें शुमार किया जाता है.

रूपबास – यह क़स्बह अगर्चि छोटासा है, लेकिन् इसमें क़दीम ज़मानहके बने हुए लाल पत्थरके महल और उनके नीचे एक पक्का तालाब है, जो अक्बर बादशाहके फ़त्हपुर सीकरीमें रहनेके समय तय्यार कराये गये थे. यहां महाराजा बलवन्तसिंहका बनवाया हुआ एक बाग़ भी है.

हलेना– पर्गनह भुसावरमें एक क़स्बह है, जो रियासत भरतपुरके अगले महाराजाओंके बनवाये हुए महलसे प्रसिद्ध है.

पहरसर– यह गांव ग़द्रके पीछेसे नई शुहरत पाने लगा है, जिसके बहुधा मुसल्मान बाशिन्दे मामूली सिपाहगरीसे अह्लकारीके दरजेको पहुंचकर सय्यद होनेका दावा रखते हैं.

पहाड़ी– मेवातमें एक पर्गनहका सद्र है, इसमें साहिबख़ां नामी एक ख़ानज़ादह पीरकी दर्गाह है.

ऊपर लिखे हुए शहर व क़स्बोंके सिवा, नीचे लिखे हुए मक़ामात भी इस रियासतमें मुख़्तलिफ़ सबबोंसे प्रसिद्ध समझे जाते हैं:- भुसावर, बोकोली, बहनेरा, चकसाना, गोरधा, गोपालगढ़, केतवाड़ी, खानूवा, नगर, और फ़र्सो.

सड़कें– राज्य भरतपुरमें नीचे लिखी हुई ख़ास सड़कें हैं:-

१ आगरासे जयपुरतक, २ भरतपुरसे दीगतक, ३ दीगसे कामातक, ४ दीग, व अलवरके दर्मियान, ५ भरतपुरसे मथुराको जानेवाली, ६ दीग व मथुराके बीचमें, ७ भरतपुरसे सीकरी फ़त्हपुरतक, ८ शहरके गिर्द, ९ एजेन्सीसे सेवरतक, १० मन्दिर केवलादेवकी सड़क, ११ भरतपुरसे हिंडौनतक, १२ दीगसे नदबईतक, १३ गोपालगढ़से कामातक, १४ बयानासे जगनेरको जानेवाली, और १५ भरतपुर व गोवर्द्धनके दर्मियान.

तवारीख़.

भरतपुरके रईस अगर्चि अपना नस्बनामह श्री कृष्णचन्द्रसे मिलाते हैं, परन्तु वह क़ौमसे जाट माने जाते हैं, और उन्हीं लोगोंमें उनके विवाह शादी आदि होते हैं.

आलमगीरके आख़री ज़मानहमें, जिसके वैर विरोध और ज़ुल्मने अक्सर हिन्दू क़ौमोंको उससे बर्खिलाफ़ और सर्कश बननेके लिये मज्बूर किया, और जिसके पीछे बहुतसी बुराइयें बढ़कर मुग़ल बादशाहोंकी सल्तनत बर्बाद हुई, भरतपुर वालोंके बुज़ुर्ग भी काश्तकारी छोड़कर लूट मार वग़ैरह करने लगे; और तक्लीफ़ व कामयाबी दोनों हालतोंमें अपने इरादहसे न रुके. इनमेंसे पहिला राजाराम जाट अपने गिरोहका मुखिया बना था, जिसको विक्रमी १७४६ [हि० ११०० = ई० १६८९] में आलमगीरकी फ़ौजने मुक़ाबलेमें क़त्ल किया. उसके बाद थोड़े दिन उसका बेटा और अख़ीरमें चूड़ामन, जो राजारामका भतीजा था, जाटोंका सर्दार बना; इसको फ़र्रुख़-सियर बादशाहके अहदमें वज़ीर अब्दुल्लाहख़ांने रास्तेकी हिफ़ाज़त रखनेके लिये "राहदारख़ां" ख़िताब मए थोड़ीसी जागीरके दिया था. परन्तु वह अपनी लूट मारकी आदतसे न रुका, तो बादशाही तरफ़से विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] में महाराजा सवाई जयसिंहको चूड़ामनकी सज़ादिहीका हुक्म मिला, लेकिन् वह फ़र्मांबर्दार न बना, बल्कि उसने हमलह करनेवालोंको शिकस्त देकर निकाल दिया.

इत्तिफ़ाक़से चूड़ामनका भतीजा बदनसिंह, जो बर्खिलाफ़ीके सबब मुहकमसिंहकी क़ैदमें रह चुका था, सवाई जयसिंहसे जा मिला, और उनको अपनी मददके लिये साथ लाकर थून मक़ामपर मुहासरह करने बाद चूड़ामनके बेटे मुहकमसिंह (१) को भगाकर इलाक़हपर क़ाबिज़ होगया. विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = ई० १७२३] में बदनसिंह जाटोंका सर्दार माना गया, जिसको सवाई जयसिंहने दीग मक़ामपर राजाओंकी तरह राज्य तिलक दिया. इसके बाद बदनसिंह और उसकी औलाद बराबर तरक़्क़ी करती रही. अगर्चि कई बार इलाहाबादके सूबहदारोंने उनको तबाहीके क़रीब पहुंचा दिया, लेकिन् वे इस इलाक़हमें अंग्रेज़ोंके समयतक बने रहे, और उनको दूसरे राजाओंकी तरह सर्कारने रईस माना. बदनसिंहसे इस समयतक डेढ़ सौ बर्षके अर्सहमें ग्यारह रईस भरतपुरकी गद्दीपर बैठे, जिनमेंसे हर एकका मुख़्तसर तारीख़ी हाल यहां दर्ज किया जाता हैः-

---

(१) मुन्शी ज्वालासहाय अपनी किताब वक़ाये राजपूतानहमें लिखता है, कि अगर्चि भरतपुरके मुवर्रिख़ोंने यह मारिका मुहकमसिंहके साथ होना लिखा है, परन्तु एक अंग्रेज़ी मुवर्रिख़ने इस लड़ाईका चूड़ामनसे होना और शिकस्त खाने बाद चूड़ामन और मुहकमसिंह दोनोंका भाग जाना बयान किया है.

१- राजा बदनसिंह.

विक्रमी १७७९ चैत्र शुक्ल १ [हि० ११३४ ता० ३० जमादियुल् अव्वल = ई० १७२२ ता० १८ मार्च] को राजा बना, और दीग, कुम्हेर, और वैर वगैरह मक़ामोंपर मज़्बूतीके लिये क़िले बनवाये, और अपने बेटे सूरजमल्लको राज्य सौंपकर विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = ई० १७५५] में गुज़र गया.

२- राजा सूरजमल्ल.

इसने विक्रमी १७८९ [हि० ११४५ = ई० १७३२] में खेमा जाटको भरतपुरसे ख़ारिज किया और उसका गढ़ तोड़कर अपना बड़ा क़िला तय्यार कराने बाद क़स्बहको राजधानी बनाया. दीगके मश्हूर महल भी इसी राजाके समयमें तय्यार हुए थे. विक्रमी १८१७ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में अहमदशाह अब्दालीकी लड़ाईके वक्त इसने मरहटोंको मदद दी थी. विक्रमी १८२० [हि० ११७७ = ई० १७६३] में इलाहाबादके सूबहदार नजीबुद्दौलहसे इसकी लड़ाई हुई; यह बड़ी बहादुरीसे जान तोड़कर लड़ा, लेकिन् अख़ीरमें इसी विक्रमीकी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रजब = ई० १७६४ ता० १५ जैन्युअरी] को पठानोंके हाथसे मारा गया. कर्नेल टॉड अपनी किताबमें लिखते हैं, कि सूरजमल्लके पांच बेटों, जवाहिरसिंह, रत्नसिंह, नवलसिंह, नाहरसिंह, और रणजीतसिंहमेंसे पहिले दो कोरमी क़ौमकी औरतसे, तीसरा मालिनसे और चौथा तथा पांचवां जाटनीसे पैदा हुए थे.

३- राजा जवाहिरसिंह.

यह अपने बापके मारे जाने बाद दीग मक़ामपर गद्दी नशीन हुए. इन्होंने विक्रमी १८२१ [हि० ११७८ = ई० १७६४] में बहुतसी सिक्खोंकी फ़ौज और शिमरू फ़िरंगीको नौकर रक्खा और मरहटोंको मददगार बनाकर नजीबुद्दौलहसे अपने बापका बदला लेना चाहा, परन्तु कुछ लड़ाइयां होने बाद आपसमें सुल्ह होगई. राजा जवाहिरसिंह विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = ई० १७६७] (१) में पुष्कर स्नानको गये, और वहांपर जोधपुरके महाराजा विजयसिंहसे मुलाक़ात हुई; लौटते वक्त जयपुरके

---

(१) इस तवारीख़के पृष्ठ १३७७ में अलवरकी तवारीख़के अंतर्गत जवाहिरसिंहका पुष्कर स्नानको जाना और लौटते वक्त जयपुरकी फ़ौजसे उसका मुक़ाबलह होना विक्रमी १८२३ [हि० ११८० = ई० १७६६] में पाउलेट् साहिबके गज़ेटिअरके मुताबिक़ भूलसे लिख दिया गया है; अस्लमें इस लड़ाईका होना विक्रमी १८२४ में ही सहीह है, जैसा कि इसी तवारीख़के पृष्ठ १३०४ में पहिले लिखा जा चुका है.

महाराजा माधवसिंह अव्वलकी फ़ौजने जवाहिरसिंहको अपने इलाक़हमें घेरलिया. सख़्त मुक़ाबलेके बाद, जिसमें दोनों तरफ़की फ़ौजके बहुतसे आदमी और जयपुरके अहलकार गुरसहाय व हरसहाय खत्री मारे गये, जवाहिरसिंह भरतपुरको भाग आये, और जयपुरके इलाक़हमेंसे कामाका पर्गनह दबा लिया. दूसरे वर्ष राजा जवाहिरसिंह क़िले आगराकी सैर करनेके वक़ विक्रमी १८२५ द्वितीय श्रावण शुक्ल १५ [हि० ११८२ ता० १४ रबीउस्सानी = ई० १७६८ ता० २७ ऑगस्ट] को एक शख़्सके हाथ तलवारसे घायल होकर मरगये, और उनके दूसरे भाई रत्नसिंह राज्यके मालिक हुए.

४- राजा रत्नसिंह.

यह विक्रमी १८२५ भाद्रपद कृष्ण १ [हि० ११८२ ता० १५ जमादियुल् अव्वल = ई० १७६८ ता० २८ ऑगस्ट] को राजा होकर सात महीने बाद विक्रमी १८२६ चैत्र शुक्ल ५ [हि० ११८२ ता० ३ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० ११ एप्रिल] को एक गुसाईंके हाथसे, जिसने कीमिया (रसायण) बनानेका फ़िरेब दिया था, एक मन्दिरमें क़त्ल हुए. इनके नौकरोंने गुसाईंको भी मारडाला, और राजा जवाहिरसिंहके बेटे केसरीसिंह वारिस माने गये.

५- राजा केहरीसिंह (केसरीसिंह).

यह विक्रमी १८२६ चैत्र शुक्ल ६ [हि० ११८२ ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० १२ एप्रिल] को अपने चचाके बाद गद्दीपर बिठाये गये. इनकी कम उम्रीके ज़मानहमें इनका एक चचा नवलसिंह दीवान और राज्यका मुरूतार बना; और उसके दूसरे भाई रणजीतसिंहने मरहटों व सिक्खोंकी मददसे राज्यका दावा किया. नवलसिंहने पांच छः रोज़तक आपसमें सख़्त लड़ाई रहनेके बाद लाचार होकर मरहटोंसे इक़ार किया, कि वह मुहासरह छोड़कर मथुराको चले जायें, तो एक करोड़ रुपया दिया जायेगा; लेकिन् उनके रवानह होते ही पीछेसे जाटोंने सेंधिया और हुल्करका सामान लूटना शुरू किया. इस दग़ाबाज़ीके बाद मरहटोंने फिर दीगमें नवलसिंहको घेर लिया, और सत्तर लाख रुपया जुर्मानह लेकर पीछा छोड़ा.

विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में शाह आलम दूसरेके मातहत सर्दार नजफ़ख़ांने नाराज़ होकर नवलसिंह और उसके नौकर शिमरू फ़िरंगीको शिकस्त देने बाद इलाक़हसे निकाल दिया; लेकिन् कुछ अरसह बाद राजा केसरीसिंहकी माता राणी किशोरीके लाचारी करनेपर नव्वाबने इलाक़ह वापस देदिया. विक्रमी १८३३ [हि० ११९० = ई० १७७६] में नवलसिंहके मरने

पर उसके भाई रणजीतसिंहको दीवानीका उह्दह मिला. रणजीतसिंहने अपने मुख़ालिफ़ पठानोंको दीगसे ख़ारिज करदिया, जिसपर नव्वाब नजफ़ख़ांने फिर मुल्क छीन लिया. राजा और दीवान भागकर छिपगये, और दूसरे साल विक्रमी १८३३ चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ११९१ ता० २८ सफ़र = .ई० १७७७ ता० ७ एप्रिल] को राजा नाउम्मेदी की हालतमें चेचककी बीमारीसे मरगया.

६ – राजा रणजीतसिंह.

यह विक्रमी १८३४ चैत्र शुक्ल १ [हि० ११९१ ता० २९ सफ़र = .ई० १७७७ ता० ८ एप्रिल] को जाटोंके सर्दार माने गये; लेकिन् उनके पास कुछ इलाक़ह न था; लाचार इन्होंने अपनी भाबी राणी किशोरीकी मारिफ़त एक भारी नज़ानह नव्वाब नजफ़ख़ांको दिया, जिससे खुश होकर नव्वाबने उसको नौ लाख रुपया आमदनीके पर्गने देकर राजा बनाया. विक्रमी १८३९ [हि० ११९६ = .ई० १७८२] में मिर्ज़ा मुहम्मद शफ़ीअ़ने, जो नव्वाब नजफ़ख़ांके मरनेपर वज़ीर हुआ था, शहर भरतपुरके सिवा कुल इलाक़ह छीन लिया; लेकिन् मुहम्मद शफ़ीअ़को इस्माईलबेगने, जो दीगपर क़ाबिज़ था, दग़ासे क़त्ल करडाला, और रणजीतसिंहने दोबारह मुल्कमें दख़्ल करलिया. इसके थोड़े दिन पीछे महाराजा सेंधियाने शाह आलमको खुश रखनेके लिये भरतपुर वालोंको तंग करके उनसे कुछ जुर्मानह लिया.

विक्रमी १८४१ [हि० ११९८ = .ई० १७८४] में महाराजा सेंधिया और भरतपुरका कुंवर रणधीरसिंह बादशाह शाह आलमको अपने मुल्कमें सैर करानेके वास्ते लाये, जिसने बदलबेगसे दीगका क़िला भरतपुरवालोंको, और दाऊदबेगसे आगरेका क़िला सेंधियाको दिला दिया. सेंधियाकी तरफ़से जेनरल पेरन साहिब आगरेकी हुकूमतपर नियत हुआ था, जिसको विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = .ई० १८०४] में अंग्रेज़ी जेनरल लॉर्ड लेकने शिकस्त देकर निकालने बाद अपना अधिकार जमाया. इस वक्त भरतपुर वाले लॉर्ड लेकसे मिलगये, और एक अ़ह्दनामह लिखा; परन्तु थोड़े दिनोंमें पोशीदह तौरपर हुल्करसे मिलावट करली, जिसपर लॉर्ड लेकने हुल्कर और रणजीतसिंहको दीगमें शिकस्त देने बाद विक्रमी १८६१ पौष शुक्ल ६ [हि० १२१९ ता० ५ शव्वाल = .ई० १८०५ ता० ७ जैन्युअरी] को भरतपुर आकर शहरपर घेरा डाला; लॉर्ड लेककी फ़ौजने क़िलेपर तीन चार बार हमलह किया, जिसमें तीन हज़ार सर्कारी सिपाही क़त्ल और ज़ख़्मी हुए; झीलका पानी शहर और क़िलेके गिर्द छोड़दिया जानेसे लॉर्ड लेकने लाचार होकर घेरा उठा लिया. अंग्रेज़ी फ़ौजकी शिकस्तसे अगर्चि भरतपुरने शुह्रत पाई, लेकिन् दोबारह बदला लिये जानेके डरसे

महाराजा रणजीतसिंहने तेरह लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका लॉर्ड लेकको भेजकर सुलह करली. लड़ाईके दूसरे वर्ष विक्रमी १८६२ मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि० १२२० ता० १४ रमज़ान = ई० १८०५ ता० ६ डिसेम्बर] को महाराजाका देहान्त होनेपर उसका बेटा रणधीरसिंह गद्दीपर बैठा.

७- महाराजा रणधीरसिंह.

यह विक्रमी १८६२ पौष कृष्ण १ [हि० १२२० ता० १५ रमज़ान = ई० १८०५ ता० ७ डिसेम्बर] को गद्दी नशीन हुए; और विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] में फ़त्हपुर सीकरी मक़ामपर लॉर्ड म्वायरा (१) साहिबसे मुलाक़ात करने गये. विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में पिंडारोंके मुक़ाबिल इन्होंने अंग्रेज़ी सर्कारको मदद दी. विक्रमी १८८० आश्विन शुक्ल ४ [हि० १२३९ ता० ३ सफ़र = ई० १८२३ ता० ७ ऑक्टोबर] को उनके मरजानेसे उनके छोटे भाई बल्देवसिंहको राज्य मिला.

८- महाराजा बल्देवसिंह.

यह विक्रमी १८८० आश्विन शुक्ल ५ [हि० १२३९ ता० ४ सफ़र = ई० १८२३ ता० ८ ऑक्टोबर] को राज्यके मालिक बने; इनके छोटे भाई लछमण-सिंह (लक्ष्मणसिंह) के मरजाने बाद उसके बेटों माधवसिंह और दुर्जनशालमेंसे पहिलेने महाराजासे बर्ख़िलाफ़ी की, और दूसरेने महाराजाके गुज़रने बाद नौ महीना तक राज दबा लिया.

विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] में महाराजाने जेनरल अक्टर लोनीको भरतपुर बुलवाया, और अपने छः वर्षके बेटे बलवन्तसिंहको हिफ़ाज़त और हिमायतके भरोसेपर उनकी गोदमें बिठाया. इसी विक्रमी की फाल्गुन शुक्ल ११ [हि० १२४० ता० १० रजब = ई० १८२५ ता० १ मार्च] को डेढ़ वर्षके क़रीब राज्य करने बाद महाराजाका इन्तिक़ाल होगया; और दुर्जनशालने भरतपुर दबाकर कुंवर बलवन्तसिंहको नज़र बन्द करदिया.

९- महाराजा दुर्जनशाल.

इसने विक्रमी १८८१ चैत्र कृष्ण ९ [हि० १२४० ता० २२ रजब = ई० १८२५ ता० १३ मार्च] को कई अफ़्सरों और फ़ौजकी मददसे राज्यपर क़ब्ज़ह हासिल

(१) ईसवी १८१३ में लॉर्ड मिन्टो और ईसवी १८१४ में मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़ गवर्नर जेनरल थे, न मालूम बाबू ज्वालासहायने लॉर्ड म्वायरा कहांसे लिखा है.

किया था; ऑक्टर लोनी साहिबने दुर्जनशालके ख़ारिज करनेको अंग्रेज़ी फ़ौज बुलाई, मगर लॉर्ड एमहर्स्टने उनकी तज्वीज़को, इस सबबसे, कि यह ख़ानगी झगड़ा है, नामन्ज़ूर करके उनको मौक़ूफ़ करदिया; कहते हैं, कि इसी शर्मिन्दगीसे जेनरल ऑक्टर लोनी थोड़े दिनों पीछे मरगये. लेकिन् फ़साद फैलनेके अन्देशहसे लॉर्ड कम्बरमेअर पच्चीस हज़ार सर्कारी फ़ौज लेकर भरतपुर आये. उन्होंने अगले वर्ष झीलका पानी फैलनेसे नाकामीके सबब पहिले झीलको क़बज़हमें करलिया, और सुरंग लगाकर एक महीनेके अन्दर क़िला ख़ाली करालिया. दुर्जनशाल भागतेहुए गिरिफ़्तार होकर आगरे भेजे गये, और बलवन्तसिंह राज्यके मालिक बनाये गये, जिनकी कम उम्रीके सबब एक पोलिटिकल एजेण्ट इन्तिज़ामकी निगरानीको मुक़र्रर हुआ.

१०- महाराजा बलवन्तसिंह.

विक्रमी १८८२ पौष शुक्ल ११ [हि० १२४१ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १८२६ ता० १९ जैन्युअरी] को सर्कारी मददसे राजा हुए. लॉर्ड कम्बरमेअरने फ़ौजको मिह्नतके एवज़ इन्आम दिलाना चाहा, जो महाराणी और राज्यके अहलकारोंको मन्ज़ूर न होनेसे फ़ौजने बेरहमीके साथ ज़नानह महलोंके सिवा क़िले और तमाम शहरको लूटकर बर्बाद करदिया; दूसरे साल इन्तिज़ामकी ख़राबीके सबब पोलिटिकल एजेण्टकी रिपोर्टपर महाराजाकी माता हुकूमतसे बेदख़्ल, और दीवान जानी बैजनाथ शहरसे ख़ारिज किया गया.

विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में महाराजाको रियासती इख़्तियारात मिलकर एजेन्सी उठाली गई. विक्रमी १९०७ फाल्गुन् कृष्ण १४ [हि० १२६७ ता० २७ रबीउस्सानी = ई० १८५१ ता० १ मार्च] को कुंवर जशवन्तसिंहके पैदा होनेकी खुशीमें महाराजाने तमाम नौकरों और रिआयाको इन्आम और शीरीनी बांटकर जेलख़ानहके कुल क़ैदी छोड़ दिये. दो वर्ष पीछे विक्रमी १९०९ फाल्गुन् शुक्ल ११ [हि० १२६९ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १८५३ ता० २१ मार्च] को महाराजाका देहान्त होगया.

११- महाराजा जशवन्तसिंह.

मौजूदह महाराजा जशवन्तसिंह विक्रमी १९१० आषाढ़ शुक्ल २ [हि० १२६९

ता० १ शव्वाल = .ई० १८५३ ता० ८ जुलाई] को गद्दी नशीन हुए. दूसरे वर्ष कर्नेल हेन्‌री लॉरेन्स साहिब रेज़िडेण्ट राजपूतानहकी हिदायतसे राज भरतपुरमें मुल्की अ़दालतें, तह्सील और थाने अंग्रेज़ी अमल्दारीकी तरह क़ाइम किये गये. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] के ग़द्रमें भरतपुरके अह्लकार साहिब एजेण्टकी सलाहसे ख़ैरख़्वाह बने रहे. विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = .ई० १८५९] में महाराजाकी शादी पटियालाके महाराजा नरेन्द्र-सिंहकी बेटीके साथ हुई. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = .ई० १८६८] की रिपोर्टमें मेजर वॉल्टर साहिबने महाराजाकी बहुत तारीफ़ लिखी, जिसपर दूसरे साल उनको मुल्की इख़्तियारात सर्कारी हुक्मसे मिलगये. अगर्चि कई सालतक पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहपर चलनेकी शर्त की गई, लेकिन् दो वर्ष बाद कर्नेल ब्रुकने इस क़ैदको दूर किया. महाराजाके इख़्तियार मिलनेसे पहिले पटियालावाली महाराणी किसी रंजीदगीके सबब अपने पिताके यहां चली गई थीं, जहांपर कुछ मुद्दतमें उनका और उनके कुंवरका थोड़े दिनोंके फ़र्क़से इन्तिक़ाल होगया.

विक्रमी १९२९ आश्विन [हि० १२८९ रजब = .ई० १८७२ सेप्टेम्बर] में महाराजाके कुंवर रामसिंहका जन्म हुआ; दिल्लीके शहन्शाही दर्बारमें महाराजाको विक्रमी १९३३ माघ कृष्ण २ [हि० १२९३ ता० १५ ज़िल्हिज = .ई० १८७७ ता० १ जैन्युअरी] को जी० सी० एस० आइ० का ख़िताब और तमग़ह सर्कार अंग्रेज़ीसे मिला. विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = .ई० १८८७] में ज्युबिलीके मौक़ेपर महाराजाने अपनी तरफ़से मुबारकबादके वास्ते चार अह्लकार विलायतको भेजे, जो ख़ैरियत और ख़ुशीके साथ वापस आ गये. यह महाराजा कोई दीवान नहीं रखते, राज्यका कुल काम ख़ुद संभालते हैं. इनके राज्यमें दीवान जानी बिहारीलाल राव बहादुर बड़े क़दीम और मश्हूर अह्लकार हैं.
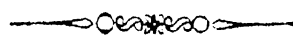
भरतपुरका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३,

अह्दनामह नम्बर ६७, जो सन १८०३ ई० में

क़रार पाया.

अह्दनामह, जो हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल रिचर्ड मार्किस ऑफ़ वेलेज़्ली,

गवर्नर जेनरल इन् कौन्सिल, मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम वाके बंगालाकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी लेफ्टिनेएट जेनरल, जिराई लेक, शाही फ़ौजोंके सिपहसालार और भरतपुरके महाराजा विश्वेन्द्र सवाई रणजीतसिंह बहादुरके दर्मियान क़रार पाया.

शर्त पहिली- महाराजा विश्वेन्द्र सवाई रणजीतसिंह बहादुर, बहादुर जंग और ऑनरेबल कम्पनीके दर्मियान हमेशहके लिये दोस्ती क़ाइम रहेगी.

शर्त दूसरी- हर एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन, दोनोंके दोस्त और दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त तीसरी- गवर्मेएट अंग्रेज़ी महाराजाके मुल्की मुआमलातमें हर्गिज़ दस्ल न देगी, और न कुछ खिराज तलब करेगी.

शर्त चौथी- अगर कोई दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीके इलाक़हपर हमलह करेगा, तो महाराजा इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह उस दुश्मनको निकालनेमें अपनी फ़ौजसे मदद करेंगे, और इसी तरह गवर्मेएट अंग्रेज़ी इक़ार करती है, कि अगर महाराजाके इलाक़हपर कोई बाहिरी दुश्मन हमलह करेगा, तो वह महाराजा की मदद उनकी रियासतकी हिफ़ाज़तके वास्ते अपनी फ़ौजसे करेगी.

इन शर्तोंके अनुसार चलनेका इक़ार इन्जीलके रूसे किया जाता है.

ता० २९ सेप्टेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ ता० ११ जमादियुस्सानी, सन् १२१८ हिज्री को लिखा गया.

(नक़्ल मुताबिक़ अस्लके है.)

(दस्तख़त)- जी० लेक.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलने ता० २२ ऑक्टो-बर सन् १८०३ .ई० को की.

नम्बर ६८.

अह्दनामह, जो भरतपुरके राजासे सन् १८०५ .ई० में किया गया.

दोस्ती और एकताका अह्दनामह जो ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी

और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुर, बहादुर जंगके दर्मियान, हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लॉर्ड लेककी मारिफ़त, हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल रिचर्ड मार्क्विस ऑफ़ वेलेज़्ली, गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके दिये हुए इख्तियारातसे, जो उनको हिन्दुस्तानके तमाम अंग्रेज़ी इलाकों और हिन्दुस्तानकी तमाम मौजूदह अंग्रेज़ी फ़ौजोंकी बाबत हासिल हैं, ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुर, बहादुर जंगके, उनकी ज़ात ख़ास, उनके वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली- हमेशहके लिये मज्बूत दोस्ती और एकता ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम हुई है.

शर्त दूसरी- चूंकि दोनों सर्कारोंके दर्मियान दोस्ती क़ाइम हुई है, इसलिये दोस्त और दुश्मन एक सर्कारके, दोस्त और दुश्मन दोनोंके समझे जायेंगे, और इस शर्तकी पाबन्दीका दोनों सर्कारोंको हमेशह लिहाज़ रहेगा.

शर्त तीसरी- चूंकि कई बातें ऐसी वाके़ हुई हैं, जिनके सबबसे, ऑनरेबल कम्पनी और महाराजा रणजीतसिंहके दर्मियानकी अगली दोस्ती टूट गई थी, और चूंकि अब दोबारह क़ाइम हुई है, इसलिये उन बातोंको दूर करनेकी नज़रसे महाराजा इक़ार करते हैं, कि उनके कुंवरोंमेंसे एक कुंवर हमेशह अंग्रेज़ी अफ्सरके साथ, जो दिल्ली या आगराकी फ़ौजके हाकिम होंगे, उस वक़्तक रहा करेगा, जबतक कि अंग्रेज़ी गवर्मेण्टको महाराजाकी दोस्ती और एकताका इत्मीनान साबित होगा; और ऑनरेबल कम्पनी यह वादह करती है, कि जब उसको गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी निस्बत महाराजाकी दोस्ती व एकतापर इत्मीनान होजायेगा, तो दीगका क़िला, जो हालमें गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके अफ्सरोंके क़बज़हमें है, राजा रणजीतसिंहको वापस दिया जायेगा.

शर्त चौथी- महाराजा रणजीतसिंह वादह करते हैं, कि वह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनीको उस सुलहके एवज़, जो उसने उनसे अब की है, बीस लाख रुपया फ़र्रुख़ाबादी सिक्केका, नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ देंगे; और ऑनरेबल कम्पनी उस नुक्सानकी नज़रसे, जो महाराजाका हुआ है, और उसके मुल्ककी ख़राबी व बर्बादी और इस नज़रसे भी, कि महाराजाने बयान किया है, कि वह उस रुपयेको एक दम अदा नहीं कर सके, मन्ज़ूर करती है, कि वह इस रुपयेको नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुताबिक़ लेगी. और ऑनरेबल कम्पनी यह भी वादह

करती है, कि जब आख़री क़िस्त पांच लाख रुपयेकी अदा करनेके वक्त गवर्मेंएट को महाराजाकी दोस्ती व वफ़ादारीपर भरोसा होजावेगा, तो फिर वह क़िस्त मुआफ़ कीजायेगी.

हालमें एक दम दिया जावे.......................... ३००००० रुपया सिक्कह फ़र्रुख़ाबादी.
दो महीने पीछे.......................... २००००० ,,

५०००००

क़िस्तें.

आख़िर संवत् १८६२, (सन् १८०६ ई० के एप्रिलमें) ३००००० ,,
आख़िर संवत् १८६३, (सन् १८०७ ई० के एप्रिलमें) ३००००० ,,
आख़िर संवत् १८६४, (सन् १८०८ ई० के एप्रिलमें) ४००००० ,,
आख़िर संवत् १८६५, (सन् १८०९ ई० के एप्रिलमें) ५००००० ,,

२०००००० सिक्कह फ़र्रुख़ाबादी.

शर्त पांचवीं- जो मुल्क पहिले महाराजा रणजीतसिंहके क़बज़हमें था, याने अंग्रेज़ी गवर्मेंएटकी अमल्दारीसे पहिले, वह मुल्क अब ऑनरेबल कम्पनी उनको देती है; और ऑनरेबल कम्पनी दोस्तीकी नज़रसे, जो अब आपसमें क़ाइम हुई है, इस मुल्कके क़बज़हमें महाराजासे मुज़ाहमत न करेगी, और न इस मुल्कके एवज़ कुछ ख़िराज तलब करेगी.

शर्त छठी- उस हालतमें, कि कोई दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीके .इलाक़हपर हमलह करनेका इरादह करेगा, तो महाराजा रणजीतसिंह वादह करते हैं, कि जहां तक उनसे हो सकेगा, उस दुश्मनको निकालनेमें मदद करेंगे, और किसी तरहपर वह लिखा पढ़ी, मिलावट या मदद ऑनरेबल कम्पनीके दुश्मनोंकी न करेंगे.

शर्त सातवीं-जोकि इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफ़िक़ ऑनरेबल कम्पनी महाराजाके मुल्ककी हिफ़ाज़त गैर दुश्मनोंके मुक़ाबिलमें करनेकी ज़िम्महदार होती है, इसलिये महाराजा इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि अगर कुछ तक्रार उनके और किसी सर्कार या सर्दारके दर्मियान पैदा होगी, तो महाराजा पहिले उस तक्रारके सबबकी मुफ़स्सल कैफ़ियत अंग्रेज़ी ऑनरेबल कम्पनीको लिखकर भेजेंगे, ताकि सर्कार उसका वाजिबी फ़ैसला इन्साफ़ और पुराने रवाजके रू से करादेनेकी कोशिश करेगी; और

अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िदसे वाजिबी फ़ैसला तै न पावे, तो महाराजा सर्कार कम्पनीसे मददकी दर्ख्वास्त करें, और ऊपर बयान कीहुई हालतमें इस शर्तके मुवाफ़िक़ मदद दीजायेगी.

शर्त आठवीं- महाराजा आइन्दह किसी अंग्रेज़ी या फ़रांसीसी रिआयाको या यूरोपके किसी और बाशिन्देको सर्कार ऑनरेबल कम्पनीकी मन्ज़ूरी बग़ैर अपनी नौकरीमें या अपने पास नहीं रक्खेंगे; और ऑनरेबल कम्पनी भी वादह करती है, कि वह महाराजाके किसी रिश्तहदार या नौकरको, उनकी रज़ामन्दीके विना अपने पास न रक्खेगी.

ऊपरका अ़हदनामह, जिसमें आठ शर्तें हैं, ता० १७ एप्रिल सन् १८०५ ई० मुताबिक़ ता० १६ मुहर्रम सन् १२२० हिज्री और ३ माह वैशाख संवत् १८६२ को मक़ाम भरतपुर वाक़े सूबह अक्बराबादमें हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक और महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुरके मुहर और दस्तख़त होकर मन्ज़ूर हुआ.

जब एक अ़हदनामह, जिसमें ऊपर लिखी हुई आठ शर्तें होंगी, हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके मुहर और दस्तख़तके साथ महाराजा सवाई विश्वेन्द्र रणजीतसिंह बहादुरको दिया जायेगा, तब हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेककी मुहर और दस्तख़तका यह अ़हदनामह वापस होगा.

राजाकी मुहर.	(दस्तख़त)- लेक.	मुहर.

गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलने ता० ४ मई सन् १८०५ ई० को तस्दीक़ किया.

कम्पनीकी मुहर.	(दस्तख़त)- वेलेज़्ली. (दस्तख़त)- जी० एच० बार्लो. (दस्तख़त)- जी० अडनी.	गवर्नर जेनरलकी मुहर.

इन अ़हदनामोंके अलावह एक अ़हदनामह मुज्रिमोंके लेन देनकी बाबत राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ भरतपुरसे भी हुआ है; और गोद लेनेकी सनद भी और रियासतोंके अनुसार मिली है.

तवारीख़ रियासत धौलपुर.

जुग्राफ़ियह.

रियासत धौलपुर पूर्वी राजपूतानहमें एक छोटी रियासत है, जिसका सालानह ख़िराज वग़ैरह सर्कार अंग्रेज़ीसे मुआफ़ है. इसके उत्तरमें सर्कारी ज़िला आगरा; पूर्वमें इलाक़ह ग्वालियर और ज़िला आगरा; दक्षिणमें ग्वालियर, और पश्चिममें राज्य भरतपुर व करौली वाके हैं. कुल राज्यका रक़बह १२०० मील मुरब्बा उत्तर अक्षांश २६°, २२′ व २६°, ५७′, और पूर्व देशान्तर ७७°, १६′ व ७८°, १९′ के दर्मियान फैला हुआ है, जिसकी लम्बाई उत्तर पूर्वसे दक्षिण पश्चिमको ७२ मील और चौड़ाई औसत १६ मील; आबादी २४९६५७ आदमी, सालानह आमदनी ९०००००) रुपया, और फ़ौज सवार व पैदल ३००० के क़रीब है.

ज़मीनकी हालत - इस राज्यका पूर्वी हिस्सह अक्सर बराबर और रेतीला है, और दक्षिणी पश्चिमी भागमें जगह जगह छोटी बड़ी पहाड़ियां फैली हुई हैं. ज़मीन यहांकी अगर्चि ख़राब है, लेकिन् आब पाशीसे पैदावार ठीक होती है. जिस साल बारिश अच्छी होती है, फ़स्ल ख़ूब निपजती है. आंबके दरख़्तोंकी कस्रतसे इलाक़हमें रौनक़ ज़ियादह है. धौलपुरसे चार मील पश्चिम तरफ़ पचगांवमें सिफ़ेद और लाल पत्थरकी खानें हैं.

नदियां - चम्बल नदी, जो इस राज्यकी दक्षिणी पूर्वी सर्हद है, पूर्वकी तरफ़ बहती है, और राज्यकी सर्हदपर साठ मीलके क़रीब बहकर ज़िले आगरा व रियासत ग्वालियरकी हद बनगई है.

बाण गंगा - जो इस इलाक़हमें उटंगन नामसे प्रसिद्ध है, थोड़ी दूरतक सर्हदपर बहने बाद १४ मीलके क़रीब मुल्कके भीतर पूर्व रुख़को जाकर वहांसे इस राज्य और ज़िले आगराके बीच बीस मीलतक सर्हद क़ाइम करती है. दक्षिण की तरफ़से पार्वती नामी एक नाला, जो करौलीके इलाक़हसे निकलकर धौलपुरके राज्यमें दाख़िल हुआ है, इस नदीमें शामिल होता है.

तालाब व झील - इस रियासतमें ३३ से ज़ियादह तालाब हैं; इनमेंसे अक्सर बादशाही वक़्के बने हुए हैं, जिनको मरम्मत वगैरहसे दुरुस्त कराया गया है; और कई नये बनवाये गये हैं. ज़िराअ़तको इनसे बहुत कुछ मदद मिलती है, बल्कि यह कहें, तो कुछ बेजा नहीं, कि ज़िराअ़तकी पैदावारका कुल दार मदार इन्हींपर है. ख़ास धौलपुरमें एक उम्दह तालाब है, और मौज़े ख़ानपुर, धोर, नीमरोल, व पचगांवके तालाब बड़े हैं, जिनसे दो हज़ार बीघाके क़रीब ज़मीन सींची जाती है.

राज्य प्रबन्ध - अगले वक़्तोंमें इस रियासतका इन्तिज़ाम बे क़ाइदह व ख़राब था; अक्सर फ़ौज्दारी मुक़द्दमातकी इत्तिला तक राज्यमें नहीं होती थी, ज़मींदार लोग अपने तौरपर मुद्दई मुद्दआ़अ़लेहोंका फ़ैसलह करके बाहम राज़ीनामह करा लेते थे; और अक्सर पुलिस वाले भी सद्रको इत्तिला किये बिदून खुद फ़ैसले करदेते थे, अगर्चि उनको इस क़द्र मजाज़ नहीं था, क्यौंकि कुल महकमे उस वक़् मौजूद थे. विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में नया इन्तिज़ाम किया गया, उस वक़्से इज्लास ख़ासका महकमह जारी हुआ, जिसमें खुद महाराजा दीवानकी मददसे अपीलकी समाअ़त, संगीन मुक़द्दमोंके फ़ैसले और राज्य सम्बन्धी दूसरे मुआ़मलात तै करने लगे. महकमह पंचायतमें जो इज्लास ख़ासकी शाख़के तौरपर है, कई लोग शामिल हैं, वे कुल मुआ़मलातकी रिपोर्टें अपनी राय समेत इज्लास ख़ासमें भेजते हैं. महकमह मालपर दो हाकिम नियत हैं, जिनमेंसे एकके सुपुर्द मालगुज़ारी व मुआ़फ़ी वगैरह ज़मीनके कामोंकी निगरानी है, दूसरा रियासती ख़र्च वगैरहके हिसाबी कामका मुहतमिम है. अ़दालत दीवानी व फ़ौज्दारीका प्रबन्धकर्त्ता एक ही शख़्स है, जिसको फ़ौज्दारी मुक़द्दमातमें ३ साल क़ैद व ३००) रुपया जुर्मानह और दीवानी मुआ़मलातमें १०००) से ज़ियादह दावेके शुरू मुक़द्दमातकी समाअ़तका इख़्तियार है. इसके तहतमें दो नाइब हैं, जो दीवानी व फ़ौज्दारीका काम जुदा जुदा करते हैं. इनके इख़्तियारातसे बाहर वाले मुक़द्दमोंकी समाअ़त हाकिम करता है; अपील पंचायतमें होता है, और वहांसे खुलासह व राय दर्ज कीजाकर मिस्लें इज्लास ख़ासको जाती हैं. इलाक़ह गैरके लिये एक जुदा महकमह है, जिसमें अंग्रेज़ी इलाक़ह और दूसरी रियासतोंके मुआ़मलात और मुसाफ़िरों वगैरहके इन्तिज़ामकी कार्रवाई तै पाती है. फ़ौजका महकमह पहिले नहीं था, अब क़ाइम किया गया है, जिसमें एक हाकिम मए अ़मलेके नियत है, तन्ख़्वाह बांटनेके सिवा फ़ौजके मुतअ़ल्लिक़ कुल हुक्म उसीकी

मारिफ़त जारी होते हैं. इनके अलावह आबपाशी, साइर, मालगुज़ारी, तालीम, तामीर मकानात वग़ैरह, कई छोटे बड़े महकमे व कारख़ाने हैं.

मद्रसे- रियासतमें आठ मद्रसे हैं, जिनमेंसे १ धौलपुरमें, २ पुरानी छावनीमें, ३ गांव अगाईमें, और पांच मद्रसे पर्गनोंमें हैं. पहिले इस राज्यकी रिआयाको पढ़ने लिखनेका बहुत कम शौक़ था, मगर अब किसी क़द्र होता जाता है. कहीं कहीं ज़मींदारोंने मद्रसोंका आधा ख़र्च देना मन्ज़ूर किया है.

शिफ़ाख़ानह- ख़ास शहर धौलपुर, बाड़ी और राजखेड़ा, तीन मक़ामोंपर एक एक हॉस्पिटल है, मरीज़ोंका .इलाज .उम्दह तौरपर किया जाता है. इसी सरिश्तहसे जाड़ेके मौसममें वेक्सिनेटर मुक़र्रर होकर हर साल शहर व इलाक़हमें टीका लगाते हैं, जिससे चेचककी बीमारीके लिये बहुत कुछ रोक होजाती है.

जेलख़ानह- पहिले राज्य धौलपुरके ज़ियादह मीआद वाले क़ैदी मक़ाम बाड़ीके जेलख़ानहको भेजे जाते थे; लेकिन् विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = .ई० १८७१] में धौलपुरसे पांच मील पुरानी छावनीमें उम्दह आब हवा और मौक़ा देखकर एक बड़ा कुशादह जेलख़ानह तय्यार करा लिया है, जिसमें कुल राज्यके संगीन व कम मीआद वाले क़ैदी रक्खे जाते हैं. चन्द क़ैदी दरी, टाट, व कपड़ा बुनने और रस्से बटनेका काम करते हैं.

ज़मीनका क़बज़ह व महसूल- इस राज्यमें ३८० गांव ख़ालिसहकी मालगुज़ारीमें हैं, उनमेंसे २१० से कुछ ज़ियादह गांवोंवाले सर्कारी जमाके अलावह कुछ रुपया नानकारकी बाबत भी अदा करते हैं, जो मुख़्तलिफ़ शरहसे तक़्सीम होता है. यह नानकार चन्द नम्बरदारोंको राजाकी ख़ैरख़्वाही या किसी सहद वग़ैरहके फ़सादका इन्तिज़ाम करनेके एवज़ बख़्शी गई है. ६१ गांव जागीरदारोंको नौकरीके एवज़ मुख़्तलिफ़ वक़्तोंमें दिये गये हैं, जिनपर हर साल किसी क़द्र सवारोंसे राज्यकी नौकरी करना फ़र्ज़ है. बाज़ लोगोंको जागीर के सिवा नक़्द रुपया भी मिलता है. ४४ गांव मुआफ़ीके हैं, जिनमेंसे ज़ियादहतर ब्राह्मणोंमें बटे हुए हैं; इनसे ख़िराज नहीं लिया जाता. महाराजा धौलपुरके तहतमें दो इलाके याने सरमथुरा और बीजोली ख़िराज गुज़ार हैं, जो सालानह ख़िराजके अलावह राजाको गद्दी बैठनेके समय नज़ानह देते हैं. ये दोनों करौलीके राज्यकी सन्तानमेंसे यादव राजपूत हैं, जो किसी क़द्र ख़ुद मुख़्तार भी हैं. इसी तरह इलाक़ह ग्वालियरके गांव निमरोलवाले भी कुछ

रुपया सालानह अदा करते हैं, मगर वह अस्लमें टांकादार याने ख़िराजगुज़ार नहीं हैं.

तह्सीलें- .इलाक़हके बन्दोबस्तके वास्ते ६ तह्सीलें और १० थाने नियत हैं; हर तह्सीलमें तह्सीलदार व मुहर्रिर रहते हैं. धौलपुर, बाड़ी तथा राजखेड़ाकी दीवानी पर दो दो तह्सीलोंके लिये एक एक मुन्सिफ़ मुक़र्रर है, जिसको १०००) रुपया मालियत तकके दावेकी समाअ़तका इख़्तियार है. तह्सीलदारोंको फ़ौज्दारीमें पांच रुपया तक जुर्मानह और एक हफ्तहकी क़ैदका इख़्तियार है. मुन्सिफ़ों व तह्सीलदारोंका अपील शहरकी अ़दालत दीवानी व फ़ौज्दारीका हाकिम सुनता है.

मश्हूर शहर व क़स्बे.

धौलपुर ख़ास राजधानी, आगरा व ग्वालियरकी सड़कपर आगरेसे ३४ मील दक्षिण, और ग्वालियरसे ३७ मील उत्तरमें वाक़े है. शहरसे एक मील दक्षिण रुख़को चम्बल नदी बहती है, सड़कपर किश्तियोंके ज़रीएसे उतरकर जाना पड़ता है. मगर चार मील ऊपरकी तरफ़ मक़ाम केतरीके पास, जहां उसका पाट पौन मील है, पानी कम गहरा है; बर्सातके दिनोंमें इस दर्याका पानी ज़ियादह चढ़जानेसे दाहिने किनारेपर दूरतक ज़मीन पानीमें डूबजाती है, परन्तु बाएं किनारेपर, जहां क़िला है, ऊंचा होनेके सबब पानी नहीं फैल सक्ता. यहां पुराने ज़मानहकी कई मस्जिदें व मक्बरे हैं. एक मस्जिदकी बाबत लोग कहते हैं, कि इसको विक्रमी १६९१ [हि० १०४३ = .ई० १६३४] में शाहजहांने बनवाया था. दूसरे कई मकान इससे भी पुराने ज़मानहके बने हुए हैं. ये सब मकानात निहायत उ़म्दह हैं, जो इसी .इलाक़हके बढ़िया क़िस्मके पत्थरसे बनाये गये हैं. शहर धौलपुर बहुत पुरानी बस्ती है, जिसकी बाबत इस मुल्कके लोगोंका बयान है, कि दौला नामी एक रईसने इसको आबाद किया था, और उसीके नामपर इसका नाम धौलपुर रक्खा गया. यहांपर एक तालाब (१) है, और उसके पास ही महल, मस्जिद, सैरगाह, कई कुएं और एक बंगला व कुशादह मैदान है.

बाड़ी- यह क़स्बह राज्यके दक्षिणी पश्चिमी हिस्सेमें पहाड़ोंके बीच धौलपुरसे १८ मील पश्चिम रुख़को एक पर्गनहका सद्र मक़ाम है.

राजखेड़ा- यह क़स्बह भी पर्गनहका सद्र है, और धौलपुरसे २३ मील पूर्वोत्तरमें वाक़े है.

मनया- आगरा व ग्वालियरकी सड़कके किनारे, आगरेसे २५ मील दक्षिणको एक बड़ा गांव है.

(१) यह तालाब एक लाल पत्थरके चटानमें खोदा गया है.

रजोरा- आगरा व बाड़ीकी सड़कके किनारे, आगरेसे ३० मील दक्षिण पश्चिममें वाके है.

तवारीख़.

धौलपुर वालोंके बुज़ुर्ग गोहद नाम गांवके रहनेवाले जाट थे, जो क़िले ग्वालियरसे २८ मील उत्तर पूर्वमें है; इस समयसे १५० वर्ष पहिले विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = .ई० १७४०] के पहिलेसे बाजीराव पेश्वाकी ख़िद्मत और नौकरीसे गोहद मक़ामके हाकिम बनगये, और विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = .ई० १७६१] में जब अहमदशाह अब्दालीसे लड़ाई करके मरहटोंका ज़ोर टूट गया, तो इनमेंसे लोकेन्द्रसिंह नामी शख़्सने ग्वालियरको अपने अधिकारमें लाकर राणाका ख़िताब इख़ितयार किया, जिसको दिल्लीके बादशाहकी तरफ़से बख़्शा जाना बयान किया जाता है. मरहटोंने इनको दोबारह तबाह करदिया था, परन्तु सर्कार अंग्रेज़ीकी मदद और हिमायतसे वह फिर बहाल होकर धौलपुरके रईस बनाये गये, जहां उनकी औलादवाले अबतक क़ाइम चले आते हैं.

१- राज राणा लोकेन्द्रसिंह.

विक्रमी १८२४ [हि० ११८० = .ई० १७६७] में मरहटोंमेंसे रघुनाथरावने गोहदको घेरकर तीन लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका लिया और कुछ ख़िराज नियत करके पीछा छोड़ा. विक्रमी १८३६ मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० ११९३ ता० २३ ज़िल्क़ाद = .ई० १७७९ ता० २ डिसेम्बर] को अम्न क़ाइम होनेके ख़यालसे सर्कार अंग्रेज़ीने एक अह्दनामहके द्वारा गोहदके रईस लोकेन्द्रसिंहको अपनी हिमायतमें लिया, और ग्वालियरका क़िला भी मरहटोंसे छीनकर उसके हवाले किया. इस अह्दनामह और रिआयतके तीन वर्ष पीछे रईसका चाल चलन बिगड़ी हुई हालतमें पाया गया, तो सर्कारने उसकी हिफ़ाज़तसे किनारह किया; इस हालतमें माधवराव सेंधियाने उक्त रईससे ग्वालियरका क़िला और मक़ाम गोहद छीनकर उसको क़ैद करलिया. लोकेन्द्रसिंह ना उम्मेदीकी हालतमें मरगया, और २२ वर्षतक बिगड़ी हुई दशामें रहनेके बाद सर्कार अंग्रेज़ीकी मिहर्बानी और सहायतासे उसके बेटेको एक रियासत मिली, जो अब धौलपुरके नामसे प्रसिद्ध है.

२- महाराज राणा कीर्तिसिंह.

विक्रमी १८६० माघ शुक्ल ५ [हि० १२१८ ता० ३ शव्वाल = ई० १८०४ ता० १७ जैन्युअरी] को जब कि अंग्रेज़ी सर्कारने दौलतराव सेंधियाकी बर्ख़िलाफ़ीके सबब उसका अक्सर इलाक़ह दबाया, तो ग्वालियरका क़िला सर्कारी अधिकारमें रखकर गोहद मक़ाम राज राणा लोकेन्द्रसिंहके बेटे कीर्तिसिंहको सौंप दिया; परन्तु विक्रमी १८६२ मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० १२२० ता० २९ शअ्बान = ई० १८०५ ता० २२ नोवेम्बर] को सर्कार अंग्रेज़ीने सेंधियासे सुलह होजानेके सबब ग्वालियर और गोहद दोनों मक़ाम उसको देदिये; इस समय राज राणाका कोई कुसूर न था, इसलिये उनको एक नये अह्दनामहके रूसे तीन पर्गने धौलपुर, बाड़ी, और राजखेड़ा दिये गये, जिससे वह गोहदके एवज़ इस समयसे ८४ वर्ष पहिले धौलपुरके रईस क़ाइम हुए. विक्रमी १८९३ [हि० १२५२ = ई० १८३६] में महाराज राणा कीर्तिसिंहके मरजानेपर उसका बेटा भगवन्तसिंह राजा हुआ.

३- महाराज राणा भगवन्तसिंह.

इन्होंने विक्रमी १८९३ [हि० १२५२ = ई० १८३६] में राज्य पाया, और विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें कई अंग्रेज़ोंको अपनी पनाहमें रखकर सर्कारी ख़ैरख़्वाही साबित की, और इनको राजपूतानहके दूसरे रईसोंकी तरह गोद लेनेकी सनद मिली. थोड़ेसे वर्ष पहिले महाराज राणाने अपने यहांके बनियोंपर महाराजा सेंधियासे मिलावट रखनेका इल्ज़ाम लगाकर जैनके मन्दिरमेंसे पार्श्वनाथकी मूर्ति उखड़वा डाली और उसकी जगह महादेवकी मूर्ति स्थापन करदी. सेंधियाने बड़े ज़ोरके साथ सर्कार अंग्रेज़ीसे इसका एवज़ चाहा; जिसपर सर्कारी तरफ़से महाराज राणाको समझाइश कीजानेके सिवा कोई कार्रवाई नहीं कीगई. विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में महाराज राणाको उनके काम्दार देवहंसने गद्दीसे ख़ारिज करना चाहा, इसपर वह भागकर मददके वास्ते आगरे चले आये; सर्कारने तह्क़ीक़ातके बाद काम्दारको क़ैद करके बनारस भेजदिया. विक्रमी १९२० [हि० १२८० =

ई० १८६३] में रईसने सर दिनकररावके भाई गंगाधरको अपना प्रधान नियत किया, जिसके उम्दह इन्तिज़ामसे क़र्ज़ेहमें बहुत कमी हुई. कुछ अ़रसहके बाद गजरा नामी एक कस्बी महाराज राणाके बहुत मुंह लग गई, और वह उसका कहा मानने लगे, इसपर हर तरहकी शिकायतें सर्कारतक पहुंचीं, और बद चलन लोग रियासतसे निकाले जाकर कस्बीको पोलिटिकल एजेएटकी तरफ़से धमकाया गया, कि राजके मुआ़मलातमें दख़्ल देना उसके हक़में बुरा होगा. विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में महाराज राणाका जवान बेटा, जो अ़य्याशी व बद चलनीसे बहुत ख़राब हालतमें था, और बापसे हमेशह विरुद्ध रहता था, मरगया.

महाराज राणाने बेटेके मरजाने बाद अपने पोतेको, जो विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में पांच वर्षका था, बुरी सुह्बतसे बचाये रक्खा, और उ़म्दह तौरपर पढ़ाना लिखाना शुरू किया, जिससे आगेके लिये बिह्तरीकी उम्मेद नज़र आती थी. विक्रमी १९२६ मार्गशीर्ष शुक्र ३ [हि० १२८६ ता० २ रमज़ान = ई० १८६९ ता० ६ डिसेम्बर] को हुजूर मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तरफ़से महाराज राणाको जी० सी० एस० आइ० (G. C. S. I.) का ख़िताब और तमग़ह मिला; और दूसरे साल वह एडिंबराके शाहज़ादह साहिबकी मुलाक़ात और पेशवाईके लिये कलकत्तेको गये. विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में उक्त रईसने हकीम अ़ब्दुन्नबीख़ांको, जो पटियालासे नाराज़ होकर चला आया था, अपना प्रधान मुक़र्रर किया. इस शख़्सने क़र्ज़ह उतारनेके सिवा फ़ौज्दारीका प्रबन्ध तारीफ़के क़ाबिल किया. यह प्रधान दूसरे साल मरगया, और विक्रमी १९२९ माघ शुक्र १२ [हि० १२८९ ता० १० ज़िल्हिज = ई० १८७३ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को महाराज राणा भगवन्तसिंहके गुज़र जानेपर उनके पोते राज्यके मालिक माने गये.

४- महाराज राणा निहालसिंह.

विक्रमी १९२९ माघ शुक्र पक्ष [हि० १२८९ ज़िल्हिज = ई० १८७३ फ़ेब्रुअरी] में नौ वर्षकी उ़म्रके अन्दर अपने दादाके बाद गद्दीपर बिठाये गये. शुरू वक़्में राव राजा सर दिनकररावने बग़ैर तन्ख़्वाह रियासतका प्रबन्ध किया, फिर मेजर डेनही पोलिटिकल एजेएट निगरानीपर रक्खे गये. विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] तक रईसको दुरुस्तीके साथ शिक्षा दी गई, वह

अंग्रेज़ी, फ़ार्सी, तथा हिन्दीमें किसी क़द्र काम करनेके लाइक़ होश्यार होगये. विक्रमी १९४० [हि० १३०१ = ई० १८८४] में अंग्रेज़ी सर्कारकी तरफ़से महाराज राणाको मुल्की इख्तियारात हासिल होगये हैं, और उनकी मातह्तीमें एक कौन्सिल तमाम राज्यके कारोबारकी निगरानी करती है.

धौलपुरका अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३,

अह्दनामह नम्बर ७२, जो दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी कम्पनी और गोहदके राणा महाराजा लोकेन्द्र बहादुरके क़रार पाया.

अह्दनामह, जो मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम वाके बंगालामें सर्कार कम्पनीकी तरफ़से ऑनरेबल गवर्नर जेनरल व कौन्सिल, बाबत उमूर ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कम्पनी एक फ़रीक़, और दूसरे फ़रीक़ गोहदके राणा महाराजा लोकेन्द्र बहादुरके दर्मियान, उनकी व उनके वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली- सर्कार अंग्रेज़ी कम्पनी और महाराजा लोकेन्द्र बहादुर, और उनके जानशीनोंके दर्मियान हमेशहके वास्ते दोस्ती क़ाइम रहेगी; और नीचे ज़िक्र की हुई बातोंको पूरा करनेकी बाबत इत्तिफ़ाक़ किया जायेगा.

शर्त दूसरी- जब कभी दोनों सर्कारोंमेंसे किसी फ़रीक़के और मरहटाके लड़ाई होगी, और अगर महाराजा लोकेन्द्र बहादुर अपने मुल्ककी हिफ़ाज़त या दूसरे इलाक़ोंको फ़त्ह करनेके वास्ते अंग्रेज़ी कम्पनीसे फ़ौजकी मदद मांगेंगे, तो यह फ़ौजी मदद महाराजाकी तह्रीरी दर्ख्वास्तके मुवाफ़िक़ उतनी दीजायेगी, जितनी कि ज़रूरत समझी जावेगी, और अंग्रेज़ी फ़ौजका कमांडिंग अफ्सर उस जगहका, जो ज़ियादह नज़्दीक होगी, महाराजाकी फ़ौजके साथ उस वक्ततक रहेगा, जबतक कि वह उसको रुख्सत न करेंगे; और ख़र्च इस फ़ौजका बीस हज़ार रुपया सिक्कह मछलीदार बनारसी, या उसकी बराबर क़ीमतवाले किसी दूसरे सिक्केकी माहवारी

क़िस्तोंसे हर एक पल्टन व मामूली तोपख़ानहकी बाबत महाराजा देंगे. और यह ख़र्चा उस वक़से शुरू होगा, जबसे कि उक्त फ़ौज कम्पनीके इलाक़हकी सर्हद या अवधवाले नव्वाबके इलाक़हकी सर्हदसे कूच करेगी, और उस वक़ ख़त्म होगा, जब वह वापस कम्पनी या अवधके नव्वाबकी सर्हदमें दाख़िल होगी; और उसका कूच चार कोस रोज़ानहके हिसाबसे होगा.

शर्त तीसरी- यह फ़ौज महाराजाके भीतरी या बाहिरी मुक़ाबलेमें और मरहटेका इलाक़ह फ़त्ह करनेके वास्ते भी काममें लाई जावेगी.

शर्त चौथी- जो कुछ मुल्क मरहटेका इस अह्दनामहके रूसे कम्पनीकी फ़ौज या महाराजाकी फ़ौजके इत्तिफ़ाक़ या इत्तिफ़ाक़के बिना, और लड़ाई या सुलहसे फ़त्ह होगा, वह उन छप्पन महाल (पर्गनों) के सिवा, जो महाराजाकी जागीरमें हैं, और जो अब भी मरहटाके क़ब्ज़हमें नहीं हैं, इस तौरपर तक्सीम होगा, याने नौ आने कम्पनीके और सात आने महाराजाके; और आमद उस मुल्ककी फ़रीक़ैनके तज्वीज़ किये हुए अमीनोंकी मारिफ़त गुज़रे हुए दस वर्षोंकी औसत आमदनीके हिसाबसे क़रार दीजायेगी; और कम्पनीका हिस्सह, जो इस तरह तज्वीज़ होगा, उसमेंसे तह्सीलका ख़र्च, जो ऐसे मुल्कोंमें होता है, मुज्रा देकर बाक़ी जो कुछ बचेगा, वह महाराजा सालानह ख़िराजके तौरपर अदा किया करेंगे, और मुल्क व क़िला वग़ैरह सब महाराजाके क़ब्ज़हमें रहेंगे.

शर्त पांचवीं- अगर यह बात दुरुस्त व मुनासिब ठहरे, कि सर्कार कम्पनी और महाराजाकी फ़ौज शामिल होकर इत्तिफ़ाक़के साथ मरहटाके मुक़ाबलहमें महाराजाकी सर्हदके बाहर लड़ाई करे, और गवर्मेण्ट इस मज़्मूनकी तह्रीर महाराजा को भेजे, तो महाराजा दस हज़ार सवार लड़ाईके वास्ते देंगे, और दोनों सर्कारें अपनी अपनी फ़ौजका ख़र्च आप करेंगी, और अंग्रेज़ी फ़ौजके अपनी सर्हदकी तरफ़ लौटनेके वक़ अगर महाराजाको अंग्रेज़ी फ़ौजकी ज़रूरत हो, और वह दर्ख़्वास्त देकर उसको अपने वास्ते रोक रक्खें, तो जिस तारीख़से दर्ख़्वास्त दी जायेगी उस तारीख़से अंग्रेज़ी फ़ौजका ख़र्चा महाराजाके ज़िम्मह होगा, और उसी अन्दाज़से ख़र्चा दिया जायेगा, जो अन्दाज़ दूसरी शर्तमें दर्ज है; और महाराजासे उनकी फ़ौज उन मक़ामोंकी लड़ाईके वास्ते, जो इन्दौर और उज्जैनसे आगे वाक़े होंगे, सिवाय महाराजाकी रज़ामन्दी और ख़ुशीके नहीं मंगाई जायेगी, और न लीजायेगी.

शर्त छठी- जब अंग्रेज़ी फ़ौज महाराजाके मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते, या

दूसरे इलाक़हको फ़त्ह करनेके लिये मस्रूफ़ होगी, तो काम उसका महाराजा तज्वीज़ करेंगे, परन्तु उस कामके पूरा करनेका तरीक़ह अंग्रेज़ी फ़ौजके कमांडिंग अफ्सरके इस्तियारमें रहेगा.

शर्त सातवीं - जब कभी कम्पनी और महाराजा दोनोंकी फ़ौजें मिलकर किसी दूरवाले मुल्ककी लड़ाईमें मस्रूफ़ होंगी, तो अंग्रेज़ी फ़ौजके कमांडिंग अफ्सर लड़ाईसे तऋल्लुक़ रखनेवाली हर एक बातमें महाराजासे सलाह किया करेंगे; और जिस बातमें दोनोंकी राय शामिल न होगी वह सिर्फ़ अंग्रेज़ी फ़ौजके कमांडिंग अफ्सरके इस्तियारमें रहेगी, और उसी काममें महाराजाकी हुकूमत उनकी निजकी फ़ौजपर पूरी पूरी रहेगी.

शर्त आठवीं - जब सर्कार कम्पनी और मरहटाके दर्मियान सुलह होजायेगी, तो महाराजा भी उस अह्दनामहमें एक फ़रीक़ माने जायेंगे, और उनका .इलाक़ह, जो इस वक्त उनके क़बज़हमें है, मए क़िला ग्वालियरके, जो क़दीमसे महाराजाके खानदानमें चलाआता है, अगर उस वक्त भी उनके क़बज़हमें होगा, और जितना इलाक़ह उन्होंने लड़ाईमें हासिल किया होगा, और जो शर्तोंके मुवाफ़िक़ उस वक्त उनके पास रहनेके लाइक़ होगा, वह सब ज़िक्र किये हुए अह्दनामहके रूसे उनके क़बज़हमें रक्खा जायेगा.

शर्त नवीं - महाराजाके मुल्कमें कोई अंग्रेज़ी कारखानह क़ाइम न होगा, और कोई नामी शख्स अंग्रेज़ी कम्पनीकी तरफ़से, या कोई शख्स गवर्नर जेनरल और कौन्सिलकी तरफ़से लाइसेन्सके द्वारा महाराजाकी रज़ामन्दीके विना नहीं भेजा जायेगा, और न उनकी रऋय्यत सिपाहियानह कामके लिये मज्बूर कीजायेगी, और न उन पर महाराजाके हुक्मके सिवा किसी दूसरेका हुक्म वाजिब होगा.

फ़ोर्ट विलिअम मक़ाममें तारीख़ २ डिसेम्बर सन् १७७९ .ई० को इसपर मुहर और दस्तख़त हुए.

नम्बर ७४.

गोहदके राणाका अह्दनामह जो सन् १८०४ .ई० में क़ाइम हुआ.

अह्दनामह दोस्ती और एकताका दर्मियान ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके, जिसके रूसे ऑनरेबल कम्पनी वादह करती है, कि वह गोहदका मुल्क और दूसरे इलाके महाराज राणाको देती है, और उनका क़बज़ह हाकिमानह तौरसे उनपर रहेगा; और जिसके रूसे

महाराज राणा ऑनरेबल कम्पनीकी कुमकी फ़ौज रखनेका वादह करते हैं, ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल रिचर्ड मार्किस वेलेज़्ली, नाइट ऑफ़ दि मोस्ट ऑनरेबल इलस्ट्रिअस ऑर्डर ऑफ़ सेण्ट पेटेरिक, वन ऑफ़ हिज़ ब्रिटैनिक मैजेस्टीज़ मोस्ट ऑनरेबल प्रिवी कौन्सिल, कप्तान जेनरल, और हिन्दुस्तानकी कुल मौजूदह फ़ौज खुश्कीके सिपह्सालार, और गवर्नर जेनरल इन कौन्सिल, मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम वाके बंगालाके दिये हुए इख्तियारातसे एक तरफ़ हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक, मुल्क हिन्दुस्तानकी मौजूदह अंग्रेज़ी फ़ौजोंके सिपह्सालार, और दूसरी तरफ़ महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह बहादुरके, उनकी ज़ात ख़ास और उनके वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली– हमेशहके वास्ते ऑनरेबल कम्पनी और महाराज राणा कीर्तिसिंह बहादुर और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान दोस्ती और एकता क़ाइम हुई है; इसलिये उस दोस्तीके लिहाज़से एक फ़रीक़के दोस्त और दुश्मन दोनों फ़रीक़ोंके दोस्त और दुश्मन समझे जायेंगे.

शर्त दूसरी– ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करती है, कि वह महाराज राणा कीर्तिसिंहका उसके मौरूसी मुल्क गोहद और नीचे लिखे हुए ज़िलोंपर हाकिमानह क़ब्ज़ह करा देगी, और ये सब ज़िले उनके और उनके वारिसों और जानशीनोंके क़ब्ज़हमें बिना ख़िराज, सर्कार ऑनरेबल कम्पनीकी ज़मानतसे रहेंगे :–

ग्वालियर ख़ास.	तअल्लुक़ह मालावा.	भौंदा.
आंतरी वग़ैरह, पांच महाल.	" जगनी.	लेहार वग़ैरह, जिसमें ज़िला गंज व काहटी शामिल है.
	सराय जुल्ला.	
आंतरी.	ढूंदरी.	लेहार.
चमक.	अनहोन.	रामपुर.
लवान.	नूराबाद.	ककसीस.
सलवाई और चम्नो.	अटोरा.	खतौंदा
अम्बापुर.	बहादुरपुर.	बकसा.
समोली.	बिलौठी.	गोपालपुर.

परिहारगढ़ वगैरह, जिसमें तअ़ल्लुक़ह सरवारी शामिल है	कुरवास.	गूजरा.
	हवेली गोहद.	कटौली.
तअ़ल्लुक़ह चतोर.	बीहट.	लावान बड़ी.
पर्गनह बीद मए उसके तअ़ल्लुक़ोंके.	तअ़ल्लुक़ह सुकल्हारी.	पर्गनह नोह.
	,, अमान.	पर्गनह बीटवा.
पर्गनह फोम्प.	इन्दरकी.	तअ़ल्लुक़ह देवगढ़.
तअ़ल्लुक़ह अमरी.	भांदरी.	

शर्त तीसरी - ऑनरेबल कम्पनीके सिपाहियोंकी तीन पल्टनें हमेशह महाराज-राणाके साथ उनके मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते रहेंगी, और उनका ख़र्च महाराज-राणा महीनेके महीने ऑनरेबल कम्पनीको पच्चीस हज़ार रुपया फ़ी पल्टनके हिसाबसे, याने पचहत्तर हज़ार रुपया सिक्कह लखनऊ, या उसके बराबर क़ीमत वाला कोई दूसरा सिक्कह माहवार, या नौ लाख रुपया सालानह दिया करेंगे; अगर महाराज-राणा किसी माहवारी क़िस्तके जमा करानेमें मज्बूर रहेंगे, तो ऑनरेबल कम्पनीकी गवर्मेण्टको इख्तियार हासिल रहेगा, कि वह किसी शख़्सको अपनी तरफ़से आमदनी मालगुज़ारी मुल्कमेंसे उक्त रुपया वुसूल करनेके लिये निगरां मुक़र्रर करे.

शर्त चौथी - महाराज राणा इक़ार करते हैं, कि क़िले और शहर ग्वालियरका क़बज़ह हमेशह गवर्मेण्ट ऑनरेबल कम्पनीके मुतअ़ल्लिक़ रहेगा, और उक्त गवर्मेण्टको यह भी इख्तियार रहेगा, कि ख़ास गोहदके अलावह राणाके मुल्कमें किसी क़िलेमें जब कभी जहां वह चाहे या मुनासिब समझे, वहां ऑनरेबल कम्पनीकी फ़ौज क़ाइम करे, और क़िले गोहदके सिवा राणाके मुल्कमें जिस क़िलेको वाजिब समझे उसको तुड़वा डाले.

शर्त पांचवीं - ऑनरेबल कम्पनी कुछ ख़िराज उस मुल्कका, जो महाराज-राणा कीर्तिसिंहको दियाजाता है, तलब न करेगी.

शर्त छठी - अगर किसी वक़्त ऑनरेबल कम्पनीका कोई दुश्मन उस मुल्क पर, जो अब हिन्दुस्तानके अन्दर ऑनरेबल कम्पनीके क़बज़हमें है, हमलह करने का इरादह करे, तो महाराज राणा इक़ार करते हैं, कि वह अपनी तमाम फ़ौज उक्त गवर्मेण्टकी मददके वास्ते देंगे, और ख़ुद उस दुश्मनको निकालनेमें पूरी कोशिश करेंगे, और दोस्ती व एकताके सुबूतकी कोई बात बाक़ी न छोड़ेंगे.

शर्त सातवीं - चूंकि इस अहदनामहकी दूसरी शर्तके मन्शासे ऑनरेबल कम्पनी ज़ामिन होती है, कि वह राणाके मुल्ककी हिफ़ाज़त बाहिरी दुश्मनके मुक़ाबलेमें करेगी, इसलिये महाराज राणा इस तहरीरके ज़रीएसे इक़ार करते हैं, कि अगर कोई तक्रार आपसमें उनके और किसी दूसरी सर्कार या सर्दारके हो, तो महाराज राणा पहिले उस तक्रारकी वजह गवर्मेएट कम्पनीपर ज़ाहिर करेंगे, ताकि गवर्मेएट उसका वाजिबी फ़ैसलह करानेकी कोशिश करे; अगर दूसरे फ़रीक़की ज़िदसे वाजिबी फ़ैसलह न होने पावे, तो महाराज राणाको इख़्तियार होगा, कि वह अंग्रेज़ी फ़ौजको, जो मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते मुक़र्रर है, उस दूसरे फ़रीक़के मुक़ाबलेके लिये काममें लावें.

शर्त आठवीं- अगर्चि महाराज राणाको अपनी फ़ौजपर पूरी हुकूमत हासिल है, लेकिन् तो भी वह इस तहरीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि लड़ाईके वक्त कम्पनीकी फ़ौजके कमान्डरकी सलाहसे काम करेंगे.

शर्त नवीं- महाराज राणा किसी अंग्रेज़ी या फ़रांसीसी रिआयाको, या यूरोपके किसी और बाशिन्देको किसी तरह अपनी नौकरीमें या अपने पास बग़ैर रज़ामन्दी गवर्मेएट अंग्रेज़ीके न रक्खेंगे.

ऊपरका अहदनामह, जिसमें नौ शर्तें दर्ज हैं, हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेकके मुहर व दस्तख़तसे बयाना मक़ामपर ता० १७ जैन्युअरी सन् १८०४ ई० मुताबिक़ ता० ३ शव्वाल सन् १२१८ हिज्री मुवाफ़िक़ २० माह माघ (माघ शुक्ल ५) संवत् १८६० को, और महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके मुहर व दस्तख़त से ग्वालियर मक़ामपर ता० २९ जैन्युअरी सन् १८०४ ई० मुताबिक़ ता० १५ शव्वाल सन् १२१८ हिज्री मुवाफ़िक़ ३ माह फाल्गुन् (फाल्गुन कृष्ण ३) संवत् १८६० को सहीह होकर मन्ज़ूर हुआ. जब एक अहदनामह ऊपर लिखी हुई नौ शर्तोंका हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल मार्किस वेलेज़्ली, गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके मुहर और दस्तख़त होकर महाराज राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरको दिया जायेगा, तब यह अहदनामह हिज़ एक्सिलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेकका मुहरी व दस्तख़ती वापस किया जायेगा.

गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर.	राणाकी मुहर.

ता० २ मार्च सन् १८०४ ई० को तस्दीक़ हुआ.

नम्बर ७५.

गोहदके राणाका अह्दनामह, जो
सन् १८०६ ई० में क़रार पाया.

अह्दनामह दर्मियान ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराज सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके, जिसके रूसे गोहदका मुल्क और क़िला वगैरह राणा कीर्तिसिंह ऑनरेबल कम्पनीको देते हैं, और जिसके रूसे ऑनरेबल कम्पनी राणा कीर्तिसिंहको धौलपुर, बाड़ी और राजखेड़ाके ज़िलोंकी हुकूमत देती है, ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से ऑनरेबल सर ज्यॉर्ज हिलेरो बार्लो बैरोनेट, हिन्दुस्तानके कुल अंग्रेज़ी इलाक़ोंके गवर्नर जेनरलके दिये हुए इरिंतयारातसे एक तरफ़ मिस्टर ग्रीम मर सर और दूसरी तरफ़ महाराजा सवाई राणा कीर्तिसिंह लोकेन्द्र बहादुरके उनकी व उनके वारिसों और जानशीनोंकी तरफ़से क़रार पाया.

शर्त पहिली - चूंकि एक अह्दनामह दोस्ती और एकताका ता० २९ जैन्युअरी सन् १८०४ ई० मुताबिक़ ता० १५ शव्वाल सन् १२१८ हिज्री मुवाफ़िक़ ३ माह फाल्गुन (फाल्गुन कृष्ण ३) संवत् १८६० को ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराज राणा कीर्तिसिंहके दर्मियान हुआ था, जिसके रूसे दोनों फ़रीक़ोंके फ़ायदों पर नज़र रक्खी गई थी; और चूंकि लाचारीके सबब महाराज राणा मुल्क गोहद वगैरहका बन्दोबस्त करने और उन शर्तोंके पूरा करनेमें, जो ऑनरेबल कम्पनीके साथ मददगार फ़ौजका ख़र्चा अदा करनेकी बाबत क़रार पाई थीं, मज्बूर रहे; और फ़रीक़ैनके फ़ायदोंपर ख़याल न रहा, इसलिये ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजा कीर्तिसिंह इस तह्रीरके ज़रीएसे मन्ज़ूर करते हैं, कि ऊपर ज़िक्र किया हुआ अह्दनामह रद और ख़ारिज समझा जावे.

शर्त दूसरी - महाराज राणा इस तह्रीरके ज़रीएसे इक़ार करते हैं, कि वह गोहदके मुल्क और क़िले व दूसरे इलाक़ोंका क़बज़ह, जो उनको पहिले अह्दनामह के रूसे मिले थे, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके अफ्सरोंको देते हैं, और उनको इरिंतयार है, कि जिस तरह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी चाहे, उस तरह उसका बन्दोबस्त करें.

शर्त तीसरी - ऑनरेबल कम्पनी इस ख़यालसे, कि अगले अह्दनामहकी शर्तें महाराज राणाकी तरफ़से लाचारीके सबब पूरी नहीं हुई थीं, अब ख़ुशीके साथ उनके वास्ते काफ़ी पर्वरिश तज्वीज़ करती है, और इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह

करती है, कि धौलपुर, बाड़ी, और राजखेड़ाके ज़िले मुवाफ़िक़ तफ़्सीलके, जिसमें इन ज़िलोंके मुतअ़ल्लक़ कुल गांव (१) अ़लह्दह अ़लह्दह दर्ज हैं, महाराज राणा और उनके वारिसों व जानशीनोंको देती है, जिनकी पूरी हुकूमत उनके इख़्तियारमें रहेगी; और महाराज राणा अपनी तरफ़से इक़ार करते हैं, कि वह अपने .इलाक़हके नज़्दीक वाले किसी सर्दारसे, बख़्शे हुए पर्गनोंकी पुरानी हद्दोंकी बाबत तकार न करेंगे, और हद्दें वही क़ाइम रहेंगी, जो बख़्शनेके वक़्त होंगी.

शर्त चौथी- चूंकि इस अ़ह्दनामहकी तीसरी शर्तके रूसे धौलपुर, बाड़ी व राजखेड़ाके पर्गने दर्ख़्वास्तके मुवाफ़िक़ महाराज राणाको दिये गये हैं, और उनमें कोई हुक्म अंग्रेज़ी अ़दालतका जारी न होगा, और न कुछ मुतालबह उनकी बाबत ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से पेश होगा; इसलिये महाराज राणा इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह उन तमाम मुक़द्दमोंका फ़ैसलह, जो दाइर होंगे, चाहे वे .इलाक़हके भीतर या बाहर वाके हुए हों, अपने ज़िम्मह रक्खेंगे; और कुछ ज़िम्मह्दारी मदद या हिफ़ाज़तकी निस्बत ऑनरेबल कम्पनीके नहीं रहेगी.

ऊपर लिखा हुआ अ़ह्दनामह, जिसमें चार शर्तें दर्ज हैं, फ़रीक़ैनकी मन्ज़ूरीके मुवाफ़िक़ मक़ाम ग्वालियरमें ता० १९ डिसेम्बर सन् १८०५ .ई० मुताबिक़ ता० २८ रमज़ान सन् १२२० हिज्री मुवाफ़िक़ १४ माह पौष (पौष कृष्ण १४) संवत् १८६२ को ख़त्म होकर तै हुआ, और उसपर मिस्टर ग्रीम मरसर और महाराज राणा कीर्तिसिंहके मुहर और दस्तख़त आगराके पास ता० १० जैन्युअरी सन् १८०६ .ई० मुताबिक़ ता० १९ शव्वाल सन् १२२० हिज्री और मुवाफ़िक़ ६ माह माघ (माघ कृष्ण ६) संवत् १८६२ को होकर फ़रीक़ैनमें तक्सीम हुआ.

जब एक अ़ह्दनामह, जिसमें ऊपर लिखी हुई चार शर्तें दर्ज होंगी, ऑनरेबल गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके मुहर व दस्तख़तसे महाराज राणा कीर्तिसिंहको दिया जायेगा, तब यह अ़ह्दनामह मिस्टर ग्रीम मरसरके मुहर व दस्तख़तका वापस होगा.

राणाकी मुहर.

---

(१) इस अ़ह्दनामहके आख़िरमें हर एक ज़िलेके मुतअ़ल्लक़ अ़लह्दह अ़लह्दह कुल ६६० गांवोंकी फ़िह्रिस्त दर्ज है, जो तवालतके ख़यालसे यहां पर दर्ज नहीं कीगई.

इस अह्दनामहको ऑनरेबल गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलने ता० ८ मार्च सन् १८०६ ई० को तस्दीक़ किया.

कम्पनीकी मुहर.

(दस्तख़त)- जी० एच० बार्लो.
(दस्तख़त)- जी० अडनी.
(दस्तख़त)- जे० लम्सडन.

ऊपर लिखे हुए अह्दनामोंके अलावह मुज्रिमोंके लेन देनकी बाबत एक अह्द-नामह होकर गोद लेनेकी सनद भी राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुताबिक़ इस रियासतको मिली है, लेकिन् पहिले बाज़ जगह दर्ज होजानेके सबब यहां उनको छोड़ दियागया.

शेष संग्रह नम्बर १.

उदयपुरके सूर्यपोल दर्वाज़े भीतर संध्यागिरिके मठसे पश्चिम तरफ़ एक छोटे शिवालयकी प्रशस्ति.

श्रीरामजी

स्वस्तिश्री गुणेशायजी प्रसादात् ॥ श्री एकलिंगजी प्रसादात् ॥ श्रीमत् उदयपुर मेदपाट राज्ये महाराणा श्री जगत्सिंह सुत राणा परतापसिंह तस्यात्मज गोब्राम्हण प्रतिपाल धर्मावतार महदगुणालंकृत सूर्यवंशोद्भव राणा श्री राजसिंहजी राज्ये सस्वनगरोदयपुर मध्ये वसित ब्राह्मण सनावड जाति त्रवाडी पौलोदी गोत्र त्रवाडी देबकरणजी तस्यात्मज मयारामजी तस्य भार्या पाठक गोत्रे वदरी तस्य पु० धन्याबाई कुक्ष्ये पुत्र शिवदासजी तस्य श्री हरिहरकी आगा विष्णु देवालये शिवनारायण मूर्त्ति स्थापित द्वितीय शिवदेवालय श्री महादेव शिवेश्वर स्थापित पूजा नैवेद्य बालभोग श्री शिवनारायण अर्पण धरती वीघा ४ शिव पधरा देवरा पधते अगणाई सुध आगले मंदिर सुध रामार्पण पूजा करसी सो पावसी संवत् १८१२-१६७७ मास माघ सुद ५ गुरुवासरे देवरो परणायो.

शेष संग्रह नम्बर २.

उदयपुरमें प्रभुवारातणकी बाड़ीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीरामजी.

सजयति सिन्धुरवदनः सदनमगम्ये सितार्थसिद्धीनां ॥ यस्यस्मृतिरपि जगतां त्वरितं दुरितं विदूरयति ॥ १ ॥ यत्पदपंकजरेणु र्जडताजलधिं विशिष्यशोषयति ॥ वितरतु शुद्धिं वचसां सा देवी शारदा वरदा ॥ २ ॥ मुखमुखरितवेणुक्वाणसन्मूर्छनाभि र्विधुरितदुरितौघः श्टण्वतां भक्तिभाजाम् ॥ सजलजलदजालश्यामलः काम लीलाविलुलितवनमालः पातु वः पीतवासाः ॥ ३ ॥ स्वस्तिश्रीमदसीमदोर्वलगलद्दर्वप्रणम्राखिलक्ष्माभृन्मौलिमहोपलद्युतिततिभ्राजिष्णुपादांबुजः ॥ भास्वद्वंश विभूषणं त्रिभुवनोदंचत्प्रतापोज्वलः क्षात्रे कर्मणि कर्मठो विजयते देवोऽरिसिंहः कृती ॥ ४ ॥ तस्याजानुभुजाभृतः क्षितिपते र्भूरिप्रमोदास्पदं सच्छीलव्रतशालिनी सविनया सौजन्यमाबिभ्रती ॥ गोविप्रातिथिदेवसेवनविधौ श्रद्धावती भास्वती वर्वर्ति प्रभुसंज्ञयेह विदिता वारातणी श्रेयसी ॥ ५ ॥ महीभृदन्तःपुरमाननीया महामहीदोजकुलप्रसूता ॥ महीयसीं सच्चरितैः प्रसिद्धिं महीतले सौ प्रभुराजगाम ॥ ६ ॥ प्रसादमासाद्य महीमहेन्द्रात् प्रभुस्तनूभूस्तुलसाभिधस्य ॥ प्रसन्नमूर्त्तेर्गरुडध्वजस्य प्रासादमेनं रचयांचकार ॥ ७ ॥ एतद्दैवतगेहगामिजगदन्तर्यामिपादस्व-

लत्स्वर्गगाझरनिर्भृतावनिरुहच्छायासमाच्छादिता ॥ पाथ : संभृतये गताभिरभित : पौरांगनाभिर्व्रता भात्येषा प्रभुसुभ्रुवा परकृते निर्मापिता वापिका ॥ ८ ॥ पुरन्दरपुरोपमोदयपुरैकभूषायितं सुरायतनमुल्लिखत्खतलमारचय्य प्रभु : ॥ द्विजान्निगमपारगान् समुपहूय शुद्धे तिथौ ववर्ष वसुवृष्टिभि : कृतवती प्रतिष्ठाविधिम् ॥ ९ ॥ सैतत्सुरालयविहारिमुरारिभक्तिक्लृप्तिप्रलीनकलिकिल्विषवैष्णवानाम् ॥ वस्तुं व्यचीक्लृपदिमाममितोवहंती मद्दैः श्रियं सुललितामिह धर्मशालाम् ॥ १० ॥ देवालयममुमिमां धर्मशालां च वापिकाम् ॥ प्रभू : परोपकारार्थ मेककालं व्यचिक्लृपत् ॥ ११ ॥ भूरिद्रव्यव्ययेन प्रभुरतिशयितं धर्मकर्मार्जयन्ती प्रासादं धर्मशालामुपवनसहितां वापिकां कल्पयित्वा ॥ नालं चक्रेमुमेकं शिखरविनिहितस्वर्णकुंभेन शंके स्वीयां जातिं स्वकीयं कुलमपि सकलं सा मनुष्यावतारम् ॥ १२ ॥ श्री ठाकुरजीरो सेवन बाबो दयारामदास निरंजणी : (सुतार जीवो भवानीदासजी) (१) अथ प्राकृतं'' महाराजा धिराज महाराणाजी श्रीअरिसिंहजीरी निवाजसी महीदोज तुलसारी बेटी धर्म मूर्ति बाई श्री प्रभु श्री ठाकुरजीरो यो देवरो तथा या वावड़ी तथा या धर्मशाला हाटां सुधी निर्माण करायो ॥ बाई प्रभुरा भाईरो नाम खेतो, भतीजो शिवजी, महता लखमीचन्दजीरे आगेचे कमठाणो करायो, कामदार शिवजी पोखरणो, गजधर दीपचन्द गणपतरो गोतभंगोरो, प्रोत जीवो पञ्चार भोपजी, पोरवाड गुलाबजी, कामबतो करायो, श्री ठाकुरजीरी वणी ज्यो चाकरी कीदी, समसत कमठाणा सुदी रुपीया ६२५२) हजार छह दोइ से बावन खरच्यां, देवरारी प्रतिस्टा कीदी : जदी : बामणाने जीमाया, तथा न्यात जिमाई, तथा कन्या २ परणाई, थुआदार कामदार तथा कारीगरांहे दुसाला दीधा, अतीत भगताहे जीमाया, तथा थुरमा पामडी चादर ओढाया. संवत् १८१९ ज्येष्ठ शुदी १४ दिने श्री भद्र भूयात् ॥

शेष संग्रह नम्बर ३.

उदयपुरके हाथीपौल दर्वाज़े बाहर चौगानके पास पश्चिम दिशाको पार्श्वनाथके मन्दिरमें मूर्तियोंके नीचेकी

प्रशस्ति.

स्वस्ति श्री नृप विक्रमार्क संवत् १८१९ वर्षे शालीवाहन शाके १६८४ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे माघमासे शुक्ल पक्षे ५ बुधवासरे श्रीमत् उदयपुर वास्तव्य

(१) ब्रेकेट्के भीतर वाले अक्षर पीछेसे जगह पाकर किसीके खोदे हुए मालूम होते हैं.

मेदपाट देशे इक्ष्वाकु वंशे शीशोद्या गोत्रे चित्रकोट गढपति महाराणा श्री अरिसिंह विजयराज्ये तस्य नगर वास्तव्य ऊषा वंशे व्रद्विशाषायां नवलषसेण पालदेकुलपत्तने षरतरवंशहीकृत जिनवर्द्धनसूरि उपदेशात् संवत् १४९२ वर्षे कारितं महाराणा कुंभकर्ण राज्यमध्ये महाद्रव्यव्ययं कारितं नागदा नगरे अदबुद तीर्थ कारितं लष्य ११ द्रव्य षर्च्यो तस्य कुलेकुलावतंसक नवलषासाह वहमान तस्य भार्या विमलादे तस्य पुत्र जिनधर्मरतसुश्रद्धारत्न त्रयीधर्मवल्लभ पुण्यपवित्र साह कपूरचंद वर्द्धमान स्वपरसम्यक् त्वहितकाराय स्वभवनिर्मलीकरणे कर्मक्षयकारक अनाद चैत्रीसीमध्ये प्रथमप्रभुश्रेणिको जीव श्री महावीर भक्तिवशेन तीर्थंकर नाम कर्मोपार्जित तस्याभिधान पदमनाभ तीर्थंकर कारितं जंगमयुग प्रधान चक्रचूडा मणि दोयहजार च्यार वर्त्तमान चोवीसीमध्ये एकावतारि श्री जिनधर्मप्रभाविकपुण्य सहायक दोष निवारक अग्न्यानविध्वंसक स्वपरहितकारक दुष्षसहिष्णुप्रवर्त्तमान सद्धर्मसूरिभि प्रतिष्ठितम् लिखित महा उपाध्याय श्री हीरसागर ठाणि प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु (१).

शेष संग्रह नम्बर ४.
उदयपुर धायभाईके पुलपरके मन्दिरमेंकी
प्रशस्ति.

श्रीरामो जयति.

श्री गणेशायनमः ॥ श्री एकलिंगजीप्रसादात् श्री रूपनाराणजीप्रसादात् स्वस्ति श्री महाराजधिराज महाराणा श्री श्री अरिसिंहजी विजयराज्ये राणा श्री अरिसिंहजीरे धोओजी श्री नगजी जाति पगार ॥ नगजीरे बहु बाई नगी जाति चहुवाण, जिणरे पुत्र तीन, बड़ा धायभाई श्री रूपजी ॥ धायभाईजी कीकोजी, धायभाईजी जोधोजी. धायभाईजी रूपजीरे बहू पूरबाई ॥ जाति पचोलण, जिणारा पुत्र २, उदयरामजी ॥ हदूजी ॥ उदयरामजीरे बहु मयाबाई. धायभाईजी श्री रूपजी श्री एकलिंगजीरे गेले नदी ऊपरे पुला बंधावी. श्री रूपनारायणजीरो देवालय कीधो, सराय कीधी, बावड़ी कीधी. बाडी कीधी, संवत १८१८ वर्षे माघ शुद ११ शुक्रवाररे दिन पायो भरावारो सुमूर्त्त कीदो; संवत १८२० वर्षे वैशाख शुद ६ सोमवार पुण्य नक्षत्र

(१) इस मूर्तिके पासवाली दूसरी मूर्तियोंके नीचे भी लेख हैं, लेकिन् यहांपर यह एक ही दर्ज किया गया है, क्योंकि उनमें इससे ज़ियादह मत्लब कुछ नहीं पाया जाता.

इणी दिन प्रतिष्ठा कीधी. अणी उछव ऊपरे श्री दिवाणजी, कुंवरजी, राजलोक, भाई बेटा, उमराव, समस्त लोकवाक सहित शराय पधारया, दिन ७ सुधी रह्या, गोठ आरोग्या. धायभाईजी श्री रूपजी श्री दिवाणजीरी निजर कीधा. हाथी ५, घोडा ५, छोगो १ हीरारा जडावरो, तथा गहणो, सिरोपाव, तथा रोक रुप्या तथा कुंवरजी, राजलोक, भाई बेटा, उबराव, कामदार, पासवान, समस्त लोकवाक ने सिरपाव दीधा, पहरावणी कीधी. रूपारी तुला कीधी. मेवाडथी न्यात बुलावेने न्यात मेलो कीधो. कन्या परणावी. चोरासी न्यात जीमावी. अनेक दान पुन्य कीधा; वीघा १० धरती, वीघा २ मेरपाली, जमे वीघा १२ श्री रूपनारायणजीरे बाल भोग सारू चढावी. सेवग फतेराम रूप्या ३५०००) समस्त कमठाणा (का) लागा रुप्या ९५०००) प्रतिष्ठा कीधी जणी समय षरचाणा.

—o—

श्रीरामो जयती.

श्लोक ॥ विश्वेश्वरं सगिरिजं सगणाधिराजं सोमेश्वरो द्विजवरो विबुधांश्च नत्वा श्री रूपजित्कृतसुरालयसेतुशालावापीप्रशस्तिरचनाक्रममातनोति ॥ १ ॥ विविध विभवदृद्धिभासमान मुदयपुरनगरोत्तमं विभाति ॥ क्षितिवलयविभूषणं समंतादुपवनदेवनिकेतनाभिरामं ॥ २ ॥ रूपेणाप्रतिमोयथा रतिपतिः कांत्या कलानां पतिः शत्रौसंयमनीपतिः प्रभुतया स्यातः सुराणां पतिः श्रीमत्शंभुपदारविंदमकरंदामोदभृंगीपति र्यत्राभात्यरिसिंहनामनृपतिर्यस्तेजसाहर्पतिः॥ ३ ॥ धीरोवीरोमाननीयो मनस्वी दाता भोक्ता पुण्यशीलोदयालुः भक्तोविष्णोः शक्तिमान् सर्वकार्ये धात्रीभ्राता रूपजिद्राजतेसौ॥ ४ ॥ नद्यास्तोये मज्जतां मानवानां सौख्यायासौरूपजित्सेतुबन्धं यावचन्द्रादित्यताराधरित्र्य स्तावत्कीर्त्तिस्थंभतुल्यंससर्ज ॥ ५ ॥ रक्षोवधाय मुनिदेवगणावनाय रामः ससर्ज जलधाविह सेतुबन्धं ॥ भक्तस्य तच्चरणयो रुचितोस्य धात्रीबन्धो सुखायजगतां भुवि सेतुबंधः ॥ ६ ॥ कवित ॥ माथेपैं मुकट लपट रह्यो हीरनसुं कंचनके कुंडल चिबुक चित लायो है। बागो जरतारीको किनारीदार फेटो कटि हाथमे लकुट बनबंसी बजायो है ॥ कहत भोपराम सुण उत्तम विचार नर नगतेरे नेह हूने पंछी जुगायो है । संप चक्र लिये प्रभू पधराये हैं तातें रूपजीका देहरा रूपराजने बणायो है ॥ १ ॥ तोरणकी नोष देष षुरो अनोप बण्यो डोली उपरंत जासुं बंगला सरसाई है। बेरचकी तीर तीर बंसीवारो आय षरो सुंदर बंधी हे बाव सो कइलासपुरी याइ है ॥ भणे भोपराम अमर कीनो कुलमें

नाम देहरेकी सरस छवि रूपने बणाई है। सांचो नगराज धवा माये धनभाग तेरे नंदने सुंदर पुल बंधाई है ॥ २ ॥ कामदार रोड़जी नागोरी भाई गोडजी कोथली धर हरकिसन फतेराम जात पल्लीवाल ॥

शेष संग्रह नम्बर ५.

मेवाड़के सालेड़ा ग्राममें पूर्व दिशावाली बावड़ीपर महादेवजीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

श्री गणेशायजी प्रसादात् ॥ श्री एकलिंगजी प्रसादात् ॥ सिद्ध श्री महाराजा धिराज महाराणाजी श्री श्री श्री श्री श्री अरिसिंहजी विजयराज्ये धऊवाजी नगजी जात पगार, धायजी बाई नगी जात चहुवाण, जणारे पुत्र ३ तीन, बडा धायभाई रूपजी, जणाथी ल्होडा कीकोजी, जणाथी ल्होडा जोदोजी. धायभाई रूपाजी गाम सालेरे परण्या पंचोली किसनाजीरी बेटी पूरबाई, जात पंचोली. पूरबाईरे पुत्र २, बडा उदयरामजी. ल्होडा हटूजी, बेटी गंगाबाई, उदयरामजीरी बहु मयाबाई जात छादोली, बाई पूरा गाम सालेरा मांहे पीहरछे, जणी थी महादेव जीरो देवरो कराव्यो, ने पूराबाईरी माऊ चांपूबाई जातकी कसाणी, जणी बावडी करावी ने देवरो तथा बावडीरो डोरो प्रतिष्ठा साथेही कीधी, संवत् १८२९ वर्षे वेशाख शुद ८ रवौरे दिन हुवी, कामरो आरंभ संवत् १८२३ रा चेत शुद ५ रे दिन कीधो थो मास १३ काम चाल्यो, कमठाणो तथा व्यावहे रुपिया हज़ार सात ७०००, लागाछेजी ॥ अथ कवित ॥ भस्म लगाये अंग पारबती लिये संग वाघंबर ओढे खाल नाग लपटाये है। कंचनसे देहरे विराजे आय शंभुनाथ सब किये पूरे आस पूरेसर कहाये है ॥ जटा मांहि गंगा रहै बैल बाके संग रहै सींगी अर नाद पूरे डमरू बजाये है। पोपनकी गुंजमाल परे है तेरे द्वार आरती करोनी पूरा भोले शंभु आये है ॥ १ ॥ धन तेरो भाग कांक सपुत्री अनोप जाय सालेरा लडाये सुंदर देहरो बणायो है। चंदके प्रकाश लिये पंचोलण किशना पुत्री करोने उछाव रघुरूप बर पाये है ॥ कहै भोपराम अब कहा लों करे बखाण ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों नाद ल्याये है। बैलपै चढते पारवती संग लियां काशीको वासी पूरा तेरे द्वार आये है ॥ २ ॥ पोपनकी गुंज माल पैराई थी श्री गोपाल चंदन तुमेरेसो काढी केसरकी खोर है। प्रभूके हुकमसूं

उदयराम हुए कुंवर ध्रुव जुं अटल रहो भाइनकी जोर है ॥ कहे भोपराम कहालुं बखाण करूं कृष्ण संग राधिकाजु रूप बर मोर है। अटल रहो सुभाग भाग भ्रू जुं अटल रहो पूरबाई पूरो पूज्यो वीं पूजी गणगोर है ॥ ३ ॥ सहा लखमीचंदजी समरथजीरा बेटा कामदार जात सिंगवी, गजधर रामोजी जात मेवाडा गोत भगोर, किसनाको बेटो देवो वे पीथो वे नंदो.

शेष संग्रह नम्बर ६.

कोल्हापुरके शिलहार वंशका ताम्रपत्र, जो बम्बई ब्रेञ्च ऑफ़ दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल नं० ३५ पृष्ठ २५ में दर्ज है.

॥ स्वस्ति श्रीर्जयश्चाभ्युदयश्च ॥

जयति स कश्यपसूनुर्य्यः पीयूषं जहार जित्वेन्द्रं ॥ जीमूतवाहनं प्रति नागानंदं चयः कृतवान् ॥ श्री शैलाहारवंशांबरतरणिरुदेतिस्म मित्राब्जबंधुर्व्विद्विड्ध्वांतप्रहारो जतिगनृपतिरस्यात्मजो नायिवर्म्मा तस्याभूच्चंद्रराजः प्रियतमतनयः शौर्य्यसंपन्निवास : स्तस्याऽपत्यं विरेजे जतिगनृपतिरस्यात्मजोगोंकराज : तद्भ्राता गूवलो राजा निर्जितारिव्रजोऽभवत् तद्भ्राता विद्विषां जेता कीर्त्तिराजो नृपोव्यभात् मारोवारवधूजनस्य समदद्विट्कुंभिसिंहो रणे यस्मात्तद्रदितो भवत्क्षितिपतिः श्री मारसिंहाह्वयः पुत्रो गोंकनृपस्य सत्पनिलयो लंकेश्वर श्चाज्ञया चक्रेशप्रिय मातुलोऽतुलगुणः श्री रूपनारायणः तदात्मजो गूवलदेवनामा नयांबुधिः क्षात्रगुणैकभूमिः जयांगनालिंगितबाहुदण्डो बभूव नित्यं कुनृपप्रचंडः तस्यनुजन्मा विनतावनीशसत्कुंतलाल्यावृतपादपद्म : श्रीभोजदेवोरिपुवीरनारीवैधव्यदीक्षाकरणैकदक्ष : तद्भ्राता सुभगांगनारतिपतिर्ब्बल्लालभूपालक : किं वर्ण्यः खलु यद्यशोधवलयद्यावापृथिव्योर्वपुः दृष्ट्वाहर्निशमात्मनश्च किरणानिंदुप्रमुष्टान्दिवा लज्जोपार्जितहृत्कलंकमधुना धत्तेऽयमंकच्छलात् तस्यानुजन्मा सुचिरंचकास्ते श्री गंडरादित्य नृपोजगत्यां विद्विष्टदुष्टावनिपालराजिघोरान्धकारक्षरणैकलक्षः अवार्यतेजास्सततोदयो यो मनोमयानन्तविचित्रवाजी रात्रिंदिवं संपरिभासमानस्समाननामानमधः करोति पीनांभोजश्रियं कुर्वन्नुदितः खेचरेश्वरः गंडरादित्य भूपालो विद्विड्ध्वांतांतकस्सदा राजन्नीरेजहस्तो विबुधततिनुतस्सोदयः प्रत्यहञ्च प्राविर्भूतात्मतेजोनुविचरितजनोनात्मकार्यप्रवृत्त : क्षोणीमेनामनून . [।] मनुदिनमधिकं भासयन्नासमंत्तादेकस्सो व्याप्ततेजाः खचरगणमणिर्गंडरादित्यदेवः

समधिगतपंचमहाशब्दमहामंडलेश्वरः तगरपुरवराधीश्वरः श्री शिलाहारनरेन्द्रः जीमूतवाहनान्वयप्रसूतः सुवर्ण गरुडध्वजः मरुवंकसर्पः अय्यनसिंगः रिपुमं-[ा] डलिक भैरवः विद्विष्टगजकंठीरवः इडवरादित्यः रूपनारायणः शनिवारसिद्धिः गिरिदुर्गलंघनः कलियुगविक्रमादित्यः श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-समस्तनामावलिविराजितः श्रीमन्महामंडलेश्वरो गंडरादित्यदेवः मिरिंजदेशं ससप्तखोल्लं सकोंकणमेकच्छत्रेण दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनपुरः सरं सधर्म्मेणोपभुंजानः एडेनाडांतर्ग्गतीररवाडग्रामे (क्री) डानुवृत्या सुखसंकथाविनोदेन विजयराज्यं चिरं कुर्व (न्) शकनृपकालातीतद्वात्रिंशदुत्तरसहस्रे विरोधिसंवत्सरे माघशुद्ध दशम्यां मंगलवारे नानागोत्रेभ्यः षोडशविप्रेभ्यः कन्यादानं कृत्वा तत्पाणिग्रहण समये वंकवने खोल्लांतर्गत गुडायनाम ग्रामे गालगुट्टि सजया पत्न्या प्रविष्टया सह वर्तमाने खोल्लश्रुद्धि क्षेत्रमानदंडेन निवर्तनत्रयेणैकैकांवृत्तिं कल्पयित्वा षोडषवृत्तीः समन्वितैकनिवेशनाः समदात् । श्रीप्रयागे लक्षब्राह्मणान्भोजयित्वा तद्भोजनाधिष्ठाय कामवृत्तिमेकामयच्छत् तत्संवत्सरोपरितनविकृतसंवत्सरवैशाखपौर्णमास्यां सोमग्रहणपर्वणि पंचलांगलव्रतं कृत्वा तदंगदाक्षि (णा) तया वृत्तिद्वयं ददातिस्म। मिरंजदेशांतर्गतं इरुकुडिनामग्रामे निजनिर्मितगंडसमुद्राख्यतटाकोपकंठे निजप्रतिष्ठितेश्वरबौ (बु) द्धार्हद्भ्यः प्रत्येकमेकैकं निवर्तनमिति त्रिभ्यः त्रिणि निवर्तनानि प्रददौ गुडालयग्राममूलिकाय निवर्तनानि चत्वारि व्यतरत् गुडालेश्वरदेवाखंड-प्रदीपार्थमग्निष्टिकाग्निप्रगुणनार्थं प्रपोदकप्रदानार्थं सौपर्णतांबूलार्थं च वृत्तिमेका-मददात् । गुडालेश्वरदेवस्य पूजायै निवर्तनमेकं पूर्वप्रसिद्धमेव प्रतिपालितवान् तद्ग्रामपश्चिमदिशि प्रतिष्ठितमहादेवस्य पूजायै पूर्वप्रसिद्धं निवर्त्तनार्द्धं प्रतिपालितवान् एवमनेकविधभूमिदानेन सवृक्षमालाकुलं ग्रामं धारापूर्व्वकमाचंद्रतारमापुत्रपौत्रिकं सशासनमयच्छत । तस्य सीमा आग्नेयां दिशि पर्वताग्रे पणुतरगे खोल्लस्यसीमा तत्पश्चिमतो मयूरवप्पयया दक्षिणतो म्यसानकप्राकारः तत्पश्चिमतो लघुश्रोतोभूतो नदिप्रवाहो यावच्चंदनकालसंगमः तद्दक्षिणस्यां दिशि खदिरस्थाणुः तत्पश्चिमतस्तटाकपालिः प्रमाणं तद्दक्षिणतः अगबाल यस्य खलयं प्रमाणं तद्दक्षिणतः मणि यवप्पाः प्रमाणं ततः प्रागुक पणुतरगेखोल्लस्यसीमा प्रमाण मिति ।

मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा पापादपेतमनसो भुवि भूमिपालाः ये पालयन्ति मम धर्ममिदं समस्तं तेभ्यो मया विरचितोंजलिरेष मूर्ध्नि सामान्यो ऽयं धर्म्मसेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः

यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य तदा फलम् स्वदत्तां परदत्तां वायो हरेत वसुंधरां षष्टिवर्षसहस्त्राणि विष्टायां जायते कृमिः गामेकां र (क्ति) कामेकां भूमेरप्येकमंगुलम् हरन्नरकमाप्नोति यावदाभूतसंप्लवम् समधिगतन्यायार्णवसीम्ना दीर्णान्यवादिकुमहिम्ना श्रीदामोदरनाम्ना रचितमिदं शासनं जयति समधिगतशिल्पशास्त्रः कण्डरणकलापसर्वज्ञः लिखितांभोरुहगर्तः शासनमिद मलिखदप्योज्जः यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च व्योमचाम्बुधयस्तथा तावच्च श्रीशिलाहारशासनं जयताद्ध्रुवम्

शेष संग्रह नम्बर ७.

ग्वालियरके क़िलेमें पद्मनाथके मन्दिरकी
प्रशस्ति.

काव्यमालाकी प्राचीन लेखमालाके पृष्ठ ८१ से ९६ तक.

॥ ॐ नमः पद्मनाथाय ॥ हर्षोत्फुल्लविलोचनै र्दिशि दिशि प्रोद्गीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततं ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् ॥ श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्रीपद्मभूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्मलवपुः श्वेत निरुद्धश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः ॥ दर्शयन्निव केशस्थनवजीमूतकर्णिकाम् ॥ २ ॥ मुक्ताशैलच्छलेन क्षितितिलकयशोराशिना निर्मितोऽयं देवः पायादुषायाः पतिरतिधवलस्वच्छकान्तिर्जगन्ति ॥ मन्वानः सर्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामतापह्नवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतटमिलन्नीलकान्त्या बिभर्ति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैष भगवान् ॥ उपाकर्णोत्तंसीकरणसुभगं नीलनलिनं वहत्यद्याप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्वीर्यलघूकृतेन्द्रतनयो निःशेषभूमीभृतां वन्द्यः कच्छपघातवंशतिलकः क्षोणीपतिर्लक्ष्मणः ॥ यः कोदण्डधरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगां गामेकः पृथुवत्पृथूनपि हटादुत्पाट्य पृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्वज्रधरोपमः क्षितिपतिः श्रीवज्रदामाभवद्दुर्वारोर्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युधा ॥ निर्व्याजं परिभूय गाधिनगराधीशप्रतापोदयं यद्वीरव्रतसूचकः समभवन्नोद्घोषणाडिण्डिमः ॥ ६ ॥ नतुलितः किल केनचिदप्यहं जगति भूमिभृते

तिकुतूहलात् ॥ तुलयतिस्म तुलापुरुषैः स्वयं स्वमिह यः सुविशुद्धहिरण्मयैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा नृपोऽभवन्मङ्गलराजनामा ॥ य ईश्वरैक प्रणतिप्रभावान्महीश्वराणां प्रणतः सहस्रैः ॥ ८ ॥ श्रीकीर्तिराजो नृपतिस्ततोऽभूद्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः ॥ धूलीवितानैः सममेव चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमभूद्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोऽस्यकथाद्भुतं नरपतेरेतेन शौर्याब्धिना दण्डो मालवभूमिपस्य समरे संख्या मतीतोजितः ॥ यस्मिन्भङ्गमुपागते दिशि दिशि त्रासात्करायच्युते ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्तनिकरैः संछादयांचक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः सिंहपानीयनगरे येन कारितः ॥ कीर्तिस्तम्भ इवाभाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥ तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्भुवनपाल इति प्रसिद्धः ॥ आनन्दयञ्जगदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुल्यकीर्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि भूपालां सर्वां पालयतः प्रभोः ॥ भुवं त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमभूज्जगत् ॥ १३ ॥ राज्ञी देवव्रता तस्य हरेर्लक्ष्मीरिवाभवत् ॥ तस्यां श्रीदेवपालोऽभूत्तनयस्तस्य भूपतेः ॥ १४ ॥ त्यागेन कर्ण मजयत् पार्थं कोदण्डविद्यया ॥ धर्मराजं च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १५ ॥ सूनुस्तस्य विशुद्धबुद्धिविभवः पुण्यैः प्रजानामभून्मांधातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालप्रभुः ॥ मत्स्वाम्येऽपि करप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन् दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणत्सान्द्रैश्चमूरेणुभिः ॥ १६ ॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशादाशां गतैर्दक्षिणामुत्क्षिप्ताचलसंनिभानविरतं यत्सैन्यवाजिव्रजैः उद्धृतान्यततः पयोधिमभितः संप्रेक्ष्य रेणूत्करान्भूयोऽप्युद्भटसेतुबन्धनधिया त्रस्यन्ति नक्तंचराः ॥ १७ ॥ यस्येन्दुद्युति सुन्दरेण यशसा नीते सुराणां गणे वैवर्ण्यं भ्रमशीलखण्डनभयादप्राप्नुवन्तः प्रियान् ॥ नूनं शक्रपुरः सरामरवधूसंघाः श्रिये सांप्रतं गौर्यै च स्पृहयन्ति ये प्रथमतः पत्युर्वपुः संश्रिते ॥ १८ ॥ कैर्दृष्टाः क्व समस्तवाञ्छितफलभ्राजिष्णवः पादपा गावः कामदुघाश्च कैः क्व मणयः कैश्चिन्तितार्थप्रदाः ॥ पूर्णाः कस्य मनोरथा इह न के पत्यामुना पूरिता वीरोऽधोऽनयदस्य तद्गुणवतः कल्पद्रुमादीनपि ॥ १९ ॥ स्तुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षिता भूः प्राप्तोऽन्यथापि यदसौ वत नग्नभावः ॥ दौःस्थ्यान्निरम्बरतनुर्विपिनेष्वशोच यस्य प्रातिक्षणमिति प्रतिपन्थिसार्थः ॥ २० ॥ भ्रमः कुलालचक्रेषु लोभः पुण्यार्जनेष्वभूत् ॥ काठिन्यं कुचकुम्भेषु यस्मिञ्शासति मेदनीम् ॥ २१ ॥ असंमतोदूढगुणस्य पीडा साधुर्न निस्त्रिंशपरिग्रहोऽपि ॥ इत्याललम्बे न धनुर्न चासिं तथापि यो वैरिगणं जिगाय ॥ २२ ॥ सद्यस्त्रुतास्रपृषतव्यतिकीर्णभूषु वैरिद्विपाधिपशिरोमणिभिः समन्तात्

॥ लोकानुरागयशसामिव बीजवापं विस्तारयां यदसिरास रणाजिरेषु ॥ २३ ॥ वने यदरिनारीणां हैमनीरजनिश्रियः ॥ भृङ्गाणां तन्मुखेनातो हैमनीरजनिश्चयः ॥ २४ ॥ स विमृश्य नदीपूरगत्वरे संपदायुषी ॥ पूर्तधर्मे मतिं चक्रे जिघृक्षु रनयोः फलम् ॥ २५ ॥ प्रजाभर्त्रा तेन क्षितितिलकभूतेन सदनं हरेर्धर्मज्ञेन त्रिदशसदृशा कारितमदः वदाम्यस्योच्चैस्त्वं कथमिव गिरा यस्य शिखरं समारूढः सिंहो मृगमिव मृगाङ्कस्थमशितुम् ॥ २६ ॥ प्रासादस्यास्य शश्वद्विधुधरशिखरि स्पर्धिनो हैममण्डं दण्डाग्रात्पावनीयं शशधरधवला वैजयन्ती पतन्ती ॥ निर्वातं भाति भूतिच्छुरितनिजतनोर्देवदेवस्य शंभोः स्वर्गाद्गङ्गेव पिङ्गस्फुटविकटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ २७ ॥ तदेतद्ब्रह्माण्डं स इह भविता पङ्कजभवः पुनर्यं वोढास्मो (रो) वयमिह विमानेन वियति ॥ सुवर्णाण्डं हंसास्तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिसदनमूर्ध्नि स्थितममी ॥ २८ ॥ तुङ्गिम्ना कनकाचलः शुभविधावन्तः स्थित श्रीपति र्बिभ्राणो द्विजसत्तमानुदधिजा वासो नृसिंहान्वितः ॥ निर्मातास्य ततः समस्तविबुधै र्लब्धप्रतिष्ठैरयं प्रासादश्च धरातले सममहो कल्पंहरेः कल्पताम् ॥ २९ ॥ देवेऽर्धसिद्धे द्विजपुंगवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्टसु पद्मपालः ॥ युवैव दैवप्रतिकूलभावात्सक्रन्दनार्धासनभाग्बभूव ॥ ३० ॥ तस्य भ्राता नृपतिरभवत्सूर्यपालस्य सूनुः श्रीगोपाद्रौ सुकृतनिलयः श्रीमहीपालदेवः ॥ यं प्राप्यैव प्रथितयशसं तावभूतां सनाथौ शौर्यत्यागौ हरिरविसुताभावदुःस्थौ चिरेण ॥ ३१ ॥ स्टष्टिं कुर्वन्नमात्यानां विप्राणां स नृपः स्थितिम् ॥ प्रलयं विद्विषामासी द्ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः ॥ ३२ ॥ यत्र धामनिधौ राज्ञि पालयत्यवनीतलम् ॥ नभास्वान्भास्करादन्यो न राजान्योविधोरभूत् ॥ ३३ ॥ कृताभिषेकं सद्वृत्तैरुपविष्टं नृपासने ॥ यमुदार पदैरेव तुष्टुवुः सूतमागधाः ॥ ३४ ॥ त्वामुद्वहन्ति शिरसा खलु राजहंसाः स्टष्टास्त्वया पुनरिमाः समयावसन्नाः ॥ नाथ प्रजाः सुमनसां प्रथमोऽसि कोऽसि त्वंसिद्धवीररस तामरसोद्भवस्य ॥ ३५ ॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिन्हं पाणिद्वयं वहसि भूप भुवं बिभर्षि ॥ श्यामं वपुः प्रथयसिस्थि तिहेतुरेक स्त्वं कोऽसि नीतिविजितोद्धव माधवस्य ॥ ३६ ॥ त्वं पालयस्य निशमर्थिजनस्य कामं रामः श्रिया त्वमसि नाथ गुणैरनन्तः संकर्षणः समिति विद्विपदायुपस्त्वं त्वं कोऽसि सच्चरितहाल हलायुधस्य ॥ ३७ ॥ स्याता रतिस्तव निजप्रमदासु नित्यं रूपं तवातिशय विस्मयकारि देव ॥ त्वं मीनचिन्हपुरुषोत्तमसंभवोऽसि कस्त्कं क्षितीशवर शम्बरसूदनस्य ॥ ३८ ॥ भूभृत्सुतापतिरसि द्विषतां पुराणां भेत्ता त्वमीश वृषपोपरतोऽसि नित्यम् ॥ भूतिं दधास्यमलचन्द्रविभूषिताङ्गः

कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शंकरस्य ॥ ३९ ॥ त्वं तेजसा शिखिनमिद्धमध : करोषि शक्तिं दधासि नरदेव विपत्तिहन्त्रीम् ॥ त्वं तारकं रिपुबलस्य बलान्निहंसि कस्त्वं नवीनबलनीलगलध्वजस्य ॥ ४० ॥ त्वं वज्रभृत्त्वमसि पक्षभिदप्यशेष भूमिभृतां विबुधवन्द्यगुरुप्रियोऽसि ॥ श्रीमत्सुवर्णगिरिदुर्गचरोऽसि कोऽसि त्वं भीमसाहस-सहस्रविलोचनस्य ॥ ४१ ॥ ख्यातं तवेश बहुपुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकाबलिभि-राप्ततमैश्च गुप्ता ॥ त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोऽसि सद्गुणनिधान ध-नाधिपस्य ॥ ४२ ॥ तेजोनिधिस्त्वमसि भूमिभृत: समग्रा: क्रान्ता: करै: प्रस-भमुग्रतरैस्तवेश ॥ प्राप्तोदय: सततमर्थिजनस्य कोऽसि त्वं कल्पभूरुहसरोरुहबा-न्धवस्य ॥ ४३ ॥ आनन्ददोऽसि जनतानयनोत्पलानामाप्यायिताखिलजन: करमार्दवेन ॥ त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तलदत्तपाद स्तत्कोऽसि मर्त्यभूवनेशनिशाकरस्य ॥ ४४ ॥ त्वामंशमीश निगदन्ति मधुद्विषोऽमी श्यामाभिरामतनुरस्यमलप्रबोध: ॥ पुण्यं च भारतमिदं विहितं त्वयैव त्वं कोऽसि सत्यधन सत्यवतीसुतस्य ॥ ४५ ॥ नीतात्मकीर्तिसुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तं त्वयोन्नतिमसौ गमित: स्ववंश: ॥ पूर्वेप-वित्रतनवो विहिताश्वकोऽसि त्वं सत्सुलब्धपरभाग भगीरथस्य ॥ ४६ ॥ एतत्व-या कृतमताडकमाशु विश्वं व्याप्ता मही हरिभिरीशमनोजवैस्ते ॥ पुण्यावतारकरण क्षतदुर्दशास्यस्त्वंकोऽसि दत्तरिपुलाघवराघवस्य ॥ ४७ ॥ धर्मप्रसूस्त्वमसि सत्यधनस्त्वमेक स्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्त: ॥ त्वंकोऽसि विप्रजनसेवितशेष-वृत्ति: संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य ॥ ४८ ॥ त्वंभूरिकुञ्जरबलोभुवनैकमल्ल विद्याविभूषिततनु र्नृप पावनोऽसि ॥ प्रच्छन्नसूपकृतिसंभृतबन्धुवाञ्छ: कस्त्वं कवीन्द्रकृतमोद वृकोदरस्य ॥ ४९ ॥ एकस्त्वमीश भूवि धन्वभृतांवरिष्ठ: सस्वामि-कारिगणदर्पहरस्त्वमाजौ ॥ गन्धर्वराजपृतनाविजयाप्तकीर्ति स्त्वंकोऽसि सुन्दर पुरंदरनन्दनस्य ॥ ५० ॥ दुर्योधनारिबलदर्पहतस्तवेश यत्न: पराजनयश: प्रसरं निरोद्धुम् ॥ त्वं कोऽसि सूर्यजनितप्रमदार्थिसार्थदौर्गत्यकर्तन विकर्तनसंभवस्य ॥ ५१ ॥ रत्नालयस्त्वमसि धाम गभीरताया स्त्वं पासि पार्थसमभूमिभृत: प्रवि-ष्टान् ॥ अन्त: स्थितस्तव हरि: सततं नरेश कस्त्वंवितीर्ण रिपुजागर सागरस्य ॥ ५२ ॥ शौर्यैकभू: क्रमसमागतसत्वृत्ति स्त्वंराजकुञ्जरशिर: प्रवितीर्णपाद: ॥ दृप्तारिभास्करतिरस्कृतिसिंहकाभू: कस्त्वंमहीपतिमृगाङ्क मृगाधिपस्य ॥ ५३ ॥ दानं ददासि विकटोन्नतवंशशोभ स्त्वं दन्तपालिकरवालहतारिदर्प: ॥ क्षोणी-भृतो जयसि तुङ्गतया नरेन्द्र त्वं कोऽसि वैरिबलवारण वारणस्य ॥ ५४ ॥ सद्म श्रियस्त्वमसि मित्रकृतप्रमोद स्त्वं राजहंससमलंकृतपादमूल: ॥ स्वामिन्नध:

कृतजडो ऽसि गुणाभिरामः कस्त्वं स्मिताढ्यमुखपङ्कज पङ्कजस्य ॥ ५५ ॥ सत्पत्रभूषिततनुः सुविशुद्धकोश स्त्वं चन्द्रकान्तिसमलंकृतकान्तमूर्तिः ॥ ख्यातं तवैव कविवल्लभ सौमनस्यं त्वं ब्रूहि कः समरभैरव कैरवस्य ॥ ५६ ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि शश्वन्मङ्गल्यभूस्त्वमसि निर्मलताभिरामः को ऽसि प्रसीद वद सद्गुणरत्नयोनि स्त्वंकच्छपारिकुलभूषण भूषणस्य ॥ ५७ ॥ धात्रा परोपकरणाय विसृष्टकाय सच्छायजन्मसमलंकृततुङ्गगोत्रः । ब्रूहि त्रिसंध्यमवनीश्वरवन्दनीय स्त्वं को ऽसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य ॥ ५८ ॥ नाथः कृतद्विजपति र्न गदान्वितोसि ऽनत्वं विशुद्धहृदय प्रथितोग्रमायः । त्वंजातु न क्षतवृषो न जडे कृतास्थ स्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथंते ॥ ५९ ॥ नित्यं संनिहितक्षयः स तमसा प्रायो ऽभि भूयेत स त्वत्त्रासाद्भुवनैकनाथ हरिणस्तस्योदरे प्राविशत् मूर्त्तिस्तस्य कलङ्किता सजडतां धत्ते स दोषाकरशब्दस्ते विदितस्तथापि नृपते राजात्वमित्यद्भुतम् ॥ ६० ॥ एकेनोत्तर गोग्रहे विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यासेन स्तुतिरर्जुनस्य विहितेत्यज्ञायी पूर्वं किल तत्सम्यक्प्रति भाति सप्रति पुनः श्रीमन्महीपाल न स्त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ ६१ ॥ किंब्रूमो ऽविकलत्वमीश भवतस्त्वं नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपते चतस्टणा मात्म प्रियाणां शृणु कीर्त्तिर्भ्राम्यति दिक्षु गीर्गुणवतां कण्ठे लुठत्यादृता मर्यादारहिता मही द्विजसुहृद्गेहे रता श्रीरपि ॥ ६२ ॥ किंचित्रं भुवनैकमल्ल यदियं मन्दाकिनी पद्मभूर्लोकादुद्धरता भगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं पुनरेतदीश यदितो निम्नान्महीमण्डलादूर्ध्वं कीर्तितरङ्गिणी कमलभूलोकं त्वया प्रापिता ॥ ६३ ॥ चित्रं नात्र सलक्षण स्त्वमकरोः सर्वात्मना विद्विषोदेवप्रत्ययलोपमाशु विशिखैः संमूर्छितस्याहवे क्रोधाद्भैरवमूर्तिरुल्लसदसि क्रूरप्रहाराद्भुते रस्यत्वं यदनीनशः प्रकृतिमप्येतन्ननाश्चर्यकृत् ॥ ६४ ॥ अत्यम्बुधि भवद्धैर्यमत्यादित्यं भवन्महः अतिसिंहं भवच्छौर्यमतः केनोपमीयसे ॥ ६५ ॥ केयूरं तव भूपाल भुजदण्डे विराजते किरीटमिव वा क्षन्तर्निवासि विजयश्रियः ॥ ६६ ॥ यदर्चायां नित्यं त्रिभुवनगुरो स्तोत्रमकृथा स्तदेष प्रीतस्त्वां ध्रुवमकृत कल्पस्थितिमिह यदुत्सङ्गे तुङ्गे तव लुठति चंद्रांशुविमला प्रलम्बव्याजेन क्षितितिलक तारावलिरियम् ॥ ६७ ॥ वैतालिकै रित्थमभिष्टुतेन संपूजितामर्त्यगुरुद्विजेन विमुक्तकारागृहसंयतेन वितीर्णभूताभयदक्षिणेन ॥ ६८ ॥ तेनाभिषिक्तमात्रेण प्रतिजज्ञे द्वयंस्वयम् पद्मनाथस्य संसिद्धिः कन्यायाः सद्वरार्पणम् ॥ ६९ ॥ तच्च द्वयं कृतमनेन विवेकभाजा राजात्मजा मदनपालवराय दत्ता श्रीपद्मनाथसुरमन्दिरमेतदुच्चै र्नीतं समाप्तिमविनाशि यशः शरी

रम् ॥ ७० ॥ समर्धिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान्विधायावनिदेवमुख्यान् । प्रवर्तितं सत्रमतन्द्रितेन मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ ७१ ॥ श्रीपद्मनाथस्य स लोकनाथश्चक्रिद्वयं भूपतिचक्रवर्ती नैवेद्यपाकाय विपक्वबुद्धिः प्रादात्प्रदीपाय च गोत्रदीपः ॥ ७२ ॥ ब्रह्मोत्तरं मण्डपिकासमुत्थं द्वेधा विधाय स्वयमीश्वरेण । श्रीपद्मनाथाय वितीर्णमर्धं मर्धं च वैकुण्ठ सुरेश्वराय ॥ ७३ ॥ विलासिनीवादकगायनादेर्यथार्हतः पादकुलस्य वृत्तिम् । स पद्मनाथस्य पुरः समग्रामकल्पयत्प्रेक्षणकाय भूपः ॥ ७४ ॥ पाषाणपल्लीं प्रविभज्य सम्यग्देवाय सार्धानि पदानि पञ्च । संपादयामास तथा द्विजेभ्यः सार्धचतुर्विंशतिमुत्तमेभ्यः ॥ ७५ ॥ ददौ करस्वं खरवारखेटं महीपति स्तत्र भवं समस्तम् । आकाशपातालसमुद्भवं च देवद्विजेभ्यो लवणाकरं च ॥ ७६ ॥ तस्यादृष्टसहायतामुपगतो योगेश्वराङ्गोद्भवः स्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपते : सर्वत्र विश्वासभूः । आधारो विनयस्य शीलभवनं भूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य कृत ज्ञतैकवसतिः सौजन्यकोशालयः ॥ ७७ ॥ तत्प्रत्ययेन निदधे निखिलानि धर्मकार्याणि धर्मनिरतः स नरेन्द्रचन्द्रः । विप्रः सनि : स्पृह तया गुणगौरवेण चित्तं विवेश समवृत्तितया च राज्ञः ॥ ७८ ॥ महीपालेनये विप्रास्तस्मिन्ग्रामे प्रतिष्ठिताः तेषां नामानि लिख्यन्ते विस्तरः शासनोदितः ॥ ७९ ॥ देवलब्धिः सुधीराद्यस्तथा श्रीधरदीक्षितः । सूरिः कीर्तिरथः सार्धपदिनोऽस्य द्विजास्त्रयः ॥ ८० ॥ गङ्गाधरो गौतमश्चामलकोऽथ गदाधरः । देवनागो वसिष्ठश्च देव शर्मा यशस्करः ॥ ८१ ॥ कृष्णो वराहस्वामी च गृहवासः प्रभाकरः । इच्छाधरोमधुश्चैव तिल्हेकः पुरुषोत्तमः ॥ ८२ ॥ रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः । अष्टादशैते विप्राश्च पदिनः शड्ढलो द्विजः ॥ ८३ ॥ पादोनपदिको रत्नतिहूणेकौ सुरार्चकौ द्वावर्धपदिनावेष विप्राणां संग्रहः कृतः ॥ ८४ ॥ ददौ देवपदानां च मध्यादर्धपदं नृपः ॥ विधाय शाश्वतं लोहभटकायस्थसूरये ॥ ८५ ॥ देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञारत्नैः समाचितः । मुकुटः सुमहानीलो मणिर्यत्र विराजते ॥ ८६ ॥ हरिन्माणिमयं भूपतिलकस्तिलकं ददौ ॥ रत्नैर्विचित्रं नीष्कंच निष्कलङ्कः स भूपतिः ॥ ८७ ॥ प्रादात्केयूरयुगलं रत्नैर्बहुभिराचितम् ॥ कङ्कणानां चतुष्कं च महार्हमणिभूषितम् ॥ ८८ ॥ इति रत्नमयं तावदेकमाभरणं विभोः ॥ द्वितीयमनिरुद्धस्यसौवर्णं केवलं यथा ॥ ८९ ॥ कङ्कणानां चतुष्कं च भालपट्टद्वयं तथा ॥ कृत्तिदारं स्वर्णमुष्टिं बिभर्त्यन्वहमच्युतः ॥ ९० ॥ रूप्यमद्रालिका दत्ता कच्चोलैः पञ्चभिर्युता ॥ नैवेद्यधारणार्थं च कांस्यस्थालचतुष्टयम् ॥ ९१ ॥ सुवर्णाण्डत्रयं देवपरिवारविभूषणम् ॥ धृतं चोपरि हेमाब्जमातपत्रीकृतं विभोः ॥ ९२ ॥ निवेश्य

ताम्रपत्रे च तन्मये नैव गड्डुना ॥ स्नाप्यते प्रतिमा नित्यमनिरुद्धस्य राजती ॥ ९३ ॥ प्रतिमा वामनस्यैका द्वितीया लघुराच्युती ॥ राजावर्तमयीचान्या द्वे पूर्वे रीतिनिर्मिते ॥ ९४ ॥ ताः प्रयत्नेन निस्त्रो ऽपि पूज्यन्ते गर्भवेश्मनि ॥ तत्रताम्रमयं दत्तं दीपार्थं मल्लिकाद्वयम् ॥ ९५ ॥ स्नानार्थं ताम्रकुण्डे द्वे दत्ते द्वे ताम्रपात्रिके ॥ ताम्रार्धपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीभुजा ॥ ९६ ॥ सधूपदहनाः सप्त घण्टाश्चारात्रिकान्विताः ॥ दत्ताः शङ्खाश्चसप्तैव ताम्रपात्रीचतुष्टयम् ॥ ९७ ॥ सकांस्यभाजनं प्रादान्नृपतिः काहलाद्वयम् ॥ चामरं दण्डयुग्मं च रीतिस्फटिकसंभवम् ॥ ९८ ॥ब्रह्मचरुद्वयं ताम्रमयं ताम्रालुकात्रयम् ॥ ताम्राभाण्ड्यस्तथा पञ्च दत्ताश्चाटुश्च तन्मयः ॥ ९९ ॥ ······································ ॥ एषदेवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः ॥ १०० ॥ शिलाकुद्दस्थपत्यादियन्त्रिशाकटिकादिषु ॥ वापीकूपतडागादिखननाबन्धनेषु च ॥ १०१ ॥ दशमांशं तथा विंशत्यंशं सर्वत्र मण्डले ॥ ददौ राजानिरुद्धाय तेन सर्व्वं प्रवर्तते ॥ १०२ ॥ अयं देवालयः पद्मनृपतेः स्फटिकामलः ॥ भूया दुपार्जितःपुण्यै र्विष्णुलोक इवाक्षयः ॥ १०३ ॥ भारद्वाजेन मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना ॥ कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना ॥ १०४ ॥ कविना मणिकण्ठेन सुभाषितसरस्वता ॥ प्रशस्तिर्द्विजमुख्येन रचितेयमनिन्दिता ॥ १०५ ॥ प्रतापलङ्केश्वरवाग्द्वितीयां बिभ्रत्सुहृत्तां मणिकण्ठसूरेः ॥ अशेषभाषासुकविर्लिलेख वर्णान्यशोदेव दिगम्बरार्कः ॥ १०६ ॥ एकादशस्वतीतेषु सवत्सरशतेषुच ॥ एकोनपञ्चाशति च गतेष्वब्देषु विक्रमात् ॥ १०७ ॥ पञ्चाशे चाश्विने मासे कृष्णपक्षे नृपाज्ञया ॥ रचिता मणिकण्ठेन प्रशस्तिरिय मुज्ज्वला ॥ १०८ ॥ अङ्कतोऽपि ११५० आश्विन बहुलपञ्चम्याम् ॥ ॐ ॥ तैस्तैस्तस्य महीपतेः प्रतिरणं प्रौढप्रतापानले नाश्चर्यं यदनेकशो रिपुचमूचक्रैः पतङ्गायितम् । यस्येन्द्रप्रतिमस्य बुद्धिसचिवः सर्वज्ञकल्पो ऽभवन्नीत्या निर्जितमौर्यवंशतिलकाचार्यः स गौरः सुधीः ॥ १०९ ॥ किं चित्रं यन्महीपालो भुनक्ति स्माखिलां महीम् । यस्य गीर्वाणमन्त्रीव मन्त्री गोरो ऽभवत्सुधीः ॥ ११० ॥ प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा सद्वर्णा पद्मशिल्पिना । देवस्वामिसुतेन श्रीपद्मनाथसुरालये ॥ १११ ॥ तथैव सिंहराजेन माहुलेन च शिल्पिना । प्राप्नुवन्तु समुत्कीर्णान्यक्षराणि यथार्थताम् ॥ ११२ ॥

(इस प्रशस्तिमें लिखे हुए राजाओंने क्रमसे राज्य किया है, इसवास्ते यह लेख दिया गया है; और यहांके दूसरे राजाओंकी शृंखला पूर्ण न होनेके सबब उन राजाओंके लेख दर्ज नहीं किये गये).

शेष संग्रह नम्बर ८.

धारा नगरीके प्रख्यात भोजराजके पितामह वाक्पतिराजका दानपत्र, काव्यमालाकी प्राचीन लेखमालाके पृष्ठ १ से.

याः स्फूर्जत्फणभृद्विषानलमिलद्धूमप्रभाः प्रोल्लसन्मूर्धाबद्धशशाङ्ककोटिघटिता याः सैंहिकेयोपमाः। याश्चञ्चद्गिरिजाकपोललुलिताः कस्तूरिकाविभ्रमाः स्ताः श्रीकण्ठकठोरकण्ठरुचयः श्रेयांसि पुष्णन्तु वः॥ यल्लक्ष्मीवदनेन्दुना न सुखितं यन्नार्द्रितं वारिधेर्वारा यन्न निजेन नाभिसरसीपद्मेन शान्तिं गतम्। यच्छेषाहिफणासहस्रमधुरश्वासैर्न चाश्वासितं तद्राधाविरहातुरं मुररिपोर्वेल्लद्वपुः पातु वः॥ परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री कृष्णराजदेवपादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री वैरिसिंहदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराज परमेश्वर श्री सीयकदेवपादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वरश्रीमदमोघवर्षदेवापराभिधानश्रीमद्वाक्पतिराजदेवपृथ्वीवल्लभश्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः कुशली श्रीनर्मदातटे गर्दभपानीयभोगे गर्दभपानीयसम्बन्धिनि उत्तरस्यां दिशि पिप्परिकानाम्ना तडारे समुपगतान्समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणोत्तरान्प्रतिवासिपट्टकिलजनपदादींश्च बोधयति अस्तु वः संविदितम् यथा तडारोऽयमस्माभिः आघाटाः पूर्वस्यां दिशि अगारवाहलामर्यादा तथोत्तरस्यां दिशि चिखिल्लिकासत्कगर्तायासमायतामर्यादा, तथा पश्चिमदिशि गर्दभनदीमर्यादा, तथा दक्षिणस्यां दिशि श्री पिशाचदेवतीर्थमर्यादा, एवं चतुराघाटोपलक्षिताभिरेकत्रिंशसाहस्त्रिकसंवत्सरेऽस्मिन् भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां पवित्रकपर्वणि श्रीमदुज्जयिनीसमावासितैः शिवतडागाम्भसि स्नात्वा चराचरगुरुं भगवन्तं भवानीपतिमभ्यर्च्य संसारस्यासारतां दृष्ट्वा, वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्य मापातमात्रमधुरोविषयोपभोगः। प्राणास्तृणाग्रजलबिन्दुसमा नराणां धर्मः सखा परमहो परलोकयाने॥ भ्रमत्संसारचक्राग्रधाराधारामिमां श्रियम्। प्राप्ययेन ददुस्तेषां पश्चात्तापः परंफलम्॥ इति जगतो विनश्वरं सकलमिदमाकलय्य उपरिलिखित तडारः स्वसीमतृणकाष्ठयूतिगोचरपर्यन्तः सवृक्षमालाकुलः सहिरण्यभागभोगः सोपरिकरः सर्वादायसमेतः अहिच्छत्रविनिर्गताय धामदक्षिणप्रपन्नाय ज्ञानविज्ञानसंपन्नाय श्रीमद्वसन्ताचार्याय श्री धनिकपण्डितसूनवे मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये अदृष्टफलमङ्गीकृत्य आचन्द्रार्कार्णवक्षितिसमकालं परया भक्त्या शासनेनोदक-

पूर्वं प्रतिपादित इति मत्वा तन्निवासिजनपदैर्यथा दीयमानभागभोगकरहिरण्यादिकं सर्वमाज्ञाश्रवणविधेयैर्भूत्वा सर्वदास्मै समुपनेतव्यम् सामान्यं चैतत्पुण्यफलं बुध्वास्मद्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मादायो ऽयमनुमन्तव्यः पालनीयश्च। उक्तंच बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलम्॥ यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैर्दानानि धर्मार्थयशस्कराणि। निर्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि कोनाम साधुः पुनराददीत॥ अस्मत्कुलक्रममुदारमुदाहरद्भिरन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनीयम्। लक्ष्म्यास्तडित्सलिलबुद्बुदचञ्चलाया दानं फलं परयशः परिपालनं च॥ सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रा न्भूयो भूयो याचते रामभद्रः। सामान्यो ऽयंधर्म सेतुर्नराणां काले काले पालनीयोभवद्भिः॥ इति कमलदलाम्बुबिन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्य जीवितं च। सकलमिदमुदाहृतं च बुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः॥ इति॥ सं० १०३१ भाद्रपद सुदि १४ स्वयमाज्ञा दायकश्चात्र श्रीकण्हयैकः स्वहस्तो ऽयं श्रीवाक्पति राजदेवस्य.

शेष संग्रह नम्बर ९.

वाक्पतिराजका दूसरा दानपत्र इंडियन एन्टिक्वेरीकी १४ जिल्दके १६० पृष्ठ से.

ॐ॥ याः स्फू (र्जत्फण) भृद्विषानलमिलद्धूमप्रभाः प्रोल्लसन्मूर्द्धाबद्ध शशाङ्ककोटिघटिता याः सैंहिकेयोपमाः। या (श्च) द्रिरिजाकपोललुलिताः कस्तूरिकाविभ्रमास्ताः श्री कण्ठकठोरकण्ठ (रु) चयः श्रेयांसिपुष्णन्तु वः॥ यल्लक्ष्मीवदनेन्दुना न सुखितं यन्नार्द्रितंवारिधेर्व्वारा यन्न निजेन नाभिसरसी पद्मेन शान्तिङ्गतं। यच्छेषाहिफणासहस्रमधुरश्वासैर्न्न चाश्वासितं तद्राधाविरहातुरं मुररिपोर्व्वेल्लद्वपु ॅ पातुवः॥ परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्रीकृष्णराजदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्री वैरिसिंहदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्री सीयकदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्रीमदमोघवर्षदेवापराभिधान श्रीमद्वाक्पतिराजदेवपृथ्वीवल्लभश्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः कुशली॥ तिणिसपद्रद्वादशकसम्बद्ध महासाधनिकश्री महाइकभुक्तसेम्बलपुरकग्रामे समुपगतान्समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणोत्तरान्प्रतिवासिपट्टकिलजनपदादींश्च बोधयत्यस्तुवः संविदितं यथा ग्रामोयमस्माभिः षट्त्रिंशसाहस्त्रिकसंवत्सरेस्मिन् कार्तिकशुद्धपूर्णिमायां सोमग्रहणपर्वणि श्री भगवत्पुरावासितैरस्माभिर्म्महासाधनिक श्री महाइकपत्नीआसिनीप्रार्थनया उपरिलिखित-

ग्राम : स्वसीमातृणयूतिगोचरपर्य्यन्त : स हिरण्याभागभोग : सोपरिकर : सर्वादा-
यसमेत : श्री मदुज्जयन्यां भट्टारिकाश्रीमद्भट्टेश्वरीदेव्यै स्नानविलेपनपुष्पगन्धधूप
(नै) वेद्य प्रेक्षणकादिनिमित्तश्च तथा खण्डस्फुटितदेवगृहजगतीसमारचनार्थश्च
मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये दृष्टफलमङ्गीकृत्याचन्द्रार्कार्ण्णवक्षितिस-
मकालं परया भक्त्या शासनेनोदकपूर्वकं प्रतिपादित इति मत्वा तन्निवा-
सिपट्टकिलजनपदैर्यथादीयमानभागभोगकर हिरण्यादिकं सर्बमाज्ञा-
श्रवणविधेयैर्भूत्वा सर्व्वथा सर्वमस्या: समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत्पुण्यफलं
बुद्ध्वा ऽस्मद्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्म्मदायोयमनुमन्तव्य :
पालनीयश्च। उक्तं च। बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभि: सगरादिभिर्य्यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदाफलं ॥ यानीह दत्तानिपुरानरेन्द्रैर्दानानि धर्म्मार्थयशस्कराणि
[।] निर्म्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि कोनाम साधु: पुनराददीत ॥ अस्मत्कुलक्रम-
मुदारमुदाहरद्भिरन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनियम् लक्ष्म्यास्तडित्सलिलबुद्बुदचञ्च-
लाया दानंफलं परयश: परिपालनञ्च सर्व्वानेतान्भाविन: पार्थिवेन्द्रा न्भूयो भूयो
याचते रामभद्र: सामान्योयन्धर्म्मसेतुर्नृपाणां कालेकालेपालनीयोभवद्भि:। इति
कमलदलाम्बु बिन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितं च। सकलमिदमुदाहृतञ्च
बुद्ध्वानहि पुरुषै ॅ परकीर्तयो विलोप्या इति सम्वत् १०३६ चैत्र वदि ९। गुणपुरा
वासिते श्री मन्महाविजयस्कन्धावारे स्वयमाज्ञा दापकश्चात्र श्री रुद्रादित्य:
स्वहस्तोयं श्रीवाक्पतिराजदेवस्य.

शेष संग्रह नम्बर १०.

भोजका दानपत्र इंडियन एन्टिकेरी, ६। ५३- ५४.

जयति व्योमकेशो ऽसौ य: सर्गाय बिभर्ति ताम्। ऐन्दवीं शिरसा
लेखां जगद्बीजाङ्कुराकृतिम् ॥ तन्वन्तु व: स्मरारातेः कल्याणमनिशंजटा :।
कल्पान्तसमयोद्दामतडिद्वलयपिङ्गला : ॥ परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्री
सीयकदेवपादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीवाक्पतिराजदेव
पादानुध्यात परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीसिन्धुराजदेवपादानुध्यात पर-
मभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीभोजदेव: कुशली नागह्रदपश्चिमपथकान्त: -
पातिवीराणके समुपगतान्समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणोत्तरान्प्रतिनिवासिपट्टकिलजन-
पदादींश्च समादिशति - अस्तु व: संविदितम् यथा अतीताष्टसप्तत्य-

धिकसाहस्त्रिकसंवत्सरे माघासिततृतीयायां रवावुदगयनपर्वणि कल्पितहलानां लेख्ये श्रीमद्धारायामवस्थितैरस्माभिः स्नात्वा चराचरगुरुं भगवन्तं भवानीपतिं समभ्यर्च्य संसारस्यासारतां दृष्ट्वा वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्यमापातमात्र-मधुरोविषयोपभोगः। प्राणास्तृणाग्रजलबिन्दुसमा नराणां धर्मः सखा परमहो परलोकयाने ॥ भ्रमत्संसारचक्राग्रधाराधारामिमां श्रियम्। प्राप्य ये न ददुस्तेषां पश्चात्तापः परं फलम्, ॥ इति जगतोविनश्वरं स्वरूपमाकलय्य उपरिलिखित ग्रामः स्वसीमातृणगोचरयूतिपर्यन्तः सहिरण्यभागभोगः सोपरिकरः सर्वादाय-समेतः ब्राह्मणधनपतिभट्टाय भट्टगोविन्दसुताय बह्वचाश्वलायनशाखाय त्रिप्रव-राय वेल्लवल्लप्रतिबद्धश्रीवादाविनिर्गतराधसुरसङ्ककर्णाटाय मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये अदृष्टफलमङ्गीकृत्य आचन्द्रार्कार्णवक्षितिसमकालं यावत्परया भक्त्या शासनेनोदकपूर्वं प्रतिपादित इति मत्वा यथादीयमानभागभोगकरहिरण्या-दिकमाज्ञाश्रवणविधेयैर्भूत्वा सर्वमस्मै समुपनेतव्यम् सामान्यं चैतत्पुण्यफलं बुद्ध्वास्मद्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मादायो ऽ यमनुमन्तव्यः पालनीयश्च उक्तं च बहुभिर्वसुधादत्ता राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलम् ॥ यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैर्दानानि धर्मार्थयशस्कराणि। निर्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि को नाम साधुः पुनराददीत ॥ अस्मत्कुलक्रममुदार-मुदाहरद्भि रन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनीयम्। लक्ष्म्यास्तडित्सलिलबुद्बुदचञ्चलाया दानं फलं परयशः परिपालनंच ॥ सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान्भूयो भूयो याचते रामभद्रः। सामान्यो ऽयं धर्मसेतुर्नराणां काले काले पालनीयो भवद्भिः ॥ इति कमलदलाम्बुबिन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितंच। सकलमिद मुदाहृतं च बुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः॥ इति संवत् १०७८ चैत्र सुदि १४ स्वय माज्ञा मङ्गलं महाश्रीः स्वहस्तो ऽयं श्री भोजदेवस्य.

शेष संग्रह नम्बर ११.

धारा नगरीके राजा भोजके वंशके अर्जुनवर्मदेवका दानपत्र
अमेरिकन ओरिएन्टल् सोसाइटी जेनरल ७ भागमें.

ॐ नमः पुरुषार्थचूडामणये धर्माय

प्रतिबिम्बनिभाद्भूमेः कृत्वा साक्षात्परिग्रहम् जगदाह्लादयन्दिश्याद्द्विजेन्द्रो मङ्गलानि वः जीयात्परशुरामो ऽसौ क्षत्रैः क्षुण्णं रणाहतैः। संध्यार्कबिम्बमेवोर्वीदातुर्यस्येति

ताम्रताम् ॥ येन मन्दोदरीबाष्पवारिभिः शमितो मृधे । प्राणेश्वरीवियोगाग्निः स रामः श्रेयसे ऽस्तु वः॥ भीमेनापि धृतामूर्ध्नि यत्पादाः स युधिष्ठिरः। वंशाद्येनेन्दुना जीयात्स्वतुल्य इव निर्मितः॥ परमारकुलोत्तंसः कंसजिन्महिमा नृपः। श्री भोजदेव इ-त्यासीन्नासीराक्रान्तभूतलः॥ यद्यशश्चन्द्रिकोद्द्योते दिगुत्सङ्गतरङ्गिते। द्विषन्नृपयशः पुञ्ज पुण्डरीकैर्निमीलितम्॥ ततो ऽभूदुदयादित्यो नित्योत्साहैककौतुकी। असा-धारणवीरश्रीरश्रीहेतुविरोधिनाम्॥ महाकलहकल्पान्ते यस्योद्दामभिराशुगैः। कति नोन्मूलितास्तुङ्गा भूभृतः कटकोल्वणाः॥ तस्माच्छिन्नद्विषन्मर्मा नरवर्मा नराधिपः। धर्माभ्युद्धरणे धीमानभूत्सीमा महीभुजाम्॥ प्रतिप्रभातं विप्रेभ्यो दत्तैर्ग्रामपदैः स्व-यम्। अनेकपदतां निन्ये धर्मोयेनैकपादपि॥ तस्याजनि यशोवर्मा पुत्रः क्षत्रियशेखरः। तस्मादजयवर्माभूज्जयश्री विश्रुतः सुतः॥ तत्सूनुर्वीरमूर्धन्यो धन्योत्पत्तिरजायत। गुर्जरोच्छेदनिर्बन्धी विन्ध्यवर्मा महाभुजः॥ धारयोद्धृतया सार्धं दधातिस्म त्रिधारताम्। सांयुगीनस्य यस्यासिस्त्रातुं लोकत्रयीमिव॥ तस्यामुष्यायणः पुत्रः सुत्रामश्रीरथाशिषत्। भूपः सुभटवर्मेति धर्मे तिष्ठन्महीतलम्॥ यस्य ज्वलति दिग्जेतुः प्रताप स्तपनद्युतेः। दावाग्निच्छद्मनाद्यापि गर्जन्गुर्जरपत्तने ॥ देवभूयं गते तस्मिन्नन्दनो ऽर्जुनभूपतिः। दोष्णा धत्ते ऽधुना धात्रीवलयं वलयं यथा॥ बाललीलाहवे यस्य जयसिंहे पलायिते। दिक्पालहासव्याजेन यशो दिक्षु विजृम्भितम्॥ काव्यगान्धर्वसर्वस्वनिधिना येन सांप्रतम्। भारावतरणं देव्याश्चक्रे पुस्तकवीणयोः॥ येन त्रिविधवीरेण त्रिधा पल्लवितं यशः। धवलत्वं दधुस्त्रीणि जगन्ति कथ मन्यथा॥ स एष नरनायकः सर्वाभ्युदयी पगाराप्रतिजागरणके नर्म-दोत्तरकूले हथिणावरग्रामे पूर्वराजदत्तावशिष्टायां भूमौ समस्तराजपुरुषान्ब्राह्मणो त्तरान्प्रतिनिवासिपट्टकिलजनपदादींश्च बोधयति- अस्तु वः संविदितम् यथा श्रीमदमरेश्वरतीर्थावस्थितैरस्माभिर्द्विसप्तत्यधिकद्वादशशतसंवत्सरे भाद्रपदपौ-र्णमास्यां चन्द्रोपरागपर्वणि रेवाकपिलयोः संगमे स्नात्वा भगवन्तं भवानीपतिमोंका रं लक्ष्मीपतिं चक्रस्वामिनं चाभ्यर्च्य संसारस्यासारतां दृष्ट्वा तथा हि-वाताभ्रविभ्रममिदं वसुधाधिपत्यमापातमात्रमधुरो विषयोपभोगः। प्राणास्तृणाग्र-जलबिन्दुसमा नराणां धर्मः सखापरमहो परलोकयाने॥ इति सर्वं विमृश्यादृष्टफल मङ्गीकृत्य मुक्तावस्थूस्थानविनिर्गताय वाजसनेयशाखाध्यायिने काश्यपगोत्राय काश्यपावत्सारनैध्रुवेतित्रिप्रवराय आवसथिकदेल्हप्रपौत्राय पण्डितसोमदेव-पौत्राय पण्डितजैत्रसिंहपुत्राय पुरोहितपण्डितश्रीगोविन्दशर्मणे ब्राह्मणाय भूमिरियं चतुःकण्टकविशुद्धा सवृक्षमालाकुला सहिरण्यभागभोगा सोपरिकर-

घट्टादायलवणादायेत्यादिसर्वादायसमेता सनिधिनिक्षेपा मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये चन्द्रार्कार्णवक्षितिसमकालं यावत्परया भक्त्या शासनेनोदकपूर्वं प्रदत्ता । तन्मत्वातन्निवासिपट्टकिलजनपदैर्यथादीयमानभागभोगकरहिरण्यादिकमाज्ञाविधेयैर्भूत्वा सर्वममुष्मै दातव्यम् । सामान्यं चैतत्पुण्यफलं बुद्धास्मद्वंशजैरन्यैरपिभाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मादायोऽयमनुमन्तव्यः पालनीयश्च उक्तं च-बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधराम् । सविष्ठायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः सह मज्जति ॥ सर्वानेवं भाविनः पार्थिवेन्द्रान्भूयो भूयो याचते रामभद्रः । सामान्योऽयं धर्मसेतुर्नराणां काले काले पालनीयो भवद्भिः ॥ इति कमलदलाम्बुबिन्दुलोलां श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितं च । सकलमिदमुदाहृतं च बुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्त्तियो विलोप्याः ॥ इति ॥ संवत् १२७२ भाद्रपद सुदि १५ बुधे दू श्रीमु । ३ रचितमिदं महासांधि ० राजासलखणसंमतेन राजगुरुणा मदनेन स्वहस्तोऽयं महाराजश्रीअर्जुनवर्मदेवस्य उत्कीर्णं प० बाप्पदेवेन.

त्रोटक छन्द.

जगतेश गये परलोक जबें ॥ नृप ठौर प्रताप सुताप तबें ॥
तिनकी बल विक्रम स्वल्प कथा ॥ दिव गौन कियो लिखवाय जथा ॥ १ ॥
उनके लघु उम्मर पुत्र बड़े ॥ नृप आसन राज नृपाल चढ़े ॥
वणहेड़ उमेद जु छीन लियो ॥ नृप लै रु यथा विधि न्याय कियो ॥ २ ॥
दश अट्ठक वत्सर आयु भये ॥ नृप राजड़ स्वर्ग पधार गये ॥
जिनके पितु भ्रात कथा सरसी ॥ नृप आसन बैठगये अरसी ॥ ३ ॥
इक कृत्रिम भूप बनाय लियो ॥ सिरदार कितेकन दुंद कियो ॥
गृह द्वेष विशेष हि नाथ मरे ॥ मरहट्ट मलार सु संधि करे ॥ ४ ॥
विप दैरु सलूंबर जोध हते ॥ मरहट्ट मिलावन हेत मते ॥
अरसी नृप घात विसास कियो ॥ भट राघवपै हठ चूक भयो ॥ ५ ॥
फिर मालव देश अवंति पुरी ॥ अरसी दल नौबत जाय घुरी ॥
भट ओघ सराहन जोग भये ॥ तरवारन वारन स्वर्ग गये ॥ ६ ॥
फिर माधवराव बड़े दलतें ॥ उदयापुर घेर लियो बलतें ॥
अरसी निज विक्रम खूब लरे ॥ नय दाम विचाररु संधि करे ॥ ७ ॥

छल रानहि तें सिरदार छली ॥ उपईश बनायरु फ़ौज मिली ॥
बहु बेर किये हमले अरसी ॥ अरि ताकत सेन सबें घरसी ॥ ८ ॥
अरसी निज बायव प्रांत दियो ॥ दल सेवनदे मरु भूप लियो ॥
निज भट्टन कट्टन रान चढे ॥ समरू हि भगायरु आप बढे ॥ ९ ॥
नृप बुन्दिय आयरु चूक कियो ॥ छल राव अजीत कलंक लियो ॥
अरसी परलोक प्रयान कथा ॥ फिर दक्षिण क्षत्रिय वंश जथा ॥१०॥
कुहलापुर आदिक वंश बधे ॥ तिन सेवक ग्वालियरादि सधे ॥
जिनके बल वंश बिचार कहे ॥ रजपूतनमें थल टौंक लहे ॥११॥

दोहा.

भरत धौलपुर युग्म भट जट्ट भूप बर जोर ॥
कही सकल तिनकी कथा प्रस्तर लेख बहोर ॥ १ ॥
आशय सज्जन रानको शासन फतमल सिद्ध ॥
किय श्यामल कविराजने शुद्ध प्रकर्ण प्रसिद्ध ॥ २ ॥

महाराणा अरिसिंह ३.
तेरहवां प्रकरण समाप्त.

चौदहवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे हमीरसिंह.

जब महाराणा अरिसिंह ३ अमरगढ़ मक़ामपर बूंदीके राव राजा अजीतसिंहके हाथ दग़ासे मारे गये, और इसकी ख़बर विक्रमी १८२९ चैत्र कृष्ण ३ [हि० ११८६ ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १७७३ ता० ११ मार्च] को उदयपुरमें पहुंची, तो राजधानी में बड़ा भारी तहल्का मचा, क्योंकि ऐसे जवान राजाका अपने पीछे सिर्फ़ दो बालक कुंवरोंको छोड़कर इस दुन्यासे उठजाना और मुल्कमें ख़ानगी झगड़ोंका फैलना एक ऐसी हालत थी, कि चाहे कैसा ही मज्बूत दिल आदमी क्यों न हो, सिवा अफ्सोस व रंजके और क्या कर सक्ता था ! लेकिन् इस वक्त कई अच्छे और ख़ैरख़्वाह लोगोंने महाराणाके बड़े बेटे हमीरसिंहको गद्दीपर बिठाया; और कुल सर्दार, उमराव व पासबानों वग़ैरह ने, जो उस समय मौजूद थे, नज़ें दिखलाई. इसके बाद प्रधान ठाकुर अमरचन्द सनाढ्य, बछावत महता अगरचन्द, भटनागर कायस्थ जशवन्तराय, व बोल्या एकलिंगदास वग़ैरह अह्लकारोंने महाराज बाघसिंह और महाराज अर्जुनसिंहसे कहा, कि "इस समय आप दोनों सर्दार महाराणाके बुजुर्ग हैं, इसलिये रियासतका कार बार आपको

संभालना चाहिये." इन दोनों सर्दारोंने सच्चे दिलसे जवाब दिया, कि "अगर्चि महाराणा बालक हैं, लेकिन् हमारे मालिक और हम इनके नौकर हैं, जहांतक हमसे हो-सकेगा, अपनी तरफ़से खैरख्वाहीमें किसी तरह की कमी न करेंगे."

प्रधान अमरचन्द सनाढ्य कुछ दिनतक, तो बड़ी तनदिहीसे काम अंजाम देता रहा, लेकिन् मालिककी कम उम्रीसे रियासतकी मुरूतारी औरतोंके हाथमें जा पड़नेके सबब बाईजीराज सर्दारकुंवर और उनकी दासियोंका हुक्म इतना तेज़ हुआ, कि उक्त दासियोंमेंसे बाई रामप्यारी, जो बहुत ज़बान दराज़ थी, एक दिन अमरचन्दसे बड़ी गुस्ताख़ीके साथ पेश आई, इसपर उस प्रधानने, जिसके मिज़ाज में खुदमुरूतारी समाई हुई थी, रामप्यारीको सरूत सुस्त कहकर ललकारा. रामप्यारीने बाईजीराजसे अमरचन्दकी बहुत कुछ शिकायत की; उन्होंने उसके कहनेपर अमल करके प्रधानको क़ैद करनेके लिये अपने आदमियोंको भेज दिया. अमरचन्द भी खैरख्वाहीके नशेमें चूर था, उसने अपने घरका कुल ज़ेवर व अस्बाब छकड़ों व हम्मालों के सिरपर रखवाकर ज़नानी ड्योढ़ीपर भेज दिया. यह खैरख्वाही देखकर बाईजीराजको बड़ा पछतावा हुआ, और उन्होंने वह सामान उसे वापस देना चाहा, लेकिन् उसने एक जोड़ी मामूली कपड़ोंके सिवा कुछ भी न लिया. मश्हूर है, कि यह शुभचिन्तक प्रधान ज़हरसे मरवाडाला गया; जब यह मरा, तो उसके घरमें कफ़न भी न निकला; उसकी उत्तर क्रिया सर्कारसे कराई गई. उक्त प्रधानके कोई खास औलाद नहीं थी, लेकिन् उसके भाइयोंकी सन्तान अबतक इस राज्यमें मौजूद है, जिनका ज़िक्र किसी मौक़ेपर किया जावेगा.

इस खैरख्वाह प्रधानके मरनेसे रियासतको बहुत नुक्सान पहुंचा, यहां हम एक प्रसिद्ध कहावतका पद्य लिखते हैं:-

दोहा.

नहिं पति बहु पति निबल पति शिशु पति पतनी नार ॥
नरपुरकी तो क्या चली सुरपुर होत उजार ॥ १ ॥

उस वक्त उदयपुरकी जैसी कुछ हालत थी, इस दोहेके अर्थसे समझ लेना चाहिये. अब दूसरा हाल सुनिये, कि महाराणा अरिसिंहने मुल्ककी हिफ़ाज़तके वास्ते, जो सिंधी सिपाहियोंकी एक बड़ी फ़ौज नौकर रक्खी थी, उसने तन्ख्वाह न मिलनेके सबब महलोंमें धरना दिया. इस समय रियासतका ख़ज़ानह खाली था,

राज्यके खैरख्वाह लोगोंको यह दशा देखकर बड़ा विचार पैदा हुआ. महाराज बाघसिंह, महाराज अर्जुनसिंह, महाराज गुमानसिंह व चहुवान षतरसिंह वगैरह सर्दार ज़नानी ड्योढ़ीपर शस्त्र बांधकर आजमे. चालीस दिनतक यह फ़साद रहा; आख़िरकार बाईजीराजने महता लक्ष्मीचन्दको भेजकर कुरावड़से रावत् अर्जुनसिंह को बुलाया, जिसने सिंधी सिपाहियोंको बहुत कुछ समझा बुझाकर कहा, कि "ख़ज़ानह में रुपया मौजूद नहीं है, इलाक़हमेंसे जमा करनेपर मिलसका है, इसलिये हम और तुम सब मिलकर मेवाड़में चलें और रुपया एकट्ठा करें; उन रुपयोंसे तुह्मारी तन्ख्वाह चुका दी जायेगी." सिंधियोंने उक्त रावत्से कहा, कि "हमको एतिबारके लाइक़ एक ओल (१) देना चाहिये." यह बात सुनकर बाईजीराजको बड़ा अफ्सोस हुआ, और सोचने लगीं, कि अब किसको सौंपें! उस वक्त महाराणाके छोटे भाई भीमसिंह, जिनकी उम्र ६ वर्षकी थी, बोल उठे, कि "मुझे भेज दीजिये." बाईजीराजको अपने बच्चेकी यह हिम्मत देखकर आश्चर्य हुआ, और उसे प्यार करके सिंधियोंके हवाले करदिया. रावत् अर्जुनसिंह दस हज़ार सिंधियोंकी फ़ौज समेत भीमसिंहके साथ होकर उदयपुरसे इलाक़हकी तरफ़ रवानह हुए. ये लोग चित्तौड़के क़रीब पहुंचे थे, कि माधवराव सेंधियाका जमाई बैरजी ताकपीर चित्तौड़की तलहटीके क़स्बहको लूटनेके लिये आ पहुंचा. उस समय छः वर्षकी उम्र वाले महाराणाके छोटे भाईने अपने साथियोंसे कहा, कि "बड़े अफ्सोस और शर्मकी बात है, कि हमारी मौजूदगीमें चित्तौड़ लुटजावे और रियासतकी बदनामी हो." उस कम उम्र सर्दारके इस कलामका सिंधी सिपाहियोंके दिलपर इतना असर हुआ, कि उन लोगोंने जोशमें आकर बैरजीकी फ़ौजसे खूब मुक़ाबलह किया. भीमविलास ग्रन्थमें लिखा है, कि सिंधियोंकी फ़ौजने, उस मरहटी फ़ौजको, जो पन्द्रह हज़ारसे कम न थी, शिकस्त देकर भगा दिया.

चित्तौड़का क़िलेदार सलूंबरका रावत् भीमसिंह महाराणाके भाई और सिंधियोंको क़िलेपर लेगया, जहां उसने तन्ख्वाहके एवज़ सिंधियोंको बड़ी बड़ी जागीरें लिख-दीं; और दो वर्षतक क़िलेपर रहनेके बाद रावत् अर्जुनसिंह व महाराणाके भाई भीमसिंहको सलूंबरके रास्तेसे उदयपुरकी तरफ़ रवानह किया. अब रियासतकी हालत दिन दिन नाज़ुक होने लगी. बाईजीराजने भींडरके महाराज मुहकमसिंहको, जो कोटाके झाला ज़ालिमसिंहका दोस्त था, रियासतके कारोबारका मुख्तार

(१) किसी मोतबर आदमीको रुपयेके एवज़ सुपुर्द करदेना.

बना दिया, लेकिन् यह बात सलूंबरके रावत् भीमसिंह व कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह वगैरह चूंडावतोंको बहुत नागुवार गुज़री; और सिंधियोंने भी अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करके महाराणाका हुक्म मानना छोड़ दिया, जिनको सनाढ्य अमरचन्द प्रधानने खैरख़्वाह बनाया था. इसी अरसहमें बेगूंके रावत् दूसरे मेघसिंहने, जो उस वक्त रत्नसिंहका मददगार और महाराणासे बख़िलाफ़ था, ख़ालिसेके चन्द पर्गनोंपर अपना अमल करलिया; तब उदयपुरसे माधवराव सेंधियाके पास मददके लिये मोतमिद भेजे गये, वह बर्सात ख़त्म होते ही एक बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ मेवाड़में आया (१), और भीलवाड़ा मक़ामसे बेगूंकी तरफ़ चला; लेकिन् बेगूंका मोतमिद दायमा ब्राह्मण कथा भट्ट फ़तहराम माधवरावके पास, उसके बेगूं पहुंचनेसे पहिले ही पहुंच गया था. यह शख़्स बहुत छोटे क़दका आदमी था, जब इसने आशीर्वाद दिया, तो माधवरावने कहा कि "आओ बावन;" उक्त ब्राह्मणने जवाब दिया, कि "हां राजा बलि." इसपर सेंधियाने कहा, कि "मांग." उस ब्राह्मणने कहा, कि "बेगूंका मुआमलह इनायत कीजिये." माधवरावने कहा, कि "अगर तुमको यह मंजूर हो, तो महाराणा अरिसिंहके वक्त विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = ई० १७६९] के इक़ार मूजिब तुम्हारे ठिकानेदारसे, जो फ़ौज ख़र्चके रुपये दिलाये गये थे, वह अदा करादो." इस ब्राह्मणने खुशीके साथ उन रुपयोंका अदा करना मंजूर करलिया; लेकिन् रावत् मेघसिंहने घमंडके मारे इस बातसे बिल्कुल इन्कार किया, और कहा, कि "हम ब्राह्मण नहीं हैं, जो आशीर्वाद देकर अपना काम निकालें, हम राजपूत हैं; रुपयोंकी एवज़ बारूद, गोला और तलवारसे माधवरावका क़र्ज़ह अदा करेंगे." यह सुनकर उस मरहटे सर्दारकी फ़ौजने बेगूंको घेर लिया, और छः महीनेतक (२) सख़्त लड़ाई होती रही, मगर माधवरावकी फ़ौजको काम्याबी न हुई. सेंधियाको इस छोटेसे क़िले और ठिकानेदारके क़ाबूमें न आने और अपना रोब उठजानेसे बड़ा अफ़्सोस हुआ, तब कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंहने मेघसिंहके पुत्र प्रतापसिंहको अपनी तरफ़ करलिया, जो अपने बापसे बख़िलाफ़ था. इस आपसके बखेड़ेसे लाचार होकर रावत् मेघसिंह माधवरावके पास चला आया, और फ़ौज ख़र्चके एवज़ ज़ेवर व नक़्द वगैरह देनेके सिवा पर्गनह गिर्वी रखकर पीछा छुड़ाया. इसवक्त दो काग़ज़ इक़ारनामहके तौरपर लिखे गये थे, जिनकी नक़्लें जो हमको बेगूंसे मिलीं, नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

---

(१) बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि माधवराव खुद नहीं आया था, उसने अपने सेनापतिको भेजदिया था, लेकिन् मैं (कविराज श्यामलदास) ने बेगूंके बुड्ढे आदमियोंकी ज़बानी जैसा सुना है, वैसा ही मूलमें लिखा है.

(२) बाज़ लोगोंका यह भी बयान है, कि तीन महीने लड़ाई रही.

कागज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

। सीधश्री सरब वोपमा लाईक राज श्री रावतजी सवाई मेगसीगजी जोग राज श्री सुबादार श्री मादोरावजी सीदेके बचना, इहाका स्माचार भलाहे तुमारा भला चाहीजे, अप्रंच: सरकारकी फोज सात मेवाड़ माय आकर वेगु मोरचा लगाओ, लड़ाई हुवी; सरब नजराणा त्था गोड़ा पड़े जीसका वा तोबपानाका परचका ठाहारा रुपीया

१०००० नजराणा त्था गोड़ापड़ेका वा तोफषानाका परचका

६३००० दरबार परच मसुदीयाका

९६३००१) जीस माये सरकार माये पहुचे रुपीआ ४८१२१७) जुमले चार लाष अकासी हजार दो सो सीतरा आगरागे रुपीआ बाकी तुमारे तरफ रुपीये रहे, ४७३७०४) जुमले आक चार लाष तोतर हजार सात स चार रुपीआ, जीसके करार बेमोजब भरोती हुवी नही; सब बङजीगके मुकाम माय सीरकारके एवजमे तपा सीगोली, तपा भीचोरके गाम बीगत सुमार रु: जुमल रुपे ६८३०२) अड़ट हजार तीन सो दोअे रुपा समत १८३१ का भुगाव बीगत रुपीये

३१४५१ तफा सीगोलीका

४१०० कस्बा सींगोली
१००० गाम अरणो
६०० गाम बरड़ावदो
३००० गाम पाछुदी
१५०० गाम प– –ल
५०० गाम कछाला
५०० गाम अनेड़
४०० गाम जेसीगपुरो
२०० गाम सवलपुरो

१००० गाम बाम्णहेड़ो
२००० गाम घारडी
१०० गाम कुवाई
३१०० गाम धन गाव
६०० गाम जामरणा
८०० गाम सलोदो
४५० गाम जसवतपरो
४०० गाम देवपरो पवाराको
३०० गाम मोपाचाडोस

१००	गाम गोईदपुरो	४००	गाम तरको
४००	गाम हरीपरो	४००	गाम मेसपुरो गोड़ाको
५०	गाम षेडी	५००	गाम जराड़
५००	गाम बोहोटो	३००	गाम कुवचा
२५०	गाम ष्मेमपुरो	३००	गाम लाडपरो सोलषाको
३५०	गाम पीपलीषेडो	४००	गाम ताल
२५०	गाम जोदा कुडल	१००	गाम बुहाडा
३००	गाम बजेड्डो	१८००	गाम कदवास
२००	गाम षेड़ो मादावताको	३००	गाम पाटण
	१८		१८

धरमा डोली २५००

३६५१ त्था भीचोरको

६५००	गाम भीचोर	२००	गाम नाल
१००	गाम पेमपुरो	५००	गाम गोपालपुरो
१०००	गाम चावड़ो	२०००	गाम धनोरो
२५००	गाम गुलावह	२५००	गाम सरतलाइी
५००	गाम मोट्यारड़ो	६००	गाम गुलभरी
७००	गाम मेघपुरो	१५००	गाम मावुपुरो
१०००	गाम सेणा तलाई	१०००	गाम फतेपुर
२५०	गाम कालदा	६५००	गाम काटुदो
५००	गाम मेघपुरा जोग गोतम	३०००	गाम थड़ोद
	९		९

तीमधे धरमादो डोली रुपा ३५००), बाद बाकी ३६८५१); ६८३०२) जुमले अड़सट हजार तीनसो दो रुपीआ, जीसमु बजा धरमादा व डोलीका रु० ६०००), बाकी रुपीआ ६२२०२) बासट हजार दोसो दो रुपाये, जमले गाम

सुमार चोपन तुमारे पाससे सीरकारमे लीये, जाहा सीरकारके कामदार रहेगे अमल करेगे. जमा बैठेगा जीस माय सरबदी तथा सवार पीयादा बगेरे खरच वजा होकर बाकी रहे सो एवज चार लाष त्र्यहतर हजार सात सो चार रुपीया सीरकार में तुमारे तरफ सु लषा हरजासमाय मडेगा, सीरकारके चार लाष त्र्यहतर हजार सात सो चार रुपीया गरोक जीसका बटती परगनाके चलप सु होवे; वुजा दरसालका तक सीरकार के पुरे पडे सीवाये सीरकार मुसु गाम छूटेगे न्ही; रुपीये पुरा पडे ताई गामासु कीसी बातसु षेचल करबा मती. भील भोमा कोई षेचल करे, वुसका पारपतका फागण मती चेत सुदी १२ समत १८३१.

छाप.

दूसरे कागज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

श्री श्री श्री सरब ओपमा लाअेक राज श्री रावत सवाई मेगसीगजी जोग राज श्री सुबादारजी श्री मादोरावजी सीदेकी बचना, ईहाका स्माचार भला हे, तुमारा स्दा भला चाईजे, अप्रच।: ससथान वुदेपुररी मामलीती राणा श्री अडसीजी ईनोने संवत् १८२६ का सन सबेनके साल ठेराई, श्रो वुस मामलीतीके एवजकी भरोती हुवी नही, सबब कालसा तथा पटाईतोके पटामाई चोथान सरकार माहे लेणा ठहेरा जीस वास्ते प्रगणे बेगुको चोथान सवत् १८३१ का सन षमस सुबेनके सालसु सरकार माहेलीश्रा. गाम शुमार ४८ श्रडतालीस जुमले तनपावु रुपीश्रा ४३१०० जुमले तश्रालीस हजार सो आकाबे तअग्लीस हजार, एकसो गाम वजा धरमादा व डोली रुपा ४१००, बाकी रुपा अडतीस हजार ३८०००

५१	कसबा निलीदेई	४००	गाम पाडाबा
३००	मेणकेसर	३००	गाम जेतपुर दुजो कुसालजीको
१६००	गाम घामणचा	४००	गाम राजपुरा

५०० गाम नेराल
८०० गाम बील पेडो
१०० गाम मनोरपुरो
२५० गाम अणदपुरो भडगोताको
६०० गाम पीपराव
६०० गाम घलदु
४०० गाम अतवा
६०० गाम कस्तपुरो
१४०० गाम अतवावडी
३०० गाम मुरोली
६००० गाम काटुदो
५०० गाम अलपुरो
७०० गाम बासोटो
१५०० गाम मेसरा
५०० गाव गुडो
३०० गाम तुबो
१२०० गाम मारणा
२०० गाम अणदपुरो
५०० गाम सालेरो
२०० गाम करणपुरो
१२०० गाम राईती
११०० गाम जेतपर

१३२५० २४

७०० गाम हडमतो
३०० गाम अणदपुरो चवाणाको
४०० गाम डाबड़ा
४०० गाम तीरोली
४०० गाम मोकमपर
४०० गाम छोटी डावडा
८०० गाम आमलदो
३१०० गाम वनोड़ो
३१०० गाम नदवास
२०० गाम देवसा
१५० गाम मादोपुरो मीडकी पावको
३०० गाम जाडोल
२५० गाम पेडो हाडाको
२०० गाम नीमोद
१५० गाम हरीपरो जोगाको
५०० गाम परकापेडी
५०० गाम देवपरो जोस्याको
१००० गाम बसी
२५० गाम सुवाणो
२६०० गाम आवल हेडो
५०० गाम पुरबापेडो

२४७५ २४

जुमले गाम सुमारी अडतालीस तनपा अडतीस हजार रुपे सीरकार मे माये लिये हैं, सो सीरकारके अमलदार रहे आल करेगे, ईनसो कोई बातका परच कोगा मती. मामलतीका रुपीआ भर चुकेके उपरात गाम सीरकार मेयसु छुटेंगे भील मोगा कोई पेचल करे वुसका पारपत तुम करोगा. मती चेत सुद १२ समत १८३१.

छाप.

बेगूंके ठिकानेपर और भी मरहटोंने तबाहियां डाली थीं, जिनका ज़िक्र किसी मौकेपर कियाजावेगा. फिर बैरजी ताकपीर और आंबाजी एङ्गलियाने मेवाड़पर धावा किया, और इसी लूट खसोटकी हालतमें रियासतके अन्दर आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ियां बढ़ीं, जिससे दिन दिन मुल्ककी बर्बादी पेश आती थी. कृष्णगढ़के राजा बहादुरसिंहको, जो राजपूतानहमें बड़े आक़िल रईस और महाराणा अरिसिंहके स्वसुर थे, बाईजीराजने अपना मददगार बनानेके लिये काग़ज़ लिखा; जिसके जवाबमें बहादुरसिंहने उनकी बहुत कुछ तसल्ली की, और कहा कि, मैं अपने जान व मालसे मेवाड़के लिये हाज़िर हूं; और इसके साथही यह दर्ख़्वास्त की, कि मेरी पोती, कुंवर बिड़दसिंहकी बेटी अमरकुंवरकी शादी महाराणाके साथ हो. बाईजीराजने इस दर्ख़्वास्तको मंजूर किया, लेकिन् इन्हीं दिनोंमें हुल्करकी सर्कारने मेवाड़पर ज़ोर डाला, कि जिस तरह सेंधियाको फ़ौज ख़र्चके एवज़ इलाके गिर्वी दिये हैं, उनके हम भी हक़दार हैं, क्योंकि जो मुआमलह ठहरे, उसमें पेश्वा, हुल्कर और सेंधिया, तीनोंका हिस्सह बराबर होता है. इस बातपर सेंधियाने कुछ लिहाज़ न किया; और रियासत उदयपुर आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी, तथा महाराणाकी कम उम्रीसे इस वक़ बिल्कुल कमज़ोर होरही थी, ऐसा कोई नहीं था, कि हुल्करको वाजिबी जवाब देता. आख़िरकार लाचार होकर विक्रमी १८३१ [हि॰ ११८८ = ई॰ १७७४] में अहल्या बाईको नीबाहेड़ेका पर्गनह देना पड़ा.

इसी अरसहमें कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंहने अपनी पोतीके विवाहका लग्नपत्र भेजा. बाईजीराजने अपने बेटेकी बरातके लिये फ़ौजका बन्दोबस्त किया (१). और उदयपुरमें राज्य प्रबन्धके लिये देलवाड़ेका राज सज्जा, कोठारियाका रावत् विजयसिंह, व महाराज बाबा बाघसिंह रखेजाकर बरातमें महाराणाके साथ उनके छोटे भाई भीमसिंह, व बाबा महाराज अर्जुनसिंह, बीजोलियाका राव शुभकरण, भैंसरोड़का रावत् मानसिंह, कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह अपने बेटे जगत्सिंह समेत, महाराज अनोपसिंह, जहाज़पुरका राणावत बाबा भोपतसिंह खुमाणसिंहोत, चूंडावत कृष्णावत रावत् सर्दारसिंह, आरज्याका बाबा पद्मसिंह पूरावत, थांवलाका चहुवान कुशलसिंह, सनवाड़का बाबा जैतसिंह राणावत, बनेड़्याका चहुवान चतुरसिंह, पुरोहित नन्दराम, साह किशोरदास देपुरा, अगरचन्दका बेटा महता देवीचन्द मए मांडलगढ़की जमइयतके, धायभाई

---

(१) कुम्भलमेरपर रत्नसिंहका फ़ुतूर बाक़ी था, और सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे बाईजीराजको यह डर था, कि कोई ग़नीमको लाकर रास्तेमें मेरे बेटेपर हमलह न करे.

कीका, चारण पन्ना आढ़ा, जमादार सादिक़, और जमादार चन्दर, वगैरह सर्दार अपनी अपनी जमइयतों समेत गये. उदयपुरसे रवानह होकर महाराणा शाहपुरे पहुंचे. शाहपुरेके राजा भीमसिंहने पेश्वाई वगैरह अदब आदाबसे पेश आकर फ़ौज समेत महाराणाकी बहुत कुछ मिह्मानी व ख़ातिरदारी की.

महाराणाने शाहपुरेसे राजा भीमसिंहको भी साथ लेलिया; जब कृष्णगढ़ पहुंचे, तो महाराजा बहादुरसिंह साढ़ेचार कोसतक पेश्वाईको आया. विक्रमी १८३३ माघ कृष्ण १२ [हि० ११९० ता० २५ ज़िल्हिज = .ई० १७७७ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को विवाह होचुकने बाद (१), महाराजा बहादुरसिंहने मिह्मानी व दहेज़ वगैरह बहुत अच्छी तरह देकर महाराणाको विदा किया, और अपने कुंवर बिड़दसिंहको दो हज़ार फ़ौज सहित उनके साथ भेजा. महाराणाने नाहरमगरा मक़ामपर पहुंचकर बिड़दसिंहको विदा किया; और इसी जगह सलूंबरका रावत् भीमसिंह नीचे लिखे हुए सर्दार पासवानों समेत महाराणाकी खिदमतमें हाज़िर हुआः-

सादड़ीका राज सुल्तानसिंह झाला, बेदलाका राव प्रतापसिंह चहुवान , बेगूंका रावत् मेघसिंह चूंडावत मेघावत, कान्होड़का रावत् जगत्सिंह सारंगदेवोत, आमेटका रावत् प्रतापसिंह चूंडावत जगावत, बागोरका महाराज बाबा भीमसिंह, बनेड़ाका राजा हमीरसिंह, महुवाका बाबा सूरतसिंह राणावत, हमीरगढ़का रावत् धीरतसिंह राणा-वत, साह नन्दलाल देपुरा, साह मौजीराम बोल्या, साह एकलिंगदास बोल्या साह विजयसिंह नाणावटी वगैरह

नाहरमगरेसे महाराणा उदयपुर आये, और विवाहकी रीति पूरी होचुकने बाद उसी फ़ौजके साथ नाथद्वारे होकर कुम्भलमेर ख़ाली करानेके इरादेसे आगे बढ़े; लेकिन् रावत् राघवदास देवगढ़से एक बड़ी जमइयत लेकर रत्नसिंहकी मददको आता था, रास्तेमें रींछेड़ गांवके पास महाराणाकी फ़ौजसे उसका मुक़ाबलह हुआ, परन्तु वह भागकर सहीह सलामत कुंभलमेर पहुंच गया, इसलिये महाराणा चतुर्भुजनाथके दर्शन करके उदयपुर लौट आये, और कुल सर्दारोंको अपनी अपनी जागीरोंपर जानेकी रुख़सत दी. विक्रमी १८३४ मार्गशीर्ष [हि० ११९१ ज़िल्क़ाद = .ई० १७७७ डिसेम्बर] का ज़िक्र है, कि महाराणा शिकारको गये थे, एक हिरनपर गोली चलाते वक़ बन्दूक़ फटकर उसके टुकड़ेसे उनके हाथका

(१) कृष्णगढ़के प्रधान महता सौभाग्यसिंहने कृष्णगढ़के राज्यवंशका जो एक नक्शह हमारे पास भेजा है, उसमें इस शादीका माघ कृष्ण ३ को होना लिखा है, लेकिन् हमने "भीमविलास" ग्रन्थके लिखे अनुसार, जो महाराणा भीमसिंहके हुक्मसे तय्यार हुआ था, द्वादशी लिखा है.

मांभा (१) बिखर गया, जिसका इलाज जर्राहों वगैरहने बहुत कुछ किया, लेकिन् दर्द दिन दिन बढ़ता गया. आखिरकार विक्रमी पौष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ ज़िल्हिज = .ई० १७७८ ता० ६ जैन्युअरी] को महाराणा हमीरसिंहका देहान्त होगया. इनके साथ तीन ख़वास याने पासबान सती हुईं. इन महाराणाके इन्तिक़ालकी बाबत यह भी मश्हूर है, कि उन्होंने आम लोगोंके साम्हने यह कहदिया था, कि जितने हरामख़ोर हैं, उन सबसे मैं बदख़्वाहीका एवज़ लूंगा. इस सबबसे उस घावपर ज़हरकी पट्टी चढ़वा दीगई; और उसी ज़हरसे उनका इन्तिक़ाल होगया. बाज़का क़ौल है, कि सांठेके गट्ठोंमें ज़हर खिलाया गया. इनकी पैदाइश का महीना व तिथि तो सहीह है, लेकिन् संवत्‌में सन्देह मालूम होता है; हमारे क़ियाससे विक्रमी १८१८ ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० ११७४ ता० १० ज़िल्क़ाद = .ई० १७६१ ता० १३ जून] को महाराणी सर्दारकुंवरसे इनका पैदा होना मालूम होता है. इनका रंग गेहुवां, क़द मझोला, आंखें बड़ी और पेशानी चौड़ी थी. चिहरा हंसीला व ख़ूबसूरत था, आदतमें फ़य्याज़ी और गुस्सह था, तबीअत साफ़ और बहादुरीसे ख़ाली न थी.

दोहा.

अरसी नृप परलोक पद। मिहर प्रकाश हमीर ॥
अमरचन्दको मृत्यु जो। स्वामि भक्त बड़ धीर ॥ १ ॥
बेघम पैं मरहट्ट दल। दंड द्रव्य तैं दैन ॥
महि बिभागकर मेघतैं। निज दल गिरवी लैन ॥ २ ॥
निम्बाहेड़ा प्रांत इक। हुलकरको लिख दीन ॥
फिर हमीर नृप कृष्णगढ़। किल बिवाह निज कीन ॥ ३ ॥
फिर कुंभलगढ़ पे हला। कर आए निज गेह ॥
भावी प्रबल हमीरने। कियो जु त्यागन देह ॥ ४ ॥
सजन आशय तैं फतै। शासन मनको मंड ॥
कविराजा श्यामल कियो। मंडन पूरन खंड ॥ ५ ॥

(१) हाथके अंगूठे और तर्जनीके बीच वाली चमड़ेकी सीवनको "मांझा" बोलते हैं, जिसे उर्दू ज़बानमें "घाई" कहते हैं.

महाराणा हमीरसिंह २.
चौदहवां प्रकरण समाप्त.

पन्द्रहवां प्रकरण.

महाराणा दूसरे भीमसिंह.

महाराणा हमीरसिंहका ऐसी छोटी उम्रमें, कि जो ऐन जवानीका शुरू था, इन्तिक़ाल होजानेसे बाईजीराज सर्दारकुंवरको बहुत रंज हुआ; क्योंकि अव्वल तो वह अपने पति महाराणा अरिसिंहके ही रंजमें डूबी हुई थीं, जो कुछ कम चार वर्ष पहिले दग़ासे मारेगये, दूसरे इस वक़ उन्हें अपने प्यारे बेटेकी असह दुःख पैदा करनेवाली मौतका सद्मह उठाना पड़ा, कि जिसने उनके दिलमें राज्यके बखेड़ोंसे दिली नफ़त पैदा की. हाज़िरीन लोगोंने हमीरसिंहकी जगह उनके छोटे भाई भीमसिंहको गद्दीपर बिठाना चाहा. तब बाईजीराजने साफ़ इन्कार करदिया, और कहा, कि मैं अपने इकलौते बच्चेके लिये ऐसा राज्य नहीं चाहती, जिसमें उसकी जानका ख़तरह हो; मैं अपना ग़रीब हालतमें रहना और अपने बेटेको देखकर बाक़ी ज़िन्दगी पूरी करना पसन्द करती हूं. इसपर उन लोगोंने अर्ज़ किया, कि राज्यका दावा छोड़कर आप अपने बेटेको और भी ज़ियादह ख़तरेमें डालेंगी, क्योंकि अगर ऐसी हालतमें रत्नसिंह मेवाड़का मालिक बनगया, तो कब आपके बच्चेको ज़िन्दह छोड़ेगा ! इस तरहकी बातोंके सुननेसे बाईजीराजने लाचार भीमसिंहको गद्दीपर बिठाना कुबूल किया.

विक्रमी १८३४ पौष शुक्ल ९ [हि० ११९१ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १७७८ ता० ७ जैन्युअरी] को महाराणा भीमसिंह नौ वर्ष साढ़े नौ महीनेकी उम्रमें गद्दीपर

बिठाये गये; सात घड़ी रात गये पुरोहित रामराय, एकलिंगदास बोल्या, महाराज बाघसिंह, महाराज अर्जुनसिंह, महाराज अनोपसिंह, देलवाड़ेके राज सज्जा, कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह, सनवाड़के बाबा जैतसिंह, भदेसरके रावत् सर्दारसिंह, चारण पन्ना आढ़ा, धायभाई रूपा, व धायभाई कीका वग़ैरह सर्दार तथा पासबानोंने नज़्रें दीं. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] से इस वक़्तक अट्ठाईस लाख पचास हज़ार सालियानहकी आमदनीका मुल्क (१) मेवाड़से निकल गया.

और महाराणा भीमसिंहके गद्दीपर बैठनेके वक़्से चालीस वर्षतक मरहटोंने और भी रहा सहा इस मुल्कको बर्बाद किया, अगर्चि मुसलमान बादशाह मेवाड़के दिली दुश्मन थे, लेकिन् वे बादशाहतके तरीक़ेपर हुकूमत करनेके सबब इन्साफ़के भी पाबन्द थे; ये मरहटे लोग, जिनको लूटनेके सिवा और कोई तरीक़ा पसन्द न था, मेवाड़को बर्बाद करनेके लिये एक सख़्त बला थे. कर्नेल टॉडके लेखसे मरहटोंने १८१००००० रुपयेके अनुमान इस मुल्कसे वुसूल किया (२). अगर मुल्ककी बर्बादी न होती और बहुतसे ज़िले इस रियासतसे अलह्दह न निकल जाते, तो यह रक़म अदा हो सक्ती थी, लेकिन् उन लुटेरे ग़नीमोंने दौलत व मुल्क लूटनेके अलावह सख़्त ख़ूंरेज़ियां भी कीं.

महाराणा भीमसिंहके शुरू अह्दमें मुख़ालिफ़ सर्दारोंने रत्नसिंहका साथ छोड़दिया, तब महाराणा विक्रमी १८३८ चैत्र कृष्ण १३ [हि० ११९६ ता० २६ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १७८२ ता० ११ मार्च] को रवानह होकर देवगढ़से रावत् राघवदासको लेआये, जो रत्नसिंहका बड़ा एतिबारी सर्दार था. इसी वर्षमें सलूंबरके रावत् भीमसिंहने अपनी चार बेटियोंका विवाह किया, जिनमेंसे एकका बीकानेरके महाराजा गजसिंहके बड़े कुंवर राजसिंहके साथ, दूसरीका ईडरके महाराज शिवसिंहके कुंवर भवानीसिंहके साथ, तीसरीका रतलामके राजा पद्मसिंहके कुंवर प्रतापसिंहके साथ, और चौथीका देलवाड़ाके राज सज्जाके पुत्र कल्याणसिंहके साथ.

---

(१) विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] में रामपुरा और भानपुरा ९००००० का, विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = .ई० १७६९] में जावद, जीरण, नीमच, और नीबाहेड़ा ४५०००० के, विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = .ई० १७७४] में रत्नगढ़ खेड़ी, सींगोली, अरण्या, जाठ, व नन्दवाय वग़ैरह ६००००० के, और इसी वर्षमें गोड़वाड़ ९००००० का, जुम्लह २८५००००. यह नोट कर्नेल टॉडकी किताबसे नक़्ल किया गया है.

(२) विक्रमी १८०८ [हि० ११६४ = .ई० १७५१] में ६६०००००, विक्रमी १८२० [हि० ११७७ = .ई० १७६३] में ५१०००००, जुम्ले ११७०००००, हुल्करने और विक्रमी १८२६ [हि० ११८३ = .ई० १७६९] में ६४०००००, माधवराव सेंधियाने, कुल १८१०००००, रुपया वुसूल किया.

रावत् भीमसिंहने महाराणाको भी इस शादीमें मिह्मान किया था. मश्हूर है, कि इन शादियोंमें रावत् भीमसिंहने दस लाख रुपया खर्च किया, और चारण भाट वगैरह लोगों को छः महीनेतक बराबर त्याग बांटा, जो कोई शख्स इस उम्मेदसे उक्त रावत्के पास आया, उसे इन्कार नहीं किया गया. कहते हैं कि, एक भाट मटकेमें बहुतसे मेंडक भरलाया था, उन सबका भी रावत् भीमसिंहने त्याग चुकाया. जब महाराणा सलूंबरसे उदयपुरको आये, तो उस वक्त आमेटका रावत् प्रतापसिंह व कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह दोनों महाराणाके बड़े एतिबारी मुसाहिब थे.

विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = ई० १७८३] में रावत् अर्जुनसिंह महाराणाकी तरफ़से भींडरके महाराज मुह्कमसिंहपर फ़ौज लेगया, और भींडरको जाघेरा. रावत् लालसिंह शक्तावतका बेटा संग्रामसिंह, जो इन दिनोंमें नामवर गिना जाता था, और जिसने सर्दारगढ़, याने लावाका क़िला डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहके बेटे सावन्तसिंहसे छीन लिया था, भींडरका मददगार होकर अर्जुनसिंहकी जागीर (कुरावड़) पर हमलह करने लगा. एक दफ़ा जब कि वह मवेशी घेरकर लिये जाता था, अर्जुनसिंह का बेटा ज़ालिमसिंह आ पहुंचा, जिसको उसने बर्छेसे मारडाला. यह खबर सुनकर अर्जुनसिंहने अपने सिरसे पघड़ी उतारकर फैंटा बांधलिया, कि बेटेका एवज़ लेने बाद पघड़ी सिरपर रक्खूंगा; और भींडरसे मोर्चे उठाकर कुरावड़ चला गया. इस वक्तसे चूंडावतों और शक्तावतोंके दर्मियान अदावत ज़ियादह बढ़ी, यहांतक, कि एक दूसरेकी जान लेनेको मुस्तइद होगये.

महाराणा भीमसिंहका पहिला सम्बन्ध ईडरके राजा शिवसिंहकी बेटी अक्षयकुंवरसे हुआ था. जब इस विवाहकी तय्यारी होने लगी, तो कोटेसे झाला ज़ालिमसिंहने मामाके रिश्तेसे नीचे लिखा हुआ सामान देकर गेंताके हाड़ा नाथसिंह और कनाड़ीके झाला भवानीसिंहको उदयपुर भेजाः-

हीरेकी पहुंची जोड़ी १, मोतियोंकी माला १, ढाल १ सिलहट, सोनेके साज़ की तलवार १, कटारी १ सोनेके सामान सहित, महाराणाको उनके कुटम्बियों सहित सरोपाव और घोड़े मए जेवरके; ये तमाम चीजें नज़के तौर पेश की गईं.

महाराणाने उदयपुरसे रवानह होकर पहिला मक़ाम तीतरड़ी गांवमें किया; बरात में कोटेके दोनों सर्दार मए १००० आदमियोंके व देवगढ़का रावत् राघवदास, आमेटका रावत् प्रतापसिंह, बाबा महाराज अर्जुनसिंह, और कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह साथ थे. इसी मक़ामपर रावत् अर्जुनसिंह अव्वल दरजेके उमरावोंमें पारसोलीकी बैठकपर बिठाया गया. यहांसे रवानह होकर बड़गांवमें मक़ाम हुआ, जहां ईडरके

राजा शिवसिंहका वलीअह्द भवानीसिंह पेश्वाईको आया. यहांसे रवानह होने बाद डूंगरपुरके नज़्दीक वहांके रावल शिवसिंह दो हज़ार आदमियों समेत महाराणाकी बरातमें शामिल हुए. ईडरसे चार कोसतक राजा शिवसिंह पेश्वाईको आये. विक्रमी १८४१ ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० ११९८ ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १७८४ ता० १५ मई] को महाराणाने ईडर पहुंचकर बड़ी धूम धामसे विवाह किया, और राजा शिवसिंहको अपनी गद्दीपर साम्हने बैठनेकी इजाज़त दी. महाराणा भीमसिंह ईडरसे लौटकर देव गदाधर (प्रसिद्ध सांवलाजी) के दर्शन करके डूंगरपुर पहुंचे. रावल शिवसिंहने नज़्, निछावर व पगमंडे वगैरह सब दस्तूर अदा करके बहुत अच्छी तरह मिह्मानी की. फिर वहांसे विदा होकर महाराणा उदयपुर आये.

इन दिनोंमें रावत् अर्जुनसिंह वगैरह मुसाहिबोंने महाराणाको अपने क़ाबूमें करलिया. जब कभी खर्चके लिये रुपया दर्कार होता, वे लोग खाली जवाब देदेते; एक दिन बाईजीराजने इन मुसाहिबोंसे कहलाया, कि महाराणाके जन्मोत्सवका जल्सा क़रीब आता है, इसलिये रुपयोंका बन्दोबस्त करना चाहिये; इन लोगोंने अपनी आदतके मुवाफ़िक़ इस मौक़ेपर भी खाली जवाब दिया, जिसपर बाईजीराजको बहुत गुस्सह आया. ज़नानी ड्योढ़ीके नौकरोंमेंसे सोमचन्द नामी एक गांधी महाजन था, उसने बाई रामप्यारीसे कहा, कि बाईजीराजको रावत् अर्जुनसिंह बड़े कारगुज़ार मालूम होते हैं, अगर मुझको प्रधानेका सिरोपाव बख़्शें, और महाराज अर्जुनसिंहको मेरे साथ मकानपर भेजदें, तो फ़ौरन् रुपयोंका बन्दोबस्त होजायेगा. रामप्यारीकी सलाहसे यह बात मन्ज़ूर होकर सोमचन्द प्रधान बना दिया गया. यह बड़ा अक़्मन्द और होश्यार अहलकार था, इसने चूंडावतोंके मुखालिफ़ोंको अपना दोस्त बनाया और कुछ रुपया एकट्ठा करके बाईजीराजके पास भेजदिया. यह बात सुनकर रावत् अर्जुनसिंह, रावत् प्रतापसिंह व भीमसिंह वगैरह सर्दार बहुत हंसे, और जिसको सोमचन्दका दोस्त जाना, उसीको नुक्सान पहुंचाने लगे. सोमचन्दने अक़्लमन्दीसे सबके साथ मुहब्बत बढ़ाई, इससे उसका गिरोह बढ़गया. इस नये प्रधानने कोटाके झाला ज़ालिमसिंहको भी अपना दोस्त बनालिया, जो चूंडावतोंका दिली दुश्मन था; उसकी रायपर विक्रमी १८४२ फाल्गुन् शुक्ल ३ [हि० १२०० ता० २ जमादियुल अव्वल = ई० १७८६ ता० ३ मार्च] को बाईजीराज और सोमचन्द की सलाहसे यह बात करार पाई, कि महाराणा भींडर जाकर महाराज मुहकमसिंहको लेआवें, जो बीस वर्षसे महाराणाके विरुद्ध कार्रवाई करता था. महाराणा उदयपुरसे रवानह होकर भींडर पहुंचे; उसी दिन झाला ज़ालिमसिंह भी पांच हज़ार फ़ौज समेत वहां हाज़िर होगया, और मुहकमसिंहको साथ लेकर ज़ालिमसिंह सहित महाराणा उदयपुर

आये. चूंडावत सर्दार, जो इस नये प्रधानकी हंसी उड़ाते थे, बिल्कुल फीके पड़गये.

इन्हीं दिनोंमें, याने विक्रमी १८४२ चैत्र कृष्ण ९ [हि० १२०० ता० २३ जमादियुल्-अव्वल = ई० १७८६ ता० २४ मार्च] को महाराणी भटियाणीके गर्भसे एक पुत्र पैदा हुआ, जिसकी खुशीमें बड़ा भारी जल्सह किया गया, और उसी उत्सवपर चारण आढ़ा दूलहसिंह को हाथी व गांव वगैरह लाख पशाव; चारण आसिया जशवन्तसिंहको घोड़ा, सिरोपाव और गांव; कृष्णगढ़के चारण बारहट शिवदानको घोड़ा व सिरोपाव; बारहट भोपसिंहको घोड़ा व सिरोपाव; और बारहट रत्नसिंहको घोड़ा वगैरह बख़्शे जानेके सिवा और भी बहुतसे सर्दारों व चारणों तथा पासबानोंको घोड़े व सिरोपाव वगैरह इन्आममें दिये गये.

विक्रमी १८४३ वैशाख शुक्ल ७ [हि० १२०० ता० ६ रजब = ई० १७८६ ता० ४ मई] को ईडरकी महाराणी अक्षयकुंवरके गर्भसे एक राजकुमारी और विक्रमी १८४४ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२०१ ता० २४ ज़िल्क़ाद = ई० १७८७ ता० ७ सेप्टेम्बर] को एक राजकुमारका जन्म हुआ, जिसपर चारण बारहट खूबचन्दको हाथी, सिरोपाव व सिरशोभा; बारहट शिवदानको घोड़ा, सिरोपाव और गांव; बारहट भोपसिंहको घोड़ा, सिरोपाव तथा गांव, और आसिया जशवन्तसिंहको घोड़ा, सिरोपाव व गांव वगैरह बख़्शे गये और इसी तरह दूसरे लोगोंने भी हस्ब हैसियत घोड़े, सिरोपाव वगैरह इन्आम इक्राम हासिल किया.

माधवराव सेंधिया व आंबा इंगलियाको सोमचन्दने अपना मददगार बना लिया, जो ज़ालिमसिंहका दोस्त था, परन्तु महाराणाका यह हाल था, कि वह अपनी युवा-वस्थाके कारण न तो एक जगह ठहरते और न किसीकी बातपर ख़याल करते थे; इसलिये कृष्णगढ़के महाराजा बिड़दसिंहके पाससे चारण बारहट शिवदानको बुलवाया, जिसकी यह खूबी थी, कि अगर किसी सभामें बहुतसे आदमी बैठे होते, और वहांपर वह कोई प्रसंग छेड़ देता, तो सब लोग उसीकी तरफ़ मुतवज्जिह होजाते थे. महाराणाके दिलपर उस कवीश्वरकी बातोंने ऐसा असर किया, कि वह एक जगह बैठकर दो दो पहरतक उसकी बातें सुनने लगे. इस बुद्धिमान बारहटकी उपयोगी बातें सुननेसे महाराणाको रियासती कार्रवाईके ढंग और कई पोलिटिकल मुआमलातमें बहुत कुछ वाक़फ़ियत होगई, जिससे सोमचन्दका भी हौसला ज़ियादह बढ़गया. झाला ज़ालिमसिंह तो इस वक़ कोटे चला गया, लेकिन् प्रधान सोमचन्द व महाराज मुहकमसिंह वगैरहकी एक सम्मति होकर यह क़रार पाया, कि मेवाड़के ज़िले, जो मरहटोंने दबालिये हैं, शम्शेरके ज़रीएसे छीन लेना चाहिये; लेकिन् ऐसे मौक़ेपर चूंडावतोंको भी शामिल करलेना बिह्तर है, कि जिससे आपसमें बखेड़ा

पैदा न हो. यह सलाह ठहरने बाद बाई रामप्यारीकी मारिफ़त रावत् भीमसिंह को तसल्ली देकर सलूंबरसे बुलाया; लेकिन् उसको एतिबार न था, इसलिये आमेटके रावत् प्रतापसिंह, कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह, भदेसरके रावत् सर्दारसिंह और हमीरगढ़के रावत् धीरतसिंहको साथ लेकर उदयपुर आया, और शहरके बाहर कृष्णविलासमें डेरा रक्खा. इस अरसेमें ज़ालिमसिंहका भेजा हुआ, भींडरका महाराज मुहकमसिंह भी कोटेसे पांच हज़ार सवारोंकी जमइयत लेकर आ पहुंचा; जिसमें कनाड़ीका राज भवानीसिंह झाला, कोयलाका आप सूरजमल्ल हाड़ा, फलायताका आप अमरसिंह हाड़ा, गेंताका नाथसिंह हाड़ा और जयसिंह हाड़ा, ऊमरी भदौराका सीसोदिया सोहनसिंह सगरावत और दयानाथ बख़्शी वग़ैरह मुख़्तार थे. जोकि इस फ़ौजका डेरा चंपाबाग़ व हरसिद्धी, माताके क़रीब हुआ था, इस लिये रावत् भीमसिंहको ख़ौफ़ हुआ, कि शायद यह बन्दोबस्त हम लोगोंके क़त्ल करनेको ही हुआ है, और इसी अन्देशेसे वह अपने साथियों समेत रंजीदह होकर चल निकला. सोमचन्द वग़ैरह ख़ैरख़्वाह लोगोंका मन्शा ख़राब न था, इन लोगोंने बाईजीराजको कहा, कि आप पधारकर तसल्लीके साथ उसे ले आवें; तब उक्त राज माता पलाणा नामी ग्राममें पहुंचकर चूंडावतोंको तसल्ली के साथ एकलिंगपुरीमें लाईं, और वहां क़स्म वग़ैरहसे उनका सन्देह दूर करने बाद उदयपुर ले आईं.

सोमचन्दने ख़ानगी बखेड़ा दूर करके जयपुर, जोधपुर वग़ैरह रियासतोंसे भी मरहटोंको राजपूतानहके बाहर निकालदेनेकी सलाह करली थी. इस बारेमें सोमचन्दके नाम जोधपुरसे मोहणोत ज्ञानमल्लके भेजे हुए एक काग़ज़की नक़्ल पाठकोंकी वाक़फ़ियतके लिये नीचे दर्ज कीजाती है :-

ज्ञानमल्लके काग़ज़की नक़्ल.

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने साहजी श्री सोमजी जोग्य, जोधपुर मेड़तीया दरवाजा बारला डेरा थी मोहणोत ग्यानमल लीषावतं जुहार वांचजो— अठारा समाचार श्री जीरे तेज प्रतापसुं भला छे, राजरा सदा भला चाहीये अप्रंच :- कागद राजरो आयो, समाचार श्री हजुर मालुम कीया, राज लीषीयो इतरा दीन जेज हुई, सो तो सीरदारांरे माहो मांहरो बेधोथो, जीण राहसुं हुई; नें हमेंतो सारी बात पुषत वीचारने पटेलरा मुकासदार सीताब उठाय देणा ठेहराया छे; सो सीताब उठाय देणामें आवसी. सारी वातां तीनीरा यतनारो सामलात पणो छे, सु दुरस छे. श्री दीवाणजी राजीसथानामें मुष्य छे, सो या बात जोग हीज छे; तीनांही

राजस्थानारा सामलायत एकठपणांसुं घणो फायदो छे, ने राजस्थानारो घणो दोर वधसी, ने कोई ही दषणी राजस्थानने आसंगमें ल्याय सकसी नही. हमे पटेलरा मुकासदार उठावणारी जेज करणरी सरबथा सलाह न छे, सीताब उठाय देणा; और सारा समाचार उपाध्या मनरुपजीरा कागदमें लीषीया छे; सु कहसी- संवत १८४४ भादवा सुद ३.

अगर्चि सोमचन्द प्रधानने बहुत अच्छी तरहसे चूंडावतोंकी सफ़ाई करवा दी थी, तो भी इस गिरोहके दिलोंका सन्देह दूर न होनेके सबब वे उदयपुरकी हिफ़ाज़त पर रक्खे गये, और बाक़ी फ़ौज मए कोटाकी जमइयतके मालदास व मौजीराम महताकी मुख़्तारीमें रवानह हुई. इन लोगोंने नीबाहेड़ा, नकूंप और जीरण वगैरह कुल ज़िलोंसे मरहटोंको निकालकर उनपर अपना क़ब्ज़ह करलिया. मरहटी सिपाह, जो जावदमें जमा होगई थी, महाराणाकी फ़ौजने वहां पहुंचकर उसका मुक़ाबलह किया. कुछ दिनोंतक नाना सदाशिवराव लड़ा, लेकिन् फिर चन्द शर्तोंपर शहर छोड़कर चला-गया. बेगूंके रावत् मेघसिंहने भी अपने उन पर्गनोंपर अमल करलिया, जो पहिले उसने मरहटोंके सुपुर्द किये थे.

यह ख़बर सुनकर अहल्याबाईने तुलाजी सेंधिया व श्रीभाईकी मातहतीमें एक फ़ौज इस तरफ़को रवानह की, रास्तेमें सेंधियाकी फ़ौज और मन्दसोरसे शिवा नाना भी इनके शरीक होगया, जिसने मेवाड़ी राजपूतोंके मुक़ाबलेसे भागे हुए लश्करको एकट्ठा करलिया था. इन तीनों गिरोहोंके शामिल होजानेसे उन लोगोंके पास बड़ी भारी जमइयत होगई. मरहटी फ़ौजने मन्दसोरसे मेवाड़की तरफ़ कूच किया. यह ख़बर पाकर मालदास महताने भी अपनी फ़ौजकी दुरुस्ती की. सादड़ीका राज सुल्तानसिंह, देलवाड़ेका राज कल्याणसिंह, कान्होड़का रावत् ज़ालिमसिंह, सनवाड़का बाबा दौलतसिंह मए अपने भाई कुशालसिंहके और जमादार सादिक़ व जमादार पंजू सिंधी वगैरह सर्दार मए अपनी अपनी जमइयतके रवानह हुए. गांव चलदूके क़रीब हड़क्या खालपर विक्रमी १८४४ माघ कृष्ण ४ [हि० १२०२ ता० १७ रबीउस्सानी = ई० १७८८ ता० २६ जैन्युअरी] मंगलवार को मरहटोंकी फ़ौजसे मुक़ाबलह हुआ. पहिले हमलेमें तो राजपूतोंने ग़नीमोंको बड़े ज़ोर शोरसे रोका, लेकिन् जब दूसरा हमलह हुआ, तो ये लोग तलवार और बर्छोंसे लश्करपर टूट पड़े. उसवक़ मेवाड़की फ़ौजका अफ़्सर महता मालदास मुख़ालिफ़ोंके हाथसे मारा गया, और सादड़ीका राज सुल्तानसिंह ज़ख़्मी होकर मरहटोंके पंजेमें गिरिफ़्तार हुआ.

देलवाड़ेका राज कल्याणसिंह ज़ख्मोंसे चूर होकर बच रहा; कान्होड़का रावत् ज़ालिमसिंह भी बहुत ज़ख्मी हुआ; बाबा दौलतसिंहने सिलहपर तलवारोंके कई वार झेले, और उसका छोटा भाई कुशालसिंह मारा गया; जमादार पंजू सिंधी काम आया, और जमादार सादिक़की सिलहपर कई तलवारें लगीं. इन सर्दारोंकी जमइयत बड़ी बहादुरीके साथ मारी गई, और बाक़ी फ़ौज अब्तर होकर जावदमें एकट्ठी हुई. मरहटोंने दूसरे कुल मक़ामोंपर अपना अमल करके जावदको आघेरा, कि जहांपर महता अगरचन्दका भतीजा दीपचन्द बड़ी बहादुरीके साथ लड़ रहा था; एक महीनेके बाद वह कई शर्तोंके साथ सिलहख़ानह वग़ैरह अस्बाब लेकर अपने आदमियों सहित मांडलगढ़ चला आया. राज सुल्तानसिंह दो वर्ष तक मरहटोंकी क़ैदमें रहने बाद अपने पट्टेके चार गांव देकर रिहा हुआ, और मेवाड़के क़बज़ेमें आये हुए ज़िले फिर हाथसे निकल गये; लेकिन् साह सोमचन्द गांधीने हिम्मत न छोड़ी, मेवाड़के तहतमें जो मुल्क बाक़ी रहा, उसको आबाद और दुरुस्त करलिया.

विक्रमी १८४५ [हि० १२०२ = .ई० १७८८] में महाराणाने बारहट शिवदानको लाख पशाव दिया, जिसमें उसने गांव और जीविका पाई, जो अबतक उसके क्रमानुयायी चंडीदानके क़बज़ेमें है. बारहट शिवदान (१) महाराणाका बड़ा सलाहकार होगया था, यहांतक, कि महाराणा भीमसिंहके ज्योतिदानमें सलाहके वक़्की तस्वीरमें भी उसका चित्र मौजूद है.

अब हम साह सोमचन्द प्रधानके आपसकी अदावतसे मारे जानेका हाल लिखते हैं. इस वक़् रियासतमें सर्दार व मुसाहिबोंके दो फ़िर्क़े हो रहे थे, जिनमेंसे सलूंबरके रावत् भीमसिंह, कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह, और आमेटके रावत् प्रतापसिंह वग़ैरह चूंडावतोंका गिरोह कम ताक़त, और दूसरे फ़िर्क़ेके लोग याने भींडरका महाराज मुहकमसिंह व प्रधान साह सोमचन्द वग़ैरह ताक़तवर हो रहे थे, और इसी वजूहसे ये लोग चूंडावतोंकी आंखोंमें खटकते थे. रावत् भीमसिंह और उनके साथी चित्तौड़ चले गये. इस समय उदयपुरकी रियासत बड़ी नाज़ुक दशामें थी, सोमचन्दने महाराणाको समझाया, कि हम लोगोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे रियासतका

---

(१) यह ख़ैरख़्वाह बारहट भी सोमचन्दका साथी होनेके कारण चंद सालके बाद मारा गया. इसने कृष्णगढ़ जाते वक़् बनास नदीके किनारे मदारा गांवके पास मुख़ालिफ़ सर्दारोंके भेजे हुए डाकुओंसे बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर चन्द आदमियों सहित प्राण दिया; और उसका भतीजा रामदान ज़ख़्मी होकर बाक़ी रहा, जिसका प्रपौत्र बारहट चंडीदान हालमें मौजूद है.

नुक्सान है; मुनासिब है कि रावत् भीमसिंहको बुलाकर रियासती कारोबारमें शरीक कर दीजिये. इसपर महाराणाने बाई रामप्यारीकी मारिफ़त रावत् भीमसिंह, व अर्जुनसिंह वगैरह चूंडावतोंको बुलाकर दोनों फ़िर्क़ोंमें इत्तिफ़ाक़ करादिया. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "यह इत्तिफ़ाक़ रावत् भीमसिंहने अपने मुख़ालिफ़ोंको धोखा देनेकी ग़रज़से किया, क्योंकि दूसरा फ़रीक़ उनकी हुकूमत छीनकर रियासती कारोबारका मुख़्तार बनगया था."

विक्रमी १८४६ कार्तिक शुक्ल ६ [हि० १२०४ ता० ४ सफ़र = ई० १७८९ ता० २४ ऑक्टोबर] शनि वारको कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह व भदेसरका रावत् सर्दारसिंह महलोंमें गये, और बाईजीराजके भंडारकी चौपाड़ (कमरा) में सोमचन्दको सलाह करनेके बहानेसे एक तरफ़ लेजाकर कहा, कि तूने हमारी जागीर किसतरह छीनी (१), और दोनों तरफ़से कटार मारे, कि उसका काम तमाम होगया. इसके बाद दोनों सर्दार वहांसे भागकर अपनी जमइयतोंमें जामिले, जो त्रिपौलियाके पास खड़ी थी. उस वक्त महाराणा बदनौरके ठाकुर जैतसिंह सहित सहेलियोंकी बाड़ी में थे. सोमचन्दके भाई सतीदास व शिवदास महाराणाके पास पहुंचे और कहा, कि "हमको दुश्मनोंके हाथसे क्यों मरवाते हैं ? आप अपने ही हाथसे मार डालिये." पीछेसे रावत् भीमसिंह भी अपने गिरोह और जमइयतको साथ लेकर चौगानके दरीख़ानहमें जा बैठा, जो शहर और सहेलियोंकी बाड़ीके बीचमें है. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "रावत् अर्जुनसिंह सोमचन्दके ख़ूनसे भरे हुए हाथ सहित महाराणाके पास पहुंचा, और अपने मालिकका कुछ भी लिहाज़ न किया. उस वक्त महाराणाके पास इतनी जमइयत न थी, कि उसको सज़ा देते, उन्होंने सिर्फ़ यह कहा, कि "हरामख़ोर हमारी आंखोंके साम्हनेसे चलाजा, हमको मुंह मत दिखला."

इस समय महाराज अर्जुनसिंह महाराणा संग्रामसिंहोत, जो काशीवास करनेको शहरसे रवानह होकर हज़ारेश्वरमें ठहरे हुए थे, यह बात सुनकर चूंडावतोंके गिरोहमें गये और कहा, कि "तुम रावत् चूंडाकी ख़ैरख़्वाहीको दाग़ लगानेके लिये अपने मालिकसे साम्हना कर रहे हो; ख़ैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब अपने घरको चले जाना चाहिये." महाराज अर्जुनसिंहके इस कलामका उनपर बड़ा असर हुआ, वे

---

(१) सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहका बड़ा बेटा जोधसिंह और छोटा भीमसिंह था. महाराणाने भीमसिंहको कंवारिया और लावाका पट्टा जुदा जागीरमें दिया था; लेकिन् रावत् पहाड़सिंहके मारेजाने बाद भीमसिंह सलूंबरका रावत् होगया, इसलिये सोमचन्दने वह जागीर ख़ालिसे करली थी; क्योंकि वो जागीरदारोंकी जायदादका मालिक एक आदमी नहीं बन सक्ता.

लोग शर्मिन्दह होकर सलूंबरकी तरफ़ होते हुए चित्तौड़को चलेगये. सोमचन्दके मारे-जानेसे बाईजीराज (महाराणाकी माता) ने नाराज़ होकर कहा, कि "मैं ऐसे पुत्रका मुंह नहीं देखना चाहती, जिसने दग़ाबाज़ीसे एक खैरख्वाह प्रधानको मरवा डाला." यह सुनकर महाराज अर्जुनसिंह ज़नानी ड्योढ़ीपर पहुंचे, और कहा, कि "बहूको कहदो, अगर अपने पुत्रकी ज़िन्दगी चाहती हो, तो इस बातको छोड़कर अपने बेटेकी तसल्ली करो; तुम्हारा पुत्र इस बातको बिल्कुल नहीं जानता." बाईजीराजने अपने स्वसुरकी शिक्षासे महाराणाको बुलाकर कहा, कि जो हुआ सो हुआ, अब आगेके लिये तुमको प्रबन्ध करना चाहिये. महाराणाने सोमचन्दका दाह कर्म पीछोलाकी बड़ी पालपर करवाया, जिसकी छत्री अबतक वहां मौजूद है, और सोमचन्दके छोटे भाई सतीदास (१) को प्रधानका पद देकर कहा, कि सोमचन्दका पुत्र जयचन्द, जो बालक रहगया है, उसकी पर्वरिश करो. सतीदासका छोटा भाई शिवदास अपने भाईका मददगार बना. सतीदास और शिवदासने अपने भाई सोमचन्दका बदला लेनेके लिये जमइयत एकट्ठी की, और भींडरका महाराज मुह्कमसिंह भी इनका मददगार बनगया. दूसरी तरफ़ चूंडावतोंने अपनी जमइयतको दुरुस्त करके मुक़ाबलह करनेको चित्तौड़से कूच किया. इस फ़ौजका मुख्तार कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह था. आकोलाके पास दोनों जमइयतोंका मुक़ाबलह हुआ; इस लड़ाईमें सतीदास और भींडरके महा-राजने फ़त्ह हासिल की, और चूंडावतोंका बहुत नुक्सान हुआ; रावत् अर्जुनसिंहने भागकर जान बचाई. कर्नेल टॉड लिखते हैं, "कि इस लड़ाईका एवज़ चूंडा-वतोंने शक्तावतोंको शिकस्त देकर खैरोदाके पास लिया था, लेकिन् आपसकी लड़ाइयोंसे यह नतीजा हुआ, कि मुल्क वीरान होगया, किसान लोग देश छोड़ भागे, व्यापार बन्द हुआ, और ग़नीमोंसे देशको बचाने वाले बहादुर राजपूतोंकी जान सस्ती होगई."

रावत् अर्जुनसिंह अपने बेटे ज़ालिमसिंहका बदला शक्तावतोंसे लेना चाहता था, इन दिनोंमें रावत् संग्रामसिंहने अपने बाप लालसिंहको बाल बच्चों और औरतों सहित

---

(१) ओसवालोंमें "छोटे साजन" गांधी गोत्रका खुशालचन्द नामी एक शख्स था, जो ज़नानी ड्योढ़ीके मौसलों (मुहस्सिलों) में रहा करता था; उसके चार बेटे थेः— १- रूपचन्द, २- सोमचन्द, ३- सतीदास और ४- शिवदास. सोमचन्दका बेटा जयचन्द था, और सतीदासकी गोद महाराणा स्वरूपसिंहने लालचन्दको रक्खा, जिसका बेटा गोपाललाल हालमें मौजूद है.

शिवगढ़में भेजदिया, जो डूंगरपुरके ज़िलेमें सोम नदीके किनारेपर पहाड़ोंमें एक दुश्वार-गुज़ार जगह है, और डूंगरपुरके रावलकी तरफ़से उसको जागीरमें मिली थी, और आप सर्दारगढ़ (लावा) में रहने लगा, जो उसने डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहके बेटोंसे छीन लिया था. रावत् अर्जुनसिंहने मौक़ा देखकर विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में मए जमइयतके लालसिंहको शिवगढ़में जा घेरा; कुछ देरतक दोनों तरफ़के लोग आपसमें लड़े, लेकिन् अर्जुनसिंहके पास जमइयत बहुत थी, उसने एकदम हल्ला करदिया; रावत् लालसिंह, जो ७० वर्षकी उम्रका था, बड़ी बहादुरीसे लड़कर मारा गया; रावत् अर्जुनसिंहने संग्रामसिंहके दो लड़कोंको गिरिफ़्तार करके बड़ी बे रहमीसे मारकर अपने बेटे ज़ालिमसिंहका एवज़ लिया. लालसिंहकी स्त्री अपने पतिके साथ सती होगई. भींडरके महाराज मुहकमसिंह और साह सतीदास व शिवदास वगैरह मुसाहिबोंने देवगढ़के रावत् गोकुलदासको हिकमत अमलीसे अपनी तरफ़ करके उससे एक इक़ारनामह लिखवाया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :-

इक़ारनामहकी नक़्ल.

सिध श्री लषतां रावत् गोकलदासजी अप्रच : श्री दरबारकी बंदगी करणी, कणी ही फेल फतुर म्ही सामले होवां न्ही, और मेवाड़रा गढ़े सारा ही सरदारां-रा पाडे जदे मे ष्णे पाडे नाषां; और गाव गोठ पंचा सरस्ते छोड़ देणा. भाई बेटा श्री द्रबाररा जागीरदार है, सो हुकमे प्रमांणे बंदगी करसी. संवत १८४८ भादवा सुद १२.

इसके बाद महाराणाके मुसाहिब साह सतीदास, शिवदास व जयचन्द, और महता अगरचन्द सहित भींडरके महाराज मुहकमसिंहने विचार किया, कि इस वक़ ज़ालिमसिंह झालाके ज़रीएसे माधवराव सेंधियाको बुलाकर रावत् भीमसिंह वगैरह चूंडावतोंको सज़ा देने बाद चित्तौड़से निकालदेना चाहिये.

महाराणाने इस सलाहको मन्ज़ूर किया, और झाला ज़ालिमसिंहको मए आंबा ऐंगलियाके बुलाया. मुसाहिबोंने उनको कुल हाल लिख भेजा. वे लोग मए फ़ौजके कोटासे रवानह होकर हमीरगढ़ पहुंचे. यह क़िला रावत् भीमसिंहके सलाहकार

रावत् धीरतसिंहके क़बज़ेमें था; आंबा मरहटेने गोलन्दाज़ी शुरू करदी, धीरतसिंह क़िला छोड़कर चित्तौड़पर चला गया, और हमीरगढ़पर आंबाने अपना बन्दोबस्त किया. इसीतरह बसीका क़िला भी लेलिया. ज़ालिमसिंह झाला महाराणाके पास आया, और यहांसे इजाज़त लेकर माधवराव सेंधियाके पास पहुंचा. वह महाराणासे मुलाक़ात करनेकी बड़ी आर्ज़ू रखता था, क्योंकि सेंधियाको इस बातसे अपनी इज़्ज़त बढ़ानेकी ख्वाहिश थी. इसवास्ते उसने यह इक़ार करलिया, कि मेवाड़से चौंसठ लाख रुपया वुसूल किया जावे, जिसमेंसे तीन हिस्सह सेंधिया और एक हिस्सह महाराणा लेवें. वह फ़ौरन् ज़ालिमसिंहके साथ मए लश्करके रवानह होकर नाहर मगरे पहुंचा, जो उदयपुरसे पूर्व ईशानमें सोलह मीलके फ़ासिलेपर एक शिकार-गाह है. महाराणा भी मए लश्कर व बाज़ सर्दारों तथा पासबानों वग़ैरहके उदयपुरसे रवानह हुए, जिनके नाम नीचे दर्ज किये जाते हैं:-

सादड़ीका राज सुल्तानसिंह झाला, कोठारियाका रावत् विजयसिंह चहुवान, भींडरका महाराज मुहकमसिंह शक्तावत, महाराणाका चचा महाराज भैरवसिंह बाघसिंहोत, महाराज बख़्तावरसिंह, शक्तावत रावत् संग्रामसिंह लालसिंहोत, खैराबादका बाबा सालिमसिंह राणावत, महाराज भगवन्तसिंह, महाराज ज़ालिमसिंह नाथसिंहोत बागोरका छोटा, भगवानपुरेका रावत् जोरावरसिंह चूंडावत सांगावत, करेड़ेका राजा विष्णुसिंह चूंडावत सांगावत, बाठरड़ेका रावत् एकलिंगदास सारंग-देवोत, सनवाड़का बाबा दौलतसिंह राणावत, कोठारियाके रावत् फ़तहसिंहका छोटा बेटा उदयसिंह और उसका भाई दलेलसिंह चहुवान, राणावत बख़्तसिंह भारतसिंहोत खैराबादका छोटा, शक्तावत मुहकमसिंह, बनेड़ियाका चहुवान बिशनसिंह (विष्णुसिंह) चत्रसिंहोत, चहुवान अदोतसिंह चत्रसिंहोत, और महाराणाके सात पासबानिये भाई- महाराज गोपालदास, महाराज देवीदास, महाराज मनोहरदास, महाराज भगवानदास, महाराज चैनदास, महाराज मोहनदास और महाराज जवानदास. इनके सिवा पीथावासका जागीरदार चूंडावत जगावत तरुतसिंह, महता अगरचन्द, साह किशोरदास देपुरा, साह एकलिंगदास बोल्या, पाणेरका चारण सौदा बारहट भोपसिंह, पसूंद का चारण आसिया जशवन्तसिंह, कृष्णगढ़का चारण बारहट शिवदान, धायभाई उदयराम, धायभाई फत्ता, धायभाई हद्दू, पंचोली (कायस्थ) नाथ सहीवाला, पंचोली चतुरभुज, महासाणी पंचोली रामा, पंचोली स्वरूपनाथ, व्यास शिवदत्त, त्रिवाड़ी गुलाब, पुरोहित केशवराय, फ़र्राशख़ानहका दारोग़ा साह नग्गा पटवारी, पाणेरी लाला, पाणेरी गजसिंह, पांडे बिशनदास (विष्णुदास), गुहिलोत जोरा ढींकड्या, भोई लाला, भोई नीका,

झारादार कृष्णदास, जमादार सादिक़ सिन्धी, पठान शेरखां और कपूरखां मए अपने मातह्त दो हज़ार पठानोंके, और भाणेज ज़ालिमसिंह पांच सौ सवारों सहित थे. महाराणाने देलवाड़ेके राज कल्याणसिंह और प्रधान साह सतीदासको उदयपुरकी हिफ़ाज़तके लिये छोड़ा, और साह शिवदास तथा जयचन्दको अपने साथ लिया. माधवराव सेंधिया अपने लश्करसे दो कोसतक महाराणाकी पेश्वाई करने बाद वापस अपने डेरोंको चला गया और महाराणाने शिकारगाहके महलोंमें पहुंचकर आराम किया.

विक्रमी १८४८ आश्विन् [हि० १२०६ मुहर्रम = ई० १७९१ सेप्टेम्बर] में नाहर-मगरा मक़ामपर महाराणासे सेंधियाकी मुलाक़ात हुई. और इसी जगह कुछ दिनों ठहरकर उससे रावत् भीमसिंह वग़ैरह चूंडावतोंको चित्तौड़से निकाल देनेकी बाबत बात चीत कीगई, यह सलाह मश्वरा होने बाद कूच होने वाला था, कि महाराणाके नौकर पठानोंने तन्ख्वाहके लिये बल्वा किया, और ड्योढ़ीकी तरफ़ नंगी तलवारें लेकर चले. यह हाल सुनकर महलके भीतरसे महाराणा ढाल तलवार लेकर उठ खड़े हुए, और सर्दारोंने पठानोंपर हमलह करदिया. इस फ़सादमें महाराणाके मातह्त सर्दारोंमेंसे पीथावासका जागीरदार तख़्तसिंह मारा गया, और धायभाई उदयरामके हाथमें तलवारका ज़ख़्म लगा, बाक़ी ख़ैरियत रही. लेकिन् पठानोंके आदमी ज़ियादह मारेगये, कितनेही ज़ख़्मी होकर गिरे और अक्सर जान बचाकर भागगये. यह वायवैला सुनते ही कई उमराव सर्दार, जो दूर दूर डेरोंमें थे, दौड़कर आये, परन्तु इस मुक़द्दमेको हाज़िरीन लोगोंने पेश्तर ही फ़ैसल करदिया था, इसवास्ते बहसकी ज़ुरूरत न रही, वर्नह एक राय होनेमें बड़ी दिक़्क़तें पेश आतीं. कुछ देर बाद माधवराव सेंधिया और भाणेज ज़ालिमसिंह भी आ पहुंचे. झाला ज़ालिमसिंह वग़ैरह बुद्धिमान लोगोंने आइन्दहके लिये फ़ौजकी तन्ख्वाह चुकानेके साथ महाराणाकी अर्दली व ख़ास चौकीका भी उम्दह इन्तिज़ाम कर-दिया. महाराणाने मए फ़ौज और माधवराव सेंधियाके यहांसे रवानह होकर चित्तौड़के क़रीब सेंथी गांवमें मक़ाम किया, और रावत् भीमसिंहको कहलाया, कि क़िला छोड़ कर हाज़िर होजावे. लेकिन् उसको व उसके साथियोंको महाराणाके मुसाहिबोंका एतिबार न था, इसलिये उसने हाज़िर न होकर क़िलेमें लड़ाईका सामान दुरुस्त किया. मरहटों और मेवाड़की फ़ौजने घेरा डालकर विक्रमी १८४८ कार्तिक कृष्ण ११ [हि० १२०६ ता० २५ सफ़र = ई० १७९१ ता० २३ ऑक्टोबर] को क़िलेपर गोलन्दाज़ी शुरू की, और अढ़ाई महीनेके क़रीबतक लड़ाई होती रही. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि ज़ालिमसिंहका इरादह चूंडावतोंको बर्बाद करके मेवाड़में पूरी पूरी दस्तन्दाज़ी करलेनेका था; उसने जोधपुरके

सर्दारोंको भी मिला लिया, और जयपुरको, तो वह कोटेकी ताक़तसे पेश्तर उसपर फ़त्ह पा चुकनेके सबब कुछ हक़ीक़त ही नहीं समझता था, उसका ख़याल था, कि मेवाड़का मुसाहिब होनेसे कुल राजपूतानहमें अपना दख़्ल करके इस ताक़तसे तमाम हिन्दुस्तानपर भी अपना रोब जमा लेवे. उस झाला सर्दारका यह इरादह जानकर आंबा एंगलिया रावत् भीमसिंहसे मिलावट करने लगा. भीमसिंहने भी इस मौक़ेको ग़नीमत जाना, और कहलाया, कि अगर ज़ालिमसिंह झाला कोटेको चलाजावे, तो मुझे महाराणाके पास हाज़िर होनेमें कोई उज़्र नहीं है, और सेंधियाको भी बीस लाख रुपया देना मुझे मंजूर है. माधवरावको पूनाकी तरफ़ जानेकी जल्दी थी, इसलिये उसने यह बात क़बूल करली. ज़ालिमसिंह ऊपरी दिलसे यह कहकर, कि जिस बातमें महाराणाका फ़ायदह हो, वही मुझे मंजूर है, कोटेकी तरफ़ चलागया.

सलूंबरका रावत् भीमसिंह और आमेटका रावत् प्रतापसिंह आंबा एंगलियाकी मारिफ़त महाराणाके पास हाज़िर होगये, और सेंधियासे मिलकर उन्होंने अपने वादेको पूरा करनेकी तह्रीर लिखदी. सेंधिया अपनी तरफ़से आंबा एंगलियाको इख़्तियार देकर नीचे लिखी हुई हिदायतें करने बाद रवानह हुआः-

अव्वल- महाराणाकी हुकूमतको बहाल करना, और ख़ालिसेकी ज़मीन, जो सर्कश सर्दारों और सिन्धी सिपाहियोंने दबाली है, वापस दिलवाना.

दूसरे- झूठे दावेदार (रत्नसिंह) को कुम्भलमेरसे निकाल देना.

तीसरे- जोधपुरके राजासे गोड़वाड़का ज़िला वापस लेना.

चौथे- महाराणा अरिसिंहके मारे जानेके बाबमें, जो बूंदीसे फ़साद हुआ था, उसको दूर करना.

महाराणा साह जयचन्द गांधीको चित्तौड़के क़िलेमें रखकर मए रावत् भीमसिंहके उदयपुर चले आये. कुछ दिनों बाद यह विचार हुआ, कि अब रत्नसिंहको कुम्भलमेरसे निकाल देना चाहिये. आंबा एंगलिया तो मए मरहटी फ़ौज और तोपख़ानहके तय्यार ही था, महाराणाने यहांसे साह शिवदास गांधीको भी महता अगरचन्द, साह किशोरदास देपुरा व रावत् अर्जुनसिंह समेत कुम्भलगढ़की तरफ़ रवानह करदिया. ये सब लोग फ़ौज सहित खमणोर पहुंचे, और वहांसे घाणेरावके ठाकुर दुर्जनसिंहको लिख भेजा, कि हम केलवाड़ेकी तरफ़से आते हैं, आप उधरसे क़िलेमें चढ़जावें. उक्त ठाकुरने मुस्तइदीके साथ इस सलाहको मंजूर किया. आंबा व शिवदास वग़ैरह समीचा गांवमें, जहां रत्नसिंहके तरफ़दार जोगियोंका गिरोह मुक़ाबलेको खड़ा था, पहुंचे, और वहां लड़ाई होने लगी, पहिले बारूदसे और उसके बाद तलवार,

बर्छी व कटारसे मुक़ाबलह हुआ. आख़िरकार जोगियोंके गिरोहको मेवाड़ तथा आंबाकी फ़ौजने पीछा करके कैलवाड़ेसे भगा दिया, और आरेठ पौल की तरफ़से मेवाड़के सर्दार व दूसरी तरफ़से घाणेरावका ठाकुर दुर्जनसिंह क़िलेपर चढ़गया, जिससे घबराकर रत्नसिंह मए अपने साथियोंके क़िले कुम्भलमेरसे निकल भागा, और विक्रमी १८४९ पौष कृष्ण ७ [हि० १२०७ ता० २१ रबीउस्सानी = ई० १७९२ ता० ६ डिसेम्बर] वृहस्पतिवारको क़िलेमें महाराणाका अमल दख़्ल होकर फ़ुतूरी रत्नसिंहका मेवाड़से बिल्कुल नाम निशान उठ गया.

आंबा एंगलिया, ठाकुर दुर्जनसिंह, रावत् अर्जुनसिंह, साह शिवदास, साह किशोरदास व महता अगरचन्दने कुम्भलमेरकी क़िलेदारी सूरजगढ़के राज जशवन्तसिंहको, और पर्गनेकी हाकिमी महता हटीसिंहको दी. फिर ये लोग उदयपुरको चले आये. अब आंबाने माधवरावकी हिदायतके मुवाफ़िक़ मेवाड़का इन्तिज़ाम करनेपर कमर बांधी, और बीस लाख रुपया, जो जागीरदारोंसे लेना क़रार पाया था, उसमेंसे बारह लाख चूंडावतोंसे और आठ लाख शक्तावतोंसे वुसूल करने बाद राजनगर व रायपुर सिंधी सिपाहियोंसे, गुरलां व गाडरमाला पूरावतोंसे, हमीरगढ़ रावत् सर्दारसिंहसे, कुर्ज कंवारिया सलूंबरसे और जहाज़पुर राणावतोंसे छीन लिया. लिखा है, कि ज़मीनका हासिल उस वक़ आधी बटाईके हिसाबसे लिया जाता था; और महाराणाके ख़ालिसेमें पचास लाख रुपया मुल्कसे सालानह वुसूल होता था. अगर्चि आंबा एंगलिया भी एक लुटेरा सर्दार था, लेकिन् माधवराव सेंधियाकी हिदायतके मुवाफ़िक़ यह काम उसने तारीफ़के लाइक़ किया.

महाराणाने दूसरी दफ़ा विक्रमी १८५० फाल्गुन [हि० १२०८ रजब = ई० १७९४ मार्च] में ईडरके राजा शिवसिंहकी बेटी गुलाबकुंवर और दूसरी शिवसिंहके कुंवर भवानीसिंहकी बेटी उमांकुंवर, दोनोंके साथ एकही लग्नपर विवाह किया. महाराणाकी बरातमें नीचे लिखेहुए सर्दार, पासवान और अहलकार थे :-

शाहपुरेका राजा भीमसिंह, बनेड़ाके राजा हमीरसिंहका पुत्र भीमसिंह, कुरावड़का रावत् अर्जुनसिंह चूंडावत कृष्णावत, बागोरका महाराज शिवदानसिंह, करजालीका काका महाराज भैरवसिंह, शिवरतीका महाराज सूरजमल्ल, पुरोहित रामराय, कारोईका महाराज बख़्तावरसिंह, शक्तावत रावत् संग्रामसिंह, बाठरड़ेका रावत् एकलिंगदास सारंगदेवोत, हमीरगढ़का राणावत रावत् धीरतसिंह बीरमदेवोत, काका महाराज बहादुरसिंह अर्जुनसिंहोत, चहुवान उदयसिंह, चहुवान दलेलसिंह फ़तहसिंहोत, थांवलेका, चहुवान कुशालसिंह, ठाकुर अजीतसिंह अर्जुनसिंहोत चूंडावत कृष्णावत, आमेटका

चूंडावत जगावत मुहब्बतसिंह फ़तहसिंहोत, बनेड़ियाका चहुवान विशनसिंह (विष्णुसिंह), विजयसिंह, अदोतसिंह चत्रसिंहोत, और महाराणाके पासबानिये भाई महाराज गोपालदास, मनोहरदास, भगवानदास, देवीदास, चैनदास, मोहनदास, तथा जवानदास महाराणा अरिसिंहोत, धायभाई हट्ठू, धायभाई उदयराम, व्यास शिवदत्त, कायस्थ महासाणी रामा, साह एकलिंगदास बौल्या, महता मौजीराम, चारण आढ़ा दूलहसिंह, कायस्थ चतुर्भुज, कायस्थ स्वरूपनाथ, सहीवाला कायस्थ नाथ, सहीवाला वल्लभदास, पांडे विशनदास (विष्णुदास), ख़वास रघुनाथ, त्रिवाड़ी गुलाब, ड्यौढ़ीका दारोग़ा भोई लाला, फ़र्राशख़ानहका दारोग़ा पुरोहित केशवराय, पाणेरी गजसिंह, पाणेरी मोडा, ढींकड्या गजसिंह, ढींकड्या ज़ोरा, भोई नीका, पुरोहित नांदेश्वर, साह सतीदास गांधी, परिहार मयाराम, और आंबा एंगलियाकी तरफ़से पंडित गणेश नानाराव मए दो हज़ार फ़ौजके और जमादार सादिक़ व जमादार चन्दर दोनों मए दो हज़ार सवारोंके.

महाराणाने ईडर पहुंचकर दोनों राजकुमारियोंके साथ शादी की, और ईडरके महाराजाकी दूसरी कन्याका विवाह बनेड़ाके राजा हमीरसिंहके पुत्र भीमसिंहके साथ हुआ. फिर महाराणाने वहांसे फ़ौज सहित रवानह होकर डूंगरपुरको आघेरा, क्योंकि रावल शिवसिंहके बाद फ़तहसिंहने, जो उसकी गद्दीपर बैठा था, महाराणासे दस्तूरके मुवाफ़िक़ तलवार न बंधवाई, और न ईडर साथ आया, इसलिये उसको इस बेपर्वाईकी सज़ा दी गई. इसवक़ उसने महाराणाके पास हाज़िर होकर, तीन लाख रुपया गद्दी नशीनीके दस्तूर व फ़ौज ख़र्चका अदा करने बाद अपना क़ुसूर मुआफ़ कराया. इसी जगह देवगढ़का रावत् गोकुलदास चूंडावत सांगावत, और आमेटका रावत् प्रतापसिंह चूंडावत जगावत, और आंबा एंगलियाका छोटा भाई बालेराव मए आठ हज़ार फ़ौज और पच्चीस तोपोंके आमिले. महाराणाने कुल फ़ौज सहित बांसवाड़ेकी तरफ़ कूच किया, क्योंकि वहांके रावल विजयसिंहने भी डूंगरपुर वालोंकी तरह सर्कशी इख़्तियार कर रक्खी थी. लेकिन् मही नदीके मक़ामपर उक्त रावलने गढ़ीके ठाकुर ओधसिंह चहुवानको महाराणाकी ख़िदमतमें भेजकर तीन लाख रुपये देने बाद क़ुसूर मुआफ़ करालिया. देवलिया प्रतापगढ़के रावत् सामन्तसिंहने भी यह ख़बर पाकर इसी मक़ामपर अपने मोतमिद लोगोंको महाराणाकी ख़िदमतमें भेजदिया, और धरियावद वग़ैरह डांगलका पर्गनह, जो उसने दबा लिया था, छोड़कर तीन लाख रुपया दंडका देना क़ुबूल किया. महाराणाने धरियावदका पर्गनह रावत् रघुनाथसिंहको इनायत किया, क्योंकि यह पहिलेसे उसके पूर्वजोंके अधिकारमें था, और रुपयोंका पुख़्तह बन्दोबस्त करके आप मए फ़ौजके उदयपुरमें दाख़िल हुए.

अब सेंधियाकी हिदायतोंमेंसे जावद, व नीमच वगैरह वापस देना, और जोधपुर वालोंसे गोड़वाड़का इलाक़ह, तथा बूंदी वालोंसे उनकी दग़ाबाज़ीका एवज़ लेना बाक़ी रहा. महाराणाने आंबासे यह इक़ार करलिया था, कि कुल शर्तें पूरी होजानेपर अलावह फ़ौज खर्चके साठ लाख रुपया तुमको इन्आ़म दिया जायेगा. अगर्चि मुल्की इन्तिज़ाम अम्नकी हालतमें बहाल रहकर गया हुआ मुल्क वापस मिलनेपर यह रक़म ज़ियादह न थी, परन्तु सर्दारोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे इन्तिज़ामका क़ाइम रहना दुश्वार होगया. उस वक़ मुल्ककी आमदनी कम न होनेपर भी रियासतकी हालत तंग थी, क्योंकि अव्वल तो बहुतसा रुपया मरहटोंको देना पड़ता था, दूसरे, महाराणा ऐसे उदार चित्त थे, कि जो उनके हाथ आता उसे इन्आ़म इक्राममें उड़ा देते; परन्तु हमारी यह राय है, कि उस समय महाराणाकी इस क़द्र फ़य्याज़ी न होती, तो उनके पास नौकरोंका ठहरना मुश्किल होता, क्योंकि जागीरोंकी आमदनी, तो लुटेरोंकी मौरूसी जीविका होगई थी, नौकरोंके गुज़ारेका दार मदार केवल इसी इन्आ़म इक्रामपर था.

विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] में महाराणाकी बड़ी बहिन चन्द्रकुंवर-बाईका सम्बन्ध जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहसे क़रार पाया, और इस विवाहके लिये पांच लाख रुपया मरहटोंसे क़र्ज़ लेना पड़ा; परन्तु वह रुपया भी शादीमें देर होनेके सबब खर्च होगया, क्योंकि अव्वल तो विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] में महाराणाकी माता याने बाईजीराजका इन्तिक़ाल होगया, दूसरे, वर्षा अधिक होनेसे पीछोले तालाबका बन्द टूट जानेपर एक तिहाई शहर बहजानेके सबब वह बन्द उसी वक़ तय्यार करवाना पड़ा, और तीसरे ईडरवाली महाराणी गुलाबकुंवरके गर्भसे विक्रमी १८५२ फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० १२१० ता० १९ शअ्बान = ई० १७९६ ता० २९ फ़ेब्रुअरी] को राजकुमार अमरसिंहके पैदा होनेकी खुशीमें बहुतसा रुपया खर्च पड़ा.

इन महाराणाके विक्रमी १८४२ [हि० ११९९ = ई० १७८५] से विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] तक बहुतसी सन्तान हुई, और हर एक राजकुमार व राजकन्याके जन्मोत्सवपर उन्होंने पांचसे दसतक हाथी, बीससे साठतक घोड़े, और पांच सात "लाख पशाव" चारणोंको दिये. इसी संवत्में आंबा एंगलियाको सेंधियाने हिन्दुस्तानकी तरफ़ अपना नाइब मुक़र्रर किया, और मेवाड़में पंडित गणेश पंथ रहा. इसके पास जो मेवाड़के अहलकार मुक़र्रर हुए, उन्होंने बहुतसी सख्तियां कीं. यह खबर सुनकर आंबा एंगलियाने गणेश पंथके एवज़ रायचन्दको मुक़र्रर किया, तोभी बद इन्तिज़ामी दूर न हुई. इस आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे चूंडावत बहुत बर्बाद होगये; कुरावड़ छीन

लिया गया, सलूंबरपर मोर्चा लगा, और सिंधी सिपाही भागकर देवगढ़में जा छिपे.

ईश्वरकी महिमा अपार है, कि वह एक क्षण मात्रमें अपनी विचित्र शक्तिसे अमीरको ग़रीब, और ग़रीबको अमीर, ज़ोरावरको कमज़ोर और कमज़ोरको ज़ोरावर कर दिखाता है. देखिये, कि पहिले तो चूंडावतोंने, जहांतक उनका पेच पड़ा, अपने दौर दौरेमें शक्तावतोंकी बर्बादी और तबाहीपर कमर बांधी, और जब ये अपने जुल्मसे न रुके, तो यकायक शक्तावतोंका सितारा चमक उठा, और उन्होंने भी अपना एवज़ लेनेकी ग़रज़से चूंडावतोंपर तरह तरहकी सख़्तियां करना शुरू किया, जो अख़ीरमें उन्हींके फ़िर्क़े तथा गांधी प्रधानकी तनज़ुलीका कारण हुई, याने ईश्वरने पहिले फ़िर्क़ेको दोबारह ताक़तवर बना दिया. इस वक़् कृष्णावत रावत् अर्जुनसिंहका छोटा पुत्र अजीतसिंह, जो चूंडावतोंमें सबसे बढ़कर सलाहकार और चालाक था, आंबा एंगलियाके पास भेजा गया, जब कि वह मरहटा सर्दार दतियाकी लड़ाईमें मस्रूफ़ था. अजीतसिंहने आंबा एंगलियाके पास पहुंचकर उसको दस लाख रुपया देनेके इक्रारसे अपना मददगार बनाया, और आंबाने अपने नाइबको तलब करके भींडरके महाराज मुहकमसिंह व प्रधान सतीदास का साथ छोड़ दिया. जब रावत् भीमसिंह वगैरह चूंडावत उदयपुरमें आये, तो महाराणा भी उनके तरफ़दार बन गये, क्योंकि उन्होंने यही पॉलिसी इख़्तियार कर रक्खी थी, कि जो गिरोह ग़ालिब आता, उसीके मददगार बन जाते.

विक्रमी १८५३ मार्गशीर्ष कृष्ण १२ शनिवार [हि० १२११ ता० २५ जमादियुल् अव्वल = .ई० १७९६ ता० २६ नोवेम्बर] को साह सतीदास व जयचन्द क़ैद किये गये, और शिवदास भाग निकला. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ शनिवार [हि० ता० ९ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १० डिसेम्बर] के दिन महता अगरचन्दको प्रधानका पद और रावत् भीमसिंहको मुसाहिबीका ख़िल्अ़त मिला. इन लोगोंने मुसाहिब बनकर शक्तावतोंसे दस लाख रुपये वुसूल करके हीता व सेमारी दोनों ठिकाने छीन लिये. कर्नेल टॉड इस रियासतकी बद इन्तिज़ामी और सर्दारोंकी बाहमी अ़दावतका हाल अम्रतरावके काग़ज़ोंसे महाराणा दूसरे जगत्सिंहके अ़हदसे लेकर इस वक़्तक बयान करते हैं, उसमेंसे कुछ तो महाराणा जगत्सिंहके प्रकरणमें और बाक़ी मौक़े मौक़ेपर दर्ज हो चुका है, इसलिये अब उसका ज़ियादह लिखना ज़ुरूर नहीं.

विक्रमी १८५५ ज्येष्ठ [हि० १२१२ ज़िल्हिज = .ई० १७९८ मई] में महाराणा अपनी तीसरी शादी ईडरके राजा भवानीसिंहकी बेटी और गंभीरसिंहकी बहिनके साथ करनेको गये. इधर रावत् भीमसिंहने दूसरे गिरोहको ग़ारत करने और आंबा

एंगलियाकी फ़ौजको मुल्कसे निकालनेके लिये जोधपुरके महाराजा भीमसिंह को अपना मददगार बनाना चाहा, और सिंगवी जैतकरणकी मारिफ़त महाराणाकी कन्या कृष्णकुंवर बाईका सम्बन्ध करनेका पैग़ाम भेजा. इस पैग़ामका नतीजह बहुत ख़राब हुआ, जिसका ज़िक्र मौक़ेपर लिखा जायेगा. चूंडावत लोग इसी फ़िक्रमें थे, कि ज़ालिमसिंह झालाके दोस्त आंबा एंगलियाका लश्कर मेवाड़से निकाल दिया जावे; और इसी लिये उन्होंने लखवा दादासे मिलावट की, जो दौलतराव सेंधियाका दूसरा सर्दार और आंबाका दुश्मन था. वह राजपूतानहका सूबहदार बनकर रवानह हुआ. जब आंबाके नाइब नाना गणेशने मेवाड़से मदद चाही, तो चूंडावतोंने दग़ाबाज़ी से उसको यह कहलाया, कि तुम मज़्बूत होकर लड़ो, हम फ़ौज लेकर आते हैं. नाना गणेशने इन लोगोंकी बातपर यक़ीन करके लखवासे लड़ाई शुरू की; परन्तु उसने पहिले ही हमलेमें शिकस्त पाई, क्योंकि उसको मेवाड़के सर्दारोंसे कुछ भी मदद न मिली. चूंडावतोंने नानाको लखवाके साथ मुक़ाबलह करनेके लिये फिर उभारा, लेकिन् इस वक़ भी उसको भागकर हमीरगढ़में पनाह लेनी पड़ी, और चूंडावत लखवासे मिलगये. इसके बाद महाराणाके हुक्मसे नीचे लिखे हुए सर्दार मए फ़ौज व जमइयतके हमीरगढ़की तरफ़ रवानह हुए:-

फ़ौज मुसाहिब सलूंबरका रावत् भीमसिंह चूंडावत कृष्णावत, प्रधान महता अगरचन्द बछावत, आमेटका रावत् प्रतापसिंह चूंडावत जगावत, देवगढ़का रावत् गोकुलदास चूंडावत सांगावत, बदनौरका ठाकुर मेड़तिया जैतसिंह जयमलोत, राणावत रावत् धीरतसिंह वीरमदेवोत मए अपने बेटों अभयसिंह और भवानीसिंह के, भदेसरका रावत् सर्दारसिंह चूंडावत कृष्णावत, मंडप्याका राणावत उदयसिंह वीरमदेवोत, बाबा अनोपसिंह पूरावत मए अपने तीनों बेटोंके, बाबा गोपालसिंह, बांसड़ेका राणावत बाबा अर्जुनसिंह ग़रीबदासोत, लाछूड़ाका जागीरदार राठौड़ सूरजमल्ल ईसरोत, कैरियाका बाबा फ़तहसिंह ग़रीबदासोत, और भगवानपुरेका रावत् चूंडावत सांगावत ज़ोरावरसिंह वग़ैरह सर्दार क़रीब पन्द्रह हज़ार फ़ौजके रवानह होकर हमीरगढ़ पहुंचे.

नाना गणेश क़िलेके अन्दर खूब लड़ा, बल्कि उसने कई दफ़ा बाहर निकल निकल कर बहादुरानह तौरपर हमले किये. इस समय रावत् धीरतसिंहके बेटों अभयसिंह और भवानीसिंहने एक हमलेमें उससे खूब मुक़ाबलह किया, और दोनों बहादुर अपने बापके साम्हने दुश्मनसे लड़कर मारे गये. इसी अरसहमें आंबा एंगलियाका मातहत अफ्सर गुलाबराव कोदब नाना गणेशकी मददको मेवाड़में आया; तब मेवाड़के सर्दारोंने मूसामूसी गांवके पास लड़ाई की. ग़ालिब था, कि इस लड़ाईमें ये लोग मरहटी फ़ौजपर फ़तह पाजाते; लेकिन् लड़ाईके वक़ एक सवार अपना घोड़ा हाथसे छूटजानेके सबब " भागो,

भागो" कहकर पुकारा, और दूसरेने उस घोड़ेको पकड़कर "मिलगया, मिलगया" कहा. इन लफ़्ज़ोंके सुननेसे मेवाड़की फ़ौज भाग निकली.

इस लड़ाईमें जमादार चन्दर सिंधी तथा दूसरे भी बहुतसे राजपूत मारे गये, और मेवाड़की फ़ौजने शाहपुरेमें पहुंचकर अपनी दुरुस्ती करने बाद दोबारह हमीरगढ़के क़िलेको जा घेरा. इस हमलेमें मंडप्याका बाबा उदयसिंह पूरावत, बाबा अनोपसिंह, और चमरदार कायस्थ गोवर्द्धनदास वगैरह काम आये. क़िलेकी दीवार भी टूट चुकी थी, और क़रीब था, कि नाना गणेश भाग जावे, या मारा जावे, कि इतनेही में आंबा एंगलियाका बेटा और उसका भाई बालेराव व बापू सेंधिया, और जशवन्तराव सेंधिया झाला ज़ालिमसिंहकी फ़ौज सहित नाना गणेशकी मददको आ पहुंचे. तब लखवा मोर्चा उठाकर मए मेवाड़की फ़ौजके चित्तौड़की तलहटीमें आ ठहरा; और नाना गणेश व बालेराव वगैरह वहांसे रवानह होकर घोसूंडा गांवमें बेड़च नदीके किनारे ठहरे. लखवाकी फ़ौज भी उधरसे नदीके दूसरे किनारेपर आ पहुंची, और दोनों लश्करोंमें तोपोंकी लड़ाई शुरू हुई. नाना गणेश और बालेरावके दर्मियान तन्ख्वाहकी बाबत तक्रार होगई, इसलिये नाना गणेश वहांसे निकलकर सांगानेर चला गया. जोकि बालेरावको एक दफ़ा गूगल छपरा मक़ामपर फ़ौजकी क़ैदमें आजानेके वक्त लखवाने रुपयोंकी मदद देकर छुड़वाया था; इसलिये यातो वह उस इह्सानसे या लड़ाई न करनेके इरादेसे लखवाके साथ मेल करके वापस चला गया, और महाराणाने आंबाके नाइबों नाना गणेश वगैरहकी मदद छोड़दी, क्योंकि मुसाहिबीका रुतबा चूंडावतोंको मिलगया था. जिस प्रकार ज़ालिमसिंह झाला और शक्तावतोंने चूंडावतोंके तरफ़दारोंकी जागीरें ज़ब्त करली थीं, उसी तरह अब चूंडावतोंने भी उनके तरफ़दारोंकी जागीरें छीनकर अपने साथियोंको दिलाईं. बीजोलियाका ठिकाना राव सवाई केशवदास पुंवारको, हमीरगढ़ रावत धीरतसिंह बीरमदेवोतको, गाडरमाला बाबा गोपालसिंह पूरावतको, और गुरलां बाबा देवीसिंह पूरावतको दियागया.

विक्रमी १८५६ [हि० १२१३ = ई० १७९९] में आंबा एंगलियाने अपने नाइब नाना गणेशकी मददके लिये अपने मातह्त अफ्सर सदर्लैण्ड साहिबको मए फ़ौज व तोपख़ानहके रवानह किया, और उसकी सहायताके वास्ते ज्यॉर्ज टॉमस नामी एक मश्हूर व बहादुर शख़्सको अपना नौकर बनाकर हरियाणा व पंजाबकी तरफ़से बुलाया. इसी ज्यॉर्ज टॉमसके काग़ज़ात देखकर फ्रैंक्लिन साहिबने एक किताब छपवाई है, उसमेंसे मेवाड़का जुग्राफ़ियह या मुल्की हालत तो हम मेवाड़के भूगोल सम्बन्धी वृत्तान्तमें दर्ज करचुके हैं; अब यहांपर बाक़ी किताबका ख़ुलासह याने लखवाकी लड़ाईसे मुतअल्लिक़ हाल दर्ज किया जाता है:—

ज्यॉर्ज टॉमसकी लखवापर चढ़ाई.

"उदयपुरकी तरफ़ कूच करनेके वक्त टॉमसके सिपाहियोंने चढ़ी हुई तन्ख़्वाह मिलनेमें देर होनेके सबब बल्वा मचाया, और यह बहाना किया, कि हम लोग दक्षिण की तरफ़ जाते हैं, पीछेसे बाल बच्चोंको ख़र्चकी तंगी होगी, इसलिये हमारी तन्ख़्वाह मिलजाना चाहिये. अगर्चि यह बात किसी क़द्र सहीह मालूम होती थी, लेकिन् टॉमसने उनकी अर्ज़ीको मंज़ूर करलेना मुनासिब न समझकर इन्कार करदिया. इसपर बाग़ी सिपाहियोंने उसे क़ैद करना चाहा, परन्तु वह थोड़ेसे ख़ैरख़्वाह सिपाहियोंके साथ इन लोगोंसे अलग रहता था, इस सबबसे उनके घेरेमें न आसका, और उसने अपनी मददके लिये, सवारोंका एक गिरोह बुलाया. जब कि बाग़ी लोग उसपर हमलह करनेके लिये बन्दूक़ें लेकर चढ़ आये, तो वह उनको सज़ा देने या सज़ा देनेकी कोशिशमें अपनी जान खोदेनेका पक्का इरादह करके अपने घोड़ेपर सवार हुआ, और उनका साम्हना करनेके वास्ते गया. इस वक्त उसपर कई गोलियां चलाई गईं, लेकिन् उसने साबित-क़दमीसे ख़ास ख़ास आदमियोंको गिरिफ़्तार करके कैम्पके बाहर निकाल दिया, और बाक़ी लोगोंने अपने साथियोंकी यह हालत देखकर दोबारह अपना काम शुरू किया; तब वह लखवाकी तरफ़ चला. रास्तेमें जोधपुर, जयपुर व कृष्णगढ़के वकील अपनी अपनी रियासतोंसे नज़्रें लाकर उससे मिले, और कहा, कि सेंधियाने लखवाका कुसूर मुआफ़ करदिया है, इसलिये तुमको उस सर्दारके साथ दुश्मनी करना मुनासिब नहीं है, परन्तु टॉमसको, जो उस वक्त आंबाका नौकर होनेके सबब उसीके फ़ायदोंकी बातपर ख़याल रखता था, आंबाने लखवासे लड़नेका साफ़ हुक्म देदिया था, इसलिये उसने लड़ाईको रोकना अपने इख़्तियारमें न समझा; लेकिन् उसके सिपाहियोंकी अगली बग़ावत, जो अच्छी तरहसे तै न हुई थी, दोबारह दूने जोशके साथ शुरू हुई, इस वक्त भी टॉमसने ख़ास ख़ास फ़सादी लोगोंको गिरिफ़्तार करके मुनासिब सज़ा दी, याने उनमेंसे एकको तो तोपसे उड़वा दिया और बाक़ियोंको पैरोंमें बेड़ियां डलवाकर क़ैद करदिया. इस सख़्तीका नतीजह बहुत अच्छा हुआ, कि उसकी फ़ौजमें यही आख़िरी बल्वा होनेके बाद फिर किसी तरहका बखेड़ा न उठा.

इस वक्त सदर्लैंड साहिब फ़ौजका एक गिरोह लेकर मज़्बूत इरादहके साथ लखवाका साम्हना करनेको मुस्तइद हुआ, और दोनों (टॉमस और सदर्लैंड) ने अपनी फ़ौज शामिल करके लखवाकी तरफ़ क़दम बढ़ाया. वह सर्दार (लखवा) उस वक्ततक अच्छी तरह साम्हना करनेके लाइक़ न था, इसलिये उसने उस घाटेके पास डेरा किया, कि जहांसे उदयपुर

को रास्तह जाता है, और उसी घाटेके भीतर उसने अपना भारी सामान रख दिया, कि जिस तज्वीज़से किसी दूसरे मौक़ेपर उसकी बर्बादी होना संभव था; लेकिन् लखवाको पहिलेसे ख़बर मिलगई थी, कि उदयपुरके महाराणा उसके दोस्त हैं, और वह उसके साथियोंको आश्रय देनेके लिये तय्यार हैं. ग़रज़ कि उस वक्त टॉमस और सदलैंडने मिलकर हमलह करनेकी तज्वीज़ की और दूसरे दिन सुब्हका वक्त हमलेके वास्ते मुक़र्रर हुआ, परन्तु उसी रातको सदर्लैंड साहिबने बग़ैर कोई सबब ज़ाहिर करनेके कैम्पसे अलग होना और टॉमसको अकेला छोड़ जाना मुनासिब समझा, जिसपर टॉमसको बड़ा ही तअज्जुब हुआ. इस बातसे लखवाको अपनी काम्याबीका भरोसा हुआ, और वह या तो पहिले ख़राब हालतमें होनेके सबब नर्म दिल था, या अब हालत बदलजानेसे बड़ा घमंडी होगया, और उसने आस पासके सर्दारोंको चिट्ठियां लिखकर मदद मांगी. सदर्लैंडके चले जानेके तीन दिन बाद टॉमस आंबाको फ़ौजके साथ सामानकी हिफ़ाज़तके लिये छोड़कर लड़ाईके तरीक़ेसे लखवाकी तरफ़ बढ़ा, लेकिन् बहुत ज़ोरसे बारिश, गरज और बिजलीका तूफ़ान आजानेके सबब लड़ाई न होसकी; लखवाने अपनी फ़ौजको ठहरा दिया. टॉमसका मक़ाम रिसालेके वास्ते अच्छा था, और दुश्मनकी फ़ौजका ज़ियादह हिस्सह सवारोंका ही था, उनका शुमार ज़ियादह होनेके सबब टॉमस अपने मक़ामको बदलना चाहता था, इसलिये बाई तरफ़ हटकर ऊंची ज़मीनपर ठहरा, जहांपर रिसालेका हमलह उसकी तरफ़ नहीं होसक्ता था. जब तूफ़ान बन्द होगया, तो लखवा टॉमसकी तरफ़ हटा, लेकिन् उसका अच्छा मक़ाम देखकर और उसके तोपख़ानहकी फ़ाइरके नज़्दीक आनेके सबब कुछ आदमियोंका नुक़्सान होजानेसे उसने खेतसे अलग होजाना मुनासिब समझा. टॉमस दिनभर बहुत सख़्त मिह्नत उठानेके बाद थककर शामके वक्त अपने कैम्पमें वापस आया.

आधी रातके वक्त लखवाके वकील सेंधियाकी चिट्ठियां लेकर कैम्पमें आये, जिनमें दोनों तरफ़से दुश्मनी ख़त्म करनेका मन्शा ज़ाहिर किया गया था, और उसने लखवाको नर्मदाके उत्तर तरफ़के तमाम .इलाक़ोंका हाकिम मुक़र्रर किया. सुब्हके वक्त जंगी कौन्सिल हुई और सब सर्दारोंने अपनी अपनी राय दी. टॉमसने अपनी तरफ़से यह कहा, कि आंबाने मुझे ख़ास इसी मत्लबसे मुक़र्रर किया है, कि मेवाड़का इलाक़ह उस (आंबा) के ताबे करलियाजावे, इसीलिये वह (टॉमस) किसी शर्तको मंज़ूर नहीं कर सक्ता, जिसमें कि अव्वल यह बात न लिखी हो, कि लखवा उस मुल्कको ख़ाली करदेवे. बहुतसी बात चीत होनेके बाद यह तज्वीज़ कीगई, कि दोनों फ़ौजें उत्तरी सर्हदकी तरफ़ जावें और वहांपर इस बारेमें सेंधियाके नये हुक्मकी मुन्तज़िर रहें. टॉमस

लखवाकी बेईमानीको अच्छी तरह जानता था, और यह, कि वह सिर्फ़ वक्त टाल रहा है, ता कि अजमेरसे उसकी मददके लिये जो फ़ौज आरही है, पहुंच जावे, और उस .इलाक़ेको अपने पीछे करलेवे; क्योंकि अजमेरका क़िला और शहर उसका था, और ऐसा करलेनेसे उसे सामान बराबर पहुंचते रहनेका भरोसा था. इसलिये टॉमसने यह तज्वीज़ मंज़ूर न की. सिवा इसके उसको यह भी मालूम था, कि उनका उदयपुरके नज़्दीक क़ियाम होनेसे मामूली बारिशके मौसममें, जो कि क़रीब था, बहुत फ़ायदह होगा, क्योंकि टॉमस तो चारे दानेका बन्दोबस्त कर सक्ता था, और उनको इसकी बड़ी हाजत थी. ये बातें उसने आंबाके विचारके लिये लिख भेजीं, लेकिन् इससे कुछ फ़ायदह न हुआ; क्योंकि उस सर्दारके ख़ास अफ़्सरोंको रिश्वत देदी गई थी, इस वास्ते उन्होंने सेंधियाका जवाब आनेतक लखवासे लड़ाई करनेमें इन्कार किया. टॉमसने लाचार होकर नाराज़ीके साथ इन बातोंको क़ुबूल किया, और दोनों फ़ौजें रवानह हुई; बारिशके सबब उत्तरी सर्हदपर पन्द्रह दिनमें पहुंचीं, जो सिर्फ़ पचास कोसका फ़ासिला था. लखवाकी मददको उदयपुर व अजमेरसे फ़ौज पहुंचगई थी, इसलिये उसने मुल्क ख़ाली करनेसे इन्कार किया, और दोबारह दुश्मनी शुरू करके टॉमसकी तरफ़ कूच किया. आंबाकी फ़ौज एक ऐसे मैदानमें ठहरी थी, कि उसपर रिसालेका हमलह अच्छी तरह होसक्ता था. टॉमसने अपनी ज़ाती होश्यारीके साथ ऐसी जगहपर क़दम जमाया, जो नालों व खालोंसे घिरी हुई थी. उस वक्त एक जंगी कौन्सिल हुई, जिसमें यह क़रार पाया, कि आंबाकी फ़ौज टॉमसके पीछे ठहरे, ता कि दुश्मनके रिसालेका हमलह उसपर न होसके. लेकिन् यह बात मालूम होनेसे पहिले फ़ौजके एक गिरोहने रसोई बनाना शुरू करदिया था, इसलिये खाना खालेनेके पहिले लड़ाईमें न जा सकनेके सबब मौक़ेपर पहुंचनेमें देरी हुई, और इस देरीका नतीजह बहुत ख़राब हुआ, परन्तु लखवाने भी अपने साम्हनेके मोर्चेपर जा पहुंचने की कोशिश की, और पक्का इरादह करके चला, मगर उसने बहुत जल्द ही पीछा हटनेपर मज्बूर होकर पैदल सिपाहियोंको अपने बचावके वास्ते हुक्म दिया, और अपनी नाकामयाबीका बदला लेनेकी ख़्वाहिश से ऊपर लिखे हुए गिरोहपर अचानक टूट पड़ा, जो हमला होनेके ख़यालसे बिल्कुल बेख़बर रहनेके सबब उसका मुक़ाबलह करनेको तय्यार न था; इसलिये उस गिरोहके कुल आदमी मारे गये. टॉमसने आंबाकी मददके लिये दो गिरोह छोड़कर बाक़ी सिपाहियोंके साथ लखवाकी फ़ौजपर हमलह करनेको कूच किया, लेकिन् उस वक्त सख़्त बारिश आजानेके सबब नालोंमें एक दम पानी भर गया, और तर्फ़ैनसे लड़ाई बन्द होगई. आठ दिनतक बराबर पानी बरसता रहा, और

इन दिनोंमें छोटी मोटी लड़ाइयां भी होती रहीं. लखवा और उसके ख़ास थोड़े सर्दार किसी क़द्र चुने हुए सवारोंके साथ रोज़ टॉमससे मिलनेको जाया करते और वे अक्सर कैम्प व शाहपुरेके दर्मियान ठहरते थे, जहांसे बराबर उसे रसद पहुंचा करती थी.

इस मौक़ेपर दुश्मनको धोखा देनेके लिये टॉमस अपने सिपाहियोंकी पोशाक और झंडेका रंग बदल देता और किसी बहानेसे दुश्मनकी फ़ाइरके भीतर पहुंचकर बड़ी तेज़ीके साथ गोलन्दाज़ी शुरू करा देता था; एक दफ़ह वह दुश्मनोंके गिरोहके इतना क़रीब जा पहुंचा, कि जहां लखवा आसानीसे पहिचाना जा सक्ता था. टॉमसने बड़ी तेज़ी और होश्यारीके साथ फ़ाइरसे हमलह किया, जिसमें उनको बहुत जल्द कुछ आदमियों व घोड़ोंका नुक़्सान उठाकर पीछा हटना पड़ा. इन छोटी छोटी लड़ाइयोंसे, जिनमें फ़ौजके लोगोंको बड़ी दिक़्क़तें पेश आती थीं, किसी गिरोहको ज़ियादह नुक़्सान न पहुंचा, क्योंकि दोनोंको सेंधियाकी तरफ़से सुलह करनेकी बाबत जवाब पहुंचनेकी उम्मेद हर रोज़ रहती थी. टॉमसकी ग़ैर हाज़िरीका मौक़ा पाकर जेजूरके पर्गनेपर पेरन साहिबके हमलह करने और उसके दूसरे इलाक़हमें लूट मार मचानेकी ख़बर पहुंची, जिसको वह लखवासे पोशीदह रखना चाहता था, परन्तु उस (लखवा) को पहिलेसे ही यह ख़बर मिलगई थी. अब उसने टॉमसको लालच देकर अपने शामिल करनेकी कोशिश की, लेकिन् टॉमसने क़ितई इन्कार किया और जवाब दिया, कि मुम्किन है, कि मैं उस (आंबा) की नौकरी इस लड़ाईके ख़त्म होनेपर छोड़ दूं, परन्तु उसका दुश्मन तो किसी हालतमें नहीं हो सक्ता, और न उसके दुश्मनोंसे किसी तरहका सरोकार रख सक्ता. यह सुनकर लखवा नाराज़ हुआ, और उसने अपने दर्बारमें टॉमसकी बड़ी शिकायत करके कहा, कि वह एक अजीब चाल चलनका आदमी है; सेंधियाने उसको लड़ाई बन्द करनेका बराबर हुक्म भेजा, तो भी उसने न माना. आख़ीरमें टॉमस पर यह तुहमत लगाई, कि उसका इरादह सेंधियाकी हुकूमत तोड़कर अपनी हुकूमत जमानेका है. इन बातोंकी बनावटसे आसूदह न होकर लखवाने पोशीदह तौरपर टॉमसके कैम्पमें अपने आदमी भेजकर सिपाहियोंको बहकाना चाहा, लेकिन् टॉमसके हर्कारोंने उन आदमियोंको गिरिफ़्तार करलिया, और जबतक लड़ाई रही, वे वहां क़ैद रहे.

जब टॉमसकी कोई बन्दिश इस मौक़ेपर कारगर न हुई, तो उसने अपने व लखवाके सिपाहियोंको उनके मुल्कमें बहुत जल्द पहुंचानेकी तसल्ली देकर राज़ी करलिया. उस वक़ लखवा की फ़ौजमें नौ हज़ार सवार, छः हज़ार क़वाइद जानने वाले पैदल सिपाही, दो हज़ार रुहेले और पांच या छः हज़ारके क़रीब दूसरे सिपाही मए ९० तोपोंके थे. टॉमसके पास सिर्फ़ छः पल्टनें थीं, जिनमेंसे भी बहुतसे लोग कम होकर सिर्फ़ १५० सवार, ३०० रुहेले और २२

तोपें रहगई थीं. इस थोड़ीसी फ़ौजके साथ उसको आंबाकी हिफ़ाज़त, कैम्पके बचाव और सामान पहुंचानेके गार्ड तथा तमाम लश्करके लिये घास वग़ैरहका बन्दोबस्त करना पड़ा.

लखवा और टॉमसके दर्मियान कई लड़ाइयां हुईं, जिनमें टॉमसने अक्सर फ़त्ह पाई, और कई बार उसने दुश्मनको कैम्पकी तरफ़ पीछा हटा दिया; बल्कि एक मौक़ेपर तो ऐसी तेज़ीसे हमलह किया, कि लखवा सख़्त शिकस्त पानेसे थोड़ा ही बच गया. उसने अपनी कुल फ़ौज कैम्पसे निकालकर टॉमसपर, जिसके पास सिर्फ़ दो ही पल्टनें थीं, हमलह किया, इसलिये मज्बूर होकर उसे पीछा हटना पड़ा; लखवाने कैम्पतक उसका पीछा किया, लेकिन् उसी मौक़ेपर एक बारगी ३ पल्टनों और कुछ गोले बारूदकी मदद आ पहुंचनेके सबब टॉमसने पीछा करने वालोंपर अचानक हमलह कर दिया, और उन्हें अच्छी तरहसे रोका. लखवा अपने बहुतसे आदमियोंका नुक्सान होजानेसे घबराकर पीछा फिरा, और लश्करमें इस क़द्र अब्तरी होगई, कि वह सिर्फ़ रातके अंधेरेके सबबसे ही शिकस्त पानेसे बचा, वर्नह उसे पूरा नुक्सान उठाना पड़ता. दोनों कैम्पोंके दर्मियान एक नाला था, जिसके उत्तर तरफ़ लखवाकी फ़ौज और दक्षिण तरफ़ आंबा व टॉमसकी फ़ौज थी. आंबाने लखवाके तोपख़ानहसे बचनेके लिये, जो उसके ऊपर फ़ाइर करना चाहता था, नालेके उत्तर तरफ़ एक मज्बूत मोर्चा बनाया; लेकिन् फ़ौजके ख़ास गिरोहसे ज़ियादह दूर होनेके सबब हमलेकी हालतमें मदद नहीं पहुंच सक्ती थी, इसलिये उसकी हिफ़ाज़तके वास्ते तीन गिरोह सिपाहियोंके, छः तोप और एक हज़ार गुसाईं तईनात किये गये, और इनकी मददके वास्ते तीन गिरोह थोड़ी थोड़ी दूरीपर पीछेकी तरफ़ रक्खे गये. चौबीस घंटेतक ख़ूब बारिश हुई, जिससे दो बड़े तालाब किनारेतक भरकर पानी बह निकलनेके सबब नालेमें पानी बहुत बढ़ गया, और दोनों लश्करोंके बीचकी आमद रफ़्त बन्द होगई.

लखवाने यह मौक़ा पाकर ऊपर बयान किये हुए मोर्चेपर बड़ी तेज़ीसे धावा किया, उसके आदमी हमलह करनेको गले तक पानीके भीतर चले गये, यह बहादुरी देखकर मोर्चेके सिपाहियोंकी हिम्मत पस्त होगई, और वे एक गोली भी नहीं चला सके थे, कि ताबे होगये; लेकिन् गुसांइयोंने ताबे होनेसे इन्कार किया, और बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबलह करके मारे गये, आंबाकी बहुतसी फ़ौज भाग गई. लखवाने शाहपुराके राजाको भी टॉमसका दुश्मन बना दिया, ताकि उसे रसद वग़ैरहकी मदद न मिल सके. इस वक़ टॉमसके पास बीस दिनका और आंबाके पास सिर्फ़ तीन ही दिनका सामान था, इसलिये कुछ दिक़त हुई. अगर उन (आंबाकी फ़ौज) को टॉमसकी मददके बिना पीछा हटना पड़ता, तो ज़रूर था, कि उनका चालाक और होश्यार दुश्मन उनके टुकड़े टुकड़े करडालता.

टॉमसको गोले बारूदकी तक्लीफ़ थी, क्योंकि उसका बहुतसा सामान बीस (१) कोसके फ़ासिलेपर सांगानेरमें रहगया था; ज़ियादह फ़ासिलेके सबब थोड़ेसे आदमी सामान लानेके लिये नहीं भेजे जासके थे, और ज़ियादह आदमी भेजना मुम्किन न था, इसलिये उसने खुद कूच करना और ज़रूरी सामान लेकर अपने पहिले मकामपर वापस जाना मुनासिब समझा, लेकिन् आंबाके बहुतसे घायल और बीमार आदमी वहां पड़े रह गये थे, इसवास्ते टॉमसने अपनी ज़ाती नेकी और सखावत से उनको सवारी खर्चके लिये रुपया दिया. लखवाकी फ़ौजके एक गिरोहने उसका पीछा किया, परन्तु उसको कई बार हैरान और परेशान होकर पीछा छोड़ना पड़ा. इसके बाद टॉमसने बाक़ी सफ़र बे खटके तै किया. पहिले लिखा गया है, कि आंबाने टॉमसके क़बज़ेपर हमलह करनेकी इजाज़त दी थी, और इस ग़लतीको वह जानता भी था, क्योंकि टॉमसने हमेशह ईमान्दारीके साथ उसकी नौकरी की थी. आंबाने इन हमलोंका इल्ज़ाम 'पेरन' पर लगाया.

हक़ीक़त तो यह है, कि आंबा और पेरन दोनोंने यह विचार लिया था, कि लखवाने मेवाड़ तो खाली कर ही दिया है, अब टॉमसकी नौकरीका कुछ काम नहीं; इसलिये यह मौक़ा उसके .इलाके छीन लेनेके लिये अच्छा है, लेकिन् उसकी दिलेरी और हालकी लड़ाईमें अपनी खैरख्वाही ज़ाहिर करनेसे बड़े शर्मिन्दह हुए और अपने बद इरादोंसे बाज़ रहे. टॉमसने इस बद सुलूकीसे अपनी नाराज़ी ज़ाहिर करना मुनासिब समझकर उसके ज़िले वापस देदिये, जिससे मुआमलह तै होगया.

सांगानेरमें पहुंचने बाद गोला बारूद वगैरह कुल सामान दुरुस्त करके टॉमस फ़ौरन् लखवाकी तरफ़ चला, जिसने सांगानेरसे बीस कोसपर पूर्वोत्तरकी तरफ़ एक क़िलेको घेर रक्खा था, और उसने धीरे धीरे अगरचन्द महताके इलाक़ह (पर्गनह मांडलगढ़) में होकर उस सर्दारको सज़ा देना मुनासिब समझा, जिसने कि देशी लोगोंको ऐसे मौक़ेपर उसके बर्खिलाफ़ बहका दिया था.

टॉमस थोड़े दिनोंमें लखवाके कैम्पसे क़रीब बारह मीलके फ़ासिलेपर पहुंचा, जिसपर दूसरे दिन सुब्हको हमलह करना चाहता था, लेकिन् लखवाने अपनी कमज़ोरी पर खयाल करके उस क़िलेको छोड़दिया, जिसपर कि उसने घेरा डाल रक्खा था, और दो मंज़िल चलकर अजमेरके सूबेमें दाखिल होगया. दौलतराव सेंधियाकी चिट्ठियां टॉमसके नाम आगई थीं, कि लखवाको फ़र्मांबर्दार बनाकर लड़ाई खत्म करो. लेकिन् इन

(१) यह फ़ासिलह फ्रैंक्लिन साहिबने अंदाज़हसे लिखदिया है, वर्नह अस्लमें १२ कोसके अनुमान है.

खतोंका जवाब टॉमस बराबर यही देता रहा, कि मैं आंबाका नौकर हूं, उसके हुक्मके सिवा किसी दूसरेका हुक्म नहीं मान सक्ता, और उसका हुक्म बराबर यही आता रहा है, कि जब-तक लखवा उदयपुरका इलाक़ह न छोड़ देवे लड़ाई बन्द न करो.

यह मुराद अब पूरी होगई, इसलिये टॉमसने महसूल जारी करना शुरू किया, कि गुज़श्तह लड़ाईका ख़र्च आंबाको चुका देवे. उसने चार लाखके क़रीब रुपया एकट्ठा करलिया, जो ख़र्चसे बहुत ज़ियादह था. अगर पेरन साहिब उस वक्त उस अह्दनामहको, जो आंबाके साथ हुआ था, न तोड़ता, तो वह इससे भी ज़ियादह रुपया जमा कर सक्ता था. इस अह्दनामहकी यह शर्त थी, कि अगर सेंधिया लखवाको दोबारह इख्तियार देना मुनासिब समझे, तो वे दोनों मिलकर काम करें. इस तरहसे उन दोनोंके दरजे ज्योंके त्यों बने रहेंगे. यह भी शर्त थी, कि मेवाड़ आंबाके क़बज़हमें रहे. पेरन इस समय आंबासे डाह रखने लगा, और उसने लखवाके साथ पोशीदह तौरपर एक अह्दनामह कर लिया. सेंधियाकी चिट्ठियां पेश की गईं, जिनमें लिखा था, कि आंबा मेवाड़से फ़ौज हटा लेवे, और लखवा उसके इलाक़हपर क़ाबिज़ रहे. पेरनने आंबाको सलाह दी, कि इस हुक्मकी तामील करो, वर्नह लखवाकी मदद करके ज़बर्दस्ती उसके इलाक़े दिलाऊंगा. इस हालतमें आंबाने अपने तह्सीलदारों व टॉमसके नाम चिट्ठियां लिखीं, कि मुल्क मुतनाज़ह छोड़कर फ़ौज हटा लो. टॉमसने तामील की, पेरन जयपुरको गया, आंबा पीछे रहा, और थोड़े ही दिनोंमें टॉमसको दतियाकी तरफ़ भेजना चाहा, वह उस तरफ़ जानेकी तय्यारी कर रहा था, कि एक दूसरा हुक्म उसके नाम आंबा और लखवा दोनोंकी फ़ौजमें शामिल जा मिलनेकी बाबत आया. टॉमसको कुछ दग़ाबाज़ीका शुब्ह मालूम हुआ, कि लखवा मेरी बर्बादीका मौक़ा ढूंढता है, इस-लिये वह उस हुक्मको न मानकर उत्तरकी तरफ़ चला गया.

लखवाने एक फ़ौज टॉमसको सज़ा देनेके वास्ते भेजना चाहा, लेकिन् ज़ुरूरतके मुवाफ़िक़ रुपया जमा न कर सका. टॉमसने अजमेरके सूबेमें, जिधरसे सफ़र कर रहा था, बहुतसा रुपया जमा किया, और अपने तईं ज़ाहिरा लखवाका दुश्मन समझा. इस वक्त उसकी हालत बहुत नाज़ुक होगई थी, लखवाकी फ़ौज सिर्फ़ बीस कोस फ़ासिले पर पूर्वकी तरफ़ थी; जयपुरकी फ़ौज उसके साम्हने थी, और पेरन उसको नुक्सान पहुंचानेकी कोशिशमें लगरहा था. मेवाड़के पहाड़ी इलाक़हके ख़राब पानीसे उसकी फ़ौजका तिहाई हिस्सह बीमार था, लेकिन् लखवाकी फ़ौज नाफ़र्मांबर्दार होरही थी, और महाराजा जयपुर व पेरन साहिब, कर्नेल कॉलिंस, अंग्रेज़ी एल्चीकी मौजूदगीसे डरगये थे, जोकि विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] के

अखीरमें पहुंचा था, कि अवधके बनावटी नव्वाब वज़ीरअलीको मांग लेवे. इस हालतमें टॉमस उसकी तरक़ीको रोकनेकी हर एक कोशिश तै करके दो लाख रुपया जमा करने बाद अपने .इलाक़हमें आराम करनेके इरादहसे पहुंच गया था, लेकिन् ज़ियादह आराम न ले सका; मालगुज़ारी तह्सील करनेके लिये जो फ़ौज छोड़ी गई थी, वह भी आ-मिली; अब वह मरहटोंका फ़साद तै होजानेके सबब पंजाबमें जाकर पटियालेके साहिब-सिंहको सज़ा देना चाहता था, जिसने साल गुज़श्तहमें टॉमसके साथ पोशीदह खत किताबत करनेके बाइस अपनी बहिनके साथ बद सुलूकी की थी, और उसकी गैर मौजूदगीमें, जब कि वह मेवाड़के .इलाक़हमें था, उसके ज़िलोंमें लूट मार मचा रक्खी थी, लेकिन् उस (पटियालाके) सिक्ख सर्दारने कुछ गांव और थोड़ासा नक्द रुपया देकर दुश्मनी दूर की. इसके बाद टॉमस बीकानेरके राजाकी तरफ़ चला, जिसने अखीर झगड़ा खत्म होनेपर जयपुरके महाजनोंके नाम झूठी हुंडियां दी थीं, इस वक़ उस राजाने अपने पड़ोसी भाटियोंसे, जिनके साथ उसकी बहुत दिनोंसे ना इत्तिफ़ाक़ी चली आती थी, कुछ काम निकाला."

ज्योर्ज टॉमस, जो राजपूतानहमें ज्याज फ़िरंगीके नामसे मश्हूर है, जब मेवाड़में घुसा, तो उसने देवगढ़, आमेट, कोशीथल वगैरह आंबाके बहुतसे मुखा-लिफ़ सर्दारोंके ठिकाने बर्बाद किये. उसने सांगानेरसे रवानह होकर इस किताबके लिखने वाले (कविराजा श्यामलदास) के गांव ढोकलियाको भी बड़ी सख़्तीके साथ लूटा; जिसमें क़रीबन पचास हज़ार रुपयेका माल उसके हाथ लगा था. इस मारिकेमें, जो लोग मौजूद थे, उनकी ज़बानी मैंने सुना है, कि वह अंग्रेज़ लुटेरा होनेपर भी मुन्सिफ़ मिज़ाज था. जब हमारे पुरोहित (ब्राह्मण नाथा सोती) ने उससे जाकर कहा, कि इस मन्दिरमें हमारे ठाकुरोंका ज़नानह, और गांवकी औरतें धन माल छोड़कर बैठी हैं, अगर आपकी फ़ौजके सिपाही मन्दिरके अन्दर जाना चाहेंगे, तो हम उन औरतोंको मारकर सौ दो सौ आदमी कट मरेंगे. उस नेक खयाल अंग्रेज़ने एक गार्ड भेजकर हुक्म दे दिया, कि कोई शख़्स उस मन्दिरके पास न जाने पावे. यह धावा आंबाके दोस्त जोगीराम कान्हावतकी अदावतसे हुआ, जो पहिलेसे हमारे पूर्वजोंके साथ मुखालफ़त रखता था.

इन दिनोंमें महता अगरचन्दने प्रधानेका कुल कारोबार अपने बड़े बेटे देवीचन्दको देकर मांडलगढ़में रहना इख़्तियार किया था. विक्रमी १८५६ पौष शुक्ल ५ [हि० १२१४ ता० ४ शअ्बान = .ई० १७९९ ता० ३१ डिसेम्बर] के दिन वहांसे उसके गुज़र जानेकी खबर मिली, महाराणाको

इस ख़ैरस्वाह प्रधानके जहानसे उठ जानेका बहुत रंज हुआ, क्योंकि वह विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] से विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] तक बराबर अपने स्वामीका ख़ैरस्वाह बना रहा; अल्बत्तह वह दोनों पार्टियोंमेंसे चूंडावतोंका तरफ़दार गिना जाता था, लेकिन् अपने मालिकके नुक्सानमें कभी शरीक नहीं हुआ. वह अपने चारों बेटोंको अपनी ज़िन्दगीमें यही नसीहत करता रहा, कि मैं ख़ैरस्वाहीके सबब छोटे दरजेसे बड़े रुतबेको पहुंचा हूं, इसलिये तुम लोग भी, चाहे कैसी ही तक्लीफ़ें क्यों न उठानी पड़ें, हमेशह अपने मालिकके ख़ैरस्वाह बने रहना, इसीमें तुम्हारी नेकनामी और इज़्ज़त है.

इस शरूसने बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें उठाकर मांडलगढ़के क़िलेको ग़नीमोंके पंजेसे बचाया, और उस पर्गनेके राजपूत व मीणा वग़ैरह लोगोंकी बड़ी बड़ी जमइयतें लेकर फ़ौरन् महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर होता रहा. यह स्वामिभक्त मुसाहिब प्रधानेका ख़िताब मिलने, और उस उह्देसे बर्तरफ़ किये जानेपर भी, दोनों हालतोंमें अपने मालिकका ख़ैरस्वाह बना रहा. इस किताबके मुसन्निफ़का प्रपितामह मयाराम भी इस ख़ैरस्वाह प्रधानका सलाहकार गिना जाता था. उसकी नेक नसीहतका असर उसकी औलाद पर भी बना रहा, और महाराणाने भी उसके ख़ानदानकी इज़्ज़त बढ़ाने व पर्वरिश करनेमें कमी न की; हर एकको जुदी जुदी जागीरें और समय समयपर उह्दे दिये.

विक्रमी फाल्गुन् कृष्ण १० [हि० ता० २३ रमज़ान = ई० १८०० ता० १८ फ़ेब्रुअरी] को भींडरके महाराज मुह्कमसिंहका इन्तिक़ाल होगया. यह शरूस भी अपने मालिकका ख़ैरस्वाह और मुल्कको तरक़ी देनेवाला था. अगर्चि इसका चूंडावतोंसे मुक़ाबलह होनेके समय मुल्कमें तबाही फैली, लेकिन् जब यह मुसाहिब बना, तो महाराणाके खालिसेको बढ़ाने और मुल्की फ़साद दूर करनेकी कोशिश करता रहा. यदि ये दोनों पार्टी एक होकर मुल्कको तरक़ी देना चाहतीं, तो यह ज़मानह भी महाराणा संग्रामसिंहके अह्दका नमूनह बन सक्ता था, लेकिन् आपसकी अदावत और फूटसे हिन्दुस्तानमें बड़ी बड़ी ख़राबियां पैदा हुईं, और उसी फूटने महाराणा दूसरे जगत्सिंहके समय से मेवाड़में भी पैर जमाया. यह कुद्रतका तमाशा है, यदि कोई शरूस ज़मानहके फेरफारको देखना चाहे, तो तवारीख़की सैर करनेसे उसको अच्छी तरह मालूम हो सक्ता है. इन दिनोंमें रावत् भीमसिंह और रावत् अर्जुनसिंह भी इस दुन्यासे कूच करगये, जिससे कुछ दिनोंके लिये दोनों तरफ़का फ़साद ठंढा होगया.

विक्रमी १८५७ [हि० १२१५ = ई० १८००] में जहाज़पुरका क़िला

भी, जो लखवाने शाहपुरेसे (१) छीनकर महाराणाके खालिसेमें मिला लिया था, महता अगरचन्दके बड़े पुत्र महता देवीचन्दकी सुपुर्दगीमें किया गया. यह काम भी बहुत ठीक हुआ, क्योंकि अगर ऐसे खैरख्वाह आदमीके तह्तमें यह सईदी किला न रक्खा जाता, तो संभव था, कि कोई गनीम या सर्हदी मुखालिफ़ उसपर कब्जह करके मुल्कका एक बड़ा हिस्सह रियासतसे जुदा करलेता; अलावह इसके और भी कई तरहके फ़ायदे थे, जिनमेंसे सबसे बढ़कर यह था, कि उस ज़िलेमें राजपूत, मीणे, व गूजर हजारों लड़नेवाले आदमियोंकी आबादी होनेसे वक्तपर रियासतको फ़ौजी मदद मिल सक्ती थी. हक़ीक़तमें अगरचन्द और देवीचन्दने इन ज़िलोंको हाथसे न जाने दिया, वर्नह पेश्तर इनपर कई तरहके खतरे गुज़र चुके थे. यदि महाराणा और उनके खैरख्वाह मुसाहिबोंकी कोशिशसे ये दोनों गिरोह एक होजाते, तो बहुत कुछ मुल्की फ़ायदह करते. अगर्चि इस फूटकी बुन्याद तो पहिलेसे ही जमगई थी, जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, लेकिन् इस समय उसको ज़ियादह तरक्की देनेवाला ज़ालिमसिंह झाला था, जो दोनों फ़रीक़ोंको आपसमें लड़ानेकी कोशिश करता रहा, क्योंकि इसमें वह अपना फ़ायदह जानता था, जैसा कि कर्नेल टॉडने लिखा है.

विक्रमी १८५८ माघ कृष्ण १० [हि० १२१६ ता० २४ रमज़ान = ई० १८०२ ता० २९ जैन्युअरी] को नाथद्वारेके गोस्वामी श्री गोवर्द्धननाथकी मूर्तिको उदयपुर लेआये, जिसका हाल इस तरहपर है, कि जब जशवन्तराव हुल्कर फ़ौज समेत नाथद्वारेके करीब आ पहुंचा, और उसका इरादह हुआ, कि इस देवस्थानकी दौलत लेलेवे, तो यह सुनकर उक्त गोस्वामीने एक पत्र महाराणाके नाम भेजा, जिसपर महाराणाने देलवाड़ेके राज कल्याणसिंह झाला, कूंठवाके ठाकुर विजयसिंह चूंडावत सांगावत, आगरयाके ठाकुर राठौड़ जगत्सिंह जैतमालोत, मोईके जागीरदार अजीतसिंह भाटी, साह एकलिंगदास बौल्या, तथा जमादार नाथू सिंधीको मए जमइयतके नाथद्वारेकी तरफ़ रवानह किया. ये लोग वहां पहुंचकर गोस्वामी और श्री गोवर्द्धननाथ, विठ्ठलनाथ तथा नवनीतप्रिय आदिकी मूर्तियोंको लेकर चले; इसी मौकेपर कोठारियेका रावत् विजयसिंह चहुवान भी मददके लिये आ पहुंचा. इन लोगोंका पहिला मकाम ऊनवास गांवमें हुआ, जो पहाड़ोंके घेरमें है. आगेकी तरफ़ कुछ खतरा न जानकर विजयसिंहने रुख्सत ली, रास्तेमें जशवन्तराव हुल्करकी फ़ौजने उस बहादुर सर्दारको घेरकर कहा, कि घोड़े व शस्त्र दे जाओ. उस शूर-वीरको यह बात नागुवार गुज़री, और उसने अपने घोड़े क़त्ल करके क़दीम

(१) शाहपुराके राजाने कुछ दिनों पहिले इस क़िलेमें क़ब्ज़ह करलिया था.

रवाजके मुवाफ़िक़ पैदल होकर दुश्मनोंपर हमलह करदिया. अगर्चि ग़नीमकी फ़ौजके हज़ारों आदमी थे, लेकिन् विजयसिंहकी बहादुरीपर वे चारों तरफ़से शाबाश! शाबाश!! बोलते, और अपनी जानका ख़तरा समझे हुए थे; परन्तु हज़ारों आदमियोंके दलमें यह अपने थोड़ेसे राजपूतोंकी जम्इयतसे क्या करसक्ता था, आख़िरकार उन बहादुर राजपूतों सहित लड़कर वहीं मारा गया.

श्री गोवर्द्धननाथकी मूर्तिको लेकर गोस्वामी घसियार (१) ग्राममें पहुंचा, महाराणा उन्हें पेश्वाई करके ऊपर लिखी हुई तारीख़को उदयपुर में ले आये. यहां वह दस महीनेतक ठहरे और घसियारमें मन्दिर व क़िला बनने के बाद मूर्ति सहित वहां जा बसे. विक्रमी १८६४ [हि० १२२२ = ई० १८०७] में गोस्वामी महाराज मूर्तिको घसियारसे नाथद्वारेको लेगये. जशवन्तराव हुल्करने नाथद्वारेके लोगोंपर बड़ी सख्तियां करके रुपया लेने बाद भींडर पर भी दबाव डाला. इन बातोंको देखकर महता अगरचन्दके नाइब महता मौजीरामने, जो उस समय प्रधान बना था, महाराणासे अर्ज़ की, कि अब क़वाइद जानने वाली जंगी फ़ौज भरती करके उसका ख़र्च मेवाड़के सर्दारोंसे वुसूल करना चाहिये. यह बात सुनकर मेवाड़के सर्दारोंने मौजीरामको प्रधानेसे ख़ारिज करदिया, और उसकी जगह साह सतीदासको वज़ीर बनाकर उसके भाई शिवदासको कोटासे बुलाया, जो चूंडावतोंके ख़ौफ़से ज़ालिमसिंहके पास भाग गया था. इन्हीं दिनोंमें आंबा एंगलियाका भाई बालेराव और ज़ालिमगिर गुसाईं व ऊदा कंवर (२) आये, और विक्रमी १८५८ फाल्गुन् [हि० १२१६ शव्वाल = ई० १८०२ मार्च] में वे तीनों शख़्स महाराणाके साम्हने सख़्त कलामी करनेके क़ुसूरपर क़ैद किये गये. ज़ालिमसिंह झाला कोटेसे एक फ़ौज लेकर मेवाड़की तरफ़ रवानह हुआ, वह चाहता था, कि महाराणा इन तीनों मरहटोंको छोड़ देवें, लेकिन् इसके बर्ख़िलाफ़ चूंडावत सर्दार इस बातको न मानकर ज़ालिमसिंहकी सज़ादिहीके वास्ते मए फ़ौजके उदयपुरसे रवानह हुए. महाराणा तो दोनों फ़रीक़ोंको ख़ुश रखना चाहते थे, वह इसवक्त ज़ाहिरा चूंडावतोंके साथ मुक़ाबलहको तय्यार होगये, और ख़ानगीमें ज़ालिमसिंहको कहला भेजा, कि तुम थोड़ासा मुक़ाबलह करना, जिससे हम चूंडावतोंको धमकाकर बालेरावको छोड़ देंगे. और ऐसा ही हुआ,

---

(१) यह स्थान उदयपुरसे वायव्य कोणमें ६ कोसके फ़ासिलेपर है, इसका सविस्तर वृत्तान्त नाथद्वारेके हालमें लिखा जायेगा.

(२) मरहटे लोग गुलामको कंवर कहते हैं.

कि महाराणा मए चूंडावत सर्दारों व फ़ौजके नाहर मगरेके क़रीब मुख़ालिफ़ोंकी फ़ौजके मुक़ाबिल पहुंचे, और तर्फ़ैनसे तोपोंके गोले चलने लगे. उस वक़ यह अपने सर्दारोंको घबराये हुए देखकर लौट आये, लेकिन् चूंडावत सर्दारोंने बदनामी उठानेपर भी अपने पुश्तैनी दरजेको न छोड़ा, याने लड़ाईके वक़ हरावलमें थे, उसी तरह भागते वक़ भी हरावलमें होलिये. चेजाके घाटेमें थोड़ासा मुक़ाबलह होनेपर महाराणाने ज़ालिमसिंहको बुला लिया, और उसने भी बड़ी नर्मीके साथ कहा, कि मैंने अपने मालिकसे गुस्ताख़ी की, उसका क़ुसूर मुआफ़ होना चाहिये. महाराणाने उसकी ख़ातिर की और तीनों मरहटोंको उसके सुपुर्द किया.

सेंधियाने हुल्करको बड़ी भारी शिकस्त देकर मेवाड़तक उसका पीछा किया था, और वह जयपुरकी तरफ़ भाग गया, लेकिन् सेंधियाके अफ्सरोंने महाराणासे भी तीन लाख रुपया गहना व जवाहिरात बिकवाकर वुसूल किया, और लखवाको हुकूमतसे ख़ारिज करदिया. वह विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = .ई० १८०२] में सलूंबरके एक मठमें मरगया. अब ज़ालिमसिंह झालाकी बात तेज़ होगई, और वह इस वक़ महाराणाकी ख़ैरख्वाही छोड़कर मेवाड़की बर्बादीको अपनी आंखसे बे फ़िक्रीके साथ देखने लगा. साह सतीदास प्रधान और बालेराव मेवाड़की हुकूमत लेकर चूंडावतोंको ज़लील करनेपर मुस्तइद हुए.

विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = .ई० १८०५] में हुल्कर और सेंधिया, दोनों मेवाड़में बदनौरके क़रीब ठहरे और गवर्मेएट अंग्रेज़ीके ख़ौफ़से आपसमें दोस्त बनकर अपने बचावकी तद्बीरें सोचने लगे. लेकिन् उनकी कोई हिकमत न चली; उधर अंग्रेज़ोंने मरहटोंपर तबाही डाली, और इधर मरहटोंने मेवाड़की ख़राबी की. इस वक़ पूर्वोत्तरी हिन्दुस्तानसे मरहटोंका दख़ल उठ गया था, और नर्मदासे दक्षिण तरफ़ भी अंग्रेज़ी निशान उड़ रहे थे. हुल्कर और सेंधियाने अंग्रेज़ोंसे मुक़ाबलह करनेके लिये यह तद्बीर सोची, कि मेवाड़के क़िलों और पहाड़ोंमें अपने बाल बच्चे तथा सामानको हिफ़ाज़तसे रखकर अंग्रेज़ोंसे लड़ें. इस वक़ महाराणाकी तरफ़से रावत् सर्दारसिंह सेंधियाके लश्करमें एल्ची था, और सेंधियाको उसका मुसाहिब आंबा एंगलिया मेवाड़का दुश्मन बनकर यही सलाह देता था, कि मेवाड़का राज मरहटे सर्दारोंमें तक्सीम करदिया जावे, लेकिन् सर्दारसिंहके मददगार दौलतराव सेंधियाकी स्त्री बेजाबाईकी मददके सबब आंबाकी ख्वाहिश पूरी न होसकी. रावत् संग्रामसिंह व कायस्थ कृष्णदास महाराणाके भेजे हुए हुल्करके दर्बारमें मोतमद थे. जब आंबाका ज़ियादह ज़ोर शोर देखा, तो रावत् सर्दारसिंह हुल्करके लश्करमें अपने

दुश्मन रावत् संग्रामसिंहसे आ मिला. इन दोनों सर्दारोंने अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही के लिये आपसकी ख़ानगी दुश्मनी छोड़कर जशवन्तराव हुल्करको अपना मददगार बनाया, और उसे यह कहनेके अलावह, कि क्या आपने आंबाको मेवाड़का मुल्क बेच दिया है, कि वह अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ रिआ़यापर ज़ुल्म करता है ! इसी क़िस्मकी और भी कई बातें कहीं, जिन्होंने जशवन्तरावके दिलपर बहुत कुछ असर किया, और उसने सर्दारसिंह व संग्रामसिंहको तसल्लीके साथ यह कहकर, कि आंबाकी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ कुछ न होगा, तुम दोनों आपसकी दुश्मनी छोड़कर एक हो जाओ, उन दोनों सर्दारोंको अफ़ीम दी, और आपसमें इत्तिफ़ाक़ करादिया. हुल्करने सेंधियासे कहा, कि मेवाड़के ख़ानदानका बड़प्पन बर्बाद करना ईमान्दारीके बर्ख़िलाफ़ है, क्योंकि महाराणा हमारे मालिकोंके (१) मालिक हैं; और इसके सिवा यह भी कहा, कि जितने मुल्क क़दीमसे महाराणाके हैं, वे सब छोड़कर लाज़िम है, कि उनके साथ दोस्ती पैदा करें, और मेवाड़के क़िलोंको अपना क़ियामगाह बनाकर अंग्रेज़ोंसे लड़ें.

इसके बाद हुल्करने, मेवाड़के कुल ज़िले, जो उसने अपने क़बज़ेमें ले लिये थे, छोड़ दिये (२). यह बात सेंधियाके दिलपर भी जमगई, लेकिन् बर्सात शुरू होजानेके कारण दोनों मरहटे सर्दारोंके बीच दोबारह बात चीत करनेका मौक़ा न मिला. इसी अ़र्सेमें हुल्कर के ख़बर नवीसका एक ख़त उस (हुल्कर) के पास इस मज़्मूनका पहुंचा, कि लॉर्ड लेक के कम्पू में महाराणाका एल्ची भैरवबख़्श आया है, वह यह कहता है, कि जो अंग्रेज़ी फ़ौज टोंकमें मुक़ीम है, मेवाड़में आकर मरहटोंको निकाल देवे. इस ख़तके पढ़ते ही जशवन्तराव आग होगया, और उसने सर्दारसिंह व संग्रामसिंहको बुलाकर वह काग़ज़ दिखाया. मेवाड़के

---

(१) हुल्कर व सेंधियाका मालिक पेश्वा, और उसके मालिक सितारा वाले थे, जो महाराणाके ख़ानदानकी एक शाखामेंसे गिने जाते थे.

(२) हुल्करने नीबाहेड़ा छोड़ देनेकी बाबत महाराणाके नाम एक काग़ज़ लिख भेजा था, जिसकी नक़्ल यहांपर दर्ज कीजाती है:—

स्वस्तिश्रीमन्निखलनिगदितलीलोमारमणचरणशरणमहाराणाजी श्री भीमसिंहजी जोग्य, लिखतं महाराजाधिराज राज राजेश्वर महाराज सूबेदारजी श्री जशवन्तरावजी हुल्कर आलीजाह बहादुर केन श्री वंचजो, अठाका समाचार श्री जीकी कृपाकर भला छे, आपका सुख समाचार सदा भला चाहिजे, तो परम संतोष हो, अप्रंच आपकी तरफ़सूं याद आई, सो ठाकुर अजीतसिंहजीके वियमान मोकलसी वा करार करदीनी वा नीबाहेड़ाकी तुरंत छोड़ चिट्ठी लिखा भेजी है. यादमें मोकलसी करार किया, जी परमाणे अठासूं तफावत न पड़शी; परन्तु दोनों तरफकी निभाई पार पड़शी, अठे सारा भला वेव्हार आपहीका जाण कृपा पत्र हमेशा लिखावता रहोगा जी, मिती प्रथम चैत्र सुद २ संवत १८६०.

वकील कृष्णदास कायस्थने इस बारेमें चन्द उज़्र पेश करके हुल्करका गुस्सह ठंढा किया; लेकिन् उसका वज़ीर अ्लीकर तांतिया बोल उठा, "कि तुम इन रांघड़ोंको ईमान्दार समझते हो, लेकिन् यह तुममें और सेंधियामें बाहम दुश्मनी पैदा कराकर दोनोंको बर्बाद् करेंगे, इसलिये राजपूतोंको छोड़कर सेंधियासे इत्तिफ़ाक़ करना और सरजीरावको निकलवाकर आंबाको मेवाड़का सूबेदार बनाना चाहिये, वर्नह मैं भी तुम्हारा साथ छोड़कर सेंधियाको मालवेमें लेजाऊंगा." दूसरे सलाहकारोंने भी तांतियाकी इस बातको पसन्द् किया. हुल्कर उत्तरकी तरफ़ गया, जिसको लॉर्ड लेकने पंजाबतक पीछा करके भगाया; और दोबारह मेवाड़के ज़ियादहतर ज़ेरबार होनेका वक्त आया, कि सेंधियाने १६०००००) सोलह लाख रुपया वुसूल करनेपर जयपुरकी (१) फ़ौजको उदयपुरसे निकाल देनेके लिये सदाशिवरावको हुक्म देकर भेजा. अब महाराणाकी कन्या कृष्णकुंवरबाईकी शादीमें विक्षेप होने और उस निर्दोष राजकुमारीकी ज़िन्दगी ख़त्म होनेका हाल लिखाजाता हैः-

यह राजकन्या महाराणा भीमसिंहकी बेटी और जवानसिंहकी सगी बहिन थी, जिसका जन्म महाराणी चावड़ीके गर्भसे हुआ था, इसका सम्बन्ध विक्रमी १८५५ [हि० १२१३ = ई० १७९८] में सलूंबरके रावत् भीमसिंहकी मारिफ़त जोधपुरके महाराजा भीमसिंहके साथ होनेकी बात चीत हुई थी; लेकिन् उक्त महाराजा विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में गुज़र गये, और महाराजा मानसिंह जोधपुरकी गद्दीपर बैठे.

कृष्णकुंवरबाईका सम्बन्ध जयपुरके महाराजासे क़रार पानेकी हालतमें लोगोंने उक्त रियासतोंमें बखेड़ा पैदा करनेकी कोशिशें करना शुरू किया. उन दिनों महाराजा मानसिंहका उमराव पोहकरणका ठाकुर सवाईसिंह जयपुरमें था, और

---

(१) महाराणाकी बहिन चन्द्रकुंवरका सम्बन्ध जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहके साथ हुआ था, जिसका ज़िक्र हम ऊपर लिख चुके हैं. इन दिनोंमें उक्त महाराजाका इन्तिक़ाल होगया, तब चन्द्रकुंवरबाईने कहा, कि मेरा पति तो वही था, जिसके साथ मेरी मंगनी हुई थी, अब मैं अपनी शेष उम्रका ख़ातिमह वैधव्य व्यवहारके साथ करूंगी. उक्त राजकन्या प्रतापसिंहके पुत्र महाराज जगत्सिंहको अपना पुत्र जानती थी, और जगत्सिंह भी अपनी माताके तुल्य उसका सत्कार करते थे, जब मेवाड़में अधिकतर तबाही फैली, तो चन्द्रकुंवरबाईने अपनी भतीजी कृष्णकुंवर बाईका विवाह महाराजा जगत्सिंहके साथ करना चाहा, और जगत्सिंहकी बहिनका विवाह महाराणासे किया जाना ठहराया. यह ख़ानगी तहरीर होचुकी, इस कारण जयपुरसे मददके लिये ३००० तीन हज़ार फ़ौज बुलाई गई थी

उसने अपनी पोतीकी शादी महाराजा जगत्‌सिंहके साथ करनी चाही थी. यह ख़बर सुनकर महाराजा मानसिंहने उसके नाम इस मज़्मूनका एक पत्र लिख भेजा, कि तुम अपनी पोतीकी शादी महाराजाके साथ करो, तो पोहकरणमें करना, अगर जयपुरमें लेजाकर करोगे, तो राठौड़ोंकी बड़ी हतक होगी. जिसके जवाबमें सवाईसिंहने लिखा, कि मेरे भाई उम्मेदसिंहका घर जयपुरमें और गीजगढ़का ठिकाना उसकी जागीरमें है, इसलिये यहां विवाह करनेमें, तो कोई हतककी बात नहीं है, लेकिन् उदयपुरके महाराणाकी राजकुमारी, जिसका सम्बन्ध महाराजा भीमसिंहके साथ होचुका था, जयपुरके महाराजासे व्याही जाती है, इसमें अल्बत्तह कुल राठौड़ोंकी हंसी होगी. अब सम्बन्ध करनेके लिये उदयपुरसे टीकेका सामान आने वाला है, इसलिये आपको चाहिये, कि इस बातपर ज़रूर ख़याल रक्खें. यह सुनकर महाराजा मानसिंह जवानीके नशेमें जोधपुरसे चढ़ निकले और कहा, कि जयपुरवालोंका क्या मक्दूर है, जो जोधपुरके महाराजाके साथ मंगनी कीहुई कन्याको विवाह लेजावें.

विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = ई० १८०६] के शुरूमें उदयपुरसे टीकेका दस्तूर जयपुरकी तरफ़ रवानह कियागया था, कि जोधपुरसे महाराजा मानसिंहके उदयपुरकी तरफ़ कूच करनेकी ख़बर सुनकर जयपुरके महाराजा भी बड़ी फ़ौजके साथ मुक़ाबलेको रवानह होगये, इस कारण टीकेका सामान शाहपुरा मक़ामसे वापस लौटाया गया, और इस वक्त जयपुर व जोधपुरके अहलकार बीच बचाव करके सुलहके साथ दोनों राजाओंको पीछे लौटा लेगये. यह हाल मुफ़स्सल तौरपर दोनों रियासतोंकी तवारीख़ोंमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ८६२ व १३१७).

दोनों राजाओंमें सुलह होजानेके सबब पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंहका मत्लब पूरा न हुआ, इसलिये उसने जयपुर पहुंचकर महाराजा जगत्‌सिंहसे कहा, कि उदयपुरका सम्बन्ध न होनेसे आपकी बड़ी हतक हुई; अगर अब भी हिम्मत हो, तो हम सब राठौड़ आपके मददगार रहेंगे. महाराजाने दोबारह फ़ौजकी तय्यारी की; और बीकानेरका महाराजा सूरतसिंह व नव्वाब अमीरख़ां जयपुरके मददगार बने. महाराजा मानसिंह भी जोधपुरसे रवानह हुए, पुष्करके नज़्दीक गांव गींगोलीमें विक्रमी १८६३ फाल्गुन शुक्ल पक्ष [हि० १२२२ मुहर्रम = ई० १८०७ मार्च] में दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, कुल राठौड़ जयपुरकी फ़ौजमें आमिले, और जोधपुरके महाराजा भागकर क़िले जोधपुरमें जा छिपे.. जयपुरके दीवान रायचन्दने महाराजासे कहा, कि अब आपको उदयपुर शादी करके वापस जयपुर पधार जाना चाहिये, क्योंकि हमारी फ़त्ह होगई है; सिर्फ़ वही काम बाक़ी रहा है, जिसके लिये लड़ाई कीगई, सो वह भी जल्द ही सिद्ध होना चाहिये. उक्त वज़ीरकी यह सलाह बहुत ही मुफ़ीद थी, लेकिन् ठाकुर

सवाईसिंह, जो अपना मत्लब किया चाहता था, इस सलाहमें बाधक हुआ, महाराजा ने उसका कहना मानकर जोधपुरको जाघेरा, उस वक़ अमीरख़ां पोशीदह तौरपर जोधपुर से मिलगया, इस शख़्सकी दगाबाज़ीसे महाराजा जगत्सिंहको वापस भागना पड़ा. महाराजा मानसिंहने अमीरख़ांकी मददसे पीछा करके महाराजा जगत्सिंहको बहुत तंग किया.

दौलतराव सेंधियाने उदयपुरकी तरफ़ फ़ौजकशी करके विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = ई० १८०५] में महाराणासे कहलाया, कि जयपुरके वकीलको, जो शादीका पैग़ाम लेकर आया है, निकाल दो, परन्तु इसकी तामीलमें देर जानकर वह ख़ुद उदयपुरके क़रीब आ पहुंचा, और लड़ाई शुरू करदी, महाराणाने समयके अनुसार उसका कहना मंज़ूर करके फ़साद्को दूर किया. सेंधियाकी जयपुरके महाराजासे नाराज़गी के दो कारण थे, एक तो यह, कि उसका चढ़ा हुआ ख़िराज जयपुरसे नहीं मिला था, दूसरे सेंधियाकी फ़ौज पहिले जयपुरसे शिकस्त पा चुकी थी; इस वास्ते उसने इस शादीको रोककर महाराजा जयपुरकी हतक करवाना चाहा. जब महाराणाने उसके कहनेपर अमल करके जयपुरके एल्चीको निकलवा दिया, तो वह वापस चला गया. जिस वक़ जयपुर व जोधपुरके दर्मियान लड़ाई होनेके बाद आपसमें सफ़ाई होचुकी, और अमीरख़ांने सवाईसिंह वग़ैरहको मारकर महाराजा मानसिंहका खटका मिटा दिया, तब महाराजाने नव्वाबसे कहा, कि अब एक काम और बाक़ी रहा है, उसको भी तुम उदयपुरमें पहुंचकर ख़त्म करो; क्योंकि जबतक कृष्णकुंवरबाई ज़िन्दह है, तबतक कभी न कभी फिर फ़साद्की सूरत पैदा होनेका अन्देशह है. उस ज़ालिम निर्दयी पठानने इस राक्षसी कामके करनेपर कमर बांधी, और चूंडावत ठाकुर अजीतसिंहसे, जो उसके लश्करमें उदयपुरकी तरफ़से एल्ची था, सब हाल ज़ाहिर करदिया. अजीतसिंह उसकी फ़र्माइशको कब टाल सक्ता था, लाचारीके साथ मंज़ूर करके उसके साथ होलिया. अमीरख़ांने उदयपुरमें पहुंचकर अजीतसिंहके ज़रीए़से महाराणाको कहलाया, कि या तो आप कृष्णकुंवरबाईको मारडालें, या महाराजा मानसिंहके साथ उसकी शादी करदें, वर्नह मैं इस रियासतको बर्बाद करदूंगा. इस पैग़ामके सुननेसे रियासती लोगोंमें एक तरहका सन्नाटा पड़गया.

अजीतसिंहने महाराणासे कहा, कि इस बातकी तामील होनेमें देर हुई, तो रियासतको बड़ा भारी सद्मह पहुंचेगा. तब महाराज दौलतसिंह भैरवसिंहोत बुलाया गया, और उसे यह हुक्म दिया गया, कि ज़नानख़ानहमें जाकर उस राजकुमारीकी ज़िन्दगीका ख़ातिमह करे. यह हुक्म सुनकर दौलतसिंह अफ़्सोसके आलममें ख़ामोश होगया, लेकिन् जब दोबारह कहा गया, तो वह ज़ोरसे बोल उठा, कि ऐसा बेरहमीका हुक्म सुनाने वालोंकी ज़बान कटाना चाहिये. अगर मुझको हुक्म देना है, तो अमीरख़ांके लिये दीजिये, कि इसी वक़

छातीमें खंजर मारकर उसका काम तमाम करूं, परन्तु कन्यापर घात करना मेरा काम नहीं है, यह काम तो जल्लादोंका है. यह सुनकर सब लोग चुप होरहे. इसके बाद महाराणा अरिसिंहके पासबानिये पुत्र जवानदासको हुक्म दिया गया, तब वह कटार लेकर ज़नानखानहमें पहुंचा, लेकिन् उस राजकुमारीको देखकर उसका भी शरीर कांपने लगा, और कटार हाथसे गिरगया. इस हालको जानकर कृष्णकुंवर बाईकी माता महाराणी चावड़ीने जवानदासको बहुतसी गालियां दीं, और लानत मलामत की, जिससे वह बाहर चला आया, तब उस निरपराध राजकुमारीको शर्बतमें ज़हर दिया गया. उसने खुशीके साथ पियाला हाथमें लेकर कहा, "कि अगर मेरी ज़िन्दगीके खातिमेसे दाजीराजकी तक्लीफ़ रफ़ा हो, तो यह मौक़ा मेरे लिये ग़नीमत है," और उसे पीलिया. इसी तरह तीन दफ़ा ज़हर दिया गया, लेकिन् तीनों बार कैके ज़रीएसे निकल गया. चौथी दफ़ा अफ्यून पिलाई गई, जिसे भी वह खुशीसे पीगई, और परमेश्वरसे अपनी ज़िन्दगीका खातिमह करनेकी प्रार्थना की. ईश्वरने वैसा ही किया, कि विक्रमी १८६७ श्रावण कृष्ण ५ [हि० १२२५ ता० १८ जमादियुस्सानी = ई० १८१० ता० २१ जुलाई] को सोलह वर्षकी उम्रमें इस राजकन्याका देहान्त होगया. कुल रणवास व रियासतमें ऐसा मातम छाया, और कोलाहल मचा, कि जिसका बयान करना हदसे बाहिर है. हमने उस हालको यहांपर बिल्कुल घटाकर लिखा है. यदि किसीको पूरे तौरपर देखना हो, कर्नेल टॉडकी किताबमें देखे, जिन्होंने बहुतसे हालात अपनी आंखोंके देखे हुए और बहुतसे देखने वालोंकी ज़बानी सुनकर दर्ज किये हैं.

नव्वाब अमीरखां तो यमराजका दूत बनकर आया था, जो कृष्णकुंवरबाईका इन्तिक़ाल होनेके बाद वापस चला गया; और उक्त राजकुमारीकी माता महाराणी चावड़ीने अपनी बेटीके रंजमें अन्न जल छोड़कर अपना भी प्राण त्यागन किया. इन महाराणीके गर्भसे जो औलाद हुई थी, उसमेंसे कुंवर जवानसिंह व बाई रूपकुंवर बाक़ी रही.

जब बालेरावको महाराणाने क़ैद किया, तब झाला ज़ालिमसिंहने फ़ौज खर्चकी एवज़ जहाज़पुरका पर्गनह अपने क़बज़हमें करलिया, और धांगड़मऊका जागीरदार विष्णुसिंह शक्तावत, ज़ालिमसिंहकी तरफ़से जहाज़पुरका हाकिम बना. इन दिनोंमें दाणियोंकी कोटड़ीका क़िला शाहपुराके राजा अमरसिंहकी तरफ़से उसके भाइयोंके तहतमें था, वहांके जागीरदारने कोटड़ीके भोमिया कान्हावत शेरसिंहको मारडाला, तब शेरसिंहके बेटे सूरजमल्लने झाला ज़ालिमसिंहके पास पहुंचकर अपनी कुल हक़ीक़त ज़ाहिर की, जिसपर ज़ालिमसिंहने विष्णुसिंह शक्तावतको उसकी मददके

वास्ते लिख भेजा, उसने जहाज़पुरसे चन्द तोपें और कुछ फ़ौज सूरजमल्लके साथ करदी. यह मदद लेकर उसने कोटड़ीके क़िलेको आघेरा, और विक्रमी १८६८ [हि० १२२६ = ई० १८११] में राणावतोंको निकालकर क़िलेको मिस्मार करदिया, और कोटड़ीको शाहपुरेके पट्टेसे छीनकर पर्गनह जहाज़पुरमें शामिल करादिया. इसी तरह सांगानेर भी देवगढ़ वालोंसे छीना जाकर जहाज़पुरमें मिलाया गया. ज़ालिमसिंहका यह इरादह था, कि भीलवाड़ेसे पूर्व तरफ़का मेवाड़का हिस्सह, जो खैराड़के नामसे मश्हूर है, रियासत कोटेमें दाख़िल करलिया जावे, क्योंकि पहिले उसने मेवाड़का मुसाहिब बननेकी बहुत कुछ कोशिश की थी, परन्तु उसमें कामयाबी हासिल न हुई, तब महाराणाको दबाकर मांडलगढ़का क़िला लेना चाहा. महाराणाने ज़ाहिरदारीमें एक ख़ास रुक़्ह महता देवीचन्दके नाम इस मज़्मूनका लिख भेजा, कि मांडलगढ़का क़िला ज़ालिमसिंहके हवाले करदेना; लेकिन् उसीके साथ एक सवारको उसके लिये बख़्शिश के तौरपर ढाल व तलवार देकर भेजदिया, जिसका देवीचन्दने यह मत्लब समझा, कि महाराणाने यह ख़ास रुक़्ह दबावटसे लिख दिया है, वर्नह अस्लमें उन्होंने ढाल तलवार भेजकर हमको लड़ाई करनेका इशारह किया है; इसलिये उसने अपने कुल आदमियोंको क़िलेका बन्दोबस्त करनेके लिये हुक्म दिया, और उस ख़ैरख़्वाह प्रधानकी बहादुरी व हिम्मतसे ज़ालिमसिंहका यह मनोरथ सिद्ध न होसका.

विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में ऐसा सख़्त कहत पड़ा, कि इस तबाहीकी हालतमें वह मेवाड़के लिये मानो क़ियामतका नमूनह बनगया था, जिसमें मेवाड़की रही सही प्रजा और भी बर्बाद होगई. इस वक़्त महाराणा ने अपना व अपने रणवासका ज़ेवर बेचकर अपने नौकरों वगैरहकी पर्वरिश की.

विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] में हुल्करका मुलाज़िम नव्वाब जमशेदख़ां फ़ौज लेकर उदयपुर आया. यह शख़्स बड़ा ज़ालिम और लुटेरा था, इसने यहां आकर महाराणासे रुपया तलब किया, लेकिन् यहां तो पेश्तर से ही ख़ज़ानह ख़ाली पड़ा था, और रहा सहा ज़ेवर वगैरह क़हतमें ख़र्च होचुका. उस ज़ालिम लुटेरेने रुपया न मिलनेके सबब शहर और गिर्दनवाहकी प्रजापर उस वक़्त बड़ी सख़्तियां कीं, कि वह ज़मानह अबतक "जमशेद गर्दी" के नामसे मश्हूर है. महाराणाने उसकी सख़्तियों और ज़ुल्मसे तंग आकर उसको अपने साथ रखकर मेवाड़के सर्दारोंसे रुपया वुसूल करनेपर राज़ी किया, और मए कुछ फ़ौज व अपने दोनों कुंवर अमरसिंह व जवानसिंहके इलाक़हकी तरफ़ दौरेको रवानह होकर राजनगर तथा दूसरे कई ज़िलोंमें होते हुए चित्तौड़ पहुंचे, जहांका क़िलेदार

रावत् धीरतसिंह बड़ी खैरस्वाहीके साथ पेश आया. इस वक्त महाराणाके पास फ़ौजी ताक़त भी बढ़गई. जमशेदखांको कहा गया, कि कुछ रुपया और वुसूल करना बाक़ी है, इसलिये छोटे कुंवर जवानसिंहको तुम्हारे साथ भेजते हैं, कि वह मेवाड़के चन्द क़िलों और ज़िलोंसे जमा करादेगा. उस लुटेरेने भी इस बातको क़ुबूल किया. महाराणाने चन्द मुसाहिबों सहित छोटे कुंवरको उसके साथ देकर बड़े कुंवर अमरसिंहको चित्तौड़की हिफ़ाज़तके लिये छोड़ा, और आप उदयपुरको चले आये.

इन दिनों महाराणाने ५०० सिपाही पठान नौकर रक्खे थे, उन्होंने अपनी तन्स्वाह न मिलनेसे महलोंमें धरणा (१) दिया. तब महाराणाके हुक्मसे रावत् सर्दारसिंहने इस तरहपर सिपाहियोंको समझाया, कि जबतक तुम्हारा रुपया अदा न हो, मैं तुम्हारी हवालातमें रहूंगा. इसपर पठानोंने उस सर्दारको अपनी सुपुर्दगीमें लेकर धरणा उठादिया. उन दिनों साह सतीदास गांधी महाराणाका प्रधान था, उसने अपने भाई सोमचन्दका बदला लेनेकी ग़रज़से, जिसको कि सर्दारसिंहने मारडाला था, पठानोंको इशारह करदिया, इससे वे सर्दारसिंहपर सख्तियां करने लगे. एक दिन उक्त रावत्के पीनेको अफ़ीम लाई गई, उसे सिपाहियोंने ठोकर देकर गिरा दिया. यह देखकर सर्दारसिंहको उसके हम्राही राजपूतोंने कहा, कि अब ज़िन्दगीकी उम्मेद छोड़ देना चाहिये, क्योंकि यह अदावत रुपयोंके लिये नहीं, बल्कि जान लेनेका उपाय है. सर्दारसिंहने इस बातको सहन करके सब्र किया, लेकिन् उसके साथ वालोंमेंसे लहसाड़ियाका चूंडावत लालसिंह, आटूणका पूरावत जवानसिंह और बानसीणका भाटी दौलतसिंह, तीनों राजपूत तलवारें निकालकर सिपाहियोंपर टूट पड़े और बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारे गये. उक्त राजपूतोंके मारे जाने बाद रावत् सर्दारसिंहपर ज़ियादह तर सख़्ती होने लगी. फिर साह सतीदास और उसके भतीजे जयचन्दने पठानोंकी चढ़ी हुई तन्स्वाह देकर सर्दारसिंहको अपनी हिफ़ाज़तमें लेलिया, और उसे आहड़की नदीके पश्चिमी किनारेपर पुलके क़रीब लेजाकर मारडाला. उसकी लाश तीन रोज़के बाद जलाई गई. वे पांच सौ पठान सतीदास व जयचन्दके मददगार थे, और महाराणा भी अपनी पॉलिसीके अनुसार उन्हींके सहायक बनगये. थोड़ेही अरसे बाद नव्वाब जमशेदखां, नव्वाब दिलेरखां, शाहज़ादह खुदादादखां, बापू सेंधिया, और हिम्मत बहादुर, पांचों लुटेरोंने उदयपुरको आ घेरा. इस वक़् भी सतीदास और जयचन्दने उन मरहटोंको कुछ रुपया वग़ैरह देकर रुख़सत किया.

विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = ई० १८१५] में ज़ालिमसिंह झालाकी दर्स्वास्तपर महाराणा उदयपुरसे रवानह होकर चित्तौड़, बेगूं व भैंसरोड़ होते हुए कोटे

---

(१) खाना पीना छोड़कर जब कोई किसीके दर्वाज़ेपर बैठ जाता है, उसको धरणा कहते हैं.

पहुंचे, जहां महाराव उम्मेदसिंहकी कन्या किशोरकुंवरके साथ अपना, और महारावके पुत्र विष्णुसिंहकी कन्याके साथ वलीअहद अमरसिंहका विवाह किया; इन्द्रगढ़के जागीरदार संग्रामसिंहकी बेटीके साथ छोटे कुंवर जवानसिंहकी शादी हुई. ज़ालिमसिंहने सम्बन्ध होनेसे पहिले तो बहुत कुछ मदद वगैरह देनेका वादह किया था, लेकिन् शादी हो चुकने बाद कुल वादे झूठे दिखाई दिये, तब महाराणा नाउम्मेद होकर वापस उदयपुर चले आये. इन दिनोंमें चूंडावतोंका पेच पड़जानेसे गांधियोंका फ़िर्क़ह कमज़ोर होगया था; ठाकुर अजीतसिंह, रावत् जवानसिंह और दूलहसिंहने महाराणासे हुक्म लेकर साह सतीदास प्रधानको क़ैद करलिया, और विक्रमी १८७२ कार्तिक कृष्ण १२ [हि० १२३० ता० २५ ज़िल्क़ाद = .ई० १८१५ ता० २९ ऑक्टोबर] को पहर रात गयेके क़रीब रावत् जवानसिंह व दूलहसिंह उक्त प्रधानको महलोंसे दिल्ली दर्वाज़ेके क़रीब लेगये और उसका सिर काटकर रावत् सर्दारसिंहका बदला लिया. यह ख़बर सुनतेही पिछली रातके वक्त साह जयचन्द अपनी जान बचानेके लिये शहरसे भागा, लेकिन् चूंडावतोंने रास्तेहीमें ग्राम नाईके पास उसको भी पकड़कर मार डाला (१).

विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = .ई० १८१६] में नव्वाब दिलेरखांकी फ़ौजने चित्तौड़ ज़िलेके गांवोंको बर्बाद किया. यह सुनकर विक्रमी आश्विन कृष्ण १२ [हि० ता० २५ शव्वाल = .ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को कुंवर अमरसिंहने मए साह शिवलाल और रावत् दूलहसिंह वगैरहके उससे मुक़ाबलह किया, जिसमें दिलेरखांकी फ़ौज शिकस्त खाकर भाग निकली, और राजकुमारके साथियोंमेंसे महन्त सुखराम गिर गुसाईं, तथा बानसीणका भाटी हमीरसिंह मारा गया, रावत् दूलहसिंहको बर्छेका ज़ख़्म लगा, और ओछड़ीका शक्तावत उदयसिंह, मान्यावासका चूंडावत चतुर्भुज, राणावत गुलाबसिंह वीरमदेवोत, राठौड़ खूमसिंह, गौड़ जोधसिंह, और भाटी गुलाबसिंह वगैरह ज़ख़्मी हुए.

इन दिनोंमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी अमल्दारी दिन ब दिन बढ़ती जाती थी, ज़ालिमसिंह झालाने महाराणाको लिख भेजा, कि अगर हुक्म हो, तो मैं अंग्रेज़ोंके साथ मेवाड़की बाबत अह्द पैमान करनेकी बातचीत करूं, लेकिन् महाराणाको ज़ालिमसिंहकी तरफ़से यह ख़ौफ़ था, कि जिस तरह उसने कोटाके महारावको बे इख़्तियार कर रक्खा है, उसी तरहका बर्ताव यहां भी करेगा, इसलिये उसको टालाटूलीका जवाब देकर जयपुरके मोतमद चतुर्भुज हल्दियाकी मारिफ़त अंग्रेज़ोंसे इस मुआमलेमें बात चीत करना शुरू किया, और ठाकुर अजीतसिंहको, जो उन दिनों कोटेमें था, लिख भेजा, कि तुम फ़ौरन् गवर्नर जेनरलके पास पहुंचकर यह मुआमलह तै करो, लेकिन्

(१) बाज़ लोग कहते हैं, कि उसको लुटेरे भीलोंने घेरकर मारडाला.

अजीतसिंहके जानेमें कुछ देर हुई. गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ अ़हदनामहकी शर्तें क़रार पानेके वक़्त मरहटोंने मेवाड़का बहुतसा मुल्क दबा रक्खा था, उसके वापस मिलनेकी बाबत मेवाड़वालोंकी तरफ़से बहुत कुछ उ़ज़ किया गया, लेकिन् गवर्मेण्टको सेंधियाका लिहाज़ ज़ियादह था, इसलिये इस बारेमें तवज्जुह नहीं की. विक्रमी १८७४ पौष शुक्ल ७ [हि॰ १२३३ ता॰ ५ रबीउ़ल्अव्वल = ई॰ १८१८ ता॰ १३ जैन्युअरी] को गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ पहिला अ़हदनामह हुआ, जिसकी नक़्ल अख़ीरमें लिखीजावेगी.

चन्द रोज़ पेश्तर तो मरहटोंका ज़ोर शोर और ज़ालिम पिंडारोंका ज़ुल्म ऐसा बढ़ा हुआ था, कि जिसको देखकर मेवाड़के बाशिन्दोंने इस मुसीबतके दूर होनेकी बिल्कुल आशा छोड़ दी थी, क्योंकि ये लोग मेवाड़की बर्बादी और लूटपर कमर बांधकर मुल्कमें लगातार धावा करने लगे थे. जब एक मरहटा फ़ौज लेकर मेवाड़में आता और महाराणासे रुपया तलब करता, तो उसको ख़ाली काग़ज़ लिखकर जैसे तैसे विदा किया जाता, कि इतनेमें दूसरा ज़ालिम शहरकी बर्बादीको आ खड़ा होता, जिसको रुपया अदा करनेके ज़मानह तक रुपयेके एवज़ अपने अ़ज़ीज़ोंको सुपुर्द करके पीछा छुड़ाना पड़ता, कि एक तीसरा लुटेरा दौलत एकट्ठी करनेको और आ मौजूद होता. ऐसी हालतमें प्रजाकी खुश नसीबीसे गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका आना और एकदम अम्न फैलाकर आदमियोंके दिलोंको तसल्ली दिलाना ऐसा हुआ, कि मानो चन्द्रमा और सूर्यका ग्रहण लगने बाद एकदम अपनी अस्ली रौशनीको प्राप्त होना.

हमने जो मरहटोंके ज़ुल्मका हाल ऊपर बयान किया है, वह बहुत मुख़्तसर है, अगर किसीको मुफ़स्सल तौरपर देखना हो, कर्नेल टॉडकी किताबको पढ़े. महाराणा और सर्कार अंग्रेज़ीके दर्मियान अ़हदनामह होनेके बाद जब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका एल्ची कर्नेल टॉड मेवाड़ और ख़ास उदयपुरमें आया और उस वक़्तकी हालतका बयान, जो उसने अपनी किताबमें लिखा है, उसका खुलासह हम पाठकोंके अवलोकनार्थ नीचे दर्ज करते हैं :-

"इस वक़्त मेवाड़के ख़ालिसहकी आमदनी फ़स्ल उन्हालू (रबीअ़) की ४०००० चालीस हज़ार रुपयेसे ज़ियादह न थी, और महाराणाके पास पचास सवारोंसे भी कम जमइ़यत बाक़ी रहगई थी, शहर उदयपुरमें पचास हज़ार घरोंकी जगह तीन हज़ारसे भी कम बाक़ी रहगये थे; सर्दारोंका यह हाल था, कि कोठारियाके रावत्, पचास हज़ार रुपया सालियानहकी जागीर वालेके पास चढ़नेको एक घोड़ा

तक न था, और मुल्ककी यह हालत थी, कि उदयपुरसे नाथद्वारेतक ८ रुपया सेकड़ा बीमाका लिया जाता था. आमद रफ्तकी बे इन्तिज़ामीसे एक रुपयेके ७ सात सेर गेहूं बिकते थे, लेकिन् अंग्रेज़ी अमल्दारीके आनेसे एकदम अम्न होगया; अंग्रेज़ोंका रोब हर एकके दिलपर ऐसा ग़ालिब हुआ, कि आम लोगोंका बयान था, कि अंग्रेज़ लोग बड़े जादूगर हैं, बड़ी भारी फ़ौजको जैबमें रखकर लेजा सक्ते हैं, और लड़ाईके वक्त काग़ज़के आदमियोंसे काम लेते हैं. ऐसी बे बुन्याद अफ़्वाहसे यह फ़ायदह हुआ, कि हर एक आदमी लूट मार करनेसे किनारह करगया, और एकदम अम्न व आमान के आसार दिखाई देने लगे. जब कर्नेल टॉड गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तरफ़से एजेण्ट बनकर मेवाड़में आये, तो मानो बे इन्तिज़ामीके अंधेरेमें अम्नके चराग़को रोशनीके साथ लाये. पिंडारे और मरहटे काफ़ूर होगये, लुटेरे लोग अपनी अपनी जगहपर ख़ामोश हो बैठे, सर्दारोंकी अदावतने मुल्कसे ख़ेमह उठाया."

कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "मैं जब विक्रमी १८६३ [हि० १२२१ = ई० १८०६] में आया था, तब भीलवाड़ेमें तीन हज़ार घरोंकी आबादी थी, जिसमें ज़ियादह तर व्यापारी लोग रहते थे, जो इस वक्त वीरान पड़ा है." उक्त कर्नेल हमारे मुल्कके ख़ैरख़्वाह बाशिन्दोंसे भी ज़ियादह ख़ैरख़्वाह थे. उनको महाराणाका नुक्सान सहन नहीं होता था. वह महाराणाके ख़ैरख़्वाहोंसे ख़ुश और बदख़्वाहोंसे नाराज़ थे, जब वह उदयपुरमें पहुंचे, महाराणाने उनको उमराव सर्दारोंसे ऊपर बैठनेकी इजाज़त दी, और कुल उमराव सर्दारोंको तलब किया; सब एकदम हाज़िर होगये. एक दिन बड़ा दर्बार हुआ, जिसमें कुल सर्दार जागीरदार मौजूद थे. ऐसा दर्बार ५० वर्षके अ़र्सेमें कभी न हुआ था. कर्नेल टॉडने खड़े होकर कहा, कि "महाराणा साहिब आपका जो बदख़्वाह हो, उसको मुझे बतलाइये; गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी उसे सज़ा देनेको तय्यार है." महाराणाने रहमदिली, बुर्दबारी और अक्लमन्दीसे जवाब दिया, कि "इस वक्तसे पहिला कुसूर हमने सबका मुआफ़ किया, लेकिन् अब जो कोई करेगा, उसकी इत्तिला साहिबको फ़ौरन् होगी." महाराणाके इस बड़प्पनके जवाबको लोग आजतक याद करते हैं.

जिन लोगोंने कुसूर किये थे, वे ज़ियादह शर्मिन्दह हुए, मुल्कमें ख़ालिसहके ज़िलोंपर हाकिम मुक़र्रर किये गये, और एक इश्तिहार जारी हुआ, जिसके ज़रीएसे मालवा व हाड़ौती वग़ैरह मुल्कोंमें गई हुई रिआया वापस आने लगी. साइरका भी प्रबन्ध हुआ, व्योपारियोंको एक सालका महसूल मुआफ़ और आइन्दह क्रम क्रमसे बढ़ानेका हुक्म हुआ; सर्दारोंसे ख़ालिसहके गांव, जो उन्होंने रियासती बखेड़ोंके वक्त दबाये थे, छुड़ा लिये गये;

मुल्की आमदनीकी एक दम तरक्की हुई. इस वक्त कर्नेल टॉड शाही मुलाज़मतके अलावह खानगी तौरपर महाराणाके मुसाहिब बनकर रियासतको सर्सब्ज़ करनेपर मुस्तइद होगये. हक़ीक़तमें मेवाड़के बाशिन्दोंकी औलादको उनका इह्सान न भूलना चाहिये, जो देशको ज़ालिमोंके पंजेसे छुड़ाकर हमारे मुहाफ़िज़ बने. जिस तरह पानीमें डूबते हुएको नाव और सूखती हुई खेतीको पानीका सहारा मिलता है, उसी तरह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका आना हमारे मुल्कमें समझना चाहिये. थोड़े ही अर्से बाद इस अम्नके वक्तमें महाराणाको एक बड़ा सदमह पहुंचा, कि विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = .ई० १८१८] में वलीअहद कुंवर अमरसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिनकी .उम्र २२ बाईस वर्षसे कुछ ज़ियादह थी. यह वलीअहद अपने खानदानके मुवाफ़िक़ बड़े बहादुर मज्बूत और खूबसूरत थे. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि महाराणाके ९५ सन्तान हुई, जिनमेंसे एक कुंवर जवानसिंह वारिस तख्त व ताजका बाक़ी रहा; इनके अलावह दो बेटियां और एक पोती भी थी, जिनका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा.

कर्नेल टॉडके रहनेके लिये पहिले रामप्यारीकी बाड़ी नियत हुई थी. यह मकान शहरके भीतर है, जहां अब राज्यका तोपखानह व मेगज़िन रहता है, और जिसका थोड़ासा हिस्सह बोहिड़ाके रावत्को रहनेके लिये दिया गया है. विक्रमी १८७५ भाद्रपद शुक्ल ५ [हि० १२३३ ता० ३ ज़िल्काद = .ई० १८१८ ता० ५ सेप्टेम्बर] के दिन महता देवीचन्दको प्रधानेका खिल्अत दिया गया. इस वक्त देवीचन्दने प्रधानेसे इन्कार किया, लेकिन् महाराणाने कहा, कि तुम्हारी मौजूदगी में दूसरेको प्रधाना देना बेजा है. इस सबबसे प्रधान तो महता देवीचन्द ही रहा, लेकिन् काम कुल उसका भतीजा शेरसिंह करता रहा; मुख्य मुसाहिब कर्नेल टॉड थे, जिनकी सलाहके बिदून कोई काम नहीं होता था, महाराणाके खानगी सलाहकार रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह, और ठाकुर अजीतसिंह थे.

प्रधान देवीचन्दने दो शादियां की थीं, जिनमेंसे पिछली शादी महता रामसिंहकी बहिनके साथ हुई थी, इसलिये उस प्रधानका अपने सालेपर ज़ियादह भरोसा था, और रामसिंह भी लाइक़ व होशियार आदमी था, जो महाराणाके सलाहकारोंमें शामिल हुआ; साह शिवलाल गलूंड्या बड़े कुंवर अमरसिंहका एतिबारी नौकर होनेके कारण जुदा ही ढंग जमाने लगा. यह इत्फ़ाक़ तफ़ीत देखकर महता देवीचन्दने प्रधानेका खिल्अत अपने साले रामसिंहको दिला दिया.

महाराणाने अपनी दो बेटियों और एक पोतीका विवाह करना चाहा, उनमें

से अजबकुंवर बाईका सम्बन्ध बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहके बड़े कुंवर रत्नसिंहसे और रूपकुंवर बाईका जयसलमेरके रावल गजसिंहके साथ निश्चय करलिया गया; लेकिन् कुंवर अमरसिंहकी बेटी और महाराणाकी पोती कीकाबाईका विवाह भी इसी मौक़ेपर करनेका इरादह हुआ; तब महाराणी राठौड़ गुलाबकुंवरने अपनी पोतीका सम्बन्ध कृष्णगढ़के महाराजा कल्याणसिंहके कुंवर मुहकमसिंहके साथ करनेको कहा. महाराणाने मन्जूर करके चारण बारहट रामदान (१) को एक खास रुक़ह लिख भेजा, कि तुम कृष्णगढ़के महाराजाके कुंवर मुहकमसिंहका सम्बन्ध निश्चय करके विवाहके मुहूर्तसे विनायक बिठाकर जल्दी आओ; और इसी मज़्मूनका एक खास रुक़ह महाराणी राठौड़ने भी उक्त बारहटको लिख भेजा. उसने हुक्मके मुवाफ़िक़ महाराजा कल्याणसिंहको कहकर विवाहकी तय्यारी शुरू करादी, और आप तीन रोज़में कृष्णगढ़से उदयपुर आया, लेकिन् पीछेसे महाराणाको मत्लबी लोगोंने बिल्कुल बर्ख़िलाफ़ करदिया, और कहा, कि कृष्णगढ़में आपकी पोतीका विवाह करना बिल्कुल बेजा है.

रामदान बारहटको यह सम्बन्ध मुआफ़ रखनेके मन्शासे कहा गया, कि तुमको कृष्णगढ़की जायदादके एवज़ पांच हज़ारकी जीविका यहां और मिलेगी, लेकिन् रामदान इस बातसे बहुत रंजीदह हुआ; वह कटार निकालकर ज़नानी ड्योढ़ीपर जा बैठा, और उसने महाराणीसे कहलाया, कि मैंने आपके लिखनेपर कृष्णगढ़के विवाहकी तय्यारी करवादी, और अब इन्कार होता है, इसलिये मैं अपनी जान आपकी ड्योढ़ीपर खो दूंगा; महाराणी भी गुस्सहमें आकर अपना और अपनी पोतीका प्राण श्री दर्बारके साम्हने देनेको तय्यार हुई. यह क्लेश देखकर महाराणाने कृष्णगढ़का सम्बन्ध मन्जूर करलिया. फिर तीनों जगहोंसे बरातें आईं; जिनमेंसे दो जगहके दूल्हे तो बड़ी शान शौकत और जुलूसके साथ आये, लेकिन् जयसलमेरके रावल गजसिंह किसी खानगी काममें फंसजानेके सबब लवाज़महके साथ जल्द न आसके, वह पिछली रातको अकेले सांडणीपर सवार होकर आये.

विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ सोमवार [हि० १२३५ ता० २१ रमज़ान = ई० १८२० ता० ३ जुलाई] को तीनों राजकुमारियोंका विवाह बड़ी धूमधामके साथ हुआ; और बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहके दूसरे कुंवर मोतीसिंहकी शादी बागौरके महाराज शिवदानसिंहकी कन्या दीपकुंवरसे हुई. इन शादियोंमें लाखों रुपयोंका इन्आम, इक्राम व त्याग बांटा गया, इसके बाद तीनों बरातें विदा हुईं.

(१) यह शख़्स कृष्णगढ़की तरफ़से जागीर रखता था, और मेवाड़में भी दो गांव महाराणाके दिये हुए इसके अधिकारमें थे.

विक्रमी १८७८ चैत्र शुक्ल २ [हि० १२३६ ता० १ रजब = .ई० १८२१ ता० ४ एप्रिल] को महाराणाने साह शिवलाल गलूंड्याको प्रधानेका खिल्अत दिया, और टॉड साहिब व महाराज सूरजमल्लको साथ देकर उसे दस्तूर के मुवाफ़िक़ मकानपर पहुंचाया. यह शख़्स महाराणाका दिली ख़ैरख़्वाह था. इन दिनोंमें सेन्ट्रल इण्डियाके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर जॉन माल्कम साहिब उदयपुरमें आये, जिनकी महाराणाने उम्दह तौरपर ख़ातिर तवाज़ो की. इसवक़ रतलामके राजा पर्वतसिंहका कुंवर बलवन्तसिंह, जो सलूंबरके रावत्‌की बेटीसे पैदा हुआ, महाराणाके पास मौजूद था, क्योंकि रतलामके लोगोंने उसको अपने हक़से ख़ारिज करनेके मन्शापर बनावटी बयान करके उक्त राजाके दिलमें उसकी तरफ़से शक डाल दिया था; महाराणाने उस बच्चेको हाथ पकड़कर माल्कम साहिबकी गोदमें बिठादिया और कहा, कि इस बच्चेको आप अपना फ़र्ज़न्द जानकर इसके मददगार रहिये. तब माल्कम साहिब ने कहा, कि मुझको आपके फ़र्मानेका बहुत बड़ा लिहाज़ है, लेकिन् इस लड़केकी शादी आप अपने कुटुम्बमें करदीजिये, ताकि शक दूर होजावे. महाराणाने उक्त साहिबके कहनेपर उनके साम्हने ही बलवन्तसिंहकी शादी बागौरके महाराज शिवदानसिंहकी कन्याके साथ विक्रमी १८७८ चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२३६ ता० ८ रजब = .ई० १८२१ ता० ११ एप्रिल] को करदी. इस बातसे माल्कम साहिबको पूरा यक़ीन होगया, और विक्रमी १८८२ [हि० १२४० = .ई० १८२५] में राजा पर्वतसिंह का इन्तिक़ाल होनेपर बलवन्तसिंह रतलामकी गादीपर बिठाया गया.

विक्रमी १८७८ वैशाख शुक्ल ९ बृहस्पतिवार [हि० १२३६ ता० ७ शअ़्बान = ई० १८२१ ता० १० मई] को महाराणाके वलीअ़ह्द कुंवर जवानसिंहका सम्बन्ध रीवांके राजा जयसिंहदेवकी पोती और विश्वनाथसिंहकी बेटी सुभद्रकुमारीसे गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त क़रार पाया. विक्रमी १८७९ (१) वैशाख कृष्ण १३ [हि० १२३७ ता० २६ रजब = .ई० १८२२ ता० १९ एप्रिल] को उक्त महाराजकुमार विवाह करनेके लिये उदयपुरसे रीवांको रवानह हुए, और विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १३ [हि० ता० १२ शव्वाल = .ई० ता० २ जुलाई] को विवाह हुआ. इसी विक्रमीकी फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० १२३८ ता० ७ जमादियुस्सानी = .ई० १८२३ ता० १९ फ़ेब्रुअरी] को साह शिवलाल गलूंड्या क़ैद किया जाकर उससे दण्ड लिया गया.

इन दिनोंमें कर्नेल टॉडके विलायत चले जानेपर उनकी जगह कप्तान कॉफ़

---

(१) रीवांकी तवारीख़के ज़रीएसे विक्रमी १८८० में इस शादीका होना वहांके इतिहासमें छपचुका है, लेकिन् अस्लमें यह शादी विक्रमी १८७९ में ही हुई थी.

पोलिटिकल एजेंट हुए. मेवाड़के खालिसहके काम्दार महाराणाकी तरफ़से, और एक एक चपरासी हर ज़िलेमें पोलिटिकल एजेंटकी तरफ़से मुक़र्रर था; क्योंकि पहिले खालिसहकी आमदनी कम होनेके सबब मुल्की आमदनीका चौथा हिस्सह गवर्मेंट अंग्रेज़ीको देना मंज़ूर किया गया था, लेकिन् इस दोहरी हुकूमतकी तक्लीफ़ोंसे रिआया आजिज़ होकर वायवैला मचाने लगी, और यह शिकायत कॉफ़ साहिबकी ग़ैर मौजूदगीमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीके कानतक पहुंची. यह खबर पाकर कप्तान कॉफ़, जो छुट्टीपर थे, उदयपुरमें आये, और इस कुल शिकायतका मूल साह शिवलालको ठहराकर विक्रमी १८८१ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२३९ ता० २४ ज़िल्हिज = ई० १८२४ ता० २० ऑगस्ट] के दिन उसे प्रधानेके कामसे बर्ख़ास्त करने बाद महता रामसिंहको प्रधान बनाया, और उस मुल्की हिस्सहके एवज़, जो गवर्मेंट अंग्रेज़ीको दिया जाता था, हमेशहके लिये तीन लाख रुपया उदयपुरी सालियानह ठहराया गया; लेकिन् कुछ अ़र्सेसे बाद दो लाख रुपया कल्दार सालियानह देनेका इक़ार हुआ, जिसका ज़िक्र अ़ह्दनामहके बयानमें लिखा जायेगा. विक्रमी १८८१ पौष कृष्ण ७ [हि० १२४० ता० २० रबीउ़स्सानी = ई० १८२४ ता० १२ डिसेम्बर] को महाराणाकी बड़ी बहिन चन्द्रकुंवर बाईका देहान्त होगया, जिसका महाराणा और कुल रियासती लोगोंको बड़ा रंज हुआ, क्योंकि महाराणा उनको अपनी माताके समान समझते थे, और हज़ारों रियासती आदमियोंको उनके दमसे फ़ायदह पहुंचता था. इसी सदमेके कुछ दिनों बाद, याने विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ता० २६ जमादियुलअव्वल = ई० १८२५ ता० १६ जैन्युअरी] को महाराणाकी दूसरी बहिन अनोपकुंवर-बाईका भी इन्तिक़ाल होगया.

विक्रमी १८८२ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२४० ता० ९ रमज़ान = ई० १८२५ ता० २८ एप्रिल] को इन महाराणाने रसोड़ाके दक्षिण तरफ़ पीछोला तालाबके तीरपर अपने बनवाये हुए महलोंके सम्पूर्ण होजानेपर एक बड़ा भारी जल्सह किया, और उनका नाम नया महल रक्खा. इसी विक्रमीकी आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२४१ ता० २७ सफ़र = ई० ता० ११ ऑक्टोबर] को हाथीपौलके बाहर कॉफ़ साहिबने कोठी तय्यार करवाई, जहां पहिले बेगूंके रावत् की हवेली थी, और अब उदयपुरकी रेज़िडेन्सीका मक़ाम है; इस मकानकी तय्यारीका भी जल्सह हुआ, जिसमें उक्त साहिबने महाराणाको मिह्मान किया.

विक्रमी १८८४ श्रावण शुक्ल ८ [हि० १२४३ ता० ६ मुहर्रम = ई० १८२७ ता० ३१ जुलाई] को महाराणी बीकानेरी पद्मकुंवर बाईके बनवाये हुए भीमपद्मेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई- (देखो शेष संग्रह).

इसी विक्रमी की कार्तिक कृष्ण ११ मंगलवार [हि० ता० २४ रबीउ़लअव्वल = ई० ता० १६ ऑक्टोबर] को वलीअ़हद कुंवर जवानसिंहके फ़र्ज़न्द पैदा हुआ, जिसकी खुशीसे महाराणा भीमसिंह बाग़ बाग़ होगये, और हज़ारहा रुपया, ज़ेवर, क़ीमती सिरोपाव, हाथी, घोड़े, और पालकी चारणों वग़ैरह को .इन्‌आममें दिये; लेकिन् विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२४३ ता० २९ शअ़्बान = .ई० १८२८ ता० १६ मार्च] को यह चराग़ गुल होगया, जिससे महाराणाको जितनी खुशी हुई थी, उससे दोचन्द रंज उठाना पड़ा, और इसी सदमेसे उन्होंने अपने शरीरका भी ख़ातिमह किया, याने सब लोगोंके कहनेसे तीन दिनतक तो गनगौरकी सवारियां कीं, और जब एक दो सवारी करनेको वलीअ़हदने फिर कहा, तो जवाब दिया, कि मैंने इतना भी हिम्मतके साथ किया है, क्योंकि मेरे बदनकी हालत ख़राब है. विक्रमी चैत्र शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = .ई० ता० २५ मार्च] के दिन उनको तासीरकी बीमारीने बे होश करदिया, लेकिन् फिर कुछ होशमें आकर दो तीन रोज़ बाद दोबारह वही हालत होगई; और आख़िरकार तीसरी दफ़ाकी मूर्छासे विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १३ रमज़ान = .ई० ता० ३० मार्च] को पिछली सात घड़ी रात रहे इस दुन्यासे कूच करगये, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रमज़ान = .ई० ता० ३१ मार्च] को दग्ध क्रिया हुई.

यह महाराणा हरदिल अ़ज़ीज़, अव्वल दरजेके फ़य्याज़, गुनाह बख़्श, और ग़रीब पर्वर थे. इन्होंने अपने हाथसे कभी किसीपर ज़ुल्म नहीं किया, अगर ऐसा हुआ भी, तो दूसरे लोगोंके लिहाज़से हुआ होगा, क्योंकि सख़्ती करना इनको बिल्कुल ना पसन्द था; तवारीख़ी .इल्मसे यहांतक वाक़फ़ियत रखते थे, कि अपनी रियासतके अ़लावह दूसरी रियासतोंका हाल भी बज़बान याद था; अपने नौकरोंकी पुश्तैनी ख़िद्मतोंको बयान करके ला वारिस बच्चोंकी हिफ़ाज़त अपने बच्चोंके मुवाफ़िक़ करते थे. हर एक नौकरको यह यक़ीन था, कि मेरे मरनेके बाद बाल बच्चोंकी पर्वरिशमें कमी न होगी. हिन्दी व राजपूतानहकी शाइरीमें भी वह कमाल रखते थे. कर्नेल टॉड उनकी बहुतसी तारीफ़ें लिखकर ज़ियादह ख़र्च करनेकी शिकायत लिखते हैं, लेकिन् वह राजपूतानह में पैदा होते, तो यहांके रवाजसे वाक़िफ़ होकर उनकी शानमें हर्गिज़ ऐसा लफ़्ज़ न कहते, क्योंकि इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तानके रवाजमें ज़मीन आस्मानका फ़र्क़ है. इंग्लिस्तानके बाज़ रवाजोंपर हिन्दुस्तानी लोग एतिराज़ करते हैं, परन्तु वे रवाज वहांके मुवाफ़िक़ हैं, और बहुतसे रवाज हिन्दुस्तानियोंके अंग्रेज़ोंको बहाल रखने पड़ते हैं. दूसरा यह कारण था, कि कर्नेल टॉड मेवाड़के मुसाहिब बनकर इस रियासतका प्रबन्ध करना चाहते थे; और मुसाहिबोंका यही काम है, कि ख़र्चकी ज़ियादतीको

रोकें. अल्बत्तह यह बात महाराणामें शिकायतके लाइक़ थी, कि ज़बानकी पाबन्दी नहीं रखते थे, लेकिन् इसका कारण भी मरहटोंका ग़द्र था, क्योंकि ऐसी तक्लीफ़की हालतोंमें वह क़ाइम मिज़ाजीको कैसे काममें लाते; चालीस वर्षतक उसी हालतमें रहने से उनमें बेशक यह आदत पड़गई थी.

इन महाराणाका छोटा क़द, पुष्ट और ताक़तवर शरीर, बड़ी पेशानी, मोटी आंखें, और बड़ी डाढ़ी होनेके अलावह चहरा हंसीला, और ज़बान बहुत शीरीं थी. इनकी ताक़तका हाल मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपने पिताकी ज़बानी सुना है, कि नवरात्रियोंमें भल्का चौथके दिन उनकी कमानका तीर भैंसेके बदनको फोड़कर बहुत दूर चला जाता था. एक दफ़ा नव्वाब जमशेदख़ांने महाराणासे उनकी ताक़तका हाल दर्याफ़्त किया, उस वक्त उन्होंने एक मज्बूत पुरानी ढाल मंगाकर नव्वाबको दी, वह भी ताक़तका घमंड रखता था, उसने खूब ज़ोर किया, लेकिन् कुछ असर न हुआ, महाराणाने उस ढालको दोनों हाथोंसे पकड़कर चीर डाला. इसी तरह और भी बहुतसी बातें उनकी ताक़तवरीकी बाबत मश्हूर हैं.

इनका जन्म विक्रमी १८२४ चैत्र कृष्ण ७ गुरुवार [हि० ११८१ ता० २० शव्वाल = ई० १७६८ ता० १० मार्च] को हुआ था. इनके साथ महाराणी झाली, महाराणी बीकानेरी, महाराणी पुंवार, महाराणी भटियाणी, पासबान गुणराय, पासबान मोती, पासबान सैनरूप, और बडारण सहेली जमुना आठ सतियां हुईं. अगर्चि इनका इन्तिक़ाल साठ वर्षकी उम्रमें हुआ, लेकिन् बीस वर्षके जवान मालिकका इन्तिक़ाल होनेपर जैसा रंज होता है, उससे भी ज़ियादह सदमह मेवाड़के लोगोंके दिलोंपर गुज़रा. उनकी नौकरी करने वालोंमेंसे जो लोग अब भी ज़िन्दह हैं, वे उनका नाम आते ही ठंढी सांस भरकर याद करते हैं. उनकी उत्तमता यहांतक थी, कि इस रियासतके कुल छोटे बड़े फ़ज्रके वक्त ईश्वरका नाम लेने बाद उनका नाम लेनेसे दिनभर अम्न चैनसे गुज़रनेका ख़याल रखते हैं.

जयसलमेरकी तवारीख़.

जुग्राफ़ियह.

जयसलमेर पश्चिमी राजपूतानहकी अन्तिम सीमापर चन्द्रवंशी ख़ानदानके भाटी राजपूतोंकी एक रियासत है, जिसके उत्तरमें रियासत बीकानेर और इलाक़ह बहावलपुर, पश्चिममें सिन्धका मुल्क, दक्षिणमें जोधपुरका राज्य, और पूर्वमें जोधपुर तथा बीकानेरका इलाक़ह वाक़े है. पांच सौ वर्ष पहिले यह रियासत बहुत बड़ी थी, परन्तु रावल भीमसिंहके समयसे रफ़्तह रफ़्तह दूसरे लोगों, याने जोधपुर, बीकानेर, बहावलपुर और सिन्धवालोंने तरक़्क़ी पाकर चारों तरफ़से यहां की ज़मीन दबाली; तोभी यह रेतीला मुल्क, जिसका रक़बह १६४४७ मील मुरब्बा है, २६° ५′ व २८° २३′ उत्तर अक्षांश और ६९° २९′ व ७७° १५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान ज़ियादहसे ज़ियादह १७२ मीलकी लम्बाई, और १३६ मीलकी चौड़ाईमें फैला हुआ है; लेकिन् इलाक़हमें रेता ज़ियादह और सेराबी कम होनेके सबब आबादी केवल १०८१४३ आदमी है. राज्यकी फ़ौज एक हज़ार, ख़ालिसहकी आमदनी सवा लाख रुपया, और इसी क़द्र सर्दारोंकी जागीर समझी जाती है.

मुल्कको कुद्रती सूरत- इलाक़हमें हर तरफ़ रेतेका मैदान है, सिर्फ़ दक्षिणी भागमें कुछ पहाड़ियां व झाड़ी पाई जाती है, जिसमें जानवरोंके चरनेके लाइक़ चारा पैदा होता है. रेतीले टीबोंके दर्मियान भी अक्सर जगहोंपर कांटेदार झाड़ी और भुरट वग़ैरह घास होती है, जो यहांके रेवड़ और ऊंटोंके वास्ते बड़े कामकी है. दक्षिणी सर्हदके जंगलमें झड़बेरी, खेजड़ा, आंवल, जांट, बबूल, कैर, फोग, आक, ढाक, सांगरी और पीलू वग़ैरह कस्रतसे होते हैं, बड़ व पीपल शहर तथा जंगलमें केवल दर्शन रूपी कहीं कहीं दिखाई देते हैं. जंगली जानवरोंमें शेर, चीते, बघेरे और गोरखर बाज़ स्थानोंपर पाये जाते हैं; हरिण, चिकारे और रोझ भी कम हैं, लेकिन् सूअर, भेड़िये और गीदड़ ज़ियादह पाये जाते हैं, सर्पोंकी इतनी कस्रत है, कि वहांके निवासी उनसे बचनेके लिये चमड़ेके मोज़े पहिनते हैं.

पत्थर व धातु - जयसलमेरमें धातुकी कोई खान नहीं है, परन्तु बाज़ बाज़

मक़ामोंमें चन्द क़िस्मका पत्थर और मिट्टी पाई जाती है. पर्गनह देवीकोटमें गेरू, और पर्गनह कोट रामगढ़में मुल्तानी मिट्टीकी खान है, इसके अलावह गांव हाबुरमें संग हाबुर नामका एक उम्दह जौहरदार पत्थर निकलता है, जिससे खूबसूरत पियाले, रकाबियां तथा तस्बीह (माला) के मणके बनाये जाते हैं, जिनको मुसल्मान और फ़क़ीर लोग ज़ियादह पसन्द करते हैं.

नदी, नाले- इस रियासतमें कोई बड़ी या सालभर तक बहने वाली नदी नहीं है, केवल लाठी नामकी एक नदी मारवाड़के डूंगरोंसे निकलकर इस रियासत में दाख़िल होती, और अपने किनारोंके गांवोंकी ज़मीनको सेराब करती है; लेकिन् यह सिर्फ़ बर्सातमें और उसके कुछ दिनों बाद तक बहकर सूख जाती है, बारहों महीने जारी नहीं रहती. इसकी पूर्वी सीमापर बड़े गांवके पास गोगड़ी व काकनय नदी और कई बर्साती नाले हैं.

झील, या तालाब- जिनको यहां सर बोलते हैं, उनकी भी वही हालत है, जैसी, कि नदियोंकी, याने वे भी बर्साती नालोंका पानी रोका जानेके सबब थोड़े दिनों तक भरे रहकर जल्द ही सूख जाते हैं, सिर्फ़ किसी किसी झीलमें सालभर तक पानी रहता है. इस रियासतमें सबसे बड़ी झील बुजकी पच्चीस मीलके घेरेमें है, जो काकनय नदीके पानीसे भरती है. शहर जयसलमेरके पास ही "घड़सी सर" नामी एक मश्हूर छोटा तालाब है, जिसका ज़िक्र मश्हूर मक़ामातमें किया जायेगा; और अलावह इनके कई छोटी छोटी झीलें तथा कुएं हैं, जिनपर कुल रियासतकी खेतीबाड़ीका दारमदार है. इलाक़ह जयसलमेरमें पानी इतनी गहराईपर है, कि बाज़ जगह तीन सौ फ़ीट खोदे बिना अच्छा पानी नहीं निकलता; हात्रा ग्राममें, जो पश्चिमोत्तरी सर्हदपर वाक़े है, तीन सौ नौ फ़ीट, ख़ास राजधानी जयसलमेरमें तीन सौ चार फ़ीट, और राजधानीसे ३२ मील अग्नि कोणकी तरफ़ चोरिया ग्राममें ४९० फ़ीट गहरे कुए हैं.

आब हवा व बारिश- मुल्ककी आब हवा स्वच्छ और नीरोग है, लेकिन् बारिश बहुत कम होती है, कभी कभी अकाल पड़नेपर मुल्कके बाशिन्दोंको बड़ी तक्लीफ़ उठानी पड़ती है, यहांतक, कि खेजड़ेके छोड़े, इन्द्रायणके बीज और भुरट वगैरह खाकर गुज़र करते हैं.

ज़ात व फ़िर्के- इलाक़हकी आबादीमें ब्राह्मण, क्षत्री, चारण, बनिये, खत्री, सुनार, लुहार, कुम्हार, माली, गूजर, खाती, सिलावट, भोजक, सेवक, साधु, रैबारी, नाई, कलाल, चूड़ीगर, जुलाहा, भील, ढेढ, मुसल्मान व फ़क़ीर आदि कई क़ौमोंके लोग बस्ते हैं. पूर्व दक्षिणमें हिन्दुओंकी आबादी अधिक है, जिसमें अक्सर भाटी राजपूत, पल्लीवाल ब्राह्मण और जाट तथा गडरिये हैं; और पश्चिम व उत्तरमें मुसल्मान क़ौमें ज़ियादह हैं.

पैदावार- इस मुल्ककी ख़ास पैदावार बाजरी, जवार, मूंग, मोठ, तिल,

कपास, गुवार, और सरसूं हैं. जहां ज़मीन ज़ियादह सेराब है वहां गेहूं, चना, अफ़्यून, मूली, बैंगन, पियाज़, धनिया, मिरच, सिंघाड़ा, तर्बूज़, और ककड़ी वगैरह भी पैदा होते हैं. तम्बाकू अक्सर जगह बोई जाती है.

राज्य प्रबन्ध- महता अजीतसिंहने इस रियासतके राज्य प्रबन्धकी बाबत अपने बनाये हुए जयसलमेरके जुग्राफ़ियहमें लिखा है, कि यहांका राजसी इन्तिज़ाम रईस की मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ होता है, क़ाइदेके मुवाफ़िक़ कोई इन्तिज़ामी अदालत या क़ानून नियत नहीं है, कुल दीवानी मुक़द्दमात शहरके इज़्ज़तदार और बुद्धिमान लोगोंकी पंचायती कौन्सिलसे फ़ैसल होते हैं, जिसमें रू रिश्आयत कम होनेके सबब शिकायत पैदा नहीं होती. फ़ौज्दारी मुक़द्दमातमें किसी क़द्र जुर्मानहके अलावह क़ैदकी सज़ा मुज्रिमों को बहुत कम दीजाती है; चोरीकी वारिदात इत्तिफ़ाक़से ही कभी होती है, वर्नह ज़ियादह नहीं होती; क्योंकि यहांके लोग खोज लगानेमें बड़े होश्यार समझे गये हैं, कि यदि मवेशी वगैरह कोई चीज़ कभी चोरीमें चली भी जाती है, तो फ़ौरन् पता लगाकर उसे दर्याफ़्त करलेते हैं. यहांके रियासती अह्लकार दीवानी, फ़ौज्दारी तथा दूसरे मुक़द्दमातमें जहांतक हो सक्ता है, मुज्रिमोंसे रुपया ही वुसूल करते हैं.

ज़मीनका पट्टा व मह्सूल वगैरह- मुन्शी ज्वालासहायने अपनी तवारीख़ वक़ाये-राजपूतानहमें लिखा है, कि जयसलमेरकी रियासतमें चौबीस पर्गने और कुल गांव ४६१ (१) हैं, जिनमेंसे २२४ ख़ालिसहके, ७१ जागीरदारोंके, और बाक़ी इन्श्राम व पुण्य आदिमें बटे हुए हैं. ख़ालिसहके गांवोंका मह्सूल पैदावार के चौथे हिस्सहसे लेकर ग्यारहवें हिस्सेतक ज़मीनकी हैसियत और पैदावारके अनुसार लिया जाता है. जागीरदार लोग महारावलको ख़िराज नहीं देते, अल्बत्तह नये महारावलकी गद्दी नशीनीपर न्यौतेका रुपया देते हैं. सासण गांवोंसे भी, जो चारण व स्वामियोंकी जागीरमें हैं, किसी क़िस्मका मह्सूल नहीं लिया जाता, और इस क़िस्मके गांव हमेशहके लिये जागीरमें दिये गये हैं. भोमियोंसे प्रति मनुष्य रु० १।, ७ पाई या १॥) रुपया लिया जाता है, और ज़रूरतके वक़्त इन लोगोंसे तन्ख़्वाह पर नौकरी भी लीजाती है. ख़ालिसहके गांवोंमें राज्यका मह्सूल अदा करनेके सिवा ज़मींदार लोग, गांवके काम्दार व सेणेको भी उनका हक़ देते हैं. जयसलमेरके इलाक़हमें तीन क़िस्मके जागीरदार हैं- अव्वल "बसी", जिनकी जागीरें हमेशहके

---

(१) इस तादादमें, जो ज्वालासहायकी तवारीख़से दर्ज की गई है, और महता अजीतसिंहके बनाये हुए जुग्राफ़ियहकी तर्तीब देहातमें फेर फार होनेके सबब फ़र्क़ मालूम होता है, इसलिये उससे ठीक तौरपर तादाद मालूम न होनेके कारण मूलमें गांवों और पर्गनोंकी तादाद वक़ाये राजपूतानहसे ही लिखी गई है.

लिये हैं; दूसरे पट्टादार, कि जिनकी जागीरें जबतक रईस चाहे रक्खे, या जिस वक्त चाहे छीन ले, परन्तु ख़िराज यह भी नहीं देते; और तीसरी क़िस्म कुछ अरसेसे जारी हुई है, जिसमें वे लोग शामिल हैं, जिनको हीन हयात जागीरें मिलती हैं.

पर्गनह - इस रियासतमें कुल २४ पर्गने हैं, जिनके नाम ज्वालासहायकी तवारीख़के अनुसार नीचे लिखे जाते हैं:-

१-ख़ास शहर जयसलमेर, २-बीकमपुर, ३-सीररोह, ४-नांचणा, ५-काटोड़ी, ६-काबा, ७-कुलद्दरा, ८-सतोह, ९-जिंजियाली, १०-देवीकोट (१), ११-बाप या बाफ़, १२-बालानह, १३-सतियासा, १४-बारू, १५-चांन, १६-लुहारकी, १७-नोनतला, १८-लाठी, १९-डांगरी, २०-बीजोराय, २१-मंडाय, २२-रामगढ़, २३-बरसलपुर, और २४-गिराजसर. इनमेंसे १, ५, ६, ७, १०, ११, २०, २१, २२, नम्बरके तो ख़ालिसहमें और बाक़ी पटायतोंके क़बज़हमें हैं.

मश्हूर मक़ामात.

इस रियासतकी राजधानी शहर जयसलमेर, जिसको विक्रमी १२१२ श्रावण शुक्ल १२ रविवार [हि० ५५० ता० ११ जमादियुल अव्वल = .ई० ११५५ ता० १४ जुलाई] को रावल जयसलका आबाद किया हुआ बतलाते हैं, कई मील लम्बी चौड़ी पहाड़ीके दक्षिणी किनारेपर बसा हुआ है; शहरपनाह और उसके बुर्ज पत्थरोंसे चुने गये थे, जो अब अक्सर जगहोंसे गिर गये हैं. इस तीन मील लम्बे शहरमें केवल तीन दर्वाज़े हैं, और बस्तीके दक्षिणी विभागमें पौन मील मुरब्बा और दो सौ फ़ीटसे ज़ियादह ऊंची पहाड़ीपर रियासतका क़िला बना हुआ है, जिसमें महारावल साहिबका चित्रदार महल दूसरे मकानातसे ज़ियादह ख़ूबसूरत मालूम होता है. शहरमें बहुधा मकान पक्के बने हुए हैं, और महारावल साहिब भी वहीं रहना पसन्द करते हैं; परन्तु क़िलेके साम्हने वाली चन्द .उम्दह दूकानोंके सिवा और किसी तरफ़ रौनक़दार बाज़ार वग़ैरह नहीं है.

बीकमपुर- यह रेतेके जंगलमें जयसलमेरसे ९५ मील उत्तर पूर्वमें एक क़िला है, जिसकी मज़्बूत दीवारें २५ फ़ीट ऊंची हैं, और वह सौ गज़ मुरब्बाके घेरमें छोटे बुर्जों सहित वाक़े है, इसके पूर्वोत्तरी कोणपर एक बहुत ऊंचा बुर्ज है, जहांसे चारों ओरका मुल्क दूर दूरतक दिखाई देता है; इस क़िलेमें राज्यके सौ आदमी चार तोपों सहित फ़ौजकी हिफ़ाज़तके वास्ते रहते हैं. अगर्चि यह क़िला मज़्बूत है, परन्तु इसपर चढ़नेमें किसी तरहकी तक्लीफ़ नहीं होती, क्योंकि रास्तह सरल है; इसके चारों ओर रेतेके ऊंचे ऊंचे टीबे थोड़ी थोड़ी दूरीपर वाक़े हैं. क़िलेसे दक्षिण पूर्वमें सवा दो सौ घरोंकी आबादीका एक छोटा क़स्बह है.

(१) इस पर्गनहके घोड़े व घोड़ियां ताक़तवर और चालमें .उम्दह गिने जाते हैं.

बरसलपुर - यह क़स्बह, जिसमें चार सौ घर और हज़ार मनुष्योंकी आबादी है, बहावलपुरके रास्तेमें बहावलपुरसे ९० मील दक्षिण पूर्वको वाक़े है. यहां २० फ़ीट ऊंची पहाड़ीपर एक क़िला है. क़स्बहसे एक मील दूरीपर दक्षिण पश्चिममें एक टीला क़िलेसे ऊंचा है, जिसपर चार सौ वर्ष पहिले हुमायूं बादशाह खड़ा रहा था, जब कि उसको क़िलेमें न आने दिया. यह क़स्बह बहुत पुराना है, यहांके हिन्दुओं के बयानसे सन् .ईसवीके दूसरे शतकमें इसका आबाद होना पाया जाता है; यहांके ठाकुरने विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = .ई० १८३५] में मिस्टर ब्वाइलो साहिब इंजिनिअरकी बड़ी ख़ातिरदारी की थी, जो मुल्की हालात दर्याफ़्त करनेके लिये सर्कारकी ओरसे यहां भेजे गये थे.

चाहिन - यह सौ घरोंकी आबादीका गांव है, जो चोरोंके रहनेका स्थान होनेके सबब .इलाक़हमें प्रसिद्ध है.

कानोड - यह क़स्बह शहर जयसलमेरसे उत्तर पूर्वमें एक खारी झीलके किनारेपर, जो ८ मील चौड़ी और १५ मीलके क़रीब लम्बी है, वाक़े है. इस झील में पानी सूख जानेपर नमक जमता है, और बर्सातमें पानी भरजानेपर पूर्वकी ओर इसमेंसे एक नदी निकलती है, जो ३० मील बहकर मारवाड़के रेतेमें ग़ाइब होजाती है.

काठोड़ी - जयसलमेर और बहावलपुरके रास्तेमें राजधानीसे १६ मील उत्तर पल्लीवाल बोहरा ब्राह्मणोंकी बस्तीका एक गांव है, जो व्यापार करते हैं. इसमें एक उम्दह तालाब भी है.

किशनगढ़ - बहावलपुरकी सीमाके पास जयसलमेरसे ८० मील उत्तर पश्चिम में ईंटोंका बना हुआ एक पक्का व मज़्बूत क़िला और ग्राम है.

कोरा क़िला - जयसलमेरसे ३८ मील पश्चिममें क़िला और गांव है.

लाठी - इलाक़ह जोधपुरके क़स्बह पोहकरणसे २५ मील जयसलमेरके रास्ते पर उत्तर पश्चिममें है.

मोहनगढ़ - जयसलमेरसे ३५ मील उत्तर पूर्वमें जंगलके दर्मियान एक क़िला है, जिस पर्गनहमें यह वाक़े है, वहां लाठी नदीकी सेराबीसे गेहूं व जव और कई फ़स्ली चीज़ें कस्त्रतसे पैदा होती हैं.

नवा थला - जयसलमेरसे ४८ मील पूर्वोत्तर कोणमें बीकानेर व जयसलमेरके रास्तेपर एक क़िला और गांव है.

बाप या बाफ़ - रियासतकी पूर्वी सीमापर जोधपुरकी तरफ़ बीकानेर व जयसलमेरके

रास्तेमें जयसलमेरसे १०० मील उत्तर पूर्वमें है. जिस पर्गनहका यह सद्र मक़ाम है, वहांकी ज़मीन जयसलमेरके कुल पर्गनोंसे बढ़कर उपजाऊ और सेराब व सर्सब्ज़ है, और इसी सबबसे उसका नाम "कोट काश्मीर" भी प्रसिद्ध है, इसमें गोरे भैरवका एक प्रसिद्ध देवस्थान है, जिसके दर्शनके लिये मेलेपर और दूसरे वक़ोंमें भी दूर दूरसे यात्री लोग आते हैं.

घड़सीसर तालाब- राजधानी जयसलमेरके क़रीब ३ मील लम्बा और १ मील चौड़ा महारावल घड़सीका बनवाया हुआ एक तालाब है, जिसमें एक छोटीसी गढ़ी और दो बुर्ज बने हुए हैं, और उसकी पालपर हिङ्गलाज माताका मन्दिर और एक उम्दह महल तथा बाग़ीचह व कई देवालय, शिवालय, धर्मशाला आदि उत्तम स्थान हैं.

ऊपर लिखे हुए क़िलोंके सिवा रामगढ़, रूपसी और सोदाखोरमें भी छोटे छोटे क़िले हैं.

व्यापार व पेशह- इस मुल्कमें व्यापार और खेती बहुत कम होती है, अक्सर लोग सांड (ऊंट), भेड़ व बकरी आदि चौपायोंके ज़रीएसे अपना गुज़र करते हैं, विद्याका प्रचार बहुत कम है. दस्तकारी भी ज़ियादह नहीं होती, केवल रूईका मोटा कपड़ा बुना जाता है, लेकिन् भेड़की ऊनके कम्बल व खेस वग़ैरह, पत्थरके पियाले व रकाबियां, और हाथीदांत व हड्डीके ज़ेवर अलबत्तह उम्दह बनते हैं.

इस मुल्कमें कोई पक्की सड़क और रास्ते नहीं हैं, लेकिन् गंगाके किनारेके मुल्क से लगाकर सिन्ध देशतक व्यापारियोंके ऊंटोंकी क़तारें एक दूसरी जगहको व्यापारकी वस्तुएं लाते और लेजाते समय इस मुल्कमें होकर गुज़रती हैं, इसी सबबसे जयसलमेर व्यापारी स्थानके तौरपर प्रसिद्ध है, बल्कि यही ज़रीअह राज्यकी ज़ियादहतर आमदनी का है, क्योंकि राहदारीके महसूलकी रक़म कुल रियासतकी सालियानह आमदनीके आधे हिस्सहके क़रीब जमा होती है.

जयसलमेरकी तवारीख़.

जयसलमेरके वर्तमान भाटी राजा चन्द्रवंशी यादव राजपूतोंकी एक शाखमें हैं, जो राजपूतानहके बहादुर और नामवर क्षत्रियोंमेंसे गिने जाते हैं. चन्द्रवंशी राजपूतों का जो प्राचीन हाल भागवत और महाभारतादिक ग्रन्थोंमें लिखा हुआ है, उसमें तो इतिहास वेत्ता लोग कुछ हेर फेर कर ही नहीं सक्ते, अलबत्तह बाज़ बाज़ प्राचीन शोधकारक समयके अधिक न्यून होनेमें अपनी राय प्रकाश करते हैं, परन्तु

उसमें कुल विद्वानोंकी सम्मति एक नहीं पाई जाती, इसलिये यहांपर प्राचीन समयके हालात छोड़कर पिछले ज़मानहका वृत्तान्त लिखा जाता है.

भाटी लोग श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नके पौत्र वज्रनाभ अर्थात् अनिरुद्धके बेटेकी औलाद कहलाते हैं; परन्तु वज्रनाभसे लेकर गजके समय तकका दर्मियानी हाल सहीह सहीह मिलना बहुत मुश्किल है; और जयसलमेरकी रियासतसे भी हमको इस ख़ानदानका इतिहास सम्बन्धी वृत्तान्त कुछ नहीं मिला, इसलिये गजसे पिछला हाल, जो नीचे लिखा जाता है, वह कर्नेल टॉड और महता नेनसीकी पुस्तक तथा फ़ार्सी किताबोंसे चुनकर लिया गया है; इनके सिवा जयसलमेरके वर्तमान महता अजीतसिंहकी बनाई हुई भाटीनामह नामकी एक छोटी पुस्तक से भी कुर्सी नामह व साल संवत् वगैरहमें किसी क़द्र मदद मिली है.

चन्द्रवंशी यादव वज्रनाभके वंशमेंसे राजा गजका किले ग़ज़नीको बनवाना सहीह मालूम होता है, क्योंकि गांधार देश, जिसको अब क़न्धार कहते हैं, प्राचीन समयमें चन्द्रवंशियोंके अधिकारमें था, और चीनी मुसाफ़िर ह्युइनत्सांग, जो सातवीं सदी ईसवीमें उस तरफ़ होकर भारतवर्षमें आया, हिरातसे क़न्धारतक हिन्दू राजा व प्रजाका होना बयान करता है.

राजा गजका हाल कर्नेल टॉडने बहुत तूल तवील लिखा है, जो यदि सहीह भी हो, तो कुछ आश्चर्य नहीं, परन्तु हमको इसमें यह सन्देह है, कि वह कहांतक सहीह है; सिवा इसके जिन राजाओंके साथ गजकी लड़ाइयां हुईं, उनके नाम, क़ौम तथा देश और साल संवतोंका भी प्राचीन शोधके अनुसार पूरा पता लगना कठिन है.

राजा गज ख़ुरासानके राजासे लड़कर मारा गया, और उसके बेटे शालिवाहनने पंजाबमें शालिवाहनपुर आबाद किया; उसका बेटा बुलन्द, और बुलन्दका पुत्र भट्टी हुआ. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि बुलन्दकी सन्तानमेंसे कितने ही मुसल्मान होगये, जिनकी औलाद पश्चिमकी तरफ़ मौजूद है. भट्टीके नामसे यादव राजपूतोंकी शाखामेंसे एक प्रति शाखा भाटी प्रसिद्ध हुई. भट्टीका पुत्र मंगलराव, जिसका मुअ़ज़्ज़मराव, जो लुद्रवामें रहा, उसका खेड़, उसका तणू, उसका विजयराव, और उसका देवराज, जिसने एक जोगीकी बरकत से क़िला देवरावल (१) बनवाया, और राजाका ख़िताब छोड़कर रावलका पद इख़्तियार किया; देवराजका पुत्र मंध, उसका बछराज, उसका पुत्र दुसाज, और दुसाजका पुत्र १-जयसल हुआ, जिसने विक्रमी १२१२ श्रावण शुक्ल १२ [हि० ५५० ता० ११ जमादियुल-अव्वल = ई० ११५५ ता० १४ जुलाई] को क़िले जयसलमेरकी नीव डाली.

---

(१) इस क़िलेकी तामीर याने बुनयादका संवत् कर्नेल टॉडने विक्रमी ९०९ माघ शुक्ल ५ सोमवार [हि० २३८ ता० ४ शअ़बान = ई० ८५३ ता० २० जैन्युअरी] लिखा है.

जयसलके दो बेटे थे, जिनमें बड़ा केलण और छोटा शालिवाहन था; लेकिन् केलण गद्दीसे ख़ारिज कियाजाकर जयसलके मरने बाद विक्रमी १२२४ [हि० ५६२ = ई० ११६७] में २- शालिवाहन दूसरा गद्दीपर बिठाया गया, यह एक नामी राजा हुआ, जिसके तीन बेटे बीजल, बानर, और हंसू थे; इनमेंसे हंसू एक दूसरे पहाड़ी मुल्कके यदुवंशी राजाका दत्तक माना गया, वह वहां पहुंचते ही मरगया, रास्तेमें उसकी गर्भवती राणीके पेटसे पलासके दरख़्तके नीचे एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम पलासू रक्खा गया, और इसीके नामसे उस रियासतका नाम पलासबा प्रसिद्ध हुआ.

जब शालिवाहन शादी करनेके लिये सिरोही गया, तो रियासत अपने बड़े बेटे बीजल के सुपुर्द करगया था, पीछेसे ३- बीजल अपने एक धायभाईके बहकानेपर शालिवाहनका शेरकी शिकारमें मारा जाना मश्हूर करके राज्यका मालिक बन बैठा. शालिवाहनने वापस आकर उससे बहुत कुछ नर्मी की, लेकिन् उसपर कुछ असर न हुआ, और वह क़िले देवरावलकी तरफ़ जाकर बिलोचोंके मुक़ाबलहमें मारा गया. थोड़े ही दिन गुज़रने पाये थे, कि एक रोज़ बीजलने गुस्सेकी हालतमें धायभाईको धमकाया और मार पीट की, जिसपर वह मुक़ाबलहके साथ पेश आया, और इस शर्मिन्दगीसे बीजल ख़ुदकुशी करके मरगया.

बीजलके मरने बाद विक्रमी १२५७ [हि० ५९६ = ई० १२००] में ४- केलण ५० वर्षकी उम्रमें राज्यका मालिक बना, जो शालिवाहनका बड़ा भाई, और पाहू नामी वज़ीरकी रंजिशके सबब जयसलके मरनेपर गादीसे ख़ारिज कियागया था. इसके छः बेटे चाचकदेव, पालणसाह, जयचन्द, आसराव, प्रथमचन्द और पूर्णसी हुए. १९ वर्ष राज करके केलण मरगया, और विक्रमी १२७५ [हि० ६१५ = ई० १२१९] में ५- चाचकदेव गद्दीनशीन हुआ (१). इसने अमरकोटके राजा रूपसी सोढापर हमलह करके उसकी लड़कीसे शादी करने बाद सुलह की; इसी तरह सोढा राजपूतोंकी मददसे छाडा राठौड़से भी मुक़ाबलह किया, और उसकी लड़कीसे शादी करके ३२ वर्ष राज्य करने बाद मरगया. इसके एक बेटा तेजराव था, जो अपने दो बेटों जैतसी और करणको छोड़कर ४२ वर्षकी उम्रमें चाचकदेवकी मौजूदगीमें ही मरगया था. चाचकदेव करणसे खुश रहता था, इसलिये उसने अपने आख़री वक़में जैतसीके एवज़ करणको, जो छोटा था, राज्यका मालिक बनादिया.

चाचकदेवके मरने बाद ६- रावल करण गद्दीपर बैठा, और जैतसी वतन छोड़कर

(१) इसकी गद्दी नशीनीका संवत् भाटीनामहमें विक्रमी १२६४ [हि० ६०३ = ई० १२०७] लिखा है, लेकिन् मूलमें कर्नेल टॉडके लिखे मुवाफ़िक़ दर्ज किया गया है.

गुजरातमें चला गया. इन दिनों नागौरमें मुज़फ़्फ़रखां पांच हज़ार सवारों समेत रहता था, जिसने नागौरके पास वाले एक भोमिया भगवतीदास झालासे, जो १५०० सवारोंका मालिक था, उसकी लड़कीके साथ शादी करनेकी दर्ख्वास्त की. भोमिया मज्कूरको यह बात मन्जूर न हुई, और वह अपना देश छोड़कर लड़कीको ले-निकला; लेकिन् मुज़फ़्फ़रखांने उसका पीछा किया, और रास्तहमें मुक़ाबलह करके लड़कीको मए कई दूसरी औरतोंके छीन लिया. इस मुक़ाबलहमें भगवतीदासके साथियोंमेंसे क़रीबन् चार सौ आदमी मारे गये, और वह भागकर जयसलमेर पहुंचा. करणने उसकी मदद की, और मुज़फ़्फ़रखांको तीन हज़ार सिपाह समेत क़त्ल करके भगवतीदासको उसके वतनमें वापस आबाद करदिया.

करणके मरने बाद विक्रमी १३२७ [हि० ६६९ = ई० १२७०] में ७– रावल लाखणसेन राज्याधिकारी हुआ. यह बड़ा भोला राजा था. कर्नेल टॉड लिखते हैं, "कि इसने सियालों (गीदड़ों) की आवाज़ सुनकर उनकी तक्लीफ़ दूर करनेकी ग़रजसे उनके लिये दगले (सर्दीके मौसमके कपड़े) और मकानात बनवा दिये थे, जिनमेंसे कई मकान अबतक मौजूद हैं." वह थोड़े ही दिनों बाद कुछ दीवानह होगया, जिससे विक्रमी १३३१ [हि० ६७३ = ई० १२७४] में उसके बेटे ८– पुण्यपालने राज्यका कारोबार अपने हाथमें लिया. यह बड़ा सख़्त मिज़ाज था, इस सबबसे उसके सर्दार उमरावोंने रावल करणके बड़े भाई जैतसीको गुजरातसे बुलाकर पुण्यपालको गद्दीसे ख़ारिज करदिया.

विक्रमी १३३२ [हि० ६७४ = ई० १२७५] में ९– जैतसी राज्यका मालिक बना, इसके दो बेटे मूलराज और रत्नसी थे. इस वक़्त दिल्लीपर अलाउद्दीन ख़िल्जी बादशाहत करता था. उन दिनों ठट्ठा और मुल्तानके दिल्ली जाते हुए ख़िराजको रास्तेमें मूलराज व रत्नसीने लूट लिया; यह ख़बर बादशाहके पास पहुंचनेपर फ़ौज-कशी हुई. मुक़ाबलहके दिनोंमें रावल जैतसीके मरजानेपर विक्रमी १३५० [हि० ६९२ = ई० १२९३] में १०– मूलराजने रावलका पद पाया. इसने अपने बेटे देवराजको, जिसके वंशके अर्जुनोत व हमीरोत भाटी हैं, मए उसके बेटे हमीरके क़िलेसे बाहिर निकाल दिया, और अपने भाई रत्नसी समेत मुक़ाबलहके वास्ते क़िलेमें रहा. देवराज बाहिरसे शाही फ़ौजपर धावा करता था, आख़िरकार आठ वर्षतक मुक़ाबलह करने बाद रसदकी कमीसे मूलराज व रत्नसीने अपनी स्त्रियों व बाल बच्चोंको आगमें जला दिया, और आप सात सौ हमराही राजपूतों समेत क़िलेसे बाहिर निकलकर बड़ी बहादुरीके साथ मारा गया. लिखा है, कि बादशाही फ़ौजके सर्दार महबूबख़ांसे रत्नसीकी बड़ी दोस्ती होगई

थी, इस सबबसे इसने अपने दोनों लड़कों घड़सी व कान्हड़को, जो नाबालिग़ थे, आख़री हमलह होनेसे पहिले महबूबख़ांके पास पर्वरिशके वास्ते भेजदिया था. यह मारिका विक्रमी १३५१ (१) [हि० ६९३ = ई० १२९४] में हुआ, जिसमें क़िला बादशाही लोगोंके हाथ आया, और देवराज, जो बाहिरसे बादशाही फ़ौजपर हमले कररहा था, बुख़ारकी बीमारीसे मरगया. जब यह क़िला बादशाही लोगोंके क़बज़ेमें आया, तो इसके दर्वाज़े बन्द करवादिये गये, और दो वर्षतक क़िला उन्हीं बादशाही लोगोंके क़बज़ेमें रहा. जयसलमेरको उसके वीरान होजानेपर जगमाल राठौड़ने अपने क़बज़हमें लेना चाहा; लेकिन् दूदा व तिलोकसी भाटीने, जो जयसलकी औलादमेंसे थे, भाटियोंको एकट्ठा करके राठौड़ोंको क़िलेसे निकाल दिया, और विक्रमी १३५६ [हि० ६९८ = ई० १२९९] में ११- दूदाने रावलका ख़िताब इख़्तियार किया. यह बड़ा लड़ाकू और दिलेर राजपूत था, जो अजमेरसे बादशाही (२) घोड़े लूट लेगया. जब इसपर हमलह हुआ, तो विक्रमी १३६२ [हि० ७०५ = ई० १३०६] में यह अपनी बहुतसी औरतों व बच्चोंको क़त्ल करके अपने भाई तिलोकसी व दूसरे साथियों समेत लड़कर मारा गया.

इस मारिकेके पेश आने बाद रत्नसीके बेटे १२- घड़सीको, जो अपने भाई कान्हड़ समेत रत्नसीका सौंपा हुआ महबूबख़ांकी हिफ़ाज़तमें था, और उसके मरजाने बाद उसके बेटोंकी निगरानीमें रहा, विक्रमी १३६२ (३) [हि० ७०५ = ई० १३०६] में जयसलमेरकी सनद मिली. इसकी शादी राठौड़ माला (मल्लीनाथ) की बेटी विमलादेवी व कमलादेवीसे हुई थी. विमलादेवी बड़ी होशयार और बुद्धिमान स्त्री थी, इसने अपने पतिके कोई औलाद न होनेके सबब दूदाके बेटे केहर (४) को गोद लेना चाहा, जिसपर देवराजके बेटों हमीर वग़ैरहने बखेड़ा मचाया, और इसी रंजिशसे वह (घड़सी) आसकरण नामी एक भाटी राजपूतके हाथसे मारा गया.

---

(१) अलाउद्दीन ख़िल्जी ऊपर लिखे हुए संवत् १३५१ से १ वर्ष बाद दिल्लीके तख़्तपर बैठा था, इसलिये इस संवत्में शक पाया जाता है.

(२) कर्नेल टॉडने फ़ीरोज़शाहके घोड़े लेजाना लिखा है, लेकिन् यह समय अलाउद्दीन ख़िल्जीका है.

(३) कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि घड़सीने तीमूरशाहके दिल्लीपर हमलह करनेके वक्त बहादुरी दिखलाई, जिसके बदलेमें उसको जयसलमेरकी सनद मिली थी, और भाटीनामहमें इसका गद्दी नशीन होना विक्रमी १३७३ [हि० ७१६ = ई० १३१६] में लिखा है. लेकिन तीमूर बहुत ही पीछे आया है; इसलिये या तो साल संवतोंमें फ़र्क़ है, या कर्नेल टॉडके नोटके मुवाफ़िक़ यह ज़मानह ऐबकख़ांकी लड़ाईका होगा, क्योंकि अलाउद्दीनके वक्तमें मुग़लोंके कई हमले हुए हैं.

(४) दूदाके मुक़ाबलह करके मारे जानेके वक्त केहर अपनी माताके साथ उसकी ननिहाल मंडोवर में था.

विमलादेवीने अपने पतिके मारे जाने बाद उसके मन्शाके मुवाफ़िक़ केहरको जानशीन मुक़र्रर करदिया, और छः महीने पीछे विक्रमी १३९२ [हि० ७३६ = ई० १३३५] में अपने पतिके बनवाये हुए "घड़सी सर" तालाबकी प्रतिष्ठा कराकर सती होगई.

विक्रमी १३९१ [हि० ७३५ = ई० १३३४] में १३- रावल केहर गद्दीपर बैठा. इसके आठ बेटे थे- बड़ा लखमण (लक्ष्मण), जो केहरके बाद गद्दी-नशीन हुआ; २- केलण, जिसने अपने पिताके समय बहुतसी लड़ाइयोंमें तारीफ़के क़ाबिल बहादुरी दिखलाई; ३- सोम, जिसकी औलाद वाले सोमा भाटी कहलाते हैं; ४- कलकरण, ५- तणू, ६- सांतल, जिसने एक पुराने शहरको आबाद करके उसका नाम सांतलमेर रक्खा (१); ७- बीजा, और ८- तेजसी.

केहरके मरने बाद विक्रमी १४५२ [हि० ७९७ = ई० १३९५] में १४-लखमण गादीपर बैठा; इसके सात बेटे वैरसी, रूपसी, रायधर, अमरसी, कुम्भा, सादूल और साहसी हुए. रावल लखमणके छोटे भाई केलणने अपनी जवांमर्दीसे एक जुदा इलाक़ह व्याह नदीके किनारेपर आबाद करके अलहदह राजधानी बनाई थी, इसके क़बज़हमें "किरोहर" के अलावह, जिसको उसने आबाद करके विक्रमी १४७२ [हि० ८१८ = ई० १४१५] में राजधानी बनाया था, पूंगल, बीकमपुर, नांदणा, देवरावल, मारोट, व भटनेर वग़ैरह बहुतसा इलाक़ह था. केलणके रणमल्ल और चाचा वग़ैरह २४ बेटे थे.

केलणके मरने बाद रणमल्ल किरोहरका मालिक हुआ; लेकिन् किसी बीमारीसे उसके बदनका नीचेका हिस्सह बे काम होजाने या मरजानेके सबब चाचा जानशीन हुआ; इसने भी अपने पिताकी तरह कई मारिकोंमें बहादुरी दिखलाई. चाचाके बाद उसका बेटा बरसल किरोहरका राव कहलाया; यह भी बड़ा जवांमर्द था, इसने अपने नामपर बरसलपुर आबाद किया और पंजाबके रईसोंके साथ बहुतसी लड़ाइयां कीं. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "गारा नदीके दोनों किनारोंके ऊपरका बहुतसा हिस्सह केलणकी औलादके क़बज़हमें था, जिसपर बाबर बादशाहने मुल्तानको फ़त्ह करके, अपने हाकिम मुक़र्रर किये, तब केलणकी औलादवाले, जो किरोहर कोट, दीनापुर, पूंगल, व मारोट वग़ैरहमें आबाद थे, वे सब मुसल्मान होगये."

रावल लखमणके मरने बाद विक्रमी १४८६ [हि० ८३२ = ई० १४२९] में १५- वैरसी राज्याधिकारी हुआ, जिसके चार बेटे १- चाचा, २- ऊगा, ३- मेला और ४- बनवीर हुए. रावल वैरसी बड़ा दूरन्देश और धर्मात्मा था; इसने मंडोवर के राव जोधाको अपने पास रक्खा, और मदद करके उसको मंडोवरका मालिक बनाया.

(१) जोधपुरकी तवारीख़में लिखा है, कि सांतलमेरको जोधपुरके राव जोधाके बेटे सांतलने आबाद किया था, लेकिन् न मालूम किसका क़ौल सहीह है, अगर यह सांतलमेर दूसरा हो, तो इख़्तिलाफ़ मिट सक्ता है.

विक्रमी १५०६ [हि० ८५३ = .ई० १४४९] में १६- रावल चाचा अपने बाप के मरने बाद गद्दी नशीन हुआ, यह थोड़े ही वर्ष राज्य करके मरगया, इसके एक ही बेटा १७- देवीदास था, जो विक्रमी १५१३ [हि० ८६० = .ई० १४५६] में राज्यका मालिक बना; इसने अमरकोटके सोढा राजपूतों वग़ैरहपर धावे किये. इसके जैतसी, सांतल, पातल, मदो (माधव), ठाकुरसिंह और रामा छः बेटे हुए. रावल देवीदासके मरनेपर विक्रमी १५४९ [हि० ८९७ = .ई० १४९२] में १८- जैतसी रावल कहलाया, जिसने विक्रमी १५७० [हि० ९१९ = .ई० १५१३] में "जैत बन्द" नामका एक तालाब बनवाकर उसपर बाग़ लगवाया. इसके लूणकरण, नरसिंह, महारावण, मंडलीक, बैरू, प्रतापसी, मेहरो और भवानीदास आठ बेटे हुए. विक्रमी १५८५ [हि० ९३४ = .ई० १५२८] में १९- रावल लूणकरण राज्यका मालिक बना, जिसके वक्तमें बाबर बादशाहने समर्क़न्दसे आकर इब्राहीम लोदीको मारने बाद दिल्लीपर अपना क़बज़ह किया (१). अलीखां नामी एक पठान जयसलमेर आया, जो कुछ दिन वहां रहकर एक रोज़ दग़ासे अपने साथियों समेत क़िलेमें जा घुसा, और तीन पहरतक बराबर लड़ाई करके वहीं मारा गया. भाटी नामहमें लिखा है, "कि यह मारिका विक्रमी १६०७ ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० ९५७ ता० १० जमादियुल अव्वल = .ई० १५५० ता० २८ मई] को हुआ." रावल लूणकरणके नौ बेटे मालदेव, हींगलीदास, रायपाल, सूरजमल्ल, शिवदास, रायमल्ल, दुर्जनशाल, दूदा और हरिदास थे.

इसी रावलके वक्तमें हुमायूं शाह जयसलमेरके रेगिस्तानमें होकर गुज़रा, जब कि शेरशाहने उसको दिल्लीसे निकाल दिया था, और रावल लूणकरणके लोगों से इसका मुक़ाबलह हुआ- (देखो पृष्ठ १२९).

विक्रमी १६०७ [हि० ९५७ = ई० १५५०] में २०- रावल मालदेव गद्दी नशीन हुआ. इसके हरिराज, भवानीदास, खेतसी, नारायणदास, सहसमल्ल, नेतसी और पूर्णमल्ल सात बेटे थे, जिनमेंसे रावल मालदेवके मरनेपर विक्रमी १६१८ पौष कृष्ण ६ [हि० ९६९ ता० २० रबीउल अव्वल = .ई० १५६१ ता० २७ नोवेम्बर] को २१- हरिराज गद्दीपर बैठा; और बादशाह अक्बरके दर्बारमें दिल्ली हाज़िर होकर उसने खिल्अ़त वग़ैरह हासिल किया. इसने अपने इलाक़हके आसपासकी किसी क़द्र ज़मीन अपने क़बज़हमें करके मुल्कको भी बढ़ाया. हरिराजके मरने बाद उसके चार बेटों भीम, कल्याण, भाखरसिंह, और सुल्तानमेंसे

(१) बाबर बादशाह विक्रमी १५८५ [हि० ९३४ = .ई० १५२८] से दो तीन वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमें आ चुका था.

बड़ा २२– भीम विक्रमी १६३४ माघ शुक्ल ४ [हि० ९८५ ता० ३ ज़िल्क़ाद = .ई० १५७८ ता० १२ जैन्युअरी] को जयसलमेरका मालिक बना. यह अक्बर बादशाहके समय शाही फ़ौजके साथ कई मुहिमोंपर भेजा गया, जिनमें ख़ैरख़्वाही और उम्दह कार्रवाई दिखलानेके सबब उसको कुछ जागीर वगैरह मिली थी. भाटी नामहमें लिखा है, कि बादशाहने उक्त रावलको तीन हज़ारी मन्सब दिया था. जयसलमेरके क़िलेमें इन्होंने बहुतसे मकानात बनवाये, जो इस वक़्तक मौजूद हैं. रावल भीमके मरजानेपर उनका भाई २३– कल्याण विक्रमी १६७० माघ शुक्ल १५ [हि० १०२२ ता० १३ ज़िल्हिज = .ई० १६१४ ता० २५ जैन्युअरी] को गद्दी नशीन हुआ.

विक्रमी १६७३ [हि० १०२५ = ई० १६१६] के बयानमें बादशाह जहांगीर अपनी किताब तुज़क जहांगीरी में लिखता है, कि " कल्याण जयसलमेरी, जिसके बुलानेको राजा कृष्णदास गया था, हाज़िर हुआ, और उसने १०० अश्रफ़ी, व एक हज़ार रुपया नज़्र किया. उसका बड़ा भाई भीम जागीरदार था, जब वह गुज़र गया, तो उसने दो महीनेका एक बच्चा छोड़ा, वह भी ज़ियादह न जीया. शाहज़ादगीके दिनोंमें उसकी बेटीको मैंने ब्याहा था, और उसको " मलिकए जहां " ख़िताब दिया था. ये लोग मुद्दतसे हमारे ख़ैरख़्वाह रहे हैं, और इनसे रिश्तहदारी भी होगई थी, इसलिये मैंने रावल भीमके भाई कल्याणको बुलाकर राजका टीका और रावलका ख़िताब दिया (१)."

रावल कल्याण, जिसको बादशाह जहांगीरने दो हज़ारी ज़ात व हज़ार सवार का मन्सब दिया था, मिज़ाजका बहुत सीधा सादा था, इसने मुल्कको बहुत कुछ सर्सब्ज़ और आबाद किया. इसके सिर्फ़ एकही बेटा २४– मनोहरदास था, जो विक्रमी १६८४ [हि० १०३६ = .ई० १६२७] में उसके मरनेपर रावल कहलाया. मनोहरदास बड़ा नीतिनिपुण था, जिसने मंडलेतक अपनी सर्हद क़ाइम की. मनोहरदासके पीछे विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में २५– रामचन्द्र राज्यका अधिकारी हुआ (२); लेकिन् रियासतमें नाइत्तिफ़ाक़ी व

(१) तुज़क जहांगीरीमें बादशाह जहांगीरने यह हाल हिज्री १०२५ के ज़िक्रमें लिखा है, और कल्याण की गद्दी नशीनीकी तारीख़ भाटीनामहमें विक्रमी १६७० माघ शुक्ल १५ [हि० १०२२ ता० १३ ज़िल्हिज = .ई० १६१४ ता० २५ जैन्युअरी] लिखी है, इससे मालूम होता है, कि कल्याण गद्दी बैठनेके दो तीन वर्ष बाद बादशाहके बुलानेसे दिल्ली गया होगा.

(२) कर्नेल टॉडने अपनी किताबमें रावल बरसिंहके बाद रावल रामचन्द्र तक का कुछ हाल नहीं लिखा, बल्कि कुर्सीनामहमें भी फ़र्क़ है, याने उक्त कर्नेलने बरसिंहके बाद रावल जैत, लूणकरण, भीम, मनोहरदास और उसके बाद सबलसिंह लिखा है; इस सबबसे हमने रामचन्द्र तक का हाल भाटीनामहसे मूलमें दर्ज किया है.

बखेड़ोंके सबब २६- सबलसिंह मालिक बन बैठा, जिसके गद्दीनशीन होनेकी तारीख़ भाटीनामहमें विक्रमी १७०७ माघ शुक्ल ५ [हि० १०६१ ता० ४ सफ़र = .ई० १६५१ ता० २६ जैन्युअरी] लिखी है. कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि "जयसलमेरका अव्वल राजा सबलसिंह हुआ, जिसको जयसलमेरका .इलाक़ह बतौर जागीर बादशाहकी तरफ़से मिला था, लेकिन् यह अस्ली वारिस गद्दीका नहीं था. मनोहरदास ने अपने भाई (भीम) के बेटे नाथूको बीकानेरसे शादी करके वापस आते समय, जो गद्दीका वारिस था, फलोदी मक़ामपर एक औरतके हाथसे ज़हर दिलाया, कि जिससे वह मरगया, परन्तु ईश्वरको यह मन्ज़ूर न था, कि क़ातिलकी नस्ल हुकूमत करे, इसलिये वह मर्तबह सबलसिंहको नसीब हुआ, जो मालदेवकी तीसरी औलादमें से था (१)."

सबलसिंह आंबेरके राजा जयसिंह अव्वलका भानजा और बड़ा नेक मिज़ाज जवान आदमी था, उसको अपने मामाके मातहत पेशावरमें एक बड़ा उह्दह मिला था, जहांपर उसने अफ़्ग़ानोंके हाथसे बादशाही ख़ज़ानहको बचाया था. इस ख़ैरख़्वाही के सबब कुल रईस, जो अपनी अपनी फ़ौज समेत बादशाही नौकरी करते थे, उसपर मिहर्बान थे. बादशाहने जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहको हुक्म दिया, कि उस को गद्दी नशीन करे. नाहरखां कूंपावत इस कामपर मुक़र्रर हुआ, और इसी कामके पूरा करनेकी वजहसे उसको शहर और .इलाक़ह पोहकरणकी हुकूमत दीगई, और इसी वक़्से वह .इलाक़ह जयसलमेरसे अलहदह हुआ.

सबलसिंहके मरने बाद उसके सात बेटों अमरसिंह, रत्नसिंह, राजसिंह, महासिंह, माधवसिंह, बांकीदास और भावसिंहमेंसे बड़ा २७- अमरसिंह विक्रमी १७१६ श्रावण शुक्ल १५ [हि० १०६९ ता० १३ ज़िल्क़ाद = .ई० १६५९ ता० २ ऑगस्ट] को गद्दीपर बैठा. इसने टीकादौड़के वक़्में पहिला हमलह बिलोचोंपर करके फ़त्ह पाई. उक्त रावलने अपनी बेटियोंके विवाहके लिये, जो जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह व उदयपुरके महाराणा अमरसिंहके साथ हुआ था, अपनी रिआयासे बराड़ लेना चाहा. इसपर रघुनाथ नामी एक राजपूतने, जो उसका मुसाहिब था, इन्कार किया, जिसको उसने उसी वक़् मार डाला. फिर रियासतके पूर्वी हिस्सहकी तरफ़ चुन्ना राजपूतोंने लूट मार

(१) लूणकरणके तीन बेटे थे:-

१- कल्याणदास, जिसका बेटा मनोहरदास, और उसका रामचन्द्र.

२- मालदेव, जिसका कायतसी (खेतसी), उसका दयालदास, और उसका सबलसिंह.

३- हरिराज, जिसका भीम, और उसका नाथू.

मचाई, तब उनपर चढ़ाई की, और फ़त्हयाब होकर उन राजपूतोंसे अ़ह्दनामे लिखा लिये.

कुछ अ़रसहसे राठौड़ोंने मुल्कमें फ़साद मचा रक्खा था, उसका .एवज़ लेनेके लिये बीकमपुर वाले सुन्दरदास व दलपतकी सलाहसे बीकानेरके .इलाक़हपर धावा किया गया, लड़ाई होनेपर भाटियोंने फ़त्ह पाई. यह ख़बर राजा अनोपसिंह बीकानेर वालेको, जो उसवक्त बादशाही फ़ौजके साथ दक्षिणमें था, पहुंची. तब उसने मक़ाम हंसारसे कुछ फ़ौज एक पठान सर्दारकी मातह्तीमें देकर अपने मुसाहिब (प्रधान) को हुक्म दिया, कि राठौड़ोंको एकट्ठा करके जयसलमेरपर हमलह करे, और बीकमपुरको बिल्कुल बर्बाद करदे. यह हाल मालूम होनेपर रावल अमरसिंहने भाटियोंको जमा करके मुक़ाबलहके साथ पूंगलको दोबारह छीन लिया, और बाडमेर व कोतूराके राठौड़ जागीरदारोंको अपना ताबेदार बनाया. इस लड़ाईमें बहुतसे राठौड़ मारे गये

अमरसिंहके जशवन्तसिंह, दीपसिंह, विजयसिंह, कीर्तिसिंह, श्यामसिंह, जैतसिंह, केसरीसिंह, जुझारसिंह, गजसिंह, फ़त्हसिंह, मुह्कमसिंह, हरिसिंह, जयसिंह, इन्द्रसिंह, महकरण, भीमसिंह, जोधसिंह और सुजानसिंह, अठारह बेटे और दो बेटियां थीं.

उक्त रावलको बादशाह आ़लमगीरने पोहकरण, फलौदी और मालाणी जागीर में दिये थे, जिनको उसके मरनेपर राठौड़ोंने छीन लिया, और कुछ हिस्सह मुल्कसे शिकारपुरके मालिक दाऊदख़ां अफ़्ग़ानने दबालिया.

विक्रमी १७५८ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १२१३ ता० ११ रबीउ़स्सानी = .ई० १७०१ ता० १६ ऑगस्ट] को २८ – रावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठा; जिसके जगत्सिंह, सूरतसिंह, ईश्वरीसिंह, सर्दारसिंह और तेजसिंह, पांच बेटे थे.

कर्नेल टॉड लिखते हैं, "कि वलीअ़ह्द जगत्सिंह, जिसके अक्षयसिंह, बुधसिंह और ज़ोरावरसिंह, तीन बेटे थे, अपने बापकी मौजूदगीमें ख़ुदकुशी करके मरगया. जशवन्तसिंहके मरने बाद २९ – अक्षयसिंह गद्दीपर बैठा, बुधसिंह चेचककी बीमारीसे मरगया (१), परन्तु तेजसिंहने, जो जशवन्तसिंहका छोटा भाई था, जब्रन्

---

(१) "भाटीनामह" में लिखा है, कि जगतसिंहका बड़ा बेटा बुद्धसिंह और छोटा अक्षयसिंह था, तेजसिंहने बुद्धसिंहको, जो विक्रमी १७६४ वैशाख कृष्ण १२ [हि० १११९ ता० २५ मुहर्रम = .ई० १७०७ ता० २९ एप्रिल] को गद्दीपर बैठा था, ज़हर देकर मारडाला, और विक्रमी १७७८ वैशाख शुक्ल १ [हि० ११३३ ता० २९ जमादियुस्सानी = .ई० १७२१ ता० २६ एप्रिल]

राज छीन लिया, तब अक्षयसिंह अपनी जान बचानेके लिये दिल्ली चला गया.

रावल जशवन्तसिंहका एक दूसरा भाई हरिसिंह, जो दिल्ली मक़ामपर बादशाही ताबेदारी में था, तेजसिंहका जयसलमेरपर जब्रन् क़ाबिज़ होजाना सुनकर जयसलमेरकी तरफ़ आया, और उसने तेजसिंहसे मुक़ाबलह किया. इस लड़ाईमें तेजसिंह बहुत ज़ख़्मी हुआ, और उन्हीं ज़ख़्मोंसे कुछ दिनों बाद वह मरगया. उसके बाद उसका बेटा सवाईसिंह गद्दीपर बैठा. यह नाबालिग़ था, जिससे अक्षयसिंहने भाटियोंको मिलाकर क़िलेपर हमलह करदिया, और सवाईसिंहको निकालकर दोबारह आप अपने हक़पर क़ाबिज़ होगया.

अक्षयसिंहने बहुत अरसेतक राज्य किया. इसके वक़्में दाऊदख़ांके बेटे बहावलख़ांने देवरावल और खंदालका कुल इलाक़ह फ़त्ह करके बहावलपुरमें मिला-लिया. अक्षयसिंहके मूलराज, कुशालसिंह, और पद्मसिंह तीन बेटे हुए.

३०- रावल मूलराज दूसरा, विक्रमी १८१९ कार्तिक कृष्ण ५ (१) [हि० ११७६ ता० १९ रबीउ़ल अव्वल = ई० १७६२ ता० ८ ऑक्टोबर] को अपने बापके बाद गद्दीपर बैठा; इसके तीन बेटे रायसिंह, लालसिंह, और जैतसिंह हुए. मूलराजने महता स्वरूपसिंहको अपना प्रधान मुक़र्रर किया था. इस प्रधानकी एक तवाइफ़से आश्नाई थी, और उसको सर्दारसिंह नामी एक राजपूत चाहता था, जिसने रायसिंहके साम्हने प्रधानकी शिकायत की. मुल्की आमदनी कम होजानेके सबब वलीअ़हृद्की उक्त प्रधानपर नाराज़गी तो पहिलेसे ही थी, इस वक़ सर्दारसिंहके बहकानेसे उसने ज़ियादह गुस्सहमें आकर स्वरूप-सिंहको मारडाला, और सर्दार व जागीरदारोंके कहनेसे मज्बूरन अपने बापको भी बेदख़्ल करके हुक्मरानी करने लगा, परन्तु उसने गद्दीपर बैठने व अपने पिताको मारडालनेसे पर्हेज़ किया. इसके तीन महीने बाद अर्जुनसिंह, मेघसिंह और ज़ोरावरसिंह वग़ैरह सर्दारोंने मूलराजको क़ैदसे छुड़ाकर पीछा मालिक बनाया, और महता स्वरूपसिंहके बेटे सालिमसिंहको, जिसकी उम्र ग्यारह वर्षकी थी, प्रधानेका काम दिया. रायसिंह अपने बापके हुक्मसे जिलावतन होकर जोधपुर चला गया, और वहांसे वापस आनेपर एक क़िलेमें क़ैद

को आप मालिक बन बैठा. तेजसिंह एक वर्ष बाद हरिसिंहके साथ मुक़ाबलहमें ज़ख़्मी होकर मरगया, और उसका बेटा सवाईसिंह विक्रमी १७७१ [हि० ११३४ = ई० १७२२] में रावल कह-लाया, जिसको निकालकर अक्षयसिंहने जयसलमेरपर विक्रमी १७८० श्रावण शुक्ल १४ [हि० ११३५ ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० १७२३ ता० १५ ऑगस्ट] को क़बज़ह करलिया.

(१) कर्नेल टॉड विक्रमी १८१८ (ई० १७६२) में मूलराजका गद्दी नशीन होना लिखते हैं.

रक्खा जाकर कुछ दिनों बाद मरवाडालागया, और उसके दो बेटे अभयसिंह व धौंकलसिंह भी इसीतरह ज़हरसे मारेगये.

रावल मूलराजका तीसरा बेटा जैतसिंह था, जिसका बेटा महासिंह हुआ, और महासिंहके सात बेटे तेजसिंह, देवीसिंह, फ़त्हसिंह, गजसिंह, जोधसिंह, केसरीसिंह और छत्रसिंह हुए, जिनमेंसे गजसिंह (१) अपने पड़दादाके बाद गद्दीपर बैठा. रावल मूलराजके वक्तमें बहुतसा .इलाक़ह रियासत जयसलमेरसे निकल गया था. इसी रावलके साथ विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = .ई० १८१८] में पहिला अह्दनामह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ हुआ. मूलराजके वक्तमें रियासतके कारोबारपर प्रधान महता स्वरूपसिंह व उसके मारेजाने बाद उसका बेटा सालिमसिंह ऐसे बाइख्तियार अफ्सर रहे, कि जिनकी रंजिशके सबब रावल मूलराजकी औलादमें से कई मारेजाने व बाज़ जिलावतन किये जाने वगैरह के अलावह सिर्फ़ गजसिंह ही बाक़ी रहा था.

विक्रमी १८७६ फाल्गुन शुक्ल ५ [हि० १२३५ ता० ३ जमादियुलअव्वल = .ई० १८२० ता० १८ फेब्रुअरी] को ३१- रावल गजसिंह गद्दी नशीन हुए, इनकी शादी उदयपुरके महाराणा भीमसिंहकी बेटीके साथ विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० १२३५ ता० २१ रमज़ान = ई० १८२० ता० ३ जुलाई] को हुई थी- (देखो पृष्ठ १७४६).

इस मौकेपर बीकानेर व जयसलमेरके सर्हद्दी झगड़ोंमें किसी क़द्र कमी हुई. विक्रमी १८८० [हि० १२३९ = ई० १८२४] में प्रधान महता सालिमसिंह मरगया, जिसका दबाव महारावलके ऊपर बहुत कुछ था. इसके बाद महारावलने उसके दो बेटोंको किसी जुर्मपर क़ैद करके सालिमसिंहके फ़िर्केका ज़ोर बिल्कुल तोड़ डाला.

सिन्धकी लड़ाईके वक्त उक्त महारावलने गवर्मेंट अंग्रेज़ीको बारबर्दारी वगैरह मौजूद करनेमें बहुत कुछ मदद दी थी, जिसके एवज़, सिंधका इलाक़ह फ़त्ह होने पर, विक्रमी १९०० [हि० १२६० = ई० १८४४] में नव्वाब अली मुरादखांसे

---

(१) कर्नेल टॉड लिखते हैं, कि मूलराजके तीन बेटे थे:-

१- रायसिंह, जो अपने दो बेटों धौंकलसिंह व अभयसिंह समेत ज़हरसे मारा गया.

२- जैतसिंह, जो काणा था, और उसका बेटा महासिंह अन्धा होगया.

३- मानसिंह, जो घोड़ेसे गिरकर मरगया, और उसके चार बेटों फ़त्हसिंह, गजसिंह, देवीसिंह और तेजसिंहमेंसे गजसिंह राज्यका मालिक बना और बाक़ी जिलावतन किये गये.

शाहगढ़ वग़ैरह पर्गने, जो पहिले वक्तमें इस रियासतके तह्तसे निकल गये थे, वापस दिलाये गये. इनके कोई बेटा नहीं था, इसलिये विक्रमी १९०२ आषाढ़ शुक्ल ५ [हि० १२६१ ता० ३ रजब = ई० १८४५ ता० ९ जुलाई] को रावल गजसिंहके इन्तिकाल करने बाद महाराणी राणावतने उनके छोटे भाई केसरीसिंहके बेटे रणजीतसिंहको जानशीन मुक़र्रर किया.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० ता० ४ रजब = ई० ता० १० जुलाई] को ३२- रणजीतसिंह जयसलमेरके रावल कहलाये. इनको विक्रमी १९१९ [हि० १२७९ = ई० १८६२] में राजपूतानहके दूसरे रईसोंके शामिल सर्कार अंग्रेज़ीसे गोद लेनेकी सनद मिली. यह भी विक्रमी १९२१ ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० १२८१ ता० ११ मुहर्रम = ई० १८६४ ता० १६ जून] को लावलद इन्तिक़ाल करगये, तब इनके छोटे भाई ३३- वैरीशालको जानशीन करनेकी तज्वीज़ हुई, और यह रावल माने गये. उस वक्त वैरीशालकी उम्र १५ वर्षकी थी, इन्होंने रियासतमें बद इन्तिज़ामी व झगड़ोंके सबब गद्दीपर बैठनेसे इन्कार किया, परन्तु दो वर्ष बाद कर्नेल ईडन (Eden.) एजेण्ट गवर्नर जेनरलने राज्यका प्रबन्ध करके इनका रंज व अन्देशह दूर करदिया. उक्त रावलका विवाह विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में डूंगरपुरके महारावल उदयसिंहकी बेटीके साथ हुआ, जिसमें दोनों तरफ़से शादीके ख़र्च व जहेज़ वग़ैरहमें बहुत रुपया ख़र्च हुआ था. यह महारावल, जो हालमें विद्यमान हैं, स्वभावके अच्छे और सादा चलन सर्दार हैं.

जयसलमेरका अह्दनामह.

अह्दनामह नम्बर ५०.

एचिसन साहिबकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३, पृष्ठ १२८-१२९.

अह्दनामह दर्मियान ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और जयसलमेरके राजा महारावल मूलराज बहादुरके, जो ऑनरेबल कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी०, गवर्नर जेनरल बहादुर

के दिये हुए पूरे इख्तियारातके मुवाफ़िक़ सर चार्ल्स थिओ फ़िलस मेट्कॉफ़की मारिफ़त, और महाराजा धिराज महारावल मूलराज बहादुरकी तरफ़से उनके दिये हुए इख्तियारातके अनुसार मिश्र मोतीराम और ठाकुर दौलतसिंहकी मारिफ़त क़रार पाया.

पहिली शर्त- दोस्ती और एकता हमेशहके लिये ऑनरेबूल कम्पनी और जयसलमेरके महारावल मूलराज बहादुर और उसके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम रहेगी.

दूसरी शर्त- महारावल मूलराजके वारिस जयसलमेरकी गद्दीपर रहेंगे.

तीसरी शर्त- किसी सख़्त हमलहकी सूरतमें, कि जिससे रियासत जयसलमेर के ग़ारत होनेका अन्देशह हो, या ऐसे बड़े अन्देशोंका ख़तरह हो, जो उक्त रियासतकी निस्बत पैदा होंगे, गवर्मेएट अंग्रेज़ी रियासतकी हिफ़ाज़तके लिये कोशिश करेगी, उस सूरतमें, कि जयसलमेरके राजाकी निस्बत तक़ारका कोई सबब पैदा न होगा.

चौथी शर्त- महारावल और उसके वारिस व जानशीन हमेशह गवर्मेएट अंग्रेज़ीके मातहत रियासत और उसकी बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे.

पांचवीं शर्त- यह अह्दनामह पांच शर्तोंका क़रार पाकर उसपर मिस्टर चार्ल्स थिओ फ़िलस मेट्कॉफ़ साहिब और मिश्र मोतीराम व ठाकुर दौलतसिंहकी मुहर और दस्तख़त हुए; और इस अह्दनामहकी तारीख़से छः हफ़्तेके अन्दर हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरल बहादुर और महाराजाधिराज महारावल मूलराज बहादुरके दस्तख़तोंसे तस्दीक़ की हुई नक़्ल एक दूसरेको दीजावेगी.

मक़ाम दिल्ली ता० १२ डिसेम्बर सन् १८१८ ईसवी.

दस्तख़त- सी० टी० मेट्कॉफ़. (मुहर.)

दस्तख़त- हेस्टिंग्ज़.

(गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर.)

दस्तख़त- जी० डाउड्स वेल.

दस्तख़त- जे० स्टुअर्ट.

दस्तख़त- सी० एम० रिकेटस्.

फ़ोर्ट विलिअम मक़ामपर तारीख़ २ जैन्युअरी सन् १८१९ ईसवीको कौन्सिल के इज्लासमें गवर्नर जेनरलने तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जे० ऐडम,
चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेएट.

ऊपर लिखे हुए अहृदनामहके सिवा मुजिमोंके लेन देनकी बाबत एक अहृदनामह होकर गोद लेनेकी सनद भी राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ इस रियासतको मिली है.

शेषसंग्रह.

१- उदयपुरमें रामप्यारीकी बाड़ीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

श्री गणेशायनमः अथभाषाप्रशस्तिअर्थलिष्यते. श्रीगणपतपाय प्रणाम करि संस्कृतको लेसार ॥ भाषाप्रसस्ति अब लिखे सबहीको अधिकार ॥ १ ॥ अथ भाषा ॥ सिद्धश्रीमहाराजाधिराजमहिमहेंद्रसूर्यवंशावतंस श्रीजगतसिंहजी सुत श्रीदीवाणजी श्रीअरिसिंहजी सुत श्री ५ श्रीसकलगुणिजनप्रतिपालकअनेकगुणनिधानक्षत्रीधर्म-धुरंधरश्रीएकलिंगेश्व (र) चरणशरणशत्रुमातंग पंचानन अर्थिजनकल्पद्रुम ॥ श्रीकृष्णैकभक्तिपरायणदाक्षणात्यमालजित्प्रभृतिसुभट मौलिमाणिक्यनीराजितपद-पद्म। शास्त्रशस्त्रविचारचतुर । महाराजाधिराजमहाराणाजी श्री १०८ श्री भीमसिंहजी विजयराज्ये ॥ संवत् १८४७ वर्षे जेष्ठमासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ चन्द्र

वासरे श्री उदयपुरनगरे मारुपुरामध्ये श्रीरामनारायणजीरो देवरो, बावड़ी, बाड़ी, श्री दरबार लायक महल, धर्मशाला, और पण जायगा बडारण रामप्यारी करापितं श्री दीवाणजी श्रीश्रीभीमसिंहजीरी माता श्री ५ श्री सरदारकुंवर-बाई झालांरी बेटी धर्ममूरत श्री बाईजीराजरी कृपा सुनजररी पात्र पूर्वोक्तभक्ति-संबंधिश्रीदिवाणजीरा अंत:पुरमें बड़ो अधिकार लीया जात गूजर रामाजीरी बेटी बाई रुक्मारी कुक्षे जाई धर्ममूर्त्त दयासागर वाचाअविचल बाई रामप्यारीरे धर्मपुत्र मयारामजी सुत रतनजी जात आदगोड़ श्रीदरबारमें पड्यारारो अधि-कार पाया धर्मपुत्री चंदणा जात सनावड़ जमाई किसनजी बाई रामप्यारी श्री-रामनारायणजीरो देवरारो सारी जायगारो महोछव कीदो जदी श्रीदिवाणजी, श्रीबाईजीराज, तथा राण्या तथा नानीबायां, रावला मायली डावड्यां, चाकर बाबर, तथा भींडररो ठाकुर, देलवाडारो ठाकुर, कानोड़रो ठाकुर, सहा शिवदास जी, सतीदासजी, जेचंदजी गांधी, अगरजी, मोजीरामजी मेहता, किसोर-दासजी, कोटारो साथ, सेररा चोवट्या, सारा भलामनष, आदमी, लुगायां सुदी आवे दिन १२ सुदी रह्या, बड़ो उच्छव हुवो, ब्राह्मण अनेक जीम्यां, यथायोग्य दक्षणा दीधी, श्री दरबार सारो साथ घणा षुशी हुवा, श्री दरबाररी, श्री बाईजीराजरी घणी नछरावल कीधी, श्री दिवाणजी रामनारायणजीरे भेट गाम वरनोकड़ो प्रगणे कुंभलमेररे चढ़ायो, बाड़ी १ रसवागरी श्री बाईजीराज चढ़ाई, राण्यां आप आपरा गाम माहे धरती चढ़ाई, श्री रामनारायणजीरे पूजा सारू, श्री रामानुजसंप्रदाय श्री महंत ध्यानदासजी सुत पूर्णदासजी सुत मोती-दासजी अणाहे मेल्या, भटमेवाड़ा शिवलालहे कथा वांचवा मेल्या, चत्रभुज गजधरहे कड़ा दीधा, गोड़ ब्राह्मण चतुर्भुजहे अणी काम बाबत गहणो सिर-पाव देवाणो, और सारांहें राजी कीधा, बाईहे राजी वेने श्री जी तथा बाई-जीराज हुकम कीधो सो ओजूं कोहो सो करां, जदी बाई रामप्यारी घोड़ा, सरपाव, गेणो सारांहे जूदा जूदा नजर करे हाथ जोड़े अरज कीदी, सो मोने मोटी कीधी, इबे अरज या हे सो, कसारांरी ओलमें मारा घर हे, सो सारो साथ ले श्री प्रथीनाथ सनाथ केजे. आ अरज सुणे श्री दिवाणजी, श्री बाईजीराज सारांहें लेने उठे पधारया, आखो दिन रह्या नजराणो फेर अठारो लेने पाछा महलां पधारचा. इसी तरह अठे उछब घणो हुवो, सारो साथ तालेबर सूं ले गरीब सुदि जीमण वीचे, कायदा वीचे, घणा कुशी हुवेने घरे सदाया, जायगांरी चाकरी में महतो फतो, बेटो दोलो, गूजर सवो, जाट नंगो, छड़ीदार जेकिसन.

श्लोक.

ॐ॥ श्रीगुरुं गणनाथं च नत्वा वागीश्वरीं परां॥ कुर्वे प्रशस्तिं रांप्यार्या रम्यां विबुधरंजिनीं ॥ १ ॥ श्रीसूर्यवंशे जगति प्रसिद्धोभून्महीपतिः ॥ जगत्सिंह इति ख्यातस्तद्वंश्यान्वर्णये धुना ॥ २ ॥ आसीज्जगत्सिंहसुतो रिसिंहः क्षात्रैक-सिंहो रिमृगव्रजेषु॥तस्यात्मजौ द्वौ हि हमीरसिंहो यो भीमसिंहः स जगत्प्रशास्ति॥३॥ कृष्णैकतानी सुकृतार्थदानी शास्त्राभिमानी सदसि प्रमाणी॥ कल्पद्रुपाणि र्न्नवनीतवाणि र्भीमो धराजानिरमानिविश्वैः ॥ ४ ॥ जित्वा दिल्लीश्वराद्यान् धरणिधरवरान् गृह्यतेभ्यः करार्थानुद्दामश्रीर्जगत्यां प्रथितगुणयशा मालजिद्दा-क्षिणात्यः ॥ यस्यांघ्रिद्वंद्वभृंगोपमिति मुदवहत्स्वात्मनैव प्रसिद्धां स श्रीभीमो नरेन्द्रः स्पृहयतु जगदानंदसंवर्द्धनाय ॥ ५ ॥ दृष्ट्वा यत्खड्गनागं समरभुविचल त्कालकल्पं करालं द्विट्प्राणव्रातपानव्रतजनितधृतिं लेलिहानं समंतात्॥ कीर्तिस्त्रै-णस्वभावाच्चकिततरमनाः प्राद्रवत् सर्वभूमौ देशांस्तेभ्यो नरेशानथ सुरविषयान् दिग्विशेषानशेषान् ॥ ६ ॥ मातास्ति तस्य नृपते र्जनदुःखहर्त्री नारायणां घ्रिजनितात्ममनोभिलाषा ॥ सर्दार पूर्वकुवरीति पतिव्रता सज्झालान्वयाचलभवा भवशेखरेव ॥ ७ ॥ सद्धर्मैकपरंपराखिलजनश्रेयस्करीसत्करा भास्वद्वंशधरारिसिंह नृपतेरग्रेसरा योषितां॥ दीनानाथदयाशयार्द्रहृदया या पुत्रपौत्रान्विता मान्या सर्व-पतिव्रतासु सुतरां श्रीबाईराजाख्यया ॥ ८ ॥ पात्रंकृपाया नृपमातुरस्या वडा-रणेति प्रथितप्रभावा॥ परोपकारैकमना हि रामप्यारीति विख्यातयशा जगत्यां ॥ ९॥ नरेश्वरांतःपुरमाननीया रामस्य पुत्री किल गुज्जरस्य॥ रुक्मांगजा गोऽतिथिदेवसेवा-श्रद्धावती शुद्धिमती चरित्रैः॥ १०॥ यस्या मयारामइति प्रसिद्धः पुत्रश्च पुत्री चदणा-ख्ययेति॥ धर्मार्थमेतौ द्विजजौ गृहीतावुभौ सगौडश्च सनावडीसा॥ ११ ॥ पुरोगवत्वे धिकृतोनृपेण बालोपि सुद्धैककुलानुसारी ॥ आस्ते पञ्चारेत्युपनामधेयः सद्भिः सुगेयः सदसोमुखे यः॥ १२ ॥ लब्ध्वा प्रसादमतुलं नृपतेः समातुः सैषाशुभो-दयपुरे रचयांचकार ॥ प्रासादमुन्नतशिखं रुचिरां च वापीं पांथाश्रमान् नृपविनोद-गृहाणि वाटीं॥ १३ ॥ यत्प्रासादसमाश्रितोहि भगवान् श्रीरामनारायणो लोकानां शुभमिच्छुरुन्नतयशा भूपार्च्चितांघ्रिद्वयः॥ भास्वद्वंशभुवोनृपस्य ससुतस्येष्टंविधा-तुं पुरे सनूस्वीयायुधमूर्तिभूषणधरोवासीज्जगच्छ्रेयसे ॥ १४ ॥ यः सोपा-नपरंपरासु नगराद्यांतः पयोहेतवे कामिन्यः कनकश्रियाप्रतिफलत्कांत्यारतीयंति च॥ या दृष्ट्वा रविरप्सरोगणमकार्षीन्मानसेमानसे वासंजातमनोभवाः स्मितलस-

द्रक्रा मनोहारिणी ॥ १५ ॥ त्रिवेदानां वर्गे द्वितियरहिते संवदुदये पुरे मासे ज्येष्ठे विशदसमये मन्मथतिथौ ॥ इयंरामप्यारी सकलनरनारीसुखकरी चकार प्रासाद्-प्रभृति सुकृतं पूर्णविभवं ॥ १६ ॥ यदुच्छवे भूमिपतिः सदारः स्फुरत्प्रतापः पुर वासि लोकैः ॥ सहैत्य सामंतयुतो निवासमचीकरद्वादशवासराणि ॥ १७ ॥ स्नुषोल्लसच्छ्रीर्हि नृपस्य माता समन्विता सेवनकारिणीभिः ॥ मुमोद दृष्ट्वोच्छव-भारमस्या नस्यादयं कुत्रचिदित्यभाणि ॥ १८ ॥ चंद्रानोपेभगिन्यौ द्वे उदेदोलत-संज्ञके ॥ आत्मजे नरनाथस्य समेत्यापुरिमामुदं ॥ १९ ॥ तथा नृपकलत्राणि पवित्राणि शुभैर्व्रतैः ॥ विचित्राणि विभूषाद्यै र्मित्राणि पतिपादयोः ॥ २० ॥ मद्रराजविजयाधिपसूनुर्भागिनेयपदभूषणरत्नं ॥ जाल्मसिंह इति यः सकलत्रो-त्राजगाम निजभृत्यसमेतः ॥ २१ ॥ भींडरेशश्चदेल्वाडाधिपः कानोडनायकः ॥ इत्यादयोहिसामंता मानिताः समुदो ऽ भवन् ॥ २२ ॥ शिवदासाभिधो ऽ मात्यो भ्रातृभिः सह संगतः ॥ परिवारयुतो धीरो मुमोदोच्छवदर्शनात् ॥ २३ ॥ बांध-वाश्च सुहृदः कुटुंबिनो गोत्रजा नगरवासिनो जनाः ॥ आप्रधान मधमावधि व्यधु र्मीनमाननसमं समंततः ॥ २४ ॥ इत्थं नानाभावतृप्ताश्च लोकाः कोटादेशादाग ता ये विशोकाः ॥ ऊचुः सम्यक् सम्यगेवं मुखेभ्यः सार्द्धं वाद्यैर्भेरिभिः काहलाभिः ॥ २५ ॥ औदुंबरो निर्भयरामनामा ज्योतिर्विदग्रेसरजातधामा ॥ तेनैवदत्ते सुशुभे मुहूर्ते चक्रुर्द्विजाः सर्वमिदंयथोक्तं ॥ २६ ॥ येषामध्ययनं सम्यक् शास्त्रे श्रु-तिचतुष्टये ॥ तृतानामत्र यद्दत्ता दक्षिणाभूच्च तुष्टये ॥ २७ ॥ श्रीचंद्रसूनुर्भगडोः पि-ता यश्चतुर्भुजो गौडकुलप्रसूतिः ॥ वस्त्रैर्विभूषादिभिरन्वमानि प्रासादकार्याधि-कृतौ नृपेण ॥ २८ ॥ राज्ञश्च राजमातुश्च राजपत्नीगणस्य च ॥ तथान्येषां च लोकानां सन्माने ऽ स्यैवदक्षता ॥ २९ ॥ अश्वैर्विभूषणभरैर्वसनैश्च भोज्यैः संमानितो नरपतिः प्रतिगृह्यतोषं ॥ सर्वैः प्रसूप्रभृतिभिः सहितोर्थितः सन्नस्याग्रहं प्रतिय-यौ विनयान्वितायाः ॥ ३० ॥ अंतः पुराधिकृतिना मोजीरामेण धीमता ॥ रक्षितानि कलत्राणि ननंद्रा सार्द्धमन्वयुः ॥ ३१ ॥ यामद्वयं मात्रयुतो वसित्वा विख्यापयन् प्यार्य्युपरिप्रसादं ॥ महोच्छवं शौल्विकहट्टमार्गे प्रदर्श्यलोकान् स्वगृहं नृपो ऽ गात् ॥ ३२ ॥ विविधभोजनतृप्तमनोरथैरनुचरैरथ पत्तनवासिभिः ॥ गदि-तमित्थमपूर्वमलोकि यन्न कथितं चिरजन्मिभिरप्यदः ॥ ३३ ॥ अमात्यौ श्रीनृपेंद्रस्य रामप्यार्यासुसत्कृतौ ॥ अगरश्च किशोरश्च प्रसन्नौ जग्मतुर्गृहे ॥ ३४ ॥ यः पूर्णदासस्य पिता जितात्मा पौत्रो यदीयः किल मुक्तिदासः ॥ चकार रामानुजसंप्रदायी सध्यानदासो भगवत्सपर्य्यां ॥ ३५ ॥ वर्णोकडो नाम जगत्प्रसिद्धो ग्रामो ऽ स्ति यः कुंभलमेरुपार्श्वे

श्रीरामनारायणसेवनार्थं भूपेन रामार्पणतोर्पितः सः॥ ३६ ॥ नृपस्य मात्रा भगवत्सपर्याहेतोर्मुदा दायि कुशोदकेन ॥ आचंद्रसूर्यं रसवाटिका सा पुराद्वहिः प्राग्दिशियार्द्धकोशे ॥ ३७ ॥ भूमिप्रदेशैर्निजनामचिन्हैः स्वग्रामसंस्थै र्नृपद्वारवर्गः॥ पृथक् पृथक् पूजन माचकार श्रीरामनारायणपादपद्मे ॥ ३८ ॥ रामप्यार्याः प्रियः प्राणो मयारामतनूद्भवः रत्नाख्यः सेवनं चक्रे प्रभोरत्नादिभिः परं॥ ३९॥ शिवा च शंभुः पितरौ प्रशस्तिकृद्वैद्यनाथो ग्रजएकतः परः॥ भट्टमेदजातिर्विदुषां-विभूषणं पुराणवक्ता शिवलाल आसस॥ ४० ॥ कृत्वा प्रतिष्ठां हरिमंदिरादीन्नकेवलं भूषयतिस्म सेयं॥ कुलं च शीलं च वपुर्वयश्च स्वं स्वामिधर्मं पितरौ यशश्च॥ ४१ ॥ प्रासा-दाद्युत्पादकर्मण्यदीनारामप्यार्याश्चित्तवित्तप्रवीणाः॥ आसन्सेवाधर्मकार्ये सहायाः सवूजीनगूजीजेकिसन्कालुरायाः ॥ ४२ ॥ प्रशस्ति र्लिखिताटंकै गंगारामतनूभुवा ॥ शिवरामेणभंगोरगोत्रिणा शिल्पशालिना ॥ ४३ ॥ श्रीविश्वकर्मोदितशिल्पसिंधौ चंद्रायमानेन चतुर्भुजेन॥ भंगोरगोत्राभरणेन वेणीरामात्मजेनाकृत सूत्रिताऽत्र ॥ ४४ ॥ जलजारिलसत्स्थितीरयान् महदानंदनिधीरसांबुधेः ॥ प्रभुताचरणौवचोभरः कुरुतांनः सुखसंपदो हरेः॥ ४५ ॥ संवत् १८४७ वर्षे ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे १३ तिथौ उदयपुरमध्ये वड़ारण रामप्यारी बाईकारित श्री रामनारायण प्रासाद वापी वाटी राजगृह प्रशस्तिः समाप्ता॥ श्रीरस्तु.

२- उदयपुरके पीछोली मुहल्लेमें लक्ष्मीनारायणके मन्दिरके आगेकी सुरे.

सिद्धश्रीगणेशजीप्रसादात् महाराजाधिराज महाराज श्री भीमसिंहजी आदेसात् प्रत दुवे पंचोली प्रताब भट देवेसर गांम पीछोली श्री राजा रामचंद्रजी रो दत्त तींरा ब्राह्मण गरास्या चंद्राप्रण गोतरा हांस ४ नागदा कस्य अप्रंघ ॥ गाम पीछोलीमें पीछोलो तलाव तींमहे संवत् १८४० मे तथा संवत् १८४१ मे तलावरी रूंण निकली तीवखत केणवत उपजी जदी श्री दरबारथी यो थाप ठेरावे सीम काढे दीदी, अठा पछे आयो आपणी हदमें चाल्यां जासी, या रीत कर सुरे रोपावी जणीमें सुरे १ पीछोल्यांरा तलावमें रूंणमें रुपी, ने सुरे १ भोम पीछोली रे चोरे ठाकुर श्री लछमीनारायणजीरे देवरे रोपावी, महता मालदासरे दुवे रुपी, पीछोलीरा बामणारी हांस ४ रा कपालभागरी अणी परमाणे सीम काढे सुरे रुपाई, १ अरसीविलासरी रासणा मंगरी थी लंकाउ बाजु डोरी १ अलोइरा खांचा सुदी, जगनीवास री नीम थी उगमणी बाजु कुंवर सरदारसिंहजी रा महलां रा गरभ सुदी गरास्या, आथमणी बाजु सीसारमारी पाली सुदी, धराउ बाजु डोरी १॥ डोढ

रासणा मगरी थी ठेट ओटा सुदी षालस्या हे, ए सुरे दोई संवत् १८४१ महा विद ऽऽ अमावस सोमे मकर संक्रांतरी पर्वणी मांहे श्री रामाअर्पण करे उदक आघाट करे सुरे दोय २ रोपावी, अबे अणी सुरेने अठा पाछे थुवादार, कामदार व ता – – कोई उथापे तथा षोलण करेगा तिहे श्री एकलिंगजी दोषसी, श्री हजूर रो हुकम हे हांस ४ चार री १ हांस एक जोसी पोषररी समसतरी, हांस १ जोसी नीलकंठरी समसत, हांस १ जोसी जीवारी समसत, हांस १ जोसी दयाराम री समसतांरी, संवत् १८४१ वर्षे महा विद ऽऽ अमावस सोमे. नामा १ प्रत वीगा २ षासी, अणी सुरेमें नामा ४ हे, सो बाबत वीघा ८ आठ षासी; सुरे १ दसगत प(चो)ली परताप कालावतरा हाथरा हे, सुरे १ अणी परमाणे तलावमें बामणीने रावली सीम वचे रासणा मगरीरा गरब परमाणे रोपी हे, जो काम पडे तो ऊठे सुजा – – – –

३– ऊपर लिखीहुई सुरेके पास वाली दूसरी सुरे.

॥ श्री रामजी ॥

स्वस्ति श्री श्री रामचंद्रजी सीतामातारो दत्त गाम पीछोली माहे हांस ४ रा लिषतां जोसी पोषर, जोसी नीलकंठ, जीवा, दयाराम, इणारी हांसरा समसत गरास्यां गाम मांहे धरती षेत चांब १ ओठे वेचणी नही, सरीषे साटे गेणाउ मेलणी सो लोपे, तो श्री दरबारको षुनी, रुप्या ५०१ रो पंचारो षुनी, अमावस मास १२ री तथा ग्यारस मास ४ री पाल्यां जासी, बलदरे खांधे जुड़ा दवे नहीं, गाम जुमाएया सुदी इतरी बात लोपे जणी हे श्री रामचंद्रजी, श्री एकलींगजी, श्री अचलेश्वरजी, श्री लछमीनारायणजी पोंचसी. मतो जोसी पोषर, मतो जोसी नीलकंठ, मतो जोसी जीवा, मतो जोसी दयाराम, हांस ४ रा समसत गरास्या उपलो लष्यो सही, संवत् १८४८ रा असाड शुदी ११ शनौ, तथा गामरा नामरो पैसो आवे सो समसत पंचारो पग दोड करे जणी हे पंच भरा (यो) दोष नही ॥

४– उदयपुरसे १४ मील उत्तरको श्रीएकलिंगजीकी पुरीमें सुरे.

श्रीगणेशप्रसादातु. श्रीएकलिङ्गप्रसादातु.

स्वस्तिश्रीउदयपुरसुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंहजी आदेशातु गाम (नाग)दारा गरास्या समसत ष्यावत, कचरावत, जगावत, बलावत, लषावत, भोजावत, पालडा रुणा कस्य, अप्र गाम मगरारी धरती काछा गोरमा

गोठलाई – – – चागल तथा वागेलारी रूण, करावाडी, रायणांवाडी, षालसारी कोदमालरो वीडो चढायो सो चोलण करो मती, बामणी धरती टाल दुजा षालसा री धरती काछोरा देलवाडे तथा रामे पटेल जाने भोग हासल देता था जणी प्रमाणे परो देवांगा, सो उत्थपेगा नही, आ धरती उथापेगा जीने श्री एकलींगजी पूगेगा, आ धरती संवत् १८४८ वेशाक विदी १४ श्री एकलींगजी चडाइ, सो लोपासी न्ही, तीरी सुरे रोपी प्रत दुवे कपडदार सहा सतीदास, भट जोतेसर सं० १८५० भादवा शुदी ९ सने.

५– मेवाड़ इलाकेमें मांडलगढ़के तालावकी पालपर गणेशपौलके

बाहिरकी सुरे.

॥ सिध श्री गणेशजी प्रसादातु ॥ श्री एकलिंगजी प्रसादातु ॥ महाराजाधिराज महाराणाजी श्री ५ श्री भीमसिंहजी आदेसात्, प्रत दुवे महता अगरा प्रगणे मांडलगडके हुवाल महता देवीचन्द हंसराज अपरंच ॥ मांडलगडका तलाव जालेसर जीमही जीव जनावर मारे सो दरबाररो तगसीरवार होसी, या सुरे लोपसी जीने श्री एकलिंगजी पूगसी, जनावर मारपासी, तो हिंदु तो गाय पासी, मुसलमान सूर षासी. श्लोका अपदत्तं परदत्तं जेपालंती वसुंधरा जेनरा सुरग जायंती जावचंद्र दिवाकरा १ अपदत्तं परदत्त जेलोपंती० संवत् १८५२ श्रावण शुद १५ सुक्रवासरे श्री रस्तु तलावमायली धरती हाकवा पावे न्ही.

६– मांडलगढ़ क़िलेके ऊपरके दर्वाज़हमें मंदिरके पास वाली सुरे.

सिध श्री दिवाणजी आदेसातु प्रत दुवे महता अगरा अपरंच मांडलगढ सराको दरवाजो श्री माताजी वीसहतीजीरो देवरो सथानक जूनो थो, सो गढ तथा तलेटीरा पंचा भेला होय अर दरवार आए अरज करी सो देवरो मातारो करावणो, जठा सवाय देवरा नवेसर करायर पंचतीरथी पांच मूरत पदरावणी, हर आगे माताजीरी पूजा षाजरू भेसा तथा दारुरी छाकरी पूजा छी, सो सारी माफ कर हर उजली पूजा ठहराई, सो ऊजली पूजा करणी, अठा पाछे आगे देवरे माता वीजासणजीरा देवरामें अठे जीव जंत्र मरवा पावे नही. या थाप ठहराय मुरत श्रीरामचंदरजी, श्री महालषमीजीरी, श्री सदासोजीरी, श्रीगणेसजीरी, श्री हनूमानजीरी मूरत पदराई, हर सुरे रुपाई, सो या थाप जो उथापसी जणी हे श्री एकलिंगजी पूगसी. या पूजा श्री जीरा दुवा थी हीदुने ता हीदुरा

सम अपदत्तं परदत्तं जेपालंती वसुंधरा ते नरा सरग जायंती जबलग चंद्र दिवाकरा अपदत्तं परदत्तं येलोपंती वसुंधरा ते नरा नरकं यांती यावत् चन्द्र दिवाकरा संवत् १८५३ सषणक १२८ मतला.

७- उदयपुरसे १४ मील उत्तर तरफ़ एकलिंगजीकी पुरीमें नन्दकेश्वरकी पावटीके पास सुरे.

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्री एकलिंगजी प्रसादातु ॥ ॥ श्री गणेजी प्रसादातु ॥

जो लोपे जीने श्रीजी पुगे

सही.

स्वस्तिश्रीमहाराजाधिराज महाराणाश्रीभीमसिंहजी आदेशातु, श्री जी हे गाम सरे प्रगणे मगरारे वास लउवांरो तथा भीलारो नीम सीम सुदी श्री हजूर रा दुसमनांरे डीले षेद हुइ तीरो अंगोल्यो कीदो संवत् १८५७ रा मगसर सुदी ७ रे दन, सो यो गाम भेट कीदो बोलमां मांहे उदक आघाट श्री शिवार्पण करे चडायो, लागत विलगत सरव सुदी सो कणी वातरी चोलण वेगा न्ही, चोलण करेगा जणीहे श्रीजी पोछेगा, अठा पाछे अणी गामरी चोलण करेगा तथा लोपेगा जणीहे श्रीएकलिंगजी पोछेगा, तथा गद्देगाल हे, संवत् १८५८ रा वर्षे चेत वीद ५ भोमे ताबापत्र भेट कीदो. स्वदत्तं परदत्तं वाये हरंति वसुंधरां षष्टिवर्ष सहस्राणि विष्टायां जायते क्रमी १ परवानगी सहा किशोरदास वरदभाणदेपरा, पडियार मयाराम, भट नागेसर या सुरे संवत् १८५९ रा वर्षे अशाढ शुदी १५ सोमे रोपी.

८- उदयपुरसे २ मीलके फ़ासिलेपर गांव सीसारमामें वैद्यनाथ महादेवके मन्दिरकी सुरे.

॥ श्री गणेशायनम : श्री एकलिंगजी श्री रामोजयति श्री वैद्यनाथजी महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंहजी आदेशातु दुअे श्री मुख प्रतदुवे मेता मालदास, भट्ट देवेशर अप्रच ॥ गाम सीसारमो प्रगणे गिरवारे आघाट बामणारे तींरा

भाग ४ च्यारां रा गोत ४ च्यार रा जुदा जुदा तीरा समसत गरास्या जात नागदा कस्य अप्रच ॥ गाम सीसारमो आगे राजा श्री रामचंद्रजी दत्त तींकरे, घणा वरषरी वात करे कठेक ठिकाणो रहे गयो हुवेगा, जठा पछे संवत् १८४० आसोज शुदी १४ गुरे रा दसवासरो करे ताबापत्र करे देवाणो सो सावत, ने मारा वंशरो वेन थारा वंशरा थी थुवादार, कामदार, सकदार, वतागरावे चोलण करेगा नहीं, थारी सीम, मेरमुरजाद आगे राजा श्री रामचंद्रजीरा वारा थी चली आवे हे, सो सावत हे, जुनी मिटेगा न्ही, नवी वेगा न्ही. या सुरे भाद्रवा शुदी १५ सोमे चंद्र परवमे उदक आघाट करे रोपी श्रावण शुद ९ सोमे श्री जी ब्राह्मण भोजन करावेन सुरे रोपावारो हुवो दीधो, श्री जी वैजनाथजी दरशण करवा पदारथा जदी हुकम हुवो. गोत ४ च्यार तीरी विगत व्यास डुगो गोत्र गोतम, जोसी वजेराम गोत्र कपिल, जोसी चतरा गोत्र गोत कौस, मेता पेमा गोत वसिष्ट, गोत ४ च्याररा ब्राह्मणा वे आसरी वचन दीधो जदी सुरे रोपवारो हुकम हुवो- संवत् १८४१ भादवा शुदी १५ सोमे चंद्र ग्रहण मांहे रोपी श्री रस्तु स्ही.

९- ऊपर लिखी हुई सुरेके पास की दूसरी सुरे.

॥ श्री रामचंद्रजी प्रसादात् ॥ जो लोपे जीनेई पूगेगा स्ही.

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंहजी आदेशातु प्रत दुवे सहा वीरभाण, भट अमरेसर अपरंच ॥ गाम सीसारामे प्रगणे गिरवारे ब्राह्मण ४ च्यार गोतरा जुदा जुदा वीठण गोत वसिष्ट, मेता ठाकुरसी गोत कपिल, जोसी बालाउ गोतरा ब्राह्मण, व्यास नंदा गोत कउछ जोसीजी थारा गोतरा समसत ब्राह्मणा जात नागदा अप्रच फोज फांटारो दंगो आवे पडे जीशु डरोगा न्ही नवाब जमसेदखां गाम सीसारमो सु - - दोसो आगे हुवो, सो गोहवाई वे अठा पाछेकी वफथीदा देणा वेगा न्ही, राजा श्री रामचंद्रजीरा दिया दत्त हे, सो आगला मारा वंशरा पालता आवा जणी प्रमाणे श्री जीरा वंशरो पाल्यां जासी, थारा वंशरा बरामणा थी कामदार, थुवादार, गरवारो सकदार, कोद दंगो ठंगो भूलेने करेगा जीने श्री जीरा राजा श्री रामचंद्रजी, श्री वेजनाथजी पूगसी; हुलकर सुदां देसी प्रदेसीरा असवार पालो, फोज, महला मालक वे सो ज्यो अणी गामरा बरमाणारी चोलण करेगा जणी हैं हिंदूने गाया मुसलमानने सूर मुरदारी सोगन है, याथी कोद करेगा जीने श्री जी पूगसी. अणी सुरे रोपावारो हुकम मोती पासवान संवत् १८७२ फागण वीदी १४ सोमेरे दिन शिव रात्री उजमी जदी

मोती पासवानरे घरे पदास्या सो फागण वीद ऽऽ अमावस बुधरे दिन महावर देपातजीरे घरे होकम दीधो वीराजा होकम दीधो.

१०— उदयपुरसे पश्चिम तरफ़ दो मीलके फ़ासिलेपर सीसारमा गांवके क़रीब सीता माताकी प्रशस्ति.

श्रीगणेशायनमः॥ को यज्ञाधिपतिः किपातिकरण ग्रह्णाति किं पार्थिवो लोकान् काप्सरसश्च किं तु जगति काभिर्हरिः क्रीडते ॥ कः सारोस्ति रणे परं गुणकरं मार्गे च किं किं तयो मत्प्रश्नोत्तरपूर्ववर्णनिचयः श्री भीमसिंहास्तु ते ॥ १ ॥ भीमसिंहस्य नृपतेः पुत्रः श्चैव धनुर्द्धरः॥ युवा युवानसिंहस्तु संग्रामे त्रासयन् रिपून् ॥ २ ॥ श्रीमत्पुण्यपवित्रमूर्ति रनघो राज्ञां सपुज्यो महान् । द्वैताद्वैतविवेकशांतनिपुणः कर्मैकनिष्ठः श्रुतिः ॥ ज्ञानं लेजनमंदिरैकधिषणा चित्तैकहीरः स्तुतः सीतास्थानककेसरी विजयते मुद्रैकदर्शः कपिः ॥ ३ ॥ शीश्यार्मा संज्ञके ग्रामे भूमिं दत्वा द्विजान् परान् ॥ सीताप्रासादमकरोन्मदास्यांजनिसुनुना ॥ ४ ॥ वापीमनोरमांपुण्यां मछनक्रांकगामिनी ॥ शरयुसहितां तन्यां तडागांतरभूमिकां ॥ ५ ॥ केतकीपुष्पपुन्नागभ्रमरांकितशोभितां ॥ तत्रस्थले वाटिकां च मार्गे सीमाविभागतः ॥ ६ ॥ मेषरासभकेर्मत्ते रासनैशोभितः स्थलः स्यषिभिः सांबजुष्टं च मीनकेरिवापरं ॥ ७ ॥ तदूपरात्परध्वंशाद्भवकं सून्वकरथं कृत्वा गताजले वैदेहीमनसा तन्यो वालिकी रचयन् सुतः ॥ ८ ॥ जनकस्याग्निहोत्रस्ये जानकीप्रभवाहलात् सीमत् करगारांमे गताभूम्यां नृवाक्यत ॥ ९ ॥ अयोगोलकरेतसा दत्तरामेण धीमता तत्रां तर्गतिमापन्ना सीता साक्षात् सती परा ॥ १० ॥ सीतात्रिवर्णी सितश्यामरक्तां त्रिलोचनांचक्रगदाब्जशंखां यज्ञस्थितां ब्रह्ममहेन्द्रपूज्यां लभेत मुक्ति स्मृतिस्त्वबाला ॥ ११ ॥ रत्नैरलंकृताजन्हो: पुत्री भागीरथीत्पुनः पूर्वेषां पावनकरी गंगा भूयात् शिवे शिवा ॥ १२ ॥ चारणी विकली गोत्रा गंगा नाम्नीति विश्रुता ॥ कर्णपुत्रं प्रसूता सा तस्य रंता च पत्निका ॥ १३ ॥ श्रीमत् हनूमानदास जिता प्रासादः श्रीमति सीतायां कृतचारणी गंगा तस्य पुत्रपत्नी रता नाम्नी परिरहिता तया च प्रसादार्थे द्रव्यं व्यापारितं तत्र जीर्णे प्रासादं भंजनं तत्सदृशं तस्मिन्नेव कृतं स्थले कृतं सीतायाः तत्र संस्कृतं रचयत् सुबुद्धिभिर्ज्ञातव्यश्च ज्योतिर्वित्कृपानाथेन कृतेयं प्रशस्तिश्चेयं गोलवालज्ञातिदेवकृष्णेन प्रतिष्ठा कृता भटमेदपाटकस्तु नातिकृपानाथस्तु गजधरदेवकृष्णेन प्रासादं कृतश्च धनेर्के नवचंद्रेयुक्तशकेत्युतरगोलके त्वयनोत्तरगे त्वर्तौ ग्रीष्मे त्वाषाढे

शुक्लपक्षके ॥ १४ ॥ रामाब्धिक्रतियुकदंते स - विक्रमे स्तथा नवमी सुरपुज्येच प्रासाद प्रतिनिर्मितं श्री रस्तु शुभं भवतु नित्यं नागदा बडे गछ गोतम, व्यास दीपो गोत्र कौछ, जोसी पीथो गोत्र कपिल, जोसी हीरो गोत्र वशिष्ट, मेतो ठाकुरसी गोत्र च्यारराा ब्राह्मणाहे गोत्र चंदण नरो ब्राह्मण भट जसु बाबोजी श्री हनुमानदासजीरा कयाथी तथा गाम सीसारमारा कयाथी टेलबंदगी करी हे संवत् १८८१ शाक सतरेसे छयालीस १७४६ प्रवर्त्तमाने आशाढ शुक्ल पक्षे ९ गुरुवासरे बाबाजी श्री हनुमानदासजी देवरो करायो कल्याण मस्तु.

(यह प्रशस्ति अशुद्ध है, जिस तरह पत्थरमें पढ़ी गई उसी तरह छपवाई गई.)

११- उदयपुरमें भीमपद्मेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ देयं किंचनदेयमित्यविदुषां कोयं विकल्पभ्रमः केवल्याप्तपुमर्थसत्सुखनिधेर्नेत्थंविचारोस्त्यतः वासोलंकृतिमाल्यलेपककृतेवैराग्यमुद्बोधयन् कृत्यस्थ्यर्कजपुष्पभस्मभिरयं देवोऽभिदद्याच्छिवं ॥ १ ॥ नमामि पदपंकजं जनिभवोद्भयत्रासकं सुखैकनिलयं विदां सरसिजासने धिष्ठितं ॥ नखेंदुभवकौमुदीबुधचकोरसंतोषदं सुरासुरनुतं मुदा प्रथममेव सारस्वतं ॥ २ ॥ निर्माता खिलसंपदां सुरगणाधीशार्चितांघ्रिद्वयः सत्सेवाजनितैकनिर्मलधियां सौख्यार्थसच्छेवधिः॥ शीशोदान्वयभीमभूपसकलाभिष्टप्रदः सांबिको जीयात्सर्वसुखैकभूः प्रतिदिनं श्रीभीमपद्मेश्वरः ॥ ३ ॥ शर्व्वप्लुष्टो मनसिजोऽनंगतां प्राप यः पुरा ॥ बाप्पान्वये तत्कृपया भूपोभूत्सांग एषकिं ॥ ४ ॥ सांगोराडिवराहिमंबुजफरं म्हेमंदसाहं च सः जिग्ये चैव बबंध दिल्यहमदावादाद्यमांडूधवान् ॥ अश्वाः पावकलक्षका द्विगुणिताः पद्माः सहस्त्रं गजाः सात्पाशीतिसहस्त्रमुष्ठनिचया यस्य प्रयाणेभवन् ॥ ५ ॥ चेदीगुर्जरमालवाब्धिजरणस्थंभोरुसिंधूद्भजः मांडूदुर्गसकान्यकुब्जकमरूग्वालेरजालोरुपः ॥ यो दिल्लीपतिबब्बरं किल हमाउन्नैवतत्य पुनः खंधारेश सिकंदरं यमसखं चक्रेतिवीराग्रणीः ॥ ६ ॥ तस्मादभूदुदयसिंह इति क्षितीशोदोकार्यथोदयपुरं प्रवरं हि येन ॥ यत्र स्थिताप्रकृतिवत्प्रकृतिः प्रसक्तान् रूपैर्विमोहयति नामगुणैश्च पुंसः ॥ ७ ॥ तत्तनूजनिरयं प्रतापको यत्प्रतापमिहिरांशुजनिर्यः॥ वैरिवर्गवनितास्त्रपयोदः स्थापयत्यतितरां निजकीर्तिं ॥ ८ ॥ तस्मादभूदमरसिंह उदारकीर्ति र्योरिव्रजार्णवलये किमु कुम्भयोनिः ॥ यत्कीर्तिभिर्धवलिताखिलभूतधात्रीत्येवंविधो ह्यमरता किमु नो व्यदर्शि ॥ ९ ॥ कर्णः किं पुनरागाद्दानार्णायैव सिंहइति किं तत् ॥ भेत्तुं ह्यरिगजमवितुं युष्मानाकर्ण्यमुज्जाता ॥ १० ॥ तस्यात्मजो जगत्सिंहः शत्रुवर्गेभनाशकः ॥ अकारिभुवनेशस्य जगन्नाथ-

स्य मन्दिरं ॥ ११ ॥ तत्पुत्रोभूद्राजसिंहः पुरारेर्भक्त्या लेभे राजराजत्वमेषः ॥ अब्धेस्तुल्यं सागरं कृतवान्यो माधुर्याबुं राजपूर्वं समुद्रं ॥ १२ ॥ तत्पुत्रो जयसिंहो जयैकभूररिकुलव्रजध्वंसी ॥ यो निर्ममे सुधाढ्यं यशः समुद्रं समुद्रमिव ॥ १३ ॥ तस्यांगजन्मामरसिंहवीरो वीरैकसूरस्मिमदं विधत्त ॥ यस्य प्रसूरासुरितीत्यनिद्रा देवाः समासे परिसंदिहाना : ॥ १४ ॥ तस्मात्संग्रामसिंहोभूत् म्लेच्छेभमद नाशकः ॥ ग्रामे ग्रामे यशो यस्य गीयते निभृतं नरैः ॥ १५ ॥ ततो भवजत्गसिंहो जगन्नाथालयं पुनः ॥ जीर्णोद्धारात्कृतं पित्रा दिद्रक्षुः स्वकृतं पुरा ॥ १६ ॥ तस्मात्प्रतापसिंहो ह्यरिसिंहो द्वौ सुतौ तयोर्मध्ये ज्येष्ठे राज्यं ॥ भुक्त्वा स्वर्याते राजसिंहोभूत् ॥ १७ ॥ नयेन नयतः क्षोणीं राजसिंहस्य भूपतेः ॥ भ्रात्री यस्याप्यपुत्रस्याथारिसिंहोग्रहीत्पदं ॥ १८ ॥ तस्यपत्यमणित्रयं समभवद्धम्मीरवीरोग्रजो मध्या चन्द्रकुमारिका तदनुजः श्रीभीमसिंहो जयी ॥ गोगुंधाधिपराजकानजिगिरौ सत्सारशुद्धाकर सद्धोरादिकुमारिकोदरपुटानिर्दुष्टमेतत् स्फुटं ॥ १९ ॥ आपंचशरदं-क्षोणीं भुक्त्वा भूपे दिवं गते ॥ धीरहम्मीरवीरेवो भीमसिंहोभजन्नृपः ॥ २० ॥ पायं पायं मुरारेश्चरणकमलतः स्राविय‌न्मेघपुष्पं स्मारं स्मारं पुरारेश्चरितमतितरां तध्ववंशप्रतिष्ठः ॥ ध्यायं ध्यायं भवानीस्तवनमघहरं निर्मलैकाग्रचेता ज्ञायं ज्ञायं सुतत्वं ह्यमरतिभुवने भीमसिंहो नरेंद्रः ॥ २१ ॥ तस्यात्मजोप्यस्ति युवानसिंहो वाङ्माधुरीनिर्जितसत्सुधौघः ॥ कामः किमु स्कंद उदारतेजाः सौंदर्यजैतेंद्रिय वृत्तिधर्मात् ॥ २२ ॥ अथ राज्ञीवंशः ॥ रायसिंह इति सूरसिंह कृत्कर्णसिंह इति तत्सुतोभवत् ॥ तत्तनूजनिरनोयसिंहको ऽ एंदसिंह इति तत्तनूद्भवः ॥ २३ ॥ तस्माच्छ्रीगजसिंहभूपतिमहाराजान्वयायो ह्यभूत्तस्मात्सूरतसिंह इंद्रविभवो राठोड वंशैकभूः तद्भ्राता सुरतानसिंह इति यः क्षात्रैकनिष्ठोभव त्तज्जा पद्मकुमारिकेयमतुला श्रीभीमसिंहप्रिया ॥ २४ ॥ पद्मावतीव सकलाश्रितपद्मसद्मा पद्मासनातिरुचिभीरचितास्वपद्मा ॥ ईशांघ्रिपद्मकृतशोभितहृत्सुपद्मा तेनेयमस्ति किल पद्मकुमार्यतुल्या ॥ २५ ॥ धर्मस्य ध्वजिनीव दुःखनिवहत्राणाय दुष्टद्विषामर्थस्यप्रतिमेव कल्पलतिका पूज्या दरिद्रद्रुहां ॥ कामस्य प्रियवादिनीव सुखदा स्मर्तुः स्वभर्तुः सदा मोक्षे सत्कृतधीरियं मतिमतीकृतत्रिनेत्रालयात् ॥ २६ ॥ किं पद्मा किमु पार्वती किमदितिर्मूर्तिर्हि सारस्वती किं वा वाडवभूषणस्य च मुनेरत्रेः कलत्रं नु किं ॥ किं पद्मात्मजमीनकेतनवधूरित्युत्सवोत्प्रेक्षिता जीयात्पद्मकुमारिकेयमतुला श्रीभीमसिंहालये ॥ २७ ॥ महाराणो भीमः शयनमधिरूढः स्वनिजया रमण्या विज्ञप्तस्त्रिपुरहरसंस्थापनकृते ततो सारं ज्ञात्वा जगदिदमरातिव्रजनुतो नृपः शर्वे-

शानावसथककृते चित्तमकरोत् ॥ २८ ॥ श्रवणनाथमहापुरुषार्पिते नृपतिरुत्सुकचित्तउमाधवे ॥ शुभशिवालयनिर्मितये स्वयं स्वमहिषीमुरुकीर्तिमथाकरोत् ॥ २९ ॥ शिवस्य जगतीशिवस्य शुभकृन्मनोभिष्टदं भवस्य जगदुद्भवस्य सकलाभितापापहं ॥ अचीकरदियं प्रियं नृपतिभीमसिंहाज्ञया शुभालयमिहालयं ह्यमरकुंडखंडाश्रये ॥ ३० ॥ प्रासादाः संति पृथ्व्यां कति कति सुकृतिप्राणिनिर्माप्यमाणाः किंस्वित्किंचित्खिलांगानसकमलसरः पूर्णसोपानमार्गाः सर्वत्वानंद एष क्व हिमगिरिरिव स्वच्छसन्मानसार्द्रो दंतैः किं स्फाटिकैः किं किमपि च रजतैरेव निर्मापितांगः ॥ ३१ ॥ वर्षे वेदेभनागौषधिपतिसुयुते श्रावणश्वेतपक्षे सत्यां भूतेशतिथ्यां तुहिनकरयुते वासरे वैश्वभे च ॥ आयुर्योगे सुलग्ने विबुधगणयुतो भीमभूजानिरेष श्रीशंभोः स्थापनं यो कृतयुवतियुता मन्दिरेस्मिन्महाग्र्यैः ॥ ३२ ॥ तुलामारूढा सा क्षितिपतिमता पट्टमहिषी सुवर्णैरूप्यैर्वानिखिलजनताश्चर्यजनिकां ततो द्रव्यै भव्यैरकृतसुकृतान्नैः पुरुरसैः सुतृप्तंतद्दत्तं द्विजचतुरशीतिव्रजमिदं ॥ ३३ ॥

अथ श्री पूर्वपट्टिकाशेषमापूर्यते ॥ प्रासादंह्यमुमेकलिंगचरणांभोजार्चनास्वादिहत्पारिव्राजकभूषणायविजयानंदायराजार्प्पयत् ॥ सोपिस्वच्छहृदामदं भविमदं सद्ब्रह्मचर्यव्रतं सोमेशस्य गणेशमर्चनविधौ प्रायुंक्त वेधाइव ॥ ३३ ॥ भवनिगमविधोक्तस्वर्चनाराधितेशः स्वहितकृदनुनीतप्रेमवल्ल्यौषधीशः निखिलजनमनोज्ञोद्वेवयः कार्तिकेय क्षितिपतिबहुमान्यो ब्रह्मचारी गणेशः ॥ ३४ ॥ भोपासागरबद्धनित्यवसते श्रीऔआणवंशस्थितेः पौत्री देवसुसिंहबाहुजजनेः पुत्री प्रतापस्य सा ॥ दौहित्री च जगद्धरेर्नरपतेः प्रख्यातकीर्तेरियं स्वस्रीयैजनवाइरस्त्यधिपतेः श्रीभीमसिंहस्य या ॥ ३५ ॥ राज्ञा एजनवाइरेव हि पुरः कर्त्री च हर्त्री पुनः प्रासादोद्भवभाधनाय सुकृपापात्री प्रदात्री मतेः ॥ नेत्री सर्वजनस्य शर्मनिवहं भव्यं प्रपत्री सदा तद्वारेवसुपर्वसर्वमभवद्धर्मार्थकार्यं प्रभोः ॥ ३६ ॥ दिग्गजाइव गजागजांगजाः सप्तसप्ततितताश्च सप्तयः ॥ वस्त्रभूषणचयानगोत्र्छ्रया स्वर्णरूप्यबहुमुद्रिकालयः ॥ ३७ ॥ चारणद्विजसुशिल्पिचारकादिभ्यइभ्यसहितान्नृपेण च ॥ तत्स्त्रिया वितरिता यथाक्रमं तन्महोत्सवविधौ विधानतः ॥ ३८ ॥ ॥ युग्मं ॥ यो विष्णुदत्तोद्धुतचित्तवृत्तः स्वबुद्धिकौशल्यजितप्रमत्तः ॥ अत्राधिकारेकृत आत्तसत्त्वः परोपकारव्रतसंप्रवृत्तः ॥ ३९ ॥ कोष्टागारी मोतिरामो राज्ञा सुसचिवः परः ॥ सर्वकामकरो मान्यो धीमान् सर्वसुखालयः ॥ ४० ॥ भूयांसः क्षितिमंडलेति रचना शीलासुशिल्पीश्वरा स्ते सर्वे तुलनां प्रयांति कतिनो गोवर्द्धनस्याथ किं ॥ मन्येयं कृतिवीक्षणात्सुरपतिर्मोहं परं प्राप्तवान् स्वीयं शिल्पिवरं हसत्यनुदिनं लज्जाविनम्रानन:

॥ ४१ ॥ श्रीशंभुर्जनकशिवार्चजननी ताभ्यांसुतानांत्रयी वेदानामिवमूर्तितामधिगता जातावदातार्जितैः ॥ ज्यायान्तेष्वथवैद्यनाथउरुधिः प्राप्तः कथाभट्टतां तत्पश्चाद्रूजलालएवशिवलालोस्मात्कनीयानभूत् ॥ ४२ ॥ कृष्णलालरामलालनामभूषितौ षयौ भट्टमेदपाटजातिजातभूसुरान्वयौ ॥ वैद्यनाथतोनुजद्वयीतमूह्यनुक्रम मनूनसत्य सत् प्रशस्तिनिर्मितंवितन्वतु ॥ ४३ ॥ देवकृष्णेनचोत्कीर्णा प्रशस्तिः शिल्पिनामुना ॥ शुभायभवतांभूयात्सर्वेषांसुखमिछतां ॥ ४४ ॥ श्रीरस्तु.

छन्द गीतिका.

लघुवेष रान हमीरके दिवगौन शोक अथाहको ।
जन थाह दैन विराज गद्दिय भीम भंजक आहको ॥
भट कृष्ण वंश कुमार जालम मार रावत लालने ।
युग शक्तवंशरु कृष्णके कुल द्वेष उद्भव ज्वालने ॥ १ ॥
नृप भीमसिंह विवाह ईडर होनको सब हाल व्है ।
फिर सोमचन्द प्रधान जालम झल्ल चुंडन शाल व्है ॥
मरहट्ट थट्ट मिटाय जावद मेदपाट मिलायके ।
बल छायके दल आयके बहु शूर वीरन घायके ॥ २ ॥
फिर भीम अर्जुन सोमचंदहि मार बागिय होनको ।
इतिहास चुंडरु शक्त वंश विरुद्ध जुद्धसु दोनको ॥
मतिमान जालम झल्लके मत देश वेष प्रबन्ध भो ।
फिर व्याह ईडर रान द्वै लखि शैल पत्तन अंधको ॥ ३ ॥
दे दंड वांशवहाल देवलियादितें बहु भेट ले ।
अमरेश राज्यकुमार उद्भव ईश दर्शन भेट ले ॥
मरहट्ट अंबरु लक्ष युद्ध फिरंग टॉमस वीरता ।
फिर नाथ मंदिर लोभतें जशवंत दुष्ट अधीरता ॥ ४ ॥
तिहिं बाद कृष्ण कुमारिका निरदोष जीवन पात भौ ।
सिरदार रावत मार वैर विचार गंधिय घात भौ ॥
करनेल टॉड फिरंग दूत अभूत सजन आयके ।
नृप भीम संधि बनाय द्वंद्व मिटाय मंगल छायके ॥ ५ ॥

अमरेश राज्य कुमार त्यागन देहतें अति शोक व्है ।
वह राज्य भक्त अनन्य टॉड प्रबंध कारक ओक व्है ॥
त्रिक राज पुत्रिय व्याहतें नृप भीम कीरति मन्त भो ।
फिर सृष्टि पालनहार ईश उदार जीवन अंत भो ॥ ६ ॥
इतिहास जैसलमेर संग्रह शेष सज्जन रानको ।
उर सिद्ध शासन पाय श्यामल फतेसिंह दिवानको ॥
यह भीम खंड अखंड पूरन ईश भेट मनायके ।
कविराज इष्ट मनायके फल आज जीवन पायके ॥ ७ ॥

महाराणा भीमसिंह २,

पन्द्रहवां प्रकरण समाप्त.

सोलहवां प्रकरण.

महाराणा जवानसिंह.

महाराणा भीमसिंहका देहान्त होने बाद विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल १५ [हि० १२४३ ता० १४ रमज़ान = ई० १८२८ ता० ३१ मार्च] की शामको महाराणा जवानसिंहका राज्याभिषेक हुआ. यह महाराणा बड़े पिताभक्त थे, इनको अपने पिता के देहान्तका बहुत ही रंज हुआ, और कुल देशके लोगोंपर भी अत्यन्त शोक छागया, क्योंकि वैकुण्ठवासी महाराणा अपनी प्रजापर पिताके समान दृष्टि रखकर उसका पोषण करते थे. जब महाराणा जवानसिंहने इस सदमेसे प्रजाको ज़ियादह रंजीदह देखा, तो उन लोगोंका शोक दूर करने और तसल्ली देनेकी ग़रज़से कहा, कि अगर्चि मैं अपने पिताके शोकमें निमग्न हूं, लेकिन् वह तुम्हारा पालन करनेको मुझे छोड़-गये हैं, इसलिये कुल लोगोंको निश्चिन्त रहना चाहिये. यह सुनकर सब लोगोंके दिलों को तसल्ली हुई, क्योंकि युवराजपनेकी हालतमें इनकी नेक आदतें दीखपड़ने और इसवक् सबको दिलासा देनेसे पूरा विश्वास होगया. इन्होंने गद्दी नशीन होकर अपने पिताके नौकरोंका बड़ा लिहाज़ बरता, जो आदमी जिस उह्दहपर था, उसको उसीपर बहाल रक्खा, कोई तब्दीली नहीं की; मेवाड़के मुल्कमें दिन ब दिन तरक़ीकी सूरत नज़र आने लगी, मुम्किन् था, कि अगर महाराणाकी निय्यतके मुवाफ़िक़ रिया-सतके कुल छोटे बड़े अह्लकार भी नेक निय्यतीको काममें लाते और अपने मत्लबकी तरफ़

रुजू न होते, तो रियासतकी तंगी और रिआयाकी मुफ़्लिसी एक दम दूर होजाती. महाराणाका यह मन्शा था, कि रियासतके जमा ख़र्च वगैरह कुल काम हमारे सामने हुआ करें; लेकिन् जवान उम्र होनेके कारण कुछ तो ऐश व इश्रतके कामोंसे खुद महाराणाकी कम फुर्सती, और ख़ासकर जमा ख़र्च न दिखलानेके मत्लबसे अह्लकारोंकी पेचीदगियोंने इस मन्शाको सिद्ध न होने दिया. जब जमा ख़र्चके लिये अह्लकारोंसे सवाल किया जाता, तो वे लोग यही जवाब देते, कि हुज़ूर तो बादशाह हैं, हुज़ूरके हुक्मकी तामील करनेके लिये हम लोग मौजूद हैं, और इसी लिये हम पैदा हुए हैं, कि जमा ख़र्च वगैरह कुल कामोंमें तक्लीफ़ें उठाकर हुज़ूरके हुक्मकी तामील करें. परन्तु तामील ऐसी होती थी, कि जब वैकुण्ठवासी महाराणाका इन्तिकाल हुआ, उस वक्त अह्लकारोंने वलीअह्दसे कहा, कि इस वक्त दस हज़ार रुपयोंकी इस ख़र्चके लिये ज़रूरत है, और साहूकार लोग बगैर तसल्लीके नहीं देते, इसलिये हुक्म हो, वैसा किया जावे. तब वलीअह्द, याने महाराणा जवानसिंहने कमाल रंजकी हालतमें गुस्सह होकर कहा, कि इस वक्त कर्ज़हकी ज़मानतके लिये बेड़ियां मौजूद हैं. इस कलामके सुननेसे वे लोग डरकर चुप हो रहे, और उस कामको पूरा किया, लेकिन् गवर्मेंट अंग्रेज़ीका ख़िराज हरसाल बाक़ी रहने लगा, और पोलिटिकल एजेंट ताकीद करने लगे. जब ख़िराजकी बाबत गवर्मेंटकी तरफ़से ताकीद आती, तो महाराणा प्रधानको हुक्म देते, जिसपर साफ़ यही जवाब मिलता, कि ख़र्च ज़ियादह और जमा कम है; परन्तु जमा ख़र्चका मुफ़स्सल आंक नहीं बतलाते. जिस साल जमा की बिह्बूदी होती, तो बचतके रुपयोंका पता नहीं लगता, और कमीके वक्त महाराणा तंग कियेजाते थे. परन्तु इसमें शक नहीं, कि उन दिनोंके अह्लकार दंड देकर अपनी जान बचानेके लिये भी दौलत एकट्ठी करते थे, क्योंकि उनको ईमान्दारीके साथ काम करनेपर भी मौकूफ़ीसे बचकर अपने उह्दहपर एक अरसेतक क़ाइम रहनेकी उम्मेद न थी, जिसका कारण यह था, कि महाराणाके पासबान और मरज़ीदां लोगोंके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ कुछ भी कार्रवाई होती, तो उसी वक्त अह्ल-कारोंपर आफ़त सवार होजाती थी; याने पासबान लोगोंमेंसे, जब एक आदमी कोई बात महाराणाके सामने पेश करता, तो दूसरा उसको मज्बूत करके, तीसरा गवाही दे देता. महाराणा भी मनुष्य शरीर थे, धोखेमें आकर ज़रूर उस बातपर यक़ीन करलेते. अगर्चि इन बातोंसे रियासती कामोंमें बहुत कुछ हर्ज होसक्ता था, लेकिन् सर्दार और रिआया सब महाराणासे खुश होनेके सबब उनके अह्द हुकूमतमें किसी तरहका खलल न आया, बल्कि मौकेपर हुक्मकी तामील भी होती रही.

विक्रमी १८८५ फाल्गुन शुक्ल १० [हि० १२४४ ता० ९ रमज़ान = ई० १८२९ ता० १५ मार्च] को गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से कप्तान कॉफ़ साहिब टीकेका दस्तूर लेकर आये, जो एक बड़ा दर्बार किया जाकर महाराणाके सामने पेश हुआ, उसमें हाथी १, घोड़ा २, ढाल १. तलवार १, सरोपाव १, मोतियोंकी माला १, और सर्पेच १ था. महाराणाने उक्त कप्तानको फ़त्हदौलत नामका एक हाथी, तुरंगराज घोड़ा, कंठी, सर्पेच व सरोपाव और उनके लड़केको हाथोंकी सोनेकी पहुंचियां व सरोपाव, और असिस्टेएट साहिबको सर्पेच व मोतियोंकी माला दी. इसी विक्रमीकी चैत्र कृष्ण ६ [हि० ता० २१ रमज़ान = ई० ता० २७ मार्च] को कॉफ़ साहिबने रेज़िडेन्सीकी कोठीपर महाराणाको मिह्मान करके दावत दी, और हाथी १, घोड़ा १, सर्पेच १, मोतियोंकी माला १, और सरोपाव २ वगैरह सामान नज़के तौरपर पेश किया. गद्दी नशीनीका ख़िल्अ़त आनेपर महाराणाकी तरफ़से लाठ साहिबके नाम, जो ख़रीतह भेजागया, और उसके जवाबमें लॉर्ड बेंटिंक साहिबने ख़रीतह भेजा, उसका तर्जमह नीचे लिखा जाता हैः-

लॉर्ड विलिअम बेंटिंक साहिबके फ़ार्सी
ख़रीतह (१) का तर्जमह.

महाराणा साहिब बड़े दरजेके मिहर्बान दोस्त, मिहर्बानी और इह्सानके ख़ज़ानह सलामत रहो.

बुज़ुर्ग मुलाक़ातकी ख़्वाहिशके बाद, जिसकी कैफ़ियत क़लम और ज़बान से अदा नहीं होसक्ती, आपके रौशन दिलपर ज़ाहिर किया जाता है, कि आप का मिहर्बानीका ख़त वुसूल हुआ, जिसमें आपने उस ख़िल्अ़तके मिलनेसे, जो गद्दी-

---

(۱) نقل خریطهٔ لارڈ ولیم بینٹنک گورنر جنرل هند بنام مهارانا جوان سنگه جی *

مهارانا صاحب عالیشان مشفق مهربان مصدر لطف و احسان سلامت *

بعد از تبلیغ مراسم آرزوی گرامی مواصلت سراسر عاطفت که گنجایش گیر تحریر خامهٔ دو زبان و تقریر بریر نامهٔ وسیع البیان نیست، مشهود ضمیر منیر گردانیده می آید * مهربانی نامه شفقت ختامه متضمن دستداده مسرت وابتهاج فراوان بخاطر آنمهربان از وصول خلعتی که بتقریب مسندنشینی آن عالیشان برراج اودےپور از طرف این سرکار دولتمدار معرفت

नशीनीके वक्त उस आलीशान दोस्तके लिये इस बड़ी सर्कार (अंग्रेज़ी) की तरफ़से बहादुर ज़ात कप्तान टॉमस अलेग्ज़ैण्डर कॉफ़ साहिबकी मारिफ़त भेजागया था, ख़ुशी ज़ाहिर की, और यह बात लिखी है, कि आप पुरानी दोस्तीके तरीक़ेपर सफ़ाई और मुहब्बतके दस्तूरोंकी हिफ़ाज़तमें ज़ियादहसे ज़ियादह मस्रूफ़ रहेंगे; और दूसरी कई बातें दोस्ती और सादगीकी, जो कप्तान साहिबके साथ बरती गई, बे हद ख़ुशीका सबब हुईं. ख़िल्अ़तके मिलनेसे ख़ुशी ज़ाहिर करना, और वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके दोस्ती व सच्चाईके तरीक़ेका बयान करना, और पुरानी दोस्ती व वफ़ादारीके तरीक़ेको जारी रखना, उन दोस्तकी साफ़दिलीका पूरा सुबूत है, जो इस ख़ालिस दोस्तको भी ख़ुशी बख़्शने वाला हुआ. बुज़ुर्ग ख़ुदा उस बड़े दरजेके दोस्तको एकता और मुहब्बतके तरीक़ेपर क़ाइम रक्खे. इस हालतमें इस मुन्सिफ़ सर्कारके क़ाइम मक़ाम, याने अह्लकार सच्चाईका तरीक़ह, जो कैलासवासी महाराणा साहिबके साथ बरता जाता था, उन दोस्तके साथ भी बग़ैर किसी फ़र्क़के जारी रक्खेंगे.

ऐ आलीशान दोस्त, बहुतसा रंज और अफ़सोस महाराणा साहिबके इन्तिक़ालके बाद उनकी नेकियां और ख़ूबियां याद करनेसे इस दोस्तकी ख़ातिरमें जम गया था, लेकिन अब इस ख़ुशख़बरीसे, कि वह दोस्त राज्य उदयपुरकी गद्दीपर बैठे हैं,

---

شجاعت وتهور دستگاه کپتان طامس الکسندر کاپ صاحب بهادر مرسل شده بود واینمعنی که آن مشفق بپاس سررشتهٔ دوستی واتحاد مستوثقهٔ قدیمه فیمابین در حفظ لوازم مودت وصفوت جانبین بیش ازپیش مائل ومصروف خواهند بود با دیگر مراتب الفت ویکرنگی وخورمی وخورسندی از خوبی وپاسداریهای کپتان صاحب موصوف وصول مباهجت شمول گردیده مسرور موفور ومنشرح نامحصور ساخت — ارقام کلمات بهجت وانبساط بوصول خلعت مزبور واظهار مدارج موالفت ومصادقت مهارانا صاحب بیکنٹهه باشی ملحوظ ومرعی داشتن پاس روابط خلت ووفاق دیرینه بیشتر ازپیشتر از آثار سنیه مخالصت ومصافات باطنی آن مصدر لطف واحسان متصور شده ذریعهٔ کمال بهجت وانتعاش خاطر اخلاص مظاهر گشت * ایزد تعالی شانهٔ آن عالیشان را باینهمه حفظ شرایط یکجهتی وتوداد سلامت با جمعیت داراد — همانا اندرینصورت اعالی نامدار این سرکار معدلت دثار لوازم صداقت وایتلاف نهجیکه با مهارانا صاحب کیلاس باشی مرعی ومسلوک داشتند بلاتفاوت نسبت بآنمشفق ملحوظ ومطمح نظر خواهند داشت * عالیشانا مرقد رتالم وتحسر وتشتت وتکدر که بعد انتقال مهارانا صاحب بیاد محاسن وخوبیهای آن رهگرای عالم بقا بخاطر اخلاص مآثر جاگرفته بود بمثابه آن بل فزونتر ازان از ادراک مژدهٔ بهجت آمادهٔ تمکن میمنت تضمن آن مهربان بر وسادهٔ راج اودیپور شادمانی ونشاط وخورمی وانبساط بدل

बहुतसी खुशी मेरे दिलको हासिल हुई; .इज़्ज़तदार और बुज़ुर्ग खुदा उस आलीशान दोस्तके मुबारक जुलूसको उस रियासत, उन दोस्त और खैरख्वाहों और दोस्तोंपर नेक और मुबारक करे. कप्तान कॉफ़ साहिबकी ख़ातिरदारी और दोस्ती वगैरहकी रस्मोंके मज्बूत क़ाइम रखनेकी बाबत, जो लिखा था, वह इस दोस्तके मन्शाके मुवाफ़िक़ था, इसलिये बहुतही खुशीका सबब हुआ. उम्मेद है, कि इस दोस्तको हमेशह अपनी खैरियतका ख़्वाहिशमन्द जानकर मिहर्बानीके ख़तोंसे खुश करते रहें- ज़ियादह क्या लिखा जावे. (दस्तख़त)- विलिअम बेंटिंक.

(कागज़की पुश्तपर)
(दस्तख़त)- स्टर्लिंग,
सेक्रेटरी सर्कार अंग्रेज़ी.

इन दिनों प्रधानेका काम महता रामसिंह करता था; इस प्रधानने वैकुण्ठ-वासी महाराणा (भीमसिंह) के समयमें प्रधानेका काम मिलनेके वक्त एक मुचल्का

دوستی منزل رونمود — حق عزوجل جلوس فرخندهٔ مانوس آن عالیشان برراج مزبور با تمصدر لطف و
احسان و جمیع اصدقا و احبا مبارک و مهنا گرداناد و آنچه از معروفیت و دلدهی کپتان صاحب
معزی الیه در ترقی و استحکام مبانی مودت و استیناس فیمابین و خوبیهای ایشان بخامهٔ
یکجهتی نگارد را ورده بودند چون مبنی بر ونق خواهش و حسب دلخواه دوستی دوست است،
لهذا مسرت بر مسرت افزود — ترصد که مخلص را همواره خواهان مژدهٔ خیریتهای مزاج موالفت
امتزاج خود انگاشته بارقام مهربانی نامجات توجه علامات مسرور و محبور مینموده باشند-
زیاده چه برطرازد * *(sd.) W. Bentink.*

अठारह शर्तोंका लिखकर उक्त महाराणाके नज़्र किया था, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

मुचल्केकी नक़्ल (१).

॥ श्रीरामजी ॥

॥ सीध श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री अनदाताजी हजुर षानाजाद बणाया मनष म्हेता रामसीघको ध्रथी हाथ लगाऐ मुजरो मालम होये अप्रच, श्री हजुरमे अरज कराइी स्यो षावद मन बदगी भलावे तो वदगी सामधरमासु कीया जाऊ, हजुर राजी रेह जीणी प्रमाऐ चाकरी – – ऊ, ही मुदा मांड्या जीमे कसर पाडु, तो मने श्री अकलीगजीकी आण हे, ईमे कसर पाडु, तो षावद मुरजी व्हे जो कीजे

१ साहेबकेर हजुरके दनभर दन दोसती बदे न गणा राजी रे न कणी बातकी मुरजी सवाऐ नी वे

२ साहब लोगाको पइीस्यो देणो जीकी तनषाव लगाऐ देणी न तनषाव वोठे न्ही षरचणी, साषकी साष पुछ नजर करणी, ऐक रपो चढाव्णो नी, साहेबकी अरज ही तनषाव ताबे हजुर आवे नी

३ ज्मा वारु हे जी स्वाऐ वदाव्णी, राजरा काम काजमे कसर पाडणी नही, छतीस ही कारषानारी वालीगी राषणी, आरी पुकार आवे नी, दन चढाव्णा नी ही

४ देसरो वदोबसत राषणो षालस्यो बदाव्णो

५ हजुरसु अरज कीया बना हुकम टाल काइी हरफ बोलणो नीही, नाव पथाव, वोर ही काइी हुकम बना करणो नही

६ कणी सु कस्यो राषणो न्ही

७ नाव रुषरो नही करणो, सुष पाकरी नगे राषणी, आ चाल मेटणी, ही स्वाऐ मुडो आगो करे, तो जीनु सजा देणी

(१) इस मुचल्केका अस्ल काग़ज़ कई जगहसे फटजानेके सबब बाज़ बाज़ शब्द और अख़ीरमें थोड़ासा मज़्मून व संवत् मिती जाते रहे हैं.

८ जनानी षरची त्था सरदार षरची पावे जाकी चढाणी नी

९ बना हुकम माथे करज करणो नही

१० भीः चाकरी कर वताणी न कसम कसर न्ही पडजु

११ धणीरो हुकम माथा ऊप्रे राषणो, कीरो सरोदो राषणो न्ही

१२ – – – – – – ऊप्र घर सर हाजर रेणो

१३ जुठी साची कही करणी न्ही, जीमे तगसीर होवे, तो साची दषाऐ देणी, पछे हुकम करे जो करणो

१४ जा ज्मी गद्दी हे जो आणवो तो श्री ऐकलीगर्जीके हाथ हे, पण मेनत कर चाकरी कर – – – –

१५ अबारु देसको वदोबसत हे ज्णीसु वतो वदोवसत राषणो, ईमे कसर पाडणी न्ही

१६ काम कारषाना आगे हे जारे रहे, फेर मरजी होत्र्ये जारे राषणा

१७ बारु परच हे जीमे गटाणो न्ही, कोई राज हे काम आऐ पडे, तो हुकम बाल राषणो

१८ – – – – तनषाव लगाऐ देणी स्यो ष – – – – – – – – – व

– – – – माडा जीमे कसर पाडु तो श्री हजुरकी – – – – – – – व ध्रमका सोग – – – – सावध्रमा सु ब – – – – – – – – – – – चाकरी करणी, ईमे कसर पाडु, तो धणीरी मरजी होऐ के, धणीने दोस न्ही.
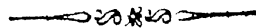
इस मुचल्केकी अक्सर क़लमोंका अमल दरामद न होनेके सबब लोगोंने चारों तरफ़से रामसिंहकी शिकायत करना शुरू किया, जिनमें सबसे बढ़कर शिकायत यह थी, कि गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके ख़िराजका सात लाख रुपया चढ़ गया, और उसकी बाबत पोलिटिकल एजेएटने भी बद इन्तिज़ामी ज़ाहिर करके ताकीद लिखी. इसपर महाराणाने महता रामसिंहको उन बातोंका बन्दोबस्त करनेके लिये हुक्म दिया, जिनसे रियासतमें बद इन्तिज़ामीकी शिकायत फैलरही थी. उक्त प्रधानने जवाब दिया, कि "ग्यारह लाखकी रियासती आमदनी और बारह लाखका ख़र्च है, इसलिये ख़र्चकी कमी हुए बिदून बन्दोबस्त होना कठिन है." तब प्रधानकी सलाहके मुवाफ़िक़ महाराणाने महासाणी बख़्ता, कायस्थ बिशननाथ, और पुरोहित रामनाथ को ख़र्च घटानेपर मुक़र्रर किया, और पहिले कोठारका ख़र्च कम करनेकी तज्वीज़ हुई. लेकिन् इन तीनों शख़्सोंने यह सोचकर, कि प्रधाना अर्थात् नियाबतका काम तो महता

रामसिंह करे, और बुराई व बदनामी हम लोगोंको मिले, जो हमारे हक़में ठीक नहीं है, अपनी बुराईके बचावके लिये शुरूमें अनुमानसे जमा ख़र्चकी एक फ़र्द बनाई, जिसमें बारह लाखकी सालानह आमदनी और ग्यारह लाखके ख़र्चका तख़्मीनह था, और महाराणासे ख़ानगी तौरपर निवेदन किया, कि हुज़ूरकी आज्ञानुसार कोठारका ढंग देखा गया, तो मालूम हुआ, कि हिमायती और ज़बर्दस्त लोगोंकी पावण तो बन्द नहीं होसक्ती, सिर्फ़ बेवा और लावारिस बच्चोंका सीग़ह उन लोगोंसे अलग है, जिनका गला घोटनेसे बमुश्किल तीन चार हज़ार रुपया सालानहकी बचत हो सक्ती है; परन्तु ऐसा करनेमें हज़ारों ग़रीब हम लोगोंको गालियां और हुज़ूरको बद दुआ देंगे, जिसमें किसी तरहका फ़ायदह नज़र नहीं आता, आइन्दह जैसा हुज़ूर फ़र्मावें वैसा कियाजावे. यह सुनकर महाराणाने फ़र्माया, कि जमा ख़र्चका बन्दोबस्त करना तो बहुत ज़रूर है, इसकी तद्वीर जिस तरहपर होसके, करना चाहिये, तब उन लोगोंने वह काग़ज़ पेश किया, जिसमें एक लाख रुपया सालानहकी बचतका हिसाब था. इस फ़र्दसे महाराणा को प्रधानके फ़रेबका यक़ीन होगया, और उन्होंने महता शेरसिंहको प्रधान बनानेकी ग़रज़से बुलाना चाहा, जो पहिले भागकर ग़ैर इलाक़हमें चलागया था. पैग़ामके पहुंचतेही विक्रमी १८८६ माघ कृष्ण ५ [हि० १२४५ ता० १९ रजब = ई० १८३० ता० १४ जैन्युअरी] को शेरसिंह महाराणाके पास हाज़िर होगया, लेकिन् कप्तान कॉफ़ साहिब रामसिंहका मददगार होनेके कारण शेरसिंहको प्रधाना मिलनेमें तअम्मुल हुआ, और रामसिंहको फ़िक्र हुई, कि रियासती बन्दोबस्त न कियाजानेसे अब मुझको भी ख़तरह है, इसलिये मुनासिब है, कि गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी सफ़ाई करके पोलिटिकल एजेण्टको मददगार बना लिया जावे. उसने सात लाख रुपयेमेंसे, जो गवर्मेण्टको देना वाजिब था, कॉफ़ साहिबकी मददसे दो लाख रुपया मुआफ़ करवाकर महाराणाको अपनी नौकरी व ख़ैरख़्वाही दिखाई, और कई लोगोंसे दंड व जुर्मानह वग़ैरह वुसूल करके जोड़ तोड़ लगाकर पांच लाख रुपया सर्कारी ख़िराजका अदा करदिया. इस कार्रवाईसे रामसिंहकी बहुतसे आदमियोंके साथ दुश्मनी बढ़कर ज़ियादह शिकायतें पैदा हुईं; और विक्रमी १८८७ माघ कृष्ण ८ [हि० १२४६ ता० २१ रजब = ई० १८३१ ता० ६ जैन्युअरी] को जब कप्तान कॉफ़ साहिब विलायत जानेके लिये महाराणासे रुख़्सत हुए, उसी वक़्तसे रामसिंहकी ताक़तमें फ़र्क़ आगया.

विक्रमी १८८८ द्वितीय वैशाख शुक्ल १ [हि० १२४६ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १८३१ ता० १२ मई] को रामसिंह क़ैद हुआ, और शेरसिंहको प्रधाने

का सरोपाव मिला. उसवक़ शेरसिंहने एक इक़ारनामह लिखकर पेश किया, जिस-की नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

महता शेरसिंहके इक़ारनामहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ श्रीनाथजी.

॥ सीधश्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री प्रथीनाथ हज़ूर अरज षानाजाद कीधो मनष महता सेरसीघकी अरज मालम होऐ अप्रच ॥

सरब जंमो अस १ रो १०॥) साडा दसको हे जीमे कस्त्र न्ही, अप्र ज्मा सुदी मेनत कीदा ग्यारा बाराको बदे, सो बदावणो साडा दसमें तो कस्त्र पड़े न्ही, ओ ज्मा अतो मरजी होऐ जठे पूचाजे

वोर काम में हरकत पड़े न्ही मरजी प्रमाणे रा ईमे बाद दे जीमे तफावज पड़े न्ही

देसको बंदोबसत राषणो, चोरी चषारीको राषणो, हरकत पड़े न्ही

साऐबका षूणीका तीन लाष जणीको जंमो जुदी तणषाव काड देणी, सो हुकम करे जठे वोर ताल्षे

फोज षूचरो जंमो जुदो काड देणो, वोर ऐकरे हात रहे श्री द्रबारका हुकमको

कोठारको जंमो जुदो बादणो, सो अनको धान नुद कोठार चडे

ईमे षजानाको जंमो बांद देणो, सो षजाने पड़े, वोठे पूचाणो न्ही

ई प्रमाणे श्री षावद बाद दे जीमे कस्त्र पाड़ु, तो श्री द्रबारकी आण हे- सं० १८८७ का बेसाष बुद १०.

इन्हीं दिनोंमें नाथद्वारे वालोंने मुखिया राधिकादासको एजेण्ट गवर्नर जेनरल राज-पूतानहके पास वकील बनाकर भेजा, और खुद मुख़्तार बननेकी कोशिश की, लेकिन् उस

वकीलको रिचर्ड कैविंडिशने, जो जवाब दिया उसकी नक़ ख़रीतहके साथ महाराणाके पास उक्त साहिबने भेजी, जिसका तर्जमह यहांपर मए ख़रीतहके तर्जमेके दर्ज किया जाता हैः-

एजेण्ट गवर्नर जेनरल रिचर्ड कैविंडिश साहिबके ख़रीतहका तर्जमह,
ब नाम महाराणाजी श्री जवानसिंहजी,
ता० ३१ मई सन् १८३१ ई०.

मामूली अल्क़ाब व आदाब वगैरहके पीछे. एक ख़त पुजारी मन्दिर नाथद्वारेका यहांकी हाज़िरबाशीके लिये अपना वकील भेजनेके मज़्मूनसे मेरे नाम मए राधिकादास वकील नाथद्वाराके इन दिनोंमें पहुंचा था; जवाब उसका जो कुछ कि मेरी तरफ़से लिखा गया, उसकी नक़ वास्ते इत्तिला दर्बारके इस ख़रीतहके साथ भेजी है, सो उसका मज़्मून मुलाहज़ह करनेसे रौशन दिल दोस्ती भरे हुएके होगा, ज़ियादह दिन ख़ुशीका हमेशह हूजियो.

(दस्तख़त)- रिचर्ड कैविंडिश.

तर्जमह नक़्ल हुक्म बनाम राधिकादास
वकील नाथद्वारा.

(फ़ार्सीमें)
नक़्ल मुताबिक़ अस्ल,
अल्अब्द मुहम्मद अश्रफ़,
मुन्शी एजेन्सी.

(अंग्रेज़ीमें)
(दस्तख़त)- रिचर्ड कैविंडिश.

हुक्म बनाम राधिकादास वकील पुजारी मन्दिर श्री नाथद्वाराके यह है, कि ख़त मालिक तुम्हारेका, जो बमुक़द्दमे भेजने तुमको उह्दे विकालतपर वास्ते हाज़िरबाशी यहांके था, सो हमारे पढ़नेमें आया. जोकि मक़ाम नाथद्वारा राज रियासत जुदा

नहीं है, इसवास्ते तुम्हारा नाथद्वारेकी तरफ़से यहां हाज़िर रहना ज़ुरूर नहीं, तुम्हारे मालिकको जो कुछ ज़ुरूरत कहने और लिखनेकी हमसे हो, उसका सवाल जवाब मारिफ़त दर्बार उदयपुरके करते रहें, नाथद्वारे वालोंके कहनेकी सुनवाई बिना वसीले दर्बार महाराणा साहिबके इस जगह नहीं होसक्ती है, क्योंकि नाथद्वारा तऋल्लुक़ात रियासत मौसूफ़केसे है; अगर्चि लिखना जवाब ख़त तुम्हारे मालिकका उन्हींके नाम मन्ज़ूर था, परन्तु जोकि तुम्हारे मालिकका अल्क़ाब दफ़्तर उदयपुर तथा इस दफ़्तरमें नहीं पाया, इसवास्ते यह हाल तुम्हारे नाम लिखा गया; चाहिये. कि हमारे लिखे हुए इस तमाम हालकी इत्तिला अपने मालिकको करदेवें- फ़क़त, लिखा ५ मई सन् १८३१ ई०.

रामसिंहके क़ैद होने और शेरसिंहको प्रधाना मिलनेकी ख़बर कप्तान कॉफ़ साहिबने कलकत्तेमें सुनकर रामसिंहकी सिफ़ारिशके लिये एक ख़रीतह महाराणाके नाम भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

कप्तान कॉफ़ साहिबके ख़रीतहकी

नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

(दस्तख़त)-कॉफ़ साहिब. (अंग्रेज़ी)

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा बीराजमान लाऐक श्री माहाराजा धीराज माहाराणा साहेब श्री जुवानसीघजी जेतान, कलकताका मुकामसु मेजर काफ साहेब लीषावता सलाम मालम हुवे, अठाका समीचार भला हे, आपका समीचार सदा कुसीका आवे तो हमारे ताहीं बोहोत कुसी होऐ, आप बडा हो, सीरदार हो, सदा क्रपा महेरवानगी राषो तीसु जादा रहे अप्रच ॥ आपको षलीतो अन्यात हुवो, समीचार बाच्या कुसी हुई, सरकारमे हमारा हाथकी फारगती सरकार कंपनीका रुप्याके वासते आपके हाथ आऐगही होगा, आजकी रोज हमकु षबर मीले पाच लाष रुप्या सके ऊदेपुरी सेठ जोरावरमलकी मारफत सरकार कंपनीका षजाना महे

पुछगया, अस परचका बोज आपके राज ऊपरेसे ऊठगया, आगेकी बात आपका हाथ महे हे, ईस नोकरी करणेमहे महेता रामसीघजीकी ऊपरे हजारा दुसमण पेदा हुवा, अबे आपने काम ऊतारया, अबे सबकोई आपणे रुप्या डंड बदले ईसकी ईजत ऊतारणेकी सला करेगा, आपके सीवाऐ ऊसके कसीका आसरा भरोसा हे नही, ऊसकी ईजत ज्यान आपके हाथ महे हे. अगर आप ईसकी नोकरी आद करके ईजत बंचावे तो बचेगा, अर आप नही बचावेगा तो दुसमणीसे मारया जावेगा. हमारी सलासे आपके दोऐ लाख रुप्या माफ कराया, ईन सबकु बेराजी कीया, ईस बासते हम आपकु तकलीप देते हे, ओर महेता मोतीराम हाथे कीताब १ अकबराबादका मुकामसु भेजी ही, पीछेसु मीमच हेडी साहेबके पास कीताब २ भेजी हे, हमकु भरोसा हे, अे तीनु कीताब आपके पास पुची होगा. आपके परसण महे हुवे कदी कदी आपकी कुसखबर ओर मेवाङका अेवालकी अन्याऐत करोगे, अठा लाऐक काम काज लिखावोगे, अठे हुकम आपको हे. सं० १८८७ (१) रा जेठ सुद १४ मास जुन ता० २४ सन १८३१ .ई०.

इसके बाद हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल लॉर्ड बेंटिंक (Lord William Bentinck.) ने अजमेर आनेके इरादहसे महाराणाको भी अजमेरमें आकर मुलाक़ात करनेके लिये पोलिटिकल एजेएट की मारिफ़त कहलाया. इस बातपर उदयपुरके सर्दारों वगैरहमें बहुत कुछ सोच विचार और सलाह मश्वरा हुआ, कि उदयपुरके महाराणा पहिले दिल्लीके बादशाही दर्बारमें नहीं गये, तो इस वक्त उनका अजमेर जाना किस तरह वाजिब समभा जासक्ता हे ? इसपर पोलिटिकल एजेएट स्पीअर साहिबने कहा, कि मुसल्मान बादशाह अव्वल तो आप लोगोंके दुश्मन थे, दूसरे जो राजा उनके दर्बारमें जाते, उनकी इज्ज़त नौकरोंके दरजेपर होती थी, इसलिये अगले महाराणा साहिब उनके पास नहीं गये, लेकिन् बर्ख़िलाफ़ उसके ब्रिटिश गवर्मेएट आपकी दोस्त है, और गवर्नर जेनरल हिन्द और महाराणाकी जो मुलाक़ात होगी वह दोस्तोंके तरीक़ेपर होगी, इसलिये महाराणा साहिबका अजमेरमें चलकर गवर्नर जेनरलसे मुलाक़ात करना बेजा नहीं है. इन दोनों वाजिब बातोंसे महाराणा ला जवाब होगये, लेकिन् बहुतसे मुसाहिबोंने उनका अजमेर जाना ना मुनासिब बयान किया, तब महाराणाने कुल सर्दारों व अहलकारों को फ़र्माया, कि अव्वल तो स्पीअर साहिबने, जो दोनों बातें कहीं उनमें किसी

(१) यहांपर श्रावण महीनेसे प्रारम्भ होनेके हिसाबसे विक्रमी १८८७ लिखागया है, लेकिन् चैत्रके हिसाबसे विक्रमी १८८८ होता है.

तरहका एतिराज़ या दलील नहीं होसक्ती. दूसरे मरहटोंके ग़द्रके ज़मानेकी तक्लीफ़ें, जिनको मैं ख़ुद श्री बड़े हुज़ूरके साथ रहकर उठा चुका हूं, इसी गवर्मेंएटकी मददसे दूर हुईं, इसलिये हमको हर सूरतमें उसके साथ दोस्तानह बर्ताव रखना लाज़िम है. तीसरे शाहपुराके फूलिया ज़िलेपर, जो अंग्रेज़ी पुलिस (ज़ब्ती) बैठी हुई है, वह भी लॉर्ड बेंटिंककी दोस्तीके बिना नहीं उठ सक्ती, और उसकी ज़ब्ती उठवाना ज़रूर है, क्योंकि वह ठिकाना हमारे रिश्तहदारोंमेंसे ख़ैरस्वाह व फ़र्मांबर्दार राजाधिराज अमरसिंहका है, जिन्होंने इस रियासतकी नौकरी करते करते अभी उदयपुरमें वफ़ात पाई है. चौथे दाजीराज (वैकुण्ठवासी महाराणा) का गयाश्राद्ध करना भी मुझपर फ़र्ज़ है, जिसमें कई महीनोंका सफ़र मए लश्कर व सिपाहके अंग्रेज़ी .इलाक़हमें करना पड़ेगा, जो बिदून मदद ब्रिटिश गवर्मेंएटके नहीं होसक्ता; इसलिये हमको अजमेरमें जाकर लॉर्ड बेंटिंकसे मुलाक़ात करना ही बिहतर है. तब सब लोगोंने महाराणाकी इस आक़िलानह सलाहको पसन्द किया; और महाराणाने कुल सर्दार व उमरावोंके नाम उदयपुर हाज़िर होनेका हुक्म भेजा. हुक्मनामे पहुंचते ही सब लोग हाज़िर होगये. इस सफ़रमें मेरा (कविराज श्यामलदासका) पिता और पुरोहित श्यामनाथ भी साथ थे. इन दोनोंकी ज़बानी इस सफ़रका हाल मैंने कई बार सुना है, उनका बयान था, कि महाराणाके लश्करमें उस वक्त पैदलोंके अ़लावह सवारोंकी संख्या दस हज़ार थी.

विक्रमी १८८८ माघ कृष्ण ५ [हि० १२४७ ता० १८ शअ़्बान = .ई० १८३२ ता० २२ जैन्युअरी] को राजधानीसे लश्करका कूच होकर पहिला मक़ाम ग्राम गुड़लीमें हुआ. माघ कृष्ण ६ को महाराणा दर्शनोंके लिये श्री एकलिंगेश्वरकी पुरीमें रहे. माघ कृष्ण ७ को ग्राम खेमलीमें क़ियाम किया, अष्टमीको ग्राम सनवाड़में पहुंचे, नवमीको गलूंडमें, दशमीको जोगण खेड़ीमें, एकादशी व द्वादशीको भीलाड़ेमें मक़ाम होकर त्रयोदशीको बनेड़ेमें पहुंचे, जहां राजा उदयसिंहने दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई वग़ैरहकी रस्म अदा करके बड़ी उ़म्दगीके साथ महाराणाकी ज़ियाफ़त की. माघ कृष्ण १४ को बीचमें एक मक़ाम होकर अमावास्याको सखराणीमें क़ियाम हुआ. अजमेर और मेवाड़की सर्हदपर ब्रिटिश गवर्मेंएटकी तरफ़से एक पोलिटिकल अफ्सर पेश्वाईको आया, माघ शुक्ल १ को नांदला ग्राममें ठहरकर द्वितीयाको अजमेर पहुंचे; दो कोसतक लॉकट (१) साहिब वग़ैरह ८ अंग्रेज़ी अफ़्सर महाराणाकी पेश्वाईको आये, और महाराणाको डेरोंमें पहुंचाकर रुख़्सत हुए. दूसरे रोज़ बूंदीके राव राजा

(१) राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल.

रामसिंहके अजमेरमें आने और मेवाड़की फ़ौजके दर्मियान होकर निकलनेके इरादेकी ख़बर मिली, इसपर महाराणाने महता शेरसिंह, रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह और पुरोहित श्यामनाथ वग़ैरहको बुलाकर कहा, कि राजा रामसिंह हमारे दादाको मारने वाले दुश्मनका पोता है, इसका लश्करमें होकर निकलना हमारी बदनामी और हतकका बाइस होगा. तब रावत् जवानसिंह व दूलहसिंहने अर्ज़ की, कि इस वक़् सलाहकी बात कहना हम लोगोंका काम नहीं है, हमारी तो यही राय है, कि नक़ारे का हुक्म देदिया जावे, ताकि हम लोग लड़ाई करके बहादुरीके हाथ दिखलावें; और अगर मस्लिहतकी बात दर्याफ़्त करना हो, तो अहल्कारोंसे पूछें. इसपर महता शेरसिंह ने कहा, कि लॉर्ड बेंटिंकको इत्तिला करने बाद लड़ाई करनेमें कोई हर्ज नहीं है, इसलिये अव्वल उनको इत्तिला होजानी चाहिये. लाला चिरंजीलाल, जो उस समय पोलिटिकल एजेण्टके पास मेवाड़की तरफ़से वकील था, उक्त लॉर्डको इत्तिला करनेके लिये भेजा गया; वह लॉर्ड बेंटिंकके डेरेकी ड्योढ़ीपर जाकर कह आया, कि यदि बूंदीवाले मेवाड़के लश्करमें होकर निकलेंगे, तो तलवार चलेगी; लेकिन् लॉर्ड बेंटिंकने ऐसा बन्दोबस्त किया, कि अंग्रेज़ी अफ़्सरोंको भेजकर राव राजा बूंदीको दूसरे रास्तेसे निकलवा दिया, जो मेवाड़की फ़ौजसे बहुत दूर था; और इस क़द्र दुश्मनी देखकर उक्त लॉर्डने दोनों रियासतोंके आपसमें मेल करादेनेकी बहुत कुछ कोशिश की, परन्तु महाराणाने उक्त लॉर्डकी सलाहको मन्ज़ूर न किया.

विक्रमी माघ शुक्ल ४ [हि० ता० ३ रमज़ान = ई० ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा हाथीपर सवार होकर जुलूसकी सवारीसे लॉर्ड बेंटिंकके डेरेपर गये; डेरोंकी ड्योढ़ीतक पेश्वाई और दस्तापोशी करके उक्त लॉर्ड महाराणा तथा उन सिकत्तर वग़ैरह पांच अंग्रेज़ोंको, जो महाराणाको लेनेके लिये गये थे, अपने डेरेमें लेगये, और १९ तोपोंकी सलामी सर हुई; डेरेमें एक बड़ा तख़्त तय्यार था, जिसपर एक तरफ़ गवर्नर जेनरल हिन्द और उसके पास वाली कुर्सीपर गवर्नर बम्बई और दूसरी कुर्सियोंपर अंग्रेज़ अफ़्सर, और तख़्तके दूसरी तरफ़ महाराणा और कुर्सियोंपर उनके सर्दार व अहल्कार बैठे; फिर गवर्नर जेनरलकी तरफ़से सोने चांदीके सामान समेत २ घोड़े, मख़्मली ज़रदोज़ी झूल व सामान समेत १ छोटा हाथी, सरोपाव और मोतियोंकी माला वग़ैरह ज़ेवर, पश्मीनेका १ शामियाना मए चांदीके बांसों व टाटबाफ़ी पर्दोंके, २ फ़र्शकी दरियां, २ ग़ालीचे, विलायती साज़ सहित १ तलवार, फ़ौलादी जड़ाऊ ढाल और १ दुनाली बन्दूक़ पेश हुई, जिनको महाराणाने ख़ुशीके साथ कुबूल किया. गवर्नर जेनरलने महाराणाको इत्र पान देने बाद पेश्वाईकी जगहतक पहुंचाकर रुख़्सत किया, जाते आते वक़् १९ तोपोंकी सलामी सर हुई.

विक्रमी माघ शुक्क ५ [हि० ता० ४ रमज़ान = .ई० ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को महाराणाकी मुलाक़ातके लिये लॉकट साहिब लश्करमें आये. माघ शुक्क ६ को जयपुर महाराजाकी तरफ़से टीकेका दस्तूर आया, और सप्तमी की सुब्हको साढ़े दस बजेके क़रीब गवर्नर जेनरल हिन्द महाराणाके डेरेपर तश्रीफ़ लाये. रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह, महता शेरसिंह, महता सवाईराम, और महता मोतीराम वगैरह मुसाहिब गवर्नर जेनरलकी पेश्वाईको गये, ड्योढ़ीतक महाराणाने पेश्वाई की, और दस्ता पोशी करके खेमेमें लेगये. महाराणा और गवर्नर जेनरल हिन्द एक तरूतपर और गवर्नर बम्बई कुर्सीपर और उनके बाद एक तरफ़ साहिब लोग और दूसरी तरफ़ सर्दार लोग कुर्सियोंपर बैठे; शौक़िया बातें होने बाद दूसरे खेमेमें गये, जहां लॉर्ड बेंटिंक, गवर्नर बम्बई, व लॉकट साहिब वगैरह चार अंग्रेज़, और महाराणा मए रावत् जवानसिंह, रावत् दूलहसिंह, महता शेरसिंह, महता सवाईराम, महता मोतीराम व पुरोहित श्यामनाथ वगैरहके तख़्लियेमें रहे; शुरूमें जावद, नीमच व गोड़वाड़ वगैरह पर्ग-नोंके मेवाड़के क़ब्ज़हसे निकल जानेकी बाबत ज़िक्र हुआ, जिसके बारेमें उक्त लॉर्डने शीरींकलामीके साथ जवाब दिया, लेकिन् कुछ मत्लब हासिल न हुआ, तब महाराणा ने कहा, कि मैं दो बातके लिये आपकी मुलाक़ातको यहां आया हूं - अव्वल तो यह, कि शाहपुरा व फूलियासे ज़ब्ती उठाली जावे, और दूसरे मुझको गयाश्राद्धके लिये जाना है, जिसमें आपकी मदद बहुत कुछ दर्कार होगी. गवर्नर जेनरलने इन दोनों बातोंको मन्ज़ूर करके शाहपुराकी ज़ब्ती उठानेका तो उसी वक़्त हुक्म देदिया, और सफ़रके बन्दोबस्तका ज़िम्मह अपने ऊपर लेकर महाराणाका इत्मीनान करदिया. यह बात चीत होचुकने बाद फिर तरूतपर आ बैठे; लॉर्ड साहिब व गवर्नर बम्बईको महाराणाने और बाक़ी अंग्रेज़ोंको अह्लकारोंने इत्र पान दिया, फिर कपड़ेकी किश्तियां ५१, सरसोभा १, मोतियोंकी माला १, पहुंचियां २, ढाल १, तलवार १, बन्दूक़ १, बुग़्दा १, पेशक़ब्ज़ १, कटार १, ज़रदोज़ी ज़ीन सहित घोड़े २, और हाथी १ पेश किये गये, जिनको उक्त लॉर्डने खुशीके साथ क़बूल किया. इस के बाद पेश्वाईकी जगहतक महाराणा उनको पहुंचानेके लिये गये, आते जाते वक़् २१ तोपोंकी सलामी सर हुई.

इसी दिन घड़ी भर दिन रहे कोटाके महाराव रामसिंह मए अपने दीवान माधवसिंह झालाके महाराणाकी मुलाक़ातको आये, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुला-क़ात व ख़ातिर तवाज़ो होने बाद वापस गये.

विक्रमी माघ शुक्क ९ [हि० ता० ८ रमज़ान = .ई० ता० १० फ़ेब्रुअरी]

को जयपुरके महाराजा जयसिंह मुलाक़ातके लिये आये; पेश्वाई वग़ैरह सब रस्में दस्तूरके मुवाफ़िक़ अदा हुई. इसी रोज़ महाराणा भी पिछला छः घड़ी दिन रहे हाथी सवार होकर जुलूसकी सवारीसे जयपुर महाराजाके डेरेपर तश्रीफ़ लेगये, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात करके वापस आये.

विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि० ता० ९ रमज़ान = ई० ता० ११ फ़ेब्रुअरी] की शामको महाराणा कोटाके महाराव रामसिंहसे वापसीकी मुलाक़ात करनेको सिधारे, और द्वादशीको पुष्कर स्नान के लिये गये, वहां ब्राह्मणोंको दान दक्षिणा वग़ैरह देकर चतुर्दशीके दिन वापस अजमेरमें आये; पूर्णिमाके दिन नांदले, फाल्गुन् कृष्ण १ को भिणाय, और द्वितीयाको धनोप मक़ाम रहा, तृतीयाके दिन शाहपुरेमें दाख़िल हुए (१); राजाधिराज माधवसिंहने अपने क़द्रदान और पर्वरिश करने वाले मालिककी मिह्मानी व अदब आदाबमें किसी तरहकी ख़ामी न रक्खी. इस वक़ शाहपुराके लोग मारे ख़ुशीके बदनमें फूले नहीं समाते थे; क्योंकि पर्गनह फूलियासे अंग्रेज़ी पुलिसकी ज़ब्ती उठजानेसे तो वे ख़ुशी मना ही रहे थे, महाराणाके शुभागमनने उसे दोचन्द बढ़ादिया. बड़े उत्साह व हर्षसे दो दिनतक महाराणाकी मिह्मानी हुई. फाल्गुन् कृष्ण ६ को महाराणा महुवे पहुंचे, और सप्तमी को बारिश आजानेके सबब वहीं मक़ाम रहा, अष्टमीको भीलाड़े, नवमीको गाडरमाले, दशमीको रास्मी, और एकादशीको सनवाड़ होते हुए, फाल्गुन् कृष्ण १२ के दिन चम्पाबाग़में पहुंचे, और तमाम दिन वहीं आराम करके पिछला तीन घड़ी दिन रहे राजधानीके महलोंमें दाख़िल हुए.

दूसरे रोज़, याने फाल्गुन् कृष्ण १३ को बम्बईके गवर्नर अर्ल ऑफ़ क्लेअर (Earl of Clare.) अजमेरसे वापस लौटते हुए उदयपुरमें आये, दस्तूरके मुताबिक़ महाराणाने उनकी मुलाक़ात और मिह्मानी की.

---

(१) इस ठिकानेके अधिकारी हमेशह सच्चे दिलसे अपने स्वामीके फ़र्माबर्दार बने रहे- महाराजा उम्मेदसिंह तो क्षिप्रा नदीपर उज्जैनकी लड़ाईमें महाराणाके अर्थ मारा गया; उसके प्रपौत्र भीमसिंहको महाराणा अरिसिंहने स्वामि भक्त सेवक समझकर पूर्ण अनुग्रहमें रक्खा, और भीमसिंहने भी मरहटोंके ग़द्रमें तन मनसे महाराणा भीमसिंहकी सेवा की; राजा अमरसिंहने उम्रभर अपने मालिककी नौकरीमें ही चित्त रक्खा, और विक्रमी १८८२ माघ कृष्ण ३ [हि० १२४१ ता० १७ जमादियुस्सानी = ई० १८२६ ता० २६ जैन्युअरी] को जब राजधानी उदयपुरमें डाका पड़ा, तो उन डाकुओंको मारकर गया हुआ माल वापस लाये, जिसके इन्आममें महाराणा भीमसिंहसे राजाधिराजका ख़िताब पाया. विक्रमी १८८४ [हि० १२४३ = ई० १८२७] में राजाधिराज अमरसिंहने राज्य सेवामें रहकर उदयपुर में ही इस दुन्यासे कूच किया, और इसी तरह राजाधिराज माधवसिंहने भी पूर्ण स्वामिभक्त पनेसे अपने मालिककी सेवा की, जिसका बदला महाराणा जवानसिंहने उनको पूरे तौरपर दिया.

विक्रमी १८८९ आषाढ़ शुक्ल २ [हि० १२४८ ता० १ सफ़र = ई० १८३२ ता० ३० जून] को साह ज़ालिमचन्द भंवरने रु० १२७५०००) में कुल मेवाड़का एक सालके वास्ते ठेका लिया, जिसको महाराणाने मन्जूर फ़र्माया, और उसे मोतियोंकी माला व सरोपाव देकर महता शेरसिंह, महता सवाईराम व पुरोहित श्यामनाथ सहित बड़ी इज़्ज़तसे उसके मकानपर पहुंचाया, लेकिन् ज़ालिमचन्दको उस ठेकेमें बहुत नुक्सान रहा. इसी वर्षकी श्रावण शुक्ल २ [हि० ता० १ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २९ जुलाई] को रीवांके महाराज विश्वनाथसिंहकी बेटी महाराणी बाघेलीका इन्तिक़ाल हुआ, जिसका महाराणाके दिलपर एक सख़्त सद्मह पहुंचा. विक्रमी १८८९ चैत्र कृष्ण १२ [हि० १२४८ ता० २६ शव्वाल = ई० १८३३ ता० १८ मार्च] को महाराणाने कप्तान कॉफ़ साहिबकी सिफ़ारिश पहुंचनेके सबब महता रामसिंहको वापस बुलाया, जो क़ैदकी हालतमें उदयपुरसे भाग गया था; लेकिन् जब वह उदयपुरमें आया, तो उक्त महाराणाने यही कहा, कि इस तरहपर भागा हुआ शख़्स हमारा प्रधान बननेके लाइक़ नहीं है.

विक्रमी १८९० ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १२४९ ता० ७ मुहर्रम = ई० १८३३ ता० २७ मई] को महाराणाने अपने बड़े भाई अमरसिंहकी पत्नी चांपावतको अपनी माताके स्थानमें मानकर बड़े आदर भावसे बाईजीराजकी गद्दीपर बिठाया. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ११ [हि० ता० १० सफ़र = ई० ता० २८ जून] को ताणाके राज भैरवसिंहकी कन्याका विवाह बेदलाके राव तख़्तसिंहके साथ हुआ. महाराणा भी इस मौक़ेपर ताणेकी हवेली पधारे, लेकिन् दैव योगसे उसीवक़ महाराणी देवड़ीका इन्तिक़ाल होगया, और लोगोंने आकर महाराणाको ख़बर दी. यह ख़बर सुनकर उन्होंने फ़र्माया, कि इसवक़ इस बातको पोशीदह रखना चाहिये, क्योंकि मैंने राज भैरवसिंहसे उनके आख़िरी वक़्में यह वादह करलिया था, कि तुम्हारे बेटेकी पर्वरिश और तुम्हारी कन्याका विवाह मैं अपने हाथसे करूंगा, इसलिये चाहे कुछ ही हो, मैं अपने वाक्यको पूरा किये बिना महलोंमें नहीं आ सक्ता. महाराणाके ये शब्द सुनकर सब लोगोंके दिलोंपर ऐसा असर हुआ, कि यदि कोई मौक़ा आ पड़े, तो वे अपनी जानतक महाराणापर निछावर करनेमें कोताही न करें. आख़रकार उस रात्रिको कन्यादान वग़ैरहसे फ़ुर्सत पाने बाद महलोंमें पधारे, और सुब्ह होनेपर महाराणीकी यथोचित दग्ध क्रिया करवाई.

फिर तीर्थ यात्राकी तय्यारी करने लगे, और विक्रमी १८९० प्रथम भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० १२४९ ता० २ रबीउस्सानी = ई० १८३३ ता० १८ ऑगस्ट] को उदयपुरसे रवानह होकर चंपा बाग़में ठहरे, और प्रथम भाद्रपद शुक्ल ७ को चंपा बाग़से कूच करके श्री एकलिंगेश्वरकी पुरीमें पहुंचे, और वहांसे पलाणा, बनेड़िया, जूणदा, लाखोलां, गुरलां व भीलाड़े होते हुए विक्रमी द्वितीय भाद्रपद कृष्ण २ [हि० ता० १६ रबीउस्सानी = ई० ता० १ सेप्टेम्बर] को शाहपुरेमें दाख़िल हुए; राजाधिराज माधवसिंहने पेश्वाई व पगमंडा वग़ैरहके साथ दस्तूरके मुवाफ़िक़ आतिथ्य किया. शाहपुरेसे कूच करके द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ५ को ग्राम सांगरे, कादेड़े, केकड़ी, बघेरे, राजमहल, हमीरपुर, गलोल, नवाई और दतवास होते हुए लालसोटमें पहुंचे, जहां जयपुरकी तरफ़से दुणीका राव जीवणसिंह और दीवान अमरचन्द महाराणाकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुए, जिनको बहुत कुछ ख़ातिर तवाज़ोके बाद विदा किया गया. विक्रमी द्वितीय भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० ता० ८ जमादियुल-अव्वल = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को डीगमें पहुंचे, वहां रियासत भरतपुरकी तरफ़से दीवान भोलानाथ व नन्दराम दर्बारमें आये, जिनको ख़िल्अ़त वग़ैरह देकर विदा किया. फिर वहांसे द्वितीय भाद्रपद शुक्ल १० को गोवर्द्धनगिरिपर पहुंचे, और वहांसे अपने मज़्हबी फ़र्ज़ अदा करने बाद रवानह होकर द्वितीय भाद्रपद शुक्ल १२ को वृन्दावनमें दाख़िल हुए. वहां जप, पूजा व दान पुण्य वग़ैरह, जैसाकि चाहिये, करके आश्विन कृष्ण २ को मथुरामें मक़ाम किया; वहां भी तीर्थ यात्रा अच्छी तरहपर की. विक्रमी आश्विन कृष्ण ५ [हि० ता० २० जमादियुलअव्वल = ई० ता० ४ ऑक्टोबर] को गोकुलमें पहुंचे और छठको वहांसे रवानह होकर विक्रमी आश्विन शुक्ल ५ [हि० ता० ३ जमादियुस्सानी = ई० ता० १७ ऑक्टोबर] को कानपुरमें दाख़िल हुए, और गंगा स्नान किया. आश्विन शुक्ल १५ को प्रयागमें पधारे, और त्रिवेणीका स्नान व यथोचित दान पुण्य वग़ैरह करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = ई० ता० ४ नोवेम्बर] को वहांसे कूच हुआ, और अयोध्यामें लश्करके डेरे हुए. इस इलाक़हमें लखनऊके बादशाह नसीरुद्दीन हैदरकी तरफ़से बहुत कुछ ख़ातिर हुई, और निहायत ही दोस्तीका बर्ताव ज़ाहिर किया गया. मैं (कविराज श्यामलदास) ने अपने दादा और पिताकी ज़बानी, जो सफ़रमें महाराणाके संग थे, सुना है, कि महाराणाकी ख़ूबसूरती और सरलता व ख़ानदानकी प्रसिद्धिसे हज़ारहा आदमियोंकी ज़बानी जिधर देखिये, यही शब्द सुनाई देते थे, कि "राजा रामचन्द्रजीकी गद्दीके वारिस एक अरसे दराज़के बाद अपनी राजधानी अयोध्याको देखनेके लिये आये हैं."

राजा दर्शनसिंह (१) महाराणापर उसी तरह हर्ष प्रगट करके फूल उछालते थे, जैसे कि प्राचीन समयमें श्री रामचन्द्रजी महाराजपर इन्द्रादि देवता फूलोंकी दृष्टि किया करते थे. महाराणाने भी वहांकी प्रजासे दिली मुहब्बतका बर्ताव रक्खा. मेरे पिताका बयान है, कि मेवाड़की प्रजासे भी वहांकी रअय्यतने महाराणाके साथ सेवा आदिमें ज़ियादह मुहब्बत दिखलाई. अयोध्या की यात्रा समाप्त होने बाद लश्करका कूच हुआ, और रास्तेमें लखनऊके मोतमद, याने राजा दर्शनसिंहको खिल्अ़त देकर विदा किया गया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १४ रजब = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] को बनारसमें क़ियाम हुआ, जहांपर कुल क्षेत्रों और पंचकोशीकी यात्रा बड़े प्रेमसे की, और वहांके विद्वान पंडितोंकी एक सभा एकत्र करके बहुत कुछ दान पुण्य किया; फिर विक्रमी पौष कृष्ण ३ [हि० ता० १७ शअ़्बान = .ई० ता० २९ डिसेम्बर] को वहांसे कूच करके पौष कृष्ण ऽऽ को गयाजीमें पहुंचे, और वहांपर भी अष्ट तीर्थी व बुध गया वगैरहकी यात्रा और विधि पूर्वक श्राद्ध करके तीर्थ गुरु आसारामको हाथी, घोड़ा, ऊंट, पालकी, रथ, मियाना, सरोपाव, गहना, और ढाल, तलवारके अ़लावह बहुतसा क़ीमती सामान सोने चांदीका और १०००० रुपया नक्द दक्षिणामें दिया. आसारामके बेटेको कड़ा, डोरा, सरोपाव व पालकी और उसके भतीजेको कड़ा, डोरा, तथा सरोपाव वगैरह बख़्शा. तीर्थ गुरु गंगाधरको हाथी, घोड़ा, सरोपाव, गहना व नक्द भेट किया गया.

विक्रमी १८९० माघ शुक्ल १ [हि० १२४९ ता० २९ रमज़ान = .ई० १८३४ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को गयाजीसे कूच करके विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १ [हि०

---

(१) ब्राह्मण जातिका राजा दर्शनसिंह लखनऊके नव्वाबकी तरफ़से अयोध्याका नाज़िम था, जिसके बड़े भाई बख़्तावरसिंहको नव्वाब सआ़दतअ़लीख़ांके वक़्में जागीर और राजाका ख़िताब मिला था; दर्शनसिंहके बेटे मानसिंहने विक्रमी १९१४ [हि० १२७४ = .ई० १८५७] के गद्रमें बहुतसे यूरोपिअन प्रतिष्ठित लोगोंकी सहायता की थी, जिसके एवज़ गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से उक्त राजाको महाराजा तथा के० सी० एस० आइ० का ख़िताब और तअ़ल्लुक़ह बिशम्भरपुरकी जीविका मिली. मानसिंहका इन्तिक़ाल होजाने बाद उनकी राणीको इख़्तियार रहा, जिसने महाराजा मानसिंहके भाई रघुबरदयालसिंहके बेटे त्रिलोकीनाथसिंहको रियासत लिखदी थी, परन्तु कौन्सिलसे महाराजा साहिबके नवासे लाल प्रतापनारायणसिंह रियासतके वारिस क़रार दिये गये, जो अवधके तअ़ल्लुक़हदारोंमें बड़े दरजेके माने जाते हैं. इस इलाक़हमें फ़ैज़ाबाद, गोंडा, नव्वाबगंज, बारहबंकी, लखनऊ और सुल्तानपुरके ज़िलोंमेंसे महदूना, भरोली, अहियार, डहेरा, तुलसीपुर और बिशम्भरपुर आदि ६६९ गांव हैं, जिनकी सालानह आमदनी ४७९३४८। ≡)॥।१ है. महाराजाके ख़ानदानमें गद्दी नशीनीका दस्तूर शुरूसे चला आता है.

ता० १४ शव्वाल = .ई० ता० २४ फेब्रुअरी] के दिन मिर्ज़ापुरमें पहुंचे, और विन्ध्यवासिनी देवीके दर्शन किये. यहांपर रीवांके महाराजकुमार विश्वनाथसिंह भी मए फ़ौजके आ मिले; फिर वहांसे लश्करका कूच होकर फाल्गुन शुक्ल १ को चित्रकोट में क़ियाम हुआ, और विक्रमी चैत्र कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १ एप्रिल] को वहांसे रवानह होकर दशमी को रीवांमें पहुंचे, महाराजा जयसिंहदेव अपने पुत्र व पौत्रों सहित पेश्वाईको आये, और बड़ी मुहब्बतके साथ हर्ष पूर्वक महाराणाका आदर सन्मान किया; लेकिन् जोकि पहिला विवाह महाराणाका महाराजा जयसिंहदेवकी कन्या सुभद्र कुमारीके साथ हुआ था, और उनका देहान्त होजानेसे महाराणाका दिल बहुत रंजीदह व उदास था, इसलिये उन्होंने शुरूमें रीवां पधारनेसे इन्कार किया, और दूसरा कारण यह था, कि रीवां वाले फिर दूसरी शादी करनेके लिये महाराणाको मज्बूर करते, जो उनको मन्ज़ूर न था, लेकिन् विश्वनाथ-सिंहने शादीकी बाबत ज़िक्र न करनेका इक़ार करके रीवां पधारनेके लिये अर्ज़ की; और उसी इक़ारके मुवाफ़िक़ चैत्र कृष्ण १४ को नीचे लिखा हुआ सामान नज़मे दिया जाकर दस्तूरके मुताबिक़ महाराणा विदा किये गये.

महाराजा जयसिंहदेवकी तरफ़से हथनी १, घोड़े २, सरोपाव ६, बहुतसा गहना, तथा २१०००) हज़ार रुपया नक़्द कंठीका; राजकुमार विश्वनाथसिंहकी तरफ़से २ हाथी, ४ घोड़े, सरोपाव, गहना, २००००) बीस हज़ार नक़्द; दूसरे राजकुमार लक्ष्मणसिंहकी तरफ़से हथनी १, घोड़ा २, सरोपाव, ४०००) चार हज़ार नक़्द व गहना; और तीसरे राजकुमार बलभद्रसिंहकी तरफ़से हाथी १, और घोड़े २ मए सरोपाव व गहने वगैरहके नज़ हुए.

विक्रमी १८९१ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२४९ ता० ३० ज़िल्क़ाद = .ई० १८३४ ता० ११ एप्रिल] को कूचकी तय्यारी होचुकी थी, कि महाराजा जयसिंह-देव महाराणाकी ड्योढ़ीपर आबैठे, और कहा, कि हमने इक़ारके मुवाफ़िक़ महाराणा को विदा करदिया, लेकिन् अब हम सम्बन्धकी बाबत अर्ज़ करनेको आये हैं, और बहुत कुछ स्नेह व नम्रताके साथ महाराणासे अर्ज़ मारूज़ की, जिससे लाचार होकर महाराणाको उक्त महाराजाकी आर्ज़ू पूरी करना पड़ा. फिर दूसरे दिन याने चैत्र शुक्ल २ को रीवांकी तरफ़से नारियल, हाथी व घोड़ा वगैरह टीकेका सामान पेश होकर सम्बन्ध स्वीकार कराया गया.

विक्रमी चैत्र शुक्ल ५ [हि० ता० ४ ज़िल्हिज = .ई० ता० १४ एप्रिल] को महाराजा जयसिंहदेवके छोटे राजकुमार लक्ष्मणसिंहकी कन्याके साथ महाराणाका विवाह हुआ. विवाहके उत्सवकी रस्में अदा होचुकनेपर चैत्र शुक्ल १२ को रीवांसे कूच हुआ, और

एक महीना आठ रोज़का सफ़र तै करके विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० १८५० ता० १७ मुहर्रम = .ई० ता० २८ मई] को कोटे पहुंचे; कोटाके महाराव रामसिंहने बड़ी मुहब्बत व उत्साहसे पेश्वाई वगैरह दस्तूरी रस्में अदा कीं. इन्हीं दिनोंमें वहांका दीवान माधवसिंह गुज़रगया था, इसलिये उसके बेटे मदनसिंहको महाराणाने तलवार बंधाई. ज्येष्ठ कृष्ण ९ को वहांसे कूच करके एकादशीको भैंसरोड़ पहुंचे, और रावत् अमरसिंह की तरफ़से मिह्मानी हुई; ज्येष्ठ कृष्ण १४ को भैंसरोड़से कूच हुआ, और अमावास्याके दिन बेगममें पधारे; रावत् किशोरसिंहने बहुत अच्छी तरह मिह्मानी की, और वहांपर महाराणा ने दो शेरोंका शिकार भी किया. इसके बाद ज्येष्ठ शुक्ल ३ को बेगमसे रवानह होकर पंचमीको चित्तौड़गढ़में मक़ाम किया, और विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १२ [हि० १२५० ता० १० सफ़र = .ई० ता० १८ जून] को उदयपुरमें दाख़िल हुए. यह तीर्थ यात्रा उक्त महाराणाने बड़ी धूम धामके साथ की, जिसमें क़रीब दस हज़ार आदमियोंकी फ़ौज उनके साथ रही. पहिले मुसलमान बादशाहोंके ज़मानहमें उदयपुरके महाराणाओंको तो ऐसी तीर्थ यात्रा करना कठिन था ही, लेकिन् मरहटोंके ग़द्रके ज़मानहसे राजपूतानहके दूसरे राजाओंको भी यात्रा करना मुश्किल होगया था, जिसका रास्तह अंग्रेज़ी अमल्दारीके प्रभावसे पहिले पहिल इन्हीं महाराणाने खोला; और ब्रिटिश गवर्मेएटके मुलाज़िमोंने भी सफ़रमें उनकी इस तरहपर ख़ातिरदारी की, कि महाराणा और उनके साथियोंको यह मालूम न हुआ, कि यह .इलाक़ह महाराणाका है, या गवर्मेएट अंग्रेज़ीका.

विक्रमी १८९१ श्रावण कृष्ण ५ [हि० १२५० ता० १७ रबीउलअव्वल = .ई० १८३४ ता० २५ जुलाई] को सलूंबरके रावत् पद्मसिंहने महाराणाको अपनी हवेलीपर मिह्मान करके उनके साथ कुल रियासतके लोगोंको ज़ियाफ़त दी, और हाथी १, घोड़ा १, सिरसोभा १, मोतियोंकी माला १, सरोपाव ७ तथा १००००) रुपया नक़द महाराणाके नज़ किया. इसी विक्रमीकी श्रावण शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रबी-उस्सानी = .ई० ता० १७ ऑगस्ट] को पीछोला तालाबके किनारेपर " जल निवास " नामके महल बनाये, जिसके उत्सवमें बहुतसा इन्ऋाम इक्राम तक्सीम किया गया, और गोठ हुई, याने सर्दार, उमराव, पासवानों तथा सर्कारी मुलाज़िमोंको खाना खिलाया गया.

विक्रमी १८९२ चैत्र शुक्ल १५ [हि० १२५० ता० १४ ज़िल्हिज = .ई० १८३५ ता० १३ एप्रिल] को शिवरतीके महाराजा सूरजमल्लका देहान्त हुआ. महाराणाको इनके इन्तिक़ालका बहुत रंज हुआ, क्योंकि अव्वल तो उक्त महाराजा महाराणाके नज़्दीकी रिश्तहदार थे, दूसरे उन्होंने महाराणा भीमसिंहकी तक्लीफ़ोंमें शरीक रहकर बड़ी

ख़ैरख़्वाही और फ़र्मांबर्दारीसे ख़िदमत की थी. इसी वर्षकी वैशाख शुक्ल ६ [हि० १२५१ ता० ५ मुहर्रम = .ई० ता० ५ मई] को महाराणा भीमसिंहकी छत्रीकी प्रतिष्ठा हुई, जिसमें बहुत कुछ दान पुण्य व इन्आम इक्राम बांटा गया. विक्रमी १८९३ माघ शुक्ल ५ [हि० १२५२ ता० ४ ज़िल्काद = .ई० १८३७ ता० १० फ़ेब्रुअरी] को बांकीके मगरेमें श्री महाकालिकाका मन्दिर संपूर्ण होनेपर उसकी प्रतिष्ठा हुई.

विक्रमी १८९३ माघ शुक्ल ९ [हि० १२५२ ता० ८ ज़िल्काद = .ई० १८३७ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को रावत् पद्मसिंहकी बेटी अनोपकुंवरकी शादी राजधानीके महलोंमें कोटाके महाराव रामसिंहके साथ हुई. इस विवाहका संपूर्ण ख़र्च महाराणाकी तरफ़से हुआ.

विक्रमी १८९३ फाल्गुन् कृष्ण ३ [हि० १२५२ ता० १७ ज़िल्काद = .ई० १८३७ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को महाराणाने आबूकी यात्राके लिये उदयपुरसे कूच किया, और गोगूंदे होकर पहाड़ी रास्तेसे आबूकी यात्रा करके फाल्गुन् शुक्ल ११ को वापस उदयपुरमें आये.

यह ऊपर लिखा हुआ हाल मुल्की रवाज व मामूली बातें दिखलानेको लिखागया है, वर्नह तवारीख़में दर्ज करनेके क़ाबिल इसमें कोई रियासती इन्क़िलाबकी बात नहीं है.

इन दिनोंमें गवर्मेंएट अंग्रेज़ीका किसी क़द्र ख़िराज बाक़ी रहने लगा, जिससे बाज़ बाज़ लोग, जो महता रामसिंहके तरफ़दार थे, उसको प्रधानका उहदह दिलानेकी कोशिशमें लगे, और रामसिंहकी तरफ़से भी एक अर्ज़ी इक़ारनामहके तौरपर पेश हुई, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :-

महता रामसिंहकी अर्ज़ीकी
नक़ल.

॥ श्रीरामजी.

सीधश्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री अनदाताजी हजुर, षानाजाद म्हेता रामसीघ को धरथी हाथ लगाऐ मुजरो अरज मालम होये, श्री अनदाताजी ईस्वर छे अप्रच, आगे धणी मने बदगी भलाइी, सो मे अरज करी ज्णी प्रमाणे धणी तो प्रवसती करी, प्ण मारी बे समालसे धणी वदगी मोकुब करी, ने अटक हुई, जदी मारी भोलप से,

बे अकली से नीसर जावारी सला करी, सो या मे बडी बे अकली करी, धणी तो सारारी बरदास राषे है, तो हु तो धणारो कीयो मनष हु, तो मारी तो राषे ही राषे. अब धणी आगली भोलप सामो तो न्ही देषे, आपरा कीयारी पाल देष, मारी प्रतीत जाण सुनजर राषे, ज्णी में म्हारो नरभाव रहे, अब हु कठे वना मरजी काइी सटपट करु, के कणीरी अरजरो पषत राषु, के धणी वना वोर कीने जाणु, तो मने श्री ऐकलीगजी पुहचे, के म्हारा असट धम पुहचे, धणी मारी सला जत्री बना मरजीरी देषे, पकी साच जसी देषे, तो भलाइी धणी मरजी हो ज्या सज्या दे, ज्णीरो धणीने दोस न्ही, ने मारी कोइी अरज करे जणीने इी श्री ऐकलीगजीरी आण. या अरज मे मारा तन मनसु मालम कराऐ लषी सं० १८९४ सा०ण सद १०.

इस इक़्रार नामहके साथ ही अंग्रेज़ी ख़िराज बाक़ी रहजानेकी बाबत महता शेरसिंहकी शिकायतें हुईं, लेकिन् महाराणाके दिलपर उन शिकायतोंका कुछ भी असर न हुआ, क्योंकि अव्वल तो अजमेरका जल्सह, और दूसरा तीर्थ यात्राका बड़ा सफ़र, जिनमें लाखों रुपया ख़र्च हुआ था, महता शेरसिंहकी बरिय्यतके लिये काफ़ी सुबूत थे; और शेरसिंह बहुत मुलाइम दिल व दोस्तीका पक्का होनेके कारण उसके बर्ख़िलाफ़ बहुत थोड़े आदमी थे, जब शिकायत होती, तो उसीके साथ सिफ़ारिश भी पहुंच जाती थी; और महता अगरचन्दकी ख़ैरख़्वाहियोंका असर भी महाराणाके दिलसे दूर नहीं हुआ था, इसलिये प्रधानेमें किसी तरहकी तब्दीली न होने पाई.

विक्रमी १८९४ कार्तिक कृष्ण ११ [हि० १२५३ ता० २४ रजब = .ई० १८३७ ता० २५ ऑक्टोबर] को इंग्लिस्तानके तख़्तपर क्वीन विक्टोरियाकी मस्नद-नशीनीकी ख़बर मिलनेपर जश्नका दर्बार किया गया, और हाथियोंकी लड़ाई तथा २१ तोपोंकी सलामी सर हुई.

विक्रमी १८९५ भाद्रपद शुक्ल ४ [हि० १२५४ ता० ३ जमादियुस्सानी = .ई० १८३८ ता० २४ ऑगस्ट] की रात्रिका ज़िक्र है, कि महाराणा महलोंमें पौढ़े हुए थे, यकायक उनके सिर (खोपरी) में ऐसा दर्द मालूम होने लगा, कि मानो किसीने कील ठोकदी हो. इस दर्दका बहुत कुछ .इलाज किया गया, परन्तु किसीसे कुछ फ़ायदह न हुआ, दिनपर दिन बढ़ता ही गया; और अख़ीरमें अष्टमीके दिनसे वह यहांतक बढ़ा, कि विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १० बृहस्पतिवार [हि० ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० ता० ३० ऑगस्ट] को महाराणाका परलोक वास होगया. इन नेक मिज़ाज महाराणाके देहान्तका मेवाड़

और राजपूतानहमें अत्यन्त शोक होनेके अलावह हिन्दुस्तानके कई दूसरे हिस्सोंमें भी बहुत कुछ रंज हुआ. नयपालके अमात्य व केटियां (दासी), जो कुछ दिनों पहिले वहांके महाराजाकी तरफ़से गजनायक हाथी वगैरह तुह्फ़े लेकर आये थे, वे भी इस शोकके सागरमें डुबकियां लेने लगे, और चारों ओर जहां देखिये, सिवा हाहाकारके और कुछ नहीं सुनाई देता था.

इन महाराणाका जन्म विक्रमी १८५७ मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० १२१५ ता० १ रजब = .ई० १८०० ता० १८ नोवेम्बर] को हुआ था. यह ३७ वर्ष ९ महीना ८ दिनकी उम्रमें परलोकको सिधारे. इनका मझला क़द, गेहुवां रंग, पुष्ट शरीर, चौड़ा सीना, गहरी और बड़ी डाढ़ी, सुर्ख़ी माइल सियाह और बड़ी आंखें, व बड़ी पेशानी थी, ख़ूबसूरत इस दरजेके थे, कि जिसकी तारीफ़ हरएक आदमीकी ज़बानसे इस वक़्तक जारी है. जैसे कि वह ख़ूबसूरत थे, वैसे ही हंसमुख और शीरीं कलाम भी थे; अलावह इन ख़ूबियोंके उनमें यह भी गुण था, कि अपने पिताकी तरह हरएक आदमीकी पुश्तैनी ख़िद्मतोंको याद करके उसकी पर्वरिश करते, किसी नौकरके मरनेपर उसका वारिस बच्चा रह जाता, तो कहते कि इसके पिता हम हैं, और उसी तरह उसकी पर्वरिश करते; नौकरोंको, ग़लती होने पर भी, बार बार नसीहतके तौरपर समझाते; आम लोगोंपर सख़्ती बिल्कुल नहीं करते थे, और रहम दिली तो गोया उनका एक ख़ास हिस्सह था, जो रियासत भरमें किसीको मुयस्सर न हुआ होगा. सब नौकर उनको इष्टदेवके मुवाफ़िक़ मानते थे. उक्त दोनों अधीशों अर्थात् महाराणा भीमसिंह व जवानसिंहको आजतक लोग ठंढी सांस भरकर याद करते हैं, और प्रातःकालके समय ईश्वरकी जगह उनका नाम लेकर उठते हैं. स्वामी सेवकोंका जैसा सम्बन्ध इनके ज़मानहमें रहा, यक़ीन है, कि उससे बढ़कर कभी न रहा होगा; ऐश, .इश्रत व शिकारकी तरफ़ इनकी तवज्जुह ज़ियादह थी, और रियासती प्रबन्धपर भी ध्यान रखते थे; लेकिन् उनका रियासतके जमा व ख़र्चको अपने हाथमें लेलेनेका विचार पूरा न होसका, मुम्किन था, कि कुछ अरसे बाद यह इरादह पूरा होजाता, परन्तु ईश्वरने उन्हें पहिले ही इस दुन्यासे उठालिया. इनके साथ महाराणी बड़ी भटियाणी, महाराणी बाघेली, पासवान जमुनाबाई, पासवान बाई ऊदां, पासवान बाई डाई, सहेली प्रवीणराय, सहेली हीरां, और सहेली मनभावन, आठ सतियां हुईं.

नयपालका इतिहास.

महाराणा जवानसिंहके समय नयपालके राजाकी तरफ़से कुछ आदमी और स्त्रियां मेवाड़के दर्बारका मर्दानी व ज़नानी ढंग तथा रीति रवाज दर्याफ़्त करनेकी ग़रज़से उदयपुरमें आये थे, और उसी समयसे वहांके लोगोंका मेवाड़में आने जाने का सिलसिलह जारी हुआ, इसलिये यह सम्बन्ध देखकर उक्त रियासतका कुछ थोड़ासा इतिहास इस जगहपर दर्ज कियाजाता है.

नयपालका जुग्राफ़ियह.

नयपालका राज्य हिमालय पर्वतके दर्मियानी हिस्सहके दक्षिणी ढालके किनारे ५१२ मीलकी लम्बाई और १२० मीलकी औसत चौड़ाईमें ८०°६′ से ८८°१४′ पूर्व देशान्तर और २६°२५′ से ३०°१७′ उत्तर अक्षांशतक फैला हुआ है. इस राज्यके उत्तरमें हिमालय पर्वत और तिब्बत, पूर्वमें मेची नदी व सिकिम, दक्षिणमें हिन्दुस्तान का सूबह अवध तथा बंगालेके ज़िले, और पश्चिममें महाकाली नदी तथा सर्कार अंग्रेज़ी के कमाऊं व रुहेलखण्ड नामके ज़िले वाके हैं. इसका रक़बह ५४००० मील मुरब्बा, और आबादी अनुमानसे ४० लाख (१) मनुष्योंकी समझी जाती है; क़वाइदी फ़ौजकी तादाद क़रीबन् बीस या बाईस हज़ार (२) है, जिसमेंसे १५००० पन्द्रह हज़ार ख़ास राजधानीमें, १५०० पन्द्रह सौ पाल्पा स्थानमें, ५०० पांच सौ ठाड़ामें, ५०० पांच सौ धनकुटामें, और ४००० चार हज़ार इलाक़हमें मुतफ़र्रिक़ मक़ामातपर तईनात हैं. ख़ालिसहकी सालानह आमदनी १००००००० एक करोड़ रुपयेके क़रीब और इसीके

(१) डॉक्टर हंटर यहांकी आबादी सिर्फ़ २० लाख लिखते हैं, और नयपाली लोग ५० लाखसे भी अधिक बतलाते हैं, लेकिन् यहांपर जो मूलमें ४० लाख दर्ज की गई है, वह हेनरी एम्ब्रोज़के लेखके अनुसार है.

(२) हेनरी एम्ब्रोज़ सन् १८८० ई० के हालमें लिखते हैं, कि आज कल इस रियासतमें लड़ाईके वक़् काम देनेवाली सेनाकी संख्या ५६५८० है, जिसमें क़वाइदी तोपख़ानह सहित २७११४ सवार व पैदलोंके सिवा २९४६६ हथियार बन्द लोग दूसरे हैं, जिनकी संख्या सिपाहियोंमें नहीं समझी जाती; और ३६ बड़ी तथा ८ कई प्रकारकी छोटी छोटी तोपें हैं; लेकिन् मूलमें जो फ़ौजकी तादाद दर्ज है, वह नयपालके रहनेवाले पंडित टंकनाथके ज़बानी बयानके मुताबिक़ लिखी गई है.

लगभग खर्च समझा जाता है. सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से राज्यकी सलामी २१ तोपके अलावह वज़ीरकी सलामी १९ तोप, कमाण्डरइन्चीफ़की १७, चार कमांडिङ्ग जेनरलोंकी पन्द्रह पन्द्रह तोप, और इनके सिवा दूसरे जेनरलोंकी भी सलामी १३ से ११ तोपतक है. ये ऊपर लिखे हुए .उह्देदार वज़ीरोंके खानदानमेंसे होते हैं.

हेन्री एम्ब्रोज़ अपने बनाये हुए नयपालके इतिहासमें लिखते हैं, कि विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = .ई० १८१५] के पहिले नयपालका राज्य बहुत ही बड़ा था, और कमाऊं व सतलज नदीतक कुल पहाड़ी ज़मीन इसमें शामिल थी, लेकिन् डेविड ऑक्टरलोनी साहिबने उन सूबोंको गोरखा लोगोंसे छीन लिया, और विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = .ई० १८१६] में सर्कार अंग्रेज़ी व नयपालके मुल्ककी दर्मियानी सीमा महाकाली नदी क़रार पाई.

देशके कुद्रती हिस्से व सूरत- नयपालके राज्यकी कुल भूमि पहाड़ी और ऊंची नीची है, जगह जगह गहरी घाटियां और ऊंची पहाड़ियां नज़र आती हैं. पहाड़ियोंके भीतर पश्चिममें कमाऊंसे पूर्वकी ओर सिकिमतक नयपालके राज्यको बहुत बड़े और ऊंचे पहाड़, जो नन्ददेवी, धवलगिरि, गुसाईंस्थान और किंचिंजिंगा पहाड़ोंकी ऊंची चोटियोंमेंसे क्रमसे निकले हैं, तीन बड़े कुद्रती हिस्सोंमें तक्सीम करते हैं, जो क़रीब क़रीब चारों ओर पहाड़ोंसे घिरे हुए हैं; इन सब का ढाल दक्षिणकी तरफ़ है, और उनमेंसे पहिला करनाली अर्थात् घाघरा नदीका पहाड़ी खाल, दूसरा बीचका हिस्सह या गंडक नदीका पहाड़ी खाल, और तीसरा पूर्वी हिस्सह अथवा कोशी नदीका पहाड़ी खाल कहलाता है. इन तीन बड़े हिस्सोंके अलावह एक चौथा छोटा हिस्सह अथवा ज़िला अलग है, जिसमें वर्तमान राज्यकी राजधानी है. राज्यके दक्षिणी भागमें पालपा और बटव पहाड़ियोंके नीचे तथा उरेका नदीसे पूर्व मेची नदीके किनारेतक बाहिरी पहाड़ियों व अंग्रेज़ी सर्हदके बीचकी नीची ज़मीन, जिसका विस्तार २०० मीलसे अधिक है, नयपालकी तराई कहलाती है, जहां यूरोप तथा अन्य देशोंके सैर करनेवाले प्रतिष्ठित लोग, जो हिन्दुस्तानकी यात्राको आते हैं, अक्सर शिकारके लिये जाकर वहां क़ियाम करते हैं. तराईके ऊपर अर्थात् उत्तरको, दस दस बारह बारह कोसतक पहाड़ हैं, उन पहाड़ोंको तै करने बाद बड़ी बड़ी लम्बी चौड़ी दूनें मिलती हैं, जिनमें कोसोंतक सिवा मिट्टीके पत्थर नज़र नहीं आता, और उनसे आगे बढ़कर उत्तरकी तरफ़ बर्फ़िस्तानी हिमालय पहाड़ है. पहाड़ियोंके नीचे कहीं कहीं जंगलमें और कहीं कहीं नदियोंके तीरपर, जहां जंगल कटकर खेड़े तथा गांव बसगये हैं, छोटे छोटे

खेत फैले हुए हैं. मोरंगको छोड़कर तराईकी ज़मीन अक्सर अधिक सेराब व उपजाऊ है, जिसमें बालू, काली मिट्टी और चिकनी मिट्टी पाई जाती है; हर क़िस्मका अनाज, ऊख, अफ्यून, और तम्बाकू वगैरह चीज़ें इस ज़मीनमें अच्छी तरह पैदा होती हैं.

पहाड़—इस राज्यके उत्तर ओर हिमालय पहाड़ सिलसिलेवार बहुत दूरतक फैला हुआ है, जो नयपाल और चीनी सूबोंके दर्मियान एक कुद्रती सीमा है; हिमालय पर्वतके उस भागकी ऊंचाई, जो नयपालकी ओर झुका हुआ है, १६००० फ़ीट से लेकर २८००० फ़ीटतक है; यह हमेशह बर्फ़से ढका रहता है, और जगह जगहसे पानीके झरने जारी रहते हैं; इसकी सबसे ऊंची चोटियों अथवा शिखरोंमेंसे गुसाईस्थान और मुक्तिनाथ अथवा धवलगिरि पहाड़ तो नयपालकी सीमामें हैं, और नन्ददेवी. तथा किंचिंजिङ्गा कुछ फ़ासिलेपर वाके हैं. गुसाईस्थान और मुक्तिनाथका पहाड़ २४००० फ़ीटसे भी अधिक ऊंचे हैं.

गुसाईस्थान पहाड़ धवलगिरिसे १८० मील पूर्वकी ओर नयपालकी घाटीके उत्तरमें वाके है.

धवलगिरि या मुक्तिनाथका पर्वत नन्ददेवीसे २०० मीलके अनुमान पूर्वकी तरफ़ गोरखपुरके उत्तरमें वाके है.

नन्ददेवी नामका पहाड़ नयपालसे सम्बन्ध रखनेवाले हिमालयके भागकी पश्चिमी सीमापर कमाऊंके अंग्रेज़ी सूबेके बीचमें है. इस पर्वतसे वह धारें निकलती हैं, जिनके संयोगसे काली नदी बनी है.

किंचिंजिंगा पर्वत गुसाईस्थान पहाड़से १३० मील पूर्व दिशामें नयपाली हिमालयकी सबसे पूर्वी चोटी है; यह पहाड़ सिकिम देशके ऊपर और किसी क़द्र नयपालके चन्द पूर्वी सूबोंपर भी झुका हुआ है; इसके दक्षिणी ओरसे निकलने वाली शाखा सिकिम और नयपालके बीचकी सीमाका एक भाग है.

जंगल—यह इलाक़ह पहाड़ी और सेराब होनेके सबब चारों ओर जंगलसे ढका हुआ है, आबादी बहुत कम हिस्सोंमें पाई जाती है, जंगलोंमें जहांपर बर्फ़ गिरता है, देवदारू व निगाला (छोटी गांठों वाला बांसकी क़िस्मका एक वृक्ष) आदि वृक्ष और बर्फ़के नीचे वाले जंगलोंमें साल (साखू), चीढ़, साग, सेमल, चंपा, आम, महुवा, जामुन और कहीं कहीं बड़, पीपल, नीम, खनाया और खसरता (१), बांस, बकायन, सीताफल और भिलामा वगैरह बहुतसी क़िस्मके दरख़्त होते हैं. तराई अर्थात् कजलीवनमें, जिसका ज़िक्र पहिले भी होचुका है, साल, शीशम, साग आदि अनेक प्रकारके दरख़्तोंका गुंजान जंगल फैला हुआ है, कहीं कहीं

(१) नयपालके लोग इन दरख़्तों को काटकर गाय, भैंसोंको खिलाते हैं.

नींबू, नारंगी और दो प्रकारके जंबीर (१) भी पाये जाते हैं. जंगली जानवरोंमेंसे ऐसे जानवर बहुत ही कम होंगे, जो इस .इलाक़हके जंगलोंमें न पाये जाते हों. हरिण, थार, सांभर, चीता, सिंह, रीछ, बुवासा (२), ख़रगोश और चीतल वगैरह जानवर चारों ओर फिरते दिखाई देते हैं. बर्फ़िस्तानके आस पास कस्तूरिया हरिण, मुश्कबिलाई और नाहर पायेजाते हैं. तराईके जंगलमें हाथी अधिक होनेके अलावह अरना भैंसा, नील गाय, और गौरी गाय वगैरह सब तरहके जानवर रहते हैं. गौरी गायके सींगोंसे नयपाली लोग शिवके लिये जलहरी बनाते हैं; यह जानवर मनुष्यको मारनेके लिये बहुत पीछा करता है, यहांतक, कि अगर आदमी दरख़्तपर भी चढ़जावे, तो तीन तीन दिनतक उसी वृक्षके नीचे घूमा करता है. पक्षियोंमें बाज़, बहरी, मैना, पट्टू, चकोर, तीतर, मोर व जंगली मुर्ग़े वगैरह जानवर देखनेमें आते हैं, और बर्फ़िस्तानी मक़ामातमें मुहनाल नामका बहुत ख़ूबसूरत और मोरसे कुछ छोटा लाल रंगका एक पक्षी पायाजाता है, जिसके कुल शरीरपर सिफ़ेद व हरे छींटे होते हैं. नयपाली लोग नर पक्षीको 'डांफे' और मादहको 'मुहनाल' नामसे पुकारते हैं.

धातुकी खानें- इस राज्यमें राजधानी काठमांडूसे दस बारह कोसके फ़ासिलेपर इलाक़हमें पश्चिमकी तरफ़ तांबेकी बहुतसी खानें और उत्तर पश्चिम कोणमें क़रीबन् १८कोस की दूरीपर गंधककी एक खान है. लोहेकी खानें यहां बहुतसी जगह पाई जाती हैं, और राजधानीसे कुछ दूर एक शोरेकी खान तथा .इलाक़हके बाज़ बाज़ स्थानोंमें सीसे, रांगे, हरिताल, और सिंदूरकी खानें भी हैं.

नदियां- महाकाली या सरजू नदी, करनाली या घाघरा नदी, राप्ती, सप्त गंडकी और सप्त कोशी इस राज्यकी प्रसिद्ध नदियां हैं, जिनका मुफ़स्सल हाल मए उनकी सहायक धाराओंके नीचे लिखा जाता है:-

महाकाली या सरजू नदी- यह नदी नन्ददेवी पहाड़के पूर्व तरफ़ बहती हुई पहाड़ियोंके भीतर ९० मीलके क़रीब दक्षिण दिशामें जाती और नयपालके राज्यको सर्कार अंग्रेज़ीके सूबह कमाऊंसे जुदा करती है. यह रेतीले पहाड़की एक घाटीमें होकर मैदानमें

---

(१) यह फल सूरत, शक्ल व रंगमें नारंगीसे बहुत कुछ मिलता जुलता और स्वादमें उससे बढ़कर होता है.

(२) यह जानवर क़दमें कुत्तेसे किसी क़द्र बड़ा और सूरतमें सूअरके समान होता है, इसके पंजों व पूंछके सिरेपर, याने अख़ीरमें गुच्छेदार बाल होते हैं. इसकी निस्बत कहा जाता है, कि यह हरएक चौपायेके पेटसे आंतें निकालकर उसे मार डालता है, और वही उसकी ख़ुराक है.

पहुंचनेके बाद दक्षिण और पूर्वकी ओर गुज़रती हुई ५० मीलतक नयपाल और अंग्रेज़ी सूबह रुहेलखण्डकी दर्मियानी सीमा क़ाइम करती है, और वहांसे हिन्दुस्तानके सूबह अवधमें दाख़िल होकर घाघरा या करनाली नदीमें शामिल होजाती है.

करनाली या घाघरा नदी - इसका पहिला नाम ख़ासकर उस हिस्सहका है, जो पहाड़ियोंके दर्मियान होकर गुज़रता है, और जब खुले हुए मैदानमें दाख़िल होती है, तो वहां घाघरा नामसे पुकारी जाती है. इसकी सबसे बड़ी शाखा करनाली बर्फ़के पहाड़के उत्तर मानसरोवर भीलके पाससे निकलती है, और तकलखर घाटीमें होकर नयपालके राज्यमें प्रवेश करती है, यहांसे नयपालकी कई छोटी छोटी नदियों और नालोंका पानी लेती हुई पहाड़ियोंके बाहर गुज़रकर चौड़े मैदानोंमें दाख़िल होती है, और वहांपर बहुत छोटे नदी नाले और काली तथा राप्ती नदियों को अपने शामिल लेती हुई दीनापुरसे कुछ ऊपरकी तरफ़ चौड़े पाटसे गंगा नदी के साथ जा मिलती है.

राप्ती नदी - यह धवलगिरि पर्वतके पश्चिमी ढालसे निकलकर करनालीकी ओर आजाती है, और आसपासकी पहाड़ियों व भीतरी पहाड़ी सिल्सिलेसे निकली हुई बहुतसी नदियोंको अपने शामिल करती हुई पहाड़ियोंमेंसे गुज़रकर अवधके उत्तर पूर्व कोणको पार करती और वहांसे गोरखपुरके ज़िलेमें होकर घाघरा नदीसे जा मिलती है.

गंडक नदी - जो सप्त गंडकीके नामसे भी प्रसिद्ध है, हिमालय पहाड़से निकलकर रियासत नयपालके मध्य भागमें बहती है, और १ - बरीगर, २ - नारायणी या शालिग्रामी, ३ - श्वेत गंडकी, ४ - मरस्यंगदी, ५ - दर्मदी, ६ - गंडी, और ७ - त्रिशूल गंगा नामकी सात नदियोंको साथ लेती हुई, जो बर्फ़ या आस पासकी पहाड़ियोंके मुतफ़र्रक़ मक़ामातसे निकलकर मैदानकी तरफ़ आती हुई एक दूसरीके निकट चली आती हैं, और जिनसे इसका नाम सप्त गंडकी मश्हूर है, गंडक घाटीमें होकर पहाड़ियोंसे बाहिर निकलती है, और यहांसे पूर्व तथा दक्षिणकी तरफ़ बहकर सारनके अंग्रेज़ी सूबहमें बहती हुई पटना नगरके साम्हने हरिहर क्षेत्रमें गंगाके शामिल होजाती है. इस नदीकी शाखाओंमेंसे बरीगर नदी धवलगिरि पर्वतके पूर्वी ढालसे निकलकर दक्षिण और पूर्वकी तरफ़ सूबह खांची और इसके दक्षिण ओर गुल्मीके ज़िलेको सूबह मलीबूसे जुदा करती हुई नारायणी नदीमें जा मिलती है. नारायणी नदी धवलगिरि पहाड़में कई धाराओंसे निकलती है, जिनमें मुख्य और सबसे बड़ी सहायक धारा या तो मुक्तिनाथपर अथवा इससे कुछ दूर उत्तरकी ओर मुस्तांको जानेवाली

सड़कपर निकलती है, इस नदीको शालिग्रामी इस कारण कहाजाता है, कि इसके पेटमें और ख़ासकर उस स्थानके पास जहांसे, वह निकली है, शालिग्रामकी मूर्तियां अर्थात् छोटे छोटे गोल क़ीमती पवित्र पत्थरके टुकड़े पाये जाते हैं; इस नदीका बालू धोनेसे कुछ सोना भी निकलता है. ये दोनों नदियां मिलकर काली गंडकके नामसे दक्षिण तथा पूर्वकी तरफ़ बहती हुई पाल्पा सूबहकी दक्षिणी सीमा क़ाइम करती हैं, और इसको गढ़-हून ज़िलेसे जुदा करती हुई चितवनकी घाटीतक पहुंचकर देवघाटपर दूसरी गंडकों के संगमसे जा मिलती है. श्वेत अथवा सेती गंडकी नदी मुस्तां घाटीके पूर्व तरफ़ मछिया पूंछर (मछलीकी पूंछ) नामी पहाड़के बर्फ़से निकलती है, और ठीक दक्षिणमें बहती हुई देवघाटके निकट कैफ़ुलघाटपर त्रिशूल गंगासे मिलजाती है. मरस्यंगदी नदी बर्फ़िस्तानी पहाड़के रुईभोट डूंगरमें लमजुंके उत्तर और गोरखाके पश्चिमोत्तर लक़वाबसियारी स्थानसे निकलकर दक्षिणकी ओर श्वेत गंगा नदीके बराबर बहती और गोरखा सूबहकी पश्चिमी हद क़ाइम करती हुई देवघाटके निकट त्रिशूल गंगासे जा मिलती है. दर्मदी नदी टाकू पहाड़पर माला पर्वतके पश्चिम और गोरखाके उत्तर बर्फ़मेंसे निकलकर, और दक्षिणकी तरफ़ गोरखा सूबहमें बहने बाद धरबङ्ग घाटपर गंडी नदीसे मिलजाती है. गंडी नदी माला नामी पहाड़से निकलकर गोरखा सूबहमें गुज़रतीहुई दर्मदी नदीसे मिलने बाद त्रिशूल गंगामें मिलती है, और त्रिशूल गंगा, जो गंडककी शाखाओंमेंसे सबसे पूर्वी है, गुसाईंस्थान पर्वतके बहुत ऊंचे शिखरोंके नीचे वाली एक घाटीके बाईस भील या कुंडोंमें सबसे बड़े झीलसे निकल कर पश्चिम और दक्षिणकी तरफ़ बहने बाद नयपालसे गोरखा सूबह और लमजुं व तनहुं ज़िलोंको अलग करती है. इस नदीका भी बालू धोकर सोना निकालते हैं; इस में रसूआ नामकी एक नदी शामिल हुई है, जो केरुं घाटीके पाससे निकलती है, रमचा स्थानके नीचे यह बड़ी गंडकसे जा मिली है, और उस शहरसे ३ या ४ मील नीचे हटकर तादी या सूरजवती नदी इसमें गिरती है, जो त्रिशूल गंगाके निकाससे २ या ३ मीलकी दूरीपर गुसाईंस्थानकी बाईस झीलोंमेंसे सूर्यकुण्ड नामके सबसे पूर्वी भीलसे निकली है. तादी नदी पहिले कुछ कुछ पूर्वकी ओर बहती है, और बाद इसके पश्चिमको फिरकर जिबजिबियाके दक्षिणी आधारको तर करती और अपनी मददगार लिखू तथा सिंदूरिया नदियोंको साथ लेती हुई नुवाकोटकी घाटीमेंसे गुज़रकर देवीघाट मक़ामपर त्रिशूल गंगासे जा मिलती है. तादी और त्रिशूल गंगाके संगमसे ३ या ४ मीलके फ़ासिलेपर एक लकड़ीका पुल त्रिशूलीपर बना है, जिसपर होकर काठमांडूसे गोरखाको सड़क गई है; इस पुलपर रियासतकी तरफ़से सिपाहियोंका पहरा रहता है, जबतक कि कोई मुसाफ़िर गोरखाका हो अथवा

नयपालका हो, राज्यसे पर्वानह हासिल न करले, इसको पार नहीं कर सक्ता. बर्सातके मौसममें त्रिशूली तथा तादीका पानी बहुत जल्द बढ़ता और बड़े वेगसे बहता है, यहांतक, कि बड़े बड़े पत्थर और चटानोंके टुकड़े उसके साथ देवीघाटतक टकराते हुए बहकर चले आते हैं.

ऊपर बयान की हुई नदियोंके अलावह और भी कई छोटी पहाड़ी नदियां गंडक नदीमें मिलती हैं, जिनमेंसे राप्ती नदी, जो भीमफेदीके पाससे निकलकर हथवाराके पास और चितवनकी घाटीमें होती हुई पश्चिमकी तरफ़ सोमेश्वर पहाड़से १५ मील उत्तर गंडक नदी में गिरती है, अधिक प्रसिद्ध है.

सप्त कोशी नदी- यह नदी नयपालके उस पहाड़ी भागसे निकली है, जो हिमालय पर्वतके ऐवरेस्ट नामी शिखरके पश्चिममें वाके है. इसमें उन सात मुख्य नदियों अर्थात् मिलम्ची, भोटे कोशी, तांबा कोशी, लिखू, दूध कोशी, अरुण और तमोर के सिवा, जिनके मिलनेसे इस नदीका नाम सप्त कोशी रक्खा गया है, कई छोटी नदियां और भी गिरती हैं. ऊपर लिखी हुई तमाम नदियां बर्फ़िस्तानी पहाड़ोंसे निकलकर पहाड़ियोंके दर्मियान एक दूसरीके बराबर बहती हुई नीचेकी तरफ़ बाराह क्षेत्र स्थानके पास आपसमें मिलजाती हैं, जहांसे इन सबका पानी एक बड़ी नदी बनकर मैदानमें दाख़िल होता है. पहाड़ियोंके बाहिर निकलने बाद कोशी नदी अपने दाहिने किनारेकी तराईको बाएं किनारे परके मोरंग नामी नयपाली सूबहसे जुदा करती, और बाद उसके .इलाक़ह अंग्रेज़ीमें दाख़िल होकर पुर्निया ज़िलेमें बहती हुई बगलीपुरके कुछ नीचे तथा राजमहल पहाड़ियोंके पूर्वोत्तरी कोणके साम्हने गंगा नदीमें गिरती है. मिलम्ची नदी गुसाईंस्थान पर्वतके पूर्व तरफ़ जिबजिबियासे निकलती और पहाड़ियों तथा घाटियोंमें बहती हुई दौलतघाट मक़ामपर भोटे कोशीसे संगम करती है. भोटे कोशी नदी तिब्बतमें टिंगरी मैदानसे निकलकर एक घाटी में बहने बाद मिलम्चीसे जा मिलती है, और वहांसे दोनों एकत्र होकर सुन् कोशी नामसे बाराह क्षेत्र घाटपर अरुण और तमोरके संगमसे मिलजाती हैं. तांबा कोशी, लिखू और दूध कोशी, ये तीनों कुती और हथिया घाटियोंके दर्मियानी बर्फ़के पर्वतसे निकलती और दक्षिण पश्चिमकी तरफ़ एक दूसरीसे समानान्तर रेखापर बहती हुई सुन् कोशी नदीमें दाख़िल होती हैं, जो इसी तरहपर ज़िलेकी पांच नदियोंका पानी लेती हुई कोशीमें जा मिलती है. अरुण नदी सप्त कोशीकी सबसे बड़ी सहायक नदी है. इसके कई निकास हैं, जिनमेंसे चन्द बर्फ़िस्तानी पहाड़के उत्तरी अथवा तिब्बतकी तरफ़ और चन्द दक्षिणकी तरफ़ हैं, परन्तु मुख्य निकास भोटे कोशीके

निकाससे निकट ही है, जहांसे यह निकलकर हथिया घाटीमें होती हुई नयपालमें प्रवेश करती है, और .इलाक़हकी कई छोटी नदियोंका पानी लेकर मैदानमें दाख़िल होनेसे पहिले बीजापुर नगरसे २० मील पश्चिमोत्तर कोणपर बाराह क्षेत्र घाटके पास सुन् कोशीसे जा मिलती है. तमोर नदी, किंचिंजिंगा पहाड़के पश्चिमी ढाल तथा सींगीलैला पहाड़से निकलती, और दक्षिण पश्चिम तरफ़ बहकर बाराह क्षेत्र घाटपर अरुण व कोशी नदियोंमें जा गिरती है.

झील या तालाब- नयपालके राज्यमें मुख्य तीन झील हैं, जो काठमांडूसे ४६ कोस पश्चिम पोखरा नामी क़स्बहके आसपास दो दो तीन तीन कोसके फ़ासिलेपर एक ही जगह हैं, जिनमें सबसे बड़ा फेवा ताल है, जिसका घेरा अनुमान तीन कोस के समझा जाता है, और दूसरे दो भी इसीके लगभग अथवा कुछ कम लम्बे चौड़े हैं; इनके सिवा और कोई कुद्रती झील या बांधा हुआ प्रसिद्ध ताल नहीं है. क़रीब क़रीब कुल मुल्क पहाड़ी और बर्फ़िस्तानी होनेके सबब झरनोंके छोटे छोटे कुंड अलबत्तह हरएक जगह कस्रतसे दिखाई देते हैं.

आब हवा व बारिश- पहाड़ी आब हवा यहांकी अच्छी है, और ख़ासकर उन स्थानों की, जहां बर्फ़ गिरता है; वहांके रहनेवाले लोग बहुत कम बीमार होते हैं, बल्कि अन्तकाल के समयसे पहिले बीमार ही नहीं होते; पहाड़ोंके बीच बीच व्यासी (खोल या खादरे) में, जहांपर चावल वग़ैरह पैदा होते हैं, आब हवा बिल्कुल ख़राब है. इस जगह "अवल" नामक एक प्रकारका बुख़ार इस कस्रतसे होता है, कि अगर मनुष्य एक रात भी वहां रहजावे, तो बुख़ार ज़रूर उसको लिपट जाता है. कहते हैं, कि इस ज्वरका रोगी या तो पांच दस रोज़में मर ही जाता है, या छः महीनेसे तीन वर्ष तक बराबर कष्ट भोगता है; यह बीमारी आठ महीने, याने चैत्रसे कार्तिकतक बड़े ज़ोर शोरके साथ रहती है, केवल चार महीनेके लिये लोगोंको आराम लेने देती है.

नयपालके चितवन नाम एक स्थान (जंगल) में यह बुख़ार अपना इसक़द्र ज़हरीला असर करता है, कि गत समयमें यदि नयपालके राज्यमें किसी अपराधीको मौतकी सज़ा देना होता, तो उस मनुष्यको उक्त जंगलमें लेजाकर दही व चिवड़ा खिलाने बाद वृक्षोंके हरे पत्तोंपर सुलाकर ऊपरसे पत्ते ढक देते थे; थोड़ी देर बाद उस बुख़ार (अवल) का अपराधीके शरीरपर ऐसा तेज़ असर होता था, कि मानो हुक्म होते ही जल्लादने काम तमाम किया हो, एक ही रातमें मनुष्य मरजाता था; परन्तु यह रवाज हालमें बन्द है. तराईके बाशिन्दे थारू (किसान जाति) इस रोगके मारे एक बुरी शक्लके

और हमेशह बीमार रहते हैं, उनके हाथ पैर पतले और पेट बड़ा होजाता है, आंखें और बदन बिल्कुल ज़र्द दिखाई देने लगता है. इसी ज्वरके भयसे व्यासी (खादरों) में तो चावल आदि की खेती करनेके अलावह कोई शरूस दिन या रातको वहां नहीं रहता; इस बीमारीका हमलह नींदकी हालतमें एक दम होता है, इस कारण ऐसे स्थानोंमें किसान लोग भी रातको नहीं रहते. सप्त कोशी व सप्त गंडकी नामी नदियोंकी धाराओंके किनारे चालीस पचास क़दमके फ़ासिलेतक तो सोने बैठनेमें कुछ हर्ज नहीं, क्योंकि वहांपर इस ज्वरका असर नहीं होता. नयपाल राज्यके सब स्थानों (व्यासी) में पहाड़ोंकी ऊंचाईपर पाव कोसतक अवल अपना पूरा पूरा असर करता है, जहां सर्दीके दिनोंमें पहरभर दिन चढ़ेतक सूर्य नहीं दीख पड़ता, केवल धुंध छाया रहता है. बर्फ़के स्थानोंमें सदैव थोड़ी बहुत वर्षा होती रहती है, बाक़ी मक़ामातपर वर्षा ऋतुमें मेह खूब बरसता है, और वैशाख महीनेमें भी अवश्य एक दो बार पानी अच्छा होजाता है, बल्कि यों कहना चाहिये, कि आश्विन महीनेसे पौषके अख़ीरतक केवल चार मास छोड़कर बाक़ी आठ महीनोंमें थोड़ा बहुत पानी बराबर बरसता रहता है, और यही कारण वहांपर अकाल कम पड़नेका है.. नयपालकी तराईमें वर्षा ऋतुमें मामूली तौरपर पानी बरसता है. इस मुल्कके पहाड़ी ग्रामोंमें कुएं नहीं हैं, वहांके निवासी झरनोंसे काम चलाते हैं, अल्बत्तह नयपालके बड़े शहरों काठमांडू, भदगांव व पाटण आदिमें अक्सर हरएक शख़्सके घरमें इंदार (कुएं) हैं, जिनमें ज़ियादहसे ज़ियादह दस हाथकी गहराईपर पानी पाया जाता है.

पैदावार- यहांकी मुख्य पैदावारी चीज़ें चावल, मक्का, कोदूं, उड़द, मूंग, चवला, कुछ कम जवार, गेहूं, जव, तिल, कपास, दो प्रकारका मटर, तीन चार प्रकारका सांठा (ऊख), और आलू, पिंडालू, मूली, बैंगन, खुरसानी (लाल मिर्च), धनिया, हल्दी, अजवाइन, सौंठ, बड़ी इलायची, सरसौं, राई, पाट (सण), पियाज़ व लहसुन, वगैरह कुल चीज़ें थोड़ी बहुत होती हैं. तराईमें चना, मसूर, अरहड़, तम्बाकू, अफ़्यून और किसीक़द्र कुसुम भी पैदा होता है. भंग, गांझा, और चरस कस्रतसे निपजता है.

ज़ात और फ़िर्क़े- इस देशमें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ जातियोंके मनुष्य रहते हैं:-

ब्राह्मण- पूर्विया और कुमौंचली ब्राह्मणोंके सिवा, जो अस्लमें कान्यकुब्ज हैं, नयपालमें चन्द महाराष्ट्र और मैथिल ब्राह्मण भी रहते हैं. जैसी (गोलक) जातिके ब्राह्मण, जो इस देशमें विशेष पायेजाते हैं, अस्लमें ब्राह्मण नहीं हैं, बल्कि वह एक दोगली नस्ल है, अर्थात् पतिके मरजाने बाद जब कोई विधवा ब्राह्मणी किसी दूसरे ब्राह्मणसे

संगम करती है, और उससे जो सन्तान उत्पन्न होती है, वह जैसी (गोलक) कहलाती है.

क्षत्रियोंमेंसे, जिनको नयपालके देशमें ठकुरी कहते हैं, सिंह, साही, मल्ल, शेन और चन आदि जातियोंके लोग पहाड़ी और वहांके प्राचीन बाशिन्दे तथा उत्तम राजपूत समझेजाते हैं. इनके सिवा हमाल नामकी एक और जाति है, जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण जातिके पुरुष और क्षत्री जातिकी कन्यासे बतलाते हैं. इन सबके आपसमें सम्बन्ध होते हैं.

खस भी एक प्रकारके क्षत्री हैं, ये लोग पांडे, थापा, बोहरा, पन्थ, वस्न्यात, कारकी, विष्ट, अधिकारी, बानिया, घरती, कंवर, भंडारी, और मांझी आदि पदसे पुकारेजाते हैं, इन सबके आपसमें विवाह शादी होते हैं. जो सन्तान ब्राह्मण पुरुष और दूसरे किसी अन्य वर्णकी स्त्रीसे उत्पन्न होती है, वह यहांपर खत्री जातिके नामसे प्रसिद्ध है. तीन पीढ़ीतक खत्रियोंका विवाह सम्बन्ध खत्रियोंमें ही होता है, और इसके बाद वे खसोंमें मिलजाते हैं.

सिपाहगरीका पेशह इस राज्यमें मुख्य सात जातिके लोग करते हैं, अर्थात् ठकुरी, खस, मगर, आगरी, गुरुं, लिम्बू, और किरांती. भाट, सन्यासी, जोगी कंवर, खवास, चेपांग और लामा जातिके लोगोंके हाथका जल ब्राह्मणतक पीलेते हैं. सारकी, कामी, दमाई और गांयने जातिके लोग ओछी क़ौममें समझे जाते हैं, इनके हाथका जल उच्च जातिवाले नहीं पीते. ये ऊपर लिखी जातिवाले पर्वते कहलाते हैं.

नेवार - नेवारोंमें दो फ़िर्क़े हैं- १ - शिवमार्गी, और २ - बौद्धमार्गी; इन दोनोंमें परस्पर बेटी व्यवहार नहीं होता, और जो श्रेष्ठ समझे जाते हैं, उनके यहांका जल ब्राह्मण आदि लोग पीते हैं. शिवमार्गी नेवारोंमें श्रेष्ठ, जोसी, और आचार्य नामकी तीन जातियां हैं. ये लोग पूजा, महाजनी व्यापार, मुन्शीगरी और वैद्यका काम करते हैं.

बौद्धमार्गियोंमें बांड़ा, और उदास शामिल हैं, उनका पेशह महाजनी व्यापार, दस्त-कारी तथा हिसाबी काम है. इन लोगोंमें जब कोई मर्द या औरत मरती है, तो उसे मरने से कुछ काल पहिले सबसे ऊंचे मकानमें लेजाते हैं, और जब वह मरजाता है, तो उसके कुटुम्ब तथा रिश्तहके लोग शामिल होकर दो तीन दिनतक मुर्देके आगे बाजा बजाते, और पूजन तथा भोजन करते हैं. तीन दिन बाद मुर्देको एक खट (विमान) पर कपड़े पहिनाकर बिठा देते हैं, और पूजा करके बाजा बजाते, दीप धूप देते, और पाठ करते हुए उसको श्मशानमें लेजाकर जलादेते हैं. सातवें दिन ऊपर लिखी हुई रीतिसे भात देते, और अपने जातिवालोंको भोजन कराते हैं; इसी दिन उनके यहां सूतकसे शुद्धि होना माना जाता

है. नीची जातिके नेवार, पुतुवार, ज्यापू, सालमी और नाऊ (नाई) हैं, जिनके हाथका पानी सब लोग पीते हैं. क़साई, कुशल्ये और कूलू कनिष्ठ जातिके नेवार हैं, जिनमेंसे क़साईका काम मांस बेचना, कुशल्येका काम देवालयोंमें बाजा बजाना तथा कपड़ा सीना, और कूलूका पेशह ढोल, डफ़ आदि बाजोंपर खाल मढ़ने का है. सबसे नीच जातिके नेवार, जिनसे दूसरी जातियोंके लोग स्पर्श नहीं करते, पोढ़े और च्यामाखलक हैं. इनमेंसे पहिली जातिवाले जल्लाद और श्मशानके चांडालका काम करते हैं, और दूसरी जातिका पेशह भंगीका कर्म है.

ऊपर लिखी जातियोंके सिवा पहाड़ी, कुम्हाले (कुम्हार), दनुवार, मांझी, ब्राह्मू, दर्री, मुरमी, कुसुंडा (भिल्ल), मुसल्मान, धोबी और कई पेशहवाले लोग आबाद हैं.

भिल्लोंकी बाबत कहा जाता है, कि ये लोग हमेशह जंगलमें रहते और जंगली जानवरों तथा कन्द मूल आदिपर अपना निर्वाह करते हैं, वे गांवोंमें बहुत कम आते हैं, और सात दिनसे ज़ियादह एक जगह नहीं रहते.

हेनूरी एम्ब्रोज़ अपनी पुस्तकमें लिखते हैं, कि नयपालके नेवार लोगोंमें एक तिहाई हिस्सह तो शिवकी पूजा करनेवाला और बाक़ी, याने दो तिहाई, बौद्ध मज़्हब को माननेवाला है, अर्थात् इस देशमें ज़ियादह तर बौद्ध मज़्हब माना जाता है. शिवमार्गी नेवारोंमें उक्त साहिबके बयानके मुवाफ़िक़ नीचे लिखे हुए चौदह भेद हैं:-

१- उपाध्याय पुजारी, अर्थात् सबसे ऊंची जातिके ब्राह्मण, जिनको तलेजूके मन्दिरमें जानेका अधिकार है; २- लवरजू, यह भी ब्राह्मण और पुजारी हैं, परन्तु उपाध्यायसे उतरते हुए समझे जाते हैं; ३- देवभाजू ब्राह्मण, जो वहांके लोगोंको बीमारीकी हालतमें आत्मा सम्बन्धी शिक्षा करते हैं, लेकिन् वह वैद्यका कार्य नहीं करते, अर्थात् औषधि नहीं देते.

४- थकूजू या मल्ल, क्षत्री जो वहांके अस्ली राजाओंकी जातिके हैं; उनमेंसे अक्सर लोग पहिले पल्टनोंमें सिपाहगरी करते थे, लेकिन् वे सौदागरी और दूसरे लोगोंकी नौकरी कभी नहीं करते; ५- निक्खू क्षत्री, जो चन्द धर्म सम्बन्धी लीलाओंकी चित्रकारी करते और देवताओंकी मूर्तियोंको रंगते हैं, लेकिन् वे आम दरजहके चित्रकार नहीं हैं; ६- शियाशू क्षत्री, और ७- शरिस्ता क्षत्री, जो पल्टनोंमें सिपाहगरीकी नौकरी करते थे. इन सब जातियोंमें परस्पर भोजन व्यवहार तथा बेटी व्यवहार होता है.

८- जोशी वैश्य, जो न ब्राह्मण हैं और न पुजारी, उनका काम शास्त्र समझानेका है; ९- आचार्य वैश्य, जिनका कार्य काठमांडू और भदगांवके तलेजू के मन्दिरोंमें पूजन करना है, लेकिन् ये ब्राह्मण नहीं हैं; १०- भन्नी वैश्य, जो तलेजूके मन्दिरोंमें देवताओंके लिये नैवेद्य तय्यार करते हैं; ११- गावक आचार्य वैश्य, जो केवल छोटे मन्दिरोंके पुजारी हैं, वे ऐसे मन्दिरोंमें श्राद्ध इत्यादि कर्मोंके सर्बराहकार होते हैं, लेकिन् मुख्य श्राद्ध कर्मोंसे हक़ीक़तमें कुछ सम्बन्ध नहीं रखते.

१२- मांखी शूद्र, आम दरजेके रसोईदार, अर्थात् खाना पकाने और खिलाने वाले लोग हैं; १३- लखिपर शूद्र, ये भी मांखियोंसे मिलते हुए, लेकिन् उनसे कुछ घट कर हैं, इनका काम घरेलू नौकरी है, उत्तम जातिके कुल हिन्दू लोग इनके हाथका छुआ हुआ खाना खाते हैं; और १४- बाघोशा शूद्र, जो रसोईका काम छोड़कर कुल आम काम करने वाले नौकर हैं.

ऊपर लिखे हुए १४ जातिके हिन्दू आपसमें एकट्ठा नहीं खाते, और न इनमें परस्पर बेटी व्यवहार होता है, कुल १४ जातियोंमें पहिली ३ ब्राह्मण, ४ क्षत्री, ४ वैश्य और अख़ीरकी ३ शूद्र समझी जाती हैं.

बौद्धमार्गी नेवारोंके तीन बड़े दरजे, याने १- सच्चे बंध्य या बंघड़, २- सच्चे बौद्ध, जो उदास भी कहलाते हैं, और ३- वे लोग, जो बौद्ध और शिव दोनोंको मानते हैं. इन तीनों जातियोंमें प्रथक प्रथक कई उपजाति अथवा भेद हैं, और हरएकका ख़ास पेशह है.

सच्चे बंध्य या बंघड़ोंकी ९ उपजाति हैं- १- घूगरजू, जिनमें सबसे ऊंचे दरजहके पुजारी, अर्थात् बज्राचार्य (बौद्ध मन्दिरोंके पुजारी) होते हैं; लेकिन् ये लोग केवल पूजा करनेके वास्ते ही बद्ध नहीं हैं, बल्कि इनमेंसे जो कम लिखे पढ़े हैं, वे खेती, नौकरी और दस्त-कारीका पेशह करते हैं, २- बईजू, ३- विक्खू, ४- भिक्षु (१); और ५- नेभर. पिछली चारों जातिके लोग सुनारका काम करते हैं. ६- निभर भरही, जिनका पेशह पीतल और लोहेके बर्तन, देवताओंकी धातुकी मूर्तियां बनाना और बर्तनोंपर क़लई करना है; ७- टकरमी, अर्थात् भरावे, जो लोहे पीतल या दूसरे धातुकी तोपें और बन्दूक़ें बनाते हैं; ८- गंगस भरही और ९- चिवर भरही; इन दोनों जातिके लोग खाती और सिलावट, याने मकानों वग़ैरहपर चूना और आराइश लगानेका काम करते हैं.

ऊपर लिखे हुए ९- जातिके बंघड़ आपसमें विवाह शादी करते और एक दूसरे के साथ खाते पीते हैं.

---

(१) इनका मुख्य ख़ानदानी पेशह सोने चांदीका काम बनाना है, लेकिन् छोटे दरजे वाले लोग पुजारीका काम भी करते हैं.

सच्चे बौद्धोंमें ७ भेद हैं- १- उदास, याने महाजन (१) और विदेशी सौदागर, जो ख़ासकर तिब्बत तथा भूटानमें सौदागरी करते हैं; २-कसारे या ठठेरे; ३-लोहार कर्मी, अर्थात् संगतराश, जो पत्थरकी मूर्तियां, मन्दिर व मकानात बनाते हैं; ४- शिकर्मी या बढ़ई; ५- थम्बत- पीतल, तांबा और जस्तेके बर्तन वगैरह बनानेवाले; ६- अवाल, याने खपरेल (केलू) बनानेवाले; ७- मद्यकर्मी, रोटी बनानेवाले. ये सातों जातिवाले आपसमें खाते पीते और शादी विवाह करते हैं, बंघड़ लोगोंके हाथका ये सब खालेते हैं, लेकिन् बंघड़ोंको इनके हाथके बनाये हुए भोजनसे पर्हेज़ है, और वे इनके साथ सम्बन्ध भी नहीं रखते.

छोटे दरजहके बौद्ध, जो आम तौरपर शिव और बौद्ध दोनोंको पूजते हैं, उन में नीचे लिखे हुए ३८ फ़िर्के हैं:-

१- मू, अर्थात् एक प्रकारके माली; २- डूंगल, याने ज़मीन नापने वाले; ३- ज्यापू (किसान); ४- कुम्हार; ५- करबुझा (मृत कर्मोंमें बाजा बजाने वाले); और ६- बोनी याने खेत जोतने वाले.

ऊपर लिखी हुई ६ जातियोंमेंसे हरएक जातिवाले थोड़ी बहुत खेतीबाड़ी अवश्य करते, और आपसमें भोजन तथा बेटी व्यवहार रखते हैं.

७- चित्रकार; ८- भट्ट, अर्थात् ऊनी कपड़ोंपर रंगत करनेवाले; ९- छीपा; १०- कव्वा या नकर्मी, अर्थात् तलवार छुरी आदि लोहेके हथियार बनानेवाले; ११- नाई; १२- सालमी (तेली); १३- टिप्या, याने शाक भाजी बोनेवाले; १४- पुलपुल, जो मृत कर्मोंमें मश्अ़ल जलाते हैं; १५- कौसा (शीतलाका टीका लगानेवाले); १६- कोनार (केवल चरखा बनानेवाले खाती); १७- गढठो (माली); १८- कठार (जर्राह); १९- ताती (कफ़नके वास्ते कपड़ोंमें रूई भरने वाले); २०- बलहेजी, और २१- यूगवार. ये दोनों एक प्रकारके खाती हैं; २२- बाल्ला; २३- लांमू (पालकी उठानेवाले कहार); २४- दल्ली, एक प्रकारके सिपाही; २५- पीही टोकरी (गांछे); २६- गौवा; २७- नन्द-गौवा; ये दोनों चर्वाहे हैं, और आपसमें भोजन तथा बेटी व्यवहार रखते हैं; २८- बल्लहमी, लकड़ी काटनेवाले; २९- गवकव, और ३०- नल्ली. ये तीस प्रकारके बौद्ध अगर्चि बंघड़ों और सच्चे बौद्धोंसे घटकर हैं, तोभी उत्तम समझेजाते हैं, और प्रत्येक हिन्दू इनके हाथका जल पीलेता है.

---

(१) बनियोंकी इस देशमें कोई ख़ास क़ौम नहीं है, जो कोई व्यापारका पेशह करता है, उसीको महाजन कहते हैं,

नीचे लिखे हुए ८ प्रकारके मिलेहुए नेवार सबसे नीची जातिके समझेजाते हैं, अर्थात् उनके हाथका जल कोई हिन्दू नहीं पीताः-

३१- क़साई, जिनको वहांके लोग नय्या कहते हैं; ३२- जोगी, और ३३- धूंत नेवार (त्यवहारोंमें बाजा बजानेवाले); ३४- धैवी, याने लकड़ी काटने और कोयला बनानेवाले; ३५- कूलू (चमड़ेका काम बनानेवाले); ३६- पूरिया, जिनका पेशह मछली पकड़ना और जल्लादका काम है; ३७- च्यामाखलक (भंगी); और ३८- संघर (धोबी).

ऊपर लिखी हुई ज़ातोंमें, सिवा महाराष्ट्र ब्राह्मणोंके, जो वहांके अस्ली बाशिन्दे नहीं हैं, बरन थोड़े अ़रसहसे नयपाल देशमें जाबसे हैं, कुल जातियोंके मनुष्य मांस खाते हैं, परन्तु ब्राह्मण और क्षत्री आदि उच्च क़ौमोंमें मद्यपान बिल्कुल नहीं होता, और नेवार लोग मांस व मदिरा, दोनों वस्तु खाते पीते हैं; उनमें भैंसेका मांस खानेका भी रवाज है. नयपालके राज्यमें सन्यासी, कुशल्या और जोगी कंवर लोगों के सिवा, जिनके मुर्दे गाड़ेजाते हैं, बाक़ी कुल शिवमार्गी अथवा बौद्धमार्गी ज़ातोंमें मुर्दह जलायाजाता है.

ब्राह्मण, क्षत्री आदि पहाड़ी क़ौमोंमें जन्मसे मरण तककी कुल रस्में शास्त्रोक्त विधिसे होती हैं, लेकिन् हिन्दुस्तानियों और उन लोगोंकी रस्मोंमें बहुत कुछ भेद रहता है. इन लोगोंमें विवाहके समय जब दूल्हा दुलहिनके दर्वाज़ेपर पहुंचता है, तो उसका श्वसुर, साले, और नज्दीकी रिश्तहदार आदि लोग कलस बंधाकर दूल्हेकी आरती करते हैं, और अक्षत, रोली, दही और ताज़ह मछलीको दूल्हा व बरातियोंपर डाल देते हैं. इन जातियोंमेंसे जब किसीके यहां मृत्यु होजाती है, और उसकी पुछारी (मातमपुर्सी) को कोई रिश्तहदार जाता है, तो अपने घरसे एक पाथी (१) चावल और उसीके अनुमानसे घी, खांड और कुछ अदरख लेजाता है; और नेवारोंमें ऐसे अवसरपर मिठाई लेजानेका दस्तूर है. नेवारोंकी श्रेष्ठ, जोसी और आचार्य आदि कुल क़ौमोंमें विवाहकी एक अनोखी रीति है, जो यह है, कि दूल्हा विवाह करनेके लिये दुलहिनके घर नहीं जाता, केवल उसके रिश्तहदार और बराती लोग ही कन्याको उसके घरसे लेआते हैं. जब दुलहिन दूल्हेके घर पहुंचती है, तो उसकी सास व ननद अपनी रीतिके अनुसार उसको दर्वाज़हसे घरमें लेजाती हैं; इसके बाद चन्द महीनोंतक इस उत्सवकी खुशी और खाना वग़ैरह होता रहता है. इन लोगोंमें

(१) यह तोलमें क़रीब चार सेरके होता है.

स्त्री विधवा कभी नहीं होती, क्योंकि शुरूमें वह एक वृक्षके फलके साथ, जिसको बीला कहते हैं, व्याही जाती है; और पुनरविवाहका भी इस क़ौममें रवाज है. दनुवार जातिमें, जिसका बयान ऊपर होचुका है, सगाई सम्बन्ध अजीब तौरपर होता है, याने शुरूमें जब बेटेवाला कन्याके घर सम्बन्ध करनेकी ग़रज़से जाता है, और कन्यावालेको सम्बन्धके लिये कहता है, तो वह उसे उसके साथियों सहित बहुतसी गालियां देकर घरसे बाहिर निकाल देता है. जब वे दूसरी बार आते हैं, तो उनको बेपर्वाईके साथ घरके किसी स्थानमें बैठनेकी इजाज़त देता है, और जब तीसरी बार आते हैं, तो उन्हें आदर सन्मानके साथ भोजन कराता है, और तब वह सम्बन्ध पक्का माना जाता है. यदि कन्याका पिता लड़के वालेको शुरूमें जाते ही आदर सत्कारके साथ भोजन करादे, तो जानना चाहिये, कि लड़की वालेने उस सम्बन्धको स्वीकार नहीं किया. उनके यहां ऊपर बयान किया हुआ पहिला तरीक़ह सम्बन्धको स्वीकार करनेका चिन्ह मानते हैं.

नयपाल राज्यके आम लोगोंका पहिराव पायजामह, अंगरखा और टोपी है, बाज़े पंडित लोग धोती भी पहिनते हैं, लेकिन् बांड़ा व उदास लोगोंमें ज़ियादहतर जांघियेका रवाज है. नेवार जातिकी स्त्रियां चोटी गुंथानेके एवज़ बालोंका जूड़ा बांध लेती हैं, और आम औरतोंका पहिराव फरिया (१), साड़ी व अंगिया है, किसी किसी क़ौममें फरिया के एवज़ घेरदार पायजामह भी पहिनती हैं.

राज्यप्रबन्ध – नयपालके राज्यका मुल्की व माली कुल इन्तिज़ाम वज़ीरके हाथमें है, महाराजाधिराज किसी राज्य प्रबन्धसे सरोकार नहीं रखते, केवल सरिश्तह के काग़ज़ात व अर्ज़ियों वग़ैरहमें उनका नाम मात्र रहता है. प्रजा आदि लोगोंमेंसे, जब कोई मनुष्य राजाको अर्ज़ी देता है, तो उसमें श्री ५ महाराजाधिराज करके लिखता है, और वज़ीरको श्री ३ महाराजाके पदसे अर्ज़ी दीजाती है. इन दोनों लिखावटोंमें जितना कुछ फ़र्क़ है, उससे जानलेना चाहिये, कि नयपालके वज़ीर वहां के नाइब राजा या कुल राजसी कारबारके मालिक हैं. इस समय वज़ीरके उह्दहपर खस जातिके महाराजा जंगबहादुर (जो गत समयमें रियासत नयपालका एक बड़ा नामवर वज़ीर हुआ) के छोटे भाई धीरशमशेरजंगके पुत्र बीरशमशेरजंग नियत हैं.

रियासती इन्तिज़ामके लिये ख़ास राजधानी काठमांडूमें मुख्य पांच कचहरियां हैं :–

१– कोटिलिंग, अर्थात् दीवानीकी एक शाखा, जिसमें भाई बट या किसी दूसरी क़िस्म

---

(१) इसको नयपालकी औरतें घाघरेकी एवज़ पहिनती हैं, और यह पन्द्रह गज़से लेकर एक हज़ार गज़तक लम्बा होता है.

की स्थावर जंगम जायदादके हिस्सहकी बाबत मुक़द्दमातका फ़ैसलह होता है, और मुआफ़ीदारों व ख़ालिसहके दर्मियानी सर्हदी मुक़द्दमोंके फ़ैसले भी यहांसे ही होते हैं. अदालतका आला अफ़्सर सूबह कहलाता है, जिसको सोलहसे पच्चीससौ रुपयेतक सालानह तन्ख़्वाह मिलती है. सूबहके मातहत दो बड़े अहल्कार सरिश्तहदार और नाइब सरिश्तहदारके तौरपर रहते हैं, जिनको वहांके लोग डिट्ठा और विचारी कहते हैं; परन्तु ये दोनों सिवा ज़बानी तह्क़ीक़ात और बात चीत करनेके लिखा पढ़ीका काम बिल्कुल नहीं करते. तह्रीरी कार्रवाईकी निगरानी रखनेवाले अह्लकारोंको ख़रीदार और मुखिया कहाजाता है, और बाक़ी अह्लकार नौशिंदह (नवीसिन्दह) कहलाते हैं. डिट्ठाको ६०० से १००० तक, विचारी को ५००, ख़रीदारको ३००, नाइब मुखियाको २४०, तह्वीलदारको २००, और नवीसिन्दों को १०८ रुपया सालानहके हिसाबसे तन्ख़्वाह मिलती है. हरएक कचह्रीके मुतअल्लिक़ बीस या पच्चीस सिपाही मए तीन अफ्सरों सूबहदार, जमादार व हवाल्दारके रहते हैं.

२- फ़ौज्दारी, जिसको नयपाली लोग ईटा चपली कहते हैं, मुक़द्दमात फ़ौज्दारीकी समाअ़तके लिये एक अदालत नियत है, जिसमें ख़ून व मारपीट तथा चोरीके अलावह जाति सम्बन्धी बहुतसे मुक़द्दमात हर साल दाइर होते हैं. यहां भी कोटिलिंगकी तरह अफ्सर आला सूबह और उसके तह्तमें डिट्ठासे लेकर नवीसिन्दोंतक १५ अह्लकार काम देते हैं, और २५ के अनुमान सिपाही तईनात हैं.

३- धनसार (एक प्रकारका हदबस्ती महकमह)- यहां ख़ालिसहके सर्हदी मुक़द्दमे फ़ैसल होते हैं. सूबह, अर्थात् अफ्सर आलाके तह्तमें १० या १२ अह्लकार और २५ सिपाही रहते हैं.

४- टकसार- जहां लेनदेनके दीवानी मुक़द्दमोंकी समाअ़त होती है. इस कचह्रीमें भी धनसारके मुवाफ़िक़ अह्लकार और सिपाही मुक़र्रर हैं.

५- ठाना (थाणा), जिसको हमारे यहांकी पुलिस कहना चाहिये; इस महकमहके तह्तमें जेल आदिकी निगरानी और सफ़ाईका काम भी है. कचह्रीका मुख्य अधिकारी कर्नेल अथवा कप्तान होता है, जिसको तन्ख़्वाह फ़ौजी सीग़हसे मिलती है, और उसके तह्तमें डिट्ठा, विचारी व नवीसिन्दह आदि १० या १२ अह्लकार तथा २०० चपड़ासी और २५ सिपाही रहते हैं.

ऊपर लिखी हुई पांच अदालतोंके सिवा नयपालके राज्यमें कौन्सिल नामका एक मुख्य न्यायालय है, जिसका अफ्सर ख़ास वज़ीर ही समझा जाता है; उसके तह्तमें अदालती

कार्रवाईके वास्ते १० अथवा १२ अहल्कार और सिपाही आदि लोग नियत हैं. वज़ीर व अहलकारोंके अलावह जेनरल, कर्नेल वगैरह अफ्सर और रियासतके कई दूसरे प्रतिष्ठित लोग भी मुक़द्दमातके पेश होने व फ़ैसल होनेके समय बतौर मेम्बरोंके इस न्यायालयमें बैठा करते हैं. मुक़द्दमातके दाइर व फ़ैसल होनेका यह क़ाइदह है, कि जब किसी शख़्स को किसी प्रकारकी नालिश फ़र्याद करना हो, तो वह महाराजाधिराजके नाम अपने मुफ़स्सल अह्वालका इज़्हार (अर्ज़ी) लिखकर कौन्सिलमें पेश करता है, और वहांसे वह इज़्हार (अर्ज़ी), जिस सीगह या अदालतसे तअ़ल्लुक़ रखता हो, उसमें भेज दिया जाता है; और उस अदालतका हाकिम पूरी तह्क़ीक़ात करने और मुद्दआ़अ़लैहके इज़्हार लेने बाद मुक़द्दमहको फ़ैसल करता है. अगर्चि ऊपर लिखी हुई पांचों अदालतोंका अपील कौन्सिलमें होता है, परन्तु वहांपर अपील करनेकी नौबत बहुतही कम पहुंचती है; क्योंकि उक्त अदालतोंमें रियासती क़ाइदह के अनुसार गवाहों वगैरहके इज़्हार लेने और सरिश्तहकी कार्रवाई कीजाने के अलावह डिट्ठा व विचारियोंके द्वारा ज़बानी तह्क़ीक़ात ज़ियादह होती है, और मुद्दई व मुद्दआ़अ़लैहकी रूबकारीमें ज़बानी तौरपर मुक़द्दमह बिल्कुल फ़ैसल कियाजाकर ज़बान बन्दी और फ़ाइल नामह (फ़ैसलह) लिखाजाता है, जिसको अदालतका सूबह मए मिस्ल और मुद्दई व मुद्दआ़अ़लैहोंके अफ्सर कौन्सिलके पास लेजाकर क़ानूनके मुवाफ़िक़ समझादेता है, और बाद उसके मुजिमको वहांके आईनके मुवाफ़िक़ सज़ा दीजाती है. अलावह संगीन मुक़द्दमोंके ख़फ़ीफ़ मुआ़मलातमें मामूली सज़ा होती है, और क़त्लके जुर्ममें मुजिमको सिर काटजानेकी सज़ा (१) दीजाती है, लेकिन ब्राह्मण और जोगीको

---

(१) हेनरी एमब्रोज़ने एक अपराधीको क़त्लकी सज़ा देनेका आंखों देखा हाल, जो अपने बनाये हुए नयपालके इतिहासमें बयान किया है, उसमें वह लिखते हैं, कि नयपालमें क़त्लकी सज़ा मंगल या शनिवारके दिन, जो वहां अशुभ मानेजाते हैं, दीजाती है. क़त्ल कियेजानेके समय अपराधीके कुल कपड़े, सिवा एक लंगोटके उतार लिये जाते हैं, और उसको घुटनोंके बल बिठाकर उसके हाथ पीछेकी तरफ़ कसकर बांधने बाद दो आदमी उसे मज़्बूत पकड़े रहते हैं, ताकि वह जल्लादके तलवार मारनेके समय आगेको न झुक जावे. अपराधीके अ़ज़ीज़ रिश्तहदारों या नौकरोंमें से बाज़ लोग उसके सिरको काटेजानेके समय अपने हाथोंसे पकड़ लेते हैं, क्योंकि उनका यह विश्वास है, कि जब कोई बेगुनाह आदमी इस तरहपर अन्यायसे माराजाता है, तो उसका सिर पकड़ने वाले दोस्त दूसरी दुनयामें हमेशहके वास्ते मोक्षको प्राप्त होते हैं. सिर काटे जानेके बाद अपराधीकी लाश वहीं छोड़दी जाती है, जिसको गीदड़, गृध्र और कुत्ते बहुत जल्द खाजाते हैं; लाशको गाड़ने या जलानेका हुक्म नहीं है. लेकिन जबसे वज़ीर जंगबहादुर इंग्लिस्तान होकर वापस आया, तबसे क़त्ल बहुत कम होता है, और मनुष्यहिंसाके लिये अपराधीको बहुत सज़ा मिलती है.

मौतकी सज़ा नहीं होती, वे क़त्ल किये जानेके एवज़ जन्म क़ैद कियेजाते हैं. हेनूरी एम्ब्रोज़ लिखते हैं, कि ब्राह्मणको बड़ा दण्ड अर्थात् मौतकी सज़ा कभी नहीं दीजाती; उसका सिर मूंडकर सूअरका मांस व जूठा खिलाने तथा मदिरापान करानेके बाद देशसे निकालदिया जाता है. औरतें क़त्ल नहीं कीजातीं, वे क़ैद कीजाती और दाग़ीजाती हैं, और जाति बाहिर कीजाकर या तो गुलामकी तरह बेचदी जाती हैं, अथवा देशसे निकालदी जाती हैं.

पर्वतिये लोगोंमें जाति सम्बन्धी मुक़द्दमे, जो ख़ासकर व्यभिचार आदि कर्मोंसे सम्बन्ध रखते हैं, इस राज्यमें अधिक दाइर होते हैं, और उनकी सज़ा भी बनिस्बत दूसरे देशोंके बहुत ही सख़्त दीजाती है; इस अपराधका हाल यदि लिखा जाये, तो बहुत कुछ लम्बा चौड़ा है, परन्तु तवालतके ख़यालसे मुख़्तसर तौरपर यहां लिखाजाता हैः-

यदि कोई पुरुष अपनी स्त्रीको किसी दूसरे मनुष्यके साथ संगम करते देख ले, तो उसे अपराधीको स्वयं जीवसे मारडालनेका अधिकार रहता है, और स्त्री जातिसे अलग करदी जाती है; अगर उसपर किसी शख़्ससे व्यभिचारिणी होनेका शुब्ह होगया हो, तो उसका पति उससे दर्याफ़्त करके लिखालेने बाद व्यभिचारीको मारडालता और स्त्रीको घरसे बाहिर निकाल देता है. यदि उस देशका कोई शख़्स चाहे, कि व्यभिचारको छिपा लेवे, तो ऐसा हर्गिज़ नहीं होसक्ता, क्योंकि वहांके व्यभिचारका भेद छिपानेवालेको भी रवाजके मुवाफ़िक़ पूरी पूरी सज़ा दीजाती है. वहां प्रत्येक जातिमें इस अपराधपर बहुधा मनुष्योंको दण्ड मिलता है, और वे जातिसे बाहिर निकाल दियेजाते हैं. हालमें ऐसा दस्तूर है, कि जब किसी मनुष्यको किसी स्त्रीकी निस्बत व्यभिचारका शुब्ह पैदा हो जाता है, तो वह फ़ौरन् उसकी इत्तिला सर्कारी अफ़्सरसे करता है, जिसकी तहक़ीक़ात होने बाद उस मनुष्यको, जो स्त्रीको पहिले-पहिल व्यभिचारिणी बनानेमें अपराधी ठहरता है, मारनेके वास्ते स्त्रीके पतिको आज्ञा दीजाती है, इसके बाद उसको इख़्तियार है, कि चाहे वह उसे मारे, या न मारे. भेद छिपाने वालों तथा व्यभिचारिणी जाने बिना दूसरी या तीसरी बार व्यभिचार करने वालोंपर दण्ड होता है, अर्थात् ब्राह्मण जातिकी स्त्रीको किसी ब्राह्मण पुरुष अथवा क्षत्री या शूद्र आदि दूसरी जातिके पुरुषसे व्यभिचार करना जान लिया, और उसका भेद प्रकट न किया, तो मालूम होजानेपर वह मनुष्य उसी नीची जातिके शामिल कियाजावेगा, जिस जातिके पुरुषसे उसने स्त्रीको व्यभि-चारिणी जाना हो. यदि कोई ब्राह्मण, ब्राह्मण जातिके पुरुषके साथ उसी जातिकी

स्त्रीको व्यभिचारिणी होना जान जावे, और उस भेदको छिपावे, तो व्यभिचारी और व्यभिचारिणीकी तरह वह भी जैसी (गोलक) जातिमें शामिल करदिया जाता है; और अपनी जातिसे उच्च वर्णका भेद गुप्त रखनेपर दण्डकी सज़ा दीजाती है. ब्राह्मण और क्षत्री आदि उत्तम जाति वालेसे संगम करनेपर स्त्री जातिसे बाहिर कीजानेके अलावह व्यभिचार छिपाकर जातिवालोंको अपने हाथसे रोटी खिलानेके जुर्ममें छः महीने तक क़ैद रक्खी जाती है; और नीच जातिके पुरुषसे, जिसके हाथका जल उत्तम क़ौमवाले नहीं पीते, जार कर्म करनेका भेद छिपाकर अपने हाथसे पानी पिलानेके अपराधमें बीस महीनेकी क़ैद भुगतने बाद (१) घर व जातिसे बाहिर निकालदी जाती है; इसके बाद उसे इख़्तियार है, कि वह चाहे जहां रहे. और इसी प्रकार नीच जातिकी स्त्रीसे व्यभिचार करनेपर उच्च जातिके पुरुषको सर्कारसे सज़ा मिलती है. स्त्रीके घरवालों तथा उन लोगोंको, जिन्होंने उसके हाथका भोजन खाया अथवा पानी पीया हो, धर्म शास्त्रके अनुसार प्रायश्चित्त करना पड़ता है. क्षत्री आदि दूसरी जातिकी स्त्री अपनी ख़ास जातिवाले एक ही पुरुषके पास जानेसे जाति बाहिर नहीं कीजाती, उसको वह जार पति, यदि जीता बचे तो, अपने पास रख सक्ता है, और यदि क़ाइदहके मुवाफ़िक़ मारा गया, और स्त्रीने फिर दूसरा पति नहीं किया, तो वह जातिमें रह सक्ती है, परन्तु उसका ख़ास पति उसे अपने घरमें नहीं रखता.

अगर कोई स्त्री विवाह होनेसे पहिले ही बिगड़ जावे, तो जार कर्म करने वाला पुरुष उस भेदको विवाहके पहिले ज़ाहिर करदेता है, और कदाचित् उसने स्त्रीका विवाह होनेसे पहिले ज़ाहिर नहीं किया, और वह भेद पीछे मालूम हुआ, तो उस व्यभिचारी पुरुष और स्त्रीको ऊपर लिखी हुई रीतिके अनुसार ही सज़ा दीजाती है. ब्राह्मण पुरूषको, उसी जातिकी स्त्रीके साथ व्यभिचार करके भेद छिपानेपर सर्कारसे २॥ वर्ष क़ैद और नीच जातिके पुरुषको ६ वर्ष क़ैदकी सज़ा होती है.

नेवार जातिमें व्यभिचारकी विशेष सज़ा नहीं है, इन लोगोंमें व्यभिचारी पुरुषको ६०) रुपया जुर्मानह और ६०) रुपया स्त्रीके पतिको विवाह ख़र्चका देना पड़ता है.

डाकू लोगोंको भी इस राज्यमें सख़्त सज़ा (२) दीजाती है, और इसी कारण वहां पर बनिस्बत हिन्दुस्तानी रियासतोंके इस क़िस्मकी वारिदातें बहुतही कम होती हैं. पहाड़ी मक़ामातमें चोर व उचके भी कम हैं.

---

(१) स्त्रीके चिह्रेपर जिस जातिसे उसने संगम किया हो, उसी जातिका चिन्ह करदिया जाता है.

(२) महाराजा सुरेन्द्र विक्रमशाहके समयमें, जहां कहीं जितने डाकू लोग पाये जाते, वे सब जानसे मारडाले जाते थे, इस कारण उस वक़्तसे अब नयपालमें डाका नहीं पड़ता.

उन महकमोंके अलावह, जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, राजधानी काठमांडूमें और भी कई कचहरियां अथवा कारखाने हैं, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

सद्र दफ्तरखानह, जिसको महकमह माल कहना चाहिये; इसमें रियासतके माल सम्बन्धी हिसाब किताबका काम होता है, और इसका हाकिम सूबह है.

तोशहखानह, अर्थात् खज़ानह, जिसमें महाराजाधिराजके कुल खर्च व आमद वगैरहका हिसाब रहता है. महकमहके आला अफ्सर खज़ानचीको ५५००) रुपये सालानह तन्ख्वाह मिलती है.

कोट भंडार या रसोड़ा- यह भी राज्यका एक बड़ा कारखानह है, जहां राजा और राणियों आदिके लिये खाना बनता है; इसका अफ्सर कवरदार कहलाता है, और उसे १२००) से ४०००) रुपयेतक सालानह तन्ख्वाह मिलती है.

किताबखानह- इस महकमहमें कुल रियासतके नौकरोंके नाम, उनकी बहालीके समय लिखे और मौकूफ़ीके वक्त काटदिये जाते हैं. यहांका हाकिम खरीदार ६००) रुपये सालानह तन्ख्वाह पाता है.

भनसार (साइर) का हाकिम १२००) रुपये सालानह तन्ख्वाहका एक कप्तान है, जिसके मातहत सद्र और इलाक़हमें दाण (साइर) की चौकियोंपर बहुत से अह्लकार और सिपाही हैं.

कुमारी चौक, अर्थात् हिसाब दफ्तर- यह एक बहुत बड़ी कचहरी है, जिसमें क़रीबन् २०० अह्लकार काम करते हैं; यहां राज्यके कुल जमा खर्चका नामह समझा जाता है. महकमहके हाकिमकी तन्ख्वाह, जो काजी कहलाता है, ६४००) रुपये सालानह है, और उसका नाइब सूबह कहलाता है.

मूठ तह्वील- यह बाक़ियात वुसूल करनेका महकमह है, जिसका अफ्सर खरीदार १०००) रुपये सालानह पाता है.

मुल्की खान या खज़ानह- यहांपर राज्यकी आमदनीका रुपया जमा होता है, और यहांसे ही तन्ख्वाहदारों तथा दूसरे खर्चोंके लिये रुपया दिया जाता है. हाकिम, जिसको सर्दार कहते हैं, ३६००) रुपये सालानह पाता है.

गूठी कचहरी, अर्थात् महकमह देवस्थान- यहां सदावर्त्त आदि धर्म पुण्यका काम होता है. महकमहके हाकिम कप्तानकी तन्ख्वाह १२००) रुपये सालानह है.

महकमह फ़ौज, एक बड़ी कचहरी है, जिसका हाकिम सूबह है; इस कचहरीके तअल्लुक़ फ़ौजी या जंगी मुलाज़िमोंकी तन्ख्वाहका इन्तिज़ाम है. सेना सम्बन्धी सीग़ह नयपालकी रियासतमें बहुत बड़ा है; क्योंकि यहां साधारण

सिपाहियोंको, जिन्हें मिलसिया कहते हैं, छोड़कर २०००० से अधिक क़वाइदी फ़ौज है, जिन सबका कुल हिसाब किताब इसी फ़ौजी दफ़्तरमें रहता है. क़वाइदी सेनामें हर एक पल्टनके साथ १ जेनरल, १ कर्नेल, १ मेजर कप्तान, १ कप्तान, १ मेजर अजीटन, १ अजीटन, १० सूबहदार, १० जमादार, ४० हवाल्दार, ४० अमलदार; और अह्लकारी कामके लिये १ ख़रीदार, १ राइटर, और एक बहीदार नियत हैं. एक पल्टनमें कुल ५०० से ७०० तक सिपाही गिने जाते हैं. मेगज़िन्के मातह्त ८००० पीपा (कुली) राजधानी काठमांडूमें रहते हैं, जिनका काम सामान वगैरह उठाना, धरना या लाना लेजाना है, और इनमें पचास पचास मनुष्योंपर "कोत्या" पदका एक एक अफ्सर नियत है. वज़ीरसे लेकर सिपाही तक ऊपर बयान किये हुए कुल फ़ौजी व अदालती अफ्सरों वगैरहको मुख़्तलिफ़ शरह पर तन्ख़्वाहें मिलती हैं, और हरएकके लिये एक ख़ास क़िस्मकी वर्दी (१) नियत है.

---

(१) नयपालके राज्यमें वज़ीरसे लेकर अद्ना अह्लकारों तक नीचे लिखे अनुसार सालानह तन्ख़्वाह पाते हैं:-

वज़ीरको १००००० रुपया सालानह नक़्द और ख़ानगी ख़र्च, कमांडरइन्चीफ़को ५०००० रुपया, कमांडिंग जेनरलोंको ३६००० से ४५००० तक, जेनरलोंको १५००० से २०००० तक, कर्नेलोंको ५००० से ७००० तक, मेजर कप्तानको २००० से ३००० तक, कप्तान, और मेजर अजीटनको ९०० से १८०० तक, लेफ़्टिनेण्ट और ख़रीदारको ६०० से ९०० तक, सूबहदार और राइटरको २०० से ५०० तक, जमादारको ८० से ४०० तक, हवाल्दारोंको ७० से २०० तक, सिपाहीको ६० से १५० तक, पीपाको ५० रुपया. काज़ी, सूबह, डिट्ठा, बिचारी और नवीसिन्दों आदिके अलावह, जिनकी सालानह तन्ख़्वाहका ज़िक्र महकमोंकी तफ़्सीलके साथ मूलमें हो चुका है, और भी कई ओहदहदार व ख़िदमतगार मुतफ़र्रिक़ शरहसे तन्ख़्वाह पाते हैं.

वज़ीरसे लेकर कुल छोटे बड़े ओहदहदारों व अह्लकारोंके लिये अलहदह अलहदह एक ख़ास तौरकी वर्दी भी मुक़र्रर है- वज़ीरकी वर्दीमें जड़ाऊ टोपीके ऊपर काली पघड़ी, जिसपर पन्ना व माणिक जड़ित मोतियोंकी सेली, आगेकी तरफ़ हीरेके तीन चांद, जिनमें पन्ना लटका हुआ, और बीचवाले चांदमें हुमाकी कल्ग़ी, और हीरेका पर्तला व चपड़ास है. जेनरलसे लेकर वज़ीरके भाई बेटों व कर्नेलोंतक सबोंके हीरेका एक चांद होता है, बाक़ी कुल आभूषण उसी प्रकारका रखते हैं, जो वज़ीरकी वर्दीमें दर्ज है, लेकिन् कर्नेलके हीरेका चांद तथा काली पघड़ीपर सोनेका तोड़ा बंधा रहता है. मेजर कप्तानके सोनेमें जड़ाहुआ तीन हीरों और एक पन्नेका जड़ाऊ चांद, तथा सोनेका तोड़ा. कप्तान व मेजर अजीटनके एक हीरे और पन्नेका जड़ाऊ चांद और सोनेका तोड़ा. लेफ़्टिनेण्ट, ख़रीदार और दारोग़हके एक पन्नेका सोनेमें जड़ा हुआ चांद और सोनेका तोड़ा. कर्नेलसे लेफ़्टिनेण्टतकके साधारण कल्ग़ी होती है. सूबहदार, राइटर तथा कोत्याके सोनेका चांद और चांदीका तोड़ा. जमादार और हवाल्दारके अर्द्ध चन्द्राकार

कचहरियों व इलाक़हके पर्गनातमें, जो सिपाही वगैरह रहते हैं, तथा वे लोग जो प्रजामेंसे इलाक़हके मुतफ़र्रक़ मक़ामातपर तीन महीने (१) तक क़वाइद सिखानेके लिये रक्खे जाते हैं, उनका तत्र्प्रल्लुक़ महकमह फ़ौजसे नहीं है, उसमें केवल क़वाइदी जंगी सेनाका ही काम होता है.

कंडेल चौक- सेना सम्बन्धी एक कारखानह है, जिसमें सिपाहियोंके टूटे फूटे तमगे दुरुस्त किये जाते हैं, इसका हाकिम एक कप्तान है.

पुस्तकालय- रियासत नयपालमें एक पुस्तकालय भी है, जिसको वहांके लोग पुस्तक खानह कहते हैं; इस महकमहका हाकिम खरीदार कहलाता है.

फ़र्राशखानह - यहां भी पुस्तक खानहकी बराबर तन्ख्वाह पाने वाला डिट्ठा नामी एक अफ्सर मए चन्द मातहतोंके मुक़र्रर है.

टकशाल- जहां रुपये (२) व पैसे वगैरह सिक्के बनते हैं; यहांका अफ्सर सूबह कहलाता है.

चांदमें सोनेका गिलट होता है. बहीदारके सोनेके गिलट वाला चांदीका चन्द्रमा और चांदीका तोड़ा; और कुल सिपाहियोंके काली पघड़ीपर चांदीका चन्द्रमा तथा चांदी का तोड़ा है. वज़ीरसे लेकर कर्नेलतकके चन्द्रमामें ध्वजा पकड़े हुए सिंहकी तस्वीर रहती है, और बाक़ी पल्टनोंमें, जो पल्टन जिस देवताके नामसे प्रसिद्ध है, उसीकी मूर्तिका चिन्ह चन्द्रमामें भी रहता है. वज़ीरसे लेकर जमादारतक वर्दीमें तलवार और किरच रखते हैं, और हवाल्दारसे सिपाहीतकका शस्त्र बन्दूक़ व खुकुड़ी (एक प्रकारका लम्बा और चौड़ा छुरा) है. काजीकी वर्दीमें सिफ़ेद पघड़ी, ताशका कोट, पायजामह, और दुशाला तथा शस्त्रोंमें खुकुड़ी है. सर्दारकी वर्दीमें सिफ़ेद पघड़ी, कमखाबका कोट व पायजामह और दुशाला व खुकुड़ी; सूबहकी वर्दीमें सिफ़ेद पघड़ी, कमखाबकी नीमास्तीन व पायजामह और दुशाला तथा खुकुड़ी. द्वारे (ड्योढ़ीवान) और मुन्शीकी पघड़ी लाल व सिफ़ेद होती है, और उनका कोट गहकुचिन नामके चीनी रेशमी कपड़ेका, गरारेदार पायजामह और अंगरखा तथा दुशाला सिफ़ेद रंगका होता है; खुकुड़ी ये भी रखते हैं. डिट्ठा और मुखियाकी पघड़ीका रंग क़िर्मिज़ी होता है; और विचारी, व नवीसिन्दोंकी पघड़ी लाल होती है, इनके पास भी ऊपर लिखे दूसरे उह्दहदारोंकी तरह खुकुड़ी शस्त्र रहता है. जंगी सेनाकी कुल वर्दी अफ्सरों सहित अंग्रेज़ी ढंगकी है.

(१) तीन मासके लिये भरती कियेजाने वाले लोगोंको, जिनकी संख्या क़रीब ५०००० के प्रति वर्ष होजाती है, तीन मासतक ३॥) रुपया मासिक वेतन मिलता है. इन लोगोंके भरती होनेका यह क़ाइदह है, कि इलाक़हकी प्रजामेंसे १६ बर्षसे लेकर ४५ वर्ष उम्रतकके आदमी साल भरमें तीन महीनेके लिये बारी बारीसे हरएक ज़िलेके मुख्य स्थानोंमें क़वाइद सीखनेके लिये आते हैं, जिनसे ज़रूरतके वक़ लड़ाईमें काम लिया जाता है.

(२) नयपालका रुपया, जिसको "महेन्द्र मल्लि" कहते हैं, कल्दार रुपयेसे अनुमान ॥।-) का होता है. यहां की टकशालमें पहिलेसे अठन्नी ही बनाई जाती है, लेकिन अभी थोड़े अर्सहसे कुछ रुपया भी बनने लगा है.

डाकख़ानह- नयपालके राज्यमें दो डाकख़ाने हैं, जिनमेंसे पहिला ख़ास राजधानी काठमांडूके महलों (जैसी कोठा) में और दूसरा महलसे पौन कोसके फ़ासिलह पर अंग्रेज़ी रेज़िडेंसीकी कोठीपर है. हिन्दुस्तान आदि दूसरे देशोंकी चिट्ठियां वग़ैरह राज्यके डाकख़ानहकी मारिफ़त आती जाती हैं; और कुल इलाक़हमें राज्यकी डाक है.

मद्रसह-इस राज्यमें कोई मद्रसह अथवा अंग्रेज़ी ढंगका स्कूल प्रजाकी शिक्षाके लिये नहीं है, अल्बत्तह षट्शास्त्र विद्या तथा वेदका पठन पाठन करनेके लिये एक देशी पाठशाला है.

शिफ़ाख़ानह या हॉस्पिटल- नयपालमें पहिले कोई शिफ़ाख़ानह नहीं था, केवल एक देशी वैद्यख़ानह था, जो इस वक़्तक मौजूद है; लेकिन् हालमें विक्रमी १९४७ श्रावण कृष्ण ८ [हि० १३०७ ता० २१ ज़िल्क़ाद = ई० १८९० ता० ९ जुलाई] को राजधानी काठमांडूमें वहांके लोगोंके लिये एक हॉस्पिटल खोलागया है.

जेलख़ानह- राजधानी काठमांडूमें दो बड़े जेलख़ाने हैं, जिनमेंसे एक उक्त राजधानीसे पूर्वकी तरफ़ मर्दोंके लिये, और दूसरा पश्चिमकी तरफ़ पौन कोसके फ़ासिलह पर स्त्रियोंके लिये है. इनके सिवा पाल्पा और धनकुटा ज़िलोंमें कम मीआदी क़ैदी रखनेके लिये स्थान नियत हैं, परन्तु ज़िलेके जन्म क़ैदी यहांपर नहीं रक्खे जाते, वे काठमांडूके जेलको चालान करदिये जाते हैं. क़ैदी लोगोंमें मर्दोंसे केवल रास्ते वग़ैरह साफ़ करनेका, और औरतोंसे बारूद पीसनेका काम लिया जाता है; इन कामोंके सिवा सर्कारमें उनसे और कोई काम नहीं लिया जाता. जो लोग ऊनी मोज़ा वग़ैरह बना जानते हैं, उनको अपने तौरपर बनाने व बेचनेका इख़्तियार है, सर्कारमें इन चीज़ोंकी क़ीमत जमा नहीं होती. जेलख़ानहका दारोग़ह अर्ज़बेगी कहलाता है.

ज़मीनका क़बज़ह व महसूल वग़ैरह- इस राज्यमें किसानोंसे हासिल वुसूल करनेका यह क़ाइदह है, कि जिस ज़मीनमें चावल नहीं बोये जाते, उसका हासिल उन किसानोंसे, जो बैलोंकी जोड़ी रखते हैं, सालानह १) एक रुपया घर प्रति लिया जाता है, ज़मीनकी कुछ तादाद नहीं है, जितनी बोई जा सके, बोवें. अगर पचास जोड़ी बैल हों, तो भी वही एक रुपया देना पड़ेगा. जिस किसानके घरमें सिर्फ़ एक ही बैल हो, उससे ॥।) बारह आना सालानहके हिसाबसे हासिल वुसूल किया जाता है. और जिसके यहां बैल बिल्कुल नहीं होते, और वह दूसरों के मांगे हुए बैलोंसे अपनी ज़मीन हांकता बोता है, उसको केवल ॥) आठ आना ही देना पड़ता है. इन तीन प्रकारके ज़मींदारोंमेंसे पहिले हल, दूसरे पाटे और तीसरे कुदाले कहलाते हैं. इसके अलावह दो आने सालानह सावन्या और फागू नामसे देने पड़ते हैं; और एक आना सर्व चन्द्रायण नामका लगता है, जिसका यह तरीक़ह है, कि महाराजाधिराजकी तरफ़से एक धर्माधिकारी पंडित नियत है, जो कुछ

काग़ज़ों (१) पर छाप लगाकर और एक श्लोक (२) तथा प्रायश्चित्तका विधान और सांसर्गिक पापसे शुद्ध होना लिखकर गांवों व मुहल्लोंमें भेजदेता है, जिनको वहां वाले एक एक आना देकर लेलेते हैं. यह धर्माधिकारी उन लोगोंसे भी, जो व्यभिचारिणीके हाथका भोजन खालेते हैं, वही काग़ज़ देकर, जिसमें व्यभिचारका व्यवरेवार हाल दर्ज होता है, ३॥) रुपये, और इनके हाथसे खाने वाले दूसरे लोगोंसे १॥।) रुपये और तीसरे लोगोंसे चौदह आने लेता और उन्हें शुद्ध करदेता है. जिन लोगोंका स्पर्श किया हुआ पानी नहीं पीया जाता, उनके साथ संगम करने वाली स्त्रीके हाथका जल पीनेके दोषपर ऊपर लिखी हुई शरहका आधा आधा रुपया लेने बाद प्रायश्चित्तकी शुद्धिका काग़ज़ देता है. यदि किसीकी गाय बंधनमें मरजावे, तो बांधने वालेसे १॥।) पौने दो रुपया लेकर शुद्धि पत्र दिया जाता है, और इनके अलावह और भी कई कारणोंमें इसका रवाज है; जबतक अपराधी या दूषित लोग इस काग़ज़को हासिल नहीं करलेते, तबतक वे खाने पीनेमें जातिके शामिल नहीं समझे जाते हैं. चावल बोई जानेवाली ज़मीनका महसूल आध बटाईके हिसाबसे लियाजाता है, और इसके सिवा महाराजाधिराजके पाटवी पुत्रके यज्ञोपवीत धारण करनेके उत्सवपर तथा गद्दी बैठनेके समय हल, पाटे और कुदाले किसानोंसे १) एक रुपया, ॥।) बारह आना और ॥) आठ आना क्रमसे लिया जाता है; ज्येष्ठ पुत्रीके विवाहमें भी उन्हें इसीके अनुसार रुपया देना पड़ता है. जब नया राजा गद्दीपर बैठता है, तो वहांके नाज नापनेके पैमानोंपर, जिनको ढक, पाथीं, कुरुवा, और माना कहते हैं, नई छाप लगाई जाती है, और इस दस्तूरका प्रति घर आठ आना रअय्यतसे लिया जाता है. अगर्चि मुआफ़ीदारों और महाजनोंसे भी ऊपर लिखे हुए मौक़ोंपर रुपया वुसूल होता है, लेकिन् उनके लिये कोई ख़ास शरह मुक़र्रर नहीं है, वह सिर्फ़ वज़ीरकी तज्वीज़पर ही मुन्हसर है; और सर्व साधारण रअय्यतसे, चाहे सर्कारी नौकर हो अथवा नहीं, घर प्रति ॥) आठ आना लिया जाता है. जब कभी लड़ाई होती है, तो उस मौक़ेपर रसदके नामसे हल किसानोंसे सोलह पाथी, याने डेढ़ मनसे कुछ ऊपर, पाटोंसे बारह पाथी या सवा मन, और कुदालोंसे आठ पाथी या पौन मन अन्न घर प्रति ड्योढ़े भाव से रुपया देकर लिया जाता है, और वह अन्न उन्हीं लोगोंको, जिस स्थानपर

---

(१) इस काग़ज़को नयपाल वाले पतिया कहते हैं.

(२) श्लोक– श्री मद्गोरक्ष भूपेन्द्र प्रेरितं स्मृति संमतम् ॥ दुरित छेदनो पापम् प्रायश्चित्तं समाचर ॥ १ ॥

लेजानेका हुक्म हो, पहुंचाना पड़ता है. जिस किसानके खेतमें दो सौ मन चावल पैदा होते हैं, उससे पांच मन चावल लिया जाता है; और इसी तरह सब किसान लोग देते हैं. मुआफ़ीकी ज़मीन वालोंको पैदावारके तिहाई हिस्सेका रुपया देना पड़ता है, जिसमें विर्त्ता, वेख, फिकडार, मर्वट, ज्यूनि, मानाचामल, पेटिया और छाप नामकी ज़मीन दाखिल है. जो ज़मीन ताम्रपत्रपर दस्तावेज़ लिखकर ब्राह्मणको दी जाती है, उसको विर्त्ता, और क्षत्री आदि लोगोंको बख़्शी जाने वाली भूमिको वेख कहते हैं; ब्राह्मणों तथा क्षत्रियोंके सिवा जिस ज़मीनका पट्टा शूद्रोंको करदिया जाता है, वह फिकडार कहलाती है, जिसका कारण यह है, कि महाराजाधिराज भूमिके पट्टेपर पानका पीक अर्थात् थूक डाल देते हैं. सर्कारी नौकरीमें जानसे मारे जाने वाले शख़्सकी सन्तानको बख़्शी जानेवाली ज़मीनको मर्वट कहते हैं. ऊपर लिखी हुई चारों प्रकारकी ज़मीन कोई राजा किसी समयमें वापस नहीं लेसक्ता, वह उन्हीं लोगोंकी सन्तानके क़बज़हमें पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है, जिन्होंने उसको हासिल किया था; और उनको उसे बेचनेका भी अधिकार है. जो ज़मीन किसी शख़्सको जीवनभरके लिये दीजाती है, वह ज्यूनि नामसे, और जो खाने पहिरने आदि ख़र्चके लिये दीजाती है, वह मानाचामलके नामसे प्रसिद्ध है; इस प्रकारकी भूमिके पट्टेमें ख़र्च वग़ैरहकी तफ़्सील दर्ज रहती है. पेटिया ज़मीन वह है, जो विदेशी लोगोंको खान पानके लिये, राज्यसे मिलती है, और छाप वह जो .इज़्ज़तदार लोगोंको बख़्शी जावे. महाजन याने व्यापारी लोगोंसे लड़ाईके शुरूमें कर नहीं लिया जाता, लेकिन् ज़रूरतके वक़् उनसे भी उनकी हैसियतके मुवाफ़िक़ रुपया वुसूल किया जाता है; और कुल स्थानोंकी प्रजासे १६ पाथी अथवा डेढ़ मन चावल प्रति घर हुक्मके मुवाफ़िक़ वुसूल किये जाकर उन्हींके द्वारा स्थानों स्थानोंपर पहुंचाये जाते हैं. अगर्चि इन लोगोंको रुपयेके मालके .एवज़ ग्यारह अथवा बारह आना क़ीमतके तौर मिल जाते हैं, परन्तु रसदको दूर दूर पहाड़ी स्थानोंमें अपनी पीठपर लादकर पहुंचाना उनके लिये एक भारी दुःख है, क्योंकि विकट पहाड़ी स्थानोंमें सिवा आदमीके घोड़े, टट्टू या किसी दूसरे जानवरका गुज़र नहीं होसक्ता; अलावह इसके जहां कहींसे सर्कारी सामान लाया या लेजाया जाता है, उसको भी उन्हें गांव दर गांव पहुंचाना पड़ता है.

बड़े बड़े नगरोंके आस पासकी ज़मीनका हासिल, चाहे उसमें किसी प्रकार का अन्न बोया जावे, पैदावारकी आध बटाईके हिसाबसे लिया जाता है, और तराईकी ज़मीनका हासिल फ़ी बीघा ५ रुपये से २ रुपये तक ज़मीनकी हैसियतके

अनुसार वुसूल होता है; सिवा सर्वचान्द्रायणके ऊपर लिखा हुआ सर्व प्रकारका कर वहांके किसानों व प्रजाको भी देना पड़ता है, लड़ाईके अवसरपर वहां वालोंसे अन्न आदि रसद वुसूल करनेके क़ाइदहमें केवल इतनाही भेद है, कि वह वज़ीरकी तज्वीज़के अनुसार ली जाती है.

नयपालकी रियासत शुरूसे खुद मुख़्तार है, वहांके राजा किसी बादशाह या सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज नहीं देते; राजधानी काठमांडूमें सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से एक रेज़िडेन्ट बतौर वकीलके रहता है, लेकिन् वह वहांके राजसी मुआमलों तथा प्रबन्धमें दख़्ल देनेका कुछ अधिकार नहीं रखता; और इसी तरह एक शख़्स रियासत नयपालकी तरफ़से कलकत्तेमें रहता है. इन दोनोंको तन्ख़्वाह वग़ैरह ख़र्च अपनी अपनी सर्कारोंसे मिलता है. अलबत्तह विक्रमी १८४९ [हि० १२०६ = ई० १७९२] की लड़ाईके समयसे, जो नयपाल और चीन वालोंसे हुई, सुलह होनेपर एक सन्धि दोनों राज्योंके दर्मियान क़ाइम होकर आभूषण, वस्त्र, तथा शस्त्र वग़ैरह कुछ सौग़ात हर पांचवें साल चीनके बादशाहको भेजा जाना क़रार पाया, तबसे उस सन्धिके अनुसार वह सौग़ात हर पांचवें साल वहां भेजी जाती है, जिसका मुफ़स्सल हाल तवारीख़में मौक़ेपर दर्ज किया जायेगा; और चीनसे भी ऊपर लिखे अनुसार समयपर ख़िल्अतके तौर सरोपाव वग़ैरह, जिसको वहांके लोग तुहफ़ह कहते हैं, महाराजाधिराजके लिये यहां आता है.

तह्सील व पर्गनह - नयपालके पहाड़ी मुल्ककी तह्सीलों, पर्गनों और ग्रामोंका कुछ ठीक ठीक शुमार हमको नहीं मिला, क्योंकि वहां पहाड़ोंमें जहां कहीं आबादीके क़ाबिल ज़मीन मिलगई है, उसी जगह दो दो चार चार अथवा इससे कुछ अधिक तादादमें क़रीब क़रीब घर बसे हुए हैं, और उनमें मुख़्तलिफ़ मक़ामातपर बहुतसे छोटे छोटे पर्गने नियत किये जाकर मौक़े और ज़रूरतके मुवाफ़िक़ प्रबन्ध कर्ता लोग रख दियेगये हैं. अलबत्तह तराईमें, जहांकी ज़मीन बराबर है, १- परसा, २- बारा, ३- रौतड़, ४- जलेश्वर, ५- सरलइया, ६- हनुमान नगर, और ७- मोरंग नामके सात बड़े ज़िले, और इनके अलावह पाल्पामें चार छोटे ज़िले जुदे हैं, जिनको वहांके लोग टप्पा कहते हैं. तराईके हर एक ज़िलेमें तह्सीलदार या नाज़िमके तौरपर एक एक मेजर कप्तान अथवा सूबह रहता है, और टप्पोंमें कप्तान नियत हैं, जिनको पहिले दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरह कुल मुआमलातका इख़्तियार था, लेकिन् हालमें फ़ौज्दारीका काम अलग करदिया गया है.

मश्हूर मक़ामात.

काठमांडू - यह शहर राजाके रहनेका मुख्य स्थान अर्थात् राजधानी है, जिसमें कई राजसी महल हैं. पहिले यहांकी आबादी अनुमान १८००० घरोंके समझी जाती

थी, लेकिन् हालमें उनकी तादाद क़रीब २४००० के है. राजधानीके महलोंमेंसे बसन्तपुर नामी सात मंज़िला महल सबसे ऊंचा और बड़ा है, जिसके ऊपरसे कुल शहर (काठमांडू) दिखाई देता है; यह रणबहादुरशाहका बनवाया हुआ है. महलोंके मुख्य दर्वाज़हका नाम हनुमान ढोका है, जिसपर सुवर्णके पतरे लगे हुए हैं. दर्वाज़हके बाहिर वीरआसनसे बैठी हुई क़रीब १० फ़ुट ऊंची हनुमानकी एक मूर्ति है; और इससे कुछ आगे बढ़कर पचास क़दमके फ़ासिलहपर बाज़ारमें एक बहुत बड़ा नक़्क़ारह अनुमान ४५ फ़ुट घेरेका है, जो पहिले ज़मानहमें सुब्हके वक़्त पिछली पांच घड़ी रात रहे बजाया जाता था, लेकिन् अब उसके एवज़ तोप चलती है; नक़्क़ारेके पास वाले गुम्बदमें दो ढाई सौ मन वज़नका एक बहुत बड़ा घंटा भी है. ये दोनों चीज़ें महाराजा रणबहादुरशाहके समयकी बनी हुई हैं. प्राचीन समयमें यहांके अक्सर महल सुवर्णके पत्रोंसे जड़े हुए थे, लेकिन् हालमें वे सब गिराये जाकर उनके स्थानमें अंग्रेज़ी ढंगकी इमारत तय्यार कराली गई है.

काठमांडूमें निम्न लिखित प्रसिद्ध मकानात हैं:-

महलोंमें एक बहुत बड़ा और ऊंचा प्राचीन मन्दिर तलेजू (तुलजा) देवीका है, जिसको नेवार जातिके किसी राजाने बनवाया था. इस देवीका पूजन आचार्य (नेवार जातिके) लोग करते हैं, और इसके खान पान व सेवा सामग्रीके लिये उसी समयसे कुछ जागीर नियत है.

काला भैरव- महलोंके दर्वाज़हके बाहिर दाहिनी तरफ़ चबूतरेपर केवल एक खड़ी हुई मूर्ति अनुमान २० फ़ुट ऊंची है, जिसकी सेवा नेवार जातिवाले करते हैं, जब किसी मनुष्यको किसी न्यायपर शपथ दिलाना हो, तो इसी भैरवकी मूर्तिके चरण छुवाकर उससे धर्म उठवाया जाता है.

महलोंके पीछे दक्षिण पूर्व तरफ़ झुकता हुआ शहरके दर्वाज़हसे बाहिर २०० फ़ुट ऊंचा धरारा नामका एक स्थान कीर्तिस्तंभके ढंगपर महाराजा रणबहादुरशाहका बनवाया हुआ है. जब कभी कोई ज़ुरूरतका काम पड़ता है, तो उसपर चढ़कर बिगुल बजानेसे पांच पांच सात सात कोसकी दूरीके मनुष्य एकट्ठे होजाते हैं, इसके चारों ओर एक बहुत बड़ा इहातह खिचा हुआ है.

धराराके पास ही सुन्धारा नामका एक स्थान है. ये जल धारा बड़े अंदाज़से बनी हुई हैं, जिनमें नलोंके द्वारा पहाड़ोंमेंसे पानी लाया गया है; और जिस स्थानमें, वे गिरती हैं वहां पांचों धाराओंके मुंहपर डेढ़ फ़ुट मोटे सुनहरे नल पर्वतसे चार चार फ़ुट बाहिरकी तरफ़ निकले हुए हैं. यह जलाशय एक चौकोर कुण्डकी तरह पचास साठ क़दमके अनुमान चौड़ा और लम्बा बना हुआ है, जिसके तीन तरफ़ सीढ़ियां और अन्दरको बहुत साफ़ पत्थर जड़े

हुए हैं. इसमें एक तरफ़ पांच धाराओंमें होकर पानी गिरता है, और दूसरी तरफ़से निकलकर ज़मीनके भीतर होता हुआ बागमतीमें जा मिलता है. शहरके बाहिर पूर्व तरफ़ टूंडीखेल नामका एक बड़ा मैदान आध मील लम्बा और पाव मीलके अनुमान चौड़ा सेनाकी क़वाइदके लिये है, जिसके पास सर्कारी मेगज़िन और तोपख़ानह भी है. शहरसे पश्चिम तरफ़ सिपाहियोंकी परेडके लिये एक दूसरा मैदान क़रीब आध मील लम्बा और है, जिसे छावनी कहते हैं. प्राचीन देवालयोंमेंसे स्तम्भूनारायण, वैकुण्ठनारायण, अटकनारायण, ईखनारायण, लुमड़ीदेवी, कंकेश्वरीदेवी, नटदेवी और शोभा भगवती नामक देवताओंके आठ मन्दिर उसी समयके बने हुए हैं, जबकि शहर काठमांडू आबाद हुआ था. इनके सिवा कुमारीदेवी, पचली भैरव, मरुगणेश, मछेन्द्रनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ), महंकाल भैरव, संकटा देवी और नृसिंह आदि और भी कई प्रसिद्ध देवस्थान हैं. कुमारी देवीकी यात्रा अथवा मेलेमें, जो भाद्रपद शुक्ल १२ से शुरू होता है, प्रथम दिन (भाद्रपद शुक्ल १२ को) राज्य महलोंके सामने इन्द्रध्वज नामका एक बड़ा भारी निशान खड़ा कियाजाता है, जिसके मूलमें सुवर्णकी बनी हुई इन्द्रकी छोटी मूर्ति पूजन करके रखदी जाती है. इस उत्सवपर महाराजाधिराज बड़े जुलूसके साथ राज्यके मन्त्री तथा कुल अफ्सरों सहित सवारी करके उस स्थानपर आते हैं. द्वादशीके दिनसे ८ दिनतक बराबर मेला रहता है, हरएक मुहल्लेमें इन्द्र और भैरवकी मूर्तियां स्थापित कीजाकर उन का पूजन होता है. मेलेके शुरूसे अख़ीरतक रात्रिके समय हर रोज़ नगरमें रौशनी होती है, और सन्ध्या समयसे आधी रात गयेतक हरएक क़िस्मके नाच व राग रंग हुआ करते हैं, नाचने वालोंको सर्कारसे इन्आम मिलता है, इसमें एक स्वांग भी होता है, याने रात्रिके समय भकू (भूत) नामके एक मनुष्यके मुंहपर भैरवका चिहरा बांधकर उसके हाथमें खड्ग देदिया जाता है, और उसके साम्हने एक भैंसेको मद्य पिलाकर छोड़ देते हैं, जिसे वह खड्गसे मारकर उसका खून पीलेता है. द्वादशीकी रात्रिको तमाम नगरके स्त्री व पुरुष हाथोंमें धूप लेलेकर नगर प्रदक्षिणा करते हैं; चतुर्दशीको कुमारी देवीकी रथयात्रा होती है, और उसी दिन महाराजाधिराज भी फ़ौज सहित जुलूसकी सवारी करते हैं. जब यह रथ नगर प्रदक्षिणा करके महलोंमें पहुंचता है, उस समय महलके बाहिर एक बड़े चबूतरेपर महाराजाधिराज सिंहासन पर विराजमान होकर एक बड़ा दर्बार करते हैं, जिसमें नगरके कुल महाजन लोग राजाके दर्शनोंको आते हैं. इसी रात्रिको नेवार जातिकी लड़कियां नगरके कुल देवताओंके स्थानोंपर दीपक जलाती हैं. आश्विन कृष्ण ४ के दिन फिर रथयात्रा होती है, और रात्रिके समय ऊपर बयान किया हुआ इन्द्रध्वज गिराया जाकर

बागमती नदीमें बहादिया जाता है. और पचली भैरवका मेला आश्विन शुक्र ५ को होता है. काठमांडूके गिर्द शहरपनाह नहीं है; नेवार जातिके राजा लक्ष्मणसिंहका बनवाया हुआ काष्ठका एक बहुत बड़ा मकान शहरके बीचमें है, जिसके कारण वह काठमांडू नामसे प्रसिद्ध हुआ; इस मकानकी निस्बत बयान किया जाता है, कि यह ३०० वर्ष पहिले याने, विक्रमी १६४३ [हि० ९९४ = ई० १५८६] में तय्यार कराया गया था.

पाटण- यह शहर काठमांडूसे २ मील फ़ासिलहपर दक्षिण पूर्व कोणमें क़रीब २०००० बीस हज़ार घरोंकी बस्तीका है, जहां चार पल्टनें और एक जेनरल रहता है. यहांपर अगले नेवार राजाओंके बनवाये हुए तथा लाल मछेन्द्रनाथ व श्रीकृष्णके मन्दिर हैं. लाल मछेन्द्रनाथकी यात्रा सालमें वैशाखसे आषाढ़के महीनेतक होती है, इनका पूजन बौद्ध लोग करते हैं. मूर्तिको वैशाख कृष्ण १ के दिन स्नान कराने बाद वैशाख शुक्र १ को रथमें बिठाकर मन्दिरसे बाहिर लाते, और प्रति दिन एक एक मुहल्लेमें फिराकर "जावलाखेल" नामक मैदानमें लेजाते हैं. यह रथ (१) बहुत बड़ा है, जिसको बैलों वगैरहकी एवज़ आदमी रस्सोंसे खेंचते हैं, और वह बड़ी मुश्किलसे कई दिनोंमें नगरके भीतर घूमकर मैदानमें पहुंचता है. यह स्थान पाटण शहरके बाहिर दक्षिण ओर आध मीलके फ़ासिलहपर मए एक छोटे तालाबके वाके है, इस मैदानमें यात्राकी समाप्तिके दिन राजा भी काठमांडूसे सेना समेत सवारी करके आते हैं. फिर लाल मछेन्द्रनाथका एक बहुत पुराना कुर्ता, जो मन्दिरमे रहता है, मैदानमें रथके ऊपरसे सब लोगोंको दिखाया जाता है, और बाद उसके मूर्तिको खट (विमान) में बिठाकर बुंगमती नामके ग्राममें, जो पाटणसे १ मील पूर्व रुख़को वाक़े है, लेजाते हैं, जहांपर एक मन्दिर बना हुआ है, उसमें उस मूर्तिको लेजाकर स्थापित कर देते हैं और छः महीनेतक वहां रखने बाद खट (विमान) पर बिठाकर पाटणके मन्दिरमें लेआते हैं. ग्यारह वर्ष पर्यन्त इसी तरहपर यात्रा होती रहती है, बारहवें वर्ष सालभरके लिये इस मूर्तिको बुंगमतीके मन्दिरमें ही रहने देते हैं, और वैशाख शुक्र १ को खट (विमान) में बिठाकर रीतिके अनुसार शहरके अन्दर घुमाने तथा "जावलाखेल" मैदानमें लेजाने बाद वापस उसी (बुंगमतीके) मन्दिरमें लेआते हैं.

भदगांव- काठमांडूसे ६ मील पूर्व १२००० घरोंकी बस्तीका एक बड़ा नगर है; जहां चार पल्टनें व एक जेनरल रहता है. इसमें नेवार राजाओंके महलोंके अलावह दत्तात्रेय स्वामीका एक बहुत बड़ा सुन्दर और प्रसिद्ध देवालय और आकाश-भैरवका एक मन्दिर है. इस स्थानपर सालभरमें एक बार मेष संक्रांतिको बिसक्याट

(१) नयपालमें कुल देवताओंके रथोंको यात्राके समय आदमी ही खेंचते हैं.

यात्राके नामसे एक प्रसिद्ध मेला भरता है, जिसमें नयपालके राजा भी जुलूसकी सवारीसे आते हैं. भैरवकी पूजा आचार्य (नेवार) लोग करते हैं; यात्राके प्रारंभसे एक दिन पहिले मन्दिरके बाहिर वाले मैदानमें, जहां एक लम्बा काठका स्तम्भ गाड़ दिया जाता है, पंडे लोग भैरवकी मूर्तिको रथमें बिठाकर लेजाते हैं, और उस स्तम्भको गिराने बाद, जो मेलेका चिन्ह है, मूर्तिको रथमें बिठाकर वापस मन्दिरमें लेआते हैं.

कीर्तिपुर – पहाड़की एक छोटी टेकरीके ऊपर काठमांडूसे १ कोस दक्षिण, अनुमान ७०० घरोंकी आबादी है, जहां बाग भैरवका एक प्रसिद्ध मन्दिर है.

ठीमी– काठमांडूसे पूर्व तरफ़ दो कोसके फ़ासिलहपर ७००० घरोंकी बस्तीका एक छोटा क़स्बह है, जहां बालकुमारी नामक देवीका एक प्रसिद्ध देवालय है; इस देवीकी खटयात्रा मकर संक्रांतिकी रात्रिको होती है, जिसमें यहांके सर्व साधारण लोग जलती हुई मशूअ़लें हाथोंमें लिये हुए देवीको खटमें बिठाकर बस्तीके भीतर घुमाते हैं.

देव पाटण– काठमांडूसे दो मील पूर्वोत्तरको किरांति वंशी राजाओंके समय नयपालके देवपाल नामी क्षत्रीका बसाया हुआ एक छोटासा ग्राम है; यहांपर पशुपतिनाथ महादेव (१) का एक बहुत बड़ा लिंग और प्रसिद्ध मन्दिर है, जिसकी पूजा दक्षिणी महाराष्ट्र लोग करते हैं. इस देवस्थानकी यात्रा (त्रिशूल यात्रा) में, जो आषाढ़ महीनेमें होती है, नेवार जातिके बहुत से लोग एकट्ठे होते हैं, और अपनी जातिके तीन छोटे बालकोंको एक तख़्तमें त्रिशूलोंके ऊपर सीधे लिटाकर बस्तीमें घुमाते हैं. इसके सिवा शिवरात्रिपर एक बड़ा भारी मेला होता है. जिसमें बहुत दूर दूर स्थानोंके यात्री आते हैं.

गुह्यकाली देवी– यह स्थान पशुपतिनाथ महादेवसे पाव मीलके फ़ासिलहपर वाके़ है; यहां कोई मूर्ति नहीं है, सिर्फ़ मन्दिरके भीतर बहुत सकड़े मुंहका एक अथाह गहरा कुण्ड है, जिसमें हाथका पंजा समा सके. कहते हैं, कि यह हमेशह भरा रहता है, और इसके पानीमें एक प्रकारका उबाल आता रहता है. कुण्डके आसपास मन्दिरमें सुवर्णके पतरे जड़े हुए हैं, और मूर्तिकी जगह कुण्डकी पूजा होती है.

---

(१) बौद्धोंके समयमें यह ज़ियादह प्रख्यात नहीं थे, लेकिन् पीछेसे शंकराचार्यने इनको अधिक प्रसिद्ध किया, और दक्षिणसे महाराष्ट्र लोगोंको बुलाकर उनकी सेवाके लिये नियत किया, उस समयसे अभीतक वहां यही दस्तूर चला आता है, कि जब कोई पुजारी मरजाता अथवा किसी कारणसे पूजन करनेके अयोग्य समझा जाता है, तो दक्षिणी हिन्दुस्तानसे ही नया पुजारी बुलाया जाता है, नयपालमें उत्पन्न होनेवाली सन्तानको पूजनका काम नहीं सौंपा जाता.

सांखू - काठमांडूसे चार कोस उत्तर पूर्व एक छोटा ग्राम है. इस ग्रामके पास ही पूर्वोत्तर कोणमें एक पहाड़के ऊपर आध कोस चढ़कर बज्रजोगिनी देवीका मन्दिर है, जहां चैत्र शुक्ल १५ को खट यात्रा होती है. इस यात्रामें दो तीन दिनतक कोई मनुष्य जूता पहिरकर नहीं जासक्ता.

नयपालके सूर्यवंशी ख़ानदानके ग्यारहवें राजा हरिदत्त वर्मनके बनाये हुए चांगूनारायण, शिखनारायण, इचंगूनारायण और विशंखूनारायणके चार मन्दिर काठमांडूसे चारों दिशाको वाके़ हैं; इनमेंसे चांगूनारायणका मन्दिर काठमांडूसे पूर्वोत्तर कोणमें ३ कोसके फ़ासिलहपर एक अति प्रसिद्ध स्थान है, जहां डेढ़ सौ अथवा दो सौ घरोंकी आबादी है. बर्सातके दिनोंमें काठमांडूके मैदानके तालाबों तथा नदियोंके दहोंमेंसे जो एक प्रकारका धूआं सर्पकी तरह बल खाता हुआ निकलता है, वह चांगूनारायणके मन्दिरके ऊपर होकर ऊंचा चले जाने बाद दिखाई नहीं देता (१). प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल ११ को नयपालके निवासी एक दिनमें ऊपर लिखे हुए चारों स्थानोंके दर्शन करते हैं, जिसमें उनको बीस या बाईस कोसका सफ़र करना पड़ता है.

बालाजी - काठमांडूसे एक कोसके फ़ासिलहपर पचास क़दम लम्बा चौड़ा एक कुण्ड है, जिसमें सर्कारी पाली हुई मछलियां रहती हैं. यहांका पानी २२ धाराओंमें होकर निकलता, और अख़ीरमें विष्णुमती नदीसे जामिलता है. इस कुण्डके पास ही पूर्वकी तरफ़ एक छोटासा दूसरा कुण्ड है, जिसके बीचमें जलशाईनारायण (बालाजी) की एक सोती हुई चतुर्भुज मूर्ति रक्खी है.

बूढ़ा नीलकण्ठ - काठमांडूसे उत्तर तीन कोसकी दूरीपर अनुमान १०० घरोंकी बस्तीका एक छोटा गांव है, यहां दश पन्द्रह हाथ लम्बी एक चतुर्भुज मूर्ति एक कुण्डके बीचमें आड़ी रक्खी हुई है; लेकिन् इस स्थानपर किसी कारणसे नयपालके राजा नहीं जाते, इसलिये उक्त जलशाई मूर्तिकी एक छोटीसी नक़ली प्रतिमा बनाकर बालाजीके कुण्डमें जलके अन्दर शयन करादी गई है.

ये ऊपर लिखे हुए स्थान चारों तरफ़ पहाड़ोंसे घिरे हुए एक बड़े मैदानमें, जिसकी लम्बाई १५ मील और चौड़ाई १२ मील है, क़रीब क़रीब वाके़ हैं, और

---

(१) चांगू नारायणके मन्दिरमें विष्णुकी रीतिके अनुसार गरुड़की मूर्ति भी है. लोग कहते हैं, कि इन तलाइयोंमेंसे गरुड़ सर्पको लेजाता है, जो धुएंकी मानिन्द दीख पड़ता है, उस वक़्त गरुड़की मूर्तिपर पसीनेकी तरह पानी निकलने लगता है, जिसको वहांके लोग वस्त्रसे पूंछ लेते हैं. ऐसा भी कहते हैं, कि जहां कहीं वह वस्त्र रहता है वहां सर्पका भय नहीं होता.

इनके आस पास होकर बागमती, विष्णुमती, रुद्रमती अथवा धोबीखोला और मनोहरा आदि कई छोटी बड़ी नदियां बहती हैं.

नवाकोट- यह काठमांडूसे उत्तर पश्चिम दस कोसके फ़ासिलहपर अनुमान एक हज़ार घरोंकी आबादीका छोटा क़स्बह है; यहां एक भैरवी देवीका प्राचीन मन्दिर है, जिसकी सेवा नेवार जातिकी उपजातियोंमेंसे ज्यापू लोग करते हैं. इसकी यात्रा हर साल चैत्र शुक्ल १५ को होती है, जिसमें वहांके मुख्य पुजारी या भोपा, जिनको नयपालमें धामी कहा जाता है, अपने मुंहपर एक चिह्रा (देवीका) बांध लेते हैं. इन धामी (भोपा) लोगोंमें जब कोई पुरुष मरजाता है, तो उसके साथ एक सती भी ज़रूर होती है; ये लोग हमेशह नंगे सिर रहते हैं, और राजा अथवा किसी अन्य मनुष्यको सलाम कभी नहीं करते.

गोरखा- काठमांडूसे २६ कोस पश्चिममें, पांच सौ या छः सौ घरोंकी बस्ती है. यहांपर गोरखनाथ, महाकाली और मनोकामना देवीके प्रसिद्ध मन्दिर हैं, जिनकी यात्राके लिये नयपाल देशके सैकड़ों यात्री प्रति साल एकत्र होते हैं. मनोकामना की यात्रामें बकरोंका बलीदान अधिक होता है.

गुसाईंस्थान - काठमांडूसे उत्तर तरफ़ २५ कोसकी दूरीपर एक पहाड़ी शिखर है, जिसके दक्षिणी विभागमें एक स्थानसे जलकी तीन धारा निकलकर उस कुण्डमें गिरती हैं, जो त्रिशूली (१) नदीका निकास है. इस कुण्डको गुसाईं कुण्ड (नीलकण्ठका कुण्ड) कहते हैं. पहाड़की चोटीपर ज़ियादहतर बर्फ़ जमा रहता है, जिसके कारण वहां कोई मनुष्य नहीं जासक्ता. श्रावण शुक्ल १५ को महादेवकी यात्रापर यहां बहुतसे लोग एकट्ठे होते हैं.

मुक्तिनाथ- काठमांडूसे पश्चिम अनुमान ६५ कोसके फ़ासिलहपर पहाड़में शिवका एक प्रसिद्ध स्थान है, जिसकी यात्राके लिये हर साल बहुतसे देशी व विदेशी लोग आते हैं. कृष्णा गंडकी नदी भी इसी स्थानसे निकली है.

पाल्पा (तानसेन)- राजधानी काठमांडूसे पश्चिम, ६१ कोसके फ़ासिलहपर १००० घरोंकी बस्ती है, जहां १५०० सिपाही तथा एक जेनरल रहता है. यह नगर एक ऊंचे पहाड़के ऊपर बसाहुआ है, यहांके सिपाही वगैरह लोग सर्दीके मौसममें नीचेकी तरफ़ बटोल स्थानमें आकर रहते हैं.

---

(१) इसकी निस्बत नयपाली लोग कहते हैं, कि जब महादेवने ज़हर पीया था, तब इस पहाड़ में त्रिशूल खोंसा, और उसके गाड़नेसे जो जलकी तीन धारा उत्पन्न हुई उनके नीचे शयन करके उन्होंने ज़हरकी तापको बुझाया, और इसी सबबसे इसका नाम त्रिशूली नदी पड़ा.

बटोल - काठमांडूसे ६८ कोसकी दूरीपर तानसेनके नीचे एक छोटासा ग्राम है. यहां आबादी नहीं है, सिर्फ़ सर्दीके दिनोंमें तानसेनकी फ़ौज और वहांके दूकानदार वगैरह आकर निवास करते हैं.

प्यूठाना - राजधानी काठमांडूसे ८६ कोसके अनुमान पश्चिम रुख़को, राज्यके ख़ास बड़े मेगज़िन्का स्थान है, जहां एक कप्तान चालीस या पचास जवानों सहित रहता है.

सल्ल्याना - यह क़स्बह राजधानी काठमांडूसे क़रीब ११० कोसके फ़ासिलह पर पश्चिमकी तरफ़ वाक़े है, जिसमें १ कम्पनी और कर्नेल रहता है.

शिलगढ़ी - राजधानीसे १७० कोस दूर, पहाड़के ऊपर एक गढ़ी है, जहां १ कर्नेल और १०० जवान रहते हैं, परन्तु यह फ़ासिलह केवल पहाड़ी रास्तहके घुमावके सबबसे है.

देवघाट - यह काठमांडूसे दक्षिण, चितवनकी झाड़ीके पास अनुमान ३० कोस के फ़ासिलहपर, जिस जगहमें होकर त्रिशूल गंगा निकली है, वाक़े है. यहां हर साल मकर संक्रांतिपर एक बड़ा मेला होता है, जिसमें नयपालके बहुतसे यात्री लोग त्रिशूल गंगाका स्नान करनेको आते हैं. यह मेला एक महीनेतक बराबर रहता है, इसमें किसीक़द्र हिन्दुस्तानी व पहाड़ी मालकी ख़रीद व फ़रोख़्त भी होती है, याने कपड़ा व बर्तन वगैरह हिन्दुस्तानसे और कम्मल, खुकुड़ी (छुरा) तथा लोहेके बर्तन पहाड़ी मक़ामातसे आते हैं. इस मेलेमें राजा और वज़ीर भी अक्सर आते हैं. देवघाटमें राज्यकी तरफ़से एक सूबह मए सिपाहियों वगैरहके रहता है.

धनकुटा - काठमांडूसे पूर्व, ७७ कोसपर ४०० घरोंकी आबादी है, यहां ५०० सिपाही और एक जेनरल रहता है.

इलाम - राजधानीसे पूर्व, ९० कोसकी दूरीपर एक छोटासा ग्राम है, जहां ५०० सिपाही और एक कर्नेल रहता है.

उदयपुर गढ़ी - जो राजधानीसे पूर्व ८० या ८५ कोस दूर एक पहाड़ीके ऊपर वाक़े है, यहां १ कर्नेल और १०० सिपाही रहते हैं.

सींधुली गढ़ी - यह एक छोटी गढ़ी है, जो राजधानीसे २४ कोस पूर्व दिशाको वाक़े है; यहां एक कर्नेल और २०० सिपाही राज्यकी तरफ़से नियत हैं.

चीसापानी - यह भी एक मुख्य गढ़ी है, जो राजधानीसे ९ कोस दक्षिण उस सड़कपर वाक़े है, जो हिन्दुस्तानकी तरफ़ आती है. यहां २०० सिपाही, दो अथवा तीन तोप और एक मेजर कप्तान रहता है. इनके सिवा और कई छोटी छोटी गढ़ियां और बहुतसे स्थान हैं, जहां अक्सर सर्कारी सिपाही वगैरह ज़ाबितहके वास्ते नियत हैं.

सिम्भू- राजधानीसे १ मील पश्चिम, एक छोटी टेकरीके ऊपर बौद्धका मन्दिर है. इस मन्दिरमें एक दीपक घृतका हमेशह जलता रहता है, जिसकी बाबत वहांके लोग कहते हैं, कि इसको एक अरसह गुज़रा, जबसे यह जलाया गया है, इस वक्तक बीचमें कभी नहीं बुझा.

पोखरा- यह स्थान काठमांडूसे ४६ कोस पश्चिमकी तरफ़ श्वेतगंडकी नदीपर सतहुं और तनहुंके बीच एक बड़ा शहर है, जहां एक कर्नेल मए ५०० सिपाहियोंके रहता है. इस मक़ामपर प्रति वर्ष एक बड़ा मेला होता है, जिसमें तांबेकी बनी हुई उम्दह कारीगरीकी चीज़ें और उनके अलावह ज़िलेकी अन्न आदि पैदावारी वस्तुएं बेची जाती हैं. यह क़स्बह गोरखा लोगोंके क़बज़हमें आनेसे पहिले उन छोटी छोटी २४ स्वाधीन रियासतोंकी राजधानियोंमेंसे एक था, जो प्राचीन समयमें सप्त-गंडकी नदीके सबसे बड़े भागपर फैली हुई थीं. इसका नाम पोखरा रक्खे जानेकी वजह यह है, कि नयपाली भाषामें पोखरा शब्दका अर्थ एक तालाब या बांधा हुआ पानीका झील है, और जोकि इस स्थानके पास घाटीमें बहुतसी झीलें हैं, इसलिये घाटी और स्थान, दोनों पोखरा नामसे प्रसिद्ध हैं.

मश्हूर मेले- इस देशमें पोखरा व देवघाटके सिवा और कोई ऐसा मेला नहीं होता, जिसमें किसी क़िस्मकी ख़रीद व फ़रोख़्त होती हो, अल्बत्तह जहां जहां प्रसिद्ध देवालय आदि हैं, वहां हर एक जगह नियत समयपर यात्राके लिये देश वासियोंकी एक बड़ी भीड़ जमा होती है.

व्यापार- नयपालमें कपड़ेके सिवा, जो हिन्दुस्तानसे जाता है, दूसरे देशोंकी और किसी चीज़का व्यापार नहीं होता, अल्बत्तह तिब्बतसे कस्तूरी, सोना, चमर और चाय वगैरह चीज़ें आती हैं, जो हिन्दुस्तानमें आकर बिकती हैं; तिब्बतके टांगन और घोड़े केवल नयपालतक आते हैं, आगे नहीं बढ़ते, परन्तु नयपालकी तराईसे जो हाथी पकड़े जाते हैं, वे हिन्दुस्तानमें लाये जाकर पटना और हरिहरक्षेत्र मक़ामोंपर बिकते हैं. हिन्दुस्तानमें ज़ियादहतर हाथी दांत इसी जगहसे आता है, और चीन वाले भी हाथी दांत व मोरपंख यहांसे ही ले जाते हैं. उदयपुरगढ़ीके गिर्द व नवाहमें बड़ी इलायची पैदा होती है, जिसके बन्दोबस्तके लिये उदयपुरगढ़ी व पटनामें, जो इस व्यापारकी आढ़तके मुख्य स्थान हैं, एक एक कर्नेल राज्यकी तरफ़से रहता है. इन इलायचियोंकी आमदसे एक बड़ी रक़म नयपालके ख़ज़ानहमें जमा होती है.

सड़कें व रास्ते- नयपालके मुख्य रास्तोंमेंसे पहिली सड़क नयपालसे सीधी पश्चिमी ओर महाकाली (सरजू) नदीके झूल घाटपर निकली है; दूसरी नयपालसे पूर्व

दार्जिलिंगके पास निकलती है; और तीसरी हिन्दुस्तानसे आने जानेकी मुख्य सड़क है, जो चीसापानी गढ़ीसे उतरकर पश्चिम तरफ़ हेटोंड़ा और सीमरावास स्थानोंमें होकर अंग्रेज़ी अमल्दारीमें आदापुरके पास निकलती है. इसके सिवा हिन्दुस्तानसे आने जानेका कोई दूसरा मुख्य रास्तह नहीं है, लेकिन् वहांके देशी लोग पूर्व तरफ़ सींधुली गढ़ी, और पश्चिमी तरफ़ पाल्पा व बटोलके रास्तोंसे भी आ जा सके हैं. उत्तर दिशामें तिब्बत और चीनकी तरफ़से आने जानेके दो रास्ते हैं, जिनमेंसे पहिला रास्तह कुती स्थानके पास और दूसरा केरुंकी तरफ़ होकर गुज़रता है.

नयपालका प्राचीन इतिहास.

नयपालके देशमें वर्तमान खानदानसे पहिले कई मुख्तलिफ़ खानदानोंके राजा जुदा जुदा इलाक़ोंमें राज्य करते थे, जिनके कुर्सीनामे और किसी क़द्र तवारीख़ी हालात, पंडित भगवानलाल इन्द्रजी और डॉक्टर बूलरने, उन चन्द पुस्तकोंसे चुनकर, जिनमें नयपालके प्राचीन राजाओंकी वंशावली दर्ज हैं, और जो उनको वहांके पुस्तकालयोंमें मिली हैं, इंडियन ऐन्टिकेरीकी तेरहवीं जिल्दके ४११ एष्ठसे ४२८ तक में दर्ज करवाये हैं, उन्हींके अनुसार संवतोंको छोड़कर केवल राजाओंके नाम और उनका किसी क़द्र तवारीख़ी हाल मुख्तसर तौरपर यहां भी दर्ज किया जाता है. संवतोंको छोड़-देनेका कारण यह है, कि उनका कुछ ठीक पता नहीं लगता, बल्कि उक्त पंडित और साहिबको भी उनके सहीह होनेपर विश्वास नहीं है. इस वंशावलीके बहुत से नाम, जिस क्रमसे नयपालके लेखमें दर्ज हैं, उसी तरह मिलते हैं, इससे मालूम होता है, कि वंशावली बनाने वालेके पास ऐतिहासिक साधन होंगे, परन्तु साल संवतों वगैरहमें राजपूतानहकी तवारीख़ोंके मुवाफ़िक़ ही हेर फेर हुआ है.

नम्बर १- माता तीर्थका गोपाल वंशः-

१- भुक्तमानगत, २- जयगुप्त, ३- परमगुप्त, ४- हर्षगुप्त, ५- भीमगुप्त, ६- मणिगुप्त, ७- विष्णुगुप्त और ८- यक्षगुप्त, जो लावलद मरा.

नम्बर २- अहीर वंश (हिन्दुस्तानका):-

१- वरसिंह, २- जयमतिसिंह, और ३- भुवनसिंह, जिसको पूर्व (किरांति) वालोंने जीता.

नम्बर ३- किरांति ख़ानदान, जो गोकरणमें क़ाबिज़ रहा:-

१- यलम्बर; २- पवी; ३- स्कंधर; ४- वलम्ब; ५- हती; ६- हूमति; ७- जितेदस्ती; ८- गली; ९- पुष्क; १०- सूयर्म; ११- पर्व; १२- थुंक, जिसको राइट साहिबने "बंक" लिखा है; १३- स्वनन्द; १४- स्थुंको; १५- गिघ्री (गिध्री); १६- नने; १७- लुक; १८- थोर; १९- थोको; २०- वर्म; २१- गुज; २२- पुष्कर; २३- केसू; २४- सुन्स, जिसको राइट साहिबने सुग लिखा है; २५- सम्मू, जिसका नाम राइट साहिबने सन्स, और किर्कपैट्रिक साहिबने जुश लिखा है; २६- गुणन; २७- खिम्भू; २८- पटुक, जिसपर सोमवंशी राजाओंने हमलह किया था; और २९- गस्ती, जिसने सोमवंशियोंके मुक़ाबलहसे भागकर गोदावरीके पास पुलोच्छा नामी मक़ामपर एक नया क़िला बनाया, और अख़ीरमें इस ख़ानदानका राज्य सोमवंशियोंके हाथमें गया.

नम्बर ४- सोम वंशी:-

१- निमिष; २- मनाक्ष, जिसको राइट साहिब मताक्ष पढ़ते हैं; ३- काकवर्मन्; ४- पशुप्रेक्षदेव, इसने पशुपतिनाथके मन्दिरका जीर्णोद्धार कराया था; और ५- भास्कर वर्मन्, जिसने संपूर्ण भारतवर्षपर विजय पाई, और देवपाटण नगरको बढ़ाकर पशुपतिनाथके पूजनके नियम ताम्रपत्रपर खुदाकर चारुमती विहारमें रखवाये; इसके कोई सन्तान नहीं हुई, इसलिये इसने सूर्य वंशी ख़ानदानके पहिले राजाको गोद लिया.

नम्बर ५- सूर्य वंशी या लच्छवी:-

१- भूमि वर्मन्, इसने बाणेश्वरको अपनी राजधानी बनाया; २- चन्द्र वर्मन्; ३- जयवर्मन्; ४- वर्षवर्मन्; ५- सर्ववर्मन्; ६- पृथ्वीवर्मन्; ७- ज्येष्ठवर्मन्; ८- हरिवर्मन्; ९- कुबेरवर्मन्; १०- सिद्धि वर्मन्; ११- हरिदत्तवर्मन्, जिसने चांगूनारायण, शिखनारायण, इचंगूनारायण, और विशंखूनारायण नामी चार देवताओंके मन्दिर और बूढ़ा नीलकण्ठमें जलशयनका मन्दिर बनवाया; १२- वसुदत्त वर्मन्; १३- पतिवर्मन्; १४- शिववृद्धि वर्मन्; १५- वसन्त वर्मन्; १६- शिववर्मन्; १७- रुद्रदेव वर्मन्; १८- वृषदेव वर्मन्; इसने कई विहार बनवाये, और लोकेश्वर आदि बौद्ध देवताओंकी मूर्तियां स्थापन कीं; इसका भाई बालार्चन भी बौद्ध था. इसी वृषदेवके वक्तमें शंकराचार्यने दक्षिणी हिन्दुस्तानसे नयपालमें आकर, बौद्ध धर्मका नाश किया. १९- शंकरदेव वर्मन्, इसने पशुपतिनाथमें एक त्रिशूल बनवाया; २०- धर्मदेव; २१- मानदेव, जिसने चक्र विहार बनवाया, और कोई कहते हैं, कि इसने ख़ासा चैत्य बनवाया था; २२- महीदेव, जिसको राइट और किर्कपैट्रिक महादेव

लिखते हैं; २३- वसन्तदेव; २४- उदयदेव वर्मन्; २५- मानदेव वर्मन्; २६- गुणकाम-देव वर्मन्; २७- शिवदेव वर्मन्, जिसने देवपाटणको एक बड़ा शहर बनाकर उसे अपनी राजधानी क़रार दिया, और शाक्त धर्मका पुनरोद्धार करके आप भिक्षु बना, इसके बेटे पुण्यदेव वर्मन्ने भी अपने बापका अनुकरण किया; २८- नरेन्द्रदेव वर्मन्; २९- भीमदेव वर्मन्; ३०- विष्णुदेव वर्मन्; और ३१- विश्वदेव वर्मन्, जिसने अपनी बेटी ठकुरी वंशके राजा अंशु वर्मन्को ब्याही.

नम्बर ६- ठकुरी ख़ानदानः-

१- अंशु वर्मन्, जो सूर्य वंशके आख़री राजा विश्व वर्मन्का दामाद (जमाई) था; २- कीर्ति वर्मन्; ३- भीमार्जुन; ४- नन्ददेव; ५- वीरदेव; ६- चन्द्रकेतुदेव; ७- नरेन्द्रदेव; ८- वरदेव; ९- शंकरदेव; १०- वर्धमानदेव; ११- बलिदेव; १२- जयदेव; १३- बालार्जुनदेव; १४- विक्रमदेव; १५- गुणकामदेव; १६- भोजदेव; १७- लक्ष्मीकामदेव; और १८- जयकामदेव; इस राजाके औलाद न होनेसे नवाकोटके ठकुरी ख़ानदान वाले राज्यके मालिक बने.

नम्बर ७- नवाकोटका ठकुरी ख़ानदानः-

१- भास्करदेव; २- बलदेव; ३- पद्मदेव; ४- नागार्जुनदेव; और ५ शंकर-देव, जिसके मरजानेपर अंशु वर्मन्के वंश वालोंमेंसे वामदेव नामी पुरुषने ललितपट्टन और कांतिपुरके सर्दारोंकी मददसे नवाकोटके ठकुरी ख़ानदान वालोंको निकालकर अपना अमल जमाया.

नम्बर ८- अंशु वर्मन्का दूसरा ठकुरी ख़ानदानः-

१- वामदेव; २- हर्षदेव; ३- सदाशिवदेव; ४- मानदेव, यह राजा चक्रविहारमें यति होगया था; ५- नरसिंहदेव; ६- नन्ददेव; ७- रुद्रदेव; ८- मित्रदेव; ९- अरिदेव, जिसने अपने पुत्रको मल्लका ख़िताब दिया; १०- अभयमल्ल; ११- जयदेव-मल्ल, जिसने कांतिपुर और ललितपट्टनमें राज्य किया; इसके छोटे भाई १२- आनन्दमल्लने भक्तपुर (भदगांव) बनेपा, पनौती, नाला, धुलीखेल, खंडपू, चौकोट और सांगा नामके आठ शहर बसाये, और भदगांवमें रहना इख़्तियार किया. इन दोनों भाइयोंके अह्द हुकूमतमें दक्षिणी हिन्दुस्तानके कर्णाटक प्रान्तसे चन्द लोग नयपालमें आये, और इसी समयसे उस देशमें उनका जमाव हुआ.

नम्बर ९- कर्णाटक ख़ानदानः-

१- नान्यदेव, जिसने नयपालका कुल मुल्क जीतकर दूसरे ठकुरी वंशके आख़री

राजा जयदेवमल्ल व आनन्दमल्लको तिरहुतकी तरफ़ भगादिया, और आप राज्यका मालिक बना; २- गंगदेव; ३- नरसिंहदेव; ४- शक्तिदेव; ५- रामसिंहदेव; और ६- हरिदेव, जिसने काठमांडूको अपनी राजधानी बनाया, और पाटन (ललितपट्टन) का लश्कर बाग़ी होजानेके समय वहांसे भागकर ठमेलमें पनाह ली. कहते हैं, कि हरिदेवने मगर जातिके एक पुरुषको नौकरीसे बर्तरफ़ करदिया था, इस अदावतके सबब वह (मगर) मुकुन्दसेन नामी एक राजाको काठमांडूपर चढ़ा लाया, जिसके सिपाहियोंने कई वहांकी पवित्र मूर्तियोंको तोड़ डाला, और वे मछेन्द्रनाथके मन्दिरमेंसे भैरवकी मूर्तिको उठाकर पाल्पामें लेगये; लेकिन् नयपाल वालोंके एतिक़ाद और दन्त कथाके अनुसार, जिसको पण्डित भगवानलाल और डॉक्टर बूलरने भी इंडियन एन्टिक्वेरीमें दर्ज कराया है, पशुपतिनाथके कोपसे मुकुन्दसेनका सारा लश्कर हैज़ेमें आकर तबाह होगया, और वह (मुकुन्दसेन) भी योगीके वेषमें निकलकर देवीघाटपर जाकर मरगया.

इसके बाद ७ या ८ वर्षतक नयपालमें लगातार बद इन्तिज़ामी फैलती रही और यह मौक़ा पाकर नवाकोटके बैस ठकुरी ख़ानदान वालोंने मुल्कपर दोबारह क़ाबिज़ होनेकी तय्यारियां कीं; ललितपट्टनके हरएक टोल (शहरके मुहल्ले) में अलहदह अलहदह राजा बन बैठे, और कान्तिपुर (काठमांडू) में एकही समय बारह राजा राज्य करने लगे. भदगांवपर भी ठकुरी वंश वालोंने अपना क़बज़ह जा जमाया, और वहां बौद्ध मज़्हबके बहुतसे मन्दिर तथा विहार बनवाये. इसके बाद सूर्य वंशके राजा हरिसिंहदेवने, जो मुसल्मानोंके हाथसे निकाला जानेके कारण अयोध्या छोड़कर तराईमें आबसा था, नयपालमें दाख़िल हुआ, और उसने भदगांवपर अपना अमल दख़्ल जमाया. नयपाली दन्त कथामें ऐसा मश्हूर है, कि उसको तुलजा भवानी देवीकी तरफ़से इस देशमें आनेका हुक्म हुआ था.

नम्बर १०- भदगांवका सूर्य वंशी ख़ानदानः-

१- हरिसिंहदेव; २- मतिसिंहदेव; ३- शक्तिसिंहदेव; और ४- श्यामसिंहदेव, जिसकी बेटी तिरहुतके मल्ल ख़ानदानमें ब्याही गई थी, और उसके मरने बाद तीसरे ठकुरी ख़ानदानका राज्य क़ाइम हुआ.

नम्बर ११- तीसरा ठकुरी ख़ानदानः-

१- जयभद्रमल्ल; २- नागमल्ल; ३- जयजगत्मल्ल; ४- नागेन्द्रमल्ल; ५- उग्रमल्ल; ६- अशोकमल्ल, जिसने बैस ठकुरियोंको पाटनसे निकाला, और स्वयंभूनाथके पास काशीपुर नामका शहर बसाया; ७- जयस्थितिमल्ल, इसने जाति तथा स्त्रियोंके लिये क़ानून बनाये और बहुतसी मूर्तियां स्थापन कीं, और कई मन्दिर भी तय्यार कराये; ८- यक्षमल्ल, इसने भदगांवकी शहर पनाह तय्यार करवाई, और उसके मुख्य दर्वाज़हमें एक प्रशस्ति

क़ाइम की, जिसमें नयपाली संवत् ५७३ = विक्रमी १५१० [हि० ८५७ = ई० १४५३] हैं. इसके तीन बेटे थे, जिनमेंसे सबसे बड़े और सबसे छोटेने तो भदगांव और काठमांडूमें क्रमसे राज्य जमाया, और दूसरा बेटा बनेपा नामके शहरका राजा बना.

तीसरे ठकुरी ख़ानदानके आठवें राजा यक्षमल्लका बेटा ९- जयरायमल्ल भदगांवका राजा हुआ; और उसके बाद १०- सुवर्णमल्ल; ११- प्राणमल्ल; १२- विश्वमल्ल; १३- त्रैलोक्यमल्ल; १४- जगज्योतिर्मल्ल (जयज्योतिर्मल्ल); १५- नरेन्द्रमल्ल; १६- जगत्प्रकाशमल्ल; १७- जितामित्रमल्ल; १८- भूपतीन्द्रमल्ल; और १९- रणजीतमल्ल, जिसके वक्तमें गोरखा राजा नरभूपालशाहने नयपालपर चढ़ाई की; क्रमसे राज्य करते रहे, और इसी आख़री राजा (रणजीतमल्ल) के मरनेपर भदगांवके वंशका ख़ातिमह हुआ.

ऊपर लिखे हुए आठवें राजा (यक्षमल्ल) का सबसे छोटा बेटा १- रत्नमल्ल था, जिसने काठमांडूमें राज्य किया, और कांतिपुरके ठकुरी ख़ानदानवाले बारह राजाओंको मारकर नवाकोटके ठकुरी राजाओंपर फ़तह पाई; इसीके वक्तमें मुसल्मानोंने नयपालपर हमलह किया था. २- अमरमल्ल; ३- सूर्यमल्ल; ४- नरेन्द्रमल्ल; ५- महीन्द्रमल्ल, जिसने भदगांवके त्रैलोक्यमल्ल राजासे दोस्ती की; ६- सदाशिवदेव, जो अपनी प्रजाके हाथसे निकाला जाकर भदगांवकी तरफ़ गया, और वहां पहुंचने बाद क़ैद किया गया. सदाशिवके बाद उसका छोटा भाई ७- शिवसिंहमल्ल राज्यका मालिक बना; इसके दो बेटे हुए, जिनमेंसे बड़े बेटे लक्ष्मीनरसिंहमल्लने कांतिपुरमें राज्य किया, और छोटे हरिहरसिंहने अपने बापकी मौजूदगीमें ललितपट्टन पाया; ८- लक्ष्मीनरसिंहमल्ल, इसके वक्तमें गोरखनाथका एक काष्ठका मन्दिर तय्यार कराया-जाकर उसका नाम काठमांडू रक्खा गया, और उसी समयसे शहर कांतिपुर भी काठमांडू नामसे प्रसिद्ध हुआ; ९- प्रतापमल्ल, जिसको कविताका अधिक शौक़ था, और ख़ुद भी कवि था; १०- महीन्द्रमल्ल; ११- भास्करमल्ल, यह राजा बे औलाद मरगया, तब उसकी राणीने अपने पतिके एक दूरवाले रिश्तहदार जगज्जयमल्लको गद्दीपर बिठाया; १२- जगज्जयमल्ल, जिसके राजेन्द्रप्रकाश, जयप्रकाश, राज्यप्रकाश, नरेन्द्रप्रकाश, और चन्द्रप्रकाश नामके पांच बेटे हुए, उनमेंसे १३- जानशीन जयप्रकाशको नयपाली संवत् ८८८ = विक्रमी १८२५ [हि० ११८१ = ई० १७६८] में गोरखा राजा पृथ्वीनारायणशाहने गद्दीसे ख़ारिज किया.

काठमांडूके राजाओंमेंसे सातवें राजा शिवसिंहका छोटा बेटा, जिसने अपने बापकी मौजूदगीमें ललितपट्टन पाया, पहिला राजा हरिहरसिंह हुआ, २- सिद्धिनृसिंह; ३- श्री निवासमल्ल, इसको काठमांडूके राजा प्रतापमल्लसे लड़ना पड़ा; ४- योगनरेन्द्रमल्ल, जो अपने पुत्रके मरनेसे संसारको छोड़कर विरक्त होगया; ५- महिपतीन्द्र या महीन्द्रमल्ल (काठमांडूका); ६- जययोगप्रकाश; ७- विष्णुमल्ल,

जो इसी शाखाके चौथे राजा योगनरेन्द्रमल्लकी बेटीका लड़का था; ८- राज्यप्रकाश, जो काठमांडूके राजा जगज्जयमल्लका तीसरा बेटा था, और जिसको राजा विष्णुमल्लने राजा बनाया था, लेकिन् प्रधान लोगोंने इसको अन्धा बनाकर एक वर्षके बाद राज्यसे ख़ारिज करदिया; ९- जयप्रकाश, जो पहिले काठमांडूका राजा था, यह भी दो वर्षतक राज्य करने बाद प्रधानोंकी मिलावटसे निकाला गया; १०- विश्वजितमल्ल, जो सातवें राजा विष्णुमल्लकी बेटीका बेटा था, और प्रधानोंके हाथसे मारा गया; ११- दलमर्दन शाह (१), जो नवाकोटसे बुलाया जाकर विश्वजितमल्लके बाद राजा बनाया गया, परन्तु चार वर्ष बाद प्रधानोंने इसे भी निकाल दिया; और इसके पीछे दशवें राजा विश्वजितमल्लके वंशमेंसे १२- तेजनरसिंहको, गद्दीपर बिठाया, यह तीन वर्ष राज्य करने पाया था, कि उसी अरसहमें पृथ्वीनारायण शाहने नवाकोटसे आकर मुल्कको जीत लिया.

वर्तमान ख़ानदानका इतिहास.

नयपाल देशके वर्तमान राजा सूर्य वंशी सीसोदिया राजपूतों, याने मेवाड़के महाराणाओंके ख़ानदानमेंसे गिने जाते हैं, परन्तु इनका प्राचीन इतिहास पृथ्वीनारायण-शाहसे पहिलेका बिल्कुल नहीं मिलता, अल्बत्तह पृथ्वीराजरहस्य नामक ग्रंथसे जाना गया है, कि रावल समरसिंहके कनिष्ठ पुत्र कुम्भकरणकी औलादमें इस ख़ानदानके राजा हैं, जो उज्जैन वग़ैरह स्थानोंमें होते हुए उत्तरा खंडकी ओर गये; उनके नाम और किसीक़द्र हाल, जो हमको मिला, यहांपर दर्ज किया जाता है:-

रावल समरसिंहके कनिष्ठ पुत्र १- कुम्भकरण थे, जिनके वंशमें २- अयुत, ३- वरावर्म, ४- कविवर्म, ५- यशवर्म, ६- उदम्बरराय, ७- भद्दराय, ८- जिल्लराय, ९- अजलराय, १०- अटलराय, ११- तुत्थाराय, १२- भीमसीराय, १३- हरिराय, १४- ब्रह्मनिकराय, १५- मन्मथराय, १६- भूपालखान, जिसके खाचा और मीचा नामके दो बेटे हुए, उनमेंसे खाचाने मगर लोगोंको मारकर ढोर, गरहुं, सतहुं, और भीरकोट स्थानोंमें अपना अमल किया, और १७- मीचाखानने नवाकोटको अपनी राजधानी बनाया, जिसका पुत्र, १८- जयन्तखान, १९- सूर्यखान, २०- मीयांखान, २१- विचित्रखान, २२- जगदेवखान, २३- कुलमण्डनशाह, जिसने काश्कीका राज्य और दिल्लीके बादशाहसे शाहका ख़िताब हासिल किया. कुलमण्डनशाहके सात बेटोंमें

(१) यह पृथ्वीनारायण शाहका छोटा भाई था, और उसीका भेजा हुआ ललित पट्टनमें आया था.

से बड़ा तो अपने पिताके पीछे काइकीका राजा बना, और छोटोंमेंसे कालूशाहको लम्जुंके लोग अपना हाकिम बनानेके लिये कुलमंडनशाहके पाससे मांगकर लेगये, लेकिन् कुछ दिनोंतक अपना मालिक मानने बाद उसे शिकारके बहानेसे एक ऊंचे पहाड़पर लेजाकर मारडाला, और दोबारह कुलमण्डनशाहके पास आकर बहुत कुछ अर्ज़ मारूज़ करने व मुआफ़ी चाहने बाद इक़ार करके दूसरे बेटे २४- असोवन शाहको लेजाकर लमजुंका राजा बनाया. असोवनशाहके दो बेटोंमेंसे पहिला नरहरिशाह लम्जुंका मालिक रहा, और दूसरे २५- द्रव्यशाह (१) ने गोरखाकी तरफ़ क़दम बढ़ाकर खस जातिके एक राजाको, जो उस समय वहांकी हुकूमत करता था, मारकर उसके राज्यको अपने क़ब्ज़हमें करलिया; इसी समयसे इस ख़ानदानका नाम गोरखाली मश्हूर हुआ. उस ज़मानहमें वर्तमान नयपाल राज्यकी सीमाके भीतर नेवार आदि भिन्न भिन्न जातिके कई बड़े छोटे खुद मुख़्तार राजा थे.

द्रव्यशाहके पीछे २६- पुरन्दरशाह गद्दीपर बैठा, जिसके बाद २७- पूर्णशाह और उसके पीछे उनका छोटा भाई २८- रामशाह अपने मातहत राज्यका मालिक कहलाया, इसने इलाक़हमें ऐसा उत्तम बन्दोबस्त किया, कि जो अबतक रामशाहका स्थित प्रबन्ध कहलाता है; इनके बाद २९- डम्बरशाह, ३०- श्री कृष्णशाह, ३१- पृथ्वीपतिशाह, ३२- वीरभद्रशाह, और ३३- नरभूपालशाह क्रमसे एक छोटी रियासतके राजा बने. नरभूपालशाहके मरने बाद उनका बेटा, ३४- पृथ्वीनारायणशाह बारह वर्षकी उ़म्रमें गोरखाके राज्य सिंहासनपर बैठा. इस ज़मानहमें गोरखाका राज्य बहुत छोटा था

३४- पृथ्वीनारायणशाह.

३४- पृथ्वीनारायणशाहने गद्दीपर बैठकर अपने इलाक़हको बढ़ाना और इसी गरज़से आसपासके दूसरे राजाओंपर चढ़ाई करना शुरू किया, यहांतक, कि रफ्तह रफ्तह वह धादिंके राजाको मारकर नवाकोटका भी मालिक बनगया. पाटणकी राजधानीमें उस समय प्रधान लोगोंका ऐसा ज़ोर था, कि उन्होंने नेवार जातिके कई राजाओंको लगातार गद्दीसे ख़ारिज व क़त्ल करदिया; आख़रकार पृथ्वीनारायणशाहका भेजा हुआ उसका छोटा भाई दलमर्दनशाह पाटणका राजा माना गया, परन्तु वह भी चार वर्ष बाद ख़ारिज कियाजाकर उसके बाद अगले राजाओंके वंशमेंसे तेजनरसिंहशाह गद्दीपर बिठाया गया.

विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] में पृथ्वीनारायणशाहने

---

(१) इसकी निस्बत ऐसा भी सुनाजाता है, कि इसको शालिवाहनी शक १४८१ = वि० १६१६ [हि० ९६६ = ई० १५५९] के लगभग गोरखनाथ मिले थे, और इसी सालमें गोरखाका राज्य उसके क़ब्ज़हमें आया.

काठमांडूके राज्यपर चढ़ाई की, और कुछ अरसहतक लड़ने बाद नयपाली लोगों की मददसे सेना समेत काठमांडूमें पहुंचकर वहांके राज्य सिंहासनपर बैठ-गया, जिसवक्त कि वहांका पहिला राजा (नेवार जातिका) तलेजू देवीके स्थानमें पूजन कररहा था (१). अगर्चि नेवार राजाको इनके आनेकी खबर होगई थी, परन्तु पूजन करते समय नियमके अनुसार मन्दिरसे बाहिर न निकल सका, और पूजन समाप्त होने बाद अपनेमें मुक़ाबलह करनेकी ताक़त न देखकर वहांसे भाग गया. पृथ्वीनारायणशाहने काठमांडूपर क़ाबिज़ होकर पाटण और भक्तपुर (भदगांव) का राज्य छीन लिया; वहांके राजाओंने भी काठमांडू वालेकी तरह बिल्कुल मुक़ाबलह नहीं किया, अल्बत्तह कीर्तिपुरकी रअय्यत कुछ अरसहतक इनकी हुकूमतको न मानकर बाग़ी रही, और कई हमले होते रहे, जिनमें पृथ्वीनारायणशाहका भाई दलमर्दनशाह व प्रधान कालू पांडे मारा गया, और मुसाहिबीके कामपर कालू पांडेका बेटा दामोदर पांडे नियत हुआ. आख़िरकार पृथ्वीनारायणशाहने कीर्तिपुरको, जो बाक़ी रहगया था, जीतकर शहरके बाशिन्दोंमेंसे बारह वर्षसे अधिक अवस्था वाले कुल आदमियोंकी, मुक़ाबलह करनेके अपराधमें, नाकें कटवा डालीं, और नयपालके तीनों राज्योंको अपने अधिकारमें लेने बाद गोरखा व नयपालका राज्य शामिल करके एक बहुत बड़े मुल्कका मालिक बनगया.

इस (सूर्यवंशी गोरखाली) ख़ानदानमेंसे नयपालका मूल पुरुष या पहिला राजा पृथ्वीनारायणशाहको ही समझना चाहिये, जिसने बहादुरी और हौसिलहको काममें लाकर मुल्कके एक छोटेसे हिस्सहको इतना बढ़ाया, कि उसकी सीमामें कोशी नदीके पार वाला किरांति देश भी अपने राज्यमें मिला लिया, लेकिन् तो भी राज्य-सीमाके अन्दर कई छोटे छोटे खुद मुख़्तार रईस बाक़ी रहगये थे, जिनको भी वह अपना मातहत बनाने या राज्यसे निकाल देनेकी फ़िक्र और कोशिशमें लग रहा था; परन्तु विक्रमी १८२८ [हि० ११८५ = ई० १७७१] में यह बहादुर राजा नवा-कोटके जंगलमें शिकार खेलते समय एक शेरके हमलह करनेसे ज़ख़्मी होकर, थोड़ी देर ज़िन्दह रहने बाद उसी दिन इन्तिक़ाल करगया. पृथ्वीनारायणशाहके दो बेटे, सिंहप्रतापशाह और बहादुरशाह थे, जिनमेंसे सिंहप्रतापशाह गद्दीपर बैठा.

---

(१) काठमांडूमें भाद्रपद शुक्ल १४ को श्री कुमारीकी रथयात्राके दिन नेवार राजा अपने हाथसे तलेजू देवीका पूजन करते, और महलके आगे राज्य सिंहासन बिछाया जाकर देवीका पूजन करने बाद उसपर बैठते थे, जिसके अनुसार वर्तमान ख़ानदानके राजा भी रथयात्राके दिन उसी जगह सिंहासनपर विराजकर दर्बार करते हैं.

३५- सिंहप्रतापशाह.

३५- सिंहप्रतापशाह भी बड़ा बहादुर और जवांमर्द था, जिसने अपने पिताकी मौजूदगीमें तनहुं व सोमेश्वर आदि कई ज़िलोंको नयपालमें शामिल किया. इस राजाने गद्दीनशीन होने बाद किसी सबबसे अपने छोटे भाई बहादुरशाहको क़ैद करदिया था, जो कुछ दिनों पीछे राज्यगुरु गजराज मिश्रकी ज़मानतपर छोड़ाजाकर देशके बाहिर निकालदिया गया. सिंहप्रतापशाहके दो बेटे, रणबहादुरशाह और शेरबहादुरशाह थे, जिनमेंसे दूसरेकी पैदाइश नेवार जातिकी एक स्त्रीसे थी. विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में जब सिंहप्रतापशाहका परलोकवास हुआ, उस समय रणबहादुरशाह, जो बहुत कम .उम्र, याने दूध पीता बच्चा था, नयपालका राजा बनाया गया.

३६- रणबहादुरशाह.

३६- रणबहादुरशाहके बालक होनेके सबब बहादुरशाह, जो नयपालसे निकाला हुआ बेतियामें रहता था, सिंहप्रतापशाहके मरनेकी ख़बर सुनकर फ़ौरन् नयपालकी राजधानी काठमांडूमें आया, और अपने छोटी उम्र वाले भतीजे रणबहादुरशाहको गादी पर बिठाकर आप राज्यमंत्रीके तौर रियासतका काम करने लगा; परन्तु सिंहप्रतापशाहकी राणी (रणबहादुरशाहकी माता) राजेन्द्रलक्ष्मीसे, जो बड़ी बुद्धिमान थी, हमेशह नाइत्तिफ़ाक़ी रहनेके कारण कुछ अरसह पीछे वह दोबारह क़ैद कियाजाकर देशसे निकाला गया, और राज्यका कारबार राजाकी माता राजेन्द्रलक्ष्मी चलाने लगी. यह महाराणी राजनीतिमें बड़ी होश्यार थी, इसने सेनाका प्रबन्ध बहुत उत्तम रीतिसे किया, और गोरखा राज्यके पश्चिमी तरफ़ पालपा व काश्की आदि कई छोटी छोटी रियासतोंको जीतकर नयपालके राज्यमें शामिल करलिया; परन्तु कुछ दिनों बाद राजेन्द्रलक्ष्मीका भी इन्तिक़ाल होगया. तब बहादुरशाहने तीसरी बार फिर नयपालमें आकर कुल राज्य प्रबन्धको अपने हाथमें लिया, और हर हालतमें रणबहादुरशाहका ख़बरगीर या शिक्षक बना रहा.

बहादुरशाहने अपने प्रबन्धमें नयपालके राज्यको बहुत कुछ तरक़्क़ी दी, इन्होंने पहाड़ी जातिके क्षत्रियोंकी कई छोटी छोटी रियासतोंको, जो पश्चिमकी ओर गोरखा राज्यसे मिली हुई और पहिले ज़मानहमें जुमलाके राजाकी ख़िराज गुज़ार थीं, फ़त्ह करके नयपालके राज्यमें शामिल किया; और वहांके रईसोंसे नयपाल राज्यकी नौकरी तथा अपने ख़ानदानके साथ विवाह शादी आदि राह व्यवहार रखना स्वीकार कराकर, गुल्मीवाले राजाकी कन्यासे रणबहादुरशाहका विवाह करादिया. इसी ज़मानहमें बेतियाकी तराईका मुल्क, जिसको

विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = ई० १७६७] में गोरखा ख़ानदानका क़बज़ह

होनेसे पहिले कप्तान किनूलॉक साहिबने नयपालके प्राचीन राजाओंसे जीतकर अंग्रेज़ी राज्यमें मिला लिया था, वापस नयपालके राज्यमें शामिल हुआ, और सर्कार अंग्रेज़ीके साथ व्यापारकी बाबत विक्रमी १८४९ [हि० १२०६ = ई० १७९२] में पहिला अह्दनामह क़ाइम हुआ, जिसमें दोनों तरफ़से आने जाने वाले मालपर सैकड़ा पीछे २।।) रुपया महसूल लिया जाना क़रार पाया, परन्तु उसपर अमल दरामद न हुआ.

रणबहादुरशाहके गद्दीनशीन होने बाद नयपालके राज्यमें भीरकोट, गर्हुंकोट, मूसीकोट, धूरकोट, पर्वत, पाल्पा, थलाहार, बाजूरा, जुम्ला, अछाम, वभ्कां, जाजरकोट और सल्ल्याना आदि स्थान शामिल होजानेके अलावह गोरखा लोगोंने सिकिमके .इलाक़हको लिम्बुवान् ज़िलेतक अपने तह्तमें करके तिब्बतके लामा राजापर, जो चीनका हिमायती था, चढ़ाई की, और अपनी सीमासे पन्द्रह सोलह मंज़िल डिगर्चा नामी नगरको जा लूटा. तब तिब्बत वालोंकी मददपर चीनकी तरफ़से वहांके वज़ीर तुंथाङ्गकी मातह्तीमें ७०००० के अनुमान सेना गोरखोंके मुक़ाबलह को रवानह हुई, जिसने विक्रमी १८४९ आश्विन [हि० १२०७ सफ़र = ई० १७९२ सेप्टेम्बर] में उनको शिकस्त देकर वेत्रवती नदीके पार उतार दिया. यहांपर भी एक बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसमें नयपालकी बहुतसी सेना क़त्ल व ज़ख़्मी हुई. लड़ाईके बाद वज़ीर दामोदर पांडे व चौतरिया बम्शाहकी तज्वीज़से वेत्रवती नदीका पुल तोड़कर नदीके किनारे वाली पहाड़ी श्रेणीपर रस्सोंके आधारसे बड़े बड़े पत्थर रखवा दिये गये, और नयपाली सेनाको, जो बाक़ी रही थी, नदीके किनारों पर इधर उधर जंगलमें छिपा दिया. जब चीनी फ़ौज नदीके किनारेपर आ पहुंची, तो फ़ौरन रस्से काट दिये गये, उसवक़्त इधर तो एकदम पहाड़परसे पत्थर गिरने लगे, और उधर छिपी हुई सेनाने तीर, बन्दूक़ व तोप आदिसे हमलह करदिया, जिससे चीनी सेनाका भी किसीक़द्र नुक़्सान हुआ; कई आदमी पत्थरोंके गिरने तथा शस्त्रोंसे मारे गये, परन्तु इस मारिकहके अख़ीरमें गोरखा लोगोंको हर पांचवें वर्ष ख़िराजके तौरपर तुह्फ़ह भेजना मन्ज़ूर करके सुलह करनी पड़ी (१).

(१) सुलह होनेके समयसे अब हर पांचवें वर्ष इक़ारके मुवाफ़िक़ नयपालकी रियासतसे चीनके बादशाहके पास मोरपंख, मोती, मूंगा, हाथीदांत, कम्ख़ाब, बानात, अफ़्यून और खड्ग आदि शस्त्र, जिन सबकी क़ीमत अनुमान बीस हज़ार रुपयेके होती है, लेकर राज्यके चन्द अफ़्सर, ख़िदमतगार व सिपाही आदि कुल १० या १५ मनुष्य चीनको भेजे जाते हैं, उनको सवारी और ख़ुराक आदि ख़र्च तिब्बतकी सीमामें दाख़िल होनेसे वापस नयपालकी सीमामें आनेतक चीनके बादशाहकी तरफ़से मिलता है. चीनमें पहुंचने बाद नयपाली अफ़्सर सिर्फ़ दो बार, याने तुह्फ़ह नज़ होने व रुख़्सत पानेके वक़्, बादशाहसे सलाम करने

चीनी सेनासे लड़ाई होनेके समय नयपाल वालोंने सर्कार अंग्रेज़ीसे मदद लेना चाहा था, परन्तु लॉर्ड कॉर्नवालिसने उनकी दर्ख्वास्तको मन्जूर नहीं किया, इस सबबसे जब विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] में कम्पनीका पहिला एल्ची किर्कपैट्रिक साहिब नयपालके राजाके साथ व्यापार सम्बन्धी अह्दनामह क़ाइम करने और सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से नयपालमें एक रेज़िडेण्ट रक्खा जाना मन्ज़ूर करानेकी ग़रज़से वहां भेजा गया, तो गोरखा लोगोंने उसकी किसी बातपर ध्यान नहीं दिया, और उक्त साहिबको नाकामयाब होकर वापस लौट आना पड़ा.

जब रणबहादुरशाह होश्यार हुआ, तो उसने राज्यमें अपना हुक्म व रोब जमानेके लिये बहादुरशाहको गर्मीके मौसममें क़ैद करके चितवनकी झाड़ीको भेजदिया, जहां उसे दही व चिवड़ा खिलायाजाकर किसी ऐसे वृक्षके ताज़ह पत्तोंपर सुलवादिया गया और उन्हींसे ढक दिया गया, कि जिससे वह उसी रातको, एक क़िस्मका सख़्त बुख़ार (अवल) पैदा होजानेके सबब, मरगया. इसके मारेजाने बाद विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] में रणबहादुरशाह स्वतन्त्र राज्य करने लगा, लेकिन् पांच वर्षसे कुछ अधिक समय गुज़रा होगा, कि उन्होंने अपनी एक महाराणीका इन्तिक़ाल होजानेके सबब, जिससे उनको ज़ियादह मुहब्बत थी, राज्य छोड़कर काशीवास करना चाहा; और विक्रमी १८५७ [हि० १२१५ = ई० १८००] के क़रीब अपने दो बेटों गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह और रणोद्योतशाहमेंसे पहिलेको, जो मृतक महाराणीसे पैदा हुआ था, राज्यका मालिक बनाने बाद अपनी दूसरी राणी रणोद्योतशाहकी माता

पाते हैं. जब वे लोग सलामके लिये बादशाहके सामने पहुंचते हैं, तो उन्हें ज़मीनपर लम्बे पड़कर धोक देना पड़ता है, जैसा कि हिन्दुस्तानमें हिन्दू लोग अपने मज़्हबी देवताओंके सामने करते हैं; और बाद उसके बादशाहके हुक्म देनेपर खड़े होते हैं. चीनसे भी हर पांचवें वर्ष ख़िल्अ़तके तौर नयपालवाले महाराजाके लिये किसीक़द्र रेशमी कपड़ा, सुवर्ण और ब्योफ़ी (एक प्रकारका चूहा) की खालका कुड़ता (कोट) वग़ैरह क़रीब बीस हज़ार रुपये क़ीमतका सामान आता है, उस वक़्त उसकी पेशवाईके लिये नयपालकी सर्हदतक कुछ फ़ौज भेजी जाती है, और राजधानीके निकट पहुंचनेपर चीनी लोगोंको बड़े आदर सत्कारके साथ शहरके बाहिर ठहराया जाता है. फिर दर्बारके दिन कई नयपाली अफ़्सर और नगरके बाशिन्दे नाच व रौशनी आदि उत्सवके साथ रास्तहमें धूप जलाते व पुष्प उछालते हुए दोबारह पेशवाई करके चीनी लोगोंको ख़िल्अ़त समेत दर्बारमें लाते हैं, महलकी ड्योढ़ीतक वज़ीर पेशवाई करता है; महाराजाके सामने पहुंचकर चीनी अफ़्सर भी नयपाली अफ़्सरोंकी तरह लम्बे पड़कर सलाम करने बाद राजाके हुक्मसे उठकर कुर्सियोंपर बैठ जाते हैं. महाराजा सिंहासनपर खड़े होकर ख़िल्अ़त लेते, और उसे सिरसे लगाकर रख देते हैं, उस वक़्त २१ तोपोंकी सलामी सर होती है.

तथा दामोदर पांडे वज़ीरकी संभालमें राज्यका कुल कारोबार छोड़कर आप काशीको चले आये. कुछ दिनों काशीमें ठहरनेके पीछे इनका विचार हुआ, कि नयपालको फिर देखें, और इसी इरादहपर अपने साथियों समेत वहांसे रवानह हुए, लेकिन् जब वे नयपालकी सीमापर पहुंचे, तो दामोदर पांडे (वज़ीर) उनका देशमें वापस आना अपने हक़में नामुनासिब समझकर उन्हें रोकनेके लिये सेना समेत मए शेरबहादुरके सीमापर गया. ज्योंही कि सेना महाराजाके समीप पहुंची, उन्होंने बेख़ौफ़ लश्करमें आकर कहा, कि "ऐ मेरे वीर गोरखा लोगो तुममेंसे कौन शाहकी ओर और कौन पांडेकी ओर है !" यह बात सुनतेही कुल सवार व पैदल, महाराजाको नयपालमें आनेसे रोकनेके बदले शेरबहादुर सहित उनकी खिद्मतमें हाज़िर होगये. इसके बाद भीमसेन थापाकी सलाहके मुवाफ़िक़ महाराजाने दामोदर पांडेको क़ैद करके काठमांडूकी तरफ़ कूच किया, और वहां पहुंचते ही दामोदर पांडेको उसके दो बेटों रणकेसर व गजकेसर सहित गिरिफ्तार करके विष्णुमती नदीके पास खुट्याड़ स्थानमें भेजदिया, जहां उन तीनोंके सिर कटवा डाले गये.

रणबहादुरशाहने दोबारह नयपालमें आकर गद्दीपर तो गीर्वाणयुद्धविक्रम-शाहको ही रक्खा, लेकिन् रियासतका कुल कारोबार अपने हाथमें लेकर भीमसेन थापाको वज़ीर नियत करदिया (१), जिसने महाराजाके नयपालमें वापस आनेके समय रास्तह रोकनेवाली नयपाली सेनाके मुक़ाबलहमें उम्दह कारगुज़ारी दिखाई थी.

उक्त महाराजाने काशीमें निवास करनेके समय सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से अपनी ख़बर-गीरीपर कप्तान नौक्स पोलिटिकल एजेण्टके नियत कियाजाने, और बड़ी ख़ातिरदारी के साथ रक्खेजानेसे खुश होकर, नयपालमें दोबारह क़ाबिज़ होजानेकी शर्तपर वहां अंग्रेज़ी रेज़िडेण्ट रखनेका वादह करलिया था, और विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] में व्यापार सम्बन्धी एक अह्दनामह भी आपसमें क़रार पाया; लेकिन् जब काठमांडूमें पहुंचगये और कप्तान नौक्स वहां आया, तो उसका आदर सत्कार करनेके सिवा अह्दनामहके मुवाफ़िक़ कुछ भी अमलदरामद न किया, इसलिये उक्त कर्नेलको नाकामीके साथ वापस लौट आना पड़ा.

हेनूरी एम्ब्रोज़ साहिब, जो कुछ अरसहतक नयपालमें एजेन्सी सर्जन रहे थे, अपनी

(१) रणबहादुरशाहके काशीवास करनेके समय भीमसेन भी उनके साथ था. एक दिनका ज़िक्र है, कि मणिकर्णिका घाटके क़रीब महाराजा नाव सवार होकर तैर कररहे थे, कि अचानक कमरसे तलवार निकलकर गंगामें गिर गई, भीमसेन भी उसके साथ ही फ़ौरन् पानीमें कूदा और तलवारको निकाल लाया, जिसके धन्यवादमें उसको वज़ीरका पद मिला.

किताबमें लिखते हैं, कि रणबहादुरशाह अपनी राणीका इन्तिक़ाल होजाने बाद कुछ दीवानह होगये थे, अगर्चि उनके चन्द राणियां और भी थीं, परन्तु उनसे उनको बिल्कुल मुहब्बत न थी. इन महाराजाने देवालय आदि मज़्हबी स्थानोंकी बहुत कुछ बे इज़्ज़ती की, और विक्रमी १८६२ [हि० १२२० = ई० १८०५] में ब्राह्मणोंको दिया हुआ कुल दत्त ख़ालिसह करलिया. इसी वर्षमें उनकी ज़ियादहतर सख़्तियोंसे तंग आकर राज्यके कई लोगोंने उन्हें रियासती कारोबारसे अलग करनेके लिये शेरबहादुरशाहसे सलाह की, जो रणबहादुरशाहके काशी जाने बाद राजसी मुआमलातमें महाराणीका सलाहकार रहा था. यह ख़बर रणबहादुरशाहको मिली, जिसपर उन्होंने शेरबहादुरशाहको उस सेनामें जानेका हुक्म दिया, जो पश्चिमी इलाक़हके रईसोंको ताबे करनेके लिये भेजी गई थी. शेरबहादुरशाहने सख़्तीके साथ जवाब देकर हुक्मकी तामील करनेसे इन्कार किया, तब रणबहादुरशाहने उसको जानसे मरवा डालनेका हुक्म दिया, लेकिन् शेरबहादुरशाहने गुस्सहमें आकर फ़ौरन् मियानसे तलवार निकाली, और महाराजाके पेटमें ऐसी मारी, कि जिससे उनका वहीं काम तमाम होगया, और उसी जगह जंगबहादुरके पिता काजी बालनृसिंह कुंवरके हाथकी तलवार लगनेसे शेरबहादुर भी मारागया.

३७- गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह.

३७- गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह, जिनका जन्म विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] में हुआ था, गद्दीपर तो अपने पिताकी मौजूदगीहीमें बैठचुके थे, परन्तु गद्दीनशीनीके वक़्त कम उम्र होने और अपने पिताके काशीसे वापस आकर हुकूमत करनेके सबब राज्यके कामोंसे बिल्कुल बे ख़बर थे, और इस वक़्त भी उनकी अवस्था केवल १० वर्षकी ही थी, इसलिये राज्यका कुल काम रणबहादुरशाहकी महाराणी (त्रिपुरासुन्दरी) दीवान भीमसेन थापाकी सलाहसे करती रही.

गोरखाली लोगोंको ऊपर बयान किया हुआ बहुत बड़ा इलाक़ह हाथ आजानेपर भी सब्र न आया, और वे पश्चिम तरफ़ लगातार बढ़ते ही गये, यहांतक, कि इस वक़्त (गीर्वाणयुद्ध विक्रमशाहके राजा माने जाने बाद) भी मंडी, टिह्री और कोटकांगड़ाकी तरफ़ वाला मुल्क फ़त्ह करनेके लिये भीमसेन थापाका भाई काजी नेनसिंह थापा बहुतसी सेना समेत नियत था, जिसने कोटकांगड़ेकी सीमातक कुल मुल्क जीतकर नयपालके राज्यमें शामिल करलिया, जबकि वहां (कोटकांगड़ा) का राजा संसारचन्द्र था. संसारचन्द्रने मुल्क छीने जानेके भयसे अपनी लड़की महाराजाको व्याह देने, और हमेशहके

लिये ख़िराज गुज़ार बननेका इक़ार किया, लेकिन् नयपाली मुसाहिबोंने यह बात मन्ज़ूर नहीं की, और नेनसिंहको लड़ाई करनेका दोबारह हुक्म मिला.

नेनसिंह थापा बड़ा दिलेर और आज़मूदहकार मनुष्य था, हुक्म पहुंचते ही युद्ध करनेको सेना साजकर तय्यार होगया, और कोटकांगड़ाके इलाक़ह सालकांगड़ाकी सीमामें पहुंचकर राजा संसारचन्द्रके सेनापति कीर्तिसिंहसे उसका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें कीर्तिसिंहके मारेजाने बाद उसकी सेना भाग निकली, और सालकांगड़ापर क़बज़ह करने के लिये नेनसिंह शहरमें दाख़िल हुआ, लेकिन् अन्दर पहुंचनेपर कीर्तिसिंहकी स्त्री (१) ने अपने पतिका .एवज़ लेनेकी ग़रज़से अपने मकानमेंसे उसके एक ऐसी गोली मारी, कि जिससे थोड़ी देर बाद उसका दम निकलगया, और नयपाली सेना सालकांगड़ा छोड़कर अपनी पहिली हृदपर आ जमी. नयपाल वालोंने यह ख़बर पाकर नेनसिंहकी जगह पाल्पा (बटोल) की हुकूमतपर उसके बेटे वज़ीरसिंहको, जो क़रीब पन्द्रह वर्ष उम्रका था, और लड़ाईके कामपर काजी अमरसिंह थापाको मुक़र्रर करके भेजदिया. अमरसिंह भी बड़ा बहादुर था, इसने लश्करमें पहुंचकर सालकांगड़ाको अपने क़बज़हमें करलेनेके अलावह राजा संसारचन्द्रको निकालकर कोटकांगड़ामें भी अपना अमल दख़्ल करलिया. राजा संसारचन्द्र भागकर लाहौरके राजा रणजीत-सिंहके पास पहुंचा, और कुछ दिनों बाद उससे फ़ौजी मदद लेकर वापस कोटकांगड़ेकी तरफ़ आया; रणजीतसिंहकी दीहुई फ़ौजके मुक़ाबिल छः महीनेतक बराबर लड़ाई करके शिकस्त पाने बाद अमरसिंहको वहांसे हटकर सेना समेत सालकांगड़ामें वापस आजाना पड़ा. सिक्खोंने यहां भी उसका पीछा करके मुक़ाबलह किया, परन्तु अख़ीरमें सह्र मक़ामपर उन्हें शिकस्त नसीब हुई, और सुलह होकर सालकांगड़ेतक नयपाली सीमा क़ाइम होगई.

---

(१) जब यह औरत गिरिफ़्तार होकर नेनसिंहके सामने लाई गई, तो नेनसिंहने उसकी बहादुरानह कार्रवाईपर खुश होकर कहा, कि मैं तुम्हारे वास्ते महाराजाको सिफ़ारिश लिख देताहूं, मुनासिब है, कि तुम नयपाल जाना मन्जूर करो, वहां तुम्हारे वास्ते खान पानका अच्छी तरह बन्दोबस्त होजावेगा; लेकिन उस नेकबख़्तने इस बातको मन्जूर न करके उसके जवाबमें यह कहा, कि मैंने अपने पतिके एवज़ तुम्हारे बन्दूक़ मारी है, अब तुम भी अपने प्राणके बदले मुझे मारडालो, कि इसीमें मेरा उद्धार है, क्योंकि मैं पतिके बिना स्त्रीका जीना ठीक नहीं समझती. उस पतिव्रता स्त्रीकी इन दिलेरानह बातोंपर नेनसिंह और भी प्रसन्न हुआ, और उसे अपना दिली मन्शा ज़ाहिर करनेको कहा, जिसपर उक्त स्त्री बोली, कि यदि आप मुझपर प्रसन्न हुए हैं, तो मेरे पतिका मृतक शरीर मंगवाकर मुझे उसके साथ जल जानेकी आज्ञा दीजिये. नेनसिंहने उसकी दर्ख़्वास्तके मुवाफ़िक़ कीर्तिसिंहकी लाश मंगवा-दी, और उसे बहुतसा द्रव्य दानपुण्य करनेके लिये दिया, जिसको वह ख़ैरातमें लुटाकर अपने पतिके साथ सती होगई.

संसारचन्द्रसे सुलह होजाने बाद अमरसिंहने दक्षिणी सीमाकी बाबत अंग्रेज़ोंसे लड़ाई करना चाहा. उसवक़ मरहटा लोगोंने हिन्दुस्तानमें बल्वा मचा रक्खा था, इस कारण सर्कार कम्पनीने ऐसे वक़में एक नया बखेड़ा पैदा होजाना नामुनासिब समझकर हर तरहसे सुलह क़ाइम करनेके लिये अमरसिंह थापाके पास अपना एल्ची भेजा, परन्तु गोरखाली लोगोंने सुलह करना स्वीकार न करके कम्पनीकी सर्हदी सेनासे लड़ाई करना शुरू करदिया. तब तो अंग्रेज़ोंको भी लाचार होकर मुक़ाबलह करना पड़ा, और जेनरल ऑक्टरलोनी साहिब ७०००० सत्तर हज़ार सेना सहित मुक़ाबलहके लिये मुक़र्रर हुए. इन्होंने किसीक़द्र फ़ौज साथ देकर जेनरल जलेस्पी साहिबको, जो इनके मातहत थे, पाल्पाकी तरफ़, जहां वज़ीरसिंह था, भेजा, और आप अमरसिंहसे मुक़ाबलह करनेके लिये साल्कांगड़ाकी ओर गया. अगर्चि वज़ीरसिंहकी .उम्र बहुत कम थी, लेकिन् अक़्ल व जवांमर्दीमें वह अपने पितासे भी बढ़कर था; उसने जेनरल जलेस्पी .साहिबके मुक़ाबलहमें बड़ी बहादुरी और बुद्धिमानीका काम किया, कि जिससे कम्पनीकी सेनाने शिकस्त पाई, और सैकड़ों फ़ौजी सिपाहियों सहित जेनरल जलेस्पीके जानसे मारेजानेके अलावह कई अफ़्सर व सिपाही वगैरह नयपाली सेनाकी कैदमें पड़ने बाद बाक़ी फ़ौज भागकर ऑक्टरलोनीसे जा मिली, और बटोलमें वज़ीरसिंहने अपना क़बज़ह करलिया.

जेनरल ऑक्टरलोनीने सालकांगड़ाके क़रीब अमरसिंहसे मुक़ाबलह किया, यहां भी कम्पनीकी सेनाको शिकस्त नसीब हुई, और उक्त साहिबको कई एक जगह छोटी छोटी लड़ाइयां करने बाद फ़ौज कम होजानेके सबब मुक़ाबलह छोड़कर अंग्रेज़ी सीमामें वापस लौट आना पड़ा, लेकिन् कुछ दिनों पीछे सर्कार कम्पनीकी तरफ़से एक दूसरी सेना तय्यार कीजाकर उक्त साहिबकी मातहतीमें दोबारह नयपालपर भेजी गई. जेनरल ऑक्टरलोनीने इस वक़ बड़ी होश्यारीका काम किया, कि चन्द अफ़्सरोंको थोड़ी थोड़ी फ़ौज देकर अलहदह अलहदह स्थानोंको घेरने और लड़ाई करनेके लिये मुक़र्रर करके आप बहुतसी फ़ौज समेत अमरसिंहकी तरफ़ बढ़ा, और वहां जाकर बड़ी बहादुरीके साथ नयपाली सेनाको शिकस्त दी. अंग्रेज़ी फ़ौजने इस समय नयपाल-वालोंका यहांतक पीछा किया, कि अमरसिंहको सालकांगड़ा छोड़कर महाकाली (सरजू) नदीतक हट जाना पड़ा, और बहुतसी नयपाली सेना मारी गई.

इसवक़ अमरसिंहका इरादह हुआ, कि चीनसे मदद लेकर मुक़ाबलह करे, लेकिन् यह ख़बर नयपालमें पहुंचनेपर भीमसेन थापा वगैरह कई सर्दारोंने गीर्वाण-युद्धविक्रमशाहकी कम .उम्रीके सबब लड़ना नामुनासिब समझकर सुलह करलेना

चाहा, परन्तु अंग्रेज़ोंने उसको मन्जूर नहीं किया, क्योंकि नयपाली लोग तो अपने जीते हुए मुल्कके अलावह तराईका इलाकह (१), जो इस वक्त नयपालके राज्यमें शामिल है, लेना चाहते थे, और अंग्रेज़ोंको यह बात मन्जूर नथी, इसलिये फिर लड़ाई शुरू हुई.

इस लड़ाईके दोबारह शुरू होनेपर बटोल आदि दश ग्यारह स्थानोंमें बड़े बड़े मुक़ाबले हुए. आखरकार जेनरल ऑक्टरलोनी मए फ़ौजके काठमांडूसे १८ कोस इसतरफ़ चिरवा घाटीके पार जा पहुंचा, और वहांपर सर्दार रणवीरसिंह थापासे उसका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें नयपाली सेनाके शिकस्त पानेपर गोरखाली सर्दारोंने हरतरह सुलह करना ही मुनासिब समझा और उसके लिये अंग्रेज़ी लश्करमें पैग़ाम भेजा; अंग्रेज़ लोग भी इसवक्त मरहटोंके ग़द्रके सबब सुलह करना चाहते थे, बहुत कुछ बहस होने बाद महाकाली (सरजू) नदीसे पश्चिम सालकांगड़ातकका पहाड़ी .इलाक़ह, जो अनुमान सौ डेढ़ सौ कोस लम्बा और पच्चीस या तीस कोस चौड़ा है, सर्कार कम्पनीने अपने क़बज़हमें रखकर तराई का ज़िला गोरखाली लोगोंको देदिया. यह लड़ाई विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = .ई० १८१४] से शुरू होकर विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = .ई० १८१६] में ख़त्म होनेपर वज़ीर भीमसेन थापाके भाई रणवीरसिंहकी मारिफ़त जेनरल ऑक्टरलोनीसे सुलह होकर सौ वर्षके लिये बाहमी दोस्तीका एक अह्दनामह क़रार पाया, और वर्तमान सीमा क़ाइम कीजाकर अंग्रेज़ी रेज़िडेण्ट नयपालमें व नयपाली वकील कलकत्तेमें रहना तय पाया. नयपालमें सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से पहिला रेज़िडेण्ट गार्डनर साहिब मुक़र्रर हुआ. इन महाराजाके वक्तमें प्रुशिया (जर्मनी) का शाहज़ादह (२) सैर करनेके लिये नयपालमें आया था. लड़ाई ख़त्म होनेके पीछे कुछ दिनों

---

(१) इस तराईपर नयपाल वाले इस सबबसे दावा करते थे, कि यह मुल्क नयपाल राज्यकी सीमाके भीतर वाले प्राचीन राजाओंके क़बज़हमें था, परन्तु गोरखाली लोगोंने जब उन राजाओंको रियासतोंसे बे दख़्ल किया, और उनके पहाड़ी .इलाक़हमें अपना अमल दख़्ल क़ाइम करके नावाक़फ़ियतसे तराईको छोड़दिया, इसलिये वहां अंग्रेज़ोंने दख़्ल करलिया था.

(२) इस शाहज़ादहका ठीक हाल मालूम नहीं हुआ, कि उसका क्या नाम था. नयपाल निवासी पंडित टंकनाथकी ज़बानी सिर्फ़ इतना मालूम हुआ है, कि यह शाहज़ादह फ़ौजका प्रबन्ध व युद्ध सम्बन्धी क़वाइद सिखानेके लिये अपने साथियोंमेंसे चार जेनरल नयपालमें छोड़ गया था, जिन्होंने एक एक हज़ार जवानोंकी आठ पल्टनें और एक हज़ार जवान तोपख़ानह के लिये मुक़र्रर कराकर उनको क़वाइद वग़ैरह कुल काम सिखाया. कुछ दिनों बाद वे चारों जेनरल भी वापस चले गये.

ज़िन्दह रहकर इसी वर्षमें शीतलाकी बीमारीसे गीर्वाणयुद्धविक्रमशाहका परलोक वास होगया (१), जब कि उसकी .उम्र केवल २१ वर्षकी थी.

इन महाराजाका जन्म होनेके समय ज्योतिषी लोगोंने लिखदिया था, कि इन को शीतलाका भय है, इस कारण महाराजा रणबहादुरशाहने इस बातका बहुत कुछ बन्दोबस्त किया, यहांतक कि जब किसीके बालक पैदा होता, तो उसे उसकी माता समेत नयपालके बाहिर भिजवादेते, और शीतला निकलनेतक वह राजधानीके भीतर, बल्कि आसपासके ग्रामों (पहाड़के बीच) में भी नहीं रहने पाता था, परन्तु भावी प्रबल है, उसमें किसीका वश नहीं चलता; आख़रकार वही बीमारी इन महाराजाकी मृत्यु का कारण हुई. उक्त महाराजाके राजेन्द्रविक्रमशाह नामका एक ही पुत्र था, जिस की उम्र महाराजाका देहान्त होनेके समय दो वर्षके अनुमान थी.

३८- राजेन्द्रविक्रमशाह.

राजेन्द्रविक्रमशाहके गद्दीनशीन होने बाद राज्यका काम गीर्वाणयुद्धविक्रम-शाहकी सौतेली माताके हुक्मके मुवाफ़िक़ भीमसेन थापा ही एक अरसहतक करता रहा; इसके वक़्में थापा लोगोंका बहुत कुछ ज़ोर बढ़ गया था. यह एक बड़ा लाइक़ व होश्यार मनुष्य था, जिसने बहुत अरसहतक राज्यका काम उत्तम रीतिके साथ चलाया, बल्कि राज्यकी आमद और सेनाको भी अच्छे प्रबन्धके साथ बहुत कुछ तरक़ी दी. महाराणी (त्रिपुरासुन्दरी) ने अपने नाती (राजेन्द्र-विक्रमशाह) के दो विवाह अपने हाथसे किये; इसके बाद विक्रमी १८८८ चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० १२४७ ता० २९ शव्वाल = .ई० १८३२ ता० १ एप्रिल] को उक्त महाराणीका इन्तिक़ाल होगया, और इसी समयसे थापा लोगोंके इख़्तियार में भी फ़र्क़ आने लगा, क्योंकि त्रिपुरासुन्दरीका देहान्त होनेके वक़ राजेन्द्रविक्रमशाह १८ वर्षके थे, जो कम हौसिलह होनेके अलावह राणियोंके कहनेमें अधिक चलते थे; ऐसा भी सुना जाता है, कि राजेन्द्रविक्रमशाहकी बड़ी महाराणी पांडे लोगोंकी सहायक और छोटी भीमसेन आदि थापा लोगोंकी मददगार थी.

ईश्वरकी कृपासे छोटी अवस्थामें इन महाराजाके पांच बेटे पैदा हुए, जिनमेंसे तीनका जन्म बड़ी महाराणीसे और दोका छोटी महाराणीसे हुआ था. इस कारण महाराजाको राज्यके दूसरे ख़र्चोंमें कमी करके अपनी औलादके लिये बचत निकालने की ज़रूरत हुई, और इसी विचारके अनुसार हर एक अफ़्सरकी तन्ख़्वाह वगैरहमें

(१) गीर्वाणयुद्धविक्रमशाहके साथ सिर्फ़ एक महाराणी सती हुई.

कमी होने लगी. विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = .ई० १८३७] में भीमसेन थापाके कई एक रिश्तहदार निकाले जाकर रणजंग पांडे (१) महाराजा का सलाहकार मुक़र्रर हुआ, और उसीका एक रिश्तहदार भाई रणदल पांडे गोरखाकी हुकूमतपर भीमसेनके भतीजे माथबरसिंह थापाकी जगह नियत हुआ. अबतो थापा लोगोंका इस्तियार बिल्कुल घटकर एक अरसहके बाद पांडे लोगों का सितारह चमकने लगा, और विक्रमी १८९४ आषाढ़ [हि० १२५३ रबीउस्सानी = .ई० १८३७ जुलाई] में महाराजाने रणजंग पांडेको उसके पिताका कुल मर्तबह व जागीर भी देदी. थोड़ेही दिनों बाद बड़ी महाराणीके तीन बेटोंमेंसे छोटा बेटा अचानक मरगया, जिसकी बाबत यह मश्हूर किया गया, कि भीमसेन थापाने बड़ी महाराणीको ज़हर दिलवाया था, लेकिन् वह ज़हरीली चीज़ महाराणीको खाने वग़ैरहमें खिलाईजानेके .एवज़ छोटे कुंवरको देदी गई, जिससे वह मरगया. इस अपराधमें भीमसेनने अपने भाई, भतीजों आदिके अलावह कई दूसरे रिश्तहदारों समेत क़ैद होकर बड़ी सख़्तियां उठाईं. इन लोगोंका कुल माल अस्बाब ज़ब्त करलिया गया, और उनकी स्त्रियां, बच्चे व नौकर वग़ैरह बड़ी बेइज़्ज़तीके साथ शहरसे निकाले गये; इनके सिवा वैद्य आदि कई मनुष्योंको, जो थापा लोगोंके हिमायती समझे जाते थे, बड़ी बड़ी सज़ाएं दीगईं, बल्कि नेवार जातिका एक वैद्य बड़ी बेरहमी के साथ मारा भी गया.

महाराजाका यह हाल था, कि कभी तो वह बड़ी महाराणीकी इच्छानुसार राज्य सम्बन्धी कार्रवाई कराते, और कभी छोटी महाराणीसे प्रसन्न होकर बड़ी महाराणीके विरुद्ध बर्ताव करने लगते; इससे बड़ी महाराणीने नाराज़ होकर एक दफ़ह महाराजासे किनारह करके पशुपतिनाथ महादेवकी धर्मशालामें रहना इस्तियार किया, लेकिन् कुछ दिनों बाद वापस महलोंमें आगई.

विक्रमी १८९४ चैत्र कृष्ण पक्ष [हि० १२५३ ज़िल्हिज = .ई० १८३८ मार्च] में मौक़ा पाकर माथबरसिंह क़ैदसे निकल भागा; और विक्रमी १८९६ आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १२५५ ता० ८ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८३९ ता० २० जुलाई] को भीमसेनने अपनी ज़ियादह बे .इज़्ज़ती होनेके भयसे गलेमें छुरी मारली, और वह उसी ज़ख़्मसे नव रोज़ बाद मरगया, जिसकी लाश विष्णुमती नदीके किनारेपर फिकवा दीगई. हेन्‌री एम्ब्रोज़ लिखते हैं, कि यह अपराध भीमसेनका ख़ातिमह करनेके लिये झूठा लगाया गया था.

---

(१) यह दामोदर पांडेका तीसरा बेटा था, जो महाराजा रणबहादुरशाहके समयमें अपने पिता व दो भाइयोंके क़त्ल किये जानेके वक्त निरा बच्चा होनेके सबब बचगया था.

थापा लोगोंके बाद दोबारह पांडे लोगोंका भी कुछ अरसहतक खूब दौर दौरह रहा, यहांतक कि रियासतके कुल कामोंपर रणजंग पांडेके रिश्तहदार करबीर पांडे, कुलराज पांडे, जगत्बम् पांडे, और दलबहादुर पांडे आदि नियत थे.

विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] में रणजंग पांडे विज़ारतका पूरा इख़्तियार हासिल करके वज़ीर कहलाने लगा. इसने अपनी सहायक बड़ी महाराणीकी सलाहसे रुपया एकट्ठा करनेके लिये रियासती लोगोंपर ज़ुल्म व ज़ियादती करना शुरू किया, और कितने ही लोगोंका माल व अस्बाब ज़ब्त करके उस ज़ुल्मका कारण महाराजाको ठहराया, इस मन्शासे, कि सब लोग महाराजाके विरुद्ध होजावें और वह राज्यसे खारिज करदियेजावें.

रणजंग पांडे (वज़ीर) ने सिपाहियोंकी शरह घटाकर, तन्ख़्वाहकी कमीका हुक्म सुनानेके लिये विक्रमी १८९७ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० १२५६ ता० २० रबीउस्सानी = ई० १८४० ता० २१ जून] के दिन कुल सेनाको टूंडीखेल मैदानमें एकट्ठा किया; सिपाही लोगोंने पहिलेसे ही इस हुक्मकी बाबत सुन लिया था, उन्होंने इस तज्वीज़से नाखुश होनेके कारण एक साथ हथियार ज़मीनपर रखदिये, और अपनी अगली पिछली बहुतसी तक्लीफ़ें ज़ाहिर करके इन्साफ़ कियेजानेकी दर्ख़्वास्त की, परन्तु उसपर कुछ गौर व तवज्जुह न हुई, तब राजधानीके आसपासकी कुल सेना (अनुमान ६०००) ने एक मत होकर उन कई सर्दारोंके घर जा लूटे, जो उन दिनों सभाके मेम्बर और पांडे लोगोंके सलाहकार थे, और दूसरे दिन राज्य महलमें जमा होकर महाराजाको तंग करना चाहा. उक्त महाराजा कई बार बुलायेजानेपर सेनाके सामने आये, और उसवक्त उन्होंने सिपाहियोंकी कुल तक्लीफ़ें दूर करनेका इक़ार करलिया. इन दिनों महाराजा तो बिल्कुल बड़ी महाराणीके आधीन होरहे थे; और उस (महाराणी) की वज़ीरसे यह सलाह हो चुकी थी, कि किसी रीतिसे यह महाराजा रियासतसे बेदख़्ल किये जायें. महाराणीने सेनाकी तन्ख़्वाह कम करनेके लिये महाराजाको बहुत कुछ बहकाया, और इसी विक्रमीकी आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ रबीउस्सानी = ई० ता० २३ जून] को खुद महाराजाके साथ रहकर सेनाकी परेड जमवाने बाद उनकी ज़बानसे यह कहलाया, कि "मुझे अंग्रेज़ोंके साथ लड़ना है, लेकिन् लड़ाईके लिये ख़ज़ानहमें रुपया नहीं है, इसलिये तुम लोग कुछ दिनोंके वास्ते कम तन्ख़्वाहपर नौकरी करो, कि जिससे कुछ रुपया एकट्ठा करके लड़ाईका बन्दोबस्त किया जावे." इसके जवाबमें फ़ौजी लोगोंने अर्ज़ की, कि आपको लड़ाईके लिये रुपया जमा करनेकी कोई ज़रूरत नहीं है, अगर ऐसा विचार है, तो हुक्म दीजिये, कि पहिले अंग्रेज़ी रेज़िडेएटका काम तमाम करें, और बाद उसके कमाऊं व

सिकिमके ज़िले, जो अस्लमें अपने (नयपालके) हैं, वापस मिलनेके बहानेसे लड़ाई शुरू करदें, और लड़ाईका ख़र्च लखनऊ व पटना वगैरहकी लूटसे चलजायेगा. इसपर महाराजाने कुछ भी जवाब नहीं दिया, और ख़ामोश होरहे.

थोड़े दिनों बाद महाराजाने अंग्रेज़ोंसे लड़ाई करनेका विचार करके हिन्दुस्तानके रईसोंसे भी अपने एल्ची भेजकर सलाह लेना चाहा, और रामनगरके ज़िलेका कुछ हिस्सह ज़बर्दस्ती नयपालके राज्यमें मिला लिया; परन्तु इसी विक्रमीके आश्विन [हि० शव्वाल = .ई० ऑक्टोबर] में सर्कार अंग्रेज़ीने कर्नेल ऑलिवरको उसकी मातहतीमें कुछ पल्टन, तोपख़ानह और रिसालह देकर मुल्ककी हिफ़ाज़त व नयपालियोंको हटानेके लिये भेजा. इसवक्त महाराजाने वह हिस्सह, जो रामनगरके ज़िलेसे छीन लिया था, वापस देकर सुलह करली.

सुनाजाता है, कि रणजंग पांडे मिज़ाजका बहुत अच्छा था, लेकिन् विज़ारत मिलनेके कुछ दिनों पीछे वह दीवानह होगया; उसके रिश्तहदार कुलराज पांडे व करबीर पांडे वगैरह इस बातको पोशीदह रखकर महाराणीकी सलाहसे रियासतका काम करने लगे; और इन्हीं लोगोंके ज़ालिम मिज़ाज होनेसे रियासती लोगोंपर कई तरहके ज़ुल्म और सख़्तियां हुईं. इन लोगोंने अनुमान तीन वर्षतक किसीपर यह बात ज़ाहिर न होने दी, कि वज़ीर दीवानह होगया है, लेकिन् वह कब छिपी रहसक्ती थी; अख़ीरमें ज़ाहिर होनेपर रणजंग पांडे विज़ारतसे बर्तरफ़ किया गया, और राज्यका काम रघुनाथ पंडित व फ़त्हजंग चौतरिया (१) की सलाहसे होने लगा. कुछ दिनों पीछे दलभंजन पांडे और अभिमान राणा भी उन लोगोंके शामिल किये गये.

विक्रमी १८९८ द्वितीय आश्विन [हि० १२५७ रमज़ान = .ई० १८४१ ऑक्टोबर] में बड़ी महाराणी काशीकी यात्राके लिये हिन्दुस्तानमें आनेके समय हिंतौड़ा मक़ामपर बुख़ार (अवल) की बीमारीसे मरगई, जिसकी निस्बत ऐसा मश्हूर हुआ, कि महाराजाने उसे ज़हर दिलाकर मरवाडाला. हेन्‌री एम्ब्रोज़ लिखते हैं, कि यह ख़बर किसी हिन्दुस्तानी अख़्बारमें भी दर्ज होगई थी, जिसके वास्ते महाराजाने ख़ुद रेज़िडेन्सीमें जाकर वहांके रेज़िडेण्टकी मारिफ़त गवर्नर जेनरल हिन्दके नाम बहुत कुछ तूल तवील तह्रीर करवाई, इस ग़रज़से, कि वह इस झूठी ख़बर छपवाने वालेको दर्याफ़्त करके सख़्त सज़ा दिलवावें.

फ़त्हजंग चौतरिया व रघुनाथ पंडित वगैरह लोगोंकी मुसाहिबी में महाराजा व महा-

---

(१) नयपाल राज्यमें ख़ास महाराजा के ख़ानदानी रिश्तहदार चौतरिया कहलाते हैं.

राजकुमार सुरेन्द्रविक्रमशाहके दस्ल देनेके सबब, जिनकी .उम्र १२ वर्षकी थी, राज्य-प्रबन्धमें बदइन्तिज़ामी ही रही; क्योंकि महाराजाको राज्य सम्बन्धी कार्योंमें अच्छी तरह अभ्यास नहीं था, और महाराजकुमार बड़े सस्त मिज़ाज होनेके अलावह ज़ाहिरा पांडे लोगों से सलाह किया करते थे; कुछ अ़रसह पीछे इन्होंने महाराजाको बेदस्ल करके कुल कारोबार अपने हाथमें लेना चाहा. इन्हीं बातोंसे नयपाली सर्दार तंग आकर राज्यका उत्तम प्रबन्ध करनेकी तज्वीज़ सोचने लगे. इस वक्त पाल्पाके सूबह गुरुप्रसादशाह ने बड़ी खैरस्वाही व वफ़ादारी ज़ाहिर की, किसलिये कि यह शख़्स महाराजाका रिश्तहदार होनेके कारण इस बातसे डरता था, कि कहीं युवराज भी राज्यसे महरूम न रहजावें, या छोटी महाराणी कारोबारकी मुस्तार बनजावे; क्योंकि इन दिनों रघुनाथ पण्डित उक्त महाराणीका सहायक बन रहा था. गुरुप्रसादशाहने राज्यके कुल सर्दारोंको एकट्ठा करके एक बड़ी सभा की, जिसमें आम लोगोंकी तरफ़से यह विचार मालूम हुआ, कि महाराजकुमारकी तरफ़से उनपर बड़ा जुल्म होता है, और उसके जुल्मको रोकनेके लिये महाराजा कुछ उपाय नहीं करते, इसलिये अब हम लोग राजा और युवराज, दोनोंको नहीं मानेंगे. इन बातोंपर किसीक़द्र सोच विचार होने बाद, यह बात क़रार पाई, कि कुल रियासतके लोगोंकी तरफ़से चन्द बातें लिखकर महाराजा के सामने इस ग़रज़से पेश कीजावें, कि वह प्रजाके जान व मालकी रक्षा और राज्यका मुनासिब तौरपर उत्तम प्रबन्ध करें. महाराजा यह चाहते थे, कि खुद नयपालमें रहकर अपनी मौजूदगीमें ही युवराजको महाराजा बनादेवें, और आप भी राज्य सम्बन्धी कार्यमें दस्ल देनेका इख्तियार रक्खें; परन्तु यह बात रियासती लोगोंने मन्ज़ूर नहीं की, और दूसरी सभामें चन्द शर्तें लिखकर विक्रमी १८९९ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १२५८ ता० ४ ज़िल्क़ाद = .ई० १८४२ ता० ७ डिसेम्बर] को उनपर महाराजासे भी मन्ज़ूरीके दस्तख़त करालिये. इन शर्तोंके अनुसार कुछ अधिकार महाराणीको मिला, परन्तु मुसाहिबीका काम चौतरिया फ़त्हजंगशाह वग़ैरह लोगोंके ही सुपुर्द रहा. उक्त चौतरिया सर्दार मिज़ाजका सीधा सादा होनेके सबब राज सम्बन्धी काम उसके भाई गुरुप्रसादशाह की सम्मतिसे होता था, जिसके साथ महाराणी द्वेष रखती थी. महाराजाने ज़ाहिरा तौरपर तो विज़ारतका कुल काम चौतरिया फ़त्हजंगशाहके सुपुर्द करदिया, परन्तु महाराणीके कहनेके मुवाफ़िक़ पोशीदह तौरसे माथबरसिंहके पास शिमला (१) मक़ामपर

---

(१) माथबरसिंह विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = .ई० १८३८] में नयपालसे निकलकर गोरखपुरमें आ रहा था, और इन दिनों शिमलाकी तरफ़ चला गया, जहां उसको पेन्शनके तौर एक हज़ार रुपया माहवार खर्चके लिये सर्कार अंग्रेज़ीसे मिलता था.

बुलावेका पैग़ाम भेजा. इस पैग़ामके साथ महाराजाने माथबरसिंहसे यह इक़ार भी करलिया था, कि तुमको विज़ारत मिलनेके सिवा, तुम्हारे रिश्तहदारों तथा सलाहकार लोगोंको पुराने उह्दे और उनका कुल माल अस्बाब, जो ज़ब्त होगया है, वापस दिलादिया जावेगा. महाराजाने चौतरिया लोगोंको भी विज़ारतका पूरा इख्तियार इसी मन्शासे दिया था, कि जिसमें रियासती लोग उनके मुख़ालिफ़ बनजावें, और वह आसानीके साथ कामसे अलहदह कियेजाकर विज़ारतका काम माथबरसिंहके सुपुर्द करदिया जाये; लेकिन् महाराणीका भीतरी विचार कुछ और ही था, वह यह चाहती थी, कि किसी रीतिसे युवराज राज्यके हक़से ख़ारिज कियाजाकर, वर्तमान महाराजाके पीछे मेरे दो पुत्रोंमेंसे बड़ा महाराजाधिराज कहलावे.

माथबरसिंह महाराजाके मिज़ाजसे अच्छी तरह वाक़िफ़ था, कि वह अपनी बुद्धि से कोई बात नहीं करसक्ते हैं, शायद इस वक्त मुझको किसी और विचारसे धोखा देकर बुलाने का पैग़ाम भेजा है. वह पहिली बार बुलानेपर एक साथ नयपालमें नहीं आया, बल्कि महाराजा और रियासती लोगोंके अन्दरूनी विचार मालूम करनेके लिये शिमले से रवानह होकर नयपाली सीमाके पास ही गोरखपुर स्थानमें आ ठहरा, जहांसे कि नयपाल का हाल अच्छी तरह मालूम होसके. माथबरसिंहके गोरखपुरमें आजानेकी ख़बर सुनकर महाराजाने विक्रमी १८९९ माघ [हि० १२५९ मुहर्रम = ई० १८४३ फ़ेब्रुअरी] में चन्द सर्दारोंको अपनी ख़ास लाल मुहर (१) का पर्वानह देकर उसे नयपालमें लानेके लिये भेजा. ये लोग गोरखपुरमें पहुंचे, और माथबरसिंहको दिलजमई करके राजधानीमें ले आये.

विक्रमी १९०० वैशाख कृष्ण ३ [हि० १२५९ ता० १६ रबीउ़लअव्वल = ई० १८४३ ता० १७ एप्रिल] को माथबरसिंह काठमांडूमें दाख़िल हुआ, और महाराजाके सामने हाज़िर होकर उसने अपने चचा भीमसेनके बदलेमें उन लोगोंको सज़ा दिलाना चाहा, जिन्होंने उसपर महाराजकुमारको ज़हर दिलानेका झूठा अपराध लगाया था. माथबरसिंह की इच्छानुसार इस बातकी तह्क़ीक़ात शुरू हुई और थापा लोगोंके मुख़ालिफ़ोंके लिये सज़ा तज्वीज़ करनेको एक सभा कीगई, जिसमें पांडे लोगोंसे यह मन्ज़ूर करालिया गया, कि हमने भीमसेनपर झूठा अपराध लगाया था. इसपर महाराजाने कुल सभाके लोगोंकी सम्मतिके अनुसार पांडे लोगोंको उनके मददगार या सलाहकार लोगों समेत क़त्ल करवाने और थापा लोगोंका ज़ब्त किया हुआ कुल माल व अस्बाब वापस दिलानेका हुक्म लिखा दिया. इस हुक्मके अनुसार करबीर पांडे व कुलराज पांडे आदि कितने एक मनुष्योंको बड़ी बेरहमीके साथ भाचाकुशीमें लेजाकर उनके सिर कटवाडाले गये,

(१). यह लाल मुहर ख़ास राजाकी आज्ञा व मन्ज़ूरीका चिन्ह है.

और रणजंग पांडेके वास्ते भी यही हुक्म दियागया, लेकिन् वह बहुत सख्त बीमारीकी हालतमें होनेके सबब वापस अपने मकानको लौटा दियागया, और कुछ देर ज़िन्दह रहकर मरगया. बहुतसे आदमियोंको नाक कान काटे जाने वगैरह कई तरहकी सज़ाएं दीगईं, और थापा लोगोंको उनका कुल माल अस्बाब, जो ज़ब्त हुआ था, वापस मिला; लेकिन् माथबरसिंहको विज़ारत मिलनेमें कई कारणोंसे देरी हुई, तोभी वह महाराजाका बड़ा सलाहकार माना गया.

महाराजाने सोचा, कि अगर चौतरिया फ़त्हजंगशाहको मौकूफ़ करके माथबरसिंहको इसी वक्त एकदम बा इख्तियार वज़ीर बनादिया जावे, तो मुम्किन है, कि शायद यह महाराणीका तरफ़दार होनेके कारण उसकी इच्छानुसार युवराजको राज्यके हक़से ख़ारिज कराकर महाराणीको राजसी कारोबारकी मुख़्तार और उसके पुत्रको युवराज बनानेकी कोशिश करे; और माथबरसिंह भी पूरे तौरपर मज़्बूती कराये बिना वज़ीर बनना नहीं चाहता था. ग़रज़कि आठ महीनेतक विज़ारतका काम फ़त्हजंगशाहके ही हाथमें रहा, और माथबरसिंह थापा व उसके रिश्तहदार वगैरह लोग अपनी ज़मीन, जायदादपर क़ाबिज़ होकर केवल महाराजाके सलाहकार बने रहे.

विक्रमी पौष शुक्ल ५ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = .ई० ता० २५ डिसेम्बर] के दिन माथबरसिंहको पूरे इख्तियारके साथ विज़ारतका काम मिला, लेकिन् थोड़े दिनों बाद उसने महाराजा और युवराज, दोनोंकी हुकूमतसे नाराज़गी ज़ाहिर की और काम छोड़कर वापस अंग्रेज़ी अमल्दारीमें चलाजाना चाहा, मगर महाराजाने इसवक्त उसको तसल्ली देकर रोकलिया. इन दिनों युवराजका यह हाल था, कि वह अपने पिताको भी बेदख़्ल करके राज्यका कुल काम अपने आधीन करलेनेकी कोशिश करने लगा, परन्तु वह अपना मन्शा पूरा न होनेके कारण यह बात ज़ाहिर करके, कि जबतक महाराजा राज्य नहीं छोड़ेंगे, मैं हर्गिज़ वापस नहीं आऊंगा, किसीक़द्र फ़ौज और अपने चन्द सलाहकारोंके साथ राजधानीको छोड़कर तराईमें चलागया.

महाराणीका मुख्य सलाहकार गगनसिंह नामी एक ख़वास और उसका मित्र अभिमान राणा था. ये लोग चाहते थे, कि अगर कुल रियासती प्रबन्ध महाराणीके इख्तियारमें आजावे, तो वज़ीर वगैरह सबको अलग करके हम लोग हुकूमत करें. लेकिन् उन लोगोंके ये विचार माथबरसिंहको मालूम होगये, इसलिये वह महाराजाको गद्दी पर रखकर युवराजको कारोबारी बनादेना और महाराणीको रियासती मुआमलातसे बेदख़्ल करदेना अपने दिलमें तज्वीज़ करके महाराजा व कुछ सेना समेत युवराजको लानेके

लिये तराईकी तरफ़ रवानह हुआ. हिटौंडा मक़ाममें युवराजके पास पहुंचनेपर माथबरसिंह के कहनेके अनुसार कुल लोग महाराजासे बाग़ी होकर सुरेन्द्रविक्रमशाहसे मिलगये. आख़रकार वज़ीरकी इच्छानुसार उसी जगह १६ मनुष्य, जो थापा लोगोंके विरोधी थे, क़त्ल किये जाकर युवराजको वापस राजधानीमें ले आये, और उन्हींकी सम्मतिसे राज्यका काम होने लगा; इसके बाद फ़त्हजंगशाह चौतरिया तीर्थ यात्राका बहाना करके हिन्दुस्तानमें चला आया.

युवराजके राजधानीमें वापस लायेजानेपर महाराणी माथबरसिंहसे द्वेष रखने लगी. महाराजाका तो यह स्वभाव था, कि थोडीसी बातमें इधरके उधर होजाते थे, इसवक़ उन्होंने महाराणीके कहनेमें आकर माथबरसिंहका माराजाना मन्ज़ूर कर लिया, और जब यह बात निश्चय होचुकी, तो महाराणीने एक रोज़ काजी बालनरसिंहके बेटे काजी जंग-बहादुर (१) को अपने पास बुलाया और उसे माथबरसिंहके मारडालनेके लिये कहा, जिसको उसने मन्ज़ूर करलिया, और शस्त्र लेकर दोचार आदमियों समेत महाराणीकी इच्छा पूरी करनेके वास्ते उसके पास आ मौजूद हुआ. विक्रमी १९०२ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२६१ ता० १० जमादियुलअव्वल = .ई० १८४५ ता० १७ मई] की रातको क़रीब ग्यारह बजेके वक्त महाराणीने अपना सीढ़ीसे गिरजाना और चोट लगना ज़ाहिर करके माथबरसिंहको बुलवाया. जब वह ख़बर पंहुचते ही महलमें आया, और उसने महाराणीके सोनेके मकानमें पहुंचकर पलंगके पास (२) सलाम करनेके लिये सिर झुकाया, तो अचानक एक पर्देकी ओटसे चन्द बन्दूकें चलीं, और एक साथ तीन चार गोलियां लगजानेसे वह उसी जगह मरगया. जंगबहादुरने उसीवक्त महलसे बाहिर आकर माथबरसिंहके बाल बच्चोंको मए माल व अस्बाबके उनके घरसे अपने पास बुलवा लिया, और रातभर अपने मकानपर रखने बाद सुबह् होते ही भगा दिया.

दूसरे दिन जब माथबरसिंहकी लाश खिड़कीके रास्तेसे निकाली जाकर उसके रिश्तह-दारोंको सौंपी गई, तो उस वक़ युवराज और बहुतसे फ़ौजी लोग उसके मारने वालेसे बदला

(१) जंगबहादुर माथबरसिंहका भानजा था, और उसको माथबरसिंहने ही एक छोटे दरजेसे १८०००) रुपया सालियानह पानेवाला काजी बनाया था; परन्तु जंगबहादुर, माथबरसिंहके हुक्मसे अपने एक चचेरे भाई भैरवबहादुरके बे कुसूर क़त्ल किये जानेके कारण उसके साथ दिलमें ईर्षा रखता था.

(२) इसवक़ राणीको चोट नहीं लगी थी, और न वह सीढ़ीसे गिरी थी, सिर्फ़ माथबरसिंहको धोखा देनेकी ग़रज़से यह कार्रवाई कीगई थी. जब वह मकानसे आया, तो पलंगके ऊपर कुछ कपड़ा वग़ैरह रखकर उसको रज़ाई उढ़ा दी गई, और महाराजा व महाराणी महलके एक झरोखेमें बैठे हुए इस माजरेको देखते रहे.

लेनेके इरादहपर वहां जमा होगये, लेकिन् फ़साद बढ़ता हुआ देखकर महाराजा महलसे बाहिर आये, और उन्होंने सब लोगोंको यह सुना दिया, कि कोई बल्वा मत करो, माथबरसिंहको मैंने मारा है. यह सुनकर सब ख़ामोश हो रहे. इसके बाद एक मुद्दत तक क़ातिलकी तलाश होती रही, मगर उसका कुछ पता न लगा.

माथबरसिंहके मारेजाने बाद मुसाहिबीके लिये चौतरिया फ़त्हजंगशाह काशी से बुलाया गया, और उसके पहुंचनेतक जंगबहादुर ही काम करता रहा. जब फ़त्हजंगशाह व अभिमान राणा वगैरह काठमांडूमें आ पहुंचे, तो महाराजाने विक्रमी भाद्रपद [हि० रमज़ान = .ई० सेप्टेम्बर] में मुख्य मंत्री फ़त्हजंगशाहको नियत करके गगनसिंह ख़वास, अभिमान राणा, और जंगबहादुरको उसका सलाहकार व मददगार मुक़र्रर किया, और इन लोगोंको अलहदह अलहदह काम भी बांट दिये गये. इनके प्रबन्धमें एक वर्षतक बराबर सुभीतेके साथ काम होता रहा, मगर इन दिनों कुल काम महाराणीकी रायके मुवाफ़िक़ होनेके कारण युवराजका दख़्ल बिल्कुल उठ गया था. अगर्चि उक्त मुसाहिब लोग ज़ाहिरा तौरपर बड़े मेलके साथ काम करते रहे, परन्तु दिलोंमें एक दूसरेके रंज भरा हुआ था.

महाराणीको गगनसिंहपर बहुत कुछ भरोसा था, बल्कि ऐसा कहाजाता है, कि वह उसीके कहनेके अनुसार कुल काम करती थी, इस कारण महाराजा उससे नाराज़ रहने लगे. हेनूरी एम्ब्रोज़ लिखते हैं, कि महाराजाने युवराज सुरेन्द्रविक्रमशाह और दूसरे कुंवर उपेन्द्रविक्रमशाहसे यह बात ज़ाहिर की, कि महाराणी गगनसिंहसे स्नेह रखती है, इसलिये उस (गगनसिंह) को क़त्ल करानेका विचार करना चाहिये. यह हाल उपेन्द्र-विक्रमशाहने फ़त्हजंगशाह आदि चौतरिया लोगोंपर ज़ाहिर किया, और गगनसिंहके मारनेको एक मनुष्य मुक़र्रर किया गया; ग़रज़ कि विक्रमी १९०३ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १२६२ ता० २२ रमज़ान = .ई० १८४६ ता० १४ सेप्टेम्बर] की रातको १० बजेके वक़, जब कि गगनसिंह अपने मकानमें बैठाहुआ था, सामनेसे किसी शख़्सने आकर गोली मारी, और उसका वहीं काम तमाम होगया. यह ख़बर उसके पुत्र कप्तान वज़ीरसिंहने महाराणीके पास पहुंचाई.

महाराणी गगनसिंहका माराजाना सुनतेही उसके मकानपर पहुंची, और उसकी स्त्रियों आदिको तसल्ली देने बाद उसने वापस लौटकर गोली मारनेवालेकी तह्क़ीक़ात करने की ग़रज़से एक सभा एकत्र करनेको बिगुल बजवाया, जिसकी आवाज़ सुनतेही जंगबहादुर अपने भाइयों व तीन पल्टनों समेत आकर हाज़िर हुआ. महाराणीने उसको गगनसिंहके क़ातिलकी तह्क़ीक़ात करनेका हुक्म दिया. जंगबहादुरने अर्ज़ की, कि चौतरिया आदि लोग बड़े बड़े रुत्बेके सर्दार हैं, और मैं इसक़द्र हैसियत नहीं

रखता, कि उनके बख़िलाफ़ रहकर तहक़ीक़ात करसकूं; अगर सब सर्दारोंको न्यायकी जगहमें बिना शस्त्र आनेका हुक्म हो, तो अलबत्तह कुछ कार्रवाई कर सक्ताहूं. महाराणीने उसकी अर्ज़ मन्ज़ूर की, और आप एक ऊंचे मकानकी खिड़कीमें जाबैठी.

जंगबहादुर अपनी तीन पल्टनोंका बाड़ा बांधकर आप तो महाराणीके पास बैठगया, और पल्टनोंके बीचमें अपने भाई बमबहादुर, बदरीनरसिंह, कृष्णबहादुर, रणोद्दीपसिंह, जगत्‌शमशेरजंग और धीरशमशेरजंग वगैरहको तहक़ीक़ातके लिये बिठादिया. महाराणीके हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़त्हजंग चौतरिया वगैरह सर्दार लोग अपनी मातहत पल्टनोंको कुछ फ़ासिलहपर खड़ी रखकर बिना शस्त्र न्यायकी जगहमें दाख़िल हुए. तहक़ीक़ात शुरू होनेपर बमबहादुर व कृष्णबहादुरने कहा, कि गगनसिंहको चौतरिया लोगोंने मारा या मरवाया होगा; इसपर फ़त्हजंगशाहके बेटे खड्गविक्रमशाहने गुस्सहमें आकर कृष्णबहादुरपर छुरेका एक वार किया, जिससे उसके हाथकी दो अंगुलियां कटगईं. खड्गविक्रमशाहने उसी छुरेसे एक वार बमबहादुरपर और दूसरा जंगबहादुरकी पल्टनके एक सिपाहीपर भी किया, जिसमें सिपाही तो जानसे मारागया, और बमबहादुरके सिरमें किसीक़द्र ज़ख़्म आया, इसके बाद एक दम हल्ला होगया. यह देखकर जंगबहादुरने खड्गविक्रमशाहको मारनेके लिये धीरशमशेरजंगको इशारह किया, उसने फ़ौरन् छुरीसे उसका काम तमाम किया. जंगबहादुरने महाराणीसे इजाज़त लेकर उन कुल चौतरिया आदि लोगोंको, जो तहक़ीक़ात कीजानेके लिये बुलाये गये थे, एकदम क़त्ल करडालनेका हुक्म अपने भाइयों तथा दूसरे लोगोंको देदिया. फिर तो जंगबहादुरके लोगोंने फ़त्हजंगशाह चौतरिया, काजी दलभंजन पांडे, काजी रणजोरसिंह थापा, और अभिमान राणा आदि २७ बड़े बड़े अफ़्सरोंके सिवा बहुतसे दूसरे आदमी भी मारे. ग़रज़कि गगनसिंहके साथ ही उसी रातमें जंगबहादुर की मंडलीके सिवा कुल रियासतके मुसाहिबों व उनके सलाहकारोंका काम तमाम होगया, और उसी क़त्लकी हालतमें महाराणीने जंगबहादुरको राज्यमंत्री बनादिया.

दूसरे दिन सुब्ह होते ही महाराणी जंगबहादुर समेत महलमें आईं, और जंगबहादुर विज़ारतका नज़्रानह करनेके लिये महाराजाके पास गया. इस वक़्त महाराजाने क्रोधित होकर इस अन्यायका कारण पूछा, तो उसने साफ़ कहदिया, कि यह क़त्ल महाराणीके हुक्मसे हुआ है. यह बात सुनते ही महाराजा तुरन्त महाराणीके पास गये, और उससे इस क़त्लका सबब दर्याफ़्त किया. इसपर महाराणीने जवाब दिया, कि जबतक मेरे दो पुत्रोंमेंसे एकको गद्दी न मिलेगी, तबतक इसी तरह क़त्ल होता रहेगा. महाराणी का यह कलाम सुनकर महाराजाके दिलमें भय उत्पन्न हुआ, और वह सर्दार भवानीसिंह व

वीरध्वज विश्न्यातको साथ लेकर पाटणमें चले आये, परन्तु जंगबहादुरने अपने भाईको भेजकर उन्हें रातके वक्त पीछा महलमें बुलवा लिया.

महाराजाके पास सर्दार भवानीसिंह रहा करता था, उसकी निस्बत वीरध्वज ने महाराणीसे कहा, कि वह महाराजासे पोशीदह तौरपर सलाह करता है. इस शुब्हमें महाराणीके हुक्मसे भवानीसिंह भी कत्ल करायागया.

फिर महाराणीने युवराज सुरेन्द्रविक्रमशाह और उनके छोटे भाई उपेन्द्रविक्रम-शाहको कैद करके उन कुल लोगोंका, जो कत्ल करायेगये थे, माल व अस्बाब ज़ब्त कराकर उनके बाल बच्चोंको देशसे बाहिर निकलवा दिया, और फ़त्हजंगशाहके भाई गुरुप्रसादशाह व माथबरसिंह थापाके चचेरे भाई तिलविक्रम थापाको भी, जो पाल्पामें कैद थे, मारनेके लिये कुछ फ़ौज भेजी, लेकिन् तिलविक्रमको इस बातकी ख़बर फ़ौजके पहुंचनेसे पहिले ही मिलगई, इसलिये वे दोनों जो कुछ माल अस्बाब हाथ लगा, लेकर वहांसे भागगये.

इस मारिकहके बाद जंगबहादुरने वज़ीर बनकर कुल उहृदोंपर अपने रिश्तहदारोंको नियत करदिया, परन्तु वह दिलसे महाराणीकी इच्छा पूरी करना न चाहकर पोशीदह तौरपर युवराजकी जान बचानेके उपायमें लगा रहा. यह बात वीरध्वज विश्न्यातने महाराणीसे कही, कि जंगबहादुर बहुत दिनोंसे युवराजके साथ मिला हुआ है, वह कभी उनको नहीं मारेगा; मुनासिब है, कि अव्वल जंगबहादुरका काम तमाम करदिया जावे. इसपर महाराणीने जंगबहादुरके मारनेका उपाय करनेके लिये वीरध्वजको पोशीदह तौरपर विज़ारत देकर मुस्तइद किया. वीरध्वजने गगनसिंहके बेटे वज़ीरसिंह और कई दूसरे लोगोंसे इस विषयमें सलाह ली, जिनमें विजयराज पंडित भी शरीक था, उसने यह कुल हाल जंगबहादुरको जा कहा. वह भी बड़ा होश्यार था, सावधान होकर अपनी और युवराजकी रक्षाके लिये उद्योग करने लगा.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को सुब्ह होते ही महाराणीके हुक्मके मुवाफ़िक़ वज़ीरसिंहने अपने चन्द मातह्त हथियारबन्द सिपाहियोंको पोशीदह तौरपर कोतमें लाकर एक मकानके अन्दर छिपा दिया, और महाराणीने जंगबहादुरको बुलानेके लिये आदमी भेजा, परन्तु वह न आया, तब वीरध्वज भेजा गया. यह रास्तह ही में था, कि जंगबहादुर अपने रिश्तहदारों व साथियों समेत तलवार व बन्दूक़ वगैरह हथियारोंसे आरास्तह होकर महलकी तरफ़ आता हुआ दिखाई दिया. वीरध्वजने नज़्दीक पहुंचकर बड़ी नम्रताके साथ कहा, कि महाराणीने आपको अभी कोतमें बुलाया है,

जंगबहादुरको उनका विचार पहिलेसे मालूम होगया था, उसने जवाब दिया, कि वज़ीर तो तुम नियत हुए हो, हमारी क्या ज़रूरत है ! यह सुनते ही वीरध्वज मारे डर के कांपने लगा, और कुछ न बोल सका, और उसी जगह जंगबहादुरके इशारहके मुवाफ़िक़ कप्तान रणमिहर अधिकारीके हाथसे मारा गया.

जंगबहादुरने महलमें पहुंचकर महाराजा और युवराजके पैरोंमें अपनी पघड़ी रखदी, और अर्ज़ किया, कि या तो हुज़ूर मुझे नालाइक़ समझकर मौकूफ़ करदें, या युवराजके शत्रुओंका नाश करनेके लिये आज्ञा देवें. इसपर महाराजा और युवराजने उसको अपने शत्रुओंकी सज़ादिही और राज्यकी रक्षाके लिये उत्तम प्रबन्ध करनेका हुक्म देदिया. यह हुक्म पाकर जंगबहादुरने पहिले वीरध्वजकी मण्डलीके लोगोंको क़त्ल करवाया, और शामके वक्त महाराणीके पास पहुंचकर उसे युवराजकी तरफ़से यह हुक्म सुनाया, कि वह अपने दोनों बेटों समेत देशसे बाहिर निकल जावे. महाराणीसे इस वक्त और तो कुछ भी उपाय न बन पड़ा, लेकिन् उसने महाराजाको बहकाकर अपने साथ चलनेके लिये तय्यार करलिया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = ई० ता० २३ नोवेम्बर] को महाराजा और महाराणी मए अपने दोनों बेटोंके काशीकी तरफ़ रवानह हुए, और युवराज सुरेन्द्रविक्रमशाह राज्यके मालिक माने जाकर जंगबहादुर उनके सामने साबिक़ दस्तूर पूरे इख्तियारातके साथ विज़ारतका काम करने लगा.

उक्त महाराजा काशीकी यात्रा करने बाद वापस नयपालमें जानेके इरादहसे महाराणी और उसके दोनों पुत्रोंको काशीमें छोड़कर (१) विक्रमी १९०४ चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२६३ ता० ७ रबीउस्सानी = ई० १८४७ ता० २५ मार्च] को सींगोली मकामपर पहुंचे, और महाराणी समेत नयपालमें पंहुचनेकी कोशिश करने लगे.

---

(१) महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाह काशी जानेके समय बहुतसा नक्द और जवाहिरात साथ लेगये थे, जो उनके वापस आनेके वक्त महाराणीके पास रहा; उसमेंसे बहुतसा तो महाराणी और उसके पुत्रोंने बर्बाद करदिया, और बाक़ी नक्द व ज़ेवर जो बचा, वह सर्कार अंग्रेज़ीने अपने क़बज़हमें लेकर ६००००० छः लाखसे कुछ अधिक रुपया ५) रुपये सैकड़ेके सूदपर रखवा दिया, और महाराणीके ख़र्च वग़ैरहका बन्दोबस्त बनारसके कमिश्नरको सौंपा गया. विक्रमी १९०७ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में जंगबहादुरने विलायतसे लौटकर वापस आनेके समय काशी मकामपर दोनों महाराजकुमारोंको नयपालमें चलनेके लिये कहा, परन्तु उन्होंने इन्कार किया, तब उसने उस कुल नक्द व जिन्सके तीन हिस्से कराकर उसका सूद दोनों कुंवरों और महाराणीको जुदा जुदा मिलते रहनेका प्रबंध करदिया था. इसके कुछ अरसह बाद दोनों कुंवरोंका इन्तिकाल काशीमें ही होगया.

युवराज व जंगबहादुरने कई मर्तबह महाराजाको अर्ज़ी भेजी, कि आप अकेले राजधानीमें चले आवें; परन्तु महाराजाने इस बातको मन्जूर न किया, और गुरुप्रसादशाह चौतरिया वगैरह नयपालसे निकले हुए लोगोंको एकट्ठा करके जंगबहादुरको मरवाडालनेकी कोशिश करने लगे. आख़रकार गुरुप्रसादशाह और जगत्बम् पांडेकी सलाहके मुवाफ़िक़ एक शख़्सके हाथ नयपाली अफ़्सरों व सेनाके नाम इस मज़्मूनका ख़त लिखकर भेजागया, कि वे जंगबहादुरको मारडालें, जिसपर महाराजाकी मुहर भी लगाई गई थी; लेकिन् ख़त लेजाने वाला आदमी नयपालमें पहुंचनेपर पकड़ा गया, और वह पर्वानह जंगबहादुरके हाथ लगा. उक्त वज़ीरने कुल फ़ौजको एकट्ठा करके पर्वानह सुनाया, और कहा, कि तुम्हारे नाम महाराजाका हुक्म मुझे मारनेके लिये आया है, और मैं इस वक़ तुम्हारे सामने मौजूद हूं, इसमें जैसा तुम मुनासिब समझो करो. उस समय कुल रियासती लोगोंने एक मत होकर यह जवाब दिया, कि अब महाराजाका हुक्म एतिबारके क़ाबिल नहीं समझा जाता, मुनासिब है, कि देशकी रक्षाके लिये युवराज गादीपर बिठादिये जावें. यह सलाह ठहरकर महाराजाको पकड़नेके लिये कप्तान सनकसिंह किसी क़द्र फ़ौज समेत भेजा गया.

कुछ दिनोंतक कई झगड़े बखेड़े होने बाद महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाह .इलाक़ह नयपालके अलौ नामी ग्राममें उक्त कप्तानके हाथसे पकड़े जाकर विक्रमी श्रावण कृष्ण १३ [हि० ता० २६ शअ्बान = .ई० ता० ८ ऑगस्ट] को राजधानीमें लायेगये, और गुरुप्रसादशाह वगैरह लोगोंमेंसे, जो इनसे काशी तथा दूसरे स्थानोंमें मिले थे, चन्द शख़्स मारे जाने बाद बाक़ी लोगोंने भागकर जान बचाई. जब राजेन्द्रविक्रमशाह काठमांडूमें पहुंचे, तो उनकी सलामी वगैरह ताज़ीमी बातोंमें तो कुछ भी कमी न कीगई, परन्तु राज्यगद्दीपर युवराजके स्थापित करदिये जानेसे राज्याधिकार उनके हाथमें न रहा, और उसी दिन वह भदगांवके महलोंमें पहुंचा दियेगये, फिर कुछ अरसह बाद काठमांडूमें वापस बुलाये गये, लेकिन् मरण पर्यन्त राज्य सम्बन्धी कामोंमें उनका कुछ भी दख़्ल न रहा.

महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहने अपनी हुकूमतके दिनोंमें चन्द मोतमदों तथा केटियों (दासी) को महाराणा जवानसिंहके समय रियासती रीति रवाज दर्याफ़्त करनेके लिये उदयपुरमें भेजा था. इन महाराजाका देहान्त गादीसे ख़ारिज कियेजानेके बहुत अरसह पीछे विक्रमी १९३८ के श्रावण [हि० १२९८ रमज़ान = .ई० १८८१ जुलाई] में हुआ.

३९- महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाह.

महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाह विक्रमी १९०४ प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण १३ [हि० १२६३ ता० २६ जमादियुलअव्वल = .ई० १८४७ ता० १२ मई] को अपने पिताकी मौजूदगीमें जंगबहादुर वज़ीर तथा दूसरे रियासती लोगोंकी सम्मतिसे गादीपर बिठा दिये गये थे. इन महाराजाके वक्तमें जंगबहादुरका रियासतमें बहुत कुछ इस्तियार बढ़ा, और कुल काम उसीके हुक्मके मुवाफ़िक़ होता रहा, महाराजा सिर्फ़ नामके लिये ही राजा माने गये थे; अल्बत्तह कुछ अरसहतक सुरेन्द्रविक्रमशाहके छोटे भाई उपेन्द्रविक्रमशाह, जो मायला साहिब कहलाते थे, राज्यका काम करते रहे. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्हिज =.ई० ता० ३० नोवेम्बर] को उक्त महाराजाके बड़ी महाराणीसे महाराजकुमार त्रैलोक्य विक्रमशाहका जन्म हुआ. विक्रमी १९०५ पौष [हि० १२६५ मुहर्रम = .ई० १८४८ डिसेम्बर] में उन्हीं महाराणीके एक दूसरा पुत्र पैदा हुआ, परन्तु एक साल बाद उसका इन्तिक़ाल होगया.

विक्रमी १९०६ वैशाख [हि० जमादियुलअव्वल = .ई० १८४९ एप्रिल] में लाहोरके महाराजा रणजीतसिंहकी राणी चन्द्रकुंवर, जो चुनारगढ़में नज़रबन्द थी, वहांसे भागकर नयपालकी राजधानी काठमांडूमें पहुंची, जिसको महाराजाने भोजन आदिके सिवा ८०० रुपया माहवार हाथ ख़र्चके लिये मुक़र्रर करदिया.

विक्रमी १९०६ माघ शुक्ल २ [हि० १२६६ ता० १ रबीउ़लअव्वल = .ई० १८५० ता० १५ जैन्युअरी] को वज़ीर जंगबहादुर मए कर्नेल् जगत्शम्शेरजंग, कर्नेल् धीरशम्शेरजंग, कप्तान रणमिहरसिंह अधिकारी, काजी करबीर खत्री, काजी दिल्लीसिंह विश्न्यात, काजी हिमदलसिंह थापा, लेफ़्टिनेण्ट लालसिंह खत्री, लेफ़्टिनेण्ट करबीर खत्री, लेफ़्टिनेण्ट भीमसेन राणा, और चक्रपाणि नेवार वैद्य वग़ैरह लोगों समेत महाराजा की तरफ़से महाराणी विक्टोरियाकी ख़िदमतमें मित्रता प्रगट करनेके लिये इंग्लिस्तानकी तरफ़ रवानह हुआ, और इसी समयसे महाराजाने सर्कार अंग्रेज़ीके साथ दोस्ती बढ़ाना शुरू किया.

विक्रमी १९०७ वैशाख शुक्ल १४ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० २४ मई] को महाराणी विक्टोरियाकी सालगिरहपर २१ तोपकी सलामी सर कराई गई. जंगबहादुरके विलायत जानेसे वापस आनेतक रियासतका काम उपेन्द्रविक्रमशाहकी मातहतीमें बम्बहादुर (जंगबहादुरका छोटा भाई) करता रहा. इसी विक्रमीके आश्विन [हि० ज़िल्हिज = .ई० ऑक्टोबर] में महाराजाकी बड़ी महाराणी (त्रैलोक्य-

विक्रमशाहकी माता) का इन्तिकाल होगया, जिसका शोक महाराजाने एक साल तक रक्खा.

विक्रमी १९०७ माघ शुक्ल ५ [हि० १२६७ ता० ४ रबीउस्सानी = .ई० १८५१ ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को जंगबहादुर अपने साथियों समेत विलायतसे वापस आया, और एक सन्मानपत्र महाराणी विक्टोरियाकी तरफ़से महाराजाके नाम लाया, जिसको उक्त महाराजाने दर्बार करके बड़े सत्कारके साथ लिया, उस वक़ २१ तोपकी सलामी सर हुई. इसके बाद जंगबहादुर अपना विज़ारतका काम मामूली तौरपर करने लग गया. थोड़े दिनों पीछे कप्तान करबीर खत्रीने महाराजाके छोटे भाई उपेन्द्रविक्रमशाह, जंगबहादुरके छोटे भाई बदरीनरसिंह तथा उसके चचेरे भाई जयबहादुरको कहा, कि जंगबहादुरने इंग्लिस्तानमें अंग्रेज़ोंके हाथका छुआ हुआ मांस व मद्य खाया पीया है, और इसके सिवा धर्मके विरुद्ध और भी कई अनाचार करके वह जाति भृष्ट होगया है. इस बातपर उपेन्द्रविक्रमशाहकी सम्मतिके अनुसार जंगबहादुरको मरवाडालने और विज़ारतके कामपर उसके छोटे भाई बम्बहादुरको नियत कियेजानेकी तज्वीज़ होकर यह हाल बम्बहादुरको कहा गया, लेकिन् उसने यह कुल माजरा जंगबहादुरसे ज़ाहिर करदिया. इसपर उपेन्द्रविक्रमशाह (महाराजाके भाई), बदरीनरसिंह, और जयबहादुर गिरिफ्तार किये गये, और तहक़ीक़ात होनेके बाद तीनों पांच वर्षके लिये अंग्रेज़ोंके सुपुर्द होकर विक्रमी १९०८ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० ता० २३ शअ्बान = .ई० ता० २४ जून] को प्रयागके जेलख़ानह (क़िले) में भेजदिये गये (१), और इन लोगोंके खान पान आदिका कुल ख़र्च तथा उस अफ़्सरकी तन्ख़्वाह, जो सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से उनकी निगरानीपर नियत कियागया, नयपालके राज्यसे दियाजाना मन्ज़ूर हुआ. कप्तान करबीर खत्री बड़ा चालाक था, इसलिये अगर्चि उसपर यह कुसूर पूरे तौरसे साबित न होसका, तोभी जंगबहादुरने उसको दमाई जातिके एक मनुष्यसे निरादर कराकर जाति भृष्ट करादिया, परन्तु वह कुछ अ़रसह बाद वापस अपनी जातिमें शामिल करलियागया.

विक्रमी आश्विन कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को महाराजाकी छोटी महाराणीसे एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका नाम नगेन्द्रविक्रमशाह रक्खा गया. महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहके दो लड़कियां भी

(१) जयबहादुर तो हिन्दुस्तानमें ही मरगया, और उपेन्द्रविक्रमशाह व बदरीनरसिंह मीआ़द पूरी होने बाद वापस नयपालमें बुलालिये गये; इसके बाद उपेन्द्रविक्रमशाह राजधानीमें और बदरीनरसिंह पाल्पामें रहा.

थीं, जिनमेंसे पहिलीका विवाह उन्होंने जंगबहादुरके बड़े बेटे जगत्जंगके साथ और दूसरीका छोटे जीतजंगके साथ किया (१).

विक्रमी १९११ [हि० १२७० = .ई० १८५४] में नयपालके एक सौदागरसे तिब्बतकी राजधानी लासामें वहांके किसी व्यापारीके साथ लेनदेनकी बाबत कुछ तक्रार हुई, जिसमें नयपाली सौदागरोंका बहुतसा माल व अस्बाब लूटे जानेके अलावह एक दो शख़्स जानसे भी मारे गये, परन्तु तिब्बतमें उसका कुछ इन्साफ़ न हुआ, बल्कि इस बारेमें तिब्बतके चीनी अम्बान (एजेण्ट या वकील) की मारिफ़त लिखा पढ़ी होनेपर भी तिब्बत वालोंने कुछ ख़याल न किया, तब नयपालकी रियासतने बदला लेनेकी ग़रज़से तिब्बतके साथ लड़ाई करना विचारा, और उस देशके रास्तोंपर हर एक जगह मुनासिब फ़ौज तईनात करदी. इन्हीं दिनोंमें याने विक्रमी १९११ फाल्गुन [हि० १२७१ जमादियुलअव्वल = .ई० १८५५ फ़ेब्रुअरी] में क़ैदियोंके लेनदेनकी बाबत सर्कार अंग्रेज़ीके साथ एक नया अह्दनामह क़रार पाकर उसपर महाराजा, वज़ीर, और रेज़िडेण्टके मुहर व दस्तख़त हुए.

तिब्बत वालोंने महाराजा नयपालका इरादह लड़ाई करनेका देखकर सुलह होजानेकी ग़रज़से एल्चीके तौर अपने एक लामाको नयपालमें भेजा था, जिसने सुलह क़ाइम रखनेकी बाबत वज़ीर (जंगबहादुर) से बातचीत की, लेकिन् उसको यह जवाब मिला, कि अगर तुम्हारा राजा एक करोड़ रुपया देना मन्ज़ूर करे, तो लड़ाई मौकूफ़ रक्खी जावे, वर्नह केरंग और कुतीके पारवाले ज़िले, जो क़दीमसे नयपालके हैं, वापस लेलेनेके अलावह मुक़ाबलह होनेकी हालतमें डिगरचा और लासा भी लूट लिये जायेंगे.

लेकिन् तिब्बतके राजाकी तरफ़से इसका कुछ उत्तर न मिला, तब विक्रमी चैत्र कृष्ण ३ [हि० ता० १६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ६ मार्च] को पैदल पल्टनों व तोपख़ानह समेत सर्दार बमबहादुर केरंगकी तरफ़ रवानह हुआ. तिब्बतकी सीमामें पहुंचनेके समय अनुमान ५००० भोटियोंने नयपालकी दो पल्टनोंको, जो धीरशमशेरजंगके साथ कुती मक़ामको जाती थीं, चूसन गांवके पास रोका, और इस जगह कुछ लड़ाई भी हुई, जिसमें भोटिया लोग शिकस्त पाने बाद अपने कितनेही मुर्दों तथा ज़ख़्मी लोगोंको छोड़कर भाग गये. गोरखाली सेना सिर्फ़ १००० के क़रीब थी, लेकिन् इन लोगोंने ऐसी होश्-

---

(१) जगतजंगका विवाह विक्रमी १९११ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२७० ता० १० शअ्बान = .ई० १८५४ ता० ८ मई] को और जीतजंगका विक्रमी १९११ फाल्गुन शुक्ल ८ [हि० १२७१ ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० १८५५ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] को हुआ था.

यारीसे काम किया, कि उनमेंसे कोई शख़्स ज़ख़्मीतक न होने पाया. इन लोगोंने भोटियोंका पीछा करना चाहा, परन्तु बर्फ़के सबब आगे न बढ़ सके, और दूसरे दिन कुती घाटीको अपने क़बज़हमें लेलिया. इस फ़त्हकी ख़बर नयपालमें पहुंचनेपर २१ तोपोंकी सलामी सर हुई. केरंग घाटीकी तरफ़ जो फ़ौज गई थी, उसने बिना मुक़ाबलह किये उस मक़ामको छीन लिया. इसके बाद जगत्शम्शेरजंगने विक्रमी १९१२ वैशाख शुक्ल १० [हि० ता० ८ शअ़्बान = ई० ता० २६ एप्रिल] को अपनी हम्राही फ़ौज समेत झूंगा गढ़ीपर, जहां बहुतसे तिब्बती लोग जमा थे, जाकर हमलह किया, नौ दिनतक भोटियोंने गोरखा लोगोंके हमलोंको बड़ी तक्लीफ़ोंके साथ रोका, और आख़रकार गढ़ी छोड़कर भाग गये; इस मुक़ाबलहमें नयपाली सिपाहियोंमेंसे सिर्फ़ पांच आदमी मारे गये, और ४५ ज़ख़्मी हुए. इस समय किसीक़द्र नमक वग़ैरह क़रीब २०००० बीस हज़ार रुपयेका माल नयपाली सेनाके हाथ लगा.

धीरशम्शेरजंगने कुतीसे चार पांच कोस आगे बढ़कर सोना गुम्बाके (१) शहर और गढ़को लेलिया. यहांपर क़रीब २५०० सिपाही तिब्बतवालोंके थे, जिनमेंसे ४०० के अनुमान मारेजाने तथा ज़ख़्मी होनेके अलावह २० आदमी नयपाली सेनाकी क़ैदमें आये. बम्बहादुरके नयपालकी तरफ़ लौट आनेपर उसकी जगह कृष्णबहादुर और कई दूसरे लोग भेजे गये.

जंगबहादुर रियासतका काम बम्बहादुरके सुपुर्द करके आप अपनी मातह्त पल्टन समेत विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ६ [हि० ता० १९ शअ़्बान = ई० ता० ७ मई] को तिब्बतकी तरफ़ रवानह हुआ. इस वक्त उन कुल नयपाली आदमियोंकी तादाद, जो लड़ाईके मौक़ेपर जमा किये जासकें, ५६००० से अधिक समझी गई थी. जंगबहादुरने झूंगा गढ़ी और सोना गुम्बाका मुनासिब बन्दोबस्त करने बाद उस मौसममें आगे बढ़ना उचित न समझा, और तिब्बतके सेंठ्या काजी वग़ैरह अफ़्सरोंकी अर्ज़पर सुलह करनेके लिये अपना एक एल्ची शिकर्जुनमें भेजा. इसके बाद वह नयपाली सेनाको बड़ी सावधानीके साथ उक्त स्थानों (केरंग और कुती) में रहने और उनकी हिफ़ाज़त रखनेका हुक्म देकर मए जगत्शम्शेरजंग और धीरशम्शेरजंगके नयपालमें चला आया.

---

(१) तिब्बती लोग मन्दिरको गुम्बा कहते हैं, जो बौद्ध लोगोंका पवित्र स्थान या लामा लोगोंके रहनेकी जगह होती है; लामा लोग बौद्धोंके पूजनीय (फ़क़ीर) समझे जाते हैं, तिब्बतका राजा भी लामा ही होता है, जिसका शादी विवाह वग़ैरह नहीं किया जाता, राजा लासामें रहता है, और उसके

मातह्त चार काजी राज्यका काम करते हैं.

नयपाली एल्चीने शिकर्जुनमें पहुंचकर चीनी अम्बान व तिब्बती सर्दारोंसे जंगबहादुरके कहनेके मुवाफ़िक़ बात चीत की, लेकिन् नयपाल वालोंके मन्शाके मुताबिक़ कोई बात क़रार न पाई, और वह चीनी अम्बानके भेजे हुए एक चीनी अफ्सर तथा कई तिब्बती सर्दारों समेत काठमांडूमें लौट आया. उसवक़् चीनी अफ्सर व तिब्बती सर्दारोंको महाराजाकी तरफ़से यह जवाब मिला, कि नये जीते हुए मुल्कपर हमारा क़बज़ह रहे, और ९०००००० रुपया फ़ौज ख़र्चका मिले, तो सुलह क़ाइम होसक्ती है. यह सुनकर तिब्बती लोग वापस लौटे और उनके साथ महाराजाकी तरफ़से कर्नेल तिलविक्रम थापा (१) एक पत्र लेकर, जिसमें ऊपर बयान किया हुआ आशय था, चीनी अम्बानके पास भेजा गया. जब वह तिब्बतमें पहुंचा और अम्बान से मिला, तो कुछ बातचीत होने बाद अम्बानने यह जवाब दिया, कि अगर गोरखा लोगोंको सुलह करना मन्जूर है, तो २००००० दो लाख रुपया फ़ौज ख़र्चकी बाबत उन्हें दिया जाकर आइन्दहके लिये नयपाली सौदागरोंके मालपर महसूल मुआफ़ करदिया-जायेगा, और यदि यह मन्ज़ूर न हो, तो इस लड़ाईका हाल चीनके बादशाहको ज़ाहिर करके वहांसे जंगी सेना मंगाई जावेगी, जो नयपालमें लूटमार करने और देश छीन लेनेके अलावह गोरखाली राजाको भी गिरिफ़्तार करके पेकिन (चीनकी राजधानी) में लेजावेगी; क्योंकि तिब्बतका मुल्क चीनी सर्कारने लामा लोगों और बौद्धके मठों (गुम्बों) को पुण्यार्थ दे रक्खा है, इसपर और किसीका कुछ इस्तियार नहीं है. यह वृत्तान्त पत्र द्वारा लेकर तिलविक्रम काठमांडूमें आया, जिसका जवाब महाराजा की तरफ़से वज़ीर जंगबहादुरने बड़ी नर्मी और किसीक़द्र सख़्तीके साथ विक्रमी भाद्रपद [हि० १२७२ मुहर्रम = ई० सेप्टेम्बर] में यही भेजा, कि जीता हुआ मुल्क कभी नहीं छोड़ा जायेगा; यदि चीनी सेनाकी चढ़ाई होगी, तो गोरखा लोग भी अपनी शक्तिके मुवाफ़िक़ आख़री दमतक लड़ेंगे.

विक्रमी कार्तिक [हि० रबीउ़लअव्वल = ई० नोवेम्बर] के शुरू में तिब्बती भोटिया लोगोंने कुतीकी मुहाफ़िज़ नयपाली सेनापर, जो तादादमें ढाई हज़ारसे कम न थी, अचानक धावा किया, जिसमें नयपाली सेनाके बहुतसे आदमी मारेजाकर बाक़ी बचे हुए १३०० सिपाही लिस्तीकी तरफ़ भाग आये. यह ख़बर नयपाल में पहुंची, और वहांसे पांच पल्टनें धीरशम्शेरजंगकी मातहतीमें लिस्तीकी तरफ़ तथा पांच पल्टनें सनकसिंहकी मातहतीमें केरंगकी ओर भेजी गई.

---

(१) यह वह शख़्स है, जो पाल्पासे गुरुप्रतापशाहके साथ भागा था, और जिसको जंगबहादुरने वापस बुलाकर कर्नेल बना दिया था.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल १० [हि० ता० ८ रबीउलअव्वल = .ई० ता० १९ नोवेम्बर] को काठमांडूमें यह ख़बर पहुंची, कि भोटिया लोगोंने रातके वक्त झूंगापर हमलह किया, जिसमें उनके क़रीब १००० एक हज़ार आदमी मारे जाने व घायल होने बाद बाक़ी लोग भाग गये; नयपाली मददगार फ़ौजने नियत स्थानोंपर पहुंचकर उनके आस पास कई जगह भोटिया लोगोंसे मुक़ाबले किये, जिनमें सैकड़ों मुख़ालिफ़ और भी मारे गये, और उन तोपों वगैरह सामानमेंसे, जो भोटिया लोगोंने कुटी मक़ामके पास अचानक हमलह करके नयपालियोंसे छीन लिया था, बहुतसा सामान वापस हाथ लगा. इन लड़ाइयोंमें क़रीबन् २०० गोरखा और १८०० तिब्बती भोटिया मारे गये. आख़रकार तिब्बत वालोंने जान व मालका बहुत कुछ नुक़्सान उठानेसे लाचार होकर सुलह करली, और उसी समयसे उन्होंने १०००० दस हज़ार रुपया सालानह नयपालके महाराजाको देना, नयपाली सौदागरोंसे अपने इलाक़हमें किसी मालपर कुछ भी महसूल न लेना, और व्यापारियोंके मुक़द्दमे फ़ैसल करनेके वास्ते तिब्बतमें नयपाली रेज़िडेण्ट रक्खा जाना मन्ज़ूर किया.

विक्रमी १९१३ श्रावण शुक्ल १ [हि० १२७२ ता० २९ ज़िल्क़ाद = .ई० १८५६ ता० १ ऑगस्ट] को जंगबहादुरने विज़ारतका काम अपने छोटे भाई बमबहादुरको सौंप-दिया, और उसका सबब अपनेमें रियासती कारोबारकी निगरानी और मुल्की मुआमलातमें परिश्रम करनेकी शक्ति न होना ज़ाहिर किया. महाराजाने जंगबहादुरके मन्शाके मुवाफ़िक़ विज़ारतका उहदह बमबहादुरको देकर कुछ दिनों बाद जंगबहादुरको महाराजा का ख़िताब, और एक लाख रुपया सालानह आमदनीके काइकी और लमजुं नामी दो सूबे जागीरमें बख़्श दिये (१).

विक्रमी १९१४ ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० १२७३ ता० १ शव्वाल = .ई० १८५७ ता० २५ मई] को बमबहादुर मरगया (२). इसके बाद जंगबहादुरने

---

(१) इसवक्त महाराजाने जंगबहादुरको बहुत कुछ इख़्तियारातके साथ एक सनद लिखदी थी, जिनमेंसे अव्वल तो उसको अपनी जागीरमें मुजिमोंको मौतकी सज़ा देने, दूसरे अपने विरोधीको ख़ास अपनेही इख़्तियारसे रियासत नयपालके हर एक स्थानमें जहां चाहे सज़ा देनेका इख़्तियार था; तीसरी शर्त यह थी, कि चीनी तथा अंग्रेज़ी सर्कारोंसे, जो बर्ताव जारी है, उसमें किसी तरहकी कमी बेशी उसकी रायके बिदून महाराजा या वज़ीर न करसकें, परन्तु इस बातको अंग्रेज़ी रेज़िडेण्टने मन्ज़ूर नहीं किया; और चौथे यह, कि नयपालके राज्यमें उसीके भाइयों तथा बेटोंमेंसे क्रमशः एकके बाद दूसरा विज़ारतका .उहदह पाता रहे.

(२) इससे पहिले नयपालके कुल वज़ीर किसी न किसी कारण शस्त्र वगैरहसे मारे गये; लेकिन सिर्फ़ यही एक वज़ीर हुआ, जो बिना मारे मौतसे मरा.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ४ [हि० ता० २ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २५ जून] को महाराजाके बड़े पुत्र त्रैलोक्यविक्रमशाहके साथ अपनी बड़ी लड़कीका विवाह करदिया. यह शादी आनन्द व उत्साहके साथ बड़ी धूमधामसे हुई, जिसमें अंग्रेज़ी रेज़िडेएट मिह्मानके तौरपर शामिल हुए, और जल्सह देखनेके लिये जंगबहादुरने रेज़िडेन्सीसे मेम लोगोंको भी अपने मकानपर बुलाया.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २८ जून] को बमबहादुरके मरनेका शोक और युवराजकी शादीका जल्सह ख़त्म होने बाद जंगबहादुरने महाराजा और अपने रिश्तहदारोंके कहनेपर दोबारह विज़ारतका काम अपने हाथमें लिया.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें जंगबहादुरने सर्कार अंग्रेज़ीको मदद देनेके लिये फ़ौज तय्यार की, लेकिन् गवर्मेएटने कुछ दिनोंतक, याने जबतक कि बाग़ी लोगोंको शिकस्त न हुई, मदद लेना मन्ज़ूर नहीं किया; क्योंकि अव्वल तो अंग्रेज़ लोग हिन्दुस्तानियोंको यह बात दिखलाना चाहते थे, कि सर्कार अंग्रेज़ी अपनी ताक़तसे ही इस फ़सादको दूर कर सक्ती है, और दूसरे जंगबहादुरने मदद देनेके एवज़ अम्न क़ाइम होजाने पर अवधके सूबहमेंसे कुछ मुल्क मांगा था. जब दिल्ली व लखनऊ वग़ैरह स्थानोंमें गवर्मेएट अंग्रेज़ीका क़बज़ह होगया, तब ग़द्रको रफ़ा करनेके लिये उक्त गवर्मेएटने गोरखाली लोगोंसे मदद लेना सिर्फ़ इस शर्तपर मंजूर किया, कि जो आदमी मारेजावेंगे उनके बालबच्चों को पेन्शन दी जायेगी, और जो ज़ख़्मी होंगे उनको इन्आमके तौरपर रुपया मिलेगा, और इसके सिवा गोला, बारूद वग़ैरह मुत्फ़र्रक़ ख़र्च भी दिया जायेगा. जंगबहादुर ख़ास अपने फ़ायदेके लिये अंग्रेज़ोंको हर हालतमें मदद देना मुनासिब समझकर ख़ुद फ़ौज समेत हिन्दुस्तानकी तरफ़ आनेके लिये तय्यार हुआ, कि इसी अरसहमें गगनसिंह ख़वासके बेटेकी ज़बानी कई लोगोंकी निस्बत जंगबहादुरको उसके भाइयों व दूसरे सलाहकारों समेत मारडालनेका इरादह ज़ाहिर हुआ, जिसपर दस बारह आदमी गिरिफ़्तार होकर क़त्ल कराये गये.

इसके बाद जंगबहादुर मए रणोद्दीपसिंह व धीरशम्शेरजंगके क़रीब ११००० फ़ौज साथ लेकर अंग्रेज़ोंको मदद देनेके लिये नयपालसे रवानह हुआ; यह फ़ौज थोड़े दिनों तक सींगोली व बिसोलियामें ठहरकर विक्रमी पौष शुक्ल १३ [हि० १२७४ ता० ११ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २९ डिसेम्बर] को गंडक नदीके पार गोरखपुरके रास्तहपर पहुंची, जहां जेनरल मैकग्रैग साहिबसे जंगबहादुरकी मुलाक़ात हुई, और उक्त जेनरलके कहनेके मुवाफ़िक़ जंगबहादुरकी सेनाने सर्कार अंग्रेज़ीको

मदद दी, जिसका मुफ़स्सल हाल कप्तान ट्रौटर साहिबकी किताब "ब्रिटिश एम्पाइर इन इण्डिया" में लिखा है.

जंगबहादुरने रियासतका प्रबन्ध बहुत .उम्दह तौरपर किया, और सेनाकी तादाद भी किसीक़द्र बढ़ाई. इसके सिवा धर्मशास्त्रके अनुसार एक क़ानून (ऐन) बनवाकर कुल राज्यभरमें जारी किया, जिसमें मुल्की मुआमलातके प्रबन्ध और मुक़द्दमात वगै़रहकी तफ्सील व सज़ाओंका तरीक़ह बयान किया गया है. इस क़ानूनके जारी होनेसे पहिलेकी बनिस्बत इस वक़ मुजिमोंकी सज़ादिहीमें बहुत कुछ कमी होगई है, और ज़मींदारोंके पाससे इज़ाफ़ह करनेपर भी किसी दूसरेको ज़मीन नहीं दिलाई जाती.

विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = .ई० १८६१] के क़रीब जंगबहादुरकी दूसरी लड़कीका विवाह युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाहके साथ हुआ; और कुछ अ़रसह बाद अपनी तीसरी लड़कीकी भी शादी उक्त वज़ीरने इन्हीं महाराजकुमारके साथ करदी.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = .ई० १८७२] में महाराजकुमार त्रैलोक्यविक्रमशाहके दूसरी महाराणीसे एक कुंवर उत्पन्न हुआ, जिसका बड़ा भारी उत्सव माना गया. लाखों रुपये नक़्द, ज़ेवर व ज़मीन वगै़रह बहुतसे लोगोंको इनूआममें दीगई, और कुल रियासतके नौकरोंके अ़लावह रेज़िडेण्टकी सेनाको भी सरोपाव दिये गये. छठीके जल्सहमें महाराजकुमारने रेज़िडेण्टको मिह्मान किया; परन्तु अफ्सोस, कि वह कुंवर एक महीनेका होकर इन्तिक़ाल करगया. इसके बाद विक्रमी १९३२ श्रावण शुक्ल ७ [हि० १२९२ ता० ६ रजब = ई० १८७५ ता० ८ ऑगस्ट] के दिन इन्हीं महाराणीके गर्भसे पृथ्वीवीरविक्रमशाहका जन्म हुआ. इनके सिवा त्रैलोक्यविक्रमशाहके दो तीन लड़कियां भी निज महाराणियोंसे पैदा हुईं, जिनमेंसे सिर्फ़ एक बाक़ी रही. उक्त युवराजके महाराणियोंके अ़लावह कई एक ख़वासें भी थीं, जिनसे ६ लड़के पैदा हुए.

विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = .ई० १८७६] की शरद ऋतुमें जंगबहादुर अपने भाई जगत्शम्शेरजंगके बेटे जेनरल अमरजंग व कई राणियों और ख़वासों समेत शिकारके लिये तराईमें आया था, जहां नयपालसे चालीस कोस दूर बाघमती नदीके किनारे पत्थरघटा मक़ामपर कुछ दस्त लगजानेसे विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १२ [हि० १२९४ ता० ११ सफ़र = .ई० १८७७ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को उक्त वज़ीरका इन्तिक़ाल होगया, और एक राणी व दो ख़वासोंने उसके साथ सती होनेकी इच्छा प्रगट की. यह ख़बर अमरजंगने नयपालमें अपने पिता व चचा (जंगबहादुरके छोटे भाई) रणोद्दीपसिंह व धीरशम्शेरजंगके पास भेजी. जब दूसरे रोज़ यह हाल इन लोगोंको मालूम हुआ, तो इन्होंने वज़ीरके देहान्तको छिपाकर

पहिले राजधानीका कुल बन्दोबस्त किया, और इसके बाद रातके वक्त धीरशम्शेरजंगने युव-राज त्रैलोक्यविक्रमशाहके पास जाकर अर्ज़ किया, कि जंगबहादुर बहुत बीमार हैं, इसलिये आपको महाराणियों समेत बहुत जल्द वहां पधारकर उन्हें दर्शन देना चाहिये, मैं भी आपके हम्राह चलता हूं. धीरशम्शेरजंगके कहनेके मुवाफ़िक़ युवराज उसी वक्त महाराणियों समेत तय्यार होगये, तब विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० ता० १२ सफ़र = ई० ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को पिछली नौ घड़ी रात बाक़ी रहे धीरशम्शेरजंगने जंगबहादुरके बेटे जगत्‌जंग, जीतजंग, पद्मजंग और रणवीरजंग आदि (१) को भी कहलाया, कि जंगबहादुर सख़्त बीमार हैं, इस सबबसे महाराजकुमार वहां पधारते हैं, अगर तुम लोगोंको भी चलना हो, तो चलो; लेकिन् उनमेसे कोई चलनेके लिये तय्यार न हुआ. आख़रकार युवराज अपनी तीनों महाराणियों तथा धीरशम्शेरजंग, बमबहादुरके बेटे बम्‌विक्रम, जीतजंग और रणवीरजंग समेत नयपालसे रवानह होकर विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० ता० १३ सफ़र = ई० ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को पत्थरघटा मक़ामपर पहुंचे, और उसी रोज़ उक्त वज़ीरका दाह कर्म हुआ. इस वज़ीरके साथ एक राणी और दो ख़वासें सती हुईं.

जंगबहादुरके भाइयोंने युवराजको जंगबहादुरके बीमार होनेकी ख़बर इस विचारसे दी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि युवराज, जंगबहादुरके मरनेकी सहीह ख़बर सुनकर उसके बेटे जगत्‌जंगको, जो अपने पिताकी आज्ञानुसार उसकी मौजूदगीमें ही रियासती कारोबारमें एक बड़ा सलाहकार माना जाता था, वज़ीर बनानेकी कोशिश करें, या हम लोगोंके ख़ानदानको बिल्कुल विज़ारतसे ख़ारिज करादें; इसलिये अस्ल हाल ज़ाहिर नहीं किया. उन्होंने यह सोचा, कि त्रैलोक्यविक्रमशाह नयपालसे रवानह होजावेंगे, तब महाराजासे अर्ज़ करके रणोद्दीपसिंहके नामपर विज़ारत करालीजावेगी. युवराजके नयपालसे रवानह होने बाद प्रभात होते ही ये लोग महाराजा सुरेन्द्र-विक्रमशाहके पास पहुंचे, और उनसे वज़ीरका मरना ज़ाहिर करके विज़ारतका काम रणोद्दीपसिंहके नाम करालिया. इस वक्त आम लोगों व जंगबहादुरके बेटों जगत्‌जंग आदिको मालूम हुआ, कि जंगबहादुर मरगये, और उनकी जगह रणोद्दीपसिंह वज़ीर बनाये गये हैं.

रणोद्दीपसिंहने विज़ारतका उहदह पानेसे पहिले ही जगत्‌जंगके भयसे इस क़द्र बन्दोबस्त करा दिया था, कि राजधानीके चारों तरफ़ पल्टनें तईनात करदेनेके

---

(१) जंगबहादुरके बहुतसी राणियां और ख़वासें थीं, जिनके गर्भसे कई लड़के व लड़कियां उत्पन्न हुईं, लेकिन उसके मरनेके वक्त कुल ९ बेटे और १५ बेटियां बाक़ी रही थीं.

सिवा जंगबहादुरके बेटोंमेंसे किसीको महाराजाके पासतक नहीं जाने दिया. जब युवराज (त्रैलोक्यविक्रमशाह) जंगबहादुरका दाह कर्म कराकर विक्रमी चैत्र कृष्ण १ [हि० ता० १४ सफ़र = ई० ता० २८ फ़ेब्रुअरी] के दिन वापस राजधानीमें आ पहुंचे, और उन्होंने रणोद्दीपसिंहका नज़ानह लेलिया, तब पल्टनें वग़ैरह बन्दोबस्त उठाया गया.

महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहके मिज़ाजका हाल तो पाठक लोग उनके बचपनकी आदतोंसे मालूम करही सके हैं, कि वह सिवा वाहियात खेल तमाशों व हर एकपर जा बेजा सख़्ती करनेके राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी कामोंपर कुछ भी ख़याल नहीं करते थे, और राज्यका कुल काम महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहके राज्यसे ख़ारिज होने व इनके गादीपर बिठाये जानेके पहिलेसे जंगबहादुर ही ख़ास अपनी तज्वीज़के मुवाफ़िक़ करता था; जबतक यह वज़ीर जीता रहा, राज्यमें किसी तरहकी ख़राबी पैदा न होने पाई; क्योंकि जंगबहादुरको प्रथम तो महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहने काशी जाते वक़ राज्यका पूरा इख़्तियार देदिया था; दूसरे उस वक़ सुरेन्द्रविक्रमशाह बालक होनेके अलावह अव्वल दरजेके बद चलन थे, जो इस वक़तक केवल नामके लिये राजा रहे; और तीसरे युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाह उक्त वज़ीरके साथ अपना एक नज़्दीकी रिश्तह होजानेके सबब उसका बहुत कुछ लिहाज़ रखते थे. इन कारणोंसे जंगबहादुरने नयपालके राज्यपर एक अरसहतक ख़ुद मुख़्तारीके साथ हुकूमत की, इसकी विज़ारतके वक़्में अगर कोई बन्दिश उसके बर्ख़िलाफ़ हुई, तो फ़ौरन् ज़ाहिर होकर मुख़ालिफ़ोंको सज़ा दीगई.

रणोद्दीपसिंह अपने भाई जंगबहादुरके वक़्में एक बड़ा अफ़्सर या नाइब वज़ीर माना जाता था, लेकिन् कुछ अरसहसे रियासती काम काजमें ज़ियादहतर जगत्‌जंग दख़्ल देने लगगया था. अब युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाहको धोखा देकर उनके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ रणोद्दीपसिंहको उसके भाइयोंने वज़ीर बना दिया, और राज्यका काम जंगबहादुरके इख़्तियारके मुवाफ़िक़ रणोद्दीपसिंह, जगत्‌शम्शेरजंग व धीरशम्शेरजंग करने लगे, इनके अलावह युवराजने भी किसी किसी बातमें दख़्ल देना शुरू किया, जिसके लिये वज़ीरने कई बार उनको रोका, बल्कि एक मर्तबह वह सख़्त कलामीसे भी पेश आया, और कहा कि तुमको हर्गिज़ किसी मुआमलेमें दख़्ल न देना चाहिये. यह बात महाराजकुमारको बहुत ही नागुवार गुज़री, और इसी नाराज़गीपर उन्होंने वज़ीरके ख़ानदान व उनके साथियोंका बिल्कुल ख़ातिमह करादेनेके लिये बहुतसे मनुष्योंको भी एक मत करलिया था, परन्तु आख़ीरमें कुछ नतीजह न निकलने पाया, याने विक्रमी १९३४ चैत्र कृष्ण १२ [हि० १२९५ ता० २५ रबीउ़लअव्वल = ई० १८७८ ता० ३० मार्च] को उक्त महाराजकुमार, एक रातभर शरीरमें जलन रहकर, प्रभात होतेही यकायक इस दुन्यासे इन्तिक़ाल करगये.

त्रैलोक्यविक्रमशाहके बाद रणोद्दीपसिंहने उनके सलाहकार लोगोंके उह्दोंमें कमी और कई प्रकारसे उनका अपमान करना शुरू किया, जिसपर बहुतसे आदमियोंने महाराजाके छोटे कुंवर नगेन्द्रविक्रमशाहसे सलाह लेकर थापा लोगोंमेंसे श्रीविक्रम या अमरविक्रम (१) को वज़ीर बनाने और रणोद्दीपसिंह आदिको मारडालनेका विचार निश्चय करलिया. इस सलाहमें जंगबहादुरका बेटा पद्मजंग भी शामिल था, लेकिन् उसको यह बात नहीं जतलाई गई थी, कि विज़ारतका पद थापा लोगोंको दिया जायेगा. नगेन्द्रविक्रमशाहके सलाहकारोंने यह सलाह ठहराई, कि जिस वक्त रणोद्दीपसिंह अपने कुल सलाहकारों व रिश्तहदारों समेत कचहरीमें बैठे, उस वक्त एकदम सब लोग वहां क़त्ल करडाले जावें. इसी अरसहमें, याने विक्रमी १९३७ मार्गशीर्ष [हि० १२९८ मुहर्रम = ई० १८८० डिसेम्बर] में युवराज त्रैलोक्यविक्रमशाहकी महाराणियां तीर्थ यात्राका मनोर्थ प्रगट करके हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवानह हुईं, और उनके साथ रणोद्दीपसिंह भी चला गया. उक्त महाराणियां जगदीश, रामेश्वर और द्वारिका तीन धामकी यात्रा करके बम्बईमें पहुंची थीं, कि उसी मक़ाम पर महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहके सख्त बीमार होनेकी ख़बर उनको मिली, जिससे कुल लश्कर एकदम सीधा नयपालकी तरफ़ रवानह होकर विक्रमी १९३८ के वैशाख [हि० १२९८ जमादियुलअव्वल = ई० १८८१ एप्रिल] में राजधानीके अन्दर दाख़िल हुआ; और विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रजब = ई० ता० १२ जून] को क्षई रोगसे महाराजा सुरेन्द्रविक्रमशाहका इन्तिक़ाल होजानेपर नयपाल राज्यकी रीतिके मुवाफ़िक़ वर्तमान महाराजाधिराज पृथ्वीवीरविक्रमशाह गादीके मालिक बनाये जाकर मृतक महाराजाका दाह कर्म कियागया.

४०— महाराजा पृथ्वी वीरविक्रमशाह.

महाराजा पृथ्वीवीरविक्रमशाह, जिनका जन्म विक्रमी १९३२ श्रावण शुक्ल ७ [हि० १२९२ ता० ६ रजब = ई० १८७५ ता० ८ ऑगस्ट] को हुआ था, ७ वर्षकी उम्रमें अपने पितामह (दादा) के देवलोक होनेपर गद्दी नशीन कियेगये; इनका राज्याभिषेकोत्सव छः महीने पीछे विक्रमी १९३८ मार्गशीर्ष [हि० १२९९ मुहर्रम = ई० १८८१ नोवेम्बर] में हुआ. इन महाराजाके कम उम्र होनेके कारण राज्यका कुल काम रणोद्दीपसिंह वग़ैरह लोग करते थे; और नगेन्द्रविक्रमशाह, ऊपर लिखे मुवाफ़िक़, दूसरा

(१) श्रीविक्रम माधवरसिंहका पोता, और अमरविक्रम तिलविक्रमका बेटा था.

वज़ीर नियत करनेकी कोशिश कर रहे थे, जो इस समयतक प्रगट नहीं हुई. कुछ दिन हुए, कि वर्तमान महाराजाधिराजके गद्दी बैठने बाद, जब रणोद्दीपसिंह शिकारके लिये तराईमें आया, और जगत्शम्शेरजंगके कुछ अरसह पहिले मरजानेके सबब नियाबतका काम धीरशम्शेरजंग करने लगा, तब रणोद्दीपसिंहके मुख़ालिफ़ोंने पुख़्तह सलाह करके उसको क़त्ल करनेका दिन नियत करलिया था.

विक्रमी पौष [हि० सफ़र = ई० डिसेम्बर] में ऊपर बयान कीहुई सलाहके मुवाफ़िक़ नगेन्द्रविक्रमशाहके फ़िर्क़े वाले लोगोंने यह इरादह किया, कि शुक्रवारके दिन धीरशम्शेरजंग आदि लोगोंको तो एकदम यहींपर (राजधानीमें) क़त्ल करदिया जावे, और यह ख़बर पहुंचनेपर रणोद्दीपसिंहको अमरविक्रम थापा (जो रणोद्दीपसिंहके साथ था) सफ़र में मारडालेगा. इस विचारमें रियासतके बहुतसे आदमी शामिल थे, जिनमेंसे गगनसिंह ख़वासके पोते उत्तरध्वजने यह कुल माजरा धीरशम्शेरजंगसे ज़ाहिर करदिया; इसपर बहुतसे आदमी गिरिफ़्तार हुए, और १५ रोज़तक तह्क़ीक़ात होने बाद रणोद्दीपसिंहके काठमांडूमें पहुंचनेके दूसरे दिन, याने विक्रमी माघ कृष्ण १४ [हि० ता० २७ सफ़र = ई० १८८२ ता० १८ जेन्युअरी] को इस इरादहके जुर्ममें कर्नेल् श्रीविक्रम थापा, कर्नेल् अमरविक्रम थापा, कर्नेल् इन्द्रसिंह, मेजर कप्तान शम्शेरजंग थापा, मेजर कप्तान संसारविक्रम थापा, मेजर कप्तान संग्राम सूर विष्ट, कप्तान समरविक्रम थापा, कप्तान बख़्तवार शाही, कप्तान रणध्वज अधिकारी, इनसेन रणध्वज कारकी, सूबहदार पहलवानसिंह कारकी, कप्तान केल्या विष्ट, महाकोत्या सेते विष्ट, और सूबहदार चौबा पाण्डे आदि बीस मनुष्य क़त्ल कराये गये; और तह्क़ीक़ात बदस्तूर जारी रही, जिसमें त्रैलोक्यविक्रमशाहके समयतककी बन्दिशका हाल ज़ाहिर होगया. आख़िरकार विक्रमी माघ शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रबीउ़लअव्वल = ई० ता० २ फ़ेब्रुअरी] को कर्नेल् अमृतसिंह अधिकारी, कर्नेल् विर्मानसिंह विश्न्यात और सूबहदार लोकबहादुर थापा, तो क़त्ल हुए, और ख़ज़ान्ची शिवप्रसाद, सूबह दिग्विजय, मुखिया टंकनाथ, सूबह होमनाथ (१), और भट्ट श्यामविलास जातिके ब्राह्मण होनेके सबब क़त्लसे बचकर पालपामें क़ैद किये गये. इनके अलावह कई मनुष्य छः वर्षकी मीआ़दके लिये नयपालमें क़ैद हुए.

---

(१) टंकनाथ और होमनाथ दोनों, महाराजकुमार त्रैलोक्यविक्रमशाहके धायभाई हैं, जो पालपामें क़ैद थे, और वहांसे भागकर हिन्दुस्तानमें आने बाद अरसह सात आठ वर्षसे वर्तमान समय विक्रमी १९४७ [हि० १३०८ = ई० १८९०] पर्यंत रियासत उदयपुरमें ठहरे हुए हैं, जिनको खानपान आदिका ख़र्च उदयपुरके दर्बारसे मिलता है.

महाराजाके चचा नगेन्द्रविक्रमशाह, जेनरल बम्‌विक्रम, और जेनरल पद्मजंगमेंसे, जो ऊपर बयान किये हुए बखेड़ेकी बुन्याद डालनेवाले समझे गये थे, नगेन्द्रविक्रमशाह और बम्‌विक्रम तो तीन वर्ष क़ैद रहनेके लिये हिन्दुस्तानमें भेजे गये, और पद्मजंग छः महीनेतक नवाकोटमें क़ैद रहा. मीआ़द पूरी होजाने बाद नगेन्द्रविक्रमशाह गोरखामें, बम्‌विक्रम धनकुटामें रक्खे गये, और पद्मजंग पीछा अपने .उह्देपर नियत किया गया. त्रैलोक्यविक्रमशाहके समयकी बन्दिशमें शामिल होनेका जुर्म जंगबहादुरके बेटे जगत्‌जंगपर भी साबित हुआ था, जो उन दिनों हिन्दुस्तानमें होनेके सबब उस समय सज़ासे बचगया, लेकिन् रणोद्दीपसिंहने कुछ दिनों बाद तसल्लीका पर्वानह भेजकर उसे धोखेसे बुलाया, और जब वह नयपालकी सीमामें पहुंचा, तो फ़ौरन् बेड़ी डालकर क़ैदी बनालिया गया. रणोद्दीपसिंहकी स्त्री जगत्‌जंगको बचपनसे पुत्रके समान चाहती थी, इस सबबसे राजधानीमें पहुंचने बाद कुछ अ़रसहतक वह क़ैद रहकर रिहा करदिया गया. इसके बाद एक अ़रसहतक रणोद्दीपसिंहने बा इख्तियार विज़ारतका काम किया.

अब रणोद्दीपसिंहने विज़ारतका काम जगत्‌जंगको दिलाकर तीर्थ यात्राके लिये हिन्दुस्तानमें आनेकी तय्यारी की. यह बात महाराजाकी माताको नागुवार गुज़री, और उसने धीरशम्‌शेरजंगके बेटे वीरशम्‌शेरजंग तथा खड्गशमशेरजंगसे सलाह करके रणोद्दीपसिंह आदिको मरवाडालना चाहा. वीरशम्‌शेरजंगने विज़ारतके लालचसे विक्रमी १९४२ के मार्गशीर्ष [हि० १३०३ रबीउ़लअव्वल = .ई० १८८५ डिसेम्बर] में रणोद्दीपसिंहको यात्राकी रवानगीसे एक दिन पहिले अपने भाई खड्गशम्‌शेरजंग तथा दूसरे कई मनुष्यों समेत उसके मकानपर जाकर खड्गशम्‌शेरजंगके हाथसे मरवा डाला, और जगत्‌जंगके मकानपर सिपाही वग़ैरह भेजकर उसका भी उसके बेटे युद्धप्रतापजंग समेत काम तमाम कराया.

रणोद्दीपसिंहके मारेजाने बाद विज़ारतका काम वीरशम्‌शेरजंगके सुपुर्द हुआ, और नियाबतका काम खड्गशम्‌शेरजंग करने लगा. कुछ अ़रसह बाद खड्गशम्‌शेरजंगने महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहके दूसरे बेटे उपेन्द्रविक्रमशाहके बेटेकी स्त्री कान्छीमय्यासे सलाह लेकर उसके बेटेको गादी बिठाने और वर्तमान महाराजा पृथ्वीवीरविक्रमशाहको किसी तरहपर राज्यसे अलग करनेकी सलाह की, परन्तु यह हाल ज़ाहिर होगया, और वज़ीर वीरशमशेरजंगने मुज्रिमोंको राजधानीसे निकलवाकर खड्गशम्‌शेरजंगको पाल्पामें, कान्छी मय्याको लेंगलेंगमें, और कर्नैल् केसरसिंह थापाको प्यूठानामें भिजवा दिया. वर्तमान महाराजाधिराजके समयमें विज़ारतका काम वीरशम्‌शेरजंग करता है.

शेषसंग्रह.

नयपालमें पशुपतिके मन्दिरके पश्चिमी दर्वाजहका लेख

(इण्डियन ऐंटिकेरीकी जिल्द ९ के पृष्ठ १७८-८० तक).

अक्षस्त्र्यव्ययात्मा त्रिसमयसदृशस्त्रिप्रतीतस्त्रिलोकीत्राता त्रेतादिहेतुस्त्रिगुणमयतया त्र्यादिभिर्वर्णितोलं ॥ त्रिस्त्रोतोधौतमूर्धा त्रिपुरजिदजितोनिर्व्विबन्ध त्रिवर्गो य [स्योत्तुङ्ग] स्त्रिशूल स्त्रिदशपतिनुतः - - - तापनोभूत् ॥ १ ॥ राजद्रावणमूर्द्धपङ्क्तिशिखरव्यासक्तचूडामणिश्रेणीसङ्गतिनिश्चलात्मकतयालङ्काम्पुनानाः- पुरीं ॥ - - द्व (न्ध्यपराक्रमा) - - - - - - - - - णिसङ्गताः श्रीबाणासुर शेखराः पशुपतेः पादाणवः पान्तु वः ॥ २ ॥ सूर्याद्ब्रह्मप्रपौत्रान्मनुरथ भगवाञ्जन्म लेभे ततोभूदिक्ष्वाकुश्चक्रवर्ती नृपतिरपि ततः श्रीविकुक्षि (र्बभूव) ॥ जात - - - - - - - - - - - विदितोभूमिपः सार्व्वभौमोभूतोस्माद्विश्वगश्वः प्रबल निजबलव्याप्तविश्वान्तरालः ॥ ३ ॥ राजाष्टोत्तरविंशति क्षितिभुजस्तस्माद्व्यतीत्यक्रमात्संभूतः सगरः पतिः - - - - - (साग) रायाः क्षितेः ॥ जातोस्मादसमंजसो नरपतिस्तस्मादभूदंशुमान्स श्रीमन्तमजीजनन्नरवरो भूपं दिलीपाव्हयं ॥ ४ ॥ भेजे जन्म ततो भगीरथइति ख्यातो नृपोत्रान्तरे भूपाला - - - - - - - - - - (जातो) रघोरप्यजः ॥ श्रीमत्तुङ्गरथस्ततो दशरथः पुत्रैश्च पौत्रैस्समं राज्ञोष्टावपरान्विहाय परतः श्रीमानभूल्लिच्छविः ॥ ५ ॥ अस्त्येव क्षितिमंडनैकतिलको लोकप्रतीतो महाना - - - - - प्रभावमहताम्मान्यः सुराणामपि ॥ स्वच्छं लिच्छविनामबिभ्रदपरो वंशप्रवृत्तोदयः श्रीमच्चन्द्र कलाकलापधवलो गङ्गाप्रवाहोपमः ॥ ६ ॥ तस्माल्लिच्छवितः परेण नृपतीन्हित्वाप - - - रं श्रीमान्पुष्पपुरे कृतिः क्षितिपतिर्जातस्सुपुष्पस्ततः ॥ साकं भूपतिभिस्त्रिभिः क्षितिभृतां त्यक्त्वान्तरे विंशतिं ख्यातः श्रीजयदेवनामनृपतिः प्रादुर्बभूवापरः ॥ ७ ॥ एकादशक्षिति - - - - - - - - - (त्य) क्त्वान्तरे विजयिनो जयदेवनाम्नः ॥ श्रीमान्बभूव वृषदेव इति प्रतीतो राजोत्तमः सुगतशासनपक्षपाती ॥ ८ ॥ अभूत्ततः शंकरदेवनामा श्रीधर्मदेवो प्युदपादि तस्मात् ॥ श्रीमानदेवो नृपतिस्ततोभूत्ततो महीदेव इति प्रसिद्धः ॥ ९ ॥ वसन्त इव लोकस्य कान्तः शान्तारिविग्रहः ॥ आसीद्वसन्तदेवोस्मादान्तसामन्तवन्दितः ॥ १० ॥ अस्यान्तरे प्युदयदेव इति क्षितीशाज्जातास्त्रयोदश (तत) श्च नरेन्द्रदेवः ॥ मानोन्नतो नतसमस्तनरेन्द्रमौलिमालारजोनिकरपांशुलपादपीठः ॥ ११ ॥ दाता सद्द्रविणस्य भूरिविभवो जेता द्विषत्संहतेः

कर्त्ता बान्धवतोषणस्य यमवत्पाता प्रजानामलं॥ हर्त्ता संश्रितसाधुवर्गविपदां सत्यस्य वक्ता ततो जातः श्रीशिवदेव इत्यभिमतो लोकस्य भर्ता भुवः ॥ १२ ॥ देवी बाहुवलाढ्यमौखरिकुलश्रीवर्मचूडामणि रूयातिह्रेपितवैरिभूपतिगणश्रीभोगवर्मोद्भवा॥ दौहित्री मगधाधिपस्य महतः श्र्यादित्यसेनस्य या व्यूढा श्रीरिव तेन सा क्षितिभुजा श्रीवत्सदेव्यादरात् ॥ १३ ॥ तस्माद्भूमिभुजो प्यजायत जितारातेरजय्यः परै राजश्रीजयदेव इत्यवगतः श्रीवत्सदेव्यात्मजः॥ त्यागी मानधनो विशालनयनः सौजन्यरत्नाकरो विद्वा (न्सक्त) चिराश्रयो गुणवतां पीनोरुवक्षस्थलः ॥ १५ ॥ माद्यद्दन्तिसमूहदन्तमुसलक्षुण्णारिभूभृच्छिरो गौडोड्रादिकलिङ्गकोसलपतिश्रीहर्षदेवात्मजा॥ देवी राज्यमती कुलोचितगुणैर्युक्ता प्रभूता कुलैर्येनोढा भगदत्तराजकुलजा लक्ष्मीरिव क्ष्माभुजा॥ १५॥ अङ्गश्रिया परिगतोजितकामरूपः काञ्चीगुणाढ्यवनिताभिरुपास्यमानः॥ कुर्वन्सुराष्ट्रपरिपालनकार्यचिन्तां यः सार्वभौमचरितं प्रकटीकरोति ॥ १६ ॥ राज्यं प्राज्यसुखोर्जितद्विजजनप्रत्यर्पिताज्याहुतिज्योतिर्ज्जातशिखाविजृंभणजिताशेषप्रजापद्रुजं ॥ बिभ्रत्कण्टकवर्जितं निजभुजावष्टंभविस्फूर्जितं शूरत्वात्परचक्रकाम इति योनाम्ना परेणान्वितः ॥ १७ ॥ सश्रीमाञ्जयदेवास्यो विशुद्धबृहदन्वयः॥ लब्धप्रतापः संप्राप्तबहुपुण्यसमुच्चयः ॥ १८ ॥ मूर्तिरष्टाभिरष्टौ महयितुमतुलैः स्वैर्दलैरष्टमूर्तेः पातालादुत्थितं किं कमलमभिनवं पद्मनाभस्य नाभेः॥ देवस्यास्यासनायोपगतमिह चतुर्वक्त्रसादृश्यमोहाद्विस्तीर्णं विष्टरं किं प्रविकसितसिताम्भोजमम्भोजयोनेः ॥ १९ ॥ कीर्णा किम्भूतिरेषा सपदि पशुपतेर्नृत्यतोत्र प्रकामं मौलीन्दोः किम्मयूखाः शरदमभिनवां प्राप्य शोभामुपेताः॥ भक्त्या कैलासशैलाद्धिमनिचयरुचः सानवः किं समेतादुग्धाब्धेरागतः किं गलगरसहजप्रीतिपीयूषराशिः॥ २०॥ राज्ञः॥ देवं वन्दितुमुद्यतोद्युतिमतो विद्योतमानद्युतिः किं ज्योत्स्नाधवलाफणावलिरियं शेषस्य संदृश्यते॥ अन्तर्दूररसातलाश्रितगतैर्देवप्रभावश्रिया (:) किं क्षीरस्नपनं विधातुमुदिताः क्षीरार्णवस्योर्म्मयः॥ २१॥ विष्णोः पातालमूले फणिपतिशयनाक्रान्तिलीलासुखस्थादाज्ञां प्राप्योत्पतन्त्या त्रिपुरविजयिनोभक्तितोभ्यर्च्चनाय॥ लक्ष्म्याः संलक्ष्यते प्राक्करतलकलितोत्फुल्ललीलासरोजं किं वेतीत्थं वितर्कास्पदमतिरुचिरं मुग्धसिद्धांगनानाम्॥ २२॥ नालीनालीकमेतन्नखलुसमुदितं राजतो राजतोहं पद्मापद्मासनाब्जेकथमनुहरतोमानवामानवाभे॥ पृथ्व्यां पृथ्व्यान्नमादृग्भवतिहृतजगन्मानसे मानसे वा भास्वान्भास्वान्विशेषंजनयतिनहिमे वासारोवासरोवा ॥ २३ ॥ इतीवचामीकरकेसरालीसिन्दूररक्तद्युतिदन्तपङ्क्त्या ॥ राजीवराजीम्प्रति

जीवलोके सौन्दर्यदर्पादिवसप्रहासं ॥ २४ ॥ एषा भाति कुलाचलैः परिवृताप्राले-यसंसर्ग्गिभिर्व्वेदी मेरुशिलेव काञ्चनमयी देवस्य विश्रामभूः ॥ शुभ्रैः प्रान्त विकासिपंकजदलैरित्याकलय्य स्वयं रौप्यं पद्ममचीकरत्पशुपतेः पूजार्थमत्युज्वलम् ॥ २५ ॥ राज्ञः ॥ यं स्तौति प्रकटप्रभावमहिमा ब्रह्माचतुर्भिर्म्मुखैः यञ्च श्लाघयति प्रणम्य चरणे षड्भिर्मुखैः षण्मुखः ॥ यन्तुष्टाव दशाननोपि दशभिर्व्वक्त्रैः स्फुरत्कंधरः सेवां यस्य करोति वासुकिरलं जिव्हासहस्त्रैः स्तुवन् ॥ २६ ॥ स्यात्या यः परमेश्वरोपि वहते वासोदिशां मंडलं व्यापी सूक्ष्मतरश्च शङ्करतयास्यातोपि संहारकः ॥ एकोप्यष्टतनुः सुरासुरगुरुर्व्वीतत्रपोनृत्यति स्थाणुः पूज्यतमो विराजति गुणैरेवं विरुद्धैरपि ॥ २७ ॥ राज्ञः ॥ तस्येदं प्रमथाधिपस्य विपुलं ब्रह्माब्जतुल्यं शुभं राजद्राजत पङ्कजं प्रविततं प्रान्तप्रकीर्णैर्द्दलैः ॥ पूजार्थं प्रविधाप्य तत्पशुपतेयत्प्रापि पुण्यम्मया भक्त्या तत्प्रतिपाद्यमातरि पुनः संप्राप्नुयान्निर्वृतिम् ॥ २८ ॥ राज्ञः ॥ किं शंभोरुपरिस्थितं ससलिलं मंदाकिनीपङ्कजं स्वर्ग्गोद्भिन्नवाम्बुजेक्षणधिया-सम्प्राप्तमम्भोरुहम् ॥ देवानां किमियं शुभा सुकृतिनां रम्या विमानावली पद्मं किङ्करुणा करस्य करतो लोकेश्वरस्यागतम् ॥ २९ ॥ राज्ञः ॥ स्त्रोतः स्वर्गापगायाः किमिद-मवतरल्लोलकल्लोलरम्यं किं ब्रह्मोत्पत्तिपद्मं तलकमलवरप्रेक्षणायोपयातम् ॥ संप्राप्तञ्चन्द्रमौलेरमलनिजशिरश्चन्द्रबिम्बं किमत्रेत्येवं यद्वीक्ष्य शङ्कां वहति भुवि जनो विस्मयोत्फुल्लनेत्रः ॥ ३० ॥ श्रीवत्सदेव्यान्नृपतेर्जनन्या समं समन्तात्परिवारपद्मैः ॥ रौप्यं हरस्योपरि पुण्डरीकं तदादरैः कारितमत्युदारम् ॥ ३१ ॥ पुण्यं पुत्रेण दत्तं शशिकरविमलं कारयित्वाब्जमुख्यं प्राप्तं शुभ्रं शुभञ्च स्वयमपि रजतैः पद्मपूजां-विधाय ॥ सर्व्वं श्रीवत्सदेवी निजकुल धवलाञ्चितवृतिन्दधाना प्रादात् कल्याणहेतो-श्चिरमवनिभुजे स्वाभिने स्वर्ग्गताय ॥ ३२ ॥ कः कुर्य्यात्कुलजः पुमान्निजगुणश्ला-घामनिर्ह्रीच्छया राज्ञा सत्कविनापि नो विरचितं काव्यं स्ववंशाश्रयं ॥ श्लोकान्पञ्च विहाय साधु रचितान्प्राज्ञेन राज्ञा स्वयं स्नेहाद्भूभुजिबुद्धकीर्तिरकरोत्पूर्व्वामपूर्वा-मिमाम ॥ ३३ ॥ योगक्षेमविधानबन्धुरभुजस्संवर्द्धयन्बान्धवान् स्निह्यत्पुत्रकलत्रभृत्य-सहितो लब्धप्रतापो ॥ नृपः दीर्घायुर्न्नितरान्निरामयवपुर्न्नित्यप्रमोदान्वितः पृथ्वीम्पा-लयतु प्रकामविभवस्फीतानुरक्तप्रजाम् ॥ ३४ ॥ संवत् (१) १५३ कार्तिक शुक्ल नवम्याम्.

(१) कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरमकी जिल्द तीसरीके पृष्ठ १८४ में फ़्लीट साहिबने लिखा है, कि यह हर्ष संवत् है, और इसके मुताबिक़ ईसवी ७५८ ता० १६ ऑक्टोबर होता है.

त्रोटक छन्द.

शिवलोक हि भीम दिवान गये। सब शोक निमग्न जु लोक भये॥
जिनके सुत रान जवान बली। नृप आसन बैठिय भांति भली॥ १॥
जिनके दृग दान, दयादि भरे। पितु पुत्र दुहूं प्रज इष्ट करे॥
शुभ नीति रु रीति सुराज कियो। भुवि भारतको यश लूट लियो॥ २॥
निज देश बिनीति बयान करी। अंगरेजन नीति जु रीति भरी॥
सुबिधान प्रधानन फूट परी। अपने अपने हित व्यूह करी॥ ३॥
नृप गे अजमेर बिचार मतै। मिलि लारड बैंएिटक प्रीति रतै॥
फिर तीरथके हित नीति करी। जिहिंते रजवारन रीति परी॥ ४॥
जयसिंह बघेल सुता परनी। शिवरूप महीप शिवा घरनी॥
फिर अब्बुव आदिक सैर करी। शिवलोक प्रयान जवान हरी॥ ५॥
इतिहास लिख्यो नयपाल जितो। हम जानत ग्रंथन मान इतो॥
यह खण्ड जवान नृपाल भयो। नृप सज्जन आशय जान लयो॥ ६॥
फतमाल सुशासन सीस लियो। कविराज सु श्यामलदास कियो॥
यह ग्रन्थ सुपन्थ चिरायु रहो। कवि पाठक वंश बिधान कहो॥ ७॥
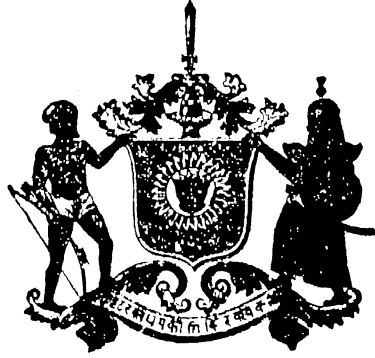
सत्रहवां प्रकरण.

महाराणा सर्दारसिंह.

महाराणा जवानसिंहकी उत्तरक्रिया करके महलोंमें वापस आने बाद राज्यके कुल कारखानह वालोंने (१) महाराणाके कोई वलीअहद न होनेके कारण रियासती क़ाइदह के अनुसार कुल कारख़ानोंकी कुंजियां महाराणा भीमसिंहके बड़े कुंवर अमरसिंहकी पत्नी चांपावतके पास पहुंचादीं. उक्त बाईजीराजने दूसरे सब कारख़ानह वालोंको तसल्लीके साथ कुंजियां वापस देकर ४ कारखानों, याने पांडेकी ओवरी (जिसमें जेवर वगैरह रहता है), सिलहख़ानह, सेजकी ओवरी और कपड़ेके भंडारकी कुंजियां अपने पास रखलीं, इस

(१) मेवाड़में यह क़ाइदह है, कि जब कोई महाराणा गुज़र जाते हैं, तो कुल शहरके दर्वाज़े बन्द होकर राज्यके कारख़ानोंके भी ताले लगादिये जाते हैं, और उत्तरक्रिया करके वापस आनेपर कुल कारख़ानह-वाले अपने अपने कारख़ानहकी कुंजियां वलीअह्दको नज़ करदेते हैं, कि वह, जो कारख़ानह जिस शख़्सको सौंपना मुनासिब समझें, उसीको उसकी कुंजी देदें; और अगर किसीको कारख़ानहसे अलग करना चाहें, तो उसकी कुंजी अपने पास रखलें. लेकिन अक्सर ऐसा होता रहा है, कि जो कारख़ानह जिस शख़्सकी सम्भालमें पहिलेसे रहता है, उसीके सुपुर्द किया जाता है, मगर यह बात खासकर मालिककी मर्ज़ीपर मुन्हसर है; और रसोड़ा व पाणेराका कारख़ानह तो अक्सर बदल ही दियाजाता है.

ग़रज़से, कि किसी तरहका नुक्सान न हो. इसके बाद कुल सर्दार व अह्लकार जमा होकर स्वर्गवासी महाराणाकी जगह गादीपर बिठायाजानेवाला शख़्स तज्वीज़ करनेके लिये आपसमें सलाह करने लगे. इस वक्त बागोरके महाराज शिवदानसिंहके तीन बेटे सर्दारसिंह, शेरसिंह और स्वरूपसिंह गद्दीके हक़दार थे; बाज़ मुसाहिबोंकी राय बागोरके महाराज सर्दारसिंह को, और बाज़ोंकी शेरसिंहके पुत्र शार्दूलसिंहको गद्दी नशीन करानेकी हुई, लेकिन् पुख़्तह तौरपर कोई जानशीन तै न पाया जानेसे गद्दी नशीनीका वह दिन टल गया, बल्कि इसी वहममें तीन चार रोज़ और भी गुज़र गये. आख़रकार विक्रमी १८९५ भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० १२५४ ता० १४ जमादियुस्सानी = .ई० १८३८ ता० ४ सेप्टेम्बर] को यह क़रार पाया, कि महाराज सर्दारसिंह गद्दीपर बिठाये जावें. उक्त महाराज महाराणा की दग्धक्रिया करके सेठ ज़ोरावरमल्लकी बाड़ीमें जा ठहरे थे, और महाराणाकी उत्तर-क्रिया उनके हाथसे होने लगी थी. इस दिन कुल उमराव, सर्दार व अह्लकार ज़ोरावर-मल्लकी बाड़ीमें जाकर उनको महलोंमें ले आये, और जब वह ज़नानहमें जाकर सलाम करके वापस बाहिर आये, तो चारणोंने उन्हें महाराणा जवानसिंहके क्रमानुयायी होनेकी आशिस दी. इसके बाद विक्रमी आश्विन कृष्ण ४ शुक्रवार [हि० ता० १७ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ७ सेप्टेम्बर] को मातमी दर्बार हुआ, जिसमें बेदलाके राव बख़्तसिंहने दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणाके सिरसे मातमी पछेवड़ी (१) उतारकर ज़ेवर नज़्र किया. विक्रमी आश्विन कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ११ सेप्टेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्ट स्पीअर साहिबने महलोंमें आकर मातमपुर्सीका दस्तूर अदा किया.

विक्रमी आश्विन शुक्ल ६ [हि० ता० ५ रजब = .ई० ता० २५ सेप्टेम्बर] को नयपालके महाराजा राजेन्द्रविक्रमशाहके भेजे हुए मोतमद व दासियों वग़ैरहको रुख़्सत दी गई, जो महाराणा जवानसिंहके समयमें यहां आये थे, और उक्त महाराणाका देहान्त होजानेके कारण बड़े रंजके साथ वापस गये.

महाराणा सर्दारसिंहके गद्दीनशीन होतेही रियासतमें फ़सादकी बुन्याद पड़ी, और उसका शुरू कारण यह हुआ, कि महाराणाने गद्दीनशीनीके दूसरे रोज़ गोगूंदाके राज शत्रुशालके बेटे लालसिंहको बुलाकर धमकाया, जिसने वैकुंठवासी महाराणाका इन्तिक़ाल होने बाद उनकी जगह शार्दूलसिंहको गद्दीपर बिठानेकी कोशिश की थी, और रावत् दूलहसिंहके बर्ख़िलाफ़, जो महाराणा सर्दारसिंहको गद्दीनशीन कराना चाहता था, उक्त महाराणाकी बुरी आदतें बयान करके सब लोगोंके

(१) मातमी दर्बारके वक्त जानशीनकी पघड़ीपर जो सिफ़ेद चादर रहती है उसको हटाना, मातम दूर करनेका चिन्ह है.

सामने उनका अपमान किया था, क्योंकि वह दूलहसिंहके साथ पहिलेसे कुछ अदावत रखता था. महाराणाके धमकानेपर लालसिंहने ऊपर बयान कियेहुए कुसूरोंकी मुआफ़ी चाहने और आगेको नमकहलाली व वफ़ादारीके साथ नोकरी करते रहनेकी गरज़से इक़ारनामहके तौर एक अर्ज़ी महाराणाकी ख़िद्मतमें पेश की, लेकिन् इसी अरसहमें उसपर एक दूसरा शुब्ह पैदा हुआ, जिसका मुफ़स्सल हाल यहां दर्ज किया जाता हैः-

विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रजब = ई० ता० १६ ऑक्टोबर] को लालसिंहका कामदार माणकचन्द और एक ब्राह्मण कुछ मन्त्र विधान करते हुए भीमपद्मेश्वर महादेवके मन्दिरके पास तालाबकी तीरपर पकड़े गये, और दर्याफ्त कियेजानेसे उक्त ब्राह्मणने महाराणापर लालसिंहका जादू कराना बयान किया. इसी दिन पोलिटिकल एजेण्ट स्पीअर साहिब महलोंमें आये, जिनसे महाराणाने सर्दारोंकी उदूल हुक्मी और नौकरी तथा छटूंदके बारेमें उनके बेजा उज़्रोंका बयान करके, उस विषयमें कुछ बात चीत की, और लालसिंहको जादू करानेके कुसूरमें क़त्ल करनेके लिये शाहपुराके राजाधिराज माधवसिंहको सर्कारी फ़ौज व तोपख़ानह समेत गोगूंदाकी हवेली (जहां लालसिंह ठहरा हुआ था) पर जानेका हुक्म दिया. यह ख़बर सुनकर बेगूंके रावत् किशोरसिंहने शाहपुराके राजाधिराजको कहलाया, कि पेश्तर हमसे लड़कर बाद उसके लालसिंहके पास जाना चाहिये; और इसी तरह सलूंबरके रावत् पद्मसिंह, कोठारियाके रावत् जोधसिंह और आमेटके रावत् सालिमसिंहने भी महाराणासे अर्ज़ किया, कि जबतक पूरी पूरी तह्क़ीक़ात होकर लालसिंहपर कुसूर साबित न होजावे, फ़ौज भेजना मौकूफ़ रक्खें, वर्नह हम लोग भी उसके शरीक होंगे. महाराणाने बखेड़ा बढ़ता हुआ देखकर पहिले हुक्मको मुल्तवी रक्खा, और गोगूंदापर ख़ालिसह भेजदिया. इसके बाद विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ता० ९ शअ्बान = ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को पीछोला तालाबके किनारे जलनिवास महलमें पोलिटिकल एजेण्ट स्पीअर साहिबके रूबरू कुल सर्दार बुलाये गये, और महाराणाके साथ सर्दारोंका एक अह्दनामह हुआ, जिसके अनुसार अमलदरामद करनेके लिये उक्त साहिबने सर्दारोंको हिदायत की, और कहा, कि अगर इसमें किसी तरहका फ़र्क़ होगा, तो महाराणा साहिब तुमको सज़ा देंगे. सर्दार लोग भी उस वक्त ऊपरी दिलसे बड़ी नर्मीके साथ साहिबकी बातोंको मन्जूर करते रहे, लेकिन् इस बह्सका कुछ नतीजा न निकला, बल्कि महाराणा और सर्दारोंके दर्मियान दिन ब दिन ज़ियादह रंज बढ़ता गया.

गोगूंदापर ख़ालिसह जानेके सबब लालसिंहका पिता शत्रुशाल उदयपुरमें आया और

उसने रावत् पद्मसिंहकी मारिफ़त एक अर्ज़ी लिखकर महाराणाकी ख़िदमतमें पेश की, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

गोगूंदाके राज शत्रुशालकी अर्ज़ीकी नक्ल.

॥ श्रीरांमजी.

॥ स्वस्ती श्री श्री श्री श्री श्री श्री हजुर जाला चत्रसाल लीषावतां मुजरो अरज मालम वे, श्री जी हजुर मोटा है, अेकलींग अवतार हे, अप्रच ॥ अबार चरण लालसीघ हरामषोरीरी कसुरमे आया अर बात वंणा ऊपरे साबत वेगई, जंणी तांबे श्री दरबार गोगुदो पटा सुदी षालसेकर जपती मेली, सो कसुर तो वारो अणी मुजबई हो; पण सेवग अठे आयो अर श्री दरबार हजुर अरज कराई, सो श्री दरबार सारो गुनो सेवगने ममारक करे ठीकाणो गोगुदारो पटा सुदी पाछो मीया कीदो, सो अठा पछे मारा ठीकाणारी त्था मारा राजकी कोई बातकी लालसीघ भाजगड करवा पावे न्ही, मारा ठीकाणा म्ह ठेठसु कुवरपदारी सदामद जाअेगा, आजीवका हे, ज्या तो लालसीघने करे देणी, सो मुरजी वे, तो गोगुदे रो, त्था देस परदेस रहो, जठे षाया जासी, अणी सवाअे कोडी देणी न्ही, ओर सेवग बेठो जतरे, तो मालक ठीकाणारो सेवग हे, अर सेवगरा सोई बरस पुरा होयां केडे सेवगरी अरज हे सो मानजीने ठीकाणारो मालक करे तरवार बंदाअे देवाअे. अणी तांबे लालसीघ ऊजर करवा पावे न्ही, अतरी बातमे कसर पडे तो श्री दरबारको ठीकाणो हे, सो मुरजी आवे सो कराअे. दसगत रावल भोपारा राज साबरा कीयाथी लष्या, सं० १८९५ रा मगसर व्द ११ सोमे.

मारे तो श्री हुजुर राजी व्हे सो करसु, सेवगरे हुकम हुजूरको मारा माथा ऊपरे छे राज, या अरज राजीपणा सु मे लष दीदी है.

जोकि दश वर्ष पहिलेसे लालसिंहने गोगूंदापर क़बज़ह करके अपने बापको बे दस्ल़ करदिया था, इसलिये शत्रुशाल भी उसका ठिकानेसे ख़ारिज किया जाना और अपने पोते मानसिंहको वलीअ़ह्द बनाना दिलसे चाहता था. गोगूंदा वालों का बयान है, कि यह सब फ़साद रावत् दूलहसिंहने अपनी ज़ाती अ़दावतके सबब पैदा कराया था. लेकिन् थोड़े ही अ़रसह बाद महता रामसिंहने महाराणासे लालसिंहकी सफ़ाई करवादी, जिसका ज़िक्र आगे कियाजावेगा.

लालसिंहकी तरह महता शेरसिंह भी शार्दूलसिंहकी गद्दीनशीनी चाहने वाले फ़िर्क़ेहमेंसे था, जिसको महाराणाने मस्नद नशीन होनेके चन्द रोज़ बाद ही क़ैद करके प्रधानेका ख़िल्अ़त अपने मददगार महता रामसिंहको बख़्श दिया. अगर्चि शेरसिंह अपने बाप दादोंकी तरह राज्यका ख़ैरख़्वाह था; लेकिन् उसके रिश्तहदारोंने क़ैदकी हालतमें उसकी जान व माल और इ़ज़्ज़तका ख़तरह देखकर यह हाल पोलिटिकल एजेण्टके कानतक पहुंचा दिया, जिसपर उक्त पोलिटिकल एजेण्टने महाराणासे इस मुआ़मलेकी बाबत् दर्याफ़्त कराया, और उसी समयसे शेरसिंहपर सख़्ती कियाजाना कम होकर उक्त साहिबको उनके ख़तके जवाबमें एक ख़रीतह इस मज़्मूनका लिखागया, कि हमारे यहां शेरसिंहपर किसी तरहकी बेजा सख़्ती नहीं कीजाती, ख़बर देने वालेने झूठी शिकायत बयान की है. इसपर स्पीअर साहिबने महाराणा साहिबके नाम फिर एक ख़रीतह भेजा, जिसमें महता शेरसिंहपर सख़्ती न कीजानेकी ख़बर सुननेसे ख़ुशी ज़ाहिर करनेके अलावह नसीहत और ख़ैरख़्वाहीके तौर महाराणाको अपनी नेक नामी व रियासतकी बिह्तरीका ख़याल रखकर कार्रवाई करनेके लिये लिखा था.

इसके बाद महता शेरसिंहकी तरफ़से मुख़ालिफ़ लोगोंने महाराणाके दिलमें और भी ज़ियादह नाराज़गी पैदा की, कि वह आपको अंग्रेज़ी हिमायतसे डराना चाहता है. आख़िरकार जब महता शेरसिंहने इस हालतमें अपनी .इ़ज़्ज़त व जानका ज़ियादह ख़तरह देखा, और क़ैदमेंसे निकल भागनेके सिवा और कोई तद्बीर बचावकी उसे नज़र न आई, तब उसने रिहाईकी ग़रज़से महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ दश लाख रुपया दण्ड देना क़ुबूल करके रुक़्क़ा लिखदिया, जोकि उसकी हैसियतसे ज़ियादह था. लेकिन् इसपर भी पीछा न छूटा, दुश्मनोंने उसकी ख़लासीके बाद फिर महाराणाके कान भरे, और उसे दोबारह गिरिफ़्तार कराकर उसकी जान लेनेके उपायमें लगे, तब शेरसिंह मए अपने बेटोंके भागकर मारवाड़की तरफ़ चला-गया, और कुछ अ़रसह बाद महाराणाकी तरफ़से तसल्ली कीजानेपर वापस उदयपुरमें आया.

महता शेरसिंहका भाई मोतीराम (१) भी, जो पहिले जहाज़पुरका हाकिम और शेरसिंहके प्रधानेमें शरीक था, शेरसिंहके साथ रसोड़ेमें क़ैद किया गया, जिसकी निस्बत

---

(१) महता पृथ्वीराजके दो बेटे अगरचन्द और हंसराज थे, जिनमेंसे अगरचन्दका पुत्र सीताराम और उसका शेरसिंह हुआ; और हंसराजके बेटे दीपचन्दका पुत्र मोतीराम था.

कहाजाता है, कि वह कुछ दिनों बाद कर्णविलास महलके कई मंज़िल ऊंचे भरोखे से नीचेको गिरा दिया गया, और गिरते ही उसका दम निकल गया, जिसका बेटा फूलचन्द हालमें मौजूद है. मोतीराम बड़ा अक्लमन्द और कारगुज़ार शरूस था, इस-लिये शेरसिंहकी ताकृत घटानेके वास्ते उसकी जान लीगई.

इसी तरह पुरोहित श्यामनाथ भी महाराणा जवानसिंहपर जादू करानेकी तुहमतमें कैद किया गया, जो कुछ अरसह बाद ३००००) रुपया दण्ड देकर छूटा; कायस्थ किशन्नाथसे ७५०००) रुपये दण्डका रुक्का लिखाया गया, और महता गणेशदास से ६००००) रुपया दण्ड लिया गया. इसी समयसे कुल रियासती कामोंका मुरूतार महता रामसिंह और महाराणाका मुसाहिब आसींदका रावत् दूलहसिंह बना.

इन दिनों कुल सर्दार महाराणाके मुख़ालिफ़ बनरहे थे, अल्बत्तह शाहपुराका राजा-धिराज माधवसिंह महाराणाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम करता रहा, और महाराणाकी भी उस पर पूरी मिहर्बानी रही, जिसका सुबूत इस बातसे अच्छी तरह हो सक्ता है, कि गवर्मेएट अंग्रे-ज़ीने जो फूलियाकी चौरासी ज़ब्त करके शाहपुरामें सर्कारी पुलिस रखदी थी, और महाराणा जवानसिंहने लॉर्ड बैएिटङ्कसे सिफ़ारिश करके ज़ब्ती उठवाई, उसकी निस्बत तस्फ़ियह होजाने या ज़ब्ती उठजानेकी कोई तहरीरी सनद शाहपुरा वालोंको इस वक्तृतक नहीं मिली थी, महाराणाने उन्हें सर्कारी सनद दिलानेकी ग़रज़से एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके नाम एक ख़रीतह भेजा, जिसके जवाबी ख़रीतहकी नक्ल यहांपर दर्ज कीजाती है:-

एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके
ख़रीतहकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्तिश्री उदेपुर सुभसुथांने सर्वोपमा विराजमांन महाराजा धिराज महारांणाजी श्री सिरदारसिंघजी वहादुर अतान करनेल नथानेल अलिविस साहब वहादुर लिषा-वतुं सलांम मालुम हुवै, अठारा समाचार भला छै, आपका सदा भला चाहीजे; अपरंच परीता आपका साहापुराके मुकदमेमें आया मजमुन मालुम हुवा, और छ सात वरस

हुवे महारांणाश्री जुवांनसिंघजी वैकुंठवासी अजमेरके मुकांम नबाब गवरनर जनरल लाट साहब वहादुरसुं मिले, अर इस मुकदमेमें श्रीमहारांणाजी मोसुफने जो लाट साहब वहादुरकुं कहा, वो सब अेहवाल सदरमै मालुम है, ओर मैंने वी कुल अेहवाल इस्मुकदमे का सदरकुं लिषा है, सो इस मुकदमेमे नबाव लाट साहब वहादुर जो तजबीज करेगें, सो मुनास्ब ही करेगें, ओर इस आपके भेजे हुवे षरीतेका मजमुन मैं सदरकुं भेजुंगा, ओर आपकै मिजाजकी षुसीका स्माचार हमेसां लिषावोगे. तारीष १८ जनवरी सन १८३९ ईस्वी, मिती माघ सुदी ३ संवत १८९५.

अंग्रेज़ीमें एजेण्ट गवर्नर जेनरलके दस्तख़त.

अगर्चि इन महाराणाके मर्ज़ीदां मुसाहिबोंने पुराने अह्लकारों वग़ैरहपर दण्ड व जुर्मानह करके बहुतसा रुपया एकट्ठा किया, लेकिन् क़र्ज़ख़्वाहोंको एक पैसा भी नहीं दिया-गया, और न गवर्मेण्टके ख़िराजकी बाक़ियातका कुछ रुपया जमा कराया, जिसकी क़िस्तबन्दी महाराणा जवानसिंहके वक्तमें होचुकी थी. इसपर पोलिटिकल एजेण्टने बहुतसी ताकीदें लिखीं, परन्तु मुसाहिब लोगोंने उनपर कुछ भी ख़याल न किया, तब लाचार होकर पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिबने फिर एक ख़रीतह भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

पोलिटिकल एजेण्टके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरांमजी १.

७३ नंबर.

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथांन सरब ऊपमां ब्राज्मांन लायक महाराज धिराज महांराणाजी श्री सीरदारसींघजी जोग्ये, मेजर तांमस राबीनसन साहेब बहादुर ली ॥ सलांम मालुम करावसी, ईठारा स्मांचार भला छे, आपके सदा भले चाहेजे; अपरंच आगे षरीता १ तारीष २९ अपरेल सन १८३९ ईसवीके रोज सीरकारके टाके तथा ओर मुकदमां बावत आपके नांम भेजा उसका जवाब आजत्क आया नही, ओर टांकेका हीसाब बनके श्री सदरमें रवांने हुवा, सो सन १२४६ फसलीके आषर मुतावीक प्रथम जेठ बदी १ स्मत १८९५ ता। ३० अपरेल सन १८३९ ईसवी तक श्री सीरकारके टांका रु ७३२९०७) उदेपुरके राजपर बाकी नीकले, ओर साल गुजसते

मेहता सेरसीघ परधांनने श्री दरबार बेकुंठबासीके हुकम माफीक श्री सीरकारकी बाकी बाबत करारनामां लीषदीया, लाष रुपीया सालीयांना अदा करनेका जो आपने देषा होगा, कदाचत नही देषा हो, तो अब मुलाहजे करें और उस करार माफीक सीरकारके रुपीये तारीष ३१ दीस्मबर सन १८३८ ईसके आषर मुताबीक माह बदी १ सं० १८९५ तक रुपीया दो लाष भरना चाहेजे, सो बी आज तक नही पोहचा ओर अब १ महीने २६ रोज बाद पेहला कीसत तारीष १ जोलाई सन १८३८ का आया, सो बी भरना वाजीब हे, ओर चंद रोज पेसतर आपके परधांनने मेरवाडेकी आमदनी वासते लीषा था, जीसकी सीरकारसे मंनजुरी आई, आप कपतांन डीगसन साहेब बहादुर पाससे मंगालेवेगे; ओर ईन दीनामे आमदनी सीवाय दस ग्यारे लाष रुपीये राज्मे ओर आये हे, ईसवासते मनासीब हे, अब सीरकारकी कुल बाकी या कुछ कम ज्यादे भेजो, ओर जो ईतना नही होसके, तो च्यार लाष रुपीये पहली जोलाई सन १८३८ मु॥ असाड बदी ५ स्मत १८९५ की कीस्त तक भेजणेकी जरुर तजबीज कर ताकीदसे मेलावसी, ईस बातकी जेज करावसी नही; ओर जो रुपीया मजकुरके पोहचने ओर षरीताका जवाब आनेमे ढील होगी, तो हम श्री सद्रमे लीषेगे ओर श्री गवरनर जनरल साहेब बहादुरकु राजकी बेबदोबसती ओर करार तुटना जाहर होगा, जीसु बोहत वाजीब हे. आप ईस बातकुं षुब षयालकर चीत लगाय सीरकारका टांका भेजणे अर मुलकके बदोबसतका ध्यांन रषो, जीस्मे आपका नेकनांमी जाहर होवे, ज्यादे क्या लीषे, थोडे लीषेकु बसेस जांणसी, ओर मीजाज मुबारीककी षुसीके स्माचार हमेसे लीषावसी. स्मत १८९५ रा जेष्ट बदी ६, तारीष ४ मै सन १८३९ ईसवी मुकाम छावणी मीमच, रोज सनीवार.

अंग्रेज़ीमें पोलिटिकल एजेण्टके दस्तख़त.
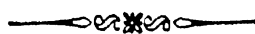
ख़िराजकी बाबत् तो साहिब एजेण्टकी ताकीदें आही रही थीं, कि इतनेमें महता रामसिंह व रावत् दूलहसिंहके दर्मियान नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा होने लगी. दूलहसिंह चाहता था, कि रियासतमें जो कोई काम हो मुझसे पूछे बग़ैर नहो; रामसिंहका मन्शा था, कि मेरे सिवा रियासती कामोंमें कोई दूसरा दख़्ल न दे; और महाराणाके दिलमें तीर्थयात्रा करनेकी जल्दी लगरही थी, क्योंकि जब वह बागोरकी गद्दीपर थे और महाराणा जवानसिंहके साथ तीर्थयात्राको गये, उसवक़ काशीमें गंगाके किनारेपर महाराणा और इनके दर्मियान यह अ़हद हुआ था, कि हम दोनोंमेंसे जो कोई पहिले गुज़र-जावे, उसका गया श्राद्ध पीछे रहनेवाला अपने हाथसे करे; इसलिये महाराणा अपना इक़ार पूरा करनेके वास्ते गया जानेकी तय्यारी करने लगे. लेकिन् इसी अ़रसहमें

जोधपुरके महाराजा मानसिंहपर अंग्रेज़ोंकी फ़ौजकशी हुई, और बीकानेर व रीवां आदि रियासतोंसे महाराणाके नाम इस मज़्मूनके ख़रीते आये, कि ज़िला गोड़वाड़ पीछा मेवाड़में शामिल कियेजानेका वक्त यही है; इसलिये बीकानेरके प्रधान हिन्दूमल्लकी मारिफ़त, जो छावनी नीमचमें था, इस विषयमें कोशिश कीगई, लेकिन् मेवाड़के सर्दारों व मुसाहिबों में परस्पर नाइत्तिफ़ाक़ी होनेके कारण उस कोशिशका कुछ भी नतीजा न निकला. बाज़ लोग गोड़वाड़का मेवाड़में आना न चाहकर कहने लगे, कि महाराणाकी ताक़तका बढ़ना मातहतोंकी बर्बादीका सामान है. पाठक लोग अच्छी तरह समझ सके हैं, कि जहां इस क़िस्मके ताबेदार हों, वहां मालिकका मत्लब सिद्ध होनेकी उम्मेद किसतरह कीजा-सक्ती है? इसके बाद रावत् दूलहसिंहकी मारिफ़त बीकानेरके महाराजा रत्नसिंहके कुंवर सर्दारसिंहकी शादी महाराणाकी राजकन्यासे, और महाराणाकी शादी बीकानेरकी राजकुमारीके साथ होना क़रार पाया, इस कारण गया श्राद्धके लिये जानेमें और भी देर हुई.

विक्रमी १८९६ पौष कृष्ण पक्ष [हि० १२५५ शव्वाल = ई० १८३९ डिसेम्बर] में श्रीनाथजीके दर्शनोंके लिये महाराणा नाथद्वारे गये थे, उधरसे बीकानेरके महाराजा रत्नसिंह भी अपने राजकुमार सर्दारसिंहकी शादी करनेको आये, और नाथद्वारेमें दोनों रईसोंकी मुलाक़ात हुई. उक्त दोनों महाराजा वहांसे रवानह होकर कांकड़ौलीमें पहुंचे, और द्वारिकाधीशके दर्शन करने बाद उदयपुरमें आये. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १८४० ता० १६ जैन्युअरी] को महाराणाकी राजकुमारी महताबकुंवरबाईका विवाह महाराजा बीकानेरके कुंवर सर्दारसिंहके साथ हुआ; और पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिब भी इस शादीके जल्सहमें शरीक हुए. विक्रमी पौष शुक्ल १४ [हि० ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १८ जैन्युअरी] के दिन महाराणाकी तरफ़से महाराजा रत्नसिंहको फ़ौज समेत दावत दीगई; इस शादीका उत्सव बड़ी खुशी और बाहमी मुहब्बतके साथ ख़त्म हुआ. विक्रमी माघ कृष्ण २ [हि० ता० १५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २० जैन्युअरी] को महाराजा रत्नसिंहके डेरेपर बरातको विदा करनेके लिये महाराणा पधारे, और वहां नज़्र, निछावर वग़ैरह मामूली रस्में अदा हुईं.

बरातको रुख़्सत करने बाद महाराणाने तीर्थयात्राकी तय्यारी की, और सर्दारोंको सफ़रके लिये तय्यार होनेका हुक्म दिया, लेकिन् बहुतसे उमराव व सर्दारोंने बहानह-बाज़ी करके साथ चलनेकी हामी न भरी, सिर्फ़ बेदलाका राव बख़्तसिंह और कोठारिया का रावत् जोधसिंह वग़ैरह चन्द सर्दार मुस्तइदीके साथ हमराह होलिये. विक्रमी माघ कृष्ण १३ [हि० ता० २६ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १ फ़ेब्रुअरी] को उदयपुरसे

कूच होकर महाराणाका पहिला मक़ाम चम्पा बाग़में हुआ, और विक्रमी माघ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ ज़िल्हिज = .ई० ता० १० फ़ेब्रुअरी] को वहांसे चलकर श्रीएकलिंगेश्वरकी पुरी, नाथद्वारा और कांकड़ोली होते हुए विक्रमी माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १३ ज़िल्हिज = .ई० ता० १७ फ़ेब्रुअरी] के दिन गढ़बोर पहुंचे. जोकि रावत् दूलहसिंहने महाराणाके साथ चलनेमें टालाटूली की, और महता रामसिंहसे उसकी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई थी, इस कारण रामसिंहने मौक़ा पाकर दूलहसिंहके मुख़ालिफ़ गोगूंदाके कुंवर लालसिंहसे दोस्ती पैदा करके उसे गढ़बोरमें महाराणाके पास बुलवालिया, और उसकी तरफ़से महाराणाकी नाराज़गी दूर करादी. इस बारेमें जो रुक़ा महाराणाने लालसिंहके नाम लिखा, उसकी नक़्ल यहांपर दर्ज कीजाती हैः-

लालसिंहके नामके ख़ास रुक़्केकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ती श्री लालसीघजी जोग अप्रच ।ः अबे थे रुको बाचता गडबोरका डेरा श्री हुजुर आअे हाजर वीजो, कोई बातको अंदेसो राषो मती, आज में थाने हात अपरा रुको लीष देवाणो, जणी अपराम्हे तफ़ावज पड़े न्हीं; ओर अबार थारे डोड़ ब्रसमें बषेडो रयो जीमें काम कीदो वे ज्या तीरासु वाजबी साऊकारी लेषो समज लीजो, लेषामें षाऐकी ब्रसे जीरी मालम कीजो, सो देवाड्यो जावेगा; अर आगे दस ब्रस था गोगुदारी मालकी कीदी जीमें थाका मुडा आगे काममें रया वे ने षाऐकीदार वे जी तीरासु थे लीजो, और थारो सावध्रमी वे जीने राषजो, ने थाहारो चाकर वना राहरी पुकार करेगा, तो सुणाऐगा नही, थे षुसी राषजो. थारो सावध्रमो हे जी मुजब बंदगी कीदा जाजो, और थारा तावारा राज अषर करदीया सो रद छे, सं० १८९६ वषे म्हा सुद १४ रवे.

ऊपर लिखे हुए रुक़्केके साथ रामसिंहने भी लालसिंहको महाराणाकी ख़िदमतमें जल्द हाज़िर होनेके लिये एक ख़ानगी ख़त लिखा था. इसी समयसे रावत् दूलहसिंहपर महाराणाकी नाराज़गी होजानेके कारण रामसिंहका इख़्तियार ज़ियादह बढ़ने लगा.

विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १३ [हि० ता० २६ ज़िल्हिज = .ई० ता० २ मार्च] को महाराणा पुष्कर मक़ामपर पहुंचे, और वहां धर्मशास्त्रके मुवाफ़िक़ तीर्थ गुरु तथा ब्राह्मण

आदिको दान दक्षिणा देकर विधि पूर्वक स्नान किया. यहांसे चलकर विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० १२५६ ता० १ मुहर्रम = .ई० ता० ६ मार्च] को ग्राम चावंड्येमें मकाम हुआ, जहां विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ४ [हि० ता० २ मुहर्रम = .ई० ता० ७ मार्च] को सदलैंण्ड साहिब आये, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उनसे मुलाक़ात हुई. इसी मक़ामपर विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि० ता० ८ मुहर्रम = .ई० ता० १३ मार्च] को महाराणा भीमसिंहके कुंवर अमरसिंहकी बेटी कीकीबाई महाराणासे मिलनेके लिये कृष्णगढ़से आई, जो वहांके महाराजा मुहकमसिंहके साथ व्याही गई थीं. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १२ [हि० ता० १० मुहर्रम = .ई० ता० १५ मार्च] को हरमाड़ेमें मक़ाम हुआ; इस मक़ामपर कृष्णगढ़के महाराजा मुहकमसिंह भी महाराणाकी मुलाक़ातको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई वग़ैरह रस्में अदा हुईं. यहांसे कूच होकर विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ मुहर्रम = .ई० ता० २२ मार्च] को चौमूमें क़ियाम हुआ; ठाकुर लक्ष्मणसिंह नाथावतने बड़े आदर सत्कारके साथ पेश्वाई करके महाराणा को कुल फ़ौज सहित दावत दी, और घोड़ा व ज़ेवर वग़ैरह सामान नज़ किया. दूसरे रोज़ सामोदमें पहुंचे, जहां रावल शिवसिंहने भी चौमू वालोंकी तरह सब दस्तूर अदा किये. ये दोनों सर्दार जयपुरके मुसाहिब और बागोरके रिश्तहदार थे.

इन दिनों जयपुरके महाराजा रामसिंह कम उम्र होनेके कारण ज़नानहसे बाहिर नहीं निकलते थे, इसलिये महाराणाने जयपुर जाना मुल्तवी रक्खा; लेकिन् रियासतकी तरफ़से .इलाक़ह भरमें, जहां जहां होकर वह गुज़रे, बड़ी मुहब्बतके साथ उनकी ख़ातिर तवाज़ो कीगई. विक्रमी चैत्र कृष्ण ९ [हि० ता० २२ मुहर्रम = .ई० ता० २७ मार्च] को सैंथल मक़ामपर महाराजा जयपुरकी तरफ़से लवाणका राजा हरिदेवराम महाराणाके लिये गद्दीनशीनीके टीकेका सामान लेकर आया, जो दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश हुआ; और विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि० ता० २५ मुहर्रम = .ई० ता० ३० मार्च] को क़स्बह राजगढ़में अलवरके रावराजा विनयसिंहके मोतमद लोग हाज़िर हुए, यहां कुल फ़ौजको अलवर रावराजाकी तरफ़से दावत दीगई. विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ मुहर्रम = .ई० ता० २ एप्रिल] को क़स्बह नगर .इलाक़ह भरतपुरमें मक़ाम हुआ, जहां भरतपुरके राजाकी तरफ़से भी मोतमद लोग आये. इन दोनों रियासतों (अलवर व भरतपुर) की तरफ़से बड़ी मुहब्बतका बर्ताव ज़ाहिर किया गया, लेकिन् मुलाक़ातकी दस्तूरी रस्मोंमें कुछ एतिराज़ पेश आनेके सबब रईसोंमें बाहम मुलाक़ात न होने पाई.

विक्रमी १८९७ चैत्र शुक्ल २ [हि० ता० ३० मुहर्रम = .ई० ता० ४ एप्रिल] को महाराणा गिरिराज मक़ामपर ठहरकर विक्रमी चैत्र शुक्ल ४ [हि० ता० २ सफ़र

=.ई० ता० ६ एप्रिल] को वृन्दावन पहुंचे, और वहांसे रवानह होकर विक्रमी चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ४ सफ़र = .ई० ता० ८ एप्रिल] को मथुरामें दाख़िल हुए; इस मक़ामपर जयसलमेरके रावल गजसिंह और बाई रूपकुंवर, जो तीर्थ यात्राको आये थे, मिले. महाराणाने उक्त रावलको फ़ौज समेत दावत दी, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १० [हि० ता० ७ सफ़र =.ई० ता० ११ एप्रिल] को बलदेवमें मक़ाम हुआ. यहांसे कूच होकर रास्तहमें कई जगह क़ियाम करने बाद विक्रमी वैशाख शुक्ल ६ [हि० ता० ४ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० ७ मई] को प्रयागमें पहुंचे; यहां भी विधि पूर्वक यात्रा हुई, दान पुण्य आदिके सिवा तीर्थ गुरुको हाथी, घोड़ा, वस्त्र, शस्त्र, और ज़ेवर वग़ैरह कई चीज़ें दक्षिणामें दीगई. विक्रमी वैशाख शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० १६ मई] को काशीमें पहुंचे, जहां साहिब कमिश्नरने पेश्वाई वग़ैरह मामूली रस्मोंके साथ महाराणा का आतिथ्य किया. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० १९ मई] को काशीसे रवानह होकर विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रबीउ़लअव्वल = .ई० ता० ३१ मई] के दिन महाराणाका लश्कर गया मक़ामपर पहुंचा, वहां भी ज़िलेके साहिब कमिश्नर वग़ैरह प्रतिष्ठित लोग पेश्वाईको आये, तीन दिनतक मक़ाम रहा, महाराणाने अपने हाथसे स्वर्गवासी महाराणा जवानसिंहका गया श्राद्ध किया, और तीर्थ गुरु आसारामको हाथी, घोड़ा, नक़्द व ज़ेवर वग़ैरह देकर खुश किया. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ४ [हि० ता० १८ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० १९ जून] को वहांसे रवानगी हुई, और विक्रमी श्रावण कृष्ण १ [हि० ता० १५ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० १५ जुलाई] के दिन वापस काशीमें दाख़िल हुए; यहांकी यात्रा करके विक्रमी श्रावण कृष्ण ३ [हि० ता० १७ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० १७ जुलाई] को प्रयागकी तरफ़ कूच हुआ, और विक्रमी श्रावण कृष्ण ७ [हि० ता० २१ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० २१ जुलाई] को वहां पहुंचे. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २५ ऑगस्ट] को फिर बलदेवमें पधारे, और वहांसे मथुरा तथा वृन्दावनकी यात्रा करते हुए विक्रमी आश्विन शुक्ल ८ [हि० ता० ७ शअ़्बान = .ई० ता० ४ ऑक्टोबर] को बीकानेरमें दाख़िल हुए, जहां आश्विन शुक्ल ९ [हि० ता० ८ शअ़्बान = .ई० ता० ५ ऑक्टोबर] को महाराजा रत्नसिंहकी कन्याका विवाह महाराणाके साथ हुआ. महाराजा रत्नसिंहने बड़ी मुहब्बतके साथ लश्कर सहित महाराणाकी मिहमानदारी की. बागौरके महाराज शेरसिंहके पुत्र शार्दूलसिंह और शिवरतीके महाराज दलसिंहकी शादी भी महाराजा रत्नसिंहके नज़्दीकी रिश्तहदारों (१) की लड़कियोंके साथ इसी समय हुई.

---

(१) शार्दूलसिंहकी शादी शक्तिसिंहकी बेटी नन्दकुंवरबाईके साथ, और दलसिंहका विवाह अक्षयसिंहकी बेटी अजीतकुंवरबाईके साथ हुआ.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ता० १७ शअ्बान = .ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को बीकानेरसे महाराणाके लश्करका कूच हुआ, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ रमज़ान = .ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को अजमेरमें प्रवेश हुआ. इस मक़ामपर राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सदर्लैण्ड साहिबसे मुलाक़ात हुई. उक्त साहिबने मुलाक़ातके वक़् बेदलाके राव बख़्तसिंहका बहुत कुछ आदर सन्मान और तारीफ़ की, और कहा, कि महाराणा साहिबके साथ इस सफ़रकी ख़िद्मतोंमें हाज़िर रहनेके सबब गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी आपसे बहुत खुश है. इसवक़् रावत् दूलहसिंह भी महाराणाकी पेश्वाईके लिये यहां आगया था, सदर्लैण्ड साहिबने उसे बहुत कुछ उलाहना दिया, और महाराणाके साथ सफ़रमें हाज़िर न रहनेके सबब सख़्त नाराज़गी ज़ाहिर की. इसी तरहकी बहुतसी बातें होने बाद महाराणाको तीर्थयात्राका धन्यवाद देकर उक्त एजेण्ट गवर्नर जेनरल साहिब रुख़्सत हुए. उसी दिनसे बेदलाके राव बख़्तसिंहका अंग्रेज़ी अफ़्सरों के साथ ज़ियादह मेल मिलाप शुरू हुआ, और लाइक़ सर्दार होनेके कारण उसने इस विषयमें दिन ब दिन और भी अधिक तरक़ी की. यहांसे कूच होकर भिणाय व बागोर होते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रमज़ान = .ई० ता० १६ नोवेम्बर] को महाराणा उदयपुर पहुंचे, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रमज़ान = .ई० ता० १९ नोवेम्बर] को राज्य महलोंमें दाख़िल हुए.

विक्रमी १८९८ वैशाख कृष्ण ३ [हि० १२५७ ता० १६ सफ़र = .ई० १८४१ ता० ९ एप्रिल] के दिन महाराणा अपनी ससुराल (गोगूंदा) को पधारे, जहां गणगौरके उत्सव पर जानेका इरादह था, लेकिन् उन दिनों राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सदर्लैण्ड साहिबके उदयपुरमें आजानेके कारण वह विचार मुल्तवी रहकर धींगा गणगौर (१) के दिन वहां मिह्मान हुए, और तीन दिनतक ठहरे. इस जगह महाराणाने आढ़ा स्वरूपसिंह, रोहड़िया बारहट लक्ष्मणदान, आढ़ा चिमनसिंह, तथा महड़ू प्रभूदान वग़ैरह चारणोंको हाथी व सरोपाव आदि इन्ऋाम दिया, और राज शत्रुशालकी तरफ़से कुल फ़ौज व हम्राहियोंको दावत दीजानेके अलावह, चारणों व पास्वानोंको सरोपाव दियेगये. तीन दिनतक क़ियाम करनेके बाद महाराणा वापस उदयपुर आये. फिर चारभुजाकी यात्राके लिये विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष [हि० रबीउ़स्सानी = .ई० मई] में उदयपुरसे रवानह

---

(१) राजपूतानहमें यह त्योहार चैत्र शुक्ल ३ को बड़ी धूम धामसे होता है, लेकिन महाराणा राजसिंह अव्वलने किसी ख़ानगी बर्तावको बढ़ानेके लिये वैशाख कृष्ण ३ के दिन भी यह त्योहार स्थापन किया, जो प्राचीन समयसे प्रचलित न होने और धींगाई (मुठमर्दी) से जारी करनेके कारण "धींगा गणगौर" नामसे प्रसिद्ध हुआ.

होकर देलवाड़ा व कोठारियामें मिह्मान रहते हुए चारभुजा, कांकड़ोली और नाथद्वाराके दर्शन करके विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० ७ जून] को वापस उदयपुरमें दाख़िल हुए.

इस वक्त महाराणाको अपने कोई ख़ास वलीअ़ह्द न होनेके कारण किसी रिश्तह्दारको गोद लेनेका विचार हुआ, जिसकी बाबत् सदर्लैण्ड साहिब और रॉबिन्सन साहिबसे भी पेश्तर कुछ बात चीत करली गई थी. उन्होंने बागौरपर हुकूमत करनेके ज़मानहमें अपने छोटे भाई शेरसिंहके साथ नाइत्तिफ़ाक़ी रहनेके सबब उसका हक़ ख़ारिज करके तीसरे भाई स्वरूपसिंहको दत्तक (१) मान लिया था, और इस वक्त भी उन्हींको युवराज बनाना चाहा. लेकिन् शेरसिंहका हक़ ख़ारिज किये जानेमें महाराणाने गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे इस मुआमलहकी मंजूरी हासिल करना मुनासिब समझा, और साहिब लोगोंने भी यही सलाह दी. तब विक्रमी द्वितीय आश्विन शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रमज़ान = .ई० ता० २३ ऑक्टोबर] के दिन बागौरके महाराज शिवदानसिंहके तीसरे पुत्र स्वरूपसिंहको दत्तक लेकर वलीअ़ह्द बनाया, और उनसे इक़ारनामहके तौर एक अर्ज़ी लिखाई गई, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती हैः-

युवराज स्वरूपसिंहकी अर्ज़ीकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीध श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री अंदाताजी हजुर सरुपसीघकी अरज मालुम होवे. श्री हजुर बडा हे, प्रमेसुर हे, छोरु ओपमा अरज करे जतरी ही थोडी,

(१) इन महाराणाने बागौरकी हुकूमतके वक्त स्वरूपसिंहको दत्तक लेनेका इक़ारनामह लिखदिया था, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती हैः-

॥ श्रीरामजी.

॥ श्रीनापजी. ॥ श्रीबाणनाथजी.

॥ रूको ॥ १ ॥ भाई सरूपसिंहजी सु म्हारो मुजरो बंचे, अप्रंच थाने मे बेटा करे राष्या, सो म्हारा कआ माफक चाल्या जाजो, म्हारो हुकम माथा पर राष्या जाणो, ने मन राजी राषणो, ने मारे बेटो होअेजावे, तो पछे थाने हजार रुप्यारो ऊपजतारो गाम मे काढ देस्यां, वोर पछे म्हारा पटासु थारे सली जतरो दावो न्ही, ने श्री दरबाररी कानीरी कोडी लागे, तो पटा साई थारेही पाती आवे सो देकाडवो करजो; ओ मे मारी मनरी कुसीसु लषदीओ छे. वोर भाई सेरसीघजी तथा वारा बेटा, कोई थासु दाईओ करे न्ही, म्हारी राजी कुसीसु मे थाने राष्या छे, संवत १८९१ असाढ बीद १२.

अप्रंचे मने श्री हजुर कुवरपदो बगस्यौ अर जोल्या राख्यौ, सो मु हजुरका हुकम सवाभ्मे चालु न्ही, हजुर हुकम करे ज्या करणी, ओर बायांका ब्याव करदेणा, ओर राएयाहे ज्यो आजके दीन श्री हजुर बगसे हे जी मुजब कसर पाडु न्ही, ओर श्री हजुर क्रोड़ दीवाली राज करो. कदाचीत श्री हजुरके कंवरजी होजावे तो गादीसु मारे दावो न्ही अर मने छोटा कवरकी रा बरते अर रुपीया २५०००) पचीस हजारको पटो बगसे, सो राजी होअने वुरो लेवु, ओर कोई सटपटमे कणीके कीआ लागु नही; ओर मारी तथा मारी ओलादकी धणीकी नजरमे गेर चाल दीषे, तो धणी तार काडे, अने कसुर साबत दीषे, तो काडदेवे जीको वुजर कोही करवा पावे न्ही. ओर हजुरका हुकममे कवरपदाकी टसक लाअेन हजुरको हुकम लोपु न्ही, लप्यामे कसर पाडु, तो हजुर बचे रे मो बचे श्री अेकलीगजी हे, जठा सवाअे जठा सवाअे कसर पाडु तो अंगरेज सरकारसु मने दुर करदेवे हजुरका लषबासु, ओर गया सराद ताबे होकम फरमायो सो श्री जी वु दीन बादलामे राषे, कदाचत भगवत रजा हे, तो डीला तथा प्रोतजी दुवारे आ चाकरी नही करु, तो मने ईसटदेव पुगे, संबत १८९८ रा दुती आसोज सुदी ९ नोमी.

इसके बाद एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह व पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़के नाम ख़रीते लिखे गये, जिनमेंसे पहिलेंकी नक़्ल यहां लिखी जाती हैः-

नक़्ल मुरासलह ख़रीतह बनाम कर्नेल जॉन सदर्लैण्ड
साहिब, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह.

अप्र साहेब अठे आया हा जद कोठीके मुकाम साहेब ही हा, अर करनेल तामस राबीसन साहेब ही हा, सो दोही साहेब बेठा म्हे कय्यो, के प्रभु म्हारेही ओलाद करदेगा, ने कदाचीत म्ही वे, तो म्हारो मनोरथ सरूपसिघजीने पाछाथी अठे राज ऊप्र राषवारो हे; जीप्र साहेब कय्यो, सो आप बीराज्या थका, तो आप मालक हे, जीसकुही रषलेवे, जोही हो-सकता हे, अर पीछेसे तो अेसा होणा मुसकल हे, सो म्हे साहेबका केवाप्र चीत देर अबार दसराबारो मोरथ आछो हो, सो म्हे चीरणजीव सरुपसिघजीने षोल्या राख्या हे, सो

साहेब जस्या दोसत म्हाके ओर कुण हे, जीसु ईकी कुसी मानेगा; ओर सरुपसिघजी म्हाने अरज लीष दीदी हे, जीकी नकल साहेब नषे भेजी हे, सो बाच वाकब वोगा, ओर साहेबकी कुसीकी षबर सासता लषवो करोगा; संवत १८९८ र्वषे दुती आसोज सुद १० भोमे दुवे म्हेता बगतावरजी रे.

इसी मज़्मूनका एक ख़रीतह मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल टॉमस रॉबिन्सन साहिबके नाम लिखा गया, जो तवालतके ख़यालसे यहां दर्ज नहीं कियागया.

इन्हीं दिनोंमें इस मुआमलहकी बाबत् महाराज शेरसिंहकी एक अर्ज़ी महाराणाकी ख़िदमतमें पेश हुई, जिसका मज़्मून नीचे लिखे हुए मुसव्वदहके मुवाफ़िक़ था:-

महाराज शेरसिंहकी अर्ज़ीके मुसव्वदहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

अप्रंच ॥ श्री हजुर भाई सरुपसीघजीने षोल्या लीदा, सो या गणी आछी बीचारवामे आई, अणी बात सु तो मारोई मन राजी हुवो, मु तो श्री हजुरको छोरु जु श्री हजुरकी बदगीमे हु जुई श्री कुवरजी सरुपसीघजी री बदगीमे जाणेगा; अणीमे तफावज जाणु, तो मने श्री ऐकलीगजी री आण, वा श्री हजुरकी आण. या अरजमे मारा मन सु राजी वे लषी हे.

गोदनशीनीका मुआमलह तो शेरसिंहकी अर्ज़ी पेश होने और गवर्नर जेनरलकी मन्ज़ूरी आजानेसे तै होगया, लेकिन् सर्दारोंका बखेड़ा दिन ब दिन बढ़ने लगा, और चाकरीके मुआमलहमें भी छेड़छाड़ शुरू हुई; परन्तु महाराणा अपनी तन्दुरुस्ती बिगड़जानेके कारण इस तरफ़ तवज्जुह न कर सके, क्योंकि उनके बदनमें जलनकी बीमारी बड़े ज़ोरके साथ बढ़ने लगी थी, और वह उसके रोकनेकी फ़िक्रमें थे. यह बीमारी पहिले पैरोंके तलवोंसे शुरू होकर सख़्त जलनके साथ बढ़ते बढ़ते कुल शरीरमें फैलगई; देशी वैद्योंने इसके इलाजमें बहुत कुछ कोशिश की, लेकिन् किसीसे कुछ फ़ायदह न हुआ, तब महाराणाने अपनी जानका ख़तरह समझकर कुल रियासती इन्तिज़ाम युवराज स्वरूपसिंह और महता रामसिंहके सुपुर्द करने बाद मज़्हबी अक़ीदेके मुवाफ़िक़ वृन्दावनको चला जाना चाहा; लेकिन् महता रामसिंहने अर्ज़ किया, कि एक दफ़ा अंग्रेज़ी

डॉक्टरके .इलाजको भी आज़मालेना वाजिब है. महाराणाको उसका कहना मन्ज़ूर हुआ, और पोलिटिकल एजेएट रॉबिन्सन साहिबकी मारिफ़त एक यूरोपिअन डॉक्टर बुलाया गया. उक्त डॉक्टरने उदयपुरमें आकर अपना .इलाज शुरू किया, और वह महाराणाको तसल्ली दिलानेकी ग़रज़से बीमारीमें सिहत होना बयान करता रहा, लेकिन् अस्लमें कुछ भी फ़र्क़ न दिखाई दिया. आख़िरकार महाराणाने वृन्दावन जानेका पुरुतह इरादह करके पोलिटिकल एजेएटको बुलाया, जिसके जवाबमें उक्त साहिबने एक ख़रीतह लिखा, उसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:-

पोलिटिकल एजेएट कर्नेल टॉमस रॉबिन्सन
साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥श्रीरामजी.

॥ १३६ ॥ नंबर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभ सुथाने सरब उपमां व्राज्मांन लायक महाराज धाज महारांणाजी श्री सीरदारसींघजी अेतांन करनेल तांमीस राबीनसन साहब बहादुर ली॥ सलाम मालुम करावसी. ईठारा स्मांचार भला हे, आपके सदा भला चाहेजे, अप्रंच परीते २ आपके बेसाष सुदी ९ तथा १५ का लीषा आया, स्मांचार बांचा, तथा ओर अेहवाल मेहताजी श्री रांमसींघजीके कहणेसे वाकीफ हुवे, राजे श्री डाकतर साहब बहादुर के लीषेसे मालुम हुवा दीन बदीन आपकी तबीयतकु आरांम होता हे, जीकी हमकुं बहोत षुसी हुई. आपके लीषे माफीक हमने श्री डाकत्र साहेबकुं लीषदीया हे, साहेब आपकी मरजी माफीक सीष लेंगे, और हमारे बुलाणे वासते बहोत लीषा, तथा महताजीकी जुबांनी दरसाया, सो हम तो अपणेही ईरादेसे चहाते थे आपसे मीलाप हो, दोनु त्रफकी बातां होवेसे मन राजी होवे, पण ईन दीनांमें सीरकार कांम ज्यादेके सबब फुरसत नही, जीसु अभी हमारा आणा हो सषता नही, ओर आपके लीषे प्रमाणे साहेब १ साथ जावाने मुकरर हुवे, सो तारीष १० जुन सन १८४२ ईसवी जेठ सुदी २ सं० १८९८ के रोज तक उदेपुर, या देरा होगा जहां पोहचेगे; ओर श्री दरबारके सरीरमे आरांम हुवा हे, तो जलदी जांणा चाहीये, ओर राजके बदोबसत ओर टांके बाबत तथा महताजीकी सीफारस लीषी, सो ठीक हे, आप यात्र ज्मेसे श्री व्रदाबनजी पधारें, महाराजकुवरजी श्री सरुपसीघजी तथा महताजी मीलकर राजका कांम करसी जीस्मे

हम मनासीब देपेगे जो मदद ओर सलाह देगे, आप अंदेसा रपावसी नही अर हमारी मुलाकात नही होवासें कीसी बातका हरज जांणसी नही, कारण में आपके राजके कांमसे अछे वाकीफ हुं, ओर आगे सारु महताजीकुं लीपो वांकी मारफत जुबाब पोहचेगा, ओर मीजाज मुबारकी षुसीके स्मांचार हमेसे लीषावसी स्मत १८९८ रा जेठ बदी ६ तारीष ३० मै सं० १८४२ ईसवी.

(अंग्रेज़ीमें)

दस्तख़त- टॉमस रॉबिन्सन.

बीमारीमें आरामकी कोई सूरत न दिखाईदेनेपर महाराणाने विक्रमी १८९९ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १२५८ ता० २३ रबीउ़स्सानी = ई० १८४२ ता० ३ जून] के दिन डॉक्टरको इन्आ़म इक्राम देकर रुख़्सत करनेके बाद विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० ता० ३० रबीउ़स्सानी = ई० ता० १० जून] को वृन्दावनकी यात्राके लिये कूच किया, और राजधानीसे चलकर पहिला मक़ाम आंबेरीमें हुआ; वहांसे देलवाड़ा, नेगड़्या, राबचा, नाथद्वारा, बडारड़ा तथा दोऊंदा नामक स्थानोंमें होते हुए विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १२ [हि० ता० १० जमादियुलअव्वल = ई० ता० १९ जून] को राजनगर पहुंचे, और विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० २३ जून] को मोरचणामें मक़ाम हुआ; परन्तु वहां बीमारी अधिक बढ़जानेके कारण कुल हम्राही लोग एक मत होकर विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ४ [हि० ता० १७ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० २६ जून] को उन्हें वापस राजनगरमें लेआये. इस सफ़रमें साथ रहनेके लिये गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से कप्तान क्रॉस्मिन साहिब भी मुक़र्रर होकर आगये थे.

राजनगरमें पहुंचकर महता रामसिंह, रावत् दूलहसिंह, और पुरोहित श्यामनाथ वग़ैरह मुसाहिबोंको बड़ी घबराहट और विचार हुआ, कि अब क्या कियाजावे ? क्योंकि बीमारीके आख़री दरजहपर पहुंचजानेके सबब महाराणा बेहोशीकी हालतमें थे, और यह नौबत पहुंचगई थी, कि मथुरा जाना छोड़कर वापस उदयपुर पहुंचना भी उनके लिये मुश्किल होगया. तब उक्त हम्राही सर्दारोंने देशी वैद्य साधु रामरत्न दादूपंथीको बुलाकर महाराणाकी नब्ज़ दिखलाई, उसने नब्ज़ और शरीरके चिन्ह देखकर उन्हें वापस उदयपुरमें लौटा लानेकी सलाह दी, और कुल मुसाहिबोंने भी यही मुनासिब समझा; लेकिन् बाज़ लोगोंने उनके मिज़ाजसे डरकर कहा, कि यदि अच्छे होजायेंगे, तो मथुरा लेजानेके एवज़ उदयपुर लौटा लानेपर सख़्त नाराज़ होकर सबकी ख़बर लेंगे. आख़रकार कुल लोग एक मत होकर महाराणाको उदयपुरकी तरफ़ ले निकले, जब उन्हें रास्तहमें होश आया, तो फ़र्माया, कि "मुझे कहां लिये जाते हो ?"

इसपर सबने वृन्दावनको लेजाना बयान किया. यह सुनकर " बहुत अच्छा " कहते ही फिर बेहोश होगये, और इसी हालतमें राजधानी उदयपुरसे बाहिर रेज़िडेन्सीकी कोठी में लाये गये, जहां वलीअ़हद भी आ पहुंचे. इन महाराणाके गुस्सहसे सब लोग बहुत डरते थे, लेकिन् जुर्अत करके उसी दिन, याने विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ६ [हि० ता० ४ जमादियुस्सानी = ई० ता० १३ जुलाई] को उन्हें राज्य महलोंमें लेआये, जहां पिछली रातको उनका इन्तिक़ाल होगया. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १४ जुलाई] को उनकी दग्धक्रिया हुई, और लच्छूबाई नामक एक ख़वास उनके साथ सती हुई.

इन महाराणाका जन्म विक्रमी १८५५ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० १२१३ ता० १६ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १७९८ ता० २९ ऑगस्ट] को हुआ था; यह बहुत ख़ूबसूरत थे, इनका क़द मझला, गौर तेजस्वी वर्ण, और चिहरेपर बहुत कम मालूम चेचकके दाग़ थे. यह दिलके बहुत साफ़ और ज़बानके पूरे पाबन्द थे, लेकिन् मिज़ाज किसी क़द्र तेज़ था, जिसका कारण शराबकी ज़ियादती थी.

छप्पय.

श्रीमत रान जवान, जबहि सुरलोक सिधारे ॥
जिनके चामर छत्र, रान सादल सिर धारे ॥
स्वामी सुभट विवाद, बढ़त तब अहद बनाये ॥
महता शेर प्रधान, दूर कर राम मनाये ॥
निज सुता व्याह बिक्रमनयर, तीरथ न्हान प्रयानकर॥
राना विवाह बीकानयर, कर प्रवेश मेवार धर ॥ १ ॥
राना दत्तक लैन, मत्त सिर्दारसिंह किय ॥
बंधु त्रतिय बागौर, लेख सारूपसिंह लिय ॥
जबहि किये जुवराज, चक्र आमय तन चल्लिय ॥
स्वर्ग गौन सिर्दार, होन सत्ती इक हल्लिय ॥
सादल सुखंड आशय सजन, मय शासन फतमालके ॥
कविराज श्याम पूरन कियउ, सम मुत्तिय बिच लालके॥ २ ॥

महाराणा सर्दारसिंह,
सत्रहवां प्रकरण समाप्त.
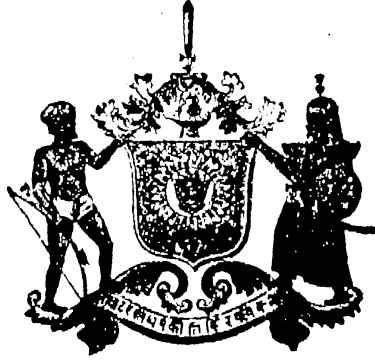
अठारहवां प्रकरण.

महाराणा स्वरूपसिंह.

विक्रमी १८९९ आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० १२५८ ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० १८४२ ता० १५ जुलाई] की शामको यह महाराणा २८ वर्ष ६ महीना और १० दिनकी उम्रमें गद्दीपर बैठे, विक्रमी श्रावण शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० १८ ऑगस्ट] को इनके राज्याभिषेकोत्सवकी सवारी व दर्बार हुआ, जिसमें राज्यके कुल सर्दार, पास्वान तथा अह्लकारों वगैरहने हाज़िर होकर नज़्रें गुज़रानीं, और चारणोंने उन्हें महाराणा सर्दारसिंहका जानशीन होनेकी आशिस दी. इसके बाद हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल लॉर्ड एलेन्बराका एक फ़ार्सी ख़रीतह (१) मातमपुर्सी और गद्दी नशीनी की बाबत् महाराणाके नाम आया, जिसका तर्जमह नीचे दर्ज किया जाता है:-

लॉर्ड एलेन्बराके फ़ार्सी ख़रीतहका तर्जमह.

महाराणा साहिब आलीशान मुश्फ़िक़ मिह्रबान जगह निकलने मिह्रबानी व इह्सानके सलामत-

पीछे पहुंचाने दस्तूरों ख्वाहिश बड़ी मुलाक़ात बिल्कुल खुशीके, जो क़लम दो-

---

(۱) نقل خریطۂ لارڈ ایلنبرہ گورنرجنرل ہند بنام مہارانا سروپ سنگہ *

مہاراناصاحب عالیشان مشفق مہربان مصدر لطف و احسان سلامت،
بعد از تبلیغ مراسم آرزوے گرامي مواصلت سرا سر ملاطفت کہ گنجایش گیرتحریر خامہ و زبان

ज़बानकी लिखावट और ख़त कुशादह बयानकी तक़रीरकी गुंजाइशसे बाहिर है, रौशन दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है. मिहर्बानीका ख़त मिहर्बानीकी मुहर किया हुआ, जिसमें महाराणा सर्दारसिंहके इस दुन्या नापायदारसे इन्तिक़ाल करजानेका भयानक वाक़िअ़ह और दर्दमन्द मुसीबत, और इस जिगर जलाने वाले हादसहसे निहायत रंज और ग़मका हासिल होना, और उस आलीशानका अपने दाग़दार सीनेपर सब्रका पहाड़ रखकर अच्छे मुहूर्तमें महाराणा वैकुण्ठवासीकी जगह रियासत मेवाड़की गद्दीपर विराजना वग़ैरह मरातिब दोस्ती, एक दिली और मिहर्बानीके दर्जे थे, मुहब्बतके साथ वुसूल होकर मुख़्लिसोंके दिलोंमें ग़मका बढ़ानेवाला और दोस्तोंके दिलोंको ख़ुशी बख़्शनेवाला हुआ. अगर्चि उसका पहिला मज़्मून बड़े रंजका सबब था, मगर पिछले मत्लबके मुलाहज़हसे बहुत ख़ुशी पैदा हुई. जोकि ऐसे ज़रूरी हादसों और बे इख़्तियारी वारिदातोंमें सब्रके सिवा और कोई इलाज नहीं है, इसलिये अपने नाज़ुक दिलको रंज और ग़ममें न फंसाकर बड़ी होश्यारी और मुस्तक़िल मिज़ाजीसे रअ़य्यतके पालने और इन्साफ़ करने और रियासतके इन्तिज़ाम व बन्दोबस्तके काममें मश्ग़ूल रहें, कि अस्लमें यही बात परमेश्वरकी बख़्शिशोंका शुक्रियह अदा करनेकी है; और दोस्तदारको बड़ी ख़्वाहिश इस बातकी है, कि परमेश्वर उस आलीशानको ज़मानह दराज़तक मुल्क मेवाड़की रिआ़याके सिरपर हमेशह क़ाइम रक्खे, ज़ियादह क्या लिखे. (अंग्रेज़ीमें)

दस्तख़त- एलेन्बरा.

و تقریرپذیر نامهٔ وسیع البیان نیست، مشهود ضمیر منیر گردانیده مے آید * مهربانی نامه شفقت ختامه متضمن واقعهٔ هائله و سانحهٔ مولمه ارتحال مهارانا سردارسنگه ازینعالم ناپایدار و دستداد کمال اندوه و تکدر ازین حادثهٔ آتش بجگر، و آنکه آنعالیشان کوه صبروقرار برسینهٔ داغدار خود نهاده در ساعت سعید و زمان حمید مسند ریاست ملک میوازرا بجاے مهارانا متوفی زیب و زینت بخشیدند، با دیگر مراتب الفت و یکجهتی و مودت و یکرنگی بوصول مهبت شمول خود تکدرافزاے قلوب مخلصان و مسرت پیراے خاطر دوستان گردید * اگرچه مضامین مصدرهٔ آن باعث حسرت و رنج فراوان بوده مگر بملاحظهٔ مطالب موخره فرحت و مسرت نمایان دستداد * ازانجاکه در همچو حوادث ضروریه و واقعات لابدیه چارهٔ کار بجز از صبرو شکیبائي نیست، لازم که خاطر نازک خود را پابند حزن و ملال نگردانیده بکمال هوشیاري و استقلال مصروف برمایا پروري و معدلت گستري و انتظام ریاست و امتداد سیاست باشند، که این امر اصل شکرانهٔ عطایاے حضرت آفریدگار جلت عظمته است، و مخلص را نهایت آرزوے اینمعنے است که او تعالے آنعالیشان را تا زمان دراز برسر رعایا و برایاے مملکت میواز قایم و پاینده داراد- زیاده چه برطرازد *.

Ellenborough.

गद्दी नशीनीके शुरू ज़मानहमें महाराणाको रियासतका काम चलानेमें बड़ी होश्यारी बरतनी पड़ी, क्योंकि मत्लबी लोगोंका हरएक गिरोह उनको अपनी अपनी तरफ़ खेंचना चाहता था; लेकिन् महाराणा उन सब लोगोंको अपने महाराजगीके ज़मानहमें अच्छी तरह देख चुके थे, याने उसवक्त बागोरके छोटे होनेके सबब उनका किसीको खयाल न था, कि यह मेवाड़के महाराणा होंगे, इसलिये वह बगैर किसी पॉलिसीकी रोक टोकके रियासती कारोबार और आदमियोंके ढंगोंको खूब देखते रहे, और वही तजर्बह उनको इस वक्त मुफ़ीद हुआ, कि जिसके ज़रीअहसे वह हरएक आदमीकी मत्लबी कार्रवाईको दिलमें पहचानकर नुक्सान उठानेके एवज़ उनसे अपना मत्लब निकालने लगे. महाराणा ने गद्दीपर विराजकर सलूंबरके कुंवर केसरीसिंहको अपना मर्जीदां बनाया, जिससे आसींद का रावत् दूलहसिंह और प्रधान महता रामसिंह दोनों दबे रहे; और केसरीसिंहने गोगूंदाके कुंवर लालसिंहकी मारिफ़त अपना गिरोह क़ाइम करना शुरू किया; उसका इरादह था, कि दूलहसिंह और रामसिंह दोनोंको अलग करके मुसाहिबीका काम अपने इख्तियार में लेलेवे. महता रामसिंह बड़ा होश्यार मुत्सद्दी था, वह केसरीसिंहका मन्शा पाकर दोनों तरफ़ दम देता रहा; लेकिन् रावत् दूलहसिंह, जो एक अ़रसहसे मुसाहिबीमें दख़्ल रखता था, कुंवर केसरीसिंह और महाराणाके दर्मियान नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा करादेनेकी कोशिश करने लगा. उसने शुरूमें सलूंबरके रावत् पद्मसिंहको महाराणासे कुंवर केसरीसिंहकी शिकायत करनेके लिये उभारा, जिसने ठिकाने सलूंबरसे उक्त रावत्की हुकूमत बिल्कुल उठादी थी, और उससे इस विषयकी एक अ़र्ज़ी लिखवाकर महाराणाकी खिद्मतमें पेश की, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है:-

रावत् पद्मसिंहकी अ़र्ज़ीकी नक़्ल.

॥ श्रीरांमजी १.

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा वीराजमान अनेक ओपमा लाऐक म्हाराज धीराज म्हाराणाजी श्री। श्री। श्री। श्री। श्री सरुपसीघजी च्रणजीवी च्रण कुम-

लाअेण अेतान, सलुबरथी सेवक छोरु रावत पदमसीघ कहेने मुजरो मालम वेसी, अठारा समीचार श्री　　　　　　जीरी सुनजरथाथी करेने भला हे, श्रीजीरा सदा सीरबदा दीन १ प्रत गडी गडी पुल पुलरा सदा आरोग चाईजे, तो छोरुने प्रम सुष वेसी राज; श्रीजीरा स्हेण, भडार, कपुर, कसतुरी, गगाजल अरोगवारा त्था असवारी सकारी, चडवा ऊतरवारा घणा जतन रषायारो हुकम वेसी राज, जतन तो श्री अेकलीगजी राषे हे, तो पण छोरुने तो अरज लषी चाईजे; श्री जी बडा हे मोटा हे मावीत हे, सदा सुनजर रषावे जुईज रषायारो हुकम वेसी राज. अप्रच। अणा दीनामे रुको मया हुवो न्ही, सो लषवा म्हे आवसी, अठे मारो हक केरीग ऊठावामे कसर मेली न्ही, आगे पण ऐक दोऐ भलामनषाने पकडे ने लेगया, ने गाम छाछदे पड्या पण हे, ने फेरे अबार गाम वसीथी षरवड षुमाणसीघने पकडे ने लेगया, सो आज दीन पेली अठे बडा रावतजी केसरीसीघजी थी लेने आज दीन ताई सलुबर म्हे रजपुत सीरदार सपाईरो धरम कणी लीदो न्ही, ने मातीरे चाकरी करे जीरा कसाथी अणी अबार या कीदी, सो असी दाता श्री जीरा हुकमथी करे हे के अणारे मनरे जाणे करे हे, अबे मारो हक न्ही सो ऊठाथी श्री दरबार रो भलो मन (ष) मेलेगा सो सेररी कुच्या अणाने श्री हजुररा हुकम थी सुपे ने श्री हजुर मने मेलेगा जठे रेऊगा, ओर अरज काकोजी रावत दुलेसीघजी मालम करेगा, छ १८९९ रा काती वदी २ सुकरे.
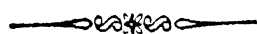
यह अर्ज़ी नज़ करके दूलहसिंहने महाराणासे अर्ज़ किया, कि यदि हुज़ूर रावत् पद्मसिंहकी तसल्ली करदेवें, तो मैं और वह दोनों शामिल रहकर हुज़ूरकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ मेवाड़के कुल सर्दारोंसे छटूंद चाकरीका फ़ैसलह करादेंगे, क्योंकि जिस हालतमें हम दोनों शख़्स इक़ारनामह लिखदेंगे, तो और कोई सर्दार इन्कार नहीं करेगा. महाराणा तो यही चाहते थे, उन्होंने फ़ौरन् पद्मसिंहको बुलानेके लिये उसके नाम तसल्लीका रुक़ा लिख भेजा.

इन्हीं दिनोंमें विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमज़ान = .ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को कोटाके महाराव रामसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकके दस्तूरमें हाथी व घोड़ा वगैरह सामान आया, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल ४ [हि० ता० २ शव्वाल = .ई० ता० ६ नोवेम्बर] को खुद महाराव रामसिंह मातमपुर्सीके लिये उदयपुरमें आये; महाराणाने दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेशवाई वगैरह रस्मोंके साथ उनका आतिथ्य किया. उक्त महाराव कुछ दिन ठहरकर वापस कोटे चलेगये.

इसके बाद रावत् दूलहसिंहने महाराणासे अर्ज़ किया, कि कुंवर केसरीसिंह बड़ा घमंडी है, वह हुज़ूरके हुक्मकी तामील नहीं करेगा, इसलिये साहिब एजेएटके नाम दोनों बाप बेटोंकी तक्रारका हाल लिखकर उन्हींको इस फ़ैसलेका इख्तियार देदिया जावे, कि वह किसी अंग्रेज़ी अह्लकारको सलूंबर भेजकर केसरीसिंहका इख्तियार ठिकानेसे उठवादेवें; इसमें एजेएट साहिबको हुज़ूरकी मुन्सिफ़ मिज़ाजी मालूम होगी, और वह हुज़ूरके मन्शाके मुवाफ़िक़ फ़ौरन् तामील करावेंगे. महाराणाने दूलहसिंहकी सलाहको पसन्द फ़र्माकर इस बारेमें पोलिटिकल एजेएटके नाम एक ख़रीतह लिखभेजा, जिसपर उक्त पोलिटिकल एजेएटने महाराणाके लिखनेके अनुसार ठिकानेके बन्दोबस्तकी बाबत् एक तज्वीज़ लिखकर उसपर रावत् पद्मसिंह व कुंवर केसरीसिंहके दस्तख़त करालिये और केसरीसिंहसे रावत् पद्मसिंहके नाम एक तह्रीर बतौर इक्रारनामह लिखाकर उनकी नक़्लें अपने जवाबी ख़रीतहके साथ महाराणाके पास भेजदीं, जो मए नक़्ल ख़रीतह साहिब एजेएटके नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

पोलिटिकल एजेएट टॉमस रॉबिन्सन साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.
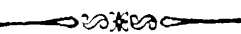
१ श्रीरांमजी १.

॥ ३६ ॥ नंबर

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथांने सरबउपमां ब्राजमांन महाराज ध्रिराज महारांणाजी श्री सरुपसींघजी बहादुर ऐतांन करणेल तामीस राबीनसन साहेब बहादुर ली॥ सलाम बचावसी, ईठारा स्मांचार भला छे, आपका सदा भला चाहीजे, अपरंच षरीता आपका माह बदी ९ का लीषा कुवर केसरीसींघजीके मारफत आया, स्मांचार बांच वाकीफ हुवा, आपने पेसतर मुजसे कै बार फरमाया ने अब षरीतेमे लीषा, जीसु सलुबरका राज सुधरनेकी तदबीर बतलाणेमे आई, और उसकु बीचार श्री रावतजी तथा कुवरजीने आपसमे बदोबसत कर करारनांमे मेरे पास भेजे, उसकी नकल ईस षरीताकी साथ आपके मुलाहजे सारु भेजताहुं, बांचेसे सब अेहवाल जाहर होगा. हीकीन हे ईस बदोबसतसे राजके घरका सुधारा हो करज उतर जावेगा, और श्री रावजी

राजी रहेंगे; ओर मीजाज मुबारककी षुसीके स्मांचार हमेसे लीषावसी, सं० १८९९ रा माह सुदी ७ तारीष ६ फरवरी सन् १८४३ ईसवी.

(अंग्रेज़ीमें)
दस्तख़त- टॉमस रॉबिन्सन.

पोलिटिकल एजेएटकी तज्वीज़की नक्ल़.

नकल. ॥ श्रीरांमजी.

(अंग्रेज़ीमें)
दस्तख़त-टॉमस रॉबिन्सन.

॥ तजबीज बंदोबसत राज सलुंबर आज तरफ करणेल तामस राबीनसन साहेब बहादुर माफीक मरजी श्री महाराणाजी साहेब बहादुर ———

आपरंच मेरी सीरकार दौलतमदार कंप्णी ईंगरेज बहादुरकी मरजी हींदुसतानी सीरदारोके घरके काममे दषल करनेकी न्ही, ने ईसी सबब मै बी घरु कामोसे आलग रहेता हुं, प्ण श्री महाराणा साहेबने सलुंबरकी बेबंदोबसती फरमाके के बार बंदोबसत ओर बाप बेटेका मीलाप मेरी मारफत चाहा, सो श्री म्हाराणा साहेब बहादुरकी षातर आर षुसी सारु नसीहतके तोर असा षयालमे आता हे, ओर ईससे बहतर दुसरी कोई तजवीज फीसाद दुर होणेकी नजर आई न्ही, जो मेरी नसीहतसे बंदोबस्त अर घरका फायदा स्मझा जाय, तो ईस कागदपर दसषत सही कीजावे, ओर नही तो फेर मेरा कहेना कुछ जरुर न्हीं.

बंदोबसतरी बीगत.

१- रावतजीकी मालकी त्था हुकम, ओर कुवरजीकी मुषतीयारी रावतजीकी ताबेदारीसे.

२- पटाकी आमदनीमेसे आगला करार माफीक रु ॥ १२०००) रावतजी ने रु ८०००)

कुवरजी सालीना आपणे आपणे षरचके लेवे, दोनुसे ज्यादे षरच करे न्ही, बाकी रहे जीमेसे भाग प्रमाणे करजदारोकु देवे.

३ - ओर सीवाय पेदायस उपज दोनुवाकी सलाहसे होणा चावे, ओर वोह उपज बाईका बीवाह तथा करज वालाकु जथा जोग बरताणा चावे.

४ - बाप बेटा नषे फीतुरी आदमी रेहेके काम बीगाडे हे, ज्याने कामसु न्यारा करे ने राजको काम दोई ऐषटसु चलावे.

४

ई प्रमाणे मंजुर करवापरे हमारा भला आदमी मागेगे, तो थोडे दीना वासते भला आदमी रहेगा, ओर दोनु कानीका चलन देष कामकी मदद वाजबी राषेगा, सं० १८९९ रा माहा सुदी ३ तारीष २ फरवरी सन् १८४३ ईसवी.

अे कलमा लषी सो कबुल हे.

अे कलमा लषी सो कबुल हे केसरीघके.

रावत् पद्मसिंहके नाम कुंवर केसरीसिंहकी तहरीरकी नक़्ल.

नकल. ॥ श्रीरांमजी.

दस्तख़त - टॉमस रॉबिन्सन. (अंग्रेज़ीमें)

॥ सीधश्री महाराज धीराज महारावतजी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री काकाजी साहेब श्री पदमसीघजी हजुर अरज छोरु चाकर बेटा कुंवर केसरीसींघको धरती हाथ लगावे न मुज्रो मालम होवेगा, अप्रंच श्री हजुर मने मुंडा आगे कामकी बंदगी चाकरी बतावी सो श्री हजुरका हुकम परमांणे कांम करुंगा, कणी बातसुं श्री हजुरको हुकम लोपुंगा न्ही, और बरस ४ च्यार मांहे करज ऊतारे देऊंगा और श्री हजुर क (णीके) सीषाअे चाले लागसी न्ही, और बरस ४ पाछे श्री हजुरकी मरजी आवेने सुदारे ज्णीने कांम देसी ज्णीसुं हुं राजी रेऊंगा, सं० १८९९ का महा सुदी ६ रवेऊ.

केसरीसिंहने अक्लमन्दीके साथ ऊपर लिखा हुआ इक़ारनामह लिखकर अपना घरू बखेड़ा मिटादेनेके बाद अपने मालिक (महाराणा) की तरफ़से रंजीदगी ज़ाहिर करके रावत् दूलहसिंहको कहलाया, कि आपको हमारे पितामह होकर घरू बखेड़ा मिटानेके .एवज़ बढ़ाना वाजिब नहीं है. इससे रावत् दूलहसिंह बहुत शर्मिन्दह हुआ, लेकिन् साथ ही इसके उसे ख़ुशी भी हुई, कि महाराणा और केसरीसिंहके दर्मियान रंजकी सूरत पैदा होगई.

इन्हीं दिनोंमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीको काबुल और ग़ज़नीपर फ़तह हासिल होकर मन्दिर सोमनाथके सन्दली किवाड़ हिन्दुस्तानमें लाये जानेकी मुबारकबादका फ़ार्सी ख़रीतह (१) गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड एलेन्बराने मए एक हिन्दी इश्तिहारके महाराणाके पास भेजा, जिसका तर्जमह और इश्तिहारकी नक़्ल पाठकोंके अवलोकनार्थ यहांपर दर्ज कीजाती है:-

लॉर्ड एलेन्बराके ख़रीतहका तर्जमह.

महाराणा साहिब आलीशान मुश्फ़िक़ मिहर्बान जगह निकलने मिहर्बानी और इह्सानके सलामत-

पीछे पहुंचाने दस्तूरों ख़्वाहिश बड़ी मुलाक़ात बिल्कुल ख़ुशीके, जो क़लम दो-ज़बानकी तह्रीर और ख़त कुशादह बयानकी तक़्रीरकी गुंजाइशसे बाहिर है, रौशन दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है. जोकि वे मुश्फ़िक़ हिन्दुस्तानके सर्दारोंमेंसे क़दीमी रियासत और बड़े मर्तबहके साथ मुम्ताज़ हैं, इसलिये वह ख़त, जो दोस्तदारकी तरफ़से हिन्दुस्तानके सब सर्दारों और तमाम रिआयाके नाम जारी हुआ, ख़ास अपनी तरफ़से

---

(१) نقل خریطهٔ لارڈ ایلنبره گورنر جنرل هند بنام مهارانا سروپ سنگه *

مهارانا صاحب عالیشان مشفق مهربان مصدر لطف واحسان سلامت،
بعد از تبلیغ مراسم آرزوی گرامی مواصلت سراسر عاطفت که گنجایش گیر تحریر خامهٔ دو زبان
و تقریر پذیر نامهٔ وسیع البیان نیست، مشهود ضمیر منیر گردانیده می آید * ازانجا که آن مشفق
بزمرهٔ سرداران هندوستان بقدامت ریاست و جلالت قدر ممتاز اند، بآن مشفق ارسال خطیکه
ازطرف مخلص بجمله سرداران و تمامی خلایق هندوستان جاري شده بدون تهنیت خاص

ऐसे बड़े कामके ज़ाहिर होनेकी मुबारकबादके बिना, कि जो हिन्दुओंकी नामवरीका बाइस और हमेशहके वास्ते इस ज़मानहकी .इज़्ज़तका सबब है, उन मुश्फ़िक़को भेजना मुनासिब न समझकर उस ख़तके साथ लिखताहूं, और यक़ीन करताहूं, कि उन मुश्फ़िक़से ज़ियादह हिन्दुओंमेंसे किसी शख़्सको ऐसे बड़े कामके ज़ाहिर होने, याने मन्दिर सोमनाथके सन्दली किवाड़ वापस हाथ लगनेसे ख़ुशी हासिल न होगी; और पाकीज़ह दिलको यक़ीन हो, कि इस ग़नीमत (किवाड़ों) के मुल्क हिन्दुस्तानमें वापस ला देनेका, जिसे सुल्तान महमूद लूटकर लेगया था, मैं दोस्तदार ही ज़रीअ़ह हुआ हूं, इसलिये इस कामको अपनी .इज़्ज़तका सबब ख़याल करता हूं. और जोकि दोस्तदारके मुसाहिबोंमेंसे बहादुरीकी निशानी कप्तान हेरलस बहादुर दोस्तदारके ख़ास हमराही रिसालहके चन्द सवारों समेत मन्दिर मज़्कूरके किवाड़ोंके मुहाफ़िज़ोंके साथ उस मुश्फ़िक़के राजमें होकर जाते हैं, लिहाज़ और .इज़्ज़त उन मुश्फ़िक़की जैसी कि मेरे मुहब्बत भरेहुए दिलमें नक़्श है, वह रौशन करेंगे, और इस दोस्तदारकी वह ख़्वाहिश भी, जो वास्ते तरक़्क़ी और पायदारी ख़ानदान उन मुश्फ़िक़के है, ज़ाहिर करेंगे. उम्मेद कि, दोस्तदारको हमेशह अपने मिहर्बान मिज़ाजकी ख़ैरियतका ख़्वाहिशमन्द समझकर उसकी इत्तिलासे ख़ुश फ़र्माते रहें, ज़ियादह क्या लिखें.

(अंग्रेज़ीमें)

दस्तख़त - एलेन्बरा.

ومبارکباد بالاختصاص ازطرف خود بظهور چنان واقعه که باعث ناموری هندوان وبراے
دوام سبب اعزاز این زمان است، مناسب ندیده همراه آن ادا مینمایم وبه یقین میدانم که
زیاده ازان مشفق بکدام کس از هندوان ظهور چنان واقعهٔ عظیم یعنی بازیافت دروازه هاے صندل
مندر سومنات مسرت وحبور نخواهد بخشید، ویقین خاطر عاطر باشد که چون دوستدار ذریعه
بهیهٔ واپس دادن بولایت هندوستان آن غنیمتے که سلطان محمود انتزاع کرده بود گردیده ام،
این امر را موجب اعزاز خود تصور میکنم، وشجاعت شعار کپتان هرلس بهادر یکے از مصاحبین
مخلص که بامعدودے چند از سواران رسالهٔ خاص همراهی دوستدار به معیت محافظین دروازه هاے
مندر مذکوره براه مملکت آن مشفق میروند، پاسداری واعزاز آن مشفق که منقوش خاطر
محبت مظاهر است حالی خواهند ساخت، ونیز تمنا و آرزوے این دوستی دوست
که به ترقی وبهبودی آن مشفق و دوام و قیام خاندان آن مشفق است، ظاهر خواهند نمود *
مترصد که اخلاص پیرا را مدام آرزومند دریافت خیریت مزاج عطوفت امتزاج خود تصور ید، و
باطلاع آن مسرور و محبور مے فرموده باشند- زیاده چه برطرازد *

Ellenborough.

नक्ल इश्तिहार.
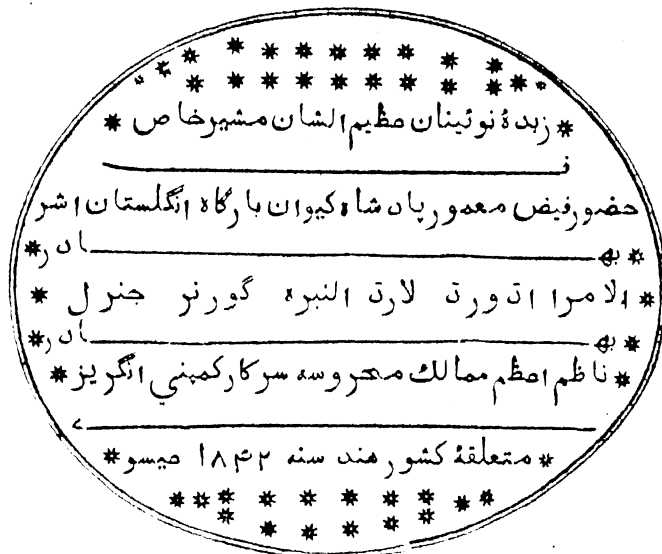
* नवाब गविरनर जनरल की तरफ से हिन्दुस्तान के *

* सब राजा प्रजा को *

भाइयो और मित्रो।

हमारी युद्ध जीत सेना सोमनाथ के मंदिर के किवाड अफगान देश ते धूम धाम के साथ लिये आवती है और सुलतान महमूद के अंगभंग मकबरे परसे अब सारी गजनी उजार परी दीखती है आठ सै बरस की हतक का अंत बदला लिया गया सोमनाथ के मंदिर के किवाड जो इतने दिनो से तुह्मारी पिछली आधीनता का पता खडे हुये थे वेई किवाड अब तुह्मारे देश की सामर्थ्य और प्रकाश के बडे प्रतापवान निशान बने रहैंगे सिंधु पारवालों से तुह्मारे शस्त्रों की अधिकता को सदा अनुमान करवावते रहैंगे सहरंध रजवाडा मालवा और गुजरात के तुह्म सब राजों सरदारों को मैं विजयी संग्राम का यह बड़ा सुंदर फल समर्पण करता हूं और तुह्म आपही इन्ह चंदन के कवांडों को बडे आदर सन्मान साथ आप अपने मुलक से सोमनाथ के संस्कार किये हुये मंदिर में पहुंचाय दोगे जिस समै यह सारी विजयवती फौज वे किवाड़ सहरंध के राजों को सुतलज के किनारे सौंपने लगैगी, तब उन्ह राजों को खबर दिई जायगी * भाइयो और मित्रो। मुझे तुह्मारे और सरकार अंगरेजीके आपस के आश्रय पै निश्चय और बडा भरोसा

रहा है तुम्ह देखते हो वह सरकार कैसी तुह्मारे आश्रय की योग है जो तुह्मारी और अपनी शोभा को एक समान समझती है जो किवाड अफ़गानों के आगे तुह्मारी पिछली अधीनता को इतने दिनोंते याद करवावते थे उन्ह के तुह्मे फेर लयाय देणेमें अपने शस्त्रों का बल लगाती है मैं जो तुह्मारे मनोरथ प्रयोजनको अपना ही समझता हूं, इसी ते इस शूरबीर सेनाके अतुल लाभको तुह्मारे जैसे उतसाहसे देखता हूं, के यह लाभ मेरे जन्मदेश और इस निवास देश पै एक अचल शोभा बराबर बर्षाता है, इन्ह दोनो मुलकके आनंददायक मेलापका बना रहना और बढाना, जो दोनोंके वास्ते ज़रूर है सो मेरी अभिलाषा है, और जो उपद्रव पहले समयमें हिंदुस्तानको सताते थे उन्ह सबसे मित्रोंकी और सारी रइयत अंगरेजीकी रक्षा करणी इसी मेलाप के आधीन है, और इसी मेलापके कारणसे इस सारी फौजने उजार गजनी, काबल और बालाहिसार पै अपनी जयकी धजा फरराई, और और परमेश्वर जिसने अबतलक हमारी ऐसी रक्षा की, आगे भी हमारे उपर ऐसी कृपा दृष्ट करे के जितना बल मेरे हाथ सौंपा गया है, सो सब तुह्मारे ऐश्वर्यके बढाने, माल गांउं और तुह्मारा सुख बना रखूं और इन्ह दोनो मुलकके मेलापकी ऐसी नीव रखूं। जो सदा अजर अमर रहे *
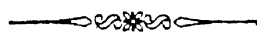
सलूंबरका कुंवर केसरीसिंह तो महाराणासे रंजीदह होकर उनके विरुद्ध कार्रवाइयां करनेकी फ़िक्रमें ही था, कि इसी अरसहमें एक मुज्रिम ब्राह्मणी, जिसपर कुछ जुर्म साबित हुआ था, भागकर सलूंबरकी हवेलीमें जा बैठी. क़दीम ज़मानहमें कुल हिन्दुस्तान और ज़ियादहतर राजपूतोंकी क़ौममें यह क़ाइदह था, कि जब कोई मुज्रिम भागकर किसी देवस्थान अथवा धर्मगुरु, वा राजा, या राजपूत सर्दारकी पनाहमें चला जाता, तो राजपूत लोग उसके बचानेके लिये अपनी जानतक देनेमें कोताही न करके शरणमें आने वाले शख़्सको राज्य वालों या उसके दुश्मनको हर्गिज़ नहीं सौंपते थे; अगर वह किसी मन्दिर अथवा धर्मगुरुकी पनाहमें आता, तो मन्दिरोंके पुजारी तथा धर्मगुरु भी उसके बचानेके लिये ख़ुदकुशी करने और उनके पक्षपर राजपूत सर्दार अपने मज़्हबी आईनको क़ाइम रखनेकी ग़रज़से जान देनेको तय्यार होजाते थे. इस रवाजकी बुन्याद क़दीम ज़मानहमें इस तरहपर पड़ी, कि भारतवर्षमें पहिले जुदा जुदा ज़िलोंके अलहदह अलहदह ख़ुदमुख़्तार राजा थे, उस हालतमें जहां कहीं कोई ज़ालिम राजा होता, और किसी ग़रीब बेक़ुसूरकी जान लेनेको हुक्म देता, तो उसको बचानेके लिये मज़्हबी पेशवा व राजपूत लोग सहायक बन जाते, और राजाका गुस्सह ठण्डा होनेपर इन्साफ़ करादेते थे. मुसल्मान लोगोंकी हुकूमत

हिन्दुस्तानमें क़ाइम होनेके ज़मानहसे मज़्हबी जोशके सबब इस रवाजने और भी ज़ियादह तरक़्क़ी पाई, और उसी ढंगपर मेवाड़में भी यह दस्तूर जारी रहा, याने श्री एकलिंगेश्वर, नाथद्वारा, कांकड़ौली, चारभुजा, रूपनारायण और ऋषभदेव आदि बड़े बड़े देवस्थान इलाक़हमें, और राजधानी उदयपुरमें जगदीश आदिके प्रतिष्ठित मन्दिर और चित्तौड़गढ़पर कालिकादेवी व अन्नपूर्णाके मन्दिर तथा धर्मगुरु, राजपुरोहित, सवीनाखेड़ाके गुसाईं और लादूवासके आयसका ठिकाना पनाहकी जगह समझे जाते थे. इसीतरह बहुतसे सर्दारोंकी हवेलियां भी थीं, जिनमेंसे सलूंबरकी हवेली, सबसे बढ़कर पनाहकी जगह गिनी जाती थी, और उसकी हद पीछोलीसे उत्तरी तरफ़ ताणाकी हवेलीतक रावत्‌जीकी हाटां कहलाती थी; इस इहातहमें यदि कोई मुज्रिम चलाजाता, तो सर्कारी आदमी उससे किसी तरहकी मुज़ाहमत नहीं करने पाते थे. पिछले ज़मानहमें यह रवाज ज़ियादह बढ़जानेके सबब बड़े बड़े मुज्रिम सज़ासे बचकर दोबारह जुर्म करने लगगये थे. महाराणा स्वरूपसिंहको ख़ास शहरमें जुर्मोंकी ज़ियादती देखकर यह बात नागुवार गुज़री, और उन्होंने उस ब्राह्मणीके लिये, जो सलूंबरकी हवेलीकी पनाहमें थी, कोतवालको हुक्म दिया, कि जब वह रावत्‌जीकी हाटोंसे बाहिर निकले, फ़ौरन् गिरिफ़्तार करलो. इसवक़्त यह रवाज यहांतक बढ़गया था, कि यदि सलूंबरकी हवेलीका एक आदमी भी मुज्रिमके साथ रहता, और वह कुल शहरमें फिरता, तो उसको कोई गिरिफ़्तार नहीं करसक्ता था. वह ब्राह्मणी एक रोज़ अपनी जाति वालोंके यहां खाना खानेके लिये गई, और इत्तिफ़ाक़से उसके साथ वाला सलूंबरकी हवेलीका आदमी अपने घर चलागया. यह मौक़ा पाकर कोतवालके आदमियोंने औरतको गिरिफ़्तार करलिया, और कुंवर केसरीसिंहको इसकी ख़बर मिली. केसरीसिंहने सुनते ही फ़ौरन् अपने सौ पचास आदमियोंको भेजा, जो सर्कारी सिपाहियोंसे उस ब्राह्मणीको जब्रन् छुड़ालाये. महाराणाको इस बातपर बहुत गुस्सह आया, और उन्होंने रावत् दूलहसिंहको, जो केसरीसिंहका तरफ़दार बनकर इस बारेमें अर्ज़ करने लगा था, नाराज़ होकर कहा, कि तुम दोनों तरफ़ मिलावट रखकर अपना मत्लब निकालना चाहते हो; और तोपख़ानह लेजाकर सलूंबरकी हवेलीको मए केसरीसिंहके उड़ादेनेका हुक्म दिया. उसवक़्त महता रामसिंहने महाराणाके कानमें अर्ज़ किया, कि हुज़ूरकी शुरू गद्दीनशीनीमें ऐसी बड़ी ख़ूंरेज़ी होना बदनामीका बाइस है, अगर यही मन्ज़ूर हो, तो पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिबको इत्तिला देकर कार्रवाई शुरू करना मुनासिब है. महाराणा भी अक़्लमन्द थे, उन्होंने रामसिंहकी सलाहको मानकर कुंवर केसरीसिंहकी सर्कशीका मुफ़स्सल हाल

पोलिटिकल एजेण्टके पास लिखकर भेजदिया, और उसके जवाबमें रॉबिन्सन साहिबने एक ख़रीतह महाराणाके नाम भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:–

पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरांमजी १

॥ १६६ ॥ नंबर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथांने सरब उपमां ब्रिाज्मांन लायक महाराज धिराज महारांणाजी श्री सरुपसींघजी साहेब बहादुर ऐतांन करनेल तांमीस राबीनसन साहेब बहादुर ली ॥ सलांम बंचावसी, ईठारा स्मांचार भला छे, आपका सदाभला चाहीजे अपरंच, षरीता आपका बैसाष बदी ४ का ली ॥ कुवर केसरीसींघकी नादांनी ताबे आया, स्मांचार बांच वाकीफ हुवा, ईस्मुकदमेके सुणबेसे कुवरजीकी नादानीका बहोत अफसोस मालुम होता हे, ताबेदारोंकु असा चाहीजे नही, असी बे-अदबी करणेसे कसुरवार होते हे, लेकन मेरे षयालमे आता हे, के कुवरजीपे आपकी मेहरबांनी ज्यादे थी वीसें गफलतमें आ गऐ होंगे; ओर जो आगे के ऐक कसुर कीये थे, तो उसी बषत मने करना चाहीये था, फेर ऐसा काहेकु करता, ने आपणा दरजा मरातबा हाथसे क्यु छोडता. अब आपके लीषे माफीक कुंवरजीकु लीषा हे, ने षरीताकी साथ वीसकी नकल भेजताहुं, वींसे आप वाकीफ होंगे; अब भी जो आप मेहरबांनीसे माफ करे, तो आयंदे नोकर चाकरोपर असी नीगाह चाहीये, जीमे श्री दरबारका डर दीलमे राष चाकरी मनसे बजावे, ओर बेअदबी, अदुल हुकमी करने पावे नही, आगे आप दाना हे. मीजाज मुबारककी षुसीके स्मांचार हमेसे लीषावसी सं० १८९९ (१) रा बेसाष बदी १० तारीष २४ अप्रेल स० १८४३ ईसवी.

ओर अहेवाल वकी(ल)
के कहणेसे जाहर हुवा,
जीसका मुफसील जवा-
ब बांके लीषेसे जाहे-
र होसी.

(अंग्रेज़ीमें)

दस्तख़त– टॉमस रॉबिन्सन, पो० ए०

(१) यह संवत् चैत्रादि हिसाबसे १९०० होता है.

इन बातोंसे महता रामसिंहका दिली खौफ़ दूर होगया, क्योंकि उसको पहिले यह धोखा था, कि अव्वल तो महाराणाही बड़े अक्लमन्द और होश्यार रईस हैं, दूसरे वैसा ही अक्लमन्द सलूंबर रावत्का पुत्र केसरीसिंह उनका मुसाहिब हो, और ये दोनों रियासतका प्रबन्ध करनेपर तय्यार होजावें, तो मेरा कुछ भी इस्तियार न रहेगा. इसी तरह रावत् दूलहसिंहसे भी महाराणाकी निगाह खिचगई, जो एक तजर्बहकार मुसाहिब था; लेकिन् महता रामसिंहको रावत् दूलहसिंहकी तरफ़से अन्देशह था, कि शायद वह महाराणासे फिर अपनी सफ़ाई करलेवे; इसलिये उसने महाराणासे खानगी तौरपर अर्ज़ की, कि रावत् दूलहसिंहने जो सर्दारोंकी छटूंद चाकरीका अमल दरामद करादेने के लिये इक्रार किया था, उसकी तामील अब कराना चाहिये. महाराणाने रामसिंहकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ दूलहसिंहको कहा. इसपर दूलहसिंहने कुल सर्दारोंसे सलाह करके अपने इक्रारके मुवाफ़िक़ अमल दरामद कराना चाहा, लेकिन् उसके मुखालिफ़ गोगूंदाके कुंवर लालसिंहने, जो केसरीसिंहका दोस्त और होश्यार शख्स था, कुल सर्दारोंको दूलहसिंहके बर्खिलाफ़ करदिया, और महाराणाके कानतक यह बात पहुंचाई, कि दूलहसिंह पोशीदह तौरपर सर्दारोंसे मिलकर सर्कारी प्रबन्धमें खलल डालता है; इस सबबसे महाराणा दूलहसिंहपर ज़ियादह नाराज़ हुए, और हुक्म दिया, कि रावत् पद्मसिंह व दूलहसिंह दोनों अपने ठिकानोंकी छटूंद चाकरीका इक्रारनामह सरिश्तहके मुवाफ़िक़ लिखकर उसके अनुसार तामील करें. तब दूलहसिंहने कहा, कि रावत् पद्मसिंह तो मेरे कहनेमें नहीं है, और मुझ अकेलेको तामील करनेमें कुल मुल्क बद-नाम करेगा, इसलिये हुज़ूर इस बातको कुछ अरसहके लिये मुल्तवी रक्खें, तो मैं आहिस्तह आहिस्तह इस मुआमलहमें कोशिश करूंगा. महाराणाने दूलहसिंहकी बातको बहानहबाज़ी समझकर उसपर ज़ियादह दबाव डाला, और कहा, कि महाराणा जवानसिंह के वक्तमें जो तुमने अपने छोटे छोटे गांव बदलकर उनके एवज़ ज़ियादह आमदनीके गांव लेलिये हैं, उन्हें छोड़कर अपने क़दीम गांव लेलो. इसपर भी दूलहसिंहने बड़ी नर्मीके साथ अपने उज्र पेश किये, लेकिन् वे मन्ज़ूर न हुए, और उसका दर्बारमें आना जाना बन्द होकर वह अपनी हवेलीपर सर्कारी निगहबानीमें रहने लगा; निगहबानीके अलावह उसकी खबरके लिये जासूस भी मुकर्रर करदिये गये थे. अगर्चि इसवक्त दूलहसिंहका इतना कुसूर न था, कि उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जाता; लेकिन् आपसकी अदावतसे इतना तूल खिचा, कि उसको उदयपुरसे निकलकर अपने ठिकानेमें चलेजानेका हुक्म होगया. उसने अपनी जागीरको रवानह होते समय महाराणासे केवल इतना ही अर्ज कराया, कि मेरी खैरख्वाहीका हाल हुज़ूरको कुछ अरसहके बाद मालूम होजावेगा;

और इसी क़ौलके मुवाफ़िक़ उसने अमल दरामद रक्खा, जिसका ज़िक्र आगे किया जायेगा. रावत् दूलहसिंहपर महाराणाकी नाराज़गी तो कुछ दिनों पहिलेसे ही थी, लेकिन् इसवक्त और भी ज़ियादह बढ़जानेके सबब रियासती मुआमलातसे उसका दख़्ल बिल्कुल उठगया, इसके बाद वह केवल नामके वास्ते अपने ठिकाने आसींदसे राजधानीमें आता जाता, और उदासीन हालतमें रहता था.

ऊपर बयान कीहुई दोनों पार्टियोंके टूटजानेसे महता रामसिंह बे खटके रियासत का काम करने लगा, और दिन ब दिन उसका पेच फैलने लगा. महाराणा इसवक्त अपना मत्लब निकालनेकी कोशिशमें लग रहे थे, याने वह मुल्क मेवाड़का तफ़सीलवार जमा खर्च देखकर बन्दोबस्त करना चाहते थे, इसलिये रामसिंहपर दिन ब दिन ज़ियादह मिहर्बानी बढ़ाते रहे, यहांतक कि विक्रमी १९०० चैत्र कृष्ण २ [हि० १२६० ता० १६ सफ़र = .ई० १८४४ ता० ६ मार्च] को उसकी हवेलीपर मिह्मान हुए और उसे ताज़ीम व काकाजी (चचा) का ख़िताब दिया, जो मेवाड़के अगले प्रधानोंमेंसे किसीको नहीं मिला था. लेकिन् रामसिंह बड़ा चालाक था, वह ज़बानी ख़ैरख़्वाही दिखलाने में तो किसी तरहकी कोताही नहीं करता, परन्तु जब महाराणा उससे रियासती जमा ख़र्चका हिसाब सुनना चाहते, उस वक्त यही अर्ज़ करता, कि इस कामके लिये हम गुलाम लोग पैदा हुए हैं, मैं यह मुनासिब नहीं समझता, कि हुज़ूर ऐसे कामोंमें तक्लीफ़ उठावें; ख़ैरख़्वाह नौकर वही है, जो अपने मालिकके ऐश व इश्रत और आराममें ख़लल न डाले, बल्कि उनकी ख़ुशीके हुक्मोंकी तामील करे. महाराणाने महता रामसिंहकी इन बातोंसे नाउम्मेद होकर महता शेरसिंहको बुलाया, जो वैकुण्ठवासी महाराणा के समयसे मेवाड़के बाहिर अपने दिन गुज़ारता था, जिसका ज़िक्र मुफ़स्सल तौरपर परलोकवासी महाराणा सर्दारसिंहके हालमें लिखा जाचुका है. यह बात महता रामसिंहको बहुत नागुवार गुज़री, लेकिन् शेरसिंहकी पार्टीके बहुतसे लोग मौजूद थे, उन्होंने महाराणाके दिलमें उसकी जगह करदी, और महाराणाने उसे मेवाड़का जमा ख़र्च दिखलानेके लिये हुक्म फ़र्माया. जोकि शेरसिंह पहिले प्रधाना करचुका था, और रियासती कामोंसे अच्छी तरह वाक़िफ़ था, उसने साफ़ दिल होकर महाराणाके हुक्मको मन्ज़ूर किया, और कहने लगा, कि मेरा दादा अगरचन्द अपनी औलादको हमेशह यही नसीहत करता था, कि अपने मालिककी मर्ज़ी और ख़ैरख़्वाहीके बर्ख़िलाफ़ हर्गिज़ न चलना; उसी नसीहतके मुवाफ़िक़ उसकी औलादने आजतक अमल दरामद रक्खा है, जिसको हुज़ूर अच्छी तरह जानते हैं. इस पर महाराणाने शेरसिंहकी बहुत कुछ ख़ातिर की, और थोड़े अरसहतक वह रामसिंहसे

पोशीदह तौरपर हर रोज़ रातके वक्त बाड़ीमहलकी नालके रास्तहसे अकेला बुलाया गया; उस ख़ैरख़्वाहने इस अ़रसहमें मेवाड़का कुल तफ़्सीलवार जमा ख़र्च महाराणाको लिख दिया. अब महाराणाको रामसिंहसे दिन ब दिन नफ़त होने लगी, लेकिन् वह बड़ा रोबदार और मज़्बूत दिल अह्लकार था, उसने अपने घमंडमें किसीकी पर्वा न की, सिवा इसके रामसिंहके बेटे बख़्तावरसिंहपर महाराणाकी पूरी मिहर्बानी होने के सबब वह और भी बे फ़िक्र रहा. आख़िरकार विक्रमी १९०१ प्रथम श्रावण कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० ता० ११ जुलाई] को महता रामसिंह अपने बाल-बच्चों सहित क़ैद कियागया, और महता स्वरूपचन्दको मोतियोंकी कण्ठी तथा ख़िल्अ़त और महता शेरसिंहको प्रधानेका काम सुपुर्द हुआ. इसके बाद विक्रमी आश्विन शुक्ल ९ [हि० ता० ७ शव्वाल = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को दशहराके रोज़ महाराणाने महता शेरसिंहको प्रधानेका ख़िल्अ़त इनायत किया, और अपने काका (चचा) दलसिंह व कायस्थ प्राणनाथको साथ देकर उसे अपने मकानपर पहुंचाया. रामसिंहके बेटे बख़्तावरसिंहपर महाराणाकी ज़ियादह मिहर्बानी थी, इसलिये उन्होंने मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० ता० ८ ज़िल्हिज = ई० ता० १९ डिसेम्बर] के दिन उसको अपने पास बुलालिया. इस बातसे लोगोंके दिलोंमें यह ख़याल पैदा हुआ, कि रामसिंहका पैर रियासतमेंसे उखड़ना मुश्किल है, इसलिये उसके निकालेजानेकी कोशिश शुरू हुई, और अख़ीरमें १००००००) दश लाख रुपये दण्डका रुक़ा लिखवाकर फाल्गुन कृष्ण १३ [हि० १२६१ ता० २६ सफ़र = ई० १८४५ ता० ६ मार्च] को महता रामसिंह महाराणा की ख़िद्मतमें सलामके लिये बुलाया गया. अगर्चि इसवक्त प्रधानेका काम शेर-सिंह करता था, लेकिन् दोनों पार्टीके लोग अपनी अपनी कोशिशमें पूरे तौरपर लगे हुए थे, कि इसी अ़रसहमें विक्रमी १९०३ माघ शुक्ल १४ [हि० १२६३ ता० १२ सफ़र = ई० १८४७ ता० ३० जैन्युअरी] को पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिब उदयपुर में आये, और इन्हीं दिनों यह ख़बर उड़ी, कि बागोरके महाराज शेरसिंहके बड़े बेटे शार्दूलसिंहने गद्दी बैठनेके इरादहसे महाराणाको ज़हर देनेका विचार किया, जिसमें महता रामसिंह और पाणेरी गंगाराम वग़ैरह कई लोग शरीक बतलाये गये. यह ख़बर सुनते ही महता रामसिंह तो अपने मकानसे भागकर पोलिटिकल एजेण्टके कैम्पमें चलागया, और बाक़ी कई लोगोंको सज़ा दीगई, जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा. महता रामसिंह तो पोलिटिकल एजेण्टके साथ ख़ुद ही राजधानीसे निकलकर चलागया था, जो कुछ दिनों शाहपुरामें ठहरनेके बाद नया शहर याने छावनी ब्यावरमें जारहा; और थोड़े ही अ़रसहके बाद उसके बालबच्चे भी उदयपुरसे निकाल दियेगये. कुछ समय पीछे रामसिंहको

वापस बुलानेकी कोशिश हुई थी, लेकिन् उसी अ़रसहमें उसका इन्तिक़ाल होगया (१).

विक्रमी १९०० वैशाख कृष्ण ७ [हि० १२५९ ता० २० रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८४३ ता० २१ एप्रिल] को महाराणा स्वरूपसिंहने परलोकवासी महाराणा जवानसिंहके बनवाये हुए जवानस्वरूपेश्वर महादेवके मन्दिर (२) की प्रतिष्ठा कराई. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० ता० १७ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० १८ मई] को रीवांके महाराजा विश्वनाथसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूरी सामान आया, और नज़ हुआ; विक्रमी आश्विन शुक्ल ३ [हि० ता० १ रमज़ान = .ई० ता० २६ सेप्टेम्बर] को जोधपुरके महाराजा मानसिंहके इन्तिक़ालकी ख़बर आनेके सबब मातमी दर्बार (३) हुआ.

विक्रमी पौष शुक्ल ३ [हि० ता० २ ज़िल्हिज = .ई० ता० २४ डिसेम्बर] को महाराणा तीर्थयात्राके लिये मातृकुण्डकी तरफ़ पधारे, जो मेवाड़में राजधानी उदयपुरसे ईशान कोण को ४० मीलसे कुछ ज़ियादह दूर बनास नदीके तीरपर है. लोगोंका बयान है कि इस जगह परशुरामने अपनी माताका श्राद्ध किया था. इसी समय महाराणाने वहां एक महादेवका मन्दिर और एक घाट भी बनवाया. विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्हिज = .ई० १८४४ ता० १६ जैन्युअरी] को जयसलमेरके महारावल गजसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूरी सामान आया, और नज़ हुआ.

विक्रमी १९०१ आषाढ़ शुक्ल १० [हि० १२६० ता० ८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २५ जून] को महाराणाने नाथद्वारे पधारकर अपना चौथा विवाह घाणेरावके

---

(१) रामसिंहका एक बेटा ज़ालिमसिंह विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = .ई० १८६४] में महाराणा शम्भुसिंहकी ख़िद्मतमें हाज़िर हुआ, जिसके तीन बेटे अक्षयसिंह, केसरीसिंह और उम्मेदसिंह इसवक़ मेवाड़के जुदे जुदे ज़िलोंपर हाकिम हैं.

(२) यह मन्दिर राज्यमहलोंके बड़ीपोल दर्वाज़हके बाहिर पूर्वी लाइनमें है.

(३) इस रियासतमें दस्तूर है, कि जब कोई रिश्तहदार अथवा क्षत्रिय राजा गुज़र जावे, तो पासबान लोग महाराणाको ख़बर सुनानेसे पहिले कानके मोती खोलनेके लिये अ़र्ज़ करते हैं, और बाद उसके कुल ज़ेवर उतारकर मृत्युके समाचार सुनाये जाते हैं. इसके पश्चात् महाराणा स्नान करते हैं, और नौबत नफ़ीरी वग़ैरह शादियाने बंद होकर कुल सर्दार उमरावोंको मातमी दर्बारके लिये इत्तिला दीजाती है, और महाराणा सिफ़ेद पोशाक पहिनकर दर्बारमें विराजते हैं, फिर बेदलाके राव वग़ैरह सम्बन्धी सर्दारोंमेंसे कोई सर्दार महाराणाको कानके मोती व कुल ज़ेवर पीछा पहिनाकर शादियानह बजनेकी इजाज़त देनेके लिये अ़र्ज़ करता है, और पानके बीड़े तक्सीम होकर दर्बार बर्ख़ास्त होजाता है.

मेड़तिया ठाकुर अजीतसिंहकी बेटी अभयकुंवर बाईसे किया. यह ठिकाना क़दीम ज़मानह से उदयपुरके उमरावोंमें था, लेकिन् अब ज़िले गोड़वाड़के साथ रियासत जोधपुरके मातह्त है, जिसका ज़िक्र महाराणा तीसरे अरिसिंहके हालमें लिखागया है- (देखो एष्ठ १५७२). इन महाराणाके तीन विवाह तो पहिले होचुके थे, जिनमेंसे पहिला विवाह ठिकाने बागोरपर गद्दीनशीन होनेके पेश्तर सेंट्रल इण्डियामें राघवगढ़के राठोड़ गुमानसिंहकी बेटी गुलाबकुंवर-बाईके साथ, दूसरा विवाह युवराज नियत कियेजानेपर विक्रमी १८९८ मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि० १२५७ ता० १५ शव्वाल = ई० १८४१ ता० २९ नोवेम्बर] को चावड़ा ज़ालिमसिंह की बेटी फूलकुंवर बाईके साथ राजधानी उदयपुरमें, और तीसरा गद्दी विराजनेके बाद विक्रमी १९०१ माघ कृष्ण ४ [हि० १२६१ ता० १८ मुहर्रम = ई० १८४५ ता० २७ जैन्युअरी] को बीसलपुरके भाटी साहिबसिंहकी बेटी चांदकुंवर बाईके साथ देलवाड़ाकी हवेलीमें हुआ.

विक्रमी १९०२ वैशाख कृष्ण ७ [हि० ता० २० रबीउस्सानी = ई० ता० २८ एप्रिल] को जयपुरके महाराजा रामसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूरी सामान आया, जो नियमानुसार पेश हुआ. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ९ (अक्षय नवमी) [हि० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को महाराणाने श्री एकलिङ्गेश्वरकी पुरीमें पधारकर कुल सीसोदियों सहित मद्यपान त्यागन किया; क्योंकि इस वंशमें पहिले शराब पीनेका रवाज बिल्कुल नहीं था, बल्कि यहांतक मश्हूर है, कि महाराणा राहपको किसी सख़्त बीमारीकी हालतमें हकीमोंने धोखेसे दवाके साथ शराब पिलादिया था, महाराणाको आराम होनेपर भेद ज़ाहिर होगया, और उन्होंने पिघला हुआ सीसा पीकर शरीर त्यागन करदिया, तबसे उनकी औलाद सीसोदिया (१) कहलाने लगी; परन्तु इस बयानका कोई तह्रीरी सुबूत नहीं है, और बयानमें भी बहुतसे इख़्तिलाफ़ हैं, अलबत्तह इसमें शक नहीं, कि सीसोदिया लोग क़दीम ज़मानहमें शराब नहीं पीते थे. इस नशेने सिर्फ़ महाराणा दूसरे अमरसिंहके समयसे, जो विक्रमी १७५५ [हि० १११० = ई० १६९८] में मेवाड़की गद्दीपर बैठे, रवाज पाया, जिसको इन्होंने अपनी कुल मर्यादाके विरुद्ध तथा हानिकारक समझकर दोबारह अपने पुराने रवाजको मज़्बूत करनेके लिये छोड़दिया, और एकलिंगेश्वरकी पुरीमें एक पाषाण लेख क़ाइम कराकर सीसोदिया क्षत्रियोंको शराब पीनेकी मनादी करादी.

---

(१) सीसा एक धातु है, जिससे बंदूक़की गोली बनाते हैं, और उद नाम पीनेका है, ये दोनों शब्द मिलकर सीसोद लक़ब हुआ, और उसी लफ़्ज़से सीसोदिया बना है; बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि सीसोदा ग्रामके नामसे सीसोदिया कहलाये. इस शब्दका ज़िक्र पहिले भी एष्ठ ६७३-७४ में होचुका है, परन्तु यहां मौक़ा देखकर दोबारह लिखागया.

उक्त महाराणा यहांसे रवानह होकर नाथद्वारा व कांकड़ोली होते हुए उदयपुर पधारे.

महाराणाको मुल्की इन्तिज़ामकी दुरुस्ती और रियासती क़र्ज़ह अदा करनेकी बहुत फ़िक्र थी, जिसमें महता शेरसिंह और सेठ जोरावरमल्लने बड़ी तन्दिही और ख़ैरख़्वाहीके साथ महाराणाके हुक्मकी तामील की. विक्रमी १९०३ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२६२ ता० २९ रबीउल्अव्वल = ई० १८४६ ता० २८ मार्च] को महाराणा सेठ जोरावरमल्लकी हवेलीपर मिह्मान हुए, जहां उक्त सेठने घोड़ा, हाथी, जेवर, पोशाक तथा दस हज़ार १००००) रुपया नक़्द नज़ करनेके अलावह जो कुछ क़र्ज़ह रियासतकी तरफ़ अपना बाक़ी था उसका फ़ैसलह भी महाराणाकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ करदिया. महाराणाने खुश होकर सेठ जोरावरमल्लको पुरानी जागीरके सिवा ग्राम कूंडाल, उसके बेटे चांदनमल्लको पालकी और उसके पोते गम्भीरमल्ल व इन्द्रमल्लको मोतियोंकी कंठी तथा सरोपाव इनायत किये. इस फ़ैसलहको देखकर रियासतके कुल क़र्ज़ख़्वाहोंने भी रज़ामन्दी और सुहूलियतके साथ फ़ैसले करलिये, और इन नेक ख़िद्मतोंसे महता शेरसिंह व सेठ जोरावरमल्लकी ख़ैरख़्वाही बहुत कुछ प्रसिद्ध हुई.

जोकि महाराणाकी तवज्जुह रियासतके सुधारकी तरफ़ पूरी थी, और वह रफ़्तह रफ़्तह हरएक कामकी दुरुस्ती करते जाते थे, उन्होंने ख़ज़ानहके प्रबन्धकी ग़रज़से रोकड़का भंडार (ख़ज़ानह) कोठारी छगनलालके सुपुर्द किया; और एक सर्कारी दूकान इस ग़रज़से मुक़र्रर की, कि उसमें साहूकारी तरीक़ेसे रुपयेका लेन देन कियाजावे. यह दूकान जो अब " रावली दूकान " के नामसे प्रसिद्ध और बहुत कुछ तरक़ी पर है, लक्ष्मीदास गणेशदासके नामसे मश्हूर कीजाकर कोठारी केसरीसिंहके सुपुर्द कीगई. कोठारी छगनलाल और केसरीसिंह दोनों भाई महाराणाके खानगी और मोतबर नौकरोंमेंसे थे. विक्रमी श्रावण कृष्ण ९ [हि० ता० २२ रजब = ई० ता० १७ जुलाई] को महाराणा भीमसिंहके दामाद जयसलमेरके रावल गजसिंहके परलोकवासकी ख़बर आई, जिसके सुननेसे राज्यमें बहुत अफ़्सोस हुआ, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणाने मातमी दर्बार किया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को बड़ी महाराणी गुलाबकुंवर बाईने तुलसीका विवाह बड़े उत्साहके साथ किया, और सर्दार पासवानोंको ख़िल्अ़त तथा चारणोंको हाथी, घोड़े, और सरोपाव दियेगये. विक्रमी माघ शुक्ल १४ [हि० १२६३ ता० १२ सफ़र = ई० १८४७ ता० ३० जैन्युअरी] को पोलिटिकल एजेण्ट रॉबिन्सन साहिब नीमचकी छावनीसे उदयपुरमें आये, और १० दिनतक यहां ठहरे.

इन्हीं दिनोंमें एक बड़ा भारी उपद्रव खड़ा हुआ, याने बागोरके महाराज

शेरसिंहका बड़ा पुत्र शार्दूलसिंह, जिसकी निस्बत अव्वल तो शेरसिंहने महाराणासे अर्ज़ की, कि वह (शार्दूलसिंह) मेरी निगाहसे बाहिर और बदख्वाह लोगोंकी बहकावट सिखावटमें आकर बदचलन होरहा है, और दूसरी तरफ़से यह मालूम हुआ, कि वह गद्दी बैठनेकी उम्मेदसे महाराणाको ज़हर देनेकी कोशिश कररहा है. इसपर महाराणाने शार्दूलसिंहको अपने पास बुलाकर धमकाया, और पूछा, मगर वह उसवक्त मारे खौफ़के कांपने लगा, तब उसको तसल्ली देकर साज़िशमें शरीक रहने वाले शस्सोंके नाम दर्याफ्त किये. उसने महता रामसिंह व पाणेरी गंगाराम वगैरह कई आदमियोंके नाम लिखवादिये. यह ख़बर सुनते ही महता रामसिंहने तो भागकर शहरके बाहिर पोलिटिकल एजेण्टके डेरोंमें पनाह ली, और पाणेरी गंगाराम व कुंवर शार्दूलसिंह वगैरह लोग क़ैद कियेगये. महाराणाने रामसिंहको सौंप देनेके लिये पोलिटिकल एजेण्टसे बहुत कुछ कोशिश की, लेकिन् वह महाराणाके सुपुर्द नहीं किया गया. पाणेरी गंगाराम मादड़ी ग्रामका रहने वाला ब्राह्मण था, महाराणाको जल, शराब और दवाई वगैरह पिलाने खिलानेका काम उसीके सुपुर्द था (१), और वह मुसाहिब भी था; महाराणाने उसके ज़िम्महका कुल कारखानह अपने ख़ानगी नौकर तेजराम व उदयरामके सुपुर्द करदिया. विक्रमी १९०४ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० ता० २ रजब = .ई० ता० १६ जून] को बड़ीपोल दर्वाज़हके बाहिर एक सुरह (पाषाण लेख) खड़ी करवाईगई, जिसमें यह मज़्मून लिखवाया, कि कुंवर शार्दूलसिंह और उसकी औलाद राज्यके हक़से, और महता रामसिंह तथा उसकी औलाद रियासती कामसे हमेशहके लिये ख़ारिज कियेजावें. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रजब = .ई० ता० ३ जुलाई] को महता रामसिंहकी औरत, बेटे और कुटुम्बके लोग शहर तथा मुल्क मेवाड़से बाहिर निकलवाये जाकर उसका कुल माल अस्बाब व जायदाद ज़ब्त करली गई. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ता०२१ रजब = .ई० ता० ५ जुलाई] को रावत् दूलहसिंह महलोंमें बुलवाया गया, लेकिन् वह क़ैद कियेजाने या मारडाले जानेके खौफ़से न आया, क्योंकि महाराणा तो उसपर पेश्तरसे ही नाराज़ थे, और उसके विरोधी फ़िर्क़ेका इन दिनों ज़ोरशोर था. तब

---

(१) इस रियासतमें पुराने ज़मानहसे यह दस्तूर था, कि जब कोई महाराणा गद्दी बैठते, तब ग्राम मादड़ीके कुल ब्राह्मण बुलायेजाकर उनमेंसे एक आदमीको महाराणा अपनी नौकरीके लिये खुद चुन लेते थे, और वही उनकी ज़िन्दगीतक इस कामपर मुक़र्रर रहता था. जब दूसरे महाराणा गद्दीनशीन होते, तो फिर उसीतरह ग्रामके ब्राह्मणोंमेंसे कोई दूसरा आदमी चुनलिया जाता, लेकिन् थोड़े अरसहसे यह तब्दीलीका रवाज दूर होगया है.

महाराणाने कायस्थ हरनाथ, ढींकड्या उदयराम, कायस्थ धीरजलाल, तथा ज्योतिषी विजयरामको उसके पास भेजकर कहलाया, कि तुम भी कुंवर शार्दूलसिंहकी सलाहमें शरीक होनेके सबब सज़ावार हो; इसपर उसने महाराणाकी ख़िद्मतमें बहुतसे .उज़्र पेश किये, लेकिन् एक भी मन्जूर न हुआ, और विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १२ [हि० ता० १२ शअ्बान = .ई० ता० २५ जुलाई] को वह अपने कुटुम्ब सहित निकालाजाकर अपनी जागीरके गांव आसींदमें जा रहा. कहते हैं, कि दूलहसिंहपर महाराणाको ज़हर देनेकी साज़िशमें शार्दूलसिंहके शामिल रहनेकी तुह्मत अदावतके सबबसे लगाईगई थी.

अब हम यहांपर वह हाल लिखते हैं, कि जिसके सबबसे महाराणाने ठिकाने लावा (सर्दारगढ़) को फ़ौजकशीके साथ रावत् चत्रसिंह शक्तावतसे छीनकर ठाकुर ज़ोरावरसिंह डोडियाको दिया. महाराणा लाखाके ज़मानहसे डोडिया धवलकी औलाद वाले मेवाड़के महाराणाओंकी सेवामें बड़े ख़ैरख़्वाह और .इज़्ज़तदार नौकर बने रहे थे, जिसका ज़िक्र इस इतिहासमें कई मौक़ोंपर लिखा गया है, और उसी वंशमें डोडिया ठाकुर नवलसिंहके दो बेटे हटीसिंह और इन्द्रभाण थे, जिनमेंसे हटीसिंहकी जागीरमें कंवारियाका पट्टा रहा, और इन्द्रभाणके बेटे सर्दारसिंहको महाराणा दूसरे जगत्सिंहने लावाका पट्टा देकर उसे अपना उमराव बनालिया था. सर्दारसिंहने विक्रमी १७९५ श्रावण शुक्ल १० [हि० ११५१ ता० ८ रबीउस्सानी = .ई० १७३८ ता० २७ जुलाई] के दिन लावाके क़िलेकी नीव डाली, और विक्रमी १८०० [हि० ११५६ = .ई० १७४३] में क़िला व महल वग़ैरह कुल इमारत २१०८७९९ ॥--॥) रुपये लागतसे बनकर तय्यार हुई. इस अवसरपर सर्दारसिंहने महाराणाको क़िलेमें मिह्मान किया, और उसी समय क़िलेका नाम सर्दारगढ़ रक्खा गया. सर्दारसिंहके बाद उसका बेटा सामन्तसिंह क़िले और जागीरका मालिक बना, लेकिन् वह बिल्कुल कम अक़्ल था, उसने एक तेलीको अपना मुसाहिब बनाकर अपने छोटे भाइयोंसे नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा की. इसी अरसहमें शिवगढ़के जागीरदार रावत् लालसिंहको कुरावड़के रावत् अर्जुनसिंह कृष्णावतने अपने बेटे ज़ालिमसिंहके वैरमें मारडाला, जिसका हाल महाराणा दूसरे भीमसिंहके वृत्तान्तमें लिखा गया है-(देखो पृष्ठ १७१२-१३). लालसिंहका बेटा संग्रामसिंह इन दिनों आपसकी अदावतके सबब अपने बचावके लिये पनाहकी जगह ढूंढता फिरता था; उसने डोडिया सामन्तसिंहको, अपने ठिकानेके इन्तिज़ामसे ग़ाफ़िल पाकर विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = .ई० १७८३] में क़िले सर्दारगढ़ (लावा) से निकाल दिया, और उसपर अपना क़बज़ह जमालिया. सामन्तसिंह

तो ठिकाना वापस लेनेके लाइक् न होनेके कारण उसी हालतमें मरगया, और उसके बेटे रौड़सिंहने भी तक्लीफ़की हालतमें अपनी उम्र पूरी की; लेकिन् उसका बेटा ज़ोरावरसिंह, जो सभाचतुर और अक्लमन्द होनेके अलावह हिन्दी कवितासे भी वाकिफ़ था, महाराणा जवानसिंहकी खिद्मतमें हाज़िर रहकर अपनी जागीर (सर्दारगढ़) वापस मिलनेकी कोशिश करने लगा, और उसके पूर्वजोंकी खिद्मतोंको याद करके महाराणा भी उसपर बहुत कुछ मिहर्बानी रखने लगे; इसी तरह दो पीढ़ीतक लगातार कोशिश व मिहनत करते रहनेपर तीसरी पीढ़ीमें महाराणा स्वरूपसिंहने गद्दीनशीन होकर उसे उसकी क़दीम जागीर वापस दिलाई जानेका हुक्म फ़र्माया. लेकिन् इसवक्त सर्दारगढ़पर शक्तावत रावत् संग्रामसिंहके पुत्र जयसिंहका पोता, याने अभयसिंहका बेटा रावत् चत्रसिंह काबिज़ था, इसलिये महाराणा चाहते थे, कि उसपर कोई कुसूर साबित करके उसे जागीरसे खारिज करें, कि इसी अरसहमें ऊदावतोंके खेड़ावाले राठौड़ मानसिंह ऊदावतको, जो पहिले बागी होगया था, रावत् चत्रसिंहके काका सालिमसिंहने मारडाला. इसपर महाराणाने फ़र्माया, कि हमने देवगढ़के रावत् नाहरसिंह की मारिफ़त खातिरदारीके साथ मानसिंहको अपने ग्राममें बिठादिया था, उसको सालिमसिंहने दग़ासे मारडाला, यह उसका बड़ा भारी कुसूर है; और इस कुसूरमें सालिमसिंहका ग्राम कुंडेई ज़ब्त होकर सर्दारगढ़पर भी खालिसह भेजदिया गया, लेकिन् कुछ दिनों बाद रावत् चत्रसिंहकी तरफ़से महाराणाकी खिद्मतमें एक अर्ज़ी बतौर इक़ारनामह पेश होनेपर, जिसकी नक्ल नीचे दर्ज कीजाती है, सर्दारगढ़से खालिसह उठा लियागयाः-

रावत् चत्रसिंहकी अर्ज़ीकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वसती श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री अनदाताजी हजुर षानाजाद चाकर छोरु रावत चत्रसीघरी अरज मालम वे अप्रंच ॥ ऊदावत मानो दोडतो हो सो श्री हजुर देवगढ़ रावजीने षातरी रुको बगसेने रावजीरी षातरी वीने देवाअने पाछो षेडा महे बेसायो, जीने सगतावत सालमसीघ मार नाष्यो, जीप्र श्री हजुर बेराजी हुवा ने गाम कुडेइी षालसो कीदो, सो वाने पकडलावो, जीप्र नटेन अरज कराई न वाने पकड्या नही जीरी भोलप कीदी, जी तावे श्री हजुर बेराजी वेने लावे षालसो

मेल्यो, न पांच रुप्या तगसीरीका लीदा न श्री हजुर धणयाप करे न प्रवस्ती करे न पाछी उठंत्री करायने बगसी, सो अबे मु सालमसीघ ताबारी कदी अरज करु नही, मारो जोर पुगे जठे ठावो वे तथा मारा गाम म्हे पटा म्हे आवे जावे, तो पकडेन नजर करदुं, ओर सालमसीघने कठे ठावो वेन वाने श्री हजुर बंदोबसत करे जीरो मु वारे तावे अरज करु न्ही, करु तो तगसीरवार.

अगर्चि इस अर्ज़ीके पेश होनेसे लावा (सर्दारगढ़) का खालिसह उठगया, लेकिन् चत्रसिंहपर हमेशह इसी बातका तकाज़ह होता रहा, कि सालिमसिंह तुम्हारे ठिकानेमें आता जाता है, उसे गिरिफ्तार करके हाज़िर न करोगे, तो सख्त सज़ा पाओगे. रावत् चत्रसिंह भी किसीक़द्र जुनूनी और कमअक्ल था, वह कभी नम्रता और कभी हठधर्मीके साथ जवाब देता. आख़िरकार विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = .ई० १८४७] के शुरूमें उसपर ज़ियादह दबाव डाला गया, लेकिन् उसने कुछ पर्वा न की. इन्हीं दिनोंमें एक रोज़ महाराणाने उसको रुख्सत होनेके वक्त बीड़ा (१) न दिया, जिसपर उसने महलोंके अन्दर रसोड़ेके महलमें डेरा करदिया, और अपनी हवेलीपर नहीं गया. महाराणाने नाराज़ होकर चन्द अफ्सरोंको सौ पचास सिपाहियों समेत लावाकी ज़ब्तीके लिये भेजदिया. जब चत्रसिंहको यह साफ़ मालूम होगया, कि मुझसे लावाका क़िला छीनलिया जायेगा, वह जल्द ही उदयपुरसे भागकर लावेको चलागया. इसके बाद महाराणाने पैदल सिपाहियोंके दो तीन निशान साथ देकर पुरोहित शम्भुनाथको लावे भेजा, और उसने वहां पहुंचकर क़िलेके गिर्द पहरे बिठादिये. चत्रसिंहके काका हमीरसिंहने भी थोड़ासा अन्न तथा गोली बारूद एकट्ठा करके क़िलेके दर्वाज़े बन्द करलिये. महाराणाने फिर फ़ौज व जमइयत भेजी, और पीछेसे कुछ तोपखानहके साथ प्रधान महता शेरसिंहका पुत्र ज़ालिमसिंह हुक्म पाकर वहां पहुंचा. विक्रमी आश्विन [हि० शव्वाल = .ई० ऑक्टोबर] के शुरूमें क़िलेकी दीवारपर गोलंदाज़ी शुरू हुई, और सुब्ह शाम बराबर फ़ाइर होते रहे, जिससे क़िलेकी पूर्वी दीवार दो दो तीन तीन हाथ ऊपरकी तरफ़से गिराकर कुछ हिस्सह क़िलेका तोड़ डाला गया, लेकिन् उसके नीचेकी तरफ़ एक बहुत ऊंची और मज़्बूत दीवार और खड़ी थी, इसलिये सिपाहियोंको क़िलेके अन्दर जानेका उम्दह रास्तह न मिला. पुरोहित शम्भुनाथने फ़ौजी अफ्सरोंसे ताकीद करना शुरू किया, कि सीढ़ियें लगाकर एकदम हमलह करदिया जावे, और महाराणाकी खिद्मतमें एक अर्ज़ी इस मज्मूनकी

(१) अव्वल दरजहके उमराव और बाज़ बाज़ दूसरे दरजहके सर्दारोंको भी रुख्सतके वक्त महाराणा पानका बीड़ा हमेशह देते हैं.

लिखभेजी, कि अफ्सर लोग हमलह नहीं करते. विक्रमी आश्विन शुक्ल ६ शुक्रवार [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १५ ऑक्टोबर] के दिन ज़ालिमसिंहने कुल अफ्सरों व सर्दारोंको एकट्ठा करके उनसे यह राय ली, कि हमलह किया जावे या नहीं. इसपर सब लोगोंने मुत्तफ़िक़ राय होकर कहा, कि बाहिरके पड़कोटेकी फिरनी (फ़सील) ऊपरकी तरफ़ सिर्फ़ एकही जगहसे किसीक़द्र गिरी है, और उससे आगे भीतरका क़िला बहुत ऊंचा है, इसलिये ऐसी हालतमें हमलह करना बिल्कुल बेफ़ायदह, और सिपाहियों की जान मुफ़्तमें खोना है. लेकिन् उसवक़ पुरोहित शम्भुनाथ बोला, कि यह सिर्फ़ अफ्सरोंकी बहानहबाज़ी है, ये लोग अपनी नौकरीका ख़याल न रखकर, जिसके लिये महाराणा उन्हें तन्स्वाह देते हैं, अपना आराम और बचाव ढूंढते हैं. इसी अरसहमें महाराणाका एक ख़ास ताकीदी रुक्का इस ग़रज़से पहुंचा, कि क़िलेपर फ़ौरन् हमलह करदो. ज़ालिमसिंहने वह हुक्म तमाम सर्दारों और अफ्सरोंको सुनाया, जिसपर सिपाहियोंने जोशमें आकर विक्रमी आश्विन शुक्ल ८ [हि० ता० ७ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १७ ऑक्टोबर] को चार घड़ी रात बाक़ी रहे क़िलेकी दीवारपर सीढ़ियां जा लगाई. हमलह करनेवाले लोगोंका शोर व गुल सुनकर क़िलेके लोगोंने भी बन्दूकें चलाना शुरू किया, और बड़े भारी भारी पत्थर, जो क़िलेकी दीवारपर पहिलेसे जमा रक्खे थे गिराये, जिनसे दो तीन सीढ़ियां टूटनेके अलावह कई आदमियोंका नुक्सान हुआ, और कई बहादुर सिपाही दीवारपर चढ़कर मारे गये. इस दीवारके आगे एक दोहरी दीवार और भी थी, इसलिये बाज़ सिपाही क़ाबू न पाकर पीछे कूद पड़े. अगर्चि इस मौक़ेपर फ़ौजके लोगोंने बहादुरीमें किसी तरहकी कमी न की, लेकिन् पुरोहित शम्भुनाथकी खामख़यालीसे सिपाहियोंको लौटकर मोर्चोंपर आना पड़ा. इस बारेमें ज़ालिमसिंहने अपने पिता महता शेरसिंहके नाम एक काग़ज़ लिखा था, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज हैः-

ज़ालिमसिंहके काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री ऊदपुर सुभसुथाने सरब ओपमा अनेक ओपमा लाग्मेक भाईजी स्हेब श्री ५ श्री सेरसीघजी अेतान लावाका डेराथी छोरु जालमसीघ लीषावता मुजरो मालम होसी, अठाका स्माचार भला है, आपका स्दा आरोग च्हेजे जु छोरुन

प्रमसुष हुवे स्दा सुनजर हे जुहीज रषावसी, डीलाका घणा जतन रषावसी, डीला पाछे सारो मुदो हे अप्रंच। आपको कागद आयो स्माचार बाच्या, अर काले श्री जीको रुको आयो जी म्ह हलाकी हदसुदी ताकीदी आई, सो आ जगड़ो १ रात रीयो, हलो कीदो जीका स्माचार तो साडीवालेरे हाते लष्योईज हो, अर वोतो ठाम पगाई लष्यो हो सो बीस पचीस आदमी अेकलीग पलटणरा चड़्या, सो वतरा तो चड़्या न्ही अर पाच ज्णा चड़्या अर नसरण्या २ टुट गई अर अेक नीसरणीरा गात्या नीसर गया, वलाअेती चड़्यो सो नसरण्या पड़गई अर कल्याणसीघ सो चड़्यो न्ही सो बाकी हलो चड़्यो न्ही, सो अेकलीग पलटणरो हवालदार मरजो गवरबेग तो म्ह जाऐने काम आयो अर म्ह जाअे तरवार बजाई, अर बाकीरा आदमी पाछा कुदेन आया, ओर जमीत लोग फेरु आवे अर तोपा जबरी आवे सो सारी सारकर जलदी भेजसी अर अेकलीग पलटण हाला हदसुदी मरदमी कीदी, प्ण नसरणी टुटगई, जीरो तो हात काई ओर दुसरा लोगा पण तन हद सुदी दीदो, जीकी अठारी अरज करबा ताबे सवलालजीने भेजा हे, सो अे मालम करेगा अर ओर स्माचार सारा पाछाथी लषा हा. अठे मे गणा कुसी हा, ओर अेकलीगपलटणका जषमीना ताबे केवे सो म्हारा सरसते परमाण मले जीदी तो लेवा, सो स्माचार पाछा लषसी सो काई प्रम्ण देवावा; जगड़ो गतरस होअेगीओ, अर काम पेस पुगो न्ही जीरी म्हारे हद सुदी चंता लागरही हे, सो जीरी वदासीरा स्माचार कठा सुदी लषु, लषबाजु हे न्ही. कागद स्माचार लषबो करसी, छ० १९०४ आसोज सुद ८. ओर गोलो तोपरो मगायो सो पाछाथी भेजा हा, जषमी हुवा मुवा २० आस्रे.

भंडारी गोकलचंदको मुजरो बाचसी स्दा सुनज्र राषसी.

इस लड़ाईमें मारेजाने वाले तथा ज़ख़्मी होनेवाले आदमियोंका हाल, जो फ़ौजमेंसे अजीटन शैख़ चांदने मेजर लालमुहम्मदके नाम लिखकर उदयपुर भेजा था, उस काग़ज़के देखनेसे मालूम होता है, कि बारह तेरह आदमी तो हमलह करनेके वक्त ही जानसे मारेगये, और बहुतसे ज़ख़्मी होकर डेरोंमें लायेजानेके बाद मरे; जिन सबकी संख्या ५० या ६० के क़रीब थी, और इतने ही आदमी घायल होकर बचे. यह ख़बर सुनकर महाराणाको बहुत गुस्सह आया, और उन्होंने कई सर्दारोंको मए उनकी जमइयतों तथा पैदल सिपाहके, और मांडलगढ़से शम्भुबाण तोप तथा खैराड़के राजपूतोंकी जमइयत साथ देकर महता गोकुलचन्दको लावे भेजा; और क़िलेपर बड़ी तेज़ीके साथ गोलन्दाज़ी होने लगी. इसके बाद महाराणाने प्रधान महता शेरसिंहको यह हुक्म देकर वहां भेजा, कि जिस तरह होसके क़िला क़ाइम रखकर जागीरदारको

सज़ा देनेकी कोशिश कीजावे. उक्त प्रधानने बड़ी अ़क्लमन्दी और होश्यारीके साथ मोर्चे लगाकर क़िले वालोंको तंग किया, यहांतक, कि अख़ीरमें रावत् चत्रसिंहने घबराकर अपनी इ़ज़्ज़त और जानकी पनाह मांगी; और यह दर्ख्वास्त क़बूल होनेपर उसने विक्रमी १९०४ मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० १२६३ ता० २३ ज़िल्हिज = ई० १८४७ ता० १ डिसेम्बर] को पिछला चार घड़ी दिन रहे क़िला शेरसिंहके सुपुर्द करदिया, जिसका तफ्सीलवार हाल पाठकोंको महता शेरसिंहकी दो अ़र्ज़ियोंसे, जिनकी नक़्लें नीचे लिखीजाती हैं, मालूम होगाः-

महता शेरसिंहकी पहिली अ़र्ज़ी.

॥ श्रीएकलीगजी. ॥ श्रीरामजी.

लालसीघ, गरधारीसीघ, देवीसीघ, समरतसीघ, गुलाबसीघ, रावत जवानसीघ को धरती हात लगाऐ मुजरो मालम वे, चोईसा सवलालरो आसरी बचन मालम वे.

॥ सीध श्री श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री प्रथीनाथ हजुर अरज षानाजाद कीदो मनष महेता सेरसीघको धती हात लगाऐ मुजरो अरज मालम वे, श्री षावंद ईश्वर तुल है अप्रंची ॥ अठाको अहैवाल दीन प्रत लीष्यो, सो तो मालम हुवोई वेगा, हुकम परमाणै रावत चत्रसीघजी कसुरकी अरज लीष दीदी और मगसर बुद १० गुरे दन घड़ी ४ रेता श्री षावंदाका तेज प्रतापथी रावतजी वा हमेरसिंघजी ससत्र मैल अेकलिंग पलटणरा जापता मेंहै आअे गया, अर बगत तंग आयो जीसु वाका मनष, चाकर वा प्रदेसी हे ज्यांने तो समाल सवेरे नीकाल्या जावेगा अर अेकलिंग पलटणरा पेरा ६, भीम पलटणरा पेरा ४ लेन स्वलाल चौईसाने अर लाला धीरजलालने मेल्या, सो सोबेदार षानमेमद अर पेरा २ ने तो दरवाजे मेल्या, तालो कुची सोबेदार बसु वेगया, अर पेरा ८ बारला डंडारी बुरजाप्र लगाऐ दीदा, नारबुरज १, गणेस बुरज १, जलबुरज १, फतै बुरज १, दंडो तुटो जठाकी २ बुरजा प्र०, १ भेरु बुरज, १ नारबुरज नषे, २ दुजी बुरज हे जठे ई प्रमाणे लगाया, अब अणाका मनषा वासते रथ काकड़ोली श्री जीदुवारा सु मगाया है जत्रे डेरो षडो कराऐ दीदो है, सो रावतजी अर वारा मनष साराई ऊठे रहेगा अर जापता

वासते एकलींग पलटण, भीम पलटणका पेरा रहेगा; ओर श्री षावंदा फरमाई छी सो गड पाड़ आवजे, सो गडने सुणता तो सुभक छा, प्रत गड तो श्री षावंदका चार ही हाथ माथे वे अर अडुड लषसमी लगावे अर हकबाद बड़ी अकलदारी सुं गड बंदावे जस्या हे, एक डंढा ही मजबुत पका हे अर घाटापर अर सीवाडा ऊपर हे, जीकी अरज तो पेतावा मालुम करुगा, जठा पछे श्री षावंद हुकम करेगा जी माफक करवामे आवेगा, हाल तो अठे पाडवो तुल्यो हे न्ही, कारण अेक तो साराके बचे हे, दुजो घाटो नजीक, जणीसु अणी जाऐगा तो षालसो अर माथारषो प्रतीतको रहे जसी जायगा हे, अर जी सवाऐ बुरज ऊड़ावा तो हजारा तो लागे अर लाषाको काम बीगडे; मेल जो अलोकीक हे, अर जाऐगा जो हासलकी बदवारीकी हे, सो बी अरज पेतावा मालुम करुगा. अबे दन गणा गोलवो तुल्यो न्ही ज्यो गडने पाडवोई तुल्यो तो जीने श्री षावंद बीच्यार हुकम करेगा ज्योई पाडजावेगा, हाल तो २ नीसांण अफसरां सुदी अेक अमरगढकी भाएप जाजपुर का असवारामे कानावत बड़दर्सीघ, एक जमादार षाजबगसजीने अर ३० असवार मेल आण हाजर वुगा, और चीतोड़, जाजपुर, माड़लगढकी जमीत तोपने तो प्रभारी रवाने करुगा अर ऊदेपुरकी तोपा अर संभुबांण तोपने लेर पेतावा आऊ हुं, क्यो मगराको काम वी गतरस वेरयो हे सो बणी बणाई फोज हे अर छावणी देबारी बारणे राषवारी श्री षावंदा बीच्यारी हे. और गोकलचंद जाजपुरका काम तावे जमीतकी लषी सो बी सीषदे आऊहुं, षानाजादके तो पेतावाको आसरो हे, सुदरशट फरमाअे षास रुको हीनाऐत फरमावे—सं० १९०४ मंगसर वीद १० गुरे रात आदी. श्री जी का तपसुं हीताबे साहेबसु तो मुबंदी सो बादी अने तो मालम हे, पण हीकबाल धणीको; ओर कालुराम लषी सो अरज मालम हुई जे अर षानाजाद करीआयो सो दुवो बगस्योई हो, फेर छगनलालने दुवो होजाऐ.

शेरसिंहकी दूसरी अर्ज़ी.

॥ श्रीएकलींगजी. ॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री प्रथीनाथ हजुर अरज षानाजाद कीदो मनष मेहेता सेरसीघको धती हातलगाअे मुजरो अरज मालम वे, श्री

हजुर ईश्वर है अप्रंची ॥ श्री पावंदाको रुको ईनायत हुवो, अदब बजाये माथै चडाअ्रे लीदौ, हुकम आयो वीवरावार जबाब आयां मालुम वेगा, सौ कत्रोक अठाको अहेवाल कचौ आगे ऊठे लीष्यौ सो मालुम हुवौई वेगा, ओर काले नही लीषाणो जीरी माफ वे, ओर अेवाल ओर कत्री ऊपजी है ज्या सला अठाकी वा षानाजादने ऊपजी ज्या तथा सवाईसीघ, सामनाथने हुकम कीदौ जी देस काल की सला अठे ऊपजी सौ अरुबरु मालुम करणी है, सो पेतावा आयां मालुम करुंगा; ओर अठाकौ काम जो श्री पावंदाका हुकम प्रमाणे वेई गया, ओर षानांजाद वासते लिषी सो प्रतीत कीजे मती, चड़ ऊतरकी सुरत राषजे, सौ श्री पावंदा कौ अकबाल अर सुनजर कौ प्रताप अस्यो है सौ सारी त्रे आनद है, अर मनष कबीला ताबे हुकम लिष्यो सो हाल सीष देवौ तो तुल्यो नही सो लेराई चलाया है, ओर आवध पाती साराईका लेर बारीमें काड पाला पाला डेरामेंहे आएया, अर सवनाथने ई यां भेलो लेआया अर जनानाने अदबसु रथमें बेठाअे मारो डेरो कनातवालो जीने षडो करायो जी मेंहे लाया ओर वाकाई चाकरांके माथे आवद पातीका भारा बंदाये मोकल्या है, सो लीयां आवे है; ओर गडको सरंजाम, सलेषानौ भरमाअेल जाऐगा बदले हुकम आयौ सो आछी बगत देष सारा सरदारां सुदी गडमैंहे जाये नसाणकी पुजा कराअे गडमैं कायम कराऐ-दीदौ, पछे षानाजाद अर लालसीघजी, देवीसीघजी, गरधारीजी, समरतसीघजी, अजीठण सेष चांद, चोईसो स्वलाल जाअे जनानी मरदानी जगारे ताला जड्या हा जठे तो जड्या राष्या ओर बाकी कत्रोक असबाब संदुक, पेई, गांठ, ठामडा बारणे हा, सौ हो जठेई जनानी जगामे हे, कोटडीमे मीलाअेदीदा, कुच्या मारी लार पेरा हे जीमे सुपाई हे, अर तालां जडाअे कुच्यां अेकलीग भीम पलटणमें सुपाअेदीदी. दुजे दीन देवीसीघजीने, अजीठणने वा स्वलालने मेल ताला कुचीअ्र लपोटा छाप कराअे छाप कराअे दीदी है; हमेरसीघजीने तो गाडीमें बेठाया अर स्वनाथसीघने अर मोडाने जो पालो पेरामें रवाने करचो हे. ओर हुकम लीष्यो सलेषानो अणाने काई मले नही, सो देवो मारे हात कठे हे, यो तो सारो श्री षा-वंदाको हुकम वेगा सो वेगा; ओर हुकम आयो भरमाअेल जगा वे सो षुदाअेनाषजे, सो या हाल तुली नही, अरज कीदा पछे हुकम वेगा सो करवाम्हे आवेगा. तेषाना, ओव-स्या गणी है अर फुटी टुटी जो जाअेगा गणी है, जीसु तुरतई देषी जाऐ नही, अणीकी अरुबरु अरज कर बीच्यार ऊठाथी तुलेगा जीने मेलांगा, ओर बंदोबसत ताला कुची अर अेकलीग पलटण भीम पलटणरो जापतो पुरो करदीदो है, ओर मारवाडी प्रदेस्यां का हत्यार धराअे काड्या, दुजे दन पेरामें राष हत्यार दीदा दफेराका, अर हुकम प्रमाणे केदीदो है, सो कोई हरामषोरी करे ज्यारे चाकर रहोगा तथा षेड्या आवोगा, तो अबरके तो जीवता काड्या है, आगासु आवावालौ मार्यौ जावेगा अर देससु बेऊतन साहेब

करेगा; ओर फोज अठेही राषवाको हुकम आयो सो कत्रोक दादनीरो लोग (१) कीदो हो जीको तेह षरच पडवो तुल्यो नही जीसु आगे अरज लीषी, जीसवाअे दोअे नसाण जमादार कल्याणसीघका फेर मेलदीदा हे, श्री षावंद गणी कुसी राषे अठाका बंदोबसतमें कसर हे नही, ओर हुकम लिष्यो ऊठे फोज बणीरहे, जीमेह वांकी आंषमेहे बणी रहे सो च्यार नसाण, ५० अस्वार तथा ज्मादार षाजबगसजीने अर कानावत बडदसीघ अमरगढकी भायेपको पुरी प्रतीतको अर षेटाकी जमीमें रेवा वालो हे जीने मेल्या हे ओर षास दस-षता पानो अरजी लीषती बगत आण पुगो, हुकम आओ बावडी तो बुराऐदेणी, सो बावडी मेहे तो चीज बसत नाषदेवारो भरम आओ जीसु बुराइी न्ही ओर षानाजादने पेतावा हाजर वेवाको हुकम आया, सो वीद १४ को चाल्यो पेतावा हाजर वेगा, ओर नकसो ऊतारवा पीदरु (२) ने मेलदीदो हे. षानाजाद तो आण हाजर वेतो, प्रंत हुकम को ईंतजार हो, ओर चीतोड, जाजपुर, माडलगडकी तोप जमीतने हुकम आया पेली रवानह करदीदा हे, संबुबाण तोपने लेरा लीया आऊ हुं ओर रावतजीरे लेरा नसाण ३ सुंतो ज्मादार बालगोबीदने अर १ नसाण भीमपलटनको सोबादार जागीरषा, नसाण १ एकलीग पलटणको जीरो सोबेदार पानमेंमद, भेसरोडकी त्रफकी जमीत चढ्या पालो १०० आदमी, बारगीराका जमादार बलवंतसीग असवार २० सु ओर सलेदारांका तथा सरदारांका हे सो थाणाका सरदाराका असवार तो षेमलीसुं जावेगा. षानाजादके तो फगत पेतावाको ही आधार हे, सुदरसट फरमाअे षास रुको ईनायेत होवे, सं० १९०४ मगस्र वीद १३ रवे तीजापोरा.

क़िला फ़त्ह करनेके बाद रावत् चत्रसिंह और उसके काका हमीरसिंह वग़ैरहको साथ लेकर महता शेरसिंह उदयपुरमें हाज़िर हुआ, और महाराणाने उसको इस ख़िद्मत के एवज़में ख़िल्अ़त वग़ैरह बख़्शनेके सिवा ताज़ीम और रुख़्सतका बीड़ा इनायत करने का हुक्म दिया, जिनमेंसे उसने सिर्फ़ बीड़ा क़बूल करके ताज़ीमके लिये यह अ़र्ज़ की, कि रियासत मेवाड़में इस वक़्तक केवल दो प्रधानोंको ताज़ीमकी .इज़्ज़त मिली है, याने अव्वल बिहारीदास कायस्थको, और दूसरे महता रामसिंहको, जिसका नतीजह यह हुआ, कि उक्त दोनों प्रधानोंका ख़ातिमह बहुत ही जल्द होगया, इसलिये ताज़ीमकी

---

(१) दादनीके लोग वह थे, जिनको थोड़े दिनके वास्ते रोज़ानह या ख़ुराक वग़ैरह पर कामके लिये नौकर रक्खा गया था.

(२) एक युरोपिअनका नाम है.

इज़्ज़त (१) तावेदारके लिये मुआफ़ फ़र्माई जावे. महाराणाने उसके इस उज्रको कुबूल किया. इसके बाद लड़ाईमें मारेजाने वाले सिपाहियोंकी विधवा औरतों तथा बालबच्चों की पर्वरिशका हुक्म होकर ज़ख़्मी लोगोंको इन्ऑम इक्राम दियागया, और रावत् चत्रसिंहका कुल माल व अस्बाब सर्कारमें ज़ब्त कियाजाकर उसको गुज़ारेके लाइक़ पहाड़ी ज़िलेमेंसे मए चन्द गांवोंके कोलारी ग्राम जागीरमें दिया, जिसकी औलाद इस वक़् उदयपुरमें मौजूद है; और डोडिया ठाकुर ज़ोरावरसिंहने ६४ वर्षके बाद अपना मौरूसी ठिकाना वापस जागीरमें पाया, लेकिन् क़िलेके बन्दोबस्तके लिये एक सर्कारी निशान वहां रक्खा गया, और फ़ौज ख़र्च व निशान ख़र्च वगैरहके एवज़ कुल ठिकाने पर खालिसहका बन्दोबस्त कियाजाकर ज़ोरावरसिंहको जागीरमेंसे सिर्फ़ उसके गुज़ारे के लाइक़ कुछ बन्धान नियत करदिया गया. थोड़े अरसहतक यह प्रबन्ध रहनेके बाद विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = .ई० १८५५] में महाराणाने खुश होकर दूसरे बन्दोबस्तके साथ लावा (सर्दारगढ़) का कुल इख्तियार ज़ोरावरसिंहको इनायत करदिया, जिसका हाल नीचे दर्ज किये हुए काग़ज़ोंसे ज़ाहिर होगाः-

ज़ोरावरसिंहके ख़तकी नक्ल.

॥श्रीएकलीगजी. ॥श्रीरामजी.

॥ लीषता डोडया जोरवारसीगजी मनोहरसीगजी राजथान लावे अप्रंच ॥ सेठ जी सुलतानमलजी, ईदरमलजीरा रु० ६२५००) अषरे साडाबासट हजार सके ऊदेपुरी जुना चलणरा उदारा लेर श्रीजीका बाकी नीसरता जी पेटे टीप देवाड़ी तीरो व्याज सेकडा १ प्रत रु० ।।।) पुण लेषे देणो जीरी तनषावम्हे गाम लावा षेडा सुदी

(१) इस रियासतमें वलीअह्दसे दूसरे दरजहपर प्रधानकी .इज़्ज़त समझी जाती है, और बहुतसी .इज़्ज़तकी बातें जो खास प्रधानके लिये हैं वे दूसरे सेवकोंको हासिल नहीं होतीं. जिसतरह नराजू (एक प्रकारकी सीधी तलवार) हाथमें और सोनेकी छड़ी जलेबमें रखना वगैरह, और प्रधान की कचहरीका हुक्म भी कुल सर्दार उमराव वगैरह मानते रहे हैं; लेकिन् ताज़ीमकी .इज़्ज़त वलीअह्दके मुवाफ़िक़ प्रधानको भी अपने फ़र्ज़न्दोंमें शुमार करके नहीं दीजाती.

मांड दीदो, सो यां गामारी पडी कोडी सुदा दाम दाम आवसी सो राजरी त्रफथी पोतदार रैगा जी बसु जमां करावांगा. गामांरी बीगत-

गाम लावो.	गाम कालेसरो.	गाम चतरपुरो.
गाम राजपुरो.	गाम कसनपुरो.	गाम बीरवास.
गाम डुगारो षेडो.	गाम अरएयो.	गाम ओलणारो षेडो.
गाम गोपालपुरो	गाम अरसीपुरो.	

श्रीएकलीगजीरे भेट कीदो.

ईप्रमाणे गाम तनषावम्हें लगाआ सो हासल, भोग, वीराड़ वगेरे सरब पडी कोडी आवसी सो ई षत पेटे जमा वेगा, ई रुप्या ई रीत जमा वेगा अर पाछा षरचाएगा-

५००) श्री परमेसरारे गाम १ रा भेट करणा सो गाम गोपालपुरो भेट कीदो.

२२००) श्री जी में छटुंदरा दोई साषरा भरणा.

४१६०) जोरावरसीघजीरे रोटी षरचरा ऊपाड़णा ३०००), तालकाई षरचरा ११६०).

८०००) बाकी रुप्या आठ हजार जमा करावेगा.

ज्मे रु० १४८६०) चवदा हजार आठसे साठ ई प्रमाणे भराएगा, और गुमासतो १ राज रो जमो अवेरेवा ऊपरे रेगा जीरो रोजगारका रु० ३६०) तीनसे साठ आदमी सुदी भरदीया जावेगा, अर बाकी बरसमे दीन असाढ सुदी १५ लेषोकर व्याज जुडे सो अतो दे बदेगा सो मुल पेटे जमा वेगा, अर नवो षत मांडदीदो जावेगा; आठ हजारको आंक आसरे हे सो ईमे मेनत कर बदतो ज्मो पुगावांगा, ईमेंसु कोडी १ परभारी षरचा न्ही, कोई अस्योई काम आओपडे तो सेटजीराथी लेणो और पोतदारकी सलासु षुन तगसीर वगेरे पाच रुप्या पेदा करे ज्मा करावणा, और लाटा कुंता वगेरे सरब कामम्हे पोतदारने सामल राष करणो, प्रभारी कोई बात करणी न्ही. यो षत म्हेताजी श्री सेरसीगजीरी हवेली बेठा राजी कुसी थी माडदीदो, सो कोई बातरी कसर पाडां न्ही. दसगत पंचोली ऊदेलालका डोड्या जोरावरसीगजी मनोरसीघजीरा केवासु लष्या, सं० १९११ (१) का दुती असाढ सुद ९ रवे. दस्वास जोरजीरा हातरो छे.

(१) यह संवत् चैत्रादि हिसाबसे १९१२ होता है.

उठंत्रीकी नक्ल.

॥ श्रीएकलीगजी. ॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री श्री दीवाणजी आदेसातु प्र० दुवे महेता सेरसीघजी बचनातु, ईत्रा गामारा पटेल लोगा कस अप्रंची । ईत्रा गाम प्रगणे वगेरेके रेष टका ऊपत रु० १५०००), हाल ऊपत रु० १८०६०) म्हे डोड्या जोरावरसीग रोडसीगोत हे पटे मआ हुवा है, सो अमल करावजो. गामारी वीगत

	ऊपत रु०	हाल ऊपत.	रेष टका.
गाम लावो प्रगणे कोसीथलरे षेडा सुदी	१३०००),	१४८१०),	२९६२०)

१०४६०) गाम लावो सरदारगढ ५२५) गाम कालेसरो

२००) गाम चत्रपुरो २५०) गाम राजपुरो

२७५) गाम कसनपुरो ८५०) गाम बीरवास

३७५) डुगारो षेडो ८००) अरण्यो

५७५) ओलणारो षेडो ५००) गाम गोपालपुरो

अरसीपुरो षेडो ऊजड सो बस्यो

गाम जेतपुरो षेडा सुदी प्रगणे केलवारे	२०००),	३२५०),	६५००)

२९००) गाम जेतपुरो ३५०) षेडी आगलगामो

१५०००), १८०६०), ३६१२०).

रेष टका ३६१२०, की चाकरीरा असवार ७२, पाली बंदुका १०४, सो आधी चाकरीकी अेवज तो चठुदरा रुपीआ ३०१०) श्री भंडार भरा जावेगा अर आधी चाकरी सदरुप

असवार ३६, पाली बंदुका ७२ थी हुकम प्रमाणे देस प्रदेस हुकम प्रमाणे आछा घोडा थी रजपुत पाली बंदुका थी सेवा करसी, सो अबार नवो कोलनामो हुवो जी सरसते चाकरी तो असवार १८, पाला बंदुका ३६ थी हुकम प्रमाणे देस प्रदेस करेगा, और चठुंद सो हाल पेदासथी रु० ३०१०) हुवा अर आगे रु० १२५०) देतो, ज्मे रु०४२६०) हुवा जीकी वीचका रु० २१३०) अकवीसेह तीस भरया जावेगा तागीर कालसाथी, प्रवानगी महेता सेरसींग लषतां पंचोली रधीराम राजारामोत बगसी सं० १९११ रा दुती असाड सुद ८.

इसके बाद विक्रमी १९१५ [हि० १२७५ = ई० १८५८] में ठाकुर ज़ोरावरसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा ठाकुर मनोहरसिंह सर्दारगढ़का जागीरदार बना. इसके वक़्में भी ठिकानेपर दबाव डालागया, और तरक़्क़ी हुई, जिसका हाल मौक़ेपर आगे लिखा जायेगा.

विक्रमी १९०४ पौष कृष्ण ८ [हि० १२६४ ता० २१ मुहर्रम = ई० १८४७ ता० ३० डिसेम्बर] को बागौरके महाराज शेरसिंहका कुंवर शार्दूलसिंह गुज़रगया, जो महाराणाको ज़हर देनेकी तुहमतपर रसोड़के महलमें क़ैद था. विक्रमी १९०५ वैशाख शुक्ल १२ [हि० १२६४ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १८४८ ता० १४ मई] को जगत्शिरोमणि और जवानसूरजविहारी (१) के मन्दिरोंकी प्रतिष्ठा हुई. जगत्शिरोमणि का मन्दिर राज्यमहलोंके बड़ीपोल दर्वाज़हके बाहिर पश्चिमी लाइनमें बहुत उम्दह तर्ज़का बना हुआ है. इस मन्दिरका मुफ़स्सल हाल उसकी प्रशस्तिको देखनेसे मालूम होगा— (देखो शेषसंग्रह प्रशस्ति नम्बर १). और जवानसूरजविहारीका मन्दिर जगन्नाथरायके मन्दिरसे उत्तर पश्चिम तथा महाराणा स्कूलके उत्तरमें वाके है. महाराणाने इन मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाका बड़ा भारी उत्सव किया, जिसमें मज़्हबी पेश्वाओंको दान दक्षिणा देनेके सिवा चारणोंको हाथी, घोड़ा तथा ख़िल्अत, और सर्दार पासबानों आदिको सरोपाव बख़्शे. इसी उत्सवपर मेरे (कविराजा श्यामलदासके) पिताको श्रवणगज नामी एक हाथी मिला था.

विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ता० १२ शव्वाल = ई० ता० ११ सेप्टेम्बर] को महाराणाके घुटनेमें बादीका दर्द पैदा हुआ, जो उनके शरीरमें अख़ीर वक़्तक बढ़ता रहा. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १२६५ ता० ४ मुहर्रम = ई० ता० १ डिसेम्बर] को महाराणा उदयपुरसे रवानह होकर एकलिंगेश्वर, नाथद्वारा, कांकड़ोली, चारभुजा और आमेट होते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० ता० १० मुहर्रम

(१) यह मन्दिर इन दिनों "बांकड़े विहारी" के नामसे मश्हूर है.

=.ई० ता० ७ डिसेम्बर] को सर्दारगढ़में पहुंचे, जहां क़िले व महलोंको देखकर बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की, और डोडिया ठाकुर ज़ोरावरसिंहको ताज़ीम .इनायत करके दूसरे दरजेका उमराव बनाया. ठाकुर सर्दारसिंहके बाद तीसरी पीढ़ीमें ज़ोरावरसिंहके तरक़्क़ी पाने और उसकी दोबारह .इज़्ज़त बढ़नेका शुरू ज़मानह इसीको समझना चाहिये.

सर्दारगढ़से रवानह होकर कोठारिया और नाहरमगरे होते हुए विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ मुहर्रम = ई० ता० १५ डिसेम्बर] को महाराणा उदयपुरमें दाख़िल हुए; विक्रमी माघ शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८४९ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को सलूंबरके रावत् पद्मसिंहकी सिहतपुर्सीके लिये, जो उस-वक़्त बहुत सख़्त बीमार था, चंपाबाग़में गये, और विक्रमी माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को उसके इन्तिक़ालकी ख़बर मालूम हुई. रावत् पद्मसिंहकी सख़्त बीमारीका हाल सुनकर उसका बेटा केसरीसिंह उसी रातको कोटड़ेतक आया, और उसे सलूंबर लेगया, लेकिन् कहते हैं, कि वह सलूंबर पहुंचनेसे पहिले ही रास्तेमें मरगया.

विक्रमी १९०६ आश्विन शुक्ल १४ [हि० ता० १३ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १ ऑक्टोबर] को महाराणाके दाहिने घुटनेमें बादीका दर्द शुरू हुआ, और वह फैलकर पैरके तलवेतक जा पहुंचा. इसके इ़लाजके लिये देशी वैद्योंके सिवा अंग्रेज़ी डॉक्टरको भी बुलाकर दिखलाया गया, लेकिन् जोकि महाराणाको अंग्रेज़ी डॉक्टरोंके इ़लाजपर ज़ियादह एतिबार न था, इसलिये हिन्दुस्तानी वैद्योंका ही इ़लाज होता रहा, जिससे विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० १२६६ ता० १८ मुहर्रम = ई० ता० ४ डिसेम्बर] तक वह रोग बिल्कुल मिटगया. परन्तु विक्रमी १९०७ श्रावण शुक्ल ३ [हि० १२६६ ता० १ शव्वाल = ई० १८५० ता० १० ऑगस्ट] को फिर वही दर्द बढ़ा और घुटनेसे नीचे नीचे कुल पैरमें फैलगया. महा-राणाका इरादह था, कि मेवाड़के पर्गनोंमें जो हाकिम प्रधानके इख़्तियारसे भेजे जाते हैं, उनकी जगह अपने ख़ास पासवानोंमेंसे एतिबारी नौकर भेजे जाया करें, और उन्हींकी मारिफ़त मालगुज़ारी बढ़ाईजाकर कुल आमदनी ख़ज़ानहमें दाख़िल हुआ करे; इसलिये उन्होंने पर्गनह कुंभलगढ़ व खैरवाड़ा कोठारी छगनलालके सुपुर्द करके उसके भाई कोठारी केसरीसिंहको विक्रमी श्रावण शुक्ल १३ [हि० ता० ११ शव्वाल = .ई० ता० २० ऑगस्ट] के दिन सर्कारी दूकानके अलावह टकशालका काम भी सौंपा, और साइरका ठेका तथा मेवाड़के चन्द पर्गने सेठ ज़ोरावरमल्लके सुपुर्द रहे. लेकिन् इन दिनों महाराणाको अव्वल सर्दारोंका बन्दोबस्त करना ज़ुरूर था, इस वज्हसे वह आहिस्तह आहिस्तह मुल्की कामों व कारख़ानोंको दुरुस्त करते जाते थे.

सिवा इसके इसी अरसहमें बीलख वगैरह पालोंके भील सर्कश होगये थे, जिनको सज़ा देनेके लिये उन्होंने महता शेरसिंहके बेटे सवाईसिंहको पल्टन, रिसालह और कुछ सर्दारोंकी जमइयत साथ देकर उस तरफ़ भेजा. सवाईसिंहने इस मौक़ेपर बड़ी तनदिही और बहादुरीके साथ भीलोंको सज़ा दी, कि जिसको वे लोग अबतक याद करते हैं. इसके बाद एक अरसहतक इन लोगोंने बदमआशी करना छोड़दिया.

अब हम यहांपर सर्दारोंका हाल आगेके लिये छोड़कर महाराणाके दौरे और उनकी दोनों बहिनोंके विवाहका हाल लिखते हैं, जो इस तरहपर है, कि महाराणाका मन्शा कुल मुल्कको अपनी निगाहसे देखकर उम्दह इन्तिज़ाम करनेका था, इसलिये वह विक्रमी पौष शुक्ल ३ [हि० १२६७ ता० २ रबीउल्अव्वल = ई० १८५१ ता० ५ जैन्युअरी] को मए ज़नानी सवारीके एकलिंगेश्वर, नाहरमगरा, सनवाड़, मातृकुण्ड, रासमी, सेंतूरिया, गाडरमाला, मगरोप, और बरसल्यावासमें होतेहुए विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रबीउल्अव्वल = ई० ता० १४ जैन्युअरी] को मांडलगढ़ पहुंचे; इसवक़ फ़ौज वगैरह कुल लश्करकी तादाद क़रीब १०००० आदमियोंके थी. मांडलगढ़ पहुंचकर दूसरे रोज़ वहांका क़िला देखनेको महाराणा गढ़पर पधारे, जहां क़िलेदार और हाकिम महता स्वरूपचन्दने उनकी बहुत उम्दह तौरपर मिह्मानदारी की. यह शख़्स (स्वरूपचन्द) महता अगरचन्दका पोता और देवीचन्दका बेटा था, कि जिसकी ख़ैरख़्वाहीसे मरहटोंकी लूट मारमें मांडलगढ़का क़िला और ज़िला महाराणाके तह्तमें बनारहा, क्योंकि उसवक़ कई मुख़ालिफ़ोंने इस क़िलेको दबालेनेकी कोशिश की थी. विक्रमी माघ कृष्ण २ [हि० ता० १६ रबीउल्अव्वल = ई० ता० १९ जैन्युअरी] के दिन स्वरूपचन्दने महाराणाको फ़ौज सहित दावत दी, उस समय महाराणाने प्रसन्न होकर स्वरूपचन्दको फ़र्माया, कि तुम्हारा घराना महता अगरचन्दसे लेकर आजतक इस राज्यका ख़ैरख़्वाह रहा है, इसलिये मैं तुमसे बहुत खुश हूं. इसवक़ मेरे (कविराजा श्यामलदासके) पिताने मारवाड़ी भाषामें कुछ पद्य और कविता भी कही थी, जिसमेंसे एक दोहा नीचे लिखाजाता है:-

दोहा.

समत सात उगणीससे दीह महाबद दोज ॥
पावन कियो सरूपचंद नृप सरूप कन भोज ॥ १ ॥

इसके बाद महता स्वरूपचन्द और उसके बेटे गोकुलचन्दको ख़िल्अत वगैरह देकर विक्रमी माघ कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २० जैन्युअरी] को महाराणाने मांडलगढ़से कूच किया, और वहांसे पारसोली व बसी होकर विक्रमी

माघ कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० २२ जैन्युअरी] को चित्तौड़गढ़ की तलहटीके डेरोंमें दाख़िल हुए, जहां विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० २४ जैन्युअरी] को क़िला देखनेके लिये गढ़पर गये, उसवक्त इस क़िलेकी क़िलेदारी और ज़िलेकी हाकमी प्रधान महता शेरसिंहके अधिकारमें थी, इसलिये उसकी तरफ़से दावत हुई. महाराणाने क़िलेको अच्छी तरह चारों ओर फिरकर देखनेके बाद शामके वक्त वापस डेरोंमें आकर वहांसे कूच किया, और ग्राम हत्याणा, ताणा तथा करणपुर होते हुए विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ रबीउ़ल्अव्वल =ई० ता० २८ जैन्युअरी] को राजधानी उदयपुरमें दाख़िल हुए. इस दौरेमें जो जो गांव रास्तेमें जागीरदारोंके आये, उनकी तरफ़से महाराणाकी बहुत .उम्दह तौरपर मिह्मानदारी कीजानेके सिवा घोड़े वग़ैरह चीज़ें भी नज़ हुईं; मगर इसवक्त कोई ख़ास मुल्की फ़ायदहकी सूरत पैदा न हुई, क्योंकि हज़ारों आदमियोंकी भीड़ भाड़ साथ रहने और पुराने रवाजकी पाबन्दीके सबब मुल्की इन्तिज़ाम करने और ज़िलोंको अच्छी तरहसे देखनेकी फुर्सत महाराणाको बहुत कम मिलती थी. इसी अरसहमें कोटाके महाराव रामसिंह नाथद्वारेके दर्शनोंको आये, जिनका ख़ास मन्शा उदयपुरमें शादी करनेका था. आख़रकार इस मुआमलहकी बातचीत होकर उक्त महारावसे नीचे लिखी चार शर्तें कुबूल कराई गई और शादी मन्ज़ूर हुई :-

अव्वल यह, कि उदयपुरकी बाईसे जो कुंवर पैदा हो, वह छोटा होनेकी हालतमें भी राज्यका हक़दार रहे.

दूसरे, उदयपुरकी बाईका दरजह सब राणियोंसे बढ़कर रहे.

तीसरे, उदयपुरकी बाईको ५००००) रुपये सालानह आमदनीकी जागीर अलहदह मिले.

चौथे, उदयपुरकी बाईकी ड्योढ़ी या नौहरेमें कोई मुज्रिम पनाह लेवे, तो वह सज़ासे बचाया जावे.

महाराव रामसिंहकी कुबूलकी हुई इन चारों शर्तोंको महाराणाने एजेण्ट गवर्नर-जेनरल राजपूतानहके पास मन्ज़ूरीके लिये भेजा, लेकिन् उक्त साहिबने अव्वल शर्तके सिवा बाक़ी शर्तोंको मन्ज़ूर करके कहा, कि यही अव्वल शर्त महाराणा दूसरे अमरसिंह और दूसरे जगत्सिंहके ज़मानहमें क़रार पाई थी, जो राजपूतानहमें आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी और फ़सादकी बुन्याद डालने वाली हुई, और जिससे मरहटोंने राजपूतानहमें दाख़िल होकर इस मुल्कको क़ियामतका नमूनह बनादिया, इसलिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी अब ऐसी फ़सादकी बुन्याद क़ाइम करना नहीं चाहती. परन्तु महाराव रामसिंहने अपनी उन्नतिकी

गरज़से चारों शर्तें लिखदीं (१), और अख़ीरमें यह शादी महता शेरसिंह व पुरोहित श्यामनाथकी मारिफ़त क़रार पाई, जिसके एवज़ महाराव रामसिंहने उक्त दोनों मुसाहिबोंको दो ग्राम जागीरमें दिये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ६ [हि० ता० ५ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० ९ मार्च] को महाराव रामसिंह उदयपुरमें आये, महाराणाके काका बागोरके महाराज शेरसिंह तथा शिवरतीके महाराज काका दलसिंह पेश्वाई करके उन्हें डेरोंमें लाये, और उसी दिन उनका विवाह महाराणाकी बहिन फूलकुंवरबाईके साथ बड़ी धूमधामसे हुआ. कोटाके महारावोंमेंसे महाराव दुर्जनशालके बाद दूसरी बार इन महारावने उदयपुर की राजकुमारीके साथ विवाह किया, इसलिये उन्होंने अपनी इच्छा पूरी होनेपर महाराणाको बहुत कुछ धन्यवाद दिया, और बड़ी नर्मीके साथ यह कहा, कि "हमारी रियासतकी इज़्ज़त बढ़ाने वाले अव्वल तो गोवर्द्धननाथ और दूसरे मेवाड़के महाराणा हैं".

विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० ता० १२ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १६ मार्च] की शामको महाराव रामसिंह राजधानी उदयपुरसे रवानह होकर सहेलियोंकी बाड़ीमें ठहरे, और वहांसे चलकर नाथद्वारा होतेहुए कोटे पहुंचे. इसी तरह विक्रमी १९०८ वैशाख कृष्ण १२ [हि० ता० २५ जमादियुस्सानी = ई० ता० २८ एप्रिल] को महाराणाकी छोटी बहिन सौभाग्यकुंवरबाईका विवाह रीवांके महाराजकुमार रघुराजसिंहके साथ हुआ. इस सम्बन्धमें महाराज विश्वनाथसिंहने भी वही चार शर्तें, जो कोटाके महारावने मन्ज़ूर की थीं, रीवांसे लिख भेजीं. जब कुंवर रघुराजसिंह विवाह करनेके लिये उदयपुरमें आये, तो महाराज शेरसिंह और महाराज दलसिंह पेश्वाई करके उन्हें डेरोंपर लाये, और रातके वक्त विवाहकी रस्में अदा हुईं. इन दोनों शादियोंमें मैं (कविराजा श्यामलदास) भी मौजूद था. विवाहके दस्तूर अदा होने के वक्त राजपूतानहकी बाज़ बाज़ रस्मोंपर रीवां वाले बड़ा तअज्जुब ज़ाहिर करते थे, और रीवां वालोंकी चाल ढाल तथा पहराव देखकर मेवाड़ वाले हंसते थे, जैसा कि सगे सम्बन्धियोंमें परस्पर प्रेम और आनन्दके साथ परिहास होता है. महाराणाने कोटाकी बरातसे बढ़कर रीवां वालोंका आतिथ्य किया, और महाराजकुमार तथा उनके सर्दारोंने भी महाराणाको अपना इष्टदेव मानकर बर्ता, इस तरहपर आपसमें ज़ियादह मुहब्बत बढ़जानेके सबब महाराणाने उनको अपना परम सम्बन्धी जानकर द्विभाव बिल्कुल उठादिया. विक्रमी वैशाख शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रजब = ई० ता० १३ मई] को

(१) महाराणा स्वरूपसिंहने भी ज़मानह देखकर पहिली शर्त मुआफ़ करदी.

जब महाराजकुमार रघुराजसिंह एकलिंगजी, श्री नाथजी तथा कांकड़ोलीके दर्शन करके उदयपुरमें वापस आये, उसवक़ महाराणाने खुद उनकी पेश्वाई की. इसके बाद रीवांके महाराजकुमारने अपनी बहिनके साथ शादी करनेके लिये महाराणासे अ़र्ज़ कराई, लेकिन् यहांसे लैतलालका जवाब मिला, इसपर उक्त राजकुमारने बहुत कुछ हुज्जत के साथ दोबारह अ़र्ज़ कराई, परन्तु महाराणा इतना दूर दराज़ सफ़र करके शादी करना नहीं चाहते थे, इसलिये रीवां वालोंकी वह उम्मेद पूरी न होसकी, और महाराजकुमार रघुराजसिंह रंजीदह दिल होकर विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल २ [हि० ता० ३० रजब = .ई० ता० १ जून] को उदयपुरकी राजकुमारी सहित रीवांको रवानह हुए, अगर्चि उक्त महाराजकुमार उदयपुरसे रवानह होजानेपर भी महाराणाकी शादी अपनी बहिनके साथ कीजानेकी कोशिश करनेके लिये अपने चन्द मोतमदोंको उदयपुरमें छोड़गये, लेकिन् उन लोगोंको भी साफ़ इन्कारी जवाब मिलगया, तब वह अपनी बहिनकी मंगनी जयपुरके महाराजा रामसिंहके साथ पुख़्तह करगये.

विक्रमी श्रावण [हि० रमज़ान = .ई० जुलाई] याने राजकीय संवत् १९०८ के शुरूमें कोठारी केसरीसिंह साइरके कामपर मुक़र्रर किया गया, जो पहिले सेठ ज़ोरावरमल्लके ठेकेमें था; उक्त कोठारीने इस कामका इन्तिज़ाम बड़ी ख़ैरख़्वाहीके साथ किया.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २३ ज़िल्हिज = .ई० ता० १९ ऑक्टोबर] को यह ख़बर मालूम हुई, कि सलूंबर व देवगढ़ वग़ैरहके जागीरदारोंने अपनी जागीरके गांवोंमेंसे राजकी ज़ब्ती उठादी, जिसका ज़िक्र सिल्सिलेवार आगे लिखाजायेगा. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० १२६८ ता० ९ मुहर्रम = .ई० ता० ४ नोवेम्बर] को नीमचकी छावनीसे पोलिटिकल एजेण्ट ज्योर्ज लॉरेन्स आये, जिनको सर्दारोंकी सर्कशीका हाल कहा गया, लेकिन् उन्होंने महाराणाको यह जवाब दिया, कि आप मुल्कके मालिक हैं, अपने इख़्तियारसे जैसा मुनासिब समझें बन्दोबस्त करें, हम ख़ानगी तक़ारमें दस्तन्दाज़ी नहीं करसक्ते. यह कहकर पोलिटिकल एजेण्ट तो वापस चलेगये, और विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० ता० २० रबीउ़स्सानी = .ई० १८५२ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेन्री लॉरेन्स उदयपुरमें आये, उनसे भी सर्दारोंकी सर्कशीके बारेमें बातचीत हुई, परन्तु वह भी पोलिटिकल एजेण्टके मुवाफ़िक़ जवाब देकर चलेगये. अगर्चि महाराणा अपने मुल्कका इन्तिज़ाम करना चाहते थे, लेकिन् पैरोंकी बीमारी और सर्दारोंकी सर्कशीमें दिन बदिन तरक़ी होनेके सबब एक काम

दुरुस्त होने पाता, कि दूसरेकी फ़िक्र पड़जाती थी, और जिस्मानी हिफ़ाज़तके लिये भी तद्बीर करना अवश्य था. विक्रमी १९०९ वैशाख कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १२ एप्रिल] को प्रधान महता शेरसिंहने महाराणा को अपने मकानपर मिह्मान करके कुल रियासती लोगों सहित एक बड़ी दावत दी, और १००००) रुपया नक्द नज़ किया. इस मौकेपर महाराणाने महता शेरसिंह और उसके बेटोंको ख़िल्अ़त देकर वही १००००) रुपया वापस .इनायत किया.

अब हम यहां किले आर्ज्यापर फ़ौजकशी कीजानेका हाल लिखते हैं, जो इस तरह पर है, कि महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके छोटे पुत्र पूर्णमल्ल (पूरा) का बेटा नाथसिंह था, उसके बेटोंमेंसे महेशदास तो मगरोपका मालिक बना, और छोटे मुहूकमसिंह को आर्ज्या जागीरमें मिला. मुहूकमसिंहके पुत्र बख़्तसिंहने आर्ज्यामें किला बनाया, उसके तीन बेटों रणसिंह, अमरसिंह और अचलसिंहमेंसे रणसिंहके पांच बेटे १- प्रतापसिंह, २- पद्मसिंह, ३- मुहूकमसिंह, ४- रूपसिंह, और ५- नवलसिंह हुए. बड़े प्रतापसिंहको उसके भाइयोंने मारडाला और आर्ज्यापर रणसिंहके दूसरे बेटे पद्मसिंहका क़बज़ह होगया. विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = .ई० १८०८] में पानसलके शक्तावतोंने बालेरावकी फ़ौजकी मददसे आर्ज्याका किला छीन लिया. फिर प्रतापसिंह रणसिंहोतके दो बेटे, बड़ा उम्मेदसिंह और दूसरा अनोपसिंह, आर्ज्या लेनेकी फ़िक्रमें दौड़ते रहे, जिनमेंसे अनोपसिंह तो (जो महाराणाकी फ़ौजमें था) किले हमीरगढ़ पर हमलह करते समय मारागया, और उम्मेदसिंहकी औलाद आर्ज्याकी भोमपर क़ाबिज़ रही, जो आर्ज्या उनके क़बज़हसे निकल जानेके बाद उम्मेदसिंहके बेटे खुमाणसिंहको अंग्रेज़ी अमलदारीके शुरू ज़मानहमें आर्ज्याके किले सहित दीगई, और गांव आर्ज्या शक्तावतोंसे छीन लिया गया. खुमाणसिंहके बाद उसका बेटा चन्दनसिंह आर्ज्याकी भोमपर क़ाबिज़ रहा. विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में महाराणा जवानसिंहने यह गांव (आर्ज्या) अपने मामू चावड़ा कुबेरसिंह और ज़ालिमसिंहको जागीरमें लिखदिया, जिनका हाल इसतरहपर है, कि वसोड़ा इलाक़ह गुजरातके चावड़ा जगतसिंहकी बेटी गुलाबकुंवरबाई महाराणा भीमसिंहको उदयपुरमें ब्याही गई थी, जिससे महाराणा जवानसिंह और कृष्णकुंवरबाई पैदा हुई. जगतसिंहका बड़ा बेटा कुबेरसिंह और छोटा ज़ालिमसिंह था, जिनमेंसे कुबेरसिंहके बड़े बेटे फ़तहसिंहका बेटा प्रतापसिंह मौजूद है; ज़ालिमसिंहके एक बेटा कुशलसिंह और दो बेटियां हुई, उनमेंसे एककी शादी विक्रमी १८९८ [हि० १२५७ = .ई० १८४१] में महाराणा स्वरूपसिंहके साथ और दूसरीकी महाराज दलसिंहके पुत्र गजसिंहके साथ हुई.

कुशलसिंहके एक पुत्र अभयसिंह पैदा हुआ, जो हालमें मौजूद है, और एक बेटी, जो वर्तमान महाराणा साहिबकी महाराणी हैं. चावड़ा कुबेरसिंह और ज़ालिमसिंह जबसे गुजरात छोड़कर आये, तबसे कुटुम्ब सहित उदयपुरमें ही रहते थे, और आर्ज्याके क़िलेमें उन्होंने अपनी तरफ़से बेचर नामी एक नौकरको मुख़्तार बना रक्खा था, उसने अपनी कमअक़्लीसे पूरावत चन्दनसिंहको हरएक बातमें तंग किया; चन्दनसिंह भी अपने उसी मौरूसी क़िलेमें रहता था, उसने तंग आकर बग़ावतका इरादह किया, और चन्द कमअक़्ल आदमियोंने उसे यह सलाह दी, कि कई उमरावोंने अपनी जागीरसे सर्कारी खालिसहके आदमियोंको निकालदिया है, तुमको भी अपनी मौरूसी जायदादपर क़ब्ज़ह करलेना चाहिये, इसवक्त सर्दारोंका बखेड़ा है, इसलिये चावड़ोंकी मददपर महाराणा ऐसी हालतमें फ़ौज नहीं भेजेंगे. उसने लोगोंके बहकानेमें आकर बेचरको क़िलेमें क़ैद करदिया, और चावड़ोंके दो चार आदमी, जो बाक़ी रहे, भाग गये. इसके बाद चन्दनसिंह, औनाड़सिंह, और नवलसिंहने खुमाणसिंह शेखावत वग़ैरह पांच दस आदमी एकट्ठे करके अन्न, तम्बाकू, तेल, घृत, गुड़ वग़ैरह सामान, जो कुछ उनके हाथ लगा, रिआयासे लूट खोसकर क़िलेमें जमा करलिया. विक्रमी १९०९ आश्विन शुक्ल ५ [हि० १२६९ ता० ३ मुहर्रम = .ई० १८५२ ता० १७ ऑक्टोबर] को चावड़ा ज़ालिमसिंहने महाराणाको यह कुल हाल अर्ज़ किया, जिसे सुनकर वह बहुत ही नाराज़ हुए; लेकिन् उन्होंने पोलिटिकल ढंगसे चन्दनसिंहके नाम एक काग़ज़ महाराज चन्दसिंहका देकर मुख़्बिरीके तौरपर हर्कारह राधाकृष्णको भेजा, वह आश्विन शुक्ल १३ [हि० ता० ११ मुहर्रम = .ई० ता० २५ ऑक्टोबर] को आर्ज्ये पहुंचा, और बड़ी कोशिश करनेपर क़िलेके नज़्दीक जाने पाया, परन्तु हर्कारेके साथ चीमा, करावल, वग़ैरह जो दो तीन आदमी थे उनको गांवमें नहीं आने दिया, सिर्फ़ हर्कारेसे नवलसिंहने क़िलेके बाहिर आकर बातचीत की. उसने कहा, कि हमको किसीका एतिबार नहीं है, और न महाराज चन्दसिंहके काग़ज़पर भरोसा है, लेकिन् श्री दर्बार हमारे मा बाप हैं, यदि उनका पर्वानह चन्दनसिंहके नाम आजावे, तो हम उसीवक्त उदयपुर हाज़िर होजावेंगे. हर्कारेने भीलवाड़ेमें आकर यह ख़बर उदयपुर लिखभेजी. इसपर महाराणाने सियाणाके पुंवार देवीसिंह, पहूनाके राणावत देवीसिंह, भूणावासके बाबा बाघसिंह और मगरोपके बाबा गिरवरसिंह वग़ैरह चन्द सर्दारोंको यह हुक्म लिख भेजा, कि तुम अपनी अपनी जमइयतों सहित भीलवाड़ाके हाकिम भंडारी गोकुलचन्दके साथ जाकर क़िले आर्ज्याके गिर्द मोर्चाबन्दी करदो, और चन्दनसिंहको समझाओ, कि अगर वह पर्वानह देखकर

उदयपुर चला आवे, तो उसकी इज़्ज़तमें फ़र्क़ न पड़ेगा. इस बारेमें एक पर्वानह चन्दनसिंहके नाम लिखागया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :-

पर्वानहकी नक़्ल.

॥ श्रीएकलिंगजी. ॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री ऊदयपुर सुथाने महाराजा धिराज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी आदेसात पुरावत चंदणसीघ अनाड़सीघ नवलसीघ कस्य ———

अप्र ॥ थारो कागद पुवार देवीसीघरे नामे आयो सो मालम हुवो ने देवीसीघ अरज कराई के, कीदी तो वां बेसुरी पण धणी हे सो वारे नामे प्रवानो जावे तो वे पेतावा आऐ पड़े, सो अणीरी अरजसु प्रवानो मेल्यो हे, गढ वा सराजाम वे जो ने वाणयारो सराजाम सारा चावड़ा जालमसीघरा आदम्यारे हवाले करे देवीसीघरी लारे अठे आवजो, नही तो थारा कीदा थे पावोगा सं० १९०९ वर्षे कातीक वदी ७ गुरे.

चन्दनसिंहने भी भींडरके महाराज हमीरसिंह और गोगूंदाके कुंवर लालसिंहके नाम मदद देनेकी ग़रज़से काग़ज़ लिख भेजे, जो सर्कारी आदमियोंके हाथ पकड़ेगये; उन काग़ज़ोंका मत्लब यह है, कि आप हमारे मालिक हैं, और आपहीके भरोसेपर हमने अपनी मौरूसी जागीरको वापस अपने क़ब्ज़हमें लिया है, इसलिये हमारी मदद करना चाहिये. लेकिन् आर्ज्या वालोंका बयान है, कि हमको बनेड़ाके राजा संग्रामसिंहने वर्ग़लाकर बाग़ी बनाया था. महाराणाने मांडलगढ़को महता स्वरूपचन्दके नाम हुक्म लिख भेजा था, कि दो तोप और खैराड़के लोगोंकी कुछ जमइयत साथ देकर गोकुलचन्दको आर्ज्यापर भेजदो. इसीतरह जहाज़पुरकी जमइयतको हुक्म पहुंचगया, और भीम पल्टन व एकलिंग-पल्टनके निशान भी उदयपुरसे रवानह होगये थे. ऊपर लिखे हुए सर्दार हाकिम भीलवाड़ा सहित विक्रमी १९०९ कार्तिक कृष्ण १४ [हि० १२६९ ता० २७ मुहर्रम = ई० १८५२ ता० १० नोवेम्बर]को आर्ज्ये पहुंचे, उन्होंने चारों तरफ़ मोर्चे जमाकर बुलन्द आवाज़से

क़िलेवालोंको पर्वानहका हाल कहा और पर्वानह उनके पास भेजदिया. अगर्चि इसवक्त क़िलेवालोंने नर्मीके साथ जवाब दिया, लेकिन् रातके वक्त क़िलेके मोर्चोंसे पत्थर चलाना शुरू करदिया. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ मुहर्रम = .ई० ता० ११ नोवेम्बर] को महाराणाकी फ़ौजके सर्दारोंने नज़्दीक जाकर क़िलेवालोंको बहुत कुछ समझाया, लेकिन् उन्होंने टालाटूलीका जवाब दिया. इसके सिवा मोर्चा देखनेकी ग़रज़से जो चन्द राजपूत सर्दार चलेजाते थे, उनमेंसे छोटी भादूके चूंडावत कर्णसिंह की छातीमें एक गोली क़िलेसे आकर लगी, जिससे वह तुरन्त मरगया, और दोनों तरफ़से सुलहकी एवज़ लड़ाई होने लगी. नीचे लिखे हुए सर्दारोंकी जमइयतें सर्कारी फ़ौजमें शामिल थीं:-

१ मगरोपका बाबा गिरवरसिंह.	२ गुड़लांका बाबा हमीरसिंह.
३ गाडरमालाका बाबा धीरतसिंह.	४ आटूणका बाबा देवीसिंह.
५ सूरासका जागीरदार नवलसिंह.	६ जवास्याका जागीरदार भवानीसिंह.
७ आकोलाका जागीरदार माधवसिंह.	८ हमीरगढ़का रावत् शार्दूलसिंह.
९ खैराबादका बाबा जोधसिंह.	१० मंडप्याका बाबा ज़ालिमसिंह.
११ बरसल्यावासका बाबा भवानीसिंह	१२ बांसड़ाका बाबा रणमल्लसिंह.
१३ भूणावासका बाबा बाघसिंह.	१४ पहूनाका जागीरदार देवीसिंह.
१५ कैरयाके बाबा ज़ोरावरसिंहका काका चत्रशाल.	१६ महुवाके जागीरदारका बेटा जवानसिंह.
१७ पानसलका जागीरदार हरनाथसिंह.	१८ रूदके जागिरदार बीरमदेवका भाई दूलहसिंह.
१९ बड़ी भादूके जागीरदारका भाई ज़ोरावरसिंह.	२० नीबाहेड़ाका जागीरदार बीरमदेव.
२१ छोटी रूपाहेलीका जागीरदार.	२२ महता गोकुलचन्द मांडलगढ़की जमइयत और दो तोपों समेत.
२३ पुर मांडल ज़िलेके कुल भोमिया.	

इनके अलावह सर्कारी पल्टनोंके निशान वग़ैरह मिलाकर क़रीब दो हज़ार आदमी दूसरे थे; मोर्चोंसे क़िलेपर तोपें चलने लगीं, और कई गोले दर्वाज़हके किवाड़ोंपर भी लगाये-गये. दैवगतिसे चन्दनसिंहकी छातीमें अकस्मात् एक गोली जा लगी, जिससे वह उसीवक़ मरगया. कई लोगोंका बयान है, कि बाहिरसे तीरकशमें होकर उसके गोली लगी, बाज़ कहते हैं, कि भीतरसे खुमाणसिंह शेखावतने ही उसके गोली मारी, और

सींगोलीके बाबा मानसिंहका बयान है, कि फ़ौजके मोर्चोंमेंसे अदावत वालोंने एक आदमीको दरख़्तपर चढ़ाकर उसके गोली लगवाई, जहांसे क़िलेका भीतरी हिस्सह दिखाई देता था. चन्दनसिंहके मारेजाने बाद विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० ११ सफ़र = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को क़िले वालोंने पछेवड़ी फेरकर अम्न चाहा. जबकि चन्दनसिंह मारा गया, उसका छोटा भाई नवलसिंह मोर्चोंमें होता हुआ क़िलेसे निकल भागा, और उसवक़ उसपर बहुतसी गोलियां चलाई गईं, लेकिन् क़ज़ा न होनेके सबब वह बचगया. आख़िरकार क़िलेवालोंमेंसे ओनाड़सिंह और खुमाणसिंह शेख़ावत वग़ैरह दो चार आदमियोंको महता गोकुलचन्दने गिरिफ़्तार करलिया, और बाक़ी पांच सात आदमी इधर उधर भागगये. इसवक़ चन्दनसिंहकी स्त्री तो अपने बापके यहां गांव देवलीमें थी, जिससे चन्दनसिंहके मरे बाद राजसिंह नामका एक लड़का पैदा हुआ; और चन्दनसिंहकी बहिन जो क़िलेमें थी, मगरोपके बाबा गिरवरसिंहके सुपुर्द कीगई. उदयपुरमें लायेजानेके बाद ओनाड़सिंह तो जेलख़ानहमें भेजा गया और खुमाणसिंह शेख़ावतको उसकी डाढ़ी जलाई जाकर मुल्कके बाहिर निकलवा दियागया. इसके बाद कुछ अरसहतक सर्कारी ख़ालिसह रहकर आर्ज्या पीछा चावड़ोंको मिला; महाराणाका इन्तिक़ाल होनेपर एजेएटी व पंचसर्दारोंके बन्दोबस्तमें ओनाड़सिंहने जेलख़ानहसे रिहाई पाई, और राजसिंह व नवलसिंहको आर्ज्या तथा बीलियाकी भोम वापस दीगई. इस क़िलेके मुहा-सरहमें महता गोकुलचन्दने बड़ी दिलेरीके साथ काम दिया था, इसलिये महाराणाने खुश होकर उसे मोतियोंकी माला और पहुंचियों समेत एक क़ीमती सरोपाव .इनायत किया.

विक्रमी १९१० कार्तिक कृष्ण १४ [हि० १२७० ता० २७ मुहर्रम = .ई० १८५३ ता० ३१ ऑक्टोबर] के दिन महाराणाने दूसरे दान पुण्यके अलावह कालपुरुषके दानमें ४०० अशर्फ़ियां ब्राह्मणोंको दीं; विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० २ सफ़र = .ई० ता० ४ नोवेम्बर] को कन्यादानके संकल्पमें ब्राह्मणोंकी ८०० लड़कियोंके विवाह के लिये ८००००) रुपया, याने फ़ी लड़की १००) रुपया दानमें दिया, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १२ सफ़र = .ई० ता० १४ नोवेम्बर] को सुवर्णका तुलादान (१) किया.

---

(१) यह दान इस रीतिसे होता है, कि तराज़ूके एक पलड़ेमें दान देनेवाला शख़्स भगवानकी मूर्ति सहित बैठजाता है, और दूसरे पलड़ेमें उसके बराबर सोना तोला जाकर ख़ैरात कियाजाता है, जिसे "सुवर्ण तुलादान" कहते हैं.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० ता० २७ सफ़र = .ई० ता० २९ नोवेम्बर] को लक्षचंडीका पाठ (१) प्रारम्भ हुआ. विक्रमी माघ शुक्ल ३ [हि० ता० १ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८५४ ता० ३१ जैन्युअरी] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेनूरी लॉरेन्स और मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट ज्यॉर्ज लॉरेन्स उदयपुर में आये. उक्त साहिबोंने महाराणासे जहाज़पुर .इलाक़हके मीनोंकी बहुत शिकायत की, क्योंकि उन लोगोंने ज़िले अजमेर वग़ैरह ग़ैर .इलाक़ोंमें उन दिनों बड़ी लूट मार मचा रक्खी थी; विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि० ता० ८ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह उदयपुरसे रवानह हुए, और इसी दिन महाराणा, मानजी धायभाईके कुण्डपर पधारे, जहां एक छोटीसी गोशाला बनवाई गई, और उसी दिनसे इस मक़ामकी दिन बदिन तरक़्क़ी होने लगी, जो अब " गोवर्द्धन विलास " के नामसे प्रसिद्ध है.

मेवाड़में पहिले पर्गनह जहाज़पुरपर अक्सर रियासतके प्रधानका भाई या बेटा हाकिम रहनेके सबब पर्गनहकी आमदनीके सिवा वहांके ख़र्चके लिये कुछ रुपया उदयपुरसे और भी भेजना पड़ता था, इसलिये महाराणाने ख़र्च ज़ियादह देखकर वहांकी हुकूमतपर विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = .ई० १८५१] में महता रघुनाथसिंहको भेजा, जिसने वहां जाकर पर्गनहका जमाख़र्च दुरुस्त करनेके अलावह हुकूमत भी बड़े ज़ोर शोरके साथ की; लेकिन् वह ख़ास जमाख़र्चकी दुरुस्तीके लिये भेजाजानेके सबब उसकी निगाह ज़ियादहतर आमदनीके बढ़ाने और ख़र्चमें कमी करनेकी तरफ़ रही. इन्हीं दिनोंमें .इलाक़ह अजमेरमें डाका डालने वाले गांव लुहारीके मुजिम, जिनकी गिरिफ़्तारीके लिये गवर्मेण्टसे हुक्म था, गिरिफ़्तार न होसके, और अंग्रेज़ी अफ़्सरोंने इस बारेमें महाराणाके पास बहुत कुछ शिकायत लिखकर भेजी, जिसपर उन्होंने महता रघुनाथसिंहको वहांसे उदयपुर बुलाकर पर्गनह रासमी और गलूंड उसके सुपुर्द किये, जो पहिले सेठ ज़ोरावरमल्लकी सुपुर्दगीमें थे, और कुछ अरसह पीछे पर्गनह सहाड़ां तथा रेलमगरा भी उसके सुपुर्द कियेगये, जिनका इन्तिज़ाम उसने बहुत उम्दह तौरपर किया; और पर्गनह जहाज़पुरपर रघुनाथसिंहकी एवज़ महता अजीतसिंह भेजाजाकर वहांके मीनोंको सज़ा देनेके लिये कुछ फ़ौज व जलिंधरीका जागीरदार अमरसिंह (२) उसके साथ भेजा गया, और

---

(१) इसमें एक लक्ष दुर्गा पाठ करनेके लिये ब्राह्मण मुक़र्रर कियेजाते हैं और पूर्णाहुतिपर उनको ज़ेवर, ख़िल्अत व नक़्द वग़ैरह हज़ारों रुपयेका माल मिलता है. इसे एक बड़ा मज़्हबी जल्सह कहना चाहिये.

(२) अजीतसिंहने अमरसिंहको वृद्ध और तजर्बहकार जानकर उसपर ज़ियादह भरोसा करलिया था.

शाहपुरा, बनेड़ा, बीजोलिया, भैंसरोड़, जहाज़पुर व मांडलगढ़ वगैरह ज़िलोंके कुल जागीरदारोंकी जम्इयतें बुलाई गईं, और इनके अलावह भीम पल्टन व एकलिंग-पल्टनके निशान तथा जहाज़पुरकी तईनातीके कुल पैदल, सवार, दो तोपें और शुतरनालोंके ऊंट साथ लेकर शक्तावत अमरसिंहकी सलाहके मुताबिक़ महता अजीतसिंह मीनोंको सज़ा देनेके लिये जहाज़पुरसे रवानह हुआ. इसवक़्त एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी तह्रीरके ज़रीअहसे यह बन्दोबस्त करादिया गया था, कि जयपुर, टौंक और बूंदी वाले अपने अपने .इलाक़हकी सईदपर जम्इयतें भेजकर एक .इलाक़हके मीनोंको दूसरे इलाक़ह वालोंकी मददके लिये न जाने दें, और उक्त तीनों रियासत वालोंने वैसा ही बन्दोबस्त करादिया. महता अजीतसिंहने शुरूमें छोटी और बड़ी लुहारीको, जो मीनोंके मुखिया गांव थे, धावा करके फ़त्ह करलिया, और मीना लोग भागकर मादों (१) में चलेगये; लेकिन् महता अजीतसिंहने उनका पीछा करके चन्द मीनोंके सिर काटनेके अलावह कुछ मादे भी जलादिये. इसवक़्त दो-पहरका वक़् क़रीब आगया था, और ज्येष्ठका महीना होनेके सबब गर्म हवा (लू) भी बड़े ज़ोर शोरके साथ चलने लग गई थी, लेकिन् अजीतसिंहने इन बातोंका लिहाज़ न करके अपने साथकी सेनाको उन तीन चार हज़ार मीनोंपर, जो अपने बालबच्चों सहित मनोहर-गढ़ और देवकेखेड़ेकी पहाड़ीमें जमा होरहे थे, हमलह करनेका हुक्म दिया. इसपर धांधोलाके जागिरदार राणावत रत्नसिंहने, जो इसी ज़िलेका रहनेवाला वृद्ध और तजर्बह-कार शख़्स था, कहा कि इसवक़्त धूप बहुत सख़्त पड़रही है, और हवाका भी ज़ोर है, मीना लोग अपने बालबच्चोंकी हिफ़ाज़तके लिये मरनेको तय्यार हैं, फ़ौजके लिये पीनेको पानीका पूरा बन्दोबस्त नहीं है, जो मश्कें और पखालें आती हैं, वे जिनके हाथ पड़ती हैं वही लूटकर पीजाते हैं, मारे पियासके सैकड़ों आदमियोंका दम होटोंपर आरहा है, अलावह इसके जयपुर, टौंक व बूंदी .इलाक़हके हज़ारों मीने उनकी मददको तय्यार हैं, और आज अपनी किसीक़द्र फ़त्ह भी होचुकी है, इसलिये मुनासिब है, कि कल सुब्ह के वक़् हमलह किया जावे; और दूसरे कुल सर्दारों व अफ़्सरोंने भी उसे रत्नसिंहकी सलाह के मुवाफ़िक़ ही करनेको कहा. लेकिन् अमरसिंह बोला, कि "ये सब लोग मालिकका काम छोड़कर अपने शरीरका आराम चाहते हैं; अगर कोशिश कीजाये, तो थोड़ेसे मीने, जो इस टेकरीमें छिप रहे हैं अभी मारे जावें या गिरिफ़्तार करलिये जावेंगे". अजीतसिंहको तो अमरसिंहकी सलाहपर पूरा भरोसा था, उसने फ़ौरन् सिपाहियोंको हमलह करनेके लिये

(१) मादे उन फूससे छाये हुए और कांटोंकी बाड़से घिरे हुए छप्परोंको कहते हैं, जिन्हें मीना लोग मुसीबतके वक़्त अपने बालबच्चों व मवेशियों सहित रहनेके लिये झाड़ीमें बनालेते हैं.

हुक्म देदिया, और तोपका लंगर पकड़कर आप सबसे आगे बढ़ा; निदान मीनोंने भी बचावकी सूरत न देखकर डुडकारी (१) मारी और मुक़ाबलहके लिये तय्यार हुए. फ़ौजकी तरफ़से तोपों और बन्दूक़ोंके फ़ाइर होने लगे, जिनका जवाब मीनोंने तीर व गोलियां चलाकर दिया. इसी अ़रसहमें जयपुर, टोंक और बूंदी इ़लाक़हके पांच हज़ार मीने अपनी क़ौमवालोंकी मददके लिये आ पहुंचे और फ़ौजको चारों तरफ़से घेरकर गोली व तीरोंकी बौछार करने लगे. सघन झाड़ी, गर्म हवा, धूप और पियासके मारे तो फ़ौजके लोग पहिलेसे ही घबरा रहे थे, कि इसी अ़रसहमें झाड़ीकी आड़से मीनोंने जमा होकर उन्हें अपने शस्त्रोंका निशानह बनालिया. उस वक़् महता अजीतसिंह खुद बड़ी बहादुरीके साथ चारों तरफ़से फ़ौजके लोगोंको मदद पहुंचाता था. धांधोलाके जागीरदार रत्नसिंहने मीनोंको ललकारकर कहा, कि "ढेढ़ो (२), तुमको मेवाड़में रहना है या नहीं, याद रक्खो तुमने जो श्री दर्बारके सैकड़ों राजपूत और सिपाही मारडाले हैं उनका बदला लिया जायेगा". यह सुनकर मीने हटगये और फ़ौजके लोग अपने ज़ख़्मी आदमियों तथा मुर्दह लाशोंको लेकर ग्राम लुहारीमें आये. इस लड़ाईमें बीजोलियाकी जमइ़यतमेंसे गोवर्द्धनसिंह पंवार, शाहपुराकी जमइ़तमेंसे छोटी कनेछणके जागीरदारका भाई गंभीरसिंह राणावत, और सर्कारी पल्टनोंके २७ सिपाही मारे गये; इनके अ़लावह शाहपुराकी जमइ़यतमेंसे अरण्याका रूपसिंह चहुवाण, राजगढ़का रेवन्तसिंह कान्हावत, जहाज़पुरके सिलहदारोंमेंसे भूरसिंह हाड़ा और २५ या ३० सिपाही ज़ख़्मी हुए. इसके बाद महता अजीतसिंह फ़ौज समेत जहाज़पुरको लौट आया. मीना लोगोंने अपने हाथसे सिपाहियोंके मारेजानेका तो कुछ भी ख़याल न किया, लेकिन् राजपूतोंके मारेजानेसे उनको बड़ा अन्देशह हुआ, कि वे लोग ज़रूर हमसे बदला लेंगे. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने इस लड़ाईके चन्द रोज़ बाद जहाज़पुरमें लुहारीके गोकुल और गाडौलीके भुवाना पटैल (जो मीनोंके मुखिया थे) से एक मर्तबह पूछा, कि तुमने राजपूतोंको किसतरह मारा? उस वक़् उन्होंने महादेव (३) की क़स्म खाकर

---

(१) जिस तरह भीलवाड़के भील बुलन्द आवाज़से "फाइरे फाइरे" कहकर किलकारी मारते हैं, उसी तरह खैराड़के मीना लड़ाईके समय "डू डू डू डू" पुकारते हैं.

(२) भीलवाड़के भीलोंके लिये कांडी और खैराड़के मीनोंके लिये ढेढ़ एक सख़्त गाली (हिक़ारतका लफ़्ज़) है.

(३) मीना लोग महादेवको अपना इष्ट मानते हैं, और उसीसे अपनी उत्पत्ति भी बयान करते हैं.

यह कहा, कि "काली अंगरखी होनेसे लीलियों (१) के धोखेमें मारे गये, मीनोंने जानबूझकर राजपूतोंपर वार नहीं किया".

ऊपर लिखे हुए मारिकेका हाल सुनकर महाराणाने उदयपुरसे फ़ौज और सर्दारोंकी जम्इयतें फिर भेजीं, और एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने जयपुर, टौंक व बूंदीपर यह दबाव डाला, कि तुम्हारे .इलाक़हका बन्दोबस्त न होनेके सबब मेवाड़की फ़ौजका नुक़्सान हुआ है. इसपर उक्त तीनों रियासतोंने अपने अपने .इलाक़ोंके मीनोंकी सज़ादिहीके लिये फ़ौजें रवानह कीं. महाराणाने प्रधान महता शेरसिंह, महता गोपालदास, व चौधरी हमीरसिंहको जहाज़पुर भेजा, और विक्रमी १९११ पौष [हि० १२७१ रबीउल्अव्वल = ई० १८५४ डिसेम्बर] में राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेनूरी लॉरेन्स, मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट ज्यॉर्ज लॉरेन्स, और हाड़ौतीके पोलिटिकल एजेण्ट बर्टन साहिब मए कोटा कन्टिन्जेण्ट पल्टनके जहाज़पुरमें आये, तब मीनोंने मुक़ाबलह करना छोड़कर मुजिमोंको उनके सुपुर्द करदिया. इसके बाद लुहारी और देवाकाखेड़ाके बीचवाली मादोंकी झाड़ी कटवाकर साफ़ मैदान करवादिया गया. उक्त तीनों साहिबोंके मक़ाम एक महीनातक जहाज़पुर और ईटोदामें रहे. सर हेनूरी लॉरेन्स बड़े मिह्नती तजर्बहकार और इल्म दोस्त थे, उन्होंने एक रोज़ मुझे (कविराजा श्यामलदासको) बड़ी फुर्तीके साथ किताब पढ़ते देखकर गंगाकी नहरके हालकी एक किताब दी, और उनके डॉक्टरने शीतलाका टीका लगानेकी एक किताब दी, जो दोनों बतौर यादगार अबतक मेरे पास मौजूद हैं. इसके बाद साहिब लोग अंग्रेज़ी फ़ौज समेत वहांसे रवानह हुए.

सर हेनूरी लॉरेन्स और ज्यॉर्ज लॉरेन्स शाहपुरा, बनेड़ा, राजनगर, और नाथद्वाराकी तरफ़ दौरा करते हुए विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८५५ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को उदयपुर आये, और सर्दारोंके फ़साद व सती होनेका मुआमलह दर्पेश होनेके सबब पन्द्रह रोज़तक यहां ठहरे, (जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा), उसवक़् खैराड़के मीनोंका बन्दोबस्त करनेके लिये एक अंग्रेज़ी छावनी डालनेकी बाबत् भी बातचीत हुई थी, जो रियासत जयपुर, अजमेर, बूंदी और मेवाड़की सर्हदोंके संगमपर देवली मक़ाममें डालीगई, और मीनोंकी निगरानीके लिये रियासती थाने मुक़र्रर किये गये.

विक्रमी १९१२ श्रावण शुक्ल ७ [हि० १२७१ ता० ६ ज़िल्हिज = ई० १८५५

(१) मीना लोग पल्टनके सिपाहियोंको हिक़ारतसे लीलिया और मियांकड़ा बोलते हैं, जो मियांका अपभ्रंश है, क्योंकि उस ज़मानहमें अक्सर पल्टनके सिपाहियोंको वर्दीमें काला दगला मिलता था.

ता० २० ऑगस्ट] को श्री एकलिंगेश्वरके गोस्वामी सवाई शिवानन्द गुज़र-गये, जिनकी जगह उदयपुरके भटमेवाड़ा ब्राह्मण देवरामको ब्रह्मचर्य दिलाया गया, और सन्यास धारण करवाकर सवाई प्रकाशानन्दके नामसे गद्दीपर बिठाया गया. पहिले ज़मानहमें एकलिंगेश्वर महादेवकी भेट पूजा और पर्गने वगैरह कुल जायदाद गोस्वामियोंके ही इख़्तियारमें रहती थी, परन्तु इसवक्त प्रकाशानन्दके साथ एक इक़ारनामह हुआ, जिसमें ८०००) रुपयेकी जागीर हाथी, घोड़ों, तथा गोस्वामीके ख़ास ख़र्चके लिये मुक़र्रर होकर बाक़ी पर्गने और भेट वगैरह जायदाद सर्कारी निगरानीमें रक्खी-गई. इसके बाद श्री एकलिंगेश्वरके यथाविधि पूजनका प्रबन्ध और ज़ेवर वगैरह मन्दिरके लवाज़िमहका उम्दह बन्दोबस्त होकर एक जुदा ख़ज़ानह मुक़र्रर हुआ, जिसमें इसवक्त ज़ेवर व नक्द वगैरह मिलाकर लाखों रुपयेका सामान मौजूद है.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि० १२७२ ता० २० सफ़र = .ई० ता० १ नोवेम्बर] के दिन उदयपुरके पश्चिमी ज़िले कालीवास वगैरहके बाग़ी भील लोगोंको सज़ा देनेके लिये महाराणाने महता शेरसिंहके पुत्र सवाईसिंहको मए फ़ौजके भेजा, जिसने उनको ख़ूब सज़ा दी, और गांव जलाकर बहुतसे भीलोंको ज़िन्दह गिरिफ़्तार करनेके अलावह कई भीलोंके सिर काट लाया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० ता० ४ रबीउस्सानी = .ई० ता० १४ डिसेम्बर] को कर्नेल ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब उदयपुरमें आये, और इसी दिन डूंगरपुरके रावल उदयसिंह भी आये, जिनको नागोंके अखाड़ेतक पेश्वाई करके महा-राणा महलोंमें लाये, और जबतक वह यहां ठहरे, उनकी अच्छी तरह ख़ातिर तवाज़ो कीगई (१). विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० ता० ८ रबीउस्सानी = .ई० ता० १८ डिसेम्बर] के दिन महाराणाके हुक्मसे पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल ज्यॉर्ज लॉरेन्स ने महाराणा और उनके सर्दारोंका मध्यस्थ बनकर एक अह्दनामह क़ाइम किया, जिसपर देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह, बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंह, और शाहपुरा, भैंसरोड़ व बदनोर वगैरह कई ठिकानोंके सर्दारोंसे दस्तख़त कराये गये; इस अह्दनामहका ज़िक्र सर्दारोंके मुआमलातके बयानमें आगे लिखा जायेगा. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रबीउस्सानी = .ई० ता० २२ डिसेम्बर] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेनूरी लॉरेन्स साहिब राज्यमहलोंमें आये, और ऊपर बयान किये हुए मुआमलहमें महाराणासे बातचीत की.

---

(१) डूंगरपुरके रावलको महाराणाकी गद्दीसे नीचे बैठना और नज़ दिखलाना वगैरह दस्तूर तो मातहत उमरावोंके मुवाफ़िक़ ही अदा करना पड़ता है, लेकिन दूसरी कई बातोंमें उनकी इज़्ज़त उमरावोंसे बढ़कर कीजाती है.

विक्रमी माघ कृष्ण ऽऽ [हि॰ ता॰ २८ जमादियुल्अव्वल = ई॰ १८५६ ता॰ ६ फ़ेब्रुअरी] को महाराणाने दूसरी बार सुवर्ण तुलादान किया, जिसमें उदयपुरके तोलका एक मन बारह सेर नौ छटांक सुवर्ण तुला, जो ख़ैरातमें तक्सीम कियागया.

विक्रमी चैत्र कृष्ण १० [हि॰ ता॰ २३ रजब = ई॰ ता॰ ३१ मार्च] के दिन पाणेरी गोपाल हवालातमें रक्खागया, जो बड़ा बदचलन, चालाक, दग़ाबाज़, जालसाज़ और लालची शख़्स था. उसके तरक़्क़ी पानेका सिर्फ़ यही सबब था, कि वह महाराणाके हुक्मकी तामील बहुत जल्द करता था, यहांतक कि जो हुक्म उसको एक हफ़्तह की मीआदके लिये दियाजाता उसे वह दो ही दिनमें बजालाता; कारण यह कि उसको धर्म, अधर्म और बड़े छोटेका बिल्कुल लिहाज़ न होनेके सबब कुल रियासती लोगोंपर उसका रोब बहुत ग़ालिब होगया था, और महाराणा भी उसके कहनेको बे रू रिआयत समझने लग गये थे. सिवा इसके उसकी कोई शिकायत भी नहीं कर सक्ता था, क्योंकि महाराणा तो उसकी सच्ची शिकायत पेश होनेपर भी यही ख़याल करते, कि हमारे हुक्मकी तामील बहुत जल्द करनेके सबब आम लोग इसके साथ दुश्मनी रखते हैं, और गोपालको मालूम होनेपर वह शिकायत करनेवालेकी फ़ौरन् ख़बर लेलेता था. महाराणा स्वरूपसिंहने अपने राज्यशासनमें लाखों रुपया ख़ैरात किया, और इस (गोपाल) को ख़ैरातख़ानहका दारोग़ह बनाया, लेकिन् यह शख़्स ऐसा बदचलन था, कि इसने महाराणाके उत्तम कार्यमें बद दियानती करके बहुतसा माल ख़ैरातके एवज़ अपनी बदकारीमें उड़ादिया. वह रियासती लोगों पर इतना ग़ालिब आगया था, कि कुल अहलकारों और कारख़ानह वालोंको अपना मातहत जानने लगा; ख़ैरातके सिवा ख़बरनवीसीका काम भी इसीके सुपुर्द था, इसलिये जो कोई शख़्स उसको अपने विरुद्ध नज़र आता उसे फ़ौरन् जादू, बदख़्वाही, अथवा रिश्वतलेनेकी तुहमतमें फांसकर क़ैद करादेता और उसका घरबार ज़ब्त किया जानेपर कुछ माल अस्बाब तो महाराणाके ख़ज़ानहमें दाख़िल कराता और बाक़ीको आप हज़म करजाता था. आख़रकार ये सब बातें उसके क़ैद होनेपर महाराणाको मालूम हुईं, जिससे वह बहुत रंजीदह हुए, और ज़ियादहतर अफ़्सोस उन्हें इस बातका हुआ, कि उसने ख़ैरातका माल बदकारीमें सर्फ़ किया. इसके बाद गोपालका कुल घर ज़ब्त होकर संभालागया, जिसमें महाराणाका संकल्प किया हुआ बहुतसा सुवर्ण वग़ैरह माल निकला. अगर्चि इस शख़्सने ऊपर बयान कीहुई बातोंके अलावह और भी बहुतसी बेजा कार्रवाइयां की थीं, जो तवालतके सबबसे यहांपर छोड़दीगई हैं, परन्तु पाठक लोग इतनेहीमें जान सक्ते हैं, कि वह शख़्स आदमी क्या! जालसाज़ी और फ़िरेबका एक पुतला था.

विक्रमी १९१३ [हि॰ १२७२ = ई॰ १८५६] के शुरूसे महाराणा

ज़ियादहतर गोवर्द्धनविलासमें रहने लगे, और उसी समयसे वहां महल व मकानात वग़ैरह बनना शुरू हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ऽऽ [हि० १२७३ ता० २८ रबीउस्सानी = .ई० ता० २७ डिसेम्बर] को महता शेरसिंहके एवज़ महता स्वरूपचन्द के पुत्र गोकुलचन्दको प्रधानेका ख़िल्अ़त मिला, और काका महाराज दलसिंह, कायस्थ हरनाथ तथा ढींकड़्या उदयराम उसे दस्तूरके मुवाफ़िक़ अपने मकानपर पहुंचानेको गये.

सर हेनरी लॉरेन्सके राजपूतानहसे लखनऊकी रेज़िडेन्सीपर बदलजाने और ज्यॉर्ज लॉरेन्सके मेवाड़की एजेन्सीसे तब्दील होकर अजमेरके चीफ़ कमिश्नर व एजेएट गवर्नर-जेनरल राजपूतानह नियत होनेपर उनकी जगह मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट कप्तान शावर्स नियत हुए, जो विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] में पूर्वी हिन्दुस्तानकी तरफ़ अंग्रेज़ी पल्टनोंके बाग़ी होजानेपर डाक द्वारा नीमचसे रवानह होकर विक्रमी वैशाख कृष्ण १४ [हि० ता० २७ शअ़बान = .ई० ता० २३ एप्रिल] को उदयपुरमें आये, और ग़द्र रोकनेके लिये महाराणाको मददगार बनानेकी ग़रज़से बात चीत करके उनकी तरफ़से गवर्मेंएटको पूरी पूरी सहायता मिलनेका पुख़्तह इक़ार होजानेके बाद विक्रमी वैशाख शुक्ल ६ [हि० ता० ४ रमज़ान = .ई० ता० २९ एप्रिल] को डाक द्वारा उदयपुरसे आबूकी तरफ़ रवानह हुए; वहांपर एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे मिलकर वापस उदयपुरमें आये और महाराणासे फिर कुछ सलाह मश्वरह करने के बाद नीमचकी तरफ़ चले गये. इन दिनों बाग़ी फ़ौज राजपूतानहमें भी फैलगई थी, जिसका मुफ़स्सल हाल आगे लिखा जायेगा. अब हम ग़द्रके हालको छोड़कर मेवाड़में ठिकाने आमेटके रावत् पृथ्वीसिंहके विक्रमी १९१३ [हि० १२७३ = .ई० १८५७] में लावलद गुज़रजानेके सबब जो बखेड़ा उसके हक़दारोंमें पैदा हुआ उसका हाल लिखते हैं.

आमेटके रावत् महाराणा लाखाके पुत्र चूंडा (१) की औलादमेंसे हैं, जिनका कुर्सीनामह उनके हक़दारों समेत पाठक लोगोंके अवलोकनार्थ मुख़्तसर तौरपर नीचे दर्ज कियाजाता हैः-

---

(१) चूंडाकी औलाद वाले मेवाड़में बहुतसे ठिकानोंपर क़ाबिज़ हैं, जो चूंडावत और उनके अन्तरगत सलूंबर, कुरावड़, भैंसरोड़ व आसींद वाले कृष्णावत, बेगूं वाले मेघावत, देवगढ़ वाले सांगावत और आमेट वाले जगावत कहलाते हैं.

आमेट वालोंका नस्ब नामह.

- चूंडा १
  - कांधल २
    - १-रत्नसिंह — जिसकी औलादमें सलूंबर व बेगूं वगैरहके कृष्णावत और मेघावत हैं.
    - सिंहा ३
      - जग्गा ४ — जिससे जगावत कहलाये.
        - पत्ता ५
          - कर्णसिंह ६ — इसको आमेटका पट्टा मिला.
            - मानसिंह ७
              - माधवसिंह ८
                - गोवर्द्धनसिंह ९
                  - दूलहसिंह १०
                    - पृथ्वीसिंह ११
                      - मानसिंह १२ — पृथ्वीसिंहकी मौजूदगीमें ही मरगया.
                        - फ़तहसिंह १३
                          - प्रतापसिंह १४
                          - सालिमसिंह १५
                          - पृथ्वीसिंह १६
                          - चत्रसिंह १७
                          - नाथूसिंह १ — जिसे ओलोंका मिला.
                            - ज़ालिमसिंह २
                              - १ सालिमसिंह — प्रतापसिंहके बाद आमेटमें गोद गया.
                              - २ बख़्तावरसिंह ३
                                - अर्जुनसिंह ४
                                  - १ चत्रसिंह — जो आमेटमें गोद गया.
                                  - २ लक्ष्मणसिंह
                - हरिसिंह १ — यह माधवसिंहका चौथा पुत्र था, जिसको बेमाली मिली.
                  - जीवराज २
                    - देवीसिंह ३
                      - चतुर्भुज ४
                        - नाथूसिंह ५
                          - भैरवसिंह ६
                            - ज़ालिमसिंह ७ (→ सालिमसिंह १५)
                              - १ पद्मसिंह
                              - २ अमरसिंह
                              - ३ लक्ष्मणसिंह
      - २-सांगा — इसकी औलादमें देवगढ़ वगैरह सांगावत हैं.

रावत् पृथ्वीसिंहकी मौजूदगीमें ठिकाने आमेटका कुल काम बेमालीवाले ज़ालिमसिंह और मान्यावासके समरथसिंहकी सलाहके मुवाफ़िक़ होता था. पृथ्वीसिंहके लावलद गुज़र-जानेपर उसका जानशीन तज्वीज़ कियेजानेका विचार हुआ, उसवक्त आमेटके कुल भाइयों (जगावतों) ने जीलोळावाले दुर्जनसिंहके बड़े बेटे चत्रसिंहको गद्दीपर बिठानेकी सलाह की, बल्कि तीन रोज़तक पृथ्वीसिंहका क्रिया कर्म भी उसीके हाथसे हुआ, लेकिन् दुर्जन-सिंहने अपने छोटे बेटे लक्ष्मणसिंहको गद्दीपर बिठाना चाहा. उसवक्त सर्कारी ख़बरके हर्कारेने ढींकड्या तेजरामके नाम इस मुआमलहकी बाबत् दो काग़ज़ लिखे, जिनका खुलासह यह है, कि आमेटका रावत् पृथ्वीसिंह विक्रमी माघ कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुलूअव्वल = .ई० ता० २१ जैन्युअरी] को गुज़र गया, और उसकी जगह शुरूमें जीलोळावालोंके बड़े बेटे चत्रसिंहको गद्दीपर बिठानेकी तज्वीज़ हुई, जिसके लिये कि मरते समय पृथ्वीसिंह कहगया था, परन्तु तीसरेके दिन बेमालीवाले ज़ालिमसिंहने रावत् पृथ्वीसिंहकी माता भटियाणी और उसकी ठकुराणी मेड़तणीको मिलाकर लहसाणीके ठाकुर सुल्तानसिंह, और उसके काका समरथसिंह वग़ैरह चन्द मुख्य मुख्य आदमियोंकी शामलातसे विक्रमी माघ कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुलूअव्वल = .ई० ता० २३ जैन्युअरी] के रोज़ अपने बेटे अमरसिंहको आमेटकी गद्दीपर बिठादिया.

विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि० ता० ८ रजब = .ई० ता० ५ मार्च] को बेमाली वाले ज़ालिमसिंहने और फाल्गुन शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० ८ मार्च] को रावत् पृथ्वीसिंहकी ठकुराणी मेड़तणीने अमरसिंहका गोद लिया-जाना मन्ज़ूर फ़र्मानेकी ग़रज़से ऊंकार व्यासके हाथ महाराणाकी ख़िदमतमें बड़ी लाचारीके साथ अर्ज़ियां लिखकर भेजीं, जिनपर महाराणाने अमरसिंहको मन्ज़ूर फ़र्माकर तलवार बन्दीके ख़िराजकी बाबत् बातचीत करनेका हुक्म दिया. उधरसे जीलोळाके जागीरदार दुर्जनसिंहकी अर्ज़ियां भी हक़दारीके उज़्रसे पेश हुईं और उसके तरफ़दार देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह व आमेटके भाइयोंकी कई दर्ख़्वास्तें गुज़रीं, जिनमें आमेटपर जीलोळावालोंका हक़ होना बयान कियागया था. लहसाणीकी सर्हदके बारेमें कुछ दिनोंसे देवगढ़ वालोंके साथ ज़ालिमसिंह और समरथसिंहकी दुश्मनी चलरही थी, इसलिये रावत् रणजीतसिंहको भी इनकी ताक़तका बढ़ना नागुवार गुज़रता था, और सर्दारोंके बखेड़ेमें समरथसिंह व ज़ालिमसिंह दोनों बड़े सलाहकार रहे थे, जिनपर सलूंबरका रावत् केसरी-सिंह पूरा भरोसा रखता था, इसलिये महाराणाने यह पोलिटिकल कार्रवाई की, कि जीलोळावालोंको तो पोशीदह तौरपर आमेटमें क़बज़ह करलेनेका इशारह करदिया,

और व्यास ऊँकारकी मारिफ़त विक्रमी १९१४ वैशाख कृष्ण ११ [हि० १२७३ ता० २४ शअ्बान = ई० १८५७ ता० २० एप्रिल] को तलवार बन्दीके ४४०००) और प्रधानकी दस्तूरीके ४०००) रुपयोंका एक रुक़ा रावत् अमरसिंहके नामका लिखवालिया. रावत् अमरसिंहकी अर्ज़ तो कायस्थ हरनाथकी मारिफ़त होती ही थी, अब पोशीदह तौरपर जीलोळावालोंकी अर्ज़ महाराज चन्दसिंहकी मारिफ़त होने लगी. जीलोळावालोंकी मददपर कोठारियाका रावत् जोधसिंह, देवगढ़का रावत् रणजीतसिंह, कान्होड़का रावत् उम्मेदसिंह, बदनौरका ठाकुर प्रतापसिंह, भैंसरोड़का रावत् अमरसिंह, और कोशीथल व ताल वगैरहके कई सर्दार थे; और बेमाली वालोंके मददगारोंमें सलूंबरका रावत् केसरीसिंह, भींडरका महाराज हमीरसिंह, गोगूंदाका राज लालसिंह, कुरावड़का रावत् ईश्वरीसिंह, बागोरका महाराज शेरसिंह, बनेड़ाका राजा गोविन्दसिंह और ल्हसाणी व मान्यास वगैरहके जागीरदार थे. महाराणाका खानगी इशारह पाकर जीलोळावाले दुर्जनसिंहके बेटे चत्रसिंह ने अपने तरफ़दारोंकी मददसे २००० आदमी जमा करके विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १ [हि० ता० १५ रमज़ान = ई० ता० १० मई] को दो घड़ी रात बाक़ी रहे आमेटपर धावा करदिया और क़स्बहको चारों तरफ़से जाघेरा, उसवक्त अमरसिंहके पास उसका पिता ज़ालिमसिंह बेमाली वाला और ल्हसाणीका जागीरदार सुल्तानसिंह मौजूद थे, लेकिन् ये लोग ग़फ़लतके सबब पहिलेसे कुछ बन्दोबस्त न करसके. सिवा इसके रियासतकी तरफ़से तलवार बन्दी होनेतक दस्तूरके मुवाफ़िक़ आमेटकी ज़ब्तीपर महता ज़ालिमसिंह भेजागया था, जिसकी सुपुर्दगीमें दर्वाज़ोंकी कुंजियां वगैरह कुल ठिकानेकी निगरानी थी, उसने चत्रसिंहके पहुंचनेपर शहरका दर्वाज़ह खुलवादिया, और चत्रसिंह मए जम्इयतके दाख़िल होकर कुल क़स्बहपर क़ाबिज़ होगया, सिर्फ़ ठिकानेदारके रहनेका मकान अमरसिंहके क़ब्ज़हमें रहा, और दोनों तरफ़से बन्दूकें चलने लगीं. इस लड़ाई में बेमाली वाले ज़ालिमसिंहका बड़ा बेटा पद्मसिंह, तथा दो आदमी दूसरे मारेगये, और ल्हसाणीका जागीरदार सुल्तानसिंह सख़्त ज़ख़्मी हुआ. दो रोज़तक बराबर लड़ाई जारी रहनेके बाद विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रमज़ान = ई० ता० १२ मई] को अमरसिंहकी तरफ़से अम्न चाहनेपर महता ज़ालिमसिंह अमरसिंह वगैरह लोगोंको अपने डेरेमें लेआया, और ठिकानेपर चत्रसिंह क़ाबिज़ होगया. इसवक्त रावत् पृथ्वीसिंहकी ठकुराणी मेड़तणी जो अमरसिंहको गद्दीपर बिठाना चाहती थी, आमेटसे निकलकर अपनी बेटी और रावत् अमरसिंह वगैरह इप्ताहियों सहित गढ़बोर (चारभुजा) में जाबैठी, जो एक बड़ा मशहूर मज़्हबी पनाहका मन्दिर है, और वहांसे

एक दर्ख्वास्त राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिबके नाम लिख भेजी, जिसकी नक्ल नीचे दर्ज कीजाती है:-

एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके नाम रावत पृथ्वीसिंहकी
ठकुराणी मेड़तणीकी दर्ख्वास्त.

॥ श्रीरामजी.

हुक्म हुवा.
कि एसे मेवाड़के गरू मुकद्दमे
में हमारा मुदाखलत नहीं होवे,
इसवास्ते ऐसे मुकद्दमेमें तुमको
ज्यो बत अरज मारुज करणा होवे
सो बदोलत श्री महाराणा सा-
हिब बहादुर धणी आपणे करो, अर
ज़बत आपके पास भेजदीया है,
ता० २३ मई सन १८५७ ई०
(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.)

॥ सीधश्री आबुजी सुभसुथाने स्त्रब ओपमा वीराजमान अनेक ओपमा लाएक राज श्री ५ श्री करणेल जारज सेन्ट पांत्रक लारनस साहेब बहादुरजी अेतान गढबोर सु लषावता मेड्तणीजीकी आसीस बंचावसी, अठाका समाचार श्री जी की क्रपाथी करे भला हे, आपका सदा आरोग चाहीजे, आप मारे गणी वात हो, बडा छो, सदा मेरवानगी हे जीहुईज रषावसी, अप्रंच ॥ अबार जेठ वीद १ के दीन जीलोला ठाकुर दुरजणसींगजी अर वारा बेटा चत्रसीगजी देवगढ वगेरे दो च्यार ठकाणा री जमीत लेने रात गडी दोय रेतारे आसरे आमेठ आया ने श्री दरबारकी तरफसु कामदार धुसपर हा, सो ऊणा दरवाजा षोल ने वणारो हजार दो हजार मनक माहे लेलीदा; ई राजदवारा ऊपरे आए पड्या, जीमे पदमसींगजी ने दो सरदार दुजा तीन सरदाराने तो मार नाक्या, ने चार पाच सरदार गायल हुया, अर रावलाने तो घेर लीदो, अर रावलामे पाणीरो कुडो हो जीने पण बंदोबसत कर लीदो, जद मारी छोरी पाणी ऊपर भरवा गई जीने पण गोलीरी देने मार नाकी, दन तीन सुदी माने पण गेर राष्या, पाणी पण पीवादीदो नही, मने आमेट बारे काडदीदी, जद मु रावत अमरसीगने वाईने लेने गढबोर आय बेठी अर मारो रोकड तथा गेणो तथा ओर असबाब ओर ठकाणो कोसलीदो, सो अस्यो जुलम अदना मनकसु

हुआे नही, जस्यो मासु हुओ. आप हाकम हे बडा हे, सो मारी सुणवाई करने मासु जुलुम मारे गरे बेठा जगडो कीदो, जीने ओलुंबो मीले ने मारो ठकाणो मने मले, मारे तो आसरो आपरो हे, आपरी परवस्तीसु वणया रांगा, ओर वठे म्हारो काम्दार वगेरे पांच चार आसाम्या अर मारा पीरको भरामण हे, सो ऊणाने तो साराने पकड केद कीदा ने गर बंदोवसत कीदा, ऊणाने कूट मार करे हे, सो आपने पुदा बडा बणाया हे, सो गरीब जोरावरकी बराबर सुणे हे, सो मारो नरधार करे, श्री दरबार तो ईसवर परमेसर हे, पण श्री दरबारके कामेती दरवाजा षोली न मे वालदीदा, ने ऊपला लीष्या परमाणे मासु जुलम करायो; ने पेल्यारी हगीगत ई मुजब हे, के महा वीद ७ सातमरे दन श्री रावजी साहेबने पेद ज्यादा वी, जद मने हुकम कीदो के अबरके मारे षेद ज्यादा हे, सो चत्रभुजजी बंचावे तो वंचु, पण मारा डीलरी सरदा गठी, सो मारे आराम वेजावे जद तो ठीक हीज हे, ने कदाचीत मरजाउ तो मारे पछाडी जोल्या जालमसीगजीरा बेटा अमरसीगने राषज्यो, सो थारी तो चाकरी करेगा ने बाईने परणावेगा अर धणीकी बंदगी करेगा, अर ठकाणाने पण आवादान राषेगा, असो हुकम कीदो; अर महा वीद १० रे दन रावतजी साहेब तो देवलोक पदारे गया, जीसु श्री रावतजी साहेबरो तो हुकम ने मारी कुसीसु अमरसींग जोल्या राष्या ने गोदी बेठायो, जी दन आषी रजवाड तथा भाया तथा कामदारांकी कुसीसु नजराणो कीदो ने गादी बेठावाको दसतुर सदा वे ज्यो रजवाड वाला कीदो ने जीलोलावाला अषर करदीदा, मे मारा गरमें पाच सरदार कोटडी बन्द हे जणा तथा कामदारा श्री दरबारने अरजी लषी, सो मे राजी कुसीसु श्री रावतजीरे जोल्या रावत्‌जी अमरसींगजीने राष्या, ने आपरी सरकारमे तथा ओर रजवाडमे यो दस्तुर हे, सो मालक बेठा मालकरी मुरजी वे सो करे, ने पाछासु ठुकराणीने ईकतीयार हे, सो मने श्री रावतजी साहव पण अमरिगजीरे वास्ते हुकम कीदो ने मारा राजीपासु ने रजवाडरा राजीपासु अमरसीगने जोल्या लीदो, ने श्री दरबार हुकम कीदो, के मने नजराणाका रुप्या ४१०००) अगतालीस हजार ला, जद धणीको पण हुकम माथापर राष्यो ने, रुको नजर कीदो, सो धणी हुकम कीदो, ज्यो मे माथा ऊपर राष्यो ने दरवाजारी कुच्या मागी तो पण कुंच्या सुपी जद कामेत्या दरवाजा षोलेने मेसु ऊपला लीष्या मुजब जुलम करायो, ने आप हाकम हो, सो मेरवानगी कर परवस्ती वेगी करे, मु पुरी दुषी हु, मारे तो आसरो आपरो हे; ओर अठा लाएक काम काज वे सो लषावसी, अठे तो आपरो हुकम हे, संमत १९१२ (१) जेठ वीद ७.

---

(१) यह संवत् चैत्रादि हिसाबसे १९१४ होता है.

ऊपर लिखे हुए मज्मूनका एक काग़ज़ मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट शावर्स साहिबके नाम भी भेजागया, जिसके जवाबमें उक्त पोलिटिकल एजेएटने लॉरेन्स साहिबके मुताबिक़ ही हुक्म दिया. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ता० १५ शव्वाल = ई० ता० ७ जून] को रावत् अमरसिंह मए रावत् पृथ्वीसिंहकी ठकुराणी और अपने तरफ़दारोंकी जमइयत के क़िले कंवारियामें जा पहुंचा, जो सलूंबरके रावत् केसरीसिंहकी जागीरमें एक छोटासा क़िला है और आमेट व कंवारियामें तरफ़ैनके पक्षवाले सर्दारोंकी जमइयतें एकट्ठी होने लगीं. इसके कुछ अरसह बाद ल्हसाणीके ठाकुर सुल्तानसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जो आमेटकी लड़ाईमें सख़्त ज़ख़्मी हुआ था, और रावत् पृथ्वीसिंहकी स्त्री अपनी बेटी तथा रावत् अमरसिंह सहित कंवारियासे सलूंबरको चली गई. इसी तरह मेवाड़के सर्दारोंके दो जुदे जुदे गिरोह होगये. इन दिनों हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी फ़ौजकी बग़ावत बड़े ज़ोर शोरके साथ फैल रही थी, और महाराणा चाहते थे, कि रावत् चत्रसिंहको मुस्तक़िल तौरसे आमेटकी गद्दीपर क़ाइम करदेवें, लेकिन् ऊपर बयान किये हुए सर्दारोंके दो गिरोहोंमेंसे रावत् अमरसिंहके तरफ़दारोंने खैरवाड़ाके असिस्टेंएट पोलिटिकल एजेएट कप्तान ब्रुक साहिबको कहा, कि अगर रावत् अमरसिंह ठिकाने आमेटपर न बिठाया जायेगा, तो मेवाड़में ग़द्र आम होकर बखेड़ा पैदा होगा, क्योंकि राजपूतानहके कुल राजपूत भी इस मुआमलहमें हमारे मददगार हैं. इसपर कप्तान ब्रुक साहिबकी सलाहके मुवाफ़िक़ महाराणाने चत्रसिंहको उदयपुर बुलाकर कुछ अरसहके लिये उसकी तलवार बन्दी मुल्तवी रक्खी, और हुक्म दिया, कि दोनों तरफ़का दावा पेश होनेपर इन्साफ़के रूसे तहक़ीक़ात कीजाकर, जिसका हक़ साबित होगा उसको ठिकाना मिलेगा. इस मुआमलहकी बाबत् पोलिटिकल एजेएट शावर्स साहिबने भी एक इश्तिहार जारी किया, जिसका मत्लब यह था, कि इसवक़्त कोई सर्दार फ़साद न उठावे, और जिसको किसी तरहकी तक्लीफ़ हो वह हमको कहे, हम उसकी मुनासिब तहक़ीक़ात करके वाजिबी तस्फ़ियह करादेंगे, सिवा इसके यदि कोई सर्दार किसी तरहका बखेड़ा या फ़साद पैदा करेगा, तो वह सर्कारी मुज्रिम क़रार दिया जायेगा, और उसके हक़में बहुत बुरा होगा. इस इश्तिहारके जारी होने और महाराणाकी अक़्लमन्दी और पोलिटिकल कार्रवाईसे मेवाड़में किसी तरहका फ़साद नहीं हुआ. हिन्दुस्तानका ग़द्र मिटजानेपर विक्रमी १९१७ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १२७६ ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० १८६० ता० २९ मई] के दिन आमेटके रावत् चत्रसिंहको तलवार बंधाई गई; और महाराणाका इन्तिक़ाल होनेके बाद रावत् अमरसिंह आमेटकी बराबर इज़्ज़त पाकर एक जुदा उमराव बनायागया, जिसका ज़िक्र मौक़ेपर लिखा जायेगा.

अब हम यहांपर थोड़ासा हाल विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रका लिखते हैं, जो मेवाड़की तवारीख़से सम्बन्ध रखता है; इसका बाक़ी हाल अंग्रेज़ोंकी तवारीख़के साथ पहिले हिस्सहमें लिखागया है.

विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ६ [हि० ता० ५ शव्वाल = .ई० ता० २९ मई] को शावर्स साहिब आबूसे उदयपुर आये, जिनको महाराणाने मेरट और दिल्लीमें ग़द्र फैलनेकी ख़बर सुनकर अपने चार सर्दारों सहित जगमन्दिर महलमें हिफ़ाज़तके साथ रक्खा. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ता० ४ शव्वाल = .ई० ता० २८ मई] को नसीराबादकी छावनीमें बग़ावत पैदा हुई, और नीमचमें भी ग़द्र होनेकी ख़बर मिली, जिसकी बाबत् कर्नेल ऐबट और नीमच व जावदके सुपरिन्टेण्डेण्ट कप्तान लायडने शावर्स साहिबको लिखा, कि रियासतकी फ़ौज लेकर बहुत जल्द नीमचकी तरफ़ आओ, यहां बलवा होने वाला है; और विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ११ [हि० ता० १० शव्वाल = .ई० ता० ३ जून] को लायड साहिबका भी एक ख़त ग़द्र फैलनेके बारेमें उनके पास आया, जिसपर उन्होंने इस मुआमलहमें महाराणासे बातचीत की. महाराणाने विचारा, कि मेवाड़की हद्दमें अंग्रेज़ोंकी रक्षा करना हमपर एक ज़रूरी फ़र्ज़ है, और यह सलाह महाराणाके सलाहकारोंके सामने पुख़्तह होकर मेवाड़की तरफ़से बेदलाका राव बख़्तसिंह रियासती फ़ौज समेत पोलिटिकल एजेण्ट शावर्स साहिबके साथ नीमचकी तरफ़ रवानह कियागया, और एक ख़ास रुक़ा महाराणाने अपने इलाक़ह के सर्दारों और हाकिमोंके नाम इस मज़्मूनका लिखदिया, कि पोलिटिकल एजेण्ट को ज़रूरतके वक़्त दिलोजानसे मदद देवें, और हमारे हुक्मके मुताबिक़ उनके हुक्मकी तामील फ़ौरन् करें. उसवक़्त शावर्स साहिबको यह ख़बर मिली, और उनके पास नीमचके तोपख़ानहका अफ़्सर बार्नेस और रोज़ साहिब भी आमिले. इसी अरसहमें कप्तान मैक्डॉनल्डकी एक चिट्ठी शावर्स साहिबके पास इस आशयकी आई, कि यहांपर इसवक़्त बहुत नाज़ुक हालत है, इसलिये मददगार लश्करकी ज़ियादह ज़रूरत है. यह चिट्ठी पढ़कर शावर्स साहिब मए बार्नेस साहिब और राव बख़्तसिंह व रियासती फ़ौजके उदयपुरसे रवानह हुए, और रोज़ साहिब सफ़र वग़ैरहसे थकजानेके सबब उदयपुरमें ही रहे. कप्तान शावर्स लिखते हैं, कि महाराणाका यह काम कुल राजपूतानहके लिये एक .उम्दह नसीहत हुआ. इसके बाद प्रधान महता शेरसिंह रियासतके दूसरे मुलाज़िमों सहित उक्त साहिबसे आमिला. वह लिखते हैं, कि आमेट और बीजोलियाकी गोदनशीनीकी बाबत् मेवाड़में फ़साद न फैलने देनेके मुआमलहमें भी महाराणाने मेरी सलाहके मुवाफ़िक़ बन्दोबस्त किया; और लेफ़्टिनेण्ट

कर्नेल ब्रुक और कप्तान आर० एम० एन्सलीने खैरवाड़ेकी भील कॉर्प्सको क़ाबूमें रखने याने उसे बाग़ी न होने देनेके अलावह उस पहाड़ी ज़िलेका प्रबन्ध बहुत अच्छा किया. उसवक़ शावर्स साहिबने महाराणाके दिलसे मदद देनेका कुल हाल कर्नेल ज्यॉर्ज लॉरेन्सको लिखभेजा. जब शावर्स साहिबको यह ख़बर मिली, कि नीमचसे भागेहुए ४० अंग्रेज़, मेम और उनके बच्चे डूंगलामें बाग़ियोंसे घिरे हुए हैं, और उनकी जान ख़तरेमें है, वह फ़ौरन् मए राव बख्तसिंह व मेवाड़ी फ़ौजके १० बजे रातको डूंगलामें पहुंचे, और उन्होंने बाग़ियोंको मारकर भगादिया. उसवक़ उन मुसीबत ज़दह अंग्रेज़ोंको दुश्मनोंके हाथसे सहीह सलामतीके साथ रिहाई पानेपर जो ख़ुशी हासिल हुई, उसका हाल शावर्स साहिबकी तह्रीरको देखनेसे अच्छी तरह ज़ाहिर होसक्ता है. राव बख्तसिंहने महाराणाके हुक्मके मुताबिक़ इन अंग्रेज़ोंको पालकी और हाथी घोड़ोंपर सवार कराकर उदयपुर भेजदिया, जहां महाराणाने उन्हें पीछोला तालाबके अन्दर जगमन्दिर महलमें बड़ी हिफ़ाज़तके साथ रक्खा, और उनकी ख़ातिरदारी व हिफ़ाज़तके लिये अपने प्रधान महता गोकुलचन्दको तईनात करनेके अलावह ख़ुद ने भी वहां जाकर उनकी हरतरहसे तसल्ली की, और दर्यापत करते रहे, कि उन्हें किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो. इस बारेमें एन्सली साहिबने एक रिपोर्ट की थी, जिसका मत्लब यह है, कि कल महाराणा साहिब हमारे पास जगमन्दिरमें आये, और दर्यापत किया, कि हमको किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो, और छोटे छोटे बच्चोंको देखकर उनमेंसे हरएकको दो दो अश्रफ़ियां दीं, और शामके वक़ उन्हें अपनी महाराणीके पास लेगये, जहां दो दो अश्रफ़ियां अपनी तरफ़से और दोदो महाराणीकी तरफ़से उन्हें और देकर पीछा हमारे पास भेजदिया. महाराणा ऐसे सभ्य और दयालु हैं, कि इनकी बराबरी कोई दूसरा नहीं करसक्ता.

डॉक्टर मरे साहिबने, विक्रमी १९२० वैशाख कृष्ण ४ [हि० १२७९ ता० १७ शव्वाल = ई० १८६३ ता० ७ एप्रिल] को शावर्स साहिबके पास एक चिट्ठी बतौर धन्यवादके भेजी थी, जिसका मत्लब यह है, कि हम लोग आपके और महाराणा साहिबके बहुत इह्सानमन्द हैं. आप सर्दारोंके साथ डूंगला में पहुंचे, उसवक़की ख़ुशीको मैं नहीं भूला हूं, वह वक़ बड़ा नाज़ुक था, यदि महाराणा साहिब हमारे बर्ख़िलाफ़ होते, तो हमको इस ज़मीनपर और कोई दूसरा बचानेवाला न था.

डॉक्टर मरे और डॉक्टर गेन दोनों नीमचके कैम्पमें थे, जब वहां ग़द्र हुआ और छावनी जलाई जाकर तोपख़ानहके सार्जेण्ट सपल की एक मेम और दो बच्चे

मारेगये और बाक़ी अंग्रेज़ जान लेकर भागे, उसवक़ उक्त दोनों डॉक्टर भागकर केशूंदा मक़ाममें आये, जो .इलाक़ह मेवाड़में पर्गनह छोटी सादड़ीका एक गांव है; वहां के पटेलने दोनों साहिबोंको तसल्लीके साथ अपने यहां रखकर खाना खिलाया. पीछे से बाग़ी सिपाहियोंने ख़बर पाकर उन्हें आघेरा, मगर पटेलने बड़ी बहादुरीके साथ मए चन्द रियासती सिपाहियोंके मुक़ाबलह करके बाग़ियोंको हटाया, और उक्त दोनों साहिबोंको तसल्ली व ख़ातिरदारीके साथ कहा, कि आप हमारे मिह्मान और पनाहमें आये हुए हैं, अगर दुश्मन होते, तोभी इस हालतमें आपकी हिफ़ाज़त करना हमपर फ़र्ज़ था. दूसरे दिन सादड़ीके हाकिमकी तरफ़से भी मदद आपहुंची, जिससे उक्त दोनों साहिबोंकी जान बच गई. महाराणाने इस नेक ख़िद्मतसे ख़ुश होकर केशूंदाके पटेलको अपने रूबरू बुलाया और उसे ख़िल्अ़त और कुछ ज़मीन बख़्शी; इसी उत्तम कार्रवाईके .एवज़में गवर्मेएट अंग्रेज़ीने भी कुछ रुपया नक्द बतौर इन्आ़म देनेके अ़लावह उसे एक कुआं खुद्वा दिया. विक्रमी १९१४ आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० १२७३ ता० १९ शव्वाल = .ई० १८५७ ता० १२ जून] को शावर्स साहिब बाग़ियोंका पीछा करतेहुए चित्तौड़गढ़पर पहुंचे, और वहांसे नीमच, नसीराबादके डाकख़ानोंका बन्दोबस्त करके कप्तान लायड और कर्नेल ऐबटके नाम नीमचको यह लिखभेजा, कि वहांपर क़िलेमें जो लेडियां और बच्चे हों उन्हें फ़ौरन् उदयपुर पहुंचादो. इसके बाद विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ शव्वाल = ई० ता० १५ जून] को वह मेवाड़ के लश्कर समेत सांगानेरमें पहुंचे, जहां हमीरगढ़ और महुवाके जागीरदार भी उनसे आ मिले. शावर्स साहिब चाहते थे, कि नीमचके बाग़ियोंसे केकड़ीके रास्तेपर मुक़ाबलह करें. वह लिखते हैं, कि बड़ी भरोसादार मेवाड़की फ़ौज हमारे साथ थी. उक्त साहिब यहांसे रवानह होकर शाहपुराको गये, जहां ख़बर मिली, कि दिल्लीके पास बदलाकी सरायपर बाग़ियोंसे बड़ी लड़ाई हुई. इसवक़ शावर्स साहिबका यह इरादह हुआ, कि नीमचके बाग़ियोंपर हमलह करें, लेकिन् बाग़ी लोग आगे निकलगये, और उन्होंने देवलीकी छावनीको जलाकर बर्बाद करदिया, जहांसे एक अंग्रेज़ और दस औरतें तथा बच्चे जान लेकर भागे, उनको महाराणाके मुलाज़िमोंने जहाज़पुरमें पनाह दी. फिर नीमच और महीदपुरके बाग़ी लोग चलेगये, और मऊ, इन्दौर व आगरमें भी बलवा खड़ा हुआ. बेगूंके रावत् महासिंहने महाराणा के मन्शाके मुवाफ़िक़ मन्दसोर वग़ैरहकी तरफ़से भागकर आनेवाले अंग्रेज़ोंको पनाह दी, जिसके .एवज़में गवर्मेएट अंग्रेज़ीसे उसे ख़िल्अ़त मिला. शावर्स साहिबने सलूंबरके रावत् केसरीसिंहकी शिकायत इस सबबसे लिखी है, कि उसवक़ उसने

महाराणाको धमकी दी और बखेड़ा उठाना चाहा था. इसकी बाबत् उक्त साहिबका बयान है, कि सर हेनूरी लॉरेन्स साहिबने अपनी विक्रमी १९१३ माघ शुक्ल १२ [हि० १२७३ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १८५७ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] की रिपोर्टमें लिखा, कि सलूंबर और भींडर दोनों ठिकानोंके सर्दार गद्दीसे ख़ारिज कियेजाकर राजपूतानहके बाहिर निकालदिये जावें. इसपर मैंने रावत् केसरीसिंहके नाम एक ख़त इस मज़्मूनका भेजा, कि यदि तुम महाराणाके बर्ख़िलाफ़ बखेड़ा पैदा करोगे, तो तुम्हें हेनूरी लॉरेन्स साहिबकी रिपोर्टमें बयान की हुई तज्वीज़के मुवाफ़िक़ सज़ा मिलेगी, जिसके जवाबमें उसने मुझको लिखा, कि मैं महाराणाके विरुद्ध नहीं हूं.

इन दिनों नीमचकी छावनीमें अंग्रेज़ अफ़्सरोंके पास भरोसेके लाइक़ सिर्फ़ मेवाड़की फ़ौज थी, जिसमें किसीने यह अफ़वाह फैलादी, कि अंग्रेज़ लोगोंने तुम्हारा धर्म भ्रष्ट करनेके लिये आटेमें जानवरोंकी हड्डियां पीसकर मिलाई हैं, परन्तु मेवाड़के वकील कायस्थ अर्जुनसिंहने आटेको अपनी ज़बानपर रखकर उन लोगोंका यह सन्देह दूर करदिया. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० ता० २४ ज़िल्हिज = ई० ता० १५ ऑगस्ट] को उस फ़ौजके लोगोंने बग़ावतके आसार दिखलाये जो मददके लिये नीमचमें बुलाईगई थी, परन्तु मेवाड़ी फ़ौजकी मददसे बलवा दबायाजाकर तीन मुख्य उपद्रवी आदमी तोपसे उड़ादिये गये.

इन्हीं दिनोंमें मन्दसोरके नज़्दीक कचरोद गांवमें एक हाजीने अपने तई दिल्लीके बादशाहका शाहज़ादह प्रसिद्ध करके ग़द्र उठाया. पहिली मर्तबह तो मन्दसोरके सूबहदार वगैरह सेंधियाके मुलाज़िमोंने इस बलवेको दबादिया, लेकिन् थोड़े ही दिनोंमें उस बनावटी शाहज़ादह और उसके वज़ीर मिर्ज़ाने दो हज़ार आदमी एकट्ठे करके मन्दसोरपर हमलह किया, जिसमें वहांका सूबहदार मारागया, शहरका ब्राह्मण जातिका कोतवाल मुसल्मान बनायागया, और कुमैदान व थानेदार ज़ख़्मी होकर क़ैदमें आये. शाहज़ादहने मालवेका मुख़्तार बनकर दस हज़ार आदमी एकट्ठे करलिये, जिनमें ज़ियादहतर विलायती और मेवाती लोग थे, और मालवाके तमाम रईसोंको अपनी ख़िद्मतमें हाज़िर होनेके लिये हुक्म भिजवाये, लेकिन् रईस लोगोंने गवर्मेएट अंग्रेज़ीके मददगार बने रहकर उसकी तह्रीरोंपर कुछ भी ख़याल न किया.

अब हम यहांपर टौंक वालोंके हाथसे नीबाहेड़ा छीने जानेका हाल लिखते हैं, जो इस तरहपर है, कि मन्दसोरका बलवा बढ़ता हुआ देखकर नीमचके अंग्रेज़ अफ़्सरोंको फ़िक्र हुई, कि नीबाहेड़ा अपने क़बज़हमें लेलेना चाहिये, क्योंकि उन्हें यह अन्देशह था, कि वहांके मुलाज़िम मुसल्मान हैं, जो अजब नहीं, कि मन्दसोरके बाग़ियोंसे

मिलजावें, और यह क़स्बह बाग़ियोंके क़बज़हमें चलेजानेसे उन लोगोंकी ताक़त ज़ियादह बढ़जावे; और इसी मत्लबकी एक अर्ज़ी महता शेरसिंहने विक्रमी १९१४ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० ता० २० शव्वाल = ई० ता० १३ जून] को महाराणाकी ख़िद्मतमें भेजी थी. इसलिये विक्रमी आश्विन कृष्ण ऽऽ [हि० १२७४ ता० २८ मुहर्रम = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को कर्नेल् जैक्सन साहिब दो तोप और पल्टनोंके कुछ चुनेहुए सिपाही साथ लेकर नीमचसे रवानह हुए, और पोलिटिकल एजेण्ट शावर्स साहिबने भी मेवाड़की फ़ौज और सर्दारोंको मौक़ेपर रवानह करदिया. सुब्हके वक्त कुल फ़ौज मए अंग्रेज़ी अफ्सरोंके नीबाहेड़ाके (१) पूर्व नदीके किनारेपर पहुंची, और शावर्स साहिबकी रायके मुवाफ़िक़ वहांके हाकिमके पास पैग़ाम भेजागया, कि हम लोग कुछ दिन इस क़स्बहपर क़बज़ह रक्खेंगे. इसपर टोंकवाले नव्वाबके बख़्शीने पैग़ाम लेजानेवाले चोबदारको क़त्ल करके शहरपनाहके दर्वाज़े बन्द करादिये, तब तो लाचार अंग्रेज़ अफ्सरोंको मुहासरह करनेकी फ़िक्र हुई. नीबाहेड़ावालोंने भीतरकी तरफ़से क़स्बहकी पूरे तौरपर मज़्बूती करके अंग्रेज़ी सेनापर तोपके गोले और बन्दूक़ोंकी बाढ़ मारना शुरू किया, जिनके मुक़ाबलहमें बाहिरसे भी बन्दूकें वग़ैरह ख़ूब चलाई गईं, और देरतक लड़ाई होती रही. इस लड़ाईमें तिरासी पल्टनका यंग नामी एक अंग्रेज़ और मेवाड़की फ़ौज (२) का एक चपरासी तोपके गोलेसे मारागया. पिछली रातके वक्त टोंकवालोंका बख़्शी नीबाहेड़ासे निकल भागा और मन्दसोरके बाग़ियोंके साथ जा मिला. सुब्हके वक्त जब शावर्स साहिब, जैक्सन साहिब, महता शेरसिंह और अठाणाका रावत् दीपसिंह और सहीवाला कायस्थ अर्जुनसिंह वग़ैरहने शहरपनाहपर चढ़कर हमलह करना चाहा, तो भीतरसे मुक़ाबलेका कुछ भी ढंग नज़र न आया, ख़बर कीगई तो क़िला दुश्मनसे ख़ाली पायागया. तब अंग्रेज़ी व मेवाड़ी फ़ौजने यह हाल देखकर क़स्बहपर फ़ौरन् अपना क़बज़ह करलिया, और क़स्बह नीबाहेड़ा मए ज़िलेके अमानतके तौरपर मेवाड़वालोंको सौंपा जाकर वहां का पटैल तोपसे उड़ादिया गया, क्योंकि जिस वक्त नीबाहेड़ामें अंग्रेज़ी चोबदार क़त्ल कियागया, उस समय यह पटैल भी शरीक था. विक्रमी १९१६ भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० १२७६ ता० १९ मुहर्रम = ई० १८५९ ता० १९ ऑगस्ट] तक ज़िला नीबाहेड़ा मुलाज़िमान मेवाड़के क़बज़हमें रहा. इसवक्त बाज़े अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी तो राय थी,

---

(१) यह शहर ५१८१ फ़ुट लम्बे, ८ फ़ुट चौड़े और १२ फ़ुटसे २० फ़ुटतक ऊंचे पुख़्तह कोटसे सुरक्षित है, जिसमें १९ बुर्जें हैं; और आबादी इसकी १००० घरके क़रीब है.

(२) मेवाड़ी फ़ौजमें महता शेरसिंह और जावद, नीमच ज़िलेके सर्दार शामिल थे.

कि नीबाहेड़ा मेवाड़में ही मिला दियाजावे, क्योंकि वह क़दीम ज़मानहसे इसी मुल्क का हिस्सह था, लेकिन् थोड़े अफ़्सरोंकी राय टौंकको वापस दियेजानेकी ठहरी; उन्होंने कहा, कि गवर्मेएट अंग्रेज़ीके अ़हृदसे इस ज़िलेपर टौंकवालोंका क़बज़ह है, इसलिये उन्हींको वापस मिलना चाहिये. ये दो मुख़्तलिफ़ रायें पोलिटिकल अफ़्सरोंकी आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीके कारण थीं. इस मुआ़मलहके चन्द काग़ज़ात जो हमको मिले हैं, उनकी नक़्लें नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

कप्तान चार्ल्स सोर साहिबके पहिले काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी ॥

॥ सीधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब उपमा व्राजमान लायक महाराजा धीराज महाराणाजी साहेब श्री सरुपसींगजी बहादुर एतान कप्तान चारलस सोर साहेब बहादुर ली ॥ सलाम मालुम करावसी; ईठाका समाचार भला हे आपके सदा भले चाहीओे अप्रच ॥ अरसा बरस दीनका होने आया के हीसाब आमदनी व षरच नीमाहेडेका तेयार होकर आजतक आया नही, चुनाचे मेंने महेताजीकु लीषा हे, ज्योके बदोबस्त नीमाहेडेका आपके तोरपर हे, ईस वास्ते षीदमत मुबारीकमे लीषता हुं के आप महेता सेरसीघजीकु वास्ते तेयार कर भेजणे हीसाबके हुकम लीषाय भेजावामे आवसी; ओर कल मैं नीमाहेडे गआ था, वहां देषा तो सामान जंगका थोडा नजर आया ओर तनषा सीपाहीयान वगेराकी भी चढी हे, सो माफीक दरषास्त महेता सेरसीघजीके रु० ॥ १५०००) पनरे हजार कचा वास्ते तयारी सामान जंग व तनपाह सीपाहीयानके ब दुकान सेट गणेसदास लषमीचंदजीके से भेजवाया गया, सो आपकु मालुम रहे, ओर मीजाज मुबारककी षुसीके स्माचार हमेसे ली०॥ सं० १९१५ आसाड सुदी १५ ता० २५ जुलाई स० १८५८ ई०॥ मुकाम छावणी नीमच दीतवार.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

कप्तान चार्ल्स सोर साहिबके दूसरे काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा ब्राजमान लायक महाराजा धीराज महाराणाजी साहेब श्री सरुपसींगजी बहादुर एतान कप्तान चारलीस सोर साहेब बहादुर ली॥ सलाम मालुम करावसी, यहांका समाचार भला हे आपका सदा भला चाहीये, अप्रंच॥ केई दीन हुवा, के हमने बमुजब दरषास्त जरुरी साहेब एजेंट गवरनर जनरल राजपुतानेके आपके वकीलकी मारफत नीमाहेडेके कई सवाल वास्ते तुरत भेजणे जवाबके लीपवाया, सो आजतक जवाब आया नहीं. ईस वास्तेके चीठीका जवाब बहोत जलदीसे मंगवाया वो मुल्तबी पडा हे, ईस वास्ते आपको लीषाजाता हे के एक बात बहोत जरुर हे, यानी तेसील आमदनी परगने नीमाहेडेकी के जीस दीनसे आपके अहलकारोंके सुपरद हुवा, सो आजतक कुल जमाका आंक ओर षरचका जलदीसे हमारे पास भेजणा फरमावे, तफसीलवार लीषणा जरुर नहीं, सीरफ कुल जमा अर षरच का आंक लीषावसी, जीसमें हम जलदीसे चीठीका जबाब लीषे; अब हमारे लीषणेमें जादा देरी नहीं होगा, अर दरसूरत मंगाणे साहेब अजंट गवरनर जेनरल राजपुतानाके तपसीलवार हीसाब भेजणा होगा, सो ईसका मुफसील हीसाब मेहेताजी गोपालदासजी अर सेठजी चादणमलजीकी लार जलदीसे भेजणा फरमावसी, ईसमें देर नहीं होवे; अर ईस परीतेके जवाब म्हे आप आपणी षवाहस नीमाहेडे रषणेकी अर हक दावा हो वो मुफसील लीषावसी, ता० ६ नवंबर सन १८५९ ई०। समत १९१६ काती सुद १२ सोमे.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

मेजर विलिअम फ़्रेडेरिक ईडन साहिबके काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी १ ॥

॥ स्वस्ती श्री सरवोपमा वीराजमान लायक महाराजा धीराज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी बहादुर एतान मेजर वलीयम फरीडरक ईडन साहेब बहादुर लीषतु सलाम

मालुम होय, अठारा समाचार भला छे आपका सदाभला चाहीजे अप्रंच ॥ ईन दीनोमे बदली कपतान सोर साहेब बहादुर कायम मुकाम अजंट मेवाड़की बहुकम हजुर नवाब मवाला अलकाब गवरनर जनरल बहादुर ओर कामपर फोजके ईलाकेमें हुई ओर मेजर टेलर साहेब बहादुर अजंट राज जेपुर अहोदे अजंटी मेवाड़के अंजाम देणेपर मामुर हुवे, यकीन हे के मेजर साहेब मोसुफ अनकरीब आपसे मुलाकात करगे. जोके ऊदेपुर के मुकाम हमारी मुलाकात तपलीयेकी बमुजब आपकी मरजीके हुई थी, लेकिन अछी तरेसें के जिस्से आपकी दिलजमी होय पूरी नही हुई थी, अब जो आपको कुछ गुफतगु तषलीयेकी मंजुर होय तो मेजर साहब मोसुफके जरीयेसे अछी तरहसे होसकती हे, ओर हमने बमुकाम ऊदेपुर बरवषत मुलाकात दरबाब परगने नीमाहेडेके आपसे जीकर कीया था, ओर ये भी आपसे जाहीर कीया था, के कपतान सोर साहेब बहादुरने बतोर षुद तमाम परगना नीमाहेडा राज ऊदेपुरके सुपरद कीया था, ओर आपकु भी मालुम था, के ईस बाबमें मंजुरी ओर रजावंदी जरनेल जारज सेट पातरक लारनस साहब बहादुरकी न थी, बलके नामंजुरी जरनेल साहब बहादुरकी जाहर हुई थी; अब सदरसें हुकम वापस होणे परगणे मजकुरका रईस टोंकको हमारे नाम सादर हुवा हे, ईस बाबमे मेजर टेलर साहब बहादुर आपको लीषेंगे, वाजब ओर जरुर हे, के आप भी अहलकारान राजके हुकम फरमावे, के जब मेजर साहब मोसुफ नीमाहेडेमे आवे, ओर मोतमद रयासत टोंकको परगना मजकुर सुपरद करे, तो मुलाजमान ओर सीपाहे राज ऊदेपुर वहींसे बरदास्त होजाये. जोके आपके फुरमानेसे असा मालुम हुवा था, के वापस होणे परगणे मजकुरसे आपके दीलमे कुछ षयाल हतक राजका हे, आप ईस षयालको दीलसे दुर फरमावे; असल हकीकत ये हे, के येह परगना बवापस बाजे सकके के कपतान सोर साहब बहादुरके दीलमे हुवा, अमानतके तोरपर सुपरद राज ऊदेपुरके कीयागया था, ओर आपकी तरफसे जो माफक दरषास्त साहब मोसुफके ईकरार अमानत रषणेका हुवा, येहे अमर अलामत षेरषाई सरकार दोलत मदार अंगरेजीकी हे, अगर आपकी दोस्ती सीरकारके साथ यकीनी नहीं समजी जाती, तो परगना मजकुर आपके सुपरद क्यों होता; अब ईन बातोका हाल अगर मुफसल लीषा जाय, तो ईस कागजमे गुंजायस नहीं हे, ओर हमकु फुरसत भी नहीं हे, ईस्वास्ते जो कुछके जाहर करणा हे, आपके वकीलसे कहा जायगा. जोके मेजर टेलर साहब बहादुर दानसमंद ओर बहोत अषलाक वाले हे, यकीन हे, के आप साहब मोसुफसे राजी रहेगे; जोके आपने राहोरसम महोबतकी हमारे साथ ज्यादा रषी, जो या दोस्ती सरकार दोलतमदारके साथ ज्यादा की, ईसवास्ते के माफक दरषास्त हमारे, जो तवजो

अंतजाम पेराड अर अमुरमे कीये अमर वापस बंदोबस्तका हुवा, ईसवास्ते मुनासीब हे, के आप आयंदा भी मुतवजे बंदोबस्तके रहे, के ज्यादा नामवरी आपकी उस्मे हे, वास्ते ईतलाको लीपा हे, ओर आपके मीजाजकी पुर्सीके समाचार लीषावसी, ता० २७ मारच सन् १८६० ईस्वी, मीती चेत सुदी ५ संवत १९१७ का.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

मेजर टेलर साहिबके पहिले काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी १ ॥

॥ सीधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा ब्राजमान लाअेक माहाराजा धीराज महाराणाजी साहेबश्री सरुपसीघजी साहेब बहादुर अेतान मेजर टेलर साहेब बाहादुर लीपावता सलाम मालुम करावसी, अठाका समाचार भला हे, आपका सदा भला चाहीअे अप्रंच ॥ पहेले ईससे परीता कपतान च्यारलीस सोरज साहेब बहादुर कायम पोलेटीकल अजंट राज मेवाड़का दरबाब सुपरत करने प्रगने नीमाहेड़ा आपके अेहलकारानको वास्ते चन्द रोजके ब तारीप २१ सीतंबर सन् १८५७ ईस्वीको आपके नाम लीषागया था, अब हुकम जनाब नवाब मुस्तताब मोला अलकाब गवरनर जनरल बाहादुरका दरबाब वापस दीअेजाने प्रगने मजकुरके नबाब साहेब बालीअे टोकको होगया हे, ईसवास्ते आपके पीदमत मुबारकमे ईतला दीजाती हे, के आप अपने मुलाजमान मुतयने प्रगने मजकुर के नाम हुकम जारी फरमावे, के वे वास्ते सुपरद करने प्रगने मजकुरके मुस्तेद व तयार रहे, ताके बरवकत आने हुकम मुफसल मेजर ईडन साहेब बहादुर कायम मुकाम अजंट गवरनर जनरल बहादुर राजपुतानेके ईस बाबमे प्रगणे मजकूर अहल्कारान नवाब साहेब मोसुफको सुपरद कराया जायेगा, ईतलाअेन मरकुम हुवा; ओर मीजाज

मुबारीककी षुसीका समाचार हमेसे ली० ॥ ता० २ माहे अपरेल सन् १८६० ईसवी, मीती चेत सुद ११ संमत १९१७, मु० छावणी नीमच सोमवार.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

मेजर टेलर साहिबके दूसरे काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी ॥

॥ सीध श्री उदेपुर सुभसुथाने सरब ओपमा वीराजमान लाअेक महाराजा धीराज माहारानाजी श्री सरुपसीघजी साहेब बहादुर अेतान मेजर राबरट लवीस टेलर साहेब बहादुर ली० ॥ सलाम मालम करावसी, अठारा समाचार भला हे, आपका सदा भला चाहीजे अप्रच ॥ बाबत हीसाब नीमाहेडेके जो रपोट सदरको गई थी, आज जवाब ऊसका हजूर फेज जहूर नवाब गवरनर जनरल बहादुरसे ईस तोरपर आया, के रु० ॥ ५५००००) अषरे पाच लाष पचास हजार नवाब साहेब बहादुर वालीये टोकका बाबत हीसाब नीमाहेडेके जीमे रीयास्त ऊदेपुर चाहीये, मुनासब हे, के अब वोहो रुपीया जलद अदा करे, ईस वास्ते आपको तसदीया दीयाजाता हे, बफोर पोहोचने ईस परीतेके रुपीये मजकुर भेजावेदेसी, अगर ईसमे तवकूफ होगा, तो रोज पोहोचने ईस परीतेसे सुद जेसा नवाब साहेब बहादुर ममदुह म्हाजनोको देते हे, आपसे लीयाजावेगा; ओर मीजाज मुबारीककी षुसीका समाचार हमेसे ली० ॥ ता० ५ माह अगस्त सन् १८६१ ईस्वी मीती सावण वीद १४ संवत् १९१८, मुकाम छावणी नीमच सोमवार.

(अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त).

हम केवल अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीको ही नीबाहेड़ा वापस टौंकवालोंको मिलनेका कारण बयान नहीं करसके, किन्तु मेवाड़के रियासती अह्लकारोंमें भी उन दिनों आपसमें बहुत कुछ नाइत्तिफ़ाक़ी चलरही थी, जिससे उम्दह तौरपर पैरवी

न होसकी; और रियासत टौंककी तरफ़से इस मुआमलहमें पूरी पूरी कोशिश कीगई. यह बात आम तौरपर मश्हूर है, कि यदि महता शेरसिंह लॉरेन्स साहिबके पास भेजा-जाता, तो नीबाहेड़ापर मेवाड़वालोंका पुरूतह क़बज़ह होजाता; लेकिन् ऊपर बयान किये-हुए कारणसे न होसका, बल्कि महाराणाकी नाराज़गी महता शेरसिंहकी तरफ़ दिन ब दिन बढ़ती गई.

अब हम यहांपर ग़द्रका बाक़ी हाल फिर शुरू करते हैं. विक्रमी १९१४ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२७४ ता० ४ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० १८५७ ता० २३ ऑक्टोबर] को ख़बर मिली, कि मन्दसोरके बाग़ी लोग जीरणकी तरफ़ आते हैं, और यह ख़बर पाते ही उसी दिन शामके वक्त नीमचके सुपरिन्टेण्डेण्ट कप्तान लायड और कप्तान सिम्पसन मए दूसरे ११ अफ़्सरों और क़रीब चार सौ सिपाही तथा दो तोपोंके नीमचसे उनके मुक़ाबलहको रवानह हुए. जीरणमें पहुंचनेपर बाग़ियोंसे लड़ाई हुई, जो तादाद में चार सौ से ज़ियादह न थे. इस लड़ाईमें कप्तान रीड और कप्तान टूकर मारेगये, जिनमेंसे कप्तान टूकरका सिर काटकर बाग़ियोंने मन्दसोरके दर्वाज़हपर लटकादिया, और ५ अंग्रेज़ अफ़्सर घायल हुए. मुख़ालिफ़ोंने जीरणको ख़ूब लूटा, और अंग्रेज़ी अफ़्सर फ़ौज समेत भागकर नीमचमें चले आये. कप्तान लायडने रिपोर्ट की, कि हमारी फ़त्ह हुई, और बाग़ी लोग भागगये, लेकिन् शावर्स साहिब अपनी किताबमें इस बयानको ग़लत बताकर बाग़ियोंकी फ़त्ह होना लिखते हैं; और इसी सबबसे सौ सवार और पांच सौ या छः सौ अफ़्ग़ान व मकराणी और बाक़ी ज़िलेके लुटेरे, जो तादादमें कुल दो हज़ार आदमी थे, मग़रूर होकर मन्दसोरसे नीमचकी तरफ़ रवानह हुए. यह ख़बर सुनकर कप्तान बेनिस्टर उनके मुक़ाबलहको नीमचसे निकला, और कप्तान शावर्स साहिब भी मए तीन सौ मेवाड़ी सवारोंके उनसे जामिले, छावनीके क़रीब नालेपर मुक़ाबलह हुआ, शामतक गोलियां चलती रहनेके बाद अंग्रेज़ी अफ़्सर मए मेवाड़ी सवारोंके क़िलेमें चले आये, और फ़ौजका कुछ हिस्सह बाग़ियोंके साथ आधी राततक लड़ता रहा. आख़रकार सुब्ह होते ही बाग़ी लोग छावनीमें घुसगये, और अंग्रेज़ अफ़्सर मए थोड़ेसे पैदलोंके क़िलेमें रहे. कप्तान शावर्स साहिबने मेवाड़की फ़ौजसे यह बन्दोबस्त अपने हाथमें लिया, कि मुख़ालिफ़ोंकी लूट मारसे गिर्दोनवाह के मुल्कको बचावे, लेकिन् बाग़ी लोगोंने ग़ालिब आकर क़िलेको घेरलिया, और जावद, रत्नगढ़ व सींगोलीमें चन्द सिपाहियोंके साथ ज़लील लोगोंने मिलकर ग़द्र मचाया. अठाणाके रावत् दीपसिंहने अपने बाल बच्चोंको तो पहाड़में भेजदिया, लेकिन् क़िलेको मज्बूत करके अंग्रेज़ी इलाक़हकी रिआयाको अपने पास पनाह दी.

क़ाइमदीन चूड़ीगर दीनका झण्डा खड़ा करके जावदका मुख़्तार बना, यहांतक कि अठाणाके जुलाहे भी उसके शरीक होगये. इसवक्त अलीड़ा नामी एक जुलाहा अठाणाके रावत् दीपसिंहके पास आकर कहनेलगा, कि हमारा नाम अब अलीड़ा नहीं अलियारखां है, और यह कहा, कि हमारे बिस्तरोंकी गठड़ी दीनकी फ़ौजमें पहुंचादो. तब रावत् दीपसिंहने कहा, कि इतने दिन हमारे सिपाहियोंकी गठड़ियां तू अपने सिरपर रखकर पहुंचाता था, अब अपनी गठड़ी लेजानेमें क्यों शरमाता है ? इसपर वह बड़बड़ाता हुआ चलागया, लेकिन् अंग्रेज़ी फ़तह होनेके बाद उन ज़लील कौम जुलाहोंकी जान रह्मदिलीके साथ रावत् दीपसिंहने बचाई. फिर विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रबीउल्-अव्वल = ई० ता० १२ नोवेम्बर] को कप्तान शावर्स साहिबने लेफ़्टिनेण्ट फ़र्कहर्सनको अपने साथ लेकर बघाणा और निक्सनगंजमें बाग़ियोंपर हमलह किया. इस मुक़ाबलहमें कप्तान शावर्स साहिबकी फ़तह हुई, और उधर मऊकी छावनीका लश्कर लेकर कर्नेल् ड्यूरैण्डने मन्दसोरको आघेरा. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रबीउस्सानी = ई० ता० २३ नोवेम्बर] को मन्दसोरसे शाहज़ादह भागगया, और नीमचके बाग़ियोंमें से भी कुछ लोग तो ड्यूरैण्डकी ख़बर सुनकर पहिले ही मन्दसोरको चलेगये, और कितने एक मारे और काटेगये. आख़रकार नीमचकी छावनीमें फिर अंग्रेज़ी झण्डा फहराया. कप्तान शावर्स साहिबके साथ इन हमलोंमें मेवाड़के दो आदमी शिवदास कावरा कामदार और बाघसिंह राजपूत मारेगये; शिवदासको कप्तान शावर्स साहिबने "ओसरी" लिखा है, जो अस्लमें "महेश्वरी" महाजन और महता शेरसिंहके मातहत कामदारोंमेंसे था. नीमचका ग़द्र दूर होनेके बाद कप्तान शावर्स साहिब उदयपुरमें चले आये; और विक्रमी १९१५ आषाढ़ [हि० १२७४ ज़िल्हिज = ई० १८५८ जुलाई] तक यहीं ठहरे. इन्हीं दिनोंमें उनको यह ख़बर मिली, कि ग्वालियरमें लूट खसोट करनेके बाद सर यूज़ रोज़ साहिबने राव साहिब और तांतिया टोपेको ग्वालियरसे निकालदिया. यह राव साहिब पेश्वाकी औलादमेंसे एक पेन्शनयाफ़्तह शख़्स था, जो हिन्दुस्तानमें ग़द्र होनेपर बाग़ियोंका सर्दार बनगया. ग्वालियरसे निकलकर वह मेवाड़की पूर्वी सीमापर जलिन्धरीके घाटेके रास्तेसे मेवाड़में दाख़िल होकर मांडलगढ़ आपहुंचा. मैं (कविराजा श्यामलदास) उसवक्त अपनी जागीरके गांव ढोकलियामें था, जो ज़िले मांडलगढ़में वाके है. यक़ीन था, कि वह बाग़ियोंका गिरोह हमारे गांवमें होकर निकले, लेकिन् बारिशकी ज़ियादती और बनास नदीकी चढ़ाईके सबब ये लोग मांडलगढ़के क़रीब दो तीन रोज़तक पड़े रहे. महता स्वरूपचन्द और गोकुलचन्दने दो तीन हज़ार राजपूत वग़ैरह लोग एकट्ठे करके क़िले मांडलगढ़को मज़बूत किया. बाग़ियोंने

किसी क़िस्मका नुक्सान मेवाड़में नहीं किया, क्योंकि उनको इस बातका खौफ़ था, कि कहीं राजपूत लोग हमारी फ़ौजपर हमलह न करदेवें. नदीकी रोकसे इन लोगोंका इरादह सींगोली और रामपुराके रास्ते होकर नीमचकी तरफ़ जानेका था, लेकिन् ब्रिगेडिअर पार्क और मेजर टेलरने मए अंग्रेज़ी फ़ौजके उस तरफ़का रास्तह रोकलिया, और कप्तान शावर्स साहिब भी मेवाड़की जमइयत समेत उदयपुरसे नीमच आपहुंचे; राव साहिबकी फ़ौजने बरूंदनीके पास बेड़च नदीको पार करके बरसल्यावास होतेहुए विक्रमी श्रावण कृष्ण १४ [हि० ता० २७ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ ऑगस्ट] को भीलवाड़ेमें मक़ाम किया. शावर्स साहिब अपनी किताबमें बाग़ियोंकी तादाद पांच हज़ार लिखते हैं, लेकिन् उस समय मेरा (कविराजा श्यामलदासका) बड़ा भाई औनाड़सिंह मए चन्द राजपूत सर्दारोंके ज़ुरूरी कामके लिये भीलवाड़े गया था, वह बयान करता था, कि हम लोगोंने बाग़ियोंकी फ़ौजमें घुसकर देखा, तो वे लोग आठ या नौ हज़ारसे कम न थे, उनके पास नक्द व ज़ेवर वग़ैरह बहुतसा माल था, लेकिन् कपड़े और खानेकी यहां तक कमी थी, कि मर्दोंके सिरपर औरतोंकी साड़ियां बंधी हुई थीं, और वे लोग एक एक रोटीका एक एक रुपया देनेको तय्यार थे. विक्रमी श्रावण कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ ज़िल्हिज = .ई० ता० ९ ऑगस्ट] को शामके वक्त जेनरल रॉबर्ट्स मए अंग्रेज़ी फ़ौज और तोपखानहके आपहुंचे, और बाग़ी फ़ौज भी लड़नेको तय्यार होगई. सांगानेरके क़रीब कोटेश्वरी नदीपर मुक़ाबलह हुआ, उस समय औनाड़सिंह अपने हमराहियों सहित एक मीलके फ़ासिलहसे लड़ाई देख रहा था, और हम लोगोंको अपने गांवमें तोपोंकी आवाज़ सुनकर उनकी जान ख़तरेमें होनेकी बड़ी फ़िक्र होरही थी. थोड़ी देर मुक़ाबलह होनेके बाद बाग़ियोंका लश्कर भाग निकला, और जेनरल रॉबर्ट्सको फ़त्ह नसीब हुई. ये लोग गोवर्द्धननाथके दर्शन करके नाथद्वारासे पीछे फिरे, और कोठारियाके पास विक्रमी श्रावण शुक्र ६ [हि० १२७५ ता० ४ मुहर्रम = .ई० ता० १४ ऑगस्ट] को जेनरल रॉबर्ट्सकी फ़ौजसे दोबारह मुक़ाबलह हुआ. इस लड़ाईमें बाग़ियोंकी फ़ौजके बहुतसे आदमी मारेगये, और उनकी चार तोपें रॉबर्ट्स साहिबने छीनलीं. इसके बाद ये लोग आकोलाके रास्ते चित्तौड़से दक्षिण तरफ़ होकर जाठ और सींगोलीको लूटतेहुए झालावाड़में पहुंचे, जहां राजराणा पृथ्वीसिंहकी फ़ौज बाग़ियोंसे मिलगई, जिससे उनका बहुतसा माल असबाब, हाथी, घोड़े और तोपख़ानह वग़ैरह लूटाजाकर खुद राजराणा भी उनकी क़ैदमें आगये; लेकिन् आधी रातके वक्त वह किसी बहानेसे निकल भागे; ब्रिगेडिअर पार्क बाग़ियोंके पीछे लगाहुआ था. यहांसे निकलकर बाग़ी लोग सेंट्रल इण्डियामें होतेहुए विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रबीउस्सानी = ई० ता० ३ डिसेम्बर]

को नर्मदाके किनारे छोटे उदयपुरमें पहुंचे, जहां ब्रिगेडिअर पार्कने उन्हें शिकस्त दी.

राव साहिब तो देवगढ़ बारियासे ही जुदा होगया था, और तांतिया टोपे कुशलगढ़के रास्ते होकर बांसवाड़े पहुंचा. रास्तेमें कुशलगढ़के ठाकुरने उन लोगोंसे मुक़ाबलह किया, और इस कार्रवाईके बदले उसने गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे इन्आम पाया. इस वक्त क़रीब था, कि बाग़ी फ़ौज बांसवाड़ाको लूट लेवे; लेकिन् मेजर लियरमाउथके फ़ौज समेत आपहुंचनेपर तांतिया टोपे वहांसे भागकर सलूंबर, गींगला और भींडरकी तरफ़ आया. इन लोगों (बाग़ियों) का इरादह था, कि उदयपुरमें आवें, लेकिन् महाराणाकी तरफ़से घाटों और पहाड़ी रास्तोंपर पूरी मज्बूती करादीजाने, और मददके लिये नीमचकी फ़ौजके आपहुंचनेसे उनका इरादह पूरा न होसका. इसके अलावह उत्तरकी तरफ़का रास्तह मेजर रॉक और कप्तान शावर्स साहिबने रोक लिया, इसलिये ये लोग भींडरसे ही पहाड़ी रास्ते होकर प्रतापगढ़की तरफ़ पहुंचे. इसवक्त तीन चार हज़ार भील भी इनके शरीक होगये थे, लेकिन् वे लोग विक्रमी पौष कृष्ण ३ [हि० ता० १७ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २३ डिसेम्बर] को मेजर रॉकके पहुंचजानेसे प्रतापगढ़को न लूट सके, और उन्हें शिकस्त पाकर भागना पड़ा. इस लड़ाईमें बाग़ियोंके बहुतसे आदमी मारे व पकड़ेगये, और उनका हाथी घोड़ा वगैरह सामान भी छीन लियागया. तांतिया टोपे मन्दसोर होताहुआ जीरापुरमें पहुंचा, जहां कर्नेल बेन्सनने शिकस्त देकर उसके कई आदमी क़त्ल किये. यहांपर बाग़ियोंकी फ़ौजमें बहुत थोड़े आदमी रहगये थे, लेकिन् फ़ीरोज़शाह नामी एक बाग़ी दो हज़ार आदमियोंके साथ उनसे आमिला. फिर विक्रमी माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रजब =.ई० १८५९ ता० १७ फ़ेब्रुअरी] को ये लोग मेवाड़में कांकड़ोलीकी तरफ़ आये, लेकिन् ब्रिगेडिअर समरसेट और कप्तान शावर्स साहिबके वहां पहुंचजानेसे बाग़ी लोग पहाड़ोंमें होकर बांसवाड़ेके क़रीब पहुंचे, जहां समरसेट साहिबने उन्हें जा दबाया. तब बाग़ियोंके सर्दार फ़ीरोज़शाह, नव्वाब अब्दुलशुतरख़ां और पीर हुजूरअली तो लाचार होकर अंग्रेज़ी पनाहमें समरसेट साहिबके पास आगये; और विक्रमी १९१६ चैत्र शुक्ल ४ [हि० ता० ३ रमज़ान =.ई० ता० ७ एप्रिल] को तांतिया टोपे गिरिफ्तार होगया, जिसको फांसी मिली; मगर राव साहिबका पता नहीं लगा, कि वह कहां ग़ाइब होगया.

इस ग़द्रका हाल हमने यहांपर उतनाही लिखा है, जितना कि मेवाड़से तअल्लुक़ रखता था. हिन्दुस्तानका मुल्क पहिले ईस्ट इण्डिया कम्पनीके तहतमें था, जो इस बग़ावतके बाद शाहान इंग्लिस्तानके ख़ालिसहमें शामिल हुआ. इस बारेमें लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दने इश्तिहार बज़रीए ख़रीतह मेवाड़के महाराणाके पास भेजा, जिन काग़ज़ोंकी नक़्लें व तर्जमें नीचे दर्ज कियेजाते हैं:-

लॉर्ड कैनिंग साहिब बहादुर गवर्नर जेनरल व वाइसरॉय हिन्दके फ़ार्सी ख़रीतह (१) का तर्जमह.

महाराणा साहिब आलीशान मुश्फ़िक़ मिहर्बान जगह निकलने मिहर्बानी व एह्सानके सलामत.

पीछे पहुंचाने रस्मों ख़्वाहिश बड़ी मुलाक़ात बिल्कुल मिहर्बानीके, जो क़लम दो ज़बानकी तह्रीर और ख़त कुशादह बयानकी तक़ीरमें नहीं समासक्ती है, रौशन दिलपर ज़ाहिर कियाजाता है. दोस्तदार उस मुश्फ़िककी वाक़िफ़ियतके वास्ते नक़्ल उस इश्तिहारकी, जो मलिकह मुअज़्ज़मह इंग्लिस्तानने हिन्दुस्तानके सब रईसों, सर्दारों और कुल रिआयाके नाम जारी फ़र्माया है, इस ख़तके साथ भेजता है; और एक दूसरे इश्तिहारकी नक़्ल भी जिसको दोस्तदार बादशाही इश्तिहारके साथ जारी करता है, इसी ख़तके साथ भेजता है. उम्मेद है, कि दोस्तदारको हमेशह ख़ुशख़बरी सिहत मिज़ाज दोस्ती मिलेहुए अपनेका चाहनेवाला ख़याल करके उसके लिखने और इत्तिलासे राज़ी और ख़ुश फ़र्माते रहें, ज़ियादह क्या लिखे.

(दस्तख़त) कैनिंग.

---

(۱) نقل خریطهٔ لارڈ کیننگ گورنر جنرل هند بنام مهارانا سروپ سنگه جي *

مهارانا صاحب عالیشان مشفق مهربان مصدر لطف و احسان سلامت *
بعد از تبلیغ مراسم آرزوے گرامی مواصلت سراسر عاطفت که گنجایش گیر تحریر خامهٔ دو زبان وتقریر پذیر نامهٔ وسیع البیان نیست مشهود ضمیر منیر گردانیده می آید * مخلص براے آگاهي آن مشفق نقل اشتهار که ملکهٔ معظمه انگلستان بنام جملهٔ والیان و رئیسان وجمهور انام هندوستان جاري فرموده اند ملفوف رقیمه الوداد هذا ارسال میدارد * ونیز نقل اشتهار یکه اخلاصمند بشمول اشتهارنامهٔ شاهی جاري میکند بلف نامه هذا ابلاغ میدارد * ترصد که اخلاص آما را همواره خواهان مژدهٔ صحاح مزاج تودد امتزاج تصور نموده بارقام و اطلاع آن محبور وشادمان میفرموده باشند * زیاده چه برطرازد *

(Sd.) Canning.

मलिकह मुअ़ज़्ज़महके उर्दू इश्तिहार (१)
का तर्जमह.

मक़ाम इलाहाबाद तारीख़ पहिली नोवेम्बर सन् १८५८ ई०.

नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरके पास यह मज़्बूत हुक्म मलिकह मुअ़ज़्ज़महका पहुंचा है, कि जो मुबारकबादीका इश्तिहार हिन्दुस्तानके रईसों, सर्दारों और सब लोगों के नाम उक्त महाराणीने जारी फ़र्माया है, सो प्रसिद्ध कियाजावे.

इश्तिहार.

इज्लास कौंसिलसे मलिकह मुअ़ज़्ज़महका, हिन्दुस्तानके रईसों, सर्दारों और सब लोगोंके नाम.

मलिकह मुअ़ज़्ज़मह विक्टोरिया, जो ईश्वरकी कृपासे मुल्क ग्रेटब्रिटिन और आयर्लैण्ड,

---

(١) نقل اشتہار ملکہ معظمہ *

مقام الہ آباد تاریخ پہلی نومبر سنہ ۱۸۵۸ ع *

نوّاب گورنر جنرل بہادر کے پاس یہ حکم محکم ملکۂ معظمہ انگلستان کا پونہچا ہے کہ جو اشتہار مبارک ہند کے والی اور سردار اور جمہور انام کو ملکہ ممدوحہ نے نافذ فرمایا ہے، سو مشتہر کیا جاتا ہے *

اشتہار

ملکہ معظمہ باجلاس کونسل بنام والیان و سرداران اور جمہور انام ملک ہند *

ملکہ معظمہ وکٹوریہ بفضل خدا مملکت گریٹ برٹن اور آیرلنڈ

और आबादियों, इलाक़ों यूरोप, एशिया, आफ़्रिका, अमेरिका, और आस्ट्रेलएशियाकी बादशाह और धर्मकी सहायककी तरफ़से नीचेकी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ ख़ास व आममें प्रसिद्ध कियाजाता है:-

ज़ाहिर हो, कि कामिल वजूहातोंसे हमारी इस स्वतन्त्रताको हमने मज़हबी और मुल्की अमीरों तथा आम रिआयाके मुख़्तियारोंकी सलाह और इत्तिफ़ाक़से, जो पार्लियमेण्टमें जमाहुए हैं, इस सलाहको थामलिया है, कि मुल्क हिन्दका इन्तिज़ाम, जिसका बन्दोबस्त आजतक अमानतन ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीके सुपुर्द रहा है, अपने अधिकारमें लावें.

पस इस कागज़की रू से हम इत्तिला देते, और ज़ाहिर करते हैं, कि उक्त राय की सलाह और इत्तिफ़ाक़से हमने मुल्क मज़कूरका इन्तिज़ाम अपने अधिकारमें लिया; और हम इस कागज़की रू से अपनी सम्पूर्ण प्रजाको, जो मुल्क मज़कूरमें मौजूद हैं ताकीदन फ़र्माते हैं, कि हमारी और हमारे वारिसों तथा जानशीनोंकी वफ़ादारी व ताबेदारी करें; और जिस किसीको हमारे नाम और हमारी तरफ़से मुल्कके इन्तिज़ाम करनेके लिये आगेको समय समयपर मुक़र्रर करना मुनासिब समझें, उसकी फ़र्माबर्दारी किया करें.

जो फ़र्ज़न्द भाग्यवान, इज़्ज़तदार, भरोसेवाला और निज सलाहकार नव्वाब चार्ल्स जान वायकूंट कैनिंग साहिबकी वफ़ादारी, लायक़ी, समझ और होश्यारीके

اور ابادیہاے اور مضافات واقعہ یورپ اور ایشیہ اور افریقا اور امریکا اور اسٹرل ایشیا کي ملکہ اور ظہیر المذہب کی طرفسے خاص وعام مین حسب تفصیل ذیل مشتہر کیاجاتاہے *

واضح ہو کہ بوجوہ کاملہ ہماري اس آزادي کو ہمنے بصلاح اور اتفاق راے امراے ملتي اور ملکي کے اور مختاران عوام جو پارلامنت مین فراہم ہوئے مصمم کیاہے کہ ممالك ہندکا انتظام جسکا انصرام آنربل ایست اندیہ کمپنی کو آجتك امانتہ" مفوض رہاہے اپنے اہتمام مین لاوین *

بس اس قرطاس کي رو سے ہم اطلاع دیتے اور املان فرماتے ہین کہ بصلاح اور اتفاق راے مذکورہ بالا کے ہم نے ملك مذکورکا انتظام اپنے اہتمام مین لایا اور ہم اس قرطاس کي رو سے ہماري جمیع رعایا کو جوقلم رو مذکورمین موجود مین تاکیداً فرماتے ہین کہ ہماري اور ہمارے ورثہ اور جانشینون کی وفاداري اور اطاعت کرین اور جس کسیکو ہمارے نام اور ہماري طرف سے ملك کے انتظام کرنیکے لئے وقت بوقت اینده مقرر کرنا مناسب سمجھین اوسکي فرمانبرداري کیاکرین *

اور جو فرزند ارجمند معزز اور معتمد علیہ مشیر خاص نواب چارلس جان وائکونت کیننگ صاحب کی وفاداري اور قابلیت اور فہم اور فراست کے

निस्बत हमको भरोसा और पूरी दिलजमई है; इसलिये साहिब मौसूफ़को हमारी तरफ़ और नामसे मुल्क मज़कूरका प्रबन्ध करनेके लिये, और उन क़ानून व आईनकी रिआ़-यतसे, जो हमारे वज़ीरुल मुमालिकके ज़रीअ़हसे उसके पास वक़्त बवक़्त पहुंचे, अ़मल करनेके लिये हमारा पहिला क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरल नियत किया.

जो कोई हालमें सर्कार ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कंपनीकी नौकरीमें किसी मुल्की, या फ़ौजी उ़ह्देपर नियत हैं, इस कागज़की रू से सबको अपने अपने उ़ह्देपर बहाल और क़ाइम फ़र्माते हैं, परन्तु आगेको हमारी मर्ज़ीके अनुसार रहें, और वे सब उन्हीं आईन और क़ानूनकी रिआ़यत करते रहें, जो आगे जारी किये जायेंगे.

हिन्दुस्तानके रईसोंको इत्तिला देते हैं, कि जिस किसी क़ौल क़रारको ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कंपनीने आप ज़ाहिर किया, या उनकी इजाज़तसे क़रार पाया, उन सबको हम मंज़ूर और क़ुबूल करते हैं, और उनको वैसे ही बरतते रहेंगे; और उम्मेद है, कि रईसोंकी तरफ़से भी उसी तरह तामील होती रहेगी.

जो मुल्क अबतक हमारे क़बज़हमें है, उसको बढ़ाना नहीं चाहते हैं, और हमको गवारा नहीं होगा, कि कोई शख़्स हमारे मुल्क या हक़में ज़बरदस्ती दख़्ल करे

نسبت ہمکو اطمینان اور خاطر جمع کلی حاصل ہے اسلئے صاحب موصوف یعنی وائکونٹ
کیننگ صاحب کو ممالک مذکور کے انتظام ہماری طرف اور نام سے کرنیکے لئے اور ہرعایت اون
قوانین اور آئین کے جو ہمارے وزیرالممالک کے ذریعہ سے اوس کے پاس وقت بوقت پونچھے
عمل کرنیکے لئے ہمارا قایم مقام اول اور ممالک مذکور کا گورنر جنرل مقرر کیا *
اور جو کوئي بالفعل کسی عہدے کیا ملکي کیا
فوجی سرکار آنربل ایست اندیہ کمبنی کی نوکري میں مامور ہے اس قرطاس کي روسے سب
کسیکو اپنے اپنے عہدے پر بحال اور قایم فرماتے ہین مگر ہماري مرضی اینده مشروط رہے
اور وہ سب اونہیں آئین وقوانین کي رعایت کرتے رہین جو اینده نافذ کیجاینگے *
اور والیان ہندکو اطلاع دیتے ہین کہ جس
کسي عہد وپیمان کو خود آنربل ایست اندیہ کمبنی نے ظہور مین لایا یا اونکی اجازت سے انعقاد
پایا اون سبکو ہم پذیرا اور قبول کرتے ہین اور انکی ایفا بعینہ کرتے رہینگے اور چشم داشت ہے
کہ والیون کي طرف سے بھي اوسیطرح تعمیل ہوتی رہیگي *
جو ملک بالفعل ہمارے قبضہ مین ہے اوسکا
ازدیاد نہین چاہتے مین ہمکو گوارا نہوگا کہ کوئي شخص ہمارے مملکت یا حقوق مین دخل بجبر کرے

और बदला न पावे; और इसी तरह किसीके मुल्क या दूसरोंके हक़ोंमें क़दमबढ़ाना हमारी तरफ़से मंज़ूर न होगा. हिन्दवालोंके हक़, मरतबे और .इज़्ज़तकी क़द्र अपने हक़, मरतबे और .इज़्ज़तकी बराबर समझेंगे, और हम चाहते हैं, कि हिन्दुस्तानके रईसोंको और हमारी प्रजाको भी ऐसी नेकबख़्ती और .इल्म अख़्लाक़की तरक़्क़ी, कि जो मुल्ककी सुलह और नेक इन्तिज़ामीसे पैदा होती है, मिलती रहे.

जो लवाज़िमे अपनी दूसरी रिआ़याकी तरह हमारे ऊपर चाहियें, उन्हीं लवाज़िमोंको रिआ़या मुल्क हिन्दकी निस्बत हम अपने ज़िम्मे वाजिब जानते हैं, और ईश्वरकी कृपासे मित्रता और सच्चाईके साथ लवाज़िमे मज़कूरकी तामील करेंगे.

अगर्चि हमको ईसाई मज़हबकी सच्चाईकी बाबत् पूरा भरोसा है, और दिलजमई से जो उससे हुआ करती है, हमको शुक्रगुज़ारीके साथ इक़ार है, तोभी न तो हमको मनसब (मर्तबह) है, न चाहना, कि किसी रअ़य्यतसे ख़ामख़ाह अपने ऐतक़ादको क़ुबूल करावें. हमारा हुक्म बादशाहानह और मर्ज़ी है, कि किसी एक मज़हबको किसी दूसरे मज़हबपर बडप्पन न दिया जावे, और किसी शख़्सको ऐतक़ाद या मज़हबी रस्मोंके सबबसे दुःख न दियाजावे, और क़ानूनकी रू से बग़ैर तरफ़दारीके सब रअ़य्यतकी हिफ़ाज़त होती रहे; और हमारी तरफ़से ताकीद होती है, कि कोई आदमी हमारी नौकरीमें, जो मुल्क हिन्दके

اور انتقام نپاوے اور علي هذا القياس پيش قدمي کسيکي به نسبت مملکت يا حقوق اورونکے
هماريجانب سے منظور نهوگي واليان هند کے حقوق اور منزلت اور عزت مثل اپنے حقوق اور
منزلت اور عزت کے عزيز سمجهينگے اور همکو آرزو هے که واليان هند کو اور هماري رعايا کو بهي
ايسي سعادت اور فن اخلاق کي ترقي جو که ملک کي صلح اور نيک انتظام سے پيدا هوتي
هے حاصل هوتي رهے *

جو لوازم به نسبت اپني دوسري رعايا کے
همارے اوپر عايد هے اونهين لوازم کو به نسبت رعاياے ممالک هند کے هم اپنے ذمه واجب
جانتے هين اور خدا کے فضل سے وفاداري اور راستي کے ساتهه لوازم مذکور کي تعميل کرينگے *
اگرچه همکو مذهب عيسائي کے صدق کي نسبت
يقين کلي حاصل اور تسلي خاطر سے جو اوس سے هوا کرتي هے همکو ساتهه شکرگذاري کے
اعتراف هے توبهي همکو نه منصب هے نه آرزو که کسي رعيت سے خواه مخواه اپنے عقيده کو قبول
کراوين همارا حکم شاهانه اور مرضي هے که کسي ايک مذهب کو کسي دوسرے مذهب
پر ترجيح دي نجاوے و کسي شخص کو بوجه اعتقاد يا رسميات مذهبي کے ايذا
نديجاوے اور سب رعيت کو قانون کي رو سے بغير طرفداري کے محافظت هوتي رهے
اور هماري طرفسے تاکيد هوتي هے که کوئي متنفس جو هماري نوکري مين ملک هند کے

इंतिज़ामके लिये मुकर्रर हो, किसी रश्रय्यतके मज़हबी ऐतक़ाद और पूजाकी बाबत् दस्तन्दाज़ी न करे, नहीं तो हमारा गुस्सह होगा.

यह भी हमारा हुक्म है, कि जहांतक होसके हमारी सब रश्रय्यत किसी कौमकी या किसी मज़हबकी हों, बिना छेड़छाड़ और तरफ़दारीके हमारी नौकरीमें ऐसे उह्देपर मुकर्रर कीजावें, जिसकी ख़िद्मतको तालीम, लियाक़त और दियानतकी नज़रसे बख़ूबी अंजाम देसकें.

हमको बख़ूबी मालूम है, कि हिन्दुस्तानके रईस ज़मीनको, जो उनके बुज़ुर्गोंसे मीरास पहुंची है, बहुत प्यारी जानते हैं, उनकी इस समझपर हम मिहर्बानीकी नज़र रक्खेंगे; और उनके हक़ जो ज़मीनसे तश्रल्लुक़ रखते हैं, सर्कारके हक़ अदा करनेकी शर्तपर हिफ़ाज़तमें रखना मंज़ूर है; और हमारा हुक्म है, कि क़ानूनकी तज्वीज़ और क़ानूनके जारीहोनेमें क़दीमी हक़ और मुल्क हिन्दके रस्म रवाज और दस्तूरोंपर पूरा लिहाज़ होता रहे.

बाज़े फ़सादी लोगोंने झूठी बात फैलाकर अपने देशियोंको बहकाया, और उनसे चौड़े बग़ावत करवाई और मुल्क हिन्दपर बला और आफ़त पड़ी; और ये हाल सुनकर हम को निहायत अफ़्सोस हुआ, सो हमारी प्रभुता और ज़ोर इसतरह ज़ाहिर हुआ है, कि लड़ाईके मैदानमें बाग़ियोंकी बग़ावत दूर कीगई. अब हमारी मर्ज़ी है, कि उन शरूसोंके निस्बत

انتظام کے لئے مقرر هو کسي رعیت کے اعتقاد اور عبادت مذهبي کے نسبت دست اندازي نکرے والا همارا غضب هوگا *

اور یه بهی همارا حکم هے که جهان تك ممکن هو هماري سب رعیت کسي قوم یا مذهب کے هون بلا تعرض اور طرفداري هماري نوکري مین ایسے عهدے پر مقرر کئے جاوین جسکی خدمت کو بلحاظ تربیت اور قابلیت اور دیانت کے بخوبي انجام دے سکین *

همکو بخوبی معلوم هے که اهل هند اون آراضی کو جو اونکے بزرگون سے وراثتہً پونچهی هے بهت عزیز جانتے هین اور اونکي اس سمجهه پر هم نظر التفات رکهینگے اور حقوق اونکے جوکه آراضی سے متعلق هین بشرط اداکرنے مطالبه سرکار کے محفوظ رکهنا منظور هے اور همارا حکم هے که قانون کي تجویز اور بهي قانون کے نفاذ مین عموماً حقوق قدیمي اور ملك هند کے رسم ورواج اور دستورون پر لحاظ هوتا رهے *

بعض مفسد لوگ کلام دروغ پهیلا کے هموطنون کو ورغلایا اور اون سے بغاوت فاش کروائی اور ملك هند پر بلا اور آفت پڑي اور یه حال سنکے همکو نهایت افسوس هوا سو هماري قدرت اور اقتدار اسطرح ظاهر هوا هے که معرکه کے میدان مین بغاوت باغیون کی دفع کی گئي اب هماري مرضي هے که اون شخصون کے نسبت

जो धोखे खाये और फिर तावेदारीमें आना चाहें, उनके अपराध क्षमा करनेसे अपनी दयालुता प्रगट करें.

इस नीयतसे कि ज़ियादह खून न होने पावे और हमारे मुल्क हिन्दमें जल्द अम्न चैन होवे. हमारे क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरलने एक ख़तमें यह उम्मेद दिलाई है, कि जो लोग ग़द्रके बुरे समयमें सर्कारी नुक्सान करनेके अपराधी हुए, उनमेंसे बहुतसोंके अपराध कई मुख्य शर्तें होनेपर क्षमा कियेजावेंगे, और जिनके अपराधोंने उनको दया होनेकी सीमासे बाहिर करदिया है, उन लोगोंपर जो दण्ड ठहरेगा, वह भी ज़ाहिर करवाया है, सो हमारे क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरलकी ऊपर लिखी बातोंको हम मंजूर और कुबूल करते हैं, और सिवा इसके नीचे लिखे मुवाफ़िक़ ज़ाहिर फ़र्माते हैं, अर्थात्-

जिनके निस्बत साबित हुआ हो, या आगेको साबित हो, कि वे सर्कार अंग्रेज़ीकी रअ़य्यतके क़त्लमें खुद शामिल हुए, उन लोगोंके सिवा दूसरोंकी बाबत् दयालुता प्रगट कीजावेगी; परन्तु क़त्लमें शामिल रहने वालोंके निस्बत इन्साफ़ इस बातको चाहता है, कि उनपर दया न हो.

जिन लोगोंने जान बूझकर कई क़ातिलोंको पनाह दी हो, या जो लोग बाग़ियोंके सर्दार बने हों, या बहकाने वाले हुए हों, उनके निस्बत केवल यही वादह

جو دھوکا کھائے اور پھر اطاعت مین آنی چاہئے اون کي تقصیرات کے معاف کرنیسے اپنے ترحم کو ظاہر کرین *

اس نیت سے کہ زیادہ خونریزی

ہونے نپاوے اور ہمارے ممالک ہند مین جلد امن چین ہووے ہمارا قایم مقام اور گورنر جنرل نے ایک خط مین یہہ امید دلائے ہے کہ منجملہ اون اشخاص کے جو غدر مکروہ کے ایام مین جرم مضر سرکار کے مرتکب ہوئے اکثرکي تقصیرات بشرط بعض شرایط مخصوصہ کے معاف کیجایگي اور جو سزا اون لوگون پر عاید ہوگی جنکي تقصیرات نے آحاطہ ترحم سے اونکو باہر کیاہے اوسکا بھی اعلان کروایا ہے چنانچہ ہمارے قایم مقام اور گورنر جنرل کے عمل مذکور کو ہم پذیرا اور قبول کرتے ہمن اور علاوہ اس کے حسب ذیل اعلان فرماتی ہین یعني *

سواے اون لوگونکے جنکي نسبت ثابت ہوا ہو یا آیندہ ثابت ہو کہ وے رعیت سرکار انگریزي کے قتل مین بذاتہ شریک ہوئے دوسرونکي نسبت ترحم ظاہر کیاجایگا مگر بہ نسبت شرکاء قتل کے انصاف مقتضي اسبات کا ہے کہ اون پر ترحم نہو*

جن لوگون نے جان بوجھ کئے قاتلون کو پناہ دي ہو یا جو لوگ باغیونکے سردار ہوئے ہون یا ترغیب دینے والے ہوئے ہون اونکي نسبت صرف یہي وعدہ

हो सक्ता है, कि उनको जीवदान दिया जावे; परन्तु ऐसे लोगोंकी सज़ाकी तज्वीज़में उन सब बातोंपर जिनके भरोसेपर वे अपनी ताबेदारीसे फिरगये, फिर गौर किया जायेगा; और उन लोगोंके निस्बत जो बे सोचे फ़सादियोंकी झूठी बातोंपर भरोसा करके अपराधी हुए, बड़ी रिआयत ज़ाहिर कीजायेगी.

दूसरे जो सर्कारसे फिरेहुए हथियारबंद हैं, उन सब लोगोंसे वादह होता है, कि उनके अपराध सर्कारके निस्बत और हमारे राज्य व दरजेकी निस्बत बिना शर्त मुआफ़ किये और भुलादिये जायेंगे; परन्तु वे अपने अपने घरोंको जायें और अपने अपने पेशह सुलह व सहूलियतमें हाथ लगावें.

हमारी बादशाहानह मर्ज़ी यह भी है, कि रहम और मुआफ़ीकी शर्तें उन्हीं सबों से तअल्लुक़ रक्खेंगी, जो तारीख़ १ जैन्युअरी सन् १८५९ .ई० के पहिले ऊपर लिखी शर्तोंके मुवाफ़िक़ अमल करें.

जबकि मुल्कमें ईश्वरकी कृपासे फिर अम्नचैन होवे, तो चित्त मनसे हमारी इच्छा है, कि मुल्क हिन्दमें सनतकारीकी मज़बूती होवे, और प्रजाके फ़ाइदहके वास्ते कई काम, जैसा कि सड़क व नहर वग़ैरह बनें; और मुल्कका इंतिज़ाम हमारी ऊपर लिखे मुल्ककी प्रजाके फ़ाइदहकी नज़रसे होता रहे. रअय्यतकी बे फ़िक्रीसे हमारी ताक़त

هوسكتا هے كه اونكی جان بخشي هووے ليكن ايسے لوگونكي سزا كي تجويز مين اون سب احوال پر جنكے اعتبار سے وے اپنی اطاعت سے پهرگئے غور كيا جايگا اور اون لوگون كے نسبت جو بے سوچے مفسدونكي جهوٹی باتون پر اعتبار كركے مجرم هوئے بڑي رعايت ظاهر كيجايگي *

دوسرے اور سبهونكو جو سركار كي مخالفت مين متهيار بند مين وعدہ هوتا هے كه اونكی تقصير سركار كے نسبت اور هماری سلطنت اور منزلت كے نسبت بلا شرط معاف اور عفو اور فراموش كيجاينگي مگر وے اپنے اپنے گهرونمين جائين اور اپنے اپنے پيشه صلح و سداد مين هاتهه لگاوين *

هماري يهه بهی مرضي شاهانه هے كه رحم اور عفوكي يهه شرايط آنهين سبهون سے متعلق هونگی جو قبل تاريخ پهلي جنوري سنه ١٨٥٩ع كے شرايط مذكور كے مطابق عمل كرين *

جب ملك مين خدا كے فضل سے پهر امن چين هووے تو بدل وجان هماري آرزو هے كه ملك هند مين صنعت كاری كي تقويت هووے اور افادہ خلايق كے لئے كارها مثل تياري سڑک و نهر وغيرہ مرتب هووين اور ملك كا انتظام بنظر افادہ هماري رعايا سے باشندۂ ملك مذكور كے هوتا رهے رعيت كے فراغبالے سے همارا اقتدار

और उनकी रज़ामंदीसे हमारी बे फ़िक्री है, और उनकी शुक्रगुज़ारी हमारे लिये पूरा बदला है; और सर्व शक्तिमान जग्दीश्वर हमको और हमारे मातह्त हाकिमोंको ऐसी ताक़त देवे, जो दुनियाको फ़ाइदह पहुंचानेके वास्ते हमारे इन्हीं मत्लबोंको पूरा करें.

इश्तिहार.

जनाब नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुर हिन्द, मक़ाम इलाहाबाद,
तारीख़ पहिली नोवेम्बर सन् १८५८ ई०, फ़ारिन डिपार्टमेण्ट.

ज़ाहिर हो, कि मलिकह मुअ़ज़्ज़महने अपनी मर्ज़ी मुबारकको इस तरह ज़ाहिर किया है, कि मलिकह मौसूफ़ह अंग्रेज़ी मुल्क, जो हिन्दुस्तानमें है, उसके प्रबन्धको अपने अधिकारमें लावें, सो जनाब मौसूफ़हके क़ाइम मक़ाम और गवर्नर जेनरल बहादुर ख़ास व आमको इत्तिला देते हैं, कि आजकी तारीख़से मुल्क हिन्दके प्रबन्ध सम्बन्धी कुल काम मलिकह मौसूफ़हके प्रसिद्ध नामसे जारी कियेजायेंगे.

आजकी तारीख़से हर फ़िर्क़े और क़ौमके लोग, जो ऑनरेबल् ईस्ट इंडिया कंपनीके अ़हदमें मुत्तफ़िक़ होकर इंग्लिस्तानकी शान और ताक़त बरक़रार रखनेमें

اور اونکی قناعت سے ہماري بے خطري حاصل اور اونکی شکرگذاري ہمارے لئے پورا صلہ ہے اور خداے قادر ہمکو اور ہمارے حکام ماتحت کو ایسي قدرت دیوے کہ واسطے افادہ خلایق کے آنہین ہماري مرادونکو تمام مین پونچھاوین *

اشتہار *

جناب نواب گورنر جنرل بہادر ہند مقام آلہاباد
تاریخ پہلي نومبر سنہ ۱۸۵۸ ع فارنڈ پارٹمنٹ *

واضح ہو کہ ملکہ معظمہ نے اپني مرضي مبارک کو اسطرح ظاہر کیاہے کہ ملکہ ممدوحہ قلمرو انگریزي واقعہ ہند کے انتظام کو اپنے اہتمام مین لاوین پس جناب ممدوحہ کا قایم مقام اور گورنر جنرل بہادر خاص وعام کو اطلاع دیتے ہین کہ جملہ اعمال متعلقہ انتظام ملک ہند آجکي تاریخ سے مفخرالیہا کے نام نامی سے جاري کئے جاینگے *

آجکي تاریخ سے ہر فرقہ اور قوم کے لوگ جو انرابل ایسٹ انڈیہ کمپني کے عہد مین متفق ہوکر انگلستان کي شان اور اقتدار برقرار رکہنے مین

कोशिश करनेवाले हुए; आगेसे मलिकह मुअ़ज़्ज़महके ताबेदार ख़याल कियेजावेंगे.

नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरकी तरफ़से सब लोगोंको फ़हमाइश कीजाती है, कि हर कोई अपने रुत्बेके मुवाफ़िक़ मौक़ेपर जहांतक होसके अपने दिल और जानसे मलिकह मौसूफ़हके हुक्म और मर्ज़ीके पूराकरनेमें, जो इश्तिहार शाहीमें दर्ज है, मदद करें.

मुल्क हिन्दमें मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी करोड़ों रिआया हिन्दुस्तानी मौजूद हैं, इन सबपर मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी वफ़ादारी और ताबेदारी लाज़िम है, सो नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुर मलिकह मुअ़ज़्ज़महके हुक्मपर सबसे हाल और आइंदह रहम और मेहरकी वफ़ा पूरी वैसीही चाहेंगे.

नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरके हुक्मसे जारी हुआ.

(अंग्रेज़ीमें) दस्तख़त–

सेक्रेटरी गवर्मेएट हिन्द फ़ारिन डिपार्टमेएट.

मलिकह मुअ़ज़्ज़महके गवर्मेएट आफ़ इण्डियाका प्रबन्ध अपने तह्तमें लेनेपर आम तौरसे ख़ुशी ज़ाहिर होनेके बाद महाराणा स्वरूपसिंहने एक मुनासिब कार्रवाई यह की, कि मुबारकबादीका एक ख़रीतह मलिकह मुअ़ज़्ज़महके नाम भेजा, जिसका तर्जमह इसतरह पर है:–

سامي هووے اینده سے ملکه معظمه کے تابع متصور هونگے *

نواب گورنر جنرل بهادرکیطرف سے سب لوگونکو فهمایش کی جاتی هے که سب کوئی موافق اپنے رتبہ کے موقع پر حتی المقدور اپنے دل و جان سے ملکه ممدوحه کے حکم اور مرضي مندرجه اشتهار شاهي کے انجام دینے کي اعانت کرین *

ملك هند مین ملکه معظمه کي کرورها رعایا سے هندوستاني موجود هین ان سب پر ملکه معظمه کي وفاداري اور اطاعت واجب پس سب سے حال اور اینده نواب گورنر جنرل بهادر ملکه معظمه کے حکم پر رحم اور رحمت کی ایفاء یاوفا بعینه طلب کرینگے *

حسب الحکم نواب گورنر جنرل بهادر هند جاری هوا *

(انگریزي مین) دستخط–

سکرتري گورنمنت هند فارن د پارتمنت *

महाराणाके ख़रीतहका तर्जमह.

ख़ैरख़्वाहीकी .इज़त और सलामके बाद-

शाही इश्तिहारमें जो बात ज़ाहिर कीगई, कि इंग्लिस्तानकी मलिकह हम लोगों पर हुकूमत करेगी, इससे इस अंधेरी ज़मीनपर रोशनी और खुशी फैली है, जिस तरह कि रातको चांद ऊगता है, मेरे दिलमें ख़याल भरे हैं, उन्हींके सबब मैं आपको अपनी ख़ैरख़्वाहीका ख़िराज जल्दीके साथ अदा करता हूं, और खुद ब खुद जो मेरी खुशी ज़ाहिर होती है, उसके साथ मैं इस बातका शुक्रियह शामिल करना चाहता हूं, कि आप अपनी हिन्दुस्तानी रिआयापर कैसी नज़र रखती हैं, जो इस बातसे ज़ाहिर होता है, कि आपने हम सबोंको खुद अपनी ही हिफ़ाज़तमें लिया है, और इस तौरपर उस बंधनको निकालदिया, जोकि कुछ दिनों पहिले बीचमें पड़ा हुआ था, और मुहब्बतके उस सिल्सिलेको मज़्बूत करदिया, जिससे कि मेरा छोटे दरजहका तख़्त नज़्दीक लायागया, और आपके तख़्तके साथ इस तौरसे बांधदियागया, कि जुदा न हो सके.

हमारी बिह्तरीके लिये जो आपको लिहाज़ है उसके इस सुबूतकी खुशी, जो मैं भरोसा करता हूं, कि हिन्दुस्तानके तमाम रईस वैसेही मालूम करेंगे, जैसे कि मुझे इस बातसे ज़ियादह होती है, कि आपके शाही इश्तिहारमें ऐसी मिहर्बानीसे याद दिलाया-गया है, कि आप हिन्दुस्तानके रईसोंके हुकूक़, रुत्बह, इ़ज़त और मज़्हबपर वैसा ही लिहाज़ रक्खेंगी, जैसाकि वे खुद आपके ही हैं. मेरा मत्लब यह नहीं है, कि खुद मेरे संतोषके वास्ते यह इत्मीनान ज़रूर था, क्योंकि मुझे हमेशहसे इंग्लिस्तानकी मलिकह की बड़ाईपर भरोसा है, जो एक बड़ी ताक़तवर क़ौमकी हाकिम होनेके सबब अपनी रक्षामें लियेहुए रईसोंकी तरफ़ अपने उदार चित्तके मन्शाको पूरा करसक्ती हैं.

मैं बड़े ग़द्रके तै कियेजानेपर अपना धन्यवाद देना चाहता हूं, जो ग़द्र कि इस मुल्कपर एक बदला लेनेवाले अवतारके समान होगया, मुझे उस नतीजेके बारेमें कुछ भी संदेह न था, जो मेरी उम्मेद और दुआके अनुसार पूरा हुआ है; मुझे इस

बातसे भी वैसीही खुशी हुई, जैसाकि फ़र्ज़ मालूम होता था, कि खतरेके वक़पर अपने बहुतेरे मैत्री रखने वाले राजाओंको तसल्ली दी, और जब वे लोग अंग्रेज़ी फ़ौज की मददसे अलग होगये और मेरी सलाह मांगी, तब मैंने उनको वे फ़ायदे याद दिलाये, जो हम लोगोंको सर्कार अंग्रेज़ीकी हिफ़ाज़तसे मिले थे, कि आपके तख़्त और खुद आपकी तरफ़ अपनी खैरख्वाहीमें मज्बूतीके साथ मेरे शामिल होवें. इन सब लोगोंने उसीके मुताबिक़ तमाम मुश्किलातमें मज़्बूत रहकर अपनी खैरख्वाही दिखलाई है, लेकिन् बहुत थोड़ोंको यह नसीब हुआ, जैसेकि मेरा खुश नसीब हुआ है, कि अपनी न बदलनेवाली दोस्ती अंग्रेज़ी हुकूमतकी तरफ़ अंग्रेज़ी सिपाहियोंकी मदद और हिफ़ाज़त करनेसे दिखलाई जबकि वे मेरे .इलाक़हमें आकर ठहरे थे, जिस वक़ कि वे बाग़ी सिपाहियोंसे फंसा दियेगये थे.

जो अच्छी तब्दीलात कि गवर्मेंएटमें अब कीगई हैं, उनसे हिन्दुस्तानको, जो अभीतक हालके ग़द्रकी तक्लीफ़से बिल्कुल नहीं छुट गया है, वैसा ही असर हो जैसे कि आकाशसे दृष्टि होकर ज़मीनकी आग बुझाकर उसको तरो ताज़ा करे. जो फ़ायदे कि आप लाखों आदमियोंको उस कामसे पहुंचावेंगी, उसके खयालसे खुद आपके दिलको खुशी बढ़े और उसपर विचार करनेसे आपके शाही ख़ानदानके तमाम लोगोंके दिलमें खुशी और हिफ़ाज़त करनेका खयाल पैदा करें. यह बड़ी उम्मेद और दुआ आपके ईमान्दार और बहुत खैरख्वाह मुलाज़िमकी है.

उदयपुरकी राज्य मुद्रा.

इस बग़ावतका हाल यहांपर जितना मुनासिब था, लिखकर ख़त्म कियागया है. इस विषयमें मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) यह राय है, कि राजपूतानहकी फ़ौजोंमें यदि राजपूतानहके रहनेवाले लोग भरती कियेजावें, तो ऐसी बग़ावत हर्गिज़ पैदा न हो; लेकिन् शर्त यह है, कि सिपाहियोंमें राजपूत, मीणा, भील, गूजर व मेर वग़ैरह क़ौमोंके लोग हों, और कुल अफ़्सर राजपूत क़ौमसे हों. सिवा इसके उनपर राजा लोगोंकी हुकूमत का भी पूरा पूरा असर रहे. तवारीख़ी हालातसे साबित है, कि राजपूतानहके राजपूत क़दीमसे बहादुर, ईमान्दार और इह्सानको मानने वाले हैं.

ऊपर लिखी हुई बग़ावतकी खैरख्वाहीका नतीजह जैसाकि हिन्दुस्तानकी दूसरी रियासतोंको मिला वैसा उदयपुरको नहीं मिला. महाराणाके लिये सिर्फ़ ख़िल्अ़त और उनके

मातहत जागीरदार बेदलाके राव बख्तसिंह चहुवानको एक तलवार गवर्मेएट अंग्रेज़ीसे मिली; लेकिन् इसमें गवर्मेएटका दोष नहीं है. इसका अव्वल सबब तो पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ और एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी आपसकी ना इत्तिफ़ाक़ी, और दूसरा रियासती बड़े अह्लकारोंका विरोध था.

विक्रमी १९१३ कार्तिक कृष्ण ८ [हि० १२७३ ता० २१ सफ़र = .ई० १८५६ ता० २१ ऑक्टोबर] को चारण आढा कृष्णसिंह (१) के मरजानेपर उसका भतीजा रामलाल गोद लियाजाकर उसकी जगह क़ाइम कियागया, जिसको विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० १० नोवेम्बर] को महाराणाने हाथी, खिल्अ़त और मोतियोंकी कंठी देकर गोवर्द्धनविलाससे उदयपुरमें उसके मकानपर भेजा.

देलवाड़ाके राज वैरीशालके कोई पुत्र न होनेके कारण सादड़ी राज कीर्तिसिंहके दूसरे पुत्र फ़त्हसिंहको विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० ता० १० रबीउस्सानी = .ई० ता० ९ डिसेम्बर] के दिन गोद लियेजानेका नज़रानह लेकर महाराणाने उसे देलवाड़ा राजके पुत्रकी बैठकपर बिठाया. इस गोदनशीनीके लिये गोगूंदाके राजने अपने पोतेके वास्ते बहुत कुछ कोशिश की. लेकिन् महाराणा उससे नाराज़ थे, और सादड़ी व देलवाड़ा वाले दोनों सर्दार उनके दिली फ़र्मांबर्दार थे, इसलिये गोगूंदा वाले महरूम रहे.

विक्रमी १९१४ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १२७३ ता० ८ शव्वाल = .ई० १८५७ ता० १ जून] को गोवर्द्धनविलासके महल और गोवर्द्धनसागर तालाब, पशुपतेश्वर महादेव तथा ऐजनस्वरूपबिहारीके मन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई (२). विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० १२७४ ता० १४ मुहर्रम = .ई० ता० ४ सेप्टेम्बर] को नयपालके चौतरिया (राजवी) गुरुप्रसादशाहके बेटे हिम्मतबहादुरशाह और दलप्रकाशशाह दोनों नयपालके वज़ीर जंगबहादुरसे मुख़ालफ़त होजानेके कारण नयपालसे निकलकर यहां आये, और कुछ दिनों उदयपुरमें रहे; अब ये लोग नयपालकी सहदपर रहते और उसी रियासतसे पेन्शन पाते हैं. विक्रमी १९१५ द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० १२७४ ता० २५ शव्वाल = .ई० १८५८ ता० ८ जून] को जोधपुरके महाराजाकी फ़ौज और अंग्रेज़ी रिसालह मेवाड़में कोठारिया मक़ामपर आये, और ज़ाहिर किया, कि यहांके रावत्ने आउवाके ठाकुर कुशालसिंहको पनाहमें

---

(१) इसके वंशवाले सीसोदिया राजपूतोंके सिवा दूसरे राजपूतोंका दान नहीं लेते, क्योंकि महाराणा भीमसिंह दूसरेने कृष्णसिंहको सीसोदा गांव देकर अजाची करदिया था.

(२) गोवर्द्धनविलास उदयपुर शहरसे दक्षिणकी तरफ़ दो मीलके फ़ासिलहपर है, जहां उपरोक्त महल, तालाब, और दोनों मन्दिर बने हुए हैं.

रक्खा है. यह हाल सुनकर कोठारियामें रावत् जोधसिंहके बहुतसे रिश्तहदार एकट्ठे होगये, लेकिन् उक्त रावत्ने फ़ौजके आते ही अंग्रेज़ी अफ्सरको कोठारियाका क़िला दिखलादिया, कि यहां कुशालसिंह नहीं है, इससे सन्देह दूर होकर किसी तरहका फ़साद न होने पाया, और फ़ौज वापस चलीगई.

विक्रमी १९१६ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १२७५ ता० २१ रमज़ान = .ई० १८५९ ता० २५ एप्रिल] को उस हरिमन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई, जो महाराणाकी माता बीकानेरीने पीछोला तालाबके किनारे जलनिवास महलके सामने बनवाया था. विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० १ शव्वाल = .ई० ता० ५ मई] को कायस्थ मुन्शी गुल्लू तीरोलीके जागीरदार राणावत केसरीसिंहको गिरिफ्तार करके महाराणाकी ख़िझ्मतमें लाया. यह जागीरदार महाराणाकी शिकायत करनेवाले सर्दारोंका तरफ़दार था, और शेखावाटीकी तरफ़ के डाकू राजपूतोंको पनाह देकर उनसे मेवाड़में डाकाज़नी व लूट खसोट करवाता था. उक्त मुन्शीने बड़ी बहादुरीके साथ इस जागीरदारको गिरिफ्तार करके डाकुओंसे मुक़ाबलह किया, जिसमें कई डाकू लोग मारेगये, और उनका माल असबाब व घोड़ियां वग़ैरह छीन लाया. इस मुक़ाबलहमें खुद मुन्शी गुल्लू भी सख्त ज़ख्मी हुआ, जिसके इन्आममें महाराणाने उसको एक गांव और खिल्अत वग़ैरह बख़्शा. यह कायस्थ बड़ा दिलेर, बहादुर और सिपाहियानह ढंगका पुराने नौकरोंमेंसे है. महाराणा ऐसे कामोंपर अक्सर इसी शख़्सको भेजते रहे. अगर्चि अब यह बूढ़ा होगया है, परन्तु अपनी दिलेरी और बहादुरीमें कम नहीं है. यह ज़ियादह जायदाद और .इज़्ज़त पानेका मुस्तहक़ था, लेकिन् ज़बांदराज़ीकी आदत और क़िस्मतकी खूबीसे नाउम्मेद रहा, तोभी महाराणा इसकी बहुत .इज़्ज़त और ख़ातिर रखते हैं. विक्रमी वैशाख शुक्ल १४ [हि० ता० ११ शव्वाल = ई० ता० १५ मई] को महता शेरसिंहसे सवातीन लाख रुपया दण्ड लियागया. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ७ [हि० ता० २० शव्वाल = ई० ता० २४ मई] को महाराणाका नज़्दीकी रिश्तहदार बागोरका महाराज शेरसिंह अपनी जागीरके गांवमें इन्तिक़ाल करगया, और विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २० जून] को शेरसिंहका पोता शम्भुसिंह मए अपने चचा समरथसिंह, शक्तिसिंह व सोहनसिंहके उदयपुरमें आया. महाराणाने कुछ अरसह पहिले शेरसिंहपर सख़्तीका बर्ताव किया, जिससे वह नाराज़ होकर अपनी जागीर बागोरको चलागया था; इसवक़्त उसका इन्तिक़ाल होजाने बाद महाराणाने उसके कुटुम्बियोंको उदयपुरमें बुलालिया, और शेरसिंहके बड़े पुत्र शार्दूलसिंहके बेटे शम्भुसिंहको लाइक़ व हक़दार जानकर

जो पहिले बागौर और मेवाड़की हक़दारीसे ख़ारिज करदियागया था, अपने अगले हुक्मको मौकूफ़ रखकर उसे बागौरका वारिस बनाया. विक्रमी १९१६ आश्विन शुक्ल १२ [हि० १२७६ ता० ११ रबीउल्अव्वल = .ई० १८५९ ता० ८ ऑक्टोबर] को महता गोकुलचन्द प्रधानेके कामसे बर्ख़ास्त कियागया. यह शख़्स पुराने ढंगका सीधा सादा और अपने मालिकका ख़ैरख़्वाह व मज़्हबका पाबन्द था. इसके प्रधानेमें महता गोपालदासकी सलाह और कायस्थ मथुरादासकी कारगुज़ारीसे काम चलता था; और ग़द्रके ज़मानहकी कार्रवाई उम्दह होनेके सबब यह नेकनाम हुआ. विक्रमी कार्तिक कृष्ण २ [हि० ता० १६ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० १३ ऑक्टोबर] के दिन महाराणाने कोठारी केसरीसिंहको प्रधानेका ख़िल्अ़त बख़्शा, और उसे हाथीपर चढ़ाकर काका महाराज दलसिंहके साथ उसके मकानपर भेजा. यह शख़्स शुरू हीसे महाराणाके एतिबारी नौकरोंमें था; इसने रियासती जमा ख़र्चके अलावह और भी कई दूसरे कामोंका उम्दह बन्दोबस्त किया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ४ [हि० ता० १८ रबीउस्सानी = .ई० ता० १४ नोवेम्बर] के दिन कोठारी केसरीसिंह अडाणी व छवा वग़ैरह .इज़्ज़तका लवाज़मह पाकर बेदलाके राव बख़्तसिंह समेत नीमच की छावनीको इस मत्लबसे भेजागया, कि ये दोनों शख़्स गवर्नर जेनरलके दर्बारमें आगरे जावें; लेकिन् पोलिटिकल एजेएटने ज़रूरत न समझकर उन्हें नीमचसे ही वापस लौटादिया. विक्रमी माघ शुक्ल ६ [हि० ता० ५ रजब = ई० १८६० ता० २९ जैन्युअरी] के दिन देलवाड़ाके राज फ़त्हसिंह वैरीशालोतको तलवार बंधाईगई, और इसी दिन महाराज चन्दसिंहको मए फ़ौजके जहाज़पुरकी तरफ़ रवानह किया, क्योंकि वहांके मीनोंने उन दिनों बड़ा ग़द्र मचा रक्खा था. महाराज चन्दसिंह महाराणा अरिसिंह तीसरेके ख़वासवालोंमेंसे था, और महाराणा उसपर मिहर्बानी रखते थे. इसने उदयपुरसे रवानह होकर सींगोलीके जागीरदार बाबा मानसिंहके ठिकानेपर क़ब्ज़ह करलिया. मानसिंह वहांसे निकलकर शेख़ावाटीमें पहुंचा, जहांसे ढूंढाड़ .इलाक़हके दो सौ या तीन सौ राजपूतोंको अपने साथ लेकर वापस मेवाड़में आया और लूटमार करनेके इरादहसे मांडलगढ़ ज़िलेके ग्राम दाणियांकी कोटड़ीमें घुसा; लेकिन् वहांके भोमिया कान्हावत गोपालसिंह, महताबसिंह, हमीरसिंह, बलवन्तसिंह, सूरजपुराके रौड़सिंह, इन्द्रपुराके राणावत रामसिंह, जशवन्तपुराके राठौड़ शेरसिंह, मेरे (कविराजा श्यामलदासके) चचा खुमाणसिंह, और छोटे भाई ब्रजलाल वग़ैरहने उसका मुक़ाबलह किया, जिसमें मानसिंहके दो तीन आदमियोंके सिर काटेजाने और इसी क़द्र आदमी व छः घोड़ियां पकड़लीजानेके बाद उसे अपने हम्राहियों समेत पीछा भागना पड़ा. इस मुक़ाबलहमें गोपालसिंह, बाबा मानसिंहसे बड़ी बहादुरीके

साथ लड़कर बन्दूकके छर्रोंसे ज़ख़्मी हुआ, जिसको महाराणाने जागीरमें कुछ ज़मीन, और ऊपर लिखेहुए दूसरे लोगोंको, जो मुक़ाबलह करनेमें शरीक थे, ख़िल्अ़त वग़ैरह दिये. कुछ दिनों बाद फिर मानसिंहने पर्गनह भीलवाड़ाके गांव पुरमें डाका डाला, और वहांके दो तीन महाजनोंका माल अस्बाब लूट लेगया. महाराणाका इन्तिक़ाल होजानेके बाद पंच सर्दारोंने उसकी जागीर सींगोली उसे वापस दिलादी.

महाराज चन्दसिंहने फ़ौज समेत खैराड़में पहुंचकर पर्गनह जहाज़पुरके गाडोली और लुहारी वग़ैरह गांवोंके मीनोंको ख़ूब सज़ा दी, उनके गांव लूटलेनेके अ़लावह पांच या छः आदमियोंको तोपसे उड़वादिया, और बहुतसे मीना लोगोंको गिरिफ़्तार करके हमेशह उनकी हाज़िरी लीजानेका बन्दोबस्त किया, जो उस समयसे अबतक बराबर जारी चला-आता है. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १ [हि० ता० १४ रजब = ई० ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल ईडन साहिब मए मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट शावर्स साहिब व जयपुरके पोलिटिकल एजेण्ट टेलर साहिब वग़ैरहके उदयपुरमें आये, और नीबाहेड़ाके हिसाबी मुआ़मलह व सती होना बन्द करनेके मुक़द्दमहमें बहुत कुछ बात-चीत हुई. जब महाराणाने चौगानके दरीख़ानहमें उक्त साहिबोंकी मुलाक़ात बाज़दीदका दर्बार किया और हाथी लड़ाये, उसवक़ अंग्रेज़ी रिसालहके एक सिक्ख सवारसे महाराज दलसिंहके चचाके बेटे भाई अजीतसिंहकी कुछ तक्रार होगई, और अजीतसिंह उस सवारपर तलवारका वार करके शहरमें चलाआया. इसपर तमाम रिसालह बदला लेनेको तय्यार होगया, लेकिन् जोकि अजीतसिंह महाराणाका नज़्दीकी रिश्तहदार था, इस सबबसे ईडन साहिबने इस भड़की हुई आगको अपने ठंढे वचनोंसे बुझादिया. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ९ [हि० ता० २२ रजब = ई० ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को उक्त साहिब लोग उदयपुरसे वापस रवानह होगये.

विक्रमी १९१७ वैशाख कृष्ण १३ [हि० १२७६ ता० २६ रमज़ान = ई० १८६० ता० १९ एप्रिल] को कप्तान शावर्स साहिबकी एवज़ मेजर टेलर साहिब मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट नियत होकर उदयपुरमें आये, और कई मुआ़मलोंमें रियासतसे बहुत कुछ बहस रही, लेकिन् कोई बात टेलर साहिबकी सलाहके मुताबिक़ ते न पाई, जिससे वह रंजीदह होकर वापस चलेगये. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २९ मई] को आमेटके रावत् चत्रसिंह पृथ्वीसिंहोतको तलवार बंधाईगई.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि० १२७७ ता० २१ रबीउ़स्सानी = ई० ता० ५ नोवेम्बर] को बीजोलियाके राव सवाई गोविन्ददासको तलवार बंधाईगई. इस मुक़द्दमहका हाल इस तरहपर है, कि बीजोलियाका राव सवाई केशवदास पंवार

मेवाड़के अव्वल दरजहके सर्दारोंमें छठे नम्बरका जागीरदार था, उसके आमेटके रावत् प्रतापसिंहकी बेटीसे विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = .ई० १७९९] में शिवसिंह पैदा हुआ, जिसके गिरधरदास, नाथसिंह और गोविन्ददास तीन बेटे हुए. गिरधरदास, जिसका विवाह भींडरके महाराज ज़ोरावरसिंहकी बेटीके साथ हुआ था, और गोविन्ददास ये दोनों तो चावंडके रावत् सर्दारसिंहकी बेटीसे और नाथसिंह बेगूंके रावत् प्रतापसिंहकी बेटीसे पैदा हुआ. परन्तु राव केशवदासकी मौजूदगीहीमें पहिले तो कुंवर शिवसिंहका इन्तिक़ाल होगया और बाद उसके गिरधरदास भी गुज़र गया, इसलिये इन दोनोंके बाद केशवदासके ठिकानेका हक़दार नाथसिंह रहा, लेकिन् आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ी और गिरधरदास व गोविन्ददासके एक मासे उत्पन्न होनेके सबब राव केशवदासकी मन्ज़ूरीसे गिरधरदासकी स्त्री शक्तावतने अपने पतिका दत्तक पुत्र गोविन्ददासको बनालिया; और विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = .ई० १८४७] में राव केशवदासकी कई अर्ज़ियां महाराणाकी ख़िद्मतमें गुज़रीं, जिनका मत्लब यह था, कि गिरधरदास और उसका बेटा मरगया, और उसका इल्ज़ाम नाथसिंहपर आया, इसलिये मैं अपने छोटे पोते गोविन्ददासको गिरधरदासका वारिस और मेरा हक़दार बनानेके लिये हुज़ूरमें भेजताहूं, इसको हुज़ूर भी मन्ज़ूर फ़र्मावें. इस बातकी कोशिश और अ़र्ज़ मारूज़में भदेसरका रावत् हमीरसिंह, सियाणेका पंवार देवीसिंह और सेठ ज़ोरावरमल्ल थे. महाराणाने बीस हज़ार रुपया नज़ानह लेकर गोविन्ददासको गिरधरदासका दत्तक और राव केशवदासका वारिस मन्ज़ूर करलिया, और नाथसिंहको सोलह सौ रुपया सालियानह आमदनीकी जागीरका मुस्तहक़ ठहराया. इस बारेमें जो तह्रीरें हुईं, उनकी नक़्लें नीचे लिखी जाती हैं:–

महाराणाका रुक्का सेठ ज़ोरावर-
मल्लके नाम.

॥ श्रीरामजी.

अप्रंच ॥ बीजोल्या राव सवाई केसोदासजीरा बेटा गोमदसीगजीने पाटवी बेटा कीदा, सो वारे नजराणारा रुपीया २००००) बीस हजार ठेरा, जीरो षत थे ज्माषात्रसु कीजो, थारा रुपीया करार मुजब पुगाए देगा, अर कदाचीत करार मुजब नही पुगे, तो अठासु ताकीद मेल रुपीया भराए देवाएगा; संवत १९०४ पोस सुद १५.

महाराणाका रुक्का राव सवाई केशवदासके नाम.

॥ श्रीरामजी.

अप्रंच ॥ अरज आही समाचार मालुम हुवा, आप रावत हमेरसींगजी, पुवार देवीसींगजी, जोरावरमलजीके हाथ अरज कराही, सो आपरे बेटा गोवीदसींगजीने आपरा पाटवी बेटारी बेठक बगसी हे, सो अबे आप जमा पात्र रापेगा, म्हां कीदी हे जीमे दुजी वेवा की न्ही, काही अंदेसो रापेगा न्ही, संवत १९०४ म्हा वीद १ सुकरे, मुकाम नारे मगरे.

महाराणाका पर्वानह नाथसिंहके नाम.

॥ श्री रामोजयति.

॥ श्री गणेस प्रसादातु. ॥ श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ स्वस्ति श्री ऊदयपुर सुथाने म्हाराजा धिराज म्हारांणाजी श्री सरुपसीघजी आदेसात् नाथसीघ कस्य

अप्र ॥ राव सवाही केसोदासजीके बेटा २ दोये हा, जणीम्हे छोटाने तो म्हे बीजोल्या को पाटवी कीदो, अर तोहे रोटी परच सारु रुपया १६००) सोला से ऊपजतारो गांम कराअे दीदो, जीरो मुकातो कर साहुकारी कराअे दीदी, संबत १९०५

रा सावण वीद १ थी, सो रुपया ३००) तीन से तो बीजोल्याकी छटुंद म्हे ज्मा करावेगा अर रुप्या १३००) तेरासे थने दीदा जावेगा, तीम्हे ६५०) तो सीयालुका पोस सुदी १५ ने, अर रुपया ६५०) ऊनालुका असाढ सुद १५ ने दीदा जावेगा. ईम्हे कसर पाड़ेगा, तो थारो पाटवीपणो साबत वेगा, प्रवानगी प्रोथ सामनाथ, संबत् १९०६ र्वर्षे फागण वीद ८ सोमे.

ये हुक्म एह्काम तो होचुके, लेकिन् नाथसिंह और उसके ननिहाल याने बेगूं के रावत् महासिंहकी तरफ़से अर्ज़ मारूज़ होती रही; और इस मुक़द्दमहमें भी आमेटके मुआमलहकी तरह दो फ़िर्के होगये, याने गोविन्ददासके मददगार सलूंबर, भींडर, भैंसरोड़, और भदेसर, और नाथसिंहके मददगार बेगूं व अठाणाके सर्दार बनगये; लेकिन् राव केशवदासकी मौजूदगीमें इन लोगोंको तक़ारका कोई मौक़ा न मिला. विक्रमी १९१३ [हि० १२७३ = ई० १८५६] में जब राव केशवदास गुज़रगया, और गोविन्ददास, जो वहां मौजूद था, ठिकानेका मालिक बना, तब नाथसिंह अपनी ननिहाल बेगूंसे मदद लेकर बीजोलियाके पर्गनहको तबाह और बर्बाद करने लगा, जिससे वहांकी कुल प्रजा घबराकर भाग निकली, और कभी कभी ख़फ़ीफ़ मुक़ाबले भी होते रहे. इस बखेड़ेमें गोविन्ददासको भैंसरोड़की जमइयतसे हमेशह मदद मिलती रही, बल्कि भैंसरोड़का रावत् अमरसिंह उसके लिये हरएक मुआमलहमें हज़ारों रुपया ख़र्च करता रहा, और तर्फ़ैनकी कई अर्ज़ियां उदयपुरमें पेश होती रहीं. आख़रकार विक्रमी १९१४ माघ शुक्ल २ [हि० १२७४ ता० १ जमादियुस्सानी = ई० १८५८ ता० १७ जैन्युअरी] को बेगूंकी जमइयतने बीजोलियापर हमलह किया, याने रावत् महासिंहका बड़ा पुत्र माधवसिंह और अठाणाका रावत् दीपसिंह दोनों दो हज़ार आदमी व दो तोप लेकर मए नाथसिंहके बेगूंसे बिजोलियाको रवानह हुए. उसीदिन कुछ फ़ासिलहपर पहुंचनेके बाद उक्त दोनों सर्दार तो मए जमइयतके ठहर गये, और अपने साथियोंमेंसे तीन सौ आदमियोंको आगे रवानह किया, जिनमें ज़ियादहतर बावरी और मीना लोग थे. ये लोग वहां पहुंचे, परन्तु बीजोलियाके गिर्द बहुत ऊंची और पुस्तह शहरपनाह होनेके सबब इनको भीतर जानेके लिये रास्तह न मिला, इसलिये सीढ़ियोंके ज़रीएसे दीवारपर चढ़े, और भीतरवालोंके ग़ाफ़िल रहनेकी हालतमें दो बुर्ज और एक दर्वाज़हपर उनका क़बज़ह होगया; बीजोलिया वालोंके एक दो सिपाही जो बुर्जोंपर थे, मारडाले गये, कायस्थ रत्नलालके चार तलवारें लगीं, जिनसे वह सख़्त ज़ख़्मी हुआ, और दर्वाज़हपर कायस्थ राधाकृष्ण मारागया; रात भर दोनों ओरसे गोलियां चलती रहीं. बेगूंवालोंके क़रीब डेढ़सौ आदमी जो दीवारपर चढ़े थे, उनमें

बारह तो ठिकानेदार राजपूत, और बाक़ी बावरी व मीना लोग थे. सूर्य निकलनेसे पहिले मीना और बावरी लोग तो कोटपरसे उतर गये, जिनमेंसे दो चार आदमी तर्फ़ैनकी गोलियोंकी चोटसे मारेगये, और एक दो दीवारसे गिरकर ज़ख़्मी हुए, बाक़ी सिर्फ़ बारह राजपूत दोनों बुर्जोंपर क़ाबिज़ रहे; और दिनभर गोलियां चलती रहीं. गोविन्ददासकी तरफ़के आदमियोंमेंसे कास्याका पंवार डूंगरसिंह, इन्द्रपुराका पंवार चन्दनसिंह, बौहरा लच्छीराम और मोहनलाल वग़ैरह पांच सात आदमी और भी मारेगये. जब थोड़ासा दिन बाक़ी रहगया, तब गोविन्ददासने यह सोचकर, कि अब रातका वक़ क़रीब आगया है बेगूंवाले ज़रूर हमलह करेंगे, ढींकड्या चतुर्भुजकी मारिफ़त, जो उसवक़ उदयपुर की तरफ़से वहांके ख़ालिसहपर मुक़र्रर था, सुलह चाही. इसपर चतुर्भुजने बीच बचाव करके यह फ़ैसलह किया, कि नाथसिंह और गोविन्ददास दोनों बीजोलियामें रहें और उदयपुरमें जाकर जो फ़ैसलह कि महाराणा उनके हक़में करें, उसको वे मन्ज़ूर करलें. इस बातको बेगूंके सर्दारोंने भी मन्ज़ूर किया. आख़रकार बीजोलियाके बाहिर एक मन्दिरमें नाथसिंह और गोविन्ददास दोनोंने क़स्म खाई, कि इस इक़ारमें फ़र्क़ न करेंगे. इसी अ़रसहमें बाक़ी जमइयत लेकर कुंवर माधवसिंह और रावत् दीपसिंह भी आपहुंचे; परन्तु नाथसिंहने उन्हें कहलादिया, कि हमारे आपसमें सुलह होचुकी है, इसलिये आप यहां न आवें, आपके आनेसे शक पैदा होगा. इसपर ये दोनों सर्दार तो अपनी जमइयत लेकर वापस बेगूंकी तरफ़ लौटगये, और गोविन्ददास यह कहकर क़िलेमें गया, कि मैं अभी नाथसिंहको बुलाता हूं; लेकिन् फिर कहलादिया, कि आज रात होगई है, कल बुलावेंगे. इसी दिन कुछ देर बाद भैंसरोड़से डेढ़ सौ बन्दूक़्ची आगये, जिनसे गोविन्ददासने मज़्बूत होकर दूसरे दिन नाथसिंहको कहलादिया, कि यहां से चलेजाओ; लाचार नाथसिंह निराश होकर बेगूंकी तरफ़ चलाआया. यह हाल मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अठाणाके हाड़ा पद्मसिंहकी ज़बानी सुना है, जो हमलह व लड़ाई करने और सुलह होनेके वक़ शरीक था, और जिसकी तस्दीक़ ढींकड्या चतुर्भुजके बयानसे हुई. फिर नाथसिंहने एक दो बार बीजोलियाके पर्गनहमें धावा किया. इसी अ़रसहमें अठाणाका रावत् दीपसिंह गुज़रगया, जो इस मुआमलहमें बड़ा मददगार था, लेकिन् कुंवर माधवसिंहको इस बातकी शर्मिन्दगी थी, कि कृष्णावतोंका भानूजा गोविन्ददास तो हक़दार न होनेपर भी ठिकानेका मालिक बने, और बेगूंका भानजा नाथसिंह हक़दार होकर महरूम रहे; इसलिये उसने पांच सौ आदमी सर्बन्दी नये नौकर रक्खे, और विक्रमी १९१६ वैशाख [हि० १२७५ रमज़ान =ई० १८५९ मई] में वह दो हज़ार आदमियोंकी भीड़भाड़ लेकर बीजोलियाकी

तरफ़ चढ़ा, उसवक़ मैं (कविराजा श्यामलदास) बेगूंमें मौजूद था. कुंवर माधव-सिंहने बीजोलियासे १२ कोस मैनाल मक़ामपर ठहरकर रातके वक़ अपनी कुछ जमइयतको वहां भेजा, लेकिन् क़िले वालोंके ख़बर्दार होजानेसे इसवक़ उसे नाउम्मेदी हुई. अगर्चि कुंवर माधवसिंहका इरादह सच्चे दिलसे फिर भी हमलह करनेका था, परन्तु नाथसिंहकी बदक़िस्मतीसे उसका इन्तिक़ाल होगया; माधवसिंहके मरनेसे गोविन्द-दासके दिलका भय दूर होगया, और महाराणाने उसको बीजोलियाका मालिक बनादिया, जो अबतक मौजूद है. कुछ अ़रसह बाद नाथसिंह भी ना उम्मेदीकी हालतमें मरगया.

अब हम यहांपर वह हाल लिखते हैं, जो महाराणा और उनके सर्दारोंके बखेड़ेसे तअ़ल्लुक़ रखता है. इस बखेड़ेका शुरू तो महाराणा सर्दारसिंहके समयसे ही होगया था, लेकिन् इसवक़ महाराणा स्वरूपसिंहने भी चाहा, कि छटूंद चाकरीकी सफ़ाई कीजाकर सर्दारोंको अपना पूरा फ़र्मांबर्दार बनावें, और इसी मन्शासे उन्होंने सलूंबर, देवगढ़ व आसींदके कई गांव ज़ब्त करलिये. मांडलगढ़की तरफ़ दौरह हुआ, उसवक़ देवगढ़का रावत् रणजीतसिंह महाराणाके सामने पालकीपर सवार होकर निकला (१), इसपर महा-राणाने नाराज़ होकर उसे कहलादिया, कि अपने ठिकानेको चलाजावे. आख़रकार यह ना-इत्तिफ़ाक़ी दिन बदिन बढ़ती रही. जब सलूंबरका रावत् पद्मसिंह गुज़र गया, तो उसके बेटे केसरीसिंहने यह उ़ज़ पेश किया, कि महाराणा मातमपुर्सीके लिये हमारे ठिकाने सलूंबरमें आकर मुझको उदयपुर लेजावें. इसके जवाबमें महाराणाने फ़र्माया, कि ऐसे मौक़ेपर ठिकानेमें जानेका दस्तूर वलीअ़हदका है, और वलीअ़हद नहीं है, इसलिये हमारे काका दलसिंहको सलूंबर भेजेंगे (२). इस तरहकी बहुतसी तक्रारकी बातें होनेपर पोलिटिकल एजेण्टके पास शिकायतें पेश हुईं. पोलिटिकल एजेण्टने ख़ानगी मुआमलातमें दस्तन्दाज़ी करनेसे इन्कार किया; लेकिन् महाराणाकी तरफ़से इजाज़त होनेपर विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में पोलिटिकल एजेण्ट कप्तान शावर्स साहिबने सलूंबरके रावत् केसरीसिंहको एक ख़त लिखा, और उसके साथ रियासतकी फ़र्मांबर्दारी क़बूल करनेकी ग़रज़से चन्द क़लमें लिख भेजीं, जिनका जवाब रावत् केसरीसिंहने लिखा, और उसका दरजवाब रियासतकी तरफ़से दियागया, उन काग़ज़ोंकी नक़्लें

---

(१) महाराणाकी सवारीमें या उनके सामने पालकीपर सवार होकर कोई नहीं चल सक्ता. यदि इत्तिफ़ाक़से कोई शख़्स महाराणाकी दृष्टिके सामने आजाता है, तो वह फ़ौरन पालकीसे उतर-जाता है, और न उतरना बेअदबी समझा जाता है.

(२) यह रावत् केसरीसिंहकी ज़िद थी, वर्नह पेश्वाई व तलवारबन्दी वग़ैरह मौक़ोंपर वलीअ़हद न होनेकी हालतमें नज़्दीकी रिश्तहदार भेजे जाते हैं; इसलिये इन महाराणा (स्वरूपसिंह) के समयमें ऐसे मौक़ोंपर काका महाराज दलसिंह भेजे जाते थे.

नीचे दर्ज कीजाती हैं; केसरीसिंहके जवाबी काग़ज़की नक़्ल यहां इसलिये नहीं दीगई है, कि उसका मत्लब रियासती दरजवाबी काग़ज़में आगया है:-

कप्तान शावर्स साहिबका काग़ज़ रावत् केसरीसिंहके नाम.

नकल. नंबर १५६. ॥ श्रीरामजी.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त-

श्री रामराव अंग्रेज़
सीतम मु० अंग्रेज़
सो मेवाड़.

॥ नकल कागद साहेब अंग्रेज मेवाड़ नाम रावतजी श्री केसरीसीघजी सलुंबर अप्रंच ॥ सलुंबरके जादती, हुकुम अदुल हरकताका पाना मेरे पास आया, सो मेरी नीगाह तो जेसी श्री दरबारकी रीआसत हुकुमतपर हे वेसीही सीरदारोके ठीकाणे वः ईजत हुरमत प्र छे; मैने न्ही चाहा बे दरीयाफत हाल दुसरी तरफके श्री दरबारने सरदारोका बंदोबस्त वास्ते फोज मदद चाही, ऊसकी दरषास्त श्री सीरकार दौलतमदार करु; ई सबब राजके मातमदांसे लीषाकर जुबाबका पाना लीया, अर जुबांनी भी पुछया और दोनु तरफकी बात मुनासीब और ज्यादे नज्र आया, ऊससे राजका हक वः ईजत देष कम कराया, और बाकी रहा हे, सो मेरी दानीस्तमे वाजबी मालुम हुवा; राजकुं चाहीओ ओह पानेकु देष बाते वाजबी कबुल कर मेरे सलाह देणेपर राजी हो. माहाराज दलसीघजीके साथ जाणेमें फाओदा स्मज पका ईरादा श्री दरबारमें जाणेका कर मुझे ईतला करो, कुछ ईजतकी हतक न्ही; और आबरुमें फरक आता देषता, तो मै हरगीज सलाह न्ही देता, राज मेरी सलाहकु हर सुरतसे फाओदा, बहेत्री, नेकनामी, स्यामधरमी आप्णी स्मजे, और राज आप्णे ठीकाणेकी ईजत आबरु प्रे नीगाह रष मेरी सलाहसे राजी षुसी हो ईतला देणा, सो मै श्री म्हाराणा साहेबकु लीष म्हाराज दलसीघ-जीकु सलुंबर भेजाओ राजके लेजाणेकु लीष भेजुं; और ओसा न हो के गफलत और बेपरवाईमे श्री दरबारकुं नाराज कर ठीकाणेका नुकसान बीगाड़ करो, कारण ओ थोडे लीषेकु बहोत स्मज जुवाब जलदी लीषावसी, सं० १९०७ काती सुदी ४, ता० ८ नवम्बर स० १८५० ई० मु० छाव्णी षेरवाड़ा.

सलूंबरकी बाबत् क़लमबन्दी.

॥ श्रीरामजी.

सलुंबरके बा (ब) त ईतना होणा (चा) वे.

१ नोकरी, ताबेदारी, पेदास माफक आका हमेसका दसतुर माफक करवो करै.

२ कीसी दुस्रा स्रदार फीसादी श्रीदरबार नाराज होवे, जीनसे मीलावट न्ही रषे.

३ नजराणो बषत जरुरतके माफक ओर सरदारो के देवोकरे राजकी बेत्री, नामवरी, हुकुमतके वासते

१ व्याव स्यादी. २ गादी वीराजे ज्द. ३ तीरथ जात्रा पदारे जद.
४ कोई जाएया स्वाऐ मोटो परच आजावे जद.

४ श्री महाराणा साहेबके गादी बराजणेका नजराणा सब स्रदारोंने दीआ, अर सलुबरप्र बाकी है, सो देवे

५ रावतजीकु लेवा काका दलसींघजी सलुंबर जावे, रावतजी ऊदेपुर आवे जद हवेली श्री दरबार मोपाए पदारे

६ महीकाठा, बागड वगेरे गेर ईलाषाकी नालसोका फेसला पंचाऐतसे हुवा, जीसका रीप्या हस्याबकी रुसे बाकी हे, सो ब्याजसु दाषल करे

७ गेर ईलाषेकी नालस्याका फेसला जलदी करता रहे, असामी वगेराकु श्रीदरबार मे बुलाऐका काम पडे, तो बीना ऊजर हीले बाहेनेके भेजदेवे

८ ईनके पटेका बंदोबसत चोरी, लुट, बेपारी, मुस्याफर, डाक वगेरेका रषे, ईसकी ज्वाबदेही अपने ज्मे स्मजे

९ अगले कसुर अदुल हुकमी करी, जीसका जरीमाना देवे ओर आगेकु तावेदारी ईकतीआर करे, ओर जीन गामाकी जपती काकड वगेरेकी तकरारके सबब हे, जीसका वाजबी फेसला कराए सब गांमांकी ऊठंत्री कराए लेवे

१० श्री दरबारकी षातरीका रीप्याका करारनामामे लीषी हे ऊस माफक सरदाराकी पंचाअेतसे फेसला पावे

रावत् केसरीसिंहके जवाबोंका रद्दिया.

॥ श्रीरामजी.

॥ सलुंबर रावतजी केसरीसीघजीने सवालका जवाब गुजराणा, जीसका दर-जवाब

नजराणा तावे लषे हे, नजराणा बराड हमारे लागे न्ही, अणी सीवाअे नामा होअे तो दीषावजे, सो ईनोके बडोने हमेस नजराणा बराड दीआ, सो हमारे पास फरद मोजुद हे; फेर महाराणाजी श्री भीमसीघजीने गीगला वगेरे रुणके गाम षालसे कर रु १८०००) डंडके लेकर अठुत्री करदीदी, ओर माहाराणाजी श्री जवानसीघजी गयाजी पदार पाछा पदास्या जद सब सरदारोने नजराणा दीया, जद रावत पदमसीघजीने भी नजराणा दीया, सो रुप्या ९०००) तो प्रभारा सेट जोरावरमलजीके बयामें ज्मा परच हे, अर रु १००००) का जेवर, असबाब नजर कीना, ज्मे रु १९०००) दीया. अेक दफे रावत पदमसीघजीने कलंगीप्र मोती लगाया, सो मोती तो तुडवाअे दीया ओर रु ११००) जरीमानाका कीया, सो रावत पदमसीघजी, तो सरसतेसे वाकब थे, सो अरज कराई, मे करजसे हलका होजाऊ अर नजर करुंगा; ऊस बातकु ४ बरसका अरसा हुवा. अब रावतजी अेसी जुट बात लीष तकलीफ देते हे, जीसकी चसम नमाई होअे माफक स्रसते स्रदारान मेवाडके नजराणाका रुका होणा चाहीअे, अे कुछ हमेसके वासते न्ही हे, जरुरतके वकत लीया जाता हे

छटुद तावे लीपी, मारे लागे न्ही, जीरो रुको माहाराणाजी श्री भीमसीघजीको वा कागद काप साहेबको मोजुद हे, चाकरी करवाने जो हाज्र हा, सो श्री हजुरने रुका मे लीप्या हे के लीप्यामे कसर न्ही पडेगा. आपका घराणाकी चाल छोड्यामे मा

नरदोस; सो रावतजीरा गराणाकी चाल तो आ हे, सो श्री दरबारकी मरजी माफक नोकरी बजावणी, आका बडावा तो अस्या हुवा, सो चुंडाजीमें कसुर आया, सो देस मेसे नीकाल दीआ सो चल्या गया, कभी दावो नही कर्‍यो, अर ओ रावतजी कम अकलका आदम्याके चाले लाग केई त्रेका कसुर, अदुल हुकमी कीआ, अर गराणाकी चाल छोडी, जीको हाल पहेले लीष्यो ही हे; फेर छटुंद कसी मागाहा, आरी चाकरी सदीव हे जीमाफक करो, अर श्री दरबारकु राजी रषो; नोकरी न्ही करी जीरी तलब दाषल करे, सो तो कोल नामेमे ही लषी हे, कुछ ईस रुका कागदमेहे नही लीषा हे, के चाकरी न्ही करणी. ओर दसतुर लीष्योके रावतजीकी समे वे जदी श्री दरबार सलुंबर ताई लेवा पदारे, सो थेठ चुंडाजीसु लेर पदमसीघजी सुदा श्री दरबार हमेस्या लेवा पदार्‍या, सो जारी हे, सो चुंडाजीको फट्या १७ पीडी हुई जीसमे कीतनी पीडी तो अदुल हुकमी रही, सो पटा बी जपत रआ ओर च्यार पीडी मेहेरवानगीके सात आ दत्रावसे लेणेकु पदार्‍या, ओर रावत भवानीसीघजी, कुवरजी श्रीअमरसीघजी बरसरोजका था, जब पदार लेआया, सो श्रीदरबारके पदारणेका दसतुर होता, तो बरसदीनका कुवर राजाका कीस वासते पदारता; फेर भीमस्याही पटा बहीमे ईनके भले आदमीयोंने केई दसतुर ईनका लीषाया, जीसमे लीष्या हे के रावतजी रामस्त्रण हुवे, जद पाटवी कुवरजी वे जो सलुंबर पदार रावतजीकु लावे, सो वो सीरसता जारी हे, जीसकी तो करनेल राबीनसेन साहेब बाद्रने षुब दरीआफत कर षलीतामे लीष दीया, सो दफतरमे दरया-फत करलीजे, अर रावत पदमसीघजीको लीषे, सो रावतजी तो बालक था, अर रावत भेरुसीघजीको बंदोबसत था, सो षोट बीचार्‍या, जीसकी षबर रावतजीकी मा ने ऊदेपुर भेजी के पदमसीघजीने मारनाषेगा, सो श्रीहजुर ऊदेपुर लेजावे, ओ बालक हे; जद श्रीहजुर ने षावंदी कर फीसाद मीटाणे वासते सलुंबर पदार ऊदेपुर ले आया, सो ओ दसतुरमे नही हे; जीस स्वाओ मालककी मेहरवानगीके साथ नई बी होजावे, ओर नाराज करे, तो स्दीवकी वो बी मटजावे, ओ दसतुर कदीमका न्ही हे. फेर बेदले रावजीके पदारनेका लीषे हे, सो वारा टीकाणा तो गंगार हे, अर बेदला तो ऊदेपुरमें हवेली वे जु हे, जीसु रावतजी असो ऊजर कर नोकरीमे हाज्र हुवा न्ही, आ भुल हे

ओर केद नजाणा ताबे लीषे, लागे न्ही, सो ईनके बडावोने केई दफे नजाणा दीया, सो अब भी लेणा होगा, अर ईनके पास ओ दसतावेज होवे के तुमसे कभी पीडी द्र पीडी पुसतेन दर पुसत कदै नजराणा न्ही लागे, तो वो दसतावेज पेस करे, जुट बणावट लीषणेमे कोण फाओदा

रावतजी लषे हे, स्दीव बंदगी करां जीमेह हाज्र हा, सो रावतजी लीषते तो हे, लेकीन लीषेप्र आमल रषते देषे (नहीं), कोलनामेमे क्या लीष्या हे; नोकरीमे हाज्र न्ही रया, जीसकी तलब लीजावेगी. ईनके दसतुर ओ हे, के पटेके माफीक जमीत स्मेत बारा महीना कबीला सुदी ऊदेपुरमे रहे, श्री दरबारके मरजी माफक नोकरी करे, अबे ओ नोकरी मे हाजर न्ही रेते, ईस सबब माफक लीषे कोलनामेके होता हे——————

ओर लीषा, मे कणी स्त्रदार, मसुदीने बेकाया न्ही, मारे मतलब काई, सो आ स्त्रास्त्र जुट बणावट लीपी हे, रावतजीका हातका दसतावेज मोजुद है; फेर कोलनामेमे लीष्या हे, कोई स्त्रदारसु जलाबंदी करणी नहीं, अर ओ करे हे जीरी तगसीर होओ, आगेकु चाल छुटी चावे, जीरी नीसबत लीष देवे——————

ओर लीषी, रोटी करतबमे हरकत वे जीरो तो अरज कराई जस्ये श्रीहजुरने राजी राषे तो पावंद पावंदीज करे——————

ओर लषी, गेर ईलापारा कोई मारा पटाप्र नालस करे, अर साहेबरा लीष्या प्रमाणे श्री दरबार हुकम लीपे, सो मुदेईका राजीनामा आ ऊस असामीकु श्री दरबारमे भेज्या जावे, ओर मेवाडका मुकदमा बाबत तो साहेबने हुकम कीदा, के गरु मुकदमामे दषल नही, सो पेसत्र डुगरपुर, महीकाटा वगेरे की नालस सलुबर पटाप्र बोत थी, जब ईनके प्रधान म्हेता स्त्रदारसीघजीकी पंचाओतसे फेसला कर रु० २५०००) सलुबर बदले श्री दरबारसे दीया गया, वो तो ब्याज समेत दाषल करे, ओर ईलापे मेवाड या गेरकी नालस्या बाकी जीसका फेसला करे; आगेकु कोलनामारी लीषावट (पर) अमल राषे, ओर मेवाडका मुकदमाका ओसा लीपा, सो मेवाड ईलाषामे षालस्याका क्या ओर जागीर क्या, मालक श्री दरबार हे; फेर असामी वगेरे भेजणे रुबकारीके कीस्वासते ऊजर कीया, ईसकी बी साफ मनजुरी होणी चाईजे——————

ओर वे ३३ गाम षालसे लीपे, सो ईस त्रेसे हे, गाम सावा, कुवारया षेडा भागल सुदी छटुद चाकरीके अवजमें करनेल तामस राबीनसेन साहेब बहादुरकी वाकबीसे माफक लीषे कोलनामोंके षालसे कीया, सो कोलनामाके लीषे माफक हीस्याब करे, सो हीसावकी रुसे लेवे देवे. ज्मे गाम पेडा, भागल १५ हे, ज्याने गाम लीष्या हे, ओर गांम चीबोडा त्रसीघको आरे पटामें लीष्यो नही, ओ गाम तो कल्याणपुरका पटाका हे,

ईनके पास ईस चीबोड़ाकी सनंद वे तो पेस करे, सो अठुत्री होजावे; ओर मादावतांको फलास्यो प्रोत रेवादत ने स्हा गोरीदास सलुबरवालाने ईजारे दीदो, सो रावतजीने मन बीगाड़ अपणे षालसेमें लेलीआ, सो ऐ कीतना भारी कसुर हे, के षालसा का गाम पे अपना कबजा करे; ओर पाच सात गांम छोटा षालसे हे, सो सीम वगेरे जगड़ा जीसका फेसला करने वासते केई दफे रावतजीकु लीषा, भलामनषाकु हुकम दीआ, लेकीन साहेबकु बताणे वासते फेसला नहीं करता, जीसका हाल केई दफे षलीतेमे लीषा, सो दफतरमे मोजुद हे. जीस जीस कसुरसे गाम जपत हे, ऊसका राजीनामा करता जावे, अर गामकी ऊठंत्री लेताजावे; ओर गाम ईस सीवाओ लीषे सो गलत हे

ओर करारनामेमे लीष्यो हे, दाण, वीसवा सब जगा श्री द्रबारका हे, सो षालसेमे लीआजावे हे, सो माफक लीषेके सावा, सलुबरका दाण षालसे करधा जावेगा

अजमेर ऊदेपुरका साहुकाराको करज श्री दरबारकी षातरीको त्था बीना षातरीको जो रावतजी सेनाजोरीसे देवे न्ही, सो सबका फेसला करे; सेट धनरुपमल, वागमलजी का करजकी षातरी तो श्री दरबारने ओर स्हेब अजंठने दी हे

ओर रावतजीका अमल कोलनामेप्र न्ही सो हुवा चाहीजे

ओर कीतनेही कसुर रावतजीमे छोटे बडे हे जीसकी फरद वकत फेसलोके पेस कीजावेगा

ओर श्री दरबारका वा साहेबका अदुल हुकमी कीआ जीसका जरीमाना हुवा चाहीजे

ओर माफक सलाहा करनेल तामस रावीनसेन साहेब बहाद्र श्री दरबार मुलक मेवाड़ चकबंदी, हदबंदी करता हे, सो षालसामे तो काम जारी हे, ओर ईनके पटेमे कराने का ईनकार कीआ, सो कराअ दीआ चाहीये

ही माफ़क हीनसे बंदोबसत होणा जरुर हे
अषीर हुकम दीदो, सं० १९०७ काती सुद ४.

इसी तरह दोनों ओरसे कई सवाल जवाब होते रहे, जिनमें अक्सर तो केवल मुआमलहको तूल देनेकी ग़रज़से शामिल किये गये थे, वर्नह उनके कमोबेश करनेमें तर्फ़ैनसे कोई ज़ियादह ज़िद न थी. सलूंबर वालोंकी तरफ़से ख़ास तीन उज़्र पेश थे, जिनमेंसे अव्वल यह था, कि उनकी हवेली और उसके आस पासकी मुक़र्ररह हदके भीतर कोई मुज्रिम शरण में चला आवे, तो पकड़ा न जावे; दूसरा, महाराणा मातमपुर्सीके लिये सलूंबर तश्रीफ़ लावें; तीसरा, सलूंबरका रावत् मेवाड़की मुसाहिबी करे; और इसके सिवा छटूंद व नौकरी का उज़्र था. इनमेंसे ऊपरकी तीन बातोंमें तो महाराणाको पसो पेश था और उनके जवाब भी माकूल वुजूहातके साथ दिये गये; और छटूंदकी मुआफ़ीके बारेमें जो एक ख़ास रुक्का महाराणा दूसरे भीमसिंहका, और एक कागज़ काफ़ साहिबका सलूंबरसे पेश हुआ, उस पर महाराणाने कुछ मंज़ूरी और कुछ ना मंज़ूरीका जवाब दिया, लेकिन् बारह ही महीना नौकरी करना रावत् केसरीसिंहने इस शर्तपर मंज़ूर किया, कि ऊपर लिखी हुई तीनों कलमें कुबूल कीजावें, जो महाराणाको मंजूर न थीं. देवगढ़के रावत् रणजीतसिंहसे आम सर्दारों के मुवाफ़िक़ यह सवाल था, कि ठिकानेकी मौजूदह पैदावारपर ।-) पांच आना फ़ी रुपया सर्कारी ख़िराजके हिसाबसे आधेकी एवज़ नौकरी करे, और आधेकी एवज़ नक्द रुपया सर्कारी ख़ज़ानहमें जमा करावे. इसपर उसने टालाटूलीका जवाब दिया, तब महाराणाने उसकी जागीरके कुछ गांव ज़ब्त करलिये. इसी तरह आसींदके रावत् दूलहसिंहके भी कुछ गांव सर्कारी ख़िराजके एवज़ और आमेसर, वरसणी व बामणी नामके तीन गांव, जो उसने महाराणा जवानसिंहके समयमें छोटे गांवोंकी एवज़ बदलवालिये थे, ज़ब्त करलिये. आख़रकार विक्रमी १९०८ कार्तिक कृष्ण ९ [हि० १२६७ ता० २३ ज़िल्हिज = ई० १८५१ ता० १९ ऑक्टोबर] को जब महाराणाने सुना, कि सलूंबर और देवगढ़ वालोंने ज़ब्तीके अहलकार, सवार व सिपाहियोंको अपने इलाक़हसे निकालदिया, तो उनको बहुत गुस्सह आया और हुक्म दिया, कि फ़ौज भेजकर दोनोंको सज़ा दीजावे; लेकिन् अख़ीरमें यह सोचागया, कि पोलिटिकल एजेण्टकी मारिफ़त गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे फ़ौज तलब करके इनको सज़ा दिलाना चाहिये, क्योंकि अगर कुल जागीरदार मिलकर मुल्कमें ग़द्र पैदा करेंगे, तो पोलिटिकल

एजेण्टको दस्तन्दाज़ी करनेका मौक़ा मिलजायेगा, जैसा कि दस वर्ष पहिले महाराजा मानसिंहके समय मारवाड़में हुआ था. महाराणाने इस सर्कशीकी ख़बर पोलिटिकल एजेण्टको लिख भेजी. इसी अरसहमें सलूंबर और देवगढ़के मोतमदोंने आसींद पहुंचकर रावत् दूलहसिंहसे कहा, कि आप भी अपनी जागीरके गांवोंमेंसे ज़ब्ती वालोंको निकाल दीजिये. उसने इस बातसे इन्कार किया, तब दूसरे रोज़ सलूंबरके मोतमद पुरोहित मोड़ीलालने भंगके नशेमें तेज़ होकर रावत् दूलहसिंहसे कहा, कि कम उम्र लड़कोंने तो अपनी जान देना कुबूल करके महाराणाकी ज़ब्तीको उठादिया, लेकिन् आप बूढ़े होनेपर भी ज़ियादह जीनेकी उम्मेद रखकर लड़कोंसे जुदा होते हैं ! तब रावत् दूलहसिंहने गुस्सेमें आकर यह जवाब दिया, कि इतने दिनतक तो मैं लड़कोंका क़ुसूर जानता था, लेकिन् अब मालूम हुआ, कि यह सब क़ुसूर तुम बदस्वाह और कम अक्ल आदमियोंकी सुहबत और बहकावटका है. सुनो, महाराणा हमारे मालिक हैं, उनके ख़िलाफ़ काम करना हमारा धर्म नहीं है. हमारे मूल पुरुष रावत् चूंडाको देखना चाहिये, कि उसने मेवाड़से निकालदिये जानेपर भी हर्गिज़ अपने मालिककी बदस्वाहीकी तरफ़ क़दम न रक्खा, और वापस बुलानेपर जो उसने ख़िदमतें कीं वे मश्हूर हैं. बेगूंके रावत् मेघसिंहको महाराणा अमरसिंह अव्वलने निकालदिया था, उसने दिल्लीके बादशाह जहांगीरसे मालपुरा जागीरमें पाया, लेकिन् महाराणाके बुलानेपर कुल जागीर छोड़कर चलाआया. सलूंबरके रावत् रघुनाथसिंहको महाराणा राजसिंह अव्वलने निकालकर सलूंबरका पट्टा चहुवान राव केसरीसिंहको देदिया, और रघुनाथसिंहने आलमगीरके पास जाकर वहीं अपनी उम्र पूरी करदी, परन्तु उसका बेटा रत्नसिंह महाराणाके पास चलाआया, और उसने आलमगीरकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी खैरस्वाहियां ज़ाहिर कीं. सलूंबरके रावत् जोधसिंहको महाराणा अरिसिंह तीसरेने अपने हाथसे ज़हर दिया, लेकिन् उसका बेटा पहाड़सिंह महाराणाकी खैरस्वाहीके लिये उज्जैनमें मारागया. और जिन्होंने बदस्वाही की उनकी सज़ा भी सुनो- महाराणा भीमसिंह दूसरेके समयमें, जिनकी हुकूमत बिल्कुल कमज़ोर होरही थी, सलूंबरका रावत् भीमसिंह चित्तौड़पर खुद मुरूतार बन बैठा, उस हालतमें महाराणाकी लौंडी बाई रामप्यारी रावत् भीमसिंहको उसके गलेमें रूमाल डालकर लेआई, और उक्त रावत्ने महाराणाके क़दमोंमें गिरकर क़ुसूरकी मुआफ़ी चाही. इसी तरह देवगढ़का रावत् जशवन्तसिंह, जो पांच लाख रुपयेकी जागीर रखता था, महाराणाकी नाराज़गीके सबब बर्बाद होकर जयपुरमें मरा; और महाराणा स्वरूपसिंह तो आज तुम लोगोंको सज़ा देनेके लाइक़ हैं, मैं हर्गिज़ इस बुढ़ापेमें बदस्वाहीका दाग़ अपने नामपर नहीं लगाना चाहता, तुम लोग अभी यहांसे चले जाओ. ये बातें सुनकर दोनों ठिकानोंके मोतमद वहांसे चले गये. इस ख़बरके

सुननेसे महाराणा बहुत खुश हुए, और उन्होंने रावत् दूलहसिंहको अपने पास बुलालेना चाहा, लेकिन् ईश्वरेच्छासे उसका इन्तिकाल पहिले ही होगया, जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा.

जब महाराणाने मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट और राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरलको यह फ़साद दूर करनेके लिये बहुत कुछ लिखा पढ़ी की, तब उक्त दोनों साहिब विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० १२६८ ता० २० रबीउस्सानी = ई० १८५२ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को उदयपुरमें आये, और सलूंबर, देवगढ़, गोगूंदा, कुराबड़ व भैंसरोड़ वगैरह ठिकानोंके सर्दारोंको बुलाया. रावत् केसरीसिंह मातमपुर्सीके .उज्रसे उदयपुरमें नहीं आया, और शहरके बाहिर रेज़िडेन्सी के क़रीब अपने साथी सर्दारों समेत ठहरा रहा. क़रीब एक महीनेतक महाराणा और उनके सर्दारोंमें बहुत कुछ बहस रही. पेश्तर सर्दारोंको यह खौफ़ था, कि महाराणा की .उदूल हुक्मी करनेपर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे हम लोगोंको ज़रूर सज़ा मिलेगी, क्योंकि विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में कर्नेल टॉडने एक बड़े दर्बारके वक्त महाराणासे उदयपुरमें यह कहा था, कि इन सर्दारोंमें जो कोई आपके बदख्वाह हों, उनको बतलाइये, गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी उन्हें सज़ा देनेको तय्यार है; उस हुक्मका खौफ़ उनके दिलोंसे इस वक्ततक दूर नहीं हुआ था, बल्कि उसका असर हरएकके दिलपर पूरा पूरा जमाहुआ था; लेकिन् इसवक्त एक महीनेतक पोलिटिकल अफ्सरोंकी नर्म और समझायशी कार्रवाईने उनको बेखौफ़ करदिया. फिर पोलिटिकल अफ्सर और सलूंबर व देवगढ़ वगैरह ठिकानोंके सर्दार उदयपुरसे चलेगये. महाराणाने भींडर, आमेट और बदनोर वगैरह ठिकानोंके सर्दारोंको बहुत कुछ तसल्ली दी, कि वे मुखालफ़तमें शरीक नहों, लेकिन ऊपर लिखेहुए सबबसे इनको भी हौसलह होगया. ल्हसाणीके ठाकुर जशकरणका छोटा पुत्र मान्यावासका जागीरदार चूंडावत समरथसिंह सर्दारोंको बहकाने की कार्रवाईके कुसूरपर नज़र क़ैद कियागया; इसपर कुल मौजूदह सर्दारोंकी जमइयतवाले मुस्तइद होकर उसे भींडरकी हवेलीमें लेगये, परन्तु महाराणाने शहरमें बल्वा होजानेके खौफ़से दरगुज़र किया, और सर्दार लोग भी अपने अपने ठिकानोंको चलेगये. महाराणाने चाहा, कि रावत् दूलहसिंहको आसींदसे बुलाकर अपना मुसाहिब बनावें, लेकिन् वह बीमार होकर विक्रमी १९०९ आषाढ़ शुक्ल ११ [हि० १२६८ ता० ८ रमज़ान = ई० १८५२ ता० २७ जून] को वहीं गुज़रगया, तब महाराणाने उसके पुत्र रावत् खुमाणसिंहको बुलाकर ज़ब्तीकी उठन्त्री इनायत करके तलवार बंधादी. इस बारेमें जो तहरीरी कार्रवाई हुई, उन काग़ज़ोंकी नक्लें नीचे लिखी जाती हैं:-

महाराणाका पर्वानह रावत दूलहसिंहके भान्जे
राठौड़ इन्द्रसिंहके नाम.

॥ श्री रामोजयति.

॥ श्री गणेस प्रसादातु. ॥ श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ स्वस्ति श्री ऊदयपुर सुथाने माहाराजा धिराज म्हाराणाजी श्री सरुपसींघजी आदेशात् ईंद्रसीघ कस्य————————————————————————

१ अप्रं रावत दुलेसीघकी श्री जी सरण हुवाकी षबर मालम हुई, सो बढी चीता हुई, प्रंत ई बातसुं कीकोई जोर न्ही, आगे दो ठीकाणा वाला षालसाने सीष दीदी, अर अणी हुकम माथा ऊप्र राष्यो, जीप्र प्रसन होऐने बुलावाकी ततबीर ही जीमे आ हुई, सो षेर श्री जीकी ईछा, अबे रावत षुमाणसींघने लेर प्रवाना दीसटं आवजे, लेवा म्हेता मोषमहे मोकल्यो हे; प्रवानगी प्रोथ सामनाथ, संवत १९०९ वर्षे सावण वीद २ सने————————————————————————

आसींदके फ़ौज्दार कामदारोंके
काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

ऊपरा प्रमाणे सावत, दसषत
रावत षुमाणसींघरा हातरा.

॥ लीषता रावतजी षुमांणसीघजीरा फोजदारा कामदारा अप्रंची । मारी अठा पेलीरी भुल ही, सो माफ कर श्री पावंदा सुनजर कीदी, सो हुकम प्रमांणे बंदगी करणी, ई कलमा लषदीदी जीपरमाणे चालणो

१ पटो आसीदकी लार रावत दुलेसींघजी (रे) आगे हो सो सावत

२ बाढी आगे हे, सो सावत

३ घोडो बलेणो ऊमरावा सरसते

४ कुरब ऊमरावा सरसते

५ चाकरी मारे सदीव मास १२ की हे, सो सासता हाजर रेणो, गरां कोई काम ऊपजे जदी अरज करा०णी, सो धणी सीष बगसे जदी घरा जाअे, काम कर हुकम करे जत्रा दनमें आअे हाजर वेणो; अर अठे काम ऊपजे अर हुकम आवे, गेले तथा पुगताई आवे, तो पाछा फरजा०णो, रुको देषताई हाजर वेणो, मुरजी प्रमाणे बंदगी करणी

६ पवासीमे आगे रावत दुलेसीघजी बेठता, सो अबे मने श्री हुजुरकी मुरजी वे

जदी षवासीरी बेठक बगसे, मारी चाल, बरती श्री षावंदाने पुरी नरेए दीषे, परतीत आवे जदी बगसे, जत्रे अरज करुं नही

७ बेठक पारसोली, कुराबड हेटे ऊमरावां स्त्रसते

८ तरवार बदाईरो नजराणांराको रुको रुपीया ५०००) पांच हजारको नजर करथा जीरी साहुकारी करावे देणी, ओर नेग ऊमरावा स्त्रसते देणो करणो

९ ओर सलुंबर, देवगड बगेरे जो कोई श्री जी की मुरजी बारे होवे जीसु कठेही मीलावट राषणी नही, राजीपा लार मीलावट अर श्री जीरा बेराजीपा लार दुसमणी राषणी, ईमे कसर पाडां तो बदलारा गांम ३ आंबेसर, बरस्णी, बाम्णी, धणी षालसे करलेवे; अर गांम ३ मे आगे छोडथा, सांगवो, रुपाहेली, भाटीषेडो, सो मांने पाछा बगसे जीरो कई बी ऊजर करा नही; धणी आछा नरधार करने षालसे करे जीमे में राज़ी कुसी हां

१० ओर देस साही बात देस सरसते ठेरे, सो मारे ई कबुल हे

११ संडे कणीरे बंदणो नही, फगत धणीरी मुरजी प्रमाणे चालणो, राजी राष बंदगी करणी

अणी परमाणे कबुल हां, श्री जीरी मुरजी प्रमाणे रावतजी वा मे सारा चालांगा, कदी बी तफावज पाडा, तो मांने श्री जी का चरणारबंदाकी आंण हे. मे कणीसु ही सटपट, मीलावट राषा, तो नवमी कलम ऊपरकी मुजब गांम षालसे करे वा सीवाअे तगसीर नजर करां. या लषत रावतजीरी लषावट प्रमांणे भांणेज हीद्रसीघजी, चुडावत करणसीघजी, गोड मोकमसीघजी, पंचोली ग्याना लीष्यो, दसगत ग्यानारा सं० १९०९ रा काती वदी ६ बुधवार.

रावत् खुमाणसिंहका काग़ज़ लॉरेन्स साहिबके नाम.

नुकल. ॥ श्रीरामजी.

॥ श्रीऐकलींगजी. ॥ श्रीभीमेस्त्रजी.

म्हांरो जुहार वाचसी.

॥ सीध श्री नीमचरी छावणी सुभसुथाने सरव ओपमा जोग्य राज श्री करनेल सेट पातरक जारज लालन सहेब बहाद्र जोग्य आसीद थी रावत् श्री षुमाण-सीघजी लीपावतां जुहार वाचसी, अठारा समाचार श्री जीरी सुनज्र सु करे भला हे, राजरा सदा भला चाहीजे ज्यु म्हाने प्रम सुप वे, मारे राज गणी वात हे, राज सीवाअे कइी वात हे न्हीं, स्दा हेत हीकलास हे ज्युही रषावसी अप्रंची। मारे रावत् दुले-सीघजीरा चलेवा भुल तावे श्री जी बेराजी हा, अर अबार सुनज्र कर माने पेतावा बुलाया, सो मे लपत करदीदो जणी प्रमाणे चाल्या जावागा; अर हीमे तफावज पाडा, तो तगसीरवार हां; हीको पात्रीको श्री जी प्रवानो करे बगस्यो, जी प्रमाणे बरतेगा, जीका राजीपाकी अरज मे लष नजर कीदी ने राजने वासते हीतलाके श्री साहेबसुं लपी हे, सो मे श्री जी की मुरजी प्रमाणे राजीनामो करलीदो हे, अठारी तरफरी कुसी रापसी, राज कुसी रेसी, काम काज, कागद पत्र लीषावसी, सं० १९०९ रा काती वीद ६ बुधवार.

महाराणाके नाम रावत् खुमाणसिंहकी अर्ज़ी.

॥ श्रीरांमजी. ॥ श्रीभीमेसरजी.

॥ सीधश्री । श्री । श्री । श्री । श्री । १०८ श्री जी हजुर अरज आसीदसु छोरु रावत षुमाणसीघ लीषता मुजरो धरती हात लगावे मालम वेसी, श्री हजुर बडा हे, मोटा हे,

ईसवर हे, षावंद हे, श्री जीने जत्री ओपमा लषु जत्री जोग हे, अप्रच। रावत दुलेसीघजीका चालासुं श्री जी बेराजी हा, अर अबार सलुंबर, देवगढ वाला तो षालसाने सीष दीदी अर मारे रावतजी माथा ऊपर हुकम राष्या, जणी ऊपर श्री जी परसन वेर माने बुलाया, सो वाकी तो समे बरत गई, अर छोरु पेतावा हाजर हुवो, सो धणी तो तगसीर माफ कर षालसे हा सो गांम पाछा कर बगस्या, अर छोरु स्त्रसतां प्रमांणे तरवारबंदाईको नजराणोको रुको कर कलमबंदीको लषत नजर कीदो, सो जी परमाणे सदा चालेगा, अर श्री जी षात्री कर बगसी जणी परवाना प्रमाणे षावंद बरतेगा, जणीका राजीनांमारी अरज छोरु राजी षुसीसु लष नजर करी वा साहेब बाहादरके नामे बी लषी हे, सो नजर वेगा. छोरुने सदाई षावंदाकी मुरजी सुनजरको ई जांणेगा, सं० १९०९ रा काती वद ६ बुधवार.

आसींदके रावत् खुमाणसिंहकी तसल्लीके लिये
राठौड़ इन्द्रसिंहके नाम पर्वानह.

॥ श्रीरामोजयति.

॥ श्री गणेस प्रसादातु. ॥ श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ स्वस्ति श्री ऊदयेपुर सुथाने म्हाराजाधिराज म्हाराणाजी श्री सरूपसिंघजी आदेशात् ईंद्रसीघ कस्य

१ अप्रं पाछासु दोये सरदारा षालसो ऊठायो, ने दुजाने बेकाया जणीम्हे रावत दुलेसीघ षालसो उठायो न्ही अर रावत षुमाणसीघ पण दुजाकी बेहकावटम्हे न्ही आयो, जीप्र प्रसंन होये बुलाया, सो आगे थने वा भला मनषाने मोकल्या सो मुरजी वा सरसता प्रमाणे कलमा सावत कर अरज लषत नजर कीधा,

सो जणी प्रमाणे सावधरमासु बंदगी कीदा जायगा जतरे पुमाणसीघकी अत्री राहा मुरजाद ऊमरावा प्रमाणे ओर पटो पटा परवाणे पुषत रहेगा, आगलो सुभो रयो न्ही, सावधरमासु बंदगी कीदा जावे; अठा पछे बना राहाकी षेचल व्हेगा नही, जमाषात्र राषे, म्हारो बचन हे. प्रवानगी पंचोली हरनाथ, संवत् १९०९ वर्षे मगसर सुद १० भोमे.

इसके बाद सलूंबर और देवगढ़ वगैरह सर्दारोंके मुश्रामलहमें बहुत कुछ बहस होती रही, यहांतक कि पोलिटिकल एजेण्ट ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिबके पास कई सर्दार खुद नीमचकी छावनी गये, और उदयपुरसे बेदलाका राव बख़्तसिंह, प्रधान महता शेरसिंह और पुरोहित शामनाथ भेजेगये. लॉरेन्स साहिबने सर्दारोंको मुसाहिबोंसे सलाह मिलाकर फ़ैसलह करलेनेके लिये बहुत कुछ कहा, लेकिन् उक्त सर्दारोंने राज्यके मुसाहिबोंको अपने साथ मिलालेनेके सिवा फ़ैसलह करनेकी कोई सूरत न निकाली. इसपर ऊपर लिखेहुए मुसाहिबों ने सर्दारोंको साफ़ जवाब देदिया, कि हमको श्री दर्बारने मोतबर और भरोसेका जानकर भेजा है, आप लोगोंसे मिलावट करके बेईमानीकी बदनामी हम हर्गिज़ न उठावेंगे; अगर आप लोगोंको फ़ैसलह करना हो, तो हम श्री दर्बारसे अर्ज़ करके वाजिबी फ़ैसलह करादेवें. लेकिन् सर्दारोंको यह कब मन्जूर था, वे तो बखेड़े और नाराज़गीके बहानहसे मामूली नौकरी छोड़कर अपने अपने घरोंमें खुदमुरूतार बन बैठे थे; जब कुछ नतीजा न निकला, तो अपने अपने घरोंको वापस लौटगये. आख़रकार राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल सर हेन्‌री लॉरेन्सने मध्यस्थ बनकर महाराणा और उनके सर्दारोंमें एक अह्दनामह क़ाइम कराया, और उसपर विक्रमी १९१२ मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० १२७२ ता० ८ रबीउस्सानी =ई० १८५५ ता० १८ डिसेम्बर] को महाराणा व साहिब एजेण्टके सामने देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह और शाहपुरा, बनेड़ा, भैंसरोड़, बदनोर, आमेट और कोठारिया वगैरह ठिकानोंके सर्दारोंने अपने हाथसे अथवा जो सर्दार मौजूद न थे उनके वकीलोंने दस्तख़त करदिये, सिर्फ़ सलूंबर, भींडर, गोगूंदा और कुराबड़ वालोंने नहीं किये. साहिबने खैरोदा मक़ामपर उक्त चारों सर्दारोंको अपने पास बुलाकर उनसे भी दस्तख़त कराना चाहा, लेकिन् उन्होंने इन्कार किया, जिसपर साहिब नाराज़ होकर चलेगये. इस अह्दनामहपर महाराणा इस सबबसे नारज़ामन्द थे, कि उक्त अह्दनामहकी उन्नीसवीं शर्तमें अदालतको, बीसवीं शर्तमें वज़ीरको और बाईसवीं शर्तमें दत्तक लेनेकी बाबत् ठिकानेवालोंको अपनेसे ज़ियादह इख़्तियार हासिल होनेके अलावह सर्दारोंसे सालभरकी एवज़ सिर्फ़ तीन महीना सालानह नौकरी लीजाना वगैरह कई बातें दर्ज

थीं, और सबसे बढ़कर नागुवार बात उनके लिये यह थी, कि पोलिटिकल एजेएट मध्यस्थ रहकर महाराणा व उनके मातहत सर्दारोंके फ़ैसले किया करें.

इन दिनों गोगूंदाका राज शत्रुशाल तो गुज़रगया था, और उसका बेटा लालसिंह व कुराबड़का रावत् ईश्वरीसिंह सलूंबर और भींडर वालोंके दिली सलाहकार थे, इसलिये विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = .ई० १८५५] में एक मज़्मूनके दो काग़ज़ सर हेन्री लॉरेन्सने गोगूंदा और कुराबड़ वालोंके नाम लिखे, जिनमें महाराणा साहिबके हुक्मकी तामील करने और तलवार बन्दी वगैरह नज़ानहका रुपया अदा करनेमें पसोपेश न करनेकी बाबत धमकी दीगई थी, क्योंकि ये दोनों सर्दार कुल मेवाड़के उमरावोंकी तरफ़से पंच बनकर उदयपुरमें आये थे; लेकिन् तसल्लीके लाइक़ कोई फ़ैसलह न हुआ. इसी तरह कई बार महाराणाने फ़ैसलह करना चाहा, परन्तु अव्वल तो सर्दारोंने ही कुबूल न किया, और यदि कुछ दबाव देखकर उन्होंने कुबूल किया, तो महाराणाने अपने वाजिबी हुकूक़ छोड़ना न चाहा, इस तौरपर मुआमलहमें तवालत होती गई. आख़रकार विक्रमी १९१७ मार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि० १२७७ ता० १७ जमादियुलअव्वल = .ई० १८६० ता० १ डिसेम्बर] को राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल ज्यॉर्ज लॉरेन्स और मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट टेलर साहिब उदयपुरमें आये. महाराणाका इरादह था, कि महता शेरसिंहसे रियासती क़ाइदहके मुवाफ़िक़ पूरा पूरा दण्ड लियाजावे; लेकिन् यह ख़बर सुनकर ज्यॉर्ज लॉरेन्स विलायतसे सीधा खैरवाड़ाके रास्ते उदयपुर आया, क्योंकि वह शेरसिंहपर ज़ियादह मिहर्बान था; और उसके मकानपर जाकर उसे बहुत कुछ तसल्ली दी, और महाराणाके इस बारेमें ज़िक्र करनेपर भी उनके मन्शाके बर्ख़िलाफ़ जवाब दिया. शेरसिंहसे दण्ड वुसूल कियेजानेमें पोलिटिकल एजेएट भी लॉरेन्स साहिबके मुत्तफ़िक़ राय थे, इस सबबसे महाराणा और पोलिटिकल अफ़्सरोंके दर्मियान ज़ियादह ना इत्तिफ़ाक़ी और रंज बढ़गया.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [हि० ता० २० जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० ४ डिसेम्बर] को उक्त दोनों साहिबोंके उदयपुरसे चलेजानेपर महता शेरसिंहसे महाराणा ज़ियादह नाराज़ हुए, और दिन ब दिन सर्दारोंका बखेड़ा बढ़ने लगा. पोलिटिकल एजेएट टेलर साहिबने सर्दारोंको साफ़ कहदिया, कि तुम और महाराणा साहिब आपसमें समझलो, हम दस्तन्दाज़ी नहीं करेंगे (१). इस जवाबको सुनकर सर्दारोंने यह समझलिया, कि हमको बखेड़ा बढ़ानेकी इजाज़त मिलगई.

---

(१) इस समय पोलिटिकल एजेएटको लाज़िम था, कि महाराणा साहिबकी वाजिबी हुकूमतके मददगार होकर उसमें ख़लल न आने देते.

अब सर्दारगढ़ याने लावा और बोहेड़ापर भींडर वालोंके हमले होने लगे; उक्त दोनों जागीरदारोंने खूब मुक़ाबलह किया. लावाके शक्तावत चत्रसिंहके चचा सालिमसिंहका गांव कुंडेई, जो १३ वर्षसे ज़ब्त था, भींडरवालोंकी मददसे वापस उसके क़बज़हमें आगया, और सींगोलीके बाबा मानसिंह पूरावतने मेवाड़में लूटमारका बाज़ार गर्म किया. महाराणाने लावाके ठाकुर मनोहरसिंह और बोहेड़ाके रावत् अदोतसिंह (उद्योतसिंह) को मदद देकर भींडरके ठिकानेको बर्बाद करनेका हुक्म दिया, और कुंडेईपर फ़ौज भेजकर सालिमसिंहको वहांसे निकालदेनेके बाद वह गांव जमादार ख़ाजबख़्शको जागीरमें देदिया, जो सिंधी मुसल्मानोंका सरगिरोह था. इस क़िस्मकी बातोंसे मालूम होता था, कि मुल्कमें ज़ुरूर बग़ावत पैदा होजावेगी, और यदि महाराणा तन्दुरुस्त रहते, तो किसी न किसी ठिकानेदारकी बर्बादीमें भी कमी न रहती, परन्तु महाराणाके शरीरकी हालत दिनोदिन बिगड़ती गई, यहांतक कि उसी बीमारीसे उनका देहान्त होगया, लेकिन् उन्होंने अख़ीर वक़्तक भी अपनी बहादुरानह हिम्मत न छोड़ी.

अब हम सर्दारोंके बखेड़ेका हाल ख़त्म करके महाराणाके समयके दूसरे हालात लिखते हैं, याने अव्वल तो सती होनेके रवाजपर बह्स बढ़कर उक्त महाराणाके साथ ही उसका ख़ातिमह हुआ, दूसरे डाकिन व जादू वग़ैरह बातोंपर मुज्रिमोंको सज़ा देनेके बारेमें भी खूब बह्स हुई. लॉर्ड हेस्टिंग्ज़, गवर्नर जेनरल हिन्द, ने पहिले सतीके रवाजको बंद करनेकी राय दी थी, जिसकी पैरवी समय समय पर होती रही, परन्तु राजपूतानहकी दूसरी रियासतों वालोंने इस मुआमलहमें उदयपुरकी आड़ ली, इसलिये महाराणा जवानसिंहके वक़्से पोलिटिकल अफ़्सरोंने इस बातकी कोशिश शुरू की, लेकिन् कामयाबी न हुई. फिर विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में इन महाराणासे इस मुआमलहमें बहुत कुछ लिखा पढ़ी हुई; और जोकि यह बात बहुत बड़ी और तवारीख़में यादगारके तौरपर दर्ज करनेके क़ाबिल है, इसलिये उन काग़ज़ोंकी नक़्लें नीचे लिखी जाती हैं, जो गवर्मेएट अंग्रेज़ी और रियासत मेवाड़के दर्मियान बह्सके तौरपर लिखेगये थे, और महाराणाने जहांतक होसका अपनी ज़िन्दगी भर इस रवाजको बन्द करना न चाहाः—

थर्सबी साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्तिश्री सर्वोपमा विराजमांन महाराजाधिराज म्हारांणाजी श्री सरुपसिंघजी बाहादुर जोग्य मेजर थरसबी साहेब बाहादुर लिषावतु सलाम मालुम होसी, अठारा समाचार भला

छे आपरा सदाभला चाहीजै अपरंच, सती होणेकी चाल जो हे सो इलाकां राजस्थांनमे अबतक कांही कांही होती हे, अर जेसे के डुंगरसुं पड मरना, कुवेमे गिर मरना वगेरे ये वातां मना अर अयोग्य हे, इसी तरेसै ये वात बी हे; ओर जोकि मनुस्मृति याज्ञवल्क वगेरे धर्मशास्त्र इस युगमे प्रसिद्ध हे, अर जिस्के वर्तमान सर चलणा उचित हे उस शास्त्रांमे दगध सती होणेका जिकर नही हे, अर देषा देषीसें ये सती होणेका तोर आपमतिसुं पेदा हुवा होगा, इस्मे आत्मघातका अपराधकी प्राप्ति दीसती हे, इस्वास्तै सिरकार दोलतमदार कु पसंद ये हे, कै ये आत्मघातका दोषकी प्राप्ति इलाकां राजस्थानमे न वर्ते, इसी कारण आपकु लिषणेमै आता हे, के बोहोत उचित हे, कै आप अपने इलाकेमे ऐसी तजबीज करावे के ये रस्म जारी न रहे. जो कोइ ईरादा करे तो उस्कुं अे समभायस करदीजावे, के पतिके लार जलमरनेसे जीवत सतीका धर्म पाले, तो बहोत ही वेहतर हे, अर उस्के पति के हकमे अछा, अर अज्ञानसुं समझायस न मांने, तो उस्की लकडी व आग देणेकी मदत उस्कै संबंधी लोग न करे, तो ये चाल आपसुंही सेहज बंध होजावेगा, तो इससे नेकनामी राजस्थानकी सब पृथिवीमै प्रसिद्ध होगा; ओर आपके मिजाज मुबारककी षुसीके समाचार लिषणा फुरमावोगे, तारीष १९ दिसंबर संन १८४५ ईस्वी, मिती पोह वदि ६ सं० १९०२.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

ऊपर लिखेहुए ख़रीतहके साथ इसी मत्लबका एक ख़रीतह कर्नेल रॉबिन्सन साहिबका भी आया, जिसकी नक्ल तवालतके ख़यालसे दर्ज न करके उसके जवाबी काग़ज़की नक़्ल नीचे दीजाती है, जो महाराणाकी तरफ़से उक्त साहिबको लिखागया:—

कर्नेल रॉबिन्सन साहिबके नाम महाराणाका रुक्का.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री करनेल तामिस राबीनसन साहेब बाहादुर जोग १ अप्रं ॥ षलीतो साहेब को पोस सुद ७ ता० १२ जनवरी संन १८४८ ईसवीको लष्यो सतीका मुकदमामे

आयो, स्माचार मालुम हुवा, ईको जुवाब तो आगे लीष्यो ही हे, सो दुजा राजस्थाना सु ही राजकी बात ठेठ ही जुदी हे, अर अठे तो परमपरायसु होती आवे हे, अर अपणे पतीका ऊधारवा वासते होवे हे, ओर साहेब सासत्र मुरजादकी लीषे हे, सो सासत्रम्हे सती होबाको धरम लीष्यो हे ज्याकी नकलां मेली हे, सो पंडतासे पढाये लोगा. सत तो श्री जी देवे ज्यी करे हे, सो अठे साहेब लोगाही आछा देषी अर कीताबमे लीषी, सो साहेबही जाणे हे, ओर साहेबकी षुसीकी षबर सासता लीषावो करोगा, संवत १९०४ म्हा सुद ८ सुनेऊ.

सर हेनरी लॉरेन्स साहिबका खरीतह.

॥ श्रीरांमजी. ॥

॥ स्वस्ति श्री सरब ओपमा विराजमांन लायक महाराजाधिराज महारांणाजी श्री सरुपसिंघजी बहादुर अेतान करनेल सर हिनरी मंटगमरी लारनस साहब बहादुर लिषावतं सलांम मालुम होसी, अठाका समाचार भला छे आपका सदा भला चाहीजे अपरंच, इसारा सदरका ये था, के किसी वकत आपसे बीच मुकदमे मना होजाणे रसम षराब सती के जिकर कीआ जावे, किसवासते के ये वात न्याहेत वद हैं ओर सती होणेसे जीव लोगांका मुफत जाता है, इसवासते मेंने आपसे जिकर इस्का वषत मुलाकातके मुफसल कीया था तो आपने फरमाया था, के जेपुरकी सिरकारसे जो तजबीज इसके बंध होनेमे हुइ हे ऊस्कुं देषेंगे ओर कुछ तजबीज करेंगे, सो अब इन दिनांमे अेक नकल इस्तहार जारी कीयाहुवा सिरकार जेपुर, लिषेहुवे भादवा सुदि ३ संवत १९०३ की लफ रुबकारी साहव पुलटीकल अजंट बहादुर राज जेपुरके हमारे पास आइ, ऊससे मालुम हुवा, के ऊनुंने अपने इस्तहारमे मददगार वगेरेकुं मवाफक षुंनीके समझकर सजा देनेके वासते लिषा हे, ओर अबतक वाद जारीहोणे इस्तहार मजकुरके बंदोवस्त भी हरतरेका वास्ते मनाइ सती होनेके रषते हे, इस्वास्ते नकल ऊस इस्तहारकी इस षरीतेमे आपकी षिदमत मुवारकमें भेजी जाती है, ऊस्के मुलाहजेसे आपकुं मुफसल हाल मालुम होगा, ओर ऊमेद हे, के आप रहमदिलीसे वासते वचाणे जीव ओरतांके इस बुरी रसम सतीके बंध होणेके लीये अेसी तजबीज माकुल फरमावेंगे, के इसमे

आपकी बहोत नेकनांमी होगी ओर ये रसम बद वीलकुल बंध होयजावेगी, ओर ये भी आपकुं मालुम होय के अब वास्ते बंध करदेने इस रसम षराबके तमाम हीदुस्थांनमे बहोत बंदोवस्त होयगया है ओर राजस्थांनमे भी रईसांने इस्तहारात अपनी अपनी रियास्तमै जारी फरमाये है ओर ऊसीसे रोज वरोज अे रसम बंध होती जाती हैं, अर दिन बदिन साथ जोरके फेमायस करणेसै, जो सती होनेका इरादा करती थी, वोह बंध होगई. अगर आप थोडासा षयाल इस नेक वातपर फरमावेंगे, तो जलद इस रसमका बंदोवस्त होयजावेगा, ओर आपके मिजाज सरीफकी षुसीके अहेवाल लिषाणेसै हमेसां षुस फरमाते रहोगे, तारीष ७ अगस्त सन १८५४ इस्वी, मिती सावण सुदि १४ संवत १९११ का, मुकाम आबुजीसुं. अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

जयपुरके इश्तिहारकी नक्ल.

॥ श्री ॥

अंग्रेज़ीमें दस्तख़त.

॥ नकल इस्तहार राज सवाई जेपुरकी तरफसै

॥ पहलेसे असा दस्तुर देषा देषी चला आता है, कै हीदुवांकी जातमै कोइ सषस मरजावे तो ऊसके पीछे ऊसकी ओरत जीसकुं ज्यादा महोबत महो होवे, सो जलजावै ओर ऊस्कुं सती नांम रषते है, सो ये वात अब जो चरचा ओर वीचारमे आइ, तो मालुम हुवा, कै अजोग अर बेवाजवी है. जीती हुई ओरतका आगमै चाहकर जलणा ये वात बहोत बुरी अर पापकी है, इस्वास्तै इतलाय अर वाकफकारीके वास्तै हुकम इस्तहार जारी कीयाजाता है, कै अब अमलदारी राजमै कोई ओरत सतीके नामसै जीतीहुई जलणे नही पावे, इसकी पुरी मनाई अर बंदोवस्त रहै, सो सब सिरदार, जागीरदार, भोम्या ओर जीलेदार, थाणेदार, जमादार ओर तहसीलदार, तालकदार वागरह सब ईलाकेदार, नोकर राज असा पुषता बंदोवस्त रषे, कै कोई ओरत सतीकै नांमसै जीती-हुई नई जलणे पावै, जो कदाची (त) कोइ ओरत कीसीकै इलाकैमै ये वात होवै,

जीसकी वा ऊस ओरतके वारसां वा आसपासके रहणेवाले वा ऊस्के आग लकडी वागरह मदत देणेवालो वा कोई जाए पुछकर ऊसकुं नही रोकणेवालांके जीमे होगा ओर वो सब यहां बुलाये जावेंगे, ओर जीन जीनके जीमे कसुर ऊस्कुं नही जलणे देणेमे मदत न करणेका ओर ऊस्कुं आग लकडी वागरह सामानसे मदत देणेका साबत होगा, वो कसुरवार माफीक अपणे अपणे कसुरके जरुर पुनी समझकर सजा पावेगा. इस वास्ते सबकुं चाहीये, के इस ईस्तहारके मजमुनकुं अछी तरह स्मझकर अेसा बंदोबस्त रषो, के फेर इस राजके ईलाकेमे कोई ओरत जीती हुइ जलणे नही पावे, मिती भादवा सुदि ३ सं० १९०३ का.

बीकानेरके इश्तिहारकी नक्ल.

॥ श्रीः ॥

॥ नकल प्रमाणे असल

द। पं। धनराज.

अंग्रेज़ीमें दस्तख़त.

॥ नकल ईस्तहार जो महाराजे साहब बहादुर बीकानेरने वास्ते बंध करणे सतीके जारी किया.

। अपरंच सती होणेमे सिरकार अंगरेजीमे आत्मघात अर षुंन मुजब पापरी जाहर हुई, तेसुं सतीरी रसम बंध होवण वास्ते सिरकार अंगरेजीरी बहोत तकरार वा ताकीदी छे, तेसुं सती बंध करणरो ईस्तहार तो मिती महा बदि ५ ने श्री हजुररे हुकम मुजब जारी हुवो छो, पण करनेल सर हिनरी मेंटगमरी लारनस साहब बहादुररो सती होवे जेने मने न करे वा मदत सती होणेमे देवे तेने सजा संगीन देणेरो षरीतेमे लिष्यो आयो, तेसु श्री हजुरसुं फुरमायो छे, सब ऊमरावां, सिरदारां, जागीरदारां, आंमलां, तहसीलदारां, जिलेदारां, थांणेदारां, कोतवालां, भोमीयां, साहुकारां, चोधरीयां, रहीयत वगेरे सबने ताकीदीरे साथ षबर करदे, जासु अेसो पको बंदोबस्त अपणे अपणे तालुकेमे राषे, सु सती होवे तेने ताकीदीरे साथ समजायस अर असी तजबीज करे, सो सती न होय सके वा ऊसके घरवालां वा भाईये वा सनमंदवालांसुं भी ताकीद तकरार करदेवे, सु ऊसकी मदत कोही भी न करे; और सांमी वगेरे जिता समाध लेवे आनि गडजावे छे, सो रसम बंध करदेवे. कदास सती होणेमे वा समाध लेवे जिसकुं सिरदार, जागीरदार, वा आंमल तहसीलदार, थांणेदार, कोतवाल वगेरे श्री दरबाररो मुलाजम मने न करसी ज्यां ज्यांने नोकरीसुं मोकुफ कर

जरीमानो लीजसी, वलके केद वा सजा भी सकत मिलसी, ओर सती होणेमे वा समाध लेणेमे मदत करसी, ज्यांने सजा सकत होयकर केद कसुर माफक होसी, संबत १९११ मिती म्हा सुदि १३.

ज्यॉर्ज लॉरेन्सके नाम महाराणाके ख़रीतहकी नक़ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ षलीतो नीमचकी छावणी करनेल जारज लारनस साहेब बाहदरके नामे तीरी नकल

अप्र, षलीतो साहेबको बेसाष वीद १३ तारीष १४ अपरेल सन १८५५ ईसवीको लीष्यो आयो, समाचार मालम हुवा, साहेब लषी के भरोसा हे सतीका होणा मोकुफ करे, ओर आप बार बार फरमाते हे, के सरदार हुमारे केणेमे न्ही, ईसवासते हुकम जारी करणेमे देर हे, सो मुनासब हे के ईसतहार ईलाकेमे जारी फरमावे; अर अब जो के कोलनामा बणगया हे, सो आप सरब सरदाराकु मुनाई सतीका करे, अलबत येसेई काममे आपके हुकमसे बारने होगे अर ज्यो हुकम ऊपरात अमलमे लावेगा, तो वो मुजरम सीरकार गीणा जावेगा, सो तो ठीक पण आगे डाकण, भोपा तावे लष्या माफक ईसतहार गया, सो अदुल हुकमवाला कतराक सीरदार रसीद बी न्ही लषी अर जेल्या बी न्ही, सो आगे ईतला करीही, जीसु मुनासब तो या हे, के सब सीरदारने पगा लगाये हुकमप्र अमल करावे, जदी हुकम दे सला मीलाये पकीकर लषदा, क्योक अबारु करदेवामे ज्यो सीरदार अठाकी मुरजीम्हे हे ज्या प्रे दोसण काडेगा, जीसु अठे तो साहेबकी सलाह मंजुरही हे, सो रुबरु वाने हुकम देर लषा तो ठीक हे, ओर साहेबकी षुसीकी षबर सासता लषबो करोगा, सबत १९११ वर्षे बेसाष सुद १३ भोमे.

ज्यॉर्ज लेंटपाट्रिक लॉरेन्सका ख़रीतह.

॥ ४४ ॥ लंबर १ श्रीरामजी १

१ ॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथाने सरब ऊपमा बीराज्मांन लायक महाराजा धिराज महाराणाजी श्री सरुपसींघजी साहेब बहादुर ऐतांन करनेल जारीज सेटपातरक

लारनस साहेब बहादुर ली॥ सलांम मालुम करावसी, ईठारा स्मांचार भला हे आपके सदा भला चाहीये, अपरंच ईन दीनामे षुलासा चीठी कोरट अफ डरकतरस ईस्मज्मुन का आया, के रसम मारपीट ओर जानसे मारडालणें, तोहमत डाकणसे सब राजपुतानेमे मोकुफ हुई, सो श्री महारांणा साहेब वाली ऊदेपुरने भी सबसे पीछे बमुजीब स्मझाणे साहेबांन ईजंट ईस रस्मकी मुमानअत् कबुलकीया, ईससे भरोसा हे के सती होणेकु जलद मोकुफ करेगे; जोक सतीके बाबमे आप बारबार फरमाते हें, के सीरदार हमारे केहणेमे नही ईसवासते हुकम जारी करनेमे तवकुफ हे, सो हमारी रायमे ये मुनासीब हे, के ईसतहार मनादी सती होणेका सब मेवाड ईलाकेमे जारी फरमावें; ओर अब जोक कोलनांमा बणगया हे, आप सरवे सीरदारांकु हुकम मनाई सतीका करें, अलबते असे अेहकांममें आपके हुकमसे सीरदार बाहर न होंगे, ओर जो हुकम ऊपरांत अमलमें लावेगा, तो वोह मुजरीम सीरकार गीणा जायगा; ओर मीजाज मुबारीककी षुसीके स्मांचार हमेसे लीषावसी, स्मत १९१२ बेसाष बदी १३, तारीष १४ अपरेल सन १८५५ ईसवी. अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

ऊपर दर्जहुई तह्रीरोंके बाद महाराणाने भी एक हुक्म इलाक़ह मेवाड़में जारी किया, जिसका मज़्मून नीचे दर्ज कियाजाता हैः–

महाराणाकी तरफ़से मेवाड़ इलाक़हमें हुक्म जारी
हुआ, उस मुसव्वदहकी नक़ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ अप्रंच॥ कोई कोई सती वे हे, सो वीका धणीको तो मोह अर वीका घरकाकी अणबणतसु वा वीके बेटा वा बेट्या परणावाका दुषसु वा करजदारी वा घरमे षरच जादा वा षावाने म्ही मीले जीसु वे, सो या बात बेस्मालकी होवे हे, जीप्र यो हुकम ईत्रा जणाने स्मसत मेवाडका ऊमराव, भाई, बेटा, ठाकुर लोग, कामदार, सासणीक, पटेल, पटवारी, सेणा, भोम्या, गरास्या ओर स्मसत लोगाने, सो ज्यो फतुर करे जीने तो बीलकुल रोक दो, अर ज्यो वीका घरकाकी अणबणतसु वा बीका षावंदका मोहसु वा वीके बेटा बेटयाने परणावा

का दुषसु वा करजदारी वा घरमे षरच जादा वा षावाने न्ही मीले जीसु व्हे, जीने आछा स्मजावज्यो, वा स्मजायासु मानलेवे तो ऊपली कलम लषी हे, जी मुजब वीको हक जठे पुगतो व्हेगा, जठासु कराऐ दीदो जावेगा, अर वा जीवेगा जत्रे रोठी कपडो वीने श्री द्रबारसु मीलेगा, जीसु आछी त्रेह समजावाम्हे पाछ राषो मती, अर फतुर करवावालीके तगसीर वेगा

यो हुकम प्रगणा वालाने सुणाअे दीदो, अर लषाये गयो पको हुवा, सं० १९१३ सा० सुद १२ बुधे.

ऊपर लिखा हुक्म जारी होनेके बाद भी इस मुआमलहमें पोलिटिकल अफ़्सरोंसे बहुत कुछ तह्रीरी बहस होती रही, उन काग़ज़ोंकी नक्लें नीचे दर्ज कीजाती हैं:-

सर हिन्री लॉरेन्सका ख़रीतह.

॥ श्रीरामजी ॥

॥ स्वस्ति श्री सर्वोपमा विराजमांन लायक महाराजाधिराज महारांणाजी श्री सरुपसिंघजी बहादुर एतान् करनेल सरहिनरी मंटगमरी लारनस साहब बहादुर लिषावतुं सलांम मालुम होसी, अठाका संमाचार भला छे, आपका सदा भला चाहीजे अपरंच, षरीता आपका लिषाहुवा मिती सावण वदि ७ संमत १९१३ का वजबाष षरीते हमारे के, कि जो वीच मुकदमे सतीके बतोर सलाह बतारीष ५ जोलाइ सन हालकुं लिषागया था आया, ऊसके मजमुनांके पडनेसे किसी तरेकी दिलजमई हमारी नही हुई, किस वास्ते के आपने ऊसमे बहोतसी सिकायत अपणे सिरदारांकी तो लिषणी फरमाई, लिकन वो बातें कि जो हमने लिषी थी अर वो जरुरी बातें थी, ऊनका जवाब आपने कुछ नही लिषणा फरमाया; अब हम फेर आपकी इतलाके वासते लिष्यो हे, के हमने सुणा हे, के ईन दिनांमे अेक ओर भी सती हुइ, ओर वो ओरत सती होणे वाली लुगाइ अेक सषसकी थी, के वो मुलाजम राजका था, ओर ये सती पास सहर ऊदेपुरमें आपकी निजरके नीचे हुइ, ओर जो जो बातें कि हमने पहली सतीके बाबत लिषी थी, वो सब बाते इस सतीके वास्ते भी इलाका रषती हे, हमकुं अफसोस हे, कि आप हमारी सलाह दोस्तांनापर अमल करणेमे फरक करते हें, ओर आप सिरकार

अंगरेजीसे तो हर तरेकी मदत व सलाह चाहते हैं, लिकन आप आपणा चलण व रवईया अेसा रषते हैं, के जीससे ये जाहर होता हे, के जीन बातांकी के सिरकार अंगरेजीकी चाहना बषुसी हे, ऊनपर अमल आप नही करेंगे; साहब पुलटीकल अजंट बहादुर मेवाड़ अर हम ये चाहते हे, के आपके दोसत बणे रहे, अगर आप भी इस बातकुं चाहे, ओर अब व निजर अेसी बातांके कि जो आपकी तरफसे होती हे, हमने चाहा था, के आपके वकीलकुं यहांसे रुषसद देदी जावे, लिकन जो के सिरदार सुलुंबर, भीडर वगेरा कि सिरकसी व बरषीलाफी आपसे रषते हे, इस सबबसे हमने वकील मोसुफकुं यहांसे रुषसद नही कीया, अर ये ही लिहाज रषा, कि वकीलकुं रुषसद होणेमे आपकी कुछ हतक सिरदारांमे न होय, ओर आपके मिजाज मुबारककी षुसीके अहवाल लिषावसी, तारीष २ सितंबर सन १८५६ इसवी मिती भादवा सुदि ३ संवत १९१३ का.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

नीमचकी छावणी महता शेरसिंह वग़ैरहके नाम पंचोली हरनाथ व ढीकड़्या उदयरामका काग़ज़.

॥ श्रीरांमजी.

नकल.

यो कागद् घरमे लीष्यो छे, सो ऊठे जाहर नहीं करेगा.

॥ सीध श्री मीमचरी छाव्णी सुभसुथाने स्रब ओपमा लाऐक म्हेताजी श्री सेरसीघजी श्री गोपालदासजी श्री ऊरजणसीघजी अेतान श्री ऊदेपुरथी पंचोली हरनाथ, ढी० ऊदेराम लीषावता मुजरो बाचसी, अठारा समाचार श्री जीरी सुनज्र क भला हे, आपरा सदा भला चाईजे, अप्रंच ॥ श्री जी हुकम कीदो हे, सो सतीरा मुकदमा म्हे हद सुदी ताकीद आवे हे, सो ईरो अठे तो बडो बीचार लाग रयो हे, मने करवा को हक हे जीमाफक करां, प्रंत ईणी सीवाऐ न्ही माने जद कसीतरेह करां, आपणां घर म्हे सतीका सरापरो पण डर हे, आगे आगे ई सराप हुवा जे आज दीन ताई भुगते हे, जीसु म्हाने तो अठे काही ऊपजे न्हीं, अठे तो या हे, सो वीने बरजा, लालच देवां, डर बतावां, ई सवाऐ पाच रुप्याको षरच वे तो या लोगारो कहणो राषवाने भुगतां, प्रंत अेका अेक जबरी कसीतरेह करां, अर आपीयाने काहा, सो थे करलो तो कोई भला घरकी तथा अटकती बात वे, ने वे जबरी कर हात पकडे, तो ईको बी

बीचार हे, जीसु अबे आपरे हीरी नजरम्हे काही आवे हे, अठे तो हीसतहाररो मसोदो करणो ने लीषावट सारे करणी जीरो तो मसुदो मेल्यो हे सो आप बाचोहींगा, ओर या व्हेजावे सो बरज्या स्वाही होजावे, तो वीके जरीबानो करां, असी बात वेजावे तो ठीक हे. दुसरु ओर बात तो काही वी अठे नजरम्हे आवे न्ही, जीसु आगे पण भाही स्वाहीसीघजी आपने लीष्यो हो, सो आप तीनही जणा डाकमें बेठ अठे आऐ-जावो. अर श्री जीरा मुडा आगे हीरी रद्लबद्ली कर घरम्हे बीचारां, क्युं या बडी बात हे, अर आगासु बरसा लग बात रहे जसी हे, जीसु ऊठे आपरी नजरम्हे आओ-जावे, अर साहेबने राजी रापने नीकास अठे आवारो काढलो, तो घणी आछी हे, अर या आपने न्ही तुले, तो हीरो बीचारने जाब लीषे, जी धोरे श्री जी मे मालम करां; प्रंत अठे आऐजावे, अर आछीतरे मे बीचारां जद कोही बात दीपे, जीसु आपने तुले ज्यो जाब लीषेगा; ओर वे तीन बाता हे सो तो आपने आगे पुलासा हुकम करही दीयो हो, सो सुबो मीट्या अर दुसरी सारी बाता लीषावटमे वेजावे पकी, जद दुजी काही करणी है, प्रंत दोही आढी सुबो आओ गयो, जीसु सुभो मीटे ज्युं आप करवाम्हे आवे, ओर तो जत्री बात ही, सो तो आपने आगे लीषाऐ दीदी है वी परमाणे आप सारी नजरम्हे करेहींगा, ओर कत्राक स्माचार भाही स्वाहीसीघजीरा कागदसु जाणेगा. अठा लाऐक काम काज वे सो लीषेगा, सं० १९१३ भा० सुद ९.

सर हेन्री लॉरेन्स साहिबके ख़रीतहकी नक्ल़.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री सर्वोपमा विराजमांन लायक महाराजा धिराज महाराणाजी श्री सरुपसिंघजी बहादुर एतान, करनेल सर हिनरी मंटगमरी लारनस साहब बहादुर लिषा-वतुं सलाम मालुम होय, अठाका समाचार भला छै, आपका सदा भला चाहीजे, अपरंच लिषणे साहब पुलटीकल अजंट बहादुर मेवाडसे न्याहेत अफसोसके साथ ये मालुम हुवा, के इन दिनुंमें षास सहर ऊदेपुरमे आपके आंषांके सांमने अेक सती होगइ, अगरचे

इन दोय बरसके अरसेमे केइ दफे करनेल जारज लारनस साहब बहादुरने अर हमने अछी तरे आपसे जाहर कीया, के इस रसम बद, यानि सती होणेसे हमारी सिरकारकु बिलकुल नफरत व नापसंदगी हे, अर इरादा सिरकार दोलतमदारका इस रसम षराबकुं बिलकुल मोकुफ व बंध करणेका हे, तो आपने हर वपत पीछा येही फरमाया, के सतीके मोकुफ करनेमे ओर तो कुछ कबाहत व हरकत नही हे, सिरफ इतनी ही बात हे, के अगर हम इस रसमकी मनाइ वासते हुकम देवेंगे, तो हमारे सिरदार लोग कबुल व तामील ऊसकी न करेंगे, हमने ईसी लिहाजसे अर भी ब षयाल कमजोरी हुकुमत, आपके ताकीद व तकाजा वासते बिलकुल बंध करणे इस रसम षराबके जेसा, के ओर रइसां यानि बीकानेर व अलवरपर कीया वेसा आपसै नही कीया; मगर बहोत ऊमेद थी, के आप मकदुर भर अपने मुलकमें सती होनेकी मनाही करनेमे व रोकनेमे षुब कोसस फरमावेंगे, लिकन अफसोस हे, के आपने इस बातमे, यानि वास्ते मोकुफी व मनाही रसम सतीके आजतक कोसस नही फरमाइ, बलके यकीन हे, के बिलकुल कुछ भी षयाल तवजेही इसका आपने नही कीया, अर फेर जो हमने आपके वकीलसे अहवाल इस सती होनेका केइ बार पुछा, तो महीने भरके बाद यानि तीन रोज गुजरे होवेगे, आपके वकीलने हमसे बयांन इस सती होणेका कीया हे, लिकन आप विचारके देषीये, के इस सती होणेमे जबाब माकुल देणेकी जगा अब आपकी तरफसे नही रही हे, किसवासते के इस वारदात सतीकी होणेमे किसी सिरदारका इलाका व वासता नही था, ये सती होने-वाली ओरत बेवा पास आपके राजधांनीसे सेहर ऊदेपुरकी रहनेवाली अर बिलकुल आपके जेर हुकम थी; ओर ये भी आपकुं मालुम होय, कि करनेल जारज लारनस साहब बहादुर अछी चाहणेवाले आपके दरबारके व हर बातमे दोसत मददगार जेसे आपके हें, वेसे दुसरां किसीके नही हे, ऊनोंने केइ दफे हरेक बातमे आपकुं सलाहां बहोत नेक दीवी थी, लिकन आपने ऊसपर कुछ षयाल नही फरमाया, तो इसी सबबसे करनेल साहब बहादुर मोसुफ अपणी तरफसे ये राय लिषते हे, के महेकमा अजंटीका यहांसे ऊठ-जावे अर दरबार अपने कांम काजके अंतजांम बंदोबसतमे षुद मुषत्यार अर भले बुरे कांमके जमेवार रहे, तो इस सुरतमे हमारी दांनसतमे आपके हकमे किसीतरे से फल इसका अछा नही होगा; ओर आपने साहब अजंट बहादुर मोसुफके नेक सलाहां देणेपर षयाल नही फरमाया, बलके हमारे अछी सलाहां कितनीक बातांमे देणेपर भी अमल नही कीया, इससे अब हमारा इरादा हे, के ब सलाह करनेल जारज लारनस साहब बहादुर अजंट मेवाडके रपोट इसकी सदरकु करें, लिकन फेर भी पेहले रपोट करणेसे दोसतीकी राहसे येही मुनासब हमने जांणा, कि-

फेर अहतयातन आपकुं आगाह करदीया चाहीये, इसवासते आपकुं लिषणेमे आता हे, के अब भी आप ऊपर नेक सलाहां साहब पुलटीकल अजंट बहादुर मोसुफके अर भी हमारे षयाल फरमायके अमल करावें, तो बहेतर हे; किसवास्ते के ये बात जाहर हे, के आपकुं अपणे मुलक षालसेपर बिलकुल ईषत्यार हे, अर जो मुलक कबजे सिरदारांके हे, उसमे भी च्यार हिसेमे से तीन हिसेसे ज्यादे सिरदार भी आपके ताबे व कबजेमे हे, इस सुरतमे अगर आप हुकम जारी करके ऊसकी तामीलमे कोसस फरमावेंगे, तो जो लोग के ना फरमांन हे, ऊनका भी ताबेदार करलेणा कुछ मुसकल नही होगा. अब हिंदुसथानमे सिरफ मेवाडकी रियासतमे सती होणेकी रसम मोकुफ न्ही होई हे, बावजुद इस्के के जितनी महरवांनी व रियायत सिरकार दोलतमदार अंगरेजीकी तरफसे इस रियासतपर हे, ओर रियासतपर नही हे; ओर ये भी आपकुं जाहर होय, के सती होणेकी मनाहीके बाबत हजुर साहबांन सदर अर कोरट अफ डरकटरसकी तरफसे ओर हुकम भी आये हे, लिकन हमने लिषना जबाब ऊस हुकमां का इस षरीतेके जवाब आपकी तरफसे आणेपर मुलतबी रषा हे, इस वासते आप कुं लिषणेमे आता हे, के आप जवाब इस षरीतेका जलदी भेजणा फरमावे, अर आपकुं ये भी मालुम रहे, ये मुकदमा बहोत भारी हे इसकुं छोटी बात नही समजीये, ओर नकल इसतहार (१) महाराजे साहब वीकानेरकी, जो सतीकी मोकुफी वासते जारी कीया, आपके मुलाहजेके वासते इस षरीतेमे भेजी जाती हे, के मरातब ऊस्के आपकुं मालुम होय; ओर आपके मिजाज मुबारककी षुसीके संमाचार लिषावसी, तारीष ५ जोलाइ सन १८५६ ईस्वी, मिती असाड सुदि ३ संवत १९१३ का.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

मेवाड़के पोलिटिकल एजेंटके काग़ज़की नक्ल.

॥ श्रीरांमजी.

॥ २५१ ॥ नंवर

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभ सुथांने सरबओपमां बीराजमांन लाअक म्हाराजधीराज म्हारांणांजी श्री सरुपसीघजी साहेब बहादुर अेतान मेजर राबरट लवीस टेलर साहेब ब्हादुर ली ॥ सलाम मालुम करावसी, अठाका स्मांचार भला हे, आपका स्दा भला चाहीजे, अपरंच वकील मेवाडने हमकु षबर दीया, के सनवाड ईलाके मेवाडके

(१) इस इश्तिहारकी नक्ल पृष्ठ २०२० में पहिले दर्ज होचुकी है.

जागीरदारके यांहां सती होगई, ईस बातके सुननेसे अफसोस मालुम हुवा. अब श्री दरबारने जेसा कुछ तजबीज ईस अमरके मोकुफ व सजा देनेकी कीहो, ऊससे ईतला फरमावें; दुसरे ये, के बोहोत रोज होगऍ, के हमने ऊीगरीके रुपीयाका हीसाब बतलब रुपीये भेजा, ऊसका आजतक कुछ जबाब न आया, बलके परीते मुकरर सीकरर मीयादी आठ रोज बतारीष ६ माहे जोलाई सन हाल बतलब रुपीये मजकुर भेजा, मगर रुपीये मजकुर दाषल न हुवा; तीसरे ये हे, अब ईतना अरसा हुवा, के बाबत मुबलगान हीसाब नीमांहेडे हमने ईतला की जीसका भी ज्वाब नही आया, अगर आपकी मरजी भेजने रुपीये मजकुर माफीक मनसाऐ हुकम गवरनर जनरल ब्हादुर न हो, तो हमकु ईतला देवे, के हम रपोट ईसकी सदरकु करे; ओर मीजाज मुबारीककी षुसीका स्मांचार हमेसे लीषे, ता० २९ माहे अगस्त स० १८६१ ईसवी, मीती भादवा बद ९ स्मत १९१८, मुकाम छावणी नीमच रोज बीसपतवार. अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

ملاحظہ شد

इंडन साहिबके नाम महाराणाके रुक्केकी नक़ल.

॥ श्री ॥

॥ स्वस्ति श्री मेजर वलीयम फरीडरक ईडन साहेब बाहादुर जोग, अप्रं पलीतो साहेबको ता० २१ जोलाई संन १८५९ ईसवीको लीष्यो आयो समाचार मालम हुवा, साहेब लषी के बीच ईन दीनोके आवणे षत अंगरेजी कपतान सोर साहेब बाहादुर अजंट मेवाडके से दरयाफत हुवा, के बीच षास बागोरके बारदात सतीकी हुई, आगे ईससे बीच मुकदमे बंदोबसत ईस रसमके करनेल सर हीनरी मंटगुमरी लारनस साहेब ओर दुसरे साहेबांन अजंट बाहादुर राजपुतानेने लीषना कीया हे, ओर अे रसम असा नापसंद ओर बरषीलाप तबीऐत सीरकार अबद पाऐदारके हें, के बीच बयानके न्ही आता, ओर आप सबब नेक ईरादे सीरकार दोलतमदारके से जाहार होनां षेरषवाही ओर दोसतीका करते हे, फेर मालम न्ही होता, के कीसवासते ऊपर ऊसके षयाल न्ही होता हे, सो साहेब दोसतीकी लषे सो, तो युही हे, के अठे तो सीरकार अंगरेजीकी दोसती- ज चावा हां, क्युके यो राज तो फगत सीर (कार) अंगरेजीकी मदतसुही सरसबज हुवो अर होवे हे, सो रात दन श्री जी म्हाराजसु याही अरज करबो कराहां, के सीरकार

अंगरेजीको ईकबाल दनभर दन जादा बदे जीकी अेन कुसी हे. आगे ईस मुकदमामे साहेब लोगाकी लीषावट आई जीको जुवाब तो पाछो मुनासब, अोर रसम ईस मुलक मे सासत्र मरजादसु जारी हे जीमाफक सासत्रका बचनाकी नकल समेत लष्यों गयोई हो, सो साहेबके दफत्रमे मोजुदई हे. ई राजकी अर दुजा रजवाडाकी कत्रीक चालके बडो फरक हे, अोर जगा तो कठे हुई कठे न्ही बी हुई, अर ई राजमे तो या रसम पुरा धरमकी अर परंमपरा श्री रामा अवतारसु चली आवे हे, जीको सब हाल टाटनामा कीताब मे बी लष्यो है, सो साहेब देष्योई होवेगा, तथा अठासु नकल कराऐ करनेल सर हीनरी मंटगुमरी लारनस साहेब बाहादुर पास संवत १९१३ का काती वीद १२ का पलीता लार भेज्यो हो, सो साहेब मुलाऐजे करलेवे. म्हाकी त्रफसु रोकवाको हक, मने करवो, डर बतावणो, षाणा पीणा वगेरे हरसुरत तसली करवाको हे ज्यो कराई हां, अर ई सीवाऐ नहीज माने अर वीरा पावंदकी लार जावोईज ईकत्यार करलेवे, जीसु तो धरम के सबब लाचारी हे. अर साहेब ईने आतमहत्या गणे सो नही हे, सती तो च्यारही जुगमे वेती आई हे, या बात अफरादकी वेती, तो आजताई जारी न्ही रेहेती. अर सीरकार दोलतमदार ज्यो साराको बरण, धरम आप आपको राषे हे, सो अबार श्री बादसाजादी को ईसतहार भेज्यो हुवो नबाव गवरनर जनरल साहेब बाहादुरको आयो, जीमे बी राहा-मरजाद अोर दीन अोर धरम बाबत मजमुन लष्यो हे, सो साहेब जाणेई हे, अर अठे ज्यो म्हाराज धरमकी बात हे, सो साहेब ई ईस मुलककी राहा रसम अोर धरमकी बातसु आछा वाकब हे; अोर साहेब लषी के षबर ईस वारदातकी साहेबान आली-सान सदरके करी हे, सो म्हारो लषवो तो साहेबने हे, साहेब ज्योई करेगा ज्यो अठा का फायेदा, वेहेत्रीकीज करोगा; अोर साहेबकी कुसीकी षबर सासता लषबो करोगा, संवत १९१६ र्वषे भादवा वीद १० भोमे.

महाराणाकी तरफ़से कलमबन्दीके साथ हुक्म जारी हुआ उसकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ याद —————————————— सं० १९१६ का का० वुद ५

पेली कलम तो या, के कठेई सती होवाको ईरादो करे, तो वीका गरका समजावे, के

तु सती मत वे, आछीत्रे धमकाओ केवामे बाकी राषे न्ही

गरकाकी नही माने, तो राजसु बरजावे

बरज्यो न्ही माने, तो षावा पीवाका सरतनको लालच देर रोके, जु रुक सके जणी चालसु समजाओ रोके

ई सवाऐ न्हीज माने, तो या केणी, के थारे सती होणोई हे, तो माका देसमें मती हो, ओठे जार वे

ईप्र ई न्ही माने, तो अत्री करणी

अेक तो या, के वीने केणी, के तु होवे तो हे, प्रंत थारी प्रतीत माने आवेजु कर, मे थने तालामे जडदेवा, सो तालो आकसमात पुलपडे जद मे पकी जाणा

दुजी या, के हातमे बासदीका अगीरा लीया रहे, जीमे थारो मन माने, गाडी दीषे, जद जावादा

ई सवाऐ वा साचा दीलसु सत करवोई धारले, तो जरीबानो पाछलाके होवेगा, जीरी वीने केदेणी, अर वीरा गरकाने केदेणो, के सलाको पुरो जापतो कर बेठावजो, पछे राजकी त्रफसु समाल रषावणी सो काठ कम न्ही वे, टाटा च्यारई त्रफ बदाऐ दोगा, गीरत, राल, नीचे, ऊपरे आछीत्रे बछाओ देणो, अर काठ नीचे ऊपरे चुणवावाला आछा समालेर चुणे सो डगवा बपरवा पावे न्ही

ई सवाऐ देवगतसु सलामें बेठा पछे मत बीगड जावे, तो ससत्र बगेरे दुजासु कोई मारे न्ही, ऊई बपत देस बारे काडदेणी, या समाल हाकम करे

ई प्रमाणे सारा प्रगणा वाला षाल राष समाल राषे, ई कलमा ऊपर मडी जी बीना पडदा-वाली बारे फरे जीके वासते हे, अर पडदावालीके वासते तालाकी वा अगीराकीज करावणी

सती तावे कलमा लपाई, जीमे पडदावालीके वासते या चावे, के कदाक ऊठे पुगा पाछे कुमत आओजावे, तो वीका गरवाला तीरथा मेलदेवे, सो तीरथ सेवन करे, अर षावाने वीका गरवाला पुगावे

ईडन साहिबके फ़ार्सी ख़रीतहका तर्जमह.

॥ श्री ॥

मामूली अलक़ाब व आदाबके पीछे-

ख़त आपका हमारे ख़तके जवाबमें, जो तारीख़ २१ जुलाई सन् ५९ .ई० को बमुक़द्दमह वारिदात ताज़ह सती होने बागौरमें, और बाज़े मरातिब मुतऋल्लक़ह उसके इस मज़्मूनसे आया, कि आगे बरवक्त आने लिखावटों साहिबान ऋालीशानके जवाब मुनासिब मए नक़ल क़ौलों शास्त्रके लिखना हुआ, और इस राजकी अक्सर रस्मों और दूसरी रियासतोंकी रस्मोंमें बहुत फ़र्क़ है, इस राजमें क़दीमसे रस्म सती होनेकी जारी है, और मना करनेके लिये केवल समझाना, और उसके खाने पीनेको मुक़र्रर करदेनेका वादह करलेना होसक्ता है; इस पर भी जो सती अपने पतिके संग जानाही इख़्तियार करे, तो उसवक्त धर्मके लिहाज़से लाचार हैं, यह बात आत्महत्यामें नहीं गिनीजाती है, चारों युगमें जारी रही है, और मलिकह मुऋज़्ज़महके जारी कियेहुए इश्तिहारमें भी दूसरोंके धर्म सम्बन्धी कामोंमें रोक टोक न करना लिखा है; उसकी लिखावट बिल्कुल ज़ाहिर हुई, और उसके बाज़े मज़्मून जाननेसे सबब तऋज्जुबका हुआ, किसवास्ते कि आप फ़ज़्ल इलाहीसे ज़मानहके ऋक्लमन्द और समझदार व दाना सर्दार हैं, और ज़ाहिर है, कि अगले ज़मानह और हालके ज़मानहमें बहुत फ़र्क़ है; क्योंकि जो बातें इस ज़मानहके ऋादमियोंको बहुत दिनोंके तजबोंसे मिली हैं, अगले ज़मानहके आदमियोंको कहां मुयस्सर थीं; और इस बातसे साफ़ ज़ाहिर है, कि अहालियान सर्कार ऋंग्रेज़ीने केवल दयाकी राह, ऋौर ऋादमियोंके जीव बचानेके ख़याल से इस रस्मको बन्द करना चाहा है, ऋौर जो मिसाल कि मलिकह मुऋज़्ज़महके इश्तिहारमें किसीके दीनमें दख़्ल न देनेका ज़िक्र होनेकी बाबत् ऋपने ख़रीतहमें लिखी है, ऋौर इस बातके रोकेजानेको इश्तिहारके मज़्मूनके ख़िलाफ़ समझे हैं, सो यह लिखावट आपकी उक्त इश्तिहारके मज़्मूनपर एक हाशियह (नोट) है. इश्तिहारमें ऐसा लिखा है, कि एक दीनको दूसरे दीनसे बढ़कर नहीं समझा जायेगा, ऋौर किसीको धर्म सम्बन्धी रस्मोंमें तक्लीफ़ नहीं होगी. ख़याल करनेकी जगह है, कि सती होनेकी मनादीके बाबमें कोई बात ऊपर लिखीहुई दोनों बातोंमेंसे नहीं पाईजाती, न तो एक दीनको दूसरे दीनसे बढ़ाना है, ऋौर न किसी ऋादमीको दुःखदेना है, बल्कि इसके ख़िलाफ़ पूरी तज्वीज़ दुःख मिटाने ऋौर आदमियोंके जीव बचानेकी है; इसवास्ते मना करना इसका शास्त्रके भी बाज़े क़ौलोंके ख़िलाफ़ नहीं है, ऋौर ऋाप

इस कामको आत्महत्यासे अलहदह समझते हैं, तो बड़ा तअज्जुब है, किसवास्ते कि इस मुआमलहमें अक्रसे आत्महत्यामें कुछ शक नहीं है, और न इसमें दलील करनेकी जुरूरत है. रहा शास्त्रका हुक्म, सो शास्त्रसे भी निस्सन्देह यह बात आत्महत्यामें ही दाख़िल है; अख़ीर यह, कि जिन बाज़े क़ौलोंपर आप दलील करते हैं, कि इस तरह जीव देना जाइज़ होवे, जोकि उस दलीलसे भी आत्महत्याकी बात झूठ नहीं है, और शास्त्रके अनुसार भी आत्महत्या के सुबूतकी बाबत् यह मज़्बूत दलील है, कि सती होनेके पीछे नारायणबलि जुरूर करना होता है, और यह बात ऐसी मौतोंपर होती है, कि किसीने बड़ा पाप या आत्महत्या, या कोई दूसरी बात जो ऐसी हत्यासे निस्बत रखती हो, चाहे हरएक मौतके पीछे (नारायण-बलि) होती है, तोभी आत्महत्यामें कुछ शुब्ह नहीं रहा. हर हालतमें ऊपर लिखी-हुई बातोंसे सती बन्द होनेका क़ाइदह पसन्द करनेमें बहुत गुंजाइश है, लेकिन् आपके इस लिखनेपर, कि अपनेतई ख़ैरख़्वाह सर्कारका लिखते हैं, और इस हालतमें अहालियान सर्कारकी इख़्तियार कीहुई नेक राहपर चलना योग्य था, साफ़ ज़ाहिर है, कि इस रस्मके मना करनेका बिल्कुल इरादह नहीं रखते हैं, बल्कि आपकी नज़र उसके ख़िलाफ़ है. अब इस बाबकी इत्तिला वक़् वक़्पर सद्रको होती है, इसमें ख़ासकर तर्जमह सरिश्तह दोस्तदारका सद्रको लिखेगा, वास्ते इत्तिलाके लिखा है, उम्मेद है, कि दोस्तदारकेतई मुन्तज़िर ख़ैरियत मिज़ाज आलीका जानकर लिखने शायक़ लाइक़से ख़ुश फ़र्माते रहें, ज़ियादह ख़ुशी हूजियो, ता० २२ नोवेम्बर सन् १८५९ ई०.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

महाराणाका रुक्का मेजर ईडन साहिबके नाम.

॥ श्रीरामजी.

॥ स्वस्ति श्री मेजर वलीयम फरीडरक ईडन साहेब व्हादुर जोग १ अप्र, साहेब मीरमुनसीने भेज्या, सो आयेने अरज करी, के साहेबने अरज कराई हे, के या दो सती हुई अर हमारेसे ईतला न्ही कराई, अर आप सीरकारकी दोसतीप्र ईतना तो नजर रषते हे, अर अे सती होणा सीरकारकु नापसंद, जीसकु आप रोक नही सकते हे, या बड़ा ताजुबकी बात हे. ईस तावे हम पण मुलाषात करणेकु कोई पण न्ही आवेगे, सो सीरकारकी दोसतीपर, तो अठे पुरी नजर हे, जी दनसु अहेदनामो बंधो जठासु बराबर मदत

षेरषाही दोसतीप्र नजर हे सो आछा मसुर हे, अर साहेब पण आछा जाणे हे; अर फेर म्हे तो श्री जीसु याही अरज करवो करा के सीरकारको अकबाल दनभर दन जादा बदावे जीमे कुसी हा, अर सतीकी ईतला नही हुई जीपर साहेब मुलाषात करवा आवो भी माफ राष्यो, सो काल तो साहेबको आबो हुवो, अर आज पेली पेल मुलाकात कुसीकी ही, जीसु वकील ईतला नही करी, दुजु या बात साहेबसु छपा राषवारी वेती, तो आगे ईतला कु करता. अठे तो साहेबानका षलीता आगे आया जठासु पुरी ताकीद सारे हे; अर वेई जीने बरजाबो वा तंगी करवो वा रोटी ताबे केवो, जतरो केवारो हक जत्रो करे. ई सवाये जबरीसु वेजावे जीका लाचार. तोई अठे सुणवामे आई के जोदपुर तो ई ताबे कलम मनाईकी बंद होगई जठेई जुरमानाकी ठहरी, अर अेक दो जगा हुई जठे जुरमानोई हुवो सुण्यो; भणाये पण दो सती हुई जठे पण जुरमानो हुवो सुण्यो, सो साहेबरी याही मुरजी हे तो, हे तो घणी म्हाका धरमकी बात, पण सीरकारने कुसी राषणा जीताबे अठेई ईका रोकवा ताबे सारे फेर ताकीदको हुकंम पुगावा, अर हर सुरत रोकवा ताबे केण करवामें कोताई रहे नही, ईसवाऐ कोई ऊरङ देर वेजावे, तो वीके वासते जुरमानाकी ठहरजावे, सो आईंदे सती वेवा वालाका घरका वीने कदी वेवा नही दे, कु जरीमानासु पाछला बीगडजावे. ई चालसु रुकती रुकई जावेगा, जीमे मजहबकी बात अर सीरकारका हुकमपर तामील. ओर साहेबरो तो बीलाऐत जाबो, अर अजंट साहेबको आवो जीमे मुलाकात करवाने साहेब न्ही आवेगा, ईमें तो पुरो हतक हे. म्हारे ज्यो सरकारकी दोसती सवाऐ काई बात हे. यो राज तो सरकारकी दोसतीसु सरसबज हुवो. मुलाकात कीया बना साहेब हरगज न्ही जावे, जीमे म्हाने अेन कुसी हे; ओर कत्राक समाचार मुषजबानी राव बषतसीघजी, कोठारी केसरीसीघजीने भेज्या हे, सो ईतला करेगा. यो राज तो साहेब लोगाकी म्हेनतसु सरसबज हुवो, अर फेर ई साहेब जस्या दाना हे, सो अठाकी आछीज करोगा. ओर साहेबकी कुसीकी षबर सासता लषवो करोगा, संवत १९१७ वर्षे काती सुद ८ भोमे.

मेजर विलिअम फ़्रेडेरिक ईडन साहिबका ख़रीतह.

॥ श्रीरामजी १.

॥ स्वस्ति श्री सरब ओपमा बीराजमान लायेक महाराजा धीराज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी बहादुर ऐतान, मेजर वलीयम फरीडरक ईडन साहेब बहादुर लीषतं सलाम

मालुम होवे, अठारा समाचार भला हे, आपरा सदां भला चाहीजे; अपरंच षरीता आपका लीषा हुवा मीती काती सुदी ८ तारीष २० नवंबर सन १८६० ईस्वी बजवाब पेगामे जबानीके मारफत मोलवी मोहोमद मोहीयुदीनषां मीरमुनसीके दरबाब होने २ सतीके आपको कहा था, ईस मजमुनसे आया के दरबारकों हमेसां नजर ऊपर दोसती सरकार दोलतमदार ईंगलसीयाके रहती हे ओर रहेगी, ओर हम तो पेसतरसें बमुजब आने षरीते साबकके सबपर वासते न होने सतीके ताकीद करते हें, ओर दबागतसें ओर लालच देनेसें मना करते हें, तोभी असा ईतफाक होजाता हे. ईसकी तजबीज युं मनासब हे, के सती होनेवालेके घरके लोगोंपर जुरमाना ठेरायाजावे, तो ऊसके घरवाले ईस षोफसें जुरमाने के सती न होने देवें; ओर ईसी तरें रुकते रुकते रुकजावे. ओर भी जो जबानी मजमुन मीरमुनसी मोसुफके ओर बयान मेजर टेलर साहब बहादुर पुलटीकल अजंट मेवाडसें मालुम हुवा, आप फरमाते हें, के हम सब तरेकी तजबीज वासते बंद करने सतीके करते हें. लेकीन में येह पुछता हुं, के जोधपुरमें सती बहोत कम होती हे ओर जेपुरमें मुतलक न्ही होती, ईसका क्या सबब हे के वहांके रईसोंका हुकम रईयतपर जारी होता हे, ओर आपका हुकम जारी नही होता? ओर जरुर हे के हुकम हाकमोंका जारी होवे. लेकीन बहर हाल में आपके ईस नीयेत नेकसें वासते बंद करने सतीके षुस हुवा; ओर ऐकीन हे, के असी तजबीजसे के आप ताकीद भी करें ओर दबागत भी देवें, ओर जुरमाना सतीके घरवालोंपर करें, येह रसम बीलकुल बंद होजायेगा. अगर पेसतरसें मुजकों ईस नीयतसें आपके ईतला होती, तो में जरुर मुलाकात करता, लेकीन में रवाने वलायेतकों होता हुं, ओर मुजकों ऊमेद कामील हे, के ता मराजीयेत मेरे असे रसुम, जीसमें ना रजामंदी सरकार दोलतमदार ईंगलसीयाकी हो, ब सबब आपकी नीयेत नेकके बंद होजायेगी, ओर में मुलाक़ातसें बहोत षुस होऊंगा. ओर मेने येहे हाल आपकी ईस नीयेतका जो मुजकों लीषा ओर कहा, सदरमें रपोट कीया, फकत. ओर आपके मीजाज मुबारककी षुसी हमेसा लीषावसी, तारीष २३ नवंबर सन १८६० ईस्वी, काती सुदी ११ समत १९१७ का.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

मेजर आर॰ एल॰ टेलर साहिबका ख़रीतह.

॥ श्रीरांमजी.

॥ १८० ॥ नंबर.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथांने सरबओपमां बीराजमांन लाअक म्हाराजा धीराज म्हारानाजी श्री सरुपसीघजी साहेब ब्हादुर अेतांन, मेजर राबरट लवीस टेलर साहेब

बहादुर ली॥ सलाम मालुम करावसी. अठाका समाचार भला हे, आपका सदा भला चाहीजे, अपरंच दो कीते तरजुमे चीठी मजरीअे अज पेसगाह जनाब मोओला अलकाब नाअव सीकरतर आजम व नीज साहेब सीकरतर आजम मुमालीक हींदुसथांन, अेक लीषाहुवा १६ माहे फरवरी सन १८६१ ई ॥ व दुसरा लीषाहुवा २७ माहे अपरेल संन सदर, ब ईस्म जनाब जरनेल जारज सैट पात्रक लारनस साहेब बाहादुर अजंट गवरनर जंनरल राजसथांन ब मुकदमे सती व स्माद लफ चीठी अंगरेजी ब मुराद ईनस्दाद हसब मनसाहे मजमुंन मुंदरजे चीठीयात मजकुरे बहर अेक रआस्त मुतालक अजंटी मेवाड़ मोसुल होकर नकल हर दो चीठीआत लफ षरीते षीदमत मुबारीकमे भेजकर तकलीफ दीजाती हे, के मजमुंन मुनदरजे चीठीआत ब ईलाके मेवाड़ मुस्तहर कराअे बंदोबस्त करार वाकई फरमांवे, के हरअेक ईलाकेदार मवाफीक मदारज मुदरजे चीठीआत अमल करे ओर बरषीलाफ ऊसके न कीया करे. ईसका बंदोबस्त कराअे, बंदोबस्त ऊसकेसे ईतला फरमांवे, ओर मीजाज मुबारककी षुसीका स्मांचार हमेसे ली॥ ता॥१ माहे जुन सन १८६१ ईस्वी, मीती जेठ बद ९ स्मत १९१८, मुकांम छावणी नीमच, रोज सनीस्त्रवार.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

हिन्दुस्तानके नाइब सेक्रेटरी आज़मकी अंग्रेज़ी चिट्ठीका तर्जमह.

॥ श्री ॥

नक़्ल मुताबिक़ अस्लके है, दस्तख़त मुहम्मद मुहियुद्दीनख़ां.

(अंग्रेज़ीमें दस्तख़त).
आर० एल० टेलर

मुल्क हिन्दुस्तानके नाइब सेक्रेटरी साहिब बहादुरकी तरफ़से राजपूतानहके साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल बहादुरके नाम ता० २७ एप्रिल सन् १८६१ ई० की लिखीहुई अंग्रेज़ी चिट्ठीका तर्जमह.

मुवाफ़िक़ हुक्म नव्वाब मुस्तताब गवर्नर जेनरल बहादुर इन् कौन्सिल, मुल्क हिन्दुस्तानके बड़े सेक्रेटरी साहिबके ता० १६ फ़ेब्रुअरी सन् १८६१ ई० के लिखेहुए काग़ज़ नम्बरी २० की नक़्ल, जो उन्होंने इलाक़ह राजपूतानहमें औरतको

जीतीहुई जलादेने और गाड़देनेके विषयमें भेजा, आपकी सूचनाके लिये इस चिट्ठीके साथ भेजता हूं, कि आप रईसोंको, ख़ासकर वालिये उदयपुरको इस विषयमें सर्कार मलिकह मुअज़्ज़महके मन्शासे वाक़िफ़ करदोगे, और आप खुद इस मुआमलहमें पूरी कोशिश करोगे, कि उक्त रईस लोग ऐसी बेरहम रस्मोंके बन्द करनेका अपने अपने .इलाक़हमें पूरा प्रबन्ध करें- फ़क़त.

तर्जमह चिट्ठी नम्बरी २० लिखी हुई ता० १६ फ़ेब्रुअरी सन् १८६१ ई०, मक़ाम लन्दन, बनाम नव्वाब मुस्तताब गवर्नर जेनरल बहादुर अधिकारी मुल्क हिन्दुस्तान.

जनाबि आली, मैंने साहिब कौन्सिलकी शामिलातसे इलाक़ह राजपूतानहमें विधवा स्त्रियोंको जीती जलादेने और गाड़देनेके विषयकी मिस्लें देखीं. सर्कार मलिकह मुअज़्ज़महको सती और समाधिकी हक़ीक़त दर्याफ़्त होनेसे, जो अक्सर हिन्दुस्तानी रईसोंके इलाक़हमें हुआ करती है, बड़ा अफ़्सोस हुआ; बल्कि जो वारिदात सती की इलाक़ह अलवरमें हुई, गुमान होता है, कि वह सती अपनी रज़ामन्दी और खुशीसे नहीं हुई. उक्त स्त्रीको उसका मृत ख़ाविन्द दिलसे नहीं चाहता था, बल्कि वह कई वर्षसे अपने ख़ाविन्दसे अलग रहती थी. इससे यह शुब्ह मज्बूत होता है, कि बेचारीको मरवाडाला; इस सबबसे कि ऐसा न हो, उसके हक़को दूसरी विधवा औरतोंके हक़में दख़्ल हो. ऐसे मुआमलह और इरादहके क़त्लमें तमीज़ और तफ़्रीक़ करना मुश्किल है; और आपको हिन्दुस्तानी रईसोंसे बड़ी ताकीदके साथ कहना चाहिये, कि ऐसे मुक़द्दमोंमें वे मुज्रिमोंको सख़्त सज़ा और जुर्मका दण्ड दिया करें. मैं अरसहसे दिली तअल्लुक़के साथ लेफ़्टिनेण्ट इम्पी साहिब बहादुरकी रिपोर्टके आनेका इन्तिज़ार देख-रहा हूं, यह दर्याफ़्त करनेकी ग़रज़से, कि उन्होंने ऐसे संगीन मुआमलहमें क्या क्या प्रबन्ध और क्या तज्वीज़ें कीं ? .इलाक़ह मारवाड़में सती होनेकी बाबत् मेजर ईडन साहिब बहादुरकी तज्वीज़ें और प्रबन्ध मुनासिब मालूम होते हैं. मेजर ब्रूक साहिब बहादुर तर्जमह करके लिखते हैं, कि महाराजा साहिबने मुज्रिमोंसे रु० १३२००) तेरह हज़ार दो सौ रुपयेकी तादादसे जुर्मानह लेना तज्वीज़ फ़र्माया, यह बहुत ज़ियादह था; बल्कि उस जायदादको, जिसपर जुर्मानह हुआ, नुक्सान भी पहुंचा हो. प्रगट हो, कि अब-तक ऐसे जुर्मोंमें सर्कार अंग्रेज़ीने रईसोंके हाथसे मुज्रिमोंको पूरी सज़ा नहीं दिलाई है. यक़ीन है, कि हालके मुक़द्दमहमें महाराजा साहिबने अपने अन्दाज़ और रायमें जितना जुर्मानह वाजिब और इन्साफ़के रू के मुवाफ़िक़ समझा हो, तो साहिब पोलिटिकल एजेण्टको

कुछ इतना ज़रूर और लाज़िम नहीं है, कि वह सतीके मुक़द्दमहमें ज़ियादह सज़ा देनेकी रोक टोक करें. जोकि सर हेन्री लॉरेन्स साहिब बहादुरने राजपूतानहमें सतियोंकी बाबत अपनी ता० ५ फ़ेब्रुअरी सन् १८५७ ई० की लिखीहुई रिपोर्टमें लिखा था, कि उदयपुरके महाराणा साहिबने सतीके रोकनेसे इन्कार किया, और हिन्दुस्तानभरमें सिर्फ़ एक राणा साहिब हीके इलाक़हमें ज़रा भी रोक या मनादी सती होने, अथवा समाधि लेनेकी नहीं हुई. मैं अभिलाषा रखता हूं, कि आप मुझको इत्तिला दोगे, कि आपने क्या क्या फ़िक्र और तद्बीर इस बातमें महाराणा साहिबके इन्कारको छुड़ाने या दूर करनेमें की. सर्कार मलिकह मुअज़्ज़महकी रायमें यही है, कि ऐसी वह्शी (असभ्य) और ज़ालिमानह रस्मोंके बन्द करनेकी ग़रज़से आप और आपके कुल अफ़्सर राजपूतानहमें पूरी कोशिश करें; और यह भी फ़र्माती हैं, कि सुननेमें आता है, कि हिन्दुस्तानके रईसोंमेंसे कई एकने मलिकह मुअज़्ज़महके इश्तिहारके मज़्मूनको ऐसा समझा है, कि जोकि उसमें सती और समाधिका ज़िक्र नहीं है, इसलिये ऐसी रस्मोंकी मन्ज़ूरी है. ऐसा अर्थ बिल्कुल उक्त इश्तिहारकी इबारत और मज़्मूनके बर्ख़िलाफ़ है, यह बात रईसोंको अच्छी तरह समझाईजावे.

दस्तख़त चार्ल्स वुड,
प्रधान सेक्रेटरी मुल्क हिन्दुस्तान.

महाराणाके इश्तिहारकी नक्ल.

॥ श्रीरामजी.

नकल.

॥ सीधश्री म्हाराज धीराज म्हाराणाजी श्री सरुपसीघजीकी हजुरसे हुकम हीस्ताहार जारी कीयोजावे हे; अप्रंच आगे रेजीदंट साहेब बहादृर वा अजंट साहेब बहादृरका लीष्या माफक स्ती समादका मुकदमामे हुकम जारी हुवो हो, के कोही स्ती होवा पावे न्ही ओर स्माद लेवे न्ही, वीका घरवाला तथा दुजा रोके, सरबता होवा देवे नही, ही सीवाऐ कोही जगा रोकबो बरजबो न्ही होवेगा, सो तो सारा जाणे हो. अब

हीताबे फेर साहेब बहादुरकी पुरी ताकीद आई हे, जीसु दुबारे हुकम लीप्यो जावे हे, सो स्ती समाद होताने कोई न्ही बरजेगा, वा न्ही रोकेगा, अर वेजावेगा, तो वीरा घरवालाके जरीमानो होवेगा, सं० १९१८ साउण वुदी १.

विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] से विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] तकके जो कागज़ात हमको मिले हैं उनकी नक़्लें इस वास्ते दीगई हैं, कि सती होनेका एक बड़ा रवाज बन्द करनेमें कैसी कैसी कोशिशें कीगई, और महाराणाने मज़्हबी ख़याल और बाशिन्दगान मुल्ककी शिकायतसे बचनेके लिये कैसे कैसे उज़्र पेश करके इस रस्मको अपने अख़ीर वक्ततक जारी रक्खा. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने खुद अपनी आंखोंसे कई औरतोंको सती होते देखा है, जो बड़ी बहादुरीके साथ अपने पतियोंके संग चितामें जलती थीं. वर्तमान समयके लोग यह ख़याल न करें, कि उनको कोई नशेकी चीज़ देकर, या जब्रन, या वर्ग़लाकर जलादेते थे, जैसाकि यूरोपिअन लोगोंका ख़याल है. मेरे ख़यालका सुबूत इस तौरपर होसक्ता है, कि अव्वल तो सब औरतें सती नहीं होती थीं, उनकी तादाद सौ में सिर्फ़ दो या इससे भी कम पाईजाती है, अगर लोगोंकी कोशिशसे यह काम कियाजाता, तो कुल औरतें सती होतीं. दूसरे, सती होनेवाली स्त्रीको जलजानेके बाद देवता ख़याल करके लोग पूजते हैं, और अकस्मात् किसी कारणसे जल मरनेवालीको नहीं पूजते. क़दीम ज़मानहके लोगोंका यह ख़याल है, कि सती होनेवाली स्त्री अपनी खुशी और ईश्वरकी इजाज़तसे जलकर अपने पतिके साथ स्वर्गमें वास करती है, और दूसरे कारणसे जल मरनेवाली वहां नहीं जासक्ती. मैंने अपनी आंखसे देखा है, कि विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] में उदयपुरमें ज़नानी ड्योढ़ीकी एक दासी, जिसका पति ११ वर्ष पहिले मरगया था, एक दिन दोपहरके वक्त सोतीहुई अचानक उठ खड़ी हुई, और कहा, कि मेरे जलानेकी तय्यारी करो, मेरे पतिने मुझे जल्दी बुलाया है. इसपर उसके पड़ोसियों वग़ैरहने एकट्ठा होकर उसे मना किया, और कहा कि तुझको स्वप्न आया है. तब उसने अपने सती होनेके सुबूतमें आगके दहकते हुए अंगारेको दोनों हाथोंमें लेकर लोगोंके सामने मलडाला, और कहा, कि मुझको किसी तरहकी जलन या तक्लीफ़ मालूम नहीं होती. इसके बाद महाराणाकी तरफ़से कुछ बन्दोबस्त होकर वह औरत जलादीगई. इस विषयमें मेरा ख़याल ऐसा है, कि औरतको अपने पतिकी मुहब्बतमें जब बहादुरानह जुनून होजाता है, तो वह अपने बदनकी तक्लीफ़को पतिकी जुदाईके मुक़ाबलहमें कुछ भी ख़याल नहीं करती; वर्नह यह एक आम रवाज था, कि सती होनेवाली स्त्री के रिश्तहदार व सर्कारी मुलाज़िम वग़ैरह कुल लोग उसे

समझायशके तरीक़हसे मना करनेमें किसी तरहकी कमी नहीं करते थे; और यह भी रवाज था, कि यदि कोई औरत मना करनेपर भी हुज्जत करके चितामें बैठनेके बाद आगके सद्मेसे उठ भागती, तो लोग उसे तलवारोंसे मारकर उसी चितामें जलादेते थे; लेकिन् ऐसा मौक़ा बहुतही कम, याने हज़ारमें एक या दो जगह सुनागया है. चाहे कुछ ही हो, मुहब्बतकी हालतमें वे औरतें जिस बहादुरीके साथ जलती थीं, उसको युद्धके समयकी बहादुरीसे भी बढ़कर समझना चाहिये.

एक बड़ा भारी जुर्म, जो इस मुल्कसे गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी बदौलत दूर हुआ, और जिसको मैं शुक्रियहके साथ लिखताहूं, यह था, कि लोग औरतोंपर डाकिनकी तुहमत लगाकर उन बेचारियोंको झड़बेरीके कांटोंमें आग लगाकर जलादेते, या उसका सिर काट डालते, या किसी दरख़्तसे उलटी लटकाकर मिरचकी धूनीसे मारडालते थे, और उनको कोई नहीं पूछता, बल्कि उन मारनेवालोंका लोग शुक्रियह अदा करते थे, कि तुमने बहुत अच्छा किया, हज़ारों आदमियोंकी तक्लीफ़ मिटादी. जिस औरतपर डाकिनकी तुहमत लगाई जाती, और वह राज्यमें पेश होनेके वक्त मार पीट या किसी दूसरी तक्लीफ़के सबब डाकिन होना कुबूल करलेती, तो उसको राज्यसे भी वही सज़ा होती, जो ऊपर लिखीगई है; और अगर किसी मज़्हबी पेश्वा या ज़नानख़ानहकी तरफ़से सिफ़ारिश होनेपर उसकी जान बख़्शदीजाती, तो उसके सिरके बाल दो चार जगहसे मुंडवायेजाते और गधेपर चढ़वाकर बाज़ारों व गलियोंमें घुमानेके बाद देशके बाहिर निकाल दीजाती थी; और वह उज़्र करती, कि मैं डाकिन नहीं हूं, तो परीक्षाके लिये गोणके एक बोरेमें उसे मज़्बूत कसकर दूसरे बोरेमें ढाई कंडे रखदेते और तालाबके अन्दर गहरे पानीमें डालदेते थे; यदि खुशक़िस्मतीसे वह औरत कंडोंके पलड़ेसे पहिले डूबजाती, तो फ़ौरन् उसको निकाल लाते. इस हालतमें उसे सच्ची ख़याल करके राज्यकी तरफ़से साड़ी (ओढ़नी) वग़ैरह दिलानेके बाद उसके घर भेजदेते; और अगर हवाके भरजाने और दमके खींचनेसे वज़न बराबर होकर तैरने लगती और कंडे डूबजाते, तो उसे डाकिन ख़याल करके पानीसे बाहिर निकालनेके बाद ऊपर लिखीहुई सज़ा दीजाती. यह ज़ालिमानह रवाज मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपनी आंखसे देखाहुआ लिखा है, और गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने इसको बन्द किया. अगर्चि अबतक हज़ारों आदमियोंके दिलोंमें औरतोंके डाकिन होनेका ख़याल जमाहुआ है, लेकिन् रफ़्तह रफ़्तह कम होता जाता है. मैंने इस बारेमें लोगोंकी तसल्लीके लिये बहुत कुछ कोशिश की, और कहा, कि मुझे कोई शख़्स डाकिन बतलावे उसको ५००) पांच सौ रुपया देऊं. बहुतसी औरतें ऐसी भी हैं, जो बेशर्मी इख़्तियार करके डाकिन होना

मशहूर करदेती हैं, इस ग़रज़से कि वे जिसके घर जावें, वहांसे कपड़ा, ज़ेवर, खाना, अनाज वग़ैरह धमकाकर लेआवें, और अपना गुज़ारह करें. इसी क़िस्मकी औरतोंमेंसे एक बैरागिन वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंह साहिबके सामने फ़र्यादी आई, जिसको महता गोकुलचन्दके कथाभट्टने पीटा था. उक्त महता उस औरत से ऐसा डरता था, कि उसने महाराणासे पोशीदह अ़र्ज़ की, कि यह डाकिन है, हुज़ूर इसको तसल्ली देकर निकाल देवें. उसवक़ मैं वहां खड़ाहुआ था, मुझे यह सुनकर बहुत हंसी आई, और महाराणा भी मुसकुराये; तब गोकुलचन्दने उस औरतको इम्तिहानके लिये मेरे मकानपर भेजी, मेरे पड़ोसियोंकी औरतें उसके डरसे घर छोड़ छोड़कर भागगईं; मैंने जैसाकि चाहिये, लोगोंकी तसल्लीके लिये उसका इम्तिहान किया, लेकिन् कुछ सचावट न पाईगई, आख़िरकार वह मक्कार औरत शहरसे निकलकर चलीगई. यह रवाज भी महाराणा स्वरूपसिंहके समयसेही बन्द हुआ.

इन महाराणाने विक्रमी १९०६ [हि० १२६५ = ई० १८४९] में रुपयेका एक नया सिक्का (स्वरूपशाही), जिसके एक तरफ़ " चित्रकोट उदयपुर " और दूसरी ओर " दोस्ति लन्दन " लिखा है, जारी किया, जो मेवाड़ राज्यके प्राचीन उदयपुरी सिक्केसे क़ीमतमें एक आना ज़ियादह अर्थात् सत्तरह आनेका है, और हालमें ज़ियादहतर यही सिक्का प्रचलित है. इस सिक्केके मुतअ़ल्लिक़ जो चन्द काग़ज़ मिले वे नीचे दर्ज कियेजाते हैं:-

कर्नेल् टॉमस रॉबिन्सनका काग़ज़
महता शेरसिंहके नाम.

॥ श्रीरामजी ॥

२११ नंबर.

॥ सिध श्री छावणी मीमच सुभसुथाने सरब उपमा जोग्य मेहताजी श्री सेरसिंघजी जोग्य राज्ये श्री करनेल तामीस रावीनसन साहेब बहादुर ली॥ सलाम वंचसी, ईठारा समाचार भला हे राजरा सदा भला चाहीये अपरंच ॥ कागद भादु वदी ५ का लिषा आया जीमे लिषा, के श्री दरबारका हुकम मेरे नाम इस मजमूनका आया हे. ईन दिनो मेवाड चलणका रुपीयामे फरेब दगाबाजी षार वतीकर षोटा रुपीया बणा चलाणेसे

साहुकार, ब्योपारी वगेरेका बडा नुकसान नजर आया, और आगे पण कपतान जमस टाड साहब बहादुरने असे ही सबबोसे भीमसाही रुपीया राजासाही रुपीयेकी बराबर चलाणेकी सलाह दी थी; अब श्री दरबारसे लोगोके नुकसान तकरार वगेरेपर षयाल हो, सीरे चांदी डलवा अपणे नामका हिंदवी सिकाका रुपीया राजकी टकसालमे पडवा चलाणा मनजुर हे, ए सरवे स्माचार वांच वाकिफ हुवे. जोके श्री महाराणाजी साहेब कुं अपणे मुलकके बंदोबसत और बेहतरीमे पूरा ईषतियार हे, और ए तजवीज ऊपरकी लिषी विचारी सो बहोत दुरसत और मुनासीब हो जारी होणेमे आपणे राजका फायदा, रेयतकी वहत्री, श्री दरबारका नामवरी होगा. चाहीये श्री दरबारकी तजवीज माफिक ठेटसे षार पडे उस्मुजीब और सीरे चांदी डलवा महाराणाजी श्री सरुप-सिंघजीके नामका हिंदी सिका राजकी टकसालमे पडवा जारी करे. अछा रुपीयाका चलण होणेसे ए षबर हमारी सीरकारमे पोहचणेसे सीरकार दोलतमदारकी षुसी, श्री द्रबारका फायदा, नामवरी, रेयतकी बहत्री जाहर होगी. जिस बषत नये सीकाका रुपीया तयार हो एक दो रुपीया हमारे देषणे वासते भेजायदेसी, और काम काज हमेसे लीषावसी, स्मत १९०६ का भादु वदी १० तारीष १३ अगसत सन् १८४९ ईसवी.

महाराणाके नाम कर्नेल टॉमस
रॉबिन्सनका खरीतह.

॥ श्रीरामजी ॥

२३६ नंबर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब उपमा व्राजमान लायक महाराज धाज महाराणाजी श्री सरुपसीघजी साहेब बहादुर एतान करनेल तामीस रावीनसन साहेब बहादुर ली ॥ सलाम वंचाव मालुम करावसी. इठाके स्माचार भले हे, आपके सदा भले चाहीये अपरंच ॥ षरीता आपका आसोज विद १२ का लिषा आया, समा-चार वांच वाकिफ हुवा; आपने रुपीया २) नया सिकाके मेरे देषणे वास्ते भेजा, सो मेने उसकुं देषकर राजी और षुस हुवा, और नया पुराणा सिका एषटा कर देषा, तो बहुत

बहतर षुबसुरत पुराणेसे दिषाई दिया, ओर राजासाहीकी बराबर चलण होणेमे जो कबाहत व नुकसान आपकुं सबब तकरार रैयत वयोपारी मुलकके नजर आया, सो ठीक; आप अपणे मुलकके मालिक हो, मुलकी आबादी व रजामंदीके षयाल रषणेमे हर-तरे फायदा, नामवरी हे, सो आपकी तजवीज माफिक ८ मासा चांदी २ मासे षार माफिक कदीम कुछ तकरारकी जघे रैयत व्योपारीकी होगी नही, ओर आपने दोसती लंदन सीकामे लिषवाई सो नये सिकेमे षुदणेसे दीलकी मोहबत जाहर हुई. ईकीन हे श्री सीरकार दोलतमदार भी इस बातकुं षयाल फरमावेगी, ओर आपकी तजवीजपर षुस होगी, ओर ए नये सिकेका रुपीया इस्मुलकके दुसरे सिकोसे बहोत बेहतर व षुबसुरत नजर आता हे, ने आपणी षुसी दील व रजामंदीसे वणवा दोसती लंदन षुदवाई, सो काविल इसके हे हमेसे कायम ओर जारी रहे. ओर मीजाज मुबारीक की षुसीके समाचार हमेसे लीषावसी, संमत १९०६ का कातीक वदी ३, तारीष ४ अकटुबर सन् १८४९ ईसवी.

कर्नेल टॉमस रॉबिन्सनका काग़ज़ महता शेरसिंहके नाम.

॥ श्रीरामजी ॥

२३९ नंबर.

॥ सिधश्री उदेपुर सुभसुथाने सरब उपमा जोग्य महताजी श्री सेरसींगजी जोग्य राजे श्री करनेल तामीस रावीनसन साहेब बहादुर ली ॥ सलाम वंचसी. ईठारा स्माचार भला हे, राजरा सदा भला चाहीये अपरंच॥ कागद राज आसोज विद ऽऽ का लिषा आया, समाचार वांच वाकीफ हुवा. श्री दरबारका षरीता, रुपीया २, नया सिका रा भेजा, सो रुपीयाके देषणेसे हमे षुसी हुई. नया सीका षुबसुरत अछा वणा, श्री महाराणा साहे (ब) मालीक अपणे मुलकका अषतियार रषते हे, तजवीज कीया मुनासीब मालुम हुवा जो बहतर हे. षरीतेका जबाब लिष भेजा हे, सो गुजरान कागद समाचार हमेसे लिषसी, सं० १९०६ कातीक वदी ३, तारीष ४ अकटुबर सन् १८४९ ईसवी.

गद्दीनशीनीके बादसे महाराणाके पैरमें बादीका दर्द शुरू होकर रफ्तह रफ्तह यहांतक बढ़ा, कि विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] के बाद तो वे पैदल चलने व घोड़ेपर सवार होनेसे मज्बूर होगये, और कुछ दिनों पीछे उनके लिये सिर्फ़ तामजामकी सवारीही रहगई. इस दर्दसे उनके दोनों पैरोंका मांस सूखकर ख़ाली हड्डियां बाक़ी रहगई थीं. पुराने ख़यालातके सबब अंग्रेज़ी डॉक्टरोंका इलाज जैसाकि चाहिये न हुआ, सिर्फ़ हिन्दू व मुसल्मान वैद्योंकी सलाहसे इलाज होता रहा, कभी कभी गांवोंके जाहिल लोगोंके इलाज मुआलजोंपर भी अमल होता था, और ज़ियादहतर देवताओंकी मानता और ज्योतिषियोंकी भविष्य वाणीपर भरोसा था; लेकिन् इतनी तक्लीफ़ और बीमारीमें भी उन्होंने अपने साहसको कभी नहीं छोड़ा. विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] में जब सर्दारोंका बखेड़ा ज़ियादह बढ़ा और बीमारीने भी अपना आख़री हमलह शुरू किया, तब उनको अपने कोई औलाद न होनेके सबब यह विचार पैदा हुआ, कि वलीअह्द किसको बनाया जावे, और बागोर के महाराज शेरसिंह व शिवरतीके महाराज दलसिंहके पुत्रोंके जन्मपत्र मंगवाकर दिखलाये. इनमेंसे शेरसिंहके पोते और शार्दूलसिंहके बेटे बागोरके महाराज शम्भुसिंह को, जिसकी निस्बत पेश्तर महाराणाने गद्दीके हक़से ख़ारिज किये जानेका हुक्म देदिया था, उसकी हक़दारी और लियाक़त देखकर पीछेको बखेड़ा न उठनेकी ग़रज़से विक्रमी १९१८ आश्विन शुक्ल १० [हि० १२७८ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को वलीअह्दकी बैठकपर बिठाया, और तमाम उमराव व सर्दारोंको, जो उसवक़ मौजूद थे, दस्तूरके मुवाफ़िक़ वलीअह्दको नज़ानह करनेका हुक्म दिया. इसपर कुरावड़का रावत् ईश्वरीसिंह बोला, कि जबतक सलूंबरका रावत् केसरीसिंह मन्ज़ूर न करे, तबतक शम्भुसिंह वलीअह्द न माने जासकेंगे. तब बेदलाके राव बख्तसिंहको बुलाकर महाराणाने फ़र्माया, कि तुम्हारी इस मुआमलहमें क्या राय है? ऐसा नहो, कि मेरे इन्तिक़ालके बाद रियासतमें बखेड़ा पैदा होजावे. बख्तसिंहने जवाब दिया, कि हुज़ूर इत्मीनान रक्खें, शम्भुसिंह तो हक़दार है, अगर ग़ैर हक़दारको भी हुज़ूर अपने हाथसे वलीअह्द बना देंगे, तो वही मेवाड़पर राज्य करेगा. यह कहकर राव बख्तसिंहने युवराज शम्भुसिंहको दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़ानह करदिया, इसी तरह आसींदके रावत् खुमाणसिंहने भी महाराणाकी तसल्लीके मुवाफ़िक़ अर्ज़ करके वलीअह्दको नज़ दिखलाई, और प्रधान कोठारी केसरीसिंह वग़ैरह अहलकारोंने भी मज़बूतीके साथ नज़ें दिखलाईं. जब महाराणाको इस बातकी पूरी पूरी तसल्ली होगई, तब उन्होंने वलीअह्दको, जो हिदायतें करनी मुनासिब समझीं, अच्छी-

तरह करके चुनेहुए ख़ैरख़्वाह और वृद्ध आदमियोंको उनके पास रहनेके लिये मुक़र्रर कर-दिया. इसके बाद मज़्हबी अक़ीदहके मुवाफ़िक़ दूसरी दुन्याका रास्तह साफ़ करनेकी कोशिश होने लगी, अर्थात् हज़ारों रुपये और अश्रफ़ियां ब्राह्मणोंको ख़ैरातमें बटने लगीं. लेकिन् उस तक्लीफ़की हालतमें भी रियासती कारोबारकी अ़र्ज़ होनेपर बराबर जवाब देते रहे. उन्होंने गोवर्द्धनविलासका रहना इसी ग़रज़से इख़्तियार किया था, कि गायोंकी सेवामें मेरी ज़िन्दगी पूरी हो; और वहां हमेशह गायों व ब्राह्मणोंको अच्छा अच्छा खाना खिलवाया जाता था. इस बीमारीकी अख़ीर तरक़ीका हाल इस तरहपर है, कि विक्रमी १९१८ ज्येष्ठ [हि० १२७७ ज़िल्क़ाद = ई० जून] में घुटनेके नीचे एक छोटासा फोड़ा चाठेके मुवाफ़िक़ उठा, जो वैद्योंको बतलाया गया, और मुल्ला अश्रफ़-अ़लीकी रायसे उसपर तेज़ाबकी पट्टी लगाई गई; लेकिन् उस पट्टीके लगाते ही ऐसी सख़्त जलन पैदा हुई, कि उसके दर्दसे बुख़ार शुरू होगया. तब महाराणाने वैद्योंको एकत्र करके सब हाल कहा, उन लोगोंने पट्टी उतारडालना मुनासिब समभकर अपनी राय और महाराणाके हुक्मसे धीरे धीरे पट्टी उतारडाली. रातको जब महाराणा नींदमें सोगये, तो उस फोड़ेसे डेढ़पावके अनुमान पीब निकली, जिसमें दहीके समान जमा हुआ कुछ सिफ़ेद मवाद था. दूसरे दिन बिछौनेमें पीबके देखते ही महाराणाको सन्देह हुआ, और वह उदयपुरको छोड़कर गोवर्द्धनविलासमें चलेगये, परन्तु रोग दिनोदिन बढ़ता ही रहा.

विक्रमी श्रावण [हि० १२७८ मुहर्रम = ई० ऑगस्ट] में घुटनेके ऊपर दो फोड़े और उठे और दो तीन नासूर भी पिंडलीमें होकर बहने लगे, जिससे ऐसी ना ताक़ती होगई, कि कर्वट तक स्वयं न बदल सक्ते थे. इस हालतमें वैद्योंसे आयुष्य का निश्चय कराया, तो नागर वैद्यने इसी रोगसे विक्रमी कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ता० १४ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १७ नोवेम्बर] या विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ४ [हि० ता० १८ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २१ नोवेम्बर] को मृत्यु होना निश्चय किया; और बीमारीके हालात लिखकर आगरेके डॉक्टरसे दर्याफ़्त करायागया, तो वहांसे भी आयु बीतजानेकी ही ख़बर आई. इसपर वे सावधानीके साथ अपना मृत्यु सुधारनेकी तय्यारी कराने लगे; गंगाजल, भस्म, रुद्राक्ष आदि सामग्री एकत्र कराकर विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० ११ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १४ नोवेम्बर] के दिन गौशालामें पधारगये, और वहां तीन रात्रितक बड़ी सावधानीसे अजपा मंत्रका ध्यान करके विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १३ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १६ नोवेम्बर] की रात्रिको पहरपर दो घड़ी व्यतीत हुए पूर्णिमामें परलोकको प्राप्त हुए.

गोशालामें पधारनेके समयसे मृत्यु पर्यन्त रामायणका पाठ होता रहा. इन्तिकालके समय काका दलसिंह, बेदलाका राव बख़्तसिंह और देलवाड़ाका राज फ़तहसिंह वगैरह सर्दार मौजूद थे, उनको आख़री रुख़्सतका पान बीड़ा दिया. इन महाराणाके होश हवास आख़री दमतक दुरुस्त रहे और अपनी अन्तिम क्रियाके लिये सब तरहकी इजाज़त देते रहे. इस समय महाराणाके चारों तरफ़ गायें खड़ी थीं, और गोबर, गोमुत्र व गंगाजल उनके बदनपर खूब मला गया, इसके बाद गंगाजलसे स्नान कराकर कुशके आसनपर विराजनेके पीछे प्राणत्याग हुआ.

इन महाराणाका मज़्हबी अक़ीदह जैसा शुरूसे था उसीके मुवाफ़िक़ आख़री समयतक साबित रहा. देहान्तके समयका यह कुल हाल मैं (कविराजा श्यामलदास) ने पुरोहित पद्मनाथकी ज़बानी सुना हुआ लिखा है, जो उसवक़्त महाराणाके पास मौजूद था.

इन महाराणाका जन्म विक्रमी १८७१ पौष कृष्ण १३ [हि० १२३० ता० २६ मुहर्रम = ई० १८१५ ता० ८ जैन्युअरी] को हुआ था. इनका क़द मभले से कुछ ऊंचा; रंग गेहुवां; न मोटा न दुबला शरीर; डाढ़ी मूंछ सुडौल और अन्दाज़के मुवाफ़िक़; लम्बी और चौड़ी पेशानी; बड़ी आंखें; नोकीली और पतली नाक; और ख़ूबसूरत व पतले होंठ थे. चिह्रा ऐसा रोबदार था, कि इनके सामने किसी आदमीको बेधड़क बात करनेकी जुर्अत न होती थी. ख़यालात इनके पुराने और मिज़ाज शाहाना था; अक़्लमन्दी, चतुराई और दिलेरीमें पूरे थे; ख़ैरख़्वाह व बदख़्वाह और भले तथा बुरे आदमीकी पहिचान व क़द्र करने वाले, और दिलसे इन्साफ़ पसन्द थे. इसके सिवा अपने पुराने ख़ानदान और पुरुषोंका अभिमान रखने वाले, मज़्हबी अक़ीदेपर मज़्बूत, और ख़ैरात वगैरह मज़्हबी कामोंमें उदार, और रियासती प्रबन्धोंमें किफ़ायत शिआर थे. इसके अलावह कुछ उनमें अवगुण भी थे. अव्वल यह, कि रियासती प्रबन्ध और ख़ज़ानह एकट्ठा करनेके लिये लालच अधिक करते थे, दूसरे हसद याने ईर्षा भी बहुत थी, जिस किसी पर नाराज़ होजाते उसके ऐबोंको ज़ाहिर करनेमें कोताही नहीं करते थे. लालच और हसदके सबब उनसे अक्सर बेइन्साफ़ी भी होजाती थी, और कठोर दिल होनेसे दया भी कम थी. इन्हीं ऊपर लिखी हुई आदतोंके कारण आम लोग उनसे नाराज़ थे. लेकिन् मेरी रायमें उनकी नेक आदतोंके मुक़ाबिल ऐब ज़ियादह न थे. चाहे कुछ ही हो, लेकिन् इस रियासतका कुल इन्तिज़ाम, जमा ख़र्च और कारख़ानोंका बन्दोबस्त पहिले ऐसा बिगड़ा हुआ था, कि जिसको सुधारना इन्हीं

महाराणाका काम था; इन्होंने मानो इस वृद्ध राज्यको जवान बनादिया. यदि इनमें लालच, हसद, और कठोरता अधिक न होती, तो महाराणा सांगा, जगत्सिंह अव्वल, संग्रामसिंह, और जवानसिंहके समान लोग इनको भी दीर्घ काल तक देवताके बराबर मानकर याद रखते. महाराणा स्वरूपसिंहकी कार्रवाइयोंको देखकर पिछले राजा लोगोंको नसीहत होगी, कि उनको राज्याधिकार पाकर रियासत का प्रबन्ध किस प्रकार करना चाहिये; अल्बत्तह मज़्हबी ईर्षा और पुराने ख़यालात उनके इस ज़मानहके मुवाफ़िक़ न थे, जिसका सबब यह था, कि उनको शुरू जवानीमें कम .इल्म और पुराने ढंगके आदमियोंकी सुहबत रही, वर्नह यदि जैसे वह अक्लमन्द थे वैसाही उनको .इल्म और सत्संग मिलता, तो यक़ीन है, कि हिन्दुस्तानभरमें राजाओंके लिये मिसाल देनेके वास्ते वे बेनज़ीर ठहर सक्ते थे. इनके ४ चार महाराणियां थीं:- अव्वल राघवगढ़की राठौड़ महाराणी गुलाबकुंवर बाई, दूसरी बरसोड़ाकी चावड़ी महाराणी फूलकुंवर बाई, तीसरी बीसलपुरकी भटियाणी चांदकुंवर-बाई, और चौथी घाणेरावकी मेड़तणी महाराणी अभयकुंवर बाई. इनके सिवा एक ख़वास ऐजनकुंवर उनकी पूरी कृपापात्र थी, और वही अकेली महाराणाके साथ सती हुई. इन महाराणाके कोई औरस औलाद न थी.

महाराणा स्वरूपसिंहने अपनी मौजूदगीमें जो कुछ दान पुण्य किये, उसके अलावह उनके देहान्तके पीछे क्रिया और दान दक्षिणा आदिमें ४७५०००) रुपया और ख़र्च हुआ.

१- कैलासपुरीमें नंदिकेश्वरके पास वाली सुरह.

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादातु ॥ ॥ श्रीगणेशजी प्रसादातु ॥

॥ स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री सरूपसिंहजी आदेशातु प्रतदुवे श्री मुष. आगेशु सीसोद्या मात्रके दारुअरक पीवाकी छांट ही अर महाराणां जी श्री छोटा अमरसिंहजी अरोग्या जठा पाछे साराही पीदो, सो अणी पीवा महें सारी तरे कुफ़ायदोहीज हुवो, अर धर्मशास्त्रकी रीतसु बी दारु पीवाको महा दोस दीष्यो, सो अबार संवत १९०२ का कातीक शुद ९ सने श्री कैलासपुरी पधार दारु, अरक, मद परो छोड्यो, जीको संकल्प श्री परमेसुराका चरणांरविंदा कीधो, सो अबे सीसोद्या मात्र चोवीसही साष महें दारु पीवेगा जणीने श्री जीरी आण हे, चीतोड मार्‌याको पाप, कोटान कोट गऊ मार्‌याकी हत्या लागेगा. महारा वंस मेहें वेर दारु अरक पीवो विचारे वा दुजा पीवा वाला सीसोद्याने सज्या नही देवे जीने उपरका लष्या प्रमाणे सोगंद हे, श्री जीरो अंजल षावे वा हुकम माने जीने.

२- चित्तौड़गढ़पर पाडणपोलमें घुसते हुए बाईं तरफ़ वाली सुरह (१).

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादातु ॥ ॥ श्रीगणेशजी प्रसादातु ॥

स्वस्ति श्री महाराजा धिराज महाराणा श्री सरुपसिंहजी आदेशातु, हरामषोर शार्दूलसिंह सेरसिंहोत, वा हरामषोर महता रामसिंह रषबदासोत नीबहडामें हरामषोरो विचारकर करतूत अनुष्टान करायो तथा जहर देणेकी तजबीज करी,

(१) इसी मज़्मूनकी सुरह महाराणा स्वरूपसिंहने कैलासपुरी तथा उदयपुरमें राज्य महलोंके बड़ीपोल दर्वाज़ह बाहिर भी रोपाई थी, जिसका हवाला एष्ठ १९२८ में दियागया है.

सो श्री जीका प्रतापसुं सारी चोडे आई गई. आगे ई राजमें ऐसी तरेकी कदी नही हुई, अर कोई विचारी जीने जीवरी सज्या मली, सो एई सज्या लायक हा, परंत मे आगी काडी; हरामषोर सादुलसिंघने तो वंदोबस्तकी जगामें जन्मकेद राष्यो सो फेर कदीभी केदसु छुटवा पावेगा नही, और हरामषोर रामसिंहने मनष कबीला बेटा सुदा देस भदर कीदो, सो मारा वंसरो कोही हरामषोरांका वंश काने मेवाडका राजका हदमे आवा देवेगा नही तथा चाकरी देस प्रदेसमे भी भलावेगा नही, और जो कोई बी यां हरामषोराकी अरज करेगा, ज्यो ई सुरेने लोपेगा जीने, ऊषालेगा जीने श्रीएकलिंगजी पुगसी, श्री चीतोड मारयारो पाप, गऊ मास्यारी हत्या, हिन्दूने गाय, मुसलमानने सूर, अगरेज वाद्रके होता होवे ज्यो सोगन हे. सं० १९०३ दुतीय जेठ विद ७ शने.

यहांपर बछड़ा चुखाती हुई गायका चित्र है.

३- जगत शिरोमणिजीके मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमदहार्य्यवर्य्यधरायनमः ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ कालिंदीतट कुंजगुंजदलिभृत् संफुल्लनीपावली द्वाः स्थानेकसुवल्लवीक्षितसुधापूर्णेंदुहास्याननः ॥ तिर्यक्प्रेक्षणराधिकाधरसुधा मन्याः पिवन्निन्हुवंस्तांबूलस्य वितीर्णचर्व्वितमिषात् कृष्णः सनोद्यावतात् ॥ १ ॥ वृंदारण्यनिकुंजबद्धवसतिप्राणप्रियाणां हठात् मुष्टीकृत्य मनांसि निन्हुतइमा अंगुष्ठमादर्शयन् ॥ वामेनोर्द्धकरेण ताः पुनरसौ नाम्नाहूयत्युन्मुखं। सोयंश्रीगिरिधारिनामविदितः पायात् सदैवाश्रितान् ॥ २ ॥ गीर्व्वाणैर्गुणगणितो। गोपगुणालांगनांगसंश्लिष्टः ॥ गोकुलगोरसशाली गोविंदोगोगुणेशोऽव्यात् ॥ ३ ॥ बप्यान्ववायंगुणगौरवाढ्यं । वक्तुं बभूवाहमलंनवाग्भिः ॥ तथापि वक्ष्येस्य गुणैर्गुरुः स्यां जातोयथावामनदंडवंशः ॥ ४ ॥ अथ श्रीजगन्नाथरायदेवालयोत्तरपट्टिकायां राणा-राजसिंहावधिवंशवर्णनं तथाप्यनुवादेनाभ्यर्हितान्महाजगत्सिंहादनुवर्ण्यते ॥ दाने प्रौढारिराजप्रथितपुरजयप्राप्तवित्तस्य यस्य । चित्तस्फीतोन्नतेर्यो विविधमणिगणस्व-र्णकूट प्रकीर्णः ॥ स्वर्णाद्रेः कल्पनायांव्यनुददुरुतरं संशयं मार्गणौघो। दृष्ट्वा हेमाश्मराशिं स्वमुप ससमभूच्छ्रीजगत्सिंहभूपः ॥ ५ ॥ गत्वा धामचतुष्टयं सुविमलं नाथान्-विलोक्यादरा। द्भक्तानां पुरुषार्थदानचतुरान् प्राच्यादिदिक्षु क्रमात् ॥ दाता वैभजनस्य नेति भुवने शून्येंतरे च क्षितेः ॥ सत्प्रासादमंतोव्यधाज्जगतित न्नाथेपुरायस्य यः ॥ ६ ॥ तस्माद्धिराजसिंहोभूत् कः कुर्यात् तत्कृतं नृपः ॥ लोकापेयंविलोक्याब्धिं योऽकरो

द्राजसागरं ॥ ७ ॥ हत्वा म्लेच्छधवेर्पितां प्रथमजां पित्रादिभिर्नात्मना । कन्यां-भीष्मकजामिवाप्तबलवान् यः कृष्णदुर्गात्पुरः ॥ चैद्योद्वास्युदुवाह सोच्युतउरस्यात्मैक कांतार्थिनीं । पत्रं प्रेष्य रहोहरं जनमुखाद्वृत्तांतमावेद्य च ॥ ८ ॥ पुत्रस्त्रीगुरुघातनिष्कृतिकृते पृष्टैर्द्विजैः प्रोदितं । धारातीर्थमकातरेण मनसा राज्ञा तथा निश्चितम् ॥ उंग्रावैर्निजजीवितेप्सुभिरयं भक्ष्ये विषैर्घातितो दुष्टांतः करणैश्च ते निरयिणोराजा तु नाकं गतः ॥ ९ ॥ यौ ज्ञात्वौरंगजेवः कृतजनुरुभयस्फारदारापहारौ । विष्णुं विष्णवंशभूपं यवनपतिमिषोद्भूतचैद्योत्यमर्षी ॥ स्वाराट् साहाय्यभाजि क्षितिभृति च रुषा पातयामास विष्णौ । प्रासादं भूभृदिष्टे वितथरुडुदकेशायिनि प्राप्तलज्जः ॥ १० ॥ तस्मादभूदरिवनीदहनातिदावः । सद्धर्मरक्षणविधावतुलप्रभावः ॥ यं प्राप्य सद्भवमिला समवाप्तकामा । राजन्वतीस्मजनिताजयसिंहनामा ॥ ११ ॥ शौर्यौदार्यगुणान्वितप्रविलसद्भासा सुधासारभृद् । येनाकारि हसन् जलैः स्वमधुरैरब्धि यशः सागरः ॥ धीरायं यदुशंति तत्वगणने निर्देहवत्वादिति । नाकाशः किमु देहवानिव चलच्छायेन्दुतारागणः ॥ १२ ॥ प्रोञ्चंचञ्चंडकांडप्रकरकरवलच्छस्त्रपातप्रहारं । त्रासं ग्रासं न सेहे दिशि दिशि सभयं नेत्रतारां क्षिपंती ॥ जन्यारण्ये मृगीवोन्मदयवनपतेः कृष्णसारस्य सेना । तारा आजन्मयूथप्रबलपतिसमाकृष्टिलुब्धस्य यस्य ॥ १३ ॥ तस्यांगजन्मामरसिंहवीरो । वीरैकसूरस्मि मर्दं व्यधत्त ॥ यस्य प्रसूरासुरितीत्यनिद्रा । देवाः समासे परिसंदिहानाः ॥ १४ ॥ महानसमचीकरद्धरशिवप्रसन्नामर । विलासमपिनिष्कुटान्वितमसौ स्वसौख्याश्रयं ॥ तपः सुपरितोषिताविव भवान्नपूर्णेश्वरौ । समं व विशदालयं ददतुरेव कैलाशकं ॥ १५ ॥ सद्ग्रामग्रामदातुर्नयविनयवतो विश्वविख्यातकीर्तेः स्तस्मात्संग्रामसिंहप्रभवितुरवनौ म्लेच्छसंघामहेभाः ॥ हर्तुं भागं नशेकुर्ह्यमरहरिकृतावासभोज्यप्रभोक्तुः शक्याभूभृच्छृगालायमककुबुदयाग्रामसिंहाः कुतोन्ये ॥ १६ ॥ देवानां हि परस्परं विवदतां विष्म्वीशसत्पार्वणां । कोगच्छेदिति पूर्वमेव निखिलैरिष्टैः सदक्षैरपि ॥ गंतव्यं नृपतेर्गृहं सममतः स्थूलामहंपूर्विकां ज्ञात्वैषां समचीकृपत्सगतये यस्त्रिप्रतोलीं शुभाम् ॥ १७ ॥ ततोभवज्जगत्सिंहोजगन्नाथालयं पुनः ॥ जीर्णोद्धारात्कृतं पित्रा दिदृक्षुः स्वकृतं पुरा ॥ १८ ॥ देवेऽवर्षति चास्तबुद्धिविभवे धान्यत्रिपादस्थिते । मृत्युं गच्छति विष्टपे सितरुचौ पापक्षुधासज्जने ॥ उद्घोद्घाटिततोषकोषवितरत्सद्द्रव्यसजीवनैः । कालंकालमपाकरोत्सविशदप्रासादकर्मच्छलात् ॥ १९ ॥ कलंकमपि नोगतं मम पुनर्ह्यनंताटना । दिति द्विजपतिर्मलं वसति मार्ष्टुं मिच्छन् जले ॥ फलिद्विजनिषेवितोऽतुल सुचित्रशाली पुनः । सुमित्रमदनश्च यत्कृतजगन्निवासच्छलात् ॥ २० ॥ स्वीयं सौभा-

गिनेयं पितृजयनगरोद्भागिनं भागिनेयं। माधोसिंहं नृसिंहः स्फुरदतुलरुषाऽदत्तलक्ष्मीकटाक्षः॥ प्रल्हादं पक्षपाताद्व्ययितशतगुणोल्लक्षमुद्रासमुद्रो। देवर्ष्यात्माऽभ्यषिंचद्विबुधजननुतः पित्र्यराज्यासनेयः॥ २१॥ तस्मात्प्रतापसिंहो। ह्यरिसिंहोद्वौ सुतौ तयोर्मध्ये॥ राजति राज्ये ज्येष्ठे। पुत्रोभूद्राजसिंहोऽतः॥ २२॥ स्वर्गे वासं कृतवति। पितरि जगत्याः सपालनेधिकृतः॥ तस्मिन्नपि पितृसेवां। प्राप्ते राजाऽरिसिंहोऽभूत्॥ २३॥ नयेन नयतः क्षोणिं राजसिंहस्य नाकिनः॥ भ्रात्रीयस्यार्यपुत्रस्य ह्यरिसिंहो ऽग्रहीत्पदं॥ २४॥ कृत्वासद्वरणं पुरः सपरिखं स्वीयैक रक्षाकरं। संरुद्ध्यत्पुरमागधप्रबलभृद्धम्मोलजित्सिंधियं॥ लक्ष्मीशः सवलश्च सत्प्रहरणो योजेजयीदुर्जयं। तस्यासीच्छमरुर्हि कालयवनः क्रीडास्पदं संगरे॥ २५॥ किंकालव्यालबालः किमुत मरणकृत्कालजिव्हाग्रमुग्रं। किंशंभोर्भालनेत्रज्वलदनलशिखाज्वालमालासमूहः॥ किंत्वव्यद्वज्रपातोजनितघनरुचिः कल्पसिंधो स्तरंगो। जन्ये जन्ये व्यलोकि त्रिदशपरिवृढै र्यत्करे मंडलाग्रः॥ २६॥ स्वामिद्रोहपरायणैश्च लवणोदोर्दंडचंडैर्दृढपरे। रौम्यावैः सहकृत्रिमाकृतिनृपः स्वाशाशया ऽस्मिन्सति॥ घासात्मा किलकर्षुकैरिव नरः क्षेत्रोन्ननीडे धृतः। स्फूर्जत्कुंभलमेरुदुर्गवसतिः श्री मेदपाटावनौ॥ २७॥ जित्वा कृत्रिमराजपक्षतिकृतादिङ्मासमायोध्य यः। क्रुध्यन्मालजिता पटीलविभुना जन्यत्रयं योगिभिः॥ म्लेच्छाष्टोषल पर्वते च शमरोग्रामे च गंगारके बुध्वां वीरगतिं गतः कतिपयैर्वर्षैर्हि भुक्का महीं॥ २८॥ हम्मीरसिंहो प्यथ भीमसिंहो। बभूवतुस्तस्य सुतौ सुवीरौ॥ श्री रामचंद्रस्य कुशोलवश्च तत्रैकराडासतुरत्र चोभौ॥ २९॥ आपंचशरदं क्षोणीं। भुक्का भूपे दिवं गते॥ हम्मीरवीरे च ततो। भीमसिंहोऽभवन्नृपः॥ ३०॥ श्रीमानसीमहिमदस्युविनाशभास्वद्भास्वत्प्रतापउरुबुद्धिविशालभालः॥ विहारगस्त्यमतकीरमरालबालः। स्फूर्जन्महाजगति भूपतिभीमसिंहः॥ ३१॥ रूपेणाप्रतिमः प्रियासु रसिकः कामोवपुष्मानिव। दानेनार्जितकर्णभोजमहिमास्वैश्वर्य आखंडलः॥ भूर्भुक्का बहुवत्सरं गुणवता जुष्टाः पुमर्थास्त्रयः। प्राप्तं येन सुखं परं च तदियत्कुं कइष्टे जनः॥ ३२॥ यश्चाग्रहीन्कुंभलमेरुदुर्गं। वैषम्यनीचैष्कृतसह्यशृंगं॥ बभंज दुष्कृत्रिमराजभीतिं क्षेत्रस्थचंचामिव वै वराहः॥ ३३॥ तस्यांगजातोहि युवानसिंहो। यस्याग्रउग्रोपि युवानसिंहः॥ दानेन कीर्त्याच गुणैश्चयेन। मोमेशभक्त्या न समोपि कोपि॥ ३४॥ कांतः केलिकलाकुतूहलरतः क्षोणींद्रकन्यावृतः शस्त्रास्त्रैरबहिष्कृतो परिजनैः संसेवितोनुद्धतः॥ नानाक्षत्रकुलान्वितोगुरुनतोविद्वन्नुतोधीश्रितो। कोप्यासीद्धियुवानसिंहनृपतिः श्रीमान् गुणौघावृतः॥ ३५॥ पुत्रः स्यादृणत्रयात्स्वपितरं संमोचयेत्सोनृण। इत्यालोच्य गयां व्ययेन नयता पौराञ्जनान्नैवृतान्॥

येनापामरमात्मजार्पितसकल्पिंडोपि विष्णोः पदे। श्रीमद्रामसमानविक्रमकृता जीवौघ उद्धारितः ॥ ३६ ॥ परिहृतउरुडंडउद्धताज्ञः क्षितिपगरुडधवेन यस्य वाक्यात् ॥ अनुगतनृगणस्य यस्य कस्य सइति बभूव युवानसिंह भूपः ॥ ३७ ॥ ब्रह्मांडाधिकृतास्त्रयोपि विबुधा ब्रह्मेशनारायणा। स्तेषां तुष्टिकृते क्रमात्किमथवा धर्मार्थकामाप्तये ॥ यात्रा येन हि लक्षशोवितरता स्वकारिता त्रिस्थली। या योध्यानयनात्पुनस्तनुभृतां मोक्षोपि हस्तेर्पितः ॥ ३८ ॥ तत्स्थाने शरदारसिंह इति यो राजा प्रजारंजयन्। यद्दध्यात्तसमग्रदुष्टजनताशश्वत्स्वधर्म्मादरः ॥ वृद्धिर्वाप्यथ हानिरेव भवताद्यः स्वोक्तनिर्वाहकः। सद्बुद्धिर्मितवाक् स्वधर्मनिरतश्चासीत्तथानापरः ॥ ३९ ॥ सचापि यात्रां पितृमुक्तिहेतुं युवानसिंहाग्रकृतप्रतिज्ञः ॥ गयाभवां नाप्तभवामकार्षीन्नवाप्तराज्योपि वचोतिदार्ढ्यात् ॥ ४० ॥ तद्राज्येस्ति सुरूपसिंहनृपतिर्विख्यातकीर्तिर्गुणै न्र्याघ्ये दाशरथिर्मनुर्ह्यनुभवे पार्थः प्रजापालने ॥ दाने चाधिरथिर्व्वसुर्व्वसुचये धैर्ये बलिर्भूक्षमी। वंशेघावधि कोपि येन सदृशोभावी न भूतोनृपः॥ ४१ ॥ इंद्रः किम्विति चारणैश्च विबुधै श्चिन्तामणिः कामदः। किं मर्त्यैः किमुकल्पवृक्ष इति किं कर्णैश्चभट्टैरिति ॥ भोजः सत्कविभिः किमेवमखिलैः श्रीमत्सुरूपोनृपो। दृष्टः सन् हृदि केन केन समये दानस्य नोत्प्रेक्षितः ॥ ४२ ॥ रामोयं जितदूषणः सुभरतः सल्लक्ष्मणाप्तोनमन् ॥ शत्रुघ्नश्चतुरात्ममूर्तिरजितश्रीचित्रकूटस्थितिः ॥ नूनं सज्जनकात्मजाभिरमितो बद्धप्रकोष्ठांगदः। कौशल्याप्तकृतावनो विजयते रामायणैकाश्रयः ॥ ४३ ॥ आजानेयमसौ कियाहमतुलं वीतिं विनीतं वरं। मारुह्याब्जमुखीक्षणप्रसरण स्पर्द्धाकरं सुंदरं ॥ आश्चर्यं व्रजतीत्ति यद्युपवनं कुलाश्ववारीं तदा सांगोनंग इति प्रतिस्मृतिभुवं संशेरते किंनरः ॥ ४४ ॥ मद्यं त्याजयति प्रियं क्रतुसमं स्यात्तस्य पुण्यं श्रुता। वुक्तं तत्क्षितिरक्षिणा मधु वृथापानं नृणां त्याजितं ॥ श्रीराजेन्द्र सुरूपसिंहविभुना नैकक्रतूनां च या। देवेंद्रस्तुशतक्रतुस्तदधिकः ख्यातोस्त्यनंतक्रतुः ॥ ४५ ॥ कृतं च येनैवकृतं नकेन। धनापहं दुस्त्यजमेतदेतत् ॥ ऋणस्य मद्यस्य च मोक्षणं पुरा। यैस्तत्कृतं मुक्तिदमेव तेषाम् ॥ ४६ ॥ प्रतिज्ञापूर्व्वं या नरपति युवानेन हि कृता। यथा चत्वारिंशच्छरदुपरितोमध्वयचये ॥ नजाताष्टत्रिंशत्परिमिततदायुःक्षयवशा। त्कृता पूर्णा येन क्षितिपतिवरेणाद्य कृतिना ॥ ४७ ॥

अथ युवानसिंहकारितदेवालयप्रसंगोपक्रमः ॥ वाघेलीति युवानसिंहनृपतेराज्ञी समाज्ञापरा पौलोमीव पुरंदरस्य सुभगा शंभोर्भवानीव या ॥ चंद्ररूपेव च रोहिणी रतिरिव श्रीमन्मथस्यास्य वा। अत्यंतं हृदयंगमा सुचतुरा प्रीत्यास्पदं साभवत् ॥ ४८ ॥

रीमाराड्जयसिंहदेववपुरुद्भूता कुमारीश्वरी । राज्ञोढा गुणशीलरूपसुवयः सौभाग्य तुल्यायतः॥सीता किं रघुनायकस्य यदुभृत्कृष्णस्य किं रुक्मिणी॥विख्याता पतिदेवता मधुरवाक् संतोषितस्वप्रिया ॥ ४९ ॥ आबाल्यात्परिचर्य्यिकां कृतवती गोपालनाम्नो हरेः । श्रद्धाचारपरातिवैष्णवजना भक्त्येकनिष्ठा सदा ॥ रूप्यानिर्मितसूर्प्पकुप्पति-तऊः पित्राप्तसद्वैभवा। गीताभागवतादिपाठत उरुं कालं निनायानिशं ॥ ५० ॥ इत्थ-मच्युतसमर्प्पितचित्ता । पात्रवैष्णवसुरार्प्पितवित्ता ॥ आससाद हरिपादमभीता तत्र नोत्थकफवातकपित्ता ॥५१॥ ज्ञात्वेत्थं धरणीधरेंद्र उत्तमांता । मेतस्यागातिमतिविस्मयं प्रपन्नः ॥ तत्याज प्रभृति ततः कति प्रियस्य। वैराग्यात्तनुविषये कृतप्रतिज्ञः॥ ५२ ॥ बाघेल्या त्ववसानभानसमये वित्तं स्वपार्श्वे स्थितं तत् सर्वं हरयेऽर्प्पितं च कथितं राज्ञो मुखाग्रे स्फुटं ॥ राजा तेन युवानसिंह इति यो ऽलुब्धोतिहृष्यन्मनाः प्रासादं रचयां-चकार विधिवच्छिल्पीश्वरैः शोभनं ॥ ५३ ॥ प्रासादं यमनल्पदत्तविभवैर्मर्ज्जूरकैः शिल्पिभिः। शीघ्रं कारयतो महोत्सवविधामाशास्यमानस्य यत् ॥ स्वीयायुः क्षण-भंगुरं च विदुषः सायुज्यसिद्धिर्हरे । जाता ऽप्राप्तमनोरथस्य नृपते र्दैवात्पदाब्जाश्रये ॥ ५४ ॥ तत्पश्चाच्छरदारसिंहनृपतिर्यत्नं तथैवा ऽकरोत् । कालानाप्तविचारितः पदमगाच्छ्रीएकलिंगस्य यः ॥ तत्पश्चाच्च सुरूपसिंहपृथिवीपालः स्वभाग्योच्छ्र-यात् । प्रासादे कलशं दधार मतिमान् संपूर्णतापादिते ॥ ५५ ॥ यथा गंगाप्रा-प्त्या अहह कृतवंतोबहुतपोंशुमन्नाद्याभूपास्तदपि किमयान्नो सुरसरित् ॥ तपो-भागीरथ्यं जगदघहरं सर्व्वविदितं । तथैवेदं पुण्यं महदिति सुरूपक्षितिभृतः ॥ ५६ ॥ पूर्वं श्रीचित्रकूटे क्षितिविदितगिरौ बप्पशैशोदवंशः क्षोणीभृन्मेदपाट-द्विषदसहधरादुर्गसन्मूलभूमौ ॥ मीराराज्ञीशिरस्थ स्तदनु नृपजयस्सिंहपुष्ट्यध्व-रीत्या शीर्षे स्वस्थापितोसावुदयपुरवरे मंदिरे स्वर्णश्रृंगे ॥ ५७ ॥ साचोरद्विज-सेवकैरनुदिनं तद्रागभोगौ व्यधात् । सेवाप्रेमनदीप्रवाहमतनोत्क्षौणीभृदेवं स्वयम् ॥ प्रासादे ससहेलिकानिजसखीनामप्रभूतोदये। प्रीतिं प्राप जगच्छिरोम-णिरयं कालं च कंचित् सुखं ॥ ५८ ॥ म्लेच्छैश्चपिंडारकदाक्षिणात्यैः स्वमातृकुक्षि प्रविदारणैर्यः ॥ उपद्रवेस्मादपि सोऽच्युतः सन् । सस्वामिनीकोत्र रहोन्वतिष्ठत् ॥५९॥ सुरूपसिंहोपि निजैकदेवं पूर्वं जगत्सिंहकृत प्रतिष्ठं। युवानसिंहाभिमतं विचार्य समानयत्तं पुरुषोत्तमं सः॥ ६० ॥ श्रीरस्तु॥कल्याणमस्तु॥शुभंभवतु॥श्रीगोवर्द्धनोद्धर-

णाधीरोजयति ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ ॐनमः ॥ अथप्रथमपट्टिकाशेषमापूर्यते ॥ श्रीवल्लभान्वयजनिः प्रथितोसौ । श्रीगोकुलोत्सव इतिप्रकटाख्यः ॥ श्रीपुष्टिमार्गपुरुषोत्तमप्रतिष्ठांसस्वमार्गविधिना

यथाकरोत् ॥ ६१ ॥ गोष्ठीशालकृतावटंक इति यो गोपालकृष्णः सुधी । भट्टः सर्वगुणैकदक्षउरुधा तैलंगजातिः स्वयं ॥ नाथद्वारतश्रादरेण नृपतिः स्वानाय्य यं सोथ य च्छीर्षे ऽधाद्धि जगच्छिरोमणिममुं पुष्ट्यध्वसेवाकृते ॥ ६२ ॥ संवत्यब्धिखनंदभू १९०४ परिमिते सूर्ये वृषे पूषणि । लंबत्युत्तरगोलके शुभकरे वैशाखमासे सिते ॥ पक्षे द्वादशिसत्तिथौ रवियुते चंद्रे च कन्यास्थिते लग्ने सिंहशुभेक्षिते नृपतिना देवप्रतिष्ठा कृता ॥ ६३ ॥ श्रीवृद्धदेवलकृतस्थितिरेव वर्णी । श्रीविष्णुदासइतिनाममहातपस्वी ॥गायत्र्युपासनपुरश्चरणैकरुद्रो । वाङ्माधुरीजितसमग्रसुधासमुद्रः ॥ ६४ ॥ नित्यं सुरूपनृपसद्धितकृच्छ्रभार्थी । सद्धर्मकर्मविधिशास्त्रविधानदक्षः ॥ सोत्रोपविश्य विधिपूर्वककर्म तेने। राजापि तद्वचनमेव हितं च मेने ॥ ६५ ॥ अथ प्रासादवर्णनं ॥ गौराभाभ्रनिभैरनेकशिखरैर्युक्तोऽप्युदभ्रंलिहै । नानादिक्पतिदेवतागणकृतप्रत्यक्षवासैरिह ॥ स्त्रीप्राये यइलावृते शिववचः सत्यं हृदा संस्मरन् ॥ मन्ये तद्भयभावभंगुरमनामेरुर्हि तष्ठीयते ॥ ६६ ॥ चंद्राच्चंदनतः पुरंदरगजाच्छ्रीचंद्रचूडादपि । कर्पूरात्करिकोमलोद्भिदरदात्कर्णाटकांतास्मितात् ॥ स्वच्छोयद्यशओघ एव निपुणं प्रासादकायच्छला। द्विष्णोरंघ्रियुगार्थहाटकघटं शीर्षे यमालंबते ॥ ६७ ॥ अश्वैर्मत्तमतंगजैरपि रथैः पादातिगैरन्वितो मन्ये हं चतुरंगिणीप्रतनया यत्पुण्यपुंजोभटः ॥ प्रासादस्य मिषान्महाभटचमूपाथौघमाबाधितुं । स्वांतर्व्वर्मितकृष्ण उद्धतभुजः सन्नद्धउज्जृंभते ॥ ६८ ॥ दत्तैः किं किमु रूप्यखर्प्परभवैः खंडैश्च किं प्रस्तरैः। शुभ्रैर्वाहिमसंभवैः किमथवाद्यापारदैस्तंभितैः ॥ प्रासादोयमनिश्चितैकरचनः केनैव निर्मापितो। दृष्ट्वारादपि यं मनागनिमिषं संशिश्यिरे मानुषाः ॥६९॥ पुष्टोहं च जगच्छिरोमणिरहं चास्यैव देवोस्म्यहं । मां हित्वायमुमंदिरे निजजगन्नाथं समास्थापयत् ॥ इत्येवं भृशमीर्ष्यया हरिरभूद्रुष्टोयमद्यावधि। श्रीमद्भूपसुरूपसिंह विभुना स्वस्थोयमध्यासत ॥ ७० ॥ मम गृहमिदमुज्वलं तथोच्चै । रिति हरिरपि सन्मुखस्थमीशं ॥ विवदिषुरिव मार्जनाय पार्श्वे । स्त्रियमपि रहितोन्यतोबिभर्त्ति ॥ ७१ ॥ अथ प्रसंगोपात्तपुष्टिपुरुषोत्तमसंवत्सरोत्सववर्णनम् ॥ श्रीमद्वल्लभविठ्ठलप्रभुवरारूपं न दध्युर्भुवि । संन्नारं यदि चेत्तदा हि वसुधाशुन्ये यमा स्थास्यति ॥ श्रीमद्गोकुलराजनंदनकृतालीलापि जीर्णातरा। देवानां क्व गतिस्तथा क्व सुमतिः प्रीत्युन्नतिर्घोषजे ॥ ७२ ॥ आजन्मोत्सवः॥ जन्मन्यस्य महामनाः परिददौ नंदोपि दानं मुदा । गोपाये च विचिक्षिपुः प्रमुदिताहैयंगवीनं मिथः ॥ गोपीर्याव्रजतीर्विरेजुरधिकं नंदालयं दर्शने । सश्रीकृष्णउदारचित्तचरितः पायान्नद्गंद्रोगवां ॥ ७३ ॥ प्रेंखः॥ श्रीप्रेंखपल्यंकवरे स्थितं हरिं । प्रसाधितं मातृपदैर्मुदा भजे ॥

सुभ्रूतटे दृग्धरकृष्णबिंदुं । कंठस्थितव्याघ्रनखादिभूषं ॥ ७४ ॥ अथ बाललीला॥ मातश्चंद्रमसं लभेय झटिति क्रीडार्थमानीय मे। देहि ह्यंगुलिमुत्क्षिपन्दिवि रुदन् भूमौ लुठन् दर्शयन्॥ स्थालीनिर्मितवारिबिंबितममुं वीक्ष्यातिहृष्यत्तनुः। हिहीत्युत्सुहसन्न-तिप्रमुदितो मुग्धोहरिः पातु वः ॥ ७५ ॥ दानलीला ॥ दानंयौवनगर्विताः प्रति-दिनं यांत्यो मुषिला हि नो । रुंधध्वं किलगोरसेन भरितानूनं वयस्याइमाः ॥ श्रुत्वेत्थं पशुपालजस्य वचनं संनर्त्तितभ्रूाह या। लालन् गोरसएव कीदृशइति प्राप्यस्त्वया सा-वतात् ॥ ७६ ॥ नेत्रमीलनलीला ॥ राधायाः शिरसीरयन्प्रणयतोदानं सखीनां पुरः। सख्यामुद्रितचक्षुषस्तिरयितुं यः कांदिशीकः स्वयं ॥ चक्षुर्मीलनकेलिषु प्रियसखीवृंदे-र्विशाखेडितः। कृष्णः संभ्रमतोनिकुंजइव मे स्वांते निलीनोस्त्वयं॥ ७७ ॥ रासलीला॥ आनंदाब्धिरसोऽवनौ हरितनौ बद्धोहि वृंदावने। रुद्धश्चैकतउच्छलन् यमुनया गोपीभि-रेवान्यतः ॥ किंचित्तु प्रसृतोमिताद्धरिजनेष्वद्धा निपीतोपि तै। न स्पृष्टोभुवि कर्मठैः श्रुतिहरैः शून्यप्रियैर्ज्ञानिभिः ॥७८ ॥ अन्नकूटोत्सवः॥ बिभ्राणोविलसत्सुवर्ण-कुलहीं गोकर्णवर्हावलीं । चक्रोदारसुवर्णवस्त्रविलसत् सर्वांगसत्कंचुकः ॥ धृत्वा रूप-मनल्पकं गिरिरिवाद्रेंद्राय मन्युं नयन् । शाकं पाकमदन् निवेदितमुरुं गोवर्द्धनेशोबभौ ॥ ७९ ॥ दोलोत्सवः॥ वासंतीवरजातियूथितरुणीमल्लीमतल्लीलता। कुंजे मंजुलमंजुलैः परिवृते दोलाश्रितं श्रीहरिं॥ आप्टक्तं पटवासकैर्दयितया सिक्तं तथा रेचकैः। पश्य-न्त्यत्र सखीभिरुत्स्मितमुखं भाग्यैः सनाथानरः ॥ ८० ॥ रथयात्रा ॥ सुग्रीवा-दिभिरन्वितं हयवरैः सत्स्थंभचक्रं रथ। मारुह्य प्रविसत्वरं बहुतरं सत्कंचुकोष्णीषधृक्॥ याति श्रीवृषभानुमंदिरमसौ प्राणप्रियाहूतये। गोपालोमणिमौक्तिकाभरणयुक् शृंगार-धृङ्नोवतु ॥८१॥ हिंडोलोत्सवः॥ हिंदोले हि विशाखया ललितया पार्श्वद्वयांदोलितौ। वर्षायां नभसीस्वरत्नखचिते श्रीमत्किशोरौ मुदा॥ राधा वाप्यथ कृष्णउद्धतवपुः शृंगार-कौ दंपती। नानाभ्राक्ततडिद्घनाविव महाभाग्यैरिह प्रेक्षितौ ॥ ८२ ॥ अष्ट दर्शनानि॥ आदौ मंगलदर्शनं तदनु सच्छृंगारजं ग्वालजं। गोपीवल्लभनामतत्तदनु यच्छ्रीराजभो-गोद्भवं ॥ यश्चोत्थापनभोगभोगजनितं चारार्तिजातं पुनः । सायाह्ने शयनं हरेरनुदिनं ह्रीत्थं च दर्शाष्टकं ॥ ८३ ॥ मंगलं ॥ वृंदारण्यविहारिणि प्रविलसद्भास्वत्सुता वारिणि । स्नास्यद्गोपकुमारिकांबरहृतिव्याजान्मनोहारिणि ॥ कालिंदीतटवारिणि क्षितिभृतः शृंगेषु गोचारिणि । गुंजाहारिणि मे मनः प्रविशताद्गोवर्द्धनोद्धारिणि ॥ ८४ ॥ उतसर्गेस्य सुरूपसिंहनृपतिः पृथ्वीमहेंद्रोबभौ। दृष्टिं रूप्यमयीमवर्ष दतुलां सद्ब्राह्मणक्षेत्रगां॥ जातोपूर्वदृढांकुरः पुनरसौ सौख्यैकवृक्षोमहान्। पुष्पं सद्यशएवपुत्र-फलवान् भूयाद्द्विजैरक्षितः ॥ ८५ ॥ तुंगाश्वान्करिणोरथान् पुनरसौ वस्त्राणि

चित्राण्यलं॥ चातुर्वर्ण्यसमाश्रितानपि मुदा योदीददद्वा नृपः। भुक्तं तृप्तमुदृप्तमृद्ध-मिति यां वाणीं सदैवाशृणोद्योलोकोपि दिदृक्षुरागतइमं चित्रेणतुल्योऽभवत्॥ ८६॥ समुद्रवचनं यथा भवति वै मणेर्वैधानात्। सुवर्णकटकप्रपतितिरिति यो मृषैवाकरोत्॥ वि-नापि तदुताददादगणितानि नृभ्यस्तदा। सुवर्णकटकानि किं कथयतीह शास्त्रं पुनः ॥ ८७॥ अस्मिन्नन्हिजगच्छिरोमणिरसौ सेतुर्बृहन्नामको। रिंगत्सागरसेतुरद्भुततरो मिष्टप्रभूताध्वरः॥ तुर्य्योन्यत्र युवानसूरजविहारी चैव राधावरः॥ सर्वेषामभिजि न्मुहूर्त्तसमये दिव्या प्रतिष्ठा ह्यभूत्॥ ८८॥ आखातामलसारिकावधिमुदारव्य-प्रभूतोदयं। प्रासादस्य पुरोधसा सह विधिव्रातैकसंवेदिना॥ सर्वस्मादमरेश्वरेण सुवरेण श्रीयुवानोनृपः। स्वाराट् चित्रशिखंडिजेन किमपि प्रष्टुं हि विष्णुं गतः ॥ ८९॥ तस्याथास्त्यमरेश्वरस्य तनयो। रामस्य शक्थेः पिता। धौम्योधर्मतनु-द्भवस्य व निमेर्यद्वच्छतानंदकः॥ राज्ये पौष्टिकशांतिकर्मविधिवच्छंशी शुभस्यान्वहं। स्वच्छांतः शिवराजइत्यभिधिया राज्ञः पुरोधा द्विजः॥ ९०॥ सांचोरद्विजनत्थुरामतनयं मुख्यं विधायात्र य। स्तत्साहित्यकृतिस्थितावनुरतं संपद्विपद्वर्त्मसु॥ नान्यत् किंचन वित्तमच्युतममुं हित्वेत्थमालोच्य सः। केदारेश्वरकं द्विजं च कृतवांस्तस्मिन्कथावाचकं ॥ ९१॥ अंतर्वाणिरमंदगुर्जरदयानंदाभिधोब्राह्मणः। श्रीगौडोहि परंपरागतपदो राज्ञः सुकर्मांतिकः॥ ९२॥ तेनेदं सकलं महाविधिविदा प्रासादजोत्सर्गिकं। राजानुग्रह-भाजनेन विधिवद्दालिग्द्विजैः कारितं॥ प्रासादं शुभमेरुजातिममलं शिल्पीशगोवर्द्धनो। भारद्वाजउचेनरामतनयः सच्छिल्पविद्यापरः॥ आखाताद्रचयांचकार विधिवद्राजा-ज्ञया सादरं। यस्येमां रचनां विलोक्य व्यदधच्छ्रीविश्वकर्मा मुदं॥ ९३॥ विप्राग्र्योव्रज-लालइत्यभिधया श्री मेदपाटाख्यया भट्टोगौजरउत्तमोदयपुरावास्येव पौराणिकः॥ यत्तद्विप्रकुलोपकारकरणप्रख्यातकीर्तिं व्रजं। तेषांलालयतीति सत्कृतिसतैरन्वर्थना-माभवत्॥ ९४॥ यत्पुत्रः किलकृष्णलालउरुधीः कृष्णस्य संलालनात् कृष्णांशस्य युवानसिंहनृपतेः सप्ताहपारायणात्॥ श्रीमद्भागवतोद्भवादपि तथा विख्यातकीर्ति-श्चय। स्तेनेयं रचिता प्रशस्तिरखिला विद्वन्मुदे स्तात्सदा॥ ९५॥ कोटेश्वरेण लिखिता दशोरद्विजजातिना॥ उत्कीर्णा नत्थुजीवाभ्यां शिल्पिभ्यां शुभदा सदा ॥ ९६॥ यावत्सूरसुताद्भुता हरिरता यावच्चभागीरथी। यावत्सर्वजगत्प्रकाशनपरौ श्रीपुष्पवंतौस्थितौ॥ यावन्मेरुरवस्थितिः क्षितितले यावन्महांतोजना। स्तावत्तिष्ठ-तु मत्प्रशस्तिरतुला स्पष्टाक्षरेयं चिरं॥ ९७॥ श्रीरस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ शुभं भवतु॥

छन्द गीतिका.

शिवलोक ग्ये सिरदार भूप सुरूप राज्य विराजकें ।
बहु राजनीति विचार सार प्रबन्ध उत्तम साजकें ॥
कर शेरसिंह प्रधान पदतें रामसिंह उतारिकें ।
सीसोद कुलतें मद्यपान मिटाय दूषण जारिकें ॥ १ ॥
विष देन दोष अमात्यके हतबंद देश निकारभो ।
चतरेशपै दल प्रेश तें सिरदार दुग्ग विकारभो ॥
अरु जोरने निज ठौर पाय अनन्य ईश प्रभावतें ।
शठ भिल्ल लोग अभीत ह्वै हत राजनीति स्वभावतें ॥ २ ॥
युग स्वसा व्याहन हुइ भूपरु बांधवेश बुलायकें ।
बर हुइ राम बघेल त्यों रघुवीरकों परणायकें ॥
फिर आर्य दुग्गमकी बगावत मान मार मिटायदी ।
भैचक्क भारत भूमि भो अंगरेज आन उठायदी ॥ ३ ॥
तब रान भारत भान बानक मित्र भाव बनायकें ।
जब दे पनाह अनेक इंग्लिश राखि प्रीति जनायकें ॥
मेवार भट्टन द्वेष बिथ्थुरि वृत्त विस्तर तें कह्यो ॥
पतिवृत्त पालन अग्गि जालन अंग पालन ना सह्यो ॥ ४ ॥
शुध भाव सज्जन सिद्धको फतमाल शासन पायकें ।
कविराज श्यामलदासने इतिहास खंड बनायकें ॥
सारूप रान प्रभाव सूचक बुद्धिमानन मोदको ।
यह खंड पूरण किन्ह कोद विथारिवीरविनोदको ॥ ५ ॥

उन्नीसवां प्रकरण,

महाराणा शम्भुसिंह.

इन महाराणाका राज्याभिषेक विक्रमी १९१८ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १२७८ ता० १४ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८६१ ता० १७ नोवेम्बर] की सन्ध्याको, और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी माघ कृष्ण १ [हि० १२७८ ता० १६ रजब = .ई० १८६२ ता० १७ जैन्युअरी] को हुआ था. महाराणा स्वरूपसिंहका इन्तिक़ाल होते ही ये उदयपुर के राज्य महलोंमें आगये थे. जब महाराणा स्वरूपसिंहकी आख़री सवारी महासती सहित गोवर्द्धनविलाससे कृष्णपोल दर्वाज़ह होकर भटियानीचौहटे होती हुई जगन्नाथरायके मन्दिरके सामने प्राचीन रीतिके अनुसार भेट दण्डवत करके बाज़ारके रास्ते (१) दिल्ली-दर्वाज़हसे निकलकर आहड़ ग्रामके पास महासती क्षेत्रमें पहुंची, तो वहां काष्ठके बंगले में महाराणाकी लाशको लेकर पास्वान ऐजनकुंवर बैठगई, और विधिपूर्वक दग्ध-क्रिया होनेके बाद कुल उमराव, सर्दार, प्रधान, अह्लकार आदि स्नान करके वापस आये, उस समय महलोंमें गद्दीनशीनीकी बाबत् सलाह मश्वरह होने लगा; क्योंकि सलूंबर का रावत् केसरीसिंह उसवक़ मौजूद न था, और उसके चचा रावत् ईश्वरीसिंहने इन

(१) इस मौक़ेपर रास्तेमें बहुतसा ज़ेवर, अश्रफ़ियां और रुपये लुटाये गये.

महाराणाकी गोदनशीनीके वक्त इन्कार करदिया था. परन्तु रियासती क़दीम दस्तूर के मुवाफ़िक़, कि एक महाराणाका इन्तिक़ाल होनेपर उसी दिन उनका क्रमानुयायी गद्दीपर बिठादिया जावे, मौजूदह उमराव, सर्दारों व अह्लकारोंने रावत् खुमाणसिंहको इस ग़रज़से महलोंमें बुलाया, कि वह महाराणा शम्भुसिंहके गोद लिये जानेके वक्त मौजूद था, इसलिये उसे इस मौक़ेपर शरीक रखना चाहिये; लेकिन् उसने कहला भेजा, कि सलूंबरसे रावत् केसरीसिंहके आनेपर गद्दीनशीनीका दस्तूर होगा, उसकी रायके बिना कार्रवाई करके उसका गुस्सह कौन झेल सक्ता है? इसपर बेदलाके राव बख्तसिंहने कहलाया, कि यदि आपको आना हो, तो जल्दी चले आवें, वर्नह मैं गद्दी-नशीनीका दस्तूर अदा करनेको तय्यार हूं. तब खुमाणसिंहने आकर केसरीसिंहकी नाराज़गीका ख़ौफ़ ज़ाहिर किया, लेकिन् राव बख्तसिंहने इस धमकीको न मानकर सभाशिरोमणि महलमें महाराणाको गद्दीपर बिठादिया, और उनके सिरसे ग़मी (शोक) की सिफ़ेद चादर उतारकर ज़ेवर पहिनानेके बाद नज़्र दिखलादी. इसके बाद रावत् खुमाण-सिंह वग़ैरह दूसरे मौजूदह लोगोंने भी नज़्रें दिखलाईं; कुल कारख़ानोंके दारोग़ाओंने अपने अपने ज़िम्महके कारख़ानोंकी कुंजियां महाराणाके नज़्र कीं, जो महाराणाके हुक्म से उन्हीं लोगोंको वापस सौंपी गईं, शहरमें महाराणा शम्भुसिंहके नामकी दुहाई फेरी गई. कुल उमराव, व सर्दार अपने अपने ठिकानोंसे जमइयतों समेत उदयपुरमें आने लगे, एक शरीरके उठजानेसे रियासतमें अनेक प्रकारकी तब्दीलात नज़र आने लगीं, हर एक आदमीको अपने अपने मत्लबकी फ़िक्र पड़गई. सब लोग इसी सोच विचारमें थे, कि देखाजाये साहिब एजेण्टके आनेपर क्या बन्दोबस्त हो? महाराणा जो कम उम्र थे, उन्हें उनके पास रहनेवाले लोग जैसी सलाह देते वे उसी तरह क़दम भरते थे. इसी अ़र्सहमें ईश्वरेच्छासे विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० ता० २१ जमादियुल्-अव्वल = ई० १८६१ ता० २४ नोवेम्बर] को महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी चावड़ीका इन्तिक़ाल होगया.

वैकुण्ठवासी महाराणाकी उत्तर क्रिया बागोरके महाराज शेरसिंहके चौथे पुत्र सोहनसिंहने की, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि० ता० २५ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २८ नोवेम्बर] को उनके द्वादशाहमें ब्राह्मणभोजन विधिपूर्वक हुआ.

विक्रमी पौष कृष्ण ४ [हि० ता० १८ जमादियुस्सानी = ई० ता० २१ डिसेम्बर] को राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरल ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब और मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट टेलर साहिब उदयपुरमें आये, जिनकी पेश्वाईके लिये बेदलाका राव बख्तसिंह और कोठारी केसरीसिंह राजनगर तक गये. मत्लबी लोग जो इसवक्त तक अपनी

अपनी फ़िक्रमें ध्यान लगाये चुपचाप बैठे थे, सावधान हुए. महता शेरसिंह और पुरोहित श्यामनाथ, जो वैकुण्ठवासी महाराणाकी नाराज़गीके सबबसे बाहिर थे, साहिबके साथ वापस उदयपुरमें आये. विक्रमी पौष कृष्ण ६ [हि० ता० २० जमादियुस्सानी =.ई० ता० २३ डिसेम्बर] को एजेएट गवर्नर जेनरल और पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ मातमपुर्सीके लिये महलोंमें आये, कुर्सियोंपर दर्बार (१) हुआ; महाराणा चांदीके बड़े सिंहासनपर विराजे. कुछ देर ठहरनेके बाद उक्त दोनों साहिब ज़नानखानहमें सलाम मालूम कराकर कोठी रेज़िडेन्सीको वापस चलेगये. विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ जमादियुस्सानी =.ई० ता० २६ डिसेम्बर] को महलोंके सामने बड़े चौकमें शामियानेके नीचे बड़े जुलूसके साथ शाही दर्बार हुआ, जिसमें बादशाहज़ादीकी तरफ़से खिल्अ़त, हाथी, घोड़ा और ज़ेवर वगैरह सामान कर्नेल लॉरेन्स और टेलर साहिबने पेश किया, तोपोंकी सलामी सर हुई; दर्बार बर्खास्त होकर अंग्रेज़ लोग कोठी रेज़िडेन्सीको गये. इसके बाद रियासती बन्दोबस्तके लिये सलाह होने लगी. आख़िरकार महाराणाकी बाल्यावस्थातक पोलिटिकल एजेएटका उदयपुरमें रहना और चन्द सर्दारों व बड़े अह्लकारोंकी एक कौन्सिल ऑफ़ रिजेन्सीकी सलाहसे राज्यका प्रबन्ध होना क़रार पाया. विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० १ रजब =.ई० १८६२ ता० २ जैन्युअरी] को एजेएट गवर्नर जेनरल तो उदयपुरसे रवानह होगये, और पोलिटिकल एजेएट मेजर टेलर साहिब कौन्सिलके प्रेसिडेएट नियत होकर उदयपुरमें रहे. इस कौन्सिलकी बाबत् एक ख़रीतह बतौर इत्तिलाके पोलिटिकल एजेएटने महाराणा साहिबके नाम लिखा था, जिसकी नक़्ल नीचे दीजाती है:-

खरीतहकी नक़्ल.

॥ २७ ॥ नंबर ॥ श्रीरामजी.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथांने सरब ओपमां बीराजमांन लाअक म्हाराजा धीराज म्हारानाजी श्री संभुसीघजी साहेब ब्हादुर अेतान, मेजर रावरट लवीस टेलर साहेब

---

(१) पेश्तर कर्नेल टॉडके ज़मानहसे ४२ वर्षतक यह क़ाइदह जारी रहा था, कि महाराणा गद्दीपर विराजते और एजेएट गवर्नर जेनरल व पोलिटिकल एजेएट दूसरे सर्दारोंकी तरह गद्दीके सामने फ़र्शपर बैठते, परन्तु वैकुण्ठवासी महाराणाके आख़री अ़ह्दमें इन्हीं लॉरेन्स साहिबके साथ

ब्हादुर ली॥ सलाम मालुम करावसी. अठाका स्मांचार भला हे, आपका सदाभला चाहीजे, अपरंच जोके साहेब अजीमुस्यांन नवाब मुस्तताब मोओला अलकाब लारड गवरनर ब्हादुर मुमालीक हीदको बबाअस सगीरसंन आपके होना तमांम कांम रीआस्त दरबार ऊदेपुरका मारफत पंचाअत मंजुर हुवा, ईस्वास्ते आठ आदमी, उस्मे अेक तो रावतजी श्री बषतसींघजी बेदला, व रावतजी श्री रणजीतसीघजी देवगढ, व म्हांराज श्री हमीरसींघजी भीडर, व रना श्री लालसीघजी गोगुदा, व रावतजी श्री अमरसीघजी भेसरोड्गढ, व कोठारीजी श्री केसरीसीघजी, व मेहेताजी श्री सेरसीघजी, व परोहतजी श्री स्यामनाथजी मुकरर कीअेगअे, सो अे लोग हरअेक मुकदमांत दरबार ऊदेपुरमे बाद तेहेकीकात तजबीज ऊस की मै मीसल मुकदमे ब ईतफाक राअे अेक दुसरेके बमुराद ईस्तस्वाब व सदुर हुकम मुनास्ब हमांरे पास भेज्या करेगे; बसरत मुनास्ब राअे पंचाअत मंजुर होकर हुकम मंजुरी वासते ईजराअेकार ईस मेहेकमेसे होजाया करेगा. ईस्वास्ते ये परीता बतोर ईतलाअे षीदमत मुबारीकमे भेजकर लीषता हुं, के अगर कीसी अमर रीआस्तमें आपको ईतला दरकार हो, तो याहासे आपको भी ईतला दीजावेगी, ओर मीजाज मुबारीक की पुसीका स्मांचार हमेसे ली॥ ता॥ ८ मांहे फरवरी सन १८६२ ई॥ मी॥ म्हा सुद ९ स्मत १९१८ मुकाम कोठी ऊदेपुर रोज सनीसर वार. (Sd.) R. L. Taylor.

ملاحظه شد

जोकि इस कौन्सिलके नियत होनेसे रियासतको फ़ायदह पहुंचना चाहिये था, लेकिन् बर्ख़िलाफ़ उसके इन लोगोंने दो बातोंमें अपनी कारगुज़ारी और अक़्लमन्दी ख़र्च की, याने अव्वल तो रियासतके ख़ज़ानह और ख़ालिसहकी ज़मीनसे अपना और अपने दोस्तों व रिश्तहदारोंका घर बनाना और दूसरा आपसकी पहिली अदावतोंका एवज़ लेना; क्योंकि हरएक मामूली या ग़ैर मामूली तह्रीर बिना हुक्म इन लोगों के जारी नहीं होसक्ती थी, और न इसवक़ इन लोगोंको कोई रोकने वाला या इनकी तज्वीज़का रद्दियह करने वाला था, जो मन माना सो किया. अह्लकार लोग सर्दारों से दबगये, और बाज़ बाज़ उनमेंसे सर्दारोंके साथ मिलकर अपना भी मत्लब बनाने लगे. अल्बतह ऊपर लिखे हुए मुसाहिबोंमेंसे तीन शख़्स याने कोठारी केसरीसिंह, महता शेरसिंह और पुरोहित श्यामनाथ महाराणाके ख़ैरख़्वाह, सर्कारी हुक़ूक़की हिफ़ाज़त करने,

---

कुर्सियोंका दर्बार होना क़रार पाया, जिसमें महाराणा चांदीके बड़े सिंहासनपर और अंग्रेज़ ऑफ़िसर, रियासती सर्दार, चारण और अह्लकार वग़ैरह कुर्सियोंपर बैठे. यह दूसरा दर्बार था, जो कुर्सियोंपर हुआ.

और अस्ली बातोंको ज़ाहिर करने वाले, अक़्मन्द व सच्चे आदमी थे, मगर महता शेरसिंहको तो इसवक़ उसके लालची बेटे सवाईसिंहने बदनाम किया, और कोठारी केसरीसिंह व पुरोहित श्यामनाथको दूसरे लोगोंके खिलाफ़ सच्ची आदतें इख़्तियार करनेके कारण बहुतसा नुक्सान उठाना पड़ा, बल्कि उसके बिगाड़नेमें जहांतक होसका लोगोंने कोताही नहीं की, जिसका ज़िक्र आगे लिखा जायेगा. इस कौन्सिलके पंच सर्दारोंमें अव्वल राय देनेवाला देवगढ़का रावत् रणजीतसिंह था, कि जिसके मौजूद न होनेकी हालतमें अदालतकी कुल कार्रवाई बन्द रहती थी, और वह सुब्हसे शामतक पूजा पाठ, खाने पीने व आराम करनेसे फ़ुर्सत नहीं पाता था, कि अदालत में आकर बैठे; हां जब अदालती काम ज़ियादह चढ़जानेके सबब अह्लकार लोगों की रिपोर्टों और रिआयाकी फ़र्यादोंसे दिक़ होकर सप्ताहमें एक या दो दिन सौ दो सौ आदमियोंके लवाज़िमहसे शामकेवक़ कचहरीमें जाता भी, तो सिर्फ़ एक या दो घण्टा ठहरकर अपने दो चार तरफ़दारोंका काम बनानेके बाद वापस डेरेपर चलाआता. अगर्चि यह शरूस उस ज़मानहमें अव्वल दरजेका अक्लमन्द मानागया था, लेकिन् पाठक लोग खयाल करसक्ते हैं, कि महीनेमें सिर्फ़ दो या चार बार अदालतमें जाना और बे-पर्वाईके साथ कुछ देर ठहरकर वापस चलाआना ऐसी बड़ी रियासतके प्रबन्ध और अदालती इन्साफ़के लिये कब काफ़ी होसक्ता था. आख़रकार उसकी कम फ़ुर्सती और काहिलीने उसको अपनी अक्लमन्दीसे नामवरी हासिल न करने दी. भींडरका महाराज हमीरसिंह, जो अपनी उदारतामें प्रसिद्ध था, वह जगतप्रिय और मिलनसार होनेके सिवा महाराणाका खैरख्वाह भी था, लेकिन् पान्सलके शक्तावत लछमणसिंह (लक्ष्मणसिंह) और काम्दार रखबदास (ऋषभदास) महाजनपर भरोसा करलेनेसे बहुतसी बातोंमें उसे बद-नामी उठानी पड़ी. इन सब सर्दारोंमें बेदलेका राव बख़्तसिंह बड़ा अक्लमन्द व होश्यार था, जो मेम्बरोंकी एक सम्मति न देखकर सबके शामिल और सबसे जुदा रहनेके अला-वह हरएक मुआमलहमें सलाहके वक़ भी ऐसी बात कहता, कि जिसका मत्लब हर तरफ़ लग सके; और इसी अक्लमन्दीके सबब वह महाराणा व पोलिटिकल एजेण्टका मोतबर सलाहकार बना रहा. अगर यह कौन्सिली लोग अपना अपना मत्लब तो महा-राणा साहिबको इख़्तियार हासिल होनेपर अर्ज़ करके निकालते, जोकि संभव था, और इसवक़ रियासतके हुकूक़ बचानेकी कोशिश करते, तो कौन्सिलकी कभी बदनामी न होती; लेकिन् ग़रीब लोग तो रोते रहे और ज़बर्दस्तोंने ऐसा .एवज़ लिया, कि जिसके मिलनेका उन्हें ख़्वाबमें भी खयाल न था. सर्दारोंने तलवार बन्दी व ज़मानतके रुपये, जो ख़ज़ानहमें बे .उज़ दाख़िल कराये थे वापस लेलिये, और जिन लोगोंकी जागीरें संगीन क़ुसूरोंपर ज़ब्त

हुई थीं वापस दिलादी गई. जोकि मालिकको जागीरोंके देनेमें इख्तियार है वेसाही लेनेमें भी है, इस हालतमें कौन्सिलको ऐसे मुश्त्रामलोंमें हाथ डालना ना मुनासिब था, लेकिन् यहां मत्लबको छोड़कर वाजिब और गैर वाजिबको कौन देखता था. इसी ज़मानहमें पंचायतसे यह तजूवीज़ हुई, कि ठिकाना लावा याने सर्दारगढ़ शक्तावत चत्रसिंहको वापस दिलायाजावे, और ठाकुर मनोहरसिंह डोडियाको समझाया गया, कि सर्दारगढ़की .एवज़ तुमको खैरोदा दिलाया जावेगा. इसपर उसने मन्ज़ूर न करके जवाब दिया, कि अगर्चि ज़मीन हमेशह ज़बर्दस्तोंकी होती है, लेकिन् अपनी बापोतीका ठिकाना छोड़कर बे .इज़्ज़तीकी बदनामी उठाने से मरना बिह्तर है, परन्तु यहां उसकी कौन सुनता था ? कोठारी केसरी-सिंहको यह बात नागुवार गुज़री, और महाराणा साहिबने बे इख्तियार और कम उम्र होनेपर भी मनोहरसिंहको खानगी तहरीरके साथ जेनरल लॉरेंस साहिबके पास जानेका हुक्म दिया, और कोठारी केसरीसिंहने भी खूब मदद दी. मनोहरसिंह उदयपुरसे रवानह होकर एजेएट गवर्नर जेनरलके पास आबूपर पहुंचा. उक्त साहिबने पंच सर्दारोंका फ़ैसलह रद्द करके ठाकुर मनोहरसिंहको अपनी जागीरपर बहाल रक्खा, और इसी तज्वीज़के मुवाफ़िक़ पंच सर्दारोंको भी तामील करनी पड़ी.

अब यहांसे महाराणाका तवारीखी हाल फिर शुरू किया जाता है, जिसके साथ पंच सर्दारोंका हाल भी मिला हुआ है. विक्रमी १९१८ माघ कृष्ण १ [हि० १२७८ ता० १६ रजब = .ई० १८६२ ता० १७ जैन्युअरी] को बड़ी धूमधाम के साथ महाराणाका राज्याभिषेकोत्सव हुआ, जिसको मैं (कविराजा श्यामलदास) ने अपनी आंखोंसे देखा था. जबकि महाराणा साहिब दस्तूरके मुवाफ़िक़ रायआंगन के पूर्वी दालानमें गद्दीपर विराजे, उसवक़्त .इज़्ज़तदार दर्बारी लोगोंका ऐसा भारी हुजूम था, कि नज़्र दिखलानातक लोगोंको मुश्किल होगया, बल्कि गणेश ड्योढ़ीसे महाराणा साहिबकी गद्दीतक पहुंचनेको रास्तह मिलना भी कठिन था. इस जल्सेके बाद मातमी दस्तूरोंका खातिमह हुआ, और विक्रमी माघ कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रजब = .ई० ता० १८ जैन्युअरी] को महाराणा श्री एकलिंगेश्वरके दर्शनोंको पधारे, जहां मन्दिरसे दस्तूरके मुवाफ़िक़ उन्हें तलवार मिली. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रमज़ान = .ई० ता० ८ मार्च] को पोलिटिकल एजेएट मेजर टेलर विलायत जानेकी रुख़्सती मुलाक़ात करनेको महाराणा साहिबके पास आये. टेलर साहिबका यह थोड़ासा ज़मानह मेवाड़की रियासतके लिये बड़ा तअ़-ज्जुबके लाइक़ गुज़रा, क्योंकि उक्त पोलिटिकल एजेएटने कुल इख़्तियारात पंच सर्दारों

को सौंपदिये थे, और जा व बेजा जो उनके मुंहसे निकलता उसीको मन्जूर करलेते; रियासतके हुकूकोंकी तरफ़ बिल्कुल ख़याल नहीं किया. टेलर साहिबके ज़मानहकी इस ख़राबीको ईडन साहिबने आकर रोका, जिसका ज़िक्र आगे लिखाजावेगा. कौन्सिलके इन लोगोंने रियासती इन्तिज़ामको छोड़कर लालच व अदावतको ही अपना ख़ास काम समझलिया था. महता शेरसिंहसे क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ जो ३००००० रुपया दण्डका महाराणा स्वरूपसिंहने लिया था वह इसवक़ उसके बेटे सवाईसिंहने ख़ज़ानहसे वापस लेलिया. अगर्चि इन रुपयोंके लेनेसे शेरसिंहने तो इन्कार किया था, लेकिन् सवाईसिंहने अपने बापकी नौकरीको धब्बा लगानेके लिये यह काम किया. क़दीम ज़मानहसे यहांके प्रधान लोग राज्यमें इस प्रकारका दण्ड भरना अपने ऊपर एक फ़र्ज़ समझते थे. हक़ीक़तमें यह रवाज कुल राजपूतानहमें राइज है, क्योंकि अपने उह्देपर रहकर मालिककी मिहर्बानीसे लाखों रुपये कमाते और एकट्ठा करते हैं, जिसमें उह्दे से अलग किये जानेकी हालतमें दण्ड देना बेजा नहीं समझते. यह पहिला ही मौक़ा था, कि महाराणाकी बेइख़्तियारीकी हालतमें प्रधानने दण्डका रुपया ख़ज़ानहसे वापस लिया. इन रुपयोंका वापस लेना शेरसिंहकी बदनामी या नेकनामी चाहे कुछ ही समझलीजावे, परन्तु इसमें ज़ियादहतर उसके बेटे सवाईसिंहका कुसूर है, वर्नह इस प्रधानने तो .उम्र भर अपने मालिककी नौकरीमें कभी बेईमानी नहीं की. अल्बत्तह आपसकी अदावत के सबब अपने मुख़ालिफ़ोंसे बदला लेनेमें शेरसिंह भी कम न था. इसी तरह सर्दारोंने भी ख़ज़ानह और मुल्कको ख़ूब लूटा.

पाठक लोग यह न समझें कि जो कुछ मैंने बयान किया है वह अपने ही ख़यालसे किया है, बरन उनको पोलिटिकल एजेएटकी रिपोर्टके देखनेसे, जिसका ख़ुलासह मौक़ेपर दर्ज किया जायेगा, मालूम होगा, कि उन्होंने इस विषयमें अपनी क्या राय ज़ाहिर की है. महता गोपालदासपर यह तुहमत लगाई गई थी, कि महाराणा स्वरूपसिंहके साथ जो सती हुई उसमें उसीने मदद दी है. इसपर उक्त महताने उदयपुरसे भागकर कोठारियामें पनाह ली. उसको आपसकी अदावतसे जान व .इज़्ज़तका बड़ा ख़ौफ़ होगया था. इधर सुन्दरनाथ पुरोहित वगैरह ख़ानगी लोग महाराणाके मुसाहिब बनकर हुक्म चलाने लगे, अलावह इस के ज़नानी ड्योढ़ीसे जुदेही हुक्म जारी होते थे. मेजर टेलर साहिब तो इस इन्तिज़ाम को इसी हालतमें छोड़कर विलायतको चलेगये, और विक्रमी १९१९ चैत्र शुक्ल ६ [हि० १२७८ ता० २० शव्वाल = .ई० १८६२ ता० २० एप्रिल] को कर्नेल ईडन साहिब मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट नियत होकर उदयपुरमें आये. इन्होंने इन्तिज़ामकी यह हालत देखकर मतलबी लोगोंकी कार्रवाइयोंको रोकना चाहा. कोठारी केसरीसिंहने साहिबका

यह नेक मन्शा मालूम करके खानगी तौरपर कुल हाल उनसे कहदिया, और जब मुसाहिब लोग किसीको ज़मीन जागीर वगैरह दिलाना चाहते तो उस हालतमें भी यह खैरख्वाह प्रधान पोशीदह तौरसे साहिबको अस्ली हाल कहकर ऐसी कार्रवाइयोंको रोकता रहा. इसपर बहुतसे लोग रियासतमेंसे केसरीसिंहका क़दम उखेड़नेकी कोशिश करने लगे, और पुरोहित सुन्दरनाथको उदयपुरसे निकलवादिया. ईडन साहिबको लोगोंने यह बहकाया, कि कोठारी केसरीसिंहने सर्कारी २०००००) रुपया ग़बन किया है.

इसी अरसहमें विक्रमी श्रावण कृष्ण १२ [हि० १२७९ ता० २५ मुहर्रम = ई० ता० २३ जुलाई] को सलूंबरके रावत् केसरीसिंहके मरनेकी ख़बर मिलनेपर महता अजीतसिंह और पुरोहित श्यामनाथ सलूंबर भेजेगये. इस समय केसरीसिंहका नज़्दीकी रिश्तहदार और हक़दार कुराबड़का रावत् ईश्वरीसिंह सलूंबरमें मौजूद था, उसने गद्दीपर बैठनेसे इन्कार किया, तब बेमालीके जागीरदार ज़ालिमसिंह वगैरह लोगोंने बंबोराके रावत् जोधसिंहको केसरीसिंहका दत्तक बनादिया, लेकिन् पीछेसे ईश्वरीसिंह ने उदयपुरमें आकर अपनी हक़दारीका दावा पेश किया, और इसी तरह चावंड, भदेसर व भैंसरोड़के जागीरदारोंने भी अपना अपना हक़ ज़ाहिर किया, और कौन्सिल से भदेसरका रावत् भोपालसिंह सलूंबरका हक़दार मानागया, लेकिन् जोधसिंह सलूंबरपर क़ाबिज़ होगया था, इसलिये उसको साबित रखनेके लिये मेवाड़के अक्सर सर्दारोंकी दर्ख्वास्तें गुज़रीं, जिससे दावेदार (भोपालसिंह) की हक़रसी मुल्तवी रक्खीगई.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब खानगी तौरपर रेज़िडेन्सीकी कोठीको पधारे उसवक्त डॉक्टरके कहनेसे महाराणा साहिबने फ़र्शके नीचे जूतियां उतारदीं, फिर महलोंमें वापस आनेपर इस बातका चर्चा फैला; अक्सर लोगोंने साहिब एजेण्टके कानमें यह बात भरी कि कोठारी केसरीसिंहकी प्राइवेट सलाहपर महाराणा चलते हैं, और उसकी निस्बत २०००००) रुपया ग़बन करनेकी शिकायत पहिलेही हो चुकी थी; इस-लिये साहिब एजेण्टके हुक्मसे विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ता० ९ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २ नोवेम्बर] को केसरीसिंह प्रधानेसे ख़ारिज करदियागया. इसवक्त कुल पंच सर्दारोंके आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी चल रही थी. महता अजीतसिंहको चन्द शिकायतोंके सबब चोरी व डकैतीका बन्दोबस्त करनेके वास्ते मेवाड़में भेज-दिया. वहां उसने धाड़ा और चोरी रोकनेके लिये मुज्रिमोंको सख़्त सज़ा दीजानेकी

दर्ख्वास्त की, जिसपर पंचसर्दारोंने उसे जानतककी सज़ा देनेका इस्तियार लिख-भेजा. अगर्चि अजीतसिंह खुद तो नेक तबीअत शख्स था, लेकिन् जिसपर वह एतिबार करलेता उसकी सलाहपर बिना विचार किये फ़ौरन् अमल करबैठता था. उसने ज़ालिम आदमियोंकी सलाहसे दो बावरियोंको जानसे मरवाडाला, और बीस तीस आदमियोंको बहुतसा पिटवाया, यहांतक कि किसीका हाथ व पांव तुड़वा डाला और किसीकी आंख फुड़वा डाली. जब मैं (कविराजा श्यामलदास) उससे मिलने के लिये चित्तौड़गढ़पर गया, तो इस सख्त कार्रवाईको देखकर मैंने उसे सलाहके तौरपर कहा, कि इसका नतीजह तुम्हारे हक़में बहुत ख़राब होगा, जिसपर उसने उपरोक्त मुजिमोंके कुसूर बयान किये, जो बेशक उसी सख्त सज़ाके लाइक़ थे; और बाबा चन्दसिंहकी कार्रवाईका भी उदाहरण दिया, जो उसने विक्रमी १९१६ [हि० १२७६ = ई० १८५९] में खैराड़के कई मीनोंको तोपसे उड़वादेनेमें की थी. मैंने कहा, कि वह ज़मानह महाराणा स्वरूपसिंहकी खुदमुख्तारीका था, और इसवक्त आईनी बादशाहतकी तरफ़का इन्तिज़ाम है. इसी तरह मेरे और उसके आपसमें कई दलीलें होती रहीं, लेकिन् यह बहस ख़ानगी और दोस्तानह तौरकी थी. अख़ीरमें मैंने कहा, कि इसका जो नतीजह पैदा हो, उसे देखकर मेरी बातको याद करना. मेरे इस कहनेका इतना असर तो ज़रूर हुआ, कि मुजिमोंपर जो मारपीट और सख्ती होती थी वह उसवक्तसे बन्द कीगई. मेरे कहनेके दो दिन पीछे उदयपुरसे भी यही हुक्म आया, कि मुजिमोंपर सख्ती नहो, तब अजीतसिंहने मेरी बातको ठीक जानकर मुझे कहा, कि सर्कारी तहरीरके अलावह मुझको ख़ानगी तौरपर ख़बर मिली है, कि पोलिटिकल एजेण्ट मुझसे बहुत नाराज़ हैं, अब तुम उदयपुर जातेहो, वहां मेरे पिता शेरसिंहसे कहना कि मुझे उदयपुर जल्द बुला लेवें, तो मैं पोलिटिकल एजेण्टसे मिलकर सफ़ाई करलूं. मैंने कहा, कि मेरे पहुंचनेसे पहिले ही तुम वहां बुलाये जाओगे. ईश्वरको मेरी ख़याली बातका सहीह करना मन्ज़ूर था, दूसरे ही रोज़ अजीतसिंहकी तलबीका हुक्म आया. वह फ़ौरन् उदयपुर पहुंचा, उसीवक्त पोलिटिकल एजेण्टने बुलाकर खुद उसके इज़्हार लिये. आख़रकार दो तीन रोज़के बाद भागकर उसने सर्दारोंके ठिकानेमें पनाह ली, और पंच सर्दारोंने उसकी बरिय्यतके लिये बहुत कुछ उज़्र पेश किये, जिससे साहिब को इस विषयमें पूरा पूरा शक होगया, कि वह मुसाहिबोंकी साज़िशसे भागगया. इसी तरह कोठारी केसरीसिंहपर २०००००) रुपया गबन करनेका जुर्म सच्चा समझकर प्रधाने से बरतरफ़ करनेके अलावह उसको क़ैद करवादिया. केसरीसिंहने कहा, कि यदि मैं अपने मालिकका सच्चा खैरख्वाह और ईमानदार हूं, तो ये कुल झूठी बातें अख़ीर

में रह होंगी. हक़ीक़तमें केसरीसिंह मालिकका पूरा ख़ैरख़्वाह था, उसने लोगोंको जागीरें मिलना इस बातपर रोका था, कि जागीर देना मालिकका काम है, जो मालिक के जवान होने व इख़्तियार मिलनेपर मिलसक्ती हैं. इस बातपर अक्सर लोगोंने केसरीसिंहको ज़क देकर मालिककी ख़ैरख़्वाहीसे हटाना चाहा. अगर्चि इसवक्त महाराणा साहिब कम उम्र थे, लेकिन् ख़ैरख़्वाह कोठारीपर जाल गिरनेसे मुसाहिबोंपर बहुत नाराज़ हुए. इन लोगोंने आइन्दहके ख़ौफ़से महाराणा साहिबको ख़ुश करनेके लिये कोठारीकी बरिय्यतके बारेमें पोलिटिकल एजेएटके सामने कई दलीलें पेश कीं, मगर इस दुतरफ़ी कार्रवाईसे पोलिटिकल एजेएट और भी बिगड़ा, और कोठारीको शहरसे निकालदेनेका हुक्म देदिया. तब वह एकलिंगेश्वरकी पुरीमें जा रहा. पोलिटिकल एजेएटसे दिन ब दिन मुसाहिबोंकी नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ती रही, यहांतक कि महाराणा साहिबको भी इन लोगोंने साहिब एजेएटके बख़िलाफ़ कार्रवाई करानेमें मददगार बनालिया, क्योंकि कोठी रेज़िडेन्सीमें जूतियां उतरवानेके सबब नाराज़गी तो पहिलेसे ही चल रही थी, फिर कर्नेल् ईडन पंच सर्दारोंकी कौन्सिलमें आनेके वक्त सातांकी पायगाहके पास हाथीसे उतरे, जहांतक कि कोई अंग्रेज़ वग़ैरह सवारीपर पहिले कभी नहीं आ सक्ता था; इस बातका भी बड़ा शोर हुआ. फिर साहिब एजेएटने पंडित-लक्ष्मणरावको बुलाकर कौन्सिलका मीरमुन्शी और पंडित गोविन्द-रावको महकमह साइरका दारोग़ह बनाया. इसी तरह मौलवी मुहम्मद निज़ा-मुद्दीनख़ांको दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरह अदालतोंका नाज़िम मुक़र्रर किया. अगर्चि मेवाड़ी अहलकार आपसमें ना इत्तिफ़ाक़ी रखते थे, तोभी विदेशी आदमियोंका बड़े बड़े उहदोंपर मुक़र्रर होना सबको नागुवार गुज़रा, और महाराणा साहिबके हुक्मसे कुल रियासती लोगोंके दस्तख़त होकर एक दर्ख़्वास्त जिसमें पोलिटिकल एजे-एट कर्नेल् ईडनकी शिकायतें लिखी थीं, वाइसरॉयके पास भेजीगई. पोलिटिकल एजेएटने भी मुसाहिबोंके कुसूर चुनकर रिपोर्ट की. बाज़ बाज़ मुसाहिबोंने यह चालाकी की, कि महाराणाके सामने तो पोलिटिकल एजेएटकी शिकायती दर्ख़्वास्तपर ख़ुशीसे दस्तख़त करदिये, और ख़ानगीमें पोलिटिकल एजेएटसे कुल हाल कहकर बयान किया, कि हम लोगोंने महाराणाकी दबागतसे दस्तख़त किये हैं, और एक दूसरेको शिकायतका सर-गिरोह बतलाता था. इन सबबोंसे पोलिटिकल एजेएटको रिपोर्ट करनेमें पूरी मदद मिली.

विक्रमी १९२० ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० १२७९ ता० १७ ज़िल्क़ाद = ई० १८६३ ता० ६ मई] को महाराणा साहिबने अपनी दूसरी शादी (१) सादड़ीके राज कीर्तिसिंहकी बेटीके

(१) इन महाराणाका पहिला विवाह बागौरकी महाराजगीके समयमें गढ़ीके चहुवान रत्नसिंहकी बेटी तख़्तकुंवर बाईके साथ हुआ था.

साथ देलवाड़ा मक़ामपर बड़ी धूमधामके साथ की. विक्रमी प्रथम श्रावण शुक्ल ४ [हि० १२८० ता० ३ सफ़र = .ई० ता० २० जुलाई] को महाराणा स्वरूपसिंहकी बड़ी महाराणी राठौड़ गुलाबकुंवरका देहान्त होगया, और विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० ता० १७ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० २ सेप्टेम्बर] को महाराणा स्वरूपसिंहकी तीसरी महाराणी भटियाणी बीसलपुरी परलोकको सिधारी.

जब रियासती लोगों और पोलिटिकल एजेएटमें ज़ाहिरा नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ी हुई देखी, तो पोलिटिकल एजेएटकी रिपोर्टको लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दने मन्ज़ूर करके पंच सर्दारोंको मौक़ूफ़ करदेने और पोलिटिकल एजेएटको रियासती इन्तिज़ाम करनेका पूरा इख्तियार देदिया. इस बारेमें महाराणाके नाम लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दका हुक्म बज़्रीए ख़रीतह पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ आया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है :–

कर्नेल् विलिअम फ़्रेडेरिक ईडन साहिबके खरीतहकी नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

॥ सीध श्री ऊदेपुर सुभसुथांने सरब ओपमां बीराजमांन लाअक म्हाराजा धीराज म्हारांनाजी साहेब श्री संभुसीघजी बहादुर अेतान राजे श्री करनेल वलीयम फरीडरक ईडन साहेब बहादुर पोलेटीकल अजंट मेवाड ली। : सलाम मालुम करावसी. अठाका स्मांचार भला हे, आपका सदा भला चाहीजे; अपरंच बबाअस चुक पंचसरदारान अगले के हुकम सदरसे वास्ते बंदोबस्त जदीद रीआस्त मेवाडके आगया, ईसवास्ते मेने अेक ईसतहार वास्ते आगाही हर षास व आंमके आजके तारीष ज्यारी कीया हे, नकल ऊसकी वासते ईतलाके षीदमत मुबारीकमे भेजता हुं, ओर ईस चुक पंचसरदारानपर जेसाके मे अफसोस करता हुं दुसरा न करसकेगा, कीसवास्तेके मे जो मेहेनत ऊठाया था सीरफ वासते बेहबुदी व सरस्वजी रीआस्त मेवाडके थी. अब मे बंदोबस्त नया जेसाके मुझे वास्ते बेहेतरी ओर सरस्वजी रीआस्त मेवाडके मालुम होगा तजवीज करके रपोरट सदरको करुंगा. जोके ये बात ईतफाकसे हुईके अेसे तमाम दुनीयांमे नही होती. अगरचे आप षुरदसाल हे तोभी ईतला ईसकी आपको मुनासब ओर लाजम थी सो षीदमत मुबारीकमे कीगई, कोई वकत फुरस्तका देषकर मे हाजर हुंगा ओर षीदमत मुबारीकमे ईतला दुंगा. मुनास्ब हे के आप तवजे तरफ लीषने पढने ओर

सीषने कामकाज रीआस्तके फरमावे, ओर मीजाज मुबारीककी षुसीका स्मांचार हमेसे ली ॥ ता ॥ १९ माहे अगस्त सं ॥ १८६३ ई ॥ मी ॥ दुजा सांवण सुद ५ स्मत १९२० मु ॥ कोठी ऊदेपुर रोज बुधवार.

(Sd.) W. F. Eden,
P. Agent.

ऊपर लिखे हुए ख़रीतहसे पाठक लोगोंको मालूम होगा, कि कोठारी केसरीसिंहने सर्कारी २०००००) रुपया गबन करना चाहा था, लेकिन् इस बातका पूरा पूरा इन्साफ़ होकर गवर्मेएट अंग्रेज़ीको अच्छी तरह यक़ीन होगया, कि ख़ैरख़्वाह और ईमानदार प्रधान कोठारी केसरीसिंहपर यह तुहमत अदावतसे लगाई गई थी, जिसका ज़िक्र मौक़ेपर किया जायेगा. जब पंच सर्दार मौकूफ़ कियेगये, तो उनकी एवज़ महता गोकुलचन्द और पण्डित लक्ष्मणराव मुक़र्रर होकर उस कचहरीका नाम "अहालियान श्री दर्बार राज्य मेवाड़" रक्खा गया; और कुल कार्रवाई पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् ईडन साहिबके हुक्मसे होने लगी. अगर्चि इस वक्त रियासतमें बड़ी बेतर्तीबी होगई थी, और महाराणा साहिबके कम उम्र होनेकी हालतमें रियासती लोगोंने उनके हुक्मसे पोलिटिकल एजेएटकी शिकायतोंपर कमर बांधली थी, तोभी हमारी रायमें पंच सर्दारोंके वक्तकी बनिस्बत अहालियानका समय किसीक़द्र ठीक था, क्योंकि रियासतका नुक्सान कुछ कम होने लगा, और कम उम्र महाराणा साहिबपर भी दबाव रहनेसे ख़राब लोग अपनी सुहबतका असर पहुंचानेमें कुछ दबते रहे. अगर मैं उस समयके रियासती लोगोंका ख़ानगी हाल लिखूं, तो एक बड़ी किताब बन सक्ती है, लेकिन् तवालतके ख़यालसे ऐसे हालातको छोड़कर सिर्फ़ वही बातें लिखता हूं, जो ज़ियादह ज़रूरी और तवारीख़में दर्ज करनेके लाइक़ हैं.

रियासत मेवाड़की रिआया पहिले क़ाइदहकी कार्रवाईसे बिल्कुल नावाक़िफ़ थी, और बाहिरके नये अह्लकारोंने एकदम दबाव डालकर उसे क़ाइदेकी पाबन्द बनाना चाहा, जिससे लोग घबरा गये, और इसी हालतमें रियासती अह्लकार भी

उन्हें भड़काने लगे, कि पोलिटिकल एजेएटकी शिकायत हो. निज़ामतके अफ़्सर मौलवी मुहम्मद निज़ामुद्दीनख़ांने चन्द क़ाइदे अ़दालतोंमें जारी करके शहरमें मनादी करवादी, कि अपने लेनदेनके लिये कोई शख़्स ख़ुद हाकिमानह कार्रवाई अ़मलमें न लावे, जिस किसीको ज़रूरत हो राज्यकीय अ़दालतोंमें नालिश करे. शहरके महाजन और नगरसेठ चंपालालको रियासती लोगोंने यह समझाया, कि आइन्दह लेन देनके मुआमलेमें यदि कोई श्रीदर्बारकी आण दिलावेगा, तो उसको सख़्त सज़ा होगी. ज़मानह क़दीमसे इस रियासतमें यह दस्तूर जारी था, कि लेन देन वग़ैरह किसी मुआमलेमें यदि एक फ़रीक़ महाराणा साहिबकी आण दिला देता, तो दूसरे फ़रीक़को यह मजाज़ नहीं होता, कि उसके बख़िलाफ़ कार्रवाई करसके, चाहे वह सच्चा हो या झूठा; और आणके बख़िलाफ़ बर्ताव करने वाला शख़्स महाराणाके नज़्दीक बड़ा क़ुसूरवार माना जाता था. इसके लिये कई पुरानी मिसालें (१) मौजूद हैं. मौलवी मुहम्मद निज़ामुद्दीनख़ांकी इस कार्रवाईपर लोगोंने महाराणा साहिबको जोश दिलाया, कि वह हुज़ूरकी आण रद्द करता है. इससे महाराणा साहिब भी पोशीदह तौरपर रिआयाके मददगार बनगये. विक्रमी १९२० चैत्र कृष्ण ७ [हि० १२८० ता० २१ शव्वाल = ई० १८६४ ता० ३० मार्च] के दिन उदयपुरके कुल व्यापारी और पेशेवाले हज़ारों लोग अपनी अपनी दूकानें बन्द करके उमराव, सर्दार और मुसाहिबोंको गालियां देते हुए कोठी रेज़िडेन्सीपर पहुंचे. कर्नेल् ईडन साहिबने कोठीसे बाहिर निकलकर इन्हें बहुतेरा समझाया, कि वायवैला बन्द करके अपनी तक्लीफ़का हाल कहो, लेकिन् वहां कौन किसकी सुनता था, हज़ारों आदमियोंका शोर था. बदमआश लोग साहिबको भी गालियां देने लगे. तब पोलिटिकल एजेएटने चन्द सिपाहियों और चपरासियोंको हुक्म दिया, कि इनको हटाओ. वे लोग हटाने लगे; जब न हटे तो आपसमें लकड़ी और पत्थर चलानेकी नौबत पहुंची, जिसमें चन्द व्यापारियोंके लगी, और चपरासी व सिपाहियोंके भी चोट आई. बाज़का बयान है, कि पोलिटिकल एजेएटके भी पत्थर लगा. फिर वे लोग रेज़िडेन्सीसे वापस आकर एजेएट गवर्नर जेनरलके पास फ़र्यादी जानेको निकलकर सहेलियोंकी बाड़ीमें ठहरे, जो नगरसे उत्तर तरफ़ एक मीलके फ़ासिलेपर है. हटनाल

---

(१) लोग यह मिसाल अबतक देते हैं, कि महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके समयमें दशहरेकी सवारीमें एक व्यापारीने सरे बाज़ार अपना रुपया वुसूल करनेके लिये वलीअ़हृद जगत्सिंहको आण दिलादी, जिसपर महाराणाने अपने पुत्रको बेलिहाज़ हुक्म देदिया, कि अपना घोड़ा एकतरफ़ हटाकर सवारीको निकलनेदो, और व्यापारीको ख़ुश करो, आण मुआ़फ़ नहीं होसक्ती. उस बेआईनी ज़मानहमें ग़रीब लोगोंको आणके दस्तूरसे बड़ा सहारा मिलता था.

होने और पेशावाले लोगोंके निकलजानेसे शहरमें सन्नाटासा मालूम होनेलगा. आख़िरकार विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि० ता० २५ शव्वाल = .ई० ता० ३ एप्रिल] को बहुत कुछ समझानेपर लोगोंने दूकानें खोलीं, लेकिन् नगरसेठ आदिकी समझाइश के लिये पूरी पूरी कोशिश होरही थी. विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ शव्वाल = .ई० ता० ६ एप्रिल] को महाराणा साहिब और पोलिटिकल एजेएट सहेलियोंकी बाड़ीमें जाकर शहरकी रिआया और नगरसेठको वहांसे शहरमें लेआये. इसके बाद अदालती कार्रवाईमें कुछ तर्मीम कीगई, और मौलवी निज़ामुद्दीनखांको निकालकर यह बलवा ठंढा कियागया.

विक्रमी १९२१ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२८१ ता० २३ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० २७ ऑगस्ट] के दिन महलोंमें पोलिटिकल एजेएटको दावत दीगई, क्योंकि विक्रमी १९१४ [हि० १२७४ = .ई० १८५७] के गद्रमें महाराणा स्वरूपसिंहकी तरफ़से बेदलाका राव बरूतसिंह अंग्रेज़ोंकी मदद और बाग़ियोंको सज़ा देनेके लिये पोलिटिकल एजेएट शावर्सके साथ तईनात कियागया था, और उसने बमूजिब हुक्म महाराणा साहिबके बड़ी बहादुरी व ख़ैरख़्वाहीके साथ ख़िद्मत अदा की; इसलिये गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी तरफ़से उसके लिये एक तलवार इन्आममें आई, जो पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् ईडनने महाराणा साहिबके दर्बारमें उसे दी. इस खुशीमें महाराणा साहिबने भी उक्त रावको ख़िल्अ़त व मोतियोंकी कंठी .इनायत की, और विक्रमी १९२१ कार्तिक शुक्ल ३ [हि० १२८१ ता० १ जमादियुस्सानी = .ई० १८६४ ता० २ नोवेम्बर] को जगन्नाथरायके मन्दिरके पीछे बड़े स्कूलकी नीव डालीगई, जिसका पूरा पूरा ज़िक्र मौक़ेपर आगे लिखाजावेगा.

विक्रमी माघ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ शअ़बान = ई० १८६५ ता० २७ जैन्युअरी] को मऊ, नीमच और नसीराबादका जेनरल ग्रीन साहिब ज़ाहिरा सैरके लिये और पोशीदह तौरपर शहरके लोगों (१) और पोलिटिकल एजेएटके बीच तक्रार हुई उसकी तह्क़ीक़ातके लिये उदयपुर आया, जिसके लेनेके लिये राजनगर तक सहीह वाला अर्जुनसिंह भेजा गया था. इन दिनों महाराणा साहिबकी आंखमें कुछ तक्लीफ़ थी, इससे मामूली पेश्वाईके लिये महाराणा साहिब खुद न गये, और शिवरतीका महाराज दलसिंह, बेदलाका राव बरूतसिंह, महता गोकुलचन्द और पंडित लक्ष्मणराव वग़ैरह सर्दार व मुसाहिब आहड़के धूलकोटतक पेश्वाई करके

(१) जेनरल ग्रीनने रिआयाकी बग़ावतके हालकी रिपोर्ट तो डेमी आफ़िशिअल की होगी, जिसका हाल ज़ाहिर नहीं हुआ.

लेआये. साहिबके उदयपुरमें दाख़िल होनेपर १३ तोपकी सलामी सर हुई. उक्त साहिब तीन रोज़ उदयपुरमें ठहरकर विक्रमी माघ शुक्ल ३ [हि० ता० २ रमज़ान =.ई० ता० ३० जैन्युअरी] को वापस रवानह होगये.

विक्रमी १९२२ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ता० १४ ज़िल्काद =.ई०ता० ११ एप्रिल] के दिन महाराणा साहिब को यह ख़बर मालूम हुई, कि पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ कर्नेल् ईडन एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह मुक़र्रर हुए, जिनकी जगह विक्रमी वैशाख शुक्ल ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज =.ई० ता० २ मई] को जोधपुरका पोलिटिकल एजेएट निक्सन साहिब डाकमें उदयपुर आया और विक्रमी वैशाख शुक्ल ९ [हि० ता० ८ ज़िल्हिज =.ई०ता० ४ मई] को कर्नेल् ईडन एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह नियत होकर डाकमें उदयपुर आया. महाराणा साहिबने आहड़के धूलकोटतक उक्त साहिबकी पेश्वाई की. इसके बाद विक्रमी वैशाख शुक्ल १५ [हि० ता० १४ ज़िल्हिज =.ई० ता० १० मई] को यह साहिब आबूकी तरफ़ रवानह हुए. साहिबको पहुंचाने के लिये पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह और महता गोकुलचन्द महाराणा साहिबकी तरफ़से भेजेगये थे. कर्नेल् ईडन बड़े नेक दिल और अक्लमन्द थे, जिन्होंने मेवाड़के पोलिटिकल एजेएट रहनेकी हालतमें बड़ी बुर्दबारीके साथ काम किया. अगर यह साहिब अदावत को याद रखने वाले होते, तो मेवाड़की रियासतको बहुत कुछ नुक्सान पहुंचता. अल्बत्तह कोठारी केसरीसिंह व पुरोहित श्यामनाथ और उसके बेटे पद्मनाथका उदयपुरसे निकाला जाना बेजा हुआ; लेकिन् कोठारीके लिये तो उसको लोगोंने धोखा दिया, और पुरोहित श्यामनाथको गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी पॉलिसीमें रोकटोक करनेवाला जानकर निकाला. परन्तु कर्नेल् ईडन क़द्रदान होता, तो वह जिसतरह अपनी अंग्रेज़ी गवर्मेएट की पॉलिसीका फ़र्ज़ अदा कर रहा था उसीतरह पुरोहित श्यामनाथ भी अपनी सच्ची आदतके मुवाफ़िक़ अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही और अपने सुपुर्दगीके कामोंका हक़ अदा करनेपर मुस्तइद था. ख़ैर अब मेवाड़का पोलिटिकल एजेएट निक्सन साहिब मुक़र्रर हुआ, जो अपने आख़री .उहदेतक महाराणा साहिबका शुभचिन्तक व कुल रियासती लोगोंका दोस्त बना रहा.

विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० १८ मई] को उदयपुरके महलोंके दक्षिण कुंवरपदाके महलोंकी जगह "शम्भु निवास" नाम अंग्रेज़ी ढंगका महल बनवानेकी बुनयादका पत्थर महाराणा साहिबके हाथसे डाला गया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ऽऽ [हि० १२८२ ता० २८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १८ नोवेम्बर] को एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ईडन साहिब महाराणा साहिबको इस्ति-

यार देनेके लिये उदयपुरमें आये. राजनगर मक़ामतक बेदलाका राव बख़्तसिंह, और महता गोकुलचन्द् पेश्वाईको गये, और महाराणा साहिबने भी मामूलके मुवाफ़िक़ पेश्वाई की. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ और ६ [हि० ता० १ और ५ रजब = ई० ता० २० और २४ नोवेम्बर] को कर्नेल् ईडन महाराणा साहिबकी मुलाक़ातके लिये राज्यमहलों में आये, और विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रजब = ई० ता० २५ नोवेम्बर] को मिह्मानीके तौर कोठी रेज़िडेन्सीपर उक्त साहिबने महाराणा साहिबको बुलाया. फिर मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ रजब = ई० ता० २६ नोवेम्बर] को महलोंके चौकमें शामियानहके भीतर बड़ा शाहानह दर्बार हुआ; बीचमें महाराणा साहिब चांदी और सोनेके बड़े सिंहासनपर बैठे और उनके दाहिनी तरफ़ चांदीकी कुर्सीपर एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ईडन, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् निक्सन और कोटाके पोलिटिकल एजेण्ट वग़ैरह कुल २९ साहिब लोग सादी कुर्सियोंपर, और उनके आगे १८ रियासतोंके वकील दरजे ब दरजे बैठे, और महाराणा साहिबके बाएं हाथकी तरफ़ कुर्सियोंपर मेवाड़के सर्दार, चारण और अहलकार दरजे ब दरजे बैठे, और त्रिपोलियाके भीतरी चौकसे लेकर बड़ीपोलके बाहिरतक अंग्रेज़ी रिसालह, तोपख़ानह और नीमच तथा खैरवाड़ाकी बटालियन जमाई गई. फिर कर्नेल् ईडनने महाराणा साहिबको मौरूसी इस्तियारातका शुक्रियह दिया, और फिर गवर्नर जेनरल हिन्दका ख़रीतह पढ़ा. इसके पीछे शाही तोपोंकी सलामी सर हुई. महाराणा साहिबने अंग्रेज़ी फ़ौजको १००००) रुपया इन्आमका दिया, इसके पीछे दर्बार बर्ख़ास्त हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रजब = ई० ता० ५ डिसेम्बर] को कर्नेल् ईडन उदयपुरसे रवानह होगये और एक ख़रीतह खैरवाड़ाकी सड़क बनवानेके लिये सलाहके तौर लिखभेजा.

महाराणा साहिबको इस्तियार मिलनेसे पहिले बेमालीका जागीरदार चूंडावत् ज़ालिमसिंह सलूंबरसे उदयपुर आया, जिसकी बातोंपर महाराणा साहिब ज़ियादह भरोसा करते थे. गद्दी नशीनीके प्रारम्भमें पुरोहित सुन्दरनाथ और उसके निकाले-जाने बाद कृष्णगढ़का राठौड़ मोतीसिंह जो महाराणा भीमसिंहकी पर्दायत सह-चरीकी बेटीके पेटसे पैदा हुआ था, और उसकी तनज़ुली होने बाद चूंडावत् ज़ालिम-सिंह महाराणा साहिबका ख़ानगी सलाहकार बना. महाराणा साहिब बड़े ज़िहीन और अक़्लमन्द थे, लेकिन् कम उम्र और साफ़ दिल होनेके सबब ज़ियादह बातचीत करने वाले आदमीको अक़्लमन्द जानकर उसपर भरोसा करलेते, लेकिन् रियासतमें उन लोगोंके मुख़ालिफ़ भी मौजूद थे, जो सलाहकारोंके ऐब दिखलानेमें कमी नहीं करते. इस उलटा पलटी वग़ैरहसे उनको भी बहुत कुछ तजर्बह होताजाता था.

अब मैं (कविराजा श्यामलदास) महाराणा साहिबकी इख़्तियारीकी हालत अपनी देखीहुई बयान करनेसे पहिले एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी रिपोर्टका खुलासह लिखता हूं:-

राजपूतानहके पोलिटिकल प्रबन्धकी रिपोर्ट, बाबत्
सन् १८६५-६६ और १८६६-६७ ई०.
पहिला हिस्सह.

(मेवाड़की कार्रवाईका बयान).

(दफ़ा १५७) मेवाड़-ईसवी १८६१ नोवेम्बर [वि० १९१८ कार्तिक = हि० १२७८ जमादियुल्अव्वल] में परलोकवासी महाराणा स्वरूपसिंहका देहान्त हुआ, और उनके दत्तक पुत्र विद्यमान महाराणा शम्भुसिंह १४ वर्षकी अवस्थामें गद्दीपर विराजे.

(१५८)-उनकी नाबालिग़ीके ज़मानहमें रियासतका कुल प्रबन्ध पोलिटिकल एजेण्टकी निगरानीमें एक रिजेन्सी कौन्सिलके ज़रीएसे होता था.

कौन्सिलकी कार्रवाई ख़राब थी, क्योंकि मेम्बर लोग बनिस्बत रियासती बिहतरी के ज़ियादहतर अपनाही भला चाहते थे, और पोलिटिकल एजेण्टकी बतलाईहुई रियासती सुधार और तरक़्क़ीकी तद्बीरोंको बहुत ही कुछ रोकते और उनके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करते थे; और जो लोग नाबालिग़ रईसकी हाज़िरीमें रहते थे उनकी यह कोशिश थी, कि महाराणाको हर तरहकी तमाशबीनीकी तरफ़ लगाकर उनके मिज़ाजको अपने आधीन करलें.

ईसवी १८६३ [वि० १९२० = हि० १२८०] में यह मुआमलात अख़ीर दरजेको पहुंचे; और एक बड़े अह्लकारकी बदचलनी और दूसरेकी ज़ालिमानह सख़्तीके सबब चन्द बावरियोंके जानसे मारेजानेके कारण गवर्मेण्ट हिन्दने पोलिटिकल एजेण्टको ज़ियादह इख़्तियारात दिये. हक़ीक़तमें वह रियासतके मुख्य मुआमलातका ज़ियादहतर ज़िम्मेदार बना.

इस तज्वीज़से कामयाबी हुई; पहिले जिन सर्दारोंने और दूसरे लोगोंने ब्रिटिश प्रतिनिधिसे बर्ख़िलाफ़ी की थी, वेही उसके मददगार बनगये, यह जानकर, कि गवर्मेण्ट हिन्द पोलिटिकल एजेण्टकी मददगार है; और महाराणा साहिब भी एक बड़ी भारी बीमारीसे निकलकर अपने पासबानोंके चालचलनको अच्छी तरह जानगये, और अपनी अगली भूलोंको क़बूल करके पोलिटिकल एजेण्टकी सलाह और नसीहत मानने लगे, और बड़े विचार व ध्यानके साथ अपनेको नाबालिग़ीके बाद मिलनेवाले इख़्तियारात और ज़िम्मेदारियोंके लाइक़ बनानेकी कोशिश करने लगे.

(१५९)-.ईसवी १८६४ [वि०१९२१ = हि०१२८१] में गर्मियोंके मौसमके बाद महाराणा साहिब और पोलिटिकल एजेंटके उत्तम विचारकी एकतामें ख़लल नहीं आया.

(१६०)-ईसवी १८६५ सेप्टेम्बर [वि० १९२१ आश्विन = हि० १२८२ रबीउस्सानी] में महाराणा साहिबकी नाबालिग़ीकी मीआद पूरी हुई, और नोवेम्बरमें उन्हें बड़ी धूमधामके साथ रियासती इख्तियारात दियेगये.

(१६१)-इस थोड़ेसे अरसेमें पोलिटिकल एजेंटने ईमानदारीके साथ जो काम किया, उसका बयान करना आसान नहीं है, क्योंकि जो काम हमने किये हैं वे ख़ासके लिये नहीं, बल्कि फ़ायदे आमके लिये हैं, और हमारी कोशिश रियासतके पुराने दस्तूरोंको मिटाने के लिये नहीं थी, बरन उनकी ख़ामियां मिटानेके लिये कीगई थी. फ़ौज्दारी और दीवानी का प्रबन्ध अच्छा कियागया, राज्यके अह्लकारोंका ज़ुल्म मिटादिया गया, और माल-गुज़ारीके प्रबन्धमें इसतरह तरक़्क़ी कीगई, कि जो किसीको नागुवार न गुज़रे. लोगोंके जान व मालकी .उम्दह हिफ़ाज़तके लिये सवारोंकी पुलिस क़ाइम कीगई, एक .उम्दह मद्रसेकी बुनयाद डालीगई, जेलख़ानहका नया बन्दोबस्त कियागया, और शिफ़ाख़ानोंकी बहुत कुछ दुरुस्ती कीगई. महकमह तामीरातपर भी पूरी तवज्जुह कीगई; नीमचकी तरफ़ एक .उम्दह पक्की सड़क बनगई; अर्व्वली पहाड़की तरफ़ गाड़ियोंकी आमद रफ्तका रास्तह बनायागया, और शह्रके भीतर व बाहिर आम लोगोंके आरामके लिये अच्छे अच्छे काम कियेगये. सिवा इसके रियासतका ख़र्च किफ़ायतके साथ चलाकर आमदनी का अच्छा बन्दोबस्त कियागया, कि महाराणा साहिबको इख्तियार मिलनेके समय ३००००००) से अधिक रुपया ख़ज़ानहमें था, जो एक वर्षकी आमदनीसे ज़ियादह है.

(१६२)-महाराणा साहिबको इख्तियार मिले १८ महीने हुए जिसमें काम अच्छी तरह चला, लेकिन् किसी किसी बातमें ख़ामियां हैं, जो ख़ामियां कि हरएक रियासतमें होती हैं, जहां सर्कार पूरा पूरा दख़्ल नहीं रखती. मैं यह कहनेको ख़ुश हूं, कि महाराणा साहिब बावुजूद अपने आदमियोंकी रोक टोक होनेके हरएक ज़रूरी कामपर अच्छी तरह दिल लगाते हैं, अगर्चि उनको कभी कभी यह बोझा नागुवार मालूम होता है.

(१६३)-जमा ख़र्चका जो हिसाब तय्यार कियागया उससे मालूम होता है, कि संवत् १९२२ मु० सन् १८६५-६६ .ई० की कुल आमदनी २६६१२७३) रुपया हुई, जिसमें ज़मीनकी आमदनी १७३२०५७), साइरकी आमदनी ४०३७०८), सर्दारोंकी छटूंद १६५६७७), नज़ानह ४७५३२), तलवार बन्दी व अदालती फ़ीस वग़ैरह छोटी छोटी आमदनी मिलाकर ३१२२५८) है; और इसी अरसहमें २६८५७२९) रुपया रियासती ख़र्चमें उठा, अर्थात् आमदनीसे २४४५६) रुपये ज़ियादह लगे, तोभी ख़ज़ानहमें

३००००००) से ज़ियादह जमा है, इसवास्ते इस छोटी रक़मकी कुछ फ़िक्र नहीं. महाराणा साहिब जो होशयार और किफ़ायत शिआर हैं, रियासतके जमा ख़र्चका तख़्मीनह बनाना चाहते हैं. ब्रिटिश गवर्मेण्टके ख़िराज व खैरवाड़ा भील कौर्प्सके अलावह नीचे लिखे मुवाफ़िक़ ख़र्च (१) हुआ हैः- फ़ौज और पुलिसके ख़र्चमें ५१५५८९) रुपया, महकमह तामीरातके सीगेमें १८१२७३) रुपया, और रियासती प्रबन्ध ख़र्च (अदालतों तथा ज़िलोंकी कचहरियों आदिके ख़र्च) में ४५९९५७) रुपया.

(१६४)- पोलिटिकल एजेएट लिखते हैं, कि नीमचके आस पास वाले ज़िलोंमें मेवाड़, टौंक और ग्वालियरकी हदके मिलनेसे बदइन्तिज़ामी होती है. ज़ियादहतर रियासती अहलकारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे मोगिया क़ौम जो तक्लीफ़ देनेवाले और बहादुर हैं, फ़साद करते हैं. जहां दो या ज़ियादह रियासतोंकी हद मिलती है वहां अक्सर ऐसाही होता है. मेजर निक्सन बयान करता है, कि इसमें सर्कारकी दस्तन्दाज़ी होनी चाहिये, लेकिन् मेरी राय नहीं है. जब मैंने फ़ेब्रुअरी महीनेमें उस तरफ़ दौरेपर जाकर देखा, तब नव्वाब टौंकको पुलिसका अच्छा इन्तिज़ाम करनेकी हिदायत की थी, और थोड़ा अरसह हुआ, कि उनकी एक तह्रीर भी अच्छा बन्दोबस्त करनेके मत्लबसे आई है.

मेरा इरादह सेंट्रल इण्डियाके एजेएट गवर्नर जेनरलको लिखनेका है, कि वह जावद नीमचका बन्दोबस्त करें. मेरी दानिस्तमें ऐसा हो तो ठीक है, कि पर्गनह सरोंज, छपरा और पड़ावा लेकर महाराजा सेंधिया उनके एवज़में जावद नीमचमेंसे नीबाहेड़ाके पासका उतनाही हिस्सह नव्वाब टौंकको देदेवें, जिससे ग्वालियर और टौंकमें दोस्ती होकर अहलकारोंको प्रबन्ध करनेमें तक्लीफ़ न हो.

(१६५)- मेवाड़ रियासतका मेरवाड़ेका हिस्सह ईसवी १८२१ [वि० १८७८ = हि० १२३६-३७] से अंग्रेज़ोंके तह्तमें है. इस बारेमें महाराणा साहिबने एक ख़रीतह पोलिटिकल एजेएटके नाम लिख भेजा है, जिसका ज़िक्र इस रिपोर्टके साथ करना ज़ुरूर नहीं है, वह अलहदह लिखा जायेगा.

(१६६)- गुज़श्तह सालमें महाराणा साहिबने एक बहुत बड़ा काम यह किया, कि वे सलूंबरके रावत्की मातमपुर्सीको वहां गये, जो परलोक वासी महाराणा साहिबको मन्ज़ूर न होनेके सबब चूंडावत् फ़िर्क़ेके सर्दार नाराज़गी और दुश्मनी रखते थे.

(१६७)- मेजर निक्सन साहिब इन फ़सादी रईसों और ठाकुरोंके बर्तावको, जैसा-कि वे दर्बारके साथ रखते थे, ठीक बयान करते हैं, कि राजपूतानहकी किसी रियासतमें ऐसे ज़बर्दस्त सर्दार लोग नहीं हैं, जैसे मेवाड़में हैं. इसवक़्तसे पहिले ये लोग रियासती हुक्मको कम मानते थे. मेवाड़में जो बहुतेरी बुराइयां और आफ़तें पाईजाती हैं, वे सब

(१) इनके अलावह कोठार, धर्मखाता, कपड़द्वारा वगैरह कारख़ानेजातका ख़र्च अलहदह है.

इन झगड़ालू व बखेड़िये सर्दारोंकी आज़ादी और मग़रूरीसे हुई हैं.

(१६८)– एजेण्टी हाड़ोतीकी रिपोर्टमें दर्ज है, कि ईसवी १८६० [वि० १९१७ = हि० १२७७] में खेराड़के मीनोंपर दण्ड हुआ था वह इसवक्त महाराणा साहिबने छोड़दिया, जिससे महाराणा साहिबकी क़द्रदानी और उस पर्गनहकी सर्सब्ज़ी है.

(१६९)– मद्रसह जो महाराणा साहिबकी नाबालिग़ीमें खोलागया, अच्छी तरह जारी है, जिसमें ५१३ विद्यार्थी हैं, और उनकी पढ़ाईका प्रबन्ध भी उम्दह है. पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहसे महाराणा साहिबने एक मद्रसह लड़कियोंका भी खोला है, जिसमें ५१ लड़कियां पढ़ती हैं. इससे इसकी ज़ियादह तरक़ी होना दिखाई देता है.

(१७०)– दवाईख़ानह और जेलख़ानहका भी उम्दह इन्तिज़ाम कियागया है.

(१७१)– पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेण्ट याने कारख़ानह तामीरातमें, जो ख़ास व आमके फ़ायदहके वास्ते है, महाराणा साहिबने बड़ी फ़य्याज़ी और सख़ावत ज़ाहिर की है. नीमच और नसीराबादकी सड़कोंके बनानेके वास्ते तीन वर्षके लिये ६०००० रुपया सालानह मुक़र्रर किया है, और अर्व्वली पर्वतकी श्रेणीमेंसे जो रास्तह निकाला गया उसके लिये भी रुपया जमा है. अलावह इसके शहरके अन्दर व बाहिरकी सड़क वगैरहका प्रबन्ध अच्छा कियागया है.

(१७२)– मेवाड़के पहाड़ी ज़िलेके सिवा हुकूमत नहीं माननेवाले जंगली (भील) लोगोंके पर्गने हिन्दुस्तानमें बहुत थोड़े हैं. सिर्फ़ खेरवाड़ाके रास्तेको छोड़कर दूसरी तरफ़ एक मीलभर भी गाड़ी चलनेका रास्तह नहीं है, और न वहां तिजारत व सौदागरीका नाम व निशान है; इस सबबसे सौदागर व मुसाफ़िर लोग उस तरफ़ जाना नहीं चाहते, क्योंकि वहांके बाशिन्दे जो उनके दुश्मन हैं, पोलिटिकल एजेण्ट उन लोगोंकी तादाद २००००० के क़रीब ख़याल करता है, लेकिन् मेरे नज़्दीक वे १५०००० होंगे. उन भीलोंके १६ ख़ानदान हैं, जिनमें मेरे ख़यालसे ३०००० आदमी लड़ाई करनेके लाइक़ हैं. उनके ग्राम जिनको वे पाल बोलते हैं, अलहदह अलहदह पहाड़ोंपर घासकी झोंपड़ियोंमें आबाद हैं. इस तरह जुदे जुदे आबाद होनेका यह मत्लब है, कि उनके गांवको कोई एकदम ख़तरेमें न डाल सके. एक भीलके पकड़ेजानेपर एक दूसरेको ख़बर पहुंचानेके लिये वे लोग किलकारी करते हैं, और दुश्मनपर हमलह करनेको गिरोहके गिरोह हथियार लेकर निकल आते हैं, और इस पहाड़ी हिस्सहका सुपरिन्टेन्डेण्ट वहांकी निगरानी करता है, गोकि उनके दीवानी मुआमले महाराणा साहिबके आधीन हैं (१). थोड़ीसी मालगुज़ारी

---

(१) क़दामतसे तो नहीं लेकिन् पिछले वक़्तसे ज़िले भोमटमें ऐसी कार्रवाई हुई है, वर्नह दूसरे पहाड़ी भीलोंपर फ़ौज्दारी व दीवानीका इख़्तियार महाराणा साहिबका है.

लेनेके सिवा महाराणा साहिबके अह्लकार उन लोगोंपर दस्तन्दाज़ी नहीं करते, हरएक ख़ानदानका सर्दार उनपर हुकूमत करता है, उनमेंसे पानड्वा, ओगना, जूड़ा, मेरपुर और दूसरे भी ताक़तवर हैं, जिन्होंने कचह्रियां मुक़र्रर की हैं और उन कचह्रियोंमें उनके दस्तूरके मुवाफ़िक़ अदब आदाब जारी हैं, फ़क़त.
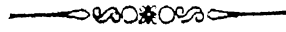
इस रिपोर्टके ज़मानहका बाक़ी हाल इस तरहपर है, कि महाराणा साहिबको इख़्तियार मिलने बाद कचह्री अहालियानके नामसे कुल रियासती कारोबार होता था. महाराणा साहिबको अपनी बे इख़्तियारीके ज़मानहमें बहुत कुछ तजर्बह हो चुका था, जिससे वह मेजर निक्सनकी रायके मुताबिक़ कार्रवाई करते थे.

विक्रमी १९२३ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० १२८३ ता० २१ सफ़र = .ई० १८६६ ता० ५ जुलाई] को कचह्री अहालियानके .एवज़ ख़ास कचह्री मुक़र्रर हुई. महाराणा साहिब अ़क्लमन्द और होश्यार थे, ताहम बाल्यावस्थाके कारण ख़ुद मत्लबी लोगोंके जालमें फंसकर शराब और ऐश व इश्रतकी तरफ़ ख़्वाहिश बढ़ाने लगे. इन दिनों बेमालीका जागीरदार ज़ालिमसिंह उनके दिलका पेश्वा होरहा था, इस शख़्सने यह कोशिश करना शुरू किया, कि महाराणा साहिब सलूंबरके रावत् जोधसिंहको वहां जाकर ले आवें; यह बात एक अ़रसहसे बह्समें पड़ी हुई थी, जिसका ज़िक्र हम महाराणा स्वरूपसिंहके हालमें लिख चुके हैं. इस तक्रारका मिटना महाराणा साहिबकी दानाई और ज़ालिमसिंहकी नेक कोशिशोंमें शुमार करना चाहिये. हिन्दुस्तानभरकी रियासतोंमें जो इज़्ज़तें महाराणा साहिब अपने सर्दारोंकी करते हैं वैसी किसी रियासतमें नहीं कीजातीं; बाज़ बर्ताव इस (मेवाड़) रियासतके ऐसे हैं, कि जो बराबर वाले रईसोंसे भी नहीं होते. हक़ीक़तमें ये इज़्ज़तें उन ख़िद्मतोंके .एवज़ मिली हैं, जो मेवाड़के सर्दारोंने इज़्ज़त, जान और माल कई पीढ़ियोंतक अपने मालिकोंपर निछावर किये, इससे उनको ऐसी .इज़्ज़तोंका मिलना वाजिब था; लेकिन् जिन सर्दारोंको इतने दरजहपर बढ़ाया गया वे अपने मालिकके यहांतक इह्सानमन्द थे, कि किसी तरह अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही करके उनकी ख़ाविन्दीके क़र्ज़का सूद अदा करें. अगर किसी क़ुसूरमें किसीके बापको महाराणा साहिबने मारडाला तथा देशसे निकालदिया, तोभी उसका बेटा अपने मालिकपर जान, माल और इज़्ज़त निछावर करनेको तय्यार रहा. अक्सर ऐसा भी हुआ है, कि अपने मालिककी बदख़्वाही करनेपर बापको बेटे और बेटेको बापने मारतक डाला है. ऐसे दृष्टान्त इसी तवारीख़में मौजूद हैं. अगर कोई सर्दार महाराणा साहिबकी किसी बड़ी ख़िद्मतको नहीं पहुंचता, तो वह यह विचारकर, कि महाराणा साहिब हमारी जैसी .इज़्ज़त

करते हैं उसका एवज़ में कुछ न देसका, शर्मिन्दगीकी हालतमें ज़िन्दगीभर अपना फ़र्ज़ अदा करनेकी कोशिशमें लगारहता; बर तक़्दीर कोई ख़ैरख़्वाहीका काम न बन-पड़ा, तो मरते दमतक यह पछतावा उसके दिलसे दूर नहीं होता, लेकिन् इसवक़्त उसके बर्ख़िलाफ़ नज़र आता है. यह बात मैंने सर्दारोंकी शुभचिन्तकीके लिये लिखी है, कि वे अपने बाप दादोंका चाल चलन सुनकर उसी क़दीम रास्तेको इख़्तियार करें. जिससे उनके बाप दादोंकी बहादुरी, ख़ैरख़्वाही और नेकनामियोंका जीर्णोद्धार होता रहे, वर्नह एक अरसहके बाद मेरे इस लेखको पढ़कर पछतावा तो ज़रूर करेंगे.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ता० १७ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को महाराणा सलूंबरके रावत्की मातमपुर्सीके लिये उदयपुरसे रवानह होकर विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २२ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १ नोवेम्बर] को सलूंबर पहुंचे. रावत् जोधसिंहने अपने मालिकमहाराणा साहिबके अदब आ-दाब और मिह्मानदारी व नज़ निछावरमें हज़ारों रुपया ख़र्च किया. मेवाड़में सलूंबर की दावत मश्हूर है, जिसमें भी अपने मालिकका मिहर्बानीके साथ तक्रार मिटाकर .इज़्ज़त बख़्शनेके मत्लबसे पधारना हुआ, जिससे रावत् जोधसिंहको शुरूमें ही बड़ी नेकनामी मिली. भला ऐसे मौक़ेपर मिह्मानदारीमें कमी क्यों होगी! महाराणा साहिब रावत् जोधसिंहको साथ लेकर विक्रमी कार्तिक कृष्ण १४ [हि० ता० २७ जमादियु-स्सानी = .ई० ता० ६ नोवेम्बर] को उदयपुर चले आये. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ रजब = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] को सादड़ीके राज शिवसिंह, सलूंबरके रावत् जोधसिंह, रावत् अमरसिंह और लहसाणी व बंबोरा वालों को महाराणा साहिबने तलवार बंधवादी.

रावत् अमरसिंह (बेमालीके जागीरदार ज़ालिमसिंहका बेटा) जो आमेटके रावत् पृथ्वीसिंहकी गोद बैठगया था, उसको देवगढ़के रावत् रणजीतसिंह वग़ैरहकी मददसे जीलोळा वाले चत्रसिंहने निकाल आमेटपर क़बज़ह करलिया; इसका कुल हाल हम महाराणा स्वरूपसिंहके वृत्तान्तमें लिख चुके हैं. इन दिनों महाराणा साहिब ज़ालिमसिंह (बेमालीवाले) पर मिहर्बान थे, सलूंबरके रावत् जोधसिंहके अर्ज़ करनेपर अमरसिंहको आमेटका रावत् बनाकर तलवार बंधवादी और चत्रसिंहपर बहुत कुछ दबाव डालागया, जिससे इस झगड़ेकी कार्रवाई दोबारह शुरू हुई. आमेटमें रावत् चत्रसिंह और उदयपुर आमेटकी हवेलीमें रावत् अमरसिंह एक ठिकानेके दो हक़दार क़ाइम हुए. इस मुआमलहका एक अरसे बाद फ़ैसलह होकर आमेटपर रा-वत् चत्रसिंह क़ाइम रहा, और अमरसिंहको मेजा, सिंधेर, पचमता वग़ैरह अनुमान

२००००) रुपया आमदनीकी जागीर महाराणा साहिबने अपने ख़ालिसहमेंसे दी, और ८०००) की जायदाद आमेटसे दिलानेका हुक्म दिया, जिसको रावत् चत्रसिंहने भी मन्जूर करलिया; लेकिन् उसने सालियानह नक्द रुपया देना चाहा और अमरसिंहने जागीर लेनेकी दर्ख्वास्त की. यह मुक़द्दमह बहुत दिनोंतक चलताही रहा, कि इसी अ़रसहमें रावत् चत्रसिंहका तो इन्तिक़ाल होगया, और उसका बेटा शिवनाथसिंह कम उ़म्रमें आमेटका रावत् बना. उसवक्त महाराणा सज्जनसिंह साहिबके अ़हदमें पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् इम्पी साहिबके सामने यह क़रार पाया, कि २५००) की जागीर और ५५००) रुपया सालियानह नक्द अमरसिंहको आमेटसे दिलाया जावे. यह मुक़द्दमह बहुत कुछ बह्सके साथ इस ग्रन्थकर्त्ता (कविराजा श्यामलदास) और महता पन्नालाल दोनों सर्कारी मुसाहिब और रावत् अमरसिंहकी रूबकारी होकर तय किया-गया. अब आमेट और मेजा एक नशिस्तपर बैठनेवाले दो उमराव मौजूद हैं.

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ शअ़्बान = .ई० ता० १५ डिसेम्बर] को शिवरतीके महाराज दलसिंहका देहान्त होगया. यह शख़्स साफ़दिल, नेकमिज़ाज और अपने मालिकका ख़ैरख़्वाह था (१). विक्रमी माघ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रमज़ान = .ई० १८६७ ता० ४ फ़ेब्रुअरी] को महोदय पर्वपर महाराणा साहिबने सुवर्ण तुलादान किया. विक्रमी १९२४ मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० १२८४ ता० १ शअ़्बान = .ई० ता० २८ नोवेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ मेजर निक्सन महाराणा साहिबसे रुख़्सत होकर छुट्टीपर विलायत गये.

मैं ऊपर लिख आया हूं, कि पंचसर्दारोंकी मुसाहिबीमें कोठारी केसरीसिंहपर २०००००) रुपया ग़बन करनेका इल्ज़ाम लगाया गया था, इख़्तियार मिलनेपर महा-राणा साहिबको कई ख़याल गुज़रे. अव्वल यह कि जिस शख़्सने तमाम .उम्र ख़ैर-ख़्वाही की है और उसी ख़ैरख़्वाही करनेके ज़मानहमें जो उसके मुख़ालिफ़ बनगये हैं वे लोग इसवक्त उसको नुक्सान पहुंचावेंगे, तो एक अ़रसेतक इस दह्शतसे कोई आदमी अपने मालिककी ख़ैरख़्वाही नहीं करेगा; दूसरे महाराणा साहिब अच्छी तरह जानते थे, कि केसरीसिंहने सर्कारी एक पैसा न तो खुद खाया है और न दूसरोंको खानेदिया, ऐसे आदमीके साथ जो बेइन्साफ़ी हुई उसको मिटाना फ़र्ज़ है; तीसरे महाराणा

---

(१) दलसिंहके तीन पुत्र बड़ा गजसिंह जो अब शिवरतीका महाराज है, दूसरा सूरतसिंह जो दत्तक जानेके कारण महाराज अनोपसिंहकी जगह करजालीका महाराज है, और तीसरे फ़तहसिंह जिनको गजसिंहने अपना क्रमानुयायी मुकर्रर करलिया था और अब मेवाड़के वर्त्तमान महाराणा साहिब हैं.

स्वरूपसिंहके परलोक पधारनेके पीछे रियासती काममें कुछ गड़बड़ होगया था, ज़ियादहतर जमाख़र्चके काममें ख़लल था. इस सबबसे महाराणा साहिबने केसरीसिंहको लाइक़ जानकर प्रधाना देना चाहा, और पोलिटिकल एजेण्टकी मारिफ़त उस इल्ज़ामकी, जो उस (केसरीसिंह) पर लगायागया था, अच्छीतरह तह्क़ीक़ात कराई गई, जिससे अस्ली हाल खुलकर वह तुह्मत साफ़ लोगोंकी अ़दावतोंके सबब लगाया जाना मालूम होगया; तब महाराणा साहिबने विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि० ता० १५ शअ्बान = .ई० ता० १२ डिसेम्बर] को अपनी जन्मगांठके दिन कोठारी केसरीसिंहको प्रधानेका ख़िल्अ़त व हाथी इनायत किया, और करजालीके महाराज सूरतसिंह (१), धायभाई बदनमल्ल और पंचोली पद्मनाथको साथ देकर उसे मकानपर पहुंचाया. इस हालकी रिपोर्ट पोलिटिकल एजेण्टने एजेण्ट गवर्नर जेनरलकी मारिफ़त लॉर्ड गवर्नर जेनरल हिन्दको की. और महाराणा साहिबने भी ख़रीतह लिखा, जिसके जवाबमें जो ख़रीते आये, उनकी नक्लें नीचे दर्ज कीजाती हैं:–

कर्नेल् कीटिंग साहिबके ख़रीतहकी नक़्ल.

॥ श्री० ॥

सिद्धिश्री उदयपूर शुभस्थाने सर्वोपमा बिराजमान लायक महाराजा धिराज महारानाजी श्री शंभूसिंहजी बहादुर ऐतान लिखावतु करनेल कीटिंग साहिब बहादुर कम्पेनियन स्टार आफ़ इंडया विकटोरिया क्रास अजंट गवरनर जनरल राजस्थानकी सलाम मालूम होवे. अठाका समाचार भला छै, आपका सदा भला चाहीजे; अपरंच आपनें तारीख़ १२ वीं जनवरी सन १८६८ ई० के ख़रीतेमें मुझे लिखा था, कि कोठारी केसरीसिंहको आपने परधान मुकर्रर किया है, लेकिन सरकारकी मनाहीके सबबसे मैं उसके साथ काम रियासतमें लिखावट न्हीं करसक्ता था. जब मैं उदयपुर आया था, तो

(१) केसरीसिंहको उसके मकानपर पहुंचानेके लिये महाराज गजसिंहका दस्तूर था, लेकिन बीमारीके कारण वह खुद नहीं जासका, और अपनी .एवज़ (अपने भाई) महाराज सूरतसिंहको भिजवादिया.

मैंने आपसे इसकी बाबत कुछ जबानी भी कहा था और फिर करनेल हिचनसन साहिबने मेरे इशारेके बमूजिब इस मुक़द्दमेकी अच्छी तरहसे तह्क़ीक़ात करी और उस्से साहिब मौसूफ़कू खूब साबित हुआ, कि कोठारी केसरीसिंहकू ख़ज़ाना उड़ानेका क़ुसूरवार करनेमें कुछ भूल थी इन सब बातोंकी रिपोर्ट मैंने सरकारमें की, उसके जवाबमें सरकारने कोठारी केसरीसिंहके साथ काम चलाना या न चलाना मेरे अख़तियारमें रखा. जोकि हमेशे मेरा यही चाहना है, कि जहांतक बनसके बडे दरजेके रईसोंकी रियासतका कांम उन्हींकी मरजीके मवाफ़िक होवे, इस मुक़द्दमेमें भी आपकी खुसीके मवाफ़िक कोठारी केसरीसिंहके मुक़र्रर करानेमें कोशिश करनेमें मैंने कुछ कमी न्हीं की; और जो आपने दोस्तीकी राहसे इस बातमें मुझसे पहिले सलाह ली होती, तो आपके मतलब हासिल करने वास्ते मुझकू इतनी तकलीफ न पड़ती. अब इस वक़्से कोठारी केसरीसिंहके साथ, जिसकू आपने अपना परधान पसंद किया है. मैं बहुत खुशीसे लिखावट रखूंगा, और मुझे उम्मेद है, कि वह उन बहुतसी बुराइयों की, जो अभी कुछ २ किसी २ जगह इलाक़े मेवाडमें हैं, सुधारनेमें बहुत कोशिश करेगा; और मिज़ाज मुबारककी ख़ुशीके समाचार हमेसह लिखना फ़रमावसी. तारीख़ १७ वीं नोम्बर सन १८६८ ई०.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

कर्नेल् हैचिन्सन साहिबके ख़रीतहकी नक्ल़.

॥ श्रीरांमजी.

॥ ३३४ ॥ नंबर.

॥ सीधश्री ऊदेपुर सुभसुथांने सरब ओपमां बीराजमान लायक म्हाराजा धीराज म्हाराणाजी श्री संभुसीघजी साहेब बहादुर अेतान करनेल अलकजंडर रास अलीयट हेचीसंन साहेब बहादुर कायम मुकाम पोलेटीकल अजंट मेवाड ली ॥ ० सलाम मालुम करावसी. यांहाके स्मांचार भले हे, आपके सदा भले चाहीये, अपरंच चीठी साहेब

अजंट गवरनर जनरल बहादुर राजस्थान लंबरी ३६८ पीहरफ तारीष १७ माहे नवंबरके साथ अेक षरीता वासते आपके आया हे, जीसके मजमुनसे आपको मालुम होगा के श्री सरकार गवरमीटकी ईजाजतसे कोठारी केसरीसीघजी परधान रीआस्तका बहाली ओहोदे मजकुरपर हुवे हे. ये मुकदमां आपके मरजी माफक षतम होना हमको पुसी हुवा हे, ओर ईसकी मुबारीकबादी आपको हे; ओर मीजाज मुबारीककी पुसीका स्माचार हमेसे ली॥ तारीष २६ माहे नवंबर सन १८६८ ईसवी, मीती मगसर सुद १२ स्मत १९२५ मु॥ कोठी ऊदेपुर रोज बीस्पतवार.

अंग्रेज़ीमें साहिबके दस्तख़त.

इस वर्षके शुरू याने विक्रमी १९२५ ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० १२८५ ता० ३ सफ़र = .ई० १८६८ ता० २६ मई] को मेजर हैचिन्सन क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ मुक़र्रर होकर विलायतसे उदयपुर आगया था. कोठारी केसरीसिंहको प्रधाना मिलनेकी कुल कार्रवाई मेजर निक्सन साहिबकी मारिफ़त हुई थी, जिसका तह्रीरी हुक्म आया वह मेजर हैचिन्सनने भेजा. विक्रमी पौष कृष्ण १२ [हि० ता० २६ शअ्बान = .ई० ता० ११ डिसेम्बर] को कोठारी केसरीसिंहकी हवेलीपर महाराणा ज़नानह समेत तश्रीफ़ लेगये. कोठारीने मिह्मानदारीमें कमी नहीं की.

विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = .ई० १८६८] में बारिश न होनेसे राजपूतानह में बड़ा भारी अकाल पड़ा, इसवास्ते ग़ल्लेका बन्दोबस्त करनेकी फ़िक्र हुई. महाराणा साहिब और पोलिटिकल एजेण्टने कोठारी केसरीसिंहसे कहा, कि ग़ल्ला न मिलनेसे रिआयाकी जान और तुम्हारी कारगुज़ारी बर्बाद होगी. उस शख़्सने उसीदम अपने मकान पर आकर शहरके सब क़िस्मके व्यापारियोंको एकट्ठाकर हुक्म दिया, कि कुल लोग अपनी अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ ग़ल्ला मंगाओ और रुपये पैसेकी जो मदद चाहिये सर्कार से लो. उस (केसरीसिंह) की समझाइशका ख़ूब असर हुआ, व्यापारी लोग लाखों रुपयोंका नाज ले आये जिससे शहरमें अम्न रहा. और जहांतक होसका उसने मुल्क मेवाड़के लिये भी बन्दोबस्त किया.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = .ई० १८६९] में लोगोंने एक और कार्रवाई करके महाराणा साहिबको अपने क़ाबूमें करना चाहा, याने एक सन्यासी फ़क़ीर जो कमल्या तालावमें आ बैठा था उसको करामाती मशहूर किया. महाराणा साहिब भी

नई .उम्र और बड़े बड़े आदमियोंके धोखा देनेसे उस फ़क़ीरके कहनेपर चलने लगे. वह गैबकी और दूसरेके दिलकी बातें कहता था जो एक भी सच्ची नहीं. कुल रियासती लोग उसकी ख़ुशामदमें लगगये. वह कुल कारख़ानोंपर महाराणा साहिबके मुवाफ़िक़ हुक्म भेजकर अपनी ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ चीज़ मंगवा लेता. इसीतरह ख़ज़ानहकी तरफ़ भी हुक्म दिया, लेकिन् कोठारी केसरीसिंहने इन्कार करके कहा, कि यहां महाराणा साहिबके हुक्मकी तामील होती है, उसी एक हुक्मकी तामील करनेमें इन्कार नहीं और दूसरा हुक्म हम नहीं मानते. इसपर वह फ़क़ीर गुस्से होकर बहुत झुंझलाया. कोठारीके दोस्तोंने भी सलाह दी, कि वक्त देखकर चलना चाहिये, लेकिन् उसने कुछ पर्वा न की, और अख़ीरमें वह फ़क़ीर उदयपुरसे निकाला गया, जिसका कुल हाल लिखेजाने से तवालतके सिवा कुछ फ़ायदह नहीं.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८५ = .ई० १८६९] के प्रारम्भमें विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = .ई० १८६८] के अकालका नतीजह ज़ुहूरमें आया, याने बहुतसे ग़रीब लोग फ़ाक़ाकशीसे मरनेलगे. पोलिटिकल एजेएट और कोठारी केसरीसिंहकी सलाहसे महाराणा साहिबने एक बहुत .उम्दह इन्तिज़ाम किया, कि कान्होड़की हवेलीमें एक ऐसा ख़ैरातख़ानह खोला, जिससे हज़ारों आदमियोंकी जान बचगई, याने एक धोबा भरकर बाकली (पानीमें पकाई हुई मक्की) अथवा एक धोबा भरकर भूंगड़ा (भुने हुए चने) जो मांगे उसको देनेका हुक्म होगया, और इस नेक कामके इन्तिज़ामपर महता मोतीरामके बेटे फूलचन्दको तईनात किया. वहां जाकर हुजूम देखने वालोंको महाराणा साहिबकी फ़य्याज़ी और ग़रीब लोगोंकी तक्लीफ़का हाल अच्छीतरह मालूम होसक्ता था. इसी इन्तिज़ामके सबब बेदलाके राव बख़्तसिंहने उदयपुरके रास्तहपर, और महाराज गजसिंह और दूसरे लोगोंने भी जहां मौक़ा देखा भूंगड़ा देना शुरू किया. इसी मिसालके मुताबिक़ चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, और कपासन वग़ैरहके साहूकारोंने भी ख़ैरातख़ानह खोला. विक्रमी १९२६ शुरू वैशाख [हि० १२८५ ज़िल्हिज = ई० १८६९ एप्रिल] से हैज़ा साहिब भी मारे भूखके आखड़े हुए. शहरमें कोई मुहल्ला और गली कूचा ऐसा नहीं था जहां हाहाकार और रोनेका शब्द न हो, जिसे रातको भला चंगा देखा फ़ज्रको नहीं है. शुमारमें २०० आदमी हमेशह मरने लगे, लाशको जलानेमें दोस्त और बिरादरीके लोग किनारा करने लगे, यहांतक कि बाज़ २ शरीफ़ क़ौम ब्राह्मण व महाजनोंके घरोंमें पहरोंतक मुर्दह लाशें पड़ीरहीं रातके वक्त मकानकी छतपरसे देखते तो स्मशानोंकी आगसे पहाड़ोंके दामनतक रौशनी होती दीख पड़ती थी. पीछोला तालाब भी यहांतक ख़ुश्क होगया था, कि

महाराणा साहिब किश्तीके एवज़ जगन्निवाससे ब्रह्मपुरीकी तरफ़ बग्घी सवार होकर जाते थे. तालाबके किनारोंपर अशौच स्नान करने वाले औरत मर्दोंका रात और दिन ऐसा हुजूम रहता था, कि उनका रोना पीटना देखकर सख्तदिल आदमीकी भी आंखोंमें आंसू आने लगते थे. पानीके किनारे कई मुर्दह लाशें पड़ी हुई रहतीं, जिनको कोतवाल शहर गाड़ियोंमें भरवा स्मशानोंमें पहुंचाकर एकट्ठा जलवादेता था. लाश जलाने वालोंको नहानेके लिये पानी सिवा तालाब (पीछोला) के कहीं नहीं मिलता, बाग़ बग़ीचे सूख गये थे, शहरके गिर्दो नवाह कुए बावड़ी भी ख़ाली पड़े थे. तालाबके किनारेपर बेरियां खोदकर शहरके लोग पीनेके लाइक़ पानी लेजाते. सब लोगोंने महाराणा साहिबसे कहा, कि हुज़ूर शहरसे १० या ५ कोस दूर तश्रीफ़ लेजायें, लेकिन् उन्होंने मन्जूर नहीं किया और यह जवाब दिया, कि हम अपनी प्रजाको ऐसी तक्लीफ़ में छोड़कर नहीं जा सक्ते. यह कुल हाल मैंने अपनी आंखसे देखकर उसका बहुतही थोड़ा खुलासह यहां दर्ज किया है. महाराणा साहिब और अह्लकार मुसाहिबोंकी तरफ़ से अच्छा इन्तिज़ाम था, लेकिन् कुद्रती बद इन्तिज़ामीका बन्दोबस्त नहीं होसक्ता. विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० १२८६ ता० ५ रबीउस्सानी = .ई० ता० १५ जुलाई] को बागौरका महाराज समर्थसिंह इसी (हैज़ेकी) बीमारीसे गुज़रगया. उनके कोई औलाद न थी, इसलिये कमल्या वाले सन्यासी, जिसका बयान ऊपर हुआ है, और पुरोहित सुन्दरनाथने महाराज शेरसिंहके चौथे पुत्र सोहनसिंहको उसका क्रमानुयायी बनानेकी कोशिश की, तब बेदलाके राव बख़्तसिंह व कोठारी केसरीसिंहने मना किया, और कहा, कि शक्तिसिंह समर्थसिंहका हक़दार मौजूद है, इस हालतमें ऐसा करना बेफ़ायदह है. अगर सोहनसिंहपर ज़ियादह मर्ज़ी है, तो उसको १००००) की जागीर पेश्तर दी, उसीतरह फिर सर्कारसे जागीर बढ़ादीजिये, लेकिन् उन्हीं ख़ानगी आदमियोंकी सलाहपर अमल होकर बागौरके बन्दोबस्तपर सियाणाका पंवार हमीरसिंह भेजागया. ख़ौफ़ यह था, कि बागौरके क़रीब सोनियाणामें शक्तिसिंह मौजूद है, जो इस ख़बरके सुनतेही क़बज़ह करलेवेगा, तो उसको निकालनेकी कोशिशमें बड़ी ताक़त दर्कार होगी. आख़रकार सोहनसिंहको बागौरका मालिक बनादिया, यह ज़िक्र फिर मौक़ेपर लिखा-जायेगा.

विक्रमी आश्विन कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २१ सेप्टेम्बर] को कर्नेल् हैचिन्सन साहिब अपनी जगहपर वापस गये, और उसी दिन पोलिटिकल एजेण्ट निक्सन साहिबने यहां आकर अपने कामका चार्ज लिया.

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = .ई० १८६९] में बारिश बहुत अच्छी

हुई, मवेशी मरनेसे बची, वह क़ीमती होगई; लेकिन् ग़रीब प्रजाकी तक्लीफ़ अभी-तक दूर नहीं हुई. बारिशके मौसममें नाज पकनेसे पहिले भूखने दौरह किया, जिससे हज़ारों आदमी घरोंके भीतर किंवाड़ लगाकर सोगये, जो फिर कभी न उठे. मैं उन दिनों अपने छोटे भाई ब्रजलालके गुज़रजाने और अठाणाके रावत् दूलहसिंहका इन्तिक़ाल होनेके कारण उदयपुरसे मेवाड़में गया था, चित्तौड़ और अठाणामें लावारिस मुर्दोंको कस्रतके सबब जलानेके एवज़ भंगी घसीटकर गांवसे कुछ दूर डाल आते, जिनकी सड़ी हुई लाशें और हड्डियां देखकर रहम आता था. मैंने अठाणामें कई आदमियोंको लड्डू और रोटियां दिलाईं, जिनको वे लोग बड़ी तेज़ीसे दौड़कर लेते थे; लेकिन् मारे भूखके उनकी यह हालत हुई, कि एक ग्रास मुंहमें और एक हाथमें है, कि जान निकल गई. बरसात ख़त्म होनेपर मक्का, ज्वार वग़ैरह नाज ख़ूब पकगया. पहिले तो ग़रीब लोगोंकी अंतड़ियां मारे भूखके खुश्क होगई थीं, अब एक दम नया नाज कच्चा पक्का मिला जो पेट भरकर खाया, जिससे बुख़ार वग़ैरह बीमारियोंने ऐसा ज़ोर पकड़ा, कि हैज़ेसे भी ज़ियादह लोगोंका ख़ातिमह किया. इससे भी हज़ारों आदमी मरगये, खुद अंग्रेज़ लोगोंने आदमियोंकी ज़िन्दगी बचानेके लिये गवर्मेण्टी इलाक़ोंमें लौंडी गुलाम ख़रीदनेकी इजाज़त देदी, दो दो रुपयेमें लड़के बिकने लगे. ईश्वर ऐसा क़हत अपने बन्दोंको फिर न दिखलावे. इस ज़मानहमें महाराणा शम्भुसिंह जैसा तो रहमदिल राजा और कोठारी केसरीसिंह जैसा इन्तिज़ाम करनेवाला प्रधान था, जिससे फिर भी मेवाड़में हज़ारों आदमियोंकी जानें बचगईं, लेकिन् दुन्यामें किसीको बेफ़िक्र रहनेका मौक़ा नहीं मिलता. बदख़्वाह आदमीको उसकी बद आदतोंके सबब लोग ज़लील करते हैं, और ख़ैरख़्वाह व नेक आदत आदमीको बहुतसे खुद मत्लबी लोग अपना मत्लब न होनेसे ज़लील करते हैं; अल्बत्तह दोनों ही नेक नामी व बदनामी दुन्यामें छोड़ जाते हैं. कोठारी केसरीसिंहपर फिर हमले होने लगे, लेकिन् महाराणा साहिबके दिलपर उसकी ख़ैरख़्वाही मज़्बूत जमी हुई थी, इससे लोगोंके कहनेका असर कम हुआ. महाराणा साहिबको शराबके नशेपर खुद मत्लबी लोगोंने यहां-तक बढ़ादिया, कि वह एकदम एक बोतल पीलेते. छोटी अवस्थामें इस नशेकी ज़िया-दतीने तन्दुरुस्तीमें ख़लल डाला; फिर लोगोंने उनको ऐश व इश्रतकी तरफ़ लगादिया. कहावत है, कि " आदमीका शैतान आदमी होता है " सुहबतका असर ज़ुरूर पहुंचता है. खुद महाराणा साहिबने मुझसे कई दफ़ा फ़र्माया था, कि ख़राब आदमियोंने मुझे नशे और ऐश व इश्रतमें डालकर ख़त्म करदिया (हरेरिच्छा बलीयसी).

इसी वर्षके अख़ीरमें बेमालीके जागीरदार ज़ालिमसिंहका इन्तिक़ाल होगया,

जिसका क्रमानुयायी लक्ष्मणसिंह अभीतक विद्यमान है. विक्रमी श्रावण कृष्ण २ [हि० ता० १५ रबीउस्सानी = ई० ता० २५ जुलाई] को कोठारी केसरीसिंहने प्रधानेसे इस्तेफ़ा पेश किया. महाराणा साहिब अव्वल दरजेके अक्लमन्द और बुर्दबार थे, और किसीका लिहाज़ नहीं तोड़ते, यहांतक, कि उनके दिलपर असर रखने वाले आदमी दिल चाहे जिस क़िस्मका हुक्म दिलासक्ते थे, और कोठारी केसरीसिंह किसीसे नहीं दबता, लेकिन् अपने मालिकके हुक्मकी तामील अपने दिलसे फ़ौरन् करना चाहता. वह अपने मालिकका मालिक बनकर काम नहीं करता, बल्कि मालिकका नौकर बनकर रहता था; अगर मालिकका नुक्सान देखता, तो फ़ौरन् ख़ानगीमें नफ़ा नुक्सान दिखलाकर अर्ज़ करदेता, वह अपनी अदावत या मुहब्बतके सबब मालिक की मर्ज़ीके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई कभी नहीं करता था. इन्हीं सबबोंसे मस्लिहत देखकर उसने इस्तेफ़ा दिया, तब महाराणा साहिबने यह काम महता गोकुलचन्द और पंडित लक्ष्मणरावके सुपुर्द किया.

इसी ऊपर लिखे हुए ज़िक्रके ज़मानहका हाल पोलिटिकल एजेण्टने भी अपनी रिपोर्टमें दर्ज किया है, जिसका थोड़ासा खुलासह हम नीचे लिखते हैं:-

पोलिटिकल एजेण्ट लिखते हैं, कि महाराणा शम्भुसिंह साहिबको ईसवी १८६५ नोवेम्बर [वि० १९२२ मार्गशीर्ष = हि० १२८२ रजब] में इख्तियार मिला, तब मैंने उनको अच्छीतरह समझाया, कि रियासतका काम ख़ास अपने हाथमें लेना चाहिये, और उन्होंने भी ऐसा ही किया; लेकिन् उनके सलाहकार चाहते थे, कि रियासती इन्तिज़ामका भार पुराने ज़मानहके ढंगसे प्रधानपर रक्खाजावे. महता गोकुलचन्द मांडलगढ़को चलागया. महाराणा साहिबके सलाहकारोंमें मुख्य ठाकुर ज़ालिमसिंह था.

इन्हीं दिनोंमें एक फ़साद सर्हदी तनाज़हपर रावत् देवगढ़ और राजा बनेड़ाके बीच हुआ, उसमें १३ आदमी मारेगये, और २२ ज़ख़्मी हुए. मैंने महाराणा साहिबको तनाज़ह के गांव ज़ब्त करलेनेकी सलाह दी. जबसे इन्तिज़ाम हमने छोड़दिया तबसे बड़ा फेरफार नज़र आता है, जो डाकू व चोर हम लोगोंसे दबे हुए थे अब वे अपना पेशह करते हैं, और नींबाहेड़ा, जावद नीमचमें पनाह लेते हैं. कुछ यह भूल हम लोगोंकी है, क्योंकि नींबाहेड़ा टोंकको और जावद, नीमच सेंधियाको वापस दिया, यही बुराईकी बुन्याद है; क्योंकि ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७४] से दोनों पर्गनोंमें दोनों रियासतों का इन्तिज़ाम जमायागया. इन दोनों पर्गनोंपर जो लोग आते हैं वे अपना मत्लब निकालते हैं. जब चोरोंपर जुर्मानह लगाते हैं, तब वे मेवाड़में लूटखसोट करते हैं. मेवाड़से

बहुत सख्त बन्दोबस्त कियेगये हैं, लेकिन यह इन्तिज़ाम जबतक अंग्रेज़ी गवर्मेंएटके हाथमें न होगा तबतक मुझको यक़ीन नहीं है, कि यह बन्दोबस्त होसके. .ईसवी १८५७ [वि॰ १९१४ = हि॰ १२७४] के ग़द्रमें नीबाहेड़ाके हाकिम नव्वाब टौंकके मुसाहिब बख़्शी गुलाम मुहियुद्दीनख़ांने थोड़ेसे मकरानी, विलायती और मेवातियोंको एकट्ठा करके क़िले नीमचके लश्करको घेरलिया, जिससे नीबाहेड़ाका पर्गनह ज़ब्त करके कुछ अरसेके लिये मेवाड़को देदिया, जो हम लोगोंके दोस्त रहे हैं. यह पर्गनह मेवाड़के बीच और उसी (मेवाड़) का था, मगर .ईसवी १८६० [वि॰ १९१७ = हि॰ १२७६] में फिर टौंकको देदिया, और ५५००००) रुपया भी दिलाया. अगर सेंधिया और टौंकको यह पर्गने दिलाना ही मस्लिहत समझागया, तो पुलिस और इन्तिज़ाम दुरुस्त करनेका पूरा पूरा बन्दोबस्त करके देना लाज़िम था. सब पोलिटिकल अफ़्सरोंने इस बारेमें वर्षोंतक बड़ी कोशिश की, कि मरहटोंको राजपूतानहसे निकालदेवें. मैं लॉर्ड केनिंग साहिबके ऐसे इन्तिज़ामसे अफ़्सोस करता हूं, कि बिना सलाह सर्दारान राजपूतानह के इन लोगोंको इस मुल्कमें जमकर ठहरनेदिया. नीमच शाइस्तगी फैलानेकी .उम्दह जगह थी, जिसको जान बूझकर छोड़दिया. पोलिटिकल एजेएट लिखता है, कि मेवाड़के इन छोटे सर्दारोंकी मग़रूरी और ढिठाई तमाम हिन्दुस्तानसे बढ़कर है, उनमें भी कोठारियाके रावकी अधिक है. जैसाकि .ईसवी १८६५ नोवेम्बर [वि॰ १९२२ मार्गशीर्ष = हि॰ १२८२ रजब] में रियासतके मोतमद गांव नवानियामें आप (ईडन साहिब) का डेरा खड़ा करवानेको गये, उसने उनको मारडालनेकी धमकी दी, तब मैंने आपकी सलाहके मुताबिक़ उसका एक गांव बतौर सज़ाके ज़ब्त करलेनेकी सलाह महाराणा साहिबको दी, और उसको उन्होंने मन्ज़ूर फ़र्माई. कोठारियाके रावकी दूसरी बेअदबी यह थी, कि महता शेरसिंहको पनाह दी, जिसने चित्तौड़गढ़की तह्सीलके १५००००) रुपये रियासती ख़ज़ानहमें जमा नहीं करवाये. मैंने महाराणा साहिबको यह सलाह दी, कि ये रुपये कोठारियाके रावसे वुसूल करलीजिये. तब शेरसिंहने भागकर सलूंबरकी हवेलीमें पनाह ली. इसी तरह कितनेएक सर्दार चोरोंको पनाह देकर चोरीके मालमेंसे हिस्सह लेते हैं, और चोरोंको पनाह देना क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ शरणा बतलाते हैं; जिसका ज़िक्र .ईसवी १८५५ [वि॰ १९१२ = हि॰ १२७२] के क़ौलनामहमें किया है, इस बेतर्तीबीकी हालतमें हम अच्छे बन्दोबस्तकी उम्मेद जल्दी नहीं रखसक्ते. इन सर्दारोंमें हरएक शख़्स अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ दीवानी व फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम करता है, और अपनेको खुदमुख़्तार समझता है. जब उनको कुछ कहाजावे, तो वे क़दीम दस्तूर बतलाते हैं. फिर इस बेइन्तिज़ामीको

क़ौलनामहने मज़्बूत करदिया है, और ये सर्दार लोग हमेशह क़र्ज़दार रहते हैं और हम महाराणा साहिबको इन सर्दारोंके दबानेकी पूरी सत्ता देवें, तो मेवाड़का फ़ायदह होसक्ता है.

इसके बाद पोलिटिकल एजेएटने अपनी रिपोर्टमें आमेटके रावत् पृथ्वीसिंहके गुज़रजाने और उसकी जगह रावत् अमरसिंहके मुतबन्ना होने व अमरसिंहसे चत्रसिंहने ठिकाना छीन लिया जिसका ज़िक्र लिखा है; जैसाकि पहिले बयान कियागया उससे सिर्फ़ इतना ज़ियादह है, कि मैं आगरेको गया था, तब पीछेसे महाराणा साहिबने अमरसिंहको आमेटका हक़्दार कुबूल करलिया, और धर्म शास्त्रमें भी उसका मुतबन्ना होना दुरुस्त है, लेकिन् मैं उसमें दख़्ल करना नहीं चाहता.

इसके आगे सलूंबरके रावत्को महाराणा साहिब ले आये उसका ज़िक्र है.

इसके आगे वे अपने दौरेका हाल लिखते हैं, कि जो पहाड़ी ज़िले मेवाड़में खैरवाड़ेकी तरफ़ हुआ था. वे कुछ कुछ भीलोंका हाल लिखकर मेजर निक्सन (१) की तारीफ़ करते हैं, और खैरवाड़ेकी सड़कके खुलनेसे मुसाफ़िरोंको आराम मिलनेका भी ज़िक्र है.

फिर थोड़ासा बयान खैराड़ ज़िले जहाज़पुरके मीनों और देवलीकी छावनीकी बाबत लिखा है.

उसके बाद मद्रसेका ज़िक्र लिखकर मेरवाड़ेको वापस करनेके बारेमें महाराणा साहिबकी तह्रीरपर बह्स की है, इत्यादि. मैंने उस रिपोर्टका ज़ियादह खुलासह इसवास्ते नहीं लिखा, कि पाठक लोगोंको दोबारह मिहनतके सिवा और कुछ फ़ायदह नहीं है. अब मैं थोड़ासा खुलासह ईसवी १८६८ व ६९ [वि० १९२५-२६ = हि० १२८५-८६] की रिपोर्टका लिखता हूं:-

नम्बर ७२-१७-पी० ता० ३१ मई
सन् १८६९ ई०,

लेफ़्टिनेएट कर्नेल् ए० आर० ई० हैचिन्सन
क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेएट मेवाड़.

जबसे मैंने इस उह्देका चार्ज लिया है, तबसे महाराणा साहिब और उनका प्रधान कोठारी केसरीसिंह मेरी सलाहपर तुरन्त अमल करते हैं, और मेरी दोस्ती

(१) यह पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ निक्सन साहिबके बेटे और खैरवाड़ाकी फ़ौजके अफ़्सर हैं.

दिन बदिन बढ़ती जाती है. महाराणा साहिब .ऐश व .इश्रतको चाहनेवाले हैं, लेकिन् अक्लमन्द और वर्त्तमान ज़मानहके ढंगको जाननेवाले हैं, और अपने मुल्ककी दुरुस्ती करना चाहते हैं; खासकर ब्रिटिश गवर्मेण्टकी इच्छा और अपनी प्रजाकी भलाई करनेको ज़ियादह उत्कंठित हैं, लेकिन् महाराणा साहिबको क़दीमी दस्तूरपर चलनेसे इन बातोंके पूरा करनेमें दिक़्क़त उठानी पड़ती है. महाराणा साहिब खुद-मुख़्तार हैं, छोटासा काम भी बिदून हुक्म उनके नहीं होसक्ता; प्रधानको भी हमेशह जाकर कुल कामोंके लिये हुक्म लेना पड़ता है, और इसीतरह फ़ौज्दारी व दीवानीके हाकिम भी अखीर कार्रवाईको उनके हुक्मसे करते हैं. अगर फ़ुर्सत न हो, तो दूसरे काम बाक़ी रहें, परन्तु पोलिटिकल एजेण्टीके कामोंको ख़त्म करनेपर ज़ियादह ध्यान दियाजाता है. ज़ियादहतर राज्यका काम धर्मशास्त्रके अनुसार होता है, और महाराणा साहिब उसको चलानेके लिये पेश्वा हैं, इसलिये उसके बर्ख़िलाफ़ नहीं करसक्ते. महाराणा साहिबके पास कोई भरोसा रखनेके लाइक़ सलाहकार नहीं है.

फिर पोलिटिकल एजेण्टने ज़ालिमसिंह और रावत् अमरसिंह व कमलिया वाले सन्यासीकी शिकायत लिखी है. इसके आगे कोठारी केसरीसिंहका ज़िक्र है. वह लिखते हैं, कि केसरीसिंहको प्रधाना मिलनेसे महाराणा साहिब और उनके सर्दार व प्रजा सब लोग बहुत खुश हुए हैं. यह शख़्स मिहनती और जमा ख़र्चकी दुरुस्ती रखने वाला, और जो ज़िम्महवारीका काम उसको सौंपा गया उसके वास्ते लाइक़ है, और यह पुराने रवाजके मुवाफ़िक़ रियासती हुकूमतका तरफ़दार है. महाराणा साहिब की नाबालिग़ीमें रियासती नौकरोंको ज़मीनके ठेके लिखदिये थे, उससे नुक़्सान हुआ और ६०००००) रुपये बाक़ी रहगये, तब उस बन्दोबस्तको रद कर तीन वर्षके लिये गांवके लोग, याने पटैल पटवारियोंको पांच पर्गनोंमें ठेका दियागया, लेकिन् वह भी राज्यके कारिन्दोंकी नापसन्दीसे नहीं चला.

इसके बाद ज़मीनके महसूलका तरीक़ह व जमा ख़र्चका ज़िक्र है. फिर कर्नेल् हैचिन्सनने मेवाड़के सर्दारोंकी मग़रूरी और नाफ़र्मांबर्दारीका बहुत ज़िक्र लिखकर उसके लिये आमेट, सलूंबर और धांगड़मऊकी गोदनशीनीके मुक़द्दमेकी मिसाल दी है. उसके बाद कोठारियांके रावत्की सर्कशी और भैंसरोड़ वालोंकी .उदूलहुक्मीका ज़िक्र है. बाद इसके डाक पार्सलका बन्दोबस्त महाराणा साहिबने .उम्दह तौरसे किया, और नीमच-नसीराबाद व उदयपुर-नीमचकी सड़कपर पुलिसका इन्तिज़ाम ८८९८०) रुपये सालियानह ख़र्चसे १३८ मीलका किया, जिसका मुफ़स्सल बयान है. फिर मेवाड़, नीवाहेड़ा और जावद नीमचके मिलनेसे मोगिया लोगोंकी चोरी व डकैतीका मुफ़स्सल ज़िक्र है,

जैसाकि ऊपर लिखागया. उन डकैतियोंमेंसे एक संगीन डकैतीका बयान है, कि पीपलियाका रावत् लक्ष्मणसिंह उनके नज्दीकी रिश्तहदार बख्तावरसिंह, ऊँकारसिंह, दीपसिंह, फ़ौजसिंह, व हमीरसिंह वगैरहकी साज़िशसे जमादार रामा बावरी वगैरहके हाथसे मारागया. फिर उन्होंने पहाड़ी भीलोंकी आदत और उनकी डकैतियोंका हाल लिखा है.

उसके बाद कर्नेल् हैचिन्सन अपनी रिपोर्टमें विक्रमी १९२५ [हि० १२८५-८६ =ई० १८६८-६९] के अकालका हाल लिखते हैं, जिसमें महाराणा साहिबके उम्दह इन्तिज़ाम, फ़य्याज़ी और लोगोंकी तक्लीफ़का हाल है, जो पहिले लिखागया उसीके मुताबिक़ है, लेकिन् इन्तिज़ामकी तफ़्सील उक्त रिपोर्टसे खुलासहके तौर लिखीजाती हैः-

पहिले तो महाराणा साहिबने अनाजका महसूल (दाण मापा वगैरह) आधा और उसके बाद कुल महसूल छोड़दिया, और बाज़ बाज़ अनाजके व्यापारियोंको क़हतकी ख़िद्मतके एवज़ हमेशहके लिये किसीको आधा और किसीको चौथाई छोड़दिया, और ख़ास दर्बारने २००००) का इन्दौरसे, १५०००) का ईडरसे अनाज ख़रीदकर मंगवाया. अलावह इसके १०५५००) रुपया शहरके व्यापारियोंको सर्कारसे देकर अनाज मंगवाया. सेठ चांदनमल्लको २५०००), मगराके हाकिमकी मारिफ़त वहांके व्यापारियोंको २५०००), खेमराज हुक्मीचन्दको १०००८), हैदर हिबतुल्लाह, और ईसा ताजख़ांको २२५००), इब्राहीमको ११०००), रसूल बौहराको ४०००), ईसा ताजख़ांको २०००), रामनारायण मूंदड़ाको ५०००), धनराज चौधरीको २०००); जुमले १४०५००) रुपयेका अनाज तो श्रीदर्बारकी मददसे ख़रीदा गया, और २०००००) रुपये दर्बारने उन लोगोंके लिये ख़र्च किये, जो मज़्दूरी करके पेट भरें. इसमें जहां जहां इमारतें वगैरह बनीं और जिस क़द्र आदमियोंका पालन हुआ, उसकी तफ़्सील निम्न लिखित नक़्शहसे मालूम होगीः-

नाम जगह.	तादाद रुपया.	तादाद मनुष्य.	कैफ़ियत.
उदयपुर	१०००००	११७८	
जहाज़पुर	१८३००	५८४	
भीलवाड़ा	१५०००	२२६	यहांकेलिये मन्ज़ूरी १२०००० की थी.
चित्तौड़गढ़	२६३००	५००	
कुंम्भलगढ़	२५०००	४००	
खेमलीके तालाबमें	३२००	३५०	

खैरवाड़ा	६०००	१५०	
नाहरमगरा	४१००	१०६	
नसीराबाद व मऊकी सड़क इलाक़े मेवाड़के लिये	०	०	यहांके लिये ५०००) रुपये माहवारकी मन्जूरी हुई.
मीज़ान	१९७९००	३४९४	

इसके सिवा २५०००) रुपया महाराणा साहिबने इसवास्ते दिया, कि (इज़्ज़तदार ग़रीब, जो भीख नहीं मांग सके, उनको) सस्ते भावसे अनाज दियाजावे.

अलावह इसके सदाव्रतमें आटा दियागया, उसकी माहवारी तफ़सील :-

नाम शहर.	आदमी.	चून या आटा.	अनाज.
उदयपुर	३०००	५६ मण	०
जहाज़पुर	४००	७॥ "	०
चित्तौड़	९००	१४॥ "	०
कुम्भलगढ़	५५०	१४ "	७॥ मण
कैलासपुरी	३०००	१९ "	३२॥। "
गढ़बोर	४००	७॥ "	०

इसके उप्रान्त रंधीहुई मक्की (घूगरी) मर्द या औरतको ०॥ आधसेर और बच्चोंको ०। पावसेर अन्दाज़हसे दीजाती, जिसका तख़्मीनह रोज़ानह :-

उदयपुर	७५००	
कुम्भलगढ़	२०००	
भीलवाड़ा	७००	
चि[illegible]	५००	
[illegible]	१०७००	

छावनी देवलीमें भी इसी क़िस्मका खैरातख़ानह खोलागया, जिसके लिये महाराणा साहिबने १०००) रुपये कल्दार दिये. ख़ास शहर उदयपुरमें तारीख़ १९ एप्रिल से ३१ मई [वि० १९२६ जेष्ठ कृष्ण ६ = हि० १२८६ ता० १८ सफ़र] तक २०९०३७ मनुष्य, जिनमें ४६४६९ मर्द, ७८६५० औरतें और ८३९१८ बच्चोंका पालन हुआ, जिनमें ८४९,) ३ । = मण नाज खर्च हुआ, जिसकी क़ीमत रु० ६३१२। -)६ हुई. इस क़हतके हालको खत्म करके उक्त साहिबने मद्रसह, दवाखानह, जेलखानह वगैरहका हाल लिखा है उसके बाद मुज्रिमोंकी सुपुर्दगीका अहदनामह हुआ, जिसका ज़िक्र है.

मेवाड़ एजेन्सीकी रिपोर्ट नम्बर ५६—१०—पी०
ता० १६ मई सन् १८७० ई०,

लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल् जे० पी० निक्सन पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की तरफ़से
लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल् आर० एच० कीटिंग के० सी० एस० आइ०, बी० सी०
एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह.

पिछले सालकी कार्रवाई मेरे इशारेसे महाराणा साहिबने लिखी थी उसका तर्जमह वास्ते मुलाहज़ेके गवर्नर जेनरलकी ख़िद्मतमें भेजा था, क्योंकि अपनी रियासतकी कार्रवाईकी बाबत् खुद रईसका लेख सर्कार भी पसन्द करेगी.

मैं ख़ुशीसे लिखता हूं, कि महाराणा साहिबने बाक़ाइदह दीवानी और फ़ौज्दारी की अदालतें क़ाइम करदी हैं, जिनके अफ़्सरोंको बिल्फ़ेल कुछ इख्तियार देदिये हैं.

मुझे अफ़्सोस है, कि कोई क़ानून अभीतक यहां जारी नहीं हुआ. बाज़ाबितह लिखे हुए क़ानूनकी मुख़ालफ़त यहां बहुत है. मेवाड़के सर्दार तो धर्मशास्त्रके बहानेसे बिल्कुल इससे बरख़िलाफ़ हैं, मगर कुल राजपूतानहमें सर्दारोंकी कमोबेश ज़ाहिर या पोशीदह यही कोशिश है, कि अपनी बेजा कार्रवाईको रईसोंके वाजिबी फ़ौज्दारीके दस्ल से बचावें. सर्दारों और रईसोंके बाहमी मुख़ालफ़तकी बुन्याद यही है, कि सर्दार लोग नहीं चाहते, कि उनके फ़ौज्दारी इख्तियारातमें रईसका दस्ल हो. सर्दार तो यह चाहते हैं, कि दीवानी, फ़ौज्दारी हमारी हमारे हाथमें रहे; और अच्छे इन्तिज़ामके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके दबावसे रईस लोग हमेशह उनका इख्तियार रोकनेकी कोशिश करते हैं. सर्दारोंकी कोशिश तो यह है, कि जो ज़ियादतियां व जुल्म वे खुद करते हैं या अपने मातहतोंसे कराते हैं, और उनके साथ अपना फ़ायदह उठाते हैं उनकी बाबत् कोई

रोक न हो. मेरी समझमें सर्कारको वाजिबी तरीक़ोंसे इन रईसोंको जबतक, कि वे अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहके मुवाफ़िक़ अच्छी तरह हुकूमत करनेकी कोशिश करते हैं मदद देना चाहिये, ताकि वे अपने सर्दारोंको दबा सकें; लेकिन् बहुतसी हालतोंमें सर्कारकी कार्रवाई बिल्कुल उसके विरुद्ध है. यह बात हम सब जानते हैं, कि रईस लोग खुद जुल्म ज़ियादती नहीं करते और इन सर्दारोंमेंसे ऐसे थोड़े हैं, जो ऐसा नहीं करते. यह बात ज़ाहिर है, कि ये छोटे सर्दार अपनी कार्रवाईमें हमारे पास जवाबदिह नहीं हैं और अपने रईसोंके पास जवाबदिहीको ये टालजाते हैं या नहीं मानते हैं.

इन सर्दारोंकी कार्रवाईकी निगरानीके लिये एक अहलकार दर्बारका उन ठिकानोंमें हमेशह रहना चाहिये, कि जो उनकी बेजा कार्रवाईकी रिपोर्ट किया करे. हैचिन्सन साहिबने पहिले रिपोर्ट की थी, कि महाराणा साहिब और सर्दारोंमें नाराज़गी है, लेकिन् मैं इसके साथ इत्तिफ़ाक़ नहीं करता, क्योंकि सर्दार लोग महाराणा साहिब को बहुत चाहते हैं; अल्बत्तह इस बातको नापसन्द करते हैं, कि वह हमारी (अंग्रेज़ोंकी) सलाहसे काम करें. मेवाड़के सब लोगोंसे महाराणा साहिब ज़ियादह रौशन राय हैं; इसलिये वे लोग जो पुराने ज़मानहके दस्तूरोंसे लिपटे हुए हैं, उनकी लियाक़तकी ताक़तसे डरते हैं. अगर महाराणा साहिब किसी एक सर्दारको किसी क़ुसूरपर सज़ा देने का इरादह करें, तो इनके ख़िलाफ़ दूसरे सभी मुत्तफ़िक़ होजायेंगे, ताकि इन्साफ़ न होसके. राजपूतानहमें यह चाल बहुत पुरानी है. हालके महाराणा साहिब को उनके पहिलेके तीन राजाओंकी निस्बत लोग ज़ियादह चाहते हैं, क्योंकि वह जुल्म नहीं करते.

पिछले सालकी रिपोर्टमें कर्नेल् हैचिन्सनने कुछ हाल ज़ालिमसिंहका लिखकर उसको बुरा सलाहकार समझा है. हिन्दुस्तानी दर्बारोंमें उस शख़्सके, जिसपर राजा मिहर्बान होता है, बहुत दुश्मन होजाते हैं, ख़ासकर प्रधान तो उसको बहुतही बुरा समझता है. ज़ालिमसिंह स्वतंत्र पुलिसका अफ़्सर था, सर्दार लोग उसको नहीं चाहते थे, तोभी मेवाड़में लूटनेवाली क़ौमोंके रोकनेमें इसने अच्छी नौकरी की है. इसकी बड़ी ख़ूबी यह थी, कि सर्कार अंग्रेज़ीका ख़ैरख़्वाह था और महाराणा साहिबको भी साहिब रेज़िडेण्टकी रायपर अमल रखनेकी सलाह देता रहता था. अफ़्सोस है, कि वह शख़्स मरगया!

मालका इन्तिज़ाम पुराना और सादे तौरका है. ज़मींदार और काश्तकारमें कोई शिकायत नहीं है, और जमा वुसूल करनेमें भी कोई शिकायत नहीं है, क्योंकि साख बिगड़नेपर दर्बारसे हमेशह छूट होजाती है. छोटे मोटे मुक़द्दमात गांवके चौखलेकी पंचायतसे तय होजाते हैं.

महाराणा साहिबकी मर्ज़ी है, कि बाक़ाइदह माली बन्दोबस्त इस मुल्कमें जारी किया जावे, और इसलिये अगले जाड़ेसे बन्दोबस्तका इन्तिज़ाम शुरू होगा, मगर दर्बारके अह्लकार इसके ख़िलाफ़ हैं, क्योंकि इसमें दर्बारका फ़ायदह और उनकी चोरियोंका शायद खुलना है और ज़मींदारोंपर जो उगाहीमें राजके अह्लकार ज़ियादती करते हैं वह मिटजायेगी.

नीमच- नसीराबादकी सड़क बनरही है, सर्कारी फ़ौजी कामके सिवा इससे कुछ व्यापारका फ़ायदह मालूम नहीं होता. दर्बारने १३००००) रुपया लागत तावे दे-दिया है और ५००००) फिर देना है. उदयपुरसे खैरवाड़ेतक जो सड़क हालमें बन-रही है वह भी ८ मीलतक बनगई है, इससे मेवाड़के रूईके व्यापारको बम्बईकी तरफ़ निकासका रास्तह होनेसे बहुत फ़ायदह होगा.

मैंने मेवाड़के पहाड़ी ज़िले बाबत् .ईसवी १८७० ता० ७ मार्च [वि० १९२६ फाल्गुण शुक्ल ५ = हि० १२८६ ता० ४ ज़िल्हिज] को रिपोर्ट की है, कि मेवाड़की दक्षिणी और पश्चिमी हद्दपरके गिरासिये सर्दार फ़ौज्दारी मुआमलातमें इस एजेंसीके अव्वल और दूसरे असिस्टेंटोंके तअ़ल्लुक़में हैं, और पहाड़ी .इलाक़हके छोटे सर्दार दर्बारके मातहत हैं, मगर कुल मुक़द्दमात जिनमें गिरासियोंका कुछ तअ़ल्लुक़ था वे उक्त असिस्टेंटोंने फ़ैसल किये हैं. यह ज़ुरूर है, कि जो ज़ियादती ग्रासिया और भील सर्हदसे बाहिर करते हैं उसका बदला उन्हींसे दिलाया जावे, ताकि आगेसे ऐसा करनेको रुकें. अबतक ऐसा दस्तूर था, कि हमेशह सारी बेबन्दो-बस्तीका ज़िम्महवार राजके अह्लकारको ठहराया जाता था. अब मेरी राय है, कि अंग्रेज़ी उह्देदार, जो उस इलाक़हमें रहते हैं, ज़ियादह ज़िम्महवार ठहराये जावें.

मेवाड़ और महीकांठाके सर्हदी फ़ैसलोंमें मेवाड़पर ६६५४) रुपयेकी डिगरी हुई. उदयपुर दर्बार डिगरीका रुपया मुजिमोंसे वुसूल किया करते हैं उसमें अह्लकारोंके ज़ुल्मकी शिकायत सुनकर मैंने दूसरे असिस्टेंटकी मारिफ़तसे वुसूल करनेका बन्दोबस्त किया है.

पिछले साल सख़्त अकाल था, तोभी इस .इलाक़ेमें ज़ियादह वारिदातें नहीं हुईं; मगर मगरा मेरवाड़ाके मेरोंमें वारिदातें कम नहीं हुई हैं, वे लोग ५० वर्षके क़रीबसे अंग्रेज़ी बन्दोबस्तमें हैं, और यह उम्मेद कीजाती थी, कि लुटेरापन उन्होंने बिल्कुल छोड़दिया, मगर थोड़ीसी तंगी पड़नेपर उनकी अस्ली आदत फिर ज़ाहिर होगई.

पिछले साल कर्नेल् हैचिन्सन् साहिबकी सलाहके मुवाफ़िक़ दर्बारने अफ़ीमका कांटा उदयपुरमें मुक़र्रर कराया, गोकि पहिले सालमें ब एवज़ ६००० पेटीके, जिसकी उम्मेद कीगई थी उजैन व इन्दौरके व्यापारियोंकी कार्रवाईसे सिर्फ़ ४४४ पेटी इस कांटे

पर छपीं, लेकिन् कांटेके होनेका फ़ायदह मेवाड़के रईस व व्यापारियोंको होवेहीगा, इस बातपर भी मैं तवज्जुह दिलाता हूं, कि कांटेका खर्च दर्बार मेवाड़से दियाजाता है, यह बात कुछ ग़ैर मामूलीसी है, क्यौंकि कांटेसे महसूल सर्कार अंग्रेज़ीको वुसूल होता है.

फ़ौज.

उदयपुरकी फ़ौजकी दुरुस्ती कीजाती है और क़वाइद सिखाई जाती है, कुल तादाद ११५२ सवार, ३६९४ पैदल और ६३२४०२) रुपया सालानह खर्च होता है.

शिफ़ाखानह.

शहरके दोनों शिफ़ाखानोंमें ६८९५ बीमारोंका .इलाज हुआ, ८५८ बालकोंके टीका लगाया गया, और कुल खर्च ४६९३) रुपया हुआ. पिछले साल ५४५१ आदमियोंका इलाज हुआ, ५३७ के टीका लगा, और ३२३२) रुपया खर्च हुआ था; क़ाइम-मक़ाम डॉक्टर गेलवे साहिबने उम्दह कारगुज़ारी की. अकाल और हैज़ेके वक्त दवा और खाना बांटनेमें बड़ी तन्दिही और कोशिश की; इस सालमें २१ बड़े और ३१५ छोटे ऑपरेशन होकर काम्याब हुए.

जेलखानह.

जेलखानोंमें इन्तिज़ाम और सफ़ाई अच्छी है, क़ैदी अच्छीतरह रक्खे जाते हैं और उनसे ज़ियादहतर सड़कपर काम लियाजाता है. पिछले सालमें २०९ क़ैदी थे, १३ मरगये जिनमेंसे ५ बबाइस हैज़ाके मरे थे.

स्कूल.

पिछले साल उदयपुरके स्कूलका काम मिस्टर इङ्गल्स असिस्टेंट ओपियम एजेण्टके तहतमें लियागया. हाज़िरी कुछ लड़कोंकी और ज़ियादहतर लड़कियोंकी कम होगई है.

खिराज.

उदयपुरका सालियानह खिराज अबतक बराबर अदा होजाता है, मेवाड़ भील कॉर्प्सका खर्च जो मेवाड़के मगरा मेरवाड़ाकी आमदनीमेंसे लियाजाता है, पहिले सालोंका जमा होते रहनेसे अजमेरके खज़ानहमें अमानत जमा है. पिछले साल फ़स्ल अच्छी हुई, लेकिन् धानका भाव महंगा रहा.

पिछले सालकी रिपोर्टमें लेफ्टिनेण्ट कर्नेल् हैचिन्सन साहिबने महाराणा साहिबकी निस्बत लिखा है, कि यह रईस अपने मुल्कमें सुधारा चलाना चाहते हैं और सर्कार अंग्रेज़ीके मन्शाके मुवाफ़िक़ अपनी रअय्यतके आराम पानेके लिये बहुत कोशिश करते हैं, इस बातकी तस्दीक़ पिछले सालकी महाराणा साहिबकी कार्रवाईसे बखूबी

होगई. इस साल मेवाड़में अकाल तो नहीं था, मगर गिरानी बहुत थी, आसपासकी रियासतोंके अकालसे हज़ारहा आदमी उदयपुरमें आपड़े, जो भूख और उससे पैदा हुई बीमारियोंसे मरते थे. महाराणा साहिबने अपनी नेकदिली और कर्नेल् हैचिन्सन साहिबकी सलाहकी मददसे बहुत तद्बीरें इन लोगोंकी मुसीबत कम करनेकी कीं, जिससे वह सख़्त वक़ बड़ी ख़ूबीसे निकला और हज़ारों जानें उनकी फ़य्याज़ीसे बचीं. उदयपुरमें ११६३७६६ आदमियोंको खाना मिला, इसमें ५००८४।) रुपया उठा. मेवाड़के और बड़े बड़े क़स्बोंमें इसके अलावह तद्बीरें हुईं.

पिछले सालमें महाराणा साहिबको नासूरकी बीमारी होगई थी, जिसमें वह ५ महीना बीमार रहे. डॉक्टर कनिंघमने अपनी रिपोर्टमें इसकी बाबत् लिखा है, कि इस सख़्त बीमारीमें बावुजूदेकि बार बार ऑपरेशन नाकामयाब हुए, तोभी महाराणा साहिब अपनी तबीअतकी मज़्बूती और खुश मिज़ाजीसे हमेशह खुशदिल रहे, जिससे उनकी तबीअतकी उ़म्दगी पाईगई, जो उनके बड़े दरजहके लाइक़ है.

यहांके इन्साफ़ी क़ानूनकी बाबत् लिखता हूं, कि हालमें तो कोई लिखा हुआ क़ानून यहां जारी नहीं है, मगर आपने जो क़ाइदे दिये थे उनका हिन्दी तर्जमह मिस्टर इङ्ग्लससे कराकर उनपर ग़ौर होरहा है. हिन्दुस्तानी रियासतोंमें राजा कैसा भी हमारी सलाहपर चलता हो, तो क़ानूनका चलना बहुत मुश्किल और देर तलब है, तो-भी उम्मेद है, कि चन्द रोज़में यह क़ानून जारी होजायेगा.

हम ऊपर लिख आये हैं, कि कोठारी केसरीसिंहने प्रधानेसे इस्तेफ़ा दिया और काम महता गोकुलचन्द और पंडित लक्ष्मणरावके सुपुर्द हुआ, लेकिन् पाठक लोगोंको ज्ञात करनेके लिये यह भी अवश्य है, कि दूसरे बन्दोबस्तका हाल भी दर्ज कियाजावे, अर्थात् कोठारी केसरीसिंहके प्रधानेके समय विक्रमी १९२६ पौष कृष्ण ५ [हि० १२८६ ता० १९ रमज़ान = ई० १८६९ ता० २३ डिसेम्बर] को महकमह ख़ासके नामसे एक कचहरी क़ाइम हुई, जिसमें हुक्म देनेवाले तो ख़ास महाराणा साहिब और सेक्रेटरी महता पन्नालाल बनाया गया. यह शख़्स कोठारी केसरीसिंहके बड़े भाई छगन-लालका दामाद, होश्यार और नौजवान अह्लकार जानकर इस कामके लिये चुनागया, जो महता अगरचन्दके भाईकी औलादमें महता मुरलीधरका पुत्र है; इसको कोठारी केसरी-सिंहने भी अपने बड़े भाईका दामाद होनेके सबब पसन्द किया. इस महकमहकी बुन्याद डालनेके लिये पेश्तर भी पंडित लक्ष्मणरावने कोशिश करके अपने दामाद मार्तंडरावको पेश किया था, लेकिन् उससे यह काम नहीं जमा. थोड़ेही दिनोंके बाद प्रधानके करनेका

काम महकमह खासमें होने लगा, जो अबतक महता राय पन्नालालकी सुपुर्दगीमें है.

इस समय ३८ वर्षके बाद मक़ाम अजमेरमें गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड मेयोसे मुलाक़ात करनेको महाराणा साहिब बुलाये गये. बहुत कुछ बहसके बाद यह बात मंजूर हुई, जिसका ज़िक्र इस तरहपर है, कि विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = ई० १८३१] में जब महाराणा जवानसिंह लॉर्ड बेंटिंकसे मुलाक़ात करनेको अजमेर गये थे उसवक्त यह क़रार हुआ था, कि महाराणा साहिब लॉर्ड गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातको आइन्दह अपने इलाक़हसे बाहिर नहीं जावेंगे, उसके बाद आगरा वगैरह मक़ामोंमें दर्बार होकर सब राजा लोग बुलाये गये, लेकिन् महाराणा साहिबका जाना नहीं हुआ. इस-वास्ते लॉर्ड मेयोने अजमेरमें आकर महाराणा साहिबसे मुलाक़ात चाही. ऐसी बातों पर इस रियासतमें ज़मानह क़दीमसे तअस्सुब रहा है, लेकिन् गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी शाइस्तह फ़हमाइश और कर्नेल् निक्सन साहिबकी कोशिशसे यह बात कुबूल हुई, और विक्रमी १९२७ आश्विन शुक्ल १० [हि० १२८७ ता० ८ रजब = ई० १८७० ता० ४ ऑक्टोबर] को प्रस्थान होकर फ़ौज और पोलिटिकल एजेंट विक्रमी आश्विन शुक्ल १२ [हि० ता० १० रजब = ई० ता० ६ ऑक्टोबर] को उदयपुरसे रवानह होकर खेमली व देपुरमें मक़ाम करते हुए विक्रमी आश्विन शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रजब = ई० ता० ९ ऑक्टोबर] को राजनगर पहुंचे, और इसी दिन फ़ज्रको महाराणा साहिब उदय-पुरसे रवानह हो एकलिंगेश्वरके दर्शन कर देलवाड़े राज फ़तहसिंहके यहां गोट (दावत का खाना) अरोग पलाणेसे बग्घी सवार होकर शामको राजनगर पहुंचगये और राजसमुद्र की पालपर पोलिटिकल एजेंट निक्सन साहिबसे मिलकर डेरेमें आराम किया. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १ [हि० ता० १४ रजब = ई० ता० १० ऑक्टोबर] को फ़ौजका मक़ाम कुरजमें हुआ, और महाराणा साहिब राजनगरसे कोठारियाके रावत् संग्रामसिंहके यहां, जिसका पिता रावत् जोधसिंह गुज़रगयाथा, मातमपुर्सीके लिये उसके डेरेमें होकर कांकड़ौली तश्रीफ़ लेगये, और दर्शन करके रातभर वहीं रहे. विक्रमी कार्तिक कृष्ण २ [हि० ता० १५ रजब = ई० ता० ११ ऑक्टोबर] को कुरजमें भोजन करनेके बाद ग्राम सहाड़ां पधार गये, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रजब = ई० ता० १२ ऑक्टोबर] की फ़ज्रको बग्घी सवार हो शिवरतीके महाराज गजसिंह व बागौरके महाराज सोहनसिंह इन दोनों की तरफ़की गोट अरोगकर शामको ल्हेसवे पधार गये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ता० १७ रजब = ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को भगवानपुरे और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ता० १८ रजब = ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को रायला में मक़ाम हुआ. शाहपुराका राजाधिराज लछमणसिंह और भैंसरोड़का रावत् अमरसिंह

गुज़रगया था, इस जगह उनके बेटे राजाधिराज नाहरसिंह और रावत् भीमसिंहके डेरोंपर मातमपुर्सीको पधारे, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि० ता० १९ रजब = ई० ता० १५ ऑक्टोबर] को बड़ी रूपाहेली और दूसरे दिन ग्राम बरलमें मक़ाम हुआ. जहां अजमेर और मेवाड़की हद मिलती है, इसलिये महाराणा साहिबकी पेश्वाईको गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तरफ़से पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् निक्सन और एजेण्ट गवर्नर जेनरलके दूसरे सेक्रेटरी चार्ल्स बटन और ब्यावरके असिस्टैंट रेप्टेन आये. सर्हद पर डेरोंमें मुलाक़ात होकर हाथियोंपर सवार हो महाराणा साहिबको डेरोंमें बरलके बंगलेतक पहुंचाकर अंग्रेज़ अफ्सर अपने डेरोंमें गये. महाराणा साहिबको साथमें फ़ौज कम लेजानेके लिये पोलिटिकल एजेण्टने बहुत कुछ कहा, और इसी तरह हिदायत थी, कि ४००० आदमियोंसे ज़ियादह न हों, इसलिये हर एक सर्दार और कारख़ानोंकी तादादी फ़र्द बनकर हुक्म दियागया था, तोभी फ़ौजके ज़ियादह होजानेसे महाराणा साहिबने ख़ुद विराजकर जमइयतोंकी हाज़िरी ली. बहुत बन्दोबस्त होनेपर भी क़रीब ६ या ७ हज़ार फ़ौजसे कम न हुई. फिर विक्रमी कार्तिक कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रजब = ई० ता० १७ ऑक्टोबर] को बांदरवाड़े और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २२ रजब = ई० ता० १८ ऑक्टोबर] को छावनी नसीराबाद पहुंचे. वहां छावनीके ब्रिगेडिअर जेनरल और मैजिस्ट्रेट क़रीब ३ या ४ मीलतक पेश्वाईको आये. घोड़ोंपर मुलाक़ात होकर उन लोगोंने महाराणा साहिबको डेरोंमें पहुंचाया. अंग्रेज़ी कैम्पसे १९ तोपोंकी सलामी सर हुई. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १० [हि० ता० २३ रजब = ई० ता० १९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब अजमेर पहुंचे, ७ साहिब लोग अनुमान दो या ढाई कोसतक पेश्वाईको आये; कर्नेल् निक्सन पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ और दूसरे सेक्रेटरी चार्ल्स बटन, असिस्टैण्ट रेप्टेन, मेवर साहिब पोलिटिकल एजेण्ट हाड़ोती वग़ैरहसे पेश्वाईकी जगह डेरोंमें मुलाक़ात हुई. इसके बाद हाथियोंपर सवार हुए और साहिब लोग महाराणा साहिबको डेरोंमें पहुंचाकर अपने अपने डेरोंमें गये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रजब = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब हाथीपर सवार होकर मए अपने चन्द सर्दारोंके क़रीब दो कोसपर गवर्नर जेनरल हिन्दकी पेश्वाईको गये. जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह, बूंदीके महारावराजा रामसिंह, कोटाके महाराव शत्रुशाल, टोंकके नव्वाब मुहम्मदइब्राहीम अलीख़ां, कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह और झालावाड़के महाराजराणा पृथ्वीसिंह वग़ैरह राजा लोग हाथियोंपर सवार थे, और उधर से लॉर्ड मेयो भी हाथीपर सवार होकर आये. लॉर्ड मेयोने हाथीके हौदेपर खड़े हो

टोपी उतारकर पेश्तर महाराणा साहिबसे फिर जोधपुर व बूंदी वग़ैरहके राजाओंसे सलाम किया. राजा लोगोंने भी अपने अपने हाथियोंपर खड़े होकर सलाम किया. मिज़ाज पुर्सीके बाद लॉर्ड गवर्नरको डेरोंतक पहुंचाकर सब राजा लोग अपने अपने डेरों को गये. फिर लाठ साहिबकी तरफ़से मिज़ाजकी खुशी पूछनेको सब राजाओंके डेरों में अंग्रेज़ अफ्सर भेजेगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १२ [हि० ता० २५ रजब = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को प्रातःकालके समय महाराणा साहिब व लाठ साहिबके कैम्पके बीचमें जहां एक शामियानह खड़ा था, महाराणा साहिब तश्रीफ़ लेगये. बाद इसके लॉर्ड मेयोके सेक्रेटरी और एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्रूक, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् निक्सन व पोलिटिकल एजेण्ट हाड़ोती वग़ैरह ७ या ८ अंग्रेज़ हाथियोंपर सवार होकर महाराणा साहिबको लेनेके लिये आये. महाराणा साहिब भी मए बेदलाके राव बरूतसिंह, देलवाड़ाके राजरणा फ़त्हसिंह, कान्होड़ के रावत् उम्मेदसिंह, पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंह, आसींदके रावत् खुमाणसिंह, शिवरतीके महाराज गजसिंह, करजालीके महाराज सूरतसिंह, बागोरके महाराज सोहनसिंह और प्रधान महता गोकुलचन्दके हाथियोंपर सवार होकर लाठ साहिबके डेरोंमें सिधारे. लाठ साहिबकी तरफ़से १९ तोपें सलामीकी सर हुईं. दस्तूरके मुवाफ़िक़ वाइसरॉय लबे फ़र्शतक पेश्वाईको आये, दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और बाईं तरफ़ लॉर्ड मेयो बैठे. महाराणा साहिबकी तरफ़ उनके सर्दार और लाठ साहिबकी तरफ़ अंग्रेज़ अफ्सर थे. महाराणा साहिबने अंग्रेज़ीमें लाठ साहिबसे बातचीत की, फिर लाठ साहिबने खड़े होकर हीरोंका हार महाराणा साहिबके गलेमें अपने हाथसे पहिनाया और नीचे लिखा हुआ सामान किश्तियोंमें पेश हुआः—

हार हीरोंका पहिनाया गया १.	हीरोंके जड़ाऊ कड़े जोड़ी १.
सर्पेच हीरोंका १.	गुलूबन्द पश्मीनेका १.
रूमाल सियाह रंगका १.	रूमाल बनारसी १.
मन्दील अब्बासी १.	चुग़ा सिफ़ेद १.
जामदानी ७.	कमख़ाब ३.
चुग़ा १.	ग़ालीचा १.
गाज सुनहरी १.	पामड़ी ज़र्दोज़ी जोड़े ७.
दुशाला जोड़ी १.	मलमल ढाकेकी १.
दुपट्टा बनारसी १.	खेस बनारसी जोड़ी १.
साटण थान १.	

बन्दूक़ मए पेटी व औज़ारोंके २. तलवार मए सुनहरी तह्नाल मूनाल १.
ढाल सुनहरी फूलोंकी १. परतला ज़र्दोज़ी १.

घड़ी क्लॉक १. घड़ी जेबी मए ज़ंजीरके १.
गिलास रुपहरी मए ढक्कनके १. गिलास दूसरा मए ढक्कनके १.
गुलाबदानी चांदीकी २. दवातें चांदीकी २.

फिर फ़ॉरिन् सेक्रेटरीने लाठ साहिबका हाथ लगवाकर महाराणा साहिबके सर्दारोंको मोतियोंकी माला पहिनाई और नीचे लिखे खिल्अ़त दियेः-

बेदलाके राव बख़्तसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. गुलूबन्द १.
डोरियां थान १. दुपट्टा १. पघड़ी १. गिलास १.

देलवाड़ाके राजरणा फ़त्हसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. रूमाल १ सियाह.
गाज १. कमख़ाब १. दुपट्टा १. पघड़ी १.
मलमल १. डोरिया १. गुलूबन्द १. घड़ी १.

कान्होड़के रावत् उम्मेदसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. रूमाल १.
दुपट्टा १. गाज १. पामड़ी सिफ़ेद १. मलमल १.
जामदानी १. कमख़ाब १. गुलूबन्द १. गिलास चांदीका
रकाबी चांदीकी १. ढक्कनवाला १.

पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. गुलूबन्द १. डोरिया थान १.
दुपट्टा १. दुशाला १. पघड़ी १. गिलास चांदीका १.

आसींदके रावत् खुमाणसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला जोड़ी १. रूमाल १.
जामदानी १. मलमल १. पघड़ी १. रकाबी चांदीकी १.
गिलास चांदीका १.

महाराज गजसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. सर्पेच १. दुशाला १. दुपट्टा १. डोरिया १.
पघड़ी १. मलमल १. दूरबीन दोचश्मी १.

महाराज सूरतसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. पघड़ी १. डोरिया १. दुशाला १.
दुपट्टा १. जामदानी १. दूरबीन १.

महाराज सोहनसिंहको

मोतियोंकी कंठी १. दुशाला १. पघड़ी १. जामदानी १.
मलमल १. दुपट्टा १. दूरबीन दोचश्मी १.

महता गोकुलचन्दको

मोतियोंकी कंठी १. दुशाला जोड़ी १. पघड़ी सिफ़ेद १. जामदानी १.
मलमल १. दुपट्टा १. घड़ी १.

फिर दस्तूरी बातें होकर महाराणा साहिबको लॉर्ड मेयोने और सर्दारोंको फ़ॉरिन सेक्रेटरीने इत्र व पान दिया; इसके बाद लबे फ़र्शतक लॉर्ड साहिब और जो अंग्रेज़ लोग पेश्वाईको आये थे वे कैम्पके बाहिरतक पहुंचा गये, शाही तोपख़ानहसे सलामीके फ़ाइर बदस्तूर सर हुए. इसी तरह महाराणा साहिबके बाद जोधपुर, बूंदी, और कोटा वग़ैरह रियासतोंके राजा लोगोंसे हर एककी इ़ज़्ज़तके मुवाफ़िक़ जुदी जुदी मुलाक़ात हुई.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रजब = ई० ता० २२ ऑक्टोबर] को क़रीब दस बजे आम दर्बार हुआ. महाराणा साहिब मए ऊपर लिखे हुए ९ सर्दारोंके शाही डेरोंमें तश्रीफ़ लेगये, १९ तोपकी सलामी सर हुई. इसी तरह मौजूदह राजा लोग अपनी अपनी इ़ज़्ज़तके मुवाफ़िक़ दर्बारके डेरोंमें आये. गवर्नर जेनरलकी कुर्सीके बाईं तरफ़ अव्वल नशिस्तपर महाराणा साहिबकी कुर्सी और उनके नीचे पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की कुर्सी थी. इसी तरह सब राजा लोगोंके नीचे एक एक पोलिटिकल एजेण्टकी कुर्सी, और अपने अपने मालिककी पीठपर उनके सर्दारोंकी कुर्सियां लगाई गईं, और लाठ साहिबके दाहिनी तरफ़ अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी लाइन थी. सब लोगोंके जमा होने बाद लॉर्ड मेयो दर्बारके स्थानमें आये और दस्तूरके मुवाफ़िक़ दर्बार हुआ. इस दर्बारमें सिर्फ़ जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह नहीं आये, जिनका हाल हम आगे लिखेंगे. बाद इसके लाठ साहिब उठकर अपने बंगलेमें चलेगये. फिर राजा लोग भी अपने अपने डेरोंको सिधारे. हरएक की रवानगीके वक़्त शाही तोपख़ानहसे बदस्तूर सलामी सर हुई. शामके वक़्त लाठ साहिब महाराणा साहिबके डेरोंमें तश्रीफ़ लाये, उनको लेनेके लिये बेदलाका राव बख़्तसिंह, देलवाड़ाका राजरणा फ़तहसिंह, और महता गोकुलचन्द गये. लॉर्ड मेयो मए अंग्रेज़ अफ़्सरोंके हाथियोंपर सवार हो थोड़ासा दिन बाक़ी रहे महाराणा

साहिबके लश्करमें आये, और हाथीपरसे नीचे उतरकर पैदल चल बड़ी नर्मीके साथ टोपी उतार महाराणा साहिबको सलाम किया. महाराणा साहिबने भी लबे फ़र्शतक पेश्वाई करके सलाम लिया और मिज़ाजकी खुशी पूछी, फिर लॉर्ड साहिबके हाथपर अपना हाथ रखकर कुर्सियोंपर तश्रीफ़ लाये. दाहिनी तरफ़ चांदीकी कुर्सीपर लॉर्ड मेयो और दूसरी कुर्सियोंपर उनके अफ्सर और बाई तरफ़ वैसीही कुर्सीपर महाराणा साहिब और सादी ५५ कुर्सियोंपर उनके सर्दार बैठे; महाराणा साहिब अंग्रेज़ीमें लॉर्ड मेयोसे बात चीत करते रहे. लॉर्ड मेयोकी बातोंका सिद्धान्त यह था, कि अजमेरमें मेरा आना ख़ास आपकी मुलाक़ातके लिये हुआ है. मैं (कविराजा श्यामलदास) ने जो इस दर्बारमें मौजूद था, आंखोंसे देखा है, कि लॉर्ड मेयो और महाराणा साहिबकी मुहब्बत उनके चिह्रोंपर झलक रही थी, फिर पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ कर्नेल् निक्सनने एक फ़िह्रिस्त हाथमें ली और बेदलाके राव बख़्तसिंहसे लेकर कुल सर्दारों व हम लोगोंसे एक एक अश्रफ़ी नज़ करवाई. लॉर्ड साहिब हरएकका नज़ानह सिर झुका झुका हाथसे छू छू कर मुआफ़ करते गये. उस वक़ उनकी मुहब्बतका बर्ताव हम लोगोंके साथ ऐसा मालूम होता था, कि मानो हमेशह उनके पास रहते हों. फिर दर्बार बर्ख़ास्त हुआ. महाराणा साहिबका हाथ लाठ साहिब अपने हाथपर रख लबे फ़र्शतक पहुंचे और बड़ी मुहब्बतके साथ एक दूसरेसे जुदा हुए. महाराणा शम्भुसिंह साहिबका ऐसा उत्तम स्वभाव था, कि जो शख़्स एक दफ़ा उनसे मिला वह ज़िन्दगीतक नहीं भूला; लेकिन् लॉर्ड मेयोका अख़्लाक़ भी उन्हींके मुवाफ़िक़ था. फिर हाथीपर सवार होकर लॉर्ड मेयो अलावह महाराजा जोधपुरके सब राजा लोगोंसे मुलाक़ात करनेको गये. इसी दिन क़रीब साढ़ेदस बजे रातके अचानक मए तीन चार ख़ानगी आदमियोंके जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह साहिब महाराणा साहिबके डेरोंमें आये. महाराणा साहिब भी ख़ानगीमें बेतकल्लुफ़ बैठे थे, डेरेसे बाहिर दौड़कर उनको अन्दर लेआये और एक पलंगपर दोनों बैठकर बात करने लगे. महाराजा साहिबने कहा, कि आज फ़ज्रके आम दर्बारमें मेरा जाना न हुआ, वह आपसे नीचे बैठनेका सबब नहीं था, सिर्फ़ मेरे और आपके बीचमें पोलिटिकल एजेएटका बैठना मैं अपनी हतक ख़याल करता हूं. अगर आपने कुछ और ढंगसे सुना हो, तो हर्गिज़ न मानना चाहिये, और मैं भी इसीलिये आया हूं, कि आपके और मेरे बीचमें कोई रंज न डालदेवे. फिर दोनों तरफ़से शराबके पियाले लेकर दोनों अधीश बग्घीमें सवार हो जोधपुरके डेरोंमें तश्रीफ़ लेगये. दोनों तरफ़से बड़ी मुहब्बतकी बातें होनेके बाद क़रीब एक बजे रातको महाराणा साहिब वापस अपने डेरोंमें दाख़िल हुए. यह मुलाक़ात दोनों रियासतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीको दूर करनेका पैग़ाम

थी, लेकिन् अफ़्सोस है, कि थोड़ेही अरसहके बाद महाराजा साहिब जोधपुरका इन्तिकाल होगया, जिससे दोनों अधीशोंकी दोबारह मुलाक़ात न होने पाई.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रजब = ई० ता० २४ ऑक्टोबर] को लॉर्ड मेयो अजमेरसे जयपुरकी तरफ़ रवानह होगये, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल १ [हि० ता० २९ रजब = ई० ता० २५ ऑक्टोबर] को कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मुलाक़ात करनेको महाराणा साहिबके डेरेपर आये. उनके बड़े पुत्र शार्दूलसिंह और दूसरे जवानसिंह भी साथ थे. महाराणा साहिब लबे फ़र्शतक पेश्वाई करके उन्हें ले आये, और अपने बाई तरफ़ गद्दीपर बिठाया, और उनके दोनों पुत्र गद्दीके नीचे बैठे (१). कृष्णगढ़के कुल सर्दारोंने महाराणा साहिबको नज़्रें दिखलाईं. बाद इसके दर्बार बर्खास्त होकर आधे फ़र्शतक महाराणा साहिबने उनको वापस पहुंचाया. फिर शामके वक्त महाराणा साहिब भी कृष्णगढ़ महाराजके डेरेपर तश्रीफ़ लेगये. महाराणा साहिब ड्योढ़ीपर सवारीसे उतरे, जहांतक महाराजा पेश्वाईको आये, और ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ गद्दीपर बैठे. फिर महाराणा साहिबको कृष्णगढ़ महाराजाके सब सर्दारोंने नज़्रें दिखलाईं. इसके बाद ड्योढ़ीतक जहां महाराणा साहिब सवार हुए महाराजा पहुंचानेको आये. फिर सवार होकर महाराणा साहिब अपने डेरोंमें आये.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ शश्र्वान = ई० ता० २६ ऑक्टोबर] को तीसरे पहरके वक्त एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्रूक और पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् निक्सन महाराणा साहिबके डेरोंमें आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात करके वापस गये. फिर शामको कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह खानगी मुलाक़ातको मए अपने दोनों बेटोंके महाराणा साहिबके डेरोंपर आये, जहां शामका खाना और शराब पीना वग़ैरह महाराणा साहिबके साथ करके वापस गये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० २ शश्र्वान = ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को जयपुरके महाराजा रामसिंहकी तरफ़से गीजगढ़का चांपावत जुझारसिंह और एक अह्लकार गद्दीनशीनीका दस्तूर लाये, वह पेश हुआ जिसमें १ हाथी, ४ घोड़े और खिल्अत वग़ैरह दस्तूरके मुवाफ़िक़ चीजें थीं. फिर एक बजे दिनके महाराणा साहिबने बग्घी सवार होकर तारघर व गवर्मेएट स्कूलको मुलाहज़ह फ़र्माया, और स्कूलके लड़कोंको इन्आम देनेके बाद एजेएट गवर्नर जेनरलसे उनके बंगलेपर मुलाक़ात करके वापस डेरोंमें तश्रीफ़

---

(१) कृष्णगढ़ महाराजाके ज्येष्ठ पुत्र महाराणा साहिबकी गद्दीपर बैठ सक्ते हैं, लेकिन् क़ाइदहके मुवाफ़िक़ जब महाराजाके साथ होते हैं तब नीचे बैठते हैं.

लाये, विक्रमी कार्तिक शुक्र ४ [हि० ता० ३ शअ्बान = .ई० ता० २८ ऑक्टोबर] को पुष्कर पधारे, वहां स्नान व चांदीका तुलादान, गजदान व अश्वदान करके वापस अजमेर डेरोंमें पधारगये; फिर अजमेरसे रवानह होकर नसीराबाद दाख़िल हुए, छावनीसे १९ तोपोंकी सलामी सर हुई. विक्रमी कार्तिक शुक्र ५ [हि० ता० ४ शअ्बान = .ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबने पाटणके राजराणा पृथ्वीसिंहको अपनी गद्दीपर बैठनेकी इज़्ज़त दी. यह रियासत कोटाके दीवान और कुछ दिनोंतक मेवाड़के जागीरदार रहनेवाले झाला ज़ालिमसिंहकी औलादके क़बज़हमें है, जिसको विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = .ई० १८३८] में गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने कोटासे अलहदह करके जुदा राज बनादिया. इसवक़ कर्नेल् निक्सन पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की कोशिश से यह .इज़्ज़त मिली, वर्नह राजपूतानहके राजाओंने इनको रईसोंमें क़बूल नहीं किया था. क़रीब ४॥ बजे शामको राजराणा पृथ्वीसिंह महाराणा साहिबके डेरोंमें आये. महाराणा साहिबने कोटाके बराबर पेश्वाई करके उन्हें अपने बाईं तरफ़ गद्दीपर बिठाया, फिर चंवर मोरछल वग़ैरह लवाज़िमह रखनेकी भी इजाज़त दी. बाद इसके इत्र व पान वग़ैरहका दस्तूर करके १ हाथी, २ घोड़े और १३ किश्तियां ख़िल्अत व ज़ेवरकी देकर उन्हें रुख़सत किया. इसके पीछे महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर राजराणा पृथ्वीसिंहके डेरोंपर तश्रीफ़ लेगये. राजराणा ड्योढ़ी, याने सवारीसे उतरे उस जगहतक पेश्वाईको आये, और दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और बाईं तरफ़ राजराणा एक गद्दीपर बैठे. राजराणाकी तरफ़से एक हाथी मए चांदीके हौदेके और २ घोड़े, तलवार, ढाल, पेशक़ब्ज़, मोतियोंकी माला, सर्पेच, और ख़िल्अ़तकी १३ किश्तियां पेश हुईं. फिर इत्र पान होकर राजराणाने महाराणा साहिबको ड्योढ़ी, याने सवार हुए वहां तक पहुंचाया. वहांसे बग्घी सवार होकर डेरोंमें तश्रीफ़ लाये. विक्रमी १९२७ कार्तिक शुक्र ६ [हि० १२८७ ता० ५ शअ्बान = .ई० १८७० ता० ३० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब भिणाय मक़ामपर वहांके राजा मंगलसिंहके मिहमान हुए. उसने अदब आदाबके अलावह फ़ौज वग़ैरहकी दावत अच्छी तरहसे की. दूसरे दिन बांदनवाड़े मक़ाम हुआ और वहांसे बरल व रामपुरामें मक़ाम करके विक्रमी कार्तिक शुक्र ११ [हि० ता० ९ शअ्बान = .ई० ता० ३ नोवेम्बर] को बदनोर पहुंचे. वहांके ठाकुर प्रतापसिंहको निहायत ख़ुशी हुई और उसने फ़ौजको अच्छी तरह दावत दी. दूसरे रोज़ भी वहीं मक़ाम रहा. ठाकुर प्रतापसिंह अपने मालिकके पधारनेसे ऐसा ख़ुश हुआ, कि मानो अपनी ज़िन्दगीभरकी नौकरीका .एवज़ भरपाया. एक हाथी, दो घोड़े और उ़म्दह पोशाक व ज़ेवर महाराणा साहिबके नज़ करके चारणों और पासवानों

को भी क़ीमती ख़िल्अ़त दिये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल द्वितीय १२ [हि० ता० ११ शव्वाल = ई० ता० ५ नोवेम्बर] को वहांसे आसींद पहुंचे. रावत् खुमाणसिंहकी तरफ़से फ़ौजको दावत दीगई, और दूसरे रोज़ भी वहीं मक़ाम रहा, चारणों और पासबानोंको खुमाणसिंहकी तरफ़से ख़िल्अ़त मिले. दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़, निछावर और बख़्शिश होकर विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १३ शव्वाल = ई० ता० ७ नोवेम्बर] को बेमाली मक़ामपर पहुंचे, जहां रावत् लक्ष्मणसिंहकी तरफ़से फ़ौजकी दावत हुई, और वहांसे विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि० ता० १५ शव्वाल = ई० ता० ९ नोवेम्बर] को रवानगी होकर मांडल, भीलवाड़ा, हमीरगढ़ और गंगारमें मक़ाम करके विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ता० १९ शव्वाल = ई० ता० १३ नोवेम्बर] को चित्तौड़की तलहटीमें पधार गये. इस सफ़रमें जो सर्दार व पासबान महाराणा साहिबके साथ थे उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

सर्दार.

सादड़ीका राज शिवसिंह.	बेदलाका राव बख़्तसिंह.
देवगढ़का रावत् कृष्णसिंह.	बेगमका रावत् सवाई मेघसिंह.
देलवाड़ाका राज फ़त्हसिंह.	आमेटका रावत् चत्रसिंह.
मेजाका रावत् अमरसिंह (१).	कान्होड़का रावत् उम्मेदसिंह.
बदनौरका ठाकुर प्रतापसिंह.	भैंसरोड़का रावत् भीमसिंह.
बानसीका रावत् मानसिंह.	कुराबड़का रावत् रत्नसिंह.
पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह.	आसींदका रावत् खुमाणसिंह.
शिवरतीका महाराज काका गजसिंह मए अपने भाई फ़त्हसिंह(२)के.	करजालीका महाराज काका सूरतसिंह.
बागोरका महाराज भाई सोहनसिंह(३).	हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह.
भदेसरका रावत् भोपालसिंह.	बोहेड़ाका रावत् अदोतसिंह.
बेमालीका रावत् लक्ष्मणसिंह.	लावाका ठाकुर (४) मनोहरसिंह.
रामपुराका राठौड़ संग्रामसिंह.	ख़ैराबादका बाबा जोधसिंह मए अपने पुत्र नाहरसिंहके.
महुवाका बाबा ग्यानसिंह.	बनेड़ाका राजा गोविन्दसिंह.

---

(१) इस समयतक इनको मेजा नहीं मिला था.

(२) यह अब श्रीमान् मेदपाटेश्वर हैं.

(३) पीछेसे यह बागोरकी गद्दीसे ख़ारिज करदिये गये.

(४) इसको ठाकुरका पद पीछेसे मिला है.

शाहपुराका राजाधिराज नाहरसिंह.
ताणाका राज देवीसिंह.
कैलवाका राठौड़ भ्योनाड़सिंह.
करेड़ाका राजा बहादुर भवानीसिंह.
लूहसाणीका चूंडावत जशवन्तसिंह.
नीमच ज़िले अठाणाका रावत् चत्रसिंह.
नेतावलका काका समन्दरसिंह.
बेदलाके रावका पुत्र तख़्तसिंह.
कोठारियाके रावत्का पुत्र केसरीसिंह.
गोगूंदाके राजका पुत्र अजयसिंह.
कान्होड़के रावत्का पुत्र नाहरसिंह.
भींडरके महाराजका पुत्र मदनसिंह.
नीमच ज़िले दारूका रावत् भवानीसिंह.
बंबोराका रावत् प्रतापसिंह.
रूपनगरका सोलंखी बैरीशाल.
काकरवाका राणावत उदयसिंह.
लाछूड़ाका राठौड़ जैतसिंह.
नीमच ज़िले सरवाणियाका बाबा माधवसिंह.
पहूनाका राणावत् माधवसिंह.
दौलतगढ़का चूंडावत नवलसिंह.
लांबाका राठौड़ बाघसिंह.
ग्यानगढ़का रावत् रघुनाथसिंह.
जरखाणाके बाबा जशवन्तसिंहका बेटा मदनसिंह.
कोशीथलके जागीरदारका बेटा.
फलास्याका गौड़ रघुबरसिंह.
आर्ज्याका चावड़ा प्रतापसिंह.
चन्दसिंह मए अपने बेटे गोविन्दसिंहके.
शिवपुरका राठौड़ रायसिंह (१).
तुरक्याका राणावत पृथ्वीसिंह.
जीवाणाका राणावत हमीरसिंह.
मदाराका शक्तावत मेघसिंह मए अपने बेटेके.
गोपालपुराका राणावत गोपालसिंह.
गंधेरका गोपालसिंह.
सुवावाका चूंडावत कबीरसिंह.
कान्हावत चत्रसिंह.
चूंडावत दौलतसिंह.
राणावत चत्रसिंह.
आंबेसरका राठौड़ भोपालसिंह.
चहुवाण लछमणसिंह.
प्रतापगढ़ ज़िले अरणोदका रघुनाथसिंह (२).

चारण.

सीसोदाका आढा रामलाल.
ढोकलियाका (कबिराजा) दधिवाड़िया श्यामलदास (३).

---

(१) इसवक़ इसको शिवपुर नहीं मिला था.

(२) यह अब प्रतापगढ़के वर्तमान महारावत हैं.

(३) इस समयतक कविराजाका ख़िताब नहीं मिला था.

खेमपुरका दधिवाड़िया ओनाड़सिंह. भाट बख़्तावर.
पाणेड़के बारहट दूलहसिंहका बेटा चतुर्भुज.

अह्लकार, पासबान व ढींकड़िया वगैरह.

(ब्राह्मण).

ब्रह्मचारी मथुरादास.
पुरोहित श्रीलाल.
भट संपतराम मए अपने बेटेके.
ख़वास विश्वनाथ मए अपने पुत्र हीरालाल व शिवराजके.
पांडे किशोरराय.
पाणेरी रत्नलाल.
पाणेरी गिरधरलाल.
दुब्बे भानुदत्त.
दुब्बे श्यामदत्त.
वैद्य नारायण भट मए अपने पुत्र गोवर्द्धनके.
पुरोहित ऊँकारनाथ.
पुरोहित सवाईलाल.
कर्मान्वी अमृतराम.
ज्योतिषी जीवणराम.
पुरोहित अक्षयनाथ.
पाणेरी शिवलाल.
पुरोहित सुन्दरनाथ मए अपने पुत्र श्यामनाथके.
भटमेवाड़ा काशीदत्त.
भट जगन्दत्त.
पाणेरी गोपाल.

(धायभाई व ढींकड़िया).

धव्वा बदनमल्ल.
रंगलाल.
ढींकड़िया तेजराम मए अपने बेटे नाथूलाल व जगन्नाथके.
धायभाई एका.
ढींकड़िया राधाकृष्ण मए अपने बेटे श्रीकृष्णके.
पडियार रत्ताका बेटा.
धायभाई गणेशलाल.
ऊमा.
ढींकड़िया उदयराम मए अपने बेटे गणेशलालके.
ढींकड़िया चतुर्भुज.
धायभाई अजीतसिंहका बेटा.
ढींकड़िया गोपाल.

(कायस्थ).

पंचोली प्राणनाथ.
पंचोली अक्षयनाथ.
महासाणी रत्नलाल मए अपने बेटे मोतीलालके.

महासाणी ब्रजलाल.
महासाणी दौलतसिंह.
सहीहवाला रामसिंह.
पंचोली फूलनाथ.
मुन्शी गुल्लू.
मुन्शी धनलाल.
मुन्शी मोड़ीराम.
राय विनोदीलाल.
पंचोली अक्षयचन्द.
पंचोली मथुरादास.
पंचोली गुमानसिंह.
पंचोली ज़ालिमचन्द.

पंचोली श्यामनाथ.
पंचोली भोजनाथ मए अपने बेटे
जोरावर नाथके.
सहीहवाला बख्तावरसिंह.
सहीहवाला अर्जुनसिंह मए अपने
बेटे गुमानसिंहके.
पंचोली कुन्दनलाल.
पंचोली ऊँकारनाथ.
पंचोली नीमनाथ.
पंचोली गुमानचन्द.
पंचोली दलीचन्द.

(महाजन).

महता गोकुलचन्द मए अपने
बेटे विट्ठलदासके.
कोठारी छगनलाल.
महता गोपालदास.
महता प्यारचन्द.
महता माधवसिंह.
महता फूलचन्द.
महता रघुनाथसिंहका पुत्र
माधवसिंह.

कोठारी केसरीसिंह.
महता(राय) पन्नालाल (१).
महता तख़्तसिंह.
महता रघुनाथसिंह.
भंडारी शिवलाल.
कालू खिमेसरा.
चौधरी सर्दारसिंह.
साह जोरावरसिंह सूराणा.
वेणीराम बसर.

जेठी बड़ा गणेश.
कोठारी नाथू चाबुकसवार.

जेठी छोटा गणेश.

(मुसल्मान).

मुल्ला किफ़ायतअली.

(१) इसको राय व सी० आइ० ई० का ख़िताब पीछेसे मिला है.

यह फ़िहरिस्त हाज़िरीके दारोगह मुन्शी मोडीरामके काग़ज़ोंसे और पुरोहित पद्मनाथकी तस्दीक़से लिखीगई है, जिसमें अजमेरके सफ़रमें साथ रहनेवाले तथा ज़नानी सवारीके साथ चित्तौड़के मक़ामपर हाज़िर हुए वे सब लोग शामिल हैं.

चित्तौड़के मक़ामपर विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ शश्रबान = .ई० ता० १७ नोवेम्बर] को बीकानेरसे महाराणा साहिबका मामा महाराज लालसिंह आया. महाराणा साहिबकी औरस माता बीकानेरी और दोनों महाराणी साहिबा भी चित्तौड़में आगई थीं; और महाराज शक्तिसिंहपर बागौरकी हक़दारीका दावा करनेसे महाराणा साहिब नाराज़ थे उनकी यहां नज़्र लीगई. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० ता० ३० शश्रबान = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को चित्तौड़से कूच करके सींगपुर, मातृकुंडियां व खाखलां होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रमज़ान = .ई० ता० २९ नोवेम्बर] को सर्दारगढ़ पहुंचे. ठाकुर मनोहरसिंहने मए ज़नानहके क़िलेमें पधराकर फ़ौज सहित अच्छी तरह मिह्मानी की, और वहांसे विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ६ रमज़ान = .ई० ता० ३० नोवेम्बर] को सियाणे और विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रमज़ान = .ई० ता० १ डिसेम्बर] को गढ़बोर पहुंचे. वहां चारभुजाकी भेट पूजा करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि० ता० ९ रमज़ान = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को क़िले कुम्भलगढ़को तश्रीफ़ लेगये. क़िलेको मुलाहज़ह करके दूसरे रोज़ वापस गढ़बोर आये; फिर देसूरीकी नालको मुलाहज़ह करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रमज़ान = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को खरणोटे, और वहांसे कैलवे मक़ाम करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रमज़ान = ई० ता० ८ डिसेम्बर] को राजनगर पहुंचे, जहां विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि० ता० १५ रमज़ान = .ई० ता० ९ डिसेम्बर] को राजसमुद्र तालाबकी पालपर जन्मोत्सवका जल्सह हुआ. फिर कांकड़ोलीमें द्वारिकाधीशके दर्शन और तालाब वग़ैरहकी सैर करके विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रमज़ान = .ई० ता० १३ डिसेम्बर] को नाथद्वारामें मक़ाम हुआ. यहांपर गोवर्द्धननाथकी भेट पूजा हुई, और विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ रमज़ान = .ई० ता० १६ डिसेम्बर] को कोठारिये और दूसरे दिन श्री एकलिंगेश्वर होकर विक्रमी पौष कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रमज़ान = .ई० ता० १८ डिसेम्बर] को गोवर्द्धनविलास पधारे. क़रीब एक महीनातक ज्योतिषी लोगोंकी रोक टोकसे गोवर्द्धनविलास में रहना हुआ. इन लोगोंकी हरवक़्क़की रोक टोकसे महाराणा साहिबने दिक़ होकर मुझ (कविराजा श्यामलदास) को आज्ञा करके ज्योतिषके फलित ग्रन्थोंके

अनुसार शिवालिखितका पाना बनवाकर अपने लिखनेकी पेटीमें रखलिया, और उसीके अनुसार बर्ताव करते रहे, लेकिन् फिर भी इन लोगोंकी सिढाईपर अमल करनाही पड़ता था. विक्रमी माघ कृष्ण १० [हि० ता० २४ शव्वाल = .ई० १८७१ ता० १६ जैन्युअरी] को ज्योतिषियोंके कथनानुसार महाराणा साहिबने राजधानी उदयपुर के महलोंमें प्रवेश किया.

विक्रमी फाल्गुन शुक्क ३ [हि० ता० २ ज़िल्हिज = .ई० ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को कोटाके महाराव शत्रुशाल शादी करनेको ईडर जातेवक़ उदयपुरमें आये. महाराणा साहिबने मए पोलिटिकल एजेएट निक्सन साहिब व दूसरे सर्दारोंके दो मीलतक पेश्वाई की. महाराव साहिबने दोनों हाथसे और महाराणा साहिबने एक हाथसे सलाम किया, फिर बग़लगीर हुए. इसके बाद महाराव शत्रुशाल पोलिटिकल एजेएटसे दस्तापोशी करके महाराणा साहिबके सर्दारोंसे मिले. बाद इसके महाराणा साहिब तो महलोंमें पधारे और महाराव साहिब अपने डेरोंमें पहुंचे; उसवक़ उदयपुरके तोपख़ानहसे १७ तोपकी सलामी सर हुई. महाराणा साहिबकी तरफ़से दस्तूरके मुवाफ़िक़ मिह्मानदारी हुई. विक्रमी फाल्गुन शुक्क ४ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = .ई० ता० २३ फ़ेब्रुअरी] के दिन शामके वक़ महाराव शत्रुशाल महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको महलोंमें आये, और विक्रमी फाल्गुन शुक्क ६ [हि० ता० ५ ज़िल्हिज = ई० ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा साहिब उनके डेरोंमें पधारे और उसी दिन कूच करके महाराव साहिब ईडरकी तरफ़ गये. महाराव साहिबके लिये फ़ौज समेत खाने पीनेकी सामग्री महाराणा साहिबके कोठारसे दिलाई गई. यह महाराव साहिब हरवक़ शराबके नशेमें चूर रहते थे.

इन दिनोंमें कोठारी केसरीसिंहकी तरफ़ महाराणा साहिबकी मिहर्बानी ज़ियादह बढ़ती हुई देखकर चन्द आदमियोंने अधीशको यह लालच दिखाया, कि हुज़ूरका इरादह तीर्थ यात्रा करनेका है और राज्यकी आमदनी व ख़र्च बराबर है, इसलिये अह्लकारोंसे दश पन्द्रह लाख रुपया एकट्ठा करलिया जावे. इसपर पेश्तर कोठारी केसरीसिंह और छगनलालसे तीन लाख रुपयोंका रुक़ा लिखवाया गया, और महता पन्नालालसे १२००००) का, इसी तरह दूसरे आदमियोंकी तरफ़ भी तज्वीज़ होरही थी. एक दिन मैं (कविराजा श्यामलदास) ने गुलाब बाग़में एक हिन्दी कविताकी किताब महाराणा साहिबके पास इस मत्लबसे पेश की, कि इसमें कवित्व अच्छे हैं. महाराणा साहिबको हिन्दी शाइरीका बड़ा शौक़ था. मैंने उस किताबमें एक पत्र इस मज़्मूनका लिखकर रखदिया था, कि कुल रियासती आदमियोंसे एक साथ रुपया वुसूल करनेमें वायवैला

और हुज़ूरकी बड़ी बदनामीका बाइस होगा. मुझको एक तरफ़ लेजाकर फ़र्माया, कि तुम मौक़ेपर ऐसी अर्ज़ बेख़ौफ़ करदिया करो. दूसरे ही रोज़ पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् निक्सनने भी वैसीही सलाह दी, जैसी मैंने अर्ज़ की थी. वह रुपया वुसूल करने का काम बन्द कियागया, और थोड़े ही अरसेके बाद कोठारी केसरीसिंह व छगनलाल को १ लाख और महता पन्नालालको अस्सी हज़ार रुपये छोड़े गये, और केसरीसिंहकी तरफ़ दिन बदिन मिहर्बानी बढ़ने लगी.

विक्रमी १९२८ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० १२८८ ता० २२ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० ११ जून] को कोठारी केसरीसिंहकी निगरानीमें कोठारी छगनलाल, महता गोपालदास, साह ज़ोरावरसिंह सूराणा, महता ज़ालिमसिंह, कायस्थ राय सोहनलाल, कायस्थ मथुरादास, ढींकड़िया उदयराम और भंडारी केवलराम इन आठ आदमियोंके सुपुर्द मुल्की व कारख़ाने-जातका काम कियागया. इस समयतक महकमह ख़ासका काम पूरी हालतपर नहीं पहुंचा था, लेकिन् महता पन्नालालकी होश्यारीसे दिन ब दिन तरक़्क़ीपर था, और ज़बानी कार्रवाई कमज़ोर होती जाती थी. इसी वक़्तसे इन्तिज़ामी हालतका प्रारम्भ समझना चाहिये. महाराणा साहिबकी दिली ख़्वाहिश थी, कि मेवाड़में अनाज बांटलेने (लाटा या कूंता) का रवाज बन्द होजावे और किसानोंसे ठेकाबन्दी होकर नक़्द रुपया मुक़र्रर करदियाजावे, लेकिन् यह काम कुल रियासती अहलकारोंके मन्शाके विरुद्ध था, इसलिये महाराणा साहिबने अपना दिली मन्शा कोठारी केसरीसिंहसे ज़ाहिर करके यह काम उसके सुपुर्द किया. उक्त कोठारीने बड़ी तन्दिही और अक़्लमन्दीके साथ गुज़रे हुए दस वर्षका औसत निकालकर कुल मेवाड़में ठेका बांधदिया. अव्वल तो कोठारी केसरीसिंह तजर्बहकार, ख़ैरख़्वाह, रोबदार और अक़्लमन्द आदमी था, दूसरे महकमह ख़ासका अफ़्सर उसके भाईका दामाद महता पन्नालाल और कोठारी छगनलाल वग़ैरह उसके बनाये हुए अहलकार मददगार होगये, जिससे यह काम अच्छी तरह चलगया, लेकिन् ऐसे आदमीकी कारगुज़ारीमें बखेड़ा डालने-वाले आदमी भी मौजूद थे, तोभी उसने ठेकेके बन्दोबस्तमें ख़लल न आने दिया, मालिक की मिहर्बानी उसके नेक चाल चलनके सबब बढ़ती गई, परन्तु ईश्वरने उसकी ज़िन्दगी इसी विक्रमी के फाल्गुन कृष्ण ३ [हि० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १८७२ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] में ख़त्म करदी. उसका बांधा हुआ माली बन्दोबस्त उसकी अदम मौजूदगीमें भी ४ वर्षतक चलतारहा. उसके बाद मालके बन्दोबस्तके मददगार महता राय पन्नालाल व कोठारी छगनलाल थे. अफ़ीमका महसूल और निकास भी पेश्तर बेतर्तीब व पुराने ढंगपर था, जिसकी दुरुस्ती पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहसे महाराणा साहिबने उदयपुरमें कांटा क़ाइम करके की. कुल मेवाड़की अफ़ीम उदयपुरमें होकर खैरवाड़ाके रास्ते अहमदाबादको

जानेलगी. इस बन्दोबस्तमें महता पन्नालाल और ओपिअम एजेण्ट इंगलस साहिबने अच्छी कोशिश की. विक्रमी आषाढ़ शुक्क ७ [हि० ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १८७१ ता० २५ जून] को शाहपुराके रामस्नेही साधु महन्त हिम्मतराम आये, जिनको महाराणा साहिब ग्राम भुवाणातक पेश्वाई करके उदयपुरमें लेआये, वह नवलखा बाग़के महलोंमें ठहरे, और इन्हीं दिनोंमें महाराणा साहिबके हक़ीक़ी मामा लालसिंह और उनके पुत्र डूंगरसिंह रुख़्सत होकर बीकानेरकी तरफ़ रवानह हुए. महाराणा साहिबका श्वशुर बांसवाड़ा के ज़िले गढ़ीका जागीरदार चहुवान रत्नसिंह जो कुछ अरसहसे उदयपुरमें आया हुआ था, उसने विक्रमी प्रथम भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० ता० २१ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० ९ ऑगस्ट] को महाराणा साहिबको दावत दी. महाराणा साहिबने भी उसे रावकी पदवी, ताज़ीम, बांहपसाव और रुख़्सती पानका बीड़ा इनायत करके उसकी इज़्ज़त बढ़ाई, जो पहिले गढ़ीवालोंको मुयस्सर नहीं हुई थी. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ३ [हि० ता० १६ शअ्बान = ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब मए कुल ज़नानी सवारी और सर्दार व पासबानोंके धव्वा बदनमल्लकी हवेलीपर मिह्मान हुए. यह जल्सह बड़ी धूम धामके साथ हुआ, और महाराणा साहिब पांच दिनतक उसके मकानपर रहे. विक्रमी कार्तिक शुक्क १२ [हि० ता० ९ रमज़ान = ई० ता० २३ नोवेम्बर] को शाहपुराके राजाधिराज नाहरसिंह लक्ष्मणसिंहोतके तलवार बंधी. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० ता० २० रमज़ान = ई० ता० ४ डिसेम्बर] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्रूक साहिब उदयपुर आये, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० ता० २२ रमज़ान = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को शामके वक्त महलोंके बड़े चौकमें आम दर्बार हुआ. महाराणा साहिब चांदीके सुनहरी कामवाले बड़े सिंहासनपर और उनकी दाहिनी तरफ़ कर्नेल् ब्रूक वग़ैरह २० अंग्रेज़, जिनके बाद ग़ैर रियासतोंके वकील, और बाई तरफ़ मेवाड़के सर्दार और सामने भी मेवाड़के बड़े सर्दारोंमेंसे और पीछेको बड़े बड़े अहलकार कुर्सियोंपर मौजूद थे. फिर कर्नेल् ब्रूकने अव्वल दरजहका ग्रैण्ड कमाण्डर ऑफ़ दि स्टार ऑफ़ इंडियाका तमगृह व गलेका हार वग़ैरह पहिनाकर कपड़ेके झंडेमें महाराणा साहिबको वह चिन्ह दिया, कि जिसमें एक तरफ़ क्षत्री और एक तरफ़ भील जिनके बीचमें सूर्यके आकारके ऊपर एकलिंगेश्वरकी मूर्ति वग़ैरह और नीचे दोहाके दो पद (जो दृढ़ रक्खे धर्मको तिहिं रक्खे करतार) थे. इस के बाद लॉर्ड मेयो गवर्नर जेनरल हिन्दके ख़रीतेका तर्जमह पढ़ा गया, फिर दर्बार बर्ख़ास्त हुआ. इस तमग़ेके बारेमें चन्द महीनों पहिले ख़ानगी तौरपर बहुत कुछ बह्स हुई थी, और महाराणा साहिबकी तरफ़से पोलिटिकल एजेण्टकी मारिफ़त उज़्र हुआ था, कि

इस रियासतके मालिक ज़मानह क़दीमसे हिन्दवा सूरज कहलाते हैं, जिनको स्टारकी ज़ुरूरत नहीं है. हम बिदून स्टार मिलनेके ही गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी मिहर्बानियोंके शुक्रगुज़ार हैं, जिसपर लॉर्ड मेयोकी तरफ़से जवाब मिला, कि हमारे मुल्कमें बराबरी वाले बादशाह बादशाहोंके लिये तमगृह भेजते हैं, और वे उसको बड़ी इ़ज़्ज़तका बाइस समझते हैं, इसलिये आपको भी दूसरा ख़याल न करना चाहिये. तब महाराणा साहिबने कहा, कि अगर गवर्मेएटकी यही मर्ज़ी है, तो हमारे लिये तमगृह उदयपुरमें भेजदेवें. लॉर्ड मेयोने यह बात कुबूल करके कर्नेल् ब्रूकके साथ यह तमगृह भेजदिया.

विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १ [हि० ता० १५ ज़िल्हिज = ई०१८७२ ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को शिवरतीके महाराज गजसिंहकी बाईका विवाह हुआ, और महाराणा साहिब उनकी हवेलीपर हथलेवा छुड़ानेके लिये गये. विक्रमी १९२९ वैशाख शुक्क ९ [हि० १२८९ ता० ८ रबीउ़ल्अव्वल = .ई० ता० १७ मई] को लक्षचएडीकी समाप्ति नये महलोंमें हुई. इस कार्यमें ब्रह्मचारी मथुरादासकी सलाहसे हज़ारों रुपया ख़र्च हुआ. अख़ीरमें दूसरे मुख़ालिफ़ ब्राह्मणोंने मथुरादासपर यह दावा किया, कि यह पूर्णाहुती और कुएड व मएडप शास्त्रके अनुसार नहीं हुए, इसलिये शान्ति होनी चाहिये. इस बह्समें मुझ (कविराजा श्यामलदास) को महाराणा साहिबने पंच ठहराया. आख़रकार कुएडके बनानेमें ग़लती पाई गई. महाराणा साहिबने ख़ानगी तौरपर शान्ति करवाई. इसी तरह मथुरादासने कर्मोन्तरी अमृतराम वगै़रहका क़ुसूर दिखलानेके लिये भाद्रपद शुक्क १५ के दिन महालय श्राद्ध करना अनुचित बतलाया. दोनों तरफ़से सुबूत पेश हुए, अन्तमें मथुरादासका दावा ख़ारिज रहा. उन दिनों ब्राह्मणोंमें आपसकी असूयाके कारण इस क़िस्मके कई मुक़द्दमे पेश होते थे.

इन्हीं दिनोंमें लांबा और रूपाहेलीका मुक़द्दमह ख़त्म हुआ, जिसका हाल इस-तरहपर है, कि बदनौरके भाइयोंमें रूपाहेली और लांबा दो ठिकाने महाराणा साहिबके जागीरदार हैं. रूपाहेलीके गांव तसवारिया और लांबाकी सर्हदपर लांबाके जागीरदार बाघसिंहने एक तालाब बनवाकर उसमें पानी लानेको कुछ दूरतक खाई खुदवाई, जिसपर रूपाहेलीवाले जमइ़यत लेकर उस खाईको तोड़ने गये. उधर लांबावाले भी आपहुंचे; लांबाके जागीरदारका बेटा बहादुरसिंह, उसका भाई लक्ष्मणसिंह, हमीरसिंह, और ज़िले अजमेर न्यारांका गौड़ बिड़दसिंह, ४ आदमी मारेगये, और रूपाहेलीकी तरफ़ छोटी रूपाहेलीके जागीरदारका भाई और दूसरे दो आदमी मारेजानेके अ़लावह तरफ़ैनके चन्द आदमी ज़ख़्मी हुए. यह लड़ाई विक्रमी १९१२ [हि० १२७२ = .ई० १८५५] में हुई थी. सर्दारोंकी मुख़ालफ़तके सबब इस मुक़द्दमेकी

शिकायत पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् लॉरेन्स साहिबके पास पहुंची. बदनौरका ठाकुर प्रतापसिंह बाघसिंहका मददगार था, उसकी पैरवीसे कर्नेल् लॉरेन्सने दोनों जागीरदारोंको तो यह जवाब दिया, कि इस मुक़द्दमहमें हम दस्तन्दाज़ी नहीं करसके, तुम लोग महाराणा साहिबके पास जाओ; लेकिन् रियासतमें अपनी राय यह लिख भेजी, कि रूपाहेली वालोंकी ज़ियादती है इसलिये गांव तस्वारिया ख़ूनके एवज़ बाघसिंहको दिलाया जावे. यह मुक़द्दमह कई वर्षोंतक चलता रहा. बाद इसके तस्वारिया और लांबाकी सर्हदका मुक़द्दमह तो अंग्रेज़ी अफ़्सरोंकी मारिफ़त तय होगया, लेकिन् मूंडकटीका मुक़द्दमह बाक़ी रहा. बाघसिंहकी तरफ़से पैरवी होती रही. आख़रकार कर्नेल् ब्रूककी सिफ़ारिशसे यह मुक़द्दमह महाराणा साहिबने पंचायतके सुपुर्द किया, जिसमें बेदलाका राव बख़्तसिंह, भींडरके महाराजका पुत्र मदनसिंह, महता ज़ालिमसिंह रामसिंहोत, कोठारी छगनलाल, बख़्शी मथुरादास, और ढींकड़िया उदयराम थे. विक्रमी १९२८ चैत्र कृष्ण ६ [हि० १२८९ ता० २० मुहर्रम = .ई० १८७२ ता० ३० मार्च] को पंचायतने यह फ़ैसलह किया, कि बन्दूक़ तो पेश्तर लांबाकी तरफ़से चली, लेकिन् तालाबकी खाई तोड़नेमें पेशक़दमी रूपाहेलीकी है, और लांबाके ४ आदमी मुअ़ज़्ज़ज़ मारेगये, इसलिये ग्राम तस्वारिया मूंडकटीमें रूपाहेलीसे लांबाको दिलाया जावे. इस फ़ैसलेकी तामीलके लिये महकमहख़ाससे कई ताकीदें हुईं, लेकिन् रूपाहेली वालोंने तामील नहीं की. तब उदयपुरसे दो तोप, भीम पल्टन, स्वरूप पल्टन और शम्भु पल्टनके निशान और रिसालह वग़ैरह सवार और जहाज़पुर, मांडलगढ़ वग़ैरहकी सर्कारी जमइयतें मए महता गोकुलचन्दके भेजी गईं, और देवगढ़, बदनौर, आसींद, भैंसरोड़, शाहपुरा, भगवानपुरा, दौलतगढ़ और संग्रामगढ़ वग़ैरह सर्दारोंकी जमइयतें भी फ़ौजके शामिल हुईं. विक्रमी १९२९ वैशाख शुक्ल ८ [हि० १२८९ ता० ६ रबीउल्अव्वल = .ई० १८७२ ता० १५ मई] को महता गोकुलचन्दने फ़ौज लेकर गांव तस्वारियापर क़बज़ह करलिया; चन्द आदमी मुक़ाबलह करनेवाले वहां थे, वे रूपाहेली चलेगये. विक्रमी १९१२ [हि० १२७२ = .ई० १८५५] में लड़ाई हुई, तब रूपाहेलीका जागीरदार सवाईसिंह था, वह महाराणा स्वरूपसिंहके सामने गुज़रगया. उसका बेटा बलवन्तसिंह उज़्र करता रहा, वह भी विक्रमी १९२८ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२८८ ता० २६ रजब = .ई० १८७१ ता० १२ ऑक्टोबर] को मरगया, उसका एक कम उम्र लड़का चत्रसिंह इसवक़ रूपाहेलीका जागीरदार था, जिसकी मा और उसके चचा लालसिंह व माधवसिंहने फ़ौज ख़र्च देकर यह गुज़ारिश की, कि गांव तस्वारिया ख़ालिसहमें रहनेसे तो हमको कुछ उज़्र नहीं, लेकिन् लांबा

वालोंको न मिले. महाराणा साहिबने भी उस बड़े जागीरदारकी अर्ज़पर लिहाज़ करके फ़ौज ख़र्च लेनेके बाद तस्वारिया ख़ालिसहमें रक्खा.

विक्रमी १९२९ ज्येष्ठ कृष्ण ९ [हि० १२८९ ता० २२ रबीउल्अव्वल = .ई० १८७२ ता० ३१ मई] को महाराणा स्वरूपसिंहकी महाराणी मेड़तणीने कोठारी केसरीसिंहकी हवेलीके क़रीब बाज़ारमें विष्णु (अभयस्वरूपबिहारी) का मन्दिर और बावड़ी तय्यार करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा हुई. इन्हीं दिनोंमें बीकानेरके महाराजा सर्दारसिंह गुज़रगये, जिनकी ख़बर आनेपर विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० ३ जून] को मातमी दर्बार हुआ. उक्त महाराजाके कोई औलाद न थी, इसलिये चन्द हक़्दारोंने वारिस बननेके लिये गवर्मेंट अंग्रेज़ीमें दर्ख्वास्तें पेश कीं. महाराणा साहिबने अपने मामा लालसिंहके बेटे डूंगरसिंहको, जो हक़दार भी था मुतबन्ना क़रार दियेजानेके मत्लबसे कर्नेल् ब्रूकके नाम सिफ़ारिशी चिट्ठी लिखी और सहीहवाले अर्जुनसिंहको आबूपर भेजा. इस मददका बहुत अच्छा असर हुआ, और डूंगरसिंह बीकानेरकी गद्दीपर बिठायागया. इस इह्सानमन्दीके शुक्रियहमें मामा लालसिंह और महाराज डूंगर-सिंहने एक पत्र महाराणा साहिबको लिखभेजा, जिसका मत्लब यह है, कि हमको आपके तुफ़ैलसे बीकानेरका राज्य मिला है. वह अस्ल पत्र महाराणा साहिबकी ख़ास पेटीमें मौजूद है. हक़ीक़तमें इस सिफ़ारिशका गवर्मेंट अंग्रेज़ीने बहुत लिहाज़ रक्खा और सहीहवाले अर्जुनसिंहको इस ख़िद्मतकी नेकनामी मिली.

विक्रमी आश्विन शुक्ल ४ [हि० ता० २ शब्बान = ई० ता० ६ ऑक्टोबर] को पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् निक्सन विलायत जानेकी रुख़्सती मुलाक़ात करनेके लिये महाराणा साहिबके पास आये, और दूसरे दिन रवानह होगये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० ११ रमज़ान = .ई० ता० १३ नोवेम्बर] को झालरापाटणके महाराज-राणा पृथ्वीसिंह नाथद्वारेकी यात्रा करते हुए उदयपुर आये. महाराणा साहिब उन्हें पेश्वाई कर लेआये, १५ तोपकी सलामी उदयपुरके तोपख़ानहसे सर हुई. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १२ रमज़ान = .ई० ता० १४ नोवेम्बर] को महाराजराणा महलोंमें महाराणा साहिबकी मुलाक़ातके लिये आये, जिनको ११ किश्तियोंमें ख़िल्अ़त और १ हाथी व २ घोड़े दियेगये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रमज़ान = ई० ता० १५ नोवेम्बर] को महाराजराणाके डेरोंमें महाराणा साहिब तश्रीफ़ लेगये. उन्होंने हाथी, घोड़े, ज़ेवर, वस्त्र और शस्त्र वगैरह कई चीज़ें पेश कीं. इसके बाद चन्द ख़ानगी मुलाक़ातें व शिकार वगैरह हुई, और विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमज़ान = ई० ता० २८ नोवेम्बर] को वह अपनी रियासतकी तरफ़ रवानह होगये.

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ता० १ शव्वाल = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को खैरवाड़ाके फ़र्स्ट असिस्टैण्ट मेकीसन साहिब मेवाड़के क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट होकर उदयपुर आये. विक्रमी पौष कृष्ण १० [हि० ता० २३ शव्वाल = ई० ता० २५ डिसेम्बर] को कर्नेल् हैचिन्सन साहिब मेवाड़के क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट होकर आये. इसवक्त महाराणा साहिब नाहरमगरेमें थे, उसी जगह मुलाक़ात हुई. दूसरे रोज़ उक्त साहिब उदयपुर चले आये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल २ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० १८७३ ता० २८ फ़ेब्रुअरी] को जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंहके गुज़रजानेकी ख़बर मिलनेपर महाराणा साहिबने मातमी दर्बार किया. विक्रमी १९३० आषाढ़ कृष्ण १ [हि० ता० १५ रबीउस्सानी = ई० ता० ११ जून] को एक अंग्रेज़ने महलोंके चौकमें ओंधेसिर लटककर दांतोंमें रस्सोंके सहारे तोपको पकड़ चलानेका तमाशह दिखलाया. महाराणा साहिब मए पोलिटिकल एजेंटके स्वरूपविलासमें बैठे देखरहे थे, और बहुतसे लोग चौकमें जमा थे; बारूद ज़ियादह भरनेसे तोप फट गई जिसके टुकड़ोंकी चोटसे एक आदमी जानसे मरा और चन्द ज़ख़्मी हुए; अगर्चि तोपके टुकड़े दूर दूरतक गये, लेकिन् महाराणा साहिबकी तरफ़ ख़ैरियत रही.

शम्भुनिवासका महल तो पेश्तर टेलर साहिबकी निगरानीमें तय्यार होगया था, लेकिन् उसको बढ़ाकर दक्षिणी तरफ़ दोमन्ज़िला महल फिर बनवाया गया, जिसका उत्सव और वास्तु मुहूर्त विक्रमी श्रावण कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १७ जुलाई] को हुआ. इस वक्त बहुत अच्छा जल्सह किया गया था. यह शम्भुनिवासका दक्षिणी हिस्सह डॉक्टर कनिङ्घम साहिबकी निगरानीमें तय्यार हुआ. इस जल्सहमें महता राय पन्नालालको पैरमें सोनेके लंगर, साह अम्बाव मुरड्याको मोतियोंकी माला और गांव, महासाणी रत्नलालको बैठक, तथा बाक़ी सर्दार, चारण, पासबान, और गजधर वग़ैरह सैकड़ों आदमियोंको ज़ेवर, सरोपाव व हाथी वग़ैरह इन्आममें मिले. इस जल्सहमें मुझे (कविराजा श्यामलदास) को एक उम्दह सरोपाव और हाथकी सुवर्णमयी पहुंचियां इनायत हुई थीं. इसी सालमें कर्नेल् हैचिन्सन साहिबकी सलाहके मुताबिक़ स्टाम्प और रेजिस्टरीका क़ाइदह मुक़र्रर हुआ, और साहिबकी मारिफ़त बनारसका रहनेवाला मुन्शी मुहम्मद कुद्रतुल्लाह बुलाया जाकर विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १ [हि० ता० १५ जमादियुस्सानी = ई० ता० ९ ऑगस्ट] को यह (रेजिस्टरी और स्टाम्पका) महकमह क़ाइम हुआ; और इन्हीं दिनोंमें उक्त साहिबकी सलाहके मुवाफ़िक़ एक महकमह तवारीख़का भी क़ाइम किया गया, जिसमें पेश्तर तो बख़्शी मथुरादास और ढींकड़िया उदयराम वग़ैरह लोग भरती हुए, लेकिन् काम नहीं

चलनेके सबब यह महकमह मेरे (कविराजा श्यामलदास) और पुरोहित पद्मनाथके सुपुर्द किया गया और कुछ काम भी जारी होगया था, परन्तु पेश्तर ऐसा काम हम लोगोंने कभी नहीं किया था; इस नातजर्बेहकारीके सबब बगैर पूरा सामान एकट्ठा करनेके कामका प्रारम्भ करदिया, और थोड़ेही अरसहके बाद महाराणा साहिबका भी परलोक वास होगया, इत्यादि कई कारणोंसे यह महकमह टूटगया, लेकिन् मैं अपने तौरपर इस कामका सामान एकट्ठा करनेसे न रुका, जो मुझको इस तवारीखके प्रारम्भ समयमें बहुत उपयोगी हुआ.

विक्रमी आश्विन शुक्ल १५ [हि० ता० १३ शअ्बान = .ई० ता० ६ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब उदयपुरसे रवानह होकर मए ज़नानी सवारीके एकलिंगेश्वरकी पुरी, देलवाड़ा, पलाणा, राजनगर और कैलवे मकाम करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि० ता० १८ शअ्बान = .ई० ता० ११ ऑक्टोबर] को गढ़बोर पहुंचे, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २१ शअ्बान = .ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को वहांसे लौटकर कैलवे, देपुर और नाहरमगरे होते हुए विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ रमज़ान = .ई० ता० २३ ऑक्टोबर] को उदयपुरमें दाखिल होगये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० १२९१ ता० ५ मुहर्रम = ई० १८७४ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को शाहपुराके रामस्नेही महन्त हिम्मतराम अपनी सम्प्रदायकी रीतिका फूलडोल (१) करनेके लिये उदयपुरमें आये. महाराणा साहिब उनको पेश्तरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई कर नौलखाके बाग़में लेआये. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० ता० १२ मुहर्रम = .ई० ता० २ मार्च] को एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् पेली उदयपुर आये. महाराणा साहिब मए पोलिटिकल एजेएट हैचिन्सन और अपने सर्दारोंके मामूली पेश्वाई करके उनको लेआये और दूसरे रोज़ शामको वह वापस रवानह होगये. विक्रमी चैत्र कृष्ण ३ [हि० ता० १६ मुहर्रम = .ई० ता० ६ मार्च] को पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ कर्नेल् हैचिन्सन छुट्टीपर विलायत गये. विक्रमी १९३१ चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ५ सफ़र = .ई० ता० २४ मार्च] को मेजर ब्राडफ़ोर्ड क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेएट होकर खैरवाड़ाके रास्ते उदयपुर आये.

विक्रमी वैशाख शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० २३ एप्रिल]

---

(१) शाहपुराके रामस्नेही साधु होलीके दूसरे दिन फूलडोलका उत्सव मानते हैं. इस उत्सव पर दूर दूरसे रामद्वारोंके रामस्नेही साधु आकर अपने महन्तको हाज़िरी देते हैं, और उनको माननेवाले हज़ारों यात्री भी दर्शन करनेको आते हैं. यह जल्सह हर साल शाहपुरेमें होता है, लेकिन इस वर्षका उत्सव महाराणा साहिबकी इच्छानुसार उदयपुरमें किया गया.

को महाराणा साहिबकी ओरस माता (बागोरके कुंवर शार्दूलसिंहकी पत्नी) नन्दकुंवरने ठाकुर श्री गोकुलचन्द्रमाका मन्दिर महलोंके क़रीब बनवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बड़ी धूमधामके साथ हुई. यह वल्लभकुलकी सेवाके ठाकुर हैं. इस प्रतिष्ठामें हज़ारों रुपये इनूआम, इक्राम व भोजन वग़ैरहमें ख़र्च हुए. सर्दार, चारण, पासबान, अह्लकार, मन्दिरके तअल्लुक़दार और गजधर वग़ैरह लोगोंको हज़ारों रुपयेका ज़ेवर, वस्त्र व हाथी, घोड़े इनूआममें मिले. मुझ (कविराजा श्यामलदास) को भी मोतियों की माला, सर्पेच, उम्दह ख़िल्अत और हाथी मिला था. यह हाल विस्तारके भयसे अधिक नहीं लिखागया है. विक्रमी प्रथम आषाढ़ कृष्ण १० [हि० ता० २३ रबीउस्सानी = .ई० ता० ९ जून] को क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ मेजर ब्राडफ़ोर्ड साहिब रुख़्सतपर गये, और विक्रमी प्रथम आषाढ़ शुक्ल ४ [हि० ता० ३ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० १८ जून] को उनकी जगह कर्नेल् राइट साहिब आये.

अब हम फिर गुज़रे हुए दो वर्षकी पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ हैचिन्सन और ब्राडफ़ोर्डकी रिपोर्टका शेष हाल पूरा करते हैं:-

पहिली रिपोर्ट .ईसवी १८७२-७३ [वि० १९२९ = हि० १२८९-९०] की जिसमें ५५०५ पेटियां अफ़ीमकी कांटेपर चढ़ीं, जिससे साइरमें बहुत फ़ायदह हुआ; और १००००० एक लाख यात्री और १००० गाड़ियोंकी आमदोरफ्त खैरवाड़ाकी सड़कपर हुई. यह सड़क टॉमस विलिअम साहिबकी निगरानी और मिह्नतसे खैर-वाड़ाके क़रीब पहुंचगई है. इस सड़कपर मज़्दूरीका काम भी लोगोंसे लियागया हैं, और हरएक गमेती अपनी अपनी पालकी हदमें उसी पालके आदमीसे काम लिये-जानेका दावा करते हैं. और मालका इन्तिज़ाम १० वर्षका औसत देखकर गांववार लगानपर लगाया गया है, और दर्बार इस इन्तिज़ामसे अपने मुल्कका फ़ायदह सम-झते हैं, लेकिन मुझको इस बातका डर है, कि अह्लकार लोग इस बातमें बखेड़ा डालेंगे जो लाटा कूंताको पसन्द करते हैं; और दूसरी दिक़त यह है, कि काम्दार लोग बन्दोबस्तके कामसे वाक़िफ़ नहीं हैं.

फ़ौज्दारी जुर्म इस सालमें बहुत हुए, जिससे मालूम होता है, कि जान व माल की हिफ़ाज़त नहीं होती. इस सालमें ८७ डकैतियां ग्रामोंपर हुईं, जिससे १२७२३५) रुपयोंका माल गया; ८९ धाड़े रास्तोंपर हुए, जिससे ५८१२५) रुपयोंका माल ग़ारत हुआ; और ६० खून हुए, और ९१ मुक़द्दमे खुद कुशीके दाइर हुए (और पिछले सालके मिलाकर) ११३ मुक़द्दमोंमेंसे २५ मर्दोंके, ८८ औरतोंके, जिन्होंने डूबकर या अफ़ीम खाकर जानें दीं.

महाराणा साहिबने हालमें फ़ौज्दारी और पुलिसका भी .उम्दह इन्तिज़ाम किया है. कुल मेवाड़के ७ हल्के करके, उनमेंसे पांचपर एक पुलिस मैजिस्ट्रेट (नाइब फ़ौज्दार) मुक़र्रर किया, जिसकी १५०) रुपया माहवार तन्ख़्वाह करदी, और पुलिसमें नये आदमी बढ़ाये गये, थानेदारोंकी तन्ख़्वाह भी बढ़ाकर रु॰ ३०) माहवार की गई. ताज़ीरातहिन्द और ज़ाबितह क़ानून फ़ौज्दारीके मुवाफ़िक़ कार्रवाई शुरू हुई, और फ़ौज्दारी व पुलिसके अफ़्सर मुन्शी सामिनअलीख़ांके मातहत कियेगये हैं, जिसको कि दर्बारने ख़ास इसी कामकी दुरुस्तीके लिये फिर मुक़र्रर किया है; और दो ज़िले याने छठा जहाज़पुर व सातवां मगरा (ज़िला खैरवाड़ा), इनके इन्तिज़ाममें अभी कोई फ़र्क़ नहीं होगा. यह इन्तिज़ाम सब ख़ालिसहके लिये जानना चाहिये. मेवाड़के सर्दार अपनेको ख़ुद मुरूतार जानकर मुक़द्दमोंका जवाब भी देरमें देते हैं, जिससे बड़ी दिक़्क़त रहती है, और नाथद्वाराके गोस्वामीने भी सर्दारोंकी देखादेखी दर्बारसे ख़ुद मुरूतार होना चाहा. .ईसवी १८७१ [वि॰ १९२८ = हि॰ १२८८] में उनपर फ़ौज भेजी गई, लेकिन् बिदून दर्बारकी हुकूमत क़ाइम किये वापस बुलालीगई, और .ईसवी १८७२ फ़ेब्रुअरी [वि॰ १९२८ माघ = हि॰ १२८८ ज़िल्हिज] में भींडरके कुंवरकी ख़िद्मत के .एवज़ उनके बाप महाराज हमीरसिंहको घाणेरावकी बैठक दी गई, इससे दूसरे सर्दार नाराज़ हुए और भींडरके नीचे बैठनेसे इन्कार किया, लेकिन् दशहरेपर सब लोग आये, और भींडर महाराजको हिदायत होगई, कि वे दर्बारमें न आवें (१). मोघिया व बावरियोंका सख़्त बन्दोबस्त किया गया, जो तक्लीफ़ देनेवाली क़ौमें हैं. बहुतेरोंके शस्त्र और ऊंट लेकर ज़मानत तलब कीगई, और जिन्होंने ज़मानत नहीं दी उनको जेलख़ानह में भेजदिया. टोंक वालोंने अपने .इलाके नीबाहेड़ासे उनको एकदम निकालदिया. साहिब लिखते हैं, कि इस बे रहम क़ौमका ऐसा बन्दोबस्त होना चाहिये, कि जैसा अगले ज़मानहमें ठगोंका हुआ था. इनको निगरानीमें रखकर ऐसा काम लियाजावे, जिसकी आमदनीसे इनका मए कुटुम्बके गुज़ारा चले, वर्नह एक ज़िलेसे निकालनेपर दूसरे ज़िलेको तक्लीफ़ देंगे. और डाकका इन्तिज़ाम अच्छा रहा.

जूनसे ऑगस्टतक शहर उदयपुरमें हैज़ेका ज़ोर रहा,. जिसमें ३३१ आदमी मरे, और पानीकी कमीका बन्दोबस्त करनेके लिये उदयसागरसे पीछोलेको भरना

---

(१) इस बातके कई सुबूत हैं, कि महाराणा साहिब चाहे जिसको सर्दारोंकी लाइनमें बैठक देसके हैं. ख़ास इन महाराणा साहिबने आमेटकी बैठक अमरसिंहको दी, जिसका बर्ताव सब सर्दार करते हैं. यह उज़्र आपसकी अदावतसे हुआ, जिसका ज़िक्र हम आगे लिखेंगे.

चाहिये, लेकिन् इसके लिये अच्छा इन्जिनिअर दर्कार है. सफ़ाईके जारी करनेमें यहांके बड़े आदमियोंके हर्ज डालनेसे दिक़त पड़ती है. इन्हीं लोगोंने .ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] की मर्दुमशुमारीमें भी खलल डाला था.

मेयो कॉलिजमें मेवाड़के लड़कोंके रहनेको महाराणा साहिबने बोर्डिंग हाउस बनानेके लिये ३६०००) रुपये दिये.

जावरमें सीसेकी खान जो बहुत वर्षोंसे बन्द थी, जिसका महाराणा साहिबने प्रोफ़ेसर बुशलको भेजकर अपने देशकी उन्नतिके लिये कारखानह जारी किया.

मेजर ई० आर० सी० ब्राडफ़ोर्ड क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की दूसरी रिपोर्ट बाबत् सन् १८७३-७४ ई०

साहिब लिखते हैं, कि इस सालके मुल्की इन्तिज़ाममें कोई अदला बदली नहीं हुई, और दर्बार सब काम खुद देखते हैं, और उनके पास महकमहखासका मुन्शी (महता राय पन्नालाल) रहता है, वही सब कागज़ोंको पेश करके हुक्म चढ़ाता है; और यह शख्स कोठारी केसरीसिंहका रिश्तहदार है, कि जो दो दफ़ा प्रधानेके कामपर मुक़र्रर हुआ था, और वह (कोठारी केसरीसिंह) .ईसवी १८७२ [वि० १९२८ = हि० १२८९] में मरगया. उसने अपने मरनेसे कुछ अरसह पहिले इस्तेफ़ा देदिया था, उसवक़्से प्रधानेका .उहदह खाली है. थोड़े अरसहमें मैंने इस इन्तिज़ाम को देखा, तो मुझको ज़ियादह पसन्द नहीं है, क्योंकि मुन्शी महकमहखास जिम्महदार अफ्सर नहीं है, सब भार महाराणा साहिबपर रखकर वह बरी होसक्ता है. महाराणा साहिब मिलनसार और पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहपर चलते हैं, इसलिये इन्तिज़ाम का काम बिना दिक़्तके चलता है.

जबसे मैंने अपने कामका चार्ज लिया तबसे महाराणा साहिबसे हमेशह मुलाक़ात होती रही. मैं तअज्जुब करता हूं, कि वे हिन्दुस्तानी रियासतके राजा होकर .ऐश व .इश्रतमें पर्वरिश पानेपर भी सिवा उदयपुरके दूसरी जगहके भी कुछ हालातसे वाक़िफ़ हैं, और उनमें सल्तनत करनेके लाइक़ बहुत गुण हैं.

मेवाड़ एक अलहदह रियासत होनेके सबब .इलाक़ह सर्कार अंग्रेज़ीकी नज़्दीकी रियासतोंके मुवाफ़िक़ उसमें तरक़ी नहीं हुई, क्योंकि थोड़े वर्षोंके पहिले यह मुल्क बे-इन्तिज़ामीकी हालतमें था; और पिछले वर्षमें सर्दारोंका कोई नया बखेड़ा नहीं हुआ, सिर्फ़ महाराणा साहिबके चचा महाराज शक्तिसिंहने बागोरकी हक़दारीके कारण फ़साद

करना चाहा, लेकिन् दर्बारने फ़ौज भेजकर उसको गिरिफ़्तार करलिया, और वह उदयपुर लाया गया जो अबतक निगरानीमें है.

मैं अफ्सोस करता हूं, कि नाथद्वाराके गोस्वामीका झगड़ा तय नहीं हुआ, जैसा-कि पिछले सालकी रिपोर्टमें ज़िक्र होचुका है. उनके गांवोंपर खालिसह है तोभी वह दर्बारसे मुक़ाबलह करता है. मैं उम्मेद करता हूं, कि उसके वकीलको एजेएटीसे निकालदिया, इस कारण पुराने झगड़ेके तय होनेमें ज़ियादह दिक़्क़त न होगी; इस की गुस्ताख़ीका ख़राब असर मेवाड़के दूसरे सर्दारोंपर भी होता है.

जावरकी खान बन्द कीगई, क्योंकि एक तो कलके बग़ैर खानका पानी नहीं निकल सक्ता था, और ख़र्चके मुक़ाबलेमें फ़ायदह भी कम मालूम हुआ, याने २८ मन सीसेसे २५ तोला चांदी निकल सक्ती है, इसलिये १० महीनेतक काम करनेके बाद बुशल साहिबको ईसवी ता० ३१ जैन्युअरी [वि० १९३० माघ शुक्ल १४ = हि० १२९० ता० १२ ज़िल्हिज] को रुख़्सत देदी. इस सालमें ८६६ पेटियां अफ़ीमकी उदयपुरके कांटेपर चढ़ीं.

इन महाराणा साहिबकी तवारीख़को ख़त्म करके इनकी आख़री बीमारीका हाल लिखते हैं.

महाराणा साहिब गर्मीके मौसममें मए ज़नानहके गोवर्द्धनविलासमें थे, वहांपर विक्रमी १९३१ द्वितीय आषाढ़ शुक्ल ३ [हि० १२९१ ता० १ जमादियुस्सानी = ई० १८७४ ता० १६ जुलाई] को बारह बजे बाद उनके पेटमें कुछ कुछ तक्लीफ़ मालूम हुई, तीसरे पहरके वक़्त ज़नानी सवारी तो उदयपुरको रवानह होगई और महाराणा साहिब गोवर्द्धनविलास कुंवरपदाके महलमें ठहरे. दूसरे हम्राही सर्दार पासवान तो ज़नानी सवारीके साथ चलेगये और ठाकुर मनोहरसिंह और मैं (कविराजा श्यामलदास), गढ़ीका चहुवान अमरसिंह, धव्वा बदनमल्ल, धायभाई हुकमा, धायभाई गणेशलाल और डॉक्टर अक्बरअली मौजूद थे. उस थोड़ी थोड़ी पेटकी तक्लीफ़को मिटानेके लिये डॉक्टरने दवा दी, लेकिन् वह ख़फ़ीफ़ तक्लीफ़ कम न हुई. महाराणा साहिब बड़े ख़ुश मिज़ाज थे, हम लोगोंको शराब पीनेका हुक्म दिया. ठाकुर मनोहर-सिंहने और मैंने इन्कार किया, लेकिन् दोबारह हुक्म होनेपर दो दो पियाले लिये; फिर ज्योतिषी लोगोंके कथनानुसार सूरज छिपनेके बाद उदयपुरके महलोंमें तश्रीफ़ लाये, उसी दिनसे बीमारी दिन बदिन बढ़ती गई, और डॉक्टर अक्बरअलीका इलाज होता रहा. विक्रमी द्वितीय आषाढ़ शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुस्सानी = ई० ता० २० जुलाई] को कुछ बुख़ारकी हरारत मालूम हुई, लेकिन् अभीतक बीमारीका निश्चय नहीं हुआ, कि किस क़िस्मकी बीमारी है. अक्बरअलीको भी पूरा इख़्तियार

न था. ज़नानी ड्योढ़ी वगैरह ख़ानगी सलाहसे कई तद्बीरें होती थीं. विक्रमी द्वितीय आषाढ़ शुक्ल ८ [हि० ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २१ जुलाई] को डॉक्टर अक्बरअलीका इलाज मौकूफ़ कियागया और मुल्ला किफ़ायतअली, अलवरके हकीम, नारायण भट्ट, और रूपनाथका .इलाज शुरू हुआ. इन्होंने भी सौंठ, मिर्च और पीपलकी गोलियां दीं, लेकिन् उससे क्या होता था, बीमारी तो कुछ और ही थी. आख़िर-कार विक्रमी द्वितीय आषाढ़ शुक्ल १४ [हि० ता० १३ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २८ जुलाई] को बेदलाके राव बख़्तसिंहने ज़ोर देकर अर्ज़ की, कि इलाज डॉक्टरका होना चाहिये. तीसरे पहरके वक्त पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् राइट और राव बख़्तसिंह एजेन्सीके सर्जन डॉक्टर बरको लाये. उसने दर्याफ़्त करके कहा, कि कलेजेपर सोज़िश है, जिसमें पीब पड़नेका ख़तरह होगया है; फिर जलोंकें लगाई गईं और डॉक्टर बर व उसके मातहत डॉक्टर अक्बरअलीका इलाज होने लगा. विक्रमी श्रावण कृष्ण ८ [हि० ता० २१ जमादियुस्सानी = ई० ता० ५ ऑगस्ट] को पीछोला तालाब पूरा भरकर १० वर्ष पीछे चद्दर डाकनेकी ख़बर मालूम हुई, कि जिसकी महाराणा साहिब को बहुत बड़ी ख़्वाहिश थी. इन दिनों बीमारीमें भी कुछ सिहत रही, और बर साहिबने भी कहा, कि कुछ हवाख़ोरी करना चाहिये, जिससे विक्रमी श्रावण कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ८ ऑगस्ट] को तामजाम सवार होकर महलोंके चौकतक पधारे. विक्रमी श्रावण शुक्ल २ [हि० ता० १ रजब = .ई० ता० १४ ऑगस्ट] को सिरमें दर्द होकर बुख़ारकी हरारत मालूम हुई; फिर विक्रमी श्रावण शुक्ल १० [हि० ता० ९ रजब = .ई० ता० २२ ऑगस्ट] को तन्दुरुस्ती मालूम होनेपर रोगमुक्तस्नान किया गया, और हाज़िरीन लोगोंने नज़्रें दिखलाईं. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १ [हि० ता० १५ रजब = .ई० ता० २८ ऑगस्ट] को महाराणा साहिब किश्तीमें सवार होकर पीछोला तालाबकी चद्दर देखनेको तश्रीफ़ लेगये, वापस आनेपर ज़ुकाम और बुख़ारकी कुछ हरारत मालूम हुई, फिर तन्दुरुस्त होगये. डॉक्टरकी सलाहके मुवाफ़िक़ विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रजब = .ई० ता० ६ सेप्टेम्बर] को घोड़ेपर सवार होकर थोड़ी दूर हवाख़ोरी करआये, लेकिन् बदनमें ताक़त न थी. विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १४ [हि० ता० २७ रजब = .ई० ता० ९ सेप्टेम्बर] को महकमहख़ासके सेक्रेटरी महता पन्नालालको कर्ण-विलासमें क़ैद किया, जिसका हाल इसतरहपर है, कि यह शख़्स होश्यार व मिह्नती है, जिसने इस रियासतमें इन्तिज़ामी हालतकी बुन्यादको मज़्बूत किया, लेकिन् इसने महाराणा साहिबकी मर्ज़ीके अनुकूल या प्रतिकूल कार्रवाई करके लोगोंपर अपना

रोब जमाना चाहा, और कोठारी केसरीसिंहके तरीक़ेपर अपने मालिकको नफ़ा नुक्सान ख़ानगीमें दिखलाकर, जैसा कि चाहिये था, उनके हुक्मकी तामील दिलसे न की, जिससे कुल रियासती लोग उसके दुश्मन होगये. महाराणा साहिबकी मर्ज़ी घटने पर मौक़ा देखकर लोगोंने जादू वगैरह करनेकी शिकायतें पेश कीं, और कैद होनेके बाद और भी कई ग़लतियां दिखलाई गईं, फिर उसके दोस्तोंपर भी नाराज़गी करादी. मैं (कविराजा श्यामलदास) भी उसका दोस्त था, इसलिये ब्रह्मचारी मथुरादास व पाणेरी गोपाल वगैरहने मुझपर भी महाराणा साहिबकी नाराज़गी करानेकी कोशिश की, लेकिन् उनके दिलमें मेरी जगह थी, इससे उन लोगोंकी शिकायतें कारगर न हुईं. महकमह ख़ासका चार्ज राय सोहनलाल कायस्थके सुपुर्द हुआ, लेकिन् काम बराबर न चलसका, जिससे विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १५ [हि॰ ता॰ १३ शअ्बान = ई॰ ता॰ २५ सेप्टेम्बर] को पुराने प्रधान महता गोकुलचन्द और सहीहवाला अर्जुनसिंहके सुपुर्द किया-गया. अब दिन ब दिन कलेजेके फोड़ेकी बीमारीने ज़ोर पकड़ा; आख़रकार विक्रमी आश्विन कृष्ण ९ [हि॰ ता॰ २२ शअ्बान = .ई॰ ता॰ ४ ऑक्टोबर] को नीमचसे डॉक्टर को बुलाया. उसने डॉक्टर बर साहिबके साथ बहुत कुछ कोशिश की, लेकिन् हालत ख़राब होचुकी थी, कोई .इलाज कारगर न हुआ, और विक्रमी आश्विन कृष्ण १२ [हि॰ ता॰ २५ शअ्बान = .ई॰ ता॰ ७ ऑक्टोबर] को तीन घड़ी रात गये शिद्दतसे कलेजेका दर्द शुरू हुआ. ठाकुर मनोहरसिंह, मैं (कविराजा श्या-मलदास), धव्वा बदनमल्ल, धायभाई हुक्मा, धायभाई रघुलाल, साह ज़ोरावरसिंह सूराणा, महासाणी रत्नलाल, और डॉक्टर अक्बरअ़ली वगैरह महाराणा साहिबके पास मौजूद थे. धायभाई हुक्मा कोठी रेज़िडेन्सीपर जाकर दोनों डॉक्टरोंको लेआया. महाराणा साहिबने उस जांकन्दनीकी हालतमें मुझको कहानी कहनेका हुक्म दिया. मैंने दिलख़ुशहाल महलकी चौपाड़के दर्वाज़ेमें पलंगके पास बैठकर दो चार फ़िक़्रे कहा-नीके कहे और उन्होंने पानी मांगा, तब साह ज़ोरावरसिंह सूराणाने हाथके सहारेसे उन्हें पलंगपर बिठाया, कि उसी दम आंखने चक्कर खाया, और क़रीब साढ़े दस बजे रातके वह इस जहानको छोड़ गये. उस वक्तका हाल देखनेवाले जानते हैं, कि हम लोगोंपर एक दम कैसा वज्र टूटपड़ा था. मैं ठाकुर मनोहरसिंह सहित रोता हुआ ख़ुशमहलोंमें आया. वह रात्रि हमारे लिये बड़ी लम्बी चौड़ी होगई. विक्रमी आश्विन कृष्ण १३ [हि॰ ता॰ २६ शअ्बान = .ई॰ ता॰ ८ ऑक्टोबर] को उनके आन्तिक विमानकी तय्यारी हुई. कर्नेल् राइट पोलिटिकल एजेंट मेवाड़ रातकोही कोठीसे महलोंमें आगये थे. ज़नानी ड्योढ़ीका पुख़्तह बन्दोबस्त किया गया, कि कोई

सती न होनेपावे. चार सहेलियां सती होनेको उठीं, लेकिन् ज़नानी ड्योढ़ीके किवाड़ बन्द थे, और बाहिर बेदलाका राव बरूतसिंह वगैरह सर्दार और ड्योढ़ीके महता लालचन्द, प्यारचन्द और देवीचन्द वगैरह मौजूद थे. उन लोगोंको भीतरसे हज़ारों गालियां दीजाती थीं, लेकिन् ऐसे वक्में उनको कौन इजाज़त देसक्ता था. महाराणा साहिबके साथ सती न होनेदेनेका यह पहिला अवसर और पुराने खयालातका आख़री हुल्लड़ था. महाराणा साहिबके विमानको देखकर कर्नेल् राइटकी आंखोंसे आंसू गिरते थे; शहरकी आम रिआया पांच वर्षके बच्चेसे लेकर बूढ़ोंतक अनुमान २५००० औरत मर्द बड़ी दर्दनाक आवाज़से रोरहे थे. बस इस हालको हम ज़ियादह नहीं लिखसक्ते, देखनेवाले ज़िन्दह रहेंगे तबतक वे नहीं भूलेंगे.

इन महाराणाका स्वभाव ऐसा था, कि ज़बान शर्बतकी तरह मिठाससे भरी हुई, जिस शरूसने उनसे एक दो दफ़ा बात चीतकी वह ज़िन्दगीभर नहीं भूलनेका; अगर किसीने सलाम किया और वे आंख उठाकर उधर देखते, तो उसको यक़ीन होजाता था, कि महाराणा साहिब मुझपर निहायत मिहर्बान हैं. यह महाराणा नर्म मिज़ाज, अव्वल दरजहके अक्लमन्द, बात करनेमें चतुर, हिन्दी या संस्कृतकी कोई किताब पढ़ते तो ऐसा मालूम होता था, कि मानो अमृत टपका रहे हैं. मैंने हलकी ज़बान उनके मुंहसे कभी नहीं सुनी, अल्बत्तह कानके कच्चे और हरएक आदमीकी बातोंपर अमल करलेते थे. लिहाज़ भी इसक़द्र था, कि जिस आदमीपर मिहर्बान होते वह चाहता, तो उनसे बे इन्साफ़ीकी बातपर भी सहीह करवालेता, लेकिन् उसकी दग़ा-बाज़ीको दिलमें ज़ुरूर जानलेते. वे रियासती बन्दोबस्त करना अपने ऊपर फ़र्ज़ जानते थे, लेकिन् ऐश व इश्रत और आराम तलबीसे दूसरोंके भरोसेपर छोड़ देते थे. वे आदमीके बड़े क़द्रदान थे, जिन आदमियोंने गद्दीनशीनीके बाद ऐश व इश्रत और शराब पिलानेकी आदतोंको खुद मत्लबीपनसे बढ़ाया, मेरे सामने नाकमें सलवट चढ़ाकर उन आदमियोंको दिलसे ख़राब कहते थे. उनको कई तरहके अच्छे बुरे आदमियोंके साथ बर्ताव रहनेसे खूब तजर्बह होगया था, और रियासती इन्तिज़ाम करनेके लाइक़ बने उस वक्त ईश्वरने उनको दुन्यासे उठालिया. उनका पांच फुट साढ़े चार इंच लम्बा क़द, सुर्खी माइल गेहुवां रंग, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, और शरीर व शरीरके सब अवयव खूबसूरत थे. विक्रमी १९०४ पौष कृष्ण १ [हि० १२६४ ता० १३ मुहर्रम = ई० १८४७ ता० २२ डिसेम्बर] को इनका जन्म हुआ, २६ वर्ष ९ महीने और १२ दिनकी उम्र पाई, और १२ वर्ष १० महीने और १२ दिन राज्य किया. इन महाराणा साहिबकी आख़री बीमारीमें दान पुण्य

तथा देहान्त होनेके पीछे उत्तर क्रिया वग़ैरहमें रु० ७३२८२५॥≡)॥ ख़र्च होनेके अ़लावह ५ हाथी, ९ घोड़े, २ बैल, और २६९ गौवें दान कीगई.

इन महाराणा साहिबने अपनी यादगार क़ाइम रखनेके लिये जो मकानात व सड़कें वग़ैरह नये बनवाये तथा उनके समयमें पुराने मकानात वग़ैरहकी मरम्मत हुई, उस में कुल रु० २१५७४४३॥-)॥ ख़र्च हुए, जिसके तफ़्सीलवार नक़्शे अम्बाव मुरड्याके भेजे हुए हमारे पास आये, उनका खुलासह नीचे दर्ज कियाजाता है :-

नक़्शह नम्बर १ नई तामीरात व मरम्मत मकानात वग़ैरह.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	गोवर्द्धनविलासके काममें.	३५४३७)।
२	महलोंमें, शहरमें और शहरके आसपास पर्चूनी कामोंमें.	१८२५३५)॥१
३	कोठी रेज़िडेन्सीके तअ़ल्लुक़.	१०४६३८॥)।
४	ज़नानह महलोंमें काम बना.	१२६२२॥)॥
५	बग्घीख़ानहके तअ़ल्लुक़	१७५४८॥-)
६	महा सतियोंमें छत्रियोंके काममें.	२९७१९।-)॥
७	नाव डूंडों (किश्तियों) के काम में.	१२४२४॥-)।
८	जगमन्दिर, जगन्निवासमें पर्चूनी काम खाते.	३६५९॥≡)
९	धुलाई, पुताई व चित्रकारीके काम खाते.	८४८३-)॥
१०	महलोंके बाहिर ख़ालिसाई काममें.	१३३२६।-)
११	भटियाणी चौहटेमें बेमालीके रावकी हवेलीके काममें.	५१३९३।)॥
१२	शम्भुनिवास महलकी तामीरमें.	११२७५२।=)।
१३	सूरजपोल दर्वाज़हके बाहिर सरायकी तामीरमें.	१०१३१=)२
१४	हाथीपोल दर्वाज़हके बाहिर सरायकी तामीरमें.	११५५९-)॥१

१५	मद्रसहकी तामीरमें.	४६१६३॥७)॥१
१६	जगमन्दिरमें डण्डेकी तामीरमें.	२१७५३॥७)॥१
१७	हाथीपोल दर्वाज़हपर नया मकान बना उसमें.	११०९३=)।१
१८	भाणेज मोतीसिंहके कोठी बनी उसमें.	३५०२=)
१९	जगन्निवासमें शम्भुप्रकाश नामके नये महलकी तामीरमें.	२३१५२॥–)॥२
२०	उदयपुर, खैरवाड़ा, मेड़ता, व मगरवाड़के डाक बंगलोंकी तामीरमें.	२५११७॥≡)॥१
२१	अमलके कांटेके मकानकी तामीरमें.	९०९६–)॥
२२	घुड़नालोंकी पायगाहमें नया काम बना उसमें.	७२२२–)॥।
२३	दिलखुशहाल महलकी तामीरमें.	११५००–)॥
२४	कुंवरपदाके महलोंकी मरम्मतमें.	९०१०≡)।
२५	शम्भुनिवासके पास दोमंज़िला नया महल बना उसकी तामीरमें.	८३४१९)॥
२६	बहूजी साहिबके नया मन्दिर बना उसमें.	६५३७३)॥।
२७	हुसैनाबाईके मकानके लिये जगह मोल लीगई.	३०००)
२८	नाई व सीसारमाकी नदीके काममें.	६७९७॥=)॥
२९	बाग़में काम बना जिसमें.	३८३९)॥
	मीज़ान	९३६२७२–)॥१

नक़्शह नम्बर २ तामीरात सड़क व रास्तह.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	नीमचकी सड़क खाते.	४४२७१८।–)॥
२	खैरवाड़ाकी सड़क खाते.	२१५७७२–)।

३	शहर व शहरके आसपास पर्चूनी सड़कों वगैरहके कामोंमें.	६५७३४।≡)१
४	नीमचसे नसीराबादतक सड़क खाते.	११६८८६।≡)।
५	देबारीसे पगल्याकी नाल देसूरीतक सड़क खाते.	११३४८)१
६	कैलासपुरीके रास्तहकी सड़क खाते.	५०१२।=)२
७	बेदला व गोगूंदाकी सड़क खाते.	१०७८५॥।=)॥।
८	कमलोदकी सड़क खाते.	१४०७१॥-)२
९	नाहरमगराकी सड़क खाते.	१८०५७॥।=)॥।२
	मीज़ान.	९८८३८७=)२

नक़्शह नम्बर ३ तामीरात मुतअ़ल्लिक़ह पर्गनात.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	पर्चूनी कामोंमें.	२४४४०॥)।
२	खेमलीके तालाब खाते.	२१४६८॥-)।
३	मगरामें खैरवाड़ाके काममें.	४८०५।)॥।
४	नाहरमगराके काममें.	१०६८२५॥।-)।
५	चित्तौड़में गढ़के काम खाते.	२३२६।)॥।
६	भीलवाड़ामें शहर कोटके काम व डाक बंगले बने उनकी लागतमें.	३११७४॥।≡)॥
७	जहाज़पुरके कामोंमें.	१८२७३।≡)।
८	सायराके कामोंमें.	२२४८॥=)॥।
९	राजनगर की पाल व महल वगैरहके कामोंमें.	१२२९=)।
	मीज़ान.	२१३५९३)

नक्शह नम्बर ४ तामीरात मुतअल्लिकह .इलाकह गैर.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	नीमचमें सर्कारी बंगलेकी तामीरमें.	३९८६)॥
२	आबू पहाड़पर नये बंगलेकी तामीरमें.	४५९७॥≡)
३	अजमेरके बंगलेकी तामीरमें (१).	७६५०)
४	एजेण्ट साहिबने महाराणा साहिबके लिये सामान मंगाया उसमें.	२९५७=)।
	मीज़ान.	१९१९१।–)॥

मुख्तसर तफ्सील.

नम्बर.	नाम काम.	कुल लागत.
१	शहरमें वा शहरके आस पासके कामोंमें.	९३६२७२–)॥१
२	सड़कोंकी तामीरमें.	९८८३८७=)२
३	पर्गनों व ज़िलोंमें.	२१३५९३)
४	गैर .इलाक़हमें जो मकान वगैरह बने उनमें.	१९१९१।–)॥
	मीज़ान.	२१५७४४३॥–)॥

(१) यह बंगला मेयो कॉलेजके बोर्डिंग हाउसके लिये बना था, जिसके लिये नक्शहमें लिखे मुवाफ़िक़ रुपया दिये जानेके अलावह मेयो कॉलेजके लिये रु० १०००००), और मेवाड़की कोठीके लिये क़रीबन् रु० ४००००) कल्दार महाराणा साहिबने अलग दिया था.

शेष संग्रह.

गोकुलचन्द्रमाजीके मन्दिरकी प्रशस्तिः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्र्येकलिङ्गो जयति॥ एकं ब्रह्म यदीक्ष्यतेथ बहुधा मायेति रज्जुर्यथा सर्पादि प्रथया विभाति हि तथा ब्रह्मैव सर्व्वञ्जगत् ॥ तत्वन्तत्वमहो विषीदसि मृषा जातो मरुक्ष्माजले संसारे जनसूचयन् सजयतात्सच्छ्र्येकलिङ्गाभिधः ॥ १ ॥ राधायाश्च कपोलकुन्तलल सल्लुब्धद्विरेफाङ्कितः श्रीवक्षस्तटमण्डितोरतिपतिक्रीडाकलापण्डितः ॥ श्रीवंशीरवमोहिताखिलचलद्गोपालदाराकुलः पायादेषमुनीन्द्रवन्दितपदश्रीदेवकीनन्दनः ॥ २ ॥ या विद्या भूतधात्री त्रिभुवनजननी ह्यागमानान्निदानञ्जीवेशादिप्रभेत्त्री विषयपरिणता भासयन्तीह चार्थान् ॥ चैतन्यस्योपरागाच्चितिविषयपदम्मन्यमाना प्रवृत्ता साहं विद्येति मत्वा सपरिकरगणा तत्क्षणन्नाशमेति ॥ ३ ॥ श्रीमत्सदानन्दमनाद्यनन्तं बोधैकरूपं च सदात्मकं तत् ॥ यन्मायया भाति समस्तविश्वं रज्जौ यथा ही रजतञ्च शुक्तौ ॥ ४ ॥ काश्मीरमण्डलल सद्भवनम्महोयत् सारस्वतं निगमवार्धिमयं ह्यचिन्त्यम् ॥ वागीश्वरन्निजगुरुप्रथितानुभावं वन्दे यतीन्द्रमनिशं सुयशः शरीरम् ॥ ५ ॥ आसीच्छ्रीक्षत्रमूर्द्धा मुकुटतटमणिः शम्भुभक्तोद्विजन्मा बापाख्यः श्र्येकलिङ्गात्तविविधविषया विन्ध्यभूमण्डलश्रीः ॥ श्रीमत्सूर्यान्ववायार्णवसकलशशीभूमिपालांश्च जित्वा यावद्भूमौ सुतान् स्वानवनितलगतः क्ष्माधिपालांश्चकार ॥ ६ ॥ जातो यद्वंशवार्द्धेः सकलहिमकरः कोपि वीरो धरण्यां चित्राद्रौ शासयन् गामुदयपुरमिति स्वीयनामाङ्कितं यत् ॥ स्थानं सत्कारयित्वाकबरयवनपेनैव युद्धं च कृत्वा क्रव्यैः सन्तर्पयित्वा ह्युदयनरपतीराक्षसानाङ्कुलानि ॥ ७ ॥ ज्वालाकारकरालशोणितझरीयन्त्रै र्द्वैधैश्चञ्चलैः कालाकारकृपाणहस्तवलितैर्नृत्यत्कबन्धैर्भुवः॥ कृत्वालङ्कृतिमेषयद्व वसनं श्रीचित्रकूटाभिधन्त्यक्त्वाब्दे युगबाहुषट्क्षितिमिते प्रोक्ते पुरे प्राविशत् ॥ ८ ॥ सोयं कार्यवशादवाप्य नगरं झाडोलसंज्ञं पुनः स्मृत्वा तत्र पदं स्वकीयमगमत्कैलाससंज्ञं महत् ॥ वर्षेस्मिन् वसुहस्तषट्क्षितिमिते राष्ट्राभिषिक्तोभवत्तस्यायं तनयप्रतापउदितः सन्दर्शितेऽब्दे सुधीः ॥ ९ ॥ यस्यायं यत्प्रतापेन युधि मुहुरथो दह्यमानस्तरुष्काधीशः संज्ञान्न लेभे न च जयमपि सद्भानुना भूप्रदेशे ॥ तेनायं श्रीप्रतापाधिप इति गदितो वीरधीरोविवस्वांश्चावण्डाख्ये पुरे यः खगशररसभूसम्मिते स्वर्जगाम ॥१०॥ प्रोक्ते स्वीये पुरेब्दे ह्यमरनरपतिर्लब्धराज्याभिषेकस्तत्सूनुः कारयित्वामरसदनमयञ्जाहगीराभिधेन ॥ म्लेच्छाधीशेन कृत्वा करनगरसभूसम्मिते हायने यः

सन्धिं लोकञ्च शैवं गिरिमुनिरसभूसम्मिते ह्यालुलोके ॥ ११ ॥ तस्यापत्यङ्कृतारि गेंदितसुसमये कर्णसिंहोनवीनः कर्णोराष्ट्राधिरूढः क्षितिभरमतुलम्पाकशालान्निधाय ॥ हस्ते पीनां विचित्रां रतिसुखवलितांतः पुरङ्कारयित्वा पेदे कैलासकान्तं जलधिवसुरसक्ष्मामितेऽब्दे क्षितीन्द्रः ॥ १२ ॥ निर्दिष्टे हायनेऽस्मिञ्जगदिति नृपतिस्तत्सुतो राष्ट्रभारन्धृत्वा स्कन्धेऽवहद्योयवननरपतेर्जोहगीराभिधस्य ॥ सूनोः पित्रार्दितस्यापि सुशरणपदङ्खुर्मसंज्ञस्य चासीत् पित्रा स्वर्गे स्थितेऽमुं यवननरपतिम्भावयामास चित्रम् ॥ १३ ॥ सोयं सम्प्रेशयन्तं गुमटमथ जगन्मंदिरे राजधानीम्प्रासादङ्कारयित्वा क्षितिशरकलितानीह सत्पत्तनानि ॥ ईशं संस्थाप्य तस्मिन् जगत इति सहस्राणि सत्तेभकानां पट्पञ्चाशद्धयानामददत सुतरां याचकेभ्यो नरेन्द्रः ॥ १४ ॥ वर्षे खेन्द्वद्रिभूम्याकलनवति जगद्भूमिपाले सुरेन्द्रञ्जेतुं याते नरेन्द्रोभवदथ तनयस्तस्य सद्राजसिंहः ॥ आरम्भं राजवार्द्धेरसशशिगिरिभूसम्मितेब्दे प्रतिष्ठाङ्कृत्वा षट्काण्डसप्तेन्दुयुजि शुभसमास्वेपवीरोथ रेजे ॥ १५ ॥ यस्मिञ्छासति भूतलञ्जलनिधिन्त्यक्त्वागतोद्वारकानाथोऽब्धौ मधुरे वसन् त्रिभुवनम्पूतम्प्रकुर्वन्सदा ॥ श्रीनाथोपि तथैव गोकुलपदं मुक्त्वागमत्सादरं येनाकारि च सङ्गरस्तु तुमुलश्चौरङ्गजेबेन यः ॥ १६ ॥ तेनामोचि हि जेजियाभिधकरः श्रीमन्मरुक्ष्मावलत्स्फूर्जद्योधपुरं यदा परिधृतं श्री केलिवाटो ददे ॥ तत्तस्मायजिताय राष्ट्रमपि यत् स्वीयन्ततोदापितम्म्लेच्छाधीशवराच्च सन्नयभुजा भीतिः परा भूभृता ॥ ॥ १७ ॥ देवप्रासाददेशे मृतयवनचिताचत्त्वराणि प्रवृत्तान्याज्ञप्तानीह तेनाथ यवन पतिना येन रुद्धानि सद्यः ॥ सर्वत्रैवापि गोद्विड्धरणिपतिसुतायाकबर्संज्ञकाय दत्वा भीतिङ्गतोयं मुनिगुणगिरिभूसम्मिते राजसिंहः ॥ १८ ॥ निर्दिष्टेब्दे धरण्यामवनितलमसौ शासमानः सुतोस्य जातः श्रीमज्जयाख्यो नरपतितिलकः श्रीजयाब्धिं व्यधात्सः ॥ युद्धं चौरङ्गजेबस्य सुभटपृतनाभिश्चकाराति घोरं वर्षेस्मिन्बाणभूताऽगविधुसुकलिते नाकसंपद्बभूव ॥ १९ ॥ प्रोक्ते संवत्सरे सावमरनरपतिः प्राप्य राष्ट्रम्पितुस्तु प्राज्ञो धेनुद्विषो नो परिचरणमथो कन्यका न प्रदेया ॥ पत्रञ्चेत्थन्तु तैर्यन्नियमनवलितङ्कारयित्वात्तधैर्यो योमे स्याद्भागिनेयो निजविषयपदे राज्यभारस्य भर्त्ता ॥ २० ॥ इत्यादेशाक्तचित्तान् जयभटपुरावित्तान् महीपान् महीन्द्रः स्वेचक्रेऽमित्रहन्ता नगरसमुनिभूसम्मिते स्वर्ल्लुलोके ॥ उक्ते कालेथ भास्वानरितिमिरचमूध्वंसिदीव्यत्प्रतापस्तत्सूनुः श्रीनृपेन्द्रः समरहरिरभूच्छासयन् गामुदाराम् ॥ २१ ॥ येन श्रीमत्तडागे गुमट विरहिता श्रीप्रपञ्चादिनाम्नि प्रासादे कारि सद्यस्त्रिदिवमदमुषि क्षिप्रमेवातिधन्या ॥ प्रासादालि र्विचित्रा खनिधिमुनिसु-

धांशुश्रितेऽब्दे नृपेण प्रोद्यत्कैवल्यमेतेन निरुपमपदं ह्ययमेव व्यलोकि ॥ २२ ॥ निर्दिष्टेऽब्दे धरायां विदित भवहरिः क्ष्माधिपालः सुतोस्य भूतः प्लुष्टारिवर्गः सरसि हि जगतां सन्निवासं विशालं ॥ प्रासादङ्कारयामास सुबलिबलिचन्द्रावते-भ्योगृहीत्वा श्रीरामादिं पुरं सत्प्रथितजयपुरे माधवं भागिनेयं ॥ २३ ॥ ज्येष्ठी-भूतं विधायाशु सुनयनिपुणं प्राज्यराज्याधिनाथं वर्षेऽस्मिन्दिव्यलोक न्नगखवसु-विधुद्योतिते स्वीचकार ॥ कालेतस्मिन्प्रतापाधिपइति विदितश्चात्तराष्ट्रोस्य सूनु-र्भेजे खाष्टाष्टभूयुक् समय गतदिनेऽभीतिमन्यैर्दुरापाम् ॥ २४ ॥ श्रीमत्सद्राजसिंहः क्षितिपतिरभवत्तस्य सूनुः शरण्यः सप्तेन्द्वष्टस्थिरायुक्समयविलसितेऽब्दे पदं स्वीच-कार ॥ योगीन्द्राणामगम्यं ह्यवनितलमसौ शासयन् यस्य पुत्रः प्रोक्ते वर्षे ऽरिसिंहो-नरपतिरभवत् क्षत्रमूर्द्धन्यनाथः ॥ २५ ॥ यस्मिन्नक्षति भूतलं समजनि श्रीरत्नसिंहो द्रवोह्युत्पातो भुवने भयैकनिलयस्तत्वाष्टभूसम्मिते ॥ सङ्ग्रामश्च सुरासुरोद्भवइव श्रीमन्महाराष्ट्रिकैः श्रुत्वामुम्प्रलयञ्जनाश्च विदिताः सम्मेनिरे तेतियम् ॥ २६ ॥ सङ्ग्रामेवंतिकायां सलुमरनृपतिः पाढसिंहो ह्यरीणाम् भित्वा सेनान्दुरापान्नि-जबलनिचयैः सूर्यबिम्बम्बिभेद ॥ तत्रैव श्री सहायादिपुरपतिरिहोमेदसिंहस्त-थैव प्राज्यं राज्यं सुरेन्द्रस्य सपदि लसितं प्राप्तवानुग्रवीर्यः ॥ २७ ॥ युग्मं ॥ योसौ सङ्गरमेत्य माल्जिसिधियासेनातउग्रम्पुनश्चम्वा स्वस्य भटालिसंहतिकराङ्कृत्वाथ दानान् मनाक् ॥ निर्दृताम्प्रतिपक्षगाञ्च पृतनां श्री गोडवाडं ददौ देशं तन्निय-मस्य सन्नयनिधिः सत्कारयित्वा दलं ॥ २८ ॥ दीव्यद्योधपुराऽधिनाथविजयः प्रारूयायतेनापि यत् साहस्रे ननु सादिनामनुदिनम्मेभृत्यतायाः पदे ॥ भूयास्तामिति-बोधितेन मरुभूपालेन भास्वच्छवीरेजे राजकुले जितारिररिसिंहः क्ष्माधिपालोन्वहम् ॥ २९ ॥ श्रीमज्जावदनीमचास्यविदितन्देशंगनीमाय यो दत्वा स्वीयजनार्त्तिनाश-नविधौ सेनाभृतौ तस्य तम् ॥ पश्चाच्चामरसंज्ञके गढपदे ह्यादाय सद्माहिर्नी यातोयङ्किल तत्र बुंदिपतिना दुर्भूभुजा तत्कृतम् ॥ ३० ॥ कृत्वा छद्मतथाऽजितेन निहतस्तत्रैवसोऽपि स्वयं सौवर्णीकृतयष्टिनास्य पुरुषेणायं भृशन्ताडितः ॥ भालेसा-वयने किलेह निरयं भुक्त्वा तथा चान्तकं नक्षत्राष्टविधुश्रिते हि समये सद्योऽभजत्स्वः-पदम् ॥ ३१ ॥ आदिष्टेऽस्मिन् महीभृत् समजनि समये धीरहम्मीरसिंहः सिंहो-ऽमित्रेभकुम्भस्थलनिधनविधौ सङ्गरारण्यमध्ये ॥ वेदाग्न्यष्टक्षितीज्ये विलसित-समये येन सद्यो व्यलोकि ह्ययङ्कैवल्यमेतेन सुरमुनिगणैः प्रार्थनीयं त्रिलोक्या-म ॥ ३२ ॥ भीमः शत्रुविदारणे रणगतो दाने भुवां रक्षणे साधूनाञ्जनतार्त्तिनाशन विधावोजस्विनान्धीमताम् ॥ शम्भोर्ध्यानकलाविचारकलने माने परेषाम्पु

नर्विस्यातः किल भीमसिंहनृपतिर्ह्यन्वर्थनाम्नाभवत् ॥ ३३ ॥ वेदाष्टाष्टेन्दुवर्षे समजनि समरो हड्क्कियाखारभूमौ स्वीयैः सेवाभटैर्यै बहुलबलमहाराष्ट्रिकानां समूहैः ॥ नष्टास्तत्र प्रवीरा ह्युभयबलगता बालिरावो निरुद्धः कारायां वार्द्धिसप्ताष्ट विधुसुकलिते सन्धिरासीन्महीपैः ॥ ३४ ॥ गौरंडैरागतोत्र प्रथितमतिवलन्मानुषेषु प्रवीरष्टाटास्योयस्तदीयो नयचयलसितो जएठसंस्थानभाक् सन् ॥ कर्नेलः कान्तिकातः परिचरणरतो भीमभूपस्य चासीद्वासो वर्षे लकायाञ्जलधिवसुगज क्ष्मामितेऽयं सुतोस्य ॥ ३५ ॥ लावण्यन्तस्य किम्मे किल विदितमतिर्भाविवित्पुष्पधन्वा कृत्वा साम्बान्निमित्तङ्करणमिति जहौ यस्य सोयं ह्युदारः ॥ राष्ट्रं सम्प्राप्य रेजे भवचरणरतः श्रीयुवानो नृपालः कालः शत्रुव्रजानां विबुधकुललसङ्गीतकीर्तिर्विशालः ॥ ३६ ॥ वस्वष्टाष्टेन्दुवर्षे ह्युदितनरपतिः प्राप्य चाजादिमेरप्रस्थं सत्पत्तनं लाठपदसमधिरूढाय सद्बिएटकाय ॥ दृष्टिन्दातुङ्गतोयं ह्यवनिपनिकरान् क्रान्तनक्षत्रकान्तीन्तीर्थंव्रध्नायमानोनिजविषयगतां राजधानीमवाप ॥ ३७ ॥ मेनेयं सेतुरन्यो ललितकृतिरतैः कारिता सेतुनायो दीर्घो नद्यो तथोच्चैर्विलसति सरसः श्री पिछोलाभिधस्य ॥ सोयं श्री मद्युवानो बहुलबुधवरैरादृतो नित्यकृत्ये शृएवन्यामं सुशास्त्रार्थमभजत शिवज्ज्यायसा धौतचेताः ॥ ३८ ॥ आहूतोजातरूप्याचलवसतिजुषा किन्नु सद्यः स्वकीयं राष्ट्रन्त्यक्त्वा गतो ऽसौ नरपतितनयाजानिना श्रीयुवानः ॥ सख्यं स्वीयं विधातुन्निजरिपुदहनो ऽयं विदित्वेति सम्यक् बाणाङ्काष्टेन्दुवर्षे विदितसुसमये सद्दिने भूपवर्यः ॥ ३९ तस्यायं सरदारसिंह नृपतिर्ज्जातः सुतोभास्करो भूभागस्य शरारुमानवसरःसंशोषणैकप्रभः ॥ विद्वद्वृन्दरथाङ्गमोदनपरोभूजानिसत्पद्मिनीनाथो नाथकृतादरोभवरतिर्विन्ध्याचलम्भूषयन् ॥ ४० ॥ कृत्वा यात्रां महीपोऽहितवनदहनः प्राप्तवान् स्वं पदं यो निध्यङ्काष्टेन्दुवर्षे विलसितसमये सो यमेवाति सद्यः ॥ निर्दिष्टेऽस्मिंश्च काले प्रथितमतिबलच्छ्रीसुरूपोमहीभृज्जातः सन्नीतिकूपार इति सुविदितः शम्भुपादाब्जभृङ्गः ॥ ४१ ॥ अस्ति श्रीमतिमान् गुरुर्गुणगणैर्लोके पुरा यच्छ्रुतम् भूपः कोपि सुरूपसिंह इति किम्मत्वा सुरूपः स्वयम् ॥ मातुं यद्यशसा भरेण च पुनः पादैः स्वकीयैर्मुहुः सम्प्राप्याथ तुलाविधीन् जनचयैर्नाद्यापि संलक्ष्यते ॥ ४२ ॥ आक्रान्ते पृथिवीतलेपि निखिले गौरएडभूजानिभिर्नो सन्धामुररीचकार चतुरः कुर्वन् प्रजापालनम् ॥ मन्वादिस्मृतिवाक्यतो बुधगणैः सम्भूय शक्रोपमोनोजातो न जनिष्यते क्षितितले कारुण्यरत्नाकरः ॥ ४३ ॥ वार्धीन्द्वङ्कक्षितीड्ये ह्युदितनरपतिर्विक्रमाम्भोजबन्धोर्वर्षे गौरएडसेना भजत ननु यदा दावमेवातिसद्यः ॥ दाहे गौरएडकानान्त्वणमहिमवताङ्केपि नष्टावशिष्टा ये याताः श्रीसुरूपं शरणमिह बुधा

रक्षितास्तेथ तेन ॥ ४४ ॥ सन्दिश्यन्परमङ्गवां भुवि पुनः संरक्षणं धर्मकं क्षत्राणामिह सव्यधात्तु विपुलङ्गोवर्द्धनाख्यं पुरं ॥ स्थित्वा तत्र वनेषु गाश्च बहुशः सद्धेमसम्भूषिता दिव्या ह्येष सुरूपसिंह नृपतिः सम्पालयँश्चारयन् ॥ ४५ ॥ सोऽयंम्भूपस्तुलां यच्छ्रुतिविधिवलितां संविधित्सुः शरण्यः पुण्यम्भूपैकमान्यन्निखिलनिगमविच्छ्रीसदानन्दमूर्तिम् ॥ कृत्वा तामग्रतः क्ष्मावलयदिनमणि र्भूसुरांस्तर्पयित्वा मत्वात्मानञ्च धन्यं शतमखमुदितो राजतेस्मात्र विन्ध्ये ॥ ४६ ॥ मत्वेमन्नरवाहनन्तु निधयः सद्यः स्वयं ह्यागताद्दृश्यन्ते कृतिभिः किलेह किमहो श्रीर्वा किमेषा द्रुतम् ॥ गोपालापरनामकन्निजधवं सद्धर्मसम्पादितं सन्मुक्तामणिहेमकूटकलितानन्तप्रचारन्धनम् ॥ ४७ ॥ येनैषा रूप्यमुद्रा निजविषयपदे मुद्रिता स्वस्य नाम्ना देशे देशेन्वचारि प्रथितमतिजुषाऽकिम्पचानाधिपोयम् ॥ अष्टक्ष्माङ्केन्दुवर्षे ह्युदितनरपतिः प्राप्तनाकाधिसम्पत् तस्यापत्यम्महीभृत् समभवदतुलः शम्भुरेषो परः किम् ॥ ४८ ॥ कैलासाधिपतित्वमास्थितवति श्रीमत्सुरूपे नृपे शम्भुः शम्भुरिवापरः सजयति श्रीविन्ध्यभूमण्डयन् ॥ दण्ड्यानाशु विदण्डयन् परिगणान् संखण्डयन् पालयन् सत्साधूनथ कोविदानपि सदा प्रोत्साहयन् वत्सलः ॥ ४९ ॥ चित्रं शम्भुसुरूपमप्यतुलनङ्कार्त्तस्वरं धिक्कृतम् येनेहापि विमृश्य भासुरवपुर्धीरः सुमेरुर्द्रुतम् ॥ खण्डान् रूपभरेण मापनविधौ चण्डान् विधाय स्वकान् सम्प्राप्तोपि तुलाविधीन् जनचयैः सन्ताप्यते भास्वये ॥ ५० ॥ कैलासः किलकामदन्निजधवं विन्ध्याचलस्थं बुधा जानन् किन्तु विधाय शीतकरणप्रोग्घन्स्वकीयान् द्रुतम् ॥ खण्डान्द्यतमिस्रनाशनविधौ चण्डान् विवस्वत्पथा लीढाञ्छम्भुनिवासकादिमिषतोविन्ध्ये स्वयं राजते ॥ ५१ ॥ यादुर्गा चण्डदैत्यप्रमथनरसिका चण्डिका भूतधात्री भूत्वासौ लक्षचण्डी हिमगिरितनया मोदमाना किमत्र ॥ विन्ध्ये जाता स्वकीयम्पतिमपि नियतम्भूपतिम्मन्यमाना विप्रेभ्योदापयन्ती कनकगिरिमथो शम्भुना क्रीडतिस्म ॥ ५२ ॥

॥ अथ प्रथमपट्टिकाशेषमापूर्य्यते ॥ दृष्ट्वा पान्थान् श्रमाक्तानथ पशुनिचयान् कण्टकैर्दन्तुरैयन्नूरेषा चाच्छमार्गैर्ननु कृतिकुशलैर्भूषिताकारि येन ॥ रुग्णान् दीनाननाथान्निजविषयगतान्व्युत्पिपत्सूंश्च बालांश्छालावैद्यौषधीनामरुणमुखगविद्योदधेः शम्भुनाम्ना ॥ ५३ ॥ दृष्ट्वा दुर्लोकवृत्तिम्पिशुनमुखजनानन्दयन्तीं सतान्ताम्धावन्तींसद्धरित्र्याम्महितमपि महामानमामर्दयन्तीम् ॥ क्षोणीशानां क्षणाय क्षपितकलिमलो भाविनाम्पुम्परीक्षाएटीकालङ्कारयुक्तां सनरपतिरसौ कारयन्राजतेस्म ॥ ५४ ॥ मासं मासं सुसाम्बं श्रुतिगदितपथादर्चयन्

स्नापयन्स वितान्पत्नीभिराढ्यानपि विबुधगणान् भूसुरान् भोजयन् यत् ॥ वासोभिर्द्रव्यभूषादिभिरपि सततन्तोषयन्ताम्भुवङ्गाः सौवर्णानीह दत्वा शतमखमुदितो मोदते कान्तिकान्तः ॥ ५५ ॥ भ्वग्न्यङ्केन्दुश्रितेऽब्दे नरपतितिलके शम्भुभूपे त्रिलोक्याङ्कैलासस्याधिपत्यञ्जुषति सति परं ह्रीशशुक्लेतरस्मिन् ॥ शैवं यत्पार्थिवाद्यर्चनमतिललितं सञ्जुषाणे त्रयोदश्यान्धीरे धर्ममूर्तौ शिवनिशि विबुधैरीड्यपादारविन्दे ॥ ५६ ॥ प्रोक्ते वर्षे सुयोगे ह्युदितपदगते मार्गशीर्षेथ मासे सल्लग्ने चोच्चसंस्थेशुभखचरसमाजे दिनेऽसौ दिनेशः ब्राह्मे भौमे सुभद्रासनमुदयपदम्भ्राजयन् यस्य पुत्रो भूपः श्रीसज्जनेन्द्रो जयति च जगतीपृष्ठभागेत्र विन्ध्ये ॥५७॥ क्षात्रं संस्कार मेषः करगुणनिधिशश्यङ्किते हायनेयं शत्रूणाङ्कालदण्डं विबुधकुलवतां ब्रह्मदण्डञ्जनस्य ॥ सन्धादण्डम्परेशोरतिपतिरमणः सन्दधानः शरण्यं वर्ण्यङ्कव्याजदण्डङ्कलयति विबुधाः सज्जनक्ष्माधिपालः ॥ ५८ ॥ कश्चिद्भूपालवर्योव्रतविधिरसिकः शोधितुं स्वं शरीरन्दातुं यद्गोसहस्त्रङ्कृतविमलमतिस्तस्थिवानुग्रधैर्यैः ॥ श्रुत्वेत्थं किन्नु सद्योह्युदयपदमगाद्यामदैर्घ्यञ्च कृत्वा धेनूनान्तञ्च दृष्ट्वा सुजनविमुदितो राजते खेंशुमाली ॥ ५९ ॥ योधृत्वा ब्रह्मचर्यन्निगमफणिवचः पाठनायैव सद्य श्चित्रंश्रीसज्जनोरं रचयति सुपथो रूप्यमुद्रादददानः ॥ विप्रेभ्यो यान्परीक्ष्य प्रचयति च तान् सप्रतिष्ठाधनाढ्यान्यावज्जीवं कृतारिर्जयति च जगती येन राज्ञातिधन्या ॥ ६० ॥ केचित्कैलासवासः कलिमलकदनो जातएवात्र विन्ध्ये दृष्ट्वा वेदांश्च वर्णान् कलिकलुषरतान्तारयन्सज्जनेन्द्रः ॥ गीर्भिर्लेखाश्रिताभीरचयति वलितान् सज्जना वै वदन्ति तिष्यैनोडाकिनीभिर्नयचयलसितो राजते भूमिपालः ॥ ६१ ॥ इङ्लण्डीयादिविद्याब्धिमथनरसिकश्रीलसन्नागरेणाचार्यस्थानस्थविद्याब्धिसकलशशिनात्रेति संविश्रुतेन ॥ शम्भोर्यत्वम्महोसीति निखिलनृपसद्भालयोग्यम्महीयो भ्राजच्छ्रीमद्विहारिप्रथितपदजुषा शम्भुभक्तेन सद्यः ॥ ६२ ॥ श्रीमन्नैष्ठिकमास्थितेन महतामाद्येन सज्जातिना मान्येनाथ महीभृतां क्षितितले गौरण्डकानामपि ॥ यद्वे भारतपत्तनेशितुरनेनेष्टेन शिष्टेन च प्रेष्ठैर्नीतिभरैर्गुणैः सुजटितो भूपालरत्नं यतः ॥ ६३ ॥ श्रीमद्वाणीविलासन्त्रिदिवपतिपरिश्लाघ्यभाग्यं समस्तग्रंथग्रामालिमालं प्ररचयति विधिः सज्जनेन्द्रोतिमात्रम् ॥ रम्यन्नाकद्रुमाभं विपथरतिमतान्तर्कजालप्रभेदे स्वेष्टं श्रीश्येकलिङ्गं शिवनिशि सततं याति संसेवितुन्तम् ॥ ६४ ॥ योसौ श्रीमज्जलेशः सुजननरपते ह्युत्तमाङ्गेथ सेतौ रुग्णो जातोजयाब्धेमिषतइति भवान् शिल्पिभिर्वैद्यवर्यैः ॥ ग्रावक्षारैः शिलाभिर्निरुजममुमयन्तं यतो भावयत्येतैर्लक्षैर्मुद्रिकाभिर्लसितसुसलिलो जीवनन्नो जहाति ॥ ६५ ॥

यत्पूर्वजात्समरसिंहनृपाधिपालाच्छ्रीनाथनामतनयो जनि यः कनिष्ठः ॥ वागोरनाथइति यङ्कृतवान्नृपालञ्जज्ञे ततोत्र किल भीमपदप्रसिद्धः ॥ ६६ ॥ यस्यायं सवदानसिंहइति यो जातः सुतः क्ष्मातले धर्मिष्ठः करुणानिधिः समजनि श्रीशेरसिंह स्ततः ॥ शार्दूलप्रथिमप्रतीततनयः शार्दूलसिंहोभवज्ज्येष्ठो यस्य कलत्रमत्र विदितञ्ज्येष्ठं शरण्यं सताम् ॥ ६७ ॥ नन्दाह्यानन्दकन्दा वितरणविधुरा कापिचैषाथ नाम्ना धाम्नाऽधर्मालिविध्वंसनविधिरसिका चान्द्रिका चित्रमेतत् ॥ काले शम्भुं कुमारं नृपमपि सुषुवे मेदपाटाधिनाथं ह्यन्वर्थं येन राज्ञा जयति गुणमयी मूर्त्तिरत्रापि धन्या ॥ ६८ ॥ सेयं स्वर्गौरिवाद्यापि जयति जननी शम्भुभूपस्य नन्दा मासं मासं सुरेड्यं ह्यवनिसुरचयान् स्नापयन्तीह विष्णुम् ॥ जिष्णुं लोकत्रयस्यापि वसुसुवसनैर्भोजनैस्तर्पयन्ती शय्याभूषाभिरेतङ्कलिमलदहना चार्चयन्ती सदारान् ॥ ६९ ॥ साधूनां सद्यतीनाम्परिचरणरता पेयदेयादिभिर्या द्रव्यैरेपा पुनाना मुनिजनलसितं विन्ध्यभूमण्डलं यत् ॥ गेहान्वित्तादिसंघान् वितरति महिता भूसुरेभ्यो भवानी दारिद्र्यं दानवाद्यन्दलयति विबुधानाममित्रं विचित्रम् ॥ ७० ॥ पत्नीहीनाश्चदीना परिणयनपथा ज्यामराये गृहस्थाः कन्यादानैर्विचित्रैरिह जननि मुदे देवपित्रर्चनाय ॥ कंसारातेस्तथैते विपुलधनचयास्ते क्रियन्ते त्वयेति नोजाताभाविनी वा ननु तव सविधान्तःपुरेत्रेति चित्रम् ॥ ७१ ॥ पुत्री पौत्री प्रपौत्री भवसि जननि यच्छक्तसिंहस्य धन्या भ्राजच्छ्रीमद्दलेलस्य भुवि सुविदिताच्छत्रसिंहस्य नाम्ना ॥ वीकानेराधिनाथात्मजपदभजतोलालसिंहस्त्वदीयो भ्राता यस्यात्मजोयन्निजविषयपदे पर्वतेन्द्राभिधोद्य ॥ ७२ ॥ भ्रात्रीयस्ते च पुत्रोभवति जननि यन्मेदपाटाधिनाथोवीकानेराधिनाथो विलसति सुतरां क्षत्रमूर्द्धाभिवन्द्यः ॥ स्त्रीरत्नंस्त्वादृशं संस्फुरति कलियुगे धर्ममत्तेभसिंहे स्विष्टो गोपालमूर्त्तिस्तव मतिमकरोन्मन्दिरायात्मनोयम् ॥ ७३ ॥ पूर्णोसौ पूर्णकामोऽखिलभववसनो बालरूपोथ खर्वम्प्रासादं वाञ्छतिस्म प्रमुदितवदनो नेति चित्रं कवीन्द्राः ॥ क्षीराब्धीशोपि गोष्ठेषु सुरमुनिनतो वाञ्छतिस्म प्रभाते गोपालो गोकुलेस्मिन् घृतमनुजवपुः क्षीरमल्पन्न किं सः ॥ ७४ ॥ पारिव्रज्ये स्थितोपि प्रणमति सततम्मातरं सर्ववन्द्यो धर्मोह्येषोत्र जानन् तव मतिरिति यन्मन्दिरङ्कारयामि ॥ गोपालस्याहमद्यैव विमलमतिमाञ्छम्भुभूपोच्छमूर्त्तिर्मातुर्भक्तो धरायामवददथ निजान् कारयध्वन्तदिष्टम् ॥ ७५ ॥ प्रासादस्य विलक्षतां विमलतान्दृष्ट्वाऽथ तत्स्फीततां गोपालः करणं स्वकीयमकरोद्वेधा हि खर्वं यतः ॥ प्रीतः स्वेष्टतमाप्तितस्त्रिभुवनव्यापी त्रिलोकीपतिर्जातो गोकुलचन्द्रमा विजयते भक्तान्द्रुतन्तारयन् ॥ ७६ ॥ प्रासादनिर्माण विधौ तु लक्षं लक्षं सदावर्त्तनधर्मवृन्दे ॥ लक्षं सहस्राणि खवेदवन्ति भूषाकृतौ गोकुलसोम-

कस्य ॥७७॥ वीकानेराधिनाथेन विहितसमये मातुलोपायनं यन्नीतन्ते भ्रातृपुत्रेण जननि सकलं हस्तलक्षद्वयाढ्यम् ॥ दत्तन्तद्याचकेभ्यः परिचरणविधौ गोकुलाब्जस्य सम्यग् धन्यस्ते पितृवर्गः कृत इति विधिना सज्जनिस्ते कृतात्र ॥ ७८ ॥ सार्द्धेन्दुलक्षन्तु प्रतिष्ठितावस्येहैव जातम्बुधभूसुरेभ्यः॥ दत्तं हुतन्दानविधौ तथाग्नौ तुलाविधौ मातरिति प्रयोगात् ॥७९ ॥ सप्तामी मुनयो व्रजन्तु नियतं मत्साक्षिभावं पुनर्गोत्राः सप्त भवन्तु सत्कृतिमयेऽस्मिन्नुत्सवे किम्बुधाः ॥ मुद्राणां मुनिलक्षकाणि मनसा संकल्पितानि त्वया भ्राजन्ते ननु तत्र तत्र लसिते सञ्जातरूप्यस्य यत् ॥ ८० ॥ चित्रम्मातस्त्वदीये विलसति महिते मन्दिरीयप्रतिष्ठाकृत्ये त्रेता चतुर्धा भवनतिलललितो लोलुपो हव्यपुञ्जे॥ इद्ये सन्मण्डपे यद्विल यजनविधावेक एवेति मत्वा चेष्टो यो नेष्टमेतन् मम विबुधगणाजाननेवेति सद्यः॥८१॥जायन्तान्नामकामन्ननु धरणिभृताम्मन्दिराणि प्रतिष्टाकृत्यानीमानि चित्रं तव जननि लसन् मन्दिरीयोत्सवे यत्॥ ऋत्विक्ते ये च जाप्ये धरणिसुरचयास्ते वृताःस्वर्णभूषावासोभिःस्विष्टमूल्यैः शतमखलसितान्निर्ज्जरांस्तर्पयन्ति ॥ ८२ ॥ पदं स्वर्गन्त्यक्त्वाऽभवदथ महीन्द्रः सुरपतिर्यतः पौरोहित्यम्पदमपि तथा शम्भुमिषतः ॥ भजन्वागीशोयं विलसति बुधेभ्यो नृपतितेः प्रतिष्ठाकृत्येऽस्मिन्विदितशिवराजाख्यविबुधः ॥ ८२ ॥ अकाम :कामारिः श्रितचरणचञ्चुश्च चतुरस्तथा श्रौते स्मार्ते ननु बुधजनेभ्योरसमुखः सुधारामः श्रीमान्निखिलनिगमानन्दरसिकः प्रतिष्ठाकृत्ये ऽस्मिञ्जयति पृथिवीदेवलसितः ॥ ८४ ॥ सपाद्रक्काङ्कर्तुन्द्रविणनिचयैरेषपरभृत्समस्तां सामग्रीं स्फुरति किल चोक्तोत्सववरे ॥ सवाईलालाख्योबुधनिजकुटुम्बव्यसनवित् स्फुटन्धर्माध्यक्षो भवचरणपादाब्जमधुपः ॥ ८५ ॥ गार्हस्थ्येपि स्थितायैव विमलमतिना शम्भुभूपेन यस्मै मान्यम्पैतामहं यन् निखिलनयभुजा ऽदायि सम्मोदतेत्र ॥ ब्राह्मन्तेजो दधानः किल यजनविधौ यज्ञशालामवाप्य श्रीमान्सन्माथुरोयङ्कृतमतिलसितो धर्ममूर्त्ति र्धरायाम् ॥ ८६ ॥ सप्ताहं यस्य हर्म्ये स्वजनपरिवृतोन्तः पुरेणावृतश्च दिव्यान्भोगांश्च भुंजन्नवसदतिमुदा धातरेतत्तवेदम्॥ सेवासंभारवृन्दङ्कृतमतिविपुलं शम्भुभूपस्य चित्रन्धन्यस्त्वन्तेथ सूनूरघुरिति विदितो भाति वैकुण्ठचेताः ॥ ८७ ॥ सन्धातारमयम्मुदा नृपपतिः श्रीशम्भुसिंहः स्वयं राज्ञां रावपदेन भूषिततनुं कृत्वा तथा वैभवैः ॥ भातिस्म प्रियवल्लभन्ननु पुनर्देवारिदेशे धने वापी चाच्छजला ह्यकारि विजले येनाद्य पान्थार्तिहा॥८८॥ धाता यं वदनः पुमर्थसदनः क्षान्तिक्षितेरामुषन् विद्वत्साधुजनान् जुषन् परिचरञ्छ्रीशम्भुसिंहन्नृपम् ॥ पेयैर्भोज्यवरैरवाप्तविभवोद्युक्तोत्सवे भृत्यतामातन्वञ्जयतीह सद्गुणगणालङ्कारसम्भूषितः ॥ ८९ ॥ अस्तिश्रीशम्भुभूपस्य मणिमयमिव प्रीतिपा-

त्रं विचित्रं योसौ सत्सांवलास्यः कविकुलमुकुटो नीतिधामाचरिष्णुः ॥ प्रासादस्य-प्रतिष्ठाविधिपरिचरणे स्थास्नुरप्येषसंसद्यद्यापीह प्रवीणोभवति नरपतेः सज्जनस्याति-मात्रम् ॥ ९० ॥ कैलासीयति मेदपाटविषये सच्छग्नलालास्यया जातः शम्भुसखो महीभृति पुनः सच्छ्रयेकलिङ्गे सति संस्थाप्याथ निधीनिहैव नयविद्भूत्वाऽचलाया रसं ह्यादेशात्सुमहीभृतो घनइव द्रव्यं मुहुर्वर्षति ॥ ९१ ॥ दृष्ट्वा गौरण्डनीतिन्निजविषय-पदे प्राड्विवाकः कृतोयन्नीत्या सम्बोध्य सम्यङ् ननु विशदमतिर्यः पनालालसंज्ञः॥ संधां स्वीयान्दधानो ह्यवनिपतिपतेः शम्भुभूपस्य वैश्यः प्रासादीयप्रतिष्ठाकृतिपारि-चरणे मोदते कान्तिकान्तः ॥ ९२ ॥ लालास्यः प्यारसंज्ञो भवति च रसिकः श्री-भवे देवसंज्ञो राज्ञाम्मान्याः कुलीना धृतनरतनवोन्तःपुराध्यक्षभाजः ॥ भौमान् भोगा-ञ्जुषाणास्त्रिदशजनिजुषोदर्शिते ह्युत्सवेऽमी शम्भो र्मात्रादिकानाम्परिचरणविधौ प्रीतिमन्तो भवन्ति ॥ ९३ ॥ धाता यः सुगणेश एष विदितः क्षान्तिं क्षितेरामुष-न्विद्वत्साधुजनाञ्जुषन्परिचरञ्छ्रीशम्भुसिंहं नृपम् ॥ पेयै र्भोज्यवरैरवाप्तविभवो ह्युक्तोत्सवे भृत्यतामातन्वञ्जयतीह सद्गुणगणालङ्कारसंभूषितः ॥ ९४ ॥ सम्य-ञ्ज्योतिर्विदांयन्मुकुटमथ परञ्जीवनं रूपमेतद्भूत्वा चाङ्गञ्चतुर्धा निगमसुरतरुं शम्भुभूजानिमेतम्॥ अङ्गीभूयात्र चित्रं परिचराति मुहूर्त्तादिसंशोध्यमानम्मानन्नक्षत्र-चारस्य जयति ललितम्मूर्तिमद्योतमानम् ॥ ९५ ॥ क्ष्माङ्गाङ्कैंदुश्रितेऽब्दे सुरगुरुदिव-से शम्भुभूजानिनाथः प्रासादस्य प्रतिष्ठामरचयत सुमध्ये दिनम्पौषणेऽस्मिन्॥ सल्लग्ने गोकुलाब्जस्य निजनृपकुलैराहृतोमाधवेऽसौ मासे पक्षे वलक्षे शुभभवनभजत्खेचर-ग्राममाले ॥ ९६ ॥ अमृतरामइतिप्रथितश्रुतिस्मृतिषु दक्षमतिर्गदितोधुना ॥ अ-खिलकर्मकुलन्ननु कारयन् नृपवरैरिह दीव्यति भूसुरः॥ ९७ ॥ अस्ति श्रीवल्लभाचार्य कुलमतुलमद्यापि सद्योयदेतद्भक्तिन्निर्वाणवल्लीमधिकृतपुरुषे द्योद्रुमे स्थापयत्सत् ॥ विष्णोर्जिष्णोस्त्रिलोक्या अपि विबुधगणालङ्करिष्णोश्च तस्मै प्रीत्यैश्रीशम्भुभूपोमुररि-पुजयनं ह्यर्पयन् राजतेस्म ॥ ९८ ॥ श्रीगोकुलचन्द्रमसे भूवाणासामताकवीथास्यान् ॥ अयुतोत्पत्तीन्ग्रामान्तणवाखेडं समर्पयच्छम्भुः ॥ ९९॥ आसीच्छ्रीसांख्ययोगा-ब्धिमथनरसिकः पाणिनीये च शेषो मीमांसामौलिरत्नं श्रुतिशिखरविदान्देशिकेन्द्रो महात्मा ॥ राज्ञामप्येकमान्यो निखिलनगधरापोडशज्ञाद्विपेन्द्रो धन्योसौ शङ्करा-र्यो नतयति सुततिः श्री सदानन्दमूर्तिः ॥ १०० ॥ वर्षे काण्डाग्निनिध्य-ब्जकलितकरणे बाहुले मासि पक्षे तच्छिश्यः काशिदत्तः सुजनमनुजपस्याज्ञयायं-वलक्षे ॥ गोत्रे कृष्णात्रिचित्रे ह्यकृत कृतमतिः कृष्णदत्तात्मजोऽलं सौरे चैनाम्प्रश-स्तिं सुभुजगदिवसे मेदपाटीयजातिः ॥ १०१ ॥ मुद्रिकाणां सहस्रन्तु भूमीनाम्प-

ञ्चकन्तथा ॥ काशिदत्ताय नन्देयमदान्मोदसमन्विता ॥ १०२ ॥ विद्वद्वृन्दसहस्र-पत्रसवितुः श्रीकाशिदत्तस्य वै ज्योतिर्विद्वरपूज्यजीवनसुतः शिष्यो द्वितीयादिने ॥ वेदत्र्यङ्ककुहायने शुचिसिते रामप्रतापोऽलिखत्प्रीत्यागुर्जरगौड़जातिरिह चाशुद्ध-म्बुधैः क्षम्यताम् ॥१०३॥ सूत्रधारश्चेनरामः प्रासादङ्कृतवान् स्वयम् ॥ तत्पुत्र-जीवनाख्येन टंकितैषा प्रशस्तिका ॥ १०४ ॥ श्रीरस्तु॥ श्रीकल्याणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

तोटक छन्द.

रजताचल भूप सरूप गये । नृपआसन शम्भु नृपाल भये ॥
शिशु भूप निहार प्रबन्ध चह्यो । अंगरेजनको अधिकार रह्यो ॥ १ ॥
सिरदारन की इक मेल सभा । निज स्वारथ साधक हीन प्रभा ॥
कर खारज पंच निकार दिये । युग भृत्तिनकों मुखतार किये ॥ २ ॥
जब बागिय होय प्रजा निकरी । हटनाल हि बंध करी बिकरी ॥
फिर शम्भुनिवास अवास बन्यो । महिपालहिको अधिकार मन्यो ॥३॥
पद केहरिसिंह प्रधान दियो । जिहि दिग्घ अकाल प्रबन्ध कियो ॥
फिर खास सभा बनवाय भले । निज शासनसे सब काम चले ॥ ४ ॥
अजमेर पधारन काज चले । तिहिं ठाँ हितकारक लाठ मिले ॥
नृप भल्लहिकी अभिलाष फली । दिय इज्जत शम्भु दिवान बली ॥५॥
अति उत्तम राजप्रबन्ध किये । लघु उम्मरमें जशवास लिये ॥
तगमो बड़ क्वीन पठाय दियो । फिर शम्भु हिमाचलवास कियो ॥६॥
नृप सज्जन आशय राख हिये । फतमाल बिभाषय लेख किये ॥
कविराज यहै इतिहास कथा । किय शम्भुनिधान विधान जथा ॥७॥

महाराणा शम्भुसिंह,

उन्नीसवां प्रकरण समाप्त.

बीसवां प्रकरण,

महाराणा सजनसिंह.
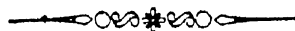
जबकि हमलोग महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी दाहक्रिया विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२९१ ता० २६ शअ्बान = ई० १८७४ ता० ८ ऑक्टोबर] को करके क़रीब दो बजे दिनके वापस शहरमें आये, तो उसवक्त क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ शहरके दर्वाज़े बन्द और ठौर ठौर फ़ौजके गार्ड तईनात थे, बाक़ी शहरमें सन्नाटे और रोनेके सिवा कोई दूसरी बात नहीं दीख पड़ती थी. इन महाराणाके कोई औलाद नहीं थी, इसलिये बेदलाका राव बख्तसिंह जो दाना सर्दार और अपने मालिकका ख़ैरख़्वाह था, महाराणा साहिबकी आख़री सवारीमें साथ न गया, इस ख़यालसे कि शायद गद्दीनशीनीकी बाबत कोई बखेड़ा न पैदा होजावे. उसने राजद्वारमें रहकर गद्दीनशीनीके मुआमलेमें पोलिटिकल एजेएट से सलाह करनेके बाद कुल उमराव, सर्दार वग़ैरह लोगोंको अपने अपने मकानोंसे महलोंमें बुलवाकर सलाह की, कि गद्दी ख़ाली न रहनी चाहिये, जिसको बिठाना हो आजही बिठा दियाजावे. यह सुनकर सब लोग सोच विचार करने लगे, तब राव बख्तसिंहने कहा, कि अगर कुल लोगोंको मेरी राय मन्ज़ूर हो, तो महाराज शक्तिसिंहके पुत्र सजनसिंहको, जो गद्दीका मुस्तहक़ है बिठादेना चाहिये. इस रायको तमाम लोगोंने पसन्द किया, और यह

राय ज़नानी ड्योढ़ीमें मालूम कराईजानेपर वहांसे भी मन्जूरी आगई. तब पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् राइट साहिब तो शम्भुनिवासको चलेगये, और रियासती लोगोंने महाराणा सज्जनसिंह साहिबको सिफ़ेद पोशाक पहिनाकर दरीख़ानह सभाशिरोमणिमें लाकर गद्दीपर बिठादिया. फिर बेदलाके राव बख़्तसिंहने दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणा साहिबके सिरसे ग़मीकी चादर दूर करके कानोंमें मोती पहिनाये, और चारणोंने उनको महाराणा शम्भुसिंह व स्वरूपसिंहका नाम लेकर शुभाशिष दी. इसके बाद महाराणा साहिब छोटी चित्रशालीमें पधारगये. उस समय अस्मदादिकोंका शोकसंतप्त दिल पसीज पसीजकर आंखोंसे आंसू टपकते थे, क्योंकि एक तो जवान मालिकके चलेजाने और दूसरे जानशीन होनेवालेका बचपन तथा महाराज शक्तिसिंहकी बुरी आदतोंका असर उनके मिज़ाजमें होनेका भय था, जिससे नाउम्मेदी और शोक संतापने हम लोगोंको घबरा रक्खा था, लेकिन् पेट भरनेकी फ़िक्रसे दिलको मज़्बूत करके सब कामोंमें शरीक रहना पड़ा. सूर्यास्त होनेके बाद महाराणा साहिबके हुक्मसे शहरके दर्वाज़े खोलेगये, और कारख़ानेजातके दारोग़ोंने कुंजियां नज़्र कीं, वे सबको वापस मिलीं, और शहरमें महाराणा सज्जनसिंह साहिबके नामकी दुहाई फेरी गई. मस्ल मश्हूर है, कि "होनहार बिरवानके चिकने चिकने पात", महाराणा साहिब तो गद्दीपर बैठतेही औरके और होगये. पेश्तर उनमें बिल्कुल लड़कपन मालूम होता था, अब एकदम दानाई झलकने लगी. उसी दिनसे दिलसे यह कोशिश करने लगे, कि अस्मदादि महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी मिहर्बानी वालोंका रंज घटाया जावे. उनकी ऐसी नेक आदतें और बुद्धिमानी देखकर छोटे बड़े नौकरोंको हिम्मत होगई, कि इनकी ख़िद्मत करनेका नतीजह ठीक होगा, लेकिन् कई मत्लबी लोग अपना अपना गिरोह बनाने और महाराणा साहिबको अपने क़ाबूमें लेनेकी कोशिशें करने लगे, जैसाकि रियासतोंमें ख़ुद मत्लबी लोगोंका शुरूमें दस्तूर होता है. महाराणा साहिब तो बड़े तेज़ तबीअत थे, ख़ैरख़्वाह लोगोंकी बातोंपर ज़ियादह तवज्जुह करने लगे, यहांतक कि महाराज शक्तिसिंहकी रायको भी नापसन्द करने लगे, लेकिन् उनकी बुज़ुर्गीको माननेका जितना हक़ है बराबर मानते रहे.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण १ [हि॰ ता॰ १४ रमज़ान = .ई॰ ता॰ २६ ऑक्टोबर] को गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तरफ़से गद्दीनशीनीकी मन्ज़ूरी आई, जिसकी ख़ुशख़बरी पोलिटिकल एजेण्ट राइट साहिबने महलोंमें आकर सुनाई. फिर विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि॰ ता॰ १८ रमज़ान = .ई॰ ता॰ ३० ऑक्टोबर] को पोलिटिकल एजेण्ट राइट साहिब छोटी चित्रशालीमें दर्बार हुआ जहां आये. यहां दर्बार होनेके समय

उमराव सर्दारोंमें बैठककी बाबत बहुत तक़ार और हुज्जत हुई. वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने घाणेराव ठाकुरके ऊपर पांचवें नम्बरकी बैठक भींडरके महाराज हमीरसिंहको .इनायत की थी. ऐसा पेश्तरसे भी होता रहा है, याने महाराणा दूसरे अमरसिंहने उमरावोंकी नशिस्त क़ाइम की, उसके बाद महाराणा दूसरे जगत्सिंहने देवगढ़के रावत् को बेगूंके ऊपर सातवीं बैठक दी, और इसी तरह बानसीके ऊपर भैंसरोड़, और पारसोलीके ऊपर कुरावड़को नशिस्त मिली थी. ज़मानह हालमें महाराणा शम्भुसिंह साहिबने आमेटके ऊपर मेजाके रावत् अमरसिंहको नशिस्त .इनायत की. अगर हम ऐसी नज़ीरें बड़ी ओल (दाहिनी लाइन) के सर्दारोंमें ढूंढें, तो बहुत मिलसक्ती हैं, लेकिन् तवालतके सबब ऊपर लिखी बातें मिसालके तौर लिखी हैं. ऐसी हुज्जत पेश्तर कभी पेश न आई, जिसका कारण भींडर महाराजके पुत्र मदनसिंहकी बेपर्वाई और घमंड हुआ; उसने दूसरे सर्दारोंको तुच्छ और अपनेको अक्लमन्द दिखलाकर जब्रन तामील करवाना ज़ाहिर किया, जिसपर दूसरे सर्दारोंने भी मदनसिंहकी इस बेपर्वाईसे रंजीदह होकर महाराणा साहिबकी खिद्मतमें दावा पेश करदिया; लेकिन् महाराणा शम्भुसिंह साहिबने इन लोगोंको लाजवाब करदिया था, यहांतककि बीजोलियाके राव गोविन्ददासके बड़े बेटे वैरीशालको मदनसिंहके नीचे बिठलाकर तामील करवादी थी. इस वक्त महाराणा साहिबकी कम .उम्र और बेइस्तियारीके मौक़ेपर दावा फिर सर्सब्ज़ हुआ, बल्कि इसवक्त महलोंमें दर्बार हुआ, जिसमें सर्दार एकट्ठे हुए उसवक्त बैठकपर सर्दारोंके आपसमें फ़साद होजानेकी नौबत पहुंची; लेकिन् पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् राइट साहिब एक हाथसे बेगूंके रावत् मेघसिंह और दूसरे हाथसे कुंवर मदनसिंहको समझाइशके तौर थामकर महलोंके नीचेतक रुख़्सत कर आये; फिर दूसरे सर्दारोंको भी पान बीड़े देकर विदा किया. कर्नेल् राइटने इस फ़सादकी रिपोर्ट सद्रमें करदी. इसवक्त कुंवर मदनसिंहकी आदतसे कुल रियासती लोग व खासकर उसके रिश्तहदार भी बर्खिलाफ़ थे, सबोंने यही चाहा कि इस बातमें हतक करवाकर मदनसिंहका गुरूर तोड़दिया जावे. इस शख़्सको ऐसा गुरूर था, कि जिसने अख़ीरमें वर्तमान महाराणा साहिबको भी नाराज़ किया, जिसका ज़िक्र हम आगे लिखेंगे.

इन्हीं दिनोंमें महता पन्नालालको जो कर्णविलासमें क़ैद था, कर्नेल् राइट साहिबकी सलाहसे रिहाई होकर मेवाड़के बाहिर चलेजानेका हुक्म मिला, और महाराज सोहनसिंहको वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबने अपने आख़री वक्तमें उदयपुरसे चलेजानेका हुक्म दिया था, वह शहरसे दो मील ईशान कोण खुशाल (खुशहाल) बाग़में जारहा. उसने दावा किया, कि समर्थसिंहकी गोद होनेके कारण मेवाड़की गद्दीका हक़दार मैं हूं,

लेकिन् गवर्मेएट अंग्रेज़ीने इस दावेको कुबूल नहीं किया, और उसे अपनी जागीर बागोरको चलेजानेका हुक्म मिला, और महाराज शक्तिसिंहको बागोरकी हवेलीमें रहनेका हुक्म होकर जागीरके .एवज़ राज्यसे नक्द रुपया ६५०००) के क़रीब सालानह मुक़र्रर करदिया गया.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण २ [हि० ता० १५ शव्वाल = .ई० ता० २५ नोवेम्बर] को राज्याभिषेकोत्सव होनेके बाद विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि० ता० १६ शव्वाल = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] को दस्तूरके मुवाफ़िक़ महाराणा साहिब श्रीएकलिङ्गेश्वरके दर्शन करनेको पधारे और मन्दिरसे घोड़ा, सरोपाव व तलवार पाकर वापस उदयपुर आये. यह दस्तूर क़दीमसे चला आता है, कि मेवाड़के राजा श्रीएकलिंगेश्वर महादेव, और उनके दीवान महाराणा साहिब हैं; जिस तरहपर, कि महाराणा साहिब अपने मातहत मेवाड़के सर्दारोंको गद्दीनशीनीका दस्तूर देते हैं उसीतरह वे श्री एकलिंगेश्वरके मन्दिरसे हासिल करते हैं. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ शव्वाल = .ई० ता० २८ नोवेम्बर] को कर्नेल् राइट साहिब पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ महाराणी क्वीन विक्टोरियाकी तरफ़से गद्दी नशीनीका ख़िल्अ़त लाये, महलोंके अन्दर छोटी चित्रशालीमें दर्बार हुआ, १ हाथी, २ घोड़े और सरोपाव वग़ैरह पेश होकर गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से ख़रीतह पढ़ा गया और दस्तूरके मुवाफ़िक़ तोपोंकी सलामी सरहुई, फिर दर्बार बर्ख़ास्त हुआ. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० ता० २९ शव्वाल = .ई० ता० ९ डिसेम्बर] को शुक्रग्रस्त सूर्योपराग दिखाई दिया, याने शुक्रके तारेकी छाया सूर्यमें दिखाई दी. यह पर्व सैकड़ों वर्षोंमें होता है, जो इस समयपर बापूदेव शास्त्री वग़ैरह ज्योतिषियोंके गणितसे ठीक समयपर मिलगया. विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्काद = .ई० ता० २८ डिसेम्बर] को गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड नार्थब्रूक साहिबका ख़रीतह लेकर पोलिटिकल एजेएट कर्नेल् राइट साहिब आये, रेज़िडेन्सीसे रवानह हुए, तब ११ तोपकी सलामी रियासती तोपख़ानहसे सर हुई और छोटी चित्रशालीमें दर्बार हुआ, ख़रीतह पढ़ा गया उस वक्त २१ तोपकी सलामी सर हुई. विक्रमी माघ शुक्ल ६ [हि० १२९२ ता० ४ मुहर्रम = .ई० १८७५ ता० ११ फेब्रुअरी] को महाराणा साहिबने स्वकीय पुस्तकालय याने ख़ास कुतबख़ानह बड़ी चित्रशालीमें बनाकर उसका नाम "सज्जन वाणी विलास" रक्खा, और यह पुस्तकालय मेरे (कविराजा श्यामलदास) के सुपुर्द किया. इस पुस्तकालयकी पुस्तकोंपर लगानेके लिये सुवर्ण मुद्रा बनवाकर उसमें यह श्लोक खुदवायाः-

सज्जनेन्द्र नरेन्द्रेण निर्मितम् पुस्तकालयम् ॥
आकरं सारग्रंथानामिदं वाणीविलासकम् ॥ १ ॥

अब इस पुस्तकालयमें संस्कृत, भाषा, अंग्रेज़ी व फ़ार्सी वग़ैरह ज़बानोंकी बहुत-सी किताबें हैं. विक्रमी माघ शुक्ल ११ [हि० ता० ९ मुहर्रम = .ई० ता० १६ फ़ेब्रुअरी] को एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह लॉयल साहिबकी तज्वीज़ से भरतपुरका वकील दीवान जानी बिहारीलाल महाराणा साहिबका गार्डिअन (द्रष्टा) और अध्यापक नियत होकर आया. यह शख़्स व्यवहारमें रहकर ऋषियोंकी तरह बर्ताव रखने वाला और संस्कृत, हिन्दी, फ़ार्सी और अंग्रेज़ीका विद्वान और उसकी आदतमें हरएक आदमीको फ़ायदह पहुंचाना और वह अक़्लमन्दी व नर्म मिज़ाजी वग़ैरह ख़ूबियोंसे भराहुआ है. इस शख़्सके मुक़र्रर होनेसे महाराणा साहिबको बहुत फ़ायदह हुआ, शुरूमें उसने धमकियां देकर हरएकको डराया, लेकिन् ज्यों ज्यों वह शामिल रहनेलगा, सब लोगोंको तसल्ली होती गई, कि इसकी मौजूदगीमें किसीका बेजा नुक़्सान न होगा, और महाराणा साहिब भी उसकी नेक नसीहतोंपर पूरा पूरा अमल करते थे; महाराणा साहिबने उसको परमपूज्य और गुरुका ख़िताब देकर अंग्रेज़ी पढ़नेका आरम्भ किया. अगर जानी बिहारीलाल दोचार वर्ष यहां रहता, तो वे अच्छे विद्वान होजाते, तोभी उसका थोड़ाही रहना बहुत मुफ़ीद हुआ. अच्छे आदमीकी हर जगह ख़्वाहिश होती है; उसके मालिक भरतपुरके महाराजा जशवन्तसिंहने लॉयल साहिबसे बहुत तक़ाज़ा करके १ सालके बाद उसे पीछा बुलवा लिया. रुख़्सत होनेके वक़्त उसने उदयपुरसे तन्ख़्वाह व इन्आम इक्राम लेना हर्गिज़ मन्ज़ूर न किया, और अबतक इस रियासतका पूरा ख़ैरख़्वाह बना हुआ है. विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १ [हि० ता० २९ मुहर्रम = .ई० ता० ८ मार्च] को कर्नेल् राइट साहिब मेवाड़ एजेएटीसे तब्दील होगये, और विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ सफ़र = .ई० ता० २६ मार्च] को उनकी जगह बग़्दादसे तब्दील होकर चार्ल्स हर्बर्ट साहिब उदयपुरमें आये. महाराणा साहिबने मामूलके मुवाफ़िक़ पेश्वाई की. विक्रमी १९३२ चैत्र शुक्ल ३ [हि० ता० १ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० ८ एप्रिल] को जयपुरके महाराजा रामसिंहकी तरफ़से राज्यतिलकका दस्तूर लेकर मंडावाका ठाकुर आनन्दसिंह व बख़्शी जवाहिरलाल आया, जिन्होंने १ हाथी, ४ घोड़े, सरोपावकी किश्तियां और ज़ेवर वग़ैरह सामान पेश किया. इन दिनोंमें महाराणा साहिबका सम्बन्ध होनेके बारेमें बहस चली, जोधपुर और ईडर दो रियासतोंसे पैग़ाम आये; इसमें मुसाहिबोंके दो फ़िर्क़े होगये. आख़रकार ईडरका सम्बन्ध मन्ज़ूर होकर शादी होना क़रार पाया और विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० ता० २४ रबीउस्सानी = .ई० ता० ३० मई] को विवाहका प्रारम्भ होकर गणपति-

स्थापन हुआ; उसी दिन पुरोहित शिवराजकी तरफ़से बनवारेकी गोठ (शादीकी दावतका जल्सह) हुई. इसी दिनसे हमेशह शादीकी धूमधाम, दावतें और जल्से होने लगे, क्योंकि एक अरसहसे दो तीन महाराणाओंकी शादियां खानगी तौरपर हुई थीं, और इसवक़ कुल बातें दस्तूरके मुवाफ़िक़ हुईं. महाराणा साहिबके लिये पहिले मन्नत मानी गई थी, कि चतुर्भुजनाथ (१) के दर्शन करने बाद शादी कीजायेगी, इसलिये विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० ता० २६ रबीउस्सानी = .ई० ता० १ जून] को एकलिंगेश्वर और राजनगर होते हुए विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रबीउस्सानी = .ई० ता० ३ जून] को गढ़बोर पहुंचे. वहां मन्नतके मुवाफ़िक़ भेट पूजन करके विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १ [हि० ता० २९ रबीउस्सानी = .ई० ता० ४ जून] को वापस राजनगर मक़ाम हुआ, दूसरे दिन कांकड़ोलीमें द्वारकाधीशके दर्शन करके पलाणे आये, फिर चंपाबाग़में मक़ाम करनेके बाद विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० ता० २ जमादियुलअव्वल = .ई० ता० ७ जून] को उदयपुरके राज्य-महलोंमें दाखिल होगये. विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० १२ जून] को मेरे (कविराजा श्यामलदास) के मकानपर महाराणा साहिब तश्रीफ़ लाये और मेरी तरफ़की ग़रीबी दावतको कुबूल करके मुझको ताज़ीम व चांदी की छड़ी बख़्शी, और काग़ज़ोंपर लगानेके लिये चरण शरणकी बड़ी छाप (मुहर) रखनेका हुक्म दिया, जिसमें यह दोहा खुदवाया गयाः-

दोहा.

महारान रघुवंश मनि । सज्जन पूरक आस ॥
चरणशरण ते मुद्रिका । श्यामल दास प्रकास ॥ १ ॥

और यह आज्ञा दी, कि जब तक ताज़ीमके मुवाफ़िक़ जागीर न दीजावे तबतक सवारी, लवाज़िमह और ख़र्च सर्कारसे .इनायत होता रहेगा. इसी तरह बागोर, करजाली, शिवरती, बेदला, देलवाड़ा, सर्दारगढ़ वग़ैरह सर्दारों और महता गोकुलचन्द, कोठारी बलवन्तसिंह, सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह, धव्वा राव बदनमल्ल, साह ज़ोरावरसिंह सूराणा, महता लालचन्द, महता गोपालदास, कायस्थ प्राणनाथ, पुरोहित श्यामनाथ, धायभाई गणेशलाल, महासाणी रत्नलाल, पुरोहित उदयलाल, कायस्थ

---

(१) यहां विष्णु भगवानका प्रसिद्ध मन्दिर देमूरीकी नालके क़रीब महाराणा हमीरसिंहके समय का बना हुआ उदयपुरसे वायव्य कोणको क़रीब २५ कोसके फ़ासिलेपर है.

अक्षयचन्द, ढींकड़िया तेजराम, पांडे किशोरराय, राय सोहनलाल और सेठ जवाहिर-मल्ल वगैरह अहलकार व पासबानोंने दावतें देकर बड़ी धूमधामके साथ जल्से किये. उन लोगोंको खिल्अत, जेवर और .इज़त दीगई. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १० [हि० ता० २३ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २८ जून] के दिन महाराणा साहिबको यज्ञोपवीत हुआ, और विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १२ [हि० ता० २५ जमादियुल्अव्वल =.ई० ता० ३० जून] को बरनिकासी होकर बरातका मक़ाम गोवर्द्धनविलास हुआ. जहां तीन रोज़ मक़ाम रहकर बारहपाल, परसाद, धूलेव, बीछीवाड़ा, समेरा और बीलाड़ामें मक़ाम होने बाद विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० ता० ८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १२ जुलाई] को महाराणा साहिब ईडर दाख़िल हुए. इस वक्त खैरवाड़ाका फ़र्स्ट असिस्टैण्ट पोलिटिकल एजेण्ट मेजर कैनिंग साहिब भी साथ था. ईडरके महाराजा केसरीसिंह और महीकांठाके पोलिटिकल एजेण्ट दस्तूरके मुवाफ़िक़ पेश्वाई करके महाराणा साहिबको डेरोंमें लेगये. सायंकालको (गोधूलिक) लग्न था, उस समय महाराणा साहिबने ईडरके महलोंमें पधारकर महाराजा केसरीसिंहकी बहिन (महाराजा जवानसिंहकी बेटी) के साथ विवाह किया, और मए महाराणी साहिबाके वापस डेरोंमें पधारगये. दूसरे दिन महाराणा साहिबकी सालगिरह थी, जिसके जल्से व खुशीमें रात दिन नाच व राग रंग होता रहा. इसके बाद दस्तूरके मुवाफ़िक़ ईडरके महाराजा केसरीसिंहसे मुलाक़ातें होकर विक्रमी श्रावण कृष्ण २ [हि० ता० १६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २० जुलाई] को वहांसे कूच हुआ, और रास्तेमें बीलाड़े, समेरे, बीछीवाड़े, धूलेव, परसाद व बारहपाल मक़ाम करते हुए विक्रमी श्रावण कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २८ जुलाई] को महाराणा गोवर्द्धनविलासमें दाख़िल हुए. इस सफ़रमें सब तरहकी खुशी और आरामका बन्दोबस्त था, लेकिन् बारिशके सबब लोगोंको जो तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं वे भी भूलनेके लाइक़ नहीं हैं, जिसमें भी धूलेव, बीछीवाड़ा और बीलाड़ाके मक़ामकी हालत तो बराती लोगोंको ज़िन्दगी भर याद रहेगी, कि इन स्थानों पर ज़र्दोज़ी, कमख़ाब, और गोटा किनारीके जुलूसी कपड़े कीचड़में मिलगये, परन्तु ऐसी खुशीके मौक़ेपर उस नुक्सानकी किसीने कुछ पर्वा न की. विक्रमी श्रावण शुक्ल १ [हि० ता० २९ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २ ऑगस्ट] को महाराणा साहिब मए लश्करके उदयपुरमें पधारगये.

इन दिनोंमें कामकी अब्तरी होरही थी, रियासती काम पोलिटिकल एजेण्टके इख्तियारमें था, महता गोकुलचन्द और सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह महकमह

ख़ासका काम करते थे, जिनमेंसे अर्जुनसिंहने तो, जो कारगुज़ार और होश्यार आदमी है, पोलिटिकल एजेण्टका मिज़ाज तेज़ देखकर इस्तेफ़ा पेश करदिया, और महता गोकुलचन्द पुराने ढंगका सच्चा और सीधा सादा आदमी था, उसने ज़मानह हालकी बाक़ाइदह कार्रवाईका काम पेश्तर नहीं किया था, इस सबबसे पोलिटिकल एजेण्ट कर्नेल् हर्बर्ट साहिबने दिक़ होकर अजमेरसे महता पन्नालालको तलब किया, जिसने वैकुण्ठवासी महाराणा साहिबके समय इस कामको अच्छी तरह अंजाम दिया था. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ४ [हि० ता० ३ शव्वाल = ई० ता० ४ सेप्टेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्टने महाराणा साहिबसे पन्नालालका सलाम करवाकर विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ८ [हि० ता० ७ शव्वाल = ई० ता० ८ सेप्टेम्बर] को उसे महकमहख़ासके काममें महता गोकुलचन्दके शामिल करदिया.

इस वर्षमें विक्रमी आश्विन कृष्ण ६ [हि० ता० १९ शव्वाल = ई० ता० २० सेप्टेम्बर] को ऐसे ज़ोरसे बारिश शुरू हुई, कि जिसका हाल भी तवारीख़में लिखाजाना ज़रूर है. इस रोज़ महाराणा साहिबको पीतमनिवास महलमें जानी बिहारीलाल अंग्रेज़ी पढ़ा रहा था, कि बड़े ज़ोर शोरके साथ बारिश होने लगी, और थोड़ी देरमें जगन्निवास महलकी खिड़कियोंमें पीछोला तालाबका पानी घुसगया, और पहिली मन्ज़िलकी छतसे दो तीन फ़ुट ख़ाली रहा. तब महाराणा साहिबने मुझ (कविराजा श्यामलदास) और महता पन्नालालको बड़ीपालकी हिफ़ाज़तके लिये भेजा. हम दोनों दौड़कर तालाबपर पहुंचे उसवक़ बड़ीपाल (तालाबके बड़े बंध) का किनारा सिर्फ़ पांच या छः इञ्च ख़ाली था. हम लोगोंने तुरन्त अर्जुनखुराके पत्थर तुड़वाकर पानीका निकास किया. इसवक़ अर्जुनखुरा, तालाबका नाला (१) और दूधतलाईमें होकर पानी निकलता है वह नाला, ये तीनों निकास नदियोंके मुवाफ़िक़ समोरमें गिरते थे. नीलकंठ महादेवके पास क़रीब पांच या सात फ़ुट तक गहरा पानी बहता था, शहरमें डोंडी पिटवा दी, कि पूर्वी हिस्सेके रहनेवाले लोग अपने अपने घर छोड़कर पश्चिमी तरफ़ चले आवें, क्योंकि बन्ध टूटनेका ख़तरह था. महाराणा साहिब भी अर्जुनखुरेपर आकर पानीके निकासकी तज्वीज़ फ़र्माते थे. अब दूसरी तरफ़का हाल सुनिये. सीसारमा गांवके कई घर पानीमें डूबगये, और लोगोंके घरोंसे खाट, बिछौने, अनाज, और नारियल वग़ैरह सामान बहकर पानीके निकासकी तरफ़ जाताहुआ दिखाई देता था, बागोरकी हवेलीके चौकमें किश्तियां फिरने

(१) यह पुराना नाला बड़ी पालके दक्षिण तरफ़ एक पहाड़ीके सिरेपर है.

लगी; त्रिपोलिया और हनुमान घाटके बीच पानीका ऐसा बहाव था, कि जिसतरह कोई बड़ी नदी अत्यन्त वेगसे बहती हो. ब्रह्मपुरीके कई घर डूबगये, उधर शहरपनाहसे पालके अख़ीर हिस्सेतक स्वरूपसागरकी कुल पालपर एक फ़ुटसे दो फ़ुट गहरे पानी की चद्दर गिरती थी, और इसी तरह क़दीमी निकासका नाला एक नदीके मुवाफ़िक़ ज़ोर शोरसे बहरहा था; अम्बावगढ़के नीचेकी नहर भी पानी कूदनेकी लहर दिखा-रही थी; गुमानिया नाला और धायभाईकी पुलांकी बड़ी नदीका बहाव एक होकर बीचके खेतोंमें पानीकी धारा चलती थी. यह कुल पानी उदयसागर तालाबमें गिरकर उसका बड़ा नाला सिरतक पूरा बहने लगा, और बन्धके ऊपर पानीकी झालकें गिरती थीं जो पूरा मामूली भरनेकी हालतमें पालका हिस्सह बहुत ख़ाली रहा करता है; और लकड़वास, पचोली, कान्हपुर और मटूणके बीचकी ज़मीनपर एक बड़ा तालाब भरकर कड़वा टीमरूतक नदीमें तालाब होगया था. इसी तरह बड़ीके तालाब जान-सागरके नाले बहनेके अलावह बन्धपर होकर पानीकी चद्दर गिरती थी. तीन दिनतक एकसा पानी बरसता रहा. हमारे ख़यालसे ३११ वर्ष के भीतर उदयपुरमें ऐसी बारिश कभी नहीं हुई थी, क्योंकि उदयसागरके नालेके निकाससे पश्चिमकी तरफ़ बन्धके साथ विक्रमी १६२१ [हि० ९७१ = ई० १५६४] में जो पत्थरके चटानोंपर मिट्टी डाली गई थी वह मिट्टी बिल्कुल बहकर कुद्रती पत्थर निकल आये, इससे यक़ीन हुआ, कि निकासका पानी पेश्तर इस जगह कभी नहीं बहा था, और क़रीब दो सौ चालीस वर्ष पेश्तर महाराणा अव्वल जगत्सिंहने उदयसागरके बन्धके पीछे इसी निकासके नालेपर महल बनवाये थे, उनकी जड़ोंमें निकासका पानी कभी नहीं पहुंचा था. इस वक़ उन महलोंके गिर्द इतना पानी बहा, कि महलोंके आस पासकी ज़मीन कटकर गहरी नहरें बनगई. अलावह इसके बड़ीका तालाब जानसागर, जिसका बन्ध २०७ वर्ष पहिले बना था, बन्धके ऊपर होकर पानी कभी नहीं गिरा, क्योंकि इस वक़ उसपर पानीकी चद्दर बही, जिससे मिट्टी कटकर बड़े बड़े गढ़े होगये, जहां पेश्तर बन्धके साथकी डाली हुई मिट्टी दोनों दीवारोंके बराबर ख़ानहपूर थी. तीसरी यह कहावत मश्हूर है, कि उदयसागरका नाला रोकदिया जावे और बन्धके बराबर पानी भरे, तो तेलियोंकी सरायके पास जगदीशके मन्दिरके ज़ीनोंतक पानी पहुंचे, जिसको लोगोंने शहरमें जगदीशके मन्दिरकी बाबत् मशहूर करदिया है. यह कहावत ग़लत निकली. विक्रमी १८१० या १५ तकके पैदा हुए कई आदमियोंकी ज़बानी इसी कहावतके साथ सुना, कि उदयसागर पूरा कभी नहीं भरा, तो सोचना चाहिये, कि उन आदमियोंने भी सौ वर्ष पेश्तरके आदमियोंकी ज़बानी सुना होगा;

ऐसे ख़यालोंसे मैं अपनी रायको दुरुस्त जानता हूं. उदयपुरमें बारिशका सालियानह औसत २८ इञ्च माना गया है, इस वर्षमें कुल ४८ इञ्च ५७ सेंट पानी गिरा, जिसमें ज़ियादहतर वर्षा इन्हीं तीन चार दिनोंमें हुई, कि मकानोंके गिरने, सामानके बहने और ज़िराअ़तके बर्बाद होनेसे लाखों रुपयोंका नुक़्सान हुआ, पहाड़ोंकी जड़ोंमें दलदल होगई थी, जहां कई दिनोंतक हाथी घोड़ोंके चलनेमें ख़तरह रहा इत्यादि.

इन दिनोंमें पोलिटिकल एजेण्टकी हिदायतसे महाराणा साहिबके सामने दीवानी फ़ौज्दारी और अपीलकी मिस्लें पेश होती थीं, जानी बिहारीलाल और हम लोग उन की मददको हाज़िर रहते. महाराणा साहिब ऐसे ज़हीन थे, कि बाज़ वक़्त मिस्ल सुनकर बहुत उम्दह राय फ़र्माते, मानो कुछ अ़रसहसे इस कामको करते हैं. बिहारीलालने माली और मुल्की इन्तिज़ामके लिये उम्दह उम्दह सलाह महाराणा साहिबको दी, और मुझको शरीक रखकर कहा कि वक़्त वक़्तके ऊपर इन बातोंको याद दिलाते रहना. महाराणा साहिबने आख़र वक़्ततक उन बातोंपर अ़मल रक्खा, जिससे थोड़ी ज़िन्दगीमें नामवरी और फ़ायदह ज़ियादह हासिल करलिया. अफ़्सोस है, कि बिहारीलालको उसके मालिककी क़द्रदानी और ताकीदसे विक्रमी आश्विन शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रमज़ान = ई० ता० १२ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबसे रुख़्सत लेनेकी ज़रूरत हुई. महाराणा साहिबने एक भारी ख़िल्अ़त, सर्पेच, मोतियोंकी माला, और ४००) अश्रफ़ियां इनायत कीं, लेकिन् उसने एक पघड़ी रखकर बड़ी आजिज़ीके साथ बाक़ीके लिये मुआ़फ़ी चाही. महाराणा साहिबने बिहारीलालसे मांगकर उसके रिश्तेदार जानी मुकुन्दलालको अपने पास रखलिया, जो अबतक महाराणा साहिब के इज़्ज़तदार नौकरोंमें मौजूद है, और बिहारीलालकी जगह सेठ फ़रामजी भीखाजी मुक़र्रर हुआ. इन दिनोंमें इंग्लिस्तानका शाहज़ादह महाराणी विक्टोरियाका बड़ा पुत्र प्रिन्स ऑफ़ वेल्स एड्वर्ड ऐल्बर्ट (युवराज) हिन्दुस्तानकी सैरको आनेवाला था, महाराणा साहिबको भी उनकी मुलाक़ातके लिये कर्नेल् हर्बर्ट पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ने बम्बई जानेको कहा. इस बारेमें बहुत कुछ बहस होकर आख़रको महाराणा साहिबका जाना मन्ज़ूर हुआ, लेकिन् यह उज़्र कियागया, कि हिन्दुस्तानी राजाओंमें महाराणा साहिब अव्वल नम्बर हैं और वहां अक्सर दक्षिण व गुजरातके राजा आवेंगे, इसलिये उस वक़्त किसी तरहकी हतक न होनी चाहिये. पोलिटिकल एजेण्टने इक़ार किया, कि अ़लावह निज़ाम हैदराबादके और कोई राजा महाराणा साहिबसे अव्वल नम्बर न होगा, और निज़ामके आनेपर भी महाराणा साहिबके लिये कोई तद्बीर निकालकर

दूसरा नम्बर न रक्खाजायेगा. इसी इक़ारपर भरोसा रखकर विक्रमी कार्तिक कृष्ण १ [हि० ता० १४ रमज़ान = .ई० ता० १५ ऑक्टोबर] को उदयपुरसे रवानगी होकर गोवर्द्धनविलासमें मक़ाम हुआ, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ता० १८ रमज़ान = .ई० ता० १९ ऑक्टोबर] को वहांसे रवानह होकर बारहपाल, परसाद, खैरवाड़ा, बीछीवाड़ा, समेल, बाकरोल, हरसोलकी छावनी, और देवगाममें मक़ाम करते हुए विक्रमी कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमज़ान = ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को अहमदाबाद पहुंचे, वहांकी छावनीका जेनरल और शहरका कलेक्टर वगैरह १३ साहिब १॥ कोसतक पेश्वाईको आये. साहिब लोगोंने टोपियां उतारकर सलाम किया, महाराणा साहिब दस्तापोशी करके साथ साथ घोड़ोंपर सवार चले; शहरसे आध मील दूरीपर साहिब लोगोंको रुख़्सत देकर शहरके बाहिर सेठ मगनभाई हटीभाईकी कोठीपर पधारे. उक्त सेठने पगपावंडे नज़, निछावर वगैरह दस्तूरके मुवाफ़िक़ किये, और इज़्ज़तदार लोग सलामको आये, जिनकी ख़ातिर कीगई, १९ तोपें सलामीकी छावनीसे सर हुईं. दूसरे रोज़ दिवालीका त्यौहार भी अहमदाबादमें हुआ. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रमज़ान = ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को अहमदाबादसे रेल्वे स्टेशनपर पधारे, वहां कलेक्टर वगैरह अंग्रेज़ी अफ्सर मए जंगी फ़ौजकी कम्पनीके मौजूद थे; फ़ौजने सलामी उतारी, और १९ तोपें सलामीकी सर हुईं. फिर स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर क़रीब ११ बजे बड़ौदाके स्टेशनपर पहुंचे. वहांके गायकवाड़ दूसरे सियाजी तो पेश्तर बम्बई चलेगये थे, और रियासतकी तरफ़से मोतमद लोग स्टेशनपर हाज़िर हुए और सलामी की १९ तोपें सर हुईं. फिर शामको क़रीब ५ बजे सूरत पहुंचे, वहां मक़ाम हुआ, मेवाड़ एजेन्सीके सरदफ़्तर सेठ आदरजीकी तरफ़से मिह्मानी और दावत हुई. दूसरे रोज़ स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर क़रीब पांच बजे शामको बम्बई पहुंचे, स्टेशनपर गवर्नर बम्बईका सेक्रेटरी और एक फ़ौजी अफ्सर मए कम्पनी, फ़ौज व सवारोंके पेश्वाईको हाज़िर थे, उनसे मुलाक़ात करके एक बंगलेमें डेरा था वहां पधारे. विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ शव्वाल = .ई० ता० ३१ ऑक्टोबर] को ईडरके महाराजा केसरीसिंह महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात करगये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० २ शव्वाल = .ई० ता० १ नोवेम्बर] को गवर्नर बम्बईसे मुलाक़ात हुई; महाराणा साहिबको लेनेके लिये उनका सेक्रेटरी डेरेतक आया; मए पोलिटिकल एजेण्ट हर्बर्टके बग्घी सवार हो कोठी गवर्नरीको पहुंचे, सर फ़िलिप वुडहाउस गवर्नर बम्बई दर्वाज़ेतक पेश्वाई कर लेगया. दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और

पोलिटिकल एजेएट व मेवाड़के सर्दार और बाईं तरफ़ गवर्नर बम्बई व उनके सेक्रेटरी वगैरह साहिब बैठे, फिर शौक़िया बातें व इत्र पान वगैरह होकर जिसतरह आये उसीतरह वापस पधारे. फिर विक्रमी कार्तिक शुक्ल ४ [हि० ता० ३ शव्वाल = .ई० ता० २ नोवेम्बर] को गवर्नर बम्बई सर फ़िलिप वुडहाउस महाराणा साहिबकी मुलाक़ात को डेरेपर आये, जिसतरह गवर्नरके मकानपर बर्त्ताव उनकी तरफ़से हुआ उसी तरह महाराणा साहिबने अपने डेरेपर गवर्नरका किया, और शामके वक्त गवर्नर जेनरल हिन्द लॉर्ड नार्थ ब्रूक रेलमें आये, महाराणा साहिब स्टेशनपर पेश्वाईको गये; वहांपर दक्षिण और गुजरातके कुल राजा लोग मौजूद थे. लॉर्ड साहिबसे मुलाक़ात करके वापस अपने डेरोंको चले आये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ५ [हि० ता० ४ शव्वाल = .ई० ता० ३ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब गवर्नर जेनरल हिन्दके डेरेपर मुलाक़ातको गये, बग्घीसे उतरे, जहांतक सेक्रेटरी और दर्वाज़ेतक फ़ॉरेन् सेक्रेटरी व आधे फ़र्शतक लॉर्ड साहिब पेश्वाईको आये, १९ तोपोंकी सलामी सर हुई, दाहिनी तरफ़ महाराणा साहिब और उनके ९ सर्दार व बाईं तरफ़ गवर्नर जेनरल हिन्द व उनके अफ़्सर लोग थे. मिज़ाजकी खुशी वगैरह मामूली बातचीत होकर लॉर्ड गवर्नर जेनरलने खड़े होकर फूलकी माला पहिनाकर इत्र पान महाराणा साहिबको और फ़ॉरेन् सेक्रेटरीने मेवाड़के सर्दारोंको दिया; फिर महाराणा साहिबको लेआये. उसीतरह बग्घीतक पहुंचाया. फिर अपने डेरेपर पधारे, तीसरे पहरको ईडरके महाराजा केसरीसिंहके डेरेपर गये, ब दस्तूर मुलाक़ात कर वापस आये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ६ [हि० ता० ५ शव्वाल = .ई० ता० ४ नोवेम्बर] की शामको लाठ साहिब महाराणा साहिबके डेरेपर आये. बरामदेकी सीढ़ियोंके पास बग्घीसे उतरे, वहांसे महाराणा साहिब पेश्वाई कर लेआये. गवर्नर जेनरलके हाथपर महाराणा साहिबका हाथ था, दाहिनी तरफ़ लॉर्ड साहिब व उनके अंग्रेज़ अफ़्सर, बाईं तरफ़ महाराणा साहिब व उनके हम्राही सर्दार कुर्सियोंपर बैठे. मेवाड़के सर्दारोंने जिनमें मैं (कविराजा श्यामलदास) भी शामिल था, एक एक अश्रफ़ी लॉर्ड साहिबको नज़ दिखलाई. बाद इसके लाठ साहिबको फूलोंका हार व इत्र पान महाराणा साहिबने और उनके अफ़्सरोंको बेदलाके राव बख़्तासिंहने दिया, पेश्वाई करलाये वहांतक उसी तरह पहुंचाया. आजके दिन आबूसे एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह स्क्वेअर लॉयल उदयपुरमें आये, क्योंकि महाराणा साहिब व पोलिटिकल एजेएट तो यहां न थे, और लॉर्ड नार्थ ब्रूक बम्बईसे उदयपुर होकर जानेकी ख़्वाहिश रखते थे, इससे लॉयल साहिबने यहां आकर कुल बन्दोबस्त करवाया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १० [हि० ता० ९ शव्वाल = .ई० ता० ८ नोवेम्बर] को शाहज़ादह एड्वर्ड ऐल्बर्ट प्रिन्स

ऑफ़ वेल्सके बम्बई पालवा बन्दरपर जहाज़से उतरनेके समय महाराणा साहिब और दूसरे राजा लोग भी पेश्वाईको गये. बन्दरपर राजा लोगोंके लिये कुर्सियां पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़के इक़ारसे बर्ख़िलाफ़ रक्खी गईं. महाराणा साहिब कुछ बीमारीसे और कुछ इस इख़्तिलाफ़ीकी नाराज़गीसे कुर्सीपर न बैठकर टहलते रहे, और शाहज़ादहके आनेपर मुलाक़ात करके अपने डेरेको वापस चले आये. ऊपर लिखेहुए दोनों कारणों से शाहज़ादहके साथ नहीं गये. इस रंजीदगीका नतीजह यह हुआ, कि उसी दिन से शाहज़ादह और गवर्नर जेनरल हिन्दने राजा लोगोंसे नम्बरवार मुलाक़ात करनेका तरीक़ह तोड़दिया, जिसका नमूनह दिल्लीके क़ैसरी दर्बारमें दिखलाया जावेगा. विक्रमी कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ता० १० शव्वाल = .ई० ता० ९ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब शाहज़ादहकी मुलाक़ातके लिये गये. वलीअहद आधे फ़र्शतक पेश्वाई करके अपने हाथपर महाराणा साहिबका हाथ रखकर ले गये. दाहिनी तरफ़ कुर्सियोंपर महाराणा साहिब और उनके ९ सर्दार बैठे और बाईं तरफ़ कुर्सियोंपर शाहज़ादह और उनके अफ्सर लोग. महाराणा साहिबके ९ सर्दारोंने शाहज़ादहको एक २ अश्रफ़ी नज़ दिखलाई; मिज़ाजपुर्सी वग़ैरह ख़ुशीकी बातें होकर महाराणा साहिबको शाहज़ादहने .इत्र पान देकर जहांसे लाये वहांतक पहुंचाया, और वे अपने डेरेको चले आये. शामके वक़ शाहज़ादहको दिखलानेके लिये बम्बईमें रौशनी हुई, जिसकी कैफ़ियत देखनेके लाइक़ थी. शाहज़ादह और कुल राजा लोग अपने अपने तौरपर सैर करते थे, काच कटोरोंमें सौदागरोंकी दूकानों और कुल मकानोंपर रौशनीकी यह हालत थी, कि मानो हरएक मकान आगका शोला दिखाई देता था, जिनमें रंग रंग के काचके दीपक अनेक क़तारों व बेलबूटोंके ढंगपर देखने वालोंकी निगाहको अपनी तरफ़ खींचते थे. सड़कपर बग्घियोंका हुजूम इस क़द्र था, कि किसीको बग्घी घुमाकर बग़लपर लेनेकी जगह नहीं मिली, धीरे धीरे बग्घियोंकी क़तारकी चालपर अपनी अपनी बग्घियोंको चलाना पड़ा; इसी तरह आदमियोंका भी हुजूम हुआ. हम लोगोंकी बग्घियां भी महाराणा साहिबकी बग्घीसे दूर पड़गईं; बड़ी मुश्किलसे निकलनेका मौक़ा मिला; तब अपने अपने तौरपर डेरोंको आये. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ता० ११ शव्वाल = .ई० ता० १० नोवेम्बर] को पिछले पहर युवराज महाराणा साहिबके डेरेपर आये, बरामदेकी सीढ़ियोंके पास बग्घीसे उतरे, वहांसे महाराणा साहिब उन्हें पेश्वाई कर लेआये, दाहिनी तरफ़ शाहज़ादह व उनके अफ्सर लोग और बाईं तरफ़ महाराणा साहिब व उनके हमराही सर्दार बैठे; थोड़ी देरतक मुहब्बत आमेज़ शौक़िया बातें होती रहीं. महाराणा साहिबकी तरफ़वाले सर्दारोंने शाहज़ादहको एक एक अश्रफ़ी

नज़ दिखलाई. इसके बाद महाराणा साहिबकी तरफ़से शाहज़ादहको तुहफ़े दियेगये और पेशवाईकी जगहतक उन्हें वापस पहुंचाया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० १२ शव्वाल = .ई० ता० ११ नोवेम्बर] को शामके वक्त महाराणा साहिब स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर बम्बईसे रवानह हुए; विक्रमी कार्तिक शुक्ल १४ [हि० ता० १३ शव्वाल = .ई० ता० १२ नोवेम्बर] को ५ घड़ी रात बाक़ी रहे भड़ौंचमें पधारकर समुद्रगामिनी नर्मदा नदीमें स्नान करनेके बाद उसी ट्रेनमें सवार होकर बड़ोदाके स्टेशनपर पहुंचे, जहां तोपोंकी और फ़ौजकी सलामी हुई. बाद इसके अहमदाबाद पहुंचे, स्टेशनपर अंग्रेज़ अफ्सर व फ़ौज मौजूद थी, महाराणा साहिब सबकी सलामी लेते हुए सेठ मगनभाई हटीभाईके बंगलेपर पधार गये; सलामीकी १९ तोपें छावनी के तोपख़ानहसे चलीं. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि० ता० १५ शव्वाल = .ई० ता० १४ नोवेम्बर] को वहांसे रवानह होकर देवगाम, हरसोलकी छावनी, बाकरोल, समेरा, सीसोद और धूलेवमें मक़ाम करते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० ता० २० शव्वाल = .ई० ता० १९ नोवेम्बर] को उदयपुरमें दाख़िल हुए. इस सफ़रकी ख़िद्मतमें इस किताबका लिखने वाला (कविराजा श्यामलदास) भी हरवक्त हाज़िर था. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ११ [हि० ता० २४ शव्वाल = .ई० ता० २३ नोवेम्बर] को लॉर्ड नार्थब्रूक बग्घियोंकी डाकके ज़रीएसे दस बजे मगरवाड़ मक़ामपर पहुंचे, और हाज़िरी खानेके बाद क़रीब पौने पांच बजे उदयपुरसे साढ़े तीन मील फ़ासिलहपर, जहां डेरा खड़ा कियागया था, दाख़िल हुए; वहांसे पांच बजे हाथी सवार होकर मुलाक़ातकी जगह आये. इधरसे महाराणा साहिब भी अपने हम्राहियों समेत हाथी सवार होकर पधारे, राजधानीसे पौने तीन मील दूर हाथियोंपर ही मुलाक़ात हुई. दाहिनी तरफ़ लाठ साहिबका हाथी और बाईं तरफ़ महाराणा साहिबका हाथी रहा. महाराणा साहिबके पीछे सर्दार लोगोंके और लाठ साहिबके पीछे साहिब लोगोंके हाथी थे; फिर सूरजपोलके बाहिर हवालाके बराबरसे लाठ साहिब और महाराणा साहिब मए दो दूसरे साहिबोंके एक बग्घीमें और बाक़ी साहिब लोग व सर्दार दूसरी बग्घियोंमें सवार होकर शम्भुनिवास महलमें दाख़िल हुए, जहां लॉर्ड साहिबका डेरा तज्वीज़ कियागया था; २१ तोपें सलामीकी रियासती तोपख़ानहसे सर हुईं. इसवक्त जिस रास्ते होकर लॉर्ड साहिब आये, उस तरफ़ बाज़ार और महलोंमें रोशनी हुई, और बड़े चौकमें रियासती फ़ौजने व शम्भुनिवासके चौकमें खैरवाड़ाकी भील कॉर्प्सने सलामी ली. लाठ साहिबकी पेशवाईको उदयपुरसे ४० मील गांव मगरवाड़तक बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंह व मेजाके रावत् अमरसिंह,

और ११ मील गांव डबोकतक महता गोकुलचन्द भेजेगये थे, विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २५ शव्वाल = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को फ़ज्रके सवा नौ बजे महाराणा साहिबकी तरफ़से बेदलाका राव बख़्तसिंह, देलवाड़ाका राज फ़तहसिंह, बदनौरका ठाकुर केसरीसिंह, आसींदका रावत् अर्जुनसिंह, ये चारों सर्दार लॉर्ड साहिबकी मिज़ाजपुर्सीको भेजेगये. ११ बजे महाराणा साहिब मए बेदलाके राव बख़्तसिंह, सलूंबरके रावत् जोधसिंह, देलवाड़ाके राज फ़तहसिंह, गोगूंदाके राज मानसिंह, बदनौरके ठाकुर केसरीसिंह, बानसीके रावत् मानसिंह, पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंह, आसींदके रावत् अर्जुनसिंह और करजालीके महाराज सूरतसिंहके लॉर्ड साहिबकी मुलाक़ातको शम्भुनिवास पधारे, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात कर वापस आये. फिर लॉर्ड नार्थब्रूक जगमन्दिर महलको मुलाहज़ह फ़र्मानेके बाद हरिदासकी मगरीपर सूअरोंको देखकर किश्तियोंमें रौशनीकी सैर करते हुए वापस आये. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ शव्वाल = .ई० ता० २५ नोवेम्बर] को लॉर्ड साहिब महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको महलोंमें आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात हुई; फिर लॉर्ड साहिब गोवर्द्धनविलास, जगन्निवास और महासतीके स्थानोंको देखकर वापस आये. इन मुलाक़ातोंमें हर मौक़ेपर लॉर्ड साहिबकी २१ और महाराणा साहिबकी १९ तोप सलामी रियासती तोपख़ानहसे सर हुईं, इसलिये कि लॉर्ड साहिबके साथ तोपख़ानह न था. फिर मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० ता० २७ शव्वाल = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] को ७ बजे लॉर्ड साहिब उदयपुरसे रवानह होकर राजनगर होते हुए जोधपुर चलेगये.

ईडरके महाराजा केसरीसिंह सलूंबर शादी करके विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि० १२९३ ता० ८ सफ़र = .ई० १८७६ ता० ५ मार्च] को उदयपुरमें आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात, पेश्वाई वग़ैरह होकर सहेलियोंकी बाड़ीमें ठहरे. विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ सफ़र = .ई० ता० १४ मार्च] को कूच हुआ, बीचमें दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ातें हुईं. इन दिनोंमें पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् हर्बर्ट साहिबकी मारिफ़त कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंहकी कन्याका संबन्ध महाराणा साहिबके साथ होनेकी बातचीत हुई. विक्रमी १९३३ ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रबीउ़स्सानी = .ई० ता० १९ मई] को कृष्णगढ़से कोटड़ीका ठाकुर मेघसिंह और महता महेशदास गद्दीनशीनीका टीका लाये, और उक्त संबन्धकी बातचीत पुख़्तह की.

इन दिनोंमें नाथद्वाराका गोस्वामी गिरधरलाल अपने क़दीमी ढंगको छोड़कर रईसानह मग़रूरीके सबब रियासती हुकूमतसे बाहिर निकलनेकी चेष्टा करनेलगा; उसके चाल चलन और इस मग़रूरीसे महाराणा साहिब व कुल रियासती लोग नाराज़ थे.

आख़रकार उसकी सर्कशी मिटाना मुनासिब जानकर क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ मेजर कैनिंग और बेदलाका राव बख़्तसिंह व महता गोकुलचन्द वगैरह कौन्सिलके सर्दार फ़ौज लेकर विक्रमी १९३३ वैशाख शुक्ल १५ [हि० १२९३ ता० १३ रबीउस्सानी = .ई० १८७६ ता० ८ मई] को उदयपुरसे रवानह होकर लालबाग़ पहुंचे. उसके कुछ अरसह पहिले गोस्वामी व लालबाबा मए सौ सवार और सौ आदमी हथियार बन्दके लालबाग़में आगये थे. उसवक्त रिसालदार जानमुहम्मदको हुक्म दियागया, कि सवारोंको लेजाकर बाग़को घेरलो, जिससे न कोई बाहिर जाने पावे और न भीतर आने पावे, और आधी फ़ौज व तोपख़ानह, मए अफ़्सर महता गोपालदासके मन्दिरके बन्दोबस्तको भेजेगये. बाद इसके कौन्सिलकी यह राय क़रार पाई, कि पहिले जो हुक्म हुआ है वही क़ाइम रहे, याने गोस्वामी सीधी तरह उदयपुर न जावे, तो गिरिफ़्तार कियाजावे. फिर महता गोकुलचन्दको जो हुक्म पहिले गोस्वामीके नाम लिखागया था लेकर उसके पास भेजा, लेकिन् वह न आया; तब गंगल जमादारको भेजकर गोस्वामी के पास वाले शस्त्रबन्ध सिपाहियोंको हुक्म दियागया, कि तुम बाग़से बाहिर निकलजाओ. इसपर कितनेएक लोग तो निकलगये, और कितनेएक गोस्वामीके पास मौजूद रहे. फिर दोबारह ठाकुर मनोहरसिंह व भाणेज मोतीसिंह समझानेके लिये भेजेगये. इस अरसहमें मन्दिरकी रिपोर्ट आई, कि जो विदेशी विलायती वगैरह मन्दिरमें मौजूद हैं उन्होंने मन्दिरके किवाड़ बन्द कर रक्खे हैं, भीतर नहीं जाने देते, बल्कि बन्दूक़ोंकी मुहरियां निकाल रक्खी हैं; तब उनको यह हुक्म दियागया, कि अभी मन्दिरको घेरे रहो. इसके पीछे ठाकुर मनोहरसिंह व भाणेज मोतीसिंहने वापस आकर कहा, कि गोस्वामी अपनी इज़्ज़तकी ख़ातिरी चाहता है, जिसपर कैलवाके जागीरदार, मोहीके जागीरदार, व लाला हरनारायणको भेजकर कहलाया, कि हमको हुक्म है, कि आप उदयपुर चलें, हम आपको .इज़्ज़तके साथ लेजावेंगे, मगर वह टाला टूली करते रहे. तब आधी भील कम्पनी व शम्भु पल्टनके निशान समेत सहीहवाला लक्ष्मणसिंह भेजागया, और हुक्म दियागया, कि लालबाबाको यहां भेजदो और गोस्वामीको पालकीमें बिठाकर उदयपुर लेजाओ. उन्होंने हुक्मके मुवाफ़िक़ गोस्वामीको घेरकर दूसरे लोगोंको हटानेके बाद उसे पालकीमें सवार करादिया, मगर उसने लालबाबाका हाथ पकड़कर अपने सामने पालकीमें बिठालिया. तब व्रजवासी वगैरह क़दीमी लोग जो उस ठिकानेमें हैं, कहने लगे कि अब हमको क्या हुक्म है ? तब जीलवाड़ाके सोलंखी राजसिंहको उनके साथ भेजकर हुक्म दिया, कि लालबाबाको लेआओ. उन्होंने जाकर लालबाबाको पाल-कीमेंसे उठाकर खींचलिया, और कौन्सिलके सामने जय जय शब्द कहते हुए लेआये.

गोस्वामीके पासवाले शस्त्र बन्ध सिपाहियोंके हथियार इस मुवाफ़िक़ छीन लिये गये- तलवार ३२, कटारियां २, ढाल ५, टोपीदार बन्दूक़ १, छुरी १, और ये सब एकडे करायेजाकर अफ्सर तोपख़ानहके सुपुर्द कियेगये, बाद इसके गोस्वामीको दिनके दो बजे सर्कारी ज़ाबितहके साथ उदयपुरकी तरफ़ रवानह करके लालबाबाको कहागया, कि नीचे लिखी हुई शर्तें आपको मन्ज़ूर हों, तो लिखकर पेश करें, आपको श्री दर्बार गद्दीनशीन करेंगेः-

शर्तें.

१- हमको हर सूरत श्री दर्बारकी हुकूमत व हुक्म मुवाफ़िक़ चलना मन्ज़ूर है, कभी किसी तरहका .उज़्र न होगा.

२- श्री नाथजीकी सेवा सामग्री परंपरासे होती है, जिसमें अभी फ़र्क़ हुआ था, सो अब अगली रीतिके मुवाफ़िक़ दर्बार जो रीति बांध देंगे, उसमें फ़र्क़ न होगा; श्री नाथजीकी सेवा सामग्री गऊ, व्रजवासी टहलुवे, सेवकोंकी जो परंपरा रीति है वही वर्तेंगे.

३- विदेशी सिपाही लोगोंको नहीं रक्खेंगे, मन्दिर व शहरके लिये, जो ज़ाबितह दर्बार मुक़र्रर करेंगे वह हमको मन्ज़ूर है, और तन्ख़्वाह हम देवेंगे.

४- दीवानी व फ़ौज्दारीका बन्दोबस्त वास्ते श्री दर्बारकी तरफ़से एक अहलकार मुक़र्रर करदेवें, सो हमको पूछकर काम किया करे.

ये चारों शर्तें हमको मन्ज़ूर हैं, और हम उदयपुर आवेंगे, तब दर्बार बन्दोबस्त बांध देवेंगे वह हमको क़ुबूल है. इसपर उन्होंने दर्ख़्वास्त की, कि सदैवसे हमारे घरका हमको इस्तियार है, सो हम होश्यार होवें उसवक़्त सब इस्तियार हमको मिले. तब यह तज्वीज़ ठहरी, कि जब यह लालबाबा होश्यार और नेक चालचलनके हों, तो सब इस्तियार दीवानी व फ़ौज्दारीके इन्हें दिये जावें, और जो कोई इनके ऊपर श्री दर्बारमें अर्ज़ीऊ होवे, तो मिस्ल व आसामी श्री दर्बारमें भेजें, और दर्बारकी अदालतोंके हुक्मकी तामील करें, इसका इक़ारनामह लियाजावे. इसी अरसहमें मन्दिरका बन्दोबस्त राजकी तरफ़से कियागया, याने उनकी सिपाहको निकालकर मौक़े मौक़े पर राजके पहरे मुक़र्रर करदियेगये; फिर लालबाबाको मन्दिरमें जानेकी इजाज़त दीगई, और कौन्सिल बर्ख़ास्त हुई. फिर ८ बजे रातको कौन्सिलका इज्लास हुआ, जिसमें अव्वल वे लोग पेश हुए, जिनको गोस्वामीकी गिरिफ्तारीके वक़्त उनके हमराही समझकर ब्रजवासी लोगोंने पकड़ लिया था. इन लोगोंमें ५ शख़्स तो रिसालदार व सूबेदार वग़ैरह अफ़्सर और ९ शख़्स कारख़ानोंके दारोग़ह, अहलकार, और १ यात्री था, जिनमेंसे आपा व

निर्भयराम तो हिसाबका इल्ज़ाम होनेके सबब हवालातमें रक्खेगये और बाक़ी सब लोग रिहा कियेगये. रिसालदार व सूबेदारको यह हुक्म सुनायागया, कि तुम तन्ख्वाह पाकर बर्ख़ास्त कियेजाओगे, और तन्ख्वाह उसवक्ततक मिलेगी, जब कि हिसाब चुकाया जावेगा; इनके अलावह कारख़ानोंके दारोग़ह व अहलकार वगैरह ७ आसामी बदस्तूर अपने अपने उहदेपर बहाल रहे, और यात्री रुस्सत कियागया. मन्दिर व शहरके बन्दोबस्तके वास्ते यह तज्वीज़ हुई, कि महता गोपालदासको मुक़र्रर करके हुक्म दियाजावे, कि अधिकारीकी सलाहसे यहांके कुल कामका बन्दोबस्त रक्खे, किसी तरहका ख़लल न पड़े. पहिले जो अहलकार हैं, उनसे सब काम सरिश्तहके मुवाफ़िक़ चलाते रहो; और अधिकारी बालकृष्णदास, जो कि वहांका क़दीमी प्रधानेके तौर काम करता है, उसको हुक्म दियाजावे, कि यहांके सब कामका ज़िम्मह तुम्हारा समझो, किसी तरह मन्दिरके काममें ख़लल न आवे, और किसी तरहका नुक्सान या ग़लती होगी, तो जवाब तुमसे लिया जावेगा; और दूसरे अहलकारोंको हुक्म दिया जावे, कि अधिकारी व महता गोपालदासके हुक्मकी तामील करें. फिर १० बजे कौन्सिल बर्ख़ास्त हुई. इसके बाद ६ बजे प्रातःकालको मेम्बर लोग मन्दिरमें जाकर ऊपर लिखेहुए हुक्म सुनानेके बाद उदयपुरको रवानह हुए. इस गुसाईंने महाराणा साहिबसे बग़ावत करनेके सिवा अपने बाप दादोंका ढंग छोड़कर मन्दिरके राजभोगमें कमी करदी और यात्रियोंपर दबाव डालकर उनसे धन एकठ्ठा किया, और वही धन लाला मुन्शियोंको खिलाकर अपने तई एक जुदा खुदमुख़्तार रईस बनानेकी कोशिश करना शुरू किया; अलावह इसके निर्दयता ऐसी इख़्तियार करली थी, कि कई मनुष्योंको क़ैद करके भूख पियास व मारपीटसे मृतप्राय कर रक्खा था. ये बात देखकर महाराणा स्वरूपसिंहने उक्त गोस्वामीकी बुरी आदतें छुड़ानेकी ग़रज़से धमकीके तौर नाथद्वाराके पट्टेपर ख़ालिसह भेजदिया था, लेकिन् कुछ अरसह बाद समझाइश करके ख़ालिसह वापस उठा लिया. इसी तरह महाराणा शम्भुसिंह साहिबके वक्तमें भी विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] में फिर ख़ालिसह भेजागया, तोभी उसने अपनी आदतें न छोड़ीं, तब मज़हबी पेश्वाओंके ब्रख़िलाफ़ चालचलनसे गिरधरलालके लिये ऊपर लिखी हुई सज़ा तज्वीज़ कीगई, और उसको उदयपुरमें रखना मस्लिहत न जानकर विक्रमी १९३३ ज्येष्ठ कृष्ण १३ [हि० १२९३ ता० २६ रबीउस्सानी = ई० १८७६ ता० २१ मई] को मथुरा वृन्दावन भेजदिया, और यह हुक्म हुआ कि वह नेक चलनसे वहां बैठा रहेगा, तो १०००) रुपया माहवारी ख़र्चके लिये नाथद्वारासे मिलता रहेगा; लेकिन् उसने अपनी आदतके मुवाफ़िक़ वहांसे निकलकर कई उपद्रव किये, जिससे उन रुपयोंका मिलना भी बन्द होगया, और अबतक वह कलकत्ता, बम्बई वगैरह अंग्रेज़ी अमलदारीमें श्रीगोवर्द्धननाथ की भेटमें ख़लल डालता फिरता है. महाराणा साहिबने गिरधरलालकी जगह उनके

पुत्र गोवर्द्धनलालको नाथद्वारेका गोस्वामी मुक़र्रर करके विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल पक्षमें क़रीब पांच वर्षतक ख़ालिसह रहनेके बाद उठन्तरी करदी. पेश्तर गोवर्द्धनलालको उदयपुर बुलाकर दस्तूरके मुवाफ़िक़ सन्मान और आश्वासन किया, फिर विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० ७ जून] को नाथद्वारे पधारकर उनको गद्दीपर बिठानेका दस्तूर अदा करआये, और गोवर्द्धनलालके कम उम्र होनेके कारण नाथद्वारेका प्रबन्ध अपने हाथमें रखकर पेश्तर महता गोपालदासको और बाद उसके मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याको वहांका प्रबन्धकर्त्ता मुक़र्रर किया. इसवक्त बहुतसे बखेड़े उठे, श्रीगोवर्द्धननाथकी भेट जो कोटा व गुजरात वगैरहसे आती थी उसमें गिरधरलालने ख़लल डालना चाहा, लेकिन् महाराणा साहिबकी मददसे सब प्रबन्ध अच्छी तरह चलता रहा.

वल्लभकुलके गोस्वामी गिरिराजसे बादशाह आलमगीरके समय गोवर्द्धननाथकी मूर्ति लेकर मेवाड़में आये, जिसका संक्षेप हाल तो महाराणा राजसिंह पहिलेके वृत्तान्तमें लिखागया है - (देखो पृष्ठ ४५३). अब यहांपर वल्लभाचार्यसे लेकर गोवर्द्धनलाल तकका कुर्सीनामह लिखाजाता हैः-

१- वल्लभाचार्य.	२- विठ्ठलनाथ १.	३- गिरधर १.	४- दामोदर १.
५- विठ्ठलनाथ २.	६- गिरधर २.	७- दामोदर २ (१).	८- गिरधर ३.
९- रघुनाथ.	१०- गोविन्द.	११- गोकुलेश.	१२- गोपेश्वर.
१३- कृष्णराय.	१४- गोविन्दराय.	१५- गिरधर ४.	१६- गोवर्द्धनलाल.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १ [हि० ता० २९ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २२ जून] को महाराणा साहिबका कृष्णगढ़का सम्बन्ध पुख़्तह होकर कोटड़ीके मेघसिंह और महता महेशदासको कृष्णगढ़ जानेकी रुख़्सत मिली. इन्हीं दिनोंमें जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहने अपनी बहिनका सम्बन्ध महाराणा साहिबके साथ करनेकी कोशिश राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरल स्केअर लॉयल साहिबकी मारिफ़त की. इस मुआमलहमें बाज़ लोगोंकी यह राय हुई, कि एकदम इन्कार करदिया जावे, लेकिन् महाराणा साहिबने अंग्रेज़ अफ़्सरोंकी मारिफ़तके सवालका जवाब शाइस्तगीके साथ देना चाहा. महता पन्नालाल और पुरोहित पद्मनाथको आबू भेजकर सम्बन्धकी बातोंमें चन्द क़लमें पेश्तर तय करने को पेश कीं, जिन्हें मुन्सिफ़ानह जानकर अंग्रेज़ी अफ़्सर इस मुआमलहसे किनारा करगये; तब जोधपुरके महाराजा साहिबने आशिया चारण कविराजा मुरारिदानको उदयपुर भेजा, वह

---

(१) यह विक्रमी १७२८ [हि० १०८२ = .ई० १६७१] में गोवर्द्धननाथको लेकर मेवाड़में आये.

विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रजब = .ई० ता० ५ ऑगस्ट] को यहां आया, और उसकी पेश्वाईके लिये धरयावद्के रावत् केसरीसिंह व बेमालीके रावत् लक्ष्मणसिंह धायभाईकी पुलांतक भेजेगये. उक्त कविराजाने जोधपुरमें अपनेको बांहपसाव होनेके सबब यहांसे भी वैसाही बर्ताव रखनेकी दर्ख्वास्त की. तब महाराणा साहिबने पेश्तर मुझ (कविराजा श्यामलदास) को बांहपसाव .इनायत करनेके बाद विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रजब = .ई० ता० ८ ऑगस्ट] को कविराजा मुरारिदानको महलोंमें बुलाकर ताज़ीम और बांहपसावकी .इज़्ज़त दी. इस सम्बन्धके बारेमें बहुत कुछ बात चीत हुई, परन्तु चन्द बातें ऐसी पेश आईं, कि जिनसे यह मुल्तवी रहा, और विक्रमी आश्विन शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रमज़ान = .ई० ता० ३ ऑक्टोबर] को कविराजा मुरारिदान रुख़्सत होकर जोधपुरको चलागया. विक्रमी कार्तिक शुक्ल १ [हि० ता० २९ रमज़ान = .ई० ता० १८ ऑक्टोबर] को कृष्णगढ़ विवाह करनेका प्रारम्भ, अर्थात् गणपतिस्थापन हुआ. इसवक़ भी पहिली शादीके मुवाफ़िक़ सर्दारों, पासबानों, और अहलकारोंकी तरफ़से हमेशह जल्से होते रहे, और महाराणा साहिबने नीचे लिखेहुए नौकरोंको उनके मकानोंपर पधारकर .इज़्ज़तें बख़्शीं. इस किताबके लिखने वाले (कविराजा श्यामलदास) के मकानपर विक्रमी कार्तिक शुक्ल ७ [हि० ता० ६ शव्वाल = .ई० ता० २४ ऑक्टोबर] को पधारकर दिनभर विराजे, और शामको बनोलेकी दावत अरोगनेके बाद बड़ी धूमधाम के साथ महलोंको सिधारे. इसीतरह महता गोकुलचन्द, बागोरके महाराज शक्तिसिंह, मामा राठौड़ बख़्तावरसिंह, धव्वा राव बदनमल्ल, ढींकड़िया तेजराम, महता मुरलीधर, करजालीके महाराज सूरतसिंह, महता लालचन्द, शिवरतीके महाराज गजसिंह, पुरोहित पद्मनाथ, पीपलियाके रावत् कृष्णसिंह, धायभाई गणेशलाल, सर्दारगढ़के ठाकुर मनोहरसिंह, ताणाके राज देवीसिंह, पारसोलीके राव लक्ष्मणसिंह, बेदलाके राव बख़्तसिंह, सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह, कुरावड़के रावत् रत्नसिंह और काकरवाके राणावत उदयसिंह वगैरहकी तरफ़से दावतें और जल्से बड़ी धूमधामके साथ होते रहे. इन्हीं दिनोंमें विक्रमी कार्तिक शुक्ल १३ [हि० ता० १२ शव्वाल = .ई० ता० ३० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबके इख़्तियारातकी बाबत लॉर्ड साहिबका ख़रीतह आया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ३ [हि० ता० १७ शव्वाल = .ई० ता० ४ नोवेम्बर] को उदयपुरसे बरात याने लश्करका कूच हुआ, और महाराणा साहिब विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० ता० २१ शव्वाल = .ई० ता० ८ नोवेम्बर] को बग्घीकी डाकमें सवार होकर शामके वक़ गुरलां मक़ामपर लश्करमें दाख़िल हुए. वहांसे भीलवाड़ा और भीलवाड़ा

से बनेड़े पहुंचे, राजा गोविन्दसिंहकी तरफ़से क़िलेमें पधरावनी और दावत हुई. वहांसे शाहपुरामें दाख़िल हुए, जहां राजाधिराज नाहरसिंहने पधरावनी व दावत की, यहांसे फूलिया होकर सरवाड़में मक़ाम हुआ, इस मक़ामपर कृष्णगढ़का महता सौभाग्यसिंह और रघुनाथपुराका जागीरदार राठौड़ भारतसिंह टीकेका दस्तूर लेकर आये. यहांसे चलकर आकोदड़ा और वहांसे गांव दाधे मक़ाम हुआ, जहां विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० ता० २९ शव्वाल = ई० ता० १६ नोवेम्बर] की फ़ज्रको कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मए कुंवर शार्दूलसिंह, जवानसिंह व वहांके पोलिटिकल एजेण्ट बेली साहिबके पेश्वाईको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात होकर कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मए दोनों पुत्रोंके महाराणा साहिबकी बग्घीमें और पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् हर्बर्ट व जयपुरके पोलिटिकल एजेण्ट दोनों दूसरी बग्घीमें और मेवाड़के सर्दार भी बग्घियोंमें बैठकर कृष्णगढ़ पहुंचे. महाराणा साहिबको डेरोंमें पहुंचाकर महाराजा पृथ्वीसिंह अपने महलोंको सिधारे. शामके वक्त बड़ी धूमधामसे महाराजा पृथ्वीसिंहकी राजकुमारी जवाहिरकुंवर बाईके साथ महाराणा साहिबका विवाह हुआ. इस विवाहमें कृष्णगढ़की तरफ़से महाराणा साहिब और उनकी फ़ौजका आतिथ्य बड़ी मुहब्बतके साथ कियागया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ६ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २२ नोवेम्बर] को एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह मेजर वाल्टर साहिब भी इस जल्सेमें शरीक हुए. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २५ नोवेम्बर] को पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् हर्बर्ट साहिबकी जगह मेजर इम्पी साहिब आये, और हर्बर्ट साहिब रुख़्सत होकर गये. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० ता० ९ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २६ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब कृष्णगढ़से रवानह होकर गगवाणे और वहांसे अजमेर पहुंचे, एक कोसतक अजमेरके कमिश्नर वग़ैरह ८ साहिब पेश्वाईको आये, महाराणा साहिब आनासागर तालाबपर सेठ शमीरमल्लकी कोठीमें ठहरे. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० ता० १२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २९ नोवेम्बर] को पुष्कर स्नान करने गये, और विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ५ डिसेम्बर] को ज़नानी सवारी व बाक़ी फ़ौज उदयपुरको रवानह कीगई, क्योंकि महाराणा साहिबने दिल्लीके क़ैसरी दर्बारमें जाना बड़ी बहसके बाद क़ुबूल करलिया था. विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्क़ाद = ई० ता० १७ डिसेम्बर] को अजमेरसे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर जयपुर पहुंचे, वहांके महाराजा सवाई रामसिंह पेश्वाईको स्टेशनपर मौजूद थे. महाराणा साहिब भी गाड़ीसे उतरकर मिले, तरफ़ैनके सर्दारोंने नज़े दिखलाई, फिर स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर विक्रमी पौष शुक्ल ३ [हि० ता० १

ज़िल्हिज = .ई० ता० १८ डिसेम्बर] की शामको दिल्ली पहुंचे, रेलगाड़ीसे स्टेशन के दर्वाज़ेतक लाल बानातका फ़र्श बिछाया गया, और पेश्वाईको दिल्लीके कमिश्नर कर्नेल् डेविस और पुलिसके असिस्टैंट सुपरिन्टेंडेंट साहिब, अफ्सर मुसाहिब मेजर ऑडर्स फ़ॉरेन् डिपार्टमेएटके अटाची मए फ़ौजी कम्पनी व रिसालेके मौजूद थे. गवर्मेएटकी तरफ़से १९ तोपोंकी सलामी सर हुई. फिर डेरोंमें पहुंचे उसवक़ भी १९ तोपोंकी सलामी सर्कारी तोपखानहसे सर हुई. महाराणा साहिबसे महाराजा जोधपुरकी मुलाक़ात क़रीब १०५ वर्षसे बन्द थी (१), और महाराणा साहिबकी यह ख्वाहिश थी, कि कुल राजपूतानहमें एकता फैलाई जावे, इसलिये मालिकोंकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) और जोधपुरके कविराजा मुरारिदानकी मारिफ़त इस बातकी कोशिश होरही थी, लेकिन् रजवाड़ी दस्तूरोंकी रोकसे मौक़ा न मिला. इसवक़ कविराजा मुरारिदान तो जोधपुरमें रहगया और मैंने खान बहादुर भय्या फ़ैज़ुल्लाहखांको कहा, कि पेश्तर कौन किसके डेरेपर आवे, इस बहसको तय करना चाहिये. उसने महाराजा साहिबसे अर्ज़ की. वे तो साफ़ दिल थे, मन्ज़ूर करलिया कि पेश्तर हम महाराणा साहिबके पास जाकर मुलाक़ात करेंगे. विक्रमी पौष शुक्ल ५ [हि० ता० ४ ज़िल्हिज = .ई० ता० २१ डिसेम्बर] की शामको महाराजा जशवन्तसिंह साहिब मुलाक़ातको आये. महाराणा साहिब डेरोंकी ड्योढ़ीतक पेश्वाई करके उन्हें भीतर लेआये, कुर्सियोंपर दोनों महाराजाधिराज और तरफ़ैनके सर्दार बैठगये, थोड़ी देरतक मुहब्बत आमेज़ बातें होती रहीं. रुख्सत होनेके वक़ महाराणा साहिबने पेश्वाईकी जगहतक महाराजाको पहुंचा दिया. यह सैकड़ों वर्षकी रोक टोकका ख़ातिमह होनेका प्रारम्भ हुआ. दूसरे रोज़ इसीतरह महाराणा साहिब भी जोधपुर महाराजा साहिबके डेरेपर मुलाक़ातको पधारे. शामके वक़ रीवांके महाराजा रघुराजसिंह महाराणा साहिबसे मुलाक़ात करनेको आये, दस्तूरके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात हुई. फिर एकान्त में बात चीत करके वापस गये. विक्रमी पौष शुक्ल ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज = .ई० ता० २३ डिसेम्बर] को लॉर्ड लिटनकी पेश्वाईके लिये महाराणा साहिब और दूसरे राजा लोग स्टेशनपर गये, दिनके दो बजे लॉर्ड साहिब स्पेशल ट्रेनमें आये, महाराणा साहिब और सब राजा लोग उनसे मुलाक़ात करके जुमा मस्जिदतक साथ साथ गये, वहांसे लॉर्ड साहिब अपने डेरोंमें गये, और सब राजा लोग अपने अपने

---

(१) विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = .ई० १८७०] में जोधपुरके महाराजा तख्तसिंह महाराणा शम्भुसिंह साहिबसे अजमेरके मकामपर मिले थे. वह खानगी मुलाक़ात थी, दस्तूरी मुलाक़ात इस वक़्से पहिले नहीं हुई.

डेरोंमें गये. महाराणा साहिब और महाराजा साहिब जोधपुर एक बग्घीमें सवार होकर अपने कैम्पमें तश्रीफ़ लाये. विक्रमी पौष शुक्ल ९ [हि॰ ता॰ ८ ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ २५ डिसेम्बर] को कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह मुलाक़ातके लिये डेरेपर आये; महाराणा साहिबने मामूलके मुवाफ़िक़ मुलाक़ात की. उनके बाद झालरापाटनके महाराजराणा दूसरे ज़ालिमसिंह मुलाक़ातको आये. इसके बाद महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर कृष्णगढ़ महाराजाके डेरेपर मुलाक़ातको पधारे. विक्रमी पौष शुक्ल १० [हि॰ ता॰ ९ ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ २६ डिसेम्बर] को पहर दिन चढ़ेके क़रीब महाराणा साहिब लॉर्ड लिटनके डेरेपर मुलाक़ातको पहुंचे. हाथी, रिसाला और पल्टन वग़ैरह लवाज़िमह तो पहिलेही पहुंचादिया था, महाराणा साहिबके साथ ९ सर्दार, बेदलाका राव बख़्तसिंह, बेगमका रावत् तीसरा मेघसिंह, मेजाका रावत् अमरसिंह, पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह, करजालीका बाबा महाराज सूरतसिंह, सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, पीपलियाका रावत् कृष्णसिंह, ताणाका राज देवीसिंह और बेदलाके रावका पुत्र तख़्तसिंह थे. बग्घीसे उतरनेकी जगहतक फ़ॉरेन् डिपार्टमेण्टके दो सेक्रेटरी और फ़र्शके किनारेतक लॉर्ड लिटन पेश्वाई करके महाराणा साहिबको लेगये. कुर्सियोंपर बैठनेके बाद महाराज राणी विक्टोरियाकी तस्वीरवाला सोनेका चांद और एक निशान लॉर्ड साहिबने महाराणा साहिब को दिया, और दो तोप सलामीकी फिर बढ़ाई गई. इसके बाद जिसतरह पेश्वाई करके लाये उसी तरह पहुंचागये. फिर महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर अपने डेरोंमें आये. विक्रमी पौष शुक्ल ११ [हि॰ ता॰ १० ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ २७ डिसेम्बर] को लॉर्ड लिटन महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको डेरोंपर आये. इस क़ैसरी दर्बारमें लॉर्ड साहिबने मुलाक़ात व बर्तावके नम्बर तोड़ दिये थे, कि जिससे किसीको नागुवार न गुज़रे, इसवास्ते पेश्तर झालावाड़के राजराणा ज़ालिमसिंहकी मुलाक़ात को गये, और उसके बाद महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये. झालावाड़के डेरोंतक बेगमका रावत् मेघसिंह, मेजाका रावत् अमरसिंह, पारसोलीका राव लक्ष्मण-सिंह और करजालीका महाराज सूरतसिंह पेश्वाईको गये. लॉर्ड साहिबके बग्घीसे उतरने के स्थानतक लाल बानातका फ़र्श बिछाया गया, और महाराणा साहिब पेश्वाई करके उन्हें डेरेमें लेआये. दाहिनी तरफ़ कुर्सीपर लॉर्ड लिटन और उनके पास फ़ॉरेन् सेक्रेटरी, और एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह व दस अंग्रेज़ अफ़्सर दूसरे बैठे, और बाईं तरफ़ महाराणा साहिबके पास पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् ई॰ सी॰ इम्पी और फ़र्स्ट असिस्टेण्ट पोलिटिकल एजेण्ट गार्डन और बेदलाका राव बख़्तसिंह, बेगमका रावत् सवाई मेघसिंह, मेजाका रावत् अमरसिंह, पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह, आसींदका

रावत् अर्जुनसिंह, करजालीका महाराज सूरतसिंह, सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह, ताणाका राज देवीसिंह, कैलवाका जागीरदार जोनाड़सिंह, मामा राठौड़ बरूतावरसिंह, मैं (कविराजा श्यामलदास), चहुवान रत्नसिंह, चहुवान अमरसिंह, राणावत् उदयसिंह, राठौड़ पृथ्वीसिंह, चहुवान भैरवसिंह, शक्तावत मेघसिंह, चहुवान लक्ष्मणसिंह, बावलासके बाबा हमीरसिंहका पुत्र भोपालसिंह, सर्दारगढ़के ठाकुरका पुत्र प्रतापसिंह, गोगूंदाके राज मानसिंहका पुत्र अजयसिंह, भींडरके महाराज हमीरसिंहका छोटा पुत्र रत्नसिंह, आढ़ा रामलाल चारण, बारहट चतुर्भुज चारण, धव्वा बदनमल्ल, महता पन्नालाल, सेठ जवाहिरमल्ल और जानी मुकुन्दलाल वगैरह सर्दार अहलकार अपनी अपनी जगह कुर्सियोंपर बैठे. फिर महाराणा साहिब और लॉर्ड साहिबके परस्पर शौक़िया बात चीत होकर महाराणा साहिबने लॉर्ड साहिब व उनके ५ अफ़्सरोंको और बाक़ी साहिबोंको राव बरूतसिंहने इत्र पान देकर रुख़्सत किया, और पेश्वाई की उसी तरह पहुंचादिया. इसीतरह जोधपुर वगैरहके राजाओंसे लॉर्ड साहिबकी मुलाक़ातें हुईं. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ ज़िल्हिज = .ई० ता० २८ डिसेम्बर] को शामके वक़्त कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह डेरोंपर आये, और महाराणा साहिबसे मुलाक़ात करके वापस गये. इसके बाद महाराणा साहिब जोधपुरके डेरोंमें जाकर महाराजा जशवन्तसिंहसे मुलाक़ात कर आये. विक्रमी माघ कृष्ण १ [हि०ता० १४ ज़िल्हिज = .ई० ता० ३१ डिसेम्बर] को शामके वक़्त रीवांके महाराजा रघुराजसिंह महाराणाकी मुलाक़ातको आये, और उनके जानेके बाद कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह आये, थोड़ी देर पीछे जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंह आये; महाराणा साहिब ड्योढ़ीतक पेश्वाई करके उन्हें लेआये. कुछ देर बात चीत करके कृष्णगढ़के महाराजा तो वापस चलेगये, और उनके बाद जयपुरके महाराजा साहिबसे बात चीत होती रही. फिर उदयपुरके उमराव, सर्दार व अहलकारोंने महाराजा साहिबको नज़्रें दीं, और महाराजा रामसिंह अपने डेरोंको गये. विक्रमी माघ कृष्ण २ [हि० ता० १५ ज़िल्हिज = .ई० १८७७ ता० १ जैन्युअरी] को क़ैसरी दर्बारका जल्सह हुआ, जिसका हाल मुफ़स्सल तौरपर किताब तारीख़ क़ैसरीसे नीचे नक़्ल कियाजाता है :-

दर्बार क़ैसरीकी कैफ़ियत, जो दिल्लीमें पहिली जैन्युअरी सन् १८७७ .ई० को हुआ.

ख़िताब मिलनेका इश्तिहार नम्बर ७०, जो हिन्दुस्तानके दफ़्तरख़ानह लन्दनसे १२ जुलाई सन १८७६ .ई० को प्रकाशित हुआ.

जनाब मलिकह मुअज़्ज़महके सेक्रेटरी सल्तनत हिन्दुस्तानकी तरफ़से हिन्दुस्तानके सर्दारोंके नाम.

मैं आपकी गवर्मेंएटकी सूचनाके लिये इस काग़ज़के साथ जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके उस इश्तिहारकी एक नक्ल, जिसमें इस बातका बयान है, कि जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महने ख़िताब "कैसरि हिन्द" इख्तियार फ़र्माया है, भेजता हूं.

जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके इस कामसे यह मुराद है, कि जनाब मौसूफ़ ज़ाबितह और मज़्बूतीके साथ अपनी उन ख़ुशगुमानियोंको ज़ाहिर फ़र्मावें, जो वे हमेशहसे हिन्दुस्तानके रईसों और रिआयाकी निस्बत रखती हैं, और जिनके इज़्हार के लिये उनकी रायमें यह वक़्त निहायत मुनासिब है. मेरी गुज़ारिश यह है, कि आप जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तमाम हिन्दुस्तानी अमलदारीमें इस तरक़ीका इश्तिहार, जो ख़िताब और अल्क़ाब शाहीमें कीगई है, ऐसे ढंगपर करें, जो उनके मिहर्बान और दिली इरादोंके मुवाफ़िक़ हो-फ़क़त्.

दस्तख़त सालिसबरी.

इसी महीनेमें हुज़ूर वाइसरॉय बहादुरकी पेशगाहसे हिन्दुस्तानके तमाम नामी रईसों, फ़रंगिस्तानी बड़े हाकिमों, ख़ुद मुख़्तार व सर्हदी रियासतोंके मालिकों और ग़ैर मुल्कके वज़ीरों, एल्चियों और बड़े दरजहके मुल्की .उह्दहदारों और दर्याई व ख़ुश्की फ़ौजके अफ्सरोंके नाम, जो हिन्दुस्तानसे तअ़ल्लुक़ रखते हैं, इस ग़रज़से ख़रीते, फ़र्मान और ख़त जारी हुए, कि वे पहिली जैन्युअरी सन् १८७७ .ई० को दिल्ली मक़ामपर दर्बार में शरीक हों. इस हुक्मकी तामीलमें २८ नोवेम्बरसे २२ डिसेम्बर सन् १८७६ .ईसवीतक तमाम तलब किये हुए लोग, और दूसरे बग़ैर बुलाये हुए शायक़ीन अपने अपने खेमों वग़ैरहमें दाख़िल होगये, और गवर्मेंएटकी तरफ़से हरएकके रुतबे और दरजेके मुवाफ़िक़ पेश्वाई, तोपोंकी सलामी और मिह्मान्दारी अदा कीगई. २५ डिसेम्बर को हुज़ूर लॉर्ड लिटन साहिब बहादुर वाइसरॉय दिल्लीमें तश्रीफ़ लाये और २६ तारीख़से ३० तक लॉर्ड साहिबने ऊपर बयान किये हुए रईसोंसे ज़ाबितह और बदलेकी मुलाक़ातें कीं. ३० तारीख़की शामको हुज़ूर वाइसरॉय बहादुरने सुनहरी निशान और तमगे़ गवर्नर मदरास और लेफ़्टिनेएट गवर्नरान बंगाला, ममालिक मग़रबी व शिमाली और पंजाब, और गवर्नरान पुर्तगाल व बम्बई और दूसरे .उह्दहदारों और हिन्दुस्तानी रईसोंको उनके दरजहके मुवाफ़िक़ अ़ता फ़र्माये; और हरएक बड़े रईसको हुज़ूर वाइसरॉय बहादुरने मुलाक़ातके वक़्त तमग़ह और एक एक झंडा दिया. इस लकड़ीके रेशमी निशानपर बहुत अच्छा रुपहरी काम बना हुआ था, और लकड़ीके सिरेपर एक एक ताज बनायागया था, और एक छोटी तख़्ती उन झंडोंमें लटकती थी, जिसपर सुनहरी हर्फ़ोंमें हरएक रईसका नाम लिखा हुआ था, और हरएक भण्डेके

फरहरेपर यह भी लिखाहुआ था, कि यह निशान हिन्दुस्तानके शहन्शाहने रईसको दिया है. यह झंडे छप्पन थे, और बाज़े इनमें सुनहरी भी थे.

निशान और तमगे देनेके वक्त वाइसरॉय बहादुरने रईसोंसे फ़र्माया, कि "मैं यह निशान आपको जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी ख़ास बख़्शिशके तौर .इनायत करता हूं और उम्मेद रखता हूं, कि यह शहन्शाही जल्सेकी यादगार रहेगा. जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महको उम्मेद है, कि इस झण्डेको जब आप लोग खोलेंगे, तो आपको याद होजायेगा, कि किसक़द्र इंग्लिस्तानके तख़्त और आपके ख़ानदानसे नज़्दीकी है; और जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महका दिली मन्शा यह है, कि आपका ख़ानदान मज़्बूतीके साथ अपनी रियासतपर हुकूमत किया करे; और मैं यह तमग़ह जनाब कैसरि हिन्दके हुक्मके मुवाफ़िक़ आपको देता हूं, और मुझको उम्मेद है, कि आप उसको एक मुद्दत तक पहिनेंगे, और आपके ख़ानदानमें यह शहन्शाही जल्सेकी यादगारके तौरपर रहेगा."

जब ये कार्रवाइयां ख़त्म होचुकीं, तो ता० १ जैन्युअरी सन् १८७७ ई० को सोमवारके दिन छः बजे सुब्हसे देखनेवाले लोगोंके झुंडके झुंड कैसरी तख़्तगाहकी तरफ़ जाने लगे. दर्बारका मक़ाम और वाइसरॉयका जुलूसी तख़्त, जिसको आम लोग चबूतरा कहते हैं, दिल्लीसे चार मील उत्तर पश्चिम कोणकी तरफ़ एक बहुत बड़े मैदानमें, जो तख़्मीनन् १५ मील मुरब्बा होगा, बहुत ख़ूबीके साथ तय्यार किया गया था. वाइसरॉयके जुलूसी तख़्तका चबूतरा छः पहलू (षट्कोण) २४० फ़ीट घेरेमें और ज़मीनसे दस फ़ीट ऊंचा था. इसका लाल रंग और कारचोबी शामियानह सुनहरे थंभोंपर मए सुनहरे कलसोंके जो ७० फ़ीट ऊंचे होंगे बहुत सफ़ाई और दुरुस्तीके साथ खेंचागया था. इस शामियानहपर कई तरहकी तस्वीरें और ढाल, तलवार, चांद और सूरजके चिन्ह और शाही मुहर (घोड़ा और शेर) और कुछ .इबारत मए फ़िक़्रे "वेल्कम" याने मुबारकबादके सुनहरी हर्फ़ोंमें लिखी हुई थी.

चबूतरेके गिर्द सुनहरी जंगला (कटहरा), जिसमें आबी रंगकी गुलकारी (बेल बूटे) थी, बहुत दुरुस्तीके साथ लगायागया था, और लाल बानातका फ़र्श ज़ीने तक बिछाया गया था, चबूतरेपर सुनहरी कुर्सी वाइसरॉयके लिये बिछाईगई थी, जिसपर यह लिखा हुआ था, "मलिकहकी रौशनी हमारी हिदायतको काफ़ी है." इस चबूतरेके तीन तरफ़ बाजेवाले गोरे और तोपें खड़ी थीं. इस चबूतरेके आगे १०० गज़के फ़ासिलहसे एक दूसरा अर्द्धचन्द्राकार चबूतरा मुल्की रईसोंकी नशिस्तके लिये १६० फ़ीट लम्बा ४० फ़ीट चौड़ाईमें ज़मीनसे ३ फ़ीट ऊंचा बनाया गया था. इसका शामियानह सिफ़ेद साठन रेश्मी झालरका सुनहरे रंगके थंभोंपर तनाहुआ

था, फ़र्श ज़ीनेतक लाल बानातका था, उसपर लकड़ीकी कुर्सियां नीले रंगके रेश्मी कपड़ेसे मंढ़ीहुई थीं, और कलाबत्तूनसे रईसका पूरा नाम लिखा हुआ था, और हर रईसके आगे वह झंडा जो सर्कारसे आता हुआ था खड़ा था. वाइसरॉयकी नशिस्तके पीछे नालकी शक्लके दो चबूतरे अस्सी अस्सी फ़ीट लम्बे और चालीस चालीस फ़ीट चौड़े उन लोगोंकी नशिस्तके लिये बने थे, जो अंग्रेज़ी अफ्सर, अंग्रेज़ी अख्बारोंके एडिटर, दिल्ली के रईस और दूसरे मक़ामोंके तअल्लुक़हदार, हिन्दुस्तानी .उहदहदार और देशी अख्बारोंके मालिक थे. इन चबूतरोंपर जो ख़ेमह था, उसके थंभे लोहेके नीले रंगके थे, और फ़र्श भी कुर्सी और बेंचोंका नीला था. इन चबूतरोंके दर्वाज़ोंपर एक एक हर्फ़ अंग्रेज़ी ए०, बी०, सी०, डी० वग़ैरह मोटे क़लमसे लिखा हुआ था, और वहां एक एक यूरोपिअन अफ्सर खड़ा था, जो हरएकके टिकटका हर्फ़ पहिचानकर उसके दरजहमें बिठा देता था.

मुल्की रईसोंकी बैठकके ज़ीनेके क़रीब एक एक कम्पनी पल्टनकी खड़ी थी, जिसवक्त कोई राजा या नव्वाब तश्रीफ़ लाता था, तो क़ाइदहके मुवाफ़िक़ अंग्रेज़ी अफ्सर पेश्वाई करके उनको नशिस्तगाहतक पहुंचादेते थे, और कम्पनीसे सलामी अदा की-जाती थी. इन चबूतरोंके दोनों बाजुओंपर सर्कारी सवार व पैदल फ़ौज तोपख़ानह समेत, जो क़रीबन् पचास हज़ार होगी, बहुत दुरुस्तीके साथ लाइन बांधे खड़ी थी; एक तरफ़ आम तमाशाई लोग और दूसरी तरफ़ मुल्की रईसोंका जुलूस, याने हाथी, घोड़े और बग्घी वग़ैरह थे. अगर्चि इस तमाम हुजूमकी मर्दुमशुमारी न हुई, मगर तख़्मीनह चार लाखके (१) क़रीब किया गया है. जबकि १२ बजेतक तमाम तय्यारियां होचुकीं, तो सवा बारह बजेके क़रीब जनाब वाइसरॉय बहादुरकी सवारी बड़ी शान व शौकतके साथ मए स्टाफ़ अफ्सरों, याने मुसाहिब हमराहियोंके (और बड़े दरजहके साहिब लोग भी, जो क़रीब ४०–५० के होंगे पीछेसे आये) दाख़िल हुई. वाइसरॉय बहादुर बग्घीसे उतरकर दक्षिणी दर्वाज़ेकी तरफ़से तश्रीफ़ लाये, और लाल बानाती फ़र्शपरसे, जो दर्वाज़ेसे तख़्ततक बिछा हुआ था, गुज़रकर इज्लासके मक़ामपर पहुंचे. दाख़िल होतेही बाजे वालोंने सलामीकी गत बजाई और तमाम रईसोंने अपनी नशिस्तगाहसे सीधे खड़े होकर ताज़ीमसे सलाम अदा किया. वाइस-रॉयने सबके सलामका जवाब दोनों हाथोंसे देकर टोपीको हरकत दी, और बैठनेके वास्ते हुक्म दिया. सब रईसोंके बैठजाने बाद खुद वाइसरॉय भी अपने मक़ामपर

(१) दिल्ली दर्बार दर्पणमें दो लाखके क़रीब लिखा है.

बैठगये. इसके बाद चीफ़ सेक्रेटरी (हेरल्ड) साहिबने हुक्म लेकर सलाम अदा करने के बाद चार पांच सीढ़ियें उतरकर बुलन्द आवाज़से अंग्रेज़ी ज़बानमें ख़िताब लेनेका इश्तिहार पढ़ा, फिर उसका उर्दू तर्जमह सुनाया, जो नीचे लिखा जाता हैः-

बाब १० ऐक्ट पार्लिएमेण्ट, मज्रियह सन् ३९ जुलूस
मलिकह मुअ़ज़्ज़मह विक्टोरिया.

ऐक्ट इस बातके मत्लबसे है, कि जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़मह उन शाही ख़िताबों और अल्क़ाबोंमें जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीके मुतअ़ल्लिक़ है, एक और ख़िताब ज़ियादह करसकें, २७ एप्रिल सन् १८७६ .ई०.

इस सबबसे, कि उस ऐक्टके बाब ६७ के रूसे, जो वास्ते एकट्ठा करने तमाम सल्तनत इंग्लिस्तानके बादशाह तीसरे ज्यॉर्ज गुज़रे हुए के सन् ४० जुलूसमें जारी हुआ था, कि देशी मिलाप होने के बाद, जो ऊपर बयान हुआ, ख़िताब और अल्क़ाब शाही जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीके मुतअ़ल्लिक़ हैं वेही हुआ करेंगे, जो बादशाह अपने शाही इश्तिहारके ज़रीएसे, जिसपर एकट्ठी सल्तनतकी बड़ी मुहर हो, मुक़र्रर फ़र्मावें; और इस सबबसे, कि ज़िक्र किये हुए ऐक्ट और शाही मुहरी इश्तिहार, तारीख़ १ जैन्युअरी १८०१ .ई० के रूसे जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके ख़िताब और अल्क़ाब इस वक़्त ये हैं- " विक्टोरिया ख़ुदाके फ़ज़्लसे इंग्लिस्तानकी एकट्ठी बड़ी सल्तनत और आइर्लैण्डकी मलिकह और ईसाई धर्म रक्षक. "

बाब ६७, ऐक्ट पार्लिएमेण्ट, जो बादशाह तीसरे ज्यॉर्ज के सन् जुलूस ३९ व ४०, .ई० १८०० में जारी हुआ.

और इस सबबसे कि उस ऐक्टके बाब १६० के रूसे, जो वास्ते .उम्दह इन्तिज़ाम हिन्दुस्तानके सन् २१ व २२ जुलूस जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महमें इज्लास पार्लिएमेण्टसे जारी हुआ, यह हुक्म हुआ था, कि सर्कार हिन्दुस्तान, जो इसवक़्त तक जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तरफ़से सर्कार ईस्ट इंडिया कम्पनी बहादुरकी हुकूमतमें बतौर अमानतके थी, जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके सुपुर्द हो; और यह कि इसवक़्तसे मुल्क हिन्दुस्तानपर जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़मह हुक्मरानी फ़र्मावें और उनके नाम नामीसे उसपर हुकूमत कीजावे; और मस्लिहत यह है, कि यह हुकूमतकी तब्दील व सुपुर्दगी, जो ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ कीगई, उसकी क़ुबूलियत इस ज़रीएसे ज़ाहिर हो, कि जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महके ख़िताब और अल्क़ाबमें एक

बाब, १६० ऐक्ट पार्लिएमेण्ट, जो सन् २१ व २२ जुलूस मलिकह मुअ़ज़्ज़मह विक्टोरियामें जारी हुआ.

और लक़ब बढ़ाया जावे, इसलिये बमूजिब मिह्बीन फ़र्मान जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह्के और मुवाफ़िक़ सलाह व मर्ज़ी मज़्हबी और मुल्की सर्दारों और आम जमाअतके जो इस मौजूदह पार्लिएमेण्टमें जमा हैं, और इस पार्लिएमेण्टकी इजाज़तसे नीचे लिखा हुआ हुक्म फ़र्माया गया, कि जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह्को जाइज़ होगा, कि सर्कार हिन्दुस्तानकी ऊपर बयान कीहुई तब्दीली और सुपुर्दगीकी क़बूलियत व पसन्दीदगीकी नज़रसे उस ख़िताब और अल्क़ाबमें, जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे मुतअ़ल्लिक़ है, शाही मुहरी इश्तिहारके ज़रीएसे ऐसा लक़ब बढ़ावें, जो जनाब मौसूफ़को मुनासिब मालूम हो।

जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह्का इख़्तियार अपनी बादशाहीके ख़िताब और अल्क़ाबमें इज़ाफ़ह करनेके बाबमें.

जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह्के हुज़ूरसे जारी हुआ - फ़क़त्.

इश्तिहार,

(मलिकह मुअ़ज़्ज़मह विक्टोरिया).

जोकि पार्लिएमेण्टके हालके इज्लाससे एक ऐक्ट इस नामका, "ऐक्ट इस मुरादसे कि जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह उस शाही ख़िताब व अल्क़ाबमें, जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे मुतअ़ल्लिक़ हैं, एक और लक़ब ज़ियादह करसकें" जारी हुआ है; और उस ऐक्टमें लिखा है, कि बड़ी इंग्लिस्तानी और आइर्लैंण्डको सल्तनतको एकट्ठा करनेके ऐक्टके रूसे यह हुक्म हुआ था, कि बाद एकट्ठी होने ऐसी मुल्की सल्तनतके एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीके मुतअ़ल्लिक़ ख़िताब और अल्क़ाब वही हुआ करेंगे, जो बादशाह अपने शाही इश्तिहारके ज़रीए से, जिसपर एकट्ठी सल्तनतकी बड़ी मुहर हो, मुक़र्रर फ़र्मावें; और उस ऐक्टमें यह भी लिखा है, कि ऐक्ट मज़्कूर और बड़ी मुहरके शाही इश्तिहारके मन्शाके मुवाफ़िक़, जो तारीख़ पहिली जैन्युअरी सन् १८०१ ई० को जारी हुआ है, हमारे हालके ख़िताब और अल्क़ाब यह हैं,- "विक्टोरिया ख़ुदाकी मिह्बानीसे एकट्ठी बड़ी सल्तनत इंग्लिस्तान और आइर्लैंण्डकी मलिकह और ईसाई धर्म रक्षक," और उस ऐक्टमें यह भी लिखा है, कि ऐक्ट बाबत उम्दह इन्तिज़ाम सर्कार हिन्दुस्तानके यह हुक्म जारी हुआ है, कि सल्तनत हिन्द, जो उसवक़्ततक हमारी तरफ़से सर्कार ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहादुरकी सुपुर्दगीमें अमानतके तौरपर थी, हमारे तअ़ल्लुक़में आजाये, और यह कि अब आगेको हिन्दुस्तानपर हमारी हुकूमत हो, और हमारे नामसे उसपर हुकूमत कीजाये; और मस्लिहत यह है, कि हुकूमतकी तब्दीली और सुपुर्दगी जो ऊपर बयान किये मुवा-

फ़िक् कीगई, उसकी कुबूलियत इस तौरपर ज़ाहिर कीजाये, कि हमारे ख़िताब और अल्क़ाब में एक और लक़्ब बढ़ाया जाये; और उस ऐक्टमें इन बयानोंके बाद यह हुक्म हुआ है, कि हमको जाइज़ होगा, कि गवर्मेंट हिन्दकी तब्दीली और सुपुर्दगीकी ऊपर बयान कीहुई कुबूलियतकी नज़रसे उस ख़िताब और अल्क़ाबमें, जो एकट्ठी सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे इसवक़् मुतअ़ल्लक़ हैं, हमारे जारी किये हुए इश्तिहारके ज़रीएसे जिसपर एकट्ठी सल्तनतकी बड़ी मुहर है, ऐसा लक़्ब बढ़ावें, जो हमको मुनासिब मालूम हो. इसवास्ते हमने प्रिवी कौन्सिलके वज़ीरोंकी सलाहसे यह मुनासिब समझा, कि यह मुक़र्रर और ज़ाहिर करदें (और उस सलाहसे और उस सलाहके मूजिब इस इश्तिहारके रूसे, यह मुक़र्रर और ज़ाहिर कियाजाता है), कि अबसे जहांतक आसानीके साथ तमाम मौक़ों और तमाम दस्तावेज़ोंमें जिनमें हमारे ख़िताब और अल्क़ाब काममें लायेजावें, सिवा चार्टर (मुल्की अ़हदनामों), कमिशन (उहदोंके फ़र्मान), और लेटर्ज़ पेटेंट (आम ख़त किताबत), ग्रांट (मुआफ़ी व बख़्शिश), और रेट (पर्वानेजात), अपॉइंटमेंट (तक़र्रुरी) और इसी तरहकी तमाम दूसरी दस्तावेज़ों वग़ैरहके जो इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनत इंग्लिस्तानके बाहिर असर न रखती हों, उस ख़िताब और अल्क़ाबमें जो इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनत और उसके ताबे मुल्कोंकी बादशाहीसे इसवक़्त मुतअ़ल्लक़ हैं, ज़बान लाटिनमें ये शब्द "इण्डिए एम्प्राट्रेक्स" और अंग्रेज़ी ज़बानमें ये शब्द "एम्प्रेस ऑफ़ इण्डिया" (क़ैसरि हिन्द) बढ़ाये जायें.

सिवा इसके हमारी मर्ज़ी और ख़ुशी यह है, कि कमिशन, चार्टर, लेटर्ज़ पेटेंट, ग्रांट, रेट, अपॉइंटमेंट, और इसीतरहकी दूसरी दस्तावेज़ोंमें, जो ऊपर ख़ुसूसियतके साथ अ़लह्दह कीगई हैं, वह न बढ़ाया जावे; और इसके सिवा हमारी मर्ज़ी और ख़ुशी यह है, कि तमाम सोने और चांदी और तांबेके नक्द सिक्के, जो इसवक़्त जाइज़ व राइज हैं, और तमाम सोने और चांदी और तांबेके नक्द सिक्के जो आज या आज पीछे हमारे हुक्मसे उसी तरहकी .इबारतसे मस्कूक हों (ढाले जावें), बग़ैर लिहाज़ उस तरक़्क़ीके, जो हमारे ख़िताब और अल्क़ाबमें कीगई है, ऊपर बयान कीहुई एकट्ठो सल्तनतके राइज और जाइज़ सिक्के समझे जावें; और सिवा इसके यह, कि तमाम सिक्के जो इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनतके ताबे मुल्कोंमेंसे किसीके लिये और किसीमें ढले और जारी हुए हैं, और हमारे इश्तिहारके रूसे उन ताबे मुल्कोंके राइज और जाइज़ सिक्के क़रार दियेगये हैं, और उनपर हमारे ख़िताब या अल्क़ाब या उनमेंसे कोई हिस्सह दर्ज हो, और तमाम नक्दी सिक्के जो बयान किये हुए इश्तिहारके मुताबिक़ पीछेसे तय्यार और जारी हों बग़ैर लिहाज़ वैसे इज़ाफ़ेके उन ताबे मुल्कोंके जाइज़ और राइज सिक्के रहें, जबतक कि हमारी और कोई मर्ज़ी उसकी निस्बत ज़ाहिर न कीजावे.

हमारे महकमह मक़ाम विन्डसरसे सन् १८७६ ई० ता० २८ एप्रिलको हमारे जुलूसके ३९ वें सालमें जारी हुआ.

बुजुर्ग खुदा जनाब मलिकह मुअ़ज़्ज़महको सलामत रक्खे.

इसके बाद जनाब वाइसरॉय बहादुरने खड़े होकर एक .उम्दह तक्रीर अंग्रेज़ी ज़बानमें पढ़ी और पीछे उसका तर्जमह साहिब सेक्रेटरी बहादुरने बड़ी सफ़ाईके साथ हिन्दुस्तानी ज़बानमें खड़े होकर सुनाया, जिसकी नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:-

जनाब नव्वाब लॉर्ड लिटन साहिब वाइसरॉय बहादुरकी तक्रीरका तर्जमह.

सन् १८५८ ई० के नोवेम्बर महीनेकी पहिली तारीख़को एक इश्तिहार हज़्रत मलिकह मुअ़ज़्ज़मह इंग्लिस्तानके हुज़ूरसे जारी हुआ था, जिसमें हिन्दुस्तानके रईसों और रिआ़याकी निस्बत जनाब मौसूफ़की तरफ़से ऐसे शाही मिहर्बानी और बुजुर्गीके इक़ार दर्ज थे, कि उस तारीख़से आजतक तमाम लोग उनको अपने हक़में अमूल्य सनद समझते हैं.

उसवक़ जो सब इक़ार हज़्रत मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तरफ़से हुए थे, कि जिन के वादेमें कभी फ़र्क़ नहीं आया, अब हमारी ज़बानसे उनका मज्बूत करना कुछ हाजत नहीं रखता; इन अठारह वर्षकी दिन बदिन बढ़ने वाली सर्सब्ज़ी खुद उनका एक पुख़्तह सुबूत और यह बड़ा जल्सह उनके पूरा होनेकी ज़ाहिर दलील है.

इस सल्तनतके रईस और रिआ़या, जो अपनी अपनी पुश्तैनी इज़्ज़तोंपर बे-ख़लल बर्क़रार और अपनी वाजिबी मस्लिहतोंकी पैरवीमें महफ़ूज़ रहे हैं, उनके लिये अगले ज़मानहकी यह सख़ावत और इन्साफ़ आगेके वास्ते पूरी ज़मानत होगई है. हज़्रत मलिकह मुअ़ज़्ज़महने, जो ख़िताब "कैसरि हिन्द" इख़्तियार फ़र्माया है, उसके ज़ाहिर करनेके लिये आज हम लोग जमा हुए हैं, और मुझको इस मुल्कमें उन जनाबके क़ाइममक़ाम होनेकी हैसियतसे लाज़िम है, कि उन हज़्रतकी दिली .इनायतें जिनके सबब यह लक़ब मौरूसी ख़िताबोंपर उन्होंने ज़ियादह फ़र्माया है, बयान करूं.

वह जनाब अपने तमाम मुल्कोंमेंसे जो इस दुन्याके सातवें हिस्सहमें शामिल हैं, और जिनमें तीस करोड़ बाशिन्दे आबाद हैं, किसी मुल्कपर इस बड़ी और नामी सल्तनतसे ज़ियादह तवज्जुह नहीं फ़र्माती हैं.

यों तो हर वक़ और हर जगह लाइक़ और कारगुज़ार नौकर इंग्लिस्तानके

बादशाहोंकी सर्कारमें होते रहे हैं, लेकिन् जिनकी दानाई और दिलेरीसे मुल्क हिन्दकी सल्तनत इंग्लिस्तानको हासिल हुई, और क़ाइम रक्खी गई, उनसे ज़ियादह नामवर कभी नहीं हुए. इस बड़े मुआमलहमें जिसमें उन जनाबकी कुल अंग्रेज़ी और देशी रिआयाने अच्छी तरहसे इत्तिफ़ाक़ रक्खा है, इस प्रान्तके बड़े बड़े रईस, जिनके साथ मलिकह मुअज़्ज़महका मेल मिलाप है, या जो उनकी सल्तनतके ताबे हैं, वे भी खैरस्वाहीके तरीक़ेसे मददगार हुए हैं; उनकी फ़ौज लड़ाईकी सख्तियों और फ़त्हकी खुशियोंमें उन जनाबकी फ़ौजोंके साथ शरीक रही है, और उनकी वफ़ादारी और दानाई उन जनाबके मुल्की अम्न व आमानके फ़ायदोंको क़ाइम रखने और उसके आम तौरपर जारी करनेमें सर्कार इंग्लिशियहकी मददगार हुई, और आज उन जनाबके खिताब क़ैसरी इख़्तियार फ़र्मानेके मुबारक दिनपर उनका हाज़िर होना इस बातकी दलील है, कि वे उन जनाबकी फ़ैज़ पहुंचाने वाली हुकूमतपर पूरा भरोसा रखते हैं, और इस सल्तनतकी मज्बूतीमें उनका फ़ायदह है.

वह जनाब इस सल्तनतको, जो उनके बुज़ुर्गोंसे हासिल और उनकी बुज़ुर्ग ज़ातसे मज्बूत तौरपर क़ाइम हुई है, बड़ी जागीर समझती हैं, और इस क़ाबिल जानती हैं, कि यह हमेशह बर्क़रार रहे और ज्योंकी त्यों उनकी औलादको पहुंचे, और उसको अपने ज़बर्दस्त क़बज़हमें रखनेसे अपने ऊपर यह फ़र्ज़ जानती हैं, कि इस मुल्कमें इसतरह हुकूमत करें, कि यहांकी रिआयाकी बिहतरी और मातहत रईसोंके हुकूकका बड़े इह्तियातसे लिहाज़ और खयाल रहे, इस वास्ते उन जनाबका यह एक बादशाही इरादह है, कि अपने अल्क़ाबपर एक और लक़ब बढ़ावें, जो आगेको हिन्दुस्तानके सब रईसों और रिआयाके वास्ते हमेशह इस बातका निशान रहे, कि दोनों तरफ़के फ़ायदोंके खयालसे इस सल्तनतकी खैरस्वाही उनपर वाजिब है.

वह खानदानोंका सिल्सिलह, जिनकी हिन्दुस्तानी हुकूमतको तब्दील करके तरक़्क़ीके लिये बुज़ुर्ग खुदाने अंग्रेज़ी सल्तनतकी कुव्वतको इस मुल्कमें क़ाइम किया, ज़बर्दस्त और नेक बादशाहोंसे खाली न था; लेकिन् उनके पिछले क़ाइम मक़ामोंके मुल्की इन्तिज़ामोंसे उनके .इलाक़ोंमें अम्न व आमान क़ाइम न रहसका, और लगातार झगड़ा लगा रहनेसे हमेशह खलल आता गया, ज़ईफ़ और कमज़ोर लोग ज़बर्दस्तोंके क़ैदी बने और ज़बर्दस्त अपनी नाक़िस ख्वाहिशोंके ताबे होते गये. इसी तरह बहुतसी खूंरेज़ी और अन्दुरूनी दुश्मनीकी हल चलसे आलीशान खानदान तीमूरिया खराब होकर आखरको तबाह होगया, क्योंकि उनसे पूर्वी मुल्कोंकी कुछ तरक़्क़ी न होसकी.

इन दिनों हज़्रत मलिकह मुअज़्ज़महकी क़ानूनी हिमायतसे किसी मज़्हब और

फ़िर्केमें फ़र्क़ नहीं है, उन जनाबकी हरएक रऋय्यत अम्न व आमानके साथ गुज़रान करसक्ती है. हर शरूसको इस सर्कारकी बेतअस्सुबीके सबब इजाज़त है, कि बग़ैर किसी रोकटोकके अपनी अपनी मज़्हबी आज्ञाओं और रस्मोंको अदा करे. बादशाही अधिकारका ज़बर्दस्त हाथ जो बढ़ाया जाता है, वह किसीके बर्बाद करने और दबानेके लिये नहीं है, बल्कि हिमायत और हिदायतके लिये है; और कुल मुल्ककी तरक़्क़ी और सूबोंकी दिनोदिन बढ़ने वाली सर्सब्ज़ीसे सर्कार अंग्रेज़ीके नेक इन्तिज़ामका नतीजह हर जगह साफ़ ज़ाहिर है.

ऐ ब्रिटिश प्रबन्धकर्त्ता और वफ़ादार उह्दहदारो!

यह .उम्दह नतीजे अक्सर आपही लोगोंकी सिल्सिलहवार कोशिशोंसे हासिल हुए हैं, इस सबबसे मैं सबसे पहिले आपही लोगोंपर उन जनाबकी तरफ़से ख़ुशी और एतिबार ज़ाहिर करता हूं, कि आप लोगोंने अपने तमाम .इज़्ज़तदार अगले .उह्-दहदारोंके मुवाफ़िक़ इस बड़ी सल्तनतके फ़ायदहके लिये मिह्नतें उठाई हैं, और इस मुआमलहमें आप लोग मज़्बूत हिम्मत, नेक इरादह और .उम्दह तन्दिहीको, जिसका उदाहरण तवारीख़में नज़र नहीं आता, बराबर काममें लाये हैं. नामवरीके दर्वाज़े हर शरूसके लिये खुले हुए नहीं हैं, लेकिन् नेक कार्रवाईका मौक़ा उसके तलाश करने वालेको हमेशह मिलसक्ता है. ऐसा इत्तिफ़ाक़ कम होता है, कि कोई सर्कार अपने नौकरोंके दरजहकी तरक़्क़ी जल्द जल्द करसके, लेकिन् मुझको यक़ीन है, कि अंग्रेज़ी सर्कारकी नौकरीमें सर्कारी ख़िद्मतें और ज़ाती मिह्नतें ख़िताबी .इज़्ज़तों और ज़ाती फ़ायदोंकी उम्मेदसे बढ़कर हमेशह उत्तेजित करती रहेंगी. हिन्दुस्तानके मुल्की इन्तिज़ाममें हमेशह यह बात रही है और रहेगी, कि बड़े बड़े नतीजों वाले फ़ायदह-मन्द काम अक्सर बड़े दरजहके .उह्दहदारोंके हिस्सेमें नहीं आयेंगे, बल्कि ज़िलेके उन अफ़्सरोंसे मुतअ़ल्लिक़ रहेंगे, कि जिनकी होश्यारी और हिम्मतपर कुल इन्तिज़ामका अच्छा होना मुन्हसर है.

उन जनाबके मुल्की और फ़ौजी नौकर जिस ख़ूबीके साथ तमाम हिन्दुस्तानमें ऐसी नाज़ुक और मुश्किल ख़िद्मतें बजा लाये और बजालाते हैं, जो बादशाह अपनी सबसे ज़ियादह और मोतबर रिआयाको सौंपे, उनकी निस्बत मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी तारीफ़ और शाबाश बयान करनेमें मुझे बढ़ावेकी गुंजाइश नहीं है.

ऐ क़लम और तलवारके मालिक नौकरो!

जोकि तुम जवानीके शुरूमें बड़ी जवाबदिहीके .उह्दोंपर मुक़र्रर होते हो, और

खुशी खुशी तन्दिहीके साथ कठिन नियमोंकी पाबन्दी करते हो, और अपनी ज़ातसे राज्य प्रबन्धके बड़े बड़े मुश्किल कामोंको बजा लाते हो, और वह भी ऐसे लोगों में रहकर जिनकी बोली, मज़्हब, और रीति रस्म तुम लोगोंसे अलग हैं. इसलिये दुआ करता हूं, कि हमेशह मुश्किल कामोंको बड़ी मज्बूती और नर्मीके साथ अंजाम देते वक्त यह ख़याल तुम्हारा रहनुमा हो, कि जिस तरह हम अपनी क़ौमकी नेकनामी क़ाइम रखते और अपने मज़्हबके नर्म हुक्मोंकी तामील करते हैं, उसी तरह कुल दूसरी क़ौमों और मज़्हबोंके लोगोंको भी, जो इस मुल्कमें बस्ते हैं, .उम्दह इन्तिज़ामके बेश क़ीमती फ़ायदे पहुंचाते रहें.

लेकिन् हिन्दुस्तानमें पश्चिमी शाइस्तगीके दानाईके क़ाइदोंका बर्ताव होनेसे आमदनीके वसीलोंको जो दिनोदिन तरक़्क़ी होती रही है, इस बातमें यह मुल्क सिर्फ़ सर्कारी नौकरोंका ही इह्सानमन्द नहीं है, बल्कि मलिकह मुअ़ज़्ज़महकी रिआ़यामेंसे उन अंग्रेज़ लोगोंका भी शुक्रगुज़ार है, जो बगैर सर्कारी नौकरीके हिन्दुस्तानमें बस्ते हैं. इन लोगों को इंग्लिस्तानके तख़्त और ख़ास मलिकह मुअ़ज़्ज़महसे जो दिली मुहब्बत है, और जो फ़ायदे उन्होंने अपनी मिहनत, अपने हौसले, और आ़म लोगोंके फ़ायदहके कामोंमें बड़ी तन्दिही और व्यवहारिक सभ्य बर्ताओंसे हिन्दुस्तानकी सल्तनतको पहुंचाये हैं उनसे वह जनाब अच्छीतरह वाक़िफ़ हैं और उनकी क़द्र करती हैं. अगर मैं आज ऐसे मौक़ेपर इस बातका इक़ार करके उनका इत्मीनान करूं, तो उन जनाबके शाहानह इरादहके ज़ाहिर करनेमें क़ुसूरवार हूं.

जोकि उन जनाबकी यह ख़्वाहिश है, कि उनकी रिआ़यामेंसे उन लोगोंकी .इज़्ज़त और मर्तबह बढ़ानेके लिये, जिन्होंने उनकी सल्तनतके इस बड़े हिस्सहमें मुल्की नौकरी और ज़ाती नेकियां ज़ाहिर की हैं, मौक़ा हासिल हो. इसलिये वह जनाब दिली खुशीके साथ सिर्फ़ दरजह सितारए हिन्द और तबके ब्रिटिश इंडियाको कुछ बढ़ाना ही नहीं चाहतीं, बल्कि एक नया तमग़ह " इंडियन एम्पाइर " नामी मुक़र्रर फ़र्माती हैं.

ऐ हिन्दुस्तानके फ़ौजोंके अंग्रेज़ी और देशी
अफ़्सर और सिपाहियो!

तुम लोगोंने मलिकह मुअ़ज़्ज़महके फ़ौजी गौरवको क़ाइम रखनेके लिये जो जो बहादुरियां हर मौक़ेपर, जबकि तुम साथ साथ लड़ाईके मैदानमें गये हो, दिखाई हैं, उनको वह जनाब खुशी और अभिमानके साथ याद रखती हैं; और जोकि उन जनाबको यक़ीन है, कि आगेको भी आप हमेशह उसी वफ़ादारीके साथ इस मुश्किल कामकी तामीलमें मुत्तफ़िक़

होकर कारगुज़ार होंगे. इसलिये आपहीको यह भारी ख़िद्मत सौंपी जाती है, जिससे आप उन जनाबके हिन्दुस्तानी .इलाक़ोंमें अम्न व आमान और सर्सब्ज़ी क़ाइम रक्खें.

ऐ वालंटिअर सिपाहियो !

आप लोगोंकी कोशिशें, जो ख़ैरख़्वाही और काम्याबीके साथ इस बारेमें ज़ाहिर हुई हैं, कि अगर ज़ुरूरत पड़े, तो सर्कारी फ़ौजके साथ शरीक होकर काम दें, इस क़ाबिल हैं, कि आजके दिन उनकी दिली तारीफ़ कीजावे.

ऐ इस सल्तनतके मातहत रईसो और अमीरो !

आपकी ख़ैरख़्वाही सल्तनतकी मज़्बूतीकी ज़ामिन और आपकी ख़ुशहाली सल्तनत की बुज़ुर्गीकी दलील है. जनाब मलिकह मुअज़्ज़मह्को भरोसा है, कि अगर कभी कोई हमलह और धमकी इस सल्तनतके कामोंपर हो, तो आप लोग उसकी हिफ़ाज़तके वास्ते मुस्तइद होजायेंगे, वह जनाब इस मुस्तइदीपर धन्यवाद देती है. मैं हज़त मलिकह मुअज़्ज़मह्की तरफ़से आप लोगोंको इस मक़ाम दिल्लीके आनेपर शाबाश कहता हूं, और आप लोगोंके इस बड़े जल्सेमें शामिल होनेको सल्तनत इंग्लिस्तानकी निस्बत साफ़ दलील आप लोगोंकी ख़ैरख़्वाही और वफ़ादारी की जानता हूं, जो जनाब शाह-ज़ादह साहिब वेल्सके इस मुल्कमें तश्रीफ़ लानेके वक्त बड़े शौक़से ज़ाहिर हुई थी.

वह जनाब अपने फ़ायदोंको आपकाही फ़ायदह ख़याल फ़र्माती हैं, और वास्ते मज़्बूत करने रस्मों एकता और उन तअ़ल्लुक़ातके, जो नेक इत्तिफ़ाक़से सल्तनत इंग्लिस्तान और उसके मातहत अह्दनामह रखने वालोंके दर्मियान मौजूद हैं, उन जनाबने दिली ख़ुशीके साथ क़ैसरी ख़िताब इख़्तियार फ़र्माया है, जिसका आज मैं इश्तिहार देता हूं.

ऐ हज़त क़ैसरि हिन्दकी देशी रिआया !

इस सल्तनतकी मौजूदह हालत और उसकी हमेशहकी दुरुस्ती इस बातको चाहती है, कि इसका बन्दोबस्त और इन्तिज़ाम ऐसे बड़े दरजहके अंग्रेज़ी हाकिमों और इन्तिज़ाम करनेवालोंके सुपुर्द हो, जोकि इस तद्बीरके क़ाइदोंसे वाक़िफ़ हैं और जिनके मुताबिक़ कार्रवाई कियाजाना हुकूमत क़ैसरीके सिल्सिलेके लिये लाज़िम है.

मुल्की बिह्तरीके कामोंमें हिन्दुस्तानकी लगातार तरक़्क़ी होना, जो उसकी मुल्की इज़्ज़तको लाज़िम और दिनोदिन बढ़नेवाली ताक़तका सबब है, अक्सर इन्हीं होश्यार लोगोंकी .उम्दह तद्बीरोंका नतीजह है, और ज़ुरूर है, कि अभी मुद्दत

दराज़तक पश्चिमी .इल्म, हुनर और बर्ताव, जो सुलह और लड़ाईके मौक़ोंपर यूरोपीय देशोंकी मौजूदह बड़ाईका सबब हैं, पूर्वी मुल्कोंमें आम फ़ायदहके वास्ते बदस्तूर इन्हींके ज़रीएसे जारी रहें. यह ज़रूर है, कि आप सब साहिब लोग जो हिन्दुस्तानके रहनेवाले हैं, चाहे आपकी क़ौम और मज़्हब कुछ ही क्यों न हो, इस मुल्कके इन्तिज़ाममें अंग्रेज़ी रिआयाके साथ अपनी अपनी लियाक़तके मुवाफ़िक़ शरीक होनेका बहुत कुछ हक़ रखते हैं. इस हक़की बुनयाद ऐन इन्साफ़पर है, और इसको इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तानके बड़े बड़े मुन्तज़िमोंने बार बार कुबूल किया है, और यही शाही पार्लिएमेण्टके ज़ाबितोंसे भी साबित है, और सर्कार हिन्दुस्तान भी उसको अपने ऊपर वाजिब और अपनी मुल्की तद्बीरोंके मुवाफ़िक़ समझती है; इसलिये सर्कार हिन्दुस्तान खुशीके साथ देखती है, कि चन्द गुज़श्तह वर्षोंमें हिन्दुस्तानी मुल्की मुलाज़िमों और ख़ासकर उन लोगोंके तरीक़े कारगुज़ारी व चालचलनमें बहुत कुछ तरक़्क़ी हुई है, जो बड़े .उह्दोंपर मुक़र्रर हैं.

इस बड़ी सल्तनतका इन्तिज़ाम इस बातको चाहता है, कि जो लोग उसमें शरीक हैं, उनमेंसे बहुतसे आदमी सिर्फ़ .इल्मी लियाक़त रखने वाले ही न हों, बल्कि उनकी आदतें और चालचलन नेक हों. इसलिये जो लोग ख़ासकर ख़ानदान, मर्तबह और मौरूसी .इज़्ज़तके सबब आप लोगोंमें ज़ाती तौरपर बड़े हैं, उनपर वाजिब है, कि अपनी ज़ात और अपनी औलादको इस बड़ी ख़िद्मतके लिये, जिसका रास्तह उनके वास्ते खुला है लाइक़ बनावें; और यह बात सिर्फ़ उस तालीमके कुबूल करनेसे हासिल होसक्ती है, जिससे आदमी उन क़ाइदोंको समझने और बर्तनेके क़ाबिल हो, जिनको मलिकह क़ैसरि हिन्दकी गवर्मेण्टने कभी हाथसे नहीं जाने दिया.

आप सब लोगोंको वाजिब है, कि मुल्कदारीके कामोंमें अपने वास्ते वफ़ादारी बेग़रज़ी, इन्साफ़, सच्चाई और मज़्बूतीको, जो मुल्की बर्तावकी हद है, हमेशह दिलमें क़ाइम रक्खें. इस सूरतमें उन जनाबकी गवर्मेण्ट मुल्की बन्दोबस्तमें आप लोगोंकी मदद करना और उसमें शामिल रहना बड़ी खुशीके साथ मन्ज़ूर करेगी. क्योंकि यह सर्कार दुन्याके हरएक हिस्सेमें जहां जहां उसकी हुकूमत है, अपनी फ़ौजी ताक़तपर इतना भरोसा नहीं करती, जितनाकि अपनी ऐसी रज़ामन्द रअय्यतपर रखती है, जो एकता और दिली ख़ैरख़्वाहीसे उसका हुक्म मानती और तख़्तकी हिफ़ाज़तमें तन्दिही ज़ाहिर करती है, क्योंकि वह जानती है, कि हमेशह क़ाइम रहनेवाली बिह्तरी और आराम इसीकी सलामतीपर निर्भर है.

वह जनाब कमज़ोर रियासतोंको फ़त्ह करलेने या आस पासके .इलाक़ोंको

छीनकर मिलालेनेमें अपनी हिन्दुस्तानी सल्तनतकी तरक़ी नहीं समझती हैं, बल्कि इस बातमें कि, उनकी हिन्दुस्तानी रिआया इस नर्म और मुन्सिफ़ानह हुकूमतमें शरीक होकर रफ़्तह रफ़्तह और लियाक़तके साथ उन बर्तावोंको काममें लावे, जिसमें किसीतरहकी रोक टोक न हो. लेकिन् उन जनाबकी ग़रज़ और उनके फ़र्ज़ सिर्फ़ वही नहीं हैं, जो उनकी हुकूमतसे तअ़ल्लुक़ रखते हैं. वह जनाब साफ़ निय्यतके साथ यह भी ख़्वाहिश रखती हैं, कि उन मुल्कोंके रईसोंसे भी, जो इस सल्तनतकी सर्हदपर हैं, और उसकी हिमायतके सायेमें मुद्दतोंसे ख़ुदमुख़्तार रहे हैं, पूरी मुहब्बत और दोस्तीको मज़्बूत रक्खें; हां अगर कभी इस सल्तनतके अम्न व आमानको किसी बाहिरकी धमकीसे कुछ ख़तरह होगा, तो क़ैसरि हिन्द अपने मौरूसी मुल्कोंकी हिमायतमें किसीतरहकी कमी नहीं करेंगी. बाहिर वाले दुश्मनका हिन्दुस्तानकी सल्तनतपर हमलह करना, मानो तमाम पूर्वी मुल्कोंकी तरक़ी और सर्सब्ज़ी पर हमलह करना है; और इस सूरतमें उन जनाबको अपनी सल्तनतके बेहद सामान और अपने अह्दनामह वालों, रईसों व मातह्तोंकी दिलेरी और वफ़ादारी और अपनी रिआयाकी मुहब्बत व ख़ैरख़्वाहीसे हरएक हमलह करने वालेको हटादेने और सज़ा देनेके लिये पूरी ताक़त हासिल है.

एशियाके दूर दूर वाले मुल्कोंके जिन बादशाहोंने अपने अपने वकीलोंको मुबारक-बादके ख़त देकर भेजा है, उनका इस मुबारक जल्सहमें हाज़िर होना इस बातकी गवाही है, कि सर्कार हिन्दुस्तानकी तद्बीर सुलहपसन्द और उसके आस पासके कुल मुल्कोंके साथ उसका दोस्तानह बर्ताव है. मैं यह चाहता हूं, कि उन जनाबकी सर्कार हिन्दकी तरफ़से इस शाहानह जल्सहमें जनाब ख़ान क़िलातको और उन प्रतिनिधियोंको, जो दूर दराज़ सफ़र तय करके एशियाई अह्दनामह रखने वालोंकी तरफ़से अंग्रेज़ी हद्दोंके अन्दर विकालतके तौरपर हाज़िर हुए हैं, और हमारे इज़्ज़तदार मिह्मान नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुर इलाक़ह गोवाको और बाहिरी सीग़हकी कौन्सिलके अफ़्सरोंको शुभागमन कहूं.

ऐ हिन्दुस्तानके रईसो और रिआया !

अब मैं ख़ुशीके साथ आप लोगोंको यह फ़र्मान आली शान, जो आपकी क़ैसरि मलिकह मुअ़ज़्ज़महने अपने शाही और क़ैसरी नामसे आप लोगोंको आज भेजा है, सुनाता हूं. यह वह इबारत है, जो आज सुब्ह उन जनाबकी तरफ़से तारके ज़रीएसे मेरे पास पहुंची है.

हम विक्टोरिया खुदाके फ़ज़्लसे इत्तिफ़ाक़ कीहुई सल्तनतकी मलिकह और कैसरि हिन्द, अपने नाइब सल्तनतकी मारिफ़त अपने कुल मुल्की और फ़ौजी सर्दारोंको और तमाम रईसों व अमीरों और रिआयाको, जो दिल्लीमें इसवक़ जमा हैं, अपनी शाही और कैसरी दुआ पहुंचाती और अपनी दिली तवज्जुह और शाहानह मिहर्बानी से सल्तनत हिन्दुस्तानकी रिआयाका इत्मीनान करती हैं.

जो आदर सत्कार हिन्दुस्तानकी रिआयाने हमारे प्यारे बेटेके साथ किया उससे हमको दिली खुशी हासिल हुई, और हमारे खानदान और तख़्तकी निस्बत उनकी इस वफ़ादारी और खैरख्वाहीने हमारे दिलपर बड़ा असर किया.

हमको उम्मेद है, कि इस मुबारक मौक़ेके सबब हमारे और हमारी रिआयाके दर्मियान मुहब्बतका सिल्सिलह ज़ियादह मज़्बूत हो; और हरएक बड़ा व छोटा इस बातका यक़ीन करले, कि हमारी हुकूमतमें उनको बड़े उसूल (सिद्धान्त), याने आज़ादी और इन्साफ़ हासिल हैं, और हमारी सल्तनतमें उनकी खुशीकी ज़ियादती और उनकी सर्सब्ज़ीकी तरक़ी और उनकी बिहतरीके बढ़ते रहनेका भी हमेशह खयाल है.

मैं यक़ीन करता हूं, कि आप लोग इन मिहर्बानी भरेहुए लफ़्ज़ोंकी बड़ी क़द्र करेंगे.

बुज़ुर्ग खुदा जनाब विक्टोरिया, एकट्ठी सल्तनतकी मलिकह और क़ैसरि हिन्दुस्तान को हमेशह सलामत रक्खे.

जब श्रीमान् वाइसरॉय अपनी तक़ीर खत्म करचुके, तो तमाम हाज़िरीन जल्सह खड़े हुए और उनकी तरफ़से तथा फ़ौजकी तरफ़से कई बार "हुर्रा" (जयजयकार) की आवाज़ बुलन्द हुई, और दाहिने बाएं, जो तोपखाने जमे हुए थे उनसे तीन तीन फ़ाइर तोपोंके सरहुए, और जो पैदल पल्टनें जमी हुई थीं उन्होंने दो दो फ़ाइर बन्दूक़ोंके छोड़े. यह कार्रवाई तीन बार कीगई. इसके बाद नव्वाब वाइसरॉय बहादुर अपने इज्लाससे उठ खड़े हुए और रईसोंकी तरफ़ सलाम करके मुसाहिबों और सेक्रेटरियों समेत अपने खेमोंको तश्रीफ़ लेगये. उसीवक़्तसे नम्बरवार राजा और नव्वाब भी अपनी सवारियोंपर रवानह होने लगे, और एक बजेसे छः बजेतक तमाम मैदान खाली होगया. इस अर्द्धचन्द्राकार दर्बारमें भारतवर्षके ६३ राजा लोग थे, जिनके नाम नीचे लिखेजाते हैं:-

१-- बुन्देला क्षत्री महाराजा रणजोरसिंह अजयगढ़के.
२-- मरहटा महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ बड़ोदाके.
३-- बुन्देला क्षत्री महाराजा भान प्रतापसिंह बिजावरके.

४— जाट महाराजा जशवन्तसिंह भरतपुरके.
५— बुन्देला क्षत्री महाराजा जयसिंहदेव चर्खारीके.
६— बुन्देला क्षत्री महाराजा भवानीसिंह दतियाके.
७— मरहटा महाराजा जियाजी राव सेंधिया ग्वालियरके.
८— मरहटा महाराजा तुकाजी राव हुल्कर इन्दौरके.
९— कछवाहा क्षत्री महाराजा सवाई रामसिंह जयपुरके.
१०— डोगरा क्षत्री महाराजा रणवीरसिंह जम्मू (कश्मीर) के.
११— राठौड़ क्षत्री महाराजा जशवन्तसिंह मारवाड़ जोधपुरके.
१२— सीसोदिया क्षत्री महाराणा सज्जनसिंह मेवाड़ उदयपुरके.
१३— यादव क्षत्री महाराजा अर्जुनपाल करौलीके.
१४— राठौड़ क्षत्री महाराजा पृथ्वीसिंह कृष्णगढ़के.
१५— बुन्देला क्षत्री महाराजा रुद्र प्रतापसिंह पन्नाके.
१६— यादव क्षत्री महाराजा चमराजेन्द्र वदियर मैसोरके.
१७— बाघेला क्षत्री महाराजा रघुराजसिंह रीवांके.
१८— बुन्देला क्षत्री महाराजा महेन्द्र प्रतापसिंह ओर्छाके.
१९— नरूका कछवाहा क्षत्री महाराव राजा मंगलसिंह अलवरके.
२०— चहुवान हाड़ा क्षत्री महाराव राजा रामसिंह बूंदीके.
२१— झाला क्षत्री महाराज राणा ज़ालिमसिंह झालरापाटणके.
२२— जाट महाराजा राणा निहालसिंह धौलपुरके.
२३— क्षत्री राजा हीराचन्द बिलासपुरके.
२४— बमराके राजा.
२५— रघुवंशी क्षत्री राजा रघुबरदयालसिंह बरौंदाके.
२६— क्षत्री राजा श्यामसिंह चम्बाके.
२७— पुंवार क्षत्री राजा विष्णुनाथसिंह छत्रपुरके.
२८— पुंवार क्षत्री राजा कृष्णाजी राव देवासके.
२९— पुंवार क्षत्री महाराजा आनन्दराव धारके.
३०— जाट राजा विक्रमसिंह सिक्ख फ़रीदकोटके.
३१— सिक्ख (सिद्धू जाट) राजा रघुबीरसिंह जींदके.
३२— राजा उदितप्रतापदेव खरौंदके.
३३— राजवंशी राजा नृपेन्द्र नारायण भूप कूचबिहारके.

३४- चन्द्रवंशी क्षत्री राजा विजयसेन मंडीके.
३५- सिक्ख (सिद्धू जाट) राजा हीरासिंह नाभाके.
३६- क्षत्री राजा शमशेरप्रकाश नाहन (सिरमोर) के.
३७- गोहिल क्षत्री राजा गंभीरसिंह राजपीपलांके.
३८- राठोड़ क्षत्री राजा रणजीतसिंह रतलामके.
३९- गूजर महाराजा हिन्दूपत समथरके.
४०- क्षत्री राजा रुद्रसेन सुकेतके.
४१- क्षत्री राजा प्रतापशाह टिहरी (गढ़वाल) के.
४२- बुंदेला क्षत्री राव लक्ष्मणसिंह जागीरदार जिगनी.
४३- पठान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद इब्राहीम अलीखां टौंकके.
४४- अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद मुरूतार हुसैन अलीखां पाटोदीके.
४५- अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद इब्राहीम अलीखां मालेरकोटलाके.
४६- मुग़ल मुसल्मान नव्वाब अलाउद्दीन अह्मदखां लोहारूके.
४७- मुसल्मान नव्वाब महाबतखां जूनागढ़के.
४८- पठान मुसल्मान नव्वाब इस्माईलखां जावराके.
४९- अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब मुहम्मद सआदत अलीख़ां दुजानाके.
५०- दाऊदपोत्रा मुसल्मान नव्वाब सादिक़ मुहम्मदख़ां बहावलपुरके.
५१- क्षत्री राव छत्रपति जागीरदार अलीपुरा.
५२- मिरासी खेल अफ़्ग़ान मुसल्मान नव्वाब शाहजहां बेगम भोपालकी.
५३- पठान मुसल्मान निज़ाम मीर महबूब अलीख़ां हैदराबादके.
५४- सिक्ख (जाट) सर्दार विष्णुसिंह कलसियाके.
५५- गोहिल क्षत्री ठाकुर तख़्तसिंह भावनगरके.
५६- जाड़ेचा क्षत्री ठाकुर बाघजी मोरवीके.
५७- डोडिया क्षत्री ठाकुर दुबेसिंह पीपलोदाके.
५८- ब्राह्मण चौबे अनिरुद्धसिंह जागीरदार पालदेव.
५९- बिलोची मुसल्मान मीर अलीमुरादखां खैरपुरके.
६०- महन्त कोंडका.
६१- महन्त नन्दगांव.
६२- जाड़ेचा क्षत्री जाम श्री विभाजी नवानगरके.
६३- दीवान पृथ्वीसिंह जागीदार टोड़ी फ़त्हपुरके.

श्री मती महाराणीके "राज राजेश्वरी" की पदवी ग्रहण करनेके उत्सवमें गवर्मेण्ट ऑफ़ इण्डियाने हिन्दुस्तानके रईसों और साधारण लोगोंपर जो अनेक अनुग्रह किये हैं, उन्हें हम संक्षेपके साथ नीचे लिखते हैं:-

सलामी.

जम्मूं, ग्वालियर, इन्दौर, उदयपुर और त्रावणकोरके महाराजाओं व महाराजा दलीपसिंहकी सलामी उनकी ज़िन्दगीभरके लिये १९ के बदले २१ तोप कीगई, और महाराजा जयपुरकी १७ से बढ़कर २१.

जोधपुर और रीवांके महाराजाओंके लिये उनकी ज़िन्दगीभरके लिये १७ से बढ़कर १९ तोपकी सलामी नियत हुई; और नव्वाब मन्सूर अलीख़ां नाज़िम बंगाल व महाराजा सर जंगबहादुर दीवान नयपालकी सलामी १९ तोप नियत कीगई.

कृष्णगढ़ और ओर्च्छाके महाराजाओंकी सलामी उनके जीवन समय तकके लिये १५ तोपके बदले १७ मुक़र्रर हुई, नव्वाब टौंककी ११ से बढ़कर १७, हैदराबादके दीवान सर सालारजंग बहादुरकी १७ और भूपालकी बेगमके पति व हैदराबादके शम्सुलउमरा नामी दूसरे मंत्रीकी सलामी नये सिरसे १७ तोप नियत हुई.

नव्वाब रामपुर और ध्रांगधड़ाके राजाकी सलामी उम्रभरके लिये १३ से १५ तोप हुई. भावनगरके ठाकुर, नवानगरके जाम, और जूनागढ़के नव्वाबकी ११ से बढ़कर १५, और अर्काटके शाहज़ादह व बेगम भूपालकी सम्बन्धिनी कुद्सियह बेगमकी सलामी नये सिरसे १५ तोप मुक़र्रर हुई.

महाराजा पन्ना, राजा जींद और राजा नाभाकी ११ से १३ तोपकी सलामी ज़िन्दगीभरके लिये होगई, और महाराणी तंजोर, महाराजा विज़ियानगरम, और महाराजा बर्दवानको नये सिरसे १३ तोपकी सलामी मिली.

मुकल्लाके नक़ीब और शिवहरके जमादारको १२ तोपकी सलामी उम्रभरके लिये मिली.

मालेरकोटलाके नव्वाबकी सलामी ज़िन्दगीभरके लिये ९ से ११, और मोरवीके ठाकुर व टिहरीके राजाके लिये नये सिरसे ११ तोपकी सलामी मुक़र्रर हुई.

नीचे लिखीहुई जगहोंके राजाओं, सर्दारों या ठाकुरोंके वास्ते उनके जीवन समयके लिये नये सिरसे ९ तोपकी सलामी नियत हुई:-

धर्मपुर, धरोल, बलरामपुर, बांसदा, बरौंदा, गौंडल, जंजीरा, खरौंद, किलचीपुर,

लिमरी, महेर, पालीताणा, राजकोट, सकूतरा, सचीन, बढ़वान और वांकानेर.

यहां यह भी लिखना आवश्यक है, कि ता० १ जैन्युअरी सन् १८७७ ई० से श्रीमती राजराजेश्वरीकी आज्ञानुसार उनकी सलामी १०१ तोप और राजसी झंडे तथा हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरलकी सलामी ३१ तोप नियत हुई.

नीचे लिखे हुए राजा और अधिकारी लोग "कौन्सिलर ऑफ़ दि एम्प्रेस" (राजराजेश्वरीके सलाहकार) नियत हुएः-

(जीवन समयतक).

महाराजा कश्मीर, श्री रणवीरसिंह, जी० सी० एस० आइ०

बूंदी, श्री रामसिंह, जी० सी० एस० आइ०

ग्वालियर, श्री जियाजीराव सेंधिया, जी० सी० एस० आइ०, जी० सी० बी०

इन्दौर, श्री तुकाजीराव हुल्कर, जी० सी० एस० आइ०

महाराजा जयपुर, श्री रामसिंह, जी० सी० एस० आइ०

त्रावणकोर, श्री राम वर्मा, जी० सी० एस० आइ०

जींद, श्री रघुवीरसिंह, जी० सी० एस० आइ०

नव्वाब रामपुर, कलब अलीख़ां, जी० सी० एस० आइ०

(पदका अधिकार रहनेतक).

श्रीयुत रिचर्ड प्लेन्टेजिनेट केम्बल, जी० सी० एस० आइ०, ड्यूक ऑफ़ बकिंगुघम ऐन्ड शान्डास, मद्रासके गवर्नर; सर पी० ई० वुडहाउस, जी० सी० एस० आइ०, के० सी० बी०, बम्बईके गवर्नर; सर एफ़० पी० हेन्स, के० सी० बी०, हिन्दुस्तानके कमाण्डर इन्चीफ़; सर रिचर्ड टेम्पल, बैरोनेट्, के० सी० एस० आइ०, बंगालके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर; सर ज्यॉर्ज कौपर, बैरोनेट्, सी० बी०, पश्चिमोत्तर देशके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर; सर रॉबर्ट हेन्री डेविस, के० सी० एस० आइ०, पंजाबके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर; सर जॉन स्ट्रेची, के० सी० एस० आइ०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; मेजर जेनरल सर एच० डब्ल्यू० नॉर्मन, के० सी० बी०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; ऑनरेबल ए० हॉबहाउस, क्यू० सी०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; कर्नेल् सर ए० क्लार्क, आर० ई०, के० सी० एम० जी०, सी० बी०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; ऑनरेबल ई० सी० बेली, सी० एस० आइ०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर; सर ए० जे० आर्बथनाट, के० सी० एस० आइ०, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके मेम्बर.

नीचे लिखे हुए राजाओंको प्रथम श्रेणीके स्टार ऑफ़ इन्डिया (जी० सी० एस० आइ०) की पदवी मिलीः-

श्रीयुत महाराव राजा रामसिंह, बूंदी; महाराजा ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह, बनारस; महाराजा जशवन्तसिंह, भरतपुर; प्रिन्स अज़ीमजाह ज़हीरुद्दौलह बहादुर, अर्काट.

इन लोगोंको दूसरी श्रेणीके स्टार ऑफ़ इन्डिया (के० सी० एस० आइ०) की पदवी मिलीः–

श्री शिवाजी छत्रपति, राजा कोल्हापुर; राजा आनन्दराव पंवार, धारवाले; श्री मानसिंहजी, राजा ध्रांगधड़ा; श्री विभाजी जाम, नवानगर; आर० जे० मैक्डॉनल्ड, श्री मती महाराजराणीकी हिन्दुस्तानकी समुद्री सेनाके कमान्डर इन्चीफ़; सर जी० ई० डब्ल्यू० कौपर, बैरोनेट्, सी० बी०, बंगाल सिविलसर्विस, पश्चिमोत्तर देशके लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर; जेम्स फ़िट्ज़ स्टीवन साहिब, श्रीमती महाराजराणीके सलाहकार और गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके पूर्व मेम्बर; आर्थर हॉबहाउस साहिब, श्रीमती महाराजराणीके सलाहकार और गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके दूसरे मेम्बर; एडवर्ड क्लाइव बेली साहिब, सी० एस० आइ०, बंगाल सिविलसर्विस, गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलके तीसरे मेम्बर.

तीसरे दरजहके स्टार ऑफ़ इन्डिया (सी० एस० आइ०) की पदवी २५ आदमियोंको मिली, जिनमें मथुराके सेठ गोविन्ददास, कश्मीरके दीवान ज्वालासहाय और त्रावणकोरके दीवान शिशिया शास्त्रीको भी गिनना चाहिये.

नीचे लिखेहुए राजाओंको उनके नामोंके सामने लिखी हुई पदवियां मिलीं:–

महाराजा गायकवाड़ बड़ोदाको " फ़र्ज़न्द खास दौलत इंगलिशियह " (अंग्रेज़ी सर्कारके मुख्य बेटे); महाराजा ग्वालियरको " हिसामुस्सल्तनत " (राज्यकी तलवार); महाराजा कश्मीरको "इन्द्र महेन्द्र बहादुर, सिपरि सल्तनत" (राज्यकी ढाल); महाराजा अजयगढ़को "सवाई"; महाराजा बिजावरको "सवाई"; महाराजा चर्खारीको "सिपहदारि मुल्क" (देशके सेनापति); और महाराजा दतियाको "लोकेन्द्र".

नीचे लिखे हुए सर्दारों और रईसोंको "महाराजा" की पदवी उनकी जिन्दगीभरके लिये मिलीः–

आनन्दराव पंवार, धारके राजा; छत्रसिंह बहादुर राजा समथरके; धनुर्जय नारायण भंजदेव, सूबे उड़ीसामें क़िले क्योंझारके राजा; देवीसिंहदेव, पुरीके राजा (उड़ीसा); जगदेन्द्रनाथराय (राजा नाटोरके घरानेकी बड़ी शाखामेंसे); राजा जितेन्द्रमोहन टागोर, कृष्णचन्द्र, मोरभंज (उड़ीसा) वाले; महिपतसिंह रईस, पटना; ऑनरेबल राजा नरेन्द्रकृष्ण, रईस सोभाबाज़ार (कलकत्ता); राजा कृष्णसिंह, सुसांगके राजा (इलाक़ह मैमनसिंह); राजा रमानाथ टागोर, कलकत्ताके.

नीचे लिखी हुई राणियोंको उनके जीवन समयके लिये "महाराणी" की पदवी मिलीः-

राणी हरसुन्दरी देवी, सिरसोल (बर्दवान) वाली; राणी हगनकुमारी, पैंद्रा (मान भूम) वाली; राणी सूरतसुन्दरी देवी, राजशाही की.

राजा सर दिनकर राव, के० सी० एस० आइ० को "राजा मशीरि ख़ास बहादुर" (राजा मुख्य सलाहकार बहादुर) की पदवी उनकी ज़िन्दगीके लिये मिली.

नीचे लिखे हुए सर्दारों और रईसोंको उनकी ज़िन्दगीके लिये "राजा बहादुर" की पदवी मिलीः-

रघुबरदयालसिंह, बरौंदाके राजा; खल्क़सिंह (खड्गसिंह), सुरीलाके राजा; उदित प्रतापदेव, खरौंदके राजा; राजा विश्वेश्वर मालिया, रईस सिरसोल (बर्दवान); राजा हरिबल्लभसिंह, रईस बिहार; राजा हरनाथ, चौधरी दुबलहट्टी (राजशाही); राजा मंगलसिंह, भिणाय (अजमेर) वाले; राजा रामरंजन चक्रवर्ती, बीरभूम.

नीचे लिखे हुए महाशयोंको उनके जीवन समयके लिये "राजा" की पदवी मिलीः-

बाबू अजीतसिंह, रईस तरौल (प्रतापगढ़); बाबा बलवन्तराव, रईस जबलपुर; बलवन्तसिंह, रईस गगवाना; डमरू कुमार वैंकट अप्पा नायडो, ज़मींदार कालाहस्ती (ज़िला उत्तरी अर्काट); राजा देवीसिंह, रईस राजगढ़; दिगम्बर मित्र, सी० एस० आइ० (कलकत्ता); राव गंगाधर रामराव, ज़मींदार पितापुर (गोदावरी प्रान्त); राव चत्रसिंह, जागीरदार कन्याधाना; हरिश्चन्द्र चौधरी, मैमनसिंह; कमलकृष्ण, रईस सोभाबाज़ार (कलकत्ता); राय बहादुर क्षेत्रमोहनसिंह, रईस दीनाजपुर; कुंवर हरनारायणसिंह, हाथरस; कुंवर लक्ष्मणसिंह, डिपुटी कलेक्टर बुलन्दशहर; सरटी माधवराव, के० सी० एस० आइ०, बड़ोदाके दीवान; ठाकुर माधवसिंह, रईस सावर (अजमेर); प्रतापसिंह, रईस पीसांगण (अजमेर); रामनारायणसिंह, जागीरदार खेड़ा (मुंघेर); श्यामानन्द दे, रईस बालासोर; श्यामशंकर राव, रईस व्यूटा; सर्दार सूरतसिंह मजीठिया, सी० एस० आइ०; राव साहिब त्र्यम्बकजी नाना अहीर, नागपुरके राव; कन्दोकिशोर भूपति, ज़मींदार सुकिंडा (उड़ीसा).

नीचे लिखेहुए शख़्सोंको "राव बहादुर" का ख़िताब मिलाः-

राव बख़्तसिंह, बेदला (मेवाड़); भभूतसिंह, ठाकुर पोहकरण (राजपूतानह); भगवन्तराव देशपांडे, एलिचपुर; दाजी नीलकंठ नगारकर, इंजिनिअरिंग कॉलेज बम्बईके प्रोफ़ेसर; गोपालराव हरी, जज अदालत मुतालबे ख़फ़ीफ़ह अहमदाबाद;

गोकुलजी झाला, जूनागढ़ (काठियावाड़); जगजीवनदास खुशहालदास, सूरत के डिपुटी कलेक्टर; राव साहिब हरिनारायण, अहमद नगरके पुलिस इन्स्पेक्टर; राव छत्रपति, जागीरदार अलीपुरा; केसरीसिंह, ठाकुर कुचामण (राजपूतानह); केरो लक्ष्मण छत्रे, दक्षिण कॉलेजके गणितविद्याके प्रोफ़ेसर; खांडेराव विश्वनाथ उर्फ़ राव साहिब रास्ते, दूसरे दरजहके सर्दार (दक्षिण); केशवराव भास्कर, डिपुटी असिस्टैंट पोलिटिकल एजेएट काठियावाड़; खुशाभाई सिराभाई रेवाकांठाके दफ़्तरदार; दीवान लालसिंह, मुख्तारकार तअल्लुक़ह गिनी इलाक़ह कलक्टरी हैदराबाद सिन्ध; लक्ष्मणसिंह, जिगनीके राव; माधवराव वासुदेव बरवे, कोल्हापुरके कारबारी; मकाजी धनजी, ध्रांगधड़ाके पूर्व कारबारी; नन्दशंकर तुलजाशंकर, असिस्टैंट पोलिटिकल एजेएट जनावरा व सोंठ (रेवाकांठा); नारायण राव अनन्त मुतालक कर्द (.इलाक़ह सितारा); नारायण भाई डांडीकर, डाइरेक्टर सरिश्तह तालीम बरार; प्रेमाभाई हेमाभाई, अहमदाबाद; राव पृथ्वीसिंह, जागीरदार टोड़ी फ़तहपुर; शिवनाथसिंह, ठाकुर खरवा (राजपूतानह); शिवराम पांडवरंग, बम्बई; सदाशिव रघुनाथ जोशी, कारबारी मधोल; श्रीबालंग्या मोरथली, इलाक़ह कनाड़ाका; त्रिमल्लराव वैंकटेश, धारवाड़की अदालत मुतालबे खफ़ीफ़हका पूर्व जज; विनायक राव जनार्दन कीर्तने, बड़ोदाका नाइब दीवान; धारीदास अजूभाई, नरियाद .इलाक़ह कैरा (बम्बई) का; वामनराव पीताम्बर, सरिश्तहदार सावन्तवाड़ी; वासुदेव बापूजी, असिस्टैंट इंजिनिअर सीग़ह तामीरात सर्कारी, बम्बई.

नीचे लिखेहुए शरूसोंने "राय बहादुर" का खिताब पायाः—

आर्कट नारायण स्वामी मुडलियर, बंगलोर; बाबू अनुदप्रसाद राय, मुर्शिदाबाद; बाबू वैद्यनाथ पण्डित, ज़मींदार क़िले दर्पण .इलाक़ह कटकके; लाला बद्रीदास, श्रीमान् वाइसरॉय बहादुरका मुक़ीम; छादी सोबिया, कुर्गके असिस्टैंट कमिश्नर; दासमल्ल, होश्यारपुरके पूर्व तह्सीलदार; बाबू दुर्गाप्रसादसिंह, ज़मींदार मधुबनी, .इलाक़ह चंपारनके; बाबू गोलकचन्द्र चौधरी, चटगांव; बाबू गोपालमोहन सर्कार, गवर्मेंट हाउसका ख़ज़ानची; हरिचन्द यादवजी, सरदफ़्तर प्रेसिडेन्सी पे ऑफ़िस, बम्बई; यला मलप्पा चेटी, बंगलोर; राय कल्यानसिंह, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट अमृतसर; ऑनरेबल बाबू कृस्टोदास पाल, लेजिस्लेटिव कौन्सिल बंगालके मेम्बर; कन्हैयालाल, असिस्टैंट डिस्ट्रिक्ट सुपरिन्टेण्डेण्ट पुलिस पंजाब; लक्ष्मणराव, महाराजा साहिब मैसोरके मुसाहिब; ठाकुर मंगलसिंह, अलवरकी रिजेन्सी कौन्सिलके मेम्बर; बख़्शी नर सप्पा, महाराजा साहिब मैसोरके मुसाहिब; बाबू नारायणचन्द्र चौधरी, ज़मींदार चूड़ामन, पर्गनह दीनाजपुर, ज़िला राजशाही; बाबू नुमाईचरण बोस, ज़मींदार कोठार (.इलाक़ह बालासोर);

रामरत्न सेठ, मियांमीरका साहूकार; डॉक्टर राजेन्द्रलाल मित्र, कलकत्ता; ऑनरेबल बाबू रामशंकर सेन, बंगालकी लेजिस्लेटिव कौन्सिलके मेम्बर; बाबू चौधरी रुद्रप्रसाद, ज़मींदार नामपुर .इलाक़ह सीतामढ़ी; पंडित रूपनारायण, अलवरकी रिजेन्सी कौन्सिल के मेम्बर; बाबू राधावल्लभसिंहदेव, ज़मींदार बंकोड़ा; राय साहिबसिंह दिल्लीके ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; बाबू सूर्जकांत आचार्य, ज़मींदार मोरतगाची (मैमनसिंह); राय उमरावसिंह, दिल्लीके ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; बाबू उग्रनारायणसिंह, ज़मींदार सोपल (भागलपुर).

जिन शख़्सोंको "राव साहिब" का ख़िताब मिला, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

ठाकुर बहादुरसिंह, रईस मसऊदा (.इलाक़ह अजमेर); गोविन्दराव कृष्णा भास्कर निमार; ठाकुर हरिसिंह, रईस देवलिया(इलाक़ह अजमेर); ठाकुर कल्याणसिंह, रईस जूनिया (.इलाक़ह अजमेर); माधवराव गंगाधर, रईस नागपुरका चटनवीस; ठाकुर माधवसिंह, रईस करोर (.इलाक़ह अजमेर); राजाबा महेत, नागपुर; ठाकुर रणजीतसिंह, रईस बांदणवाड़ा (.इलाक़ह अजमेर).

"राव" का ख़िताब पानेवाले शख़्सोंके नाम नीचे लिखे मुवाफ़िक़ हैं:—

भारमल्ल बरारका रावत्, मेरवाड़ा इलाक़ह राजपूतानह; जादवराव पांडे, रईस भंडारा; उमा, ककराका रावत् (मेरवाड़ा, इलाक़ह राजपूतानह); अनिरुद्धसिंह, जागीरदार पालदेव (सेंट्रल इंडिया).

"राय" का ख़िताब पाने वालोंके नाम:-

विष्णुस्वरूप, अजमेरका पुलिस इन्स्पेक्टर; सेठ चान्दमल्ल, अजमेरका ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; कोठारी छगनलाल, रियासत मेवाड़के महकमह मालका बड़ा हाकिम और ख़ज़ानहका मुहतमिम; महता पन्नालाल, रियासत मेवाड़का नाइब दीवान; सेठ शमीरमल्ल, अजमेरका ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट.

राय मुन्शी अमीनचन्द, अजमेरके जुडीशल असिस्टैण्ट कमिश्नरको उसके जीवन समयतक "सर्दार बहादुर" की पदवी मिली.

रत्नसिंह (रईस रोहतास ज़िले झेलम), सेंट्रल इंडियाके डिस्ट्रिक्ट सुपरिण्टेन्डेण्ट पुलिसको "सर्दार" का ख़िताब मिला.

ठाकुर हीरा, रईस पर्गनह देवर इलाक़ह मेरवाड़ा (राजपूतानह) को "ठाकुर रावत्" का पद मिला.

लक्ष्मीनारायणसिंह, जागीरदार कैरा (सिंहभूम) को "ठाकुर" का ख़िताब मिला.

नीचे लिखे हुए शख़्सोंने "नव्वाब" का ख़िताब हासिल किया:-

एहसनुल्लाहख़ां बहादुर, ढाकाके; सय्यद अब्दुलहुसैन, मुंघेरके; महमूद अलीख़ां

बहादुर, छतारी ज़िले बुलन्दशहरके; ऑनरेबल मीर मुहम्मदअ़ली, फ़रीदपुर इलाक़ह बंगालके.

"ख़ान बहादुर" का ख़िताब पानेवाले शख़्सोंके नामः-

अ़ब्दुर्रहीमख़ां ख़लफ़ शाहनवाज़ख़ां, ईसा खेल ज़िला बन्नूं; औलाद हुसैन, पहाड़सर इलाक़ह भरतपुरके, असिस्टेण्ट कमिश्नर सेंट्रल इंडिया; अ़ब्दुल् क़ादिरअ़ली, शहर मैसोरके असिस्टेण्ट कमिश्नर और मैजिस्ट्रेट; मौलवी अ़ब्दुल्लतीफ़, कलकत्ताके डिपुटी मैजिस्ट्रेट; अ़लीख़ां, ज़मींदार मुंघेर; नव्वाब इलहदादख़ां, किरांचीके; भीखनख़ां, ज़मींदार परसोनी (पश्चिमी तिरहुत); बामनजी सुहराबजी, असिस्टेण्ट इंजिनिअर सीग़ह तामीरात सर्कारी, बम्बई; चेतनशाह, पेशावरके असिस्टेण्ट सर्जन; रुस्टजी रुस्तमजी, बड़ोदाके चीफ़ जस्टिस; दावर रुस्तमजी ख़ुर्शेदजी मोदी, सूरत; दाद मुहम्मद ज़करानी; जैकबआबाद; क़ाज़ी इब्राहीम मुहम्मद, बम्बई; ग़ौस शाह क़ादिरी, मकानदार इलाक़ह कोहिस्तान, बाबा बूदन; इमामुद्दीनख़ां, बंगलोर; जमशेदजी धनजी भाई वाडिया, बम्बईके जहाज़ी कमठानोंके सर्दार; क़ाज़ी मुहियुद्दीन साहिब, मैसोर; सय्यद क़ाबिलशाह, वर्नाहर तअ़ल्लुक़ह नागोर (सिन्ध); मुहम्मद जान, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट अमृतसर; मौलवी मासूम मियां, बालापुर इलाक़ह अकोला; मुहम्मदअ़ली, असिस्टेंट कमिश्नर, बंगलोर; मीर हैदर अ़लीख़ां, मैसोर; मुहम्मद रशीदख़ां चौधरी, ज़मींदार नाटोर (राजशाही); सय्यद मुहम्मद अबूसईद, ज़मींदार पटना व गया; मनूचिहरजी काऊसजी, असिस्टेंट इन्जिनिअर सीग़ह तामीरात सर्कारी, बम्बई; क़ाज़ी मीर जलालुद्दीन, बम्बई; मिर्ज़ा अ़लीमुहम्मद, किरांची (सिन्ध); मीर गुलहसन, हैदराबाद (सिन्ध); सय्यद मुरादअ़लीशाह, रोड़ी इलाक़ह शिकारपुर; मीर हाफ़िज़अ़ली, मुतवल्ली दर्गाह अजमेर; मीर निज़ाम अ़ली, अजमेरके ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; नुसरवानजी रुस्टजी, अहमदनगर (बम्बई); पिस्तनजी जहांगीर, कमिश्नर बन्दोबस्त बड़ोदा; पारूमल्ल, हैदराबाद (सिन्ध); पीरबख़्श, कोहावर, ज़मींदार शिकारपुर; रहमतख़ां, पंजाबके पुलिस इन्स्पेक्टर; रुस्तमजी सुहराबजी, भड़ोच इलाक़ह गुजरातके; क़ाज़ी शिहाबुद्दीन, महकमह माल बड़ोदाके बड़े अफ़्सर; जमादार स्वालिह हिन्दी, जूनागढ़ (बम्बई); वलीमुहम्मद ढंगन, भरगरी तअ़ल्लुक़ह अमरकोट, (सिन्ध).

निम्न लिखित शख़्सोंको "ख़ान" का ख़िताब मिलाः-

बुढाख़ां, हतून मेरवाड़ा (इलाक़ह, राजपूतानह); फ़तहख़ां, चंग मेरवाड़ा (इलाक़ह राजपूतानह).

नीचे लिखे हुए रईसों और शरीफ़ोंको "महाराजा बहादुर", "राजा" व "नव्वाबका" ख़िताब मिलाः-

महाराजा सर जे० मंगलसिंह बहादुर, के० सी० एस० आइ०, गढ़ोर (मुंघेर) को "महाराजा बहादुर" का ख़िताब; धर्म्मजीतसिंह देव, रईस उदयपुर वाके छोटा नागपुरको "राजा" (रियासत सम्बन्धी) का ख़िताब; पदवल्लभराव, ज़मींदार अवल (उड़ीसा) को उसके जीवन समय तक "राजा" का ख़िताब; और नव्वाब ख़्वाजिह अब्दुल्ग़नी, रईस ढाका, सी० एस० आइ० को "नव्वाब" का ख़िताब मिला.

नीचे लिखे हुए शख़्सोंको उनके जीवन समयतकके लिये वह ख़िताब मिले, जो उनके नामोंके सामने लिखे गये हैं:-

दीवान ग़यासुद्दीन अ़लीख़ां सज्जादह नशीन, अजमेर वालेको "शैख़ुल मशाइख़"; और सर्दार इत्रसिंह भदौरिया, ज़ैलदार पटियाला और मेम्बर पंजाब युनिवर्सिटी कॉलिज लाहौरको "मलाज़ुल् .उलमा वल् फुज़ला".

दीवान गजराजसिंह, जस्सू (मध्य प्रदेश) के दीवानको "दीवान बहादुर" का ख़िताब उसकी ज़िन्दगी भरके लिये मिला.

पंडित मनफूल, सी० एस० आइ०, ऑनरेरी असिस्टैण्ट कमिश्नरको उसके जीवन समयतक "दीवान" का ख़िताब मिला.

नीचे लिखे हुए शख़्सोंको "ऑनरेरी असिस्टैंट कमिश्नर" का ख़िताब दिया गया:-

नव्वाब अ़ब्दुल मजीदख़ां, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट; सर्दार अजीतसिंह अटारीवाला (अमृतसर); आग़ा कलब आ़बिद, एक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर; कर्नेल् धनराज (गंजा ज़िले गुजरातका), एक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर; सय्यद हादी हुसैनख़ां दिल्ली निवासी, एक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर; सय्यद क़ाइमअ़ली, एक्स्ट्रा असिस्टैंट कमिश्नर; राय मूलसिंह (ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट), गूजरांवाला; सोढ़ी मानसिंह (फ़ीरोज़पुरका) मैजिस्ट्रेट और ऑनरेरी एक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर; मुहम्मद सुल्तानख़ां, एक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर; मिर्ज़ा आज़मबेग, एक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर; पंडित मोती-लाल काथजो, एक्स्ट्रा असिस्टैण्ट कमिश्नर; नव्वाब नवाज़िश अ़लीख़ां क़ज़्लबाश, लाहौर; दीवान शंकरनाथ लाहौरका ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट.

इस जल्सहमें हिन्दुस्तानके कुल जेलख़ानोंमेंसे १५९८८ क़ैदी छोड़गये.

पहिली जैन्युअरी सन् १८७७ .ई० की मुआफ़ीका इश्तिहार.

श्रीमान् नव्वाब वाइसरॉय बहादुर कौन्सिलके इज्लासमें सन् १८५९ .ई० की मुआफ़ीकी शर्तोंपर ग़ौर फ़र्माकर इश्तिहार देते हैं, कि जो लोग बग़ावतके मुखिया थे उनके अपराधोंको क्षमा न किया जाना रद किया गया, और अब उन लोगोंको इख़्तियार है, कि फ़क़त ज़िलेके हाकिमोंको अपने वापस आनेकी इत्तिला करने और आनेकी

नेक चलन रहनेकी शर्तपर अपने घरोंको वापस चले आवें; परन्तु यह ज़रूर है, कि ऐसे लोग जिस ज़िलेमें रहते हों, जब उसकी सीमासे बाहिर जाना चाहें, पहिले इस बातकी इत्तिला ज़िलेके हाकिमोंको करदें.

क़ातिलों (बधकों) और बाग़ी फ़ौजके मुखियोंके अपराध क्षमा न कियाजाना बदस्तूर क़ाइम रहेगा, और ऊपर दर्ज किये हुए इश्तिहारकी कोई इबारत दिल्लीके पूर्व बादशाहके बेटे फ़ीरोज़शाहसे सम्बन्ध न रक्खेगी.

अब हम क़ैसरी दर्बारका हाल छोड़कर फिर ख़ास महाराणा साहिबकी तवारीख़ शुरू करते हैं.

महाराणा साहिब क़ैसरी दर्बारमें मए ९ सर्दारोंके कुर्सियोंपर बैठे और ८ आदमी पासबानोंमेंसे लवाज़िमह लेकर खड़े रहे. दर्बार बर्ख़ास्त होनेके बाद महाराणा साहिब बग्घी सवार होकर अपने डेरोंमें आये, और शामके वक़ मए पोलिटिकल एजेएट मेवाड़ व राव बख़्तसिंहके बग्घीमें सवार होकर लाट साहिबके डेरोंपर पहुंचे, जहां साहिब लोगोंके लिये खाना व नाच रंग वग़ैरह होरहा था. दूसरे राजा लोग भी जरीदह तौरपर वहां आये, और जल्सह बर्ख़ास्त होनेके बाद अपने अपने डेरोंको वापस गये. विक्रमी १९३३ माघ कृष्ण ३ [हि० ता० १६ ज़िल्हिज = ई० ता० २ जैन्युअरी] को गवर्नर जेनरल हिन्द और कुल राजा लोग घुड़दौड़ देखनेके लिये गये, महाराणा साहिब भी वहां पधारे. इस घुड़दौड़में जोधपुर महाराजा साहिबके घोड़ोंकी ज़ियादह तारीफ़ हुई. विक्रमी माघ कृष्ण ४ [हि० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० ता० ३ जैन्युअरी] को क़ाइम मक़ाम एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह सी० के० एम० वाल्टर साहिब महाराणा साहिबके डेरोंपर आये, और मुलाक़ात करके वापस गये. फिर मंडी (ज़िला पंजाब) के राजा विजयसेन महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये, और कुर्सियोंपर दर्बार होकर उनसे मुलाक़ात हुई. महाराणा साहिब ने पेश्वाईके लिये दो तीन क़दम बढ़कर उनका सलाम लिया. यह राजा बहुत सादा मिज़ाज, संस्कृत पढ़े लिखे, प्रसन्न मुख, छोटे क़दवाले, ख़ूबसूरत और मिलनसार थे. महाराणा साहिबने थोड़ी देरके बाद इत्र पान देकर उन्हें रुख़्सत किया. शामके वक़ इन्दौरके महाराजा तुकाजीराव हुल्कर महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये, जिनको महाराणा साहिब ड्योढ़ीतक पेश्वाई करके डेरेमें लेआये; पेश्तर कुर्सियोंका दर्बार हुआ, फिर उक्त महाराजाने मित्रताकी अधिकताके कारण भोजनके लिये कहा, और उसीवक़ भोजनकी तय्यारी हुई. महाराणा साहिब और महाराजा साहिबके बैठनेको जुदे जुदे बैठके और थाल परोसे गये, और दोनों महाराजाओंने चन्द सर्दारों सहित बड़े प्रेमके साथ भोजन किया; फिर मित्रताकी बातें होती रहीं, और क़रीब पहर रात व्यतीत होनेपर

महाराजा हुल्कर अपने डेरोंको गये. विक्रमी माघ कृष्ण ५ [हि० ता० १८ ज़िल्हिज = ई० ता० ४ जैन्युअरी] को महाराणा साहिबने बग्घी सवार होकर पेश्तर इन्दौरके महाराजा तुकाजीराव हुल्करसे और बाद उसके रीवांके महाराजा रघुराजसिंहसे उनके डेरोंपर मुलाक़ात करके लाल क़िलेके क़रीब जमुनामें स्नान किया, और शामके वक्त जुमा मस्जिदमें पहुंचे, जहां कुल राजा लोग और गवर्नर जेनरल हिन्द व साहिबान अंग्रेज़ रौशनी व आतिशबाज़ी देखनेको आये थे. यह आतिशबाज़ी लाइक़ देखने और तारीफ़के थी, पानीके मुवाफ़िक़ आगकी चद्दरका गिरना, फ़व्वारोंका छूटना, क्वीन विक्टोरिया कैसरि हिन्दकी अग्निमय तस्वीरका दिखाई देना, आस्मानपर फूलबाड़ीके मुवाफ़िक़ रंग बरंगके सितारोंका छाजाना ऐसा दिखाई देता था, मानो बूंटेदार शामियानह खड़ा कियागया है. रौशनी देखकर महाराणा साहिब अपने डेरोंपर चलेआये, और दूसरे लोग भी बिखरगये. विक्रमी माघ कृष्ण ६ [हि० ता० १९ ज़िल्हिज = ई० ता० ५ जैन्युअरी] को परेडके चौगानमें गवर्नर जेनरल हिन्दने कुल राजा लोगोंके लवाज़िमों याने हाथी, फ़ौज और सवारों वग़ैरहको देखा. उसके बाद कुल राजा लोग और लाट साहिब अपनी अपनी बग्घियोंमें सवार होकर परेडके चौकमें खड़े रहे, और अंग्रेज़ी पल्टनों, तोपख़ानों व रिसालोंकी क़वाइद देखकर अपने अपने डेरोंमें आये. विक्रमी माघ कृष्ण ७ [हि० ता० २० ज़िल्हिज = ई० ता० ६ जैन्युअरी] को महाराणा साहिब मए एजेण्ट साहिबके बादशाही लाल क़िला देखनेको गये. अगर्चि इस शहरमें बहुतसी छोटी बड़ी इमारतें देखनेके लाइक़ हैं, लेकिन् क़ुतुब साहिबकी लाट, जुमा मस्जिद, लाल क़िलेकी दीवार, दीवान ख़ास और मोती मस्जिद सबसे ज़ियादह मश्हूर हैं. दीवान ख़ास और मोती मस्जिदमें श्वेत पाषाणके बीचमें काले पत्थरकी पच्ची कारी देखकर दिल नहीं चाहता, कि इस जगहसे हटकर दूसरी जगह चलें. लाल क़िलेके अन्दर दीवान आम, दीवान ख़ास व मोती मस्जिदके सिवा विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के ग़द्रमें कुल बादशाही मकान गिरवाये जाकर गोरोंकी फ़ौजके लिये बारकें बनवादी गई हैं. महाराणा साहिब क़िला देखकर डेरोंमें वापस आये. विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्हिज = ई० ता० ७ जैन्युअरी] को महाराणा साहिब पिछली ३ घड़ी रात बाक़ी रहे दिल्लीसे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर उदयपुरकी तरफ़ रवानह हुए. विक्रमी माघ कृष्ण ९ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ जैन्युअरी] को महाराणा साहिब जयपुरके स्टेशनपर पधारे. जयपुरके महाराजा रामसिंह साहिब और जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह साहिब पहिले रोज़ आगये थे, दोनों महाराजाधिराजोंने स्टेशनपर पधारकर महाराणा साहिबसे मुलाक़ात की. फिर महाराजा जशवन्तसिंह

तो जोधपुरकी तरफ़ रवानह हुए, और जयपुरके महाराजा साहिब व महाराणा साहिब एक बग्घीमें सवार होकर रामबाग़की सैर करते हुए जयपुरके महलोंमें पधारे, दिन भर बड़े आनन्द और प्रीतिके साथ रहे, शामको महाराजा सवाई रामसिंह स्टेशनतक पहुंचानेको आये, तीन घड़ी रात गये महाराजा साहिबको रुख़्सत करके महाराणा साहिब स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर प्रातः समय नसीराबाद पहुंचे. विक्रमी माघ कृष्ण १० [हि० ता० २३ ज़िल्हिज = ई० ता० ९ जैन्युअरी] को नसीराबादमें थोड़ी देर ठहरनेके बाद बग्घियोंकी डाकमें रवानह होकर विक्रमी माघ कृष्ण ११ [हि० ता० २४ ज़िल्हिज = ई० ता० १० जैन्युअरी] के रोज़ नाहर मगरे पहुंचे, और वहांसे विक्रमी माघ शुक्ल ६ [हि० १२९४ ता० ४ मुहर्रम = ई० ता० २० जैन्युअरी] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. फिर फाल्गुन शुक्ल १० [हि० ता० ९ सफ़र = ई० ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को साह ज़ोरावरसिंह सूराणाके मकानपर महाराणा साहिब मिह्मान हुए और फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० ता० १२ सफ़र = ई० ता० २६ फ़ेब्रुअरी] को सलूंबरके रावत् जोधसिंहने महाराणा साहिबको मए ज़नानहके अपनी हवेलीपर मिह्मान किया.

अब महाराणा साहिबकी तवज्जुह मुल्की इन्तिज़ामकी तरफ़ हुई. माली कामको तो पीछे सुधारनेकी निगाहसे हाकिमोंके सुपुर्द करके तख़्मीनह बनादिया, कि हरएक पर्गनहका हाकिम मुक़र्रह जमामें कम रुपया न बैठनेका ज़िम्मह्वार समझा जायेगा, क्योंकि कोठारी केसरीसिंहका बांधा हुआ ठेका लोगोंने तोड़दिया, और पुराने रवाजके मुवाफ़िक़ किसानोंसे जिन्स बांट लेनेमें निगरानी रखना मुश्किल काम था, सिर्फ़ अह्लकार लोग जो जमा ख़र्चका आंकड़ा पेश करते उसीपर भरोसा करना पड़ता था, इसलिये हाकिमोंको ज़िम्मह्वार ठहराकर एक सालके लिये तख़्मीनह मुक़र्रर करदिया; लेकिन् दीवानी, फ़ौज्दारी और अपीलकी अदालतके ऊपर एक कौन्सिल क़ाइम करनेकी सलाह हुई. इस सलाहमें दीवान जानी विहारीलाल और मैं (कविराजा श्यामलदास) दोनों अर्ज़ करने वाले, महाराणा साहिब बहस और क़द्रदानीके साथ कुबूल फ़र्माने वाले और कर्नेल् इम्पी साहिब पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ हरएक सलाहको मज़्बूत करनेवाले रहे. आख़रको कौन्सिल क़ाइम करनेकी सलाह पुख़्तह ठहरगई, तब महाराणा साहिबने फ़र्माया, कि इस बड़ी अदालतके नियत करनेसे ख़र्चकी ज़ियादती होकर सालियानह तख़्मीनहमें दिक़्क़त पेश आवेगी. मैंने अर्ज़ की, कि हुज़ूर अपने मुअज़्ज़ज़ सर्दारों और अह्लकारोंमेंसे लाइक़ शख़्सोंको तो ऑनरेरी मेम्बर चुनलेवें और महकमहख़ास, महकमह माल, महकमह हिसाब और अपील, दीवानी, फ़ौज्दारी व साइर वगैरह अदालतोंसे एक एक दो दो अह्लकार लेकर अमला बनादेवें. इसी तरह चपरासी वगैरह भी भरती

करलिये जावें, जिसमें ख़र्चकी कुछ ज़रूरत न हो, सिर्फ़ एक सरिश्तहदारकी तनख्वाह और कन्टिन्जेंट ख़र्चका बन्दोबस्त करना पड़ेगा. इज्लास क़ाइम करनेकी सलाहका बड़ा मददगार दीवान जानी बिहारीलाल तो इसवक्त अपने उह्देपर वापस चलागया था और इस बड़े कामकी तामीलके लिये मुझहीको हुक्म मिला. मैंने ऊपर लिखी हुई तज्वीज़के मुवाफ़िक़ ऑनरेरी मेम्बरोंकी फ़िह्रिस्त बनाकर नज़ की, जिसमें १ - बेदलाका राव बख़्तसिंह चहुवान, २ - देलवाड़ाका राज फ़त्हसिंह झाला, ३ - पारसोलीका राव लक्ष्मणसिंह चहुवान, ४ - आसींदका रावत् अर्जुनसिंह चूंडावत, ५ - शिवरतीका महाराज बाबा गजसिंह, ६ - सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह डोडिया, ७ - ताणाका राज देवीसिंह झाला, ८ - काकरवाका उदयसिंह राणावत, ९ - मैं (कविराजा श्यामलदास), १० - भाणेज मोतीसिंह राठौड़, ११ - सहीहवाला कायस्थ अर्जुनसिंह, १२ - धव्वा राव बदनमल्ल, १३ - मह्ता तख़्तसिंह, व १४ - पुरोहित पद्मनाथ वग़ैरहके नाम दर्ज किये, और ऊपर लिखी हुई अदालतोंसे अमलेके लिये अह्लकार छांटकर मुन्शी अलीहुसैनको, जो एक होश्यार अह्लकार ठिकाने बदनोरकी विकालत करता था, सरिश्तहदार नियत किया. पेश्तर इन्साफ़ी कार्रवाईका अख़ीर महकमह ख़ासके हुक्मसे होता था, और दीवानी, फ़ौज्दारी, व स्टाम्प रेजिस्टरी वग़ैरहके इन्तिज़ामका शुरू मह्ता राय पन्नालालके हाथसे हुआ था, इसलिये तामील और समाअतका काम उसीके हाथमें रखना वाजिब जानकर महकमहख़ासमें रक्खा गया, क्योंकि महाराणा साहिबकी बुद्धिमानी और मेरी सलाह व अर्ज़से इन्तिज़ामी हालतकी तब्दीली और दुरुस्ती हुई; लेकिन् इन कामोंके मूलकी मज़्बूती जो बिल्कुल अंधेरेमें रौशनीके मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हुई, महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी बुद्धिमानीसे समझना चाहिये. इस कौन्सिलका नाम इज्लासख़ास रक्खा गया और ऊपर लिखे हुए मेम्बरोंको महाराणा साहिबकी तरफ़से ख़ास रुक्के लिखेगये, जिनमेंसे मैं अपने रुक्केकी नक़्ल बतौर नमूनह नीचे लिखता हूं, और यही मज़्मून सब रुक्कोंका जानना चाहियेः-

ख़ास रुक्केकी नक़्ल.

नम्बर ४८ ॥ श्रीएकलिंगजी. ॥

श्रीबाणनाथजी. श्रीनाथजी.

॥ स्वस्तिश्री दधिवाडिया श्यामलदासजी जोग अपर ॥ म्हांको दिली इरादो यो है, कि राज्यको काम इन्साफके साथ चाले जीमें मुल्की बिहबूदी होवे अर अमनो आमान

रहे, ईवास्ते थाने इजलासखासका मेम्बर मुकरर किया गया है, सो थे वक़् इजलास ऐसी नेक राय देवे, कि महां की मुराद ऊपर जाहिर कीगई है वा हासिल होवे, संवत् १९३३ का वर्षे चेत वदि ७ भोमे.

———

इस कौन्सिलका जन्मदिन विक्रमी १९३३ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १२९४ ता० २४ सफ़र = ई० १८७७ ता० १० मार्च] को मानागया. कौन्सिलके नियत होनेसे पहिले इन्तिज़ामी हालत हुक्मके आधीन थी, और अब समयानुसार न्यायके तअल्लुक़ होकर में महाराणा साहिबके मन्शाके मुवाफ़िक़ कुल रियासती महकमोंको सलाह और मदद देनेपर मुक़र्रर हुआ, परन्तु इस कामको पार लगाने वाला सबसे बड़ा मददगार कर्नेल् इम्पी, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ था. इस समयमें माली कामोंकी तरफ़ भी तवज्जुह करनी पड़ी, और पहाड़ी ज़िलेका हाकिम पंडित रघुनाथराव, जिसकी शिकायत बहुत दिनोंसे सुनी जाती थी, इसवक़ चन्द आदमियोंके शिकायत पेश करनेपर राजधानीमें बुलाया गया. महाराणा साहिबने उसे बुलाकर फ़र्माया, कि तेरे रिश्वत लेने और रिआयाको तक्लीफ़ देने वग़ैरहकी बहुतसी शिकायतें सुनी गई हैं, और पहाड़ी रिआया तेरी बेईमानीके सुबूतमें ख़ास तेरे हाथकी तह्रीरें पेश करनेको कहती है; अगर ऐसाही हो, तो सच सच अ़र्ज़ करदेनेसे तेरा किसीक़द्र बचाव हो सक्ता है. इसपर उक्त पंडितने बड़ी मज्बूतीकेसाथ अ़र्ज़ की, कि इन बातोंमेंसे यदि एक भी सच्ची निकले, तो हुज़ूरकी मर्ज़ी हो सो सज़ा देवें. तब महाराणा साहिबने अपीलके हाकिम मौलवी अब्दुर्रहमानख़ांको मए कायस्थ ज़ोरावरनाथ माथुर, कायस्थ मोतीलाल भटनागर, ढींकड़िया जगन्नाथ तथा चन्द अहलकारोंके पहाड़ी ज़िलेकी तरफ़ तह्क़ीक़ातके वास्ते रवानह किया. इन लोगोंने मक़ाम केवड़ासे तह्क़ीक़ात शुरू की, और यहांसे ही दिन बदिन पंडितकी बे इन्साफ़ी, बेरहमी, और बेईमानी ज़ाहिर होने लगी. आख़रकार कुल पहाड़ी ज़िलेकी तह्क़ीक़ात होचुकनेपर ३०००००) तीन लाख रुपयेका ग़बन और रिश्वत रघुनाथरावपर साबित हुई, जिसकी सैकड़ों मिस्लें सुबूतोंके साथ तय्यार होकर तामीलके लिये महकमहख़ासमें भेजी गईं. पंडित रघुनाथराव और उसके मातहत अहलकार क़ैद कियेगये; क्योंकि इन लोगोंने सिर्फ़ रिश्वत और ग़बन ही नहीं किया, बल्कि भील वग़ैरह ग़रीब रिआयापर यहांतक ज़ुल्म किया, कि उनमेंसे सैकड़ों लोग अपने बालबच्चे बेचनेपर भी छुटकारा नहीं पाते थे.

इसी ज़िलेमें ऋषभदेवका एक प्रसिद्ध मन्दिर, जिसको जैन और वैष्णव दोनों मानते हैं, पहाड़ी ज़िलेके अहलकारोंके तअल्लुक़में होनेके सबब तह्क़ीक़ातके सीगहमें आया, जिसकी निस्बत मौलवी अब्दुर्रहमानख़ां व महासाणी मोतीलाल वग़ैरहकी रिपोर्टोंसे मालूम हुआ,

कि क़रीबन् एक लाख रुपया इस मन्दिरके ख़ास ख़ज़ानहका लोगोंने खुर्द बुर्द करडाला, जिसमें भंडारी जवाना और खेमराज सरगिरोह थे. पूरी पूरी तह्क़ीक़ात होकर मिस्लें मए सुबूतोंके पेश हुईं, जिसपर महाराणा साहिबने मन्दिरका उम्दह इन्तिज़ाम करके उदयपुरमें एक कमिटी बाज़ारके मोतबर साहूकारों व अह्लकारोंकी मुक़र्रर करदी, कि जिनकी रायसे मन्दिरका कुल इन्तिज़ाम उम्दह तौरपर हुआ करे, जो अबतक महकमह देवस्थानके तअ़ल्लुक़में उसीतरह क़ाइम है; और इसीतरह खैरवाड़ाकी लाइनके सवारोंपर रिसालदार हरदेवका जुल्म साबित होकर वह अपने उह्देसे मौकूफ़ करदियागया. यह तह्क़ीक़ाती कार्रवाई विक्रमी १९३४ चैत्र शुक्ल १ [हि० १२९४ ता० ३० सफ़र = ई० १८७७ ता० १७ मार्च] के बाद से शुरू होकर आषाढ़ और श्रावणके महीने तक ख़त्म हुई. इस तह्क़ीक़ातकी शाखें बहुत फैलगई थीं, इसलिये मस्लिहत समभकर बाज़की ख़ानगी तौरपर और बाज़की ऑफ़िशिअल तौरपर कुछ तामील करवाईजानेके बाद बाक़ी ज़ेर तज्वीज़ रक्खी गई, और पहाड़ी ज़िलेके अगले कुल हाकिम व अह्लकार मौकूफ़ होकर महता अखेसिंह उस ज़िलेका हाकिम मए नये अमलेके नियत कियागया, जिसके प्रबन्धके लिये राजधानीमें "शैलकान्तार सम्बन्धिनी सभा" के नामसे एक नया महकमह जानी मुकुन्दलालके सुपुर्द होकर महाराणा साहिबने इस ज़िलेको ख़ास अपनी निगरानीमें रक्खा. विक्रमी ज्येष्ठ [हि० रबीउस्सानी = ई० मई] में कुम्भलगढ़की तरफ़ दौरा हुआ, तब विक्रमी द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ९ [हि० ता० २२ जमादियुलअव्वल = ई० ता० ५ जून] को महाराणा साहिब सर्दारगढ़ पधारे, उसवक्त मनोहरसिंहको सोलह उमरावोंकी बराबर इज़्ज़त और सामनेकी लाइनमें शाहपुराके नीचे बैठक और गांव जैतपुरा, जो फ़ौजखर्चके रुपयोंकी बाबत् राज्यमें गिरवी था, वापस इनायत कियागया, और फ़ौजखर्चके रुपयोंमें बहुत कुछ छूट करनेके बाद जो रुपये बाक़ी रहे उनकी क़िस्तें बांधदी गईं. इसके अलावह ठाकुरका ख़िताब, पर्वानहमें सुप्रसाद, और नावमें ऊपर तख़्तके सामने बैठक वगैरह अव्वल श्रेणीके सर्दारोंके मुवाफ़िक़ कुल इज़्ज़तें इनायत करके वापस उदयपुर पधारगये. महाराणा साहिबने कुल मेवाड़का माली और मुल्की इन्तिज़ाम नये सिरसे करनेका पक्का इरादह करलिया था, परन्तु इस वर्षमें बहुत कम बारिश होनेके सबब पेश्तर क़हतका बन्दोबस्त करना पड़ा. पहाड़ी ज़िले और मेवाड़में तालाब वगैरह कारख़ाने जारी कियेगये, कि जिससे ग़रीब लोगोंको तक्लीफ़ नहो, और महाराणा साहिबने अपने इज़्ज़तदार पासबानोंमेंसे ४ आदमियोंको गिर्दावर मुक़र्रर किया, कि वे क़हतका बन्दोबस्त और इन्तिज़ामी हालतको दुरुस्त करनेकी रिपोर्ट करते रहें. इस कार्रवाईसे इन्तिज़ामकी हालत बदलकर दुरुस्त होने लगी.

अगर्चि इस कुल वर्षमें केवल १३ $\frac{1}{8}$ इंच बारिश हुई थी, लेकिन् महाराणा साहिबकी तरफ़से कारख़ाने जारी कियाजाना, और बाहिरसे गल्लह मंगाना वगैरह उम्दह बन्दोबस्त होगया, जिससे हज़ारों आदमियोंके प्राण बचगये. इस वर्षमें पहिली कार्रवाई तो पहाड़ी ज़िलेकी तह्क़ीक़ातकी हुई, और दूसरी यह कि उसी ज़िलेमें सर्कारी नौकर विलायती पठान जो रिआयापर बड़ा ज़ुल्म करते थे, याने पांच दस रुपया ग़रीब भीलोंको उधार देकर दोचन्द सिहचन्द ब्याज और काटा कसर वगैरह कई तरहसे रुपयोंकी तादाद सौ दोसौ तक बढ़ाकर उनके बाल बच्चोंको छीनलेते और उन्हें गुलाम बनालेते; सिवा इसके जब उनके मकानपर जा बैठते, तो उसवक़ हमेशह .उम्दह खाना और उनकी औरत व बच्चोंसे गुलामोंकी तरह ख़िद्मतका काम लेते. इसीतरहकी बहुतसी तक्लीफ़ोंसे तंग आकर जब बाज़ बाज़ भीलोंने विलायतियोंको मारडाला, तब सर्कारी नौकरका ख़ून होनेपर ज़ालिम हाकिमोंने फ़ौज भेजकर उस पालको बर्बाद किया, इसवास्ते महाराणा साहिबने ग़बनकी तह्क़ीक़ात होनेके बाद उन कुल विलायतियों को पहाड़ी ज़िलेसे उदयपुरमें बुलालिया. उनको पहाड़ी ज़िलेसे जुदा होना बहुतही नागुवार गुज़रा, और जब उनकी तह्क़ीक़ातके लिये मौलवी अब्दुर्रह्मानख़ां मुक़र्रर हुआ, तो तह्क़ीक़ातके वक़ फ़साद करने को तय्यार हुए, इसलिये उनको अपने डेरेपर जानेकी रुख़्सत दीगई. ये दोसौ विलायती लालीकी सरायमें ठहरे हुए थे, महाराणा साहिबने सूर्य निकलनेसे पेश्तर लोनार्गिन साहिब और महासाणी मोतीलालको दो पल्टन, दो तोप, और चार रिसालों समेत सरायपर भेजा. इन्होंने सूर्य निकलतेही सरायको जा घेरा, और ढींकड़िया जगन्नाथ व चन्द सर्दारोंको सूरजपोल दर्वाज़हके बाहिर इन्तिज़ामके लिये तईनात करके मुझ (कविराजा श्यामलदास) को कर्नेल् इम्पी पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़के पास इस मत्लबसे भेजा, कि शायद भागे हुए चन्द विलायती उधर आकर फ़साद न कर बैठें. फिर फ़ौजी अफ़्सरोंने विलायतियोंको कह-लाया, कि हथियार रखकर क़ैदमें चले आओ, वर्नह मारेजाओगे. इसपर पेश्तर तो उन लोगों ने हुज्जत की, लेकिन् आख़रकार हथियार छोड़कर फ़ौजकी क़ैदमें आगये. महाराणा साहिब ने बेक़ुसूरोंको नौकरीपर बहाल और दो चार फ़सादी अफ़्सरोंको क़ैदमें रखकर बाक़ी लोगोंको गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त हिन्दुस्तानकी हदके बाहिर निकलवादिया, जिससे ख़ूब रोब छागया और आजतक किसी विलायती पठानने बग़ावत व ज़ुल्मका नाम न लिया.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल १ [हि० ता० २९ शव्वाल = .ई० ता० ६ नोवेम्बर] को बागोरके कुंवर शार्दूलसिंहकी स्त्री महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी औरस माता नन्दकुंवरका देहान्त होगया. इनका सब रियासती लोगोंको बड़ा रंज हुआ, क्योंकि यह बड़ी फ़य्याज़, रहमदिल और हरएककी तक्लीफ़को दूर करनेवाली थीं. इसके बाद महाराणा

साहिबकी तीसरी शादी ईडरके महाराजा जवानसिंहकी छोटी कन्या केसरकुंवरबाईके साथ होना क़रार पाया. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २९ नोवेम्बर] को बरात रवानह होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ता० १ ज़िल्हिज = .ई० ता० ७ डिसेम्बर] को ईडर पहुंची, और उसीदिन विवाह हुआ; विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि० ता० १० ज़िल्हिज = .ई० ता० १६ डिसेम्बर] को महाराणा साहिब वहांसे रवानह होकर मूंडेटी, पाल और खैरवाड़े होकर विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = .ई० ता० २८ डिसेम्बर] को गोवर्द्धनविलासमें पहुंचे. जाड़ेका मौसम होनेके सबब इस सफ़रमें किसी तरहकी तक्लीफ़ न हुई.

इसके बाद महाराणा साहिब चारभुजा, कुम्भलगढ़ और राजनगरकी सैर करके नाहरमगरे पधारगये. इसी अ़रसहमें एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह स्केअर लॉयल साहिब देसूरी के रास्तेसे राजनगर आये, महाराणा साहिब उक्त साहिबके आनेसे पहिले ही नाहरमगरेसे राजनगर पहुंच गये थे, विक्रमी माघ शुक्ल १२ [हि० १२९५ ता० ११ सफ़र = ई० १८७८ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को मुलाक़ात होकर नमकके बारेमें बातचीत हुई. गवर्मेण्टकी तरफ़से मिस्टर होम, वाइसरॉयकी कौन्सिलका मेम्बर और पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् इम्पी, और महाराणा साहिबकी तरफ़से मैं (कविराजा श्यामलदास) और महता राय पन्नालालने इस मुआमलहमें बातचीत की. बहुत कुछ बहस होनेके बाद नमककी राहदारी और खारी नमक मौक़ूफ़ होनेका हर्जानह और मेवाड़की रिआ़याके लिये दो लाख मन नमक एक रुपये मनके हिसाबसे और दो हज़ार मन नमक बिना क़ीमत ख़ास कोठार ख़र्चके लिये पचभद्रासे देना क़रार पाया. इसके बाद उक्त साहिब लोग दौरेपर रवानह हुए, और महाराणा साहिब भी विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० ता० १८ सफ़र = ई० ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को नाहरमगरे होकर उदयपुर पधारगये. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ६ [हि० ता० १९ सफ़र = ई० ता० २२ फ़ेब्रुअरी] को बम्बईके गवर्नर सर रिचर्ड टेम्पल उदयपुर आये, १७ तोप सलामीकी सर हुई, और पेश्वाईके एवज़ महाराणा साहिब कोठीपर जाकर मिल आये, रौशनी व खाना वग़ैरह होकर विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ९ [हि० ता० २२ सफ़र = ई० ता० २५ फ़ेब्रुअरी] को उक्त साहिब वापस गये.

अब हम वह बात लिखते हैं, जो कि महाराणा साहिबकी .उम्दह कार्रवाइयोंमेंसे एक है, याने शहर उदयपुरमें हमेशह चोरियोंका होना और हर साल दो चार ख़ून होकर क़ातिलों का भागजाना, शहरके बाज़ार व गली कूचोंका गन्दा रहना, गाय, भैंस, सांढ, बकरे वग़ैरह लावारिस मवेशीका कस्रतसे बाज़ार और गलियोंमें घूमना देखकर इसबातका बन्दोबस्त करनेके लिये महाराणा साहिबका इरादह हुआ. इसी अ़रसहमें महता शेरसिंहकी

हवेलीपर एक गुसाई पहरा दे रहा था, उसको किसीने गोलीकी देकर मारडाला, और क़ातिलका पता न लगा, तब महाराणा साहिबने पुलिसका .उम्दह इन्तिज़ाम करनेके लिये मुझे फ़र्माया. मैंने अर्ज़ की, कि विक्रमी १९३० [हि० १२९० = .ई० १८७३] में महाराणा शम्भुसिंह साहिबने भी इन बातोंका बन्दोबस्त करनेके लिये हुक्म दिया था, लेकिन् मज़्हबी और हिमायती लोगोंके हुल्लड़से उनको अपना इरादह छोड़ना पड़ा. इसपर उन्होंने मुस्तइदीके साथ फ़र्माया, कि मैं इस बन्दोबस्तको बिदून पूरा किये न छोडूंगा; तब मैंने अर्ज़ की, कि इस काममें इतनी बातोंकी ज़ुरूरत है- अव्वल तो श्री हुज़ूरको अपने हुक्मकी पाबन्दी रखना; दूसरे इस कामके लिये एक ज़ी .इज़्ज़त, दिलावर, मिह्नती और आलिम व तजर्बेहकार अफ्सरका नियत होना; तीसरे उस अफ्सर की मददके लिये आला मुसाहिबोंमेंसे किसी शख़्सका मुक़र्रर कियाजाना; और चौथे शुरू इन्तिज़ाममें .इब्रतके लिये अगर चन्द सख़्त सज़ाएं भी देनी पड़ें, तो शिकायत होनेपर उनके लिये नर्म हुक्म न हो, क्योंकि ऐसे हुक्मसे लोगोंको हौसिलह होकर काममें हमेशह खलल पड़ेगा. तब महाराणा साहिबने ये सब बातें क़बूल फ़र्माकर कर्नेल् इम्पी साहिबको बुलाया, और मैंने ऊपर बयान कीहुई बातें पेश कीं. साहिब बहादुरने भी मेरी रायको पसन्द फ़र्माकर इस कामके पूरा करनेकी सलाह दी. महाराणा साहिबने पूछा, कि इस कामका अफ्सर नियत कियाजानेके लाइक़ कौन शख़्स है ? मैंने अपीलके हाकिम मौलवी अब्दुर्रह्मानखांकी सिफ़ारिश की. महाराणा साहिबने उक्त मौलवीको सुपरिंटेंडेंट पुलिस और मुझको उसका मददगार बनाया. इस कार्रवाईके करनेमें बहुतसी दिक़्क़तें पेश आईं, जिनमेंसे कुछ यहांपर लिखी जाती हैं. जोकि बाज़ारोंमें लावारिस सांड और बकरोंके फिरनेके सबब कई आदमी उनकी टक्करसे ज़ख़्मी होते और ग़ल्लह फ़रोशों व शाक तर्कारी बेचने वालोंका नुक्सान होता था और सैकड़ों पत्थर व लकड़ियोंकी चोटोंसे वे भी खुद मारे मारे फिरते थे, इसलिये इन पशुओंको आरामसे रखनेके वास्ते एक गोशाला (कांजी हाउस) बनाई गई, जहां घास और ख़िद्मतगारोंका पूरा बन्दोबस्त होकर बाज़ारोंमें से अनाथ पशुओंको घेरनेका हुक्म दियागया. कान्स्टेबलोंको सांड घेरते देखकर बाज़ारके महाजनोंने एकदम हुल्लड़ करके हड़ताल डालदी. चन्द बदमआशोंने, जिनके दिलोंमें ऋषभदेवकी तह्क़ीक़ातसे जलन उठ रही थी, इस बग़ावतके मुखिया बनकर सेठ चम्पालाल को अपना सरगिरोह बनाया. चम्पालाल अगर्चि अपनी ज़ातसे सीधा सादा और नेक मिज़ाज आदमी था, लेकिन् इन दूसरे चालाक आदमियोंके दममें आकर महाराणा साहिबसे सामना करनेको तय्यार होगया, परन्तु मुसल्मान बोहरे, जो उदयपुरमें बड़े व्यापारी हैं, उनके शरीक न हुए, और कहा कि हम महाराणा साहिबसे सामना करके उनके बदख़्वाह नहीं बन

सके. हटनाल खोलनेकी बहुतसी कोशिशें कीगईं, परन्तु कुछ कारगर न हुईं, तब विक्रमी १९३४ फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० १२९५ ता० ६ रबीउल्अव्वल = ई० १८७८ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] की रातको सेठ चम्पालाल, बोरधा तिलोकचन्द, चौधरी भीमराज, सिंगवी गुलाबचन्द और शूरपुरया साहिबलालको उनके घरोंसे गिरिफ़्तार करके महलोंमें क़ैद करदिया. दूसरे दिन प्रातःसमय कर्नेल् इम्पी साहिब महाराणा साहिबके पास आये, और इन पांचों मुखियाओंको बुलाकर समझाया. पेश्तर तो उन्होंने पूरी बगावतकी बातें कीं, लेकिन् पीछे धमकानेसे होशमें आकर हटनाल खोलदी. उसी दिनसे महाराणा साहिबने नगरसेठ और चारों चौवटिया लोगोंकी ताक़त बेफ़ायदह जानकर बोहरा लोगोंके गिरोहको उनसे अलहदह रखनेकी पॉलिसी रक्खी. इस बारेमें पुलिसकी कुल कार्रवाई लिखनेसे बयानको तवालत होनेके सबब हम मुख़्तसर तौरपर सिर्फ़ इतनाही लिखते हैं, कि पुलिसके नियत होनेसे कई काम सीगृह पुलिस अथवा ग़ैर सीगृहके भी दुरुस्त हुए. मुतालबह ख़फ़ीफ़ह, जिससे छोटे छोटे लेनदेनमें सुभीता हुआ, इन्सदाद वारिदातका पूरा पूरा इन्तिज़ाम, मुह्ताजख़ानह और पागलख़ानहका खोला जाना, गोशाला (कांजी हाउस) का क़ाइम होना, आवारह कुत्तोंका बन्दोबस्त, लड़के लड़कियोंके गुम होजानेको रोकनेका प्रबन्ध, गिराहुआ माल अस्ली मालिकको मिलनेका प्रबन्ध, रौशनी व शहर सफ़ाईका बन्दोबस्त, आम सड़कों व गली कूचोंमें बेजा मकान बढ़ानेकी रोक टोक, शाक तर्कारी व मेवा बेचने वालोंसे चुंगी मुआफ़ होकर उनका मुनासिब प्रबन्ध कियाजाना, वग़ैरह कई बन्दोबस्त नवीन होकर शहरको पूरा पूरा आराम मिला. इस पुलिसके इन्तिज़ामको रोकने के लिये मज्हबी, मत्लबी, हिमायती और असूयक लोगोंने बहुत कुछ हमले किये, लेकिन् महाराणा साहिबकी क़ाइम मिज़ाजी और मौलवी अब्दुर्रहमानख़ांकी कारगुज़ारी व लाला केसरीलाल इन्स्पेक्टर वग़ैरह होशयार अह्लकारोंकी तन्दिहीसे यह इन्तिज़ाम बहुत अच्छा होगया.

दूसरा बड़ा काम महाराणा साहिबने यह किया, कि सेटलमेण्टका बन्दोबस्त करनेके लिये गवर्मेण्टसे पेश्तर एक उम्दह अफ़्सर तलब किया. इस कामकी सलाह देनेके वास्ते कर्नेल् इम्पी साहिब पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़की रिपोर्टको कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने फ़ॉरिन् ऑफ़िसमें भेजकर पश्चिमोत्तर देशके सेटलमेण्ट ऑफ़िससे डब्ल्यु० एच० स्मिथ साहिबको बुलाया. उसने एक महीनेतक मेवाड़के ज़िलोंमें दौरा करके सेटलमेण्ट जारी करनेके लिये एक उम्दह रिपोर्ट की, जिसमें बहुतसी बातें जुग्राफ़ियह सम्बन्धी जानकर इस जगह दर्ज नहीं की गई हैं. सेटलमेण्टके लिये उसकी यह राय थी, कि यह काम लगातार जारी रखनेसे ४ वर्षमें ख़त्म होसक्ता है, और ख़र्च नीचे लिखे मुवाफ़िक़ होगाः-

छः सौ मील मुरब्बा या सात लाख उन्नीस हज़ार दोसौ सत्तावन बीघा जोती हुई ज़मीनका दो रुपया सौ बीघाके हिसाबसे, और तीन हज़ार छःसौ अस्सी मील मुरब्बा या चालीस लाख ग्यारह हज़ार चार सौ बयालीस बीघा परतल ज़मीनपर एक रुपया सौ बीघाके हिसाबसे सर्वेका ख़र्च ६००००) साठ हज़ार रुपया होगा.

सेटलमेण्ट अफ्सरकी तन्ख़्वाह १२००) रुपया मए माहवार तीन सौ रुपया पेन्शन छुट्टीके फ़एडके ४ वर्षके लिये ७२०००); और १२० खतौनी मुहर्रिर, हरएक १० रुपये माहवारका तीस महीनोंके लिये ३६०००) माहवार; तीन सद्र मुन्सरिम हरएक रु० १००) माहवारका, ४२ महीनोंके लिये १२६००); १५ मुन्सरिम तीससे पचास माहवार तकके, ४२ महीनोंके लिये २३१०००) रुपया; दफ्तर ख़र्च १२०००) रुपया, १२० प्लेनटेबल मए ज़ंजीर वग़ैरह ४०००) रुपयेके; सरिश्तहदार ६०) रुपया माहवारका, चार वर्षके लिये २८८०; बारह अहलमद २५) रुपये माहवारके तीन वर्षके लिये उसके १०८००) रुपये; और दूसरा ख़र्च २७७३५); जुम्लह ३०९९१५) या क़रीब ३१००००) के.

महाराणा साहिबने स्मिथ साहिबको ही इस कामके लिये रखना चाहा था, परन्तु उसने .उज़्र किया, कि मेरी तन्दुरुस्ती ठीक नहीं है, इसलिये मैं फ़र्लो छुट्टी लेकर विलायत जाऊंगा. स्मिथ साहिबके जाने बाद कुछ अरसहतक यह काम मुल्तवी रहा, क्योंकि महाराणा साहिबने गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे एक तजर्बहकार सेटलमेण्ट ऑफ़िसरके मिलनेकी इच्छा प्रगट की थी. अफ्सोस कि ऐसी तरक़्क़ी और इन्तिज़ामकी तब्दीलीके समय कर्नेल् इम्पी, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रबीउ़ल्अव्वल = ई० ता० १८ फ़ेब्रुअरी] को तरक़्क़ी पाकर नयपालकी रेज़िडेन्सीपर चलागया. इस शख़्सने महाराणा साहिबको नेक सलाह और दोस्तानह बर्तावसे बहुत कुछ मदद दी, और उदयपुरसे जाते समय रेज़िडेन्सीमें एक दर्बार किया, जिसमें मुझ (कविराजा श्यामलदास) को क़ैसरि हिन्दकी तस्वीरका चांदीका मेडल गलेमें पहिनाकर यह कहा, कि आपने जो महाराणा साहिबको नेक सलाह और अ़क़्लमन्दीके साथ मदद दी, उसके एवज़ गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी तरफ़से यह मेडल आपको दिया जाता है. मैंने इसके जवाबमें शुक्रियह अदा करके कहा, कि मैं इस मेडलके मिलनेसे इतना ख़ुश न हुआ, जितनाकि आपके इस कलामसे, कि महाराणा साहिबको मैंने नेक सलाह दी, क्योंकि कई ख़ुदमत्लबी लोग मुझको अपना मत्लब बिगड़नेसे बुरा मश्हूर करते हैं. फिर कर्नेल् इम्पीने मुझको एक चिट्ठी दी, जिसमें मेरे नेक चालचलनका बयान था. मैंने दोनों चीज़ महाराणा साहिबके नज़ करदीं. उन्होंने मुझको वापस

.इनायत करके चीठीपर लिखदिया, कि हमने खुश होकर यह चिट्ठी .इनायत की है.

इसी वर्षमें एक बहुत बड़ा काम यह कियागया, कि नवलखा बाग़के महलोंमें विक्रमी १९३४ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० १२९४ ता० २० जमादियुस्सानी = ई० १८७७ ता० २ जुलाई] को देशहितैषिणी सभा क़ाइम हुई, जिसमें बड़े बड़े नेक कामोंकी बुन्याद डाली गई थी, जिसका वृत्तान्त विद्यमान महाराणा श्री फ़त्हसिंह साहिबके हालमें वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभाके साथ लिखा जायेगा.

विक्रमी १९३५ चैत्र शुक्ल १० [हि० १२९५ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० १८७८ ता० १२ एप्रिल] को मेजर केडल मेवाड़का पोलिटिकल ऐजेण्ट मुक़र्रर होकर उदयपुरमें आया. यह एजेण्ट भी महाराणा साहिबका मददगार बना रहा. अब महाराणा साहिबको मेवाड़के मुल्की इन्तिज़ामकी फ़िक्र हुई. इसवक़ मेवाड़में छोटे बड़े तीस पर्गने गिनेजाते थे, जिनमेंसे बाज़ बाज़ तो एकही गांवके और बाज़ ज़िलेवार थे, जैसाकि डब्ल्यु० एच० स्मिथ साहिबने अपनी रिपोर्टमें लिखा है, और पांच मुल्की नाइब फ़ौज्दारोंसे फ़ौज्दारी का इन्तिज़ाम होता था. इन नाइब फ़ौज्दारोंसे बहुत फ़ायदह हुआ, याने फ़ौज्दारी इन्तिज़ामकी जड़ मुल्कमें क़ाइम हुई, लेकिन् इसवक़ यह सोचा गया, कि नाइब फ़ौज्दार और हाकिमोंका जुदा जुदा प्रबन्ध रहनेसे इख़्तिलाफ़ रायके सबब रिआयाकी ज़ेरबारीका अन्देशह है. आख़रकार नियाबतको तोड़कर ग्यारह निज़ामतें बनाई गईं, जिनमें दस माली व इन्तिज़ामी और एक साइर है. ज़िले मगरेका हाकिम महता अक्षयसिंह, ज़िले गिरवाका हाकिम महता तख़्तसिंह, ज़िले कुम्भलगढ़का हाकिम कायस्थ ज़ोरावरनाथ, ज़िले सहाड़ांका हाकिम महता रघुनाथसिंह, ज़िले राशमीका हाकिम महता गोपालदास, ज़िले छोटी सादड़ीका हाकिम महता केसरीसिंह, ज़िले चित्तौड़गढ़ का हाकिम ढींकड़िया जगन्नाथ, ज़िले मांडलगढ़का हाकिम महता विठ्ठलदास, ज़िले जहाज़पुरका हाकिम महता लक्ष्मीलाल, ज़िले भीलवाड़ाका हाकिम कश्मीरी पंडित रामनारायण और देश दाणका हाकिम कश्मीरी पंडित ब्रजनाथ नियत किया गया. इन लोगोंकी तन्ख़्वाह अव्वल दरजह २००) और दूसरे दरजह १५०) रुपया माहवार मुक़र्रर कीगई, और मैजिस्ट्रेटीके इख़्तियारात दियेजाकर ज़ुरूरतके मुवाफ़िक़ दीवानी व फ़ौज्दारीका अमलह भी क़ाइम किया गया. इस इन्तिज़ामका पूरा हाल हम जुग्राफ़ियहमें लिख आये हैं. इसवक़ महाराणा साहिब व पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ और महकमहख़ास (महता राय पन्नालाल) की तथा मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) व माली व मुल्की हाकिमोंकी एक राय होकर इन्तिज़ामी हालतमें दिन बदिन तरक़्क़ी होने लगी. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रमज़ान = ई० ता० ३ सेप्टेम्बर] को बेदलाके राव बहादुर राव बख़्तसिंहको

"कम्पेनिअन इन्डिअन एम्पाइर" याने सी० आइ० ई० का खिताब और तमगृह गवर्मेएट हिन्दकी तरफ़से आया, जो महाराणा साहिबके सामने दर्बारमें पोलिटिकल एजेएटने दिया.

अब मैं महाराणा साहिबके दौरेका हाल लिखता हूं, जो उन्होंने अपने किये हुए इन्तिज़ामकी निगरानीके लिये किया था. मार्गशीर्ष महीनेके प्रारम्भमें इस दौरेका इरादह कियागया, लेकिन् इसी अ़रसहमें महाराणा साहिबके पेटमें बड़े ज़ोर शोरसे दर्द चलने लगा; कई दिनतक डॉक्टर पादरी शेपर्ड व रेज़िडेन्सी सर्जन डॉक्टर बीटसन् और महाराणा साहिबके मुख्य डॉक्टर अक्बरअ़लीका इलाज होता रहा, मगर दर्दमें कुछ फ़र्क़ न पड़ा, तब आब हवा बदलनेके लिये नाहरमगरे पधारे. वहां जानेसे आधा फ़र्क़ मालूम होनेपर दौरेका इरादह पक्का करके विक्रमी १९३५ मार्गशीर्ष शुक्ल ४ [हि० १२९५ ता० ३ ज़िल्हिज = ई० १८७८ ता० २८ नोवेम्बर] को नाहरमगरेसे रवानह होकर बाठर्डे पहुंचे. रावत् दलेल-सिंहने कुल फ़ौजको बहुत उ़म्दह दावत दी, और महाराणा साहिबको घोड़ा व सरोपाव नज़ करके चारणों, अह्लकारों, तथा पासबानोंको सरोपाव दिये. महाराणा साहिबने भी दलेल-सिंहपर खुश होकर उसे नशिस्तमें तरक्की देनेके अ़लावह ख़िल्अ़त वग़ैरह इनायत किये. इसी दिनसे महाराणा साहिबकी बीमारी बिल्कुल जाती रही. महाराणा साहिबके साथ क़रीब ५००० आदमियोंकी भीड़भाड़ थी, लेकिन् मुल्की सर्दारों वग़ैरहकी आमदो-रफ्तसे कभी ६००० और कभी ७००० और कभी ८००० तक घटबढ़ जाती थी. इसवक़ भींडरका महाराज हमीरसिंह बहुत बीमार था, तोभी महाराणा साहिबकी मिह्-मान्दारीके लिये भींडरमें बड़ी धूमधामसे तय्यारी कीगई, परन्तु ईश्वरकी कुद्रतसे महाराणा साहिब बाठर्डे पधारे उसी दिन हमीरसिंहका इन्तिकाल होगया. यह सर्दार फ़य्याज़ी और मिलनसारीमें मश्हूर और नामवर था. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० ता० २९ नोवेम्बर] को महाराणा साहिबका मक़ाम कान्होड़ ग्राममें हुआ. रावत् उम्मेदसिंहने बड़े अदब व आदाब और मुहब्बतके साथ मिह्मान्दारी करके हाथी, घोड़ा, सरोपाव और ज़ेवर वग़ैरह नज़ किया. महाराणा साहिबने भी उसे ख़िल्अ़त वग़ैरह इनायत करके मिहर्बानी की. दूसरे रोज़ वहांसे बोहड़े रावत् अदोतसिंहके यहां भोजन करके बानसीके रावत् मानसिंहके मिह्मान हुए. वहां भी अच्छी तरह पधरावनी हुई, और दूसरे रोज़ विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ता० ६ ज़िल्हिज = ई० ता० १ डिसेम्बर] को बड़ी सादड़ी तश्रीफ़ लेगये. राज शिवसिंहने बड़ी मुहब्बत और स्वामिभक्तिके साथ पेश्वाई, पगमंडे वग़ैरह अदब आदाबकी रस्में अदा करके दो रोज़तक धूमधामके साथ मिह्मान्दारी की, और हाथी, घोड़े, ज़ेवर, सरोपाव वग़ैरह नज़ करके चारण, अह्लकार व पासबानोंको

भी सरोपाव दिये. महाराणा साहिबने भी इस मौकेपर शिवसिंहको "राज राणा" का ख़िताब और ख़िल्अ़त .इनायत किया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ ज़िल्हिज = .ई० ता ३० डिसेम्बर] को छोटी सादड़ीमें मक़ाम हुआ. दूसरे रोज़ वहां मक़ाम करके कालाखेत वग़ैरह वीरान ज़मीनोंको मुलाहज़ह फ़र्माकर दीवानी, फ़ौज्दारी व माली कामों तथा रिआ़याके हालात दर्याफ़्त किये. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ११ [हि० ता० १० ज़िल्हिज = .ई० ता० ५ डिसेम्बर] को नीमचकी छावनी पहुंचे, जहां मैजिस्ट्रेट सद्र व कर्नेल् फ़ौज तथा नीमचका सूबा पेश्वाईको आये, और २१ तोपें सलामीकी सर हुईं. दूसरे रोज़ मक़ाम करके विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १३ [हि० ता० १२ ज़िल्हिज = .ई० ता० ७ डिसेम्बर] को अंग्रेज़ी फ़ौजकी जर्नेली क़वाइद देखी और अठाणे, कणेरे तथा बेग़म होते हुए विक्रमी पौष कृष्ण ३ [हि० ता० १७ ज़िल्हिज = ई० ता० १२ डिसेम्बर] को मांडलगढ़में दाख़िल हुए; वहांपर क़िले और ज़िले की निगरानी करनेके बाद सतपड़ा पहाड़में शिकार और बीजोलियाकी दावत क़ुबूल करके विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० १७ डिसेम्बर] को अमरगढ़ और विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ ज़िल्हिज = ई० ता० १८ डिसेम्बर] को जहाज़पुर पहुंचे. दूसरे रोज़ ईटूंदा वग़ैरह ज़िला देखते हुए देवलीकी छावनी और वहांसे राजमहलोंकी तरफ़ तशरीफ़ लेगये. विक्रमी पौष कृष्ण १२ [हि० ता० २६ ज़िल्हिज = ई० ता० २१ डिसेम्बर] को वापस जहाज़पुर आये, और वहां की रिआ़या व इन्तिज़ामी हालतको मुलाहज़ह फ़र्माकर महता राय पन्नालाल और उसके भाई लछमीलालकी कोशिशसे कुएं व तालाब बनवाने और मद्रसह जारी करने वग़ैरह .उम्दह बन्दोबस्त किये. फिर विक्रमी पौष शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० ता० २४ डिसेम्बर] को वहांसे रवानह होकर विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्हिज = ई० ता० २५ डिसेम्बर] के दिन इस इतिहासके कर्त्ता (कविराजा श्यामलदास) के गांव ढोकलिये पधारे. उस वक़्त महाराणा साहिबके साथ शाहपुराका राजाधिराज नाहरसिंह, बनेड़ाका राजा गोविन्दसिंह, सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, भदेसरका रावत् भोपालसिंह, ताणाका राज देवीसिंह, हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह, मगरोपका बाबा गिरवरसिंह, काकरवाका उदयसिंह वग़ैरह और कुल खैराड़ व पूर्वी मेवाड़के सर्दार, क़रीब ७-८ हज़ार आदमियोंकी भीड़-भाड़ थी. महाराणा साहिबने मेरे बनवाये हुए मकानमें विराजकर मए फ़ौजके रूखी सूखी दावत क़ुबूल फ़र्माई. अगर्चि पेश्तर ही मुझको बहुत कुछ इ़ज़्ज़त इनायत होचुकी थी, लेकिन् इसवक़ "कविराजाका ख़िताब" और ख़ास रुक़्क़ेमें जुहार बख़्शनेके अलावह

अजाची (महाराणाके सिवा दूसरेसे न मांगनेवाला) बनाकर इस दरजहके मुताबिक़ जायदाद .इनायत करनेका मुजरा और नज़ानह करवाया, और पहिले जो बड़ी मुहर .इनायत की थी उसीके मुताबिक़ चरण शरणकी दूसरी छाप बख़्शी, जिसमें यह श्लोक खुदा है:-

श्लोक.

राणाश्रीसज्जनेन्द्रस्य चरणाब्जप्रसादत: ॥
कविराजपदख्यातश्यामलस्यैव मुद्रिका ॥ १ ॥

इसके सिवा मुझको पैरमें सुवर्णके तोड़े व ख़िल्अ़त और मेरे बन्धु तगैरहको कंठी व ख़िल्अ़त इनायत करके बरसल्यावास, पारसोली व बसी होते हुए विक्रमी पौष शुक्ल ५ [हि० १२९६ ता० ३ मुहर्रम = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को चित्तौड़ पहुंच-गये. विक्रमी पौष शुक्ल १० [हि० ता० ९ मुहर्रम = ई० १८७९ ता० ३ जैन्युअरी] को वहांसे चले और काकरवेमें उदयसिंहके यहां दावत अरोगकर ताणे पधारे. राज देवीसिंहको नशिस्तमें तरक़्क़ी दी और ख़िल्अ़त इनायत किया. दूसरे रोज़ देवीसिंहकी तरफ़से कुल फ़ौजको दावत दीगई. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ मुहर्रम = ई० ता० ५ जेन्युअरी] को नाहरमगरे और विक्रमी माघ शुक्ल १ [हि० ता० २९ मुहर्रम = ई० ता० २३ जैन्युअरी] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. इस इन्तिज़ामी वर्षके ख़त्म होनेपर सब उ़हदहदारोंने अपने अपने उ़हदोंकी सालियानह रिपोर्टें पेश कीं, जिनका मुख़्तसर हाल नीचे लिखाजाता है:—

जबसे महाराणा साहिबने मुल्की इन्तिज़ाम हाथमें लिया, तबसे जमामें तरक़्क़ी, ख़र्चमें किफ़ायत और इन्तिज़ामकी दुरुस्ती होनेके अ़लावह प्रजाको हरतरह आराम रहा. इन बातोंकी तफ़्सील तवारीख़में लिखना तवालतमें दाख़िल है. इज्लासख़ास नामी कौन्सिलके बनने और ज़िलोंमें दीवानी व फ़ौज्दारीका सुधार होनेसे प्रजाको पूरा पूरा इन्साफ़ मिलने लगा, और अहलकारोंको भी ज़ाबितहकी कार्रवाई करनेका ढंग याद करनेसे ज़मानहके मुवाफ़िक़ हौसिलह होने लगा. विक्रमी १९३३ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १२९४ ता० २४ सफ़र = ई० १८७७ ता० १० मार्च] से विक्रमी १९३५ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० १२९५ ता० १३ रजब = ई० १८७८ ता० १४ जुलाई] तक इस कौन्सिल (इज्लास-ख़ास) में १२०३ मुक़द्दमे फ़ैसल हुए, जिनमें ६७३ दीवानी, ४४३ फ़ौज्दारी, ३० रेजिस्टरीके, २५ महकमह मालके, १३ फ़ौजके, और १९ ज़िले मगराके थे. कौन्सिलके प्रारंभ समयमें इतनी मिस्लोंका फ़ैसल होना मेम्बरोंकी तन्दिही और अ़दालतके सरिश्तहदार मुन्शी अ़ली हुसैनकी उ़म्दह कारगुज़ारीका नतीजह समझना चाहिये.

अब हम माली सीग़ेके बन्दोबस्तका थोड़ासा नमूनह दिखलाना चाहते हैं, जिसमें

बड़े उलझाड़का सीगह साइर था, उसका इन्तिज़ाम महाराणा साहिबकी बुद्धिमानी व उनके खैरख्वाह अहलकारोंकी तन्दिहीसे दुरुस्त कियागया. साइरका शाहानह इख्तियार मेवाड़के राजाओंको ज़मानह क़दीमसे हासिल है, जैसा कि चित्तौड़गढ़पर रामपोल दर्वाज़हके बाहिरी तरफ़ दक्षिणी दीवारपर विक्रमी १५९३ की प्रशस्ति (देखो महाराणा उदयसिंह का प्रकरण, पृष्ठ १४२) से ज़ाहिर है, और मुसल्मानोंकी बादशाहतके ज़मानहमें आलमगीरके अह्दमें महाराणा दूसरे अमरसिंहने जो घोड़ोंके सौदागरको राहदारीका पर्वानह (१) दिया था, उससे भी साबित है, लेकिन साइरका लगान मरहटोंके ग़द्रमें बिल्कुल बर्बादीकी हालतको पहुंच चुका था. कर्नैल् टॉडने जिसतरह दूसरे रियासती सीगोंपर निगाह डाली उसी तरह इस सीगहमें भी खूब दिल लगाया. पहिले इस काममें ज़ियादहतर ठेका या मुकाता होता था; विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] तक इस रक़मकी यही हालत रही, और अक्सर सेठ ज़ोरावरमल्ल इस रक़मका ठेकेदार रहा. महाराणा स्वरूपसिंहने ठेका तोड़दिया, और ख़ालिसहमें रखकर कोठारी केसरीसिंहको दारोगह साइर बनाया. इस शख्सने बड़ी तन्दिहीके साथ समुद्रको कूज़ेमें किया, याने सैकड़ों चीज़ोंकी लगान क़ाइम करके ज़बानी जमा खर्चको बहियोंमें दर्ज किया, और उसके बाद दो वर्ष केशवराम झंवर, ५ वर्ष गोविन्दराव पण्डित, फिर प्रतापमल्ल झंवर, उसके पीछे केवलराम भंडारी, जिसके बाद विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] तक

---

(१) पर्वानहकी नक़ल.

॥ श्रीरामोजयति ॥

॥ श्रीगणेसजी प्रसादातु ॥ ॥ श्रीएकलींगजी प्रसादातु ॥

स्वस्तिश्री ऊदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसींघजी आदेसातु, समस्त दाण्या कस्य, १ अप्र सोदागर इलयारषांरा घोड़ा १८, रोड २, ऊंट २, मुरादषांरे घोड़ा १६, रोड ४, ऊंट ३ लेजाए हे, सो रोकण मत करे, सं० १७५५ अषे मगसर सुदी ५ रीउ.

डालचन्द बाबेलने काम किया. फिर यह काम पण्डित ब्रजनाथके हाथमें आया. हम कहसके हैं, कि इस सीगहकी तरक्क़ी और दुरुस्ती करनेवाले तीन शख़्स समझने चाहियें, याने अव्वल कर्नेल् टॉड, दूसरा कोठारी केसरीसिंह और तीसरा पण्डित ब्रजनाथ. इस काममें तरक्क़ी करनेकी बनिस्बत दुरुस्ती करनेमें ज़ियादह मिह्नत दर्कार थी. विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] से विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] तक का नक्शह हम नीचे लिखते हैं, जिससे जमा ख़र्चका हाल मालूम होगाः-

जमा ख़र्च संवत् १९०८ से १९३४ तक.

संवत्.	आमदनी.	ख़र्च.	कैफ़ियत.
१९०८	३८७२४७।।। – ॥	५८११३।	
१९०९	३८६२८९ ॥ ≡ ।	६०९६१ ॥ – ॥	
१९१०	३४६१११ ।।।)।।।	५९६४२ ।।।)॥	
१९११	३६२५४७ – ।।।	६१०४५ ।।। ≡ ॥	
१९१२	३६६६०८	६२३६४ । = ।।।	
१९१३	३८९७१४ ॥ = ।	५९३११ ।।। ≡ ॥	
१९१४	४३७८९६ ॥	५९०४८ ।।।)॥	
१९१५	४४७७३२	५७५८२ ।।।)।।।	
१९१६	४७८०१५ ॥	५८६२३ ॥)।	
१९१७	४३२४४४ ≡ ।	५८७९९ = ।।।	
१९१८	३९८५६१ – ।।।	५५६३४ –	
१९१९	४२६०३५ । ≡	६२७९१ ≡ ।	
१९२०	४४९३१५ । = ।	६९३२४ ॥ ≡ ।।।	
१९२१	४१६७१७ ॥ = ।	७२३०० । – ।।।	
१९२२	३८३८६७ ।।। – ।	७०८४६	
१९२३	३८२४६१ ॥)।	७४४५६ ≡	
१९२४	४४९३१४ । – ।	६७६४१ – ।	

१९२५	२९८६१४॥॥≡॥	६४६८९॥।⁄॥	
१९२६	३४६५७० –	६३३५७॥–॥।	
१९२७	४९१६१४ ≡॥।	६७२८०॥।≡॥।	
१९२८	५५३८९०॥⁄॥	७०९२६ –	
१९२९	४८८७४६ =	७०९७६।⁄॥	
१९३०	५५४५३५॥≡॥	७०८०१।–॥	
१९३१	४९७५२६	६९०७५॥=॥	
१९३२	४७९८८७।=॥।	६९४५८ ≡।	
१९३३	५२४९२१॥–।	७१३७८३ ≡।	
१९३४	४७९०६३॥≡॥।	६९१२६	
मीज़ान	११६५६०५२॥–॥।	१७५५५५८॥≡॥	फ़ी सदी आमदनी पर १५ ख़र्च हुआ.
औसत	४३१७०५॥=/२	६५०२०॥≡/१	

अब हम विक्रमी १९३६ [हि० १२९६ = .ई० १८७९] से अगला हाल शुरू करते हैं. उक्त विक्रमीके प्रारम्भमें चैत्र शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रबीउस्सानी = .ई० ता० १ एप्रिल] को महाराणा साहिब मए ज़नानहके उदयपुरसे प्रस्थान करके नाहरमगरा व नाथद्वारा होते हुए राजनगर पहुंचे, जहां राजसमुद्रकी पाल की मरम्मत और पालपरके बाग़ तथा महलके जीर्णोद्धारका प्रबन्ध करके गढ़बोर (चतुर्भुज-नाथ) की यात्रा करनेके बाद विक्रमी वैशाख कृष्ण ३ [हि० ता० १६ रबीउस्सानी =.ई० ता० ९ एप्रिल] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० १ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २४ एप्रिल] को जगन्निवासमें सज्जननिवास महल बनवाया, उसकी प्रतिष्ठा की. इस जल्सहमें कुल हाज़िरीन सर्दारों, चारणों और पासबानोंको .उम्दह .उम्दह ख़िल्अ़त और इन्आ़म व इक्राम दियेगये. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुस्सानी =.ई० ता० १५ जून] को पोलिटिकल एजेंट मेवाड़ मेजर केडल साहिब ३ महीनेकी छुट्टीपर विलायत गये.

इन्हीं दिनोंमें क़ाबुलपर गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी फ़ौज गई थी, उसकी फ़त्हयाबी की ख़ुशख़बरी आनेपर तोपोंकी सलामी सर कीगई. विक्रमी श्रावण शुक्ल १०

[हि० ता० ८ शअ्बान = .ई० ता० २८ जुलाई] को श्री बाणनाथका लिंग, जो चन्द्रमहलके ऊपर गुम्बज़में था, वहांसे अखाड़ेके महलमें स्थापन कियागया. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० ता० ७ रमज़ान = .ई० ता० २६ ऑगस्ट] को कृष्णपोल दर्वाज़ह के बाहिर शम्भु पल्टन और सज्जन पल्टनके लिये लैन तय्यार करवानेका खात मुहूर्त कियागया. विक्रमी प्रथम आश्विन शुक्ल ६ [हि० ता० ४ शव्वाल = .ई० ता० २१ सेप्टेम्बर] को मेजर केडल साहिब जो छुट्टीपर विलायत गये थे, वापस आये. विक्रमी प्रथम आश्विन शुक्ल १२ [हि० ता० १० शव्वाल = .ई० ता० २७ सेप्टेम्बर] को महाराणा साहिब बग्घीकी डाकमें चित्तौड़गढ़ इस प्रयोजनसे पधारे, कि क़िलेका जीर्णोद्धार और महलोंकी दुरुस्तीका प्रारम्भ कियाजावे; और वहां पधारकर पद्मिनीके तालाबपर के महल और पुराने महलोंको तय्यार करवानेके लिये नक्शे बनवाकर हुक्म देनेके बाद विक्रमी द्वितीय आश्विन कृष्ण १३ [हि० ता० २६ शव्वाल = .ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को पीछे उदयपुर पधार गये. विक्रमी द्वितीय आश्विन शुक्ल १ [हि० ता० २९ शव्वाल = .ई० ता० १६ ऑक्टोबर] को मेवाड़के पोलिटिकल एजेण्ट केडल साहिब अंडमानके कमिश्नर नियत होकर उदयपुरसे रवानह हुए, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ११ [हि० ता० २४ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १० नोवेम्बर] को उनकी जगह मेजर सी० के० एम० वाल्टर साहिब उदयपुरमें आये. मेजर केडलने महाराणा साहिबको रियासतकी इन्तिज़ामी हालत दुरुस्त करनेमें अच्छी तरह मदद दी, और वाल्टर साहिबके आनेसे भी वैसीही मदद मिलती रही.

इन दिनोंमें कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंहने अपनी राजकुमारी (उदयपुरकी महाराणी) को कृष्णगढ़ बुलाकर महाराणा साहिबको भी मिह्मान करनेके लिये बहुत कुछ आग्रह किया. जोकि महाराणा साहिबके चित्तमें कुल रियासतोंके साथ दोस्तानह बर्ताव बढ़ानेकी बहुत इच्छा थी, इसलिये उनका निमंत्रण क़बूल करके विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्हिज = .ई० ता० १० डिसेम्बर] को उदयपुरसे कूच किया और बेमाली, आसींद, बदनौर, संग्रामगढ़ वग़ैरह ठिकाने वालोंकी मिह्मान्दारियां स्वीकार करते हुए विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १० [हि० १२९७ ता० ९ मुहर्रम = .ई० ता० २३ डिसेम्बर] को नसीराबाद पहुंचे. वहां ख़बर मिली, कि कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंह बहुत बीमार हैं, तब विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ मुहर्रम = .ई० ता० २५ डिसेम्बर] को उनकी सिह्हतपुर्सीके लिये जरीदह तौरपर रेलके ज़रीए़से कृष्णगढ़को रवानह हुए. उसी समय तार द्वारा ख़बर मिली, कि महाराजा कृष्णगढ़का देहान्त होगया. महाराणा साहिबने ठाकुर मनोहर-

सिंहसे और मुझसे कहा, कि अब कृष्णगढ़ चलकर क्या करना चाहिये, क्योंकि उदय-पुरके महाराणा अपने पिताकी दग्ध क्रियामें भी नहीं जाते हैं. तब हम दोनोंने निवेदन किया, कि यह रीति उपद्रवके समयमें इस सबबसे प्रचलित होगई थी, कि राज्याधिकारीके दग्ध स्थानपर जानेसे पीछेको राजधानीमें बगावत पैदा होजानेका भय था, लेकिन् इस समय किसी तरहका खतरह नहीं है, इसलिये पुरानी रीतिका नफ़ा नुक्सान सोचलेना चाहिये. सिवा इसके कुटुम्ब तथा सम्बन्धी जनोंके साथ जैसा व्यवहार सामान्य गृहस्थका है वैसाही राजा लोगोंका भी है. महाराणा साहिबने कहा, कि मृत महाराजा एक तो कृष्णगढ़के महाराजा और दूसरे हमारे श्वशुर हैं इस-लिये ऐसे अवसरपर हम पुरानी रूढ़ीको तोड़ना उचित जानते हैं. तब हम लोगोंने भी उनकी उचित आज्ञामें सम्मति दी. जब महाराणा साहिब कृष्णगढ़ पहुंचे, तो वहांके मनुष्योंको यह उम्मेद न थी, कि वे दग्धक्रियामें शरीक होंगे, परन्तु महाराणा साहिब एक-दम दग्ध क्षेत्रमें चले गये. अगर्चि महाराजा पृथ्वीसिंह विद्वान, निर्लोभी, परिजन पोषक और सबकी प्रतिपाल करने वाले थे, परन्तु सिवा उनके फ़र्ज़न्दों और एक दो सेवकोंके किसीके मुखपर रंज न देखकर महाराणा साहिबको वहांके रियासती लोगोंसे बड़ी नफ़रत हुई, कि कैसे निष्ठुर (कठोर हृदय) सेवक हैं, कि ऐसे रंजके समयपर भी बड़ी लंबी चौड़ी बातें बनारहे हैं. दग्धक्रिया होचुकनेके बाद महाराणा साहिब वहांसे फूल-महलमें आये, और शामके वक्त मातमी दर्बारमें पधारकर महाराजा शार्दूलसिंह और उनके भाइयोंको खूब तसल्ली दी. इसी तरह अन्तःपुरमें भी आश्वासना करवाई. महाराजा शार्दूलसिंहने ऐसे समयपर महाराणा साहिबके पधारने और आश्वासना देनेका बहुत बहुत धन्यवाद दिया. महाराणा साहिब रात्रिभर वहां रहकर दूसरे दिन रेल द्वारा मक़ाम नसीराबादको अपने लश्करमें पहुंचगये. फिर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० ता० १३ मुहर्रम = ई० ता० २७ डिसेम्बर] को मए लश्करके अजमेरमें पहुंचे; स्टेशनपर कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड, एजेण्ट गवर्नरजेनरल राजपूतानह मए दूसरे साहिब लोगोंके पेश्वाईको आये, और महाराणा साहिबके साथ बग्घीमें सवार होकर डेरेपर पहुंचे. यहांसे विक्रमी पौष कृष्ण २ [हि० ता० १६ मुहर्रम = ई० ता० ३० डिसेम्बर] को पौने ग्यारह बजे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर ४ बजे शामको जयपुर पहुंचे. महाराजा सवाई रामसिंह साहिब मए पोलिटिकल एजेण्ट बैनन साहिब व खेतड़ीके राजा अजीतसिंह, और ठाकुर फ़तहसिंह वगैरह सर्दारोंके पेश्वाईको स्टेशनपर खड़े थे, और रेलगाड़ीसे बग्घीतक लाल बानातका फ़र्श बिछाया गया था. रेलसे उतरनेके बाद महाराणा साहिब और महाराजा साहिब दोनों आपसमें जुहार करके

मिले; फिर पोलिटिकल एजेएटने सलाम किया और जयपुरके सर्दारोंने सलाम करके नज़ें दिखलाईं. इसके बाद महाराणा साहिबके सर्दारोंमेंसे देलवाड़ेका राजराणा फ़त्हसिंह, बदनोरका ठाकुर केसरीसिंह, कुरावड़का रावत् रत्नसिंह, सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, और मैं (ढोकलियाका कविराजा श्यामलदास) महाराजा साहिबको नज़ दिखलाकर मिले, और उस समय मैंने यह दोहा कहाः–

दोहा.

आज बधाई अखिल जग अरिगन पाई ताप ॥
सेवक भये विदेह लखि सज्जन राम मिलाप ॥ १ ॥

जयरपुके पोलिटिकल एजेएटने इस दोहेकी एक नक्ल मांगी, जो मैंने उनके कहनेके मुवाफ़िक़ लिखकर भेजदी. साहिबको विदा करनेके बाद दोनों अधीश एक बग्घीमें सवार होकर सर्दार व पासबानोंकी बग्घियों सहित सांगानेरी दर्वाज़हसे राज्य महलोंमें पहुंचे और शवरता नामी सभा स्थानमें दर्बार हुआ. फिर महाराणा साहिबको सुखनिवास महलमें पहुंचाकर महाराजा साहिब अपने महलमें गये. विक्रमी १९३६ पौष कृष्ण ४ [हि० १२९७ ता० १८ मुहर्रम = ई० १८८० ता० १ जैन्युअरी] को दोनों अधीश एक बग्घीमें सवार होकर रामनिवास बाग़में पाठशालाके विद्यार्थियोंका जल्सह देखनेको गये, और वहांपर हेडमास्टरकी स्पीच सुनकर विद्यार्थियोंका कुतूहल देखनेके बाद वापस महलोंमें आये. रात्रिके समय दोनों अधीशोंने मए सभ्यजनोंके नाटकशालामें पधारकर जहांगीर बादशाहका नाटक देखा. यह नाटकशाला इन्हीं महाराजा साहिबने बड़े ख़र्चसे बनवाकर बम्बईसे पार्सी वग़ैरह शिक्षित मनुष्योंको बुलवाया, और स्त्रियोंकी जगह जयपुर की वेश्याओंको तालीम दिलाकर तय्यार करवाया. इस नाटकमें वस्त्र, भूषण वग़ैरह सामग्री समयानुसार, और बोलचाल, पठन पाठन आदि सब बातें अद्भुत और चरित्रकी सत्यता दिखलानेवाली थीं. परियोंका उड़ना, पहाड़ों व मकानोंकी दिखावट, और फ़िरिश्तोंका ज़मीन व आकाशसे प्रगट होना, देखनेवालोंके नेत्रोंको अत्यन्त आनन्द देता था. मैंने ऐसा नाटक पहिले कभी नहीं देखा था. नाटक देखकर वापस आनेके बाद दोनों अधीशोंने अपने अपने स्थानमें शयन किया. दूसरे दिन दोनों अधीशोंने दस्तकारीका स्कूल और पानी लानेके नलोंका इंजिन वग़ैरह अवलोकन करके रात्रिको बद्रेमुनीर और बेनज़ीरका बेनज़ीर नाटक देखा और वहांसे आकर अपने अपने स्थानमें शयन किया. विक्रमी पौष कृष्ण ६ [हि० ता० २० मुहर्रम = ई० ता० ३ जैन्युअरी] को महाराणा साहिब खातीपुरेकी

तरफ़ चीतेसे हरिणोंका शिकार करनेको पधारे. महाराजा साहिबकी तरफ़से खेतड़ीके राजा अजीतसिंह और ठाकुर फ़त्हसिंह वग़ैरह साथ हाज़िर थे. एक हरिण चीतेसे और ३ सूअर गोलीसे शिकार होनेके बाद महाराणा साहिब वापस आये. विक्रमी पौष कृष्ण ७ [हि० ता० २१ मुहर्रम = .ई० ता० ४ जैन्युअरी] को ठाकुर फ़त्हसिंहकी तरफ़से मेवाड़के सर्दार व पासबानोंकी दावत हुई, और शामके चार बजे दोनों अधीश रामनिवास बाग़में जानवर वग़ैरह देखनेको गये; रातकेवक्त अल्लाहदीन और अजीब व ग़रीब चराग़का नाटक हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ मुहर्रम = .ई० ता० ५ जैन्युअरी] को गैसका कारख़ानह और हवाई मज्लिसका नाटक देखा. विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २३ मुहर्रम = .ई० ता० ६ जैन्युअरी] को दोनों अधीशोंका मिलना हुआ, और बादल महल, नये महल, अंटाघर, और महाराजा कॉलेजमें विद्यार्थियों को देखकर रात्रिके समय लैली मजनूंका नाटक देखा, जहां तुकाजीराव हुल्कर इन्दौरके ज्येष्ठ और कनिष्ठ पुत्र भी, जो राजपूतानहकी सैर करते हुए जयपुरमें आये थे, नाटक देखनेमें शरीक हुए. विक्रमी पौष कृष्ण १० [हि० ता० २४ मुहर्रम = .ई० ता० ७ जैन्युअरी] को इन्दौरके ज्येष्ठ और कनिष्ठ कुमार महाराणा साहिब से मिलनेको सुखनिवास महलमें आये, और सायंकालको महाराणा साहिब व महाराजा साहिब उक्त राजकुमारोंसे मिलनेके लिये उनके स्थानपर गये. फिर महाराजा साहिब और महाराणा साहिबने क़दीम दस्तूरके मुवाफ़िक़ दर्बार करके दोनों तरफ़से ज़ेवर व सरोपावकी किश्तियां और हाथी, घोड़े दे लेकर बड़े स्नेहके साथ ११ बजे रात्रिको महाराणा साहिबने कृष्णगढ़की तरफ़ प्रस्थान किया, और रात्रिके १२ बजे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर रवानह होगये; रेलवे स्टेशनतक महाराजा साहिब पहुंचानेको आये. इस क़िस्मका मेल मिलाप इन बड़े राजाओंमें होना महाराणा सज्जनसिंह साहिबकी सज्जनतासे प्रारम्भ हुआ. विक्रमी पौष कृष्ण ११ [हि० ता० २५ मुहर्रम = .ई० ता० ८ जैन्युअरी] को प्रातःकालके ५ बजे महाराणा साहिब कृष्णगढ़के स्टेशनपर पहुंचे, जहां महाराजा शार्दूलसिंह अग्रगामिताके लिये उपस्थित थे. यहांसे दोनों महाराजा एक बग्घीमें सवार होकर फूल महलमें पहुंचे. तीन रोज़तक कृष्णगढ़में स्नेहपूर्वक निवास किया, और महाराजा शार्दूलसिंह व उनके भाइयोंको रंगीन पोशाकें और उनकी सर्कारको दावत देकर शोक निवर्त्तन किया; फिर विक्रमी पौष कृष्ण १३ [हि० ता० २७ मुहर्रम = .ई० ता० १० जैन्युअरी] को चार बजे वहांसे रवानह हुए. महाराजा शार्दूलसिंह स्टेशनतक पहुंचानेको आये. महाराणा साहिब स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर ५ बजे शामको अजमेर पहुंचे. स्टेशनपर अग्रगामिताके

लिये कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब और उनके सेक्रेटरी टाल्बट साहिब मौजूद थे, मेरवाड़ा बटालिअनने सलामी उतारी. उक्त साहिब अधीशको डेरेतक पहुंचागये. फिर महाराणा साहिबके मामा बख़्तावरसिंहकी तरफ़से उनके मकानपर दावत हुई. इसके बाद विक्रमी पौष कृष्ण १४ [हि० ता० २८ मुहर्रम = ई० ता० ११ जैन्युअरी] को साहिब लोगोंसे मुलाक़ात करके दूसरे रोज़ विक्रमी पौष शुक्ल १ [हि० ता० २९ मुहर्रम = ई० ता० १२ जैन्युअरी] को प्रातः कालके ३॥ बजे स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर रायपुर पहुंचे, जहां क़रीब १००० आदमी लश्करके पेश्तर भेजे हुए मौजूद थे. यहांपर नींबाजके ठाकुर चत्रसिंहका सलाम हुआ, और स्टेशनसे बग्घी सवार होकर ९ बजे रायपुर पहुंचे. वहांके ठाकुर हरिसिंहकी तरफ़से पगपावंडे वगैरह अदब आदाबकी रस्में अदा होकर दावत हुई. इसी मक़ामपर जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह साहिबकी तरफ़से आगेवाका जागीरदार बख़्तावरसिंह आया. विक्रमी पौष शुक्ल २ [हि० ता० ३० मुहर्रम = ई० ता० १३ जैन्युअरी] को रायपुरके ठाकुर हरिसिंह व नींबाजके ठाकुर चत्रसिंहकी तरफ़से घोड़ा व सरोपाव नज़ हुए, महाराणा साहिबने भी उनको ख़िल्अत देकर वहांसे कूच किया. रास्तेमें चंडावलके ठाकुर शक्तिसिंहकी दावत स्वीकार करके सोजत और दूसरे रोज़ पाली, और वहांसे बूशीमें मक़ाम हुआ, जहां जोधपुर के महाराजा साहिब भी महाराणा साहिबसे मिलनेको मौजूद थे, लेकिन् अपने छोटे भाईको अधिक बीमार सुनकर उसी वक़्त मुलाक़ात करके जोधपुर चलेगये, और अपने भाई महाराज प्रतापसिंह व कविराजा मुरारिदानको आतिथ्यके लिये छोड़ गये. यहांसे रवानह होकर महाराणा साहिब जीवंद होते हुए विक्रमी पौष शुक्ल ६ [हि० ता० ४ सफ़र = ई० ता० १७ जैन्युअरी] को घाणेराव पहुंचे. यह ठिकाना पेश्तर मेवाड़के मातह्त था, लेकिन् महाराणा अरिसिंहके समय गोड़वाड़के साथ मारवाड़में चलागया. ठाकुर जोधसिंहकी तरफ़से मए फ़ौजके अच्छी तरहसे दावत हुई, उस ७ वर्षकी उम्र वाले ठाकुरकी बात चीत सुनकर महाराणा साहिब बहुत खुश हुए. विक्रमी पौष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ सफ़र = ई० ता० १८ जैन्युअरी] को कुम्भलगढ़ पधारे. इसवक़्त महाराज प्रतापसिंह और कविराजा मुरारिदान भी साथ थे. विक्रमी पौष शुक्ल ९ [हि० ता० ७ सफ़र = ई० ता० २० जैन्युअरी] को ज़नानी सवारी उदयपुरसे घाणेराव आई. विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ सफ़र = ई० ता० २४ जैन्युअरी] को महाराज प्रतापसिंह और कविराजा मुरारिदानको जोधपुरकी तरफ़ विदा करके महाराणा साहिब गढ़बोर पहुंचे, वहांसे कैलवे, राजनगर और नाथद्वारा होते हुए विक्रमी माघ कृष्ण ५ [हि० ता० १९ सफ़र = ई० ता० १ फ़ेब्रुअरी] को नाहरमगरे दाख़िल

हुए, और वहां सैर व शिकार करनेके बाद विक्रमी फाल्गुन कृष्ण १२ [हि० ता० २६ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० ८ मार्च] को उदयपुर पहुंचे.

इन दिनोंमें महाराजा जोधपुरके पुत्रोत्सव हुआ, जिसमें पेश्तर जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंह वहां आये, और उनके जानेके बाद महाराणा साहिबको भी बड़े हठ और प्रीतिके साथ निमंत्रण देकर बुलाया. महाराणा साहिबने, जो इन रियासतोंसे परस्पर आमदोरफ़्त और प्रीति बढ़ाना चाहते थे, विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ७ [हि० ता० ६ रबीउस्सानी = .ई० ता० १८ मार्च] को जरीदह तौरपर क़रीब २५० आदमी सहित उदयपुरसे जोधपुरकी तरफ़ प्रस्थान किया. महाराजा साहिबकी तरफ़से कविराजा मुरारिदान और आगेवाका जागीरदार बख़्तावरसिंह लेनेको आये. मारवाड़की सहद देसूरी की नालतक घाणेरावके ठाकुर जोधसिंह और खीमाणाके ठाकुर गुमानसिंहने अग्रगामिता की. बग्घी, हाथी, घोड़े और रथोंकी डाकमें विक्रमी फाल्गुन शुक्ल १० [हि० ता० ९ रबीउस्सानी = .ई० ता० २१ मार्च] को महाराणा साहिब जोधपुर पहुंचे. महाराजा साहिब जोधपुरने वहांसे पांच कोस गांव मोगड़ातक पेश्वाई की. महाराणा साहिब राई के बागमें ठहरे, जहां कि महाराजा साहिब हमेशह रहते हैं. जबतक महाराणा साहिब वहां ठहरे प्रतिदिन राग रंग व शिकार और घुड़दौड़के जल्से होते रहे. कविराजा मुरारिदान, महता विजयसिंह, और महाराज किशोरसिंहने दोनों अधीशोंको अपने अपने स्थानपर अदब आदाबके साथ मिहमान करके बड़ी धूमधामसे दावतें दीं. महाराणा साहिबने जोधपुरके युवराजको भूषण वस्त्र भेजे, और परस्पर दोनों अधीशोंने दर्बार करके हाथी, घोड़े व ज़ेवरकी किश्तियां देनेका दस्तूर अदा किया. महाराणा दूसरे जगत्सिंहके युवराज प्रतापसिंह विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = .ई० १७४०] में शादी करनेको जोधपुर गये थे, जिसके बाद महाराणा सज्जनसिंहने इस रवाजको नवीन किया. फिर विक्रमी चैत्र कृष्ण ११ [हि० ता० २४ रबीउस्सानी = .ई० ता० ५ एप्रिल] को जोधपुरसे रवानह होकर झालामंडके ठाकुर राणावत ज़ोरावरसिंहके यहां दोनों अधीश मिहमान हुए. विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि० ता० २५ रबीउस्सानी = .ई० ता० ६ एप्रिल] को वहांसे प्रस्थान करके महाराजा साहिब जोधपुर और उनके भाइयोंको विदा करनेके बाद महाराणा साहिब पाली और वहांसे देसूरी व राजनगर होते हुए विक्रमी चैत्र कृष्ण १४ [हि० ता० २७ रबीउस्सानी = .ई० ता० ८ एप्रिल] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. मैं (कविराजा श्यामलदास) इस यात्रामें संग नहीं था, क्योंकि मेरे बड़े भाई ओनाड़सिंह अधिक बीमार थे. महाराणा साहिब जब उनकी सिहतपुर्सीके लिये मकानपर पधारे, तब मुझे उन्हींके पास छोड़ गये थे. अफ्सोस कि ओनाड़सिंहका देहान्त विक्रमी चैत्र

कृष्ण ८ [हि० ता० २१ रबीउस्सानी = ई० ता० २ एप्रिल] को होगया. महाराणा साहिबने उनकी उत्तर क्रियामें ३०००) तीन हज़ार रुपये देकर बहुत कुछ आश्वासना की.

विक्रमी १९३७ आषाढ़ कृष्ण ११ [हि० १२९७ ता० २४ रजब = ई० १८८० ता० ३ जुलाई] को कुल मेवाड़के किसान लोग, जो क़रीब तीन चार हज़ारके थे, उदयपुरमें आये, और मेवाड़में ज़िराअ़त बोनेकी हड़ताल करदी; क्योंकि पुराने ज़मानहसे इस देशमें ज़िराअ़तका हासिल लटाई बटाईसे लियाजाता था. इन दिनोंमें सेटलमेण्टकी पैमाइश शुरू होनेके सबब उन लोगोंने, जिनको पुरानी रीतिसे फ़ायदह पहुंचता था, किसानोंको वर्ग़लाया, और इसी मौक़ेपर जंगलातका महकमह भी क़ाइम हुआ, जिससे एकदम नई नई बातें देखकर लोग घबरा गये. महाराणा साहिबने इन लोगोंको शम्भुनिवासमें बुलाकर बहुत कुछ तसल्ली दी और समझाया, लेकिन् उनमें कोई समझदार व मुख़्तार शख़्स नथा कि सुनता समझता, बिना समझे बूझे जो जिसके जीमें आया उसीतरह वायवैला करने लगे. दूसरे रोज़ महाराणा साहिबने इस इतिहासके कर्त्ता (कविराजा श्यामलदास) और महता राय पन्नालालको इन लोगोंके समझानेका हुक्म दिया. हम दोनोंने बहुतेरा समझाया, लेकिन् उनका ख़याल न बदला, तब महाराणा साहिबने महता राय पन्नालालको कुछ पैदल और सवारोंकी जमइयतके साथ मेवाड़में यह हुक्म देकर भेजा, कि जो लोग बदमआश हों उनको क़ैद करके बाक़ी किसानोंको तसल्ली देकर हल जुतवादो. महता पन्नालाल और सेटलमेण्ट ऑफ़िसर विंगेट साहिबने बड़ी अ़क्लमन्दी और समझाइशके साथ इस बलवेको दबादिया.

महाराणा साहिब दिलसे चाहते थे, कि राजा और प्रजाकी एकता और दोनोंके फ़ायदे दिन बदिन बढ़ते रहें, और इसी अभिप्रायको ज़ाहिर करनेके लिये विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ शअ़्बान = ई० ता० १६ जुलाई] को महाराणा साहिबकी सालगिरहके दर्बारमें पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़ कर्नेल् वाल्टर साहिबने एक स्पीच दी, जिसके पढ़नेसे पाठक लोगोंको मालूम होगा, कि महाराणा साहिब का ख़याल अपने देशकी उन्नतिकी तरफ़ कैसा था.

वाल्टर साहिबकी स्पीचका ख़ुलासह.

आप लोग सब जानते हो, कि श्री मन्महाराणा साहिब रात दिन प्रजा और देशकी भलाई और विद्या तथा गुणोंके प्रचारमें उद्यत रहते हैं. इस देशमें आप लोगोंको उचित है, कि जहांतक होसके उनकी मदद करो. अबतक श्रीयुत महाराणा साहिबने जो कार्य किये हैं, और जिनका अब प्रारम्भ होरहा है वे सब प्रजा और देशकी भलाईके निमित्त हैं, और विचारसे किये हैं; उन सब कार्योंके परिणाम आप

लोगोंने अच्छे देखे हैं, और देखोगे, जिनसे आगे पीछे सदा भलाई और उपकार रहेगा.

ऐसे राजा, जो दिलसे देशकी तरक्क़ी करना चाहते थे, उनके कामोंमें हर्ज डालनेवाले भी खुदमत्लबी लोग तय्यार थे, लेकिन् महाराणा साहिबने किसीकी पर्वा नकी, मुल्की व माली कामोंके इन्तिज़ामको जहांतक होसका दुरुस्त किया, जमाको बढ़ाया और खर्चको घटाया.

विक्रमी आषाढ़ शुक्ल १३ [हि० ता० ११ शअ्बान = .ई० ता० २० जुलाई] को जोधपुरसे कविराजा मुरारिदान और कंटालियाका ठाकुर गोवर्द्धनसिंह महाराणा साहिबकी गद्दीनशीनीका दस्तूर लेकर आये, उनकी पेश्वाईके लिये मैं (कविराजा श्यामलदास) और हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह चंपाबागृतक भेजे गये. यह रीति १२६ वर्षतक दोनों रियासतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे बन्द रही, जो अब दोनों महाराजाधिराजोंकी अक्लमन्दी और मुहब्बतसे फिर जारी हुई. विक्रमी श्रावण कृष्ण ३ [हि० ता० १५ शअ्बान = .ई० ता० २४ जुलाई] को टीका नज़ हुआ, और विक्रमी श्रावण कृष्ण ९ [हि० ता० २१ शअ्बान = .ई० ता० ३० जुलाई] को दोनों सर्दार जोधपुरकी तरफ़ विदा कियेगये.

विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १३ रमज़ान = .ई० ता० २० ऑगस्ट] को महाराणा साहिबने मेवाड़की रॉयल कौन्सिलका नाम महद्राज सभा रखकर, जो पहिले इज्लासख़ासके नामसे प्रसिद्ध थी, इस कौन्सिलको महकमहख़ाससे अलहदह करदिया, और मुख़्तसर क़ाइदे बनाकर मेम्बरोंकी संख्या भी बढ़ादी. पहिले इस सभाकी कार्रवाईकी तामील, जो महकमहख़ासकी मारिफ़त होती थी, अब अलहदह कौन्सिलके इख़्तियारमें कीगई. इस सभाका सेक्रेटरी मेम्बर पंड्या मोहनलाल विष्णुलालको बनाया और नीचे लिखेहुए मेम्बर मुक़र्रर कियेगयेः—

बेदलाका राव तख़्तसिंह.	देलवाड़ाका राजराणा फ़तहसिंह.
आमेंटका रावत् अर्जुनसिंह.	पारसोलीका राव रत्नसिंह.
शिवरतीका बाबा गजसिंह.	सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह.
ताणाका राज देवीसिंह.	मामा बख़्तावरसिंह.
शिवपुरका महाराज रायसिंह.	काकरवाका राणावत उदयसिंह.
कविराजा श्यामलदास.	राय पन्नालाल.
सहीहवाला अर्जुनसिंह.	महता तख़्तसिंह.
पुरोहित पद्मनाथ.	जानी मुकुन्दलाल.
पण्डित व्रजनाथ.	पंड्या मोहनलाल.

फिर शामके ५॥ बजे महाराणा साहिबने महद्राजसभा काइम करनेका दर्बार कुंवर-पदाके महलमें किया, जिसमें ऊपर लिखेहुए १८ मेम्बरोंके अलावह कर्नेल् सी० के० एम० वाल्टर साहिब बहादुर, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़, कर्नेल् ब्लेअर साहिब बहादुर, मिस्टर ए० विंगेट साहिब बहादुर, सी० एस०, सी० आइ० ई०, खेरवाड़ाके डॉक्टर मलन साहिब बहादुर, और पादरी डॉक्टर जेम्स शेपर्ड साहिब बहादुर, आये. इसके बाद महाराणा साहिबने खड़े होकर मुख्तसर तक्रीर फ़र्माई, जो नीचे दर्ज कीजाती है :—

"ऐ मेम्बरान जल्से राज्य श्री महद्राज सभा ! यह तो ज़ाहिर ही है, कि हमारे तख़्त नशीन होनेके पहिले ही इस मुल्क मेवाड़के उ़म्दह इन्तिज़ामके लिये एक बड़ी अदालतकी निहायत ज़रूरत थी, लिहाज़ा विक्रमी १९२२ के सालमें राज्ये श्री इज्लास ख़ास नामी अदालत हमारे हुक्मके बमूजिब मुक़र्रर हुई. जिसवक़ यह अदालत क़ाइम कीगई, तो उसवक़पर ठीक हमारी यह दिली ख़्वाहिश व मन्शा था, कि इसीकी कार्रवाईसे हमारे सब उमराव, सर्दार अह्लकार और पासबान वग़ैरह इन्साफ़के प्रबन्धसे बख़ूबी वाक़फ़ियत हासिल करें; क्योंकि जब कार अदालत उ़म्दह तौरसे तर्तीब दियाजावे, तो किसीको किसी तरहकी तक्लीफ़ न हो, बल्कि इन्तिज़ाम व इन्साफ़की उ़म्दगी जानलें. इन तीन साल गुज़श्तहमें राज्ये श्री इज्लास ख़ासकी कार्रवाईके ज़रीएसे हमारे मुल्क मेवाड़की बहुतसी बातोंमें बड़ी तरक़ी हुई; हमारे मुल्कके बाशिन्दोंमें कौन कौन कैसे कैसे उमराव, सर्दार, अह्लकार और पासबान वग़ैरह हैं यह भी मालूम होगया. किस किस ने इस अदालतकी कार्रवाईमें दिलोजानसे मदद की, और किस किसने न की, और किन किन बातोंमें कोताही रही. ये सब बातें हमको बख़ूबी रौशन होगई, लेकिन अस्ल मत्लब तो यह है, कि इसी राज्ये श्री इज्लासख़ाससे बहुतकर मुल्कका फ़ायदह ही हुआ."

"अब आज हम राज्ये श्री इज्लासख़ासका नाम तब्दील करके बा क़ाइदह यह राज्ये श्री महद्राज सभा मुक़र्रर और क़ाइम करते हैं, और उसकी कार्रवाई हस्बुल-हुक्म हमारे अंजाम देनेके लिये हमारे तमाम उमराव, सर्दार व अह्लकार और पासबानोंमेंसे अच्छे अच्छे लाइक़ अठारह मेम्बरोंको चुनकर मुक़र्रर करते हैं और राज मेवाड़का सब कारोबार दो बड़ी अदालतों, याने राज्ये श्री महद्राज सभा और राज्ये श्री महकमहख़ासमें तक्सीम कर एक क़ानून बनाम "क़वाइद इन्तिज़ाम मुल्क मेवाड़ नम्बर १ बाबत् संवत् १९३७" बनाकर जारी करते हैं, जिससे उम्मेद है, कि सब

मेम्बरान इस राज्ये श्री महद्राज सभाके कारोबारको दिलोजानसे ऐसी उम्दगी और इन्साफ़के साथ करेंगे, कि हमको तो निहायत खुशी हासिल हो और रश्रय्यतको आरामसे एकसा इन्साफ़ मिले, और मेम्बरानकी लियाक़त और कार्रवाई हमारे दिलपर रोज़ ब रोज़ नक्श होकर उन लोगोंपर हमारी मुहब्बत और मिहर्बानीका इज्हार हो. यह बात भी बखूबी याद रखनेके लाइक़ है, कि हमारी नज़र हरएक मेम्बरकी कार्रवाई पर ज़रूर रहेगी; अगर हम ज़ाहिरमें कुछ फ़र्मावें या नहीं. श्रीएकलिंगजीसे यही अर्ज़ है, कि इस राज्ये श्री महद्राज सभाको क़ाइम रखकर सब मेम्बरोंसे इन्साफ़ और उम्दह कामोंकी नामवरी करावें, और ज़ियादह क्या.''

बाद इसके साहिब पोलिटिकल एजेएट बहादुर मुल्क मेवाड़ने भी खड़े होकर एक उम्दह तक्रीर फ़र्माई, जो नीचे दर्ज कीजाती हैः-

ऐ राज्येश्री महद्राजसभाके मेम्बरो !

"आज हम श्री महाराणा साहिबको इस राज्य श्री महद्राज सभामें वार्तालाप करते देखकर निहायत खुश हुए. बेशक श्री महाराणा साहिबकी नज़र इन्साफ़ और इस मुल्क के इन्तिज़ामपर है. सब मेम्बरानको लाज़िम है, कि श्री महाराणा साहिबकी ख्वाहिश और हुक्मके मुवाफ़िक़ इस बड़ी अदालतकी कार्रवाई इन्साफ़के साथ अंजाम देकर उन को खुश और रिआयाको आराम दें, जिससे उनकी तारीफ़ इस मुल्क और ग़ैर मुल्कोंमें हो और आप सबकी भी नामवरी हो".

यह फ़र्माकर साहिब मौसूफ़ बैठगये, और राज्य श्री महद्राज सभाकी तरफ़से श्री हुज़ूरको मुखातिब करके एक शुक्रियह कविराजा श्यामलदासने मेम्बरोंकी तरफ़से पढ़ा, जो नीचे दर्ज कियाजाता हैः-

"श्री हुज़ूर, इससे बढ़कर और कौन वक़्त शुक्रियह अदा करनेका होगा, कि जब हम देखते हैं, कि हमारे श्री हुज़ूर अपने राज मेवाड़के हम सब उमराव, सर्दार, अहलकार पासबान और रश्रय्यतके आराम और फ़ायदेके वास्ते कितनी तरहके बन्दोबस्त मुत्अल्लिक़े इन्साफ़ कैसी दिलेरीके साथ करते हैं, कि जो कुछ अभी श्री हुज़ूरने हम लोगोंकी हिदायतके लिये फ़र्माया वह हमने अच्छी तरहसे सुना, जवाब में फ़र्माबर्दारीके साथ अर्ज़ करनेमें आता है, कि किसी कामको अच्छी तरहसे अंजाम देनेका क़स्द करना दुन्यामें बड़ा मुश्किल काम है, लेकिन् इतना तो बेशक है, कि हम लोग श्री हुज़ूरके

हुक्मके बमूजिब, जो काम हमारे ज़िम्मह किया गया है, वह हस्बुल हुक्म अंजाम देंगे; और श्री एकलिङ्गजी हम लोगोंकी मदद करके श्री हुज़ूरके फ़र्मानेके बमूजिब नामवरी हासिल कराकर इस भारी कामको नेकनामीके साथ अंजाम दिलावें. इसके अलावह यह हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि जो काम श्री हुज़ूर हम लोगोंके सुपुर्द करते हैं वह काम हमेशहसे ख़ास श्री हज़ूरके ही करनेका है, लेकिन् यह श्री हुज़ूरकी बेदार-मग्ज़ी और इन्साफ़ फैलानेका नतीजह है, कि हम लोगोंको अपने पूरे भरोसे वाले ख़याल फ़र्माकर इतना मुश्किल और बड़ा काम हमारे सुपुर्द किया. बेशक जब मालिक बुद्धिमान और समझदार होते हैं, तब ऐसे बड़े बड़े इन्साफ़के काम ज़ुहूरमें आकर मुल्क और ग़ैर मुल्कमें अपने ख़ास मुल्ककी नेकनामी और शुह्रत फैलती है. श्रीएकलिङ्गजी ऐसे मालिककी .उम्र दराज़ करके हम लोगोंकी पर्वरिश मुहब्बत और मिहर्बानीके साथ करावें.

इसके बाद सब मेम्बरोंने श्रीहुज़ूरको नज़ानह किया, और सेक्रेटरीने नीचे लिखीहुई इबारत पढ़कर सुनाईः-

शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा.

तुम प्रथम इष्टधर्मका ध्यान करके चित्तको आपसकी रू रिआयतसे हटाओ, किसी पर अपने लोभ व दूसरोंको अपने तरफ़दार बनाने व दबाग़त, अदावत, तरफ़दारी, व अपनी बेजा बातपर ज़िद, सुस्ती, अदमतवज्जुही वग़ैरह सबबोंसे ज़ुल्म और बे इन्साफ़ी मत करो, जो सलाह या तज्वीज़ गुप्त रखनी हो, प्रगट मत करो; ग़बन और रिश्वत जो कि बहुत बुरे और अख़ीरमें नुक़्सान देनेवाले काम हैं, छोड़कर अपनेको अद्ल व इन्साफ़पर क़ाइम कर यह श्री मदेकलिङ्गेश्वर और श्री मन्महिमहेन्द्र यावदार्यकुल-कमलदिवाकरके चित्र हैं सो ऊपर लिखे हुए मन्शासे स्पर्श करके स्वामिभक्तता पूर्वक, जो काम सुपुर्द कियागया है अंजाम देते रहो.

फिर राज्य श्री महद्राजसभाके सब अहलकारोंका नज़ानह होकर श्री हुज़ूरने साहिब लोगों और मेम्बरोंको फूलोंके हार अपने हाथसे पहिनाये और जलसह बर्ख़ास्त हुआ.

विक्रमी भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० ता० ११ शव्वाल = .ई० ता० १७ सेप्टेम्बर] को जयपुरके महाराजा सवाई रामसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिसकी ख़बर तार द्वारा आने पर महाराणा साहिबको बहुत अफ़्सोस हुआ, और विक्रमी आश्विन कृष्ण ४ [हि० ता० १६ शव्वाल = .ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को दस्तूरके मुवाफ़िक़ मातमी दर्बार कियागया. हक़ीक़तमें महाराजा रामसिंहके दुन्यासे उठजानेके कारण राजपूतानहकी ताक़तमें ख़लल आगया. यदि उनका शरीर कुछ समय फिर क़ाइम रहता, तो महाराणा साहिब और उनकी दोस्तीका फल मिलना, याने राजपूतानहकी तरक़्क़ी होना संभव था.

महाराणा साहिब विक्रमी कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ता० १७ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २२ ऑक्टोबर] को उदयपुरसे मातमपुर्सीके लिये बग्घियोंकी डाक द्वारा जयपुरको रवानह हुए. ठाकुर मनोहरसिंह सर्दारगढ़का, रायसिंह शिवगढ़का, मामा बख़्तावरसिंह, मैं (कविराजा श्यामलदास), महता राय पन्नालाल, राणावत उदयसिंह, महाराज प्रतापसिंह, राठौड़ एथ्वीसिंह, पुरोहित पद्मनाथ, जानी मुकुन्दलाल, बड़वा लखमीचन्द, धायभाई हुकमा और पाणेरी उदयराम, बाज़ बग्घियों और बाज़ घोड़ोंपर सवार साथ थे. उदयपुरसे रवानह होकर सर्दारगढ़ और आसींदमें मक़ाम करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ६ [हि० ता० १९ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २४ ऑक्टोबर] को ५ बजे नयानगरसे रेलपर सवार हुए और ८ बजे अजमेर पहुंचे. कमिश्नर साएडर्सन साहिब स्टेशनपर पेश्वाईको आये, फिर ११ बजे रेल सवार हुए. कृष्णगढ़के स्टेशनपर महाराजा शार्दूलसिंह मए अपने भाइयोंके खड़े थे, महाराणा साहिबने उनसे मुलाक़ात करके लौटते वक़ ठहरनेका इक़ार किया. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ७ [हि० ता० २० ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २५ ऑक्टोबर] को सुब्हके ७ बजे जयपुर पहुंचे. मातमीके सबब पेश्वाई और तोपोंकी सलामीके लिये महाराणा साहिबने इन्कार करादिया था. शवरताके महलमें जयपुरके विद्यमान महाराजाधिराज सवाई माधवसिंह मातमी दर्बार किये हुए बिराजे थे. महाराणा साहिबने वहां पहुंचकर वैकुण्ठवासी महाराजा साहिबके देहान्तका बहुत अफ्सोस किया और उनके सर्दार उमरावोंको तसल्ली देकर रामबाग़में पधारगये, जहां कि डेरा था. साढ़ा तीन बजे एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब महाराणा साहिबकी मुलाक़ातको आये. शामके वक़ महाराजा सवाई माधवसिंह खुद जाकर महाराणा साहिबको अपने महलोंमें लेआये. दस्तूरी दर्बार और २५ तोपोंकी सलामी सर हुई. उस दिन तो शोकके कारण महाराणा साहिब वापस अपने डेरोंमें लौट आये, और विक्रमी कार्तिक कृष्ण ८ [हि० ता० २१ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २६ ऑक्टोबर] को जयपुरके महलोंमें पधारगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ता० २२ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २७ ऑक्टोबर] को माजीके बाग़में ब्राडफ़ोर्ड साहिबसे मुलाक़ात की और शामके वक़ जयपुरके महलोंमें कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड और जयपुरके महाराजा माधवसिंह सहित महाराणा साहिबने सलाह मश्वरेकी बातचीत की. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १० [हि० ता० २३ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २८ ऑक्टोबर] को कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब अजमेर को रवानह होगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण ११ [हि० ता० २४ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबने जयपुरसे कूच किया. महाराजा

सवाई माधवसिंह बड़े स्नेहके साथ स्टेशनतक पहुंचानेको आये. फिर कृष्णगढ़के स्टेशनपरसे महाराजा शार्दूलसिंह अग्रगामिता करके उन्हें अपने महलोंमें लेगये. विक्रमी कार्तिक कृष्ण १२ [हि० ता० २५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ३० ऑक्टोबर] को अजमेर, वहांसे बदनौर और सर्दारगढ़ मक़ाम करके विक्रमी कार्तिक कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० २ नोवेम्बर] को उदयपुरमें दाख़िल होगये. राजधानियोंमें इस तरहका बर्ताव और आमदोरफ़्त महाराणा साहिबकी अक़्लमन्दीसे शुरू हुआ. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० १२९८ ता० १ मुहर्रम = .ई० ता० ४ डिसेम्बर] को एजेण्ट गवर्नरजेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब मामूली दौरा करते हुए उदयपुर आये. विक्रमी माघ कृष्ण ११ [हि० ता० २५ सफ़र = ई० १८८१ ता० २६ जैन्युअरी] को महता मुरलीधरके पौत्र और राय पन्नालालके पुत्र फ़तहलालके विवाहके निमित्त महाराणा साहिबको मए ज़नानी सवारियोंके पन्नालालने बड़ी धूमधामके साथ अपने मकानपर मिह्मान किया. महाराणा साहिबने फ़तहलालको पैरमें सुवर्ण भूषण और पन्नालाल व मुरलीधरको ख़िल्अत इनायत किये. कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब आबूसे विलायतको छुट्टीपर गये, इसलिये विक्रमी फाल्गुन शुक्ल ८ [हि० ता० ७ रबीउस्सानी = .ई० ता० ८ मार्च] को सी० के० एम वाल्टर साहिब उदयपुरसे क़ाइम मक़ाम एजेण्ट गवर्नरजेनरल होकर आबूको गये.

इसी वर्षमें भीलोंका बड़ा भारी बलवा हुआ, जिसका हाल इस तरहपर है, कि जब मुल्क मेवाड़की ख़ानहशुमारी होनेका हुक्म हुआ और चन्द अह्लकार पहाड़ी ज़िलेमें भीलोंकी ख़ानहशुमारीके लिये नियत हुए, तो भील लोग, जो जानवरोंके मुवाफ़िक़ जंगली मनुष्य हैं, घरों व आदमियोंकी गिनती होनेके कारण कई तरहके ख़याल करने लगे. उनके पूछनेपर अह्लकारोंने तो समझाइश करदी, लेकिन् दूसरे लोगोंने उनका गंवारपन देखकर हंसीके तौरपर कहदिया, कि बूढ़ी औरतें बूढ़ोंको, और जवान जंवानोंको, मोटी लम्बी मोटे लम्बोंको और छोटी पतली छोटे पतलोंको दिलाई जायेंगी. ऐसी वाहियात बातोंपर उन जंगली मनुष्योंको विश्वास होगया, और दो चार हज़ार भीलोंने गांव जावदकी माताके मन्दिरपर एकट्ठे होकर हलफ़ (१) के साथ इक़ार करलिया, कि सब एकट्ठे होकर सर्कारी आदमियोंसे सामना करें. उसीके मुताबिक़ इन लोगोंमें तक़ार फैल रही थी,

(१) भीलोंमें हलफ़का यह क़ाइदह है, कि एक बर्तनमें पानीके साथ केसर घोलकर एक एक आदमी थोड़ासा पानी पीलेता है, और ज़मीनपर कुंडल बनाकर उसमें तलवार और तलवारपर अफ़ीम रखकर थोड़ी थोड़ी खालेते हैं.

कि बारहपालके थानेदार सुन्दरलालने जानी मुकुन्दलालको इस मत्लबकी रिपोर्ट लिखी, कि जमादार फ़तूहमुहम्मद जागीरदार मौज़े अजबदा, भीलान बारहपाल फले गूहरकी निस्बत ज़मीन दबानेका दावेदार है और उसने अपने सुबूतमें गमेती बड़ा रूपा व कुबेरा साकिन पडूनाको गवाह क़रार दिया है, इसलिये उक्त गवाहोंको गवाही देनेके वास्ते सवार अक्बरहुसैनको भेजकर बुलाया. तीसरे पहर सवार शाहमुहम्मद टीडीकी चौकी वालेने आकर मुझसे रिपोर्ट की, कि अक्बरहुसैन और भीलान पडूनासे कुछ तक्रार होगई है. इस ख़बरके मिलतेही मैं सवारान चौकी बारहपाल व टीडीको साथ लेकर मौक़ेपर रवानह हुआ, तब भीलोंने एकट्ठे होकर हमपर तीर चलाये, जो ऊपर होकर निकल गये. मैं भीलोंकी नटखटी देखकर आगेको न बढ़ा, लौटकर टीडीमें चला आया; वहांपर मुसाफ़िरोंकी ज़बानी मालूम हुआ, कि एक थानेके और दूसरे चौकीके सवारको तो भीलोंने क़त्ल करडाला; सुनाजाता है, कि ये लोग थानह बारहपालपर फ़साद करनेको एकट्ठे होते जाते हैं, इसलिये जमइयत भेजनी चाहिये.

यह रिपोर्ट विक्रमी चैत्र कृष्ण ११ [हि० ता० २५ रबीउ़स्सानी = ई० ता० २६ मार्च] को दिनके १२ बजे जानी मुकुन्दलालके पास पहुंची, और उसी दिन शामके वक्त ख़बर मिली, कि बारहपाल, टीडी और पडूणाके भीलोंने एकट्ठे होकर बारहपालका थानह व चौकी जलादी, थानहदार और उसके हमाही सवार व पैदल सब मारेगये, भील तीन चार हज़ार एकट्ठे होरहे हैं. यह ख़बर सुनकर महाराणा साहिबने फ़ौजके कमांडिंग अफ़्सर मामा अमानसिंह और लोनार्गिन साहिब तथा मुझ (कविराजा श्यामलदास) को हुक्म दिया, कि पांच कम्पनी शम्भु और सज्जन पल्टनकी, एक रिसाला व पचास सवार बॉडीगार्डके और दो तोपें लेकर फ़ौरन् रवानह होजाओ. हम लोग रातके दो बजे उदयपुरसे रवानह हुए. रास्तहमें काया और बारहपालके बीच एक बुढ़िया औरत बुरे हाल पागलके मुवाफ़िक़ सामने मिली; उसने कहा, कि मैं गोवर्द्धन कलालकी औरत हूं, मेरे बेटे, बहू और बालबच्चे, थानहदार, सवार, सिपाही कुल मारेगये. हम लोगोंने उसको तसल्ली देकर उदयपुरकी तरफ़ भेजा. आगे बढ़े तो डाक बंगलेके क़रीब सड़कपर एक सिपाहीकी लाश मिली, जिसको उठवाकर चौकीके क़रीब पहुंचवाया. बारहपालमें जाकर देखा, तो कलालका घर, थानेका मकान और दूकानें जल रही थीं. थानेके क़रीब मुर्दह घोड़ोंकी कई लाशें मिलीं. उसीके क़रीब खेतमें एक कलालिन औरतकी लाश और डाकबंगलेके नज़्दीक थानेदार सुन्दरलालको मरा पड़ा पाया. हमने आमके दरस्तके नीचे बैठकर मर्द व औरतोंकी लाशें एकट्ठी करवाईं, जो कुल १७ थीं. इसी अरसहमें एक झोंपड़ीमेंसे गोवर्द्धन कलालके बेटेकी

बहू तीन चार वर्षके लड़केको गोदमें लिये हुए हमारे पास आई; उसके होश हवास ठिकाने नहीं थे. उस औरतके रीढ़की हड्डीपर कमरके क़रीब तलवारका ज़रूम था, और उसके बच्चेके पैरकी दोनों एड़ियां तलवारसे कटी हुई थीं. यह हालत देखकर हमको बहुत रहम आया. औरतकी ज़बानसे हे महाराज, हे महाराज, हे महाराज, यही आवाज़ निकलती थी. यह कलाल दस बीस हज़ार रुपयेकी जमा पूंजी रखता था, इसने चन्द महीने हुए दारूका ठेका लेकर दूसरे कलालोंकी दूकानें बन्द करवा दी थीं, इस सबबसे भील लोग उसपर जल रहे थे, और इसी कारण उसके घरको बर्बाद किया. यह औरत और बच्चा एक झोंपड़ीमें जाछुपनेके सबब बचगये. हमने औरतको पानी पिलाकर कुछ पूरी और तर्कारी दी, और उसकी बहुत कुछ तसल्ली की; परन्तु उसने रंजकी हालतमें कुछ न खाया, सिर्फ़ अपने बच्चेको खिलाया. उस औरतके कहनेसे उसके जलते हुए घरमेंसे पीतलका एक बर्तन निकाला गया, जिसमें पैसे और रुपये मिलाकर ५०) रुपयोंका माल था, और वह औरत व बच्चा पीतलके बर्तन सहित एक गाड़ीमें बिठाये जाकर उदयपुर पहुंचा-दियेगये. हिन्दुओंकी लाशें एकट्ठी कराईजाकर जलवादी गईं, और मुसल्मानोंकी दफ़्नाई-गईं. हम लोगोंने डाक बंगलेमें डेरा किया, जहां हमको एक बूढ़ा चौकीदार मिला. उसने कहा, कि पडूना और बारहपालकी तरफ़से आकर दो तीन हज़ार भीलोंने थाने पर हमलह किया, उस हालतमें थोड़ी देरतक तो सिपाही और थानहदार मुक़ाबलह करते रहे, लेकिन् जब भीलोंने थानेमें आग लगा दी, तब सर्कारी मुलाज़िम भागकर पूर्वकी तरफ़ एक टेकरीपर जाचढ़े, और कुछ देर मुक़ाबलह करनेके बाद उदयपुरकी तरफ़ भाग निकले, परन्तु भीलोंने पीछेसे हमलह करदिया, जिससे वे सब मारेगये; फिर सब भील कलालके घरसे शराब पीकर पागल होगये. अगर कल सर्कारी फ़ौज आती, तो सैकड़ों भील गिरिफ़्तार होसके. मुझको भीलोंने इस वास्ते नहीं मारा, कि यह टॉमस विलिअम साहिबका आदमी है, जिन्होंने सड़ककी मज़्दूरीमें हज़ारों रुपये देकर हमारी पर्वरिश की थी.

हमारी फ़ौजके आदमी चारों तरफ़ फैलगये, और बारहपालके सैकड़ों घर जलाकर ख़ाक करदिये गये. जोगियोंके फलेके क़रीब भैरा गमेतीके घरपर दो सिंधी सवार ज़ख़्मी मिले, जिनको उस गमेतीकी औरतने बचाया था. हमारे साथ सिंधी जमादार फ़त्हमुहम्मद और जमादार जानमुहम्मद, जमादार बहादुर और जमादार ख़ानमुहम्मद थे. वे दोनों ज़ख़्मी सवार जानमुहम्मदके रिसालेके थे, जिनको हमने उदयपुर पहुंचाया. भील लोग चारों तरफ़ पहाड़ोंपर फ़ाइरे, फ़ाइरे करते तथा किलकारियां मारते थे और जब फ़ौजके सिपाही नज़्दीक पहुंचते, तो भाग जाते. रातभर इसी तरह हल चल

मची रही और गोलियां चलती रहीं. विक्रमी चैत्र कृष्ण १४ [हि० ता० २७ रबीउस्सानी = ई० ता० २८ मार्च] को दिनभर भीलोंके घर जलाये गये, और उनपर फ़ौजका हमलह होता रहा, लेकिन् सघन झाड़ी और पहाड़ोंमें भीलोंके इधर उधर भागजानेसे कुछ मुक़ाबलह न हुआ. शामके चार बजे हमारे ऊंट चरते हुए झाड़ीमें दूर निकलगये थे, भीलोंने तीरोंकी चोटसे उनमेंसे दो को मारडाला. इसपर बिगुल हुआ, बिगुल होते ही हमारे सिपाही वहां जा पहुंचे, परन्तु भील लोग भाग गये. विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ रबीउस्सानी = ई० ता० २९ मार्च] को हम लोग यह सलाह कर रहे थे, कि भीलोंकी मवेशी और बाल बच्चोंका पता लगाकर हमलह करें. मैं रोटी खा रहा था, कि उसी वक़ एक सवार महाराणा साहिबका ख़ास रुक़ा लेकर आया, जिसका मत्लब यह था, कि अलसीगढ़, पई और कोटड़ाके भीलोंने भी बग़ावत की और कामदार धूलचन्द नागोरी तथा एक दो पुलिसके सिपाहियोंको मारडाला, उनपर भैंसरोड़गढ़के रावत् प्रतापसिंह, महाराज रायसिंह और मौलवी अब्दुर्रहमानख़ांको जमइयत देकर भेजा. इन लोगोंने दो भीलोंको मारकर सज़ा दी. भीलोंने केवड़ाकी नालकी चौकियां जला दीं; उस तरफ़ कुरावड़के रावत् रत्नसिंह, महता तख़्तसिंह व बाठड़ांके रावत्के बेटे मदनसिंह वग़ैरहको जमइयत देकर भेजा, उन लोगोंने भी बन्दोबस्त किया; तुम तीन रोज़से बैठे हुए हो, परन्तु अभीतक कुछ कार्रवाई नहीं की. परसाद गांवमें मगराके हाकिम महता अक्षयसिंहको चार हज़ार भीलोंने रोक रक्खा है, उसको मदद देना चाहिये. हम लोगोंको यह हुक्म पढ़कर बहुत रंज हुआ. मैंने रोटी खाना छोड़दिया, और उसी दम घोड़ोंपर सवार होकर आगे चले; दोनों तरफ़ ढोलकी आवाज़ व किलकारियां सुनाई पड़ती थीं, लेकिन् हमलहके वारमें वे लोग नआये. धूप ऐसी तेज़ थी, कि सवार और सिपाही घबरायेजाते थे; टीडीकी नदीपर पहुंचकर घोड़े व आदमियोंने पानी पीया. इस मौक़ेपर मामा अमानसिंह और लोनार्गिन साहिबकी बहादुरी लाइक़ तारीफ़के थी, और चारों सिंधी जमादारोंकी हिम्मत भी कम न थी. मामा अमानसिंह घोड़ेसे गिरगया, जिससे उसके पैरमें सख़्त चोट आई, परन्तु उसीवक़ घोड़ेपर सवार होकर कहा, कि मुझको कुछ चोट नहीं लगी. हम लोग गधेड़ाघाटीमें पहुंचे, जहां भीलोंने दरख़्त काटकर रास्तह बन्द कररक्खा था, रास्तह साफ़ कराकर हम आगे बढ़े. उस तंग घाटीके दोनों ओरकी पहाड़ियोंपरसे हज़ारों भील तीर और बन्दूक़ोंसे मुक़ाबलह करने लगे. इधरसे भी फ़ाइर होते थे. हज़ारों तीर हमारे ऊपर गिरे, लेकिन् ईश्वरकी कृपासे किसीके ज़ख़्म न लगा. दो भील मारेगये, जिनकी लाशें वे लोग उठा लेगये. इस हमलहके बाद भील दूरदूरसे किलकारियां

करते नज़र आते थे. पडूणाकी दक्षिणी हद्दपर सिन्धी सवारोंने हमलह करके एक भीलका सिर काट लिया, जिसको परसादमें पहुंचकर एक दरख़्तपर लटकादिया. महता अक्षयसिंह सलूंबर और थामंडकी जमइयतके आजानेसे पहिले रोज़ जयसमुद्र चलागया. हमने परसादके मक़ामपर शामको सुना, कि श्रीऋषभदेवकी पुरीको ६-७ हज़ार भीलोंने घेर रक्खा है, कल मन्दिरको लूटकर सर्कारी मुलाज़िमोंको मारडालेंगे, और परसों खेर-वाड़ेकी छावनीपर हमलह करेंगे. विक्रमी १९३८ चैत्र शुक्ल १ [हि० ता० २९ रबीउस्सानी = ई० ता० ३० मार्च] के ५ बजे हम परसादसे आगेको रवानह हुए; नज़्दीककी पहाड़ियोंपर भील किलकारियां करने लगे, उनके तीर और हमारी गोलियां चलती थीं. लोनार्गिन साहिब, मामा अमानसिंह और मेरे (कविराजा श्यामलदासके) हाथसे ६ भील मारे गये, लेकिन् उनकी लाशें वे उठा लेगये. पीपलीकी पालके क़रीब एक बड़े पहाड़की जड़में छापा मारनेकी ग़रज़से भाड़ी और पत्थरोंकी आड़में १०० या २०० भील हथियारबन्ध छुपरहे थे, हमारे एडवांस गार्डके २० सवार मए दयालाल चौईसाके फ़ौजसे एक मील फ़ासिलहपर आगे जा रहे थे; भीलोंने उनपर हमलह किया, लेकिन् उन्होंने बिगुल दिया, जिसकी आवाज़ सुनतेही मए पल्टन और रिसालहके हम लोग पहुंचगये. इस धावेमें क़रीब २० या २५ भीलोंके सिर काटेगये, जिनमें खरवड़के गमेतीका लड़का और दूसरे भी २-३ मश्हूर भील मारे गये. इसी जगहसे सख़्त लड़ाई शुरू हुई, दोनों तरफ़के पहाड़ोंपरसे भीलोंकी किलकारियां, तीरों की बारिश और बन्दूक़ोंके फ़ाइर होते थे. हमारी तरफ़से भी बन्दूक़ोंकी बाढ़ भड़-रही थी, लेकिन् सिवा सड़कके दोनों तरफ़की पहाड़ी व झाड़ीसे फ़ौजका हमलह होना उनपर कठिन था. मेरे घोड़ेके आगे एक भिश्ती चला जाता था, उसके पैरकी पिंडली में गोली लगी, मैंने उसको ऊंटपर चढ़ाया. एक बंजारा, जो हमारे साथ आरहा था, उसकी गर्दनमें एक तीर लगा और किसीका कुछ नुक़्सान न हुआ. ईश्वरकी कुद्रतको देखना चाहिये, कि हमारी फ़ौजमें इतने तीरोंकी बौछाड़ आती थी, कि फ़ौजके कई आद-मियोंने चुन चुन कर अपने पास मुट्ठे बांध लिये. इस हमलहमें हमारी फ़ौजके अफ़्सरों और सिपाहियोंकी दिलेरी लाइक़ तारीफ़के थी. जमादार वज़ीरखां मेरे मना करनेपर भी भाड़ीमें घुस घुस कर भीलोंपर बन्दूक़के फ़ाइर करता था; लोनार्गिन साहिब व मामा अमानसिंह फ़ौजके आगे पीछे बड़ी बहादुरीके साथ गिर्दावरी और हिफ़ाज़त करते जाते थे. इन्हीं दोनों अफ़्सरोंकी हिदायत और फ़ौजको तर्तीबवार लड़ानेसे दुश्मनोंका नुक़्सान और फ़ौजकी हिफ़ाज़त रही. चारों सिन्धी जमादारोंने भी बढ़ बढ़कर बहा-दुरी दिखलाई. इस मुक़ाबलहमें क़रीबन् तीस पैंतीस भील मारेगये, लेकिन् उनकी

लाशोंको उनके साथी लोग उठा लेगये. इसके बाद हम लोग ऋषभदेवमें पहुंचे, उस वक्त वहांके सर्कारी मुलाज़िम और पुजारियोंको नई जान मिलनेकी खुशी हुई. २००० भीलोंने पूर्वी तरफ़से शहरपर हमलह किया, दयालाल चौईसा ५० सवार लेकर पहुंचा, २ भील मारेगये, और बाक़ी भाग गये. हम लोगोंने मन्दिरके बचावके लिये शहरमें डेरा किया; कुल फ़ौजको उस दिन सर्कारकी तरफ़से खाना दियागया. रातभर ७ या ८ हज़ार भील चारों तरफ़ किलकारियां करते रहे. तीन रोज़तक इस तरह भीलोंका ग़लबह रहा. मैं इस कोशिशमें था, कि किसी तरह यह बलवह दबाया जावे. इन भीलोंमें बड़ा सरगिरोह बीलककी पालका नीमा गमेती और दूसरे दरजहपर पीपलीका खेमा और सगतड़ीका जोयता थे. चौथे रोज़ श्री ऋषभदेवके पुजारी खेमराज भंडारीने कहा, कि हुक्म हो, तो मैं इन लोगोंको समझाइश करूं. मैं तो दिलसे चाहता ही था, उसको इजाज़त दी. खेमराजने बीलकमें जाकर भीलोंको समझाया, क्योंकि भील लोग श्री ऋषभदेवके मन्दिर और पुजारियोंपर भरोसा रखते हैं, इसवास्ते उनकी समझाइश मानकर कुछ रुकगये. इस अरसहमें कागदर और ढणकावाड़ाकी पालवाले गमेती मुझसे आमिले, जो बीलक वालोंसे अदावत रखते थे, उनको तसल्ली देनेसे कागदर वालोंने ऋषभदेव और खैरवाड़ाके बीचका रास्तह खोल-दिया, जिससे यह फ़ायदह हुआ, कि गुजरात और सूरतके जो २०० या ३०० यात्री रुके हुए थे, उनको रवानह करदिया; फिर भीलोंसे सुलहकी बात चीत होने लगी. इसी अरसहमें मैं खैरवाड़े जाकर टेम्पल साहिबसे मिल आया. उन्होंने अपनी फ़ौजके चार भील अफ़्सर भीलोंको समझानेके लिये मेरे पास भेजदिये. उन लोगोंने भी बहुत कुछ समझाइश की, जिससे उदयपुरकी डाक और रास्तह जारी होगया. भीलोंने २४ क़लमें अपने .उज़्रोंकी पेश कीं, जिनमेंसे १५ को तो मैंने उन्हें समझाकर रद करदिया और ९ मन्ज़ूरीके लिये उदयपुर भेजीं, जिसके जवाबमें मेरे नाम महाराणा साहिबका ख़ास रुक्का व महता राय पन्नालालका काग़ज़, जिसके साथ उन क़लमोंकी फ़र्द मए मन्ज़ूरीके थी, आया, जिनमेंसे ख़ास रुक्के और महता पन्नालालके काग़ज़की नक़्ल नीचे दर्ज कीजाती है:—

ख़ास रुक्कहकी नक़्ल.

श्रीमदेकलिङ्गेश्वरो जयति.

स्वानगी,

कविराजा श्यामलदासजी,

॥ थांरी अरजी आई, जवाब न आवारी लीखी, सो सायत आजतक में काल परसुंरी,

लिषी चिठ्यां मांरी पहुंच गई होवेगा. अब ज्यो थांरा पाना २, एक २४ को, दुजो वांमेंसूं ९ कलमां छांट भेजी ज्यो मए अरजी, जींमेंकी ६ बाबत थांरी राय है, पहुंची; हो सक्यो जत्री जलदी कर राय सोच, लिषवामें आवे है; ९ कलम तो वी ज्यो थां न्यारी टाल भेजी, और १ ज्यो कलम धूलेवकी लागतकी बाबत जींपर थां (अरज) अस्यो निसान कियो ज्या, और १ माफी कसूर, जुमले ११ ही कलमांरो हाल विस्तार सुं वास्ते पूरी वाकबी होजावाके पन्नालालजी तीरांसु जो कागद लिषायो है वींसु वाकिफ होय अमल करोगा; और वातां तो सब मंजूर मंजूर, ई तरे राय तलब सूं है, सीरफ़ कसूर माफीमें ज्यो एक दोय राय लिषी है वांने आछयां सोचज्यो; क्योंके कुछ न कुछ हुवा बगेर आयंदा तकलीफ रहे, ईं वास्ते कसूर तो माफ करणोहीज है, पण जुरमानारो – – आगे सूं भी रिवाज है.

महता राय पन्नालालके काग़ज़की नक़्ल.

॥ श्रीरामजी.

कविराजाजी श्री श्यामलदासजी,

आपकी अरजी श्री जी हुज़ूर दाम इक्बालहूमें चेत सुद १२ मय गमेत्यां की अरजी वा आपकी रायकी ९ कलमकी फरद सुदां आई, अर मुष बात बड़ी पडूणा, बारापालका कसूर माफीकी लषी, सो बेशक या बात विचारके काबिल है, सो ईपर श्री जी हुज़ूर गोर फरमाय हुकम फरमायो जीं माफक आपने लिषूं हूं, के यो कसूर माफीके काबिल नहीं हे, प्रंत ई बलवाने रफे करवाके वास्ते ईमें अत्री सुरतां सुं तेह करणो ठीक है. अगर मुमकिन वे वाने समजाया जावे, के यो कसूर अस्यो छोटो नहीं है, के माफ करदियो जावे, बलके ई कसूरके एवज ज्यानकीज सजा होवो जरूर हो, प्रंत थे सारा लोग अरज करो हो, तो थांने रय्यत समज जुरमाना प्र अर आयंदाके वास्ते मुचरको कुल पालां वालाको नीचे लष्या मुजब पेस होवा प्र होसके. मुचलको ई मजमूनसुं गमेती लोग कुल पालांरा लषे, के पडूणा, बारापालरो कसूर माफीकी मां अरज करी, सो षावंदी फरमाय ज्यानकी सजाको कसूर हो सो जुरमाना की सजापर माफ फरमायो, सो तो प्रवरसके साथ है; अब आयंदे कसूरवारके वास्ते

मदत करां नहीं, एकट कर कसूरवारने बचावां नहीं, बलके कोई पालवाला कसूर करेगा, तो मे चाकरीमें हाजर रहे कसूरवारने सजा देवामें हुकमकी तामील करांगा.

ओर जुरमानो अस्यो वेणो चावे, के जींमें वांकी बीलकुल खराबी नहीं होयजावे, याने हेसीयत माफक होवे, जींमें राजकी हुकुमत रहे, वांने इबरत होयजावे जीं अंदाज सुं होवे; सो ईने विचार आप ई बातको अषत्यार समज तजवीज करदेवे. वसुली मवेसी वा रोकडसुं लीजावे. अगर या मुमकिन नहीं हो, तो कुल पालांरा गमेती अठे आय श्री जी हुजूरमें दस्तबस्ता माफी कसुरकी मांगे, तो वीं बखत मुनासब हुक्म, याने आयंदाके लिये हीदायतका तोरपर हुकमके साथ रुबरु माफ कीयोजावे, ओर आयंदाके लिये मुचलको भी लीयोजावे.

जुरमानापर भी षलल नहीं वे सके, ओर अठे भी हाजर होवाकी सुरत नहीं होवे, तो भी यो कसुर ई तरेही तो माफ नहीं वे, के मांकी अरज सुं माफ हुवो, याने कसुर माफ होवो अेक आसान अे लोग समजे, अर यूं जाणलेवे के यो कसुर परवरससे माफ हुवो है. जींतरे होवे जींमे रोब ओर आयंदाके लिये ईबरत बणी रहेवे. षआलमें या बात आवे हे, के साअत कसुरवार पालांपर जुरमाना कबुल करलेवे.

फौज जावे जद जुरमानो देवे ही है, अर यो रवाज भी है, सो आगला रवाजसुं भी पालां वालाने आछां समजायस करणी, क्योंके वां भी तो सारी कलमां सदीवरी पेश कीदी, तो या भी सदीव कीज काररवाई है; अबारकी काररवाई सुं तो ज्यान की एवज ज्यान लेवा कीज सजा होवे है, सो माफ करी जावे है; अर या नहीं जचे अर अठे आवाकी जचे अर वचन षात्री चावे, तो वे सके जो मुनासब वचन षात्री करदेवे, अठे आवाप्र दस्तबस्ता श्री जी हुजुरमें अरज कर वापस माफ होजावेगा. या नहीं होवे, तो तीसरी बात मुचरको आइंदाके लिये मजबूत अलग अलग पालको लेकर माफ करणो ठीक हे. अगर यांमेंसु कोई सुरत नहीं निकले अर यूंही माफ कीदोजावे, तो आयंदा यांने होसलो रहेगा, जींरी तकलीफ दिकत नहीं मिटेगा, जींसु ईकी कोसिस करे अर ज्यो बात तह पावे, जलदी खबर लषे. ईके साथ अब या भी आपने लषदी जावे हे, के यां सुरतांप्र तेह नहीं पावे अर षाली माफी कसुरहीज करणो पडे तोभी आपने अषत्यार है, जस्यो मोको मुनासब होवे अर साथ रोबके वे. लोग यो कसूर माफ वेणो आसान समझ आइंदा ष्याल राषे जीं रीतसु माफ होवाकी पक्की जबान दे देवे, अर अठे लषभेजे सो प्रवानो भेजदीयो जावेगा; और २४ कलमांमें सुं ९ कलमां आप छांटकर भेजी सो ठीक हे, वे काबील मंजुरी केईज है, सो मंजुर ही फरमाई, ना मंजुरीके काबिल ही ज्यो आप कोशिश कर टाल ही दीदी. एक बिलककी

बोलाईकी कलम फेर दरज कर इग्याराही कलमांरो पानो भेज्यो हे, इग्यारामें माफी कसूरकी कलमको जवाब ई चिठीमें लष्यो हे, बाकी कलमांरो हुकम पानासुं मालुम होवेगा. अब यो मजमून भी आप देखलेवे, अर माफी कसुरकी जीं त्रे तेह पावे वींकी आप लष-भेजे, सो वीं मुजब प्रवानो भेजदियोजावे, अर दुजी कलमांके लिये प्रवानाका मजमुनमें कम बेस तुले, तो वींकी भी लषेगा, सो वीं मुजब प्रवानो भेजदियो जावे, देरी नहीं वे; मुष ज्यादा खयाल फसाद आगे फेलवाको हे, सो ज्यांतक होसके जलदी नकी कर जवाब लषेगा, सरफ माफी कसुरकी बड़ी बात हे; अर ईमें ऊपर लिषी बातांकी कोसीस वेणो जरुर समज सारो हाल लष्यो हे, सो ईमें कोसिससुं कोई बात तेह पाय जावे, तो वीं माफक प्रवानामें लिषी जावे, ई सबब प्रवानो नहीं भेज्यो गयो, मसुदो कलम कलम रा हुकम रो भेज्यो हे, आप बेसक ई माफक जबान देवेगा. मतलब यो हे के बडी कलम कसुर माफीरी हे, ऊप्र लषी हुई दो तीन सरतांपर ते वेणी चावे, अर यो आप खयाल रषावे, के मुचरको ऊप्र लष्या मजमुनको तो हरएक सरत ज्यो ते पावे जींरे ही साथ लेणो जरूर हे, अर दो सरतां लषी ज्यांमेंसूं कोई तेह नहीं पावे, तोभी मुचरको तो ऊपर लष्यो जीं तरे लेणो जरुर हे सो लेलेवेगा, क्युंकि वे जबानी इकरार तो कसूरवारने मदत नहीं देवाको वा अटकट नहीं करवाको करही चुका हे, सीरफ़ तहरीर में लेणो सो लेलेवेगा. अगर अठासुं मजमुन लष्यो जींमें कम बेस तुले तो कम बेस करलेवेगा, परन्तु मुचरको आयंदाके वास्ते जरूर लेवे. कुल पालां वारारो ईमें हरज रहेवामें आगाने दिकत ज्यादा मालम देवे हे, जींसुं वीस्तार लषी हे, सो उमेद हे के आप ईमें आछां कोसिस करेगा, अर श्री जी हजुरको रुको ई साथ भेज्यो हे षास दसषतांको, सो वींका मुतलबने आछां समझ हुकम मुजब तामील कर जवाब जलदी भेजसी, सं० १९३७ चेत सुद १३, ता० १२ अपरेल सन् १८८१ ई० रातकी दस वज्यां लष्यो. द० रा० पनालाल.

मैं उन ११ क़लमोंकी बाबत्, जिनका ज़िक्र ऊपरके काग़ज़में लिखागया है, भीलोंसे बातचीत और समझाइश करने लगा. एक दिन मैं और मामा अमानसिंह लश्करसे थोड़ी दूरपर अकेले जाकर भीलोंसे मिले, और बीलकके गमेती नीमा व पीपलीके खेमाको बहुत कुछ समझाया, लेकिन् उस वक़्त हज़ार डेढ़ हज़ार भील मौजूद थे, उनमेंसे बाज़ बाज़ सुलहको नापसन्द करके लड़ाई करनेके लिये जहालतसे बोल उठते थे; तब गमेती लोग उनको समझाइश करते. कोई बकता था, कि दर्बार हमको न मारें, तो हम फ़िरंगियोंको मुल्कसे निकाल देवें. तब मैंने उन

जानवरोंको समझाया, कि फ़िरंगी लोग बड़े ज़बर्दस्त और श्री दर्बारके मित्र व मददगार हैं, इसलिये तुमको उनकी निस्बत ऐसा ख़याल नहीं करना चाहिये. फिर शाम होगई और भीलोंकी सर्कशी देखकर जमादार जानमुहम्मद, फ़तहमुहम्मद, ख़ानमुहम्मद और वज़ीरख़ांने मुझको इशारेसे कहा, कि अब अंधेरेमें इन लोगोंके बीच ठहरना अच्छा नहीं. हम उठकर अपने लश्करमें चले आये. इसी तरह हमेशह समझाइश करते थे, लेकिन् वे जानवर हर रोज़ कोई न कोई नई बात ले उठते. आख़रकार विक्रमी १९३८ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १२९८ ता० १९ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८८१ ता० १९ एप्रिल] को उदयपुरसे कर्नेल् ब्लेअर साहिब फ़र्स्ट असिस्टैंट पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़, छावनी खैर-वाड़ा बटालिअनके कमान अफ़्सर और विंगेट साहिब मेवाड़के सेटलमेण्ट ऑफ़िसर दोनों आपहुंचे. ब्लेअर साहिब भीलोंको समझानेके लिये जानेलगे, तब मैंने भीलोंकी कम-अक़्ली और जहालत बयान करके उन्हें मना किया, लेकिन् वे किसीको साथ न लेकर अकेले चलेगये. एक पहाड़पर तीन चार हज़ार भील एकट्ठे होरहे थे, साहिबको दूरसे रोककर कहा, कि तुम दिल्ली वाले हो चलेजाओ, हमारे मालिक श्री दर्बार हैं, उनके भेजे हुए हाकिम आये हैं उन्हींसे हम बात चीत करेंगे. तब साहिबने बड़ी नर्मीसे एक दो गमेति-योंको पास बुलाकर कहा, कि हम तुम्हारी सब तक्लीफ़ मिटादेंगे, और वे तक्लीफ़ें कौनसी हैं सो कहो. तब उन्होंने पहिले ज़मानहके मुवाफ़िक़ आज़ादी हासिल होने, जमादार बालगोविन्दका नियत किया हुआ बराड़ मुआफ़ किये जाने और हालमें ख़ानहशुमारी व ज़मीनकी पैमाइश कीजाना मौक़ूफ़ रखनेके लिये बहुत कुछ कहा. साहिबने उनको तसल्ली दी, कि हम महाराणा साहिबके अफ़्सरोंसे कहकर तुम्हारी तक्लीफ़ मिटादेंगे. फिर डेरोंमें पहुंचकर साहिबने मामा अमानसिंहको और मुझको बुलाकर कहा, कि भीलोंको बराड़के रुपये देनेमें उज़्र है, और ख़ानहशुमारी वग़ैरहसे उनको तक्लीफ़ नहो, इस बारेमें पत्थरपर खुदवाकर एक सुरह ऋषभदेवके पास गड़वादीजावे; तब मैंने बराड़के लिये बहुत बहस की. इसपर साहिबने कहा, कि देखो जी यह भीलोंकी बग़ावत बहुत दूर दूर तक फैलगई है, जो राजकी फ़ौजसे नहीं दबेगी और गवर्मेण्टकी फ़ौज बुलाई जायेगी. यह याद रखना चाहिये, कि सर्कारी फ़ौजका आना रियासतके लिये अच्छा न होगा, और बराड़ तो जमादार बालगोविन्दने इन लोगोंपर लगाया है. तब मैंने जवाब दिया, कि गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे पहिले १३५० वर्षतक इन लोगोंपर श्री दर्बारकी हुकूमत रही है, यदि हम लोग इनको दबानेकी ताक़त न रखते, तो ये लोग महाराणा साहिबके ज़ेर हुक्म किस तरह रहते. तब साहिबने झुंझलाकर कहा, कि आज शामतक आप उनको समझालो, वर्नह कल हम मुनासिब फ़ैसलह करेंगे, क्योंकि इस बग़ावतसे गवर्मेण्ट और ग़रीब

रिआयाका बहुत नुक्सान है. हम दोनों अपने डेरोंमें आये, और गमेती भीलोंको बुलाकर श्री ऋषभदेवकी पुरीके बाहिर एक टीलेपर मैं और मामा अमानसिंह कुर्सियोंपर जा बैठे, क़रीबन् १०० से ज़ियादह गमेती लोग हमारे गिर्द आ बैठे, और ६ - ७ हज़ारके लगभग भील पासवाली पहाड़ियोंपर एकत्र होगये. मैंने भीलोंको समझाइश करना शुरू किया. यक़ीन था, कि मुआमलह तय होजाता, लेकिन् शहरके महाजन लोगोंका बहुतसा हुजूम एकट्ठा होगया, इसलिये मैंने ललकारकर अपने आदमियोंसे कहा, कि इनको हटाओ, और वे लोग एक दम उठभागे. यह देखकर शराब पीये हुए एक भीलने जाना, कि गमेतियोंपर दग़ाबाज़ी हुई, और उसने बन्दूक़ चलाई, जो हमारी पल्टनके एक सिपाही के पैरकी पिंडलीमें आलगी. गोली लगतेही सिपाहियोंने भीलोंपर फ़ाइर शुरू करदी; गमेती लोग उठ भागे. एक गमेतीने तीर खींचकर मेरी छातीमें मारना चहा, लेकिन् नठाराके गोकलिया भीलने छीनलिया, जिसको मैंने सलूंबरवालोंकी क़ैदसे छुड़ाया था. इस हुल्लड़से सुलहकी एवज़ एकदम लड़ाई फैलगई, और साहिब लोग घोड़ोंपर सवार होकर तने तनहा खैरवाड़ाको भागे. भीलोंने उनके डेरोंमेंसे कुछ सामान लूटलिया. तब हमने एक कम्पनी और ५० सवार भेजे, जो उनका बचा हुआ सामान और अमलेके लोगोंको लेआये, रातभर हल्ला गिल्ला होता रहा. कर्नेल् ब्लेअरने तार देकर बम्बईसे अंग्रेज़ी फ़ौज तलब की, और एजेण्ट गवर्नर जेनरल कर्नेल् वाल्टरको लिख भेजा, कि राजकी फ़ौजने भीलोंके साथ दग़ाबाज़ी की; और भीलोंको ख़त लिख भेजे, कि राजके अफ्सरोंने तुम्हारे साथ दग़ाबाज़ी की, इसलिये अब हम तुम्हारे मददगार हैं. इस नाज़ुक हालतको देखकर मुझे बहुत रंज हुआ, क्योंकि मरने और लड़ाई करनेकी तो कुछ फ़िक्र न थी, लेकिन् अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी मध्यस्थताके समय ऐसा होनेसे रियासती हुकूक़में ख़लल आनेका ख़ौफ़ था; चारों तरफ़ हज़ारों भील वावैला कर रहे थे. दूसरे रोज़ धूलेव (श्री ऋषभदेवकी पुरी) के बनियोंने भीलोंके पास जाकर उन्हें समझाइश की, तब मैंने मस्लिहत समझकर आधा बराड़ (सर्कारी ख़िराज जो पालोंपर सालियानह लगता है) छोड़ना और ख़ानहशुमारीसे आइन्दह उनको तक्लीफ़ न होना पत्थरमें खुदवा-देनेकी दर्ख्वास्त मन्ज़ूर की. उसी वक्त वे लोग चुपचाप होगये, और अपने पटवारियोंसे एक अर्ज़ी श्री महाराणा साहिबके नाम और दूसरा काग़ज़ कर्नेल् ब्लेअरके नाम इस मज़्मूनका लिखाभेजा, कि इसवक्त जो लड़ाई शुरू होगई उसमें राजके अफ्सरोंकी तरफ़से किसी तरहकी दग़ाबाज़ी नहीं हुई, हमारी तरफ़के शराब पीये हुए एक भीलने नशेकी हालतमें गोली चलादी थी, जो एक सिपाहीके पैरमें जा लगी, इस सबबसे फ़ौजकी तरफ़से भी गोलियां चलने लगगई. फिर मैंने भीलोंको

कहलाया, कि तुम सुलहका नज़ानह करनेको यहां मत आओ, हम वहां आवेंगे, क्योंकि फ़ौज के सिपाहियों व भीलोंकी जहालतका ख़ौफ़ था. मामा अमानसिंह और मैं दोनों एक माइल के फ़ासिलहपर जाकर भीलोंसे मिले. उन सब गमेतियोंने आकर हमको नज़्रें दिखलाईं, उसवक़ बिल्कुल अम्न होकर रास्तह व डाक जारी होगई. मैंने भीलोंकी तसल्लीके लिये सुरहका पत्थर खुदवाना शुरू करदिया, और मंजूरीके लिये अर्ज़ी लिखकर दयालाल चौईसाको उदयपुर भेजा. दूसरे रोज़ मैं चालीस सवार लेकर खैरवाड़ा मक़ामपर ब्लेअर साहिबसे मिलनेको गया. छावनीमें बड़ी घबराहट मच रही थी, मेरे जानेसे लोगोंको कुछ तसल्ली हुई. साहिबने घबराकर डूंगरपुरके रावल उदयसिंहको भी मददके लिये वहां बुलालिया था. मैं साहिबके पास गया, इसवक़ वह बहुत गुस्सेमें थे, लेकिन् कुल कार्रवाई और भीलोंके काग़ज़ दिखलानेसे चुप होगये. फिर मैं वापस धूलेवको चलाआया. फ़ौजके सिपाहीका किसी भीलके घरमें घुसजाना और कुछ चीज़ जब्रन लेआना वग़ैरह कार्रवाइयोंसे मामा अमानसिंहकी और मेरी यह राय हुई, कि अब अम्न क़ाइम होगया है, इसलिये फ़ौजको उदयपुरकी तरफ़ रवानह करदेना चाहिये. विक्रमी वैशाख कृष्ण ११ [हि० ता० २४ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २४ एप्रिल] को फ़ौजका मक़ाम परसादमें हुआ और मामा अमानसिंह और मैं धूलेवमें ठहरगये, जहां कुल गमेती लोग हमारे पास आये. ऋषभदेवमें बैठकर हमने उनकी तसल्ली की, और मन्दिरका बन्दोबस्त करके हम भी शामको परसादमें आपहुंचे. इस मक़ामपर दयालाल चौईसा उदयपुरसे मन्जूरीके काग़ज़ात और भीलोंके नाम तसल्लीके पर्वाने लेकर आया, जिनको भील लोगोंकी तसल्लीके लिये पालोंमें भेजकर विक्रमी वैशाख कृष्ण १२ [हि० ता० २५ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २५ एप्रिल] को हम उदयपुर चले आये. उदयपुरमें अक्सर सर्दार उमराव और उनकी जमइयतें मौजूद थीं, लेकिन् सुलह होजानेके कारण उनको रुख़्सत देदी गई. कर्नेल् ब्लेअर साहिबके लिखनेसे वाल्टर साहिबने शम्भुनिवासमें एक कोर्ट की, जिसमें महाराणा साहिब, कर्नेल् वाल्टर, डॉक्टर स्ट्रेटन रेज़िडेएट मेवाड़, और विंगेट साहिबने बैठकर मुझको वहां बुलाया. वाल्टर साहिबने कुल लड़ाईका हाल उलट पलट सवालोंके साथ दर्याफ़्त किया, लेकिन हमारी कार्रवाई दुरुस्त होनेके सबब किसी क़िस्मकी ख़ामी न निकली. इसके बाद विक्रमी वैशाख कृष्ण १४ [हि० ता० २७ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २७ एप्रिल] को कर्नेल् वाल्टर आबूको चले गये. महाराणा साहिबने इस कार्रवाईसे खुश होकर मुझको दोनों पैरोंमें सुवर्णके दोहरा लंगर इनायत किये.

विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १ मई] को

कोटाके महियारिया लक्ष्मणदान चारणको ताज़ीम और सुवर्णके लंगर बख़्शे, जो महाराव शत्रुशालकी तरफ़से टीकेका दस्तूर लेकर उदयपुरमें आया था.

विक्रमी कार्तिक कृष्ण २ [हि० ता० १५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ९ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबका कूच उदयपुरसे चित्तौड़गढ़की तरफ़ इस मतलबसे हुआ, कि मार्किस ऑफ़ रिपन साहिब गवर्नरजेनरल हिन्दने महाराणा साहिबको "ग्रैंड कमांडर स्टार ऑफ़ इंडिया" का ख़िताब देना चाहा था, जिसपर महाराणा साहिबने अपने क़दीमी हुक़ूक़ और इज़्ज़त व प्राचीन पूर्वजोंका बड़प्पन दिखलाकर कई उज़्र किये, और आख़िरकार यह ख़िताब लेना इस शर्तपर मंज़ूर कियागया, कि मार्किस ऑफ़ रिपन मेवाड़में आकर अपने हाथसे देवें, इसलिये यह जल्सह क़दीम राजधानी चित्तौड़में मुक़र्रर हुआ. महाराणा साहिबके चित्तौड़में पहुंचनेपर सब तरहकी तय्यारियां होने लगीं. डॉक्टर जे० पी० स्ट्रैटन और ए० विंगेट सेटलमेण्ट ऑफ़िसर मेवाड़ और रॉयल इंजिनिअर मरे वग़ैरह जुदा जुदा कामोंपर मुक़र्रर हुए; कलकत्तेसे झाड़, फ़ानूस और खानेके सामान और नये डेरे वग़ैरह कई जगहसे ख़रीदनेका प्रबन्ध हुआ, और मेवाड़के सर्दारोंमेंसे कई सर्दार मए जमइयतोंके बुलाये गये. इस मौक़ेपर जो सर्दार, चारण, पासबान व अह्लकार वग़ैरह प्रतिष्ठित लोग चित्तौड़गढ़में मौजूद थे उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:-

राजपूत सर्दार.

१- बेदलाका राव तरूतसिंह.	२- बेगमका रावत् सवाई मेघसिंह.
३- देलवाड़ाका राज फ़त्हसिंह.	४- आमेटका रावत् शिवनाथसिंह.
५- कान्होड़का रावत् उम्मेदसिंह.	६- भींडरका महाराज मदनसिंह.
७- बदनोरका ठाकुर केसरीसिंह.	८- भैंसरोड़का रावत् प्रतापसिंह.
९- पारसोलीका राव रत्नसिंह.	१०- आसींदका रावत् अर्जुनसिंह.
११- बागोरका महाराज शक्तिसिंह.	१२- करजालीका महाराज सूरतसिंह.
१३- शाहपुराका राजाधिराज नाहरसिंह.	१४- सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह.
१५- कारोईका बाबा विजयसिंह.	१६- हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह.
१७- भदेसरका रावत् भोपालसिंह.	१८- भूणासका बाबा कृष्णसिंह.
१९- पीपलियाका रावत् कृष्णसिंह.	२०- ताणाका राज देवीसिंह.
२१- महुवाका बाबा ग्यानसिंह.	२२- नेतावलका समंदरसिंह.
२३- लींबाड़ेका राठौड़ दूलहसिंह.	२४- बम्बोराका रावत् प्रतापसिंह.
२५- विजयपुरका जवानसिंह.	२६- सादड़ीके राज शिवसिंहका पुत्र रायसिंह.
२७- बेदलाके राव तरूतसिंहकापुत्र कर्णसिंह.	

२८- देलवाड़ाके राज फ़त्हसिंहका पुत्र ज़ालिमसिंह.

२९- मेजाके रावत् अमरसिंहका पुत्र राजसिंह.

३०- पारसोलीके राव रत्नसिंहका पुत्र देवीसिंह.

३१- करजालीके महाराज सूरतसिंहका पुत्र हिम्मतसिंह.

३२- शिवपुरका रायसिंह.

३३- बनेड़ाके राजा गोविन्दसिंहका पुत्र अक्षयसिंह.

३४- काकरवाका राणावत उदयसिंह.

३५- मंगरोपका बाबा गिरवरसिंह.

३६- गुड़लांका बाबा शेरसिंह.

३७- पहूनाका राणावत जोधसिंह.

३८- गाडरमालाका बाबा केसरीसिंह.

३९- मुरोलीका भाटी शिवनाथसिंह.

४०- दौलतगढ़का नवलसिंह.

४१- साटोलाका रावत् तख़्तसिंह.

४२- बसीका वैरीशाल.

४३- मंडप्याका बाबा छत्रसिंह.

४४- कूंचोलीका राणावत् इन्द्रसिंह.

४५- आगरयाका राठौड़ सर्दारसिंह.

४६- रस्यावलका केसरीसिंह.

४७- हरणेईका राठौड़ प्रतापसिंह.

४८- राठौड़ पृथ्वीसिंह.

४९- तीरोलीका बाबा भोपालसिंह.

५०- बोरजका खेड़ाका चहुवान भैरवसिंह.

५१- मामा बख़्तावरसिंह.

५२- मामा अमानसिंह.

५३- आर्ज्याका चावड़ा प्रतापसिंह.

५४- चांपावत नारायणदास, जयपुरके चांपावत ज़ोरावरसिंहका पुत्र.

५५- चांपावत फ़त्हसिंहका पुत्र गुमानसिंह.

५६- कोल्यारीका शक्तावत रणजीतसिंह.

५७- श्यामपुराका प्रतापसिंह.

५८- कालाकोटका चूंडावत रूपसिंह.

५९- जीवाणाका राणावत केसरीसिंह.

६०- मदारयाका शक्तावत मेघसिंह.

६१- दिवालाका राठौड़ गुलाबसिंह.

६२- सालेराका चहुवान गिरवरसिंह.

६३- बोरजका चहुवान बख़्तावरसिंह.

६४- चहुवान लछमणसिंह.

६५- बावळासके महाराजका पुत्र भोपालसिंह.

६६- ताणाके राज देवीसिंहका पुत्र अमरसिंह

६७- जरखाणाके बाबा जशवन्तसिंह का पुत्र मदनसिंह.

६८- ईंटालीके राठौड़ ईशरदासका पुत्र एकलिंगदास.

६९- खैराबादके बाबा जोधसिंहका पोता बाघसिंह.

चारण.

१- कविराजा श्यामलदास. २- बारहट रामसिंह. ३- आढ़ा रामलाल.

४- दधिवाड़िया चमनसिंह. ५- बारहट चंडीदान. ६- महियारिया मोड़सिंह.
७- बारहट कृष्णसिंह. ८- उज्वल फ़तहकरण. ९- राव बख़्तावर.

अह्लकार, पासवान व धायभाई वग़ैरह.

१- महता राय पन्नालाल.
२- कोठारी बलवन्तसिंह.
३- सहीह्वाला कायस्थ अर्जुनसिंह.
४- महता विठ्ठलदास.
५- महता मुरलीधर.
६- महता तख़्तसिंह.
७- महता लालचन्द.
८- कोठारी मोतीसिंह.
९- महता गोपालदास.
१०- महता माधवसिंह.
११- पुरोहित पद्मनाथ.
१२- सेठ राय शमीरमल्ल अजमेरका.
१३- सेठ जवाहिरमल्ल.
१४- महता लछमीलाल.
१५- महता देवीचन्द.
१६- कायस्थ प्राणनाथ.
१७- महासाणी रत्नलाल.
१८- पंड्या मोहनलाल.
१९- पण्डित व्रजनाथ.
२०- जानी मुकुन्दलाल.
२१- मौलवी अब्दुर्रहमानख़ां.
२२- डॉक्टर अक्बरअली.
२३- मुन्शी अलीहुसैन.
२४- पंडित वंशीधर.
२५- पांडे किशोरराय.
२६- पंडित भवानीनारायण.
२७- जंगलातका अफ्सर विष्णुसिंह.
२८- पुरोहित सन्तोषलाल.
२९- देपुरा रघुनाथसिंह.
३०- मुन्शी मुईनुद्दीन.
३१- पाणेरी उदयराम.
३२- बड़वा लखमीचन्द.
३३- पुरोहित उदयलाल.
३४- पुरोहित सवाईलाल.
३५- महता अर्जुनसिंह.
३६- धायभाई बख़्तावर.
३७- ज्योतिषी मुकुटराम.
३८- ज्योतिषी गणेशराम.
३९- ज्योतिषी रघुनाथ.
४०- ज्योतिषी जीवनराम.
४१- पंडित सुब्रह्मण्य शास्त्री.
४२- पाणेरी गिरधरलाल.
४३- चौईसा हीरालाल.
४४- चौईसा पुरुषोत्तम.
४५- चौईसा राखीलाल.
४६- साह ज़ोरावरसिंह सूराणाका पुत्र दौलतसिंह.
४७- भंडारी शिवलाल.
४८- कायस्थ कुन्दनलाल.
४९- ख़वास शिवराज.
५०- धायभाई हुक्मीचन्द.
५१- कायस्थ दलीचन्द.
५२- कायस्थ ज़ालिमचन्द.
५३- ढींकड़्या श्रीकृष्ण.

५४– कायस्थ मोहनलाल.
५५– कायस्थ अर्जुनसिंह.
५६– कायस्थ गुमानचन्द.
५७– कायस्थ मगनलाल.
५८– ढींकड्या रामलाल.
५९– मुरड्या अम्बाव.
६०– मुन्शी कायस्थ धनलाल.
६१– कायस्थ ऊंकारनाथ.
६२– नथमल भोटा.
६३– ढींकड्या नाथूलाल.
६४– ढींकड्या गणेशलाल.
६५– भट भवानीशंकर.
६६– महता रघुनाथसिंह.
६७– ढींकड्या जगन्नाथ.
६८– महता भोपालसिंह.
६९– कायस्थ नीमनाथ.
७०– सहीहवाला लक्ष्मणसिंह.
७१– मौलवी अब्दुलग़नी.
७२– महता मनोहरसिंह.
७३– धायभाई गणेशलाल.
७४– ढींकड्या गोपाल.
७५– धायभाई चतुर्भुज.
७६– धायभाई सुखलाल.
७७– धायभाई गुमाना.
७८– ब्रह्मचारी मथुरादासका पुत्र मोड़ीलाल.

राज्यके नौकर यूरोपिअन व यूरेशिअन

१– मिस्टर लोनार्गिन अफ़्सर फ़ौज.
२– मिसेज़ लोनार्गिन डॉक्टर मेरी.
३– मिस बील.
४– मिसेज़ बील.
५– इंजिनिअर टॉमस विलिअम.
६– हेडमास्टर ज्यॉर्ज बेअर्ड.
७– मिस्टर जर्मनी.

इनके अलावह और भी देशी विदेशी लोगोंकी भीड़ जमा होती जाती थी. महाराणा साहिबने क़िले चित्तौड़की सड़कों और .इमारतोंकी मरम्मत बड़ी तेज़ीके साथ करवाई. गंभीरी नदीके पश्चिम तरफ़ क़स्बे चित्तौड़से आध मीलके फ़ासिलेपर उत्तरकी तरफ़ गवर्नर जेनरल हिन्द और उनके कैम्प व मुलाज़िमोंके लिये उम्दह डेरे बाक़ाइदह खड़े करवाये गये, और दक्षिणकी तरफ़ महाराणा साहिबके डेरे मए सर्दारान, अह्लकारान व फ़ौजके खड़े कियेगये, और बीचमें एक बड़ा दालान रंग ब रंगे कपड़ोंसे मंढाहुआ सोनेके कलशोंसे आरास्तह दर्बारके वास्ते तय्यार कराया गया. यह कुल तय्यारियां होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० ता० २२ नोवेम्बर] को चार बजेके वक़ गवर्नरजेनरल हिन्द मार्किस ऑफ़ रिपन स्पेशल ट्रेन द्वारा अजमेरसे चित्तौड़गढ़ पहुंचे. महाराणा साहिब भी अग्रगामिताके लिये स्टेशनपर उपस्थित थे. लार्ड साहिबने गाड़ीसे उतरकर बड़ी मुहब्बत

के साथ दस्तापोशी की, और टोपी उतारकर मिज़ाजकी खुशी पूछी. महाराणा साहिबने भी मुहब्बत आमेज़ लफ़्ज़ोंमें जवाब दिया. स्टेशनपर ३२ हाथियोंकी दो क़तारें बहुत .उम्दह ज़ेवर और झूल वगैरह सामानसे आरास्तह खड़ी थीं, उनमेंसे सबसे आगे वाले हाथीपर लाट साहिबके एडिकांग, उनके पीछे दाहिनी तरफ़ वाले हाथीपर मार्किस ऑफ़ रिपन और बाईं तरफ़ वालेपर महाराणा साहिब विराजकर डेरोंको पधारे. लाट साहिबके पीछेवाली क़तारमें हरएक हाथीपर दो दो अंग्रेज़ अफ़्सर, और महाराणा साहिबके पीछेकी क़तारमें हरएक हाथीपर दो दो सर्दार थे; प्लेट फ़ार्मसे लाट साहिबके डेरोंतक दुतरफ़ह महाराणा साहिबकी फ़ौजके सर्दार व सरबन्दी फ़ौज, रिसाले और पैदल पल्टनोंकी क़तार जमी हुई सलामी उतारती जाती थी. लाट साहिब आहिस्तह आहिस्तह चलकर अपने डेरों के बाहिर महाराणा साहिब सहित हाथियोंपर सवार खड़े रहे. हम लोगोंका एक एक हाथी उनके सामने होकर गुज़रता रहा और लाट साहिब हरएक सर्दारका सलाम बड़ी मुहब्बतके साथ लेतेगये, और डॉक्टर स्ट्रैटन रेज़िडेण्ट मेवाड़ हरएक सर्दारका नाम मए ठिकाने और क़ौमके बताते गये. महाराणा साहिब तो अपने डेरोंमें चले आये और लाट साहिबने हाथीसे उतरकर अपने डेरोंमें आराम किया. दोनों तरफ़ शाही डेरों, तोपख़ानों, रिसालों और पल्टनोंका जमाव और .उम्दह तर्तीबके साथ महाराणा साहिबके डेरोंमें सर्दारोंका क़ियाम देखकर देखने वालोंके दिल खुश होते थे. दोनों कैम्पोंका बन्दोबस्त उदयपुरकी पुलिसके सुपुर्द हुआ था, जिसको मौलवी अब्दुर्रहमानख़ां सुपरिएटेण्डेण्ट पुलिस और इन्स्पेक्टर लाला केसरीलालने बहुत .उम्दह तौरपर किया. रॉयल इंजिनिअर मरे, और कोठारी बलवन्तसिंहने भी कैम्प वगैरहकी सर्बराहका बहुत .उम्दह इन्तिज़ाम रक्खा. इस जल्सहमें डॉक्टर स्ट्रैटन रेज़िडेण्ट मेवाड़ और सेटल्मेण्ट अफ़्सर ए० विंगेटने एक महीना पहिलेसे बड़ी कोशिशके साथ इन्तिज़ाम करवाया. कुल कामोंमें मदद देनेके लिये महता राय पन्नालाल और मुझ (कविराजा श्यामलदास) को हुक्म था, जो कुछ होसका हम लोगोंने भी किया. इस जल्सहकी मिह्मानीमें रियासती नौकरोंमेंसे कोठारी बलवन्तसिंह, ढींकड़्या जगन्नाथ हाकिम चित्तौड़गढ़, मौलवी अब्दुर्रहमानख़ां सुपरिएटेण्डेण्ट पुलिस, और महकमह जंगलातके अफ़्सर विष्णुसिंहकी मिह्नत और कोशिश अव्वल दरजहकी थी. इनके अलावह हरएक कारख़ानहके दारोग़ह और छोटे बड़े अह्लकारोंने बड़ी तन्दिहीके साथ नौकरी दी.

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्हिज = ई० ता० २३ नोवेम्बर] को १० बजेसे पहिले उमराव, सर्दार, अह्लकार व पासबान वगैरह राजके मुलाज़िम और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके अफ़्सर व अंग्रेज़ी लेडियां दर्बारके मक़ाममें आकर सब अपने अपने दरजेके

मुवाफ़िक़ कुर्सियोंपर बैठगये. कुर्सियोंकी चार लाइन मेवाड़ी सर्दारों व अह्लकारोंके लिये और एक लाइन अंग्रेज़ी अफ्सरोंके लिये, और उसके पीछे अंग्रेजी लेडियोंके लिये उम्दह काम की कुर्सियां रक्खी गई थीं. पश्चिम तरफ़ कुछ ऊंची जगहपर लाट साहिब और महाराणा साहिबके लिये दो .उम्दह चांदीके सुनह्ले काम वाले सिंहासन रक्खे गये थे, जिनमें दाहिनी तरफ़के सिंहासनपर मार्किस ऑफ़ रिपन बैठे, और महाराणा साहिब उसी मकान के एक दूसरे कमरेमें तश्रीफ़ लाये, जहां लाट साहिबके एडिकांग आये और महाराणा साहिबको आस्मानी रंगका एक बड़े घेरवाला चुग़ा पहिनाकर वह हार गलेमें पहिनाया, जो उस ख़िताबके लिये था. फिर महाराणा साहिब उक्त एडिकांगों सहित दालानमें पहुंचे. लाट साहिबने उन्हें "ग्रेण्ड कमांडर स्टार ऑफ़ दि इण्डिया" का तमग़ह देकर अपने बाईं तरफ़के सिंहासनपर बिठाया. उस वक्त अंग्रेज़ी तोपख़ानहसे महाराणा साहिबके लिये २१ तोपें सलामीकी सर हुई. कुल रस्में अदा होकर थोड़ी देरके बाद मार्किस ऑफ़ रिपन और महाराणा साहिब अपने अपने डेरोंमें सिधारे. दिनके एक बजे लाट साहिब बग्घी सवार होकर महाराणा साहिबके डेरोंमें आये. मेवाड़की फ़ौजने क़ाइदह के साथ सलामी उतारी और तोपख़ानहसे सलामीके फ़ाइर सर होकर दर्बारके बड़े डेरेमें सोने के सिंहासनोंपर मार्किस ऑफ़ रिपन और महाराणा साहिब और दोनों तरफ़ कुल उमराव, सर्दार, अह्लकार, व अंग्रेज़ी अफ्सर कुर्सियोंपर बैठे; कुछ देरतक दस्तूरी बात चीत होनेके बाद लाट साहिब वापस रुख़्सत हुए, और राज्यके तोपख़ानह व फ़ौजसे सलामीकी मामूली रस्म अदा हुई.

शामके वक्त लाट साहिब बग्घी सवार होकर क़िला देखनेको गये. डॉक्टर स्ट्रेटन रेज़िडेण्ट मेवाड़ने एक छोटीसी किताब लाट साहिब और उनके मुसाहिबोंको दी, जिसमें मेवाड़ और चित्तौड़ गढ़का तवारीख़ी हाल और पुरानी इमारतोंका बयान था, और जो मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) शामलातसे लिखकर तय्यार की गई थी. इस पुस्तकके ज़रीएसे क़िलेकी सैर करके लाट साहिब वापस डेरोंमें आये. रात्रिके समय खाना हुआ, उसमें लाट साहिब और एक सौ के क़रीब अंग्रेज़ और लेडियां मौजूद थीं. खाना खानेके बाद महाराणा साहिबकी तरफ़से कर्नेल् वाल्टर साहिबने और उसके जवाबमें लाट साहिबने जो स्पीच दी उन दोनोंका तर्जमह नीचे लिखा जाता है:--

श्री दर्बारकी तरफ़से कर्नेल् सी० के० एम० वाल्टर साहिब बहादुर रेज़िडेण्ट मेवाड़की दी हुई स्पीचका तर्जमह.

मैं सच्चे दिलसे ज़ाहिर करता हूं, कि आज मैं अपने सर्दारों समेत इस प्राचीन राजधानी चित्तौड़में, जिसका बड़प्पन कई वर्षोंसे होता चला आया है, आपसे मिलकर

बहुत खुश हुआ हूं. इस चित्तौड़ शहरको हम सब बड़ा प्रसिद्ध और प्रिय समझते हैं, जिसकी रक्षा करने और जिसको अपने अधिकार (हुकूमत) में रखनेके लिये हमारे बुजुर्गोंने गत समयमें अपने अमूल्य प्राण अर्पण किये हैं. इस यादगारके निमित्त मेवाड़के सीसोदिया राजाओंने अपनी पदवी चित्तौड़ा रक्खी है. अपना आजका मिलाप आपसकी उस दोस्तीका अधिक होना है, जो सन् १८१८ ई० के समयसे ब्रिटिश गवर्मेंएट और राज मेवाड़के साथ चलीआती है; और उस दृढ़ मैत्रीका सुबूत यह है, कि आपने मुझे श्री महाराजराणी कैसरि हिन्दकी तरफ़से "स्टार ऑफ़ इण्डिया" की उच्च पदवी दी. इस प्रतिष्ठित पदवीसे श्रीमतीने बड़ी मिहर्बानीके साथ मुझे "नाइट ग्रैण्ड कमाण्डर" नियत किया. इस पदवीके सबबसे हमारी आपसकी मैत्रीको तरक़्क़ी और दृढ़ता होगी. मैं इस पदवीको बड़े आनन्दसे स्वीकार करता हूं और मैं सच्चे दिलसे श्रीमती महाराजराणी भारतेश्वरी और आपको धन्यवाद देता हूं, और मुझे पूरा यक़ीन है, कि इस पदवीके कारण मेरे राज्य और मेरी प्रजाकी सरसब्ज़ी और बिहतरी होगी. जबसेकि मैंने आपके शील स्वभाव और दूसरे बहुतसे उत्तम गुणोंकी प्रशंसा सुनी है, तबसे मुझको आपसे मिलनेकी दिली ख्वाहिश थी, और खुश हूं, कि मेरी वह अभिलाषा आज पूरी हुई. ईश्वर श्रीमती महाराजराणी भारतेश्वरीको बहुत अरसह तक खुशी और इक्बालमन्दीके साथ राज्याधिकारपर क़ाइम रक्खे, और आपका प्रबन्ध भारतवासियोंके लिये फ़ायदह पहुंचाने वाला और आपकी नेकनामीको बढ़ाने वाला हो, जिससे हिन्दुस्तानकी प्रजाके चित्तोंमें आपके राज्यशासनकी यादगार हमेशह के लिये क़ाइम रहे.
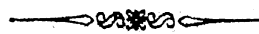
स्पीच देते समय मौक़े मौक़ेपर हाज़िरीन जल्सह आल्हाद ध्वनिके साथ अपनी प्रसन्नता प्रगट करते रहे, और बड़ी देरतक स्पीचकी समाप्तिके पीछे भी उच्च स्वरसे आनन्द ध्वनि होती रही. इसके पश्चात् श्रीमान् वाइसरॉयने ऊपरकी स्पीचके जवाबमें नीचे लिखी हुई स्पीच दी:-

चित्तौड़के जल्सेमें वाइसरॉयकी स्पीच.

ऐ मेम साहिबो और जेंटलमेनों! मैं आप लोगोंको यक़ीन दिलाता हूं, कि श्री महाराणा साहिब उदयपुरकी तरफ़से जो जाम तन्दुरुस्ती तज्वीज़ हुआ है, उसका मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूं, और जिन शब्दोंमें महाराणा साहिबने यह जाम तन्दुरुस्ती तज्वीज़ किया है उनका असर मेरे दिलपर बहुत ही हुआ. ऐ मेम साहिबो और

जेंटलमेनों, मैं निश्चय जानता हूं, कि इस मौक़ेपर हाज़िरीन जल्सेमेंसे कोई शख़्स ऐसा न होगा, जो उन शब्दोंको सुनकर प्रसन्न न हुआ हो, जिनमें कि श्री महाराणा साहिबकी तरफ़से स्पीच पढ़ीगई, और कोई इंग्लिशमैन ऐसा न होगा, जिसको इस बातका फ़ख़ न हुआ हो, कि ऐसे उत्तम वाक्य एक हिन्दुस्तानी रईसके मुंहसे निकले. मैं इस अवसरपर मौजूद होनेसे बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं, और ख़ासकर इस बातसे प्रसन्न हूं, कि पहिली ही बार अपनी महाराजराणी कैसरि हिन्दकी तरफ़से मुझे आज्ञा मिली है, कि मैं इस देशके एक रईसको पूरी रीतिके साथ "नाइट ग्रेण्ड कमाण्डर ऑफ़ दि स्टार ऑफ़ इंडिया" की पदवी दूं, और यह ऐसा अवसर है, कि वह पदवी श्रीमान् महाराणा साहिब मेवाड़को दीगई. मैं इस बातसे बहुत खुश हूं, क्योंकि श्री महाराणा साहिब प्रतिष्ठित प्राचीन और उत्तम कुलीन क्षत्रियोंमेंसे अव्वल दरजहके हैं. यह ख़ानदान हिन्दुस्तानके इतिहासमें बहुत प्रसिद्ध है. मैं इस बातसे और भी अधिक प्रसन्न हुआ, कि श्री महाराणा साहिब केवल अपने उन्हीं उत्तम बर्तावों, और शील स्वभावोंसे प्रसिद्ध नहीं हैं, जोकि उनके बड़े ख़ानदानमें पाये जाते हैं, बल्कि उस बुद्धिमानी और बुर्दबारीमें भी प्रसिद्ध हैं, जिससे वे अपनी प्रजापर हुकूमत करते हैं— और इसलिये मैं इस बातको बहुत ही योग्य समझता हूं, कि मैंने अपने अधिकारके समयमें पहिली ही बार ऐसे प्रतिष्ठित ख़ानदानी रईसको अपने बादशाहके नामसे यह पद दिया. मुझे यह भी निश्चित हुआ, कि यह स्थान बड़ा योग्य है, जिस जगहमें इस पदवीके देनेकी सभा हुई है.

ऐ मेम साहिबो और जेंटलमेनों, श्री महाराणाजीने हमको बड़े मनोहर वाक्योंसे चित्तौड़के इतिहासकी वह बातें याद दिलाई हैं, कि जिनके सबबसे चित्तौड़ प्रसिद्ध है. वे यादगारें उस वीरताका स्मरण कराती हैं, कि जो अन्य इतिहासोंमें बहुत कम मिलती है, और जिन वीरताओंमें इनके पुरुषा ही प्रसिद्ध नहीं थे, बरन उनके प्रसिद्ध घरानेकी स्त्रियां भी प्रसिद्ध थीं. इस क़िलेकी चोटीके गिर्द राजस्थानकी बहादुरियोंकी यादगारें जमा हैं. वे बहादुरीकी यादगार चीज़ें जो मैंने आज देखीं, याने वे सादे पत्थर जो वर्तमान समयके राजपूतोंके हाथसे यहां लगे हैं, उन पत्थरोंके देखनेसे हमको उन मनुष्योंका वह समय याद आता है, जबकि उनको यह निश्चित होगया, कि हमारे देशकी प्रतिष्ठा जाती है, तो उस बड़प्पनको क़ाइम रखनेके लिये आप भी संग्राम भूमिमें लड़मरे.

ऐ मेम साहिबो और जेंटलमेनों, निस्सन्देह हम सबको अपने तई धन्यवाद देना चाहिये, कि हम इस उम्दह मौक़ेपर मौजूद हुए हैं, जो सबतरह ख़ुशीसे

भराहुआ है, और मुझे बहुतही प्रसन्नताका काम सौंपागया, कि मैंने इस कुलीन प्रतिष्ठित रईसके गलेमें वह प्रतिष्ठित तमग़ह पहिनाया, जिसको बड़ी प्रतिष्ठाके साथ हमारी श्री मती महाराजराणी खुद पहिनती हैं, और इसी तमगेको हमारे शाही खानदानके लोग इज़्ज़तका चिन्ह मानकर पहिनते हैं; मैं हक़ीक़तमें यह देखकर प्रसन्न हुआ, कि श्री महाराणा साहिब कैसे सच्चे दिलसे इस तमगेका अर्थ लगाते हैं. चाहे कुछ लोगोंका यह ख़याल हो, कि ऐसे प्राचीन घरानेका अधिकारी इस तमगेको वर्तमान समयकी उपाधि मानेगा, परन्तु श्री महाराणा साहिबने न्यायके साथ इसकी जांच करली है. उन्होंने समझलिया है, कि अगर्चि यह तमग़ह नई उपाधि है, परन्तु यह इसलिये क़ाइम हुई है, कि बादशाह और उसकी हिन्दुस्तानी अमल्दारीमें एकताका दृढ़ सम्बन्ध ज़ाहिर हो, और यह कि एक तरफ़ प्रीतिका और दूसरी तरफ़ वफ़ादारीका पूरा ख़याल है. मुझे आशा है, कि इन दोनोंकी एकतासे ताज इंग्लिस्तान और हिन्दुस्तानके राजा व रईसोंका दर्मियानी सम्बन्ध दिनो दिन ज़ियादह मज्बूत होता रहेगा.

ऐ मेम साहिबो और जेंटलमेनों, मुझे ज़ियादह कहनेकी ज़ुरूरत नहीं है, मैं केवल आप लोगोंसे यह चाहता हूं, कि तन्दुरुस्तीका एक जाम पियाजाये, जिसके लिये मैं उम्मेद करता हूं, कि आप सब बड़े आनन्दके साथ उसे नौश करेंगे. मैं आपसे चाहता हूं, कि आप अपनी तरफ़से उस रईसानह मिह्मानदारीका धन्यबाद प्रगट करें जोकि हमारे लिये कीगई है, और हमारे बड़े कुलीन आतिथ्य कर्त्ताके लिये दुआ मांगें, कि इनकी बड़ी अवस्था हो, और उनका इक्बाल हमेशह क़ाइम रहे, जिसके कि वे पूरे योग्य हैं.

यह जाम तन्दुरुस्ती बड़े उत्साहसे पियागया और उच्च स्वरसे तीन बार आल्हाद जनक शब्द श्री महाराणाजीके लिये उच्चारण कियेजाकर एक अधिक आल्हाद ध्वनि फिर उच्चारण कीगई, और स्पीचके बीच बीचमें हाज़िरीन जलसह ख़ुशीकी आवाज़ें बलन्द करते रहे.

इसके बाद लेडियों और साहिब लोगोंका नाच और महाराणा साहिबकी तरफ़से .उम्दह आतिशबाज़ीका तमाशा हुआ, और क़िले चित्तौड़पर लाखोटाकी बारीसे लेकर चित्तौड़ी बुर्जतक क़िलेकी दीवार, महलों, मन्दिरों और मनारों व मकानोंपर .उम्दह रौशनी हुई. यह सब कैफ़ियत देखकर लाट साहिब बहुत ख़ुश हुए. लॉर्ड सर जॉन लॉरेन्स पहिले वाइसरॉयके बेटे भी मए लेडी साहिबाके इस जल्सेमें शरीक थे.

विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० १२९९ ता० १ मुहर्रम = .ई० ता० २४ नोवेम्बर] को प्रातःकालके ८ बजे महाराणा साहिब मए अपने आठ सर्दारों और मुसाहिबोंके लाट साहिबसे रुख़्सती मुलाक़ात करनेको उनके डेरोंपर पधारे. लाट साहिबने महाराणा साहिबसे कहा, कि मैं इस पुराने क़िलेके देखने और आपकी मिह्मानदारीसे निहायत ख़ुश होकर शुक्रियह अदा करता हूं. कुछ देर ठहरनेके बाद महाराणा साहिब अपने डेरोंको वापस आये, और सुब्हके ११ बजे लाट साहिब स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर अजमेरको सिधारे. महाराणा साहिबने अपने मिह्मानको रेल्वे स्टेशनतक पहुंचाया.

इस जल्सेमें स्वदेशी और विदेशी लोगोंका जो हुजूम एकट्ठा हुआ था, उसकी संख्या बाज़ अख़्बारोंमें ९०००० नव्वे हज़ार और लोगोंकी ज़बानी पचास साठ हज़ार के क़रीब सुनी जाती है, लेकिन् मेरा अनुमान लोगोंके ज़बानी बयानसे कुछ कम है. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० ता० ३ मुहर्रम = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] को महाराणा साहिब क़िलेपर पधारकर फ़ौजकी हाज़िरी लेनेके बाद वापस डेरोंमें आये. इन्हीं दिनोंमें स्वामी दयानन्द सरस्वती भी चित्तौड़ गढ़की तलहटीमें आगये थे, और स्वामी जीवनगिरि पेश्तरसे ही वहां मौजूद थे, दोनोंने आपसमें शास्त्रार्थ करनेका इरादह ज़ाहिर किया, लेकिन् महाराणा साहिबने विवाद बढ़जानेके ख़यालसे शास्त्रार्थ न होने दिया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ५ मुहर्रम = .ई० ता० २८ नोवेम्बर] को कर्नेल् सी० के० एम वाल्टर साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह चित्तौड़में आये. उक्त साहिबको चित्तौड़में आनेके बाद शरदीकी बीमारी होगई थी, इस सबबसे विक्रमी पौष कृष्ण १४ [हि० ता० २७ मुहर्रम = .ई० ता० २० डिसेम्बर] को वापस रवानह होगये, और इसी दिन बम्बईके कमाण्डर इन्चीफ़ आये, जिनकी महाराणा साहिबने बहुत अच्छी ख़ातिरदारी की.

इतने अरसहतक महाराणा साहिबका चित्तौड़में ठहरना इस सबबसे हुआ, कि क़िले और उसके पुराने मकानोंकी मरम्मत करानेका बन्दोबस्त कियागया और इस कामके लिये २४०००) सालानह मरम्मत ख़र्च मुक़र्रर करके इसी मौक़ेपर डींकड़िया जगन्नाथको बैठककी इज़्ज़त बख़्शी. विक्रमी पौष शुक्ल ७ [हि० ता० ५ सफ़र = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को महाराणा साहिब ज़नानह समेत स्पेशल ट्रेनमें सवार होकर मांडल पधारे, और वहांसे बागोरमें महाराज शक्तिसिंहके यहां मिह्मान रहकर विक्रमी माघ शुक्ल ५ [हि० ता० ३ रबीउल्अव्वल = .ई० १८८२ ता० २४ जेन्युअरी] को उदयपुरमें दाख़िल होगये.

विक्रमी १९३९ चैत्र शुक्ल २ [हि० १२९९ ता० १ जमादिउल्अव्वल

.ई० १८८२ ता० २१ मार्च] को महाराणा साहिब महता माधवसिंहके मकानपर मिह्मान हुए, और उसको ख़िल्अत और पैरमें सुवर्ण भूषण बख़्शा. विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ६ [हि० ता० २० जमादियुस्सानी = .ई० ता० ९ मई] को रेज़िडेन्सी मेवाड़के .उह्देपर कर्नेल् यूएन स्मिथ काइममकाम नियत होकर आये, और डॉक्टर स्ट्रेटन यहांसे तब्दील होकर रेज़िडेन्सी जयपुरके .उह्देपर गये.

इसी अरसहमें भौराईकी पालवाले भीलोंने मगरा ज़िलेके गिर्दावर दयालाल चौईसाको घेरकर फ़साद खड़ा किया, और उनके साथ नठाराके भीलोंने भी सिर उठाया, जिनकी सज़ादिहीके लिये मामा अमानसिंह मए फ़ौजके भेजागया. उसने कई गमेतियों को गिरिफ्तार करके भीलोंको पूरे तौरपर सज़ा दी, और महता गोविन्दसिंह हाकिम मगराने भी इस मौक़ेपर तन्दिहीके साथ काम दिया, जिसके .एवज़ विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १२ [हि० ता० ११ रजब = .ई० ता० २९ मई] के दिन मामा अमानसिंहको पैरमें सोनेके लंगर और महता गोविन्दसिंहको ख़िल्अत इनायत कियागया. भौराईकी पालवाले भीलोंको बड़े लुटेरे और सर्कश देखकर महाराणा साहिबने वहां एक क़िला बनवाया और मज़्बूत थानह रखनेका हुक्म दिया.

इस वर्षके प्रारम्भमें महाराणा साहिबने मुझ (कविराजा श्यामलदास) को बाग़ बनाने के लिये हाथीपोल दर्वाज़हके बाहिर हवालेमें १० बीघेके अनुमान ज़मीन .इनायत की. जोकि महाराणा साहिबको अपने शहरकी रौनक़ बढ़ाने और .इमारती कामोंका बहुत शौक़ था, इसलिये दो तीन बार इस बग़ीचेमें पधारकर रास्तह, पट्टियां व .इमारत वग़ैरह बनवाने और दरख़्त लगानेका तर्ज़ अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ डलवाया, और विक्रमी आश्विन शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्क़ाद = .ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को हुक्म देकर श्री करणी माताके मन्दिरमें मूर्त्ति स्थापनाकी प्रतिष्ठा करवाई. विक्रमी आश्विन शुक्ल ६ [हि० ता० ५ ज़िल्हिज = .ई० ता० १८ ऑक्टोबर] को महाराणा साहिबने इस बग़ीचेमें पधारकर मेरी तरफ़का ग़रीबी आतिथ्य क़बूल किया और मुझको ख़िल्अत बख़्शकर बग़ीचेका नाम "श्यामल बाग़" रक्खा. इस अवसरपर मैंने मारवाड़ी भाषामें एक काव्य बनाकर सुनाया, जो नीचे दर्ज कियाजाता है:-

छप्पय.

जिम जुहार ताजीम, पाय लंगर हिम पटके ॥
पूरण बांह पशाव, खळां अदवां मन खटके ॥
जाहर छड़ी जळेब, छाप कागळ बड़ छापण ॥

मांझो पाघ मझार, थरू बीड़ो जस थापण ॥
कविदास तेण कविराज कर, कठिन अंक विधि कापिया ॥
कर शुभ निगाह श्यामळ कुरब, सज्जन राण समापिया ॥ १ ॥

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १ [हि० १३०० ता० १३ मुहर्रम = ई० ता० २५ नोवेम्बर] को महाराणा साहिबकी भूवा कीकाबाजी (१) कृष्णगढ़से उदयपुर आई. महाराणा साहिब बड़े आदरके साथ चंपाबाग़ तक पेश्वाई करके उनको महलोंमें लाये. विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २५ मुहर्रम = ई० ता० ७ डिसेम्बर] को शहरमें सज्जन-हॉस्पिटल नामी शिफ़ाखानह खोलागया. विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० ता० ३० मुहर्रम = ई० ता० १२ डिसेम्बर] को कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेन्सी मेवाड़के उह्देपर वापस आये, और दो रोज़ बाद कर्नेल् स्मिथ गये. इन्हीं दिनोंमें काशीसे प्रसिद्ध विद्वान बाबू हरिश्चन्द्र आया, जिसको मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि० ता० १२ सफ़र = ई० ता० २४ डिसेम्बर] को ख़िल्अ़त देकर विदा किया. विक्रमी माघ शुक्ल २ [हि० ता० ३० रबीउल्अव्वल = ई० १८८३ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को ४ घड़ी दिन चढ़े ईडरवाली छोटी महाराणी साहिबाके गर्भसे महाराजकुमारका जन्म हुआ. इस समयकी खुशीका बयान नहीं होसक्ता, क्योंकि ५५ वर्षके बाद इस रियासतमें यह आनन्दका समय प्राप्त हुआ था. उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, मांडलगढ़, जहाज़पुर वग़ैरह सर्कारी स्थानों और उमराव लोगोंके ठिकानोंमें ख़बर पहुंचतेही बड़ी खुशीके साथ तोपोंके फ़ाइर और जल्से शुरू होगये. महाराणा साहिब स्वरूपविलासमें आ बिराजे, और हम लोगोंने उनके सामने मुट्ठियां भरभर कर हज़ारों रुपये और अश्रफ़ियां ग़रीबोंको लुटाना शुरू किया. केवल उदयपुरमें ही नहीं बल्कि जयपुर, जोधपुर वग़ैरह राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंमें भी इस ख़बरके पहुंचतेही तोपोंकी सलामी और खुशीके जल्से शुरू होगये. महाराणा साहिबने इस मौक़ेपर १० लाख रुपया ख़र्च करना तज्वीज़ किया था, लेकिन् अफ्सोस कि उसी रोज़ रात्रिके १२ बजे उस आनन्द दायक कुमारका परलोक-वास होगया और खुशीके एवज़ चारों तरफ़ शोक छागया. विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि० ता० ७ रबीउस्सानी = ई० ता० १६ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा साहिबकी भूवा सौभाग्य कुंवर रीवांसे उदयपुर आई, जिनको महाराणा साहिब चंपाबाग़ तक पेश्वाई करके महलोंमें लेआये. यह महाराणा सर्दारसिंहकी बेटी और रीवांके महाराजा

---

(१) यह महाराणा भीमसिंहकी पोती और कुंवर अमरसिंहकी बेटी कृष्णगढ़के महाराजा शार्दूल-सिंहकी दादी हैं.

रघुराजसिंहकी टीकेत महाराणी थीं. विक्रमी फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० ता० १८ रबीउ-स्सानी = .ई० ता० २७ फेब्रुअरी] को स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराणा साहिबसे विदा होकर जोधपुरकी तरफ़ गये. विक्रमी चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १७ जमादियुल्-अव्वल = ई० ता० २७ मार्च] को महाराणा साहिबने मुझे महाराजा जशवन्तसिंह साहिबकी सिह्हतपुर्सीके लिये जोधपुर भेजा, क्योंकि उक्त महाराजा साहिबके कण्ठमें बहुत सख़्त दर्द होगया था. जोधपुरसे वापस आनेके कुछ दिन बाद मेरी आंखमें सख़्त दर्द पैदा हुआ, जिसका इलाज पादरी डॉक्टर समरविल और रेज़िडेन्सी सर्जन डॉक्टर मलन साहिबने दो महीनेतक किया, लेकिन् कुछ फ़ायदह न हुआ, तब विक्रमी १९४० आषाढ़ कृष्ण २ [हि० ता० १६ शअ्बान = .ई० ता० २२ जून] को महाराणा साहिबने साइरके दारोग़ह, महद्राज सभाके मेम्बर और मेरे मित्र पंडित ब्रजनाथको साथ देकर मुझे इन्दौर भेजा. वहां डॉक्टर कीगनने मेरा बहुत अच्छा इलाज किया. ईश्वरने कुछ दिनोंके लिये फिर ज़िन्दगी और आंखकी रौशनी बख़्शी जिससे मैं अबतक अपने शारीरक व्यवहार और यथाशक्ति अपने स्वामीकी सेवा करता हूं. विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ शव्वाल = .ई० ता० १८ ऑगस्ट] को महाराणा साहिबने सज्जनगढ़का खातमुहूर्त किया. इस मौक़ेपर मैं भी इन्दौरसे आकर जल्सेमें शरीक होगया.

इसी अरसहमें जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंह साहिब मए अपने भ्राता कर्नेल् प्रतापसिंहके उदयपुरमें आये, जिसका हाल इस तरहपर है, कि महाराणा साहिबने जबसे राजपूतानहमें एकता फैलाई और इन महाराजा साहिबसे मित्रता की, और महाराजा साहिबकी बहिनके साथ महाराणा साहिबकी शादी करदेनेका विचार हुआ, तबसे दिन ब दिन स्नेह बढ़ता ही गया; सिवा इसके बहुत दिनोंसे महाराजा साहिब भी उदयपुरमें आनेका विचार करते थे. आख़रकार विक्रमी चैत्र कृष्ण १२ [हि० १३०१ ता० २५ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८८४ ता० २४ मार्च] को जोधपुरसे प्रस्थान करके पाली, अजमेर, व चित्तौड़गढ़ होकर स्पेशल ट्रेन द्वारा विक्रमी चैत्र कृष्ण ऽऽ [हि० ता० २८ जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० २७ मार्च] के दिन प्रातः कालके ७॥ बजे नींबाहेड़ाके स्टेशनपर पहुंचे. महाराजा साहिबके साथ उनके छोटे भ्राता कर्नेल् प्रतापसिंह, महाराज ज़ोरावरसिंहका पुत्र फ़त्हसिंह, नीमाजका ठाकुर छत्रसिंह, रोयटका ठाकुर गिरधारीसिंह, भूमलियाका ठाकुर रणजीतसिंह, कविराजा मुरारिदान, ख़ानबहादुर फ़ैज़ुल्लाहख़ां, शोभावत रणजीतसिंह, फज़्लरुसूल, रिसाल्दार वज़ीरअली, महता कुन्दनलाल, ड्योढ़ीदार शोभावत सहसकरण, और

मीर फ़य्याज़अली वग़ैरह अनुमान ३०० आदमी थे. महाराणा साहिबकी तरफ़से पेश्वाईके लिये हमीरगढ़का रावत् नाहरसिंह, भदेसरका रावत् भोपालसिंह, कायस्थ फ़ूलनाथ, और कायस्थ ज़ालिमचन्द स्टेशनपर मौजूद थे; सर्बराहकी सब सामग्री का प्रबन्ध भी महाराणा साहिबकी तरफ़से होगया था. नव्वाब टौंककी तरफ़से नींबाहेड़ाका आमिल और शाहज़ादह महमूदख़ां मौजूद था. वहांसे बग्घी, घोड़े, हाथी व पालकी वग़ैरहकी डाक लगी हुई थी, महाराजा साहिब शामके ४॥ बजे रवानह हुए और मंगरवाड़के बंगलेमें भोजन व शयन करके विक्रमी १९४१ चैत्र शुक्क १ [हि० ता० २९ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २८ मार्च] को दस बजे डबोक के बंगलेमें पहुंचे, जहां कुछ देर ठहरकर ११॥ बजे उदयपुरके सूरजपोल दर्वाज़ह बाहिर चंपाबाग़में दाख़िल होगये. महाराजा साहिबने महाराणा साहिबको बीमार होनेके कारण पेश्वाई करनेके लिये मना करदिया था, इसलिये महाराणा साहिब तो न गये, और मैं (कविराजा श्यामलदास) और महता तख़्तसिंह, दोनों धव्वा बदनमल्लकी बावड़ीतक जाकर उक्त महाराजाको लेआये. शामके वक्त महाराजा साहिब चंपाबाग़से बग्घी सवार होकर उदयपुरके फ़ौजी रिसाले, बैण्ड बाजे और बॉडीगार्डके साथ सूरज पोल दर्वाज़हके रास्तेसे बड़े बाज़ारमें होकर शम्भुनिवासमें बग्घीसे उतरे. वहांपर सर्दारगढ़का ठाकुर मनोहरसिंह, मैं (कविराजा श्यामलदास) और महता राय पन्नालाल अग्रगामिता करके उन्हें भीतर लेगये. महाराणा साहिब और महाराजा साहिब आपसमें मिलकर बहुत ख़ुश हुए. फिर महाराणा साहिब तो अखाड़ेके महल में पधारे और महाराजा साहिबने शम्भुनिवासमें शयन किया. इनकी सर्बराहके लिये मैं (कविराजा श्यामलदास) और महासाणी मोतीलाल मए कई अहलकारोंके तईनात कियेगये थे. दूसरे दिन विक्रमी चैत्र शुक्क ३ [हि० ता० १ जमादियुस्सानी = ई० ता० २९ मार्च] को महाराजा साहिबने जल विमान नामक नौकामें सवार होकर पीछोला तालाबकी सैर की, और गनगौरका मेला देखा. महाराणा साहिबने बीमारी की नाताक़तीके सबब सवारी नहीं की. विक्रमी चैत्र शुक्क ४ [हि० ता० २ जमादियुस्सानी = ई० ता० ३० मार्च] को शहरकोटके क़रीब तीखल्या पहाड़में एक सुनहरी शेरनीके आनेकी ख़बर मिली, लेकिन् महाराणा साहिब तो बीमारीके सबब न पधारसके, और महाराजा साहिबने जाकर उस शेरनीका शिकार किया. विक्रमी चैत्र शुक्क ५ [हि० ता० ३ जमादियुस्सानी = ई० ता० ३१ मार्च] को महाराणा साहिब और महाराजा साहिब दोनोंने बड़ी नावमें सवार होकर गनगौरका मेला व आतिशबाज़ीका तमाशा देखा. इसी तरह दूसरे और तीसरे

दिन भी मुहब्बतके साथ मिलना जुलना हुआ और सैर व तमाशा देखागया.

इन्हीं दिनोंमें कृष्णगढ़के महाराजा शार्दूलसिंह साहिब भी उदयपुरमें आ पहुंचे. यह विक्रमी चैत्र शुक्ल ६ [हि० ता० ४ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १ एप्रिल] को कृष्णगढ़से रवानह होकर विक्रमी चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ५ जमादियुस्सानी = .ई० ता० २ एप्रिल] के प्रातःकालको नींबाहेड़े, शामको मंगरवाड़ और विक्रमी चैत्र शुक्ल ८ [हि० ता० ६ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ३ एप्रिल] के रोज़ करीब ११ बजे दिनको उदयपुरमें दाख़िल हुए. इन दिनोंमें महाराणा साहिबकी तबीअत अलील होनेके सबब पेशवाई नहीं हुई, और सरबराह वगैरहका .उम्दह बन्दोबस्त किया गया. विक्रमी चैत्र शुक्ल ९ [हि० ता० ७ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ४ एप्रिल] को दोनों महाराजा साहिबोंके कहनेपर महाराणा साहिबने बड़ी पोलके रास्तहसे तख़्तकी सवारी की, और दोनों महाराजा साहिब घोड़ोंपर सवार होकर मुहब्बतके कारण तख़्तके आगे होलिये. गनगौर घाटसे तीनों अधीश नाव सवार होकर मेला, आतिशबाज़ी व तालाबकी सैर देखते हुए शम्भुनिवासमें पहुंचे, और अपने अपने स्थानोंमें शयन किया. विक्रमी चैत्र शुक्ल १० [हि० ता० ८ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ५ एप्रिल] को तीनों महाराजाओंने शामके वक्त शम्भुनिवास महलमें शौक़िया बातें कीं. दूसरे दिन भी इसी प्रकारका बर्ताव रहनेके बाद विक्रमी चैत्र शुक्ल १२ [हि० ता० १० जमादियुस्सानी = .ई० ता० ७ एप्रिल] की शामको महाराणा साहिबने दस्तूरी दर्बार करके अपने सर्दारों व अह्लकारोंसे महाराजा साहिब जोधपुरको नज़ानह करनेका दस्तूर करवाया. इसी तरह दूसरा दिन भी खुशीके साथ गुज़रा, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १२ जमादियुस्सानी = .ई० ता० ९ एप्रिल] को शामके ६॥ बजे मेरे (कविराजा श्यामलदासके) बाग़में तीनों अधीश पधारे और मेरी तरफ़की रूखी सूखी दावत कुबूल फ़र्माकर महलोंमें तशरीफ़ लेआये. विक्रमी चैत्र शुक्ल १५ [हि० ता० १३ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १० एप्रिल] को महाराजा जशवन्तसिंह साहिब बग्घी सवार होकर श्री एकलिङ्गेश्वरके दर्शन करके वापस उदयपुर में पधारे. विक्रमी वैशाख कृष्ण १ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० ११ एप्रिल] को तीनों अधीश हाथियोंकी लड़ाई देखकर मामा बख़्तावरसिंहकी हवेलीपर पधारे और उसकी तरफ़की गोट अरोगकर महलोंमें तशरीफ़ लेआये. विक्रमी वैशाख कृष्ण २ [हि० ता० १५ जमादियुस्सानी = .ई० ता० १२ एप्रिल] को फ़ौजके लोग शक्तावत् केसरीसिंह वगैरहको बोहड़ासे उदयपुरमें लाये, जिसका तफ़्सीलवार हाल आगे लिखाजायेगा. विक्रमी वैशाख कृष्ण ३ [हि० ता० १६ जमादियुस्सानी = .ई० ता०

१३ एप्रिल] को तीनों अधीशोंने शामके वक्त नौका सवार होकर धींगा गनगौर (१) का मेला देखा. विक्रमी वैशाख कृष्ण ४ [हि० ता० १७ जमादियुस्सानी = ई० ता० १४ एप्रिल] के दिन तीनों अधीश रेजिडेंसीको तश्रीफ़ लेगये, जहां कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेएट मेवाड़की तरफ़से उनकी दावत थी; खाना, नाच, राग रंग व इत्र पान होनेके बाद तीनों अधीश वापस महलोंमें तश्रीफ़ लाये. फिर वैशाख कृष्ण ५-६ [हि० ता० १८-१९ जमादियुस्सानी = ई० ता० १५-१६ एप्रिल] को जगमन्दिर व जगन्निवासका देखना, हौज़ व फ़व्वारोंका जल्सह और गोवर्द्धनविलास व उदयपुरकी फ़ौजका परेड देखना वगैरह होता रहा. विक्रमी वैशाख कृष्ण ७ [हि० ता० २० जमादियुस्सानी = ई० ता० १७ एप्रिल] की शामको जोधपुरके महाराजा साहिबको रुख़्सत दीगई, महाराणा साहिबने दस्तूरके मुवाफ़िक़ वस्त्रालङ्कारकी २१ किश्तियां और लड़ाईका एक हाथी मेदिनी-मल्ल और दो घोड़े महाराजा जशवन्तसिंह साहिबको, ४ किश्तियां और १ घोड़ा महाराज प्रतापसिंहको, और ३ किश्तियां तथा १ घोड़ा कुंवर फ़तहसिंहको दिया. अलावह इन चीज़ोंके मुहब्बत व रिश्तहदारीके सबब श्री महाराजा साहिबको सवारीके लिये दो हाथीके बच्चे और दो घोड़े, तलवारें, खुकुड़ी, और जमधर वगैरह शस्त्र ज़ियादह देकर खुद महाराणा साहिब नाहरमगरेतक पहुंचानेको गये. फिर महाराजा साहिब तो राजसमुद्र होते हुए देसूरीकी तरफ़ होकर मारवाड़को सिधारे, और महाराणा साहिब मए कृष्णगढ़ महाराजा साहिबके उदयपुर आये. विक्रमी वैशाख कृष्ण १३ [हि० ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० ता० २३ एप्रिल] को महाराजा कृष्णगढ़ महाराणा साहिबके पास दस्तूरी दर्बारमें शम्भुनिवास आये, जिनको १५ किश्तियां वस्त्रालङ्कार की और एक हाथी व दो घोड़े दियेगये. फिर महाराणा साहिब महाराजा साहिबके पास खुशमहलमें जाकर विदायगीका दस्तूरी दर्बार करके वापस आये. शामके वक्त दोनों अधीश महता माधवसिंहके मकानपर तश्रीफ़ लेगये, और दावतका भोजन अरोगकर वापस आये. इसी तरह विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ रजब = ई० ता० २८ एप्रिल] को महता तख़्तसिंहकी हवेलीपर दावत हुई, और दोनों अधीश तश्रीफ़ लेगये. विक्रमी वैशाख शुक्ल ६ [हि० ता० ५ रजब = ई० ता० १ मई] के दिन महाराणा साहिबने कृष्णगढ़के महाराजा साहिब और अपनी भूवा कीका बाजीको विदा किया. उदयपुरसे कूच होकर सहेलियोंकी बाड़ीमें मक़ाम हुआ.

---

(१) धींगा गनगौरका त्यौहार किसी दूसरी रियासतमें नहीं होता, महाराणा साहिबके पूर्वजोंमेंसे किसीने बे क़ाइदह इस गनगौरका निकालना शुरू किया, और इसी सबबसे यह त्यौहार धींगा गनगौरके नामसे प्रसिद्ध हुआ. हमारी तह्क़ीक़ातसे महाराणा अव्वल राजसिंहका इस त्यौहारको प्रचलित करना पायाजाता है.

महाराणा साहिब भी इनको पहुंचानेके लिये सहेलियोंकी बाड़ी पधारे थे, सो रातभर वहां ही रहे, और कृष्णगढ़ वाली महाराणी साहिबा अपनी दादीको पहुंचानेके लिये नाथद्वारेतक गईं. दूसरे दिन सुबहके वक्त कृष्णगढ़के महाराजा सहेलियोंकी बाड़ीसे रवानह हुए और श्री एकलिङ्गेश्वर, नाथद्वारा, कांकड़ोली व शाहपुरा होते हुए कृष्णगढ़ पहुंचे. इन महाराजाओंके उदयपुरमें आनेका जल्सह बड़ी धूमधामके साथ हुआ, जिसमें क़रीब ८००००) अस्सी हज़ार रुपया ख़र्च पड़ा.

बोहड़ेपर फ़ौजका भेजा जाना.

बोहड़ेका ठिकाना उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने भींडर महाराज मुह्कमसिंहके छोटे बेटे फ़त्हसिंहको जागीरमें दिया था. जब फ़त्हसिंह बिना सन्तानके मरगया और भींडरके महाराज ज़ोरावरसिंहके कोई पुत्र न रहा, तब ग्राम सकतपुरा (१) का शक्तावत बख़्तावरसिंह फ़त्हसिंहके गोद रक्खा गया, और भींडर महाराज ज़ोरावर-सिंहका देहान्त होनेपर महाराज हमीरसिंह भी पान्सलसे दत्तक लायागया. इस ठिकाने वाले भींडरसे बहुत दूर मिलते थे. तब बख़्तावरसिंहने फ़त्हसिंहके दत्तक होनेके कारण भींडर महाराज ज़ोरावरसिंहकी गोद बैठनेका दावा किया, और बहुतसी लड़ाइयां लड़ा, लेकिन् भींडरपर हमीरसिंह ही साबित रहा. विक्रमी १९१७ [हि० १२७७ = ई० १८६०] में बख़्तावरसिंह भी बिना सन्तानके मरगया, परन्तु मरते वक्त सकतपुरा (शक्तिपुरा) से अपने भतीजे अदोतसिंहको गोद रखगया. इसके बाद महाराणा स्वरूपसिंह साहिबका भी देहान्त होगया, और उदयपुरमें महाराणा शम्भुसिंह साहिबकी बाल्यावस्थाके कारण राज्य कार्योंमें एजेएटीका प्रबन्ध होगया, और पंच सर्दार राज्यके मुसाहिब बने. यह बोहड़ेका दावा भींडर वाले हमीरसिंहने विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] में एजेएट साहिबके सामने पेश किया, लेकिन् अदोतसिंहको महाराणा स्वरूपसिंह साहिबने मन्ज़ूर करलिया था, इसलिये अदोतसिंह ही क़ाइम रक्खा गया, मगर इस वक्त यह क़रार पाकर, कि अदोतसिंहके पुत्र हो, तो वह छोटा माना जावे, और बड़ेका मर्तबह भींडर महाराज हमीरसिंहके छोटे पुत्र शक्तिसिंहको हासिल हो, देवाखेड़ा और बांसड़ा नामके दो ग्राम शक्तिसिंहके क़बज़हमें करादिये गये,

---

(१) सकतपुरा वाले भींडरसे कई पीढ़ियोंमें मिलते हैं.

परन्तु ईश्वरकी इच्छासे थोड़े ही दिन बाद शक्तिसिंह भी गुज़र गया, और उसके एक छोटा पुत्र था वह भी मरगया; तब भींडर महाराज हमीरसिंहने अपने तीसरे पुत्र रत्नसिंहको अदोतसिंहके दत्तक रखनेका दावा किया, जिसको महाराणा शम्भुसिंह साहिबने मन्ज़ूर फ़र्मालिया, लेकिन् अदोतसिंहने उसे स्वीकार नहीं किया, बल्कि भींडर व बोहड़ा-वालोंके आपसमें कई जगह लड़ाइयां भी हुई, परन्तु कुछ मत्लब न निकला. तब महाराणा शम्भुसिंह साहिबके वैकुण्ठवास होने बाद भींडरके महाराज मदनसिंहने महाराणा सज्जनसिंह साहिबकी सेवामें रत्नसिंहका दावा पेश किया. उसको महाराणा साहिबने स्वीकार करके रत्नसिंहको अदोतसिंहके ज्येष्ठ पुत्रकी नशिस्तपर बिठाकर बांसड़ा व देवाखेड़ा उसके ख़र्चके लिये अदोतसिंहसे दिलवानेकी आज्ञा दी. अदोतसिंहने अधीशकी आज्ञाके विरुद्ध सकतपुरासे अपने भतीजे केसरी-सिंहको दत्तक रखलिया, और रत्नसिंहको ग्राम देनेसे इन्कार किया. तब अधीशने नाराज़ होकर बोहड़ा पट्टाके ग्राम मंगरवाड़, देवाखेड़ा व बांसड़ापर ख़ालिसह भेजदिया. अदोतसिंहने कहा, कि अधीश तो हमारे स्वामी हैं, बोहड़ा भी छीन लेवें, तो हाज़िर है, लेकिन् भींडर महाराजको तो एक बीघा ज़मीन भी देना मन्ज़ूर नहीं; और मैंने केसरीसिंहको दत्तक रक्खा है वही ठिकानेका मालिक होगा. आख़रकार विक्रमी १९४० फाल्गुन शुक्ल [हि० १३०१ जमादियुल्अव्वल = .ई० १८८४ मार्च] में अदोतसिंहका इन्तिकाल होगया, तब भींडरके महाराज मदनसिंह और रत्नसिंहने अपना हक़ मिलनेका दावा किया. इसपर महाराणा साहिबने सात दिनकी मीआदका एक तह्रीरी हुक्म केसरीसिंह व उसके जागीरदारों तथा बख़्तावरसिंह और अदोतसिंहकी स्त्रियोंके नाम लिखा भेजा, कि तुम लोग इस मीआदके भीतर यहां चले आओ, अगर उदूल हुक्मी करोगे, तो सज़ा पाओगे. इसी हुक्मके साथ महता गोपालदासको मए तीन सौ सिपाहियोंके बोहड़ेपर सर्कारी क़बज़ह करनेके लिये भेजदिया, क्योंकि इस रियासतके कुल जागीरदार राजपूतोंमें आम क़ाइदह है, कि जब किसी जागीरदारका इन्तिक़ाल होजाता है तो उसके ठिकानेपर शुरूमें सर्कारी ख़ालिसह भेजदिया जाता है, और कुछ दिनों बाद उस जागीरदारके बेटेको वही ठिकाना और वही ख़िताब इनायत होजाता है; परन्तु केसरीसिंहने महता गोपालदासको बोहड़ा ग्रामके भीतर नहीं घुसनेदिया, और कहलादिया, कि भीतर आओगे तो हम गोलियां चलावेंगे. आख़रकार उदूल हुक्मीके कारण विक्रमी चैत्र कृष्ण ७ [हि० ता० २० जमादियुल्अव्वल = .ई० ता० १९ मार्च] की पिछली रातको उदयपुरसे बोहड़ेकी तरफ़ फ़ौज रवानह हुई. शम्भु और सज्जन पल्टन और फ़र्स्ट केवलरी रिसाला

दो तोपें और तोपखानह व पल्टनका अफ्सर लोनार्गिन साहिब और राय पन्नालाल महताका छोटा भाई लक्ष्मीलाल रवानह हुए, और मगरा ज़िलेसे भीमपल्टन तथा चित्तौड़गढ़से भीलपल्टन भेजी गई. बोहड़ेमें पहुंचकर महता लक्ष्मीलालने उन लोगों को बहुत कुछ समझाया, लेकिन् उन्होंने हुक्मकी तामील करनेसे इन्कार किया, तब गोलन्दाज़ी शुरू कीगई. अगर्चि बोहड़ेमें कोई क़िला नहीं है, लेकिन् रावत्के मकानके चारों तरफ़ प्रजाके घर होनेके सबब वह बेलाग है, और भीतर पानीका एक कुआं भी मौजूद है. इसके अलावह खानेपीनेका सामान भी उन लोगोंने एकट्ठा करलिया था, और आम रास्ते मज़्बूत फाटकोंसे बन्द करदिये थे. अधीशकी आज्ञा थी, कि फ़ौज भी हमारी और भीतरके राजपूत भी हमारे ही हैं, और दोनों तरफ़के आदमी मारेजानेमें हमारा ही नुक्सान है, इसलिये बग़ैर खूंरेज़ीके वे लोग चले आवें तो ठीक है. फ़ौजके अफ्सरोंने भी उनके डरानेके लिये गोले चलाये. सुब्ह शाम गोले चलते रहे, लेकिन् उन लोगोंने हुक्मकी तामील बिल्कुल न की, तब फ़ौजको हमलह करनेका हुक्म पहुंचा. विक्रमी १९४१ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १३०१ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १८८४ ता० ६ एप्रिल] को प्रातः कालके छः बजेसे फ़ौजने हमलह शुरू किया. बोहड़ेमें केसरीसिंहके पास ४०० लड़नेवाले आदमी मौजूद थे, तोपोंसे ग्रामके रास्तेकी फाटकें तोड़दी गईं, और पैदलोंने हमलह करदिया. भीतरसे भी जिन लोगोंने मोर्चे लेरक्खे थे, गोलियोंके चलानेमें कोताही न की; दो आदमी भीलपल्टन के मारेगये. थोड़ी देरके बाद उन लोगोंने पछेवड़ी फेरी, जोकि लड़ाई बन्द करनेकी प्रार्थना का एक चिन्ह है. यह देखकर फ़ौजके अफ्सरोंने बिगुल बजाकर लड़ाई बन्द करदी; लेकिन् कुछ देर पीछे धोखा देकर बोहड़े वालोंने एक दम बन्दूकें चलाईं, परन्तु फ़ौजके आदमियोंको नुक्सान नहीं पहुंचा, वर्नह इस हमलेमें सौ दोसौ आदमियोंका माराजाना संभव था. गांवमें आग भी लगगई. दिनके तीन बजे केसरीसिंह व शोभालाल कामदार, जो इस फ़सादका मूल कारण था, मए औरत, बच्चों व राजपूतोंके मकानसे निकलकर फ़ौजके आदमियोंपर गोलियां चलाते हुए निकल भागे. जो लोग उनको भागते वक्त गिरिफ्तार करनेके बन्दोबस्तपर थे उन्होंने पीछा किया, परन्तु बोहड़ा वालोंने भागकर एक मोर्चा जालिया, जिसको कि उन्होंने एक खेतमें मिट्टीसे तय्यार किया था, और वहांसे गोलियां चलाने लगे. जब फ़ौजवालोंने हमलह करके उस मोर्चेको तोड़डाला, तो वे लोग लड़ते हुए एक नालेमें पहुंचे, और वहां भी मोर्चा लेकर लड़ने लगे. फ़ौजके लोगोंने हमलह करके उस मोर्चेको भी छीन लिया, तब वे लोग पहाड़की तरफ़ चले, लेकिन् फ़ौजका हमलह ज़बर्दस्त होनेके कारण

औरतोंको छोड़कर मैदानमें खड़े होगये, और मुस्तइदीके साथ गोलियां चलाने लगे. इस वक़ रिसालदार बहादुर गुलशेरख़ांके दाहिनी पसलीमें गोली लगी, और वह गिरा; उसके गिरते ही रिसाले वालोंने जोशमें आकर एकदम हमलह करदिया. इस हमलेमें दफ़ेदार हीरासिंहकी छातीमें गोली लगी. इन दोनों अफ़्सरोंके मारेजानेसे सिपाहियोंने ऐसी तेज़ीसे हमलह किया, कि उनको दूसरी दफ़ा बन्दूकें नहीं भरने दीं, और केसरीसिंह व शोभालाल वग़ैरहके हथियार डलवाकर उन्हें क़ैद करलिया. वे लोग औरतों समेत फ़ौजमें लायेगये. महता लक्ष्मीलाल ने औरतोंको तो रसीद लेकर बानसीके रावत् मानसिंहके सुपुर्द करदिया, और ३८ आदमी पकड़े गये. १३ आदमी ज़ख़्मी होकर गिरिफ़्तार हुए, और बाक़ी आग लगजानेसे धुएंकी धुंधलाहटमें भागगये. महता लक्ष्मीलालने महाराणा साहिबकी आज्ञानुसार बोहड़ाका बन्दोबस्त महता गोपालदासके सुपुर्द करके फ़ौज और क़ैदियों समेत वहांसे कूच किया. ये लोग विक्रमी वैशाख कृष्ण २ [हि० ता० १५ जमादियुस्सानी = ई० ता० १२ एप्रिल] की शामको ५ बजे उदयपुरमें हाज़िर होगये.

लड़ाईमें मारेजाने वालों और ज़ख़्मियोंकी फ़िह्रिस्त.

राज्यकी फ़ौजके जो आदमी और घोड़े मारेगये और ज़ख़्मी हुए वे नीचे दर्ज किये जाते हैं:-

(मारेगये)

१- रिसालदार बहादुर गुलशेरख़ां, दूसरे रिसालेका.
२- दफ़ेदार हीरासिंह, दूसरे रिसालेका.
३- नायक धनलाल, तीसरी कम्पनी चित्तौड़ पल्टनका.
४- राजपूत गुलाबसिंह सिपाही, सज्जनपल्टन कम्पनी अव्वलका.

(ज़ख़्मी हुए)

१- तोपख़ानहके लेफ़्टिनेण्ट मुम्ताज़अलीके पैरमें ख़फ़ीफ़ गोली लगी.
२- सिकन्दरख़ां रिसाले अव्वल छब्बीसकी जांघमें सख़्त गोली लगी, जो निकाली गई.

३– महबूबुल्लाहखां रिसाले अव्वल छब्बीसके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

४– राजपूत गुलाबसिंह सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेको ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

५– कुबेरसिंह सज्जनपल्टन तीसरी कम्पनी वालेके पैरमें सख़्त गोली लगी.

६– देवीसिंह सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेके पैरमें गोलीकी चरपट लगी.

७– गोविन्दसिंह चहुवान सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेके पैरोंमें गोलीकी चरपट लगी.

८– सूबह्दार गणेशराम सज्जनपल्टन अव्वल कम्पनी वालेके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

९– लैस करीमबख़्श दूसरे रिसाले वालेके कानके पास गोली लगी.

१०– दूसरे रिसालेके सवार सुख़मख़ांकी जांघमें सख़्त गोली लगी.

११– अह्मदख़ां सवार, रिसाला दुवुमके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

१२– नायक हरजी सोमाका, मुलाज़िम भील कम्पनी अव्वल चित्तौड़ पल्टनके मुंहपर सख़्त गोली लगी.

१३– सिपाही जामा मेघाका, भील कम्पनी दुवुम चित्तौड़ पल्टनके सख़्त गोली लगी.

१४– बिगुलची भोगा दल्लाका, मुलाज़िम भील कम्पनी अव्वल चित्तौड़ पल्टनके ख़फ़ीफ़ गोली लगी.

(घोड़े जो मरे और ज़ख़्मी हुए)

१– तोपख़ानहका सर्कारी घोड़ा, जिसपर लेफ़्टिनेण्ट मुम्ताज़अ़ली सवार था, मारा गया.

१– दूसरे रिसालेके सुख़मख़ांका घोड़ा ज़ख़्मी हुआ.

१– अह्मदख़ां दूसरे रिसालेके सवारका घोड़ा ज़ख़्मी हुआ.

बोहड़ा वालोंके जो लोग मारेगये और ज़ख़्मी हुए उनकी फ़िह्रिस्त नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है :–

(मारेगये)

१– चूंडावत तख़्तसिंह ग्राम सुरेड़ाका; २– अभयसिंह सोलंखी सेमारीका; ३– गुलाबसिंह चूंडावत बोहड़ाका; ४– ब्राह्मण मोड़ा चौईसा; ५– विलायती कमालख़ां ग्राम सेजड़ीका; ६– चाकर प्यारा; ७– चाकर गोपाल्या; ८– शक्तावत

हमीरसिंह मांडकलाका; ९- बाबा भगवानदास ग्राम खेजड़ीका; १०- सिपाही यार-मुहम्मदख़ां बड़ी सादड़ीका; ११- जवानसिंह सारंगदेवोत भूरक्याका; १२- कुशाल-सिंह राठौड़ ग्राम सीवासका; १३- गुमानसिंह भाखरोत गुढ़ाका; १४- रूपा चाकर; १५- चाकर पन्ना; १६- चाकर पृथ्वीराज; १७- ब्राह्मण नाम ना मालूम; १८- महाजन नाम ना मालूम.

(ज़रूमी हुए)

१- गिरवरसिंह वलद किशोरसिंह शक्तावत, .उम्र वर्ष १८, सिकने बोहड़ा. यह शरूस केसरीसिंहका भाई है, इसके कमरमें गोली लगी जो पार होकर निकलगई, और बाएं हाथके पहुंचेपर फिर एक दूसरी गोली लगी.

२- बाघजी वलद जवानसिंह शक्तावत सि० बोहड़ा, .उम्र वर्ष ४५, बाएं पैरकी पिंडलीपर गोली लगी.

३- नवलसिंह वलद पनजी सि० सेमारी क़ौम शक्तावत, .उम्र २४ वर्ष; दाहिने पैरके टख़्नेपर गोली लगी.

४- दूलहसिंह वलद बलवन्तसिंह क़ौम राजपूत राठौड़, सि० खेजड़ी, .उम्र २५ वर्ष; दाहिने पैरमें गोली लगी.

५- चतरसिंह वलद गुमानसिंह क़ौम राजपूत भागलोत सि० खेजड़ी, .उम्र २५ वर्ष; मुंहपर गोली लगी.

६- माधवसिंह वलद अनोपसिंह राजपूत कूंपावत सि० सीवास, .उम्र ४५ वर्ष; कमरमें गोली लगी.

७- सुजानसिंह वलद बदनसिंह शक्तावत सि० सीवास, .उम्र २० वर्ष; बाएं पैरमें गोली लगी.

८- रघुनाथसिंह वलद गुमानसिंह राजपूत कूंपावत सि० सीवास, .उम्र १८ वर्ष; दाहिनी तरफ़ खवेपर और बाएं पैरमें दो गोलियां लगीं.

९- उदयसिंह वलद गुलाबसिंह राजपूत शक्तावत सि० सेमारी, .उम्र २८ साल; दोनों पैरकी पिंडलियोंमें गोली लगी.

१०- मुहम्मदख़ां वलद अहमदख़ां मुसल्मान, .उम्र ३२ वर्ष; दाहिने हाथके बीचमें और खवों वग़ैरहपर चोट लगी.

११- रत्नसिंह वलद पहाड़सिंह राजपूत राठौड़ सि० खेजड़ी, .उम्र ३० साल; बाएं गोड़ेपर गोली लगी, जिससे ढांकणी जाती रही, और एक गोली हाथके बीचमें लगी.

१२- भवानीसिंह वलद भीमसिंह राजपूत सि० इन्द्रगढ़ खातोली, .उम्र ६० वर्ष; दाहिने हाथके जोड़में दो गोलियां लगीं.

केसरीसिंहके साथ गिरिफ्तार होनेवालोंके नाम.

१- शक्तावत केसरीसिंह खुद; २- महासुन्दर राजपूत जादव सि० खेजड़ी, इलाक़ह सीतामऊ; ३- मोती चाकर सि० राठौड़ोंका खेड़ा; ४- लक्ष्मणसिंह राठौड़ सि० अमरपुरा पट्टे भींडर; ५- ज़ालिमसिंह राठौड़ कुरावड़का; ६- जवाना चाकर बोहड़ाका; ७- फ़ौजीसिंह शक्तावत सेमारीका; ८- औनाड़सिंह शक्तावत सेमारीका; ९- सर्दार सिंह शक्तावत सेमारीका; १०- किशना चाकर बोहड़ाका; ११- रामसिंह राठौड़ खेजड़ी .इलाक़ह सीतामऊका; १२- उँकारसिंह मरहटा नाथद्वारेका; १३- कृष्णसिंह राठौड़ लूणदाका; १४- शेरसिंह देवड़ा पीपलीका; १५- रूपा भाखरोत खेजड़ीका; १६- संग्रामसिंह चहुवान बोहड़ाका; १७- जोधसिंह चूंडावत मुरड़ाका; १८- गम्भीरसिंह शक्तावत कुवासका; १९-ज़ोरा खरवड़ जंघपुरका; २०- जवाहिरसिंह राठौड़ सीवासका; २१- आनन्दसिंह राठौड़ सीवासका; २२- शिवा चाकर बोहड़ाका; २३- उम्मेदसिंह राठौड़ सीतामऊका; २४- रामलाल चाकर बोहड़ाका; २५- गिरवरसिंह देवड़ा करजेठ्या .इलाक़ह इन्दौरका; २६- एथ्वीसिंह राठौड़ दाणीचौतराका; २७- धौंकल शक्तावत बोहड़ाका; २८- माधवसिंह चहुवान भींडरका; २९- बख्तावरसिंह सिपाही बोहड़ाका; ३०- जीवा चाकर बोहड़ाका; ३१- गम्भीरख़ां मुसल्मान बोहड़ाका; ३२- जवाहिरमल्ल कोठारी अठाणाका; ३३- फ़त्हसिंह सीसोदिया बोहड़ाका; ३४- नसीर-मुहम्मद पठान नींबाहेड़ाका; ३५- शोभालाल सांभर बोहड़ाका; ३६- मोड़सिंह राठौड़ बोहड़ाका; ३७- गोपालसिंह राजपूत जयपुरका.

महाराणा साहिबने केसरीसिंहके हमराहियोंमेंसे क़रीब १० आदमियोंको क़ैद करके बाक़ीको मेवाड़के बाहिर निकलवादिया, और ज़ख़्मियोंको हॉस्पिटलमें भेजा. श्री दर्बारकी फ़ौजमेंसे जो लोग मारेगये उनके बालबच्चोंकी पर्वरिशका बन्दोबस्त कियाजाकर ज़ख़्मियोंको इन्आम दियागया; और महाराणा साहिबने महता लछमीलालको पैरमें सोनेके लंगर बख़्शकर उसकी तारीफ़ फ़र्माई, और बोहड़ा पट्टेका ग्राम मंगरवाड़ मए उसके मुतअ़ल्लक़ खेड़ोंके फ़ौजी नुक्सानके .एवज़ हमेशहके लिये ख़ालिसह करके रावत् रत्नसिंहको बोहड़ेका मालिक बनाया.

विक्रमी १९४१ भाद्रपद कृष्ण १ [हि० १३०१ ता० १५ शव्वाल = .ई० १८८४

ता० ७ ऑगस्ट] को कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेण्ट मेवाड़ जो छुट्टीपर विलायत गये थे, वापस उदयपुरमें आये, और कर्नेल् यूएन स्मिथ क़ाइममक़ाम रेज़िडेण्ट मेवाड़ गये. इन दिनों महाराणा साहिबके शरीरमें कई तरहकी बीमारियां खड़ी होगई थीं, जिनमें पेटकी कुरकुरी तो बार बार इस तरह चलने लगी, कि जान निकलनेका ख़ौफ़ था. महाराणा साहिबने डॉक्टरोंका इलाज बन्द करके दिल्लीके नामी हकीम महमूदख़ांको बुलाया, लेकिन् उससे भी कुछ फ़ायदह न हुआ. तक्लीफ़के सबब अफ़ीम और शराबका इस्तेमाल भी बहुत बढ़गया, तब लाचार आबोहवा तब्दील करनेका इरादह हुआ, और विक्रमी कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० ३० ज़िल्हिज = .ई० ता० २० ऑक्टोबर] को महाराणा साहिब जोधपुरकी तरफ़ रवानह हुए. महाराणा साहिबका ख़याल था, कि मारवाड़की ख़ुश्क हवासे ज़ुरूर फ़ायदह होगा. देसूरीतक खींवाड़ाके ठाकुर वग़ैरह सर्दार और जोधपुरसे पांच कोस मोगड़ातक महाराजा साहिब ख़ुद पेशवाई करके महाराणा साहिबको राजधानीमें लेगये. महाराजा जशवन्तसिंह साहिबकी मिह्मानदारी और मुहब्बतमें दिन ब दिन तरक़्क़ी होती रही, और उधर महाराणा साहिबके बदनमें बीमारी बढ़ती गई जिसके दूर करनेको अफ़ीम और शराबका इस्तेमाल भी बढ़ा. इन दिनोंमें मेरी (कविराजा श्यामलदासकी) माताका देहान्त होगया था, इस सबबसे ३०००) रुपया द्वादशाहके लिये इनायत करके महाराणा साहिब मुझे उदयपुरमेंही छोड़गये थे, पीछेसे मेरे पेटमें भी कुरकुरी ऐसी चली, कि ज़िन्दगीकी उम्मेद न रही, लेकिन् डॉक्टर पादरी समरविल साहिब और मिठ्ठनलालकी दवासे आराम होगया. उसी नाताक़तीकी हालतमें कर्नेल् वाल्टर रेज़ि-डेण्ट मेवाड़ने मुझे बुलाकर कहा, कि महाराणा साहिबके शरीरमें बीमारी बढ़ती जाती है, और उनके यहां मौजूद न होने व कामकी कस्रतके सबब मेरा तो जोधपुर जाना ठीक नहीं, लेकिन् आप जासक्ते हैं या नहीं? फिर डॉक्टर समरविल साहिबसे भी पूछा, तो उन्होंने कहा, कि पालकीकी डाकमें चलेजावें, तो कुछ नुक़्सान नहीं. तब विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० १३०२ ता० २७ मुहर्रम = .ई० ता० १६ नोवेम्बर] को रातके बारह बजे पालकीमें सवार होकर मैं उदयपुरसे रवानह हुआ, और राजनगर होता हुआ जवालियाके स्टेशनसे रेलमें बैठकर दो दिन और दो रातके अरसहमें जोधपुर पहुंचा. वहां जाकर मैंने महाराणा साहिबसे ख़ानगी तौरपर बहुत कुछ अर्ज़ की, तो फ़र्माया, कि महाराजा साहिब रवानह नहीं होने देते. तब मैंने महाराजा साहिबको कर्नेल् वाल्टर साहिबकी चिठ्ठी दी, जिसमें महाराणा साहिबको जल्दी रुख़्सत देनेके लिये बहुत कुछ लिखा था, और मैंने भी महाराजा साहिबको बहुत समझाया, तब उन्होंने मंज़ूर किया. जोधपुर महा-राजा साहिबको भी कलकत्ते जाना था, इसलिये कहा कि हम महाराणा साहिबको अजमेर

तक पहुंचाकर कलकत्ते चलेजावेंगे. फिर दोनों अधीश जोधपुरसे सवार होकर विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ८ [हि० ता० ७ सफ़र = .ई० ता० २६ नोवेम्बर] की शामको स्पेशल ट्रेनमें विराजे, और विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० ता० ८ सफ़र = .ई० ता० २७ नोवेम्बर] को अजमेर पहुंचे. कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब वगैरह लोग स्टेशनपर पेश्वाईको आये, मगर ट्रेनको देरी होजानेके कारण पीछे चले गये, और बेली साहिब व उणियाराके रावराजा वहां ठहरे रहे. रेलसे उतरकर दोनों अधीश मेयो कॉलेज देखनेके बाद महाराजा कृष्णगढ़के बंगलेमें ठहरे, जहां बारह बजे एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह कर्नेल् ब्राडफ़ोर्ड साहिब मुलाक़ातको आये. मामूली बातोंके सिवा काठियावाड़के ज़िले जामनगरके महाराजाने जो अपनी मुसलमान पासबानके लड़केको नाजाइज़ तौरपर वलीअह्द बनाकर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीसे मंजूरी मंगाली थी उस विषयमें बातचीत हुई. महाराणा साहिब और महाराजा साहिबने ब्राडफ़ोर्ड साहिबको कहा, कि ऐसा नहीं होना चाहिये, जिसपर साहिबने बहुत कुछ बह्स की, और कहा, कि आप राजपूतानहमें और वह काठियावाड़में हैं. इसपर महाराणा साहिबने कहा, कि अगर्चि वह ठिकाना राजपूतानहकी हदसे बाहिर है, लेकिन् हमारे हमकौम राजपूतोंका है, इसलिये हमको उनकी तरफ़दारी करना लाज़िम है, क्योंकि अंग्रेज़ लोग भी अपनी कौमके लिये तरफ़दारी करते हैं. थोड़ी देरतक बह्स होनेके बाद ब्राडफ़ोर्ड साहिबने कहा, कि मैं इस मुक़द्दमहकी मिस्ल मंगाकर आपके पास भेजूंगा, यह कहकर साहिब रुख़्सत हुए, और महाराणा साहिबने चित्तौड़गढ़ व महाराजा साहिबने कलकत्तेकी तरफ़ प्रस्थान किया. महाराणा साहिबके बदनमें इन दिनों कमज़ोरी और बीमारी बढ़तीजाती थी. कर्नेल् वाल्टर साहिब इसवक़्त उदयपुरसे चित्तौड़गढ़की तरफ़ रवानह होगये थे, जो विक्रमी पौष कृष्ण १ [हि० ता० १४ सफ़र = .ई० ता० ३ डिसेम्बर] को रास्तहमें देवरी मक़ामपर मिले और मुझको कहा, कि ऐसी हालतमें आप जाकर महाराणा साहिबको लेआये, यह बहुत अच्छा किया. आख़िरकार विक्रमी पौष कृष्ण ५ [हि० ता० १८ सफ़र = .ई० ता० ७ डिसेम्बर] की शामके ६॥ बजे महाराणा साहिब बग्घीकी सवारी से उदयपुरमें दाख़िल होगये. ईश्वरकी इच्छाको कोई नहीं रोक सक्ता, विक्रमी पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २१ सफ़र = .ई० ता० १० डिसेम्बर] को अर्द्धरात्रि व्यतीत हुई होगी, कि एकदम महाराणा साहिबको तासीर (मूर्च्छा) आई. उस समय डॉक्टर अक्बरअली, पाणेरी उदयराम, मामा अमानसिंह, महता प्यारचन्द आदि लोग मौजूद थे. डॉक्टर अक्बरअलीने इलाज शुरू किया और बारहट कृष्णसिंह बग्घीमें बैठकर रेज़िडेन्सीसे डॉक्टर जेम्स शेपर्डको बुला लाया. उन्होंने भी बहुत कुछ कोशिश की. यह ख़बर

सुनकर मैं (कविराजा श्यामलदास), राय पन्नालाल, ठाकुर मनोहरसिंह, जानी मुकुन्द-लाल, और मौलवी अब्दुर्रहमानखां वगैरह भी दौड़ दौड़कर महाराणा साहिबके पास पहुंचे. रातभर इलाज होता रहा, पैर, पिंडलियों और गर्दनपर ब्लिस्टर लगाये गये, जिससे दूसरे दिन क़रीब ८ बजे प्रातःकालको कुछ होश आया. इस वक्त महाराणा साहिबने ख़ैरातके लिये १००००) रुपयोंका संकल्प किया और कुछ बातचीत भी की. थोड़ी देरके बाद माणक महलसे सूरज चौपाड़में पधारे, क्योंकि माणक महलमें काच लगे हुए थे, जिनके अक्ससे इस बीमारीका बढ़ना डॉक्टरोंने बयान किया था. कर्नेल् वाल्टर साहिब जो इसवक्त दौरेपर थे, फ़ौरन् तार देकर उदयपुरमें बुलाये गये. इसी रोज़ याने विक्रमी पौष कृष्ण ९ [हि० ता० २२ सफ़र = ई० ता० ११ डिसेम्बर] के दिन महाराणा साहिबके शरीरपर कुछ कुछ उन्माद (जुनून) के आसार मालूम हुए, परन्तु रात्रिमें निद्रा आजानेसे फिर दुरुस्त होगये. विक्रमी पौष कृष्ण १० [हि० ता० २३ सफ़र = ई० ता० १२ डिसेम्बर] को अर्द्धरात्रिके पीछे निद्रा नहीं आई, जिससे उन्माद बढ़ने लगा. विक्रमी पौष कृष्ण ११-१२-१३ [हि० ता० २४-२५-२६ सफ़र = ई० ता० १३-१४-१५ डिसेम्बर] तक जुनून बहुत बढ़गया, यहांतक कि सब को नाउम्मेदी होगई. विक्रमी पौष कृष्ण १४ [हि० ता० २७ सफ़र = ई० ता० १६ डिसेम्बर] को मनुष्योंकी पहिचान जाती रही. इसवक्त डॉक्टर जेम्स शेपर्ड, डॉक्टर सर्जन मलन और विंगेट साहिब मौजूद थे, इलाज होता रहा. डॉक्टरोंने क्लोरल नामी दवा दी, जिससे रात्रिके बारह बजे निद्रा आगई, और सुब्हतक नींद लेनेसे फिर होश हवास दुरुस्त होगये. विक्रमी पौष कृष्ण ऽऽ से शुक्ल ५ [हि० ता० २८ सफ़र से ३ रबीउल्-अव्वल = ई० ता० १७ से २२ डिसेम्बर] तक बीमारीमें अच्छी तरह आराम होकर सिर्फ़ नक़ाहत ही बाक़ी रही थी. विक्रमी पौष शुक्ल ६ [हि० ता० ४ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २३ डिसेम्बर] को पहर दिन चढ़ेके वक्त महाराणा साहिबने फ़र्माया, कि आज हमारी तबीअत दुरुस्त है, इसलिये जीमण मंगवाना चाहिये; चुनान्चि खुदने जीमण आरोगा और ठाकुर मनोहरसिंह, बारहट कृष्णसिंह और उज्वल फ़तहकरणको भी अपने सामने बिठाकर जिमाया. इसके बाद महाराज शक्तिसिंह आये उनसे बातें कीं. सायंकालके वक्त जब मैं महलोंमें अपनी ओवरीपर भोजन करनेको गया, तो ६॥। बजे नारायण मर्दन्या दौड़ा हुआ मेरे पास आया, कि जल्दी चलो. मैं दौड़कर गया, तो देखता क्या हूं कि महाराणा साहिबको बड़ी सख्त तासीर (मूर्च्छा) आरही है. डॉक्टर रेवरेण्ड जेम्स शेपर्ड, एम० ए०, एम० डी०, और रेज़िडेन्सी सर्जन डॉक्टर मलन, और डॉक्टर अक्बर-अली बहुत कोशिश करने लगे. महाराज शक्तिसिंह भी दौड़कर आया. महता राय

पन्नालालके कहनेसे खैरातके लिये रुपयोंका संकल्प करवाया गया. इसी समय कर्नेल् वाल्टर रेज़िडेण्ट मेवाड़ भी आपहुंचे. डॉक्टरोंने बिजली लगाना वगैरह बहुतसी कोशिशें कीं, लेकिन् कोई कारगर न हुई. हम लोग रोरहे थे. महता पन्नालालको और मुझको कर्नेल् वाल्टरने बहुत कुछ तसल्ली दी, लेकिन् वह वक्त जैसा हमारे ऊपर गुज़रा उसका बयान नहीं होसक्ता. विक्रमी पौष शुक्ल ६ [हि० ता० ४ रबीउल्अव्वल = .ई० ता० २३ डिसेम्बर] की रात्रिको १० पर १५ मिनट गये महाराणा सज्जनसिंह साहिब इस दुन्याको छोड़गये. मैं रातभर अपनी तवारीख़की कोठरीमें हाय विलाप करता रहा, महलोंमें और तमाम शहरमें कोलाहल मचरहा था. सुबहको जब महाराणा साहिबकी आख़री सवारी निकाली गई, उस वक्त कर्नेल् वाल्टर साहिबकी आंखोंसे आंसू बहरहे थे, और हज़ारों मर्द, औरत और पांच पांच वर्षके छोटे बालक भी चिल्ला चिल्लाकर रोरहे थे. इस शोक संतापका जियादह हाल तवारीख़में लिखनेसे कलेजा फटता है, इसलिये विशेष लिखनेकी ताक़त नहीं. हम लोग महाराणाकी दग्ध क्रिया करके अपने अपने घरोंमें आपड़े.

इन महाराणा साहिबका जन्म विक्रमी १९१६ आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० १२७५ ता० ७ ज़िल्हिज = .ई० १८५९ ता० ८ जुलाई] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२९१ ता० २६ शश्र्बान = .ई० १८७४ ता० ८ ऑक्टोबर] को हुआ था. यह महाराणा दस वर्ष तीन महीना आठ दिन राज्य करके परलोकको सिधारे. इनका क़द पांच फुट आठ इंच लम्बा, गहरा गेहुंवां रंग, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी, और गहरी व लम्बी डाढ़ी मूछें थीं, और बदनके सब अवयव मज़बूत व ख़ूबसूरत थे.

अब इनके दोष व गुण लिखे जाते हैं:- गुस्सेकी हालतमें अगर्चि इन महाराणाके मिज़ाजपर सख़्ती और बेरहमी दिखलाई देती थी, लेकिन् अक़्मन्दीसे उसको रोकलेते थे, और एश व इश्रतकी तरफ़ इनको ज़ियादह तवज्जुह थी. खाने, पीने और सोनेके वक्तकी पाबन्दी न होनेके सबब इनकी जिस्मानी हालतमें ख़लल आगया था. अब इनके गुण सुनने चाहियें- यह अव्वल दरजहके अक़्मन्द और ज़िहीन थे; इल्मी ताक़त थोड़ी थी, लेकिन् न्याय और वेदान्त वगैरह शास्त्रोंकी बहसमें जब शरीक होजाते, तो उस वक्त दूसरेको बड़े ही आलिम मालूम होते थे, और साहित्य विद्याके समझनेमें तो यह बड़ी ही ताक़त रखते थे. मिलनसार ऐसे थे, कि यदि कोई आदमी एक बार उनसे मिललिया, वह ताबेदार बनकर जन्म भरतक उनको न भूलेगा. नया आदमी बनाकर उससे काम लेना भी यह जानते थे, और ख़ैरख़्वाहको ख़ैरख़्वाहीका एवज़ देकर उसको नेक आदतोंपर मज़बूत करते थे, कि जिससे बदख़्वाह लोग भी अपनी बदख़्वाही छोड़नेकी कोशिश करें.

इन महाराणाने अपने राज्यशासनके थोड़ेही समयमें राज्यका प्रबन्ध भी अच्छा

किया. प्रजाके इन्साफ़के लिये कौन्सिल क़ाइम करना, सेटल्मेण्ट जारी करके पक्के बन्दोबस्तका प्रबन्ध करना; इसके सिवा सर्हद्दपर साइरका बन्दोबस्त, पुलिसका इन्तिज़ाम, जंगी फ़ौज और तोपख़ानहकी दुरुस्ती, महकमह देवस्थानकी तरक़्की, तवारीख़ वीरविनोदके लिये महकमह क़ाइम करना, और ऐतिहासिक पुस्तकोंका संचय, विद्याको उन्नति देना और उसके प्रबन्धके लिये एज्युकेशन (विद्या सम्बन्धी) कमिटी क़ाइम करना, और स्त्रियोंके लिये अस्पताल जारी करना, वग़ैरह बहुतसे उपयोगी और प्रशंसनीय काम किये. चित्तौड़से राजधानीतक रेलवे बनानेका हुक्म दिया; और ग़ैर रियासतोंसे मेल मिलाप बढ़ाया. पोलिटिकल मुआमलातमें भी यह अच्छी ताक़त रखते थे; अंग्रेज़ अफ़्सरोंसे हरएक मुआमलहके वक़्त बहस करके दोस्तीसे कामयाब होते थे. उदयपुर शहरको इन्होंने ऐसी रौनक़ दी, कि ख़ूबसूरतीका एक नया नमूनह बनगया. सज्जननिवास बाग़, और सज्जनगढ़के महलोंकी तामीर, और जयसमुद्र तालाबके बन्धकी तथा क़िले चित्तौड़की इमारतोंकी थोड़ीसी मरम्मत; ये सब बातें एक अ़रसहतक उनकी अ़क्लमन्दीको ज़ाहिर करेंगी. इन महाराणाके बड़े बड़े इरादे थे, लेकिन् अफ़्सोस, कि समयसे पहिले परलोकवास होजानेके कारण वह उन सब इरादोंको अपने दिलहीमें लेगये.

इन महाराणाकी पहिली शादी ईडरके महाराजा जवानसिंहकी बेटी और केसरीसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में, दूसरी शादी कृष्णगढ़के महाराजा पृथ्वीसिंहकी बेटी और शार्दूलसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में, और तीसरी शादी ईडरके महाराजा जवानसिंहकी दूसरी बेटी और केसरीसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] में हुई थी.

उक्त महाराणा साहिबके अ़हद हुकूमतमें जो तामीरात सम्बन्धी नये काम हुए, याने महलात, मकानात व सड़कें वग़ैरह तय्यार कराई गई, और पुराने मकानात वग़ैरहकी मरम्मत हुई, उसमें कुल रु० २६१६२३१॥।२ ख़र्च हुए, जिसकी तफ़्सील अम्बाव मुरड्याके भेजे हुए नक़्शोंसे खुलासहके तौरपर नीचे दर्ज कीजाती है:-

नक़्शह तामीर व मरम्मत मकानात वग़ैरह.

नम्बर	नाम काम.	कुल लागत.
१	शहरमें तथा शहरके आसपासके मकानों वग़ैरहकी तामीर व मरम्मतमें.	१२७८३३६। - ।२

२	सड़कोंकी तामीर व मरम्मतमें.	६६८७६५॥=७।
३	पर्गनों व ज़िलोंमें मकानों व तालाबों वग़ैरहकी तामीर व मरम्मतमें.	६५९६७७॥=७॥
४	ग़ैर इलाक़हके मकानात वग़ैरहकी तामीर व मरम्मतमें.	९४५१।=७॥।
	मीज़ान.	२६१६२३१७॥।२

मेवाड़का अह्दनामह.

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब जिल्द चौथी उर्दूकी पृष्ठ १०, और तीसरी अंग्रेज़ीकी पृष्ठ १७.

अह्दनामह नम्बर १ जो दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और मेवाड़के महाराणा भीमसिंहके क़रार पाया.

अह्दनामह ऑनरेबल् अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराणा भीमसिंह राणा उदयपुरके दर्मियान, मिस्टर चार्ल्स थ्योफ़िलस मेट्कॉफ़की मारिफ़त, जिनको ऑनरेबल् कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल् मार्किस ऑव हेस्टिंग्ज़, के० जी०, गवर्नर जेनरल बहादुरने पूरा अधिकार दिया था; और ठाकुर अजीतसिंहकी मारिफ़त, जिसको उक्त महाराणा साहिबकी तरफ़से पूरे इख्तियार मिले थे, तै पाया.

शर्त अव्वल- दोस्ती, मिलाप, और एकता हमेशहके लिये दोनों सर्कारोंके बीचमें पुश्तोंतक क़ाइम रहेगी, और दोस्त व दुश्मन एक सर्कारके दोस्त और दुश्मन दूसरी सर्कारके समझे जावेंगे.

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह रियासत और मुल्क उदयपुरकी हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी- महाराणा साहिब उदयपुर हमेशह सर्कार अंग्रेज़ीकी इताअत किया-करेंगे, उसकी बुज़ुर्गीका इक़ार करेंगे, और किसी दूसरे रईस व रियासतसे तअल्लुक़ न रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महाराणा साहिब उदयपुर किसी राजा या रियासतसे सर्कार अंग्रेज़ीकी मन्ज़ूरी और इत्तिलाके बग़ैर सुलह न करेंगे, परन्तु उनकी मामूली दोस्तानह लिखा पढ़ी दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी.

शर्त पांचवीं- महाराणा साहिब उदयपुर किसी ग़ैरपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और जो कभी इत्तिफ़ाक़से तकार या झगड़ा किसीसे होगा, तो वह सर्पंची और फ़ैसलेके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द होगा.

शर्त छठी- उदयपुरकी मुल्क हालकी चौथाई आमदनी सालानह पांच वर्षतक सर्कार अंग्रेज़ीको बतौर ख़िराज अदा होगी, और उसके पीछे आठ हिस्सोंमेंसे तीन हिस्से हमेशहके वास्ते अदा किये जावेंगे. महाराणा साहिब ख़िराजके सम्बन्धका कुछ वासितह किसी और हुकूमतसे न रक्खेंगे, और अगर कोई इस क़िस्मका दावा पेश करेगा, तो अंग्रेज़ी सर्कार वादह करती है, कि वह उसका जवाब देगी.

शर्त सातवीं- जोकि महाराणा साहिब बयान करते हैं, कि उनके मुल्कमेंसे अक्सर .इलाक़े नाजाइज़ रीतिसे औरोंके क़ब्ज़ेमें आगये हैं, और वह चाहते हैं, कि उनको वापस दिलवाये जावें, और सर्कार अंग्रेज़ी ब वजह सहीह सहीह वाक़िफ़ियत न होनेके इस वक्त पक्का वादह इस विषयमें नहीं करसक्ती, लेकिन् फिर भी इक़ार किया-जाता है, कि अंग्रेज़ी सर्कार हमेशह मुल्क उदयपुरकी बिहतरीका लिहाज़ रक्खेगी, और हर मुआमलेका अस्ली हाल दर्याफ़्त करनेके बाद हर मौक़ेपर, जबकि वाजिब मालूम होगा, इस मक्सदको पूरा करनेके लिये बख़ूबी कोशिश करेगी; और जो .इलाक़े इस तरह उदयपुरको अंग्रेज़ी सर्कारकी मददसे वापस मिलेंगे उनकी आमदनीके आठ हिस्सों मेंसे तीन हिस्से हमेशहके वास्ते सर्कार अंग्रेज़ीको (ख़िराजके तौर) अदा होंगे.

शर्त आठवीं- राज उदयपुरकी फ़ौज रियासतकी हैसियतके बमूजिब सर्कार अंग्रेज़ीके तलब करनेपर दीजावेगी.

शर्त नवीं- महाराणा साहिब उदयपुर हमेशह अपने मुल्कके बाइख़्तियार हाकिम रहेंगे, और उनके राज्यमें अंग्रेज़ी अदालती हुकूमत जारी न होगी.

शर्त दसवीं- यह दस शर्तोंका ऋह्दनामह दिल्लीके मक़ामपर तय्यार होकर मिस्टर चार्ल्स थ्योफ़िलस मेट्कॉफ़ और ठाकुर अजीतसिंह बहादुरके दस्तख़त और मुहरसे ख़त्म हुआ; और हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल् गवर्नर जेनरल बहादुर और महाराणा

भीमसिंहजीकी तरफ़से इस अहदनामहकी तस्दीक़ आजकी तारीख़से एक महीनेके अरसहमें होजावेगी-फ़क़त.

मक़ाम दिल्ली, तारीख़ १३ जैन्युअरी सन् १८१८ ई०

दस्तख़त सी० टी० मेट्कॉफ़. | मुहर बड़ी |

| गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर. | दस्तख़त ठाकुर अजीतसिंह.
दस्तख़त हेस्टिंग्ज़.

हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने तारीख़ २२ जैन्युअरी सन् १८१८ ई० को मक़ाम ऊंचड़में तस्दीक़ किया.

दस्तख़त जे० एडम,
सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

ऊपर दर्ज किये हुए अहदनामहके सिवा और भी चन्द अहदनामे रियासत मेवाड़ और गवर्मेण्ट हिन्दके दर्मियान समय समयपर हुए हैं, परन्तु सबसे पहिला मुख्य अहदनामह यही है.
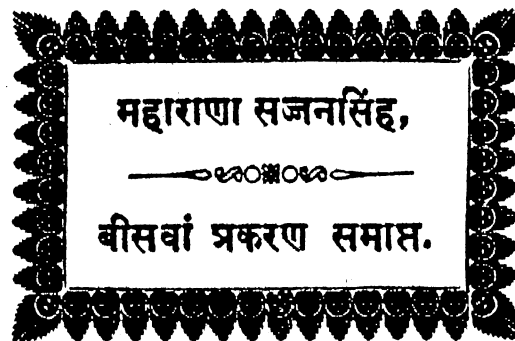
महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत
इतिहास वीरविनोद समाप्त (१).

(१) स्वर्गवासी कविराजा श्यामलदासने इस इतिहासको यहीं तक लिखा था, अतः उनका बनाया हुआ ग्रन्थ यहांपर समाप्त कियागया.